इस नम्बर के ख़ास लेख — اِس نمبر کے خاص لیکھ

...कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ...ستانی کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

जुलाई 1955 جولائی

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

Can be had from

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 20 جلد नम्बर 1 نمبر

जुलाई 1955 جولائی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145، مٹھی گنج، الہ آباد

जुलाई 1955 جولائی

कहां भटके ?

डाक्टर भगवान दास

हम दो छोटी और सुन्दर कहानियाँ नीचे देते हैं, एक हिन्दू धर्म की किताबों से और दूसरी इसलामी किताबों से.

छै अंधे एक ऐसी जगह पहुंचे जहाँ एक हाथी खड़ा हुआ था. वह हाथी के रूप के बारे में एक दूसरे से झगड़ने लगे. एक ने हाथी की दुम को टटोलकर कहा कि हाथी एक झाडू की तरह है. दूसरे ने हाथी की सूँड़ को टटोलकर कहा कि हाथी एक बड़े अजगर की तरह है. तीसरे का हाथ हाथी के कान पर पड़ा. वह कहने लगा कि हाथी एक बड़े छाज की तरह है. चौथे ने हाथी के पेट को टटोलकर कहा कि हाथी एक बड़े ढोल की तरह है. पाँचवें ने हाथी की टांग को थपथपा कर देखा और कहा कि हाथी एक मोटे खंभे की तरह है. छटे ने हाथी के एक दाँत को छूकर कहा कि हाथी एक बड़े सोटे की तरह है. सबको अपनी अपनी बात का पक्का विश्वास था. हर एक दूसरे की बात को ग़लत मान रहा था. हठ और झगड़ा बढ़ने लगा. इतने में एक सातवाँ आदमी उधर से निकला. उसके आँखें थीं. वह देख और समझ सकता था. उसने उनमें से हरेक को समझाया कि हाथी उन सबके अलग अलग ख़यालों का मेल है. उसने उन्हें यह भी बतलाया कि हाथी कोई बेजान मिट्टी या लकड़ी की चीज़ नहीं है. वह एक प्राणी है जो अपने इन सब अंगों से काम लेता है.

इसी तरह हमारी सब अलग अलग माद्दी साइंसें इस माद्दी (भौतिक) दुनिया के किसी एक पहलू से वास्ता रखती हैं. दुनिया का हर मज़हब आत्मा या परमात्मा की किसी एक सिफ़त या एक पहलू पर जोर देता है. लेकिन वह चीज़ जिसे हम तसव्वुफ़, वेदान्त और जिन्दगी की असली फ़िलोसोफ़ी कहते हैं और जिसे मज़हबी साइन्स या साइन्सी मज़हब भी कहा जा सकता है वह इन सब धर्मों के अलग अलग पहलुओं को मिलाकर उनका संगम या समन्वय करती है.

दूसरी कहानी यह है—चार मुसाफ़िर, एक रूमी, एक अरब, एक ईरानी और एक तुर्क जिन्दगी की सड़क पर साथ साथ चले जा रहे थे. रेतीली, पथरीली, कंटीली, कहीं बरफ़ की तरह ठंडी और कहीं जलती हुई राहों पर चलते चलते उन चारों को भूख और प्यास सताने लगी. उन्हें किसी ऐसे खाने की ज़रूरत थी जिससे उन्हें शांति और

کہاں بھٹکے ؟

ڈاکٹر بھگوان داس

ہم دو چھوٹی اور سندر کہانیاں نیچے دیتے ہیں، ایک ہندو دھرم کی کتابوں سے اور دوسری اسلامی کتابوں سے ۔

چھہ اندھے ایک ایسی جگہ پہونچے جہاں ایک ہاتھی کھڑا ہوا تھا ۔ وہ ہاتھی کے روپ کے بارے میں ایک دوسرے سے جھگڑنے لگے ۔ ایک نے ہاتھی کی دم کو ٹٹول کر کہا کہ ہاتھی ایک جھاڑو کی طرح ہے ۔ دوسرے نے ہاتھی کی سونڈ کو ٹٹول کر کہا کہ ہاتھی ایک بڑے اجگر کی طرح ہے ۔ تیسرے کا ہاتھ ہاتھی کے کان پر پڑا ۔ وہ کہنے لگا کہ ہاتھی ایک بڑے چھاج کی طرح ہے ۔ چوتھے نے ہاتھی کے پیٹ کو ٹٹول کر کہا کہ ہاتھی ایک بڑے ڈھول کی طرح ہے ۔ پانچویں نے ہاتھی کی ٹانگ کو تھپ تھپا کر دیکھا اور کہا کہ ہاتھی ایک موٹے کھمبے کی طرح ہے ۔ چھٹے نے ہاتھی کے ایک دانت کو چھو کر کہا کہ ہاتھی ایک بڑے سوٹے طرح ہے ۔ سب کو اپنی اپنی بات کا پکا وشواس تھا ۔ ہر ایک دوسرے کی بات کو غلط مان رہا تھا ۔ ہٹ اور جھگڑا بڑھنے لگا ۔ اتنے میں ایک ساتواں آدمی اُدھر سے نکلا ۔ اُسکے آنکھیں تھیں۔ وہ دیکھ اور سمجھ سکتا تھا ۔ اُسنے اُن میں سے ہر ایک کو سمجھایا کہ ہاتھی اُن سب کے الگ الگ خیالوں کا میل ہے۔ اُسنے اُنھیں یہ بھی بتلایا کہ ہاتھی کوئی بیجان مٹی یا لکڑی کی چیز نہیں ہے ۔ وہ ایک پرانی ہے جو اپنے اِن سب انگوں سے کام لیتا ہے ۔

اِسی طرح ہماری سب الگ الگ مادی سائنسیں اِس مادی (بھوتک) دنیا کے کسی ایک پہلو سے واسطہ رکھتی ہیں ۔ دنیا کا ہر مذہب آتما یا پرماتما کی کسی ایک صفت یا ایک پہلو پر زور دیتا ہے ۔ لیکن وہ چیز جسے ہم تصوف، ویدانت اور زندگی کی اصلی فلاسفی کہتے ہیں اور جسے مذہبی سائنس یا سائنسی مذہب بھی کہا جا سکتا ہے وہ ان سب دھرموں کے الگ الگ پہلوؤں کو ملاکر اُنکا سنگم یا سمنوے کرتی ہے ۔

دوسری کہانی یہ ہے—چار مسافر، ایک رومی، ایک عرب، ایک ایرانی اور ایک ترک زندگی کی سڑک پر ساتھ ساتھ چلے جا رہے تھے ۔ ریتیلی، پتھریلی، کنٹیلی، کہیں برف کی طرح ٹھنڈی اور کہیں جلتی ہوئی راہوں پر چلتے چلتے اُن چاروں کو بھوک اور پیاس ستانے لگی ۔ اُنھیں کسی ایسے کھانے کی ضرورت تھی جس سے اُنھیں شانتی اور

शक्ति मिले. वह एक दूसरे की बोली नहीं समझते थे. उंगलियों से इशारा करके उन्होंने अपने चारों के पास के सब दाम दिरम जमा किए, इसलिए कि उससे कुछ खाना खरीदें. पर सवाल हुआ कि क्या चीज़ खरीदी जाय. अरब ने कहा कि 'अनब' खरीदा जाय. तुर्क ने गुर्राकर कहा 'उज़म' खरीदो. ईरानी ने कहा 'अंगूर' खरीदना चाहिए. रूमी ने कड़क कर कहा 'अस्ताफ़ील' लिये जायें. वे झगड़ने लगे. आँखें लाल हो गईं. मुट्ठियाँ भिचने लगीं. हाथापाई की नौबत आ गई. इतने में एक फेरी लगाकर फल बेचने वाला पास से निकला. इस तरह के फेरी लगाने वाले आम तौर पर बहुत सी ज़बानों के ख़ास ख़ास शब्दों से वाक़िफ़ होते हैं. उन्हें तरह तरह के गाहकों से वास्ता पड़ता है. उन चारों के बीच में जाकर उसने अपना टोकरा जिसमें जीवन का मेवा भरा हुआ था उनके सामने खोलकर रख दिया. मुट्ठियाँ ढीली पड़ गईं. आँखें नरमा गईं. आवाज़ में मिठास आ गई, चेहरे मुस्कराने लगे. चारों को उस टोकरे के अंदर अपनी दिल चाही चीज़ दिखाई दे गई. अरबी अनब, तुर्की उज़म, ईरानी अंगूर, रूमी अस्ताफ़ील, पहलवी दाख, संस्कृत द्राक्ष और अंग्रेजी ग्रेप सबके एक ही मानी हैं, सब एक ही मीठे फल को ज़ाहिर करते हैं.

हम में से हरेक ने दूसरों को बाहर रखने के लिए अपने चारों तरफ़ एक दायरा खींच लिया है. हमारे अपने दायरे से बाहर सब हमें नास्तिक, क़ाफ़िर, मलेच्छ और ग़ैर दिखाई देते हैं. प्रेम ने ज्ञान के साथ मिलकर एक बड़ा दायरा खींचा जिसके अंदर सब छोटे दायरे समा गए. सूफ़ी कहता है कि :—

फ़क़त तफ़ावत है नाम ही का,
दर अस्ल सब एक ही हैं, यारो !
जो आबे साफ़ी कि मौज में है,
उसी का जलवा हबाब में है !

यानी केवल नामों का फ़रक़ है. ऐ यारो ! हक़ीक़त में सब एक हैं. जो साफ़ पानी दरिया की लहर में चमक रहा है उसी की चमक बुलबुले के अंदर भी है.

प्यारे भाइयो और बहनो ! कहाँ कहाँ से, कोई दूर से और कोई नज़दीक से आकर हम यहाँ ज़िन्दगी की राह पर मिल गए हैं. हम सब भूखे और प्यासे हैं. सबको उस खाने और उस पानी की ज़रूरत है जो हमें सच्ची ज़िन्दगी दे सके. वह खाना और पानी 'प्रेम' है. यह प्रेम आदमी के अपने अंदर उबलता है, पर उस समय उबलता है जब आदमी इस बात को महसूस करने लगे कि एक ही जान, एक ही परमात्मा सब जगह और घट घट के अंदर मौजूद है. पर हममें से बहुत सों के अंदर अभी सच्ची प्यास की कमी है.

شکتی ملے۔ وہ ایک دوسرے کی بولی نہیں سمجھتے تھے۔ انگلیوں سے اِشارہ کر کے اُنھوں نے اپنے چاروں کے پاس کے سب دام درم جمع کئے۔ اس لئے کہ اِس سے کچھ کھانا خریدیں۔ پر سوال ہوا کہ کیا چیز خریدی جائے۔ عرب نے کہا کہ 'عنب' خریدا جائے۔ ترک نے غرا کر کہا 'عظم' خریدو۔ ایرانی نے کہا 'انگور' خریدنا چاہئے۔ رومی نے کڑک کر کہا اُسطافیل لئے جائیں۔ وہ جھگڑنے لگے۔ آنکھیں لال ہو گئیں۔ مٹھیاں بھچنے لگیں۔ ہاتھاپائی کی نوبت آگئی۔ اِتنے میں ایک پھیری لگا کر پھل بیچنے والا پاس سے نکلا۔ اِس طرح کے پھیری لگانے والے عام طور پر بہت سی زبانوں کے خاص خاص شبدوں سے واقف ہوتے ہیں۔ اُنھیں طرح طرح کے گاہکوں سے واسطہ پڑتا ہے۔ اُن چاروں کے بیچ میں جاکر اس نے اپنا ٹوکرا جس میں جیون کا میوہ بھرا ہوا تھا اُن کے سامنے کھول کر رکھ دیا۔ مٹھیاں ڈھیلی پڑ گئیں۔ آنکھیں نرماگئیں۔ آواز میں مٹھاس آگئی' چہرے مسکرانے لگے۔ چاروں کو اُس ٹوکرے کے اندر اپنی دل چاہی چیز دکھائی دے گئی۔ عربی عنب' ترکی عظام' ایرانی انگور' رومی اسطافیل' پہلوی داکھ' سنسکرت دراکھش اور انگریزی گریپ سب کے ایک ہی معنی ہیں' سب ایک ہی میٹھے پھل کو ظاہر کرتے ہیں۔

ہم میں سے ہر ایک نے دوسروں کو باہر رکھنے کے لئے اپنے چاروں طرف ایک دائرہ کھینچ لیا ہے۔ ہمارے اپنے دائرے سے باہر سب ہمیں ناستک' کافر' ملیچھ اور غیر دکھائی دیتے ہیں۔ پریم نے گیان کے ساتھ مل کر ایک بڑا دائرہ کھینچا جس کے اندر سب چھوٹے دائرے سما گئے۔

صوفی کہتا ہے کہ:—

فقط تفاوت ہے نام ہی کا'
دراصل سب ایک ہیں' یارو!
جو آب صافی کہ موج میں ہے'
اُسی کا جلوہ حباب میں ہے!

یعنی کیول ناموں کا فرق ہے۔ اے یارو! حقیقت میں سب ایک ہیں۔ جو صاف پانی دریا کی لہر میں چمک رہا ہے اُسی کی چمک بلبلے کے اندر بھی ہے۔

پیارے بھائیو اور بہنو! کہاں کہاں سے' کوئی دور سے اور کوئی نزدیک سے آکر ہم یہاں زندگی کی راہ پر مل گئے ہیں۔ ہم سب بھوکے اور پیاسے ہیں۔ سب کو اُس کھانے اور اُس پانی کی ضرورت ہے جو ہمیں سچی زندگی دے سکے۔ وہ کھانا اور پانی 'پریم' ہے۔ یہ پریم آدمی کے اپنے اندر اُبلتا ہے' پر اُس سمے اُبلتا ہے جب آدمی اس بات کو محسوس کرنے لگے کہ ایک ہی پرماتما سب جگہ اور گھٹ گھٹ کے اندر موجود ہے۔ پر ہم میں سے بہت سوں کے اندر ابھی سچی پیاس کی کمی ہے۔

मौलाना रूम ने कहा है :—

"पानी मत ढूँढ़, पहले अपने अंदर प्यास पैदा कर. जब सच्ची प्यास पैदा होगी तो पानी अपने आप तेरे आगे और पीछे, ऊपर और नीचे फ़व्वारों की तरह फूटने लगेगा."

बड़े लोग जिनके दिल दया और प्रेम से लबालब भरे थे, जिनके लिए कोई ग़ैर न था, बड़े बड़े धर्मों की पाक किताबों को लिखने और तरतीब देनेवाले, जो अब भी हमेशा प्रेम के साथ मनुष्य जाति पर उसी तरह निगाह रखते हैं जिस तरह माएं अपने छोटे बच्चों पर निगाह रखती हैं, वे बड़े लोग हमारे लिए जीवन के अच्छे से अच्छे मेवों और मीठे से मीठे फलों के बाग़ लगाकर छोड़ गए हैं, उनकी लगाई हुई अंगूरों की बेलें बारहमासी बेलें हैं. उनके अंगूर जितने अधिक तोड़े जावें उतने ही फलते और बढ़ते रहते हैं. उनकी इन सदा-बहार बेलों से हमने कुछ गुच्छे चुनकर जमा कर दिए हैं, ताकि सब उनमें बराबर का हिस्सा बटा सकें, सब उनका आनन्द ले सकें. और जब कभी हम बाहर परदेस जावें या अपने अपने घरों को लौटें तो इन फलों की मिठास हमारी ज़बानों और हमारे होठों पर बनी रहे. हम जहाँ जावें इस एकता और प्रेम के सुन्दर बीज हमारे साथ हों और हम यहाँ वहाँ और सब जगह इन बीजों को बिखेरते रहें.

एक हिन्दुस्तानी संत ने कहा है :—

"अब हौं कासौं बैर करौं,
"कहत पुकारत प्रभु निज मुखते
"घट घट हौं बिहरौं,
"आप समान सबै जग लेख्यौं,
"भक्तन अधिक डरौं,
"अब हौं कासौं बैर करौं"

कबीर साहब ने कहा है :—

"घट घट रमता राम रमैया
"कटुक बचन मत बोल ! तोहे राम मिलेंगे."

एक अंग्रेज़ कवि ने कहा है :—

"So many castes, so many creeds,
"So many paths that wind and wind,
"when all, the sad world needs,
"Is the art of being kind !"

यानी बहुत सी जात पात हैं, बहुत से अलग अलग धर्म हैं, बहुत से रास्ते हैं जिन पर लोग चक्कर खाते रहते हैं. पर इस दुखी दुनिया को जिस एक चीज़ की ज़रूरत है वह है सब के साथ प्रेम का बरताव !

सब के साथ प्रेम का बरताव करना तभी आ सकता है जब हम मेहनत के साथ इस बड़ी सच्चाई को अपने दिलों

مولانا روم نے کہا ھے :—

پانی مت ڈھونڈھ' پہلے اپنے اندر پیاس پیدا کر . جب سچی پیاس پیدا ھوگی تو پانی اپنے آپ تیرے آگے اور پیچھے' اوپر اور نیچے فواروں کی طرح پھوٹنے لگےگا ."

بڑے لوگ جنکے دل دیا اور پریم سے لبالب بھرے تھے' جن کے لئے کوئی غیر نہ تھا' بڑے بڑے دھرموں کی پاک کتابوں کو لکھنے اور ترتیب دینے والے' جو اب بھی ھمیشہ پریم کے ساتھ منشیہ جاتی پر اُسی طرح نگاہ رکھتے ھیں جس طرح مائیں اپنے چھوٹے بچوں پر نگاہ رکھتی ھیں' وہ بڑے لوگ ھمارے لئے جیون کے اچھے سے اچھے میوں اور میٹھے سے میٹھے پھلوں کے باغ لگاکر چھوڑ گئے ھیں . اُن کی لگائی ھوئی انگوروں کی بیلیں بارہ ماسی بیلیں ھیں . اُن کے انگور جتنے ادھک توڑے جاویں اُتنے ھی پھلتے اور بڑھتے رھتے ھیں. اُن کی اِن سدا بہار بیلوں سے ھم نے کچھ گچھے چن کر جمع کر دیئے ھیں' تاکہ سب اُن میں برابر کا حصہ بٹا سکیں' سب اُن کا آنند لے سکیں . اور جب کبھی ھم باھر پردیس جاویں یا اپنے اپنے گھروں کو لوٹیں تو اِن پھلوں کی مٹھاس ھماری زبانوں اور ھمارے ھونٹوں پر بنی رھے . ھم جہاں جاویں اِس ایکتا اور پریم کے سندر بیج ھمارے ساتھ ھوں اور ھم یہاں وھاں اور سب جگہ اِن بیجوں کو بکھیرتے رھیں .

ایک ھندستانی سنت نے کہا ھے :—

"اب ھوں کاسوں بیر کروں'
"کہت پکارت پربھو نج مکھ تے
"گھٹ گھٹ ھوں وھروں'
"آپ سمان سبے جگ لیکھیئوں'
"بھگتن ادھک ڈروں'
"اب ھوں کاسوں بیر کروں ."

کبیر صاحب نے کہا ھے :—

"گھٹ گھٹ رمتا رام رمیا .
کٹک بچن مت بول' ! تو ھے رام ملیں گے ."

ایک انگریز کوی نے کہا ھے :—

"So many castes, so many creeds,
"So many paths that wind and wind,
"When all, the sad world needs,
"Is the art of being kind !"

یعنی بہت سی جات پات ھیں' بہت سے الگ الگ دھرم ھیں' بہت سے راستے ھیں جن پر لوگ چکر کھاتے رھتے ھیں . پر اس دکھی دنیا کو جس ایک چیز کی ضرورت ھے وہ ھے سب کے ساتھ پریم کا برتاؤ !

سب کے ساتھ پریم کا برتاؤ کرنا تبھی آسکتا ھے جب ھم محنت کے ساتھ اس بڑی سچائی کو اپنے دلوں

और दिमाग़ों में जमा लें कि एक ही बे-अंत, अनंत और व्यापक आत्मा हमारे अपने और सबके अंदर रमी हुई है. जीवन का एक समन्दर है जो लगातार बह रहा है. वही प्रेम है, वही ईश्वर है, प्रेम ही ईश्वर है, ईश्वर प्रेम है, क्योंकि ईश्वर सबके अंदर मौजूद है. इस एकता को अनुभव करना ही ईश्वर भक्ति या इश्क़े हक़ीक़ी है.

उपनिषद् में लिखा है :—

"यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यंति मानवा:
"तदा देवं अविज्ञाय दुखस्यांतो भविष्यति"

यानी जिस दिन लोग सारे आकाश को एक चटाई की तरह लपेट कर अपने हाथ में ले लेंगे उस दिन ही बिना सबके अंदर एक ईश्वर को देखे दुनिया के दुख का अंत हो सकेगा.

सूफ़ी कहता है :—

"शाद बाश ! ऐ इश्क़ ख़ुश सौदाए मा !
"ऐ दवाए जुम्ला इल्लतहाए मा !
"ऐ इलाजे नख़वतो नामूसे मा !
"ऐ तू अफ़लातूनो जालीनूसे मा !
"वेद, अवस्ता, अलक़ुरान, इंजीलनीज़,
"काबओ, बुतख़ानओ, आतशकदा,
"क़ल्बे मन, मक़बूल करदा जुमला चीज़,
"चूं मरा जुज़ इश्क़ नै दीगर ख़ुदा !"

यानी ऐ मेरे प्यारे पागलपन, ऐ प्रेम ! ख़ुश रहो. तुम ही मेरी सारी बीमारियों की दवा हो ! तुम ही मेरे घमंड और मेरी ख़ुदी का इलाज हो ! मेरे अंदर के रोगों के लिए तुम अफ़लातून फ़िलोसाफ़र हो और तुम ही मेरी बाहर की बीमारियों के लिए जालीनूस हकीम हो ! वेद, ज़िंद अवस्ता, क़ुरान, इंजील, काबा, बुतख़ाना और आतशकदा, मेरे दिल ने इन सब को अपना लिया है, चूंकि मेरे लिए अब सिवा 'प्रेम' के और कोई मज़हब ही नहीं रहा.

शेख़ सादी ने अपनी मशहूर किताब 'मामुक़ीमां' में लिखा है :—

"ताबे आमोख़्तेम अबजदे इश्क़
"रक़मे ग़ैर अज़ीं नमी दानेम
"कि बचश्माने दिल मबीं जुज़ दोस्त
"हरचे बीनी बिदां कि मज़हरे ओस्त
"चूंकि वाक़िफ़ शुदेम ज़ परदयेराज़
"दम बदम ईं तराना मी गोयेम
"कि बचश्माने दिल मबीं जुज़ दोस्त
"हर चे बीनी बिदां कि मज़हरे ओस्त !"

यानी जब से हमने प्रेम की अलिफ़, बे, ते पढ़ी है तब से सिवाय इसी एक बात के और कोई बात हम जानते ही नहीं कि दिल की आँखों से किसी को भी सिवाय दोस्त के

اور دماغوں میں جمالیں کہ ایک ہی بے انت' اننت اور ویاپک آتما ہمارے اپنے اور سب کے اندر رمی ہوئی ہے . جیون کا ایک سمندر ہے جو لگاتار بہہ رہا ہے. وہی پریم ہے' وہی ایشور ہے' پریم ہی ایشور ہے' ایشور پریم ہے' کیوں کہ ایشور سب کے اندر موجود ہے. اِس ایکتا کو انوبھو کرنا ہی ایشور بھکتی یا عشق حقیقی ہے .

اُپنشد میں لکھا ہے :—

"یدا چرم‌وآکاشم . ویشٹ اِشیٔنتی مانواہ
"تدا دیوم آوگیائے دکھسیہ انتو بھوشیٔتی ."

یعنی جس دن لوگ سارے آکاش کو ایک چٹائی کی طرح لپیٹ کر اپنے ہاتھ میں لے لینگے اُس دن یہی بنا سب کے اندر ایک ایشور کو دیکھے دنیا کے دکھ کا انت ہو سکیگا .

صوفی کہتا ہے :—

"شاد باش ! اے عشق ! خوش سودائے ما !
"اے دوائے جملہ علتہائے ما !
"اے علاج نخوت وناموس ما !
"اے تو افلاطون وجالینوس ما !
"وید اوستا' القران' انجیل نیز'
"کعبہ و' بت‌خانہ و' آتشکدہ'
"قلب‌من' مقبول کردہ جملہ چیز'
"چوں مراجز عشق نے دیگر خدا !"

یعنی اے میرے پیارے پاگل پن ! اے پریم ! خوش رہو. تم ہی میری ساری بیماریوں کی دوا ہو ! تم ہی میرے گھمنڈ اور میری خودی کا علاج ہو ! میرے اندر کے روگوں کے لئے تم افلاطوں فلاسفر ہو اور تم ہی میری باہر کی بیماریوں کے لئے جالینوس حکیم ہو ! وید' زند اوستا' قرآن' انجیل' کعبہ' بت‌خانہ اور آتشکدہ' میرے دل نے اِن سب کو اپنا لیا ہے' چونکہ میرے لئے اب سوا 'پریم' کے اور کوئی مذہب ہی نہیں رہا.

شیخ سعدی نے اپنی مشہور کتاب 'مامقیماں' میں لکھا ہے :—

"تابہ آموختیم ابجد عشق
"رقم غیر ازیں نمی دانیم
"کہ بہ چشمان دل مبیں جز دوست
"ہرچہ بینی بداں کہ مظہر اوست !
"چوں کہ واقف شدیم زپردۂ راز
دم بدم این ترانہ میگوئیم
"کہ بہ چشمان دل مبیں جز دوست
"ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست !"

یعنی جب سے ہم نے پریم کی الف' بے' تے' پڑھی ہے تب سے سوا اسی ایک بات کے اور کوئی بات ہم جانتے ہی نہیں کہ دل کی آنکھوں سے کسی کو بھی سوائے دوست کے

और कुछ नहीं देखना चाहिए. जो कुछ तू देखता है समझ ले कि सब उसी एक ईश्वर का जलवा है. जब से हम भेद के परदे से वाक़िफ़ हुए हैं तब से हर दम हम यही राग गा रहे हैं कि दिल की आँखों से किसी को भी सिवाय दोस्त के और कुछ नहीं देखना चाहिए. जो कुछ तू देखता है समझ ले कि सब उसी एक ईश्वर का जलवा है.

'वर्ल्ड फ़ेलोशिप ऑफ़ फ़ेथ्स' में जो गाना सब धर्मों की तरफ़ से गाया गया था उसका मतलब यह है :—

"दुनिया के सब रहनेवाले भाई भाई हैं !
"सबके भले में हरेक का भला है.
"सबका निकास एक से है, एक ईश्वर सबका ईश्वर है.
"एक क़ानून सबके ऊपर है.
"एक मंज़िल सबके सामने है.
"एक जीवन सबको लपेटे है.
"सबका रास्ता प्रेम है.
"लोभ, लालच, डर, घमंड और नफ़रत
"इन्होंने बहुत दिनों हमें वीरान किए रक्खा,
"इनका राज अब ख़तम हुआ.
"नसल, रंग, संप्रदाय और जात पात,
"सब एक बीते हुए बुरे सपने की तरह मुरझा गए.
"आदमी ने आख़िर जागकर यह सीख लिया
"कि सबके अंदर एक ही जान है !"

उस जलसे में सबकी तरफ़ से नीचे लिखी प्रार्थना की गई थी :—

"अमन और ख़ुशहाली लोगों में फिर से वापस आ जाएँ !
"सब मिलकर काम करें, एक प्रेम सब को बाँधे हुए हो !
"एक भाई चारा सबको लिए हुए हो, सबको धीरज हो !
"सबमें आत्म संयम का बल हो !
"सब एक दूसरे की पिछली बातों को भूल जाएँ,
"सब सबके भविष्य को बनाना अपना पाक फ़र्ज़ समझें,
"अमन और ख़ुशहाली सब में लौट आवें !"

क़ुरान में ईश्वर से प्रार्थना की गई है :—
"एहदेनस् सिरातल् मुस्तक़ीम"
यानी हे ईश्वर ! हम सबको सीधी राह दिखला.
वेद में लिखा है :—
"अग्ने ! नय सुपथा !"
यानी हे ईश्वर हमें सीधे रास्ते पर ले चल !
महाभारत में लिखा है :—
"सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु !
"सर्वः सद् बुद्धिमाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नंदतु !"

यानी सब अपनी अपनी कठिनाइयों को पार कर सकें, सबको भलाई ही भलाई दिखाई दे, सबको नेक समझ हो, और सब सब जगह ख़ुश रहें ! यही सीधा रास्ता है.

ओम् ! आमीन ! एमन !

اور کچھ نہیں دیکھنا چاہئے. جو کچھ تو دیکھتا ہے سمجھ لے کہ سب اُسی ایک ایشور کا جلوہ ہے. جب سے ہم بھید کے پردے سے واقف ہوئے ہیں تب سے ہردم ہم یہی راگ گا رہے ہیں کہ دل کی آنکھوں سے کسی کو بھی سوائے دوست کے اور کچھ نہیں دیکھنا چاہئے. جو کچھ تو دیکھتا ہے سمجھ لے کہ سب اُسی ایک ایشور کا جلوہ ہے.

'ورلڈ فیلوشپ آف فیتھس' میں جو گانا سب دھرموں کی طرف سے گایا گیا تھا اُسکا مطلب یہ ہے :—

"دنیا کے سب رہنے والے بھائی بھائی ہیں !
"سب کے بھلے میں ہر ایک کا بھلا ہے .
"سب کا نکاس ایک سے ہے' ایک ایشور سب کا ایشور ہے .
"ایک قانون سب کے اوپر ہے .
"ایک منزل سب کے سامنے ہے .
"ایک جیون سب کو لپیٹے ہے .
"سب کا راستہ پریم ہے .
"لوبھ' لالچ' ڈر' گھمنڈ اور نفرت
"اِنہوں نے بہت دنوں ہمیں ویران کئے رکھا'
"اِن کا راج اب ختم ہوا .
"نسل' رنگ' سمپردائے اور جات پات'
"سب ایک بیتے ہوئے بڑے سپنے کی طرح مرجھا گئے .
"آدمی نے آخر جاگ کر یہ سیکھ لیا
"کہ سب کے اندر ایک ہی جان ہے !"

اُس جلسے میں سب کی طرف سے نیچے لکھی پرارتھنا کی گئی تھی :—

"امن اور خوشحالی لوگوں میں پھر سے واپس آجائیں !
"سب مل کر کام کریں' ایک پریم سب کو باندھے ہوئے ہو !
"ایک بھائی چارہ سب کو لئے ہو' سب کو دھیرج ہو !
"سب میں آتم سنیم کا بل ہوا !
"سب ایک دوسرے کی پچھلی باتوں کو بھول جائیں !
"سب سب کے بھوشیہ کو بنانا اپنا پاک فرض سمجھیں !
"امن اور خوشحالی سب میں لوٹ آویں !"

قرآن میں ایشور سے پرارتھنا کی گئی ہے :—
"اھدنا الصراط المستقیم !"
یعنی ہے ایشور ! ہم سب کو سیدھی راہ دکھلا !
وید میں لکھا ہے :—
"اگنے ! نئے سپتھا !"
یعنی ہے ایشور ہمیں سیدھے راستے پر لے چل !
مہابھارت میں لکھا ہے :—
"سروسترتو درگانی' سروبھدرانی پشیتو !
"سروہ سدبدھم آپنو تو' سروہ سروترنند تو !"

یعنی سب اپنی اپنی کٹھنائیوں کو پار کر سکیں' سب کو بھلائی ہی بھلائی دکھائی دے' سب کو نیک سمجھ ہو' اور سب سب جگہ خوش رہیں ! یہی سیدھا راستہ ہے .

اوم ! آمین ! ایمن !

चीन का भूमि सुधार आन्दोलन

श्री हरिवल्लभ परीख

[लेखक सितम्बर 1954 में शुभेच्छु मंडल के सदस्य की हैसियत से चीन गये थे. इस लेख में उनका आँखों देखा वर्णन है—एडीटर]

आपके पास कितनी जमीन है ? 2·6 माउ के हिसाब से 15 माउ जमीन है. मुस्कुराते हुये दक्षिण चीन के एक बौध मठाधीश ने कहा. चीन में आप कहीं भी चले जाइये पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक जमीन के बारे में आप चाहे किसान से पूछें, जमीनदार से पूछें, संत या महंत से पूछें—एक ही जवाब मिलेगा, 2·6 माउ. इस 2·6 माउ में क्या कमाल है, यह हमें विस्तार से समझना होगा.

चीन के भूमि सुधार आन्दोलन को हमें दो हिस्सों में बांटना होगा—एक जमीन का फिर से समान बटवारा और दूसरा ज्यादा पैदावार. अब हम इन दोनों सवालों पर सिलसिले वार विचार करें.

चीन भारत की तरह खेती प्रधान देश है. चीन की 60-70 फ़ीसदी जनता खेती पर ही गुज़ारा करती है. स्वाभाविक रूप से चीन के नेताओं ने ज़मीन के सवाल को सबसे पहले हाथ में लिया. उनका ऐसा करना मुनासिब और ज़रूरी था. किसी भी लोकशाही सरकार के अपने बहुजन समुदाय की मांगों व उनके सुख दुःख को समझने व सुलझाने की कोशिश सबसे पहले करनी ही चाहिये.

जनता का जीवन ज़मीन के साथ जुड़ा हुआ था. ज़मीन अधिकतर ज़मीनदारों के हाथ में थी. ज़मीन पर मज़दूरी करने वाले किसानों को तबाह करने व शोषण करने के अनेक अधिकार भी ज़मीनदारों को हासिल थे. ग़रज़ यह कि साधन सम्पत्ति और हुकूमत पर ज़मीनदारों का कब्ज़ा था. यही ज़रिया था जिससे वह चीन की मेहनतकश जनता का बेरोक टोक शोषण कर सकते थे.

1949 में लोकराज क़ायम हुआ. उसने अपनी ज़मीन सम्बन्धी नीति साफ़ की. ज़मीनदारों की सदियों से चली आती ताक़त को यह सबसे बड़ी चुनौती थी. सियासी ताक़त लोगों के हाथ में आ चुकी थी. हुकूमत पर जनता ने अधिकार पा लिया था. अब सवाल साधन और दौलत

چین کا بھومی سدھار آندولن

شری ہرولبھ پریکھ

[لیکھک ستمبر 1954 میں شوبھیچھو منڈل کے سدسیہ کی حیثیت سے چین گئے تھے ۔ اس لیکھ میں ان کا آنکھوں دیکھا ورنن ہے—اڈیٹر ۔]

آپ کے پاس کتنی زمین ہے ؟ 2.6 ماؤ کے حساب سے 15 ماؤ زمین ہے مسکراتے ہوئے دکھن چین کے ایک بودھ مٹھا دھیش نے کہا ۔ چین میں آپ کہیں بھی چلے جائیے پورب سے پچھم تک اور اتر سے دکھن تک زمین کے بارے میں آپ چاہے کسان سے پوچھیں، زمیندار سے پوچھیں، سنت یا مہنت سے پوچھیں، ایک ہی جواب ملے گا—2.6 ماو ۔ اس 2.6 ماؤ میں کیا کمال ہے، یہ ہمیں وستار سے سمجھنا ہو گا ۔

چین کے بھومی سدھار آندولن کو ہمیں دو حصوں میں بانٹنا ہوگا— ایک زمین کا پھر سے سمان بٹوارہ اور دوسرا زیادہ پیداوار ۔ اب ہم ان دونوں سوالوں پر سلسلے وار وچار کریں ۔

چین بھارت کی طرح کھیتی پردھان دیش ہے ۔ چین کی 60-70 فیصدی جنتا کھیتی پر ہی گذارہ کرتی ہے ۔ سوابھاوک روپ سے چین کے نیتاؤں نے زمین کے سوال کو سب سے پہلے ہاتھ میں لیا ۔ ان کا ایسا کرنا مناسب اور ضروری تھا ۔ کسی بھی لوک شاہی سرکار کے اپنے بہوجن سمودایہ کی مانگوں کو ان کے سکھ دکھ کو سمجھنے و سلجھانے کی کوشش سب سے پہلے کرنی ہی چاہئے ۔

جنتا کا جیون زمین کے ساتھ جوڑا ہوا تھا ۔ زمین ادھک تر زمینداروں کے ہاتھ میں تھی ۔ زمین پر مزدوری کرنے والے کسانوں کو تباہ کرنے و شوشن کرنے کے انیک ادھیکار بھی زمینداروں کو حاصل تھے ۔ غرض یہ کہ سادھن، سمپتی اور حکومت پر زمینداروں کا قبضہ تھا ۔ یہی ذریعہ تھا جس سے وہ چین کی محنت‌کش جنتا کا بےروک ٹوک شوشن کرسکتے تھے ۔

1949 میں لوک راج قائم ہوا ۔ اس نے اپنی زمین سمبندھی نیتی صاف کی ۔ زمینداروں کی صدیوں سے چلی آتی طاقت تو یہ سب سے بڑی چنوتی تھی ۔ سیاسی طاقت لوگوں کے ہاتھ میں آچکی تھی ۔ حکومت پر جنتا نے ادھیکار پا لیا تھا ۔ اب سوال سادھن اور دولت

को जनता के हाथ में पहुंचाने का था. 1949 से ही चीनी अगुवाओं ने जमीन के प्रश्न पर जनमत तैयार करना शुरू कर दिया था. 1950 में जमीन सुधार कानून बना दिया. इस कानून में जमीन सम्बन्धी सारे प्रश्नों पर क्रान्तिकारी तरीक़े से विचार किया गया. जमीन पर जोतने वाले का अधिकार, समान रूप से माना गया. आज तक के जमीन सम्बन्धी पुश्तैनी अधिकारों को इससे जबरदस्त चोट पहुंची. यहां एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा होता है. 1950 में इसे क़ानून का रूप देने में चीनी अगुवाओं ने जल्दबाजी से काम लिया है क्योंकि एक वर्ष में जनमत तैयार होना संभव नहीं माना जाता. यह प्रश्न सब को सूझेगा. हमने भी इस सवाल की सफ़ाई मांगी. इसकी सफ़ाई मैं आपको चीन के महान किसान नेता और मौजूदा लोकराज के कृषि मंत्री के मुख से सुनाउंगा. कृषि मंत्री श्री लियाओ-हू-मेन् ने बताया :--

"लोगों का मन बदले बिना कोई कानून कारगर साबित नहीं हो सकता, और इस जमीन सम्बन्धी क़ानून को तो उन सदियों पुरानी परम्परा का विरोध करना था जो अबाधित रूप से आज तक सत्ता पर आसीन थी. इसका मुक़ाबला जन जाग्रति के बिना असंभव था. सिर्फ़ क़ानून बनाकर हम इस सवाल का हल नहीं पा सकते थे. मैं यहां एक चीज़ साफ़ करना चाहूँगा. ज़मीन सुधार क़ानून के लिये लोकमत अनुकूल था काफ़ी से ज्यादा. मैं आगे चलकर यह भी कहना चाहूँगा कि लोक या जनता का अर्थ जिस देश के शब्दकोश में आम जनता, करोड़ों मेहनतकश किसान मजदूर होता हो, उन सब देशों में जीवन के इस बुनियादी हक़ को हासिल करने के लिये जनमत एकदम अनुकूल है. यह दूसरा सवाल है कि कहीं इसे हल करने वाला नेतृत्व ज़ोरदार रहा हो, कहीं कमज़ोर, कहीं इस अधिकार में रुकावट डालने वाले सत्ताधारी हैं, कहीं इनकी सत्ता टूटती जा रही है. प्यासों की जमात को यह पूछना कि आपका मत पानी पीने का हो तो आपको पानी दिया जायेगा, इसमें जितनी अक़्लमन्दी है, उतनी ही अक़्लमन्दी इस दलील में है कि जनमत तैयार होने पर जोतने वाले मेहनतकश मजदूरों को जमीन दिलाने का क़दम उठाया जायेगा. रोटी जन साधारण की बुनियादी जरूरत है. इसे पूरा करने के लिये जमीन का जातने वाले के पास होना भी उतना ही ज़रूरी है. जब उसे ज़मीन मिलती है तो जनता का खुश होना और उसके उत्साह में बढ़ती होना स्वाभाविक ही है. इसीलिये हमने एक वर्ष में ही क़ानून बनाया. इसका इतिहास बहुत पुराना है. जन आन्दोलन के इतिहास के साथ साथ इसका इतिहास चला है. इस प्रश्न पर हमारा नज़रिया बरसों पहले तय हो चुका था. जनता के

کو جنتا کے ہاتھوں میں پہنچانے کا تھا۔ 1949 سے ہی چینی اگواؤں نے زمین کے پرشن پر جنمت تیار کرنا شروع کر دیا تھا۔ 1950 میں زمین سدھار قانون بنا دیا۔ اس قانون میں زمین سمبندھی سارے پرشنوں پر کرانتکاری طریقے سے وچار کیا گیا۔ زمین پر جوتنے والے کا ادھیکار' سمان روپ سے مانا گیا۔ آج تک کے زمین سمبندھی پشتینی ادھیکاروں کو اس سے زبردست چوٹ پہنچی۔ یہاں ایک مہتوپورن سوال کھڑا ہوتا ہے۔ 1950 میں اسے قانون کا روپ دینے میں چینی اگواؤں نے جلدی بازی سے کام لیا ہے کیونکہ ایک برس میں جنمت تیار ہونا سمبھو نہیں جانا جاتا۔ یہ پرشن سب کو سوجھے گا۔ ہم نے بھی اس سوال کی صفائی مانگی۔ اس کی صفائی میں آپ کو چین کے مہان کسان نیتا اور موجودہ لوک راج کے کرشی منتری کے مکھ سے سناؤں گا۔ کرشی منتری شری لیا او ہو مین نے بتایا: —

"لوگوں کا من بدلے بنا کوئی قانون کارگر ثابت نہیں ہو سکتا' اور اس زمین سمبندھی قانون کو تو ان صدیوں پرانی پرمپرا کا ورودھ کرنا تھا جو اباددھت روپ سے آج تک ستا پر آسین تھی۔ اس کا مقابلہ جن جاگرتی کے بنا اسمبھو تھا۔ صرف قانون بناکر ہم اس سوال کا حل نہیں پا سکتے تھے۔ میں یہاں ایک چیز صاف کرنا چاہوں گا۔ زمین سدھار قانون کے لئے لوک مت انوکول تھا کافی سے زیادہ۔ میں آگے چل کر یہ بھی کہنا چاہوں گا کہ لوک یا جنتا کا ارتھ جس دیش کے شبدکوش میں عام جنتا' کروڑوں محنت کش کسان مزدور ہوتا ہو' ان سب دیشوں میں جیون کے اس بنیادی حق کو حاصل کرنے کے لئے جنمت ایک دم انوکول ہے۔ یہ دوسرا سوال ہے کہ کہیں اسے حل کرنے والا نیترتو زوردار رہا ہو کہیں کمزور' کہیں اس ادھیکار میں رکاوٹ ڈالنے والے ستادھاری ہیں' کہیں ان کی ستا ٹوٹتی جا رہی ہے۔ پیاسوں کی جماعت کو یہ پوچھنا کہ آپ کا مت پانی پینے کا ہو تو آپ کو پانی دیا جائے گا' اس میں جتنی عقلمندی ہے' اتنی ہی عقلمندی اس دلیل میں ہے کہ جنمت تیار ہونے پر جوتنے والے محنت کش مزدوروں کو زمین دلانے کا قدم اٹھایا جائے گا۔ روٹی جن سادھارن کی بنیادی ضرورت ہے۔ اسے پورا کرنے کے لئے زمین کا جوتنے والے کے پاس ہونا بھی اتنا ہی ضروری ہے۔ جب اسے زمین ملتی ہے تو جنتا کا خوش ہونا اور اس کے اتساہ میں بڑھتی ہونا سوابھاوک ہی ہے۔ اس لئے ہم نے ایک برس میں ہی قانون بنایا۔ اس کا اتہاس بہت پرانا ہے۔ جن آندولن کے اتہاس کے ساتھ ساتھ اس کا اتہاس چلا ہے۔ اس پرشن پر ہمارا نظریہ برسوں پہلے طے ہو چکا تھا۔ جنتا کے

सामने साफ़ था. इसीलिये ज़मीन बंटवारे का क़ानून इतना सफल हो सका और लोकप्रिय बना. जनमत हमारे साथ है, यही इसका सबसे बड़ा प्रमाण है."

इस चतुर लोकनायक की बात से हमें चीन की भूमि क्रान्ति की पूर्व भूमिका मिल जाती है. अब हम इस भूमिका की रोशनी में उन सारी बातों की जांच पड़ताल कर सकेंगे जो इस आन्दोलन के कारण उपस्थित हुई; मसलन् ज़मीनदारों के ऊपर क्या प्रतिक्रिया हुई ? धनी किसानों ने किसका साथ दिया ? ग़रीब किसानों, मज़दूरों व उद्योग-धन्धे वालों ने किस तरह संगठित होकर कोशिश की ? शहर के बुद्धि-जीवियों ने देहाती श्रमजीवियों के इस आन्दोलन को कैसे अपनाया ? 11 करोड़ 50 लाख एकड़ ज़मीन किस तरह बे ज़मीन व कम ज़मीन किसानों में बाँटी गई ?

सबसे पहले चीन के अगुवाओं ने मुल्क के सामने एक बात पेश की. उसमें उन्होंने साफ़ बताया कि जब तक ग़ल्ले की पैदावार देश में बढ़ेगी नहीं तब तक देश में औद्योगीकरण कभी सफल नहीं हो सकेगा. देश की ख़ुशहाली का पूरा दारोमदार ग़ल्ले की पैदावार पर है. अन्न उत्पादन बढ़ेगा तो ही देश का जीवन मान बढ़ेगा. जीवन मान के बढ़ने से आम जनता की मांगें बढ़ेंगी और उन्हें पूरा करने के लिये औद्योगीकरण ज़रूरी होगा और सफल भी. इसलिये ज़मीन सुधार आन्दोलन को सफल बनाने में हमें जी जान से जुट जाना चाहिये. इस अपील का चीनी जनता ने स्वागत किया और हृदय से इस काम को पूरा करने में सब कंधे से कंधा मिलाकर जुट गये. पांच-पचीस नहीं, सौ-हज़ार नहीं, 30-30 लाख मर्द-औरतों ने, जिनमें मिल मज़दूर से लगाकर मिल के मैनेजर भी शामिल थे, विद्वान थे, प्रोफ़ेसर थे, प्रधान और प्रधान की पत्नियां भी थीं, हरेक तबक़े के बुद्धि जीवी लोग थे, इस तरह सब कोई ज़माने की मांग को पूरा करने के लिये मैदान में आ खड़े हुये. इन 30 लाख सैनिकों को कोरिया के लड़ाई के मोरचे पर नहीं भेजा गया. इस महा फ़ौज को देहातों की ओर कूच करवाया गया. इस फ़ौज को नाम दिया गया, "भूमि सुधार दल." इन दलों को अनेक टुकड़ों में बांटा गया. सूबा, ज़िला, तहसील व देहात तक की योजना बनाई गई. हर टोली को योजना पूर्वक हिस्सा सौंप दिया गया. भूमि सुधार दलों का मुख्य काम था देहातों में किसान सभाओं की रचना करना. इन किसान सभाओं को अपने अधिकार व फ़र्ज़ का भान करवाना. वर्षों से दबे कुचले देहातों में हिम्मत पैदा करके उन्हें आगे बढ़ाना, और ज़मीनदारों के दांव पेंच से बचाना.

बहुत बड़े ज़मीनदार चांग-काई शेक के साथ भाग चुके

سامنے صاف تھا۔ اسی لئے زمین بٹوارے کا قانون اتنا سپھل ہو سکا اور لوک پریہ بنا۔ جنمت ہمارے ساتھ ہے' یہی اس کا سب سے بڑا پرمان ہے''

اس چتر لوک نایک کی بات سے ہمیں چین کی بھومی کرانتی کی پورو بھومکا مل جاتی ہے۔ اب ہم اس بھومکا کی روشنی میں اُن ساری باتوں کی جانچ پڑتال کر سکیں گے جو اِس اندولن کے کارن اُپستھت ہوئیں؛ مثلاً زمینداروں کے اُوپر کیا پرتکریا ہوئی ؟ دھنی کسانوں نے کسکا ساتھ دیا ؟ غریب کسانوں' مزدوروں و ادیوگ دھندھے والوں نے کس طرح سنگٹھت ہوکر کوشش کی ؟ شہر کی بدھ جیویوں نے دیہاتی شرم جیویوں کے اس اندولن کو کیسے اپنایا؟ 11 کروڑ 50 لاکھ ایکڑ زمین کس طرح بے زمین وکم زمین کسانوں میں بانٹی گئی ؟

سب سے پہلے چین کے اگواؤں نے ملک کے سامنے ایک بات پیش کی۔ اس میں انہوں نے صاف بتایا کہ جب تک غلے کی پیداوار دیش میں بڑھے گی نہیں تب تک دیش میں اودیوگی کرن کبھی سپھل نہیں ہو سکے گا. دیش کی خوشحالی کا پورا دارومدار غلے کی پیداوار پر ہے۔ ان اتپادن بڑھےگا تو ہی دیش کا جیون مان بڑھےگا۔ جیون مان کے بڑھنے سے جنتا کی مانگیں بڑھیں گی اور انہیں پورا کرنے کے لئے اودیوگی کرن ضروری ہوگا اور سپھل بھی۔ اس لئے زمین سدھار آندولن کو سپھل بنانےمیں ہمیں جی جان سے جٹ جانا چاہئے اس اپیل کا چینی جنتا نے سواگت کیا اور ہردئے سے اس کام کو پورا کرنے میں سب کندھے سے کندھا ملا کر جٹ گئے۔ پانچ پچیس نہیں' سو ہزار نہیں' 30-30 لاکھ مرد عورتوں نے' جن میں مل مزدور سے لگا کر مل کے منیجر بھی شامل تھے' ودوان تھے' پروفیسر تھے' پردھان اور پردھان کی پتنیاں بھی تھیں' ہر ایک طبقے کے بدھجیوی لوگ تھے' اس طرح سب کوئی زمانے کی مانگ کو پورا کرنے کے لئے میدان میں آ کھڑے ہوئے۔ ان 30 لاکھ سینکوں کو کوریا کے لڑائی کے مورچے پر نہیں بھیجا گیا۔ اس مہا فوج کو دیہاتوں کی اور کوچ کروایا گیا۔ اس فوج کا نام دیا گیا ''بھومی سدھار دل'' ۔ اِن دلوں کو انیک ٹکڑیوں میں بانٹا گیا۔ صوبہ' ضلع' تحصیل و دیہات تک کی یوجنا بنائی گئی۔ ہر ٹولی کو یوجنا پوروک حصہ سونپ دیا گیا۔ بھومی سدھار دلوں کام مکھیہ کا تھا دیہاتوں میں کسان سبھاؤں کی رچنا کرنا۔ ان کسان سبھاؤں کو اپنے ادھکار و فرض کا بھان کروانا۔ برسوں سے دبے' کچلے دیہاتوں میں ہمت پیدا کرکے انہیں آگے بڑھانا' اور زمینداروں کے داؤں پیچ سے بچانا ۔

بہت بڑے زمیندار چانگ-کائی-شیک کے ساتھ بھاگ چکے

थे. जो बचे थे उन्होंने शुरू शुरू में अपनी शक्ति भर जमीन सुधार आन्दोलन को नाकामयाब बनाने की कोशिश की. तरह तरह के प्रपंच रचे. कहीं कहीं किसान सभा के कार्य-कर्ताओं को पैसे और स्त्रियों द्वारा खरीद लिया. यह सब बाढ़ की तेज धार को लाठी से रोकने जैसा मूर्ख प्रयत्न साबित हुआ. वहां की जनता जाग उठी थी. उसे योग्य पथ मिल चुका था. पुरानी समाज व्यवस्था को खतम करने के लिये 30 लाख समाज सेवकों का दल बादल की तरह गरज कर टूट पड़ा था. प्रेम और शक्ति का मानवता रूपी महासागर आज आशा के आकाश पर से उमड़ पड़ा था. आज तक की निर्बल जनता इन 30 लाख साथियों के सहारे चलने के लिये सबल हो उठी थी.

जमीन सुधार दल के सैनिक तीन तीन महीने तक देहातों में बारी से ठहरते थे. अनेक कष्ट झेलते थे. जनता में नव जागृति फैलाते थे. सरकार की भूमि सुधार नीति का पूरा साथ देते थे. मुल्क किस राह पर जा रहा है, जाना चाहता है, इसकी पूरी तस्वीर जनता के सामने पेश करते थे.

शुरू के दिनों की कुछ गड़बड़ी को छोड़ कर अधिकतर जमीनदारों ने जमाने की मांग को समझ लिया. हवा के अनुकूल अपने को बनाने की कोशिश करने लगे. कुछ जमीनदार अब भी ऐसे बाकी थे जिनका अस्तित्व किसानों को अखर रहा था. जिनको देखकर किसानों के दिल आग बगूला हो उठते थे. ये वो जमीनदार थे जिन्होंने किसानों की बहिन बेटियों की इज्जत लूटी थी. आज भी ऐसी अनेक बेटियां इन लोगों के घर में दास कन्याओं के रूप में नरका-गार काट रही थीं, इनमें से कुछ जमीनदारों ने अनेक माताओं से उनके पुत्र छीन लिये थे. अनेक सधवाओं को विधवा बनाया था; दो दो चार चार साल के मासूम बच्चों से उनके मां बाप छीन लिये थे. बच्चों को सदा के लिये अनाथ बना दिया था. ऐसे कुछ जमीनदारों का अस्तित्व मुक्ति के बाद लोगों को हद से ज्यादा खटकने लगा. इन्हों ने नये लोकराज के सामने धूल उड़ाने का दुःसाहस करके अपने सर्वनाश को न्यौता दिया. जनता और नेताओं ने महसूस किया कि जन विकास के मार्ग में यह बहुत बड़ी अड़चने खड़ी कर रहे हैं. आगे बढ़ने से पहले जनता के दिलों से दर्द और डर को निकाल भगाना होगा. चीनी नेताओं ने ऐसे कुछ जालिम जमीनदारों को आम सभा के सामने पेश किया. किसानों को कहा कि निडर होकर अपनी बातें पेश करो.

एक स्त्री ने जमीनदार की तरफ उंगुली उठाकर कहा— "बताओ तुमने ही मेरी पांच माउ जमीन छीन ली थी न ? जब मेरा पति बिस्तरे पर बीमार पड़ा था, तुमने ही जापानियों को इसे महारोगी बताकर जिन्दा जला दिया ! बोलो

تھے ۔ جو بچے تھے انہوں نے شروع شروع میں اپنی شکتی بھر زمین سدھار آندولن کو ناکامیاب بنانے کی کوشش کی. طرح طرح کے پرپنچ رچے ۔ کہیں کہیں کسان سبھا کے کاریہ کرتاؤں کو پیسے اور استریوں دوارا خرید لیا ۔ یہ سب باڑھ کی تیز دھار کو لاٹھی سے روکنے جیسا مورکھ پریتن ثابت ہوا. وہاں کی جنتا جاگ اُٹھی تھی ۔ اسے یوگیہ پتھ مل چکا تھا ۔ پرانی سماج ویوستھا کو ختم کرنے کے لئے 30 لاکھ سماج سیوکوں کا دل بادل کی طرح گرج کر ٹوٹ پڑا تھا ۔ پریم اور شکتی کا مانوتا روپی مہاساگر آج آشا کے آکاش پر سے اُمڑ پڑا تھا ۔ آج تک کی نربل جنتا 30 لاکھ ساتھیوں کے سہارے چلنے کے لئے سبل ہو اُٹھی تھی ۔

زمین سدھار دل کے سینک تین تین مہینے تک دیہاتوں میں باری باری سے ٹھہرتے تھے ۔ انیک کشٹ جھیلتے تھے ۔ جنتا میں نوجاگرتی پھیلاتے تھے. سرکار کے بھومی سدھار نیتی کا پورا ساتھ دیتے تھے. ملک کس راہ پر جا رہا ہے' جانا چاہتا ہے' اس کی پوری تصویر جنتا کے سامنے پیش کرتے تھے ۔

شروع کے دنوں کی کچھ گڑبڑی کو چھوڑ کر ادھک‌تر زمینداروں نے زمانے کی مانگ کو سمجھ لیا ۔ ہوا کے انوکول اپنے کو بنانے کی کوشش کرنے لگے ۔ کچھ زمیندار اب بھی ایسے باقی تھے جن کا استِتو کسانوں کو اکھر رہا تھا ۔ جن کو دیکھ کر کسانوں کے دل آگ بگولا ہو اُٹھتے تھے ۔ یہ وہ زمیندار تھے جنہوں نے کسانوں کی بہن بیٹیوں کی عزت لوٹی تھی ۔ آج بھی ایسی انیک بیٹیاں ان لوگوں کے گھر میں داس کنیاؤں کے روپ میں نرکاگار کاٹ رہی تھیں' ان میں سے کچھ زمینداروں نے انیک ماتاؤں سے اُن کے پتر چھین لئے تھے ۔ انیک سدھواؤں کو ودھوا بنایا تھا؛ دو دو چار چار سال کے معصوم بچوں سے ان کے ماں باپ چھین لئے تھے ۔ بچوں کو سدا کے لئے اناتھ بنا دیا تھا. ایسے کچھ زمینداروں کا استِتو مکتی کے بعد لوگوں کو حد سے زیادہ کھٹکنے لگا ۔ اُنہوں نے نئے لوک‌راج کے سامنے دھول اُڑانے کا دوساہس کر کے اپنے سرووناش کو نیوتا دیا ۔ جنتا اور نیتاؤں نے محسوس کیا کہ جن وکاس کے مارگ میں یہ بہت بڑی اڑچن کھڑی کر رہے ہیں ۔ آگے بڑھنے سے پہلے جنتا کے دلوں سے درد اور ڈر کو نکال بھگانا ہوگا ۔ چینی نیتاؤں نے ایسے کچھ ظالم زمینداروں کو عام سبھا کے سامنے پیش کیا ۔ کسانوں کو کہا کہ نڈر ہو کر اپنی باتیں پیش کرو ۔

ایک استری نے زمیندار کی طرف اُنگلی اُٹھا کر کہا—"بتاؤ تم نے ہی میری پانچ ماو زمین چھین لی تھی نہ ؟ جب میرا پتی بسترے پر بیمار پڑا تھا' تم نے ہی جاپانیوں کو اسے مہاروگی بتا کر زندہ جلا دیا ! بولو

यह सच है या नहीं ?" ऐसे कुछ विशेष अत्याचारियों को मौत के घाट उतारा गया. ज्यादा तर जमीनदारों को सुधरने का मौक़ा दिया गया. उनको भी 2·6 माउ के हिसाब से जमीन दी गई ताकि वे भी मेहनत करके गुजारा कर सकें. समझदार और अच्छे जमीनदारों का ग्राम विकास योजनाओं में उपयोग कर लिया गया.

जमीनदारों की अधिकतर जायदाद को बेजमीन किसानों में बांटा गया. जरूरत से ज्यादा जो साधन सम्पत्ति थी वह भी जरूरतमंदों के पास पहुंचाई गई. बंटवारे में मझोले किसानों को न बहुत लाभ हुआ और न नुक़सान. ग़रीब किसान और बेजमीन मजदूरों को जिनकी तादाद काफ़ी बड़ी है, काफ़ी लाभ पहुंचा. इस प्रकार 11 करोड़ 55 लाख एकड़ जमीन 30 करोड़ किसानों में बांटी गई. बेकारी व बेरोजगारी की एक बहुत बड़ी समस्या इस से हल हो गई. लेन-देन व भूमि संबंधी जो भी काग़जी दस्तावेज़ मौजूद थे उन सब की आम जगह पर होली जलाई गई.

पूरे चीन में किसान सभाओं की रचना ने नया उत्साह व साहस पैदा किया, जनता को अपनी शक्ति का ख्याल हुआ और यह विश्वास भी पैदा हुआ कि हम भी कुछ कर सकते हैं. अब इन किसान सभाओं का सब से पहला काम था गांव में वर्गीकरण करने का. गांव को मोटे तौर पर पांच वर्गों में बांटा गया. जमीन की समस्या हल करने के लिये वर्गीकरण आवश्यक था :—

1. जमीनदार :—वह जो खुद काश्त न करता हो, किंतु ज्यादा जमीन का मालिक हो.

2. धनी किसान :—वह जो खुद काश्त करता हो, किन्तु अधिक जमीन दूसरों को उठवाता हो.

3. मझोला किसान :—जिसके पास जमीन अपनी हो, और किसी तरह गुज़ारा कर लेता हो.

4. ग़रीब किसान :—नाम मात्र की जमीन हो, काश्त करने पर भी जो भूखा रहता हो.

5. जो दूसरों की जमीन पर मजदूरी करते हों और पूरी मेहनत करने पर भी जिन्हें भर पेट रोटी न मिलती हो.

इसके आधार पर ग्राम सभाओं ने 1950 में बने जमीन सुधार क़ानून के अनुसार बंटवारे का कार्य शुरू किया. यह 1953 तक चलता रहा. आज पूरे चीन में जमीन का समान रूप से बंटवारा हो गया है. 2·6 माउ जमीन हर व्यक्ति को मिली जो बंटवारे के दिन तक जिन्दा था या पैदा हो चुका था. इस 2.6 माउ ने जादू का काम किया. यही वह जादू है जिसने चीन की जनता के मुरझाये हुये चेहरों में फिर से जान भर दी. इस क्रान्ति ने जनता में उत्साह पैदा किया. उत्पादन काफ़ी से ज्यादा बढ़ने लगा. 1949 से 1952 में 45 फ़ीसदी उत्पादन बढ़ा. लड़ाई से

یہ سچ ہے یا نہیں ؟" ایسے کچھ وشیش اتیاچاریوں کو موت کے گھاٹ اُتارا گیا۔ زیادہ تر زمینداروں کو سدھرنے کا موقع دیا گیا۔ ان کو بھی 2·6 ماو کے حساب سے زمین دی گئی تا کہ وے بھی محنت کر کے گذارہ کر سکیں۔ سمجھدار اور اچھے زمینداروں کا گرام وکاس یوجنا میں اپیوگ کر لیا گیا۔

زمینداروں کی ادھکتر جائداد کو بے زمین کسانوں میں بانٹا گیا۔ ضرورت سے زیادہ جو سادھن سمپتی تھی وہ بھی ضرورتمندوں کے پاس پہنچائی گئی۔ بٹوارے میں مجھولے کسانوں کو نہ بہت لابھ ہوا اور نہ نقصان۔ غریب کسان اور بے زمین مزدوروں کو جن کی تعداد کافی بڑی ہے' کافی لابھ پہنچا۔ اِس پرکار 11 کروڑ 55 لاکھ ایکڑ زمین 30 کروڑ کسانوں میں بانٹی گی۔ بیکاری و بے روزگاری کی ایک بہت بڑی سمسیا اس سے حل ہوگئی۔ لین دین و بھومی سمبندھی جو بھی کاغذی دستاویز موجود تھے ان سب کی عام جگہ پر ہولی جلائی گئی۔

پورے چین میں کسان سبھاؤں کی رچنا نے نیا اُتساہ و ساہس پیدا کیا' جنتا کو اپنی شکتی کا خیال ہوا اور یہ وشواس بھی پیدا ہوا کہ ہم بھی کچھ کر سکتے ہیں۔ اب ان کسان سبھاؤں کا سب سے پہلا کام تھا گاؤں میں ورگی کرن کرنے کا۔ گاؤں کو موٹے طور پر پانچ ورگوں میں بانٹا گیا۔ زمین کی سمسیا حل کرنے کے لئے ورگی کرن آوشیک تھا :—

1. زمیندار :—وہ جو خودکاشت نہ کرتا ہو' کنتو زیادہ زمین کا مالک ہو۔

2. دھنی کسان :—وہ جو خود کاشت کرتا ہو' کنتو ادھک زمین دوسروں کو اُٹھواتا ہو۔

3. مجھولا کسان :—جس کے پاس زمین اپنی ہو' اور کسی طرح گزارہ کر لیتا ہو۔

4. غریب کسان :—نام ماتر کی زمین ہو' کاشت کرنے پر بھی جو بھوکا رہتا ہو۔

5. جو دوسروں کی زمین پر مزدوری کرتے ہوں اور پوری محنت کرنے پر بھی جنہیں بھر پیٹ روٹی نہ ملتی ہو۔

اِس کے آدھار پر گرام سبھاؤں نے 1950 میں بنے زمین سدھار قانون کے انوسار بٹوارے کا کاریہ شروع کیا۔ یہ 1953 تک چلتا رہا۔ آج پورے چین میں زمین کا سمان روپ سے بٹوارہ ہو گیا ہے۔ 2.6 ماو زمین ہر ویکتی کو ملی جو بٹوارے کے دن تک زندہ تھا یا پیدا ہوچکا تھا۔ اس 2.6 ماو نے جادو کا کام کیا۔ یہی وہ جادو ہے جس نے چین کی جنتا کے مرجھائے ہوئے چہروں میں پھر سے جان بھردی۔ اس کرانتی نے جنتا میں اُتساہ پیدا کیا۔ اُتپادن کافی سے زیادہ بڑھنے لگا۔ 1949 سے 1952 میں 45 فیصدی اُتپادن بڑھا۔ لڑائی سے

पहले के 1937 के अंकों को लें तो भी 1952 में 9 फ़ीसदी उत्पादन बढ़ा. इससे किसानों की ख़रीद करने की शक्ति में 76 फ़ीसदी की बढ़ोतरी हुई. जिन दूकानों पर सिवा ज़मीनदारों के कोई नज़र नहीं आता था वहां आज किसानों के झुंड के झुंड जाते हैं.

अब आन्दोलन का दूसरा हिस्सा शुरू होता है जिसे हम भूमि सुधार व उत्पादन बढ़ाने वाला हिस्सा कहेंगे. हां, तो ज़मीन का बंटवारा हो जाने से ज़मीन के बहुत छोटे छोटे टुकड़े हो गये. भारत में भूदान आन्दोलन के कारण ज़मीन के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे, और फलस्वरूप देश के उत्पादन को नुक़सान पहुंचेगा, यह दलील हमारे भारत के अर्थ शास्त्रियों ने की थी और बड़ा शोर मचा दिया था. चीन के बंटवारे ने यह साबित कर दिया कि बड़े पैमाने पर भी छोटे टुकड़े होने से उत्पादन घटता नहीं बढ़ता है. भारत के भूमि आन्दोलन का भी यही अनुभव हो रहा है.

समाजवाद का आधार योजना है. वह योजनापूर्वक आगे बढ़ता है. ज़मीन के बंटवारे के मौक़े पर उसने समाज को पांच वर्गों में बांटा. ठीक वैसे ही उत्पादन बढ़ाने के लिये भी उसने किसानों को चार विभागों में बांट दिया.

<u>व्यक्तिगत खेती</u> :—जिनके पास पूरे साधन हों, जो ख़ुद काश्त करते हों, इसमें धनी किसानों का क़रीब क़रीब सारा वर्ग शामिल हुआ. उसके लिये यह अनुकूल योजना थी.

<u>सहयोगी दल खेती</u> :—इसे मिच्युअल एड टीम्स के नाम से प्रचारित किया. पुराने छोटे किसान व मजदूरों के पांच पांच दस दस कुटुम्बों को इकट्ठा करके उनकी सहयोगी टोलियां बनाई गईं. क्योंकि बंटवारे में सब को सब प्रकार के साधन व जानवर नहीं मिल सके थे इन टोलियों द्वारा वह कमी पूरी की गई. शुरू में गांव में ऐसी एक दो टोलियां मुश्किल से बनी थीं. मगर इसकी शान देखकर गांव गांव में टोलियों की धूम सी मच गई. कहीं कहीं तो ऐसी 15-20 टोलियां एक ही देहात में बन गई हैं. ज़मीन और साधनों पर का अधिकार इन दोनों क़िस्म की खेती में किसान का ही रहता है. चीन में 60 फ़ीसदी किसान आज इन सहयोगी दलों की खेती में शामिल हैं. व्यक्तिगत खेती से इस सहयोगी दल खेती में 20 फ़ीसदी उत्पादन अधिक बढ़ा है.

<u>खेती उत्पादक सहकारी मंडलियां</u> :—इसमें मझोले किसान व पुराने ज़मीदार ज़्यादा शरीक हुए. जो आज के पहले ख़ुद काश्त नहीं करते थे उनके लिये इसमें शरीक होना लाभदायक था. 10, 15 और कहीं कहीं अधिक कुटुम्बों की ऐसी मंडलियां हैं. खाद बीज आदि सारी खेती संबंधी बातों का ख़याल मंडली का व्यवस्थापक मंडल करता है. शामिल खेती होती है. उत्पादन को तीन हिस्सों में बांटा जाता है. (1) रिज़र्व फंड, जो नये मशीन साधन व ख़रीदने के काम

لے کے 1937 کے انکوں کو لیں تو بھی 1952 میں 9 فیصدی پادن بڑھا. اِس سے کسانوں کی خرید کرنے کی شکتی میں 76 یصدی کی بڑھوتری ہوئی . جن دوکانوں پر سوا زمینداروں کے وئی نظر نہیں آتا تھا' وھاں آج کسانوں کے جھنڈ کے جھنڈ اتے ھیں .

اب آندولن کا دوسرا حصہ شروع ھوتا ھے جسے ھم بھومی سدھار و اُتپادن بڑھانے والا حصہ کہیں گے . ھاں' تو زمین کا بٹوارہ ھوجانے سے زمین کے بہت چھوٹے چھوٹے ٹکڑے ھوگئے . بھارت میں بھودان آندولن کے کارن زمین کے ٹکڑے ٹکڑے ھو جائیں گے' اور پھل سروپ دیش کے اُتپادن کو نقصان پہونچےگا' یہ دلیل ھمارے بھارت کے ارتھ شاستریوں نے کی تھی اور بڑا شور مچا دیا تھا . چین کے بٹوارے نے یہ ثابت کر دکھایا کہ بڑے پیمانے پر بھی چھوٹے ٹکڑے ھونے سے اُتپادن بڑھتا نہیں گھٹتا ھے. بھارت کے بھومی آندولن کا بھی یہی انوبھو ھو رہا ھے .

سماج واد کا آدھار یوجنا ھے. وہ یوجنا پوروک آگے بڑھتا ھے. زمین کے بٹوارے کے موقع پر اُسنے سماج کو پانچ ورگوں میں بانٹا . ٹھیک ویسے ھی اُتپادن بڑھانے کے لئے بھی اُسنے کسانوں کو چار وبھاگوں میں بانٹ دیا .

<u>ویکتی گت کھیتی</u> :—جن کے پاس پورے سادھن ھوں' جو خود کاشت کرتے ھوں' اِسمیں دھنی کسانوں کا قریب قریب سارا ورگ شامل ھوا. اُسکے لئے یہ انوکول یوجنا تھی.

<u>سہیوگی دل کھیتی</u> :—اُسے موچوئیل ایڈ ٹیمس کے نام سے پرچارت کیا . پرانے چھوٹے کسان و مزدوروں کے پانچ پانچ دس دس کٹمبوں کو اِکٹھا کر کے اُنکی سہیوگی ٹولیاں بنائی گئیں . کیونکہ بٹوارے میں سب کے سب پرکار کے سادھن و جانور نہیں مل سکے تھے اِن ٹولیوں دوارا وہ کمی پوری کی گئی . شروع میں گاؤں میں ایسی ایک دو ٹولیاں مشکل سے بنی تھیں . مگر اُسکی شان دیکھ کر گاؤں گاؤں میں ٹولیوں کی دھوم سی مچ گئی . کہیں کہیں تو ایسی 15-20 ٹولیاں ایک ھی دیہات میں بن گئی ھیں . زمین اور سادھنوں پر کا ادھکار اِن دونوں قسم کی کھیتی میں کسان کا ھی رھتا ھے . چین میں 60 فیصدی کسان آج اِن سہیوگی دلوں کی کھیتی میں شامل ھیں . ویکتی گت کھیتی سے اِس سہیوگی دل کھیتی میں 20 فیصدی اُتپادن ادھک بڑھا ھے .

<u>کھیتی اُتپادک سہکاری منڈلیاں</u> :—اِسمیں مجھولے کسان و پرانے زمیندار زیادہ شریک ھوئے. جو آج کے پہلے خود کاشت نہیں کرتے تھے اُنکے لئے اِسمیں شریک ھونا لابھدایک تھا. 10-15 اور کہیں کہیں ادھک کٹمبوں کی اِیسی منڈلیاں ھیں. کھاد' بیج آدی ساری کھیتی سمبندھی باتوں کا خیال منڈلی کا ویوستھاپک منڈل کرتا ھے . شامل کھیتی ھوتی ھے. اُتپادن کو تین حصوں میں بانٹا جاتا ھے . (1) رزرو فنڈ' جو نئے مشین سادھن و خریدنے کے کام

ाता है. (2) एक हिस्सा सभासदों को ज़मीन, जानवर व ाधन के अनुपात में बांटा जाता है. (3) तीसरा हिस्सा ज़दूरी के रूप में बंटता है. स्त्री पुरुष सब की समान ज़दूरी मानी गई है. शुरू में उत्पादन का आधा हिस्सा ामीन के हिस्सेदारों के लिये अलग कर दिया जाता था. न्तु अब नये साधनों से उत्पादन बढ़ने लगा है. तब से ामीन का हिस्सा (Land Share) कम किया जा रहा . मज़दूरी का हिस्सा बढ़ाया जा रहा है. सहकारी दलों ी अपेक्षा सहकारी उत्पादन मंडलियों में 15 फ़ीसदी यादा उत्पादन हुआ है. चीन के ग्राम-अर्थशास्त्रियों के थनानुसार ज़मीन का हिस्सा अब धीरे धीरे घटता जायेगा. ौर वह दिन दूर नहीं जब लैन्ड शेयर ख़तम हो जायेगा ौर तब ही व्यक्तिगत ज़मीन पर अधिकार जमाये रखने का ोह किसान छोड़ देंगे. मगर आज सरकार इस दिशा में ल्दबाज़ी करना नहीं चाहती. इसके लिये किसान ख़ुद जब क तैयार नहीं होता, तब तक धीरज धरने का चीनी ागुवाओं ने फ़ैसला किया है. एक लाख से ज़्यादा ऐसी हकारी उत्पादन मंडलियां बन चुकी हैं.

संयुक्त खेती :—Collectivefarming

राज्य फार्म :—State Farm

इनकी संख्या आज बहुत कम है. क़रीब 250 से 300 युक्त खेती मन्डलियां हैं. अब छोटे किसानों में संयुक्त ती की ओर उत्साह बढ़ने लगा है. उन्हें यह महसूस होने गा है कि ज़मीन का हिस्सा बांट देने से हमें मज़दूरी धिक मिलेगी. यहां थोड़ा संघर्ष मझोले किसानों व धनी ़सानों के साथ आता है. मैंने आगे बताया कि इस दिशा जल्दबाज़ी करने के लिये चीनी नेता तैयार नहीं हैं. जन- ग्मति फैलाकर ही सच्चे ज्ञान व प्रत्यक्ष परिणामों के ाधार पर ही इस समस्या का हल किया जायेगा. आज तो हां संयुक्त खेती चल रही है वहां कुछ किसान इससे अलग ्हते हैं, तो भी उन पर दबाव नहीं डाला जाता.

<u>सरकारी सहायता</u> :—सरकार किसानों को और हयोगी मन्डलियों को खेती के साधन ख़रीदने के लिये, ोटी मोटी जल सिंचाई योजना बनाने के लिये, छोटी व लम्बी ़स्तों का क़रज़ा देती है. ब्याज का दर 3-4 फ़ीसदी से यादा नहीं होता. बड़े सरल तरीक़े से यह क़र्ज़ा किसानों क पहुँचाया जाता है. पीपुल्स बैंक (चीन की जनता बैंक) ी शाखाओं द्वारा चार वर्ष में 600 करोड़ रुपये का क़र्ज़ा ़सानों को दिया गया है. कोई भी किसान बड़ी सरलता से र्ज़ा उठा सकता है. अकाल या कम फ़सल के मौक़े पर बैंक ़ी की पूरी क़िस्त माफ़ कर देता है. विशेषता यह है कि ़सल का निर्णय ग्राम सभा करती है. ग्राम सभा के फ़ैसले ो स्थानीय सरकार (तहसील गवर्नमेंट) इस मामले में ाख़री मानती है.

تا ہے ۔ (2) ایک حصہ سبھاسدوں کو زمین' جانور و سادھن کے انوپات میں بانٹا جاتا ہے ۔ (3) تیسرا حصہ مزدوری کے روپ میں بنٹتا ہے ۔ استری پُروش سبکی سمان مزدوری مانی گئی ہے ۔ شروع میں اُتپادن کا آدھا حصہ زمین کے حصےداروں کے لئے الگ کر دیا جاتا تھا ۔ کنتو اب نئے سادھنوں سے اُتپادن بڑھنے لگا ہے ۔ تب سے زمین کا حصہ (Land Share) کم کیا جا رہا ہے ۔ سہکاری دلوں کی اپیکشا سہکاری اُتپادن منڈلیوں میں 15 فیصدی زیادہ اُتپادن ہوا ہے ۔ چین کے گرام ارتھ شاستریوں کے کتھنانُسار زمین کا حصہ اب دھیرے دھیرے گھٹتا جائیگا ۔ اور وہ دن دور نہیں جب لینڈ شیئر ختم ہو جائیگا اور تب ہی ویکتی گت زمین پر ادھیکار جمائے رکھنے کا موہ کسان چھوڑ دینگے ۔ مگر آج سرکار اس دشا میں جلدبازی کرنا نہیں چاہتی ۔ اِس کے لئے کسان خود جب تک تیار نہیں ہوتا' تب تک دھیرج دھرنے کا چینی اگواؤں نے فیصلہ کیا ہے ۔ ایک لاکھ سے زیادہ ایسی سہکاری اُتپادن منڈلیاں بن چکی ہیں ۔

Collective Farming—: سنیکت کھیتی

State Farm—: راجیہ فارم

اِنکی سنکھیا آج بہت کم ہے ۔ قریب 250 سے 300 سنیکت کھیتی منڈلیاں ہیں ۔ اب چھوٹے کسانوں میں سنیکت کھیتی کی اور اُتساہ بڑھنے لگا ہے ۔ اُنہیں یہ محسوس ہونے لگا ہے کہ زمین کا حصہ بانٹ دینے سے ہمیں مزدوری ادھک ملیگی ۔ یہاں تھوڑا سنگھرش مجھولے کسانوں و دھنی کسانوں کے ساتھ آتا ہے ۔ میں نے آگے بتایا کہ اِس دشا میں جلدبازی کرنے کے لئے چینی نیتا تیار نہیں ہیں ۔ جن جاگرتی پھیلا کر ہی سچے گیان و پرتیکش پرینامُوں کے آدھار پر ہی اِس سمسیا کا حل کیا جائیگا ۔ آج تو جہاں سنیکت کھیتی چل رہی ہے وہاں کچھ کسان اُس سے الگ رہتے ہیں' تو بھی اُن پر دباؤ نہیں ڈالا جاتا ۔

<u>سرکاری سہایتا</u>— سرکار کسانوں کو اور سہیوگی منڈلیوں کو کھیتی کے سادھن خریدنے کے لئے' چھوٹی موٹی جل سنچائی یوجنا بنانے کے لئے' چھوٹی و لمبی قسطوں کا قرضہ دیتی ہے ۔ بیاج کا در 3-4 فیصدی سے زیادہ نہیں ہوتا ۔ بڑے سرل طریقے سے یہ قرضہ کسانوں تک پہونچایا جاتا ہے ۔ پیپلس بینک (چین کی جنتا بینک) کی شاکھاؤں دوارا چار ورش میں 600 کروڑ روپئے کا قرضہ کسانوں کو دیا گیا ہے ۔ کوئی بھی کسان بڑی سرلتا سے قرضہ اُٹھا سکتا ہے ۔ اکال یا کم فصل کے موقع پر بینک قرضہ کی پوری قسط معاف کر دیتا ہے ۔ وشیشتا یہ ہے کہ فصل کا نرنئے گرام سبھا کرتی ہے ۔ گرام سبھا کے فیصلے کو استھانیہ سرکار (تحصیل گورنمنٹ) اس معاملے میں آخری مانتی ہے ۔

जमीन पर एक ही प्रकार का टेक्स लिया जाता है. यह टेक्स अनाज के रूप में इकट्ठा किया जाता है. यह टेक्स उत्पादन के रूप में इकट्ठा किया जाता है. यह टेक्स उत्पादन के 7 से 10 फ़ीसदी तक होता है.

चीनी गांव की झांकी :—किसी भी चीज की सच्ची कसौटी उसके परिणामों पर से ही हो सकती है. चीन के भूमि सुधार आंदोलन का क्या नतीजा हुआ, इसे समझने के लिये हमें चीन के देहातों की जांच करनी होगी. जेनचेन गाँव में 332 कुटुम्ब हैं. गांव की कुल आबादी 1542 व्यक्तियों की है. कुल जमीन 4300 माउ यानी 715 एकड़ है. 20 जमीनदार 22 मालदार किसान, 60 मझोले किसान, 110 ग़रीब किसान और 120 खेत मजदूर हैं. बंटवारे से पहले 95 फ़ीसदी जमीन 45 कुटुम्बों के पास थी. बाकी के 290 कुटुम्ब सिर्फ 5 फ़ीसदी जमीन पर गुज़ारा करते थे. 60 फ़ीसदी मकान और 10 फ़ीसदी खेती के साधन भी 42 कुटुम्बों के पास ही थे. बँटवारे के बाद सारा नक़्शा बदल गया. सब को 2.6 माउ के हिसाब से फी व्यक्ति जमीन मिली. अधिक मकान व साधनों का बंटवारा भी बेजमीन किसनों के बीच किया गया. बंटवारे का सारा काम ग्राम सभा ने ही पूरा किया.

मुक्ति से पहले यहाँ 1 माउ जमीन में 200 केटी: 1 1/4 रवल अनाज पैदा होता था. बटवारे के बाद 1952 में एक माउ जमीन में 340 केटी अनाज हुआ. 1953 में 469 केटी. 1951 में 7 सहकारी दल थे. 1952 में 18 बने. 1943 में खेती उत्पादक मन्डली की स्थापना की गयी. इसमें 34 कुटुम्ब शरीक हुए. मन्डली ने 7 मकान पशुओं के लिये बनाये. 12 मकान ग़ल्ला जमा करने के गोदाम के लिये बनाये. मुक्ति से पहले गाँव में 7 कमरे थे, मुक्ति के बाद आज 22 कमरे हैं. 7 वर्ष से उपर के बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं. रात्री वर्ग में जवान और बूढ़े भी. एक गाँव सभा है जो हर साल निश्चित सदस्यों द्वारा गाँव का कारोबार चलाती है. गाँव का सारा कारोबार गाँव सभा ही कर लेती है. जमीनदारों को ग्रामसभा में वोट देने का अधिकार नहीं है. किन्तु गाँव सभा ऐसा अधिकार दे सकती है, जब उसे यह महसूस हो कियह व्यक्ति समाज के हित में ही काम करेगा. जेनचेन गाँव सभा ने 22 में से 10 जमीनदारों को ऐसा अधिकार दे रखा है.

सहकारी उत्पादन खेती मन्डली के पास 1400 माउ जमीन है ! सहकारी दलों के पास 180 माउ जमीन है. 2720 माउ व्यक्तिगत किसानों के पास है.

गाँव में एक स्त्री मंडल है. वह मंडल गाँव की स्त्री सुधार आन्दोलन को संचालन करता है. निरक्षर स्त्रियों को पढ़ाने का काम मंडल करता है. छोटे छोटे घरेलू उद्योगों की तालीम भी यही मंडल देता है. सेना में जिन के पति गये हुए हैं, या जिनके बेटे सेना में गये है

زمین پر ایک ھی پرکار کا ٹیکس لیا جاتا ھے ۔ یہ ٹیکس اناج کے روپ میں اکٹھا کیا جاتا ھے ۔ یہ ٹیکس اتپادن کے روپ میں اکٹھا کیا جاتا ھے ۔ یہ ٹیکس اتپادن کے 7 سے 10 فیصدی تک ہوتا ھے ۔

چینی گاؤں کی جھانکی:—کسی بھی چیز کی سچی کسوٹی اسکے پرینامون پر سے ھی ھو سکتی ھے ۔ چین کے بھومی سدھار آندولن کا کیا نتیجہ ہوا، اسے سمجھنے کے لیئے ہمیں چین کے دیہاتوں کی جانچ کرنی ہوگی ۔ جین چین گاؤں میں 332 کٹمب ھیں ۔ گاؤں کی کل آبادی 1542 ویکتیوں کی ھے ۔ کل زمین 4300 ماؤ یعنی 715 ایکڑ ھے ۔ 20 زمیندار، 22 مالدار کسان، 60 منجھولے کسان، 110 غریب کسان اور 120 کھیت مزدور ھیں ۔ بٹوارے سے پہلے 95 فیصدی زمین 45 کٹمبوں کے پاس تھی ۔ باقی کے 290 کٹمب صرف 5 فیصدی زمین پر گذارا کرتے تھے ۔ 60 فیصدی مکان اور 10 فیصدی کھیتی کے سادھن بھی 42 کٹمبوں کے پاس ھی تھے ۔ بٹوارے کے بعد سارا نقشہ بدل گیا ۔ سب کو 2.6 ماؤ کے حساب سے فی ویکتی زمین ملی ۔ ادھک مکان و سادھنوں کا بٹوارہ بھی بے زمین کسانوں کے بیچ کیا گیا ۔ بٹوارے کا سارا کام گرام سبھا نے ھی پورا کیا ۔

مکتی سے پہلے یہاں 1 ماؤ زمین میں 200 کیٹی 1 1/4 رول اناج پیدا ھوتا تھا ۔ بٹوارے کے بعد 1952 میں ایک ماؤ زمین میں 340 کیٹی اناج ھوا ۔ 1953 میں 469 کیٹی ۔ 1951 میں 7 سہکاری دل تھے ۔ 1952 میں 18 بنے ۔ 1953 میں کھیتی اتپادک منڈلی کی استھاپنا کی گئی ۔ اسمیں 34 کٹمب شریک ھوئے ۔ منڈلی نے 7 مکان پشوؤں کے لیئے بنائے ۔ 12 مکان غلہ جمع کرنے کے گودام کے لیئے بنائے ۔ مکتی سے پہلے گاؤں میں 7 کمرے تھے، مکتی کے بعد آج 22 کمرے ھیں ۔ 7 ورش سے اوپر کے بچے اسکول میں پڑھتے ھیں ۔ راتری ورگ میں یوا اور بوڑھے بھی ۔ ایک گاؤں سبھا ھے، جو ھر سال نشچت سدسیوں دوارا گاؤں کا کاروبار چلاتی ھے ۔ گاؤں کا سارا کاروبار گاؤں سبھا ھی کر لیتی ھے ۔ زمینداروں کو گرام سبھا میں ووٹ دینے کا ادھیکار نہیں ھے، کنتو گاؤں سبھا ایسا ادھیکار دے سکتی ھے، جب اسے یہ محسوس ہو کہ یہ ویکتی سماج کے ھت میں ھی کام کریگا ۔ جین چین گاؤں سبھا نے 22 میں سے 10 زمینداروں کو ایسا ادھیکار دے رکھا ھے ۔

سہکاری اتپادن کھیتی منڈلی کے پاس 1400 ماؤ زمین ھے ! سہکاری دلوں کے پاس میں 180 ماؤ زمین ھے ۔ 2720 ماؤ ویکتی گت کسانوں کے پاس ھے ۔

گاؤں میں ایک استری منڈل ھے ۔ وہ منڈل گاؤں کی استری سدھار آندولن کو سنچالن کرتا ھے ۔ نرکشر استریوں کو پڑھانے کا کام منڈل کرتا ھے ۔ چھوٹے چھوٹے گھریلو ادیوگوں کی تعلیم بھی یہی منڈل دیتا ھے ۔ سینا میں جن کے پتی گئے ہوئے ھیں، یا جنکے بیٹے سینا میں گئے ھیں

ऐसी पत्नियों और माताओं का बोझ हलका करने की जिम्मेवारी भी इस संस्था की होती है.

जमीन के बारे में अब कोई झगड़ा नहीं है, और न अब सरकल इन्सपेक्टर या पटवारी की ही जरूरत है. सारा काम ग्रामसभा करती है. कर भी ग्रामसभा ही सरकारी गोदामों पर पहुंचाती है. गाँव के सब छोटे छोटे झगड़े ग्रामसभा में निपट जाते हैं. पुलिस के बारे में पूछते ही लोग कहते हैं कि अब पुलिस क्यों आने लगी। अब तो च्यॉंग की सरकार भाग चुकी है.

जमीनदारों को शुरू शुरू में कुछ बेचैनी रही। अब वे भी आनंद से निश्चिंत होकर रहने लगे हैं। मेहनत मशक्कत करने लगे हैं. अब उन्हें यह विश्वास हो गया है कि हम भी अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं. सब से बड़ी बात यह है कि अब जहाँ वे हैं, वहाँ से उन्हें कोई सरकार नीचे नहीं फेंक सकती. अब वे धरातल पर हैं जहाँ से वे कहीं नहीं गिर सकते. मेहनत की रोटी आनंद की प्रेरक होती है, इसलिये अब चीन के जमीनदारों में एक नया उत्साह और आत्मविश्वास देखने को मिलता है. जमीनदार, साधारण किसान, धनी किसान, खेत मजदूर सब आनंदपूर्वक अपने दिन बिता रहे हैं. मुल्क किस राह पर जा रहा है, जाना चाहता है, इसका सब को ज्ञान है. यह बहुत बड़ी बात है, जो हमने चीन के सभी देहातियों व कामदारों में देखी. चीन की खुशहाली का मुख्य कारण एक ही है, और वह है, एक ध्येय, एक स्वार्थ. स्वार्थों की विभिन्नता ही संघर्षों को जन्म देती है. जहाँ स्वार्थ समान होता है, एक होता है, वहाँ सब कोई एक ही दिशा में पूरे जोर से कोशिश करते हैं. समाज के सुख की यह गुरुचाबी है.

भूमि सुधार आंदोलन का फलितार्थ यह आया कि 30 करोड़ लोगों को काम मिला. 11 करोड़ 50 लाख एकड़ जमीन का समान बंटवारा हुआ जो चीन की कुल क़ाबिल काश्त जमीन का आधा हिस्सा है.

14 करोड़ मन ग़ल्ला जो कई तरह के लगानों के रूप में जमीनदार वसूल करते थे, यह किसानों के घर में बचा.

किसानों को मेहनत करने के साधन मिले. अनाज उगाने लायक़ जमीन मिली, रहने के लिये घर मिले.

ग़ल्ले के दाम तय करने के काम सट्टेबाजों के हाथ से निकलकर किसान पंचायतों के हाथ में आया, यह भी एक महत्वपूर्ण बात है जिसने उत्पादन के बढ़ाने में योग दिया है.

फ़ालतू समय में चलने वाले ग्रामीण धन्धों व गृह उद्योगों के लिये बाजार तय कर दिया. न उसे मिल उद्योग के साथ होड़ लेने की जरूरत है, और लाचारी से अपना

ایسی پتنیوں اور ماتاؤں کا بوجھ ہلکا کرنے کی ذمہ واری بھی اِس سنستھا کی ہوتی ہے ۔

زمین کے بارے میں اب کوئی جھگڑا نہیں ہے' اور نہ اب سرکل انسپکٹر یا پٹواری کی ہی ضرورت ہے ۔ سارا کام گرام سبھا کرتی ہے ۔ کر بھی گرام سبھا ہی سرکاری گوداموں پر پہونچاتی ہے ۔ گاؤں کے سب چھوٹے چھوٹے جھگڑے گرام سبھا میں نپٹ جاتے ہیں ۔ پولس کے بارے میں پوچھتے ہی لوگ کہتے ہیں کہ اب پولس کیوں آنے لگی ۔ اب تو چانگ کی سرکار بھاگ چکی ہے ۔

زمینداروں کو شروع شروع میں کچھ بےچینی رہی ۔ اب وے بھی آنند سے نشچنت ہو کر رہنے لگے ہیں ۔ محنت مشقت کرنے لگے ہیں ۔ اب اُنہیں یہ وشواس ہو گیا ہے کہ ہم بھی اپنے پیروں پر کھڑے ہو سکتے ہیں ۔ سب سے بڑی بات یہ ہے کہ اب جہاں وے ہیں' وہاں سے اُنہیں کوئی سرکار نیچے نہیں پھینک سکتی ۔ اب وے دھراتل پر ہیں جہاں سے وے کہیں نہیں گر سکتے ۔ محنت کی روٹی آنند کی پریرک ہوتی ہے' اسلئے اب چین کے زمینداروں میں ایک نیا اتساہ اور آتم وشواس دیکھنے کو ملتا ہے ۔ زمیندار' سادھارن کسان' دھنی کسان' کھیت مزدور سب آنند پوروک اپنے دن بتا رہے ہیں ۔ ملک کس راہ پر جا رہا ہے' جانا چاہتا ہے' اسکا سب کو گیان ہے ۔ یہ بہت بڑی بات ہے' جو ہم نے چین کے سبھی دیہاتیوں و کامداروں میں دیکھی ۔ چین کی خوشحالی کا مکھیہ کارن ایک ہی ہے' اور وہ ہے' ایک دھیئے' ایک سوارتھ ۔ سوارتھ کی وبھنتا ہی سنگھرشوں کو جنم دیتی ہے ۔ جہاں سوارتھ سمان ہوتا ہے' ایک ہوتا ہے' وہاں سب کوئی ایک ہی دشا میں پورے زور سے کوشش کرتے ہیں ۔ سماج کے سکھ کی یہ گرو چابی ہے ۔

بھومی سدھار آندولن کا پھلیتارتھ یہ آیا کہ 30 کروڑ لوگوں کو کام ملا ۔ 11 کروڑ 50 لاکھ ایکڑ زمین کا سمان بٹوارہ ہوا جو چین کی کل قابل کاشت زمین کا آدھا حصہ ہے ۔

14 کروڑ من غلہ جو کئی طرح کے لگانوں کے روپ میں زمیندار وصول کرتے تھے' یہ کسانوں کے گھر میں بچا ۔

کسانوں کو محنت کرنے کے سادھن ملے ۔ اناج اُگانے لائق زمین ملی' رہنے کے لئے گھر ملے ۔

غلے کے دام طے کرنے کے کام سٹے بازوں کے ہاتھ سے نکل کر کسان پنچایتوں کے ہاتھ میں آیا' یہ بھی ایک مہتوپورن بات ہے جسنے اُتپادن کے بڑھانے میں یوگ دیا ہے ۔

فالتو سمے میں چلنے والے گرامین دھندھوں و گرہ اُدیوگوں کے لئے بازار طے کردیا ۔ اُسے مل اُدیوگ کے ساتھ ہوڑ لینے کی ضرورت ہے اور نہ لاچاری سے اپنا

माल बेचने की. बस वह बनाता चला जाये। सरकार व समाज उसे योग्य क़ीमतों पर ख़रीद लेने के लिये बाध्य हैं. इस चीज़ ने अनेक ग़रीब बेकार कारीगरों में जान फूँक दी. जिसे हमेशा अपनी कला बेचने के लिये दर दर घूमना पड़ता था और आख़ीर में सस्ती क़ीमतों पर बेचने के लिये मजबूर होना पड़ता था, वह बात बिलकुल ख़तम हो गयी. इससे ग्रामीण धन्धों में बढ़ोतरी हुई.

यह सब चीज़ें हैं जो किसी भी समाज के सुखी व दुखी होने की बात बताती हैं. यह सब चीज़ होते हुए भी चीन स्वर्ग नहीं बना है. उसे अभी काफ़ी लम्बा सफ़र तय करना है. इतना ही हम कह सकते हैं कि वह आज ठीक दिशा में तेज़ी से चला जा रहा है.

مال بیچنے کی ۔ بس وہ بنتا چلا جائے ۔ سرکار و سماج اُسے وگیہ قیمتوں پر خرید لینے کے لئے بادھیہ ھے' اِس چیز ے انیک غریب بیکار کاریگروں میں جان پھونک دی ۔ جسے میشہ اپنی کلا بیچنے کے لئے در در گھومنا پڑتا تھا اور آخیر یں سستی قیمتوں پر بیچنے کے لئے مجبور ہونا پڑتا تھا' ہ بات بالکل ختم ہوگئی ۔ اِس سے گرامین دھندھوں میں ھوتری ہوئی ۔

یہ سب چیزیں ھیں جو کسی بھی سماج کے سکھی و دکھی ونے کی بات بتاتی ھیں ۔ یہ سب چیز ہوتے ہوئے بھی چین ورگ نہیں بنا ھے ۔ اُسے ابھی کافی لمبا سفر طے کرنا ھے ۔ اِتنا ی ہم کہہ سکتے ھیں کہ وہ آج ٹھیک دشا میں تیزی سے چلا تا رہا ھے ۔

एलबर्ट आइन्सटाइन

महात्मा भगवानदीन

सच्चे अर्थों में एलबर्ट आइन्सटाइन शान्ति के इतने इच्छुक थे जितने भारत के महात्मा गांधी. जैसे कोई गांधी जी से यह आशा नहीं कर सकता कि वह कभी कोई ऐसी बात कहेंगे जिससे कोई आदमी आफ़त में पड़ जाय, वैसे ही आइन्सटाइन महाशय से ऐसी आशा नहीं की जा सकती. गांधी जी दुनिया को आफ़त में डालें, क्या दुनिया का कोई भी आदमी ऐसा सोच सकता है ? आइन्सटाइन के बारे में भी ऐसा नहीं सोचा जा सकता. पर, सीधे ना सीधे आइन्सटाइन के सापेक्ष्य सिद्धान्त ने अमरीका को एटम बम बनाने के लिए प्रेरित किया. लेकिन एटम बम के बन जाने पर आइन्सटाइन ने कोशिश की कि उसका इस्तेमाल न हो, पर वह रोक न पाये.

इन शान्ति के देवता आइन्सटाइन का सापेक्ष सिद्धान्त बहुत बड़ी चीज है. उस पर किताबों पर किताबें लिखी जा चुकी हैं. उस सिद्धान्त के ठीक-ठीक जानकार इने-गिने हैं. फिर भी गणित के एक समीकरण में उनके सिद्धान्त का जो निचोड़ है, वह ऐसा जरूर है जो मामूली आदमी की समझ में आ जाय. यही वह निचोड़ है जिसने एटम बम को जन्म दिया. इसी ने शान्ति के दूत एलबर्ट आइन्सटाइन की शान्ति की सफ़ेद चादर पर एक धब्बा डाल दिया.

उस समीकरण का खुलासा यह है :—

जितनी मात्रा है यानी जितनी कोई चीज है, अगर उसको प्रकाश की चाल के वर्ग से गुणा किया जाय तो जो गुणनफल होगा, उतनी ही शक्ति उस चीज से पैदा होगी. दूसरे शब्दों में इसे यों समझिये, एक ग्राम मात्रा में नौ खरब वर्ग की शक्ति छिपी रहती है. यानी एक ग्राम पदार्थ, जो बिजली पैदा करेगा, वह ढाई करोड़ किलोवाट घंटों के बराबर होगी. किलोवाट को साफ़-साफ़ समझने के लिए इतना कहना काफ़ी है कि लखनऊ का रेडियो स्टेशन पचास किलोवाट ताक़त से चलाया जाता है. इसी से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि आइन्सटाइन ने दुनिया के लोगों के हाथ शक्ति के कितने बड़े खजाने की कोठरी के ताले की कुंजी सौंप दी.

अमरीका ने इसी कुंजी से ताला खोला और जापान पर एटम बम गिरा कर उस लड़ाई का अन्त कर दिया जो कुल लड़ाइयों में सबसे बड़ी थी जिनका इतिहास में ज़िक्र आता है.

ایلبرٹ آئنسٹائن

مہاتما بھگوان دین

سچے ارتھوں میں ایلبرٹ آئنسٹائن شانتی کے اتنے اچھک تھے جتنے بھارت کے مہاتما گاندھی ۔ جیسے کوئی گاندھی جی سے یہ آشا نہیں کر سکتا کہ وہ کبھی کوئی ایسی بات کہینگے جس سے کوئی آدمی آفت میں پڑ جائے، ویسے ہی آئنسٹائن مہاشئے سے ایسی آشا نہیں کی جا سکتی ۔ گاندھی جی دنیا کو آفت میں ڈالیں، کیا دنیا کا کوئی بھی آدمی ایسا سوچ سکتا ہے ؟ آئنسٹائن کے بارے میں بھی ایسا نہیں سوچا جا سکتا ۔ پر، سیدھے "بیدھے" آئنسٹائن کے ساپیکش سدھانت نے امریکہ کو ایٹم بم بنانے کے لئے پریرت کیا ۔ لیکن ایٹم بم کے بن جانے پر آئنسٹائن نے کوشش کی کہ اُسکا استعمال نہ ہو، پر وہ روک نہ پائے ۔

اِن شانتی کے دیوتا آئنسٹائن کا ساپیکش سدھانت بہت بڑی چیز ہے ۔ اُس پر کتابوں پر کتابیں لکھی جا چکی ہیں ۔ اُس سدھانت کے ٹھیک ٹھیک جانکار اِنے گنے ہیں ۔ پھر بھی گنت کے ایک سمیکرن میں اُنکے سدھانت کا جو نچوڑ ہے، وہ ایسا ضرور ہے جو معمولی آدمی کی سمجھ میں آجائے ۔ یہی وہ نچوڑ ہے جسنے ایٹم بم کو جنم دیا ۔ اِسی نے شانتی کے دوت ایلبرٹ آئنسٹائن کی شانتی کی سفید چادر پر ایک دھبہ ڈال دیا ۔

اُس سمیکرن کا خلاصہ یہ ہے :—

جتنی ماترا ہے یعنی جتنی کوئی چیز ہے، اگر اسکو پرکاش کی چال کے ورگ سے گنا کیا جائے تو جو گنن پھل ہوگا، اُتنی ہی شکتی اُس چیز سے پیدا ہوگی ۔ دوسرے شبدوں میں اِسے یوں سمجھیئے، ایک گرام ماترا میں نو کھرب ورگ کی شکتی چھپی رہتی ہے ۔ یعنی ایک گرام پدارتھ، جو بجلی پیدا کریگا وہ ڈھائی کروڑ کلووات گھنٹوں کے برابر ہوگی ۔ کلووات کو صاف صاف سمجھنے کے لئے اِتنا کہنا کافی ہے کہ لکھنؤ کا ریڈیو اسٹیشن پچاس کلووات طاقت سے چلایا جاتا ہے ۔ اِسی سے آپ اندازہ لگا سکتے ہیں کہ آئنسٹائن نے دنیا کے لوگوں کے ہاتھ شکتی کے کتنے بڑے خزانے کی کوٹھری کے تالے کی کنجی سونپ دی ۔

امریکہ نے اِس کنجی سے تالا کھولا اور جاپان پر ایٹم بم گرا کر اُس لڑائی کا انت کر دیا جو اُن لڑائیوں میں سب سے بڑی تھی جنکا اتہاس میں ذکر آتا ہے ۔

बहुत से लोगों ने लड़ाई की विजय का आनन्द माना होगा, पर अमरीकी आइन्सटाइन का दिल तो धक रह गया होगा.

आइन्सटाइन जैसे आदमियों को किसी देश का निवासी कहना भला नहीं मालूम होता. वे दुनिया भर को प्यार करते थे और सारी दुनिया उनका आदर करती है. आइन्सटाइन थे तो जर्मनी निवासी, पर न जाने क्यों हिटलर को मालूम हुआ कि वह उनकी आँख का काँटा है. दूसरी लड़ाई छिड़ने पर उनका जर्मनी से देश निकाला हो गया और वह अमरीका पहुंच गये. कुछ वर्षों से वह अमरीका वासी बन गये थे. इसलिये उन्हें अमरीकी कहना पड़ता है.

आइन्सटाइन ने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिया कि विज्ञान की सड़क की आखिरी मंजिल वही है जो धर्म की सड़क की. विज्ञान सत्य की खोज में लगता है. यही हाल धम का है. गाँधी जी के शब्दों में यदि सत्य परमात्मा है, तब यह कहा जा सकता है कि हर विज्ञानी परमात्मा की खोज में लगा हुआ है.

अपने को हिम्मत के साथ महात्मा कहने वाले बर्नार्डशा का तो यह कहना है कि 'जिन लोगों ने जगत का भेद खोला, आइन्सटाइन उनमें से एक थे' और शा ने ऐसे कुल तीन आदमी गिनाये हैं—एक पाइथागोरस, दूसरे न्यूटन, तीसरे आइन्सटाइन. (हमारे लिये इनके प्यारे नाम ये हो सकते हैं—बाबा पीथागोरस, महात्मा नवतन, महर्षि अंशतनु.) एशिया आम तौर से और भारत खास तौर से अपने नायकों को भगवान कहने लगता है, अवतार कहने लगता है. अगर कहीं आइन्सटाइन ने हमारे यहाँ जन्म लिया होता तो क्या उनकी गिनती अवतारों में नहीं हुई होती ?

आइन्सटाइन अपने समय के ऐसे प्रकाश थे जो उन आँखों में चकाचौंध डाल देते थे जो उल्टी राह चल रही होती थीं. तभी तो वह जमनी से निकाले गये और अमरीका में बंदी रहे, सीधे अर्थों में वह बंदी भले ही न हों. जितनी स्वाधीनता उन्हें मिलनी चाहिये, उतनी तो अमरीका उन्हें दे ही नहीं सकता था, क्योंकि अमरीका के पास उतनी स्वाधीनता है ही नहीं. पर दुख तो यह है कि उनको उतनी भी स्वाधीनता प्राप्त नहीं थी जितनी कि एक मामूली अमरीकी को है या जितनी हमें-तुम्हें भारत में हासिल है.

अमरीका में ऊंचे दर्जे का विज्ञानी होना और पराधीनता की कोठरी का बंदी होना एकार्थ वाची है. हो सकता है अमरीका वाले अपने देश के विज्ञानियों को सबसे बड़ा समझते हों और उन्हें आदमियों में हीरा मानते हों, पर इससे क्या ? हीरा बनना कौन अच्छी बात है ? हमारे देश के संत कबीर का कहना है :—

हीरा पाय गांठ गठयायो,
बार-बार वाय खोले क्यों ?

بہت سے لوگوں نے لڑائی کی وجئے کا آنند مانا ہوگا' پر امریکی آئنسٹائن کا دل تو دھک رہگیا ہوگا ۔

آئنسٹائن جیسے آدمیوں کو کسی دیش کا نواسی کہنا بھلا نہیں معلوم ہوتا ۔ وے دنیا بھر کو پیار کرتے تھے اور ساری دنیا اُنکا آدر کرتی ھے ۔ آئنسٹائن تھے تو جرمنی نواسی' پر نہ جانے کیوں ہٹلر کو معلوم ہوا کہ وہ اُنکی آنکھ کا کانٹا ھے ۔ دوسری لڑائی چھڑنے پر اُنکا جرمنی سے دیش نکالا ہوگیا اور وہ امریکہ پہونچ گئے ۔ کچھ ورشوں سے وہ امریکہ واسی بن گئے تھے ۔ اِسلئے اُنھیں امریکی کہنا پڑتا ھے ۔

آئنسٹائن نے اپنے جیون سے یہ سدھ کر دیا کہ وگیان کی سڑک کی آخری منزل وھی ھے جو دھرم کی سڑک کی ۔ وگیان ستیہ کی کھوج میں لگتا ھے ۔ یہی حال دھرم کا ھے ۔ گاندھی جی کے شبدوں میں یدی ستیہ پرماتما ھے' تب یہ کہا جا سکتا ھے کہ ہر وگیانی پرماتما کی کھوج میں لگا ہوا ھے ۔

اپنے کو ھمت کے ساتھ مہاتما کہنے والے برنرڈ شا کا تو یہ کہنا ھے کہ 'جن لوگوں نے جگت کا بھید کھولا' آئنسٹائن اُن میں سے ایک تھے' اور شانے ایسے کل تین آدمی گنائے ھیں—ایک پائتھا گورس' دوسرے نیوٹن' تیسرے آئنسٹائن ۔ (ھمارے لئے اُنکے پیارے نام یہ ھو سکتے ھیں—بابا پیتھا گورس' مہاتما نوتن' مہرشی انشتنو ۔) ایشیا عام طور سے اور بھارت خاص طور سے اپنے نایکوں کو بھگوان کہنے لگتا ھے' اوتار کہنے لگتا ھے ۔ اگر کہیں آئنسٹائن نے ھمارے یہاں جنم لیا ہوتا تو کیا اُنکی گنتی اوتاروں میں نہیں ھوئی ھوتی ؟

آئنسٹائن اپنے سمئے کے ایسے پرکاش تھے جو اُن آنکھوں میں چکاچوندھ ڈال دیتے تھے جو اُلٹی راہ چل رھی ھوتی تھیں ۔ تبھی تو وہ جرمنی سے نکالے گئے اور امریکہ میں بندی رھے' سیدھے ارتھوں میں وہ بندی بھلے ھی نہ ھوں ۔ جتنی سوادھینتا اُنھیں ملنی چاھئے' اُتنی تو امریکہ اُنھیں دے ھی نہیں سکتا تھا' کیونکہ امریکہ کے پاس اُتنی سوادھینتا ھے ھی نہیں ۔ پر دکھ تو یہ ھے کہ اُنکو اِتنی بھی سوادھینتا پراپت نہیں تھی جتنی کہ ایک معمولی امریکی کو ھے یا جتنی ھمیں تمھیں بھارت میں حاصل ھے ۔

امریکہ میں اُونچے درجے کا وگیانی ھونا اور پرادھینتا کی کوٹھری کا بندی ھونا ایکارتھ واچی ھے ۔ ھو سکتا ھے امریکہ والے اپنے دیش کے وگیانیوں کو سب سے بڑا سمجھتے ھوں اور اِنھیں آدمیوں میں ھیرا مانتے ھوں' پر اِس سے کیا ؟ ھیرا بننا کون اچھی بات ھے ؟ ھمارے دیش کے سنت کبیر کا کہنا ھے—

ھیرا پائے گانٹھ گٹھیایو'
بار بار وائے کھولے کیوں ؟

ठीक इसी तरह अमरीका वाले अपने विज्ञानियों को गांठ गठयाये रखते हैं.

21 मई की वाशिंगटन की खबर है कि एलबर्ट आइन्सटाइन एक विल यानी वसीयत करके छोड़ गये हैं. उस विल का एक्ज़ीक्यूटर यानी आमिल उन्होंने मिस्टर ओटोनेथन को बनाया है. ओटोनेथन न्यूयार्क यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर हैं. विल को पूरा करने के लिए ओटोनेथन को एक बार यूरोप जाना जरूरी है. ओटोनेथन ने यह सब बातें लिख कर अमरीका की सरकार को यूरोप के पासपोर्ट के लिए लिखा. अमरीका की स्टेट डिपार्टमेंट ने पासपोर्ट देने से इस बिना पर इन्कार कर दिया कि ओटोनेथन किसी ज़माने में जर्मन कम्यूनिस्ट पार्टी के मेम्बर रह चुके हैं और अब भी वह कम्यूनिस्ट विचारों से सहानुभूति रखते हैं.

प्रोफ़ेसर ओटोनेथन ने कहा है कि इस इन्कार के कारण वह स्वर्गीय आइन्सटाइन की वसीयत को पूरा नहीं कर सकते. (21 मई के फ्री प्रेस जर्नल से)

अमरीका ख़ास तौर से, दुनिया के और देश आम तौर से अपने ऊंचे दर्जे के विज्ञानियों के साथ या ज्ञानियों के साथ कैसा बर्ताव करते हैं, इसे हमारे पाठक अच्छी तरह समझ लें. यह आज़ाद कहलाने वाले मुल्क कितने आज़ाद हैं और आज़ादी के कितने गहरे पानी में हैं, इससे पता लग सकता है.

आइन्सटाइन की वसीयत के साथ जब यह व्यवहार हो रहा है तो आइन्सटाइन के साथ अमरीका का क्या व्यवहार रहा होगा, इससे अनुमान किया जा सकता है.

घृणा और हिंसा की नींव पर खड़ा शक्ति का महल हमारी राय में सदा काँपता हुआ मिलेगा. इसके विपरीत प्रेम या अहिंसा की नींव पर खड़ा शक्ति का महल स्थिर और अटल मिलेगा, परोपकार में लगा मिलेगा, सबको शरण देता मिलेगा. हिंसक शेर बेहद डरपोक होता है; पत्ते की खड़खड़ाहट से भागता है. जैसे वह शिकार की ताक में रहता है, वैसे ही वह यह भी समझता है कि कोई उसकी ताक में है. इसलिये वह डरता है और सतर्क रहता है. इसके विपरीत अहिंसक प्राणी कम डरपोक होते हैं. जितने अंशों में वह दूसरों को सताते हैं, उतने अंशों में वह भी डरपोक मिलेंगे. हमने हाल ही में किसी पत्र में पढ़ा है कि एक आदमी का यह अनुभव है कि कैसा ही जंगली जानवर क्यों न हो, अगर कोई उसके पास निडर होकर प्रेम-भाव से जायगा तो वह जानवर उसे कभी नहीं सतायेगा, उल्टा प्यार करने लगेगा. अमरीका, जो इतना डरा हुआ है (अगर ऐसा नहीं होता तो क्या अपने विज्ञानियों के साथ ऐसा व्यवहार करता ?) तभी तो उसे अपने देश में डर

ٹھیک اِسی طرح امریکہ والے اپنے وگیانیوں کو گانٹھ گٹھیائے رکھتے ہیں .

21 مئی کی واشنگٹن کی خبر ہے کہ ایلبرٹ آئنسٹائن ایک وِل یعنی وصیت کر کے چھوڑ گئے ہیں . اُس وِل کا ایکزیکیوٹر یعنی عامل اُنہوں نے مسٹر اوٹونیتھن کو بنایا ہے . اوٹونیتھن نیویارک یونیورسٹی میں پروفیسر ہیں . وِل کو پورا کرنے کے لئے اوٹونیتھن کو ایک بار یورپ جانا ضروری ہے . اوٹونیتھن نے یہ سب باتیں لکھکر امریکہ کی سرکار کو یورپ کے پاسپورٹ کے لئے لکھا . امریکہ کی اسٹیٹ ڈپارٹمینٹ نے پاسپورٹ دینے سے اِس بنا پر اِنکار کر دیا کہ اوٹونیتھن کسی زمانے میں جرمن کمیونسٹ پارٹی کے میمبر رہ چکے ہیں اور اب بھی وہ کمیونسٹ وچاروں سے سہانبھوتی رکھتے ہیں .

پروفیسر اوٹونیتھن نے کہا ہے کہ اِس اِنکار کے کارن وہ سورگیہ آئنسٹائن کی وصیت کو پورا نہیں کر سکتے . (21 مئی کے فری پریس جرنل سے)

امریکہ خاص طور سے 'دنیا کے اور دیش عام طور سے اپنے اونچے درجے کے وگیانیوں کے ساتھ یا گیانیوں کے ساتھ کیسا برتاؤ کرتے ہیں' اِسے ہمارے پاٹھک اچھی طرح سمجھ لیں . یہ آزاد کہلانے والے ملک کتنے آزاد ہیں اور آزادی کے کتنے گہرے پانی میں ہیں' اِس سے پتہ لگ سکتا ہے .

آئنسٹائن کی وصیت کے ساتھ جب یہ ویوہار ہو رہا ہے تو آئنسٹائن کے ساتھ امریکہ کا کیا ویوہار رہا ہوگا' اِس سے انومان کیا جا سکتا ہے .

گھرنا اور ہنسا کی نیو پر کھڑا شکتی کا محل ہماری رائے میں سدا کانپتا ہوا ملیگا . اسکے وپریت پریم یا اہنسا کی نیو پر کھڑا شکتی کا محل استھر اور اٹل ملیگا' پروپکار میں لگا ملیگا' سبکو شرن دیتا ملیگا . ہنسک شیر بے حد ڈرپوک ہوتا ہے؛ پتے کی کھڑ کھڑاہٹ سے بھاگتا ہے . جیسے وہ شکار کی تاک میں رہتا ہے' ویسے ہی وہ یہ بھی سمجھتا ہے کہ کوئی اسکی تاک میں ہے . اِسلئے وہ ڈرتا ہے اور سترک رہتا ہے . اسکے وپریت اہنسک پرانی کم ڈرپوک ہوتے ہیں . جتنے انشوں میں وہ دوسروں کو ستاتے ہیں' اُتنے انشوں میں وہ بھی ڈرپوک ملینگے ہمنے حال ہی میں کسی پتر میں پڑھا ہے کہ ایک آدمی کا یہ انوبھو ہے کہ کیسا ہی جنگلی جانور کیوں نہ ہو' اگر کوئی اُسکے پاس نڈر ہو کر پریم بھاؤ سے جائیگا تو وہ جانور اُسے کبھی نہیں ستائے گا' الٹا پیار کرنے لگیگا. امریکہ' جو اتنا ڈرا ہوا ہے (اگر ایسا نہیں ہوتا تو کیا اپنے وگیانیوں کے ساتھ ایسا ویوہار کرتا ؟) تبھی تو اُسے اپنے دیش میں ڈر

दिखाई दे रहा और दूसरे देशों से डर की फ़ौजें आती दिखाई दे रही हैं.

महर्षि अंशतनु ! आप धन्य हैं ! आप अमरीका में थे, पर अपनी मर्ज़ी से नहीं. शेर का वश चलता तो क्या वह पिंजड़े में रहता ? आप अमरीका में बंदी थे, अपनी मर्ज़ी से नहीं. प्रकाश का बल चलता तो क्या वह चिमनी के अंदर बंद रहता और रंग-बिरंगी चिमनियों का शिकार बनता ? आप जिन अंशों में आज़ाद थे, उन अंशों में दुनिया के लिए आप आदर्श हैं. इसराईल ने आपके सामने प्रेज़ीडेन्टी भेंट की. आपने उसे छूकर लौटा दिया और कह दिया कि "मैं प्रेसीडेन्टी के लिए पैदा नहीं हुआ हूँ. मैं जिस काम के लिए पैदा हुआ हूँ, उसमें ख़ुश हूँ." आप त्याग के लिए आज़ाद थे. त्याग आपका स्वभाव बन गया था. त्याग करने के लिये आपको तनिक भी ज़ोर नहीं लगाना पड़ता था. पार्सल पर लिपटे हुए काग़ज़ को उतारने में किसी को प्रयास भी क्यों करना पड़े ? वह गोंद से चिपका हुआ होता ही नहीं. यही हाल आपका था. आप में ममता मोह नाम के लिए थे. जो कुछ आपके पास था या व्यवहार के नाते आपका समझा जा सकता था, वह सब परिग्रह तो था, पर उसके पीछे न मोह था न ममता थी. तो फिर उसके अलग होते हुए आपको दुख-सुख भी क्या होता ?

देह छोड़ते समय हम आपके पास नहीं थे, पर विश्वास के साथ कह सकते हैं कि आपने देह ऐसे ही छोड़ी होगी जैसे कबीर ने. "दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया." इस दुनिया को छोड़ते समय अगर कोई भारतीय आपके पास होता तो वह इस पहलू पर नज़र डालता. भला अमरीकी क्यों इस पहलू को देखने लगे ?

महर्षि अंशतनु ! आप इस दुनिया में ऐसे उलट-फेर कर गये, जो जहां एक ओर बड़े-बड़े विद्वानों के परे हैं, वहां दूसरी ओर ऐसे भी हैं, जो हर चलते-फिरते की समझ में आ सकते हैं. आपने यह कहकर कितनी बड़ी बात कह दी कि शक्ति और पदार्थ एक ही चीज़ है, यानी मेटर और इनर्जी एक ही चीज़ के दो पहलू हैं, एक द्रव्य की दो पर्याय हैं. इतनी बड़ी हिम्मत कौन कर सकता था ? और यह सब सुझाया आपको आपकी पैनी निगाह ने. अब तक लोग यही समझे हुये थे कि सेर भर पानी सेर भर भाप बन जाता है. यह आप ही को पता चला कि नहीं, कुछ कम सेर भाप बनता है. वह कभी कितनी ही कम क्यों न हो, वही शक्ति है. तभी तो आप कह सके कि इतना पानी भाप बनाकर क्यों नष्ट करते हो ? जितनी ताक़त इस भाप में है, उतनी ताक़त तो एक बूँद पानी के लाखवें हिस्से में मौजूद है.

دکھائی دے رہا ھے اور دوسرے دیشوں سے ترکی فوجیں آتی دکھائی دے رہی ھیں ۔

مہرشی انشتنو ! آپ دھنیہ ھیں ! آپ امریکہ میں تھے' پر اپنی مرضی سے نہیں ۔ شیر کا وش چلتا تو کیا وہ پنجرے میں رھتا ؟ آپ امریکہ میں بندی تھے' اپنی مرضی سے نہیں ۔ پرکاش کا بل چلتا تو کیا وہ چمنی کے اندر بند رھتا اور رنگ برنگی چمنیوں کا شکار بنتا ؟ آپ جن انشوں میں آزاد تھے' اُن انشوں میں دنیا کے لئے آپ آدرش ھیں ۔ اسرائیل نے آپکے سامنے پریسیڈینٹی بھینٹ کی. آپ نے اُسے چھوکر لوٹا دیا اور کہہ دیا کہ "میں پریسیڈینٹی کے لئے پیدا نہیں ھوا ھوں. میں جس کام کے لئے پیدا ھوا ھوں' اسمیں خوش ھوں." آپ تیاگ کے لئے آزاد تھے ۔ تیاگ آپکا سوبھاؤ بن گیا تھا ۔ تیاگ کرنے کے لئے آپکو تنک بھی زور نہیں لگانا پڑتا تھا ۔ پارسل پر لپٹے ھوئے کاغذ کو اُتارنے میں کسی کو پریاس بھی کیوں کرنا پڑے ؟ وہ گوند سے چپکا ھوا ھوتا ھی نہیں. یہی حال آپکا تھا ۔ آپ میں ممتا موہ نام کے لئے تھے ۔ جو کچھ آپکے پاس تھا یا ویوھار کے ناتے آپکا سمجھا جا سکتا تھا' وہ سب پریگرہ تو تھا' پر اُسکے پیچھے نہ موہ تھا نہ ممتا تھی ۔ تو پھر اُسکے الگ ھوتے ھوئے آپکو دکھ سکھ بھی کیا ھوتا ؟

دیہہ چھوڑتے سمئے ھم آپکے پاس نہیں تھے' پر وشواس کے ساتھ کہہ سکتے ھیں کہ آپنے دیہہ ایسے ھی چھوڑی ھوگی جیسے کبیر نے "داس کبیر جتن سے اوڑھی' جیوں کی تیوں دھر دینی چدریا." اِس دنیا کو چھوڑتے سمئے اگر کوئی بھارتیہ آپ کے پاس ھوتا تو وہ اِس پہلو پر نظر ڈالتا ۔ بھلا امریکی کیوں اِس پہلو کو دیکھنے لگے ؟

مہرشی انشتنو ! آپ اِس دنیا میں ایسے اُلٹ پھیر کر گئے' جو جہاں ایک اُور بڑے بڑے ودوانوں کے پرے ھیں' وھاں دوسری اُور ایسے بھی ھیں' جو ھر چلتے پھرتے کی سمجھ میں آسکتے ھیں ۔ آپ نے یہ کہہ کر کتنی بڑی بات کہہ دی کہ شکتی اور پدارتھ ایک ھی چیز ھے' یعنی میٹر اور اِنرجی ایک ھی چیز کے دو پہلو ھیں' ایک درویہ کی دو پریایہ ھیں ۔ اِتنی بڑی ھمت کون کر سکتا تھا ؟ اور یہ سب سجھایا آپ کو آپ کی پینی نگاہ نے ۔ اب تک لوگ یہی سمجھے ھوئے تھے کہ سیر بھر پانی سیر بھر بھاپ بنتا ھے. یہ آپ ھی کو پتہ چلا کہ نہیں' کچھ کم سیر بھاپ بنتا ھے. وہ کبھی کتنی ھی کم کیوں نہ ھو' وھی شکتی ھے ۔ تبھی تو آپ کہہ سکے کہ اِتنا پانی بھاپ بنا کر کیوں نشٹ کرتے ھو ؟ جتنی طاقت اس بھاپ میں ھے' اُتنی طاقت تو ایک بوند پانی کے لاکھویں حصہ میں موجود ھے ۔

यह सब विचार-क्रान्ति नहीं तो क्या है ? इसके लिये हम आपको जितना बड़ा समझें, उतना थोड़ा.

आकाश और काल, एक द्रव्य की दो पर्याय हैं, एक सिक्के के दो पहलू हैं, दोनों एक हैं—इस बात को आपने ऐसे कह डाला, जैसे कोई कह बैठता है कि एक और एक दो होते हैं. पर यह कितनी बड़ी बात है ! बड़े-बड़े विज्ञानियों के गले उतरने में अटकी थी ! पर आज है कि उसे हमा-शुमा समझ लेता है. इसके बारे में आपका कहना है कि काल के बिना आकाश की बात ही नहीं की जा सकती. अकेले काल को कहीं जगह ही नहीं है. "इतने घंटे में" कह कर हमें यह कहना ही पड़ेगा, "इतनी दूर गये." काल की बात कही कि आकाश आया. अब तो दूरी भी घंटों-मिन्टों में नापी जाने लगी !

यह विचार-क्रान्ति नहीं तो क्या है ? आपके यह एह-सान कभी भुलाये जा सकते हैं ?

18 अप्रैल सन् 1955 को आप हमें छोड़ कर चल दिये. अब आप हम में नहीं हैं. यों विचारों से आप सारी दुनिया में मौजूद हैं. अब हम में से कुछ आपके गीत गा सकते हैं. आपकी यादगार खड़ी कर सकते हैं. इने-गिने आपके जीवन का अनुकरण कर सकते हैं, उससे भी कम उस राह लग सकते हैं, जिस राह आप चले थे. वे सत्य की ओर कुछ क़दम बढ़ सकते हैं और दुनिया को उस ओर ले जा सकते हैं.

आपके लिए हम क्या प्रार्थना करें, यह हम कुछ नहीं जानते. इस बारे में आप हमें कुछ नहीं बता गये. हां, अपनी चदरिया का एक कोना यानी अपना सिर आप डाक्टरों के सुपुर्द कर गये हैं, उसे अध्ययन करके, देखें डाक्टर लोग क्या कहते हैं ?

अमन या जंग

"अगर दुनिया की जनता अमन क़ायम रखने और आख़िर तक अमन की रक्षा करने का काम ख़ुद अपने हाथ में ले ले तो अमन क़ायम रहेगा और मज़बूती पकड़ेगा. लेकिन अगर जंग की बातें फैलाने वाले दुनिया की आम जनता को झूटी बातों के जाल में फंसाने, उन्हें धोका देने और एक नई बड़ी जंग में घसीट लाने में कामयाब हो गये तो मुमकिन है जंग न टल सके."

—स्टालिन

یه سب وچار کرانتی نهیں تو کیا هے ؟ اسکے لئے هم آپکو جتنا بڑا سمجهیں، اُتنا تهوڑا .

آکاش اور کال ایک دروبه کی دو پربایه هیں، ایک سکے کے دو پہلو هیں، دونوں ایک هیں—اِس بات کو آپنے ایسے کہه ڈالا، جیسے کوئی کہه بیٹهتا هے که ایک اور ایک دو هوتے هیں. پر یه کتنی بڑی بات هے ! بڑے بڑے وگیانوں کے گلے اُترنے میں اٹکی تهی ! پر آج هے که اُسے هما شما سمجه لیتا هے . اِسکے بارے میں آپکا کہنا هے که، کال کے بنا آکاش کی بات هی نهیں کی جا سکتی . اکیلے کال کو کہیں جگهه هی نهیں هے . "اِتنے گهنٹے میں" کہه کر همیں یه کہنا هی پڑیگا، "اِتنی دور گئے." کال کی بات کہی که آکاش آیا . اب تو دوری بهی گهنٹوں منٹوں میں ناپی جانے لگی !

یه وچار کرانتی نهیں تو کیا هے ؟ آپکے یه احسان کبهی بهلائے جاسکتے هیں ؟

18 اپریل سن 1955 کو آپ همیں چهوڑ کر چل دئے . اب آپ هم میں نهیں هیں . یوں وچاروں سے آپ ساری دنیا میں موجود هیں . اب هم میں سے کچھ آپکے گیت گا سکتے هیں . آپکی یادگار کهڑی کر سکتے هیں . اِنے گنے آپکے جیون کا انوکرن کرسکتے هیں، اُس سے بهی کم اُس راه لگ سکتے هیں، جس راه آپ چلے تهے . وے ستیه کی اور کچھ قدم بڑه سکتے هیں اور دنیا کو اُس اور لے جا سکتے هیں .

آپکے لیئے هم کیا پرارتهنا کریں، یه هم کچھ نهیں جانتے . اِس بارے میں آپ همیں کچھ نهیں بتاگئے . هاں، اپنی چدریا کا ایک کونا یعنی اپنا سر آپ ڈاکٹروں کے سپرد کر گئے هیں، اُسے ادهین کرکے، دیکهیں ڈاکٹر لوگ کیا کہتے هیں ؟

امن یا جنگ

" اگر دنیا کی جنتا امن قائم رکهنے اور اخر تک امن کی رکشا کرنے کا کام خود اپنے هاته میں لے لے تو امن قائم رهےگا اور مضبوطی پکڑےگا . لیکن اگر جنگ کی باتیں پهیلانے والے دنیا کی عام جنتا کو جهوٹی باتوں کے جال میں پهنسانے، انهیں دهوکا دینے اور ایک نئی بڑی جنگ میں گهسیٹ لانے میں کامیاب هوگئے تو ممکن هے جنگ نه ٹل سکے ."

—استالن

मेरी मां बोली का रूप

श्री मदन गोपाल

मेरी मां मुज़फ़्फ़रनगर के ज़िले की थी. उसकी बोली मुज़फ़्फ़रनगर के ज़िले में ही नहीं आस पास के कुछ ज़िलों में लगभग सब लोग बोलते हैं. कुछ तिजारती, कुछ तवारीख़ी और बहुत कुछ जुग़राफ़ई कारनों से यह बोली धीरे धीरे, चुपके चुपके देस में ऐसी फैली कि सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में समझी जाने लगी और उस पुल की वजह से अब यह मुमकिन हो गया कि एक आम अनपढ़ आदमी इस देस के किसी कोने में जाकर गुज़ारा कर सकता है. इसलिये गो उसे देस की आम बोली हम कह सकते हैं, उसे क़ौमी बोली या राष्ट्रभाषा कहना ठीक नहीं. क़ौमी बोली तो वह ही हो सकती है जो सारे देस के कम से कम सत्तर फ़ीसदी अपने घरों में बोलते हों. यहां उल्टा हिसाब है. यहां सत्तर से भी ज्यादा फ़ीसदी अपने कुनबों में अपनी अपनी और बोली बोलते हैं. इसलिये अगरचे यह देस की आम बोली है, उसे देस बोली कहना ठीक नहीं.

उस बोली के नाम के बारे में कुछ मतभेद है. चूंकि मैं यहां नाम के झगड़े में नहीं पड़ना चाहता इसलिये इस लेख में उसे मेरी मां-बोली या मेरी बोली कहूँगा. और बोलियों की तरह मेरी बोली भी गिन्ती की कुछ ख़ास आवाज़ों के जोड़ से बनी हुई है, इसलिये उसका रूप परखने के लिये उसकी ख़ास आवाज़ों और उनके जोड़-तोड़ का इल्म जरूरी है. मेरी बोली में कहने को तो दस लेकिन असल में कुल छै स्वरें हैं. कहने को तो अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ और ओ, औ दस स्वरें हैं लेकिन सिवाय छोटे और बड़े अ के जोड़े के बाक़ी के चारों जोड़े आपस में भेदरू नहीं हैं. भेदरू उन आवाज़ों को कहते हैं जिनके आपस में बदल जाने से सैकड़ों लफ़्ज़ों के माने कुछ के कुछ हो जाते हैं, मसलन कल काल, खल खाल ऐसे बहुत से जोड़े लफ़्ज़ों के मेरी बोली में हैं जिनके माने सिर्फ़ छोटे और बड़े अ के हेरफेर से बदल जाते हैं. बाक़ी चार जोड़ों में यह भेद बहुत कम पाया जाता है. मैं जानता हूँ कि कुछ जोड़े मेरी बोली में ऐसे आ गये हैं जिनके छोटी बड़ी इ, उ वग़ैरा के हेरफेर से माने बदल जाते हैं, लेकिन यह जोड़े बहुत कम ही नहीं उनमें से अकसर ऐसे हैं जो हम पढ़े हुए लोगों की ग़फ़लत से या शेख़ी से हमारे पढ़े हुओं की बोली में आ गये हैं, लेकिन जो बहुत दिन मेरी बोली में टिक नहीं सकते. वजह

میری ماں بولی کا روپ

شری مدن گوپال

میری ماں مظفرنگر کے ضلع کی تھی-اسکی بولی مظفرنگر کے ضلع میں ہی نہیں آس پاس کے کچھ ضلعوں میں لگ بھگ سب لوگ بولتے ھیں ۔ کچھ تجارتی' کچھ تواریخی اور بہت کچھ جغرافئی کارنوں سے یہ بولی دھیرے دھیرے' چپکے چپکے دیس میں ایسی پھیلی کہ سارے ھندستان اور پاکستان میں سمجھی جانے لگی اور اس پل کی وجہ سے اب یہ ممکن ھوگیا کہ ایک عام انپڑھ آدمی اس دیس کے کسی کونے میں جاکر گذارہ کر سکتا ھے ۔ اسلئے گو اسے دیس کی عام بولی ھم کہہ سکتے ھیں' اسے قومی بولی یا راشٹر بھاشا کہنا ٹھیک نہیں ۔ قومی بولی تو وہ ھی ھوسکتی ھے جو سارے دیس کے کم سے کم ستر فیصدی اپنے گھروں میں بولتے ھوں ۔ یہاں الٹا حساب ھے ۔ یہاں ستر سے بھی زیادہ فیصدی اپنے کنبوں میں اپنی اپنی اور بولی بولتے ھیں ۔ اسلئے اگرچہ یہ دیس کی عام بولی ھے' اسے دیس بولی کہنا ٹھیک نہیں ۔

اس بولی کے نام کے بارے میں کچھ مت بھید ھے ۔ چونکہ میں یہاں نام کے جھگڑے میں نہیں پڑنا چاھتا اسلئے اس لیکھ میں اسے میری ماں بولی یا میری بولی کہونگا ۔ اور بولیوں کی طرح میری بولی بھی گنتی کی کچھ خاص آوازوں کے جوڑ سے بنی ھوئی ھے' اسلئے اسکا روپ پرکھنے کے لئے اسکی خاص آوازوں اور انکے جوڑ توڑ کا علم ضروری ھے ۔ میری بولی میں کہنے کو تو دس لیکن اصل میں کل چھ سوریں ھیں ۔ کہنے کو تو اَ' آ' اِ' اِی' اُ' اُو' اے' اَئے اور اُو' او دس سوریں ھیں لیکن سوائے چھوٹے اور بڑے ا کے جوڑے کے باقی کے چاروں جوڑے آپس میں بھیدرو نہیں ھیں ۔ بھیدرو ان آوازوں کو کہتے ھیں جنکے آپس میں بدل جانے سے سینکڑوں لفظوں کے معنے کچھ کے کچھ ھو جاتے ھیں' مثلاً کل کال' ھل کھال ایسے بہت سے جوڑے لفظوں کے میری بولی میں ھیں جنکے معنے صرف چھوٹے اور بڑے ا کے ھیر پھیر سے بدلجاتے ھیں ۔ باقی چار جوڑوں میں یہ بھید بہت کم پایا جاتا ھے ۔ میں جانتا ھوں کہ کچھ جوڑے میری بولی میں ایسے آگئے ھیں جنکے چھوٹی بڑی اِی' اُو وغیرہ کے ھیر پھیر سے معنی بدلجاتے ھیں لیکن یہ جوڑے بہت کم ھی نہیں انمیں سے اکثر ایسے ھیں جو ھم پڑھے ھوئے لوگوں کی غفلت سے یا شیخی سے ھمارے پڑھے ھوؤں کی بولی میں آگئے ھیں' لیکن جو بہت دن میری بولی میں ٹک نہیں سکتے ۔ وجہ

साफ़ है. मेरी बोली इतनी संवर सुधर गई है कि उसकी आवाज़ें कम होते होते गिन्ती की रह गई हैं. स्वरें सिर्फ़ छे!

यह एक अजीब लेकिन अगर ज़रा सोचो तो एक क़ुदरती क़ानून या नियम इल्म बोली का है कि जितनी किसी देस की सभ्यता पुरानी है उतनी ही उस देस की आम बोली की आवाज़ें गिन्ती में कम और उसके लफ़्ज़ और उसकी ग्रामर घिस घिस कर छोटे हो जाते हैं. इस वक़्त दुनिया में सब से पुरानी सभ्यता चीन की है और इसलिये जितनी बोली उसकी निखरी, दुनिया की कोई और बोली नहीं निखरी. ग्रामर तो उसमें नाम को भी नहीं. लफ़्ज़ एक कड़ी के छोटे और उसकी आवाज़ें गिन्ती की. शुरू शुरू में जब कि इल्म बोली पच्छिम में अभी पैदा ही हुआ था, पच्छिमी विद्वानों की यह राय ठहरी कि चीनी एक बिगड़ी हुई बोली है. लेकिन जब इल्म बोली फला फूला और हज़ारों बोलियों के उगने, बढ़ने, फलने फूलने की ख़ूब जांच पड़ताल की गई तो उन्होंने चीनी को अव्वल, फ़ारसी को दूसरे और मेरी बोली को तीसरे नम्बर पर ठहराया. सोचो तो सही, पच्छिमी विद्वान मेरी बोली को ख़ूबसूरती में दुनिया भर की हज़ारों बोलियों में से तीसरा दर्जा देते हैं. सब से बड़ी तारीफ़ जो उन्होंने की है वह यह है कि उसकी ग्रामर एक पोस्टकार्ड पर लिखी जा सकती है और यह कि उसमें दुनिया भर की सामाजिक, धार्मिक और अदबी किताबें—वेद, क़ुरान, इन्जील, नाटक और कहानियां—बिला किसी और ज़बान की मदद के आसानी से बख़ूबी अदा हो सकती हैं. ऐसी बोली पर जितना आदमी घमन्ड करे थोड़ा है. लेकिन चूंकि हमारे स्कूलों में उल्टा पढ़ाया जाता है, हमारे अन्जान पंडित और लीडर उसे बिगाड़ने पर तुले हुए हैं. क्यों न हों, उनकी आंखों पर संस्कृत और अंग्रेज़ी जैसी भद्दी ज़बानों का चश्मा चढ़ा हुआ है. यहां संस्कृत को असभ्य कहना तो अलग, यह सच भी कहना कि संस्कृत न कभी बोली हुई और न हो सकती है भिड़ों के छत्ते में हाथ डालना है. संस्कृत की कृपा से हमारे पंडित बोली का अर्थ भी नहीं जानते. बोली सिर्फ़ उस ज़बान को कह सकते हैं जिसके ज़रिये दुनिया के किसी हिस्से के नव्वे नहीं तो अस्सी फ़ीसदी आदमी अपना काम धन्धा चलाते हों. वरना वह ज़बान चाहे उसे पंडित आपस में बोलते हों या रईस, उसकी हैसियत चोर बोली से ज़्यादा नहीं. ऐसी बोली को अंग्रेज़ी में स्लैंग (Slang) कहते हैं चाहे उसमें लाख किताबें लिखी गई हों. यही वजह है कि अगरचे हमारी यूनिवर्सिटियों में बहुत सी बोली सिखाई जाती हैं, किसी में इल्म बोली नहीं सिखाया जाता, और न जब तक संस्कृत का भूत हमारे सर पर सवार है यह मज़मून कभी सिखाया जायगा, क्योंकि उसके सीखने से संस्कृत की पोल खुल जाती है.

صاف ھے - میری بولی اتنی سنور سدھر گئی ھے کہ اسکی آوازیں کم ھوتے ھوتے گنتی کی رہ گئی ھیں۔ سوریں صرف چھ !

یہ ایک عجیب لیکن اگر زرا سوچو تو ایک قدرتی قانون یا نیم علم بولی کا ھے کہ جتنی کسی دیس کی سبھیتا پرانی ھے اتنی ھی اس دیس کی عام بولی کی آوازیں گنتی میں کم اور اُس کے لفظ اور اسکی گرامر گھس گھس کر چھوٹے ھوجاتے ھیں ۔ اسوقت دنیا میں سب سے پرانی سبھیتا چین کی ھے اور اسلئے جتنی بولی اسکی نکھری، دنیاکی کوئی اور بولی نہیں نکھری ۔ گرامرتو اسمیں نام کو بھی نہیں ۔ لفظ ایک کڑی کے چھوٹے اور اسکی آوازیں گنتی کی ۔ شروع شروع میں جبکہ علم بولی پچھم میں ابھی پیدا ھی ھوا تھا، پچھمی ودوانوں کی یہ رائے ٹھہری کہ چینی ایک بگڑی ھوئی بولی ھے۔ لیکن جب علم بولی پھلا پھولا اور ھزاروں بولیوں کے اُگنے، بڑھنے، پھلنے پھولنے کی خوب جانچ پڑتال کی گئی تو انہوں نے چینی کو اول، فارسی کو دوسرے اور میری بولی کو تیسرے نمبر پر ٹھہرایا ۔ سوچو تو سہی، پچھمی ودوان میری بولی کو خوبصورتی میں دنیا بھر کی ھزاروں بولیوں میں سے تیسرا درجہ دیتے ھیں ۔ سب سے بڑی تعریف جو انہوں نے کی ھے وہ یہ ھے کہ اسکی گرامر ایک پوسٹ کارڈ پر لکھی جا سکتی ھے اور یہ کہ اسمیں دنیا بھر کی سماجک، دھارمک اور ادبی کتابیں—وید، قرآن، انجیل، ناٹک اور کہانیاں بلا کسی اور زبان کی مدد کے آسانی سے بخوبی ادا ھو سکتی ھیں ۔ ایسی بولی پر جتنا آدمی گھمنڈ کرے تھوڑا ھے۔ لیکن چونکہ ھمارے اسکولوں میں الٹا پڑھایا جاتا ھے، ھمارے انجان پنڈت اور لیڈر اسے بگاڑنے پر تلے ھوئے ھیں ۔ کیوں نہ ھوں، انکی آنکھوں پر سنسکرت اور انگریزی جیسی بھدی زبانوں کا چشمہ چڑھا ھوا ھے ۔ یہاں سنسکرت کو اسبھیہ کہنا تو الگ، یہ سچ بھی کہنا کہ سنسکرت نہ کبھی بولی ھوئی اور نہ ھو سکتی ھے بھڑوں کے چھتے میں ھاتھ ڈالنا ھے ۔ سنسکرت کی کرپا سے ھمارے پنڈت بولی کا ارتھ بھی نہیں جانتے ۔ بولی صرف اس زبان کو کہہ سکتے ھیں جسکے ذریعہ دنیا کے کسی حصہ کے نوے نہیں تو اسی فیصدی آدمی اپنا کام دھندا چلاتے ھوں ۔ ورنہ وہ زبان چاھے اسے پنڈت آپس میں بولتے ھوں یا رئیس، اسکی حیثیت چور بولی سے زیادہ نہیں ۔ ایسی بولی کو انگریزی میں سلینگ (Slang) کہتے ھیں چاھے اسمیں لاکھ کتابیں لکھی گئی ھوں ۔ یہی وجہ ھے کہ اگرچہ ھماری یونیورسٹیوں میں بہت سی بولیاں سکھائی جاتی ھیں کسی میں علم بولی نہیں سکھایا جاتا، اور نہ جبتک سنسکرت کا بھوت ھمارے سرپر سوار ھے یہ مضمون کبھی سکھایا جائیگا، کیونکہ اسکے سیکھنے سے سنسکرت کی پول کھل جاتی ھے ۔

मेरी मां बोली का रूप

मैं पहले लिख आया हूं कि आवाज़ों का आहिस्ता आहिस्ता कम होना लफ़्ज़ों और ग्रामर का छोटा होना हर सभ्य देस की बोली का क़ुदरती स्वभाव है. बोली बनती है सिर्फ़ मतलब अदा करने के लिये. अगर किसी वजह से बोली वह अपना फ़र्ज़ अच्छी तरह से अदा न कर सके तो हर सभ्य समाज की कोशिश होती है कि वह उस वजह को दूर करे. मसलन जहां दो आवाज़ें कुछ आपस में मिलती जुलती हों तो यह मुमकिन ही नहीं, अग़लब है कि अगर ज़रा भी नुक़्स ज़बान (हलक़) या कान में हो जाये तो उन आवाज़ों में तमीज़ करनी मुश्किल हो जाये. इसलिये हर समझदार की यही कोशिश होती है कि वह ऐसे लफ़्ज़ न इस्तेमाल करे जिनकी आवाज़ों में तमीज़ ठीक न होने की वजह से मतलब ख़ब्त होने का डर हो. मसलन फ और फ़, और झ और ज़ आपस में मिलती जुलती आवाज़ें हैं इसलिये किसी सभ्य बोली में दोनों नहीं होतीं. जिस बोली में फ है वहां फ़ नहीं रहती और जहां झ है वहां ज़ नहीं रहती. इन्सान ही नहीं हर जीव फ़िज़ूल की मेहनत और तकलीफ़ से जी चुराता है. हमारे व्याकरनियों ने सुख आचरण की चाहे कितनी निन्दा की हो ईश्वर की ऐसी रचना है कि आदमी कष्ट से बचता है. सच पूछो तो आदमी की सारी सभ्यता की जड़ है उसकी यह रुचि. उसे बुरा कहना बेवक़ूफ़ी है.

मेरी बोली में बाप को बाप कहते हैं न कि पित्र, पिदर, फ़ादर. लड़की को बेटी कहते हैं न कि दोहत्तर, दुख़्तर, डाटर. मां को मां कहते हैं न कि मात्र, मादर, मदर. ऐसे निजी रिश्तों के नाम से ज़ाहिर है कि आर्यभाषा का संस्कृत, फ़ारसी और अंग्रेज़ी पर ज़्यादा असर पड़ा है, मेरी बोली पर कम. मेरी बोली ने बहुत सी बोलियों के लफ़्ज़ लिये, आर्य भाषा के भी लिये, लेकिन उसकी ज़मीन रही हमेशा देसी बोली की यानी उस देसी बोली की जो आर्यों के यहां आने से पहले बोली जाती थी. अगरचे ज़मीन संस्कृत की भी देसी बोली की है लेकिन चूंकि उसमें कुछ आर्य भाषा के ज़्यादा लफ़्ज़ लिये गये और ख़ास कर इस वजह से कि देसी बोली के भी जो लफ़्ज़ उसमें लिये गये उन्हें संस्कृत बनानेवालों ने बिगाड़ कर आर्य शकल दी. इसलिये हमारे देस में यह ग़लत ख़याल आम फैला हुआ है कि संस्कृत एक शुद्ध आर्य भाषा है. ज़मीन दोनों की द्राविड़ी होने की वजह से संस्कृत के बहुत लफ़्ज़ मेरी बोली के लफ़्ज़ों जैसे हैं, इसलिये बहुत लोग ग़लती से मेरी बोली को एक आर्य भाषा कहते हैं. असल में मेरी बोली द्राविड़ी है. कहने को मद्रास की बोलियों को द्राविड़ी कहा जाता है, लेकिन उनमें से कोई भी इतनी द्राविड़ी नहीं जितनी मेरी बोली. लिपि बनने से पहले आर्य भाषा में क्या आवाज़ें शामिल थीं बल्कि कौन कौन सी उसमें शामिल न थीं कहना मुश्किल

میری ماں بولی کا روپ

میں پہلے لکھ آیا ہوں کہ آوازوں کا آہستہ آہستہ کم ہونا لفظوں اور گرامر کا چھوٹا ہونا ہر سبھیہ دیس کی بولی کا قدرتی سبھاؤ ہے ۔ بولی بنتی ہے صرف مطلب ادا کرنے کے لئے ۔ اگر کسی وجہ سے بولی یہ اپنا فرض اچھی طرح سے ادا نہ کر سکے تو ہر سبھیہ سماج کی کوشش ہوتی ہے کہ وہ اس وجہ کو دور کرے ۔ مثلاً جہاں دو آوازیں کچھ آپس میں ملتی جلتی ہوں تو یہ ممکن ہی نہیں اغلب ہے کہ اگر ذرا بھی نقص زبان (حلق) یا کان میں ہو جائے تو ان آوازوں میں تمیز کرنی مشکل ہوجائے ۔ اسلئے ہر سمجھدار کی یہی کوشش ہوتی ہے کہ وہ ایسے لفظ نہ استعمال کرے جنکی آوازوں میں تمیز ٹھیک نہ ہونے کی وجہ سے مطلب خبط ہونے کا ڈر ہو ۔ مثلاً پھ اور ف اور جھ اور ز آپس میں ملی جلتی آوازیں ہیں اسلئے کسی سبھیہ بولی میں دونوں نہیں ہوتیں ۔ جس بولی میں پھ ہے وہاں ف نہیں رہتی اور جہاں جھ ہے وہاں ز نہیں رہتی ۔ انسان ہی نہیں ہر جیو فضول کی محنت اور تکلیف سے جی چراتا ہے ۔ ہمارے ویاکرنیوں نے سکھ آچارن کی چاہے کتنی نندا کی ہو ایشور کی ایسی رچنا ہے کہ آدمی کشٹ سے بچتا ہے ۔ سچ پوچھو تو آدمی کی ساری سبھیتا کی جڑ ہے اسکی یہ رچی ۔ اسے برا کہنا بیوقوفی ہے ۔

میری بولی میں باپ کو باپ کہتے ہیں نہ کہ پتر، پدر، فادر۔ لڑکی کو بیٹی کہتے ہیں نہ کہ دوہتر، دختر، ڈاٹر ۔ ماں کو ماں کہتے ہیں نہ کہ ماتر، مادر، مدر۔ ایسے نجی رشتوں کے نام سے ظاہر ہے کہ آریہ بھاشا کا سنسکرت، فارسی اور انگریزی پر زیادہ اثر پڑا ہے، میری بولی پر کم میری بولی نے بہت سی بولیوں کے لفظ لئے، آریہ بھاشا کے بھی لئے، لیکن اسکی زمین رہی ہمیشہ دیسی بولی کی یعنی اس دیسی بولی کی جو آریوں کے یہاں آنے سے پہلے بولی جاتی تھی ۔ اگرچہ زمین سنسکرت کی بھی دیسی بولی کی ہے لیکن چونکہ اسمیں کچھ آریہ بھاشا کے زیادہ لفظ لئے گئے اور خاص کر اسوجہ سے کہ دیسی بولی کے بھی جو لفظ اسمیں لئے گئے انہیں سنسکرت بنانے والوں نے بگاڑ کر آریہ شکل دی ۔ اسلئے ہمارے دیس میں یہ غلط خیال عام پھیلا ہوا ہے کہ سنسکرت ایک شدھ آریہ بھاشا ہے۔ زمین دونوں کی دراوڑی ہونے کی وجہ سے سنسکرت کے بہت لفظ میری بولی کے لفظوں جیسے ہیں، اسلئے بہت لوگ غلطی سے میری بولی کو ایک آریہ بھاشا کہتے ہیں ۔ اصل میں میری بولی دراوڑی ہے ۔ کہنے کو مدراس کی بولیوں کو دراوڑی کہا جاتا ہے، لیکن انمیں سے کوئی بھی اتنی دراوڑی نہیں جتنی میری بولی ۔ لپی بننے سے پہلے آریہ بھاشا میں کیا آوازیں شامل تھیں بلکہ کون کون سی اسمیں شامل نہ تھیں کہنا مشکل

है. पच्छिमी विद्वानों की यह राय कि फ़, क़, ग़, ज़ वग़ैरा जो आजकल अर्बी में बहुतायत से पाई जाती हैं पुरानी आर्य भाषा की मूल आवाजें थीं दुरुस्त हो या न हो इसमें शक नहीं कि ऋ, ॠ, लृ, ॡ जैसी स्वरें उसमें ज़रूर होंगी जिनकी आवाज़ का हमें इल्म ही नहीं. उसकी ज्ञ. त्र क्ष, और ङ ञ, ण जैसी आवाजें मेरी बोली में घुस तक न सकीं जबकि ट, ड, ढ़ वग़ैरा असली द्रावड़ी आवाज़ों ने अपने पांव संस्कृत में जमा लिये. इल्म बोली के विद्वानों की यह राय है कि जैसे किसी जीव की क़िस्म और नसल पहचानी जाती है उसके ख़ून के जुज़ और बनावट परखने से, इसी तरह बोली की नसल उसकी आवाज़ों से पहचानी जाती है, न कि उसके लफ़्ज़ों से.

मेरी बोली में ऐ, छोटी ए और औ, छोटा ओ है जैसे बैठ में छोटी और बेटे में बड़ी ए और लौट में छोटी और लोटे में बड़ी ओ. संस्कृत में ऐ और औ दोनों ए और ओ से ज़्यादा भारी गिने जाते हैं. सिंधी की यह बीमारी मेरी बोली को छू तक न सकी. मेरी बोली में व्यंजन और स्वर आपस में ख़ूब प्यार से मिलते हैं लेकिन कोई दो स्वरें या दो व्यंजन आपस में नहीं मिलते. मसलन अगर कोई दो व्यंजन या दो स्वरें किसी लफ़्ज़ में एक दूसरे के क़रीब हों तो वह दो स्वरें या दो व्यंजन कभी एक कड़ी में नहीं बोले जायेंगे. जैसे आए, गए, भाई, नाई में दो स्वरें पास पास तो हैं लेकिन दोनों की कड़ी जुदा जुदा है. ना एक कड़ी और ई दूसरी कड़ी. अंग्रेज़ी का लफ़्ज़ आई जिसके माने मैं और आंख हैं वह अंग्रेज़ी में एक कड़ी है. बहुत कुछ उसी शकल की आई जो मेरी बोली में है, वह बोला जाता है दो कड़ियों में, एक आ दूसरी ई. दूसरी बोलियों के सैकड़ों लफ़्ज़ मेरी बोली ने लिये, लेकिन हमेशा उनके अंग तोड़ कर, लचका कर. मैं जानता हूँ कि मेरे जैसे सैकड़ों पढ़े हुए शेख़ी ख़ोरी यह जताने के लिये कि वह दूसरी बोली भी जानते हैं उसके लफ़्ज़ों को बग़ैर लचकाए अपनाए बोलते हैं. लेकिन यह उनकी भूल है, क्योंकि एक बोली दूसरी बोली के लफ़्ज़ चाहे जितने निगल ले और डकार तक न ले, वह दूसरी बोली की आवाज़ और तरकीब कभी नहीं हज़्म कर सकती. अगर हज़्म कर ले तो फिर वह वह बोली नहीं रहती, दूसरी बोली हो जाती है. इल्म बोली का यह एक अटूट नियम है. फ़ारसी का लफ़्ज़ दरख़्त हमने लिया ज़रूर लेकिन अपना के. फ़ारसी में भी दरख़्त की दो कड़ियां हैं, एक द और दूसरी रख़्त. मेरी बोली में भी दो लेकिन पहली कड़ी है दर और दूसरी खत. आजकल सरकारी हिन्दी में जो जुड़े हुये व्यंजनों की भरमार की जा रही है उससे साफ़ ज़ाहिर है कि उस हिन्दी के बनाने वालों की नियत साफ़ नहीं.

व्यंजन भी मेरी बोली में गिन्ती के हैं. क, ख, ग, घ,

هے . پچھمی ودوانوں کی یہ رائے کہ ف، ق، غ، ظ وغیرہ جو آجکل عربی میں بہتایت سے پائی جاتی ہیں پرانی آریہ بھاشا کی مول آوازیں تھیں درست ہو یا نہ ہو اس میں شک نہیں کہ رر، رری، لر، لری جیسی سوریں اس میں ضرور ہونگی جنکی آواز کا ہمیں علم ہی نہیں. اسکی گیاں ترا، شا، اور یاں، واں جیسی آوازیں میری بولی میں گھس تک نہ سکیں جبکہ ٹ، ڈ، ڑ وغیرہ اصلی دراوڑی آوازوں نے اپنے پاؤں سنسکرت میں بھی جمالیئے . علم بولی کے ودوانوں کہ یہ رائے ہے کہ جیسے کسی جیو کی قسم اور نسل پہچانی جاتی ہے اسکے خون کے جز اور بناوٹ پرکھنے سے، اسیطرح بولی کی نسل اسکی آوازوں سے پہچانی جاتی ہے، نہ کہ اسکے لفظوں سے .

میری بولی آے چھوٹی اے اور او چھوٹا آو ہے جیسے بیٹھ میں چھوٹی اور بیٹے میں بڑی آے اور لوٹ میں چھوٹی اور لوٹے میں بڑی او . سنسکرت میں آے اور آو دونو آے اور آو سے زیادہ بھاری گنے جاتے ہیں. سندھی کی یہ بیماری میری بولی کو چھوتک نہ سکی. میری بولی میں ویئجن اورسور آپس میں خوب پیارسے ملتے ہیں لیکن کوئی دو سوریں یا دو ویئجن آپس میں نہیں ملتے . مثلاً اگر کوئی دو ویئجن یا دو سوریں کسی لفظ میں ایک دوسرے سے قریب ہوں تو وہ دو سوریں یا دو ویئجن کبھی ایک کڑی میں نہیں بولے جاینگے . جیسے آئے، گئے، بھائی، نائی میں دو سوریں پاس پاس تو ہیں لیکن دونوں کی کڑی جدا جدا ہے . نا ایک کڑی اور ای دوسری کڑی . انگریزی کا لفظ آئی جسکے معنی میں اور آنکھ ہیں وہ انگریزی میں ایک کڑی ہے . بہت کچھ اسی شکل کی آئی جو میری بولی میں ہے، وہ بولا جاتا ہے دوکڑیوں میں ایک آ دوسری ای . دوسری بولیوں کے سینکڑوں لفظ میری بولی نے لئے لیکن ہمیشہ انکے انگ توڑ کر، لچکاکر . میں جانتا ہوں کہ میرے جیسے سینکڑوں پڑھے ہوئے شیخی خوری یہ جتانیکے لئے کہ وہ دوسری بولی بھی جانتے ہیں اسکے لفظوں کو بغیر لچکائے اپنائے بولتے ہیں . لیکن یہ انکی بھول ہے کیونکہ ایک بولی دوسری بولی کے لفظ چاہے جتنے نگل لے اور ڈکار تک نہ لے وہ دوسری بولی کی آواز اور ترکیب کبھی نہیں هضم کر سکتی . اگر هضم کر لے تو پھر وہ وہ بولی نہیں رہتی، دوسری بولی ہوجاتی ہے . علم بولی کا یہ ایک اٹوٹ نیم ہے . فارسی کا لفظ درخت ہمنے لیا ضرور لیکن اپنا کے . فارسی میں بھی درخت کی دو کڑیاں ہیں ایک د اور دوسری رخت . میری بولی میں بھی دو لیکن پہلی کڑی ہے در اور دوسری کھت . آجکل سرکاری ہندی میں جو جڑے ہوئے ویئجنوں کی بھرمار کی جا رہی ہے اس سے صاف ظاہر ہے کہ اس ہندی کے بنانےولوں کی نیت صاف نہیں .

ویئجن بھی میری بولی میں گنتی کےہیں. ک، کھ، گ، گھ،

च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, न, न्ह; प, फ, ब, भ, म, म्ह, र, ड़, ल, स, ह, इन व्यंजनों में से तक़रीबन आधे हस यानी ह की आवाज़ लिये हुए हैं. उनमें से चार भेदरू हैं, बाक़ी भेदरू नहीं मालूम होते. अगर मेरा यह ख़्याल दुरुस्त है तो मेरी बोली में सिर्फ़ 21 व्यंजन हैं. सरकारी हिन्दी में 33. य, और ज, व और ब, स और ष और श आपस में भेदरू नहीं. इसलिये य और व और ष और श की मेरी बोली में ज़रूरत नहीं. असल में मेरी बोली सैकड़ों बरस इन आवाज़ों से पाक रही. अब फ़ारसी वालों की देखा देखी कुछ लोग इन आवाज़ों को फिर बोलने लगे लेकिन चूंकि यह भेदरू नहीं हैं, यह मेरी बोली में जड़ नहीं पकड़ सकतीं. अब यह बात ज़रा क़ाबिले ग़ौर है कि बावजूद इन आवाज़ों के संस्कृत में होने के, संस्कृत के दो हज़ार बरस के राज में मेरी बोली इन आवाज़ों से बची रही, लेकिन फ़ारसी वालों की नक़ल किये बग़ैर न रह सकी. यानी यह कि मेरी बोली पर फ़ारसी ने बहुत ज़्यादा असर किया है बनिस्बत संस्कृत के. वजह साफ़ है. फ़ारसी एक बोली है जो बाज़ घरों में बोली जाती है. ऐसा शायद कोई ही घर होगा जहां संस्कृत बोली जाती हो. साफ़ है कि संस्कृत एक चोर बोली है जिसका कोई असर किसी बोली पर नहीं हो सकता. मानी यह कि कोई लाख जतन करे, मेरी बोली को संस्कृत रंग नहीं सकती.

बोली की आवाज़ों की एक और भी तक़सीम है. एक क़िस्म को ताना, दूसरी को बाना कहते हैं. जो जो आवाज़ आसानी से हवा को बाहर निकालने के वक़्त बोली जाती है उसे बोली का ताना, और जो आसानी से सांस लेते वक़्त बोली जाये उसे बोली का बाना कहते हैं. पच्छिमी विद्वानों का ख़्याल है कि जितना किसी बोली का बाना उसके ताने के बराबर हो जाता है, उतनी ही वह बोली बोलनी आसान ही नहीं, मीठी होती है. ऐसा ख़्याल है कि जितना ताना बाना बराबर हो उतना ही बोलते वक़्त दम लेने के लिये ठैहरने की ज़रूरत कम होती है. मेरी बोली में चूंकि जुड़े हुए व्यंजन न हैं और न हो सकते हैं इसलिये उसकी हर कड़ी फुलझड़ी की तरह मुँह से निकलती है. यही वजह है कि मेरी बोली ख़ासकर और हिन्दुस्तान की और बोलियां आम तौर पर अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी वग़ैरा से बहुत जल्दी बोली जाती हैं. संस्कृत तो कोसों दूर पीछे रह गई. मुश्किल यह है कि मेरे देस में वक़्त की कोई क़ीमत नहीं वर्ना कोई भूले से भी संस्कृत के से जुड़े हुए व्यंजन हमारी बोली में न लाता. लेकिन जहां देवनागरी जैसी वक़्त खोया, धन लुटाऊ लिपि अपना कर देस की तरक़्क़ी में अड़ंगा लगाया जा सकता है, वहां बोली की मिठास और उसके दरयाई बहाव की किसे क़द्र ? गैल्ब (Gelb) कहता है

چ، چھ، ج، جھ، ٹ، ٹھ، ڈ، ڈھ، ت، تھ، د، دھ، ن، نھ، پ، پھ، ب، بھ، م، مھ، ر، ڑ، ل، س، ح، ان ویانجنوں میں سے تقریباً آدھے ہوس یعنی ح کی آواز لئے ہوئے ہیں ۔ ان میں سے چار بھیدرو ہیں، باقی بھیدرو نہیں معلوم ہوتے ۔ اگر میرا یہ خیال درست ہے تو میری بولی میں صرف 21 ویانجن ہیں ۔ سرکاری ہندی میں 33. یے اور یاں، و اور ب، س اور شا اور ش آپس میں بھیدرو نہیں اس لئے یے اور و اور شا اور ش کی میری بولی میں ضرورت نہیں ۔ اصل میں میری بولی سینکڑوں برس ان آوازوں سے پاک رہی ۔ اب فارسی والوں کی دیکھا دیکھی کچھ لوگ ان آوازوں کو پھر بولنے لگے لیکن چونکہ یہ بھیدرو نہیں ہیں، یہ میری بولی میں جڑ نہیں پکڑ سکتیں ۔ اب یہ بات ذرا قابل غور ہے کہ باوجود ان آوازوں کے سنسکرت میں ہونیکے، سنسکرت کے دو ہزار برس کے راج میں میری بولی ان آوازوں سے بچی رہی، لیکن فارسی والوں کی نقل کئے بغیر نہ رہ سکی ۔ یعنی یہ کہ میری بولی پر فارسی نے بہت زیادہ اثر کیا ہے بنسبت سنسکرت کے ۔ وجہ صاف ہے ۔ فارسی ایک بولی ہے جو بعض گھروں میں بولی جاتی ہے ۔ ایسا شائد کوئی ہی گھر ہوگا جہاں سنسکرت بولی جاتی ہو ۔ صاف ہے کہ سنسکرت ایک چور بولی ہے جسکا کوئی اثر کسی بولی پر نہیں ہو سکتا ۔ معنے یہ کہ کوئی لاکھ جتن کرے، میری بولی کو سنسکرت رنگ نہیں سکتی ۔

بولی کی آوازوں کی ایک اور بھی تقسیم ہے ۔ ایک قسم کو تانا، دوسری کو بانا کہتے ہیں ۔ جو جو آواز آسانی سے ہوا کو باہر نکالنے کے وقت بولی جاتی ہے اُسے بولی کا تانا، اور جو آسانی سے سانس لیتے وقت بولی جائے اُسے بولی کا بانا کہتے ہیں ۔ پچھمی ودوانوں کا خیال ہے کہ جتنا کسی بولی کا بانا اسکے تانے کے برابر ہو جاتا ہے اتنی ہی وہ بولی آسان ہی نہیں، میٹھی ہوتی ہے ۔ ایسا خیال ہے کہ جتنا تانا بانا برابر ہو اتنا ہی بولتے وقت دم لینے کیلئے ٹھہرنے کی ضرورت کم ہوتی ہے ۔ میری بولی میں چونکہ جڑے ہوئے ویانجن نہ ہیں اور نہ ہو سکتے ہیں اسلئے اسکی ہر کڑی پھلجھڑی کی طرح منہ سے نکلتی ہے ۔ یہی وجہ ہے کہ میری بولی خاصکر اور ہندوستان کی اور بولیاں عام طور پر عربی-فارسی-انگریزی وغیرہ سے بہت جلدی بولی جاتی ہیں ۔ سنسکرت تو کوسوں دور پیچھے رہ گئی ۔ مشکل یہ ہے کہ میرے دیس میں وقت کی کوئی قیمت نہیں ورنہ کوئی بھولے سے بھی سنسکرت کے سے جڑے ہوئے ویانجن ہماری بولی میں نہ لاتا ۔ لیکن جہاں دیوناگری جیسا وقت کھویا، دھن لٹاؤ لپی اپنا کر دیس کی ترقی میں اڑنگا لگایا جا سکتا ہے، وہاں بولی کی مٹھاس اور اسکے دریائی بہاؤ کی کسے قدر ؟ گلب (Gelb) کہتا ہے

कि .फ्रैंच की 350 कड़ियां औसतन एक मिनट में बोली जाती हैं, जापानी की 310, जर्मनी की 250 और अंग्रेजी की सिर्फ़ 220. मेरा ख्याल है कि संस्कृत और उसकी नक़ली हिन्दी की 150 भी नहीं. शायद मेरी बोली फ्रैंच को भी मात करती है, लेकिन इस तरफ़ कौन ध्यान दे ? क्या रखा है इन बातों में ? मुफ़्त की हाथ घिसाई, यह है हमारा इल्म का शौक़ !

मेरी बोली के रूप में छै स्वरें, 21 व्यंजन, सब शुद्ध, उनमें कोई मिलावट या जोड़ नहीं, और इसलिये वह एक मीठी, सुरीली, बहती मौसीक़ी है. खूबसूरती में सारी दुनिया की बोलियों में उसे तीसरा दर्जा दिया गया है. अगर उसमें जिन्स (लिंग) की बीमारी न होती तो दूसरी गिनी जाती. ग्रामर न होने के बराबर, सीधी सादी सुन्दरी जिसे गहने पाते से नफ़रत, बोलने में आसान, समझने में आसान, सीखने में आसान. उसकी इस आसानी ने उसे फैलने में बहुत कुछ मदद दी. बड़ी खराबी उसमें है तो यह कि उसमें एक आदमी दूसरे को आसानी से धोका नहीं दे सकता, और हमारे लीडर चाहते हैं ऐसी जबान जिसमें वह धोका दे सकें या कम से कम लारे लप्पे लगा सकें. यही लीडर कहते हैं यहां है जनता का राज ! सब धोका, कहने की बात ! जिस देस में इस देस की आम बोली या उसकी राजधानी की बोली, सरकारी बोली नहीं है, वहां कोई चीज़ जनता की नहीं हो सकती.

एक ख़ास मियाद के अन्दर हर सूबे की अदालतों और असेम्बलियों का काम काज उसी सूबे की भाषा म जारी होना चाहिये. अपील की आख़िरी अदालत की ज़बान हिन्दुस्तानी क़रार दी जाय, लिखावट चाहे देवनागरी हो या फ़ारसी. सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट और असेम्बलियों की भाषा भी हिन्दुस्तानी ही हो. अन्तर्राष्ट्री राज व्योहार की भाषा अंगरेजी रहे. मुझे भरोसा है कि अगर आपको यह तजवीज़ अपने विचार के मुताबिक़ नज़र न आई और आपने यह ख़याल किया कि मैं स्वराज की इच्छा में हद से बाहर चला गया हूँ तो भी आप छूटते ही इसकी हंसी न उड़ाने लगेंगे.

—महात्मा गांधी

که فرینچ کی 350 کڑیاں اوسطاً ایک منٹ میں بولی جاتی هیں' جاپانی کی 310' جرمنی کی 250 اور انگریزی کی صرف 220. میرا خیال هے که سنسکرت اور اسکی نقلی هندی کی 150 بھی نهیں. شائد میری بولی فرینچ کو بھی مات کرتی هے' لیکن اسطرف کون دھیان دے ؟ کیا رکھا هے ان باتوں میں ؟ مفت کی هاتھ گھسائی 'یه هے همارا علم کا شوق !

میری بولی کے روپ میں چھ سوریں' 21 ویننجن' سب شدھ' انمیں کوئی ملاوٹ یا جوڑ نهیں اور اسلئے وہ ایک میٹھی' سریلی' بهتی' موسیقی هے . خوبصورتی میں ساری دنیا کی بولیوں میں اسے تیسرا درجه دیا گیا هے. اگر اسمیں جنس (لنگ) کی بیماری نه هوتی تو دوسری گنی جاتی . گرامر نه هونیکے برابر' سیدھی سادی سندری جسے گهنے پاتے سے نفرت' بولنے میں آسان' سمجھنے میں آسان' سیکھنے میں آسان . اسکی اس آسانی نے اسے پھیلنے میں بهت کچھ مدد دی. بڑی خرابی اسمیں هے تو یه که اسمیں ایک آدمی دوسرے کو آسانی سے دھوکا نهیں دیسکتا' اور همارے لیڈر چاهتے هیں ایسی زبان جسمیں وہ دھوکا دے سکیں یا کم سے کم لارے لپے لگا سکیں. یهی لیڈر کهتے هیں یهاں هے جنتا کا راج ! سب دھوکا' کهنے کی بات ! جس دیس میں اس دیس کی عام بولی یا اسکی راجدھانی کی بولی' سرکاری بولی نهیں هے وهاں کوئی چیز جنتا کی نهیں هو سکتی.

ایک خاص میعاد کے اندر هر صوبے کی عدالتوں اور اسمبلیوں کا کام کاج اسی صوبے کی بھاشا میں جاری هونا چاهیئے . اپیل کی آخری عدالت کی زبان هندستانی قرار دی جائے' لکھاوٹ چاهے دیوناگری هو یا فارسی . سینٹرل گورنمنٹ اور اسمبلیوں کی بھاشا بھی هندستانی هی هو . انترراشٹری راج بیوهار کی بھاشا انگریزی رهے . مجھے بھروسه هے که اگر آپ کو یه تجویز اپنے وچار کے مطابق نظر نه آئی اور آپ نے یه خیال کیا که میں سوراج کی اچھا میں حد سے باهر چلا گیا هوں تو بھی آپ چھوٹتے هی اس کی هنسی نه اڑانے لگیں گے .

—مهاتما گاندھی

बम्बई का एक दुख भरा नज़ारा

श्री सुन्दर लाल

श्री बी. जी. खेर कई साल तक बम्बई के चीफ़ मिनिस्टर रह चुके हैं. उसके बाद वह इंगलैंड में भारत के हाई कमिश्नर थे. हम उन्हें एक ज़माने से अच्छी तरह जानते हैं. हमारे दिल में उनका बड़ा आदर है.

श्री बी.जी. खेर को उनके साथी 'बाला साहब' कहते हैं. बम्बई के पिछले दौरे में हमें बाला साहब से कई बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. पहली बार हम उनसे उनके घर के मकान पर मिले. डेढ़ घंटे तक वह हमें बड़े शौक़ के साथ यह बताते रहे कि आजकल वह अपना समय किस काम में खर्च करते हैं. उनकी सेवा का मैदान आज कल बम्बई के अन्दर ग़रीब लोगों की कुछ बस्तियाँ हैं. अगले दिन सुबह हमने उनके साथ जाकर इन बस्तियों की हालत और बाला साहब और उनके साथियों के काम को देखा. इसमें तीन घंटे से ऊपर खर्च हुए. शाम को फिर उन्होंने हमें अपने काम की बाबत और अधिक जानकारी कराई.

बम्बई की म्युनीसीपेलिटी आजकल एक बड़ी म्युनीसीपेलिटी है जिसे ग्रेटर बाम्बे यानी बड़ी बम्बई कहते हैं. इस बड़ी बम्बई के अन्दर बांदरा के बूचड़खाने से मिला हुआ दूर तक फैला हुआ एक इलाक़ा है जिसमें लगभग बीस हज़ार मर्द औरत और बच्चे बसते हैं. इसमें अलग अलग कई बसतियां हैं. इन लोगों की ग़रीबी, इनकी मुसीबतों और उनके रहन सहन को देख कर हमें बिलकुल यह ख्याल आया कि सच मुच अगर नर्क कहीं धरती पर हो सकता है तो यहीं है.

यह लगभग सारा इलाक़ा निचान में है. वहां की अधिकतर धरती पानी और कीचड़ से भरी हुई है. बीस हज़ार की आबादी में, कहीं कहीं थोड़ी ऊंचाई पर सौ पचास मकान ऐसे हैं जो आदमियों के रहने के मकान कहला सकते हैं. यह आम तौर पर उन लोगों के हैं जो पास के बूचड़खाने में ठेकेदारी वग़ैरा का काम करते हैं या रेल के मुलाज़िम हैं जिनमें से कुछ के लिये रेलवे ने क्वार्टर बनवा दिये हैं. यह लोग ख़ुशहाल या कम से कम खाते पीते कहे जा सकते हैं. बाक़ी हज़ारों झोपड़ों और उनकी हालत को देख कर यह मालूम ही नहीं होता कि उनमें इनसान

بمبئی کا ایک دکھ بھرا نظارہ

شری سندرلال

شری بی. جی. کھیر کئی سال تک بمبئی کے چیف منسٹر رہ چکے ہیں . اسکے بعد وہ انگلینڈ میں بھارت کے ہائی کمشنر تھے . ہم اُنھیں ایک زمانے سے اچھی طرح جانتے ہیں. ہمارے دل میں اُن کا بڑا آدر ہے .

شری بی. جی. کھیر کو اُن کے ساتھی 'بالا صاحب' کہتےہیں. بمبئی کے پچھلے دورے میں ہمیں بالا صاحب سے کئی بار ملنے کا سوبھاگیہ پراپت ہوا . پہلی بار ہم اُن سے اُن کے گھر کے مکان پر ملے . ڈیڑھ گھنٹے تک وہ ہمیں بڑے شوق کے ساتھ یہ بتاتے رہے کہ آجکل وہ اپنا سمئے کس کام میں خرچ کرتے ہیں . اُن کی سیوا کا میدان آجکل بمبئی کے اندر غریب لوگوں کی کچھ بستیاں ہیں . اگلے دن صبح ہم نے اُن کے ساتھ جاکر اِن بستیوں کی حالت اور بالا صاحب اور اُن کے ساتھیوں کے کام کو دیکھا . اِس میں تین گھنٹے سے اُوپر خرچ ہوئے . شام کو پھر اُنھوں نے ہمیں اپنے کام کی بابت اور ادھک جانکاری کرائی .

بمبئی کی میونسپیلٹی آجکل ایک بڑی میونسپلٹی ہے جسے گریٹر بامبے یعنی بڑی بمبئی کہتے ہیں . اِس بڑی بمبئی کے اندر باندرا کے بوچڑخانے سے ملا ہوا دور تک پھیلا ہوا ایک علاقہ ہے جس میں لگ بھگ بیس ہزار مرد عورت اور بچے بستے ہیں . اس میں الگ الگ کئی بستیاں ہیں . اِن لوگوں کی غریبی' اِن کی مصیبتوں اور اُن کے رہن سہن کو دیکھکر ہمیں بالکل یہ خیال آیا کہ سچ مچ اگر نرک کہیں دھرتی پر ہوسکتا ہے تو یہیں ہے .

یہ لگ بھگ سارا علاقہ نچان میں ہے . وہاں کی ادھک‌تر دھرتی پانی اور کیچڑ سے بھری ہوئی ہے . بیس ہزار کی آبادی میں' کہیں کہیں تھوڑی اونچائی پر سو پچاس مکان ایسے ہیں جو آدمیوں کے رہنے کے مکان کہلا سکتے ہیں . یہ عام طور پر اُن لوگوں کے ہیں جو پاس کے بوچڑخانے میں ٹھیکے داری وغیرہ کا کام کرتے ہیں یا ریل کے ملازم ہیں جن میں سے کچھ کے لئے ریلوے نے کوارٹر بنوا دیئے ہیں. یہ لوگ خوش حال یا کم سے کم کھاتے پیتے کہے جاسکتے ہیں. باقی ہزاروں جھونپڑوں اور اُن کی حالت کو دیکھ کر یہ معلم ہی نہیں ہوتا کہ اِن میں انسان

रहते होंगे. न दीवारें हैं न दरवाजे, न खिड़कियां न फ़र्श, न छत. कूड़ेखानों में से पुराने टीन या टाट के टुकड़े जमा करके एक तरह की झोंपड़ियां सी डाल ली गई हैं जिनमें से एक एक में चार चार और पाँच पाँच आदमियों का कुनबा रहता है. अकसर जगह नीचे कीचड़ है. ईंट पत्थरों के टुकड़ों पर लकड़ी वग़ैरा रखकर उसे किसी तरह सोने बैठने के काम का कर लिया गया है. किसी औसत गाँव के लोग अपने जानवरों को इस तरह के मकानों में नहीं रख सकते.

इन लोगों के लिये कोई पाखाने नहीं हैं. पास कोई खुला जंगल भी नहीं है. एक झोंपड़ी से दूसरी झोंपड़ी या एक छोटी बस्ती से दूसरी बस्ती जाने के लिये कोई ठीक रास्ते भी नहीं हैं. बाला साहब और उनके साथियों के हमराह जब हम इन बस्तियों को देखते हुए फिर रहे थे तो छोटे छोटे रास्तों पर हमें संभाल संभाल कर पैर रखने पड़ते थे. यह हज़ारों मर्द, औरत और बच्चे जहां चाहें पाखाने के लिये बैठ जाते हैं. यह देखकर हमने बाला साहब से शिकायत की तो उन्होंने बड़े दर्द के साथ हमसे कहा :— "यह बेचारे और कर भी क्या सकते हैं? और कहां बैठें?"

इन बीस हज़ार लोगों में से बहुत से मुसलमान हैं, कुछ ईसाई, कुछ हरिजन और कुछ दूसरी जातों के हिन्दू. कुछ ऐसे ग़रीब मुसलमान भी हैं जो हिन्दू मुस्लिम दंगों के दिनों में शहर के दूसरे हिस्सों से भाग भाग कर यहां आकर बस गए हैं. इनमें से कुछ शहर में जगह जगह जाकर मज़दूरी करते हैं बशर्तेकि मज़दूरी मिल जाय. कुछ शहर से काग़ज़ की रद्दी या चीथड़े ख़रीद कर या जमा करके उन्हें बेच लेते हैं, कुछ नादारी से मजबूर होकर इधर उधर चोरी चमारी भी कर लेते हैं. ग़रीबी की तसवीर इससे बढ़कर शायद ही दुनिया में कहीं और देखने को मिल सके और यह उस "बड़ी बम्बई" के ठीक अन्दर जो बंगलों, अटारियों और महलों से भरी हुई है.

इन बस्तियों तक पहुँचने का रास्ता रेल की कई चौड़ी चौड़ी लाइनें पार करके मिलता है. न कोई पुल है, न कोई सड़क. हम श्री बी. जी. खेर के साथ जहां तक मोटर से जा सकते थे गए. श्री बी. जी. खेर ने हमसे फिर बड़े दर्द के साथ कहा कि रेल के फाटक को खुलवाने के लिये, ताकि मोटर इधर से उधर जा सके, उन्हें कभी कभी डेढ़ डेढ़ घंटे इन्तज़ार करना पड़ा है. यह उस फ़ासले के लिये जो शायद सौ गज़ भी न होगा. अगर इन बस्तियों से किसी बीमार को शहर के किसी अस्पताल तक लाने की कोशिश की जाय या बच्चा होने की सूरत में किसी को लेडी डाक्टर की मदद की ज़रूरत हो तो एक दो फ़र्लांग पार करने के

رہتے ہونگے۔ نہ دیواریں ہیں نہ دروازے، نہ کھڑکیاں نہ فرش، نہ چھت۔ کوڑے خانوں میں سے پرانے ٹین یا ٹاٹ کے ٹکڑے جمع کرکے ایک طرح کی جھونپڑیاں سی ڈال لی گئی ہیں جن میں سے ایک ایک میں چار چار اور پانچ پانچ آدمیوں کا کنبہ رہتا ہے۔ اکثر جگہ نیچے کیچڑ ہے۔ اینٹ پتھروں کے ٹکڑوں پر لکڑی وغیرہ رکھکر اُسے کسی طرح سونے بیٹھنے کے کام کا کر لیا گیا ہے۔ کسی اوسط گاؤں کے لوگ اپنے جانوروں کو اِس طرح کے مکانوں میں نہیں رکھ سکتے۔

اِن لوگوں کے لئے کوئی پاخانے نہیں ہیں۔ پاس کوئی کھلا جنگل بھی نہیں ہے۔ ایک جھونپڑی سے دوسری جھونپڑی یا ایک چھوٹی بستی سے دوسری بستی جانے کے لئے کوئی ٹھیک راستے بھی نہیں ہیں۔ بالا صاحب اور اُن کے ساتھیوں کے ہمراہ جب ہم اِن بستیوں کو دیکھتے ہوئے پھر رہے تھے تو چھوٹے چھوٹے راستوں پر ہمیں سنبھال سنبھال کر پیر رکھنے پڑتے تھے۔ یہ ہزاروں مرد، عورت اور بچے جہاں چاہیں پاخانے کے لئے بیٹھ جاتے ہیں۔ یہ دیکھکر ہمنے بالا صاحب سے شکایت کی تو اُنہوں نے بڑے درد کے ساتھ ہم سے کہا:—"یہ بیچارے اور کر بھی کیا سکتے ہیں؟ اور کہاں بیٹھیں؟"

اِن بیس ہزار لوگوں میں سے بہت سے مسلمان ہیں، کچھ عیسائی، کچھ ہریجن اور کچھ دوسری جاتوں کے ہندو۔ کچھ ایسے غریب مسلمان بھی ہیں جو ہندو مسلم دنگوں کے دنوں میں شہر کے دوسرے حصوں سے بھاگ بھاگ کر یہاں آکر بس گئے ہیں۔ اِن میں سے کچھ شہر میں جگہ جگہ جاکر مزدوری کرتے ہیں بشرطیکہ مزدوری مل جائے۔ کچھ شہر سے کاغذ کی ردی یا چیتھڑے خرید کر یا جمع کرکے اُنہیں بیچ لیتے ہیں، کچھ ناداری سے مجبور ہوکر اِدھر اُدھر چوری چماری بھی کرلیتے ہیں۔ غریبی کی تصویر اِس سے بڑھکر شاید ہی دنیا میں کہیں اور دیکھنے کو مل سکے اور یہ اُس "بڑی بمبئی" کے ٹھیک اندر جو بنگلوں، اٹاریوں اور محلوں سے بھری ہوئی ہے۔

اِن بستیوں تک پہنچنے کا راستہ ریل کی کئی چوڑی چوڑی لائنیں پار کر کے ملتا ہے۔ نہ کوئی پل ہے، نہ کوئی سڑک۔ ہم شری بی۔ جی۔ کھیر کے ساتھ جہاں تک موٹر سے جاسکتے تھے گئے۔ شری بی۔ جی۔ کھیر نے ہم سے پھر بڑے درد کے ساتھ کہا کہ ریل کے پھاٹک کو کھلوانے کے لئے، تاکہ موٹر اِدھر سے اُدھر جاسکے، اُنہیں کبھی کبھی ڈیڑھ ڈیڑھ گھنٹے انتظار کرنا پڑا ہے۔ یہ اُس فاصلے کے لئے جو شاید سو گز بھی نہ ہوگا۔ اگر اِن بستیوں سے کسی بیمار کو شہر کے کسی اسپتال تک لانے کی کوشش کی جائے یا بچہ ہونے کی صورت میں کسی کو لیڈی ڈاکٹر کی مدد کی ضرورت ہو تو ایک دو فرلانگ پار کرنے کے

लिये पूरा दिन लग सकता है. उन अभागों के लिये शायद दुनिया की यह सहूलियतें हैं ही नहीं. कहीं कहीं उन तक पहुँचने के लिये बम्बई वाटर वर्क्स के मोटे मोटे बम्बों (मेन्स) पर से कूद कूद कर जाना पड़ता है.

इस पर कहा जाता है कि बम्बई म्युनीसीपेलिटी इन लोगों से उसी हिसाब से टेक्स वसूल करती है जिस तरह सड़क के दूसरी तरफ़ के अटारी वालों से. बाला साहब और उनके साथियों ने हमें बताया कि उस इलाक़े से क़रीब एक लाख टेक्स वसूल होता है और उन पर ख़र्च सिर्फ़ क़रीब दो हज़ार रुपया सालाना. यानी एक टेक्स जमा करने वाला है जिसको डेढ़ सौ रुपया महीना दिया जाता है. मुमकिन है इन आंकड़ों में थोड़ी बहुत ग़लती हो. यह हमें ज़बानी केवल याद से बताए गए थे. ऐसी हालत में क़ुदरती तौर पर बाला साहब के शब्दों में "चोरी और रिशवत ख़ोरी" भी वहां ख़ूब चलती है. कुछ गुंडा क़िस्म के इनसान भी वहां इसी ग़रज़ के लिये रहने लगे हैं. हमें बताया गया कि उस बस्ती के एक हिस्से से कोई एक आदमी ख़िलाफ़ क़ानून उन ग़रीबों से लगभग चौदह सौ रुपया महीना वसूल कर लेता है. हाल में सुना है उस पर मुक़दमा भी क़ायम हो गया है. नतीजा जो कुछ हो. बड़े आदमियों के जुर्म बड़े जुर्म होते हैं. उनके पाप ऊंची अटारियों और मख़मल के गद्दों में छुपे रहते हैं. ग़रीबों, नादारों और बद-क़िस्मतों के छोटे छोटे गुनाह और गंदे जुर्म उनकी ग़रीबी के साथ लिपट कर चमकते हैं. कई दुख भरी घटनाएं उस बस्ती के रहने वालों की हमने उन तीन घंटों के अन्दर बाला जी और उनके साथियों से सुनीं. हमारा दिल बर्दाश्त नहीं करता कि हम उन्हें यहां दुहरावें.

उन लोगों की तन्दरुस्ती की यह हालत है कि और बीमारियों को छोड़ दीजिये हाल में बाला जी और उनके साथियों ने जो उन बसतियों की सरवे कराई उसमें मालूम हुआ कि क़रीब एक हज़ार बीमार उन बस्तियों में ऐसे हैं जिन पर कोढ़ का शक है. जानकारों की राय है कि अगर इसे रोका न गया तो थोड़े दिनों में यह सारा इलाक़ा एक बड़ा कोढ़ीख़ाना हो जाएगा. जिन हालतों में वह रह रहे हैं उनका और कुछ नतीजा हो भी कैसे सकता है. श्री बी. जी. खेर ने इस बारे में बम्बई सरकार के डाक्टरी के अफ़सरों से पत्र व्योहार शुरू कर रक्खा है. उसका जब और जो कुछ नतीजा निकल सके.

इंगलैंड से लौटने के कुछ दिनों बाद बाला साहब का ध्यान इन बस्तियों की तरफ़ गया. उन्होंने उन की हालत में जाकर अच्छी तरह देखा. उस इलाक़े का तीन संस्थाओं से सम्बन्ध है—एक बम्बई म्युनीसिपेलटी, दूसरे बम्बई सरकार और तीसरे रेलवे. बाला साहब ने तीनों के साथ

لئے پورا دن لگ سکتا ھے. اُن ابھاگوں کے لئے شاید دنیا کی یہ سہولیتیں ھیں ھی نہیں . کہیں کہیں اُن تک پہنچنے کے لئے بمبئی واٹر ورکس کے موٹے موٹے بمبوں (مینس) پر سے کود کود کر جانا پڑتا ھے .

اِس پر کہا جاتا ھے کہ بمبئی میونسپلٹی اِن لوگوں سے اُسی حساب سے ٹیکس وصول کرتی ھے جس طرح سڑک کے دوسری طرف کے اٹاری والوں سے. بالا صاحب اور اُن کے ساتھیوں نے ھمیں بتایا کہ اُس علاقے سے قریب ایک لاکھ ٹیکس وصول ھوتا ھے اور اُن پر خرچ صرف قریب دو ہزار روپیہ سالانہ. یعنی ایک ٹیکس جمع کرنے والا ھے جس کو ڈیڑھ سو روپیہ مہینہ دیا جاتا ھے . ممکن ھے اِن آنکڑوں میں تھوڑی بہت غلطی ہو . یہ ھمیں زبانی کیول یاد سے بتائے گئے تھے . ایسی حالت میں قدرتی طور پر بالا صاحب کے شبدوں میں "چوری اور رشوت خوری" بھی وھاں خوب چلتی ھے . کچھ غنڈا قسم کے انسان بھی وھاں اِسی غرض کے لئے رھنے لگے ھیں . ھمیں بتایا گیا کہ اُس بستی کے ایک حصے سے کوئی ایک آدمی خلاف قانون اُن غریبوں سے لگ بھگ چودہ سو روپیہ مہینہ وصول کر لیتا ھے . حال میں سنا ھے اس پر مقدمہ بھی قائم ھوگیا ھے . نتیجہ جو کچھ ھو . بڑے آدمیوں کے جرم بڑے جرم ھوتے ھیں . اُن کے پاپ اونچی اٹاریوں اور مخمل کے گدوں میں چھپے رھتے ھیں . غریبوں، ناداروں اور بدقسمتوں کے چھوٹے چھوٹے گناہ اور گندے جرم اُن کی غریبی کے ساتھ لپٹ کر چمکتے ھیں . کئی دکھ بھری گھٹنائیں اُس بستی کے رھنے والوں کی ھم نے اُن تین گھنٹوں کے اندر بالاجی اور اُن کے ساتھیوں سے سنیں . ھمارا دل برداشت نہیں کرتا کہ ھم اُنھیں یہاں دھراویں .

اُن لوگوں کی تندرستی کی یہ حالت ھے کہ اور بیماریوں کو چھوڑ دیجئے حال میں بالا جی اور اُن کے ساتھیوں نے جو اُن بستیوں کی سروے کرائی اُس میں معلوم ھوا کہ قریب ایک ہزار بیمار اُن بستیوں میں ایسے ھیں جن پر کوڑھ کا شک ھے . جانکاروں کی رائے ھے کہ اگر اِسے روکا نہ گیا تو تھوڑے دنوں میں یہ سارا علاقہ ایک بڑا کوڑھی‌خانہ ھو جائیگا . جن حالتوں میں وہ رہ رھے ھیں اُن کا اور کچھ نتیجہ ھو بھی کیسے سکتا ھے . شری بی. جی. کھیر نے اِس بارے میں بمبئی سرکار کے ڈاکٹری کے افسروں سے پترویوھار شروع کر رکھا ھے . اُس کا جب اور جو کچھ نتیجہ نکل سکے .

انگلینڈ سے لوٹنے کے کچھ دنوں بعد بالا صاحب کا دھیان اِن بستیوں کی طرف گیا . اُنھوں نے اُن کی حالت کو جا کر اچھی طرح دیکھا . اُس علاقے کا تین سنستھاؤں سے سمبندھ ھے—ایک بمبئی میونسپلٹی، دوسرے بمبئی سرکار اور تیسرے ریلوے . بالا صاحب نے تینوں کے ساتھ

पत्र व्योहार शुरू किया. यह पत्र व्योहार फ़ुज़ूल नहीं गया पर इस से बाला साहब को अधिक उम्मीद भी नहीं बंधी. पत्र व्योहार जारी है. हम से बातें करते करते एक बार फिर उन्होंने बड़ी मायूसी से कहा—"कोई परवाह नहीं करता !" पर इस हालत में बाला साहब ने बड़ी समझदारी और हिम्मत से काम लिया. उन्होंने हम से कहा—"लोगों को यह सब काम सरकार ही पर नहीं छोड़ देना चाहिये. हमें अपना काम ख़ुद करना चाहिये." इस असूल के अनुसार उन्होंने उन अभागी बस्तियों की हालत सुधारने का काम अपने हाथ में ले लिया. आजकल उनका लगभग सब समय इसी में बीतता है. कुछ बहुत अच्छे त्यागी और लगन से काम करने वाले भी उनके साथ हो गए हैं बाला साहब ने अपनी निजी पूँजी की एक ख़ासी बड़ी रक़म यानी लगभग सब कुछ जो उनका अपना था इस काम के लिये दे दिया है. बस्ती के बच्चों के लिये अब एक छोटा सा स्कूल वहां बन गया है जिसमें आजकल लगभग चार सौ लड़के और लड़कियां लिखना पढ़ना सीखते हैं. कुछ लोगों के रहने के लिये कहीं कहीं जमीन को जरा ऊँचा करके इस तरह के सीधे सादे मकान भी नमूने के तौर पर बना दिये गए हैं जिनमें इनसान रह सकें. एक छोटा सा कामन हाल यानी पंचायत घर उनके लिये तैयार हो गया है. बाला साहब और उनके साथी उन लोगों के लिये रोज़गार का भी इन्तज़ाम कर रहे हैं. पास के बूचड़ख़ाने में जो भेड़ें कटती हैं उनकी ऊँन कटकर अभी तक मुल्क के बाहर भेज दी जाती थी. बाला साहब और उनके साथियों ने अब उस ऊन को ख़रीद कर वहीं रखना शुरू कर दिया है. वह ऊन उन्हीं लोगों से कतवाई जाती है और हाथ करघों पर उन्हीं से उस से कम्बल और कोटिंग का कपड़ा बुनवाया जाता है. हमने उनका हाल का बुना हुआ कम्बल और एक कोटिंग का थान भी देखा. माल बहुत सुन्दर था. पर यह काम अभी तो मन में छटांक भी नहीं. रुई से चरख़ों पर सूत कातने और उससे खद्दर बुनने का काम भी शुरू करा दिया गया है. हाथ का काग़ज़ बनाने और साबुन बनाने के काम भी बहुत जल्दी शुरू होने वाले हैं. बाला साहब और उनके साथियों के काम में हिन्दू, मुसलमान, हरिजन हैं. ऊँच नीच के फ़र्क़ की कहीं गंध तक नहीं है. उनके साथियों में भी सब धर्मों के और सब तरह के लोग बड़ी ख़ुशी से शामिल हैं. बाला साहब ने हमें विश्वास दिलाया कि पांच बरस के अन्दर वह उस सारी बस्ती को एक "गार्डेन सिटी" यानी सुन्दर बस्ती और हरा भरा बाग़ बना देंगे.

हमने बाला साहब से पूछा कि वह बिना काफ़ी धन के या सरकारी मदद के इस इतने बड़े काम को कैसे पूरा कर सकेंगे? उन्होंने बड़ी हिम्मत के साथ जवाब दिया कि—"जब मेरे अपने पास का पैसा ख़तम हो जायगा तब मैं

پتر ویوہار شروع کیا . یہ پتر ویوہار فضول نہیں گیا پر اِس سے بالا صاحب کو آدھک اُمید بھی نہیں بندھی . پتر ویوہار جاری ھے . ہم سے باتیں کرتے کرتے ایک بار پھر اُنھوں نے بڑی مایوسی سے کہا—" کوئی پرواہ نہیں کرتا!" پر اِس حالت میں بالاصاحب نے بڑی سمجھداری اور ھمت سے کام لیا . اُنھوں نے ہم سے کہا—" لوگوں کو یہ سب کام سرکار ھی پر نہیں چھوڑ دینا چاھئے . ھمیں اپنا کام خود کرنا چاھئے ." اِس اصول کے انوسار اُنھوں نے اُن اَبھاگی بستیوں کی حالت سدھارنے کا کام اپنے ھاتھ میں لے لیا . آجکل اُن کا لگ بھگ سب سمئے اِسی میں بیتتا ھے. کچھ بہت اَچھے تیاگی اور لگن سے کام کرنے والے بھی اُن کے ساتھ ھوگئے ھیں . بالا صاحب نے اپنی نجی پونجی کی ایک خاصی بڑی رقم یعنی لگ بھگ سب کچھ جو اُن کا اپنا تھا اِس کام کے لئے دے دیا ھے . بستی کے بچوں کے لئے اب ایک چھوٹا سا اسکول وھاں بن گیا ھے جس میں آجکل لگ بھگ چارسو لڑکے اور لڑکیاں لکھنا پڑھنا سیکھتے ھیں . کچھ لوگوں کے رھنے کے لئے کہیں کہیں زمین کو ذرا اونچا کر کے اِس طرح کے سیدھے سادے مکان بھی نمونے کے طور پر بنا دیئے گئے ھیں جن میں انسان رہ سکیں . ایک چھوٹا سا کامن ھال یعنی پنچائت گھر اُن کے لئے تیار ھوگیا ھے . بالا صاحب اور اُن کے ساتھی اُن لوگوں کے لئے روزگار کا بھی انتظام کر رھے ھیں . پاس کے بوچڑخانے میں جو بھیڑیں کٹتی ھیں اُن کی اُون کٹ کر ابھی تک ملک کے باھر بھیج دی جاتی تھی . بالاصاحب اور اُن کے ساتھیوں نے اب اُس اُون کو خرید کر وھیں رکھنا شروع کر دیا ھے . وہ اُون اُنھیں لوگوں سے کتوائی جاتی ھے اور ھاتھ کرگھوں پر اُنھیں سے اُس سے کمبل اور کوٹنگ کا کپڑا بنوایا جاتا ھے . ھم نے اُن کا حال کا بنا ھوا ایک کمبل اور ایک کوٹنگ کا تھان بھی دیکھا . مال بہت سندر تھا . پر یہ کام ابھی تو من میں چھٹانک بھی نہیں . روئی سے چرخوں پر سوت کاتنے اور اُس سے کھدر بننے کا کام بھی شروع کرا دیا گیا ھے . ھاتھ کا کاغذ بنانے اور صابن بنانے کے کام بھی بہت جلدی شروع ھونے والے ھیں . بالاصاحب اور اُن کے ساتھیوں کے کام میں ھندو، مسلمان، ھریجن ھیں، اونچ نیچ کے فرق کی کہیں گندھ تک نہیں ھے . اُن کے ساتھیوں میں بھی سب دھرموں کے اور سب طرح کے لوگ بڑی خوشی سے شامل ھیں . بالاصاحب نے ھمیں وشواس دلایا کہ پانچ برس کے اندر وہ اُس ساری بستی کو ایک "گارڈین سٹی" یعنی سندر بستی اور ھرابھرا باغ بنادینگے .

ھم نے بالا صاحب سے پوچھا کہ وہ بنا کافی دھن کے یا سرکاری مدد کے اُس اتنے بڑے کام کو کیسے پورا کر سکینگے ؟ اُنھوں نے بڑی ھمت کے ساتھ جواب دیا کہ "جب میرے اپنے پاس کا پیسہ ختم ھو جائیگا تب میں

सरकार से भी मांगूँगा और लोगों से भी मांगूँगा और मुझे विश्वास है कि तब दोनों मुझे मदद देंगे."

बाला साहब छियासठ बरस पूरे कर चुके. उन्हें दिल की बीमारी है जिसे डाक्टर थाम्बोसिस आफ़ दी हार्ट कहते हैं. वह अधिक चलते चलते थकने लगते हैं. उस दिन सुबह को भी वह थकने लगे. उन्होंने सादे स्वभाव हमारे कंधे पर हाथ रख लिया. कुछ दूर चलने के बाद हमने उतने ही सादे स्वभाव उनसे कहा कि—"बाला साहब ! आपको अब चलने में लकड़ी इस्तेमाल करनी चाहिये, इससे बड़ी मदद मिलती है." उन्होंने सुनते ही एक दम अपना हाथ हमारे कंधे पर से हटा लिया और कहने लगे—"मैंने लगभग तीस बरस जवानी के दिनों में शौक़िया छड़ी हाथ में रक्खी है. अब मैं तय कर चुका हूँ कि किसी चीज़ का सहारा लेकर न चलूंगा." सचमुच उन दुखियों की सेवा करने में बाला साहब अपने थाम्बोसिस को भूल जाते हैं.

बात बात में बाला साहब ने हम से यह भी कहा—"सुन्दरलाल जी ! मैं अब यह महसूस करता हूँ कि जितने साल मैंने चीफ़ मिनिस्टरी की वह साल मैंने गँवाए. हम लोगों के लिये काम तो यह है." हमने सुना है कि पिछले दिनों बाला साहब को सरकार की तरफ़ से किसी प्रदेश की गवर्नरी आफ़र की गई थी. उन्होंने इस काम को हाथ में ले लेने के कारण उस से इनकार कर दिया. कांग्रेस संगठन की ज़िम्मेदारी भी उन पर डालने की कोशिश की गई थी. उन्होंने उस से भी इनकार कर दिया. हाल में हिन्दी कमीशन की सदारत उन्होंने अपने पुराने साथियों के बहुत ज़िद करने पर और इस तरह की साफ़ शर्तों पर मन्ज़ूर कर ली है कि जिन से उनके इस सेवा काम में फ़र्क़ न पड़े.

बाला साहब बम्बई के अपने इस सारे पुरोग्राम को एक तरह का "परिश्रमालय" क़ायम करना कहते हैं. 'परिश्रमालय' नाम उन्हें विनोबा जी ने सुझाया है. परिश्रमालय का अर्थ है 'मशक़्क़त ख़ाना."

इलाहाबाद के एक सज्जन जो लगभग पैंतीस बरस से बम्बई में रहकर मज़दूरों और ग़रीबों की सेवा कर रहे हैं हम से कहते थे कि कम या अधिक इस तरह की बस्ती बम्बई में यह एक ही नहीं है. बाला साहब और उनके साथी इस बात को भी जानते हैं कि इस तरह के परिश्रमालयों की भारत भर में जगह जगह ज़रूरत है. उनकी योजना बहुत बड़ी है. वह इस तरह के सत्तर हज़ार परिश्रमालय भारत भर में खोल देना चाहते हैं, यानी हर दस गांव पीछे एक ताकि देश से बेरोज़गारी और भिखमंगापन मिट सके. बम्बई के आस पास की कुछ जगहों से लोगों ने उन्हें बुलाना भी शुरू कर दिया है. बहुतों ने मदद का वादा भी किया है. हमारी दिल से इच्छा है कि बाला साहब की यह महत्वाकांक्षा पूरी हो.

سرکار سے بھی مانگونگا اور لوگوں سےبھی مانگونگا اور مجھے بشواس ھے کہ تب دونوں مجھے مدد دینگے۔"

بالاصاحب چھیاسٹھ برس پورے کر چکے۔ اُنھیں دل کی بیماری ھے جسے ڈاکٹر تھامبوسس آف دی ہارٹ کہتے ھیں۔ وہ ادھک چلتے چلتے تھکنے لگتے ھیں۔ اُس دن صبح کو بھی وہ تھکنے لگے۔ اُنھوں نے سادے سبھاؤ ھمارے کندھے پر ھاتھ رکھ لیا۔ کچھ دور چلنے کے بعد ھم نے اُتنے ھی سادے سبھاؤ اُن سے کہا کہ—"بالا صاحب! آپ کو اب چلنے میں لکڑی استعمال کرنی چاھئے' اِس سے بڑی مدد ملتی ھے"۔ اُنھوں نے سنتے ھی ایک دم اپنا ھاتھ ھمارے کندھے پر سے ھٹا لیا اور کہنے لگے—"میں نے لگ بھگ تیس برس جوانی کے دنوں میں شوقیہ چھڑی ھاتھ میں رکھی ھے۔ اب میں طے کر چکا ھوں کہ کسی چیز کا سہارا لے کر نہ چلوں گا"۔ سچ مچ اُن دکھیوں کی سیوا کرنے میں بالا صاحب اپنے تھامبوسس کو بھول جاتے ھیں۔

بات بات میں بالا صاحب نے ھم سے یہ بھی کہا—"سندر لال جی! میں اب یہ محسوس کرتا ھوں کہ جتنے سال میں نے چیف منسٹری کی وہ سال میں نے گنوائے۔ ھم لوگوں کے لئے کام تو یہ ھے۔" ھم نے سنا ھے کہ پچھلے دنوں بالا صاحب کو سرکار کی طرف سے کسی پردیش کی گورنری آفر کی گئی تھی۔ اُنھوں نے اِس کام کو ھاتھ میں لے لینے کے کارن اُس سے انکار کر دیا۔ کانگریس سنگٹھن کی ذمہ داری بھی اُن پر ڈالنے کی کوشش کی گئی تھی۔ اُنھوں نے اُس سے بھی انکار کردیا۔ حال میں ھندی کمیشن کی صدارت اُنھوں نے اپنے پرانے ساتھیوں کے بہت ضد کرنے پر اور اس طرح کی صاف شرطوں پر منظور کر لی ھے کہ جن سے اُن کے اِس سیوا کام میں فرق نہ پڑے۔

بالا صاحب بمبی کے اپنے اِس سارے پروگرام کو ایک طرح کا "پریشرمالے" قائم کرنا کہتے ھیں۔ 'پریشرمالے' نام اُنھیں ونوباجی نے سجھایا ھے۔ پریشرمالے کا ارتھ ھے "مشقت خانہ"۔

الہ آباد کے ایک سجن جو لگ بھگ پینتیس برس سے بمبئی میں رہ کر مزدوروں اور غریبوں کی سیوا کر رھے ھیں ھم سے کہتے تھے کہ کم یا ادھک اِس طرح کی بستی بمبئی میں یہ ایک ھی نہیں ھے۔ بالا صاحب اور اُن کے ساتھی اس بات کو بھی جانتے ھیں کہ اِس طرح کے پریشرمالیوں کی بھارت بھر میں جگہ جگہ ضرورت ھے۔ ان کی یوجنا بہت بڑی ھے۔ وہ اِس طرح کے ستر ھزار پریشرمالے بھارت بھر میں کھول دینا چاھتے ھیں' یعنی ھر دس گاؤں پیچھے ایک تاکہ دیش سے بے روزگاری اور بھک منگاپن مٹ سکے۔ بمبئی کے آس پاس کی کچھ جگہوں سے لوگوں نے اُنھیں بلانا بھی شروع کر دیا ھے۔ بہتوں نے مدد کا وعدہ بھی کیا ھے۔ ھماری دل سے اچھا ھے کہ بالا صاحب کی یہ مہتوا کانشا پوری ھو۔

उच्च जीवन

लेखक—स्व. डा. हरि प्रसाद देसाई

अनुवादक—श्री गुनवंत मेहता

पहला दिन

बिस्तर में आधी जागृति और आधी नींद में आलसी अवस्था में पड़े रहने से कुछ फ़ायदा नहीं; जागते ही फ़ौरन् उठ बैठो! हमारा सबसे बड़ा जिस्मानी दुश्मन आलस्य (काहिली) है.

सहे-दिल से इल्तजा करो कि 'सब इन्सानों की तरक़्क़ी हो! सच्चाई के राहगीरों को हे भगवान! ताक़त दो कि वे ज्यादा हिम्मत और मेहनत से कार्य करते रहें और वे इन्द्रियों के विकारों के गुलाम न बनकर साबित क़दम रहें!'

फिर अपने इश्ट देवता का सुमिरन करो, ध्यान धरो, सच्चे भक्ति भाव से भगवान से प्रार्थना करो कि, 'हे भगवान! आज के दिन तक करने के क़ाबिल काम न करके और न करने के काम करके मैंने जो जो पाप किये हैं, उन सबको माफ़ करो!' [इस अवसर पर ऐसे कामों की जाँच-पड़ताल भी करो और जितने याद आयें उन सबको भगवान के सामने निवेदन करो.]

इतना करने से मन की एकाग्रता बढ़ेगी, आत्म परीक्षा करना आएगा, हृदय पवित्र होगा और उच्च जीवन के लिये आग्रह बँधेगा. इसका मतलब यह नहीं कि तुम सारे दिन गंभीर और भारी बने हुए फिरा करो. मासूम हँसी-दिल्लगी में वक्त़ गुज़ारना तो जीवन विकास में निहायत ज़रूरी है.

सिर्फ़ हैवान के माफ़िक़ न रहकर मानव जीवन का मुकम्मिल विकास करके, उच्च जीवन हासिल करने का आज से ही पूरा इरादा करलो. इस बात को गाँठ में बांध लेने की ख़ास ज़रूरत है.

दातुन करते वक्त़ और नहाते समय भी पाक-साफ़ विचार बराबर जारी रहने दो. पक्का इरादा करो कि, 'मेरी जिस्मानी गंदगी के साथ-साथ मेरी दिली गंदगी भी दूर हो!'

भोजन करते समय भी यह बात ध्यान में रहे कि ख़ुराक केवल जिस्म की परवरिश के लिये और सेहत के लिये है, सिर्फ़ ज़बानी स्वाद के लिये नहीं है. भूक्खड़ बनकर

اُوچ جیون

لیکھک—سورگیہ ڈاکٹر ہری پرساد دیسائی

انوادک—شری گنونت مہتا

پہلا دن

بستر میں آدھی جاگرتی اور آدھی نیند میں آلسی اوستھا میں پڑے رہنے سے کچھ فائدہ نہیں؛ جاگتے ہی فوراً اُٹھ بیٹھو! ہمارا سب سے بڑا جسمانی دشمن آلسیہ (کاہلی) ہے.

تہ دل سے التجا کرو کہ 'سب انسانوں کی ترقی ہو! سچائی کے راہگیروں کو ہے بھگوان! طاقت دو کہ وے زیادہ محنت اور ہمت سے کاریہ کرتے رہیں اور وے اندریوں کے وکاروں کے غلام نہ بنکر ثابت قدم رہیں!'

پھر اپنے اِشٹ دیوتا کا سمرن کرو' دھیان دھرو' سچے بھکتی بھاؤ سے بھگوان سے پراتھنا کرو کہ' 'ہے بھگوان! آج کے دن تک کرنے کے قابل کام نہ کرکے اور نہ کرنے کے کام کرکے میںنے جو جو پاپ کئے ہیں' اُن سبکو معاف کرو!' [اس اوسر پر ایسے کاموں کی جانچ پڑتال بھی کرو اور جتنے یاد آئیں اُن سب کو بھگوان کے سامنے نویدن کرو۔]

اتنا کرنے سے من کی ایکاگرتا بڑھیگی' آتم پریکشا کرنا آئیگا' ہردے پوتر ہوگا اور اُوچ جیون کے لئے آگرہ بندھے گا. اُسکا مطلب یہ نہیں کہ تم سارے دن گمبھیر اور بھاری بنے ہوئے پھرا کرو۔ معصوم ہنسی دالگی میں وقت گزارنا تو جیون کے وکاس میں نہایت ضروری ہے۔

صرف حیوان کے موافق نہ رہ کر مانو جیون کا مکمل وکاس کرکے' اُوچ جیون حاصل کرنے کا آج سے ہی پورا اِرادہ کرلو۔ اِس بات کو گانٹھ میں باندھ لینے کی خاص ضرورت ہے.

داتون کرتے وقت اور نہاتے سمئے بھی پاک صاف وچار برابر جاری رہنے دو. پکا ارادہ کرو کہ' 'میری جسمانی گندگی کے ساتھ ساتھ میری دلی گندگی بھی دور ہو!'

بھوجن کرتے سمئے بھی یہ بات دھیان میں رہے کہ خوراک کیول جسم کی پرورش کے لئے اور صحت کے لئے ہے' صرف زبانی سواد کے لئے نہیں ہے. بھکڑ بنکر

कभी मत खाना. पेट में जितनी भूक लगी हो उससे ज़रा कम खाना. खाने के बाद अचेतन-सा बन जाना कि जिससे तुरन्त काम न हो सके; ऐसी स्थिति लज्जास्पद है.

भगवान का उपकार मानना कि, जब हज़ारों इन्सान के पूरे पेट भी नहीं पलते तब उन्हें भोजन मिलता है. भोजन के समय इरादा करना कि, 'खुराक बराबर हज़म हो जाओ और जिस्म अपने फ़र्ज़ अदा करो और रूहानी नीयतों के रास आओ ! बुरे विकार या मनहूस विचार पैदा न हो !'

खाने के बाद फिर आत्म परीक्षा करो, चारित्र में बसे हुए ऐबों का खयाल करो. ऐब कितना मनहूस करने वाले है, यह सोचते रहो. उनमें से मिलता हुआ सुख कितना क्षणिक है, इस बात का चिंतन करो !

आइंदा ऐसे ऐबों के मातहत न होने का मज़बूत इरादा करो.

ऐसे आत्म निरीक्षण से भगवान, जो कि तुम्हारे ही अंतर में न्यायाधीश की सूरत में बैठा है, उनसे अपनी चाल-ढाल का न्याय कराने से तुम्हारी कल्पना से भी ज्यादा रूहानी तरक्क़ी होने लगेगी.

सारे दिन चलते-फिरते, काम करते करते, जब समय मिले तब आज के बारे में विचार शुद्धि की क्रिया जारी रखो.

शाम के वक़्त सैर या मर्दानगी भरे खेल कूद में रहो. पाबंदी और व्यायाम से बदन को चंगा और हट्टाकट्टा करो. तमाम धर्म अदा किये जा सकने के बल पर पहिले-पहल बदन तो तंदुरुस्त होना ही चाहिये.

दुनिया भर के तमाम मंदिरों में देह जैसा चमत्कारक व आलीशान मंदिर दूसरा एक भी नहीं है.

सो जाने से पहले प्रातःकाल के माफ़िक़ फिर प्रार्थना करो. सारे दिन में तुमने जो कुछ किया हो, उन सबकी अंतर्यामी की गवाही में तीन दफ़ा तलाश करो. विचारों में किये गये कुछ पापों को ढूँढ निकालो. क्रोध, राग, द्वेष, ईर्षा, असत्य, व्यभिचार, लोभ या मोह का गोया अनजाने में संग हुवा हो, समय का दुरुपयोग किया हो इत्यादि को ख़बरदार पहरेगीर की तरह जाँचो, बार बार तलाश करो या तो डायरी में सविस्तार लिख डालो. वह पढ़ जाओ. क़ुसूर और गुनाहों के लिये पश्चाताप करो [तोबा करो] भगवान से क्षमा माँगो और 'फिर ऐसे विचारों से या कर्मों से दोष नहीं करूंगा' ऐसा मन में ठानो.

'कल से ही मैं आज से ज्यादा नेक बनूँगा' ऐसा इरादा करने के बाद सो जाओ.

کبھی مت کھانا. پیٹ میں جتنی بھوک لگی ہو اُس سے ذرا کم کھانا . کھانے کے بعد اچیتن سا بن جانا کہ جس سے ترنت کام نہ ہو سکے؛ ایسی استھتی لجاسپد ہے۔

بھگوان کا اُپکار ماننا کہ، جب ہزاروں انسان کے پورے پیٹ بھی نہیں پلتے تب تمہیں بھوجن ملتا ہے. بھوجن کے لئے اِرادہ کرنا کہ، 'خوراک برابر ہضم ہو جاؤ اور جسم اپنے فرض ادا کرو اور روحانی نیتوں کے راس آؤ ! برے وکار یا منحوس وچار پیدا نہ ہو !'

کھانے کے بعد پھر آتم پریکشا کرو، چرتر میں بسے ہوئے عیبوں کا خیال کرو، 'عیب کتنا منحوس کرنے والے ہیں' یہ سوچتے رہو. اُن میں سے ملتا ہوا سکھ کتنا چھنک ہے' اِس بات کا چنتن کرو !

آئندہ ایسے عیبوں کے ماتحت نہ ہونے کا مضبوط ارادہ کرو.

ایسے آتم نریکشن سے بھگوان' جو تمہارے ہی انتر میں نیائے دھیش کی صورت میں بیٹھا ہے؛ اُن سے اپنی چال ڈھال کا نیائے کرانے سے تمہاری کلپنا سے بھی زیادہ روحانی ترقی ہونے لگیگی.

سارے دن چلتے پھرتے' کام کرتے کرتے' جب سمے ملے تب آج کے بارے میں وچار شدھی کی کریا جاری رکھو.

شام کے وقت سیر یا مردانگی بھرے کھیل کود میں رہو. پابندی اور ویایام سے بدن کو چنگا اور ہٹا کٹا کرو. تمام دھرم ادا کئے جا سکنے کے بل پر پہلے پہل بدن تو تندرست ہونا ہی چاہیئے.

دنیا بھر کے تمام مندروں میں دیہہ جیسا چمتکارک و عالیشان مندر دوسرا ایک بھی نہیں ہے.

سو جانے سے پہلے پراتہ کال کے موافق پھر پرارتھنا کرو . سارے دن میں تم نے جو کچھ کیا ہو' اُن سبکی انتریامی کی گواہی میں تین دفعہ تلاش کرو . وچاروں میں کیئے گئے کچھ پاپوں کو ڈھونڈھ نکالو . کرودھ' راگ' دویش' ایرشا' استیہ' وبھچار' لوبھ یا موہ کا گویا انجانے میں سنگ ہوا ہو' سمئے کا درپیوگ کیا ہو اتیادی کو خبردار پہرہ گیر کی طرح جانچو' بار بار تلاش کرو یا تو ڈایری میں سوستار لکھ ڈالو . وہ پڑھ جاؤ . قصور اور گناہوں کے لئے پشچاتاپ کرو (توبہ کرو) بھگوان سے چھما مانگو اور 'پھر سے ایسے وچاروں سے یا کرموں سے دوش نہیں کرونگا' ایسا من میں ٹھانو .

'کل سے ہی میں آج سے زیادہ نیک بنونگا' ایسا ارادہ کرنے کے بعد سو جاؤ .

आत्म परीक्षा, आत्म सम्मान और आत्म विश्वास जिन्हों ने पाये हैं, वे सब अपने देह रूपी राज्य के बादशाह हैं. प्रथम अपने आप पर स्वराज्य हासिल करो.

दूसरा दिन

'टाइम-टेबुल' यानी समय-पत्रक तैयार करो और बा-पाबंदी उसका पालन करो. व्यायाम, पढ़ाई, कर्तव्य-कर्म, आराम और नींद के लिये समय को बराबर बाँट कर मुक़र्रर कर दो. इस युग के आला व उम्दा व्रत-नियम टाईम-टेबुल के अनुसार चलने में हैं।

शरीर को साफ़ रखो. हर रोज दंत मंजन के साथ दातुन करो. खूब कुल्ले करो. दो दफ़ा स्नान करो. वस्त्र बहुत ही साफ़ सुथरे रखो.

अपना कमरा साफ़ और सुन्दर बनाओ. सारा घर भगवान के मंदिर जैसा साफ़, सुशोभित और सुन्दर रहना चाहिये. पाख़ाने में बदबू न रहे, नालियां साफ़ रहें और घर-आंगन व गलियां साफ़ व आकर्षक (दिलकश) बनना चाहिये. गंदगी की वजह से मानो भगवान आजकल हमसे रूठ गये हैं. जब स्वच्छता, शोभा, सौंदर्य, फूल व पेड़ और धूप-दीप से हमारे घर-आंगन पवित्र बनेंगे तब रूठे हुए भगवान मन जायेंगे. फिर जहाँ चौबीस घंटों तक ख़ुद भगवान विराजमान होने वाले हैं तब तो वहाँ हमें अपनी गलियाँ, आँगन, घर का हर एक कमरा साफ़, सुन्दर और दिलकश बनाना चाहिये. महा पुरुषों की, देवों की और सृष्टि-सौंदर्य के नज़ारों की प्रेरक तस्वीरें घर के हर कमरे में लगा दो. अपनी शक्ति के अनुसार पुस्तकालय रखो. चुनी हुई बढ़िया पुस्तकों की पढ़ाई, इस युग में गुरुओं की रहनुमाई के बराबर है. अच्छे अख़बार, महावारी पर्चे और सामयिक पढ़ते रहो. मित्रों के साथ का समय ज्ञान चर्चा में बिताओ. हमारी आत्मोन्नति हो, ऐसी एकाध गंभीर पुस्तक भी मननपूर्वक पढ़ते रहो.

और बाद में पढ़े हुए पर ख़ूब सोच-विचार करो. सिर्फ़ पढ़ा हुआ याद रखने से कुछ नहीं होने का. श्रवन और पाठन के मानी जो जो सुना और पढ़ा हुआ हो, हर एक के बारे में मनन और लगातार चिंतन करने की बहुत जरूरत है. मनन के मानी हैं गहरा सोचने की आदत. पुस्तकों में जो कुछ भी हो, वह सब सही ही हो, ऐसा मान लेना नहीं चाहिये. हर एक राय पर हम अपने स्वतंत्र निजी विचार करके जीवन के और देश के महान प्रश्नों के बारे में हमें अपने सिद्धान्त रचने चाहियें.

آتم پریکشا، آتم سمان اور آتم وشواس جنھوں نے پائے ھیں، وے سب دیہہ روپی راجیہ کے بادشاہ ھیں . پرتھم اپنے آپ پر سوراجیہ حاصل کرو .

دوسرا دن

ٹائم ٹیبل یعنی سمئے پترک تیار کرو اور با پابندی اسکاپالن کرو . ویایام، پڑھائی، کرتویہ کرم، آرام اور نیند کے لیئے سمئے کو برابر بانٹ کر مقرر کردو . اِس یگ کے اعلیٰ و عمدہ ورت نیم ٹائم ٹیبل کے انوسار چلنے میں ھیں .

شریر کو صاف رکھو. ھر روز دنت منجن کے ساتھ داتون کرو . خوب قلے کرو . دو دفعہ اسنان کرو .وستر بہت ھی صاف ستھرے رکھو.

اپنا کمرہ صاف اور سندر بناؤ . سارا گھر بھگوان کے مندر جیسا صاف، سوشوبھت اور سندر رھنا چاھیئے. پاخانہ میں بدبو نہ رھے، نالیاں صاف رھیں اور گھر آنگن وگلیاں صاف و آکرشک (دلکش) بننا چاھیئے . گندگی کی وجہ سے مانو بھگوان آجکل ھم سے روٹھ گئے ھیں . جب سوچھتا، شوبھا، سوندریہ، پھول و پیڑ اور دھوپ دیپ سے ھمارے گھر آنگن پوتر بنیگے تب روٹھے ھوئے بھگوان من جائنیگے . پھر جہاں چوبیس گھنٹوں تک خود بھگوان وراجمان ھونے والے ھیں تب تو یہاں ھمیں اپنی گلیاں، آنگن، گھر کا ھر ایک کمرہ صاف، سندر اور دلکش بنانا چاھیئے . مہاپرشوں کی، دیوں کی اورسرشٹ سوندریہ کے نظاروں کی پریرک تصویریں گھر کے ھر کمرے میں لگادو . اپنی شکتی کے انوسار پستکالیہ رکھو . چنی ھوئی بڑھیا پستکوں کی پڑھائی، اِس یگ میں گروؤں کی رھنمائی کے برابر ھے . اچھے اخبار، ماھواری پرچے اور سامیک پڑھتے رھو . متروں کے ساتھ کا سمے گیان چرچا میں بتاؤ . ھماری آتمونتی ھو، ایسی ایک آدھ گمبھیر پستک بھی منن پوروک پڑھتے رھو .

اور بعد میں پڑھے ھوئے پر خوب سوچ وچار کرو . صرف پڑھا ھوا یاد رکھنے سے کچھ نہیں ھونے کا . شرون اور پاٹھن کے معنی جو جو سنا اور پڑھا ھوا ھو، ھر ایک کے بارےمیں منن اور لگاتار چنتن کرنے کی بہت ضرورت ھے. منن کے معنی ھیں گہرا سوچنے کی عادت . پستکوں میں جو کچھ بھی ھو، وہ سب سہی ھی ھو، ایسا مان لینا نہیں چاھیئے. ھرایک رائے پر ھم اپنے سوتنتر نجی وچار کرکے جیون کے اور دیش کے مہان پرشنوں کے بارے میں ھمیں اپنے سدھانت رچنے چاھئے .

एकान्त में अपने मन के साथ अकेला रहने की आदत डालो. तुम्हारे सिवा तुम्हारा अपना उद्धार और कोई नहीं कर सकेगा, इस भावना को हृदय में क़ायम करो. राहु या शनि की महदशा तुम्हारी राह का रोड़ा नहीं बनती. अपना मित्र या दुश्मन तुम अपने आप ही हो. जैसे विचार तुम करोगे वैसे बनोगे. कामनाएँ नेक करोगे तो नेक बनोगे और जैसे कर्म करोगे वैसे फल पाओगे. क़िस्मत के हामी न बनो, पुरुषार्थ के हामी बनो. स्वार्थ के लिये नहीं, बल्कि ज्ञान की ख़ातिर आत्मज्ञान हासिल करना चाहिये. ज्ञान के लिये प्रीति होनी चाहिये. सच्चा ज्ञान दिखावे के लिये नहीं वरन् हमारे अपने विकास के लिये है. ज्ञान से हम में लियाक़त तो आती है पर जो जो कर्म संसार में करने का है, हर एक को आला तरीक़े से कर सकते हैं, लेकिन सच्चा फल आत्मोन्नति है. इससे विवेक वृत्ति बढ़ती है, तसल्ली होती है और आत्मा-परमात्मा के दर्शन होते हैं.

ज्ञानी या भक्त संसार के लिये ना-क़ाबिल हो जाता है, यह बात ग़लत है. सच्चा ज्ञानी या सच्चा भक्त तो संसार के लिये ज्यादा शक्तिवान और ज्यादा क़ाबिल बनता है.

हमारे अन्दर बसे हुए हमारे अंतर्यामी प्रभु ही प्रेम, सत्य, न्याय, दया, और शक्ति का स्वरूप हैं. उस पर ही हमें हर दम अपना प्रेम रखना चाहिये, उस पर पहाड़ की नाई अविचल श्रद्धा होनी चाहिये. सच्चा विश्वास भी हम उसका ही रख सकेंगे. जब जगत हमारा त्याग करेगा तब उसकी ही शरन हमारे काम आनेवाली है. वह हमारे हाथ-पैरों से और श्वासोच्छ्वास से भी नजदीक है और हमेशा हम को सन्मार्ग पर चलने की हिदायत करता है. उसकी धीमी कोमल आवाज़ को पहचानो.

हमेशा वह हमारे साथ बोलता रहता है, लेकिन ख़ास तौर पर जब हम कुछ खोटा काम करने को पाप के मार्ग की ओर अग्रसर होने के लिये आमादा होते हैं तब तो वह हमको अवश्य रोकता है. जब बुद्धि सारासार वस्तु नहीं समझ सकती, तब अंतर्यामी के हुक्म के मुताबिक चलना श्रेयस्कर है.

एक ही बार तुम उस आवाज़ की अगर इज्जत करोगे तो बार बार वह तुम्हारी मदद के लिये दौड़कर खड़ी रहेगी और अधिक से अधिक स्पष्ट बनती जायेगी. लेकिन सुनते हुए भी अगर तुमने अनसुनी कर दी, एक, दो, या तीन बार उस मधुर नाद को ठुकरा कर तुम पाप-मार्ग पर जाओगे तो फिर न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी. फिर वह कल्याणकारी आवाज़ तुम को नहीं सुनाई देगी. कान होते हुए भी तुम बहरे हो जाओगे और आहिस्ता आहिस्ता पतन

ایکانت میں اپنے من کے ساتھ اکیلا رہنے کی عادت ڈالو. تمہارے سوا تمہارا اپنا اُددھار اور کوئی نہیں کر سکیگا' اس بھاونا کو ہردئے میں قایم کرو. راھو یا شنی کی گرہدشا تمہاری راہ کا روڑا نہیں بنتی. اپنا متر یا دشمن تم اپنے آپ ہی ہو. جیسے وچار تم کرو گے ویسے بنوگے. کامنائیں نیک کروگے تو نیک بنوگے اور جیسے کرم کروگے ویسے پھل پاؤ گے. قسمت کے حامی نہ بنو' پروشارتھ کے حامی بنو. سوارتھ کے لیئے نہیں' بلکہ گیان کی خاطر آتم گیان حاصل کرنا چاھئے. گیان کے لئے پریتی ہونی چاھئے. سچا گیان دکھاوے کے لیئے نہیں ورن ہمارے اپنے وکاس کے لیئے ھے. گیان سے ہم میں لیاقت تو آتی ھے پر جو کرم سنسار میں کرنے کا ھے' ہر ایک کو اعلیٰ طریقے سے کر سکتے ھیں' لیکن سچا پھل آتمونتی ھے. اِس سے وویک ورتی بڑھتی ھے' تسلی ہوتی ھے اور آتما پرماتما کے درشن ہوتے ھیں.

گیانی یا بھکت سنسار کے لیئے ناقابل ہوجاتا ھے' یہ بات غلط ھے. سچاگیانی یا سچا بھکت تو سنسار کے لیئے زیادہ شکتیمان اور زیادہ قابل بنتا ھے.

ھمارے اندر بسے ہوئے ھمارے انتریامی پربھو ھی پریم' ستیہ' نیائے دیا اور شکتی کا سروپ ھیں. اُسپر ھی ھمیں ھردم اپنا پریم رکھنا چاھیئے' اُسپر پہاڑ کی نائیں اوچل شردھا ہونی چاھئے. سچا وشواس بھی ہم اُسکا ھی رکھ سکینگے. جب جگت ھمارا تیاگ کریگا تب اُسکی ھی شرن ھمارے کام آنے والی ھے. وہ ھمارے ھاتھ پیروں سے اور شواسوچھواس سے بھی نزدیک ھے اور ھمیشہ ھمکو سنمارگ پر چلنے کی ھدایت کرتا ھے. اُسکی دھیمی کومل آواز کو پہچانو.

ھمیشہ وہ ھمارے ساتھ بولتا رھتا ھے' لیکن خاص طور پر جب ہم کچھ کھوٹا کام کرنے کو پاپ کے مارگ کی اور اگرسر ہونے کے لیئے آمادہ ہوتے ھیں تب تو وہ ہم کو اوشیہ روکتا ھے. جب بدھی سارآسار وستو نہیں سمجھ سکتی' تب انتریامی کے حکم کے مطابق چلنا شریسکر ھے.

ایک ھی بار تم اُس آواز کی اگر عزت کرو گے تو بار بار وہ تمہاری مدد کے لیئے دوڑ کر کھڑی رھیگی اور ادھک سے ادھک اسپشٹ بنتی جائیگی. لیکن سنتے ہوئے بھی اگر تمنے اَن سنی کردی' ایک' دو یا تین بار اُس مدھر ناد کو ٹھکرا کر تم پاپ مارگ پر جاؤ گے تو پھر نہ رھیگا بانس اور نہ بجیگی بانسری. پھر وہ کلیانکاری آواز تمکو نہیں سنائی دیگی. کان ہوتے ہوئے بھی تم بہرے ہو جاؤ گے اور آھستہ آھستہ پتن

की राह में फिसल जाओगे ! पाप के आदी बने हुए कितने ही आदमियों ने अंतर्यामी के इस नाद को ठुकरा दिया है. वैसी दुर्दशा तुम्हारी न हो !

जन्नत और जहन्नुम दोनों इस पृथ्वी पर ही हैं. जिन्होंने अंतर्यामी के नाद को ठुकराया है और जो स्वेच्छाचारी जीवन गुजारते हैं वे जीते जी जहन्नुम में हैं. वे किसी न किसी दिन जरूर पछतायेंगे और उस पछतावे की आग नस नस में समा जायेगी. 'ओह ! मुझे जहरीले साँपों ने डस लिया !' ऐसा उनको महसूस होगा. आखिरकार वे पछतावे की आग से शुद्ध होकर उस अंतर्यामी की शरन ढूँढ़ेंगे, तो जरूर—वह तो दीन दयालु है, करुणा सागर है, पतित पावन है—वह फिर तुम्हें सन्मार्ग पर चढ़ा देगा और पहले की भाँति आवाज सुनायेगा.

जो अंतर्यामी का नाद सुनते हैं और उसके अनुसार चलते हैं वे जीते जी जन्नत में हैं. जैसा सुख गोपियों को श्री कृष्ण की मधु बंसी सुनकर होता था वैसा ही सुख हमेशा उनको मिलता है.

'यमुना पर बज रही बांसुरिया' वह सबर संतोष निराला है.

کی راہ میں پھسل جاؤ گے ! پاپ کے عادی بنے ہوئے کتنے ہی آدمیوں نے انتر یامی کے اِس ناد کو ٹھکرا دیا ہے . ویسی دردشا تمھاری نہ ہو !

جنت اور جہنم دونوں اِس پرتھوی پر ہی ہیں . جنہوں نے انتر یامی کے ناد کو ٹھکرا یا ہے اور جو سویچھاچاری جیون گذارتے ہیں وہ جیتے جی جہنم میں ہیں . وے کسی نہ کسی دن ضرور پچھتائینگے اور اُس پچھتاوے کی آگ اُن کی نس نس میں سما جائیگی . ' اوہ ! مجھے زہریلے سانپوں نے ڈس لیا ! ' ایسا انکو محسوس ہوگا . آخرکار وے پچھتاوے کی آگ سے شدھ ہو کر اُس انتریامی کی شرن ڈھونڈھینگے' تو ضرور—وہ تو دین دیالو ہے' کرونا ساگر ہے' پتت پاون ہے— وہ پھر تمھیں سنمارگ پر چڑھا دیگا اور پہلے کی بھانتی آواز سنائے گا .

جو انتر یامی کا ناد سنتے ہیں اور اُسکے انو سار چلتے ہیں وہ جیتے جی جنت میں ہیں. جیسا سکھ گوپیوں کو شری کرشن کی مدھو بنسی سنکر ہوتا تھا ویسا ہی سکھ ہمیشہ انکو ملتا ہے .

'یمونا پر بج رہی بانسوریا' وہ صبر سنتوش نرالا ہے .

मैं यह मानता हूँ कि अगर कोई योजना इस तरह बनाई जाये जिसमें किसी देश के कच्चे माल को तो खूब काम में लाया जाय पर वहां की जबरदस्त आबादी की रत्ती भर भी परवाह न की जाये तो वह योजना नहीं है मजाक़ है......हिन्दुस्तान के लिये वही योजनाबन्दी ठीक हो सकती है जो यहां ही कुल की कुल आबादी से अच्छा से अच्छा काम ले और यहां के कच्चे माल को यहां के लाखों गावों में तक़सीम कर दे. ऐसी ही योजना से हिन्दुस्तान का सच्चा हित हो सकता है.

—महात्मा गांधी

میں یہ مانتا ہوں کہ اگر کوئی یوجنا اِس طرح بنائی جائے جس میں کسی دیش کے کچے مال کو تو خوب کام میں لایا جائے پر وہاں کی زبردست آبادی کی رتی بھر بھی پرواہ نہ کی جائے تو وہ یوجنا نہیں ہے مذاق ہے... ہندستان کے لئے وہی یوجنا بندی ٹھیک ہو سکتی ہے جو یہاں کی کل کی کل آبادی سے اچھے سے اچھا کام لے اور یہاں کے کچے مال کو یہاں کے لاکھوں گاؤں میں تقسیم کردے . ایسی ہی یوجنا سے ہندستان کا سچا ہت ہو سکتا ہے .

—مہاتما گاندھی

प्रेम, वियोग और वर्षा

विश्वम्भरनाथ पाँडे

वर्षा रितु आती है और जली तपी धर्ती को नई ज़िन्दगी में शराबोर कर जाती है. इनसान ही नहीं पशु, पक्षी, पेड़ और पौधे, तपन के सताये हुए सभी बरसात की फुहारों में चैन की साँस लेने लगते हैं. हमारे देश में वर्षा रितु को 'वर्षामंगल' का नाम दिया गया है. महाकवि बाल्मीकि, कवि गुरु कालिदास, कविभक्त तुलसीदास और कवि-सम्राट रवीन्द्रनाथ सबने वर्षा को अपनी कविताओं के ताने-बाने में बुना है. खड़ी बोली के आदि कवि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, 'सावन मन भावन' में अपने आप को भूलने का उपदेश देते हैं. हिन्दी और उर्दू कवियों और शायरों की कविताएँ और नज़्में वर्षा की मधुर फुहारों में रस से पगी हुई लगती हैं.

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र सावन के महीने की मादकता का वर्णन करते हुये कहते हैं—

यह सावन मास सुहावन है, मन भावन या में न शोक करो,
जमुना पै चलो जु सबै मिलिकै औ गाय बजाय के शोक हरो.

और वे सिर्फ़ यहीं तक नहीं रुके. मर्यादा के बन्धन लाँघ कर वह नव यौवनाओं से बिनती करते हैं—

'हरिचन्द' की तुम सों यही बिनती
यहि पाखैं पती व्रत ताखैं धरो.

टीकाकार और आलोचक शायद कहें कि यहाँ कवि की पतिव्रत से मुराद आत्म संयम से है, नफ़्सकुशी से है; मगर क्या बूँदनियों के तार सब कुछ भुला देने वाले नहीं होते ? सावन की झड़ी से एक समाँ बँध जाता है और शायर खिंचकर कल्पना की दुनिया में सैर करने लगता है.

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने सावन भादों की अँधेरी घटाटोप रातों का ज़िक्र करते हुए पूछा है—

शषि तारा हीना अन्ध तामसी यामिनी,
कहाँ आज विस्मृत विह्वल फिरतीं सारी पुर कामिनी ?
चमके दीप्त दामिनी,
शून्य पड़ी हैं सारी शैया, कहां गईं पुर कामिनी ?
यानी—अँधेरी घनी रात जिसमें न चाँद हैं न तारे,
ऐसी इस रात में खोई हुई सी व्याकुल गाँव की बालाएँ
कहां फिर रही हैं ?

پریم' ویوگ اور ورشا

وشومبھر ناتھ پانڈے

ورشا رت آتی ھے اور جلی تپی دھرتی کو نئی زندگی میں شرابور کر جاتی ھے . انسان ھی نہیں پشو' پکشی پیڑ اور پودھے' تپن کے ستائے ھوئے سبھی برسات کی پھوھاروں میں چین کی سانس لینے لگتے ھیں . ھمارے دیش میں ورشا رت کو 'ورشا منگل' کا نام دیا گیا ھے . مہا کوی والمیک' کوی گرو کالیداس' کوی بھگت تلسی‌داس اور کوی‌سمراٹ رویندر ناتھ سب نے ورشا کو اپنی کویتاؤں کے تانے بانے میں بنا ھے . کھڑی بولی کے آدی کوی بھارتیندو بابو ھریشچندر 'ساون من بھاون' میں اپنے آپ کو بھولنے کا اُپدیش دیتے ھیں . ھندی اور اُردو کویوں اور شاعروں کی کویتائیں اور نظمیں ورشا کی مدھر پھوھاروں میں رس سے پگی ھوئی لگتی ھیں .

بھارتیندو بابو ھریشچندر ساون کے مہینے کی مادکتا کا ورنن کرتے ھوئے کہتے ھیں—

یہ ساون ماس سوھاون ھے' من بھاون یا میں نہ شوک کرو'
جمونا پہ چلو جو سبے مل کے' او گائے بجائے کے شوک ھرو .

اور وے صرف یہیں تک نہیں رکے . مریادہ کے بندھن لانگھ کر وہ نو یووناؤں سے بنتی کرتے ھیں—

ھریشچند کی تم سوں یہی بنتی
یہی پاکھیں پتی ورت تاکھیں دھرو.

ٹیکا کار اور آلوچک شاید کہیں کہ یہاں کوی کی پتی ورت سے مراد آتم سنیم سے ھے' نفس کشی سے ھے؛ مگر کیا بوندنیوں کے تار سب کچھ بھلا دینے والے نہیں ھوتے ؟ ساون کی جھڑی سے ایک سماں بندھ جاتا ھے اور شاعر کھنچ کر کلپنا کی دنیا میں سیر کرنے لگتا ھے .

گرو دیو رویندر ناتھ نے ساون بھادوں کی اندھیری گھٹا ٹوپ راتوں کا ذکر کرتے ھوئے پوچھا ھے—

ششی تارا ھینا اندھ تامسی یامنی'
کہاں آج وسمرت وھول پھرتی ساری پور کامنی ؟
چمکے دیپت دامنی'
شونیہ پڑیں ھیں ساری شیا' کہاں گئیں پور کامنی ؟
یعنی— اندھیری گھنی رات جس میں نہ چاند ھے نہ تارے'
ایسی اِس رات میں کھوئی ھوئی سی ویا کل گاؤں کی بالائیں کہاں پھر رہی ھیں ؟

बिजली प्रकाश के साथ चमक रही है,
सेजें सूनी पड़ी हैं, और यह ग्राम वधुयें गईं कहाँ ?

संस्कृत के कवियों ने ऐसी भयंकर बरसाती रात में इन पुर कामिनियों को कड़कती हुई बिजलियों, गरजते हुए बादलों और बरसती हुई मूसलाधारों के बीच भी अपने प्रियतमों से अभिसार के लिये घरों से निकाला है.

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ अपनी एक कविता में कहते हैं—

वर्षा आई है, नई वर्षा !
वर्षा क्या है ? रस में पगी हुई मोहब्बत है.
बन और बागों में सन-सन पवन बह रहा है.
आज पेड़ और लताएँ सबने हरियाली की चादरें ओढ़ ली हैं.
हे कवि ! यह बादल हज़ारों-हज़ारों युगों से आकाश में
इसी तरह आते हैं और छाते हैं.
हवाएँ नशे में झूम-झूम कर ग़ुल-शोर कर रही हैं.
वर्षा क्या है ? हज़ारों हज़ारों युग का स्नेह से सना हुआ
प्रेम का एक गीत है.

वर्षा अगर वियोगी और वियोगिनों की सुधबुध हरती है तो दूसरी ओर वर्षा का राजा सावन बहनों और बेटियों को मैके की याद में बिलखाता है. सुसराल में बैठी हुई बहन अपने मैके में नीम की डाल पर पड़े हुए झूलों की पेंग को याद करती है. रह-रह कर उसका मन सलूनो के लिये मचलता है और वह आहें भर कर कहती है—

बिरन ! मेरो सावन बीतो जाय !

दूसरी ओर एक साजन-विहीना वर्षा को नये संदेशों का साधन समझ कर अपने साजन को निमंत्रण देते हुए कहती है—

आ, मिल गाएं गीत !
नीली-नीली बदली छाई,
ठन्डी-ठन्डी वायु आई,
हल्की-हल्की बूँदें बरसें,
नैन तेरे दर्शन को तरसें,
आ, मिल गायें गीत, साजन ! प्रीत हमारी रीत.
आ, हिल-मिल कर झूला झूलें,
जग के सारे संकट भूलें,
सैर करें हम प्रेमनगर की,
आजा, बरखा की यह रितु भी,
जाय न यों ही बीत, साजन ! प्रीत हमारी रीत.

और जब इस बिनती पर भी साजन नहीं आता तो वियोगन दुख से भर कर कहती है—

किस विध बीतेगी, उन बिन काली रात !
बिजली पल-पल छिन-छिन तड़पे,
बादल कड़-कड़, कड़-कड़, कड़के,
पानी रिमझिम-रिमझिम बरसे,
आई यौवन पर बरसात !

بجلی پرکاش کے ساتھ چمک رہی ہے'
سیجیں سونی پڑی ہیں' اور یہ گرام ودھوئیں گئیں کہاں ؟

سنسکرت کے کویوں نے ایسی بھینکر برساتی رات میں اِن پور کامنیوں کو کڑکتی ہوئی بجلیوں' گرجتے ہوئے بادلوں اور برستی ہوئی موسلادھاروں کے بیچ بھی اپنے پریتموں سے ابھیسار کے لئے گھروں سے نکالا ہے .

گرو دیو رویندر ناتھ اپنی ایک کویتا میں کہتے ہیں—

ورشا آئی ہے نئی ورشا !
ورشا کیا ہے ؟ رس میں پگی ہوئی محبت ہے .
بن اور باغوں میں سن سن پون بہہ رہا ہے .
آج پیڑ اور لتائیں سب نے ہریالی کی چادریں اوڑھ لی ہیں.
ہے کوی ! یہ بادل ہزاروں ہزاروں یگوں سے آکاش میں اِسی
طرح آتے ہیں اور چھاتے ہیں .
ہوائیں نشے میں جھوم جھوم کر شور کر رہی ہیں .
ورشا کیا ہے ؟ ہزاروں ہزاروں یگ کا سنیہہ سے سنا ہوا
پریم کا ایک گیت ہے .

ورشا اگر ویوگی اور ویوگنوں کی سدھ بدھ ہرتی ہے تو دوسری اور ورشا کا راجہ ساون بہنوں اور بیٹیوں کو میکے کی یاد میں بلکھاتا ہے . سسرال میں بیٹھی ہوئی بہن اپنے میکے میں نیم کی ڈال پر پڑے ہوئے جھولوں کی پینگ کو یاد کرتی ہے . رہ رہ کر اُسکا من سلونو کے لئے مچلتا ہے اور وہ آہیں بھر کر کہتی ہے—

برن ! میرو ساون بیتو جائے !

دوسری اور ایک ساجن-وہینا ورشا کو نئے سندیشوں کا سادھن سمجھ کر اپنے ساجن کو نمنترن دیتے ہوئے کہتی ہے—

آ' مل گائیں گیت !
نیلی نیلی بدلی چھائی'
ٹھنڈی ٹھنڈی وایو آئی'
ھلکی ھلکی بوندیں برسیں'
نین ترے درشن کو ترسیں'
آ' مل گائیں گیت' ساجن ! پریت ہماری ریت .
آ' ھل مل کر جھولا جھولیں'
جگ کے سارے سنکٹ بھولیں'
سیر کریں ہم پریم نگر کی'
آجا' برکھا کی یہ رت بھی'
جائے نہ یوں ہی بیت' ساجن ! پریت ہماری ریت .

اور جب اِس بنتی پر بھی ساجن نہیں آتا تو ویوگن دکھ سے بھر کر کہتی ہے—

کس بدھ بیتے گی' اُن بن کالی رات !
بجلی پل پل' چھن چھن تڑپے'
بادل کڑ کڑ' کڑ کڑ' کڑ کے'
پانی رم جھم' رم جھم برسے'
آئی یوون پر برسات !

क्या जाने क्या गुज़रे मुझ पर,
जी घबराता है रह-रह कर,
ऐसा सूना है उन बिन घर,
जैसे कोई रूख बिनु पात !

एक दूसरी नायिका का प्रियतम परदेस में तो नहीं है, लेकिन फिर भी इतना निर्दयी है कि भरी बरसात में अपनी प्रियतमा को छोड़कर जाना चाहता है और वह दुख की मारी उससे मिन्नत करती है—

प्रियतम ! रह जा आज की रात !
आज की रात जिया घबराये,
आज की रात गई कब आये,
सुन जा मन की बात, प्रियतम ! रह जा आज की रात !
बिजली कड़के बादल बरसे,
आज की रात निकल नहीं घर से,
देख भरी बरसात, प्रियतम ! रह जा आज की रात !
आज की रात हिया मोरा धड़के,
आज की रात आँख मोरी फड़के,
जोड़ रही हूँ हात, प्रियतम ! रह जा आज की रात !

और उसके प्रियतम का दिल भी क्या कठोर है कि वह मिन्नतें करने पर भी नहीं रुकता और चला जाता है. रह जाती है वियोगन जिसे तसल्ली देने वाला और कोई नहीं सिवाय पपीहे के, जिसकी कूक सुनकर आहें भरती हुई वह कहती है—

कूक पपीहे कूक !
बादल गरजे रैन अँधेरी,
सूनी-सूनी दुनिया मेरी,
जीना मेरा हो गया दूभर,
आँख लगे ना भूक, कूक पपीहे कूक !
तू बनवासी खुल कर रोये,
मेरा रोना मुझे डुबोये,
तेरी तरह से नेह लगाया,
चूक गई मैं चूक, कूक पपीहे कूक !
मैं भी अकेली तू भी अकेला,
मोह का सागर दुख: का रेला,
तेरे गले में पी का फन्दा,
मेरे मन में हूक, कूक पपीहे कूक !

और तब वह बिरह में भरकर अपने प्रियतम को पाती लिखती है—

उमंग इक जी में उठ रही है,
घटाएँ घिर-घिर के छा रही हैं,
पड़ोसिनें झूलने को झूला,
घने-घने बन को जा रही हैं.

کیا جانے کیا گذرے مجھ پر،
جی گھراتا ہے رہ رہ کر،
ایسا سونا ہے اُن بن گھر،
جیسے کوئی روکھ بنو پات !

ایک دوسری نایکا کا پریتم پردیس میں تو نہیں ہے، لیکن پھر بھی اِتنا نردئی ہے کہ بھری برسات میں اپنی پریتما کو چھوڑ کر جانا چاہتا ہے اور وہ دکھ کی ماری اُس سے منت کرتی ہے—

پریتم! رہ جا آج کی رات !
آج کی رات جیا گھبرائے،
آج کی رات گئی کب آئے،
سن جا من کی بات، پریتم! رہ جا آج کی رات !
بجلی کڑکے بادل برسے،
آج کی رات نکل نہیں گھر سے،
دیکھ بھری برسات، پریتم ! رہ جا آج کی رات !
آج کی رات هیا مورا دھڑکے،
آج کی رات آنکھ موری پھڑکے،
جوڑ رہی ہوں ہات، پریتم ! رہ جا آج کی رات.

اور اُسکے پریتم کا دل بھی کیا کٹھور ہے کہ وہ منتوں کرنے پر بھی نہیں رکتا اور چلا جاتا ہے . رہ جاتی ہے ویوگن جسے تسلی دینے والا اور کوئی نہیں سوائے پپیہے کے، جسکی کوک سن کر آہیں بھرتی ہوئی وہ کہتی ہے—

کوک پپیہے کوک !
بادل گرجے رین اندھیری،
سونی سونی دنیا میری،
جینا میرا ہو گیا دوبھر،
آنکھ لگے نا بھوک، کوک پپیہے کوک !
تو بن واسی کھل کر روئے،
میرا رونا مجھے ڈبوئے،
تیری طرح سے نیہہ لگایا،
چوک گئی میں چوک، کوک پپیہے کوک !
میں بھی اکیلی تو بھی اکیلا،
موہ کا ساگر دکھ کا ریلا،
تیرے گلے میں پی کا پھندا،
میرے من میں ہوک، کوک پپیہے کوک !

اور تب وہ برہ میں بھر کر اپنے پریتم کو پاتی لکھتی ہے—

اُمنگ اِک جی میں اُٹھ رہی ہے،
گھٹائیں گھر گھر کے چھا رہی ہیں،
پڑوسنیں جھولنے کو جھولا،
گھنے گھنے بن کو جا رہی ہیں.

कहीं पै बादल बरस रहे हैं,
कहीं पै बिजली चमक रही है,
हरी-हरी डालियों पै चिड़ियाँ,
फुदक रही हैं, चहक रही हैं.

लगा है सावन घिरा है बादल,
पड़ा है झूला लगी हैं लड़ियाँ,
बड़े बड़े पेंग चल रहे हैं,
पड़ोसिनें गीत गा रही हैं.

उधर पपीहे की पी-कहाँ,
छेड़ती है बैठे बिठाए मुझको,
इधर निगोड़ी यह कोयलें,
और भी मेरा जी जला रही हैं.

जहाँ-जहाँ पड़ चुका है पानी,
भरी हुई हैं वहाँ की झीलें,
और उसमें जाकर सुहागिनें सब,
मिल छपाछप नहा रही हैं.

हमें नहीं चैन बिन तुम्हारे,
अकेले घर में उलझ रही हूँ.
पहाड़ से दिन सता रहे हैं,
सुहानी रातें रुला रही हैं.

हो तुम तो परदेस में ऐ साजन,
मैं कैसे काटूँगी इन दिनों को,
ऐ मेरे प्यारे तुम्हारी बातें,
बहुत कलेजा दुखा रही हैं.

और जब इस पाती पाने के बाद भी साजन नहीं आता और सावन बीता जाता है तब वह दुखी और कातर वियोगन अपनी सहेली से कहती है—

सावन बीता जाय सजनी, प्रीतम घर नहीं आए,
कैसे काटूँ रात बिरह की नागिन बन-बन खाए,
ठंडी ठंडी पुरवा सनके बादल घिर-घिर छाए,
नन्हीं नन्हीं बूँदें टपकें औ बिजली लहराए,

याद पिया की मेरे दिल को रह-रह कर तड़पाए,
सावन बीता जाय सजनी प्रीतम घर नहीं आये.

मोर, पपीहा, झींगुर, सारस मिलकर शोर मचाएँ,
नाचें, कूदें, करें किलोलें, फूले नहीं समाएँ,
कुंज-कुंज में पड़े हैं झूले मिलकर सखियाँ झूलें,
पेंग बढ़ाएँ, तान उड़ाएँ, अपने मन में फूलें,

हँसी खुशी की बात ये मेरे मन को और जलाए,
सावन बीता जाये सजनी, प्रीतम घर नहीं आए.

वर्षा के तार धरती को जल मग्न बना रहे हैं. वसुधा की तपन तो मिट चुकी मगर वियोगन की तपन कौन

کہیں پہ بادل برس رہے ہیں'
کہیں پہ بجلی چمک رہی ہے'
ہری ہری ڈالیوں پہ چڑیاں'
پھدک رہی ہیں' چہک رہی ہیں.

لگا ہے ساون گھرا ہے بادل'
پڑا ہے جھولا لگی ہیں لڑیاں'
بڑے بڑے پینگ چل رہے ہیں'
پڑوسنیں گیت گا رہی ہیں.

ادھر پپیہے کی پی کہاں'
چھیڑتی ہے بیٹھے بٹھائے مجھکو'
اِدھر نگوڑی یہ کوئلیں'
اور بھی میرا جی جلا رہی ہیں.

جہاں جہاں پڑ چکا ہے پانی'
بھری ہوئی ہیں وہاں کی جھیلیں'
اور اُسمیں جا کر سہاگنیں سب'
مل چھپا چھپ نہا رہی ہیں.

ہمیں نہیں چین بن تمہارے'
اکیلے گھر میں اُلجھ رہی ہوں'
پہاڑ سے دن ستا رہے ہیں'
سہانی راتیں رلا رہی ہیں.

ہو تم تو پردیس میں اے ساجن'
میں کیسے کاٹونگی اِن دنوں کو'
اے میرے پیارے تمہاری باتیں'
بہت کلیجہ دکھا رہی ہیں.

اور جب اِس پاتی پانے کے بعد بھی ساجن نہیں آتا اور ساون بیتا جاتا ہے تب وہ دکھی اور کاتر ویوگن اپنی سہیلی سے کہتی ہے—

ساون بیتا جائے سجنی' پریتم گھر نہیں آئے'
کیسے کاٹوں رات برہ کی ناگن بن بن کھائے'
ٹھنڈی ٹھنڈی پروا سنکے بادل گھر گھر چھائے'
ننھی ننھی بوندیں ٹپکیں او بادل لہرائے'

یاد پیا کی میرے دل کو رہ رہ کر تڑپائے'
ساون بیتا جائے سجنی پریتم گھر نہیں آئے.

مور' پپیہا' جھینگر' سارس مل کر شور مچائیں'
ناچیں' کودیں' کریں کلولیں' پھولے نہیں سمائیں'
کنج کنج میں پڑے ہیں جھولے مل کر سکھیاں جھولیں'
پینگ بڑھائیں' تان اُڑائیں اپنے من میں پھولیں'

ہنسی خوشی کی بات یہ میرے من کو اور جلائے'
ساون بیتا جائے سجنی' پریتم گھر نہیں آئے.

ورشا کے تار دھرتی کو جل مگن بنا رہے ہیں. بسودھا کی تپن تو مٹ چکی مگر ویوگن کی تپن کون

बुझाए ? वह अपने को कोसती हुई कहती है—

आग लगे इस मन को आग !
लो फिर रात बिरह की आई,
चारों ओर उदासी छाई,
जान मेरी तन में घबराई,
अपनी क़िस्मत अपने भाग !

काली और बरसाती रैन,
उस बिन नींद को तरसें नैन,
जिसके साथ गया सुख चैन,
उसकी याद कहे अब जाग !

जिस दिन से वह पास नहीं है,
कोई ख़ुशी की रास नहीं है,
जीने तक की आस नहीं है,
जान को है अब तन से लाग !

कौन जिये और किस के सहारे,
मीठे मीठे बोल सिधारे,
गीत कहाँ वह प्यारे-प्यारे,
अब वह तान न अब वह राग !

और तब फिर अपने को मलामत करती हुई कहती है—

दरस दिखा कर जो छिप जाये,
कौन ऐसे से प्रीत लगाये,
क्यों अपनी कोई दशा सुनाये,
छोड़ मोहब्बत का खटराग !
आग लगे इस मन को आग ?

मगर ताना देकर क्या कभी वियोगन के मन को शान्ति मिलती है ? सूना घर और उदास रातें उसे खाये जाती हैं. वह कहती है—

घर है सूना रात उदास !
दीरघ दिन अँधियारी रातें,
कैसे गुज़रेंगी बरसातें,
झूटी थीं सब उनकी बातें,
रहता है अब यह विश्वास !

मैं दुखियारी प्रीत की मारी,
पड़ गई मुझ पै बिपदा भारी,
मन में सुलग रही चिनगारी,
कौन बुझाए दिल की प्यास !

छाई हैं घनघोर घटायें,
चलती हैं पुरशोर हवायें,
मन का मीत अगर आजाये,
तो पूरी हो मन की आस—घर है सूना रात उदास !

بجھائے ؟ وہ اپنے کو کوستی ہوئی کہتی ہے—

آگ لگے اِس من کو آگ !
لو پھر رات برہ کی آئی ،
چاروں اور اُداسی چھائی ،
جان میری تن میں گھبرائی ،
اپنی قسمت اپنے بھاگ !

کالی اور برساتی رین ،
اُس بن نیند کو ترسیں نین ،
جسکے ساتھ گیا سکھ چین ،
اُسکی یاد کہے اب جاگ !

جس دن سے وہ پاس نہیں ہے ،
کوئی خوشی کی راس نہیں ہے ،
جینے تک کی آس نہیں ہے ،
جان کو ہے اب تن سے لاگ !

کون جیئے اور کس کے سہارے ،
میٹھے میٹھے بول سدھارے ،
گیت کہاں وہ پیارے پیارے ،
اب وہ تان نہ اب وہ راگ !

اور تب پھر اپنے کو ملامت کرتی ہوئی کہتی ہے—

درس دکھا کر جو چھپ جائے ،
کون ایسے سے پریت لگائے ،
کیوں اپنی کوئی دشا سنائے ،
چھوڑ محبت کا کھٹراگ !
آگ لگے اِس من کو آگ !

مگر طعنہ دیکر کیا کبھی ویوگن کے من کو شانتی ملتی ہے ؟ سونا گھر اور اُداس راتیں اُسے کھائے جاتی ہیں . وہ کہتی ہے—

گھر ہے سونا رات اُداس !
دیرگھ دن اندھیاری راتیں ،
کیسے گذرینگی برساتیں ،
جھوٹی تھیں سب اُنکی باتیں ،
رہتا ہے اب یہ وشواس !

میں دکھیاری پریت کی ماری ،
پڑگئی مجھ پے وپدا بھاری ،
من میں سلگ رہی چنگاری ،
کون بجھائے دل کی پیاس !

چھائی ہیں گھنگھور گھٹائیں ،
چلتی ہیں پرشور ہوائیں ،
من کا میت اگر آجائے ،
تو پوری ہو من کی آس—گھر ہے سونا رات اُداس !

और उसका प्रियतम भी कैसा बेदर्द है जो सुध ही नहीं लेता! वेदना की लम्बी रातें उसे बेचैन कर देती हैं. वह निराश होकर कहती है—

सीस नवा कर झरना रोये,
छोड़ के उत्तम देस.
उसकी चिन्ता रामहि जाने,
जिसका पी परदेस.
सावन और फिर काली बदली,
बूँदनियों के तार.
रीत जगत की प्रीत से ख़ाली,
सपना है संसार!

बियोगन के मन में एक प्रतिक्रिया पैदा होती है. वह माद्दी मोहब्बत का खटराग छोड़कर और सपने के संसार की माया तोड़कर गोकुल और बिन्द्राबन की सैर करती है. वह कुंज बनों और कुंज गलियों में घूमती है. वह कन्हैया की बंसी-ध्वनि सुनना चाहती है. वह अब मनुष्य नहीं, भगवान से प्रीत का रिश्ता जोड़ना चाहती है. मगर कन्हैया क्या सहज मिलने वाला है? उसने तो ब्रज की गोपियों को रुला रुलाकर हलाकान कर डाला. बियोग के उस इम्तहान में अब यह नई गोपी भी उतरी है. सुबह होती है, सूरज निकलता है. शाम होती है, दिन ढलता है. मगर इस नई गोपी को भी कन्हैया का पैग़ाम नहीं मिलता—

तड़प तड़प कर भोर हुई,
पर ना आया पैग़ाम, कन्हैया उजड़ चला मन-ग्राम!
बादल गरजे बिजली चमके,
उठी घटायें श्याम, कन्हैया उजड़ चला मन-ग्राम!
आँख में आँसू, कसक हृदय में,
भर आई है शाम, कन्हैया उजड़ चला मन-ग्राम!

बरसात का मौसम है. कजरारे बादल चारों ओर छाये हुए हैं. उन्हें आँख भर कर देखती हुई बियोगन कहती है—

घटायें घिर आईं घनघोर,
हवायें चलती हैं पुरशोर.
मस्त पपीहा, बेसुध कोयल,
और पागल है मोर, घटायें घिर आईं घनघोर!
बिजली चमके बादल बरसे,
आन मिलो चितचोर, घटायें घिर आईं घनघोर!

आख़ीर में इस नई गोपी की तपस्या अपना फल लाती है और बिन्द्राबन के कुंज बन से, यमुना के तट से, कदम्ब के बट से बियोगन के कानों में चितचोर कन्हैया की बाँसुरी की धुन सुनाई पड़ती है—

बरसात का यह मौसम, यह नीलगूँ घटाएँ,
यह बाग़ो बन का आलम, यह गुलफ़िशाँ फ़िज़ाएँ,

اور اُسکا پریتم بھی کیسا بے درد ھے جو سدھ ھی نہیں لیتا! ویدنا کی لمبی راتیں اُسے بے چین کر دیتی ھیں. وہ نراش ھو کر کہتی ھے—

سیس نوا کر جھرنا روئے،
چھوڑ کے اُتم دیس.
اُس کی چنتا رام ھی جانے،
جسکا پی پردیس.
ساون اور پھر کالی بدلی،
بوندنیوں کے تار.
ریت جگت کی پریت سے خالی،
سپنا ھے سنسار!

ویوگن کے من میں ایک پرتیکریا پیدا ھوتی ھے. وہ مادی محبت کا کھٹراگ چھوڑ کر اور سپنے کے سنسار کی مایا توڑ کر گوکل اور بندرا بن کی سیر کرتی ھے. وہ کنج بنوں اور کنج گلیوں میں گھومتی ھے. وہ کنھیا کی بنسی دھن سننا چاھتی ھے. وہ اب منشیہ نہیں، بھگوان سے پریت کا رشتہ جوڑنا چاھتی ھے. مگر کنھیا کیا سہج ملنے والا ھے؟ اُسنے تو برج کی گوپیوں کو رلا رلا کر ھلاکان کر ڈالا. ویوگ کے اِس اِمتحان میں اب یہ نئی گوپی بھی اُتری ھے. صبح ھوتی ھے، سورج نکلتا ھے. شام ھوتی ھے، دن ڈھلتا ھے. مگر اِس نئی گوپی کو بھی کنھیا کا پیغام نہیں ملتا—

تڑپ تڑپ کر بھور ھوئی،
پر نا آیا پیغام، کنھیا اُجڑ چلا من گرام!
بادل گرجے بجلی چمکے،
اُٹھی گھٹائیں شیام، کنھیا اُجڑ چلا من گرام!
آنکھ میں آنسو، کسک ھردئے میں،
بھر آئی ھے شام، کنھیا اُجڑ چلا من گرام!

برسات کا موسم ھے. کجرارے بادل چاروں اُور چھائے ھوئے ھیں. اُنہیں آنکھ بھر کر دیکھتی ھوئی ویوگن کہتی ھے—

گھٹائیں گھر آئیں گھنگھور،
ھوائیں چلتی ھیں پرشور.
مست پپیہا، بے سدھ کویل،
اور پاگل ھے مور، گھٹائیں گھر آئیں گھنگھور!
بجلی چمکے بادل برسے،
ان ملو چت چور، گھٹائیں گھر آئیں گھنگھور!

آخیر میں اِس نئی گوپی کی تپسیا اپنا پھل لاتی ھے اور بندرابن کے کنج بن سے، یمونا کے تٹ سے، کدمب کے بٹ سے ویوگن کے کانوں میں چت چور کنھیا کی بانسری کی دھن سنائی پڑتی ھے—

برسات کا یہ موسم، یہ نیلگوں گھٹائیں،
یہ باغ و بن کا عالم، یہ گلفشاں فضائیں،

यह रसभरी हवाएँ.
यह रंगो बू के तूफ़ाँ, यह बिरज के नज़ारे,
यह जलती ख़ियाबाँ, जमुना के यह किनारे,
यह स्वप्न प्यारे-प्यारे.
यह कोयलों की कू-कू, यह मोर की सदाएँ,
यह नाज़नीने आहू, और यह ग़रीब गाएँ,
यह नश्शागूँ फ़िज़ाएँ.
सब्ज़ा निखर रहा है, वादी महक रही है,
नश्शा बिखर रहा है, बुलबुल चहक रही है,
फ़ितरत बहक रही है.
यह कौन इस समय में, बंसी बजा रहा है,
इस दर्जा मस्त लय में, उल्फ़त लुटा रहा है,
नग़मे बहा रहा है.
शायद कोई रिशी है, सन्यास की लगन में,
शायद कोई मुनी है, मसरूफ़ कीर्तन में,
तौहीद के भजन में.
हाँ, आओ पास चलकर, पूछें कि नाम क्या है,
तलवों से आँखें मलकर, पूछें कि काम क्या है,
उसका पयाम क्या है.
ठहरो ज़रा निगाहें, पहचानती हैं उसको,
फ़ितरत की जलवागाहें, सब जानती हैं उसको,
और मानती हैं उसको.
हाँ-हाँ ये बन्सी वाला, चूकी नज़र हमारी,
यह बिरज का ग्वाला, है नन्द का मुरारी,
और आर्ज़ु हमारी.
बंसी में से परीशाँ, नग़मे मचल रहे हैं,
या सैंकड़ों गुलिस्ताँ, करवट बदल रहे हैं,
और फूल उगल रहे हैं.

सावन और वर्षा जिस तरह से प्रियतमा और वियोगनों को वियोग में व्याकुल कर देती हैं उसी तरह वह नव विवाहता वधू को अपने मैके और अपने माँ बाप की याद में भर देती हैं. ग़रीबों की इस दुनिया में चक्की की सदा पर गाँव की एक दुल्हन वियोग का गीत गाती है. उस कसक भरे तराने को सुनकर शायर कहता है—

सुनो यह कैसी आवाज़ आ रही है,
कोई गाँव की लड़की गा रही है.
सेहर के धुँधले-धुँधले मन्ज़रों को,
शराबे नग़मा पिला रही है.
उठी है शायद आटा पीसने को,
कि चक्की की सदा भी आ रही है.
ग़मों से चूर अपने नन्हे दिल को,
तराना छेड़ कर बहला रही है.

یہ رس بھری ہوائیں۔
یہ رنگ و بو کے طوفاں، یہ برج کے نظارے،
یہ جلتی خیاباں، جمنا کے یہ کنارے،
یہ سوپن پیارے پیارے۔
یہ کویلوں کی کو کو، یہ مور کی صدائیں،
یہ نازنین آہو، اور یہ غریب گائیں،
یہ نشہ‌گوں فضائیں۔
سبزہ نکھر رہا ہے، وادی مہک رہی ہے،
نشہ بکھر رہا ہے، بلبل چہک رہی ہے،
فطرت بہک رہی ہے۔
یہ کون اس سمئے میں، بنسی بجا رہا ہے،
اس درجہ مست لے میں، الفت لٹا رہا ہے،
نغمے بہا رہا ہے۔
شاید کوئی رشی ہے، سنیاس کی لگن میں،
شاید کوئی منی ہے، مصروف کیرتن میں،
توحید کے بھجن میں۔
ہاں، آؤ پاس چل کر، پوچھیں کہ نام کیا ہے،
تلووں سے آنکھیں مل کر، پوچھیں کہ کام کیا ہے،
اسکا پیام کیا ہے۔
ٹھہرو ذرا نگاہیں، پہچانتی ہیں اسکو،
فطرت کی جلوہ گاہیں، سب جانتی ہیں اسکو،
اور مانتی ہیں اسکو۔
ہاں ہاں یہ بنسی والا، چوکی نظر ہماری،
یہ برج کا گوالا، ہے نند کا مراری،
اور آرزو ہماری۔
بنسی میں سے پریشاں، نغمے مچل رہے ہیں،
یا سینکڑوں گلستاں، کروٹ بدل رہے ہیں،
اور پھول اگل رہے ہیں۔

ساون اور ورشا جس طرح سے پریتما اور ویوگنوں کو ویوگ میں ویاکل کر دیتی ہیں اسی طرح وہ نو وواھتا بدھو کو اپنے میکے اور اپنے ماں باپ کی یاد میں بھر دیتی ہیں۔ غریبوں کی اس دنیا میں چکی کی صدا پر گاؤں کی ایک دلہن ویوگ کا گیت گاتی ہے۔ اس کسک بھرے ترانے کو سن کر شاعر کہتا ہے—

سنو یہ کیسی آواز آرہی ہے،
کوئی گاؤں کی لڑکی گا رہی ہے۔
سحر کے دھندھلے دھندھلے منظروں کو،
شراب نغمہ پلا رہی ہے۔
اٹھی ہے شاید آٹا پیسنے کو،
کہ چکی کی صدا بھی آرہی ہے۔
غموں سے چور اپنے ننھے دل کو،
ترانہ چھیڑ کر بہلا رہی ہے۔

फ़िज़ा पर, बस्तियों पर, जंगलों पर,
धुआँधार एक बदली छा रही है.
झमाझम मेंह की बूँदें पड़ रही हैं,
कि सावन की परी कुछ गा रही है.
यह बादल हैं कि हैं सावन के सपने ?
हवा जिनको उड़ाकर ला रही है.
यह बिजली है कि इक मरमर की नागिन ?
धुएँ के भील पर लहरा रही है.
यह बूँदें हैं कि बिजली आसमाँ से ?
सितारे तोड़कर बरसा रही है.
मगर वह ग़मज़दा मासूम लड़की,
बराबर गीत गाए जा रही है.
यह घर सुसराल होगा शायद इसका,
जभी माँ-बाप की सुध आ रही है.
जभी मसरूफ़ है आहो फ़ुग़ाँ में,
जभी ग़मगीन लय में गा रही है.
और वह गाँव की दुलहन क्या गा रही है ?—
यह बरखा रुत भी बीती जा रही है !
हवा जो गाँव को महका रही है,
मेरे मैके से शायद आ रही है.
घटा की ऊदी-ऊदी चुनरियों से,
मेरी सखियों की बू-बास आ रही है.
मुझे लेने न आए अच्छे बाबल,
तुम्हारी याद आफ़त ढा रही है.
मेरी अम्माँ को हो इसकी ख़बर क्या,
कि 'चम्पा' इस जगह घबरा रही है.
न ली भैया ने भी सुध-बुध हमारी,
जहाँ से चाह उठती जा रही है.
भला क्योंकर थमें आँसू कि जी पर,
उदासी की बदरिया छा रही है.
गया पेंगें बढ़ाने का ज़माना,
वह अमरय्यों पै कोयल गा रही है.
योंही वह अपनी ग़मगीं रागिनी से,
दरो दीवार को तड़पा रही है.

सावन इसी तरह आता है और आता रहेगा. साजन की वियोगन और माँ-बिछुड़ी बेटी को वह युगों से इसी प्रकार तड़पाता रहा है और तड़पाता रहेगा. कालिदास से लेकर तुलसीदास तक और हफ़ीज़ जलन्धरी से लेकर इन्द्रजीत तक नए और पुराने शायरों के मन को वह इसी तरह ग़म और वियोग के हिंडोले में झुलाता रहा है. सीता के वियोग पर रामचन्द्र जी की व्यथा का वर्णन तुलसीदास ने भरी बरसात के पट पर कितनी मार्मिकता से किया है. बरसात कवियों और शायरों को लुभाती रही है और हमेशा लुभाती रहेगी.

فضا پر، بستیوں پر، جنگلوں پر،
دھواں دھار ایک بدلی چھا رہی ہے.
چھما چھم مینہہ کی بوندیں پڑ رہی ہیں،
کہ ساون کی پری کچھ گا رہی ہے .
یہ بادل ہیں کہ ہیں ساون کے سپنے ؟
ہوا جن کو اُڑا کر لا رہی ہے .
یہ بجلی ہے کہ اک مرمر کی ناگن ؟
دھوئیں کے جھیل پر لہرا رہی ہے .
یہ بوندیں ہیں کہ بجلی آسماں سے ؟
ستارے توڑ کر برسا رہی ہے .
مگر وہ غمزدہ معصوم لڑکی،
برابر گیت گائے جا رہی ہے .
یہ گھر سسرال ہوگا شاید اُسکا،
جبھی ماں باپ کی سدھ آرہی ہے.
جبھی مصروف ہے آہ و فغاں میں،
جبھی غمگین لے میں گا رہی ہے .
اور وہ گاؤں کی دلہن کیا گا رہی ہے ؟—
یہ برکھا رت بھی بیتی جارہی ہے !
ہوا جو گاؤں کو مہکا رہی ہے،
مرے میکے سے شاید آرہی ہے .
گھٹا کی اُودی اُودی چنریوں سے،
میری سکھیوں کی بو باس آرہی ہے.
مجھے لینے نہ آئے اچھے بابل،
تمہاری یاد آفت ڈھا رہی ہے .
میری اماں کو ہو اِسکی خبر کیا،
کہ 'چمپا' اِس جگہ گھبرا رہی ہے .
نہ لی بھیا نے بھی سدھ بدھ ہماری،
جہاں سے چاہ اُٹھتی جا رہی ہے .
بھلا کیونکر تھمیں آنسو کہ جی پر،
اُداسی کی بدریا چھا رہی ہے .
گیا پینگیں بڑھانے کا زمانہ،
وہ امریوں پر کویل گا رہی ہے .
یونہی وہ اپنی غمگیں راگنی سے،
در و دیوار کو تڑپا رہی ہے .

ساون اِسی طرح آتا ہے اور آتا رہے گا . ساجن کی ویوگن اور ماں بچھڑی بیٹی کو وہ یگوں سے اِسی پرکار تڑپاتا رہا ہے اور تڑپاتا رہیگا . کالیداس سے لے کر تلسی داس تک اور حفیظ جالندھری سے لے کر اندرجیت تک نئے اور پرانے شاعروں کے من کو وہ اِسی طرح غم اور ویوگ کے ہنڈولے میں جھلاتا رہا ہے . سیتا کے ویوگ پر رامچندر جی کی ویتھا کا ورنن تلسی داس نے بھری برسات کے پٹ پر کتنی مارمکتا سے کیا ہے . برسات کویوں اور شاعروں کو لبھاتی رہی ہے اور ہمیشہ لبھاتی رہیگی .



ऐटमी जंग के ख़िलाफ़ साइन्सदानों की अपील.

9 जुलाई सन् 55 को जनता और अखबारों के प्रतिनिधियों से खचाखच भरे हुए लन्दन के एक हाल में इंगलैन्ड के बयासी बरस की उमर के मशहूर फ़िलासफ़र श्री बरट्रेन्ड रसल ने अपनी और दुनिया के बड़े से बड़े साइन्सदानों की तरफ़ से दुनिया की सब शक्तिशाली सरकारों के नाम एक ऐलान पढ़कर सुनाया. जिन साइन्सदानों के उस ऐलान पर दस्तख़त थे उनमें सबसे बड़ा नाम प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन का है. प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन ने 18 अपरैल सन् 1955 को अपनी मौत से ठीक पहले इस ऐलान पर दस्तख़त किये थे. ऐलान के ख़ास ख़ास वाक्य यह हैं :—

"हम आप से इस क़ौम या उस क़ौम, इस महाद्वीप या उस महाद्वीप, या इस मजहब या उस मजहब के आदमियों की हैसियत से बात नहीं कर रहे हैं. हम साइन्स के सेवक हैं और केवल मनुष्यों की हैसियत से, उस इनसानी नसल के लोगों की हैसियत से जिसका रहना न रहना इस समय ख़तरे में है, आप से बात कर रहे हैं.

"इसमें कोई शक नहीं कि हाइड्रोजिन बमों की लड़ाई में बड़े बड़े शहर बिलकुल मिट जायंगे. पर यह तो एक बहुत छोटी सी दुर्घटना होगी जिसका हमें सामना करना पड़ेगा. अगर लन्दन, न्युयार्क और मास्को के सब लोग ख़तम हो जायं तब भी हो सकता है कि कुछ सदियों के अन्दर दुनिया फिर इस सदमे से पनप जावे.

"पर ख़ासकर बीकीनी के तजरबे के बाद हमें यह मालूम है कि इस तरह के बमों से जितनी दूर तक हमने सोच रखा था उससे अब कहीं ज्यादा दूर तक तबाही फैल सकती है.

"सब जानने वालों की राय है और सब एक आवाज़ से कहते हैं कि हाइड्रोजिन बमों की लड़ाई से बहुत मुमकिन है कि इनसानी नसल ही हमेशा के लिये ख़तम हो जावे.

آیٹمی جنگ کے خلاف سائنس دانوں کی اپیل

9 جولائی سن '55 کو جنتا اور اخباروں کے پرتی ندھیوں سے کھچا کھچ بھرے ہوئے لندن کے ایک ہال میں انگلینڈ کے بیاسی برس کی عمر کے مشہور فلاسفر شری برٹرینڈ رسل نے اپنی اور دنیا کے بڑے سے بڑے سائنسدانوں کی طرف سے دنیا کی سب شکتی شالی سرکاروں کے نام ایک اعلان پڑھکر سنایا۔ جن سائنسدانوں کے اُس اعلان پر دستخط تھے اُن میں سب سے بڑا نام پروفیسر آئنس ٹائن کا ہے۔ پروفیسر آئنس ٹائن نے 18 اپریل سن 1955 کو اپنی موت سے ٹھیک پہلے اس اعلان پر دستخط کئے تھے۔ اعلان کے خاص خاص واکیہ یہ ہیں :—

"ہم آپ سے اِس قوم یا اُس قوم، اِس مہادیپ یا اُس مہادیپ، یا اِس مذہب یا اُس مذہب کے آدمیوں کی حیثیت سے بات نہیں کر رہے ہیں۔ ہم سائنس کے سیوک ہیں اور کیول منشیوں کی حیثیت سے، اُس انسانی نسل کے لوگوں کی حیثیت سے جس کا رہنا نہ رہنا اِس سمے خطرے میں ہے، آپ سے بات کر رہے ہیں۔

"اِس میں کوئی شک نہیں کہ ہائڈروجن بموں کی لڑائی میں بڑے بڑے شہر بالکل مٹ جاوینگے۔ پر یہ تو ایک بہت چھوٹی سی درگھٹنا ہوگی جس کا ہمیں سامنا کرنا پڑیگا۔ اگر لندن، نیویارک اور ماسکو کے سب لوگ ختم ہو جائیں تب بھی ہو سکتا ہے کہ کچھ صدیوں کے اندر دنیا پھر اِس صدمہ سے پنپ جاوے۔

"پر خاص کر بیکینی کے تجربہ کے بعد ہمیں یہ معلوم ہے کہ اِس طرح کے بموں سے جتنی دور تک ہم نے سوچ رکھا تھا اُس سے اب کہیں زیادہ دور تک تباہی پھیل سکتی ہے۔

"سب جاننے والوں کی رائے ہے اور سب ایک آواز سے کہتے ہیں کہ ہائڈروجن بموں کی لڑائی سے بہت ممکن ہے کی انسانی نسل ہی ہمیشہ کے لئے ختم ہو جائے۔

इस बात का डर है कि अगर बहुत से हाइड्रोजिन बम इस्तेमाल किये गए तो सब आदमी मर जायंगे—उनमें से थोड़े से फ़ौरन् मरकर छूट जायंगे और बाक़ी अधिकतर तरह तरह की बीमारियों से गल गल कर धीरे धीरे बड़ी तकलीफ़ों के साथ मरेंगे. इस बारे में जो लोग सबसे अधिक जानकार हैं वही सबसे अधिक दुखी और निराश हैं.

"दुनिया के आम लोग इस बात को पूरी तरह समझ भी नहीं सकते कि वह ख़ुद और उनके सब सगे सम्बन्धी जिन्हें वह प्यार करते हैं इस ख़तरे में हैं कि वह सबके सब रित रित कर बड़ी तकलीफ़ों के साथ मरें और यह ख़तरा उनकी बिलकुल आँखों के सामने है.

"हम दुनिया को आगाह करना चाहते हैं कि यह आशा करना कि जंग में अगर ऐटम बम और हाइड्रोजिन बम जैसे नए हथियारों पर बंदिश लगा दी गई तो सम्भव है कि दुनिया बाक़ी रह जावे, बहुत बड़ा धोका है. यदि किसी तरह भी एकबार जंग शुरू हो गई तो इस तरह की बंदिश किसी को भी नहीं रोक सकेगी और जंग के छिड़ते ही दोनों तरफ़ के लोग हाइड्रोजिन बम तैयार करना शुरु कर देंगे.

"हम बहुत अच्छी सनद के साथ कह सकते हैं कि जिस तरह के बम ने हीरोशिमा के पूरे शहर को मिटा दिया था उससे अब ढाई हजार गुना अधिक शक्ति वाला बम तैयार किया जा सकता है.

"इस तरह का बम अगर कहीं भी जमीन के ऊपर या पानी के अन्दर फटा तो सारी जमीन के ऊपर की हवा में उससे रेडियो ऐक्टिव परमाणु भर जायंगे. वहां से फिर वह धीरे धीरे एक ऐसी गर्द या बारिश के रूप में जमीन पर उतरेंगे जो सबको मार कर ख़तम कर देगी. यही गर्द थी जिसने जापानी मछियारों और उनकी पकड़ी हुई मछलियों को सड़ाकर ख़तम कर दिया था.

"इस बात को ध्यान में रखते हुए कि भविष्य की किसी भी जंग में ऐटम बम और हाइड्रोजिन बम जैसे हथियार ज़रूर काम में लाए जायंगे और इस बात को भी जानते बूझते हुए कि इस तरह के हथियारों से सारी इनसानी नसल के ख़तम हो जाने का डर है, हम दुनिया की सरकारों पर ज़ोर देते हैं कि वह इस बात को समझें और खुले इसे स्वीकार करें कि किसी भी आलमगीर जंग से उनका कोई मतलब या उनकी कोई ग़रज पूरी नहीं हो सकती. इसीलिये हम दुनिया की सरकारों पर ज़ोर देते हैं कि उनके एक दूसरे के साथ जो भी झगड़े बाक़ी हैं उन सबको तय करने के लिये वह शान्ति के तरीक़े ही काम में लाएँ.

"हम इनसानों की हैसियत से सब इनसानों से अपील करते हैं कि आप अपनी इनसानियत को याद रखिये और

اِس بات کا ڈر ہے کہ اگر بہت سے ہائڈروجن بم استعمال کئےگئے تو سب آدمی مر جائینگے—اُن میں سے تھوڑے سے فوراً مر کر چھوٹ جاوینگے اور باقی ادھک تر طرح طرح کی بیماریوں سے گل گل کر دھیرے دھیرے بڑی تکلیفوں کے ساتھ مرینگے. اِس بارے میں جو لوگ سب سے ادھک جانکار ہیں وہی سب سے ادھک دکھی اور نراش ہیں.

"دنیا کے عام لوگ اِس بات کو پوری طرح سمجھ بھی نہیں سکتے کہ وہ خود اور اُن کے سب سگے سمبندھی جنہیں وہ پیار کرتے ہیں اِس خطرے میں ہیں کہ وہ سب کے سب رت رت کر بڑی تکلیفوں کے ساتھ مریں اور یہ خطرہ اُن کی بالکل آنکھوں کے سامنے ہے.

"ہم دنیا کو آگاہ کرنا چاہتے ہیں کہ یہ آشا کرنا کہ جنگ میں اگر ایٹم بم اور ہائڈروجن بم جیسے نئے ہتھیاروں پر بندش لگادی گئی تو سمبھو ہے کہ دنیا باقی رہ جاوے' بہت بڑا دھوکا ہے. یدی کسی طرح بھی ایک بار جنگ شروع ہو گئی تو اِس طرح کی بندش کسی کو بھی نہیں روک سکے گی اور جنگ کے چھڑتے ہی دونوں طرف کے لوگ ہائڈروجن بم تیار کرنا شروع کر دینگے.

"ہم بہت اچھی سند کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ جس طرح کے بم نے ہیروشیما کے پورے شہر کو مٹا دیا تھا اُس سے اب ڈھائی ہزار گنا ادھک شکتی والا بم تیار کیا جا سکتا ہے.

"اِس طرح کا بم اگر کہیں بھی زمین کے اوپر یا پانی کے اندر پھٹا تو ساری زمین کے اوپر کی ہوا میں اُس سے ریڈیو ایکٹو پرمانو بھر جائینگے. وہاں سے پھر وہ دھیرے دھیرے ایک ایسی گرد یا بارش کے روپ میں زمین پر اُترینگے جو سب کو مار کر ختم کر دیگی. یہی گرد تھی جس نے جاپانی مچھیاروں اور اُن کی پکڑی ہوئی مچھلیوں کو سڑاکر ختم کر دیا تھا.

"اِس بات کو دھیان میں رکھتے ہوئے کہ بھوشیہ کی کسی بھی جنگ میں ایٹم بم اور ہائڈروجن بم جیسے ہتھیار ضرور کام میں لائے جائینگے اور اِس بات کو بھی جانتے بوجھتے ہوئے کہ اِس طرح کے ہتھیاروں سے ساری انسانی نسل کے ختم ہو جانے کا ڈر ہے' ہم دنیا کی سرکاروں پر زور دیتے ہیں کہ وہ اِس بات کو سمجھیں اور کھلے اِسے سویکار کریں کہ کسی بھی عالمگیر جنگ سے اُن کا کوئی مطلب یا اُن کی کوئی غرض پوری نہیں ہو سکتی. اِسی لئے ہم دنیا کی سرکاروں پر زور دیتے ہیں کہ اُن کے ایک دوسرے کے ساتھ جو بھی جھگڑے باقی ہیں اُن سب کو طے کرنے کے لئے وہ شانتی کے طریقے ہی کام میں لائیں.

"ہم انسانوں کی حیثیت سے سب انسانوں سے اپیل کرتے ہیں کہ آپ اپنی انسانیت کو یاد رکھئے اور

बाक़ी सब बातें भूल जाइये. अगर आप ऐसा कर सकें तो एक नए स्वर्ग के लिये दरवाज़ा आपके सामने खुला हुआ है. अगर आप यह नहीं कर सकते तो सारी इनसानी नसल की मौत का डर आपके सामने है.

"यही साफ़ और दर्दनाक सवाल हम आपके सामने रख रहे हैं. दुनिया इस सवाल से बच नहीं सकती. सवाल यह है कि हम इनसानी नसल को ख़तम कर देंगे या हम मिलकर जंग को हमेशा के लिये छोड़ देंगे ?"

श्री बरट्रेन्ड रसल ने 9 जुलाई को लन्दन के उस जलसे में कहा कि वह उसी दिन ऊपर के इस ऐलान की कापियां रूस, अमरीका, चीन, कनेडा, .फ्रान्स और इंगलैंड की सरकारों के मुखियों के पास भेज चुके थे.

ऐलान के साथ एक एक चिट्ठी थी जिसमें इन सरकारों के मुखियों से और भी जोरदार शब्दों में अपील की गई है कि वह खुले इस ऐलान का जवाब दें क्योंकि "इससे ज़्यादा गहरा सवाल आज तक कभी इनसानी नसल के सामने नहीं आया."

ऐलान की कापियां एशिया और योरप सब जगह के बड़े बड़े साइन्सदानों के पास भी भेजी गई हैं.

प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन और श्री बरट्रेंड रसल के अलावा दुनिया के जिन और बड़े बड़े साइन्सदानों के इस ऐलान पर दस्तख़त हैं वह यह हैं :—

(1) प्रोफ़ेसर पी. डबलू. ब्रिजमैन, अमरीका की हारवर्ड यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ेसर जिन्हें फ़िज़िक्स में नोबुल प्राइज़ मिल चुका है.

(2) प्रोफ़ेसर एल. इनफ़ेल्ड, वारसा यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ेसर, जिन्होंने प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन के साथ मिल कर "दी एवोल्यूशन आफ़ फ़िज़िक्स ऐन्ड आफ़ दी प्राबलम आफ़ मोशन" नाम की मशहूर किताब लिखी है.

(3) प्रोफ़ेसर जे. मूलर, जो मास्को और भारत में दोनों जगह प्रोफ़ेसर रह चुके हैं और अब अमरीका की इन्डियाना यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर हैं. इन्हें भी फ़िज़ियालोजी और मेडिसिन में नोबुल प्राइज़ मिल चुका है.

(4) प्रोफ़ेसर सी. एफ़. पावल, ब्रिस्टल यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ेसर, इन्हें भी फ़िज़िक्स में नोबुल प्राइज़ मिल चुका है.

(5) लन्दन यूनीवर्सिटी के फ़िज़िक्स के प्रोफ़ेसर जाजफ़ राथलेट.

(6) प्रोफ़ेसर हाई की योकावा, जो जापान की क्योतो यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर हैं, इन्हें भी फ़िज़िक्स में नोबुल प्राइज़ मिल चुका है.

और (7) .फ्रांस के मशहूर प्रोफ़ेसर फ़रैडरिक जूलियो क्युरी.

باقی سب باتیں بھول جائیے۔ اگر آپ ایسا کر سکیں تو ایک نئے سورگ کے لئے دروازہ آپکے سامنے کھلا ہوا ہے ۔ اگر آپ یہ نہیں کر سکتے تو ساری انسانی نسل کی موت کا ڈر آپکے سامنے ہے ۔

"یہی صاف اور دردناک سوال ہم آپکے سامنے رکھ رہے ہیں ۔ دنیا اس سوال سے بچ نہیں سکتی ۔ سوال یہ ہے کہ ہم انسانی نسل کو ختم کر دینگے یا ہم ملکر جنگ کو ہمیشہ کے لئے چھوڑ دینگے ؟"

شری برٹرینڈ رسل نے 9 جولائی کو لندن کے اس جلسے میں کہا کہ وہ اسی دن اوپر کے اس اعلان کی کاپیاں روس، امریکہ، چین، کنیڈا، فرانس اور انگلینڈ کی سرکاروں کے مکھیوں کے پاس بھیج چکے تھے ۔

اعلان کے ساتھ ایک ایک چٹھی تھی جس میں ان سرکاروں کے مکھیوں سے اور بھی زوردار شبدوں میں اپیل کی گئی ہے کہ وہ کھلے اس اعلان کا جواب دیں کیونکہ "اس سے زیادہ گہرا سوال آج تک کبھی انسانی نسل کے سامنے نہیں آیا ۔"

اعلان کی کاپیاں ایشیا اور یورپ سب جگہ کے بڑے بڑے سائنس دانوں کے پاس بھیجی گئی ہیں ۔

پروفیسر آئنسٹائین اور شری برٹرینڈ رسل کے علاوہ دنیا کے جن اور بڑے بڑے سائنسدانوں کے اس اعلان پر دستخط ہیں وہ یہ ہیں :—

(1) پروفیسر پی. ڈبلو. برج مین، امریکہ کی ہارورڈ یونیورسٹی کے پروفیسر جنہیں فزکس میں نوبل پرائز مل چکا ہے ۔

(2) پروفیسر ایل . انفلڈ، وارسا یونیورسٹی کے پروفیسر جنہوں نے پروفیسر آئنسٹائن کے ساتھ ملکر "دی ایوولیوشن آف فزکس اینڈ آف دی پرابلم آف موشن" نام کی مشہور کتاب لکھی ہے ۔

(3) پروفیسر جے . مولر، جو ماسکو اور بھارت میں دونوں جگہ پروفیسر رہ چکے ہیں اور اب امریکہ کی انڈیانا یونیورسٹی میں پروفیسر ہیں ۔ انہیں بھی فزیالوجی اور میڈیسن میں نوبل پرائز مل چکا ہے ۔

(4) پروفیسر سی. ایف. پاول، برسٹل یونیورسٹی کے پروفیسر، انہیں بھی فزکس میں نوبل پرائز مل چکا ہے ۔

(5) لندن یونیورسٹی کے فزکس کے پروفیسر جازف رانھ لیٹ ۔

(6) پروفیسر ہائی کی یوکاوا، جو جاپان کی کیوتو یونیورسٹی میں پروفیسر ہیں ۔ انہیں بھی فزکس میں نوبل پرائز مل چکا ہے ۔

اور (7) فرانس کے مشہور پروفیسر فریڈرک جولیو کیوری ۔

श्री बरट्रेंड रसल ने कहा कि "प्रोफ़ेसर .फ्रैडरिक जूलियो क्युरी के दस्तख़तों से मुझे ख़ास तौर पर ख़ुशी हुई क्योंकि वह एक मशहूर कम्युनिस्ट हैं." प्रोफ़ेसर .फ्रैडरिक जूलियो क्युरी वर्ल्ड पीस कौंसिल के यानी दुनिया भर की शान्ति परिषद् के सदर हैं और दुनिया से जंग को ख़तम करने और शान्ति क़ायम करने के सबसे बड़े कोशिश करने वालों में से हैं.

प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन के दस्तख़तों पर भी ख़ास ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए श्री बरट्रेंड रसल ने कहा कि इस ऐलान पर दस्तख़त करना प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन की ज़िन्दगी का सबसे आख़िरी काम था और उन्होंने मुझे लिखा कि "वह इस ऐलान के एक एक शब्द से सहमत हैं."

श्री बरट्रेंड रसल ने यह भी कहा कि यह ऐलान साइन्सदानों की तरफ़ से केवल पहला क़दम है. उनका इरादा है कि इसके बाद सब देशों और सब क़ौमों के साइन्सदानों की एक कानफ़रेंस की जावे जिसमें दस्तख़त करने वालों की तरफ़ से इस तरह का प्रस्ताव पेश किया जावे. उन्होंने यह भी कहा कि "अब एक बहुत बड़े पैमाने पर आम जनता में इसके लिये आन्दोलन करना आवश्यक है." पर इस तरह के आन्दोलन का श्रीगणेश वह साइन्सदानों से ही कराना चाहते हैं. उन्होंने यह भी कहा कि :—"दुनिया की जनता की राय का असर अमरीका की सरकार पर भी पड़ा है और वह समझदारी की बात करने लगी है. मेरा ख़्याल है कि अगर अमरीका की आम जनता पर इतना अच्छा असर न होता तो पूरबी एशिया की समस्याओं को हल करने में अमरीका की सरकार अब तक कुछ ऐसी ग़लतियां कर बैठी होती जो बरबादकुन होतीं."

सारी दुनिया के अमन पसन्द लोगों के साथ मिलकर हम साइन्सदानों के इस ऐलान और इस अपील का दिल से स्वागत करते हैं. ऐटम बमों और हाइड्रोजिन बमों की ईजाद और दुनिया के पढ़े लिखे और समझदार समझे जाने वाले लोगों का उन्हें दुनिया की जनता पर इस्तेमाल करने की सोचना और बार बार धमकी देना इस बात को दिखा रहा है कि हमारी आजकल की सभ्यता नैतिक यानी इख़लाक़ी निगाह से कितनी नीचे गिर चुकी है. हमें विश्वास है कि दुनिया की आम जनता के अन्दर जिस आन्दोलन की श्री बरट्रेंड रसल ने चरचा की है उसे जब भी दुनिया के साइन्सदां शुरू करेंगे दुनिया की जनता और हमारे देश की जनता उसमें पूरा पूरा सहयोग देगी. दुनिया के साइन्सदानों का यह ऐलान साइन्स के ऊपर से सबसे बड़े कलंक को धो देने वाला और साइन्स और साइन्सदानों की इज़्ज़त और उनकी कीर्ति को सैकड़ों गुना बढ़ा देने वाला है. दुनिया की आजकल की सबसे बड़ी मुसीबत में यह ऐलान

شری برٹرینڈ رسل نے کہا کہ "پروفیسر فریڈرک جولیوکیوری کے دستخطوں سے مجھے خاص طور پر خوشی ہوئی کیونکہ وہ ایک مشہور کمیونسٹ ہیں." پروفیسر فریڈرک جولیو کیوری ورلڈ پیس کونسل کے یعنی دنیا بھر کی شانتی پریشد کے صدر ہیں اور دنیا سے جنگ کو ختم کرنے اور شانتی قائم کرنے کے سب سے بڑے کوشش کرنے والوں میں سے ہیں .

پروفیسر آئنس‌ٹائن کے دستخطوں پر بھی خاص خوشی ظاہر کرتے ہوئے شری برٹرنڈ رسل نے کہا کہ اِس اعلان پر دستخط کرنا پروفیسر آئنس‌ٹائن کی زندگی کا سب سے آخری کام تھا اور اُنہوں‌نے مجھے لکھا کہ "وہ اِس اعلان کے ایک ایک شبد سے سہمت ہیں ."

شری برٹرینڈ رسل نے یہ بھی کہا کہ یہ اعلان سائنس دانوں کی طرف سے کیول پہلا قدم ھے . اُن کا ارادہ ھے کہ اِس کے بعد سب دیشوں اور سب قوموں کے سائنس دانوں کی ایک کانفرنس کی جاوے جس میں دستخط کرنے والوں کی طرف سے اِس طرح کا پرستاؤ پیش کیا جاوے . اُنہوں نے یہ بھی کہا کہ "اب ایک بہت بڑے پیمانے پر عام جنتا میں اِس کے لئے آندولن کرنا آوشیک ھے ." پر اِس طرح کے آندولن کا شری گنیش وہ سائنس دانوں سے ہی کرانا چاھتے ھیں . اِنہوں نے یہ بھی کہا کہ:—"دنیا کی جنتا کی رائے کا اثر امریکہ کی سرکار پر بھی پڑا ھے اور وہ سمجھداری کی بات کرنے لگی ھے . میرا خیال ھے کہ اگر امریکہ کی عام جنتا پر اتنا اچھا اثر نہ ھوتا تو پوربی ایشیا کی سمسیاؤں کو حل کرنے میں امریکہ کی سرکار اب تک کچھ ایسی غلطیاں کر بیٹھی ھوتی جو برباد کن ھوتیں ."

ساری دنیا کے امن پسند لوگوں کے ساتھ ملکر ھم سائنس دانوں کے اِس اعلان اور اِس اپیل کا دل سے سواگت کرتے ھیں . ایٹم بموں اور ھائڈروجن بموں کی ایجاد اور دنیا کے پڑھے لکھے اور سمجھدار سمجھے جانے والے لوگوں کا اُنہیں دنیا کی جنتا پر استعمال کرنے کی سوچنا اور بار بار دھمکی دینا اِس بات کو دکھا رھا ھے کہ ھماری آجکل کی سبھیتا نیتک یعنی اخلاقی نگاہ سے کتنی نیچے گر چکی ھے . ھمیں وشواس ھے کہ دنیا کی عام جنتا کے اندر جس آندولن کی شری برٹرینڈ رسل نے چرچا کی ھے اُسے جب بھی دنیا کے سائنس‌داں شروع کرینگے دنیا کی جنتا اور ھمارے دیش کی جنتا اُس میں پورا پورا سہیوگ دے گی . دنیا کے سائنس دانوں کا یہ اعلان سائنس کے اوپر سے سب سے بڑے کلنک کو دھو دینے والا اور سائنس اور سائنس دانوں کی عزت اور اُن کی کیرتی کو سینکڑوں گنا بڑھا دینے والا ھے . دنیا کی آجکل کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان

प्रेम और अहिंसा के उन उपदेशों की गूँज मालूम होता है जो महात्मा बुद्ध से लेकर गाँधी जी तक संसार के अनेक सच्चे मार्ग दर्शक दुनिया को देते रहे हैं. हम आशा करते हैं कि दुनिया की सरकारें साइन्सदानों की इस अपील पर पूरा पूरा ध्यान देंगी. इनसानी नसल के भले और उसकी सलामती के नाम पर हम चाहते हैं कि यह अपील पूरी तरह सफल हो.

13-7-55 —सुन्दरलाल

गोआ का सत्याग्रह और उससे सबक़

आज भी दुनिया में इस तरह के लोग मौजूद हैं जो दूसरों की राजकाजी या क़ौमी आजादी के हक़ को स्वीकार नहीं करते ! क़ौमों की आजादी के हक़ के खिलाफ़ लड़ना आज ऐसा ही है जैसा क़ुदरत के अटल क़ानूनों से लड़ना या आँधी से भिड़ना. पर तुच्छ और तात्कालिक स्वार्थ हमें अन्धा कर देता है. छोटा सा पुर्तगाल शायद इस मामले में लड़ने की हिम्मत न करता लेकिन दुनिया के साम्राज-वादियों यानी दूसरों को ग़ुलाम रखने की इच्छा रखने वालों का गुट्ट अभी टूटा नहीं है. क़ुदरत के क़ानूनों या इतिहास की शक्तियों को कोई उलट नहीं सकता. पर पुर्तगाल के इस रुख़ का यह मतलब जरूर है कि अपनी अपनी और दुनिया की आजादी चाहने वालों को अभी कुछ और क़ुरबानियां करनी होंगी.

जाहिर है कोई भारतवासी ऐसा नहीं हो सकता जिसे गोआ के सत्याग्रह के साथ पूरी हमदर्दी न हो. उन वीरों को जो गोआ के पवित्र और शानदार सत्याग्रह में शरीक हुए हैं और हो रहे हैं, जिनमें से कुछ शहीद भी हो चुके और सैकड़ों ने अकथनीय शारीरिक और मानसिक कष्ट झेले, हम आदर के साथ नमस्कार करते हैं. पुर्तगाली शासकों ने जिस तरह के अमानुषिक अत्याचारों को इन निहत्थे और अहिंसात्मक सत्याग्रहियों पर रवा रक्खा है उनके लिये हमें पुर्तगालियों से कुछ नहीं कहना. हमें विश्वास है कि हमारे देशवासी, पुर्तगाली समझे जाने वाले इलाक़े के अन्दर के हों या उससे बाहर के, इन अत्याचारों के कारन अपने संकल्प में और भी पक्के साबित होते रहेंगे.

गोआ के सत्याग्रह में सबसे अधिक ख़ुशी की बात यह हुई कि देश की सब पोलिटिकल पार्टियों के लोग कम्युनिस्ट, जनसंघी, प्रजा सोशलिस्ट और कांगरेसी उसमें कंधे से कंधा मिला कर भाग लेने के लिये बेचैन हैं और ले रहे हैं. यह सुन्दर घटना दो बातें साबित करती है. एक यह कि विचारों और आदर्शों के थोड़े बहुत फ़रक़ के होते हुए भी सब पार्टियों के लोग सच्चे, त्यागी और देश भक्त हैं.

پریم اور اھنسا کے اُن اُپدیشوں کی گونج معلوم ھوتا ھے جو مہاتما بدھ سے لے کر گاندھی جی تک سنسار کے انیک سچے مارگ درشک دنیا کو دیتے رھے ھیں . ھم آشا کرتے ھیں کہ دنیا کی سرکاریں سائنس دانوں کی اِس اپیل پر پورا پورا دھیان دینگی. انسانی نسل کے بھلے اور اُس کی سلامتی کے نام پر ھم چاھتے ھیں کہ یہ اپیل پوری طرح سپھل ھو .

13 .7 .55 —سندرلال

گووا کا ستیاگرہ اور اُس سے سبق

آج بھی دنیا میں اِس طرح کے لوگ موجود ھیں جو دوسروں کی راج کاجی یا قومی آزادی کے حق کو سویکار نہیں کرتے ! قوموں کی آزادی کے حق کے خلاف لڑنا آج ایسا ھی ھے جیسا قدرت کے اٹل قانونوں سے لڑنا یا آندھی سے بھڑنا . پر تچھ اور تات کالک سوارتھ ھمیں اندھا کر دیتا ھے. چھوٹا سا پرتگال شاید اِس معاملے میں لڑنے کی ھمت نہ کرتا لیکن دنیا کے سامراج وادیوں یعنی دوسرں کو غلام رکھنے کی اِچھا رکھنے والوں کا گٹ ابھی ٹوٹا نہیں ھے . قدرت کے قانونوں یا اتہاس کی شکتیوں کو کوئی اُلٹ نہیں سکتا . پر پرتگال کے اِس رخ کا یہ مطلب ضرور ھے کہ اپنی اپنی اور دنیا کی آزادی چاھنے والوں کو ابھی کچھ اور قربانیاں کرنی ھونگی .

ظاھر ھے کوئی بھارت واسی ایسا نہیں ھوسکتا جسے گووا کے ستیاگرہ کے ساتھ پوری ھمدردی نہ ھو . اُن ویروں کو جو گووا کے پوتر اور شاندار ستیاگرہ میں شریک ھوئے ھیں اور ھو رھے ھیں، جن میں سے کچھ شہید بھی ھو چکے اور سیکڑوں نے اُکتھنیہ شاریرک اور مانسک کشت جھیلے، ھم آدر کے ساتھ نمسکار کرتے ھیں . پرتگالی شاسکوں نے جس طرح کے امانشک اتیاچاروں کو اِن نہتھے اور اھنساتمک ستیاگرھیوں پر روا رکھا ھے اُن کے لئے ھمیں پرتگالیوں سے کچھ نہیں کہنا . ھمیں وشواس ھے کہ ھمارے دیش واسی، پرتگالی سمجھے جانے والے علاقے کے اندر کے ھوں یا اُس سے باھر کے، اِن اتیاچاروں کے کارن اپنے سنکلپ میں اور بھی پکے ثابت ھوتے رھینگے .

گووا کے ستیاگرہ میں سب سے ادھک خوشی کی بات یہ ھوئی کہ دیش کی سب پولیٹکل پارٹیوں کے لوگ کمیونسٹ، جن سنگھی، پرجا سوشلسٹ اور کانگریسی اُس میں کندھے سے کندھا ملا کر بھاگ لینے کے لئے بےچین ھیں اور لے رھے ھیں . یہ سندر گھٹنا دو باتیں ثابت کرتی ھے . ایک یہ کہ وچاروں اور آدرشوں کے تھوڑے بہت فرق کے ھوتے ھوئے بھی سب پارٹیوں کے لوگ سچے، تیاگی اور دیش بھکت ھیں .

दूसरी यह कि किसी भी काम में अगर हम मिल जावें और मिल कर काम करें तो हम देश को बहुत अधिक ऊँचा उठा सकते हैं.

हमारी शुरु से यह राय है कि यह अलग अलग पार्टियां देश के लिये जरूरी नहीं हैं. कम से कम राजनीतिक चुनाव इन पार्टियों के आधार पर लड़ना एक बीमारी है जो हमें योरप से लगी है. अंगरेजी पढ़े भारत वासियों ने आँख बन्द करके उसे इंगलैंड जैसे देशों से नक़ल कर लिया है. हमें इससे काफ़ी नुक़सान पहुंचा है और पहुंच रहा है. हमें इस बात का भी पूरा विश्वास है कि इन पार्टियों के एक दर्जे तक रहते हुए भी हम में अगर हिम्मत और समझ हो तो हम अपनी विधान सभाओं के लिये इस तरह के आदमी सबकी मिली हुई राय से चुन सकते हैं जिनके लिये हमें चुनाव लड़ने, करोड़ों रुपये बरबाद करने और देश के अन्दर कड़वापन बढ़ाने की जरूरत न हो. सेन्टर में और प्रान्तों में हम इस तरह की सरकारें भी बना सकते हैं जिनमें सब पार्टियों के अच्छे से अच्छे और ऊँचे से ऊँचे समझदार और चरित्रवान लोग शामिल हों. इस तरह की गवरमेंटों के सामने हम देश के भले के इस तरह के प्रोग्राम भी आसानी से रख सकते हैं जिन पर सब सहमत हों और हम जिन्हें मिलकर पूरा कर सकें. गवरमेंट चलाने के लिये एक सरकार पक्ष और एक विरोधी पक्ष जरूरी हैं यह एक अन्ध विश्वास, एक पागलपन है जो हमने दूसरों से सीख लिया है. नए चीन में हमें सबसे अच्छी बात यही लगी कि नया चीन लगभग इसी रास्ते पर चला है. रूस के पिछले आम चुनाव में वहां की कम्युनिस्ट पार्टी ने जिन लोगों को नामजद किया और वोट दिये दिलाए उनमें साठ फ़ीसदी ग़ैर कम्युनिस्ट थे. हम इस मामले में चीन या रूस से कहीं बढ़कर चल सकते हैं बशर्तेकि हमें इतनी समझ हो कि भलाई और बुराई सबके अन्दर एक बराबर है, अच्छे और बुरे सब में हैं, एक भगवान सबके अन्दर है. जो लोग मतभेदों से शुरु करते हैं उन्हें मतभेद ही दिखाई देते हैं. जो एकता देखना चाहते हैं उनकी आँखें एकता की ही सामग्री ढूँढ निकालती हैं. भावी भारत के लिये हमें यही सबसे अच्छा रास्ता दिखाई देता है.

2-7-55 —सुन्दरलाल

बी. सी. जी का टीका

हम इससे इनकार नहीं करते कि हमारी आजकल की सरकार ने जो डेढ़ सौ बरस के विदेशी राज के बाद हमारी पहली देशी सरकार है कई अच्छे काम किये हैं और कर रही है. खासकर अपने प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल

دوسری یہ کہ کسی بھی کام میں اگر ہم مل جاویں اور ملکر کام کریں تو ہم دیش کو بہت ادھک اونچا اُٹھا سکتے ہیں .

ہماری شروع سے یہ رائے ہے کہ یہ الگ الگ پارٹیاں دیش کے لئے ضروری نہیں ہیں. کم سے کم راج نیتک چناؤ اِن پارٹیوں کے آدھار پر لڑنا ایک بیماری ہے جو ہمیں یورپ سے لگی ہے . انگریزی پڑھے بھارت واسیوں نے آنکھ بند کر کے اِسے انگلینڈ جیسے دیشوں سے نقل کر لیا ہے . ہمیں اِس سے کافی نقصان پہنچا ہے اور پہنچ رہا ہے . ہمیں اِس بات کا بھی پورا وشواس ہے کہ اِن پارٹیوں کے ایک درجے تک رہتے ہوئے بھی ہم میں اگر ہمت اور سمجھ ہو تو ہم اپنی ودھان سبھاؤں کے لئے اِس طرح کے آدمی سب کی ملی ہوئی رائے سے چن سکتے ہیں جن کے لئے ہمیں چناؤ لڑنے ' کروڑوں روپئے برباد کرنے اور دیش کے اندر کڑواپن بڑھانے کی ضرورت نہ ہو . سینٹر میں اور پرانتوں میں ہم اِس طرح کی سرکاریں بھی بنا سکتے ہیں جن میں سب پارٹیوں کے اچھے سے اچھے اور اونچے سے اونچے سمجھدار اور چرترواں لوگ شامل ہوں . اِس طرح کی گورنمنٹوں کے سامنے ہم دیش کے بھلے کے اِس طرح کے پروگرام بھی آسانی سے رکھ سکتے ہیں جن پر سب سہمت ہوں اور ہم جنہیں ملکر پورا کر سکیں . گورنمنٹ چلانے کے لئے ایک سرکار پکش اور ایک ورودھی پکش ضروری ہیں یہ ایک اندھ وشواس' ایک پاگل پن ہے جو ہمنے دوسروں سے سیکھ لیا ہے . نئے چین میں ہمیں سب سے اچھی بات یہی لگی کہ نیا چین لگ بھگ اِسی راستے پر چلا ہے . روس کے پچھلے عام چناؤ میں وہاں کی کمیونسٹ پارٹی نے جن لوگوں کو نامزد کیا اور ووٹ دئیے دلائے اُن میں ساٹھ فی صدی غیر کمیونسٹ تھے . ہم اِس معاملے میں چین یا روس سے کہیں بڑھکر چل سکتے ہیں بشرطیکہ ہمیں اتنی سمجھ ہو کہ بھلائی اور برائی سب کے اندر ایک برابر ہے' اچھے اور برے سب میں ہیں' ایک بھگوان سب کے اندر ہے . جو لوگ مت بھیدوں سے شروع کرتے ہیں اُنہیں مت بھید ہی دکھائی دیتے ہیں . جو ایکتا دیکھنا چاہتے ہیں اُن کی آنکھیں ایکتا کی ہی سامگری ڈھونڈھ نکالتی ہیں . بھاوی بھارت کے لئے ہمیں یہی سب سے اچھا راستہ دکھائی دیتا ہے .

—سندرلال 2. 7. 55

بی. سی. جی. کا ٹیکہ

ہم اِس سے انکار نہیں کرتے کہ ہماری آجکل کی سرکار نے جو ڈیڑھ سو برس کے ودیشی راج کے بعد ہماری پہلی دیشی سرکار ہے کئی اچھے کام کئے ہیں اور کر رہی ہے . خاص کر اپنے پردھان منتری پنڈت جواہرلال

नेहरू की उन कोशिशों को, जो वह देश के अन्दर अमन बनाए रखने, तंग साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों, जात पात, छूआ छूत, ग़लत क़िस्म की प्रांतीयता आदि को ख़तम करने, एक सच्चे सेकुलर यानी मज़हब के मामले में ग़ैर जानिबदार राज की जड़ों को मज़बूत करने, दुनिया के दूसरे देशों के साथ प्रेम सम्बन्ध क़ायम करने और सारी इनसानी क़ौम के लिये जंग के ख़तरों को कम करने और धीरे धीरे ख़तम करने की कर रहे हैं, हमारी ज़बान और लेखनी कभी भी सराहते नहीं थकती. इन सब बातों में उन्होंने पिछले सात बरस के अन्दर हमारे देश को ऊँचा उठाया है और एक बड़े दरजे तक गाँधी जी के बताए आदर्शों को क़ायम रक्खा है. लेकिन कई बातों में हमारे आजकल के शासक ग़लत भी गए हैं और जा रहे हैं. देश की जनता के भले के लिये हमारा यह फ़र्ज़ है कि हम सच्चाई और प्रेम के साथ उन बातों के बारे में भी अपने विचार प्रकट करते रहें.

इस तरह की ग़लतियों की एक मिसाल हमारे सेहत विभाग के कुछ काम हैं. गाँधी जी हमेशा कहा करते थे कि हमारे देश को अंगरेज़ी राज से इतना ख़तरा नहीं है जितना अंगरेज़ियत यानी पच्छिम के अन्ध अनुकरण से. गाँधी जी अपने इन विचारों को तफ़सील के साथ बार बार बयान कर चुके हैं. हम उन देश भक्तों की जो हमारे सेहत विभाग के चार्ज में हैं नीयत पर शक नहीं करते पर पच्छिमी तरीक़ों का उचित से अधिक प्रेम उनसे कई काम ऐसे करा रहा है जो देश के लिये हानिकर हैं.

देश भर के अन्दर बी. सी. जी. का ज़ोरों के साथ प्रचार ऐसा ही एक काम है. बी. सी. जी. से आज भारत के लोग काफ़ी परिचित हैं. यह कुछ पले हुए कीड़े हैं जो सुई के ज़रिये आदमियों और बच्चों के ख़ून में दाख़िल कराए जाते हैं ताकि उस ख़ून के अन्दर जो ख़ास ख़ास बीमारियों के कीड़े हों या आइन्दा कभी पैदा हो जायं उन्हें यह बाहर के कीड़े मारकर ख़तम कर सकें और जिसके सुई भोंकी गई है उसे उन बीमारियों से बचा सकें. बी. सी. जी. का यह टीका लोगों को ख़ासकर तपेदिक़ से बचाने के लिये लगाया जाता है. करोड़ों रुपये के यह टीके योरप से ख़रीद कर लाए जा रहे हैं और देश के बच्चों पर आज़माए जा रहे हैं.

इस तरह के टीके बहुत सी बीमारियों के लिये लगाए जाते हैं. इनसे बहुत सी सूरतों में एक दरजे तक लाभ भी होता है. इनमें शुरू की एक मिसाल चेचक के टीके की है. जब कोई इस तरह की बीमारी किसी ख़ास इलाक़े में ज़ोर के साथ फैली हुई हो तो इस तरह के टीके कई बार उसे रोकने में मदद देते हैं. पर धीरे धीरे योरप के समझदार डाक्टरों ने ही यह पता लगाया और दुनिया को बताना

نہرو کی اُن کوششوں کو جو' وہ دیش کے اندر امن بنائے رکھنے' تنگ سامپردائک پرورتیوں' جات پات' چھوا چھوت' غلط قسم کی پرانتیتا آدی کو ختم کرنے' ایک سچے سیکولر یعنی مذہب کے معاملے میں غیر جانب دار راج کی جڑوں کو مضبوط کرنے' دنیا کے دوسرے دیشوں کے ساتھ پریم سمبندھ قائم کرنے اور ساری انسانی قوم کے لئے جنگ کے خطروں کو کم کرنے اور دھیرے دھیرے ختم کرنے کی کر رہے ہیں' ہماری زبان اور لیکھنی کبھی بھی سراہتے نہیں تھکتی. اِن سب باتوں میں اُنہوں نے پچھلے سات برس کے اندر ہمارے دیش کو اونچا اُٹھایا ہے اور ایک بڑے درجے تک گاندھی جی کے بتائے آدرشوں کو قائم رکھا ہے . لیکن کئی باتوں میں ہمارے آجکل کے شاسک غلط بھی گئے ہیں اور جا رہے ہیں . دیش کی جنتا کے بھلے کے لئے ہمارا یہ فرض ہے کہ ہم سچائی اور پریم کے ساتھ اُن باتوں کے بارے میں بھی اپنے وچار پرگٹ کرتے رہیں .

اِس طرح کی غلطیوں کی ایک مثال ہمارے صحت وبھاگ کے کچھ کام ہیں . گاندھی جی ہمیشہ کہا کرتے تھے کہ ہمارے دیش کو انگریزی راج سے اتنا خطرہ نہیں ہے جتنا انگریزیت یعنی پچھم کے انوکرن سے. گاندھی جی اپنے اِن وچاروں کو تفصیل کے ساتھ بار بار بیان کر چکے ہیں . ہم اُن دیش بھکتوں کی جو ہمارے صحت وبھاگ کے چارج میں ہیں نیت پر شک نہیں کرتے پر پچھمی طریقوں کا اُچت سے ادھک پریم اُن سے کئی کام ایسے کرا رہا ہے جو دیش کے لئے ہانیکر ہیں .

دیش بھر کے اندر بی. سی. جی. کا زوروں کے ساتھ پرچار ایسا ہی ایک کام ہے . بی. سی. جی. سے آج بھارت کے لوگ کافی پریچت ہیں . یہ کچھ پلے ہوئے کیڑے ہیں جو سوئی کے ذریعہ آدمیوں اور بچوں کے خون میں داخل کرائے جاتے ہیں تاکہ اُس خون کے اندر جو خاص خاص بیماریوں کے کیڑے ہوں یا آئندہ کبھی پیدا ہو جائیں اُنہیں یہ باہر کے کیڑے مار کر ختم کر سکیں اور جس کے سوئی بھونکی گئی ہے اُسے ان بیماریوں سے بچا سکیں . بی. سی. جی. کا یہ ٹیکہ لوگوں کو خاص کر تپ دق سے بچانے کے لئے لگایا جاتا ہے . کروڑوں روپئے کے یہ ٹیکے یورپ سے خرید کر لائے جا رہے ہیں اور دیش کے بچوں پر آزمائے جا رہے ہیں .

اِس طرح کے ٹیکے بہت سی بیماریوں کے لئے لگائے جاتے ہیں . اِن سے بہت سی صورتوں میں ایک درجے تک لابھ بھی ہوتا ہے. اِن میں شروع کی ایک مثال چیچک کے ٹیکے کی ہے . جب کوئی اِس طرح کی بیماری کسی خاص علاقے میں زور کے ساتھ پھیلی ہوئی ہو تو اِس طرح کے ٹیکے کئی بار اُسے روکنے میں مدد دیتے ہیں. پر دھیرے دھیرے یورپ کے سمجھدار ڈاکٹروں نے ہی یہ پتہ لگایا اور دنیا کو بتانا

शुरू किया कि यह जरूरी नहीं है कि किसी खास बीमारी के टीके से वह बीमारी रुक ही जाय, और बहुत बार टीका लगाने के बाद अगर वह बीमारी होती है तो कहीं अधिक खतरनाक साबित होती है. चेचक के टीके के बारे में इसकी सैकड़ों मिसालें देखने को मिली हैं. योरप ही के बहुत से देशों में जनता की तरफ़ से और खुद डाक्टरों की तरफ़ से इस तरह के टीकों के खिलाफ़ आन्दोलन भी हुए. चेचक के टीके के खिलाफ़ इंगलैण्ड में अरसा हुआ एक 'नेशनल एण्टी वैक्सीनेशन लीग' क़ायम हुई और उसे पूरी कामयाबी मिली. वहाँ चेचक का टीका सब बच्चों के लिये लाज़मी नहीं रहा. कम या ज्यादह इसी तरह की तहरीकें योरप के और देशों में भी चेचक के और दूसरे इसी तरह के टीकों के खिलाफ़ शुरु हुईं और एक न एक दरजे तक कामयाब हुईं.

दुनिया के बड़े से बड़े डाक्टरों की यह भी राय है कि इस तरह की बीमारियों का असली कारन आर्थिक होता है. ग़रीबी सब बीमारियों की जड़ है—यानी खाने की और खास कर पुष्टिकर खाने की कमी और जीवन की मोटी मोटी जरूरी सहूलियतों का न मिलना. इसीलिये डाक्टरों की राय है कि इन बीमारियों का असली इलाज और इनकी रोकथाम का असली तरीक़ा जनता की ग़रीबी को दूर करना है. सबको अच्छा और काफ़ी मात्रा में खाना मिले और जीवन की मामूली सहूलियतें मिलें तो बीमारियां अपने आप भाग जाती हैं. बड़े बड़े साइन्सदानों की राय है कि इस तरह की बीमारियों का असली इलाज कमज़ोर जिस्म के अन्दर बाहर से बीमारियों के जहरीले कीड़ों का दाखिल करना नहीं है बल्कि खून के अन्दर के क़ुदरती कीड़ों का खूराक और आराम के जरिये मजबूत करना है. इस विषय पर अमरीका, इंगलैन्ड, जरमनी आदि देशों में हज़ारों किताबें छप चुकी हैं जिनमें से काफ़ी भारत के बाज़ारों में भी मिल सकती हैं. पर हमारी हालत यह है कि कभी कभी एक रूसी विद्वान के शब्दों में जिससे हमारी पीकिंग में मुलाक़ात हुई थी "तरह तरह के कपड़ों से तजरबे करते करते योरप वाले जिन कपड़ों को ग़लत समझ कर उतार कर फेंक देते हैं उन्हें हमारे पच्छिम प्रेमी भारतवासी बड़े शौक़ से ओढ़ते हैं और ओढ़े फिरते हैं." पच्छिम के व्यापारी भी इस बारे में बहुत होशियार हैं. जो चीज योरप में पुरानी पड़ जाने के कारन नहीं बिकती उसे हमारे जैसे देशों में खपाकर वह आसानी से करोड़ों बना लेते हैं. लगभग यही मामला आजकल कई तरह की बीमारियों के टीकों का है.

पचास साल से ऊपर हुआ जब हमारे अंगरेज हाकिमों ने ज़बरदस्ती हर हिन्दुस्तानी के प्लेग का टीका लगाने की

شروع کیا کہ یہ ضروری نہیں ہے کہ کسی خاص بیماری کے ٹیکے سے وہ بیماری رک ہی جائے، اور بہت بار ٹیکہ لگانے کے بعد اگر وہ بیماری ہوتی ہے تو کہیں ادھک خطرناک ثابت ہوتی ہے۔ چیچک کے ٹیکے کے بارے میں اِس کی سیکڑوں مثالیں دیکھنے کو ملی ہیں۔ یورپ ہی کے بہت سے دیشوں میں جنتا کی طرف سے اور خود ڈاکٹروں کی طرف سے اِس طرح کے ٹیکوں کے خلاف آندولن بھی ہوئے۔ چیچک کے ٹیکے کے خلاف انگلینڈ میں عرصہ ہوا ایک 'نیشنل اینٹی ویکسی نیشن لیگ' قائم ہوئی اور اُسے پوری کامیابی ملی۔ وہاں چیچک کا ٹیکہ سب بچوں کے لئے لازمی نہیں رہا۔ کم یا زیادہ اِسی طرح کی تحریکیں یورپ کے اور دیشوں میں بھی چیچک کے اور دوسرے اِسی طرح کے ٹیکوں کے خلاف شروع ہوئیں اور ایک نہ ایک درجہ تک کامیاب ہوئیں۔

دنیا کے بڑے سے بڑے ڈاکٹروں کی یہ بھی رائے ہے کہ اِس طرح کی بیماریوں کا اصلی کارن آرتھک ہوتا ہے۔ غریبی سب بیماریوں کی جڑ ہے—یعنی کھانے کی اور خاص کر پشٹی کر کھانے کی کمی اور جیون کی موٹی موٹی ضروری سہولتوں کا نہ ملنا۔ اِسی لئے ڈاکٹروں کی رائے ہے کہ اِن بیماریوں کا اصلی علاج اور انکی روک تھام کا اصلی طریقہ جنتا کی غریبی کو دور کرنا ہے۔ سب کو اچھا اور کافی ماترا میں کھانا ملے اور جیون کی معمولی سہولتیں ملیں تو بیماریاں اپنے آپ بھاگ جاتی ہیں۔ بڑے بڑے سائنسدانوں کی رائے ہے کہ اِس طرح کی بیماریوں کا اصلی علاج کمزور جسم کے اندر باہر سے بیماریوں کے زہریلے کیڑوں کا داخل کرنا نہیں ہے بلکہ خون کے اندر کے قدرتی کیڑوں کو خوراک اور آرام کے ذریعہ مضبوط کرنا ہے۔ اِس وشے پر امریکہ، انگلینڈ، جرمنی آدی دیشوں میں ہزاروں کتابیں چھپ چکی ہیں جن میں سے کافی بھارت کے بازاروں میں بھی مل سکتی ہیں۔ پر ہماری حالت یہ ہے کہ کبھی کبھی ایک روسی ودوان کے شبدوں میں جس سے ہماری پیکنگ میں ملاقات ہوئی تھی "طرح طرح کے کپڑوں سے تجربے کرتے کرتے یورپ والے جن کپڑوں کو غلط سمجھ کر اُتار کر پھینک دیتے ہیں انہیں ہمارے پچھم پریمی بھارت واسی بڑے شوق سے اوڑھتے ہیں اور اوڑھے پھرتے ہیں۔" پچھم کے بیوپاری بھی اس بارے میں بہت ہوشیار ہیں۔ جو چیز یورپ میں پرانی پڑ جانے کے کارن نہیں بکتی اُسے ہمارے جیسے دیشوں میں کھپا کر وہ آسانی سے کروڑوں بنا لیتے ہیں۔ لگ بھگ یہی معاملہ آجکل کئی طرح کی بیماریوں کے ٹیکوں کا ہے۔

پچاس سال سے اُوپر ہوا جب ہمارے انگریز حاکموں نے زبردستی ہر ہندستانی کے پلیگ کا ٹیکہ لگانے کی

कारंवाई शुरू की थी. लोकमान्य तिलक की कोशिशों और कुछ नौजवानों की क़ुरबानियों ने देश की जनता को शुरू ही में इस ख़तरे से बचा लिया.

बी. सी. जी. का टीका अब पूरे ज़ोरों के साथ देश के बच्चों पर आज़माया जा रहा है. जिन समझदार देश भक्तों ने इसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई है उनमें सबसे चमकता नाम श्री सी. राजा गोपालाचारी का है. हाल में मद्रास में लेकचर देते हुए उन्होंने कहा कि—"बी. सी. जी. का प्रचार देश के बच्चों के ऊपर बीमारी के कीड़ों की जंग को आज़माना है." उन्होंने यह भी कहा कि—"बी. सी. जी. के ख़िलाफ़ मैं जो रुख़ ले रहा हूँ वह किसी रोज़गारी दुशमनी के कारन नहीं है. मेरा विरोध किसी भावनाओं के आधार पर भी नहीं है. मेरे विरोध के साइन्सी कारन हैं. मैंने इस विषय पर बहुत किताबें ध्यान से पढ़ी हैं और उन्हें पढ़कर इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि बी. सी. जी. का प्रचार बहुत बड़ी ग़लती है और ख़तरनाक है......सरकार ने तय कर लिया है कि इसके प्रचार को जनता में बढ़ावे और लाखों बच्चों के जिस्म में एक जाना बूझा ज़हर दाख़िल करे......अब यह मामला हमारी क़ानून सभाओं से सम्बन्ध रखता है. यह उन सब लोगों से सम्बन्ध रखता है जो हमारे शासन के लिये ज़िम्मेदार हैं. इसका सम्बन्ध आम जनता से है, बच्चों के मां बाप से है और सब समझदार आदमियों से है......हमारे इस ग़लत काम से जितना नुक़सान होता है उतना अन्तर्राष्ट्रीय बदमाशियों से भी नहीं होता. हम जनता में बी. सी. जी. का प्रचार इसलिये कर रहे हैं क्योंकि हम एक ख़्याल के पीछे पागल हो गए हैं. हमें अगर सच्चाई की खोज है तो हमें एक योगी की तरह बेलाग होना चाहिये. हमें सोचना यह है कि क्या बी. सी. जी. के टीके लगाना मुफ़ीद है और क्या इन टीकों से कोई नुक़सान नहीं होता? इससे कोई फ़ायदा नहीं कि हम लाखों बच्चों के सुइयां भोंकते फिरें इसलिये कि शायद उनमें से कुछ किसी बीमारी से बच जावें. यह सोचना बिलकुल ग़लत है कि बी. सी. जी. हिन्दुस्तान के लिये ज़रूरी है. बड़े बड़े माहिर और साइन्सदां यह राय ज़ाहिर कर चुके हैं कि ख़ासकर जिन देशों में लोगों को अच्छा और काफ़ी मात्रा में खाना नहीं मिलता उनमें बी. सी. जी. का इस्तेमाल ख़तरनाक है......"

श्री राजा गोपालाचारी ने कोयमबेटूर के सात बच्चों का हाल सुनाया जिनके बी. सी. जी. लगाया गया था. उनमें कहा जाता है कि दो उसी टीके से मर गए. मद्रास ही की तरफ़ से बी. सी. जी. के कारन कुछ बच्चों के अन्धे हो जाने की ख़बर भी अख़बारों में छप चुकी है. इसपर सरकार ने अपने डाक्टरों की एक कमेटी मुक़र्रर की. कमेटी की रिपोर्ट पर सरकार ने एक प्रेस नोट निकाल दिया कि

کارروائی شروع کی تھی ۔ لوک مانیہ تلک کی کوششوں اور کچھ نوجوانوں کی قربانیوں نے دیش کی جنتا کو شروع ہی میں اس خطرے سے بچا لیا ۔

بی. سی. جی. کا ٹیکہ اب پورے زوروں کے ساتھ دیش کے بچوں پر آزمایا جا رہا ہے ۔ جن سمجھدار دیش بھگتوں نے اس کے خلاف آواز اٹھائی ہے اُن میں سب سے چمکتا نام شری سی. راجا گوپالا چاری کا ہے ۔ حال میں مدراس میں لکچر دیتے ہوئے اُنہوں نے کہا کہ—"بی. سی. جی. کا پرچار دیش کے بچوں کے اوپر بیماری کے کیڑوں کی جنگ کو آزمانا ہے ۔" اُنہوں نے یہ بھی کہا کہ—"بی. سی. جی. کے خلاف میں جو رخ لے رہا ہوں وہ کسی روزگاری دشمنی کے کارن نہیں ہے ۔ میرا ورودھ کسی بھاوناؤں کے آدھار پر بھی نہیں ہے ۔ میرے ورودھ کے سائنسی کارن ہیں ۔ میں نے اس وشے پر بہت کتابیں دھیان سے پڑھی ہیں اور اُنہیں پڑھکر اس نتیجے پر پہنچا ہوں کہ بی. سی. جی. کا پرچار بہت بڑی غلطی ہے اور خطرناک ہے... سرکار نے طے کر لیا ہے کہ اس کے پرچار کو جنتا میں بڑھاوے اور لاکھوں بچوں کے جسم میں ایک جانا بوجھا زہر داخل کرے... اب یہ معاملہ ہماری قانون سبھاؤں سے سمبندھ رکھتا ہے ۔ یہ اُن سب لوگوں سے سمبندھ رکھتا ہے جو ہمارے شاسن کے لئے ذمہ‌دار ہیں ۔ اس کا سمبندھ عام جنتا سے ہے، بچوں کے ماں باپ سے ہے اور سب سمجھدار آدمیوں سے ہے..... ہمارے اس غلط کام سے جتنا نقصان ہوتا ہے اُتنا انتر راشٹریہ بدمعاشیوں سے بھی نہیں ہوتا ۔ ہم جنتا میں بی. سی. جی. کا پرچار اس لئے کر رہے ہیں کیونکہ ہم ایک خیال کے پیچھے پاگل ہوگئے ہیں ۔ ہمیں اگر سچائی کی کھوج ہے تو ہمیں ایک یوگی کی طرح بے لاگ ہونا چاہئے ۔ ہمیں سوچنا یہ ہے کہ کیا بی. سی. جی. کے ٹیکے لگانا مفید ہے اور کیا اِن ٹیکوں سے کوئی نقصان نہیں ہوتا ؟ اس سے کوئی فائدہ نہیں کہ ہم لاکھوں بچوں کے سوئیاں بھونکتے پھریں اس لئے کہ شاید اُن میں سے کچھ کسی بیماری سے بچ جاویں ۔ یہ سوچنا بالکل غلط ہے کہ بی. سی. جی. ہندستان کے لئے ضروری ہے ۔ بڑے بڑے ماہر اور سائنس داں یہ رائے ظاہر کر چکے ہیں کہ خاص کر جن دیشوں میں لوگوں کو اچھا اور کافی ماترا میں کھانا نہیں ملتا اُن میں بی. سی. جی. کا استعمال خطرناک ہے..."

شری راجا گوپالاچاری نے کوئمبٹور کے سات بچوں کا حال سنایا جن کے بی. سی. جی. لگایا گیا تھا ۔ اُن میں کہا جاتا ہے کہ دو اُسی ٹیکے سے مر گئے ۔ مدراس ہی کی طرف سے بی. سی. جی. کے کارن کچھ بچوں کے اندھے ہوجانے کی خبر بھی اخباروں میں چھپ چکی ہے ۔ اس پر سرکار نے اپنے ڈاکٹروں کی ایک کمیٹی مقرر کی ۔ کمیٹی کی رپورٹ پر سرکار نے ایک پریس نوٹ نکال دیا کہ

जिन बच्चों को नुक़सान पहुँचा है उनके उस नुक़सान का बी. सी. जी. के टीके से कोई सम्बन्ध नहीं. श्री राजा गोपालाचारी ने कहा कि—"सरकार के इस प्रेस नोट से मुझे बड़ी निराशा हुई है. मैं उसे नहीं मानता……"

श्री राजा गोपालाचारी की इस साफ़ राय के बाद हमें इस विषय पर कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है. हाल में बड़े बड़े हिन्दुस्तानी रूस जा चुके हैं. कहा जाता है कि एक बड़े हिन्दुस्तानी ने रूस के सेहत मिनिस्टर से पूछा—"क्या आप अमरीका से दवाइयां ख़रीद कर अपने यहां नहीं मंगाते ?" उन्होंने जवाब दिया—'हम न उनकी दवाइयां मँगाते हैं और न उनकी बीमारियां." यह जवाब केवल एक मज़ाक़ ही का जवाब न था. इसमें काफी सच्चाई छिपी हुई है. हम बी. सी. जी. जैसे टीकों को देश की जनता, देश के बच्चों, आइन्दा आने वाली नसलों और उन सबकी तन्दुरुस्ती के लिये बहुत बुरा और ख़तरनाक मानते हैं. जनता की बीमारियों का असली इलाज उनमें गन्दी और ख़तरनाक दवाएं ठूँसना और मुल्क का पैसा बरबाद करना नहीं है. असली इलाज है एक एक झोंपड़े के अन्दर काम पहुँचाना, रोज़ी पहुँचाना और जीवन की वह सहूलियतें पहुँचाना जो तन्दुरुस्ती का सबसे बड़ा बीमा होती हैं.

2-7-55 —सुन्दरलाल

पंजाब का मेडिकल प्रेक्टिशनर्स बिल और इलाज के अलग अलग तरीक़े

हमारे सेहत विभाग की ग़लतियों में से एक और बड़ी ग़लती यह है कि वह एलोपैथिक इलाज का जिसे आम तौर पर डाक्टरी कहते हैं इतना शैदा है कि उसके सामने वह वैद्यक, यूनानी, होमियोपैथी, नेचरोपैथी आदि इलाजों और उनके वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों को बस चले तो नहीं रहने देना चाहता. यह भी एक ख़तरनाक ख़ब्त है. दुनिया की सारी साइन्स इनडेक्शन यानी तजरबों पर क़ायम है. गाँव गाँव और गली गली में हमारा और हमारे जैसे लाखों आदमियों का यह तजरबा है कि पुराने देसी तरीक़ों के इलाजों से, होमियोपैथिक दवाओं से और क़ुदरती इलाज के तरीक़ों से देश के लाखों बीमार अच्छे होते हैं और आसानी से और कम ख़र्च में अच्छे होते हैं. हमें यह भी मालूम है कि ऐलोपैथिक इलाज जबकि और सब इलाजों की तरह बहुतों को कुछ फ़ायदा भी करता है लाखों को उससे काफ़ी नुक़सान भी पहुँचा है. देशवासियों को यह भी अच्छी तरह मालूम है कि ऐलोपैथी का इलाज आम तौर पर इतना मंहगा पड़ता है कि न केवल आम जनता के लिये ही बल्कि लाखों बीच के दरजे के लोगों के लिए भी यह

جن بچوں کو نقصان پہنچا ہے اُن کے اُس نقصان کا بی. سی. جی. کے ٹیکے سے کوئی سمبندھ نہیں. شری راجا گوپالاچاری نے کہا کہ—"سرکار کے اِس پریس نوٹ سے مجھے بڑی نراشا ہوئی ہے. میں اُسے نہیں مانتا……"

شری راجا گوپالاچاری کی اس صاف رائے کے بعد ہمیں اِس وشے پر کچھ ادھک کہنے کی آوشیکتا نہیں ہے. حال میں بڑے بڑے ہندستانی روس جا چکے ہیں. کہا جاتا ہے کہ ایک بڑے ہندستانی نے روس کے صحت منسٹر سے پوچھا—"کیا آپ امریکہ سے دوائیاں خرید کر اپنے یہاں نہیں منگاتے ؟" اُنہوں نے جواب دیا—"ہم نہ اُن کی دوائیاں منگاتے ہیں اور نہ اُن کی بیماریاں." یہ جواب کیول ایک مزاق ہی کا جواب نہ تھا. اِس میں کافی سچائی چھپی ہوئی ہے. ہم بی. سی. جی. جیسے ٹیکوں کو دیش کی جنتا' دیش کے بچوں' آئندہ آنے والی نسلوں اور اُن سب کی تندرستی کے لئے بہت برا اور خطرناک مانتے ہیں. جنتا کی بیماریوں کا اصلی علاج اُن میں گندی اور خطرناک دوائیں ٹھونسنا اور ملک کا پیسہ برباد کرنا نہیں ہے. اصلی علاج ہے ایک ایک جھونپڑے کے اندر کام پہنچانا' روزی پہنچانا اور جیون کی وہ سہولیتیں پہنچانا جو تندرستی کا سب سے بڑا بیمہ ہوتی ہیں.

2. 7. 55 —سندرلال

پنجاب کا میڈیکل پریکٹیشنرس بل اور علاج کے الگ الگ طریقے

ہمارے صحت وبھاگ کی غلطیوں میں سے ایک اور بڑی غلطی یہ ہے کہ وہ ایلوپیتھک علاج کا جسے عام طور پر ڈاکٹری کہتے ہیں اتنا شیدا ہے کہ اُس کے سامنے وہ ویدک' یونانی' ہومیو پیتھی' نیچروپیتھی آدی علاجوں اور اُن کے ویدیوں' حکیموں اور ڈاکٹروں کو بس چلے تو نہیں رہنے دینا چاہتا. یہ بھی ایک خطرناک خبط ہے. دنیا کی ساری سائنس انڈیکشن یعنی تجربوں پر قائم ہے. گاؤں گاؤں اور گلی گلی میں ہمارا اور ہمارے جیسے لاکھوں آدمیوں کا یہ تجربہ ہے کہ پرانے دیسی طریقوں کے علاجوں سے' ہومیوپیتھک دواؤں سے اور قدرتی علاج کے طریقوں سے دیش کے لاکھوں بیمار اچھے ہوتے ہیں اور آسانی سے اور کم خرچ میں اچھے ہوتے ہیں. ہمیں یہ بھی معلوم ہے کہ ایلوپیتھک علاج جبکہ اور سب علاجوں کی طرح بہتوں کو کچھ فائدہ بھی کرتا ہے لاکھوں کو اُس سے کافی نقصان بھی پہنچا ہے. دیش واسیوں کو یہ بھی اچھی طرح معلوم ہے کہ ایلوپیتھی کا علاج عام طور پر اتنا مہنگا پڑتا ہے کہ نہ کیول عام جنتا کے لئے ہی بلکہ لاکھوں بیچ کے درجے کے لوگوں کے لئے بھی یہ

नामुमकिन है या बरबादकुन है. सरकारी अस्पतालों की हम उन आम बुराइयों में यहां जाना नहीं चाहते जिनसे देश का एक एक बच्चा गली गली में परिचित है. इसीलिये नए चीन में एलोपैथिक तरीक़े को अपने यहां ज़्यादा से ज़्यादा तरक़्क़ी देने के साथ साथ देश के पुराने इलाज के तरीक़ों और सैकड़ों पुरानी दवाओं को भी न केवल ज़िन्दा ही रक्खा है बल्कि बढ़ने और तरक़्क़ी करने का भी पूरा मौक़ा दिया है. चीन का पुराना तरीक़ा बिलकुल हमारे देशी तरीक़े से मिलता है. वही नब्ज़ देखने का ढंग, वही कफ़, बात और पित्त और वही देशी जड़ी बूटियों के काढ़े. चीन की नई सरकार ने इन तरीक़ों को खूब बढ़ाया है और बढ़ने का मौक़ा दिया है. लाखों चीनी बीमार इन पुराने और सस्ते तरीक़ों से अच्छे होते हैं. हमने खुद पुराने ढंग के चीनी वैद्यों से बातें की हैं और उनकी दवाएं इस्तेमाल की हैं. रूस की सरकार भी ऐलोपैथी के साथ साथ होमियोपैथी को तरक़्क़ी देने की पूरी कोशिश कर रही है और उज़बेकिस्तान में उसने सैकड़ों पुरानी दवाओं और जड़ी बूटियों वग़ैरा की खोज और उनसे तजरबे करके बड़ी बड़ी मुहलिक बीमारियों को उनके ज़रिये क़ाबू में कर लिया है.

हाल में पंजाब स्टेट एसम्बली के अन्दर 'पंजाब स्टेट मेडिकल प्रैक्टिशनर्स बिल' नाम से एक नया क़ानून पेश हुआ जिसमें ऐलोपैथिक डाक्टरों के अलावा दूसरी तरह के इलाज करने वालों को भी पंजाब के अस्पतालों में मौक़ा दिये जाने की बात तजवीज़ की गई है. यूनियन हेल्थ मिनिस्टर राजकुमारी अमृत कौर ने शिमले में इस पर बड़ी नाराज़गी और ग़ुस्सा ज़ाहिर किया और यहां तक कह डाला कि अगर इस तरह के ग़ैर सनदयाफ़्ता लोगों को अस्पतालों में मौक़ा देने की तजवीज़ की गई तो वह यूनियन प्रेसीडेन्ट से सिफ़ारिश करेंगी कि वह उस क़ानून को मनज़ूरी न दें. हम राजकुमारी बहन से अच्छी तरह परिचित हैं. हम दोनों गाँधी जी के चरणों में बैठे हैं. हमें राजकुमारी बहन की देशभक्ति या नेक नियती में शक नहीं. पर हम बड़े दुख के साथ यह कहे बिना नहीं रह सकते कि वह ग़रीब जनता के जीवन से बहुत दूर चली गई हैं. वह उस पच्छिमीयता की ज़रूरत से ज़्यादा विश्वासी हैं जिससे गाँधी जी मुल्क को बचाना चाहते थे. ऐलोपैथी इलाज का एक तरीक़ा है, एक खास उसूल है. उसे तरक़्क़ी का मौक़ा मिलना चाहिये. पर एक तरीक़े पर इतना अधिक विश्वास और इलाज के दूसरे तरीक़ों पर और दूसरे उसूलों से इतना परहेज़ खुद ग़लत और खतरनाक है. हमें अगर देश की आम जनता के साथ प्रेम है और उनकी हालत को समझ कर प्रेम है तो इस देश के अन्दर हमें इलाज के इन सब तरीक़ों को ज़िन्दा रहने, तरक़्क़ी करने और जनता की सेवा

ناممکن ہے یا بربادکن ہے ۔ سرکاری اسپتالوں کی ہم اُن عام برائیوں میں یہاں جانا نہیں چاہتے جن سے دیش کا ایک ایک بچہ گلی گلی میں پریچت ہے ۔ اسی لئے نئے چین نے ایلوپیتھک طریقے کو اپنے یہاں زیادہ سے زیادہ ترقی دینے کے ساتھ ساتھ دیش کے پرانے علاج کے طریقوں اور سیکڑوں پرانی دواؤں کو بھی نہ کیول زندہ ہی رکھا ہے بلکہ بڑھنے اور ترقی کرنے کا بھی پورا موقعہ دیا ہے ۔ چین کا پرانا طریقہ بلکل ہمارے دیشی طریقے سے ملتا ہے ۔ وہی نبض دیکھنے کا ڈھنگ، وہی کف ۔ بات، اور پت اور وہی دیشی جڑی بوٹیوں کے کاڑھے ۔ چین کی نئی سرکار نے اُن طریقوں کو خوب بڑھایا ہے اور بڑھنے کا موقعہ دیا ہے ۔ لاکھوں چینی بیمار اِن پرانے اور سستے طریقوں سے اچھے ہوتے ہیں ۔ ہم نے خود پرانے ڈھنگ کے چینی ویدیوں سے باتیں کی ہیں اور اُن کی دوائیں استعمال کی ہیں۔ روس کی سرکار بھی ایلوپیتھی کے ساتھ ساتھ ہومیوپیتھی کو ترقی دینے کی پوری کوشش کر رہی ہے اور ازبکستان میں اُس نے سیکڑوں پرانی دواؤں اور جڑی بوٹیوں وغیرہ کی کھوج اور اُن سے تجربہ کرکے بڑی بڑی مہلک بیماریوں کو اُن کے ذریعہ قابو میں کر لیا ہے ۔

حال میں پنجاب اسٹیٹ اسمبلی کے اندر 'پنجاب اسٹیٹ مڈیکل پریکٹشنرس بل' نام سے ایک نیا قانون پیش ہوا جس میں ایلوپیتھک ڈاکٹروں کے علاوہ دوسری طرح کے علاج کرنے والوں کو بھی پنجاب کے اسپتالوں میں موقعہ دیئے جانے کی بات تجویز کی گئی ہے ۔ یونین ہیلتھ منسٹر راجکماری امرت کور نے شملے میں اُس پر بڑی ناراضگی اور غصہ ظاہر کیا اور یہاں تک کہہ ڈالا کہ اگر اس طرح کے غیر سند یافتہ لوگوں کو اسپتالوں میں موقعہ دینے کی تجویز کی گئی تو وہ یونین پریسیڈنٹ سے سفارش کرینگی کہ وہ اُس قانون کو منظوری نہ دیں ۔ ہم راجکماری بہن سے اچھی طرح پریچت ہیں ۔ ہم دونوں گاندھی جی کے چرنوں میں بیٹھے ہیں ۔ ہمیں راجکماری بہن کی دیش بھکتی یا نیک نیتی میں شک نہیں ۔ پر ہم بڑے دکھ کے ساتھ یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ وہ غریب جنتا کے جیون سے بہت دور چلی گئی ہیں ۔ وہ اُس پچھمیتا کی ضرورت سے زیادہ وشواسی ہیں جس سے گاندھی جی ملک کو بچانا چاہتے تھے ۔ ایلوپیتھی علاج کا ایک طریقہ ہے، ایک خاص اصول ہے ۔ اسے ترقی کا موقعہ ملنا چاہئے ۔ پر ایک طریقے پر اتنا ادھک وشواس اور علاج کے دوسرے طریقوں پر اور دوسرے اصولوں سے اتنا پرہیز خود غلط اور خطرناک ہے ۔ ہمیں اگر دیش کی عام جنتا کے ساتھ پریم ہے اور اُن کی حالت کو سمجھکر پریم ہے تو اِس دیش کے اندر ہمیں علاج کے اِن سب طریقوں کو زندہ رہنے، ترقی کرنے اور جنتا کی سیوا

करने के बराबर के मौक़े देने होंगे. इन अलग अलग तरीक़ों के अलग अलग उसूलों, उनकी भलाइयों और बुराइयों पर बहस की यह जगह नहीं है. योरप और अमरीका से निकलने वाली प्रामाणिक डाक्टरों की लिखी हुई सेहत के ऊपर हज़ारों किताबों में से जिसने कुछ ख़ास ख़ास भी पढ़ी हैं वह जानता है कि जर्म थियोरी यानी ख़ास कीड़ों से ख़ास बीमारियों के सम्बन्ध के उसूल में अब काफ़ी फ़रक़ पड़ चुका है. किसी बीमारी को दूर करने के लिये अब उस बीमारी के कीड़े का पता लगा कर उसको मारने के लिये एक ख़ास ज़हर जिस्म में दाख़िल करने की निसबत यह कहीं अधिक ठीक, मुफ़ीद और साइन्सी तरीक़ा माना जाता है कि पहले यह मालूम किया जाए कि वह ख़ास कीड़ा जिस्म के अन्दर बैठ और पनप कैसे सका. यानी जिस्म की ज़रूरी चीज़ों में या जिस्म के बैलेंस यानी समतोल में क्या कमी आई जिससे वह कीड़ा वहां अपना काम कर सका, और फिर कीड़े के पीछे पड़ जाने की निसबत जिस्म की उस कमी को दूर करने की कोशिश की जाय. नहीं तो तरह तरह के कीड़े हवा के अन्दर और हज़ारों के जिस्मों में भरे पड़े हैं. कसौली रिसर्च इन्सटीटियुट के उस समय के डाइरेक्टर मेजर फ़ाक्स ने एक मर्तबा हमसे कहा था कि अगर हम रस्ते चलते तन्दुरुस्त दिखाई देने वाले दस आदमियों को पकड़ कर अचानक उनके थूक या ख़ून का इम्तहान ले लें तो उनमें से अधिकतर में हमें तरह तरह की बीमारियों के कीड़े मिलेंगे, लेकिन जब तक ख़ून में ख़ास तरह की कमज़ोरी न हो तब तक कोई कीड़ा असर नहीं कर सकता. यानी असली सवाल कीड़ों के पीछे जेहाद बोलना नहीं है बल्कि ख़ून यानी जिस्म की ख़ास कमी को पूरा करना है. अगर हम इस निगाह से देखने की कोशिश करें तो हमारे वैद्यक, यूनानी, होमियोपैथी और नेचरोपैथी के तरीक़े आज के ऐलोपैथी इलाज के तरीक़े से कहीं ज़्यादा ठीक और कहीं ज़्यादा साइंटिफ़िक हैं. पर यह बहस भी दूर की बहस है. यहां हम देशवासियों की ग़रीबी और लाखों बीमारों के आए दिन के तजरबों की बिना पर केवल इतना कहना चाहते हैं कि सरकार का फ़र्ज़ है कि बिना पक्षपात इलाज के सब ख़ास ख़ास तरीक़ों के साथ बराबर का सलूक करे, सबके छोटे छोटे कोरसों वाले कालिज क़ायम करे, जो उसी ख़ास तरीक़े के माहिरों के इन्तज़ाम में हों और प्राइवेट प्रैक्टिस में और सरकारी अस्पतालों में हर जगह सबको बराबर का मौक़ा दे, जिससे लाखों और करोड़ों आदमियों का भला हो, मुल्क का पैसा बाहर की क़ीमती दवाओं पर ख़र्च होकर मुल्क को और ज़्यादा ग़रीब और हमारी तन्दुरुस्तियों को और ज़्यादा ख़राब न करे और साइन्स के मामले में श्री राजा गोपालाचारी के शब्दों में हम योगी की तरह बेलाग होकर आगे बढ़ सकें.

2-7-55 —सुन्दरलाल

کرنے کے برابر کے موقعے دینے ہونگے۔ اِن الگ الگ طریقوں کے الگ الگ اصولوں، اُن کی بھلائیوں اور برائیوں پر بحث کی یہ جگہ نہیں ہے۔ یورپ اور امریکہ سے نکلنے والی پرامانک ڈاکٹروں کی لکھی ہوئی صحت کے اوپر ہزاروں کتابوں میں سے جس نے کچھ خاص خاص بھی پڑھی ہیں وہ جانتا ہے کہ جرم تھیوری یعنی خاص کیڑوں سے خاص بیماریوں کے سمبندھ کے اصول میں اب کافی فرق پڑ چکا ہے۔ کسی بیماری کو دور کرنے کے لئے اب اُس بیماری کے کیڑے کا پتہ لگا کر اُس کو مارنے کے لئے ایک خاص زہر جسم میں داخل کرنے کی نسبت یہ کہیں ادھک ٹھیک، مفید اور سائنسی طریقہ مانا جاتا ہے کہ پہلے یہ معلوم کیا جائے کہ وہ خاص کیڑا جسم کے اندر بیٹھ اور پنپ کیسے سکا۔ یعنی جسم کی ضروری چیزوں میں یا جسم کے بیلنس یعنی سمتول میں کیا کمی آئی جس سے وہ کیڑا وہاں اپنا کام کر سکا، اور پھر کیڑے کے پیچھے پڑ جانے کی نسبت جسم کی اُس کمی کو دور کرنے کی کوشش کی جائے۔ نہیں تو طرح طرح کے کیڑے ہوا کے اندر اور ہزاروں کے جسموں میں بھرے پڑے ہیں۔ کسولی ریسرچ انسٹیٹیوٹ کے اُس سمے کے ڈائریکٹر میجر فاکس نے ایک مرتبہ ہم سے کہا تھا کہ اگر ہم رستے چلتے تندرست دکھائی دینے والے دس آدمیوں کو پکڑ کر اچانک اُن کے تھوک یا خون کا امتحان لے لیں تو اُن میں سے ادھک تر میں ہمیں طرح طرح کی بیماریوں کے کیڑے ملینگے، لیکن جب تک خون میں خاص طرح کی کمزوری نہ ہو تب تک کوئی کیڑا اثر نہیں کر سکتا۔ یعنی اصلی سوال کیڑوں کے پیچھے جہاد بولنا نہیں ہے بلکہ خون یعنی جسم کی خاص کمی کو پورا کرنا ہے۔ اگر ہم اِس نگاہ سے دیکھنے کی کوشش کریں تو ہمارے ویدیک، یونانی، ہومیوپیتھی اور نیچروپیتھی کے طریقے آج کے ایلوپیتھی علاج کے طریقے سے کہیں زیادہ ٹھیک اور کہیں زیادہ سائنٹفک ہیں۔ پر یہ بحث بھی دور کی بحث ہے۔ یہاں ہم دیش واسیوں کی غریبی اور لاکھوں بیماروں کے آئے دن کے تجربوں کی بنا پر کیول اتنا کہنا چاہتے ہیں کہ سرکار کا فرض ہے کہ بنا پکش پات علاج کے سب خاص خاص طریقوں کے ساتھ برابر کا سلوک کرے، سب کے چھوٹے چھوٹے کورسوں والے کالج قائم کرے، جو اُسی خاص طریقے کے ماہروں کے انتظام میں ہوں اور پرائیویٹ پریکٹس میں اور سرکاری اسپتالوں میں سب جگہ سب کو برابر کا موقعہ دے جس سے لاکھوں اور کروڑوں آدمیوں کا بھلا ہو، ملک کا پیسہ باہر کی قیمتی دواؤں پر خرچ ہوکر ملک کو اور زیادہ غریب اور ہماری تندرستیوں کو اور زیادہ خراب نہ کرے، اور سائنس کے معاملے میں شری راجا گوپالاچاری کے شبدوں میں ہم یوگی کی طرح بےلاگ ہوکر آگے بڑھ سکیں۔

2-7-55 —سندرلال

कानपुर के मजदूरों की हड़ताल

कानपुर की कपड़े की मिलों के मजदूरों की हड़ताल को आज दो महीने से ऊपर हो चुके. हड़ताल का कारन मजदूरों, मिल मालिकों और सरकार तीनों के बीच का एक घरेलू झगड़ा है. हम घरेलू इसे इसलिये कहते हैं क्योंकि अभी कुछ दिनों तक इन तीनों को इस देश के अन्दर मिलकर रहना है. हमने आशा की थी कि यह आपसी झगड़ा जल्दी ही तय हो जायगा. इसलिये भी हमने अभी तक उस पर कुछ कहना मुनासिब नहीं समझा था. पर हड़ताल ने काफ़ी समय ले लिया और काफ़ी दर्दनाक रूप धारन कर लिया. आज दो महीने से हजारों मजदूर और उनके लाखों बाल बच्चे भूखे या आधे पेट सोते हैं. कानपुर शहर से हमारा पचास बरस का पुराना सम्बन्ध है. इसलिये इस हड़ताल के बारे में अपने विचार प्रकट करना हमने अपना धर्म समझा.

सबसे पहला सवाल 'रैशनेलाइजेशन' यानी उस चीज का है जो इस हड़ताल की जड़ है. रैशनेलाइजेशन आजकल की मशीनी सभ्यता की एक स्वाभाविक कड़ी है. मशीनी सभ्यता का रूप ही यह है कि जो काम बहुत से आदमी मिलकर करते हैं वह मशीन के जरिये कम आदमियों के द्वारा पूरा करा लिया जाय. मिलों से कपड़ा बुनाई के धन्दे में रैशनेलाइजेशन का मतलब यह है कि जिन मशीनों या पुतलियों पर दो या चार आदमी काम करते थे उन पर दो या चार की जगह एक आदमी सारा काम कर सके. इसमें आवश्यक हो जाता है कि उस एक आदमी की सहूलियत के लिये मशीन में कुछ उलट फेर या सुधार कर दिया जावे. इसके लिये उस एक आदमी को कुछ अधिक मजदूरी भी कहीं कहीं दे दी जाती है. पर इसका क़ुदरती नतीजा यह है कि बाक़ी आदमी बेकार हो जाते हैं. इसे 'लेबर सेविंग' कहा जाता है, यानी कम मजदूरों से अधिक काम निकालना.

इस तरह के रैशनेलाइजेशन की जरूरत उन मुल्कों को होती है जिनमें आदमियों की कमी है और जो अपनी मिलों की पैदावार इसलिये बढ़ाना चाहते हैं ताकि उस पैदावार को दूसरे पिछड़े हुए देशों में बेच कर वहां से धन चूस सकें. यह व्यवस्था पूँजीवादी व्यवस्था है. यही आर्थिक साम्राजवाद की जड़ है. पर जिस देश के अन्दर आदमियों की कमी न हो और करोड़ों इनसानों की शक्ति बेकारी के कारन पड़ी सड़ती हो उसमें रैशनेलाइजेशन के कोई मानी ही नहीं होते. यह कहना कि रैशनेलाइजेशन लोगों की मेहनत बचाने के लिये किया जाता है बहुत बड़ा फ़रेब और

کانپور کے مزدوروں کی ھڑتال

کانپور کی کپڑے کی ملوں کے مزدوروں کی ھڑتال کو آج دو مہینے سے اوپر ھو چکے . ھڑتال کا کارن مزدوروں' مل مالکوں اور سرکار تینوں کے بیچ کا ایک گھریلو جھگڑا ھے . ھم گھریلو اِسے اِس لئے کہتے ھیں کیونکہ ابھی کچھ دنوں تک اِن تینوں کو اِس دیش کے اندر ملکر رھنا ھے . ھمنے آشا کی تھی کہ یہ آپسی جھگڑا جلدی ھی طے ھوجائیگا . اِس لئے بھی ھم نے ابھی تک اُس پر کچھ کہنا مناسب نہیں سمجھا تھا . پر ھڑتال نے کافی سمئے لے لیا اور کافی دردناک روپ دھارن کر لیا . آج دو مہینے سے ھزاروں مزدور اور اُن کے لاکھوں بال بچے بھوکے یا آدھے پیٹ سوتے ھیں . کانپور شہر سے ھمارا پچاس برس کا پرانا سمبندھ ھے . اِس لئے اِس ھڑتال کے بارے میں اپنے وچار پرگٹ کرنا ھمنے اپنا دھرم سمجھا .

سب سے پہلا سوال ریشنیلائیزیشن' یعنی اُس چیز کا ھے جو اِس ھڑتال کی جڑ ھے . ریشنیلائیزیشن آجکل کی مشینی سبھیتا کی ایک سوابھاوک کڑی ھے . مشینی سبھیتا کا روپ ھی یہ ھے کہ جو کام بہت سے آدمی ملکر کرتے ھیں وہ مشین کے ذریعہ کم آدمیوں کے دوارا پورا کرا لیا جائے : ملوں سے کپڑا بنائی کے دھندے میں ریشینلائیزیشن کا مطلب یہ ھے کہ جن مشینوں یا پتلیوں پر دو یا چار آدمی کام کرتے تھے اُن پر دو یا چار کی جگہ ایک آدمی سارا کام کر سکے . اِس میں آوشیک ھو جاتا ھے کہ اُس ایک آدمی کی سہولیت کے لئے مشین میں کچھ اُلٹ پھیر یا سدھار کر دیا جاوے . اِس کے لئے اُس ایک آدمی کو کچھ ادھک مزدوری بھی کہیں کہیں دے دی جاتی ھے . پر اِس کا قدرتی نتیجہ یہ ھے کہ باقی آدمی بیکار ھو جاتے ھیں . اِسے 'لیبر سیونگ' کہا جاتا ھے' یعنی کم مزدوروں سے ادھک کام نکالنا .

اِس طرح کے ریشنیلائیزیشن کی ضرورت اُن ملکوں کو ھوتی ھے جن میں آدمیوں کی کمی ھے اور جو اپنی ملوں کی پیداوار اِس لئے بڑھانا چاھتے ھیں تاکہ اُس پیداوار کو دوسرے پچھڑے ھوئے دیشوں میں بیچکر وھاں سے دھن چوس سکیں . یہ ویوستھا پونجی وادی ویوستھا ھے . یہی آرتھک سامراجواد کی جڑ ھے . پر جس دیش کے اندر آدمیوں کی کمی نہ ھو اور کروڑوں انسانوں کی شکتی بیکاری کے کارن پڑی سڑتی ھو اُس میں ریشینلائیزیشن کے کوئی معنی ھی نہیں ھوتے . یہ کہنا کہ ریشینلائیزیشن لوگوں کی محنت بچانے کے لئے کیا جاتا ھے بہت بڑا فریب اور

धोखा है. इसी तरह की कोशिशों के लिये महात्मा गान्धी ने एक जगह कहा है—"यह लोग मजदूरी बचाने की लगातार कोशिश करते रहते हैं यहां तक कि हजारों आदमी खुली गलियों के अन्दर फ़ाक़े से पड़े मरने लगते हैं." साफ़ बात यह है कि रैशनेलाइजेशन के जरिये पैदावार की यानी कपड़े की लागत को कम किया जाता है और पूँजीपतियों के मुनाफ़े को और बढ़ाया जाता है. यह रैशनेलाइजेशन जनता या मजदूरों के भले की चीज़ नहीं है. रैशनेलाइजेशन उनमें बेकारी को बढ़ाने वाली है सिवाय इसके कि पैदावार को बढ़ाने और अधिक से अधिक मुनाफ़ा कमाने की धुन में हम दूसरे ग़रीब देशों पर अपना आर्थिक और तिजारती प्रभुत्व जमाने की फ़िक्र में हों. हमें बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि हमारे देश के मिल मालिकों, पूँजीपतियों और कुछ सरकारी लोगों का रुख इधर ही को मुड़ा हुआ दिखाई देता है.

बम्बई और अहमदाबाद की कुछ मिलों में यह रैशनेलाइजेशन शुरू हो गया है. कानपुर में भी इसको शुरू करने की कोशिश की गई. लखनऊ सरकार के लोग और कानपुर के पूँजीपति इस कोशिश में शामिल थे. कानपुर के कुछ मजदूर प्रेमी और जनता प्रेमी देश भक्तों ने इसका विरोध किया. श्री शिवनारायन टंडन कानपुर के बहुत प्रतिष्ठित व्यापारी और कांगरेस के सच्चे सेवक हैं. कांगरेस की तरफ़ से वह पार्लिमेण्ट के मेम्बर भी चुने गए. श्री शिवनारायन टंडन ने रैशनेलाइजेशन का विरोध किया. उनके विरोध की परवाह नहीं की गई. यहां तक कि इस विरोध के कारन ही उन्हें कांगरेस से और पार्लिमेण्ट की मेम्बरी से इस्तीफ़ा देना पड़ा. कानपुर की मिलों में रैशनेलाइजेशन जबरदस्ती लादने की कोशिश की गई. उसका क़ुदरती नतीजा है यह जबरदस्त हड़ताल.

जनता या मजदूर जब किसी चीज़ को अपने ऊपर अन्याय समझते हों तो उन्हें शान्त और अहिन्सात्मक रहकर हड़ताल यानी सत्याग्रह करने और अपनी सच्चाई को साबित करने के लिये अपने ऊपर कष्ट झेलने का पूरा हक़ है. इसमें शर्त केवल एक है और वह है उनका पूरी तरह अहिंसात्मक रहना. हम कानपुर की सूती मिल मजदूर सभा के नेता श्री राजाराम शास्त्री और उनके साथ के काम करने वालों को बधाई देते हैं कि उन्होंने इस लम्बी हड़ताल को पूरी शान्ति और अहिंसा के साथ निभाया. दूसरी ओर सरकार और मिल मालिकों की तरफ़ से हड़तालियों और उनके नेताओं की गिरफ़्तारियों और मजदूरों पर ज़ियादतियों की खबरें भी अखबारों में आती रही हैं. कानपुर की जनता ने जिस प्रेम और उदारता के साथ हड़तालियों का साथ

دھوکا ھے . اِسی طرح کی کوششوں کے لئے مہاتما گاندھی نے ایک جگہ کہا ھے—"یہ لوگ مزدوری بچانے کی لگاتار کوشش کرتے رھتے ھیں یہاں تک کہ ھزاروں آدمی کھلی گلیوں کے اندر فاقہ سے پڑے مرنے لگتے ھیں ." صاف بات یہ ھے کہ ریشینلائیزیشن کے ذریعہ پیداوار کی یعنی کپڑے کی لاگت کو کم کیا جاتا ھے اور پونجی پتیوں کے منافع کو اور بڑھایا جاتا ھے . یہ ریشینلائیزیشن جنتا یا مزدوروں کے بھلے کی چیز نہیں ھے . ریشینلائیزیشن اُن میں بیکاری کو بڑھانے والی ھے سوائے اِس کے کہ پیداوار کو بڑھانے اور ادھک سے ادھک منافع کمانے کی دھن میں ھم دوسرے غریب دیشوں پر اپنا آرتھک اور تجارتی پربھتو جمانے کی فکر میں ھوں . ھمیں بڑے دکھ کے ساتھ کہنا پڑتا ھے کہ ھمارے دیش کے مل مالکوں' پونجی پتیوں اور کچھ سرکاری لوگوں کا رخ اِدھر ھی کو مڑا ھوا دکھائی دیتا ھے .

بمبئی اور احمدآباد کی کچھ ملوں میں یہ ریشینلائیزیشن شروع ھو گیا ھے . کانپور میں بھی اِس کو شروع کرنے کی کوشش کی گئی . لکھنؤ سرکار کے لوگ اور کانپور کے پونجی پتی اِس کوشش میں شامل تھے . کانپور کے کچھ مزدور پریمی اور جنتا پریمی دیش بھکتوں نے اِس کا ورودھ کیا . شری شونراین ٹنڈن کانپور کے بہت پرتشٹھت بیوپاری اور کانگریس کے سچے سیوک ھیں . کانگریس کی طرف سے وہ پارلیمنٹ کے ممبر بھی چنے گئے . شری شونراین ٹنڈن نے ریشینلائیزیشن کا ورودھ کیا . اُن کے ورودھ کی پرواہ نہیں کی گئی . یہاں تک کہ اِس ورودھ کے کارن ھی اُنھیں کانگریس سے اور پارلیمنٹ کی ممبری سے استعفیٰ دینا پڑا . کانپور کی ملوں میں ریشینلائیزیشن زبردستی لادنے کی کوشش کی گئی . اُس کا قدرتی نتیجہ ھے یہ زبردست ھڑتال .

جنتا یا مزدور جب کسی چیز کو اپنے اوپر انیائے سمجھتے ھوں تو اُنھیں شانت اور اھنساتمک رہ کر ھڑتال یعنی ستیاگرہ کرنے اور اپنی سچائی کو ثابت کرنے کے لئے اپنے اوپر کشٹ جھیلنے کا پورا حق ھے . اِس میں شرط کیول ایک ھے اور وہ ھے اُن کا پوری طرح اھنساتمک رھنا . ھم کانپور کی سوتی مل مزدور سبھا کے نیتا شری راجارام شاستری اور اُن کے ساتھ کے کام کرنے والوں کو بدھائی دیتے ھیں کہ اُنھوں نے اِس لمبی ھڑتال کو پوری شانتی اور اھنسا کے ساتھ نبھایا . دوسری اور سرکار اور مل مالکوں کی طرف سے ھڑتالیوں اور اُنکے نیتاؤں کی گرفتاریوں اور مزدوروں پر زیادتیوں کی خبریں بھی اخباروں میں آتی رھی ھیں . کانپور کی جنتا نے جس پریم اور اُدارتا کے ساتھ ھڑتالیوں کا ساتھ

दिया है और उनकी मुसीबतों में हाथ बटाया है वह भी कानपुर के लिये बड़े गौरव की चीज़ है. हमारा दिल इस मामले में कानपुर के मजदूरों और वहां की जनता के साथ है.

कानपुर के मजदूर काफ़ी कष्ट भोग चुके. वह अपनी सच्चाई साबित कर चुके. सरकार और मिल मालिकों के लिये अब तीन ही रास्ते हैं. सबसे अच्छा इन्साफ़ का और नेकी का रास्ता यह है कि वह अपनी रैशनेलाइज़ेशन की तजवीज़ को वापिस ले लें, मजदूरों की मुसीबतों को ख़त्म करें और बिलकुल पहले की तरह प्रेम के साथ मिलकर रहें और काम करें. दूसरा रास्ता यह है कि वह गिरफ़्तार नेताओं और मजदूरों को रिहा करके श्री राजाराम शास्त्री और इनके साथियों के साथ बराबरी के ढंग से मिलकर बैठें और तात्कालिक सुलह का कोई रास्ता निकालें. तीसरा रास्ता यह है कि वह अपनी झूठी आन को चिपटे रह कर अपनी शक्ति और पैसे के बल मजदूरों और उनके नेताओं को नीचा दिखाने की कोशिश करते रहें.

बड़े दुख की बात है कि हमारे कुछ शासकों और पूँजीपतियों ने यह झूटी आन अंगरेज़ सरकार से सीख ली है. देश की सरकारों और देश के पूँजीपतियों को इससे ऊपर उठना चाहिये ताकि शासक और शासित पूँजीपति और मजदूर सब मिलकर इस देश में प्रेम के साथ रह सकें. हमारी भगवान से यही प्रार्थना है कि वह हम सबको ठीक रास्ते पर चलने की हिम्मत दे. आज के अख़बारों में ख़बर छपी है कि श्री राजाराम शास्त्री चीफ़ मिनिस्टर श्री सम्पूर्णानन्द से मिलने नैनीताल जा रहे हैं. हमें बड़ी ख़ुशी होगी अगर हमारे इस नोट के छपने से पहले कानपुर का यह घरेलू झगड़ा इनसाफ़ और प्रेम के साथ तय हो चुका होगा.

2-7-55 —सुन्दरलाल

फिर—इस नोट के छपते छपते आज यह ख़बर मिली कि हड़ताल समाप्त हो गई.

دیا ھے اور اُن کی مصیبتوں میں ھاتھ بٹایا ھے وہ بھی کانپور کے لئے بڑے گورو کی چیز ھے ۔ ھمارا دل اس معاملہ میں کانپور کے مزدوروں اور وھاں کی جنتا کے ساتھ ھے ۔

کانپور کے مزدور کافی کشٹ بھوگ چکے ۔ وہ اپنی سچائی ثابت کر چکے ۔ سرکار اور مل مالکوں کے لئے اب تین ھی راستے ھیں ۔ سب سے اچھا انصاف کا اور نیکی کا راستہ یہ ہے کہ وہ اپنی رشنلائیزیشن کی تجویز کو واپس لے لیں' مزدوروں کی مصیبتوں کو ختم کریں اور بالکل پہلے کی طرح پریم کے ساتھ ملکر رھیں اور کام کریں ۔ دوسرا راستہ یہ ھے کہ وہ گرفتار نیتاؤں اور مزدوروں کو رھا کر کے شری راجارام شاستری اور اُن کے ساتھیوں کے ساتھ برابری کے ڈھنگ سے ملکر بیٹھیں اور تاتکالک صلح کا کوئی راستہ نکالیں ۔ تیسرا راستہ یہ ھے کہ وہ اپنی جھوٹی آن کو چپٹے رہ کر اپنی شکتی اور پیسے کے بل مزدورں اور اُن کے نیتاؤں کو نیچا دکھانے کی کوشش کرتے رھیں ۔

بڑے دکھ کی بات ھے کہ ھمارے کچھ شاسکوں اور پونجی پتیوں نے یہ جھوٹی آن انگریز سرکار سے سیکھ لی ھے ۔ دیش کی سرکاروں اور دیش کے پونجی پتیوں کو اِس سے اوپر اُٹھنا چاھئے تاکہ شاسک اور شاست پونجی پتی اور مزدور سب ملکر اس دیش میں پریم کے ساتھ رہ سکیں ۔ ھماری بھگوان سے یہی پرارتھنا ھے کہ وہ ھم سب کو ٹھیک راستے پر چلنے کی ھمت دے ۔ آج کے اخباروں میں خبر چھپی ھے کہ شری راجارام شاستری چیف منسٹر شری سمپورنانند سے ملنے نینی‌تال جا رھے ھیں ۔ ھمیں بڑی خوشی ھوگی اگر ھمارے اِس نوٹ کے چھپنے سے پہلے کانپور کا یہ گھریلو جھگڑا انصاف اور پریم کے ساتھ طے ھو چکا ھوگا ۔

سندرلال 2. 7. 55

پھر—اِس نوٹ کے چھپتے چھپتے آج یہ خبر ملی کہ ھڑتال سماپت ھو گئی ۔

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें — ہمارے یہاں ملنےوالی کچھ اور کتابیں

नोट:—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं. — نوٹ:—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर-ओ-शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیہ	1. شعر و شاعری
2. शेर-ओ-सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنسمرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण साद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.		0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला		0	0	شری بھگوان داس کیلا،	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور اُن کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سروودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. श्री गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, श्री भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد، امبشٹ، بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	श्री भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानो	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانو
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت !
28. सलोना सच		0	8	0	,,	28. سلونا سچ
19. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الٰہ آباد-3

हिन्दी घर

ہندی گھر

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

کلچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے ایک بڑا کیندر—پاٹھک ہندی' و' انگریزی کی من پسند کتابوں کے ہمیں لکھیں۔

हमारी नई किताबें

ہماری نئی کتابیں

महात्मा गान्धी की वसीयत
(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान : श्री मंज़र अली सोख़्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

مہاتما گاندھی کی وصیت
(ہندی اور اردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: شری منظر علی سوختہ
صفحے 225' قیمت دو روپیہ

—:o:—

गान्धी बाबा
(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

گاندھی بابا
(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواہر لال نہرو
موٹا کاغذ' موٹا ٹائپ' بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—:o:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

गीता और क़ुरान
275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

گیتا اور قران
275 صفحے' دام ڈھائی روپیہ

हिन्दू मुसलिम एकता
100 सफ़े, दाम बारह आने

ہندو مسلم ایکتا
100 صفحے دام بارہ آنے

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़
क़ीमत बारह आने

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق
قیمت بارہ آنے

पंजाब हमें क्या सिखाता है
क़ीमत चार आने

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے
قیمت چار آنے

बंगाल और उससे सबक़
क़ीमत दो आने

بنگال اور اس سے سبق
قیمت دو آنے

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी
145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی
145' مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख | اِس نمبر کے خاص لیکھ

तालीम का चौथा 'आर' | تعلیم کا چوتھا 'آر'

—डाक्टर भगवानदास | —ڈاکٹر بھگوان داس

मौर्यों के बाद ब्राह्मणों का ज़माना | موریوں کے بعد براہمنوں کا زمانہ

—डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त | —ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

हमारी ख़ूराक में तरकारियों की जगह | ہماری خوراک میں ترکاریوں کی جگہ

—श्रीमती शांता पांडे | —شریمتی شانتا پانڈے

उन्नीसवीं सदी के एक फ़क़ीर की डायरी | انیسویں صدی کے ایک فقیر کی ڈائری

—पंडित सुन्दरलाल | —پنڈت سندر لال

जल कन्या के आंसू | جل کنیا کے آنسو

—विश्वम्भर नाथ पांडे | —وشومبھر ناتھ پانڈے

इसके अलावा | اس کے علاوہ

देस बिदेस के मसलों पर हमारी राय में ज़रूरी सम्पादकी नोट

دیس بدیس کے مسئلوں پر ہماری رائے میں ضروری سمپادکی نوٹ

...नी कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद | ...ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

Can be had from

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

जिल्द 20 جلد नम्बर 2 نمبر

अगस्त 1955 اگست

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145، مٹھی گنج، الہ آباد

अगस्त 1955 اگست

विनोबा जी और ज़मीन की मिलकियत, श्री बी. जी. खेर और सरकार, भारत के बच्चे और बी. सी. जी. का टीका, एक आदर्श गवर्नर—सुन्दरलाल; अन्ध विश्वास का अनर्थ—सत्यदेव विद्यालंकार; गोआ की आज़ादी का सवाल—वि. ना. पांडे.

ونوبا جی اور زمین کی ملکیت، شری بی. جی. کھیر اور سرکار، بھارت کے بچے اور بی. سی. جی کا ٹیکه، ایک آدرش گورنر—سندر لال؛ اندھ وشواس کا انرتھ—ستیه دیو ودیالنکار؛ گوآ کی آزادی کا سوال—وی. نا. پانڈے .

सूचना

इस अंक का सफ़ा नम्बर 67 से लेकर 98 तक ग़लत हो गया है. वह असल में 77 से लेकर 108 तक होना चाहिये. पाठक समझकर दुरुस्त कर लें. इस ग़लती के लिये हम क्षमा चाहते हैं—एडीटर.

سوچنا

اس انک کا صفحه نمبر 67 سے لیکر 98 تک غلط هوگیا هے . وه اصل میں 77 سے لیکر 108 تک هونا چاهئے . پاٹھک سمجھکر درست کرلیں . اس غلطی کے لئے هم چھما چاهتے هیں—ایڈیٹر .

तालीम का चौथा 'आर'

डाक्टर भगवान दास

पहले के एक लेख में हम आजकल की पच्छमी सभ्यता की गिरावट की चर्चा कर चुके हैं. हम दिखा चुके हैं कि धन, राजनीति, अर्थशास्त्र, घरेलू जीवन, तालीम, कला और मनोरंजन सब में आज हम तेज़ी के साथ बरबादी के गड्ढे की तरफ़ बढ़े चले जा रहे हैं. जो बातें हमारे लिए सब से आवश्यक और हमारे भले की हैं उन्हें हम अव्यावहारिक यानी ग़ैर अमली समझ बैठे हैं और जो हमें मिटाने वाली हैं उन्हें हम व्यावहारिक यानी अमली समझते हैं.

इस हालत की सबसे बड़ी ज़िम्मेवारी हमारे साइंसदानों और अध्यापकों पर है. इस ज़माने के ये ब्राम्हण अपने कर्तव्य को भूलकर दुनिया की हालत को ठीक करने की कोशिश करने के बजाय उसे और बिगाड़ने में मदद देते हैं. उन्होंने अपने आप को शैतान और शैतान के एजंटों के हाथ बेच रक्खा है. नतीजा यह है कि हमारा यह उसूल बन गया है कि आज तो खाओ पीओ और गुलछर्रें उड़ाओ, यानी जो थोड़े से लोग भी ऐसा कर सकें, और कल की कल देखी जायगी! आज की पीढ़ी कल की पीढ़ी के लिये अपने सुख चैन में कमी क्यों करे? अगली पीढ़ी के लिए धन संपत्ति की जगह हम भारी भारी क़र्ज़े क्यों न छोड़ जाँय! यही आजकल के जीवन का फ़लसफ़ा है. यही हमारे चारों तरफ़ की नैतिक हवा है. हमारी राजनीति, अर्थनीति और घरेलू जीवन सब इसी के रंग में रंगे हुए हैं. इस पाप और पागलपन का नाम ही हमने सभ्यता यानी तहज़ीब रख रखा है. इसी को हम उन्नति कहते हैं. कम से कम वे लोगों की उन्नति इसी में समझते हैं जिनके हाथों में आज दुनिया की सत्ता है, यानी जिनके हाथों में धन की थैली और तलवार है.

इसमें भी शक नहीं कि जहाँ तहाँ और सब जगह इसकी प्रतिक्रिया यानी नतीजे दिखाई देने लगे हैं और यह प्रतिक्रिया भी तेज़ी से बढ़ती जा रही है इस प्रतिक्रिया ने सारी दुनिया को हिला दिया है. सारी दुनिया बेचैन है. रूस में बहुत बड़ा इनक़लाब हो चुका है. वह इनक़लाब हर तरह भले के लिए ही है या हर तरह बुरे के लिए या कुछ भले के लिए और कुछ बुरे के लिए, यह कह सकना भी हर किसी के लिए आसान नहीं है. क्रान्ति यानी इनक़लाबी हर चीज़ की हमेशा उलटा असर लाती है. लेकिन

تعلیم کا چوتھا 'آر'

ڈاکٹر بھگوان داس

پہلے کے ایک لیکھ میں ہم آجکل کی پچھمی سبھیتا کی گراوٹ کی چرچا کرچکے ہیں . ہم دکھا چکے ہیں کہ دھن' راج نیتی' ارتھ شاستر' گھریلو جیون' تعلیم' کلا' اور منورنجن سب میں آج ہم تیزی کے ساتھ بربادی کے گڑھے کی طرف بڑھے چلے جارہے ہیں . جو باتیں ہمارے لئے سب سے آوشیک اور ہمارے بھلے کی ہیں انہیں ہم اَویوہارک یعنی غیر عملی سمجھ بیٹھے ہیں اور جو ہمیں مٹانے والی ہیں انہیں ہم ویوہارک یعنی عملی سمجھتے ہیں .

اس حالت کی سب سے بڑی ذمہ واری ہمارے سائنسدانوں اور ادھیاپکوں پر ہے . اس زمانے کے یہ براھمن اپنے کرتویہ کو بھول کر دنیا کی حالت کو ٹھیک کرنے کی کوشش کرنے کے بجائے اسے اور بگاڑنے میں مدد دیتے ہیں . انہوں نے اپنے آپ کو شیطان اور شیطان کے ایجنٹوں کے ہاتھ بیچ رکھا ہے . نتیجہ یہ ہے کہ ہمارا یہ اصول بن گیا ہے کہ آج تو کھاؤ پیو اور گلچھرے اڑاؤ' یعنی جو تھوڑے سے لوگ بھی ایسا کرسکیں کریں' اور کل کی کل دیکھی جائیگی ! آج کی پیڑھی کل کی پیڑھی کے لئے اپنے سکھ چین میں کمی کیوں کرے ؟ اگلی پیڑھی کے لئے دھن سمپتی کی جگہ ہم بھاری بھاری قرضے کیوں نہ چھوڑ جائیں ! یہی آجکل کے جیون کا فلسفہ ہے . یہی ہمارے چاروں طرف کی نیتک ہوا ہے . ہماری راج نیتی' ارتھ نیتی' اور گھریلو جیون سب اِسی کے رنگ میں رنگے ہوئے ہیں . اِس پاپ اور پاگل پن کا نام ہی ہم نے سبھیتا یعنی تہذیب رکھ رکھا ہے . اسی کو ہم اُنتی کہتے ہیں . کم سے کم وہ لوگ اپنی اُنتی اسی میں سمجھتے ہیں جن کے ہاتھوں میں آج دنیا کی ستا ہے' یعنی جن کے ہاتھوں میں دھن کی تھیلی اور تلوار ہے .

اس میں بھی شک نہیں کہ جہاں تہاں اور سب جگہ اس کی پرتی کریا یعنی نتیجے دکھائی دینے لگے ہیں اور یہ پرتی کریا بھی تیزی سے بڑھتی جارہی ہے . اس پرتی کریا نے ساری دنیا کو ہلا دیا ہے . ساری دنیا بے چین ہے . روس میں بہت بڑا انقلاب ہوچکا ہے . وہ انقلاب ہر طرح بھلے کے لئے ہی ہے یا ہر طرح برے کے لئے یا کچھ بھلے کے لئے اور کچھ برے کے لئے' یہ کہ سکنا بھی ہر کسی کے لئے آسان نہیں ہے . اتی یعنی زیادتی ہر چیز کی ہمیشہ اُلٹا اثر لاتی ہے لیکن

[illegible] सभ्यता की यह प्रतिक्रिया बढ़ती और फैलती जा रही है. यह डर भी हो सकता है कि इस प्रतिक्रिया के साथ साथ मानव समाज एक मुसीबत से निकलकर दूसरी मुसीबत में आ पड़े. राजाओं और बादशाहों की तानाशाही और उनके जुल्मों से निकलकर हम सरदारों, सामंतों और फौजी नेताओं के शासन में आए. वहाँ से निकलकर दुनिया पूँजीवाद, पूँजीपतियों और धनलोभी स्वार्थी लोगों के हाथों में गई. इसकी कुदरती प्रतिक्रिया हुई सोशलिज्म यानी समाजवाद और कम्यूनिज्म यानी साम्यवाद. यह समाजवाद यदि सच्चा समाजवाद न हुआ तो डर है कि हम फिर से सबसे चालाक और सब से चलते हुए लोगों या नेताओं के चक्कर में पड़कर जिसकी लाठी उसकी भैंस के दलदल में फँस जावें और इतिहास का पुराना शैतानी चक्कर फिरसे शुरू हो जावे.

कोई नहीं चाहता कि ऐसा हो. पर इसके लिए हमें सावधान रहने की जरूरत है. हम इस खतरे से आसानी से बच सकते हैं अगर हमारे साइंसदां और हमारे बच्चों को तालीम देने वाले ईमानदारी के साथ अपने फ़र्ज़ को पूरा करें. उनमें साइंस यानी दिमाग़ी जानकारी और दीन धर्म यानी नेकी और सबके भले की इच्छा दोनों साथ साथ होनी चाहिए.

हजारों बरस पहले मानव जाति एक तरह के कुदरती कम्यूनिज्म यानी साम्यवाद का जीवन बिताती थी. आदमी गिरोहों में रहते थे. सब संपत्ति सब की होती थी. किसी की कोई अलग संपत्ति न थी. यह हालत हमारी सभ्यता से पहले की हालत थी. इससे निकलकर हम दर्जे बदर्जे आजकल के हद दर्जे के व्यक्तिवाद यानी नफ़्सा नफ़्सी में पहुँचे. सब अलग अलग, सबमें एक दूसरे के साथ होड़, एक दूसरे से मुकाबला और टक्करें, हरेक में खुदी का बोलबाला, फिर वह खुदी चाहे व्यक्तिगत रूप ले चाहे राष्ट्रीय. इस हालत से निकलकर हमें सोच समझ कर पूरी कोशिश के साथ एक ऊँचे ढंगकी मिली जुली जिंदगी, एक अच्छे सहयोग और समाजवाद की तरफ बढ़ना है. हमारा यह नया समाजवाद एक साइंसी योजना के साथ बनना चाहिए. यह खिलाफ़ कुदरत जबरदस्ती का और मशीनी ग़ैर टिकाऊ साम्यवाद न हो जो हम पर बाहर से लाद दिया गया हो. हमारा यह समाजवाद मानव प्रकृति के अटल नियमों और मानव जीवन के टिकाऊ आदर्शों के अनुसार होना चाहिए. हम पहले भी इसकी चर्चा कर चुके हैं. यह ठीक है कि आदमी आदमी सब बराबर हैं. यह भी ठीक है कि सब को बराबर के मौक़े मिलने चाहिएं. पर यह भी ठीक है कि आदमियों के अलग अलग स्वभाव,

بھیانک سبھیتا کی یہ پرتی‌کریا بڑھتی اور پھیلتی جارہی ہے. یہ ڈر بھی ہوسکتا ہے کہ اس پرتی‌کریا کے ساتھ ساتھ مانو سماج ایک مصیبت سے نکل‌کر دوسری مصیبت میں جا پڑے. راجاؤں اور بادشاھوں کی تانا شاھی اور اُن کے ظلموں سے نکل‌کر ھم سرداروں' سامنتوں اور فوجی نیتاؤں کے شاسن میں آئے. وھاں سے نکل‌کر دنیا پونجی‌واد' پونجی پتیوں اور دھن لوبھی سوارتھی لوگوں کے ھاتھوں میں گئی. اِس کی قدرتی پرتی‌کریا ھوئی سوشلزم یعنی سماج‌واد اور کمیونزم یعنی سامیہ‌واد. یہ سماج‌واد یدی سچا سماج‌واد نہ ھوا تو ڈر ھے کہ ھم پھر سے سب سے چالاک اور سب سے چلتے ھوئے لوگوں یا نیتاؤں کے چکر میں پڑ کر جس کی لاٹھی اُس کی بھینس کے دلدل میں پھنس جاویں اور اتیہاس کا پرانا شیطانی چکر پھر سے شروع ھو جاوے.

کوئی‌نہیں چاھتا کہ ایسا ھو. پر اس کے لئے ھمیں ساودھان رھنے کی ضرورت ھے. ھم اس خطرے سے آسانی سے بچ سکتے ھیں اگر ھمارے سائنسداں اور ھمارے بچوں کو تعلیم دینے والے ایمانداری کے ساتھ اپنے فرض کو پورا کریں. اُن میں سائنس یعنی دماغی جانکاری اور دین دھرم یعنی نیکی اور سب کے بھلے کی اِچھا دونوں ساتھ ساتھ ھونی چاھئیں.

ھزاروں برس پہلے مانو جاتی ایک طرح کے قدرتی کمیونزم یعنی سامیہ‌واد کا جیون بتاتی تھی. آدمی گروھوں میں رھتے تھے. سب سمپتی سب کی ھوتی تھی. کسی کی کوئی الگ سمپتی نہ تھی. یہ حالت ھماری سبھیتا سے پہلے کی حالت تھی. اس سے نکل‌کر ھم درجے بدرجے آجکل کے حد درجے کے ویکتی‌واد یعنی نفسا نفسی میں پہونچے. سب الگ الگ' سب میں ایک دوسرے کے ساتھ ھوڑ' ایک دوسرے سے مقابلہ اور ٹکریں' ھر ایک میں خودی کا بول بالا' پھر وہ خودی چاھے ویکتی‌گت روپ لے چاھے راشٹریہ. اس حالت سے نکل‌کر ھمیں سوچ سمجھکر پوری کوشش کے ساتھ ایک اُونچے ڈھنگ کی ملی جلی زندگی' ایک اچھے سہیوگ اور سماج‌واد کی طرف بڑھنا ھے. ھمارا یہ نیا سماج‌واد ایک سائنسی یوجنا کے ساتھ بننا چاھئے. یہ خلاف قدرت زبردستی کا اور مشینی غیر ٹکاؤ سامیہ‌واد نہ ھو جو ھم پر باھر سے لاد دیا گیا ھو. ھمارا یہ سماج‌واد مانو پرکرتی کے اٹل نیموں اور مانو جیون کے ٹکاؤ آدرشوں کے انوسار ھونا چاھئے. ھم پہلے بھی اس کی چرچا کرچکے ھیں. یہ ٹھیک ھے کہ آدمی آدمی سب برابر ھیں. یہ بھی ٹھیک ھے کہ سب کو برابر کے موقع ملنے چاھئیں. پر یہ بھی ٹھیک ھے کہ آدمیوں کے الگ الگ سبھاؤ'

अलग अलग वृत्तियाँ और अलग अलग क़ाबलियतें होती हैं. उन्हीं के अनुसार उनके अलग अलग काम होते हैं. इन अलग अलग स्वभावों, वृत्तियों और क़ाबलियतों को समझकर और सब को पूरा मौक़ा देकर ही सच्चा समाज और सच्चा सोशलिज़्म यानी समाजवाद बन सकता है.

मशहूर योरपीयन विद्वान जे. ई. कारपेंटर ने अपनी किताब 'दि प्लेस आफ़ क्रिश्चियानिटी अमंग दि रिलिजन्स आफ़ दि वर्ल्ड' में लिखा है—

"व्यापार का मक़सद यह है कि धरती की सब पैदावार को इस तरह से संगठित किया जावे कि सारे मानव समाज की सब ज़रूरतें पूरी हो सकें. साइंस का मक़सद यह है कि सब चीज़ों की सच्ची सच्ची जानकारी सब में फैल जावे. राजनीति का मक़सद यह है कि सब देश न्याय और शांति के साथ मिलकर प्रेम से रह सकें, और सबकी बराबर उन्नति हो. इसी तरह धर्म का मक़सद यह है कि सबके अंदर एक सच्चा विश्वास हो."

कारपेंटर साहब की ऊपर लिखी बात में हम यह और जोड़ना चाहेंगे :—"मज़दूरी और मज़दूरों का मक़सद यह है कि ऊपर के सब मक़सदों को पूरा करने के लिए जो सहयोग और मदद ज़रूरी हो वह दें." और यह कि—"यह सब मक़सद अलग अलग तभी पूरे हो सकते हैं जब मनुष्य समाज में चार तरह के आदमी यानी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, यानी आलिम, आमिल, ताजिर और मज़दूर मिलकर अपनी अपनी तबियतों और अपनी अपनी क़ाबलियतों के अनुसार अपना अपना फ़र्ज़ पूरा करें और इस तरह सारे समाज को आगे ले जाएँ." इसका हिन्दुओं की बिलकुल ग़लत जनम की जात पात से कोई सम्बन्ध नहीं. यह चार तरह के आदमी यानी एक वह जो साइंस की खोजों और पढ़ने पढ़ाने का शौक़ रखते हैं, दूसरे वह जो इंतज़ाम और हुकूमत की क़ाबलियत रखते हैं, तीसरे वह जो धन पैदा करने और कमाने में ज़्यादा होशियार हैं और चौथे वह जो मज़दूरी और सबकी मदद ही कर सकते हैं, यह चार तरह के आदमी क़ुदरती तौर से हर देश के अंदर होते हैं. इसके लिए हर बच्चे की तबियत और उसकी योग्यता को समझना और उसके अनुसार उसे समाज सेवा का मौक़ा देना यही सच्चे समाज संगठन और सच्चे समाजवाद का तरीक़ा है. कारपेंटर साहब की बात में हम यह भी जोड़ना चाहते हैं कि—"विश्वास और ज्ञान यानी ईमान और इल्म साथ साथ चलने चाहियें यह दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. यह दोनों अनंत यानी लामहदूद शान के ऊपर क़ायम हैं और उसी से निकले हैं जो इस अंत वाली यानी महदूद दुनिया के सारे इल्मों को अपने अंदर लिए हुए, सँभाले हुए और मिलाए हुए है."

الگ الگ طبیعتیں اور الگ الگ قابلیتیں ہوتی ہیں۔ انہیں کے انوسار ان کے الگ الگ کام ہوتے ہیں۔ ان الگ الگ سبھاؤں، طبیعتوں اور قابلیتوں کو سمجھکر اور سب کو پورا موقع دیکر ہی سچا سماج اور سچا سوشلزم یعنی سماجواد بن سکتا ہے۔

مشہور یورپین ودوان جے۔ ای۔ کارپینٹر نے اپنی کتاب "دی پلیس آف کرشچیانٹی ایمنگ دی ریلیجنس آف دی ورلڈ" میں لکھا ہے—

"ویاپار کا مقصد یہ ہے کہ دھرتی کی سب پیداوار کو اس طرح سے سنگٹھت کیا جاوے کہ سارے مانو سماج کی سب ضرورتیں پوری ہوسکیں۔ سائنس کا مقصد یہ ہے کہ سب چیزوں کی سچی سچی جانکاری سب میں پھیل جاوے۔ راج نیتی کا مقصد یہ ہے کہ سب دیش نیائے اور شانتی کے ساتھ مل کر پریم سے رہ سکیں، اور سب کی برابر اُنتی ہو۔ اسی طرح دھرم کا مقصد یہ ہے کہ سب کے اندر ایک سچا وشواس ہو۔"

کارپینٹر صاحب کی اوپر لکھی بات میں ہم یہ اور جوڑنا چاہیں گے:—"مزدوری اور مزدوروں کا مقصد یہ ہے کہ اوپر کے سب مقصدوں کو پورا کرنے کے لئے جو سہیوگ اور مدد ضروری ہو وہ دیں۔" اور یہ کہ—"یہ سب مقصد الگ الگ تب ہی پورے ہوسکتے ہیں جب منشیہ سماج میں چار طرح کے آدمی یعنی براہمن، چھتریہ، ویش اور شودر یعنی عالم، عامل، تاجر اور مزدور مل کر اپنی اپنی طبیعتوں اور اپنی اپنی قابلیتوں کے انوسار اپنا اپنا فرض پورا کریں اور اس طرح سارے سماج کو آگے لے جائیں۔" اس کا ہندوؤں کی بالکل غلط جنم کی جات پات سے کوئی سمبندھ نہیں۔ یہ چار طرح کے آدمی یعنی ایک وہ جو سائنس کی کھوجوں اور پڑھنے پڑھانے کا شوق رکھتے ہیں، دوسرے وہ جو انتظام اور حکومت کی قابلیت رکھتے ہیں، تیسرے وہ جو دھن پیدا کرنے اور کمانے میں زیادہ ہوشیار ہیں اور چوتھے وہ جو مزدوری اور سب کی مدد ہی کرسکتے ہیں، یہ چار طرح کے آدمی قدرتی طور سے ہر دیش کے اندر ہوتے ہیں۔ اس کے لئے ہر بچے کی طبیعت اور اس کی یوگتا کو سمجھنا اور اس کے انوسار اسے سماج سیوا کا موقع دینا یہی سچے سماج سنگٹھن اور سچے سماجواد کا طریقہ ہے۔ کارپینٹر صاحب کی بات میں ہم یہ بھی جوڑنا چاہتے ہیں کہ—"وشواس اور گیان یعنی ایمان اور علم ساتھ ساتھ چلنے چاہئیں۔ یہ دونوں ایک ہی سکے کے دو پہلو ہیں۔ یہ دونوں اننت یعنی لامحدود شان کے اوپر قائم ہیں اور اسی سے نکلے ہیں جو اس انت والی یعنی محدود دنیا کے سارے علموں کو اپنے اندر لئے ہوئے، سنبھالے ہوئے اور ملائے ہوئے ہے۔"

आजकल की हमारी, यानी दुनिया के अधिकतर सभ्य कहलाने वाले देशों की, सारी तालीम बनावटी, बे असर, निकम्मी, बल्कि साफ़ नुक़सान करने वाली, और हद दर्जे खर्चीली और मँहगी है. हमारे बच्चों के अंदर यह ग़लत आदर्श, ग़लत विचार और जीवन के ग़लत मक़सद भर देती है. इन चीज़ों के बोझ के नीचे जो जीवन के केवल साधन हैं यह जीवन के असली मक़सद को ही दबाकर ख़तम कर देती है. दिखावटी और बिलकुल तुच्छ बातों के बोझ से यह जीवन के असली उसूलों को दम घोंटकर मार डालती है. इसे बड़ी बड़ी लागत की इमारतें चाहिए, बड़ी बड़ी तनख्वाहें चाहिए, बेहद मँहगा और तरह तरह का साज़ सामान और औज़ार चाहिए, वह चीज़ें चाहिएँ जो कम से कम एशियाई देशों की बिसात से कोई सम्बन्ध ही नहीं रखतीं. इन सब बातों के होते हुए आजकल की यह तालीम प्रकृति यानी क़ुदरत से हमें बिलकुल दूर फेंक देती है, यहाँ तक कि क़ुदरत के अध्ययन यानी मुताले में भी इसने एक दर्दनाक बनावटीपन पैदा कर रखा है. इससे अधिकतर केवल वे लोग पैदा होते हैं जो 'लरनेड प्रोफ़ेशन्स' यानी विद्या सम्बन्धी पेशों के लोग कहलाते हैं. यह तालीम न बच्चों की अलग अलग तबियतों और अलग अलग क़ाबलियतों का पता लगा सकती है, न उसे परख सकती है और न उसे बढ़ने का मौक़ा दे सकती है. इस तालीम में सब धान बाईस पसेरी के निर्दयी उसूल पर बच्चों की आत्माएँ कुचल डाली जाती हैं. इस बात की सख़्त ज़रूरत है कि आजकल की इस तालीम की जगह एक अधिक क़ुदरती, अधिक काम की और अधिक सस्ती तालीम बच्चों को दी जावे जो हर लड़के और लड़की को उसके लिए सब से अच्छे और सब से दिल पसंद काम के क़ाबिल बना दे. वह तालीम जो बच्चों को जीवन के ठीक ठीक आदर्श बतावे और हमारी सारी मानव सभ्यता के इख़लाक़ी और रूहानी वातावरण को बदल दे, इससे पहले कि हम बरबाद हों.

पच्छिम के बड़े बड़े विद्वानों का ध्यान इन बातों की तरफ़ जाने लगा है. एक बहुत बड़े विद्वान एडवर्ड सेगुइन, जिनका सारा जीवन तालीम के कामों में ही बीता, लिखते हैं :—"अगर हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी की मामूली चीज़ों का अपने हाथों से ठीक ठीक उपयोग कर सकें, तो हमारी तालीम पर उसका बहुत बड़ा असर पड़ सकता है. इन मामलों में हम तालीम के तरियों और साधनों को तो बहुत अच्छी तरह याद रखते हैं लेकिन जिन उसूलों पर उन तरियों और साधनों से काम लेना चाहिए उन उसूलों को भूल जाते हैं. असलियत यह है कि वे उसूल ही सब से ज़्यादा ज़रूरी हैं. इन उसूलों को भूल जाना या उनकी तरफ़ से बेपरवाही करना सारी तालीम को बिगाड़ देता है. यह उसूल ही तालीम का फ़लसफ़ा हैं."

آجکل کی ہماری یعنی دنیا کے ادھکتر سبھیہ کہلانے والے دیشوں کی ساری تعلیم بناوٹی، بے اثر، نکمی، بلکہ صاف نقصان کرنے والی اور حد درجہ خرچیلی اور مہنگی ہے۔ ہمارے بچوں کے اندر یہ غلط آدرش، غلط وچار اور جیون کے غلط مقصد بھر دیتی ہے۔ ان چیزوں کے بوجھ کے نیچے جو جیون کے کیول سادھن ہیں یہ جیون کے اصلی مقصد کو ہی دباکر ختم کر دیتی ہے۔ دکھاوٹی اور بالکل تچھ باتوں کے بوجھ سے یہ جیون کے اصلی اصولوں کو دم گھونٹ کر مار ڈالتی ہے۔ اسے بڑی بڑی لاگت کی عمارتیں چاہئیں، بڑی بڑی تنخواہیں چاہئیں، بے حد مہنگا اور طرح طرح کا سامان اور اوزار چاہئیں، وہ چیزیں چاہئیں جو کم سے کم ایشیائی دیشوں کی بساط سے کوئی سمبندھ ہی نہیں رکھتیں۔ ان سب باتوں کے ہوتے ہوئے آجکل کی یہ تعلیم پرکرتی یعنی قدرت سے ہمیں بالکل دور پھینک دیتی ہے، یہاں تک کہ قدرت کے ادھین یعنی مطالعہ میں بھی اس نے ایک دردناک بناوٹی پن پیدا کر رکھا ہے۔ اس سے ادھکتر کیول وہ لوگ پیدا ہوتے ہیں جو 'لرنڈ پروفیشنز' یعنی ودیا سمبندھی پیشوں کے لوگ کہلاتے ہیں۔ یہ تعلیم نہ بچوں کی الگ الگ طبیعتوں اور الگ الگ قابلیتوں کا پتہ لگا سکتی ہے، نہ اسے پرکھ سکتی ہے اور نہ اسے بڑھنے کا موقع دے سکتی ہے۔ اس تعلیم میں سب دھان بائیس پسیری کے نردئی اصول پر بچوں کی آتمائیں کچل ڈالی جاتی ہیں۔ اس بات کی سخت ضرورت ہے کہ آجکل کی اس تعلیم کی جگہ ایک ادھک قدرتی، ادھک کام کی اور ادھک سستی تعلیم بچوں کو دی جاوے جو ہر لڑکے اور لڑکی کو اس کے لئے سب سے اچھے اور سب سے دل پسند کام کے قابل بنا دے۔ وہ تعلیم جو بچوں کو جیون کے ٹھیک ٹھیک آدرش بتاوے اور ہماری ساری مانو سبھیتا کے اخلاقی اور روحانی واتاورن کو بدل دے، اس سے پہلے کہ ہم برباد ہوں۔

پچھم کے بڑے بڑے ودوانوں کا دھیان ان باتوں کی طرف جانے لگا ہے۔ ایک بہت بڑے ودوان ایڈورڈ سیگوئن، جنکا سارا جیون تعلیم کے کاموں میں ہی بیتا لکھتے ہیں:— "اگر ہم اپنی روز مرہ کی زندگی کی معمولی چیزوں کا اپنے ہاتھوں سے ٹھیک ٹھیک اپیوگ کرسکیں تو ہماری تعلیم پر اس کا بہت بڑا اثر پڑسکتا ہے۔ ان معاملوں میں ہم تعلیم کے ذریعوں اور سادھنوں کو تو بہت اچھی طرح یاد رکھتے ہیں لیکن جن اصولوں پر ان ذریعوں اور سادھنوں سے کام لینا چاہئے ان اصولوں کو بھول جاتے ہیں۔ اصلیت یہ ہے کہ وے اصول ہی سب سے زیادہ ضروری ہیں۔ ان اصولوں کو بھول جانا یا ان کی طرف سے بے پرواہی کرنا ساری تعلیم کو بگاڑ دیتا ہے۔ یہ اصول ہی تعلیم کا فلسفہ ہیں۔"

आजकल के तालीम देनेवाले तालीम के इन उसूलों को या इन फ़लसफ़े को इसलिए अपनी निगाह से ओझल कर देते हैं कि या तो उन्हें समझने की उनमें दिमाग़ी क़ाब-लियत नहीं होती और या क़ाबलियत होते हुए भी ख़ुदग़रज़ी उन्हें अंधा कर देती है. इसी लेखक ने आगे चलकर लिखा है :—"सबसे बड़ी शक्ति जो बच्चों को समाज के अच्छे और काम के अंग बना सकती है प्रेम है. जिस तरह हम बच्चों की देखने सुनने आदि की शक्तियों को बढ़ाते हैं उसी तरह हमें उनके अंदर प्रेम की शक्ति बढ़ानी चाहिए. इसके लिए नए औज़ारों या नए अध्यापकों की ज़रूरत नहीं है. ज़रूरत केवल इतनी है कि हम बच्चों के दिलों पर ठीक असर डालना और उन्हें खिलने का ठीक मौक़ा देना सीखें. बच्चे के दिल में यह बात बैठ जानी चाहिए कि दूसरे मुझसे प्यार करते हैं और इसके बदले में बच्चे में यह उमंग जागनी चाहिए कि वह दूसरों से प्यार करे. यही हमारे तालीम की शुरुआत थी और यही उसका आख़िरी मक़सद है. साइंस, साहित्य, डाक्टरी, फ़िलोसोफ़ी सब हमारे बच्चों को कुछ न कुछ फ़ायदा पहुँचा सकती हैं, लेकिन उन्हें मानव समाज का उपयोगी अंग केवल प्रेम ही बना सकता है. इसलिए बच्चों के सच्चे रक्षक और सच्चे बचाने वाले वही हैं जो बच्चों से प्यार करते हैं." यह प्रेम और इसके साथ मनुष्य स्वभाव के कुछ उसूल ही सच्चे सोशलिज़्म यानी समाजवाद की बुनियाद हो सकते हैं. इसलिए दुनिया के सब से बड़े अध्यापक वही हैं जो मनुष्य जाति से सब से अधिक प्रेम करते हैं, यानी उन बड़े बड़े धर्मों के क़ायम करने वाले जो धर्म लोगों को एक दूसरे के साथ और सब को एक ईश्वर अल्लाह के साथ बाँधते हैं और जिन्होंने अपने अपने समय में नई नई सभ्यताओं को जन्म दिया.

इमर्सन ने कहा है :—"सब प्रेम के हवाले कर दो. उस उस पर पूरा भरोसा करो . प्रेम ही ईश्वर है. प्रेम के लिए आसमान के सब दरवाज़े खुले हुए हैं."

सभ्यता या तहज़ीब तब ही सभ्यता या तहज़ीब कहला सकती है जब उसके अन्दर सबके भले की इच्छा सब तरफ़ समाई हुई हो. इतना ही नहीं, हरेक के अंदर हर दूसरे के साथ प्रेम और हमदर्दी हो और उसी के अनुसार अमल हो. यह अमल ठीक तभी हो सकता है जब हम में अपने ऊपर क़ाबू हो, खान पान और सब चीज़ों में एक बीच का रास्ता हो, हिम्मत हो, बरदाश्त हो और अपना अपना फ़र्ज़ पूरा करने की ज़बरदस्त लगन हो. वही सच्ची सभ्यता कहलाने की हक़दार है जिसमें भोग विलास, घमंड, नफ़रत, लालच, हसद, स्वार्थ और डर इन सबको ऊपर लिखे गुणों ने पूरी तरह अपने क़ाबू में कर रक्खा हो. ज़बरदस्ती के साम्यवाद और ज़ालिमाना व्यक्तिवाद और निर्दय पूँजीवाद

آجکل کے تعلیم دینے والے تعلیم کے ان اصولوں کو یا اس فلسفہ کو اس لئے اپنی نگاہ سے اوجھل کر دیتے ہیں کہ یا تو انہیں سمجھنے کی ان میں دماغی قابلیت نہیں ہوتی اور یا قابلیت ہوتے ہوئے بھی خود غرضی انہیں اندھا کر دیتی ہے. اسی لیکھک نے آگے چل کر لکھا ہے:—"سب سے بڑی شکتی جو بچوں کو سماج کے اچھے اور کام کے انگ بنا سکتی ہے پریم ہے. جس طرح ہم بچوں کی دیکھنے سننے آدی کی شکتیوں کو بڑھاتے ہیں اسی طرح ہمیں اُن کے اندر پریم کی شکتی بڑھانی چاہئے . اس کے لئے نئے اوزاروں یا نئے ادھیاپکوں کی ضرورت نہیں ہے . ضرورت کیول اتنی ہے کہ ہم بچوں کے دلوں پر ٹھیک اثر ڈالنا اور انہیں کھلنے کا ٹھیک موقع دینا سیکھیں . بچے کے دل میں یہ بات بیٹھ جانی چاہئے کہ دوسرے مجھ سے پیار کرتے ہیں اور اس کے بدلے میں بچے میں یہ اُمنگ جاگنی چاہئے کہ وہ دوسروں سے پیار کرے . یہی ہماری تعلیم کی شروعات تھی اور یہی اس کا آخری مقصد ہے . سائنس، ساہتیہ، ڈاکٹری . فلوسفی سب ہمارے بچوں کو کچھ نہ کچھ فائدہ پہنچا سکتی ہیں، لیکن اُنہیں مانو سماج کا اُپیوگی انگ کیول پریم ہی بنا سکتا ہے . اس لئے بچوں کی سچے رکشک اور سچے بچانے والے وہی ہیں جو بچوں سے پیار کرتے ہیں." یہ پریم اور اس کے ساتھ منش سبھاؤ کے کچھ اصول ہی سچے سوشلزم یعنی سماج واد کی بنیاد ہو سکتے ہیں. اس لئے دنیا کے سب سے بڑے ادھیاپک وہی ہیں جو منشیہ جاتی سے سب سے ادھک پریم کرتے ہیں، یعنی ان بڑے بڑے دھرموں کے قائم کرنے والے جو دھرم لوگوں کو ایک دوسرے کے ساتھ اور سب کو ایک ایشور اللہ کے ساتھ باندھتے ہیں اور جنہوں نے اپنے اپنے سمے میں نئی نئی سبھیتاؤں کو جنم دیا .

اِمرسن نے کہا ہے:—"سب پریم کے حوالے کردو . اُس پر پورا بھروسہ کرو . پریم ہی ایشور ہے . پریم کے لئے آسمان کے سب دروازے کھلے ہوئے ہیں ."

سبھیتا یا تہذیب تب ہی سبھیتا یا تہذیب کہلا سکتی ہے جب اس کے اندر سب کے بھلے کی اِچھا سب طرف سمائی ہوئی ہو . اِتنا ہی نہیں، ہر ایک کے اندر ہر دوسرے کے ساتھ پریم اور ہمدردی ہو اور اُسی کے انوسار عمل ہو . یہ عمل ٹھیک تب ہی ہوسکتا ہے جب ہم میں اپنے اوپر قابو ہو، کھان پان اور سب چیزوں میں ایک بیچ کا راستہ ہو، ہمت ہو، برداشت ہو اور اپنا اپنا فرض پورا کرنے کی زبردست لگن ہو . وہی سچی سبھیتا کہلانے کی حقدار ہے جس میں بھوگ ولاس، گھمنڈ، نفرت، لالچ، حسد، سوارتھ اور ڈر اِن سب کو اوپر لکھے گنوں نے پوری طرح اپنے قابو میں کر رکھا ہو . زبردستی کے ساسیہ واد اور ظالمانہ ویکتی واد اور نردئی پونجی واد

और साम्राज्यवाद सैनिकवाद की जगह सच्चा समाजवाद मानव हृदय के अंदर छिपे गुणों की ही मदद से क़ायम हो सकता है.

आज दुनिया इस पूँजीवाद और सैनिकवाद के नीचे इसीलिए तड़प रही है क्योंकि हमारे समाज के अंदर ऊपर छिपे दुर्गुण इधर से उधर तक फैले हुए हैं. दुनिया की करोड़ों जनता इसीलिए आज पूँजीवाद, सैनिकवाद और साम्राज्यवाद की शिकार है. तेज़ से तेज़ चलने वाली लोहे और फ़ौलाद की मशीनें और चालाक से चालाक शासकों की योजनाएँ, बड़ी से बड़ी राजनीति या चिकने चिकने शब्द गढ़ने वाली कूटनीति, ऐसे ऐसे शब्द जिनके अर्थ रोज़ बदलते रहें, इन सब से दुनिया का दुख दूर नहीं हो सकता. हमारे दिलों के अंदर सच्ची धार्मिक भावना यानी एक दूसरे के साथ प्रेम, एक दूसरे के साथ हमदर्दी और एक दूसरे के भले की इच्छा होनी चाहिए. सच्चे समाजवाद की बुनियाद इसी नींव पर पड़ सकती है कि हम सबके अंदर एक ही जान, एक ही आत्मा को अनुभव करें. सबके अंदर एक आत्मा को देखना ही परमात्मा को देखना है.

जो अध्यापक यह चाहता है कि वह मानव समाज में इस तरह की सभ्यता के फैलाने में मदद दे सके उसके लिए ज़रूरी है कि पहले वह इस एकता को अपने अंदर अनुभव कर ले. इसी से उसके अंदर सब तरह के सच्चे विचार और सच्चे भाव पैदा होंगे. इसी के अनुसार वह बच्चों को तालीम देगा और बच्चों के दिलों में आत्मा की इस एकता के भाव को जगावेगा. इस तरह की तालीम से ही हमारी सभ्यता सच्ची समाजवादी सभ्यता हो सकती है. धार्मिक शिक्षा यानी मज़हबी तालीम का यही मतलब है. पंडे पुरोहितों और मुल्ला पादरियों के स्वार्थ और उनकी ग़लतियों के कारण आज बहुत से लोगों को धर्म या मज़हब के नाम से चिढ़ हो गई है. इसलिए हम ऐसी तालीम को आध्यात्मिक या रूहानी तालीम भी कह सकते हैं. अंग्रेज़ी तालीम की बुनियाद अक्सर लोग तीन आर बताते हैं [लिखना पढ़ना और हिसाब]. अगर हम अंग्रेज़ी शब्द रिलिजन को ठीक ठीक समझें तो रिलिजन का आर [R] तालीम का चौथा आर होना चाहिए और बाक़ी तीनों 'आरों' से वह कहीं ज़्यादा अहम और ज़रूरी है.

اور سامراجواد سینکواد کی جگہ سچا سماجواد مانو ہردے کے اندر چھپے گنوں کی ہی مدد سے قائم ہو سکتا ہے .

آج دنیا اس پونجی‌واد اور سینک‌واد کے نیچے اسی لئے تڑپ رہی ہے کیونکہ ہمارے سماج کے اندر اوپر لکے درگن اِدھر سے اُدھر تک پھیلے ہوئے ہیں . دنیا کی کروڑوں جنتا اسی لئے آج پونجی‌واد، سینک‌واد اور سامراجواد کی شکار ہے . تیز سے تیز چلنے والی لوہے اور فولاد کی مشینیں اور چالاک سے چالاک شاسکوں کی یوجنائیں، بڑی سے بڑی راج‌نیتی یا چکنے چکنے شبد گڑھنے والی کوٹ‌نیتی، ایسے ایسے شبد جن کے ارتھ روز بدلتے رہیں، ان سب سے دنیا کا دکھ دور نہیں ہو سکتا . ہمارے دلوں کے اندر سچی دھارمک بھاونا یعنی ایک دوسرے کے ساتھ پریم، ایک دوسرے کے ساتھ ہمدردی اور ایک دوسرے کے بھلے کی اِچھا ہونی چاہئے . سچے سماجواد کی بنیاد اسی چیز پر پڑ سکتی ہے کہ ہم سب کے اندر ایک ہی جان، ایک ہی آتما کو انوبھو کریں . سب کے اندر ایک آتما کو دیکھنا ہی پرماتما کو دیکھنا ہے .

جو ادھیاپک یہ چاہتا ہے کہ وہ مانو سماج میں اس طرح کی سبھیتا کے پھیلانے میں مدد دے سکے اُس کے لئے ضروری ہے کہ پہلے وہ اس ایکتا کو اپنے اندر انوبھو کر لے . اِسی سے اِس کے اندر سب طرح کے سچے وچار اور سچے بھاؤ پیدا ہونگے . اسی کے انوسار وہ بچوں کو تعلیم دیگا اور بچوں کے دلوں میں آتما کی اس ایکتا کے بھاؤ کو جگاویگا . اس طرح کی تعلیم سے ہی ہماری سبھیتا سچی سماجوادی سبھیتا ہوسکتی ہے . دھارمک شکشا یعنی مذھبی تعلیم کا یہی مطلب ہے . پنڈے پروہتوں اور ملا پادریوں کے سوارتھ اور ان کی غلطیوں کے کارن آج بہت سے لوگوں کو دھرم یا مذھب کے نام سے چڑھ ہوگئی ہے . اس لئے ہم ایسی تعلیم کو آدھیاتمک یا روحانی تعلیم بھی کہہ سکتے ہیں . انگریزی تعلیم کی بنیاد اکثر لوگ تین آر بتاتے ہیں (لکھنا، پڑھنا اور حساب) . اگر ہم انگریزی شبد ریلیجن کو ٹھیک ٹھیک سمجھیں تو ریلیجن کا آر (R) تعلیم کا چوتھا آر (R) ہونا چاہئے اور باقی تینوں 'آروں' سے یہ کہیں زیادہ اہم اور ضروری ہے .

मौर्यों के बाद ब्राह्मणों का ज़माना

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

184 ई० पूर्व में मौर्यों के ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र सुंग ने राजा बृहद्रथ को मार कर मौर्य सिंहासन पर क़ब्ज़ा कर लिया. पुष्यमित्र के सिंहासन पर बैठते ही ब्राह्मण दबदबे की ऐसी ज़बरदस्त लहर उठी जिसने सारे भारती समाज को दहला दिया. पुष्यमित्र पहला ब्राह्मण था जो कभी किसी राज सिंहासन पर बैठा और इसके बाद से ब्राह्मणों की गिनती भी शासक वर्ग में होने लगी. ऐतिहासिक उल्लेख मिलता है कि इस घटना की यादगार में पुष्यमित्र ने अश्वमेध यज्ञ का समारोह किया. इस यज्ञ के आयोजन से पुष्यमित्र का इरादा शायद वैदिक कर्मकाण्ड को फिर से चालू करना रहा होगा. 'मञ्जुश्री मूलकल्प' का बौद्ध लेखक लिखता है कि सिंहासन पर बैठने के बाद पुष्यमित्र ने बौद्ध मठों को गिरवा दिया, बौद्ध-स्मृति-चिन्हों को बरबाद करवा दिया और बड़े बड़े सच्चरित्र बौद्ध भिक्खुओं को क़त्ल करवा दिया.*

इस सम्बन्ध में ऐतिहासिक मतभेद है कि पुष्यमित्र की तरक़्क़ी कहाँ तक ब्राह्मणों के दबदबे का नतीजा था.❀ इसमें कोई सन्देह नहीं कि बौद्ध सत्ता के ख़िलाफ़ ब्राह्मणों की प्रतिक्रिया उस समय अपनी चरम सीमा पर पहुँची जब बलख़ के यूनानी राजा मेनान्दर ने भारत पर चढ़ाई करके साकेत (अवध) तक के प्रदेशों पर क़ब्ज़ा कर लिया. उस मनोवैज्ञानिक मौक़े से फ़ायदा उठाकर सारा ख़िमयाज़ा सम्राट् अशोक के उत्तराधिकारी के सर पर डाल दिया गया, जो, अपने महान पूर्वज के आदेश के अनुसार दुशमन को ताक़त से जीतने के मुक़ाबले में प्रेम से जीतने का क़ायल था.

सुंग सेनापति के नेतृत्व में ब्राह्मणों की इस प्रतिक्रिया को स्वर्गीय श्री जायसवाल ने रूढ़िवादी प्रतिक्रान्ति के नाम से पुकारा है.§ इस प्रतिक्रान्ति (Counter Revolution) की पूरी तसवीर हमें 'मानव धर्मशास्त्र' में मिलती है. इसी मानव धर्मशास्त्र को 'मनुस्मृति' कहा जाता है. श्री जायसवाल के अनुसार यह धर्मशास्त्र पुष्यमित्र के समय लिखा गया

موریوں کے بعد براھمنوں کا زمانہ

ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

184ع پورو میں موریوں کے براھمن سیناپتی پشیہ متر سونگ نے راجا برھدرتھ کو مارکر موریہ سنگھاسن پر قبضہ کرلیا . پشیہ متر کے سنگھاسن پر بیٹھتے ھی براھمن دبدبہ کی ایسی زبردست لہر اٹھی جس نے سارے بھارتی سماج کو دہلا دیا . پشیہ متر پہلا براھمن تھا جو کبھی کسی راج سنگھاسن پر بیٹھا اور اس کے بعد سے براھمنوں کی گنتی بھی شاسک ورن میں ھونے لگی . اِیتہاسک اُلیکھ ملتا ھے کہ اِس گھٹنا کی یادگار میں پشیہ متر نے اشومیدھ یگیہ کا سماروہ کیا . اِس یگیہ کے آیوجن سے پشیہ متر کا اِرادہ شاید ویدک کرم کانڈ کو پھر سے چالو کرنا رھا ھوگا . 'منجو شری مول کلپ' کا بودھ لیکھک لکھتا ھے کہ سنگھاسن پر بیٹھنے کے بعد پشیہ متر نے بودھ مٹھوں کو گروا دیا' بودھ اِسمرتی چنھوں کو برباد کروا دیا اور بڑے بڑے سچرتر بودھ بھکشوؤں کو قتل کروا دیا .*

اِس سمبندھ میں اِیتہاسک مت بھید ھے کہ پشیہ متر کی ترقی کہاں تک براھمنوں کے دبدبہ کا نتیجہ تھا . ❀اِس میں کوئی سندیہ نہیں کہ بودھ ستا کے خلاف براھمنوں کی پرتیکریا اُس سمے اپنی چرم سیما پر پہونچی جب بلخ کے یونانی راجہ میناندر نے بھارت پر چڑھائی کرکے ساکیت (اودھ) تک کے پردیشوں پر قبضہ کرلیا . اُس منوویگیانک موقع سے فایدہ اُٹھاکر سارا خمیازہ سمراٹ اشوک کے اُترادھیکاری کے سر پر ڈال دیا گیا' جو اپنے مہان پوروج کے آدیش کے انوسار دشمن کو طاقت سے جیتنے کے مقابلے میں پریم سے جیتنے کا قایل تھا .

سونگ سیناپتی کے نیترتو میں براھمنوں کی اِس پرتیکریا کو سورگیہ شری جیسوال نے روڑھی وادی پرتی کرانتی کے نام سے پکارا ھے. §اِس پرتی کرانتی (Counter Revolution) کی پوری تصویر ھمیں 'مانو دھرم شاستر' میں ملتی ھے . اِسی مانو دھرم شاستر کو 'منواسمرتی' کہا جاتا ھے . شری جیسوال کے انوسار یہ دھرم شاستر پشیہ متر کے سمے لکھا گیا

*—Jayaswal—"An Imperial History of India". p. 18.

❀—H. C. Rai Chaudhari—"Political History of Ancient India"

§—Jayaswal—"Manu and Jagnyavalkya.', pp, 40-41.

[illegible] अर्थशास्त्र की व्यवस्थाओं को देखते हुए पता चलता है कि [illegible] एक उद्देश्य पुष्यमित्र के विश्वासघात का [illegible] समर्थन भी था.§ 'नारद स्मृति' के अनुसार इसका [illegible] सुमति भार्गव नामक व्यक्ति था.❀ या कम से कम उसने पुरानी 'मनुस्मृति' में दकियानूसी नई व्यवस्थाएं शामिल कर दीं. यही एक कारण हो सकता है जिससे हमें मनुस्मृति के अन्दर अलग अलग व्यवस्थाओं में ज़बरदस्त विरोध का आभास होता है !

जो आदमी भी ध्यान से इस 'मानव धर्मशास्त्र' को पढ़ेगा उसे साफ़ साफ़ दिखाई दे जायगा कि इस धर्मशास्त्र ने कौटिल्य के अर्थशास्त्र और मौर्यों के शासन नियमों का बिलकुल ख़ात्मा कर दिया. इसके सफ़ों में नीचे के तीन वर्णों की तरफ़ नफ़रत भरी हुई है. शूद्रों के प्रति और दूसरे वर्णों के प्रति इसकी नफ़रत बिलकुल साफ़ है.† जायसवाल इस बात को मंज़ूर करते हैं कि इस मानव धर्मशास्त्र के अन्दर "राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक द्वेषभाव भरा हुआ है." हो सकता है कि इसीलिए इस धर्मशास्त्र को इतना मान और इतनी प्रतिष्ठा मिली. इतनी शीघ्रता के साथ जो यह मान लिया गया उसका सबब यह हो सकता है कि राजा ने इसे अपनी स्वीकृति दी और यह सुंग राज्य का माना हुआ व्यवस्था-शास्त्र हो गया.☫

मानव धर्मशास्त्र या मनुस्मृति की छानबीन करने पर उसमें आपको इस प्रकार की व्यवस्था मिलेगी कि किन हालतों में आप किस प्रकार के राजा को नष्ट कर सकते हैं (7-27,28,111) शायद पुष्यमित्र के विश्वासघात को जायज़ क़रार देने के लिये ही यह व्यवस्था हो. फिर यह शास्त्र शूद्रों के बिलकुल ख़िलाफ़ है. इसमें ब्राह्मणों को आदेश है कि वे शूद्र राजाओं के राज्य में न रहें (4-61) कोई शूद्र न्यायाधीश नहीं हो सकता (8-20). मौर्य ज़माने में शूद्रों के ख़िलाफ़ ऐसी कोई रुकावट न थी. इस शास्त्र के अनुसार जिस राज्य में बहुत बड़ी तादाद में पढ़े लिखे शूद्र रहते हैं और जहाँ द्विज नहीं रहते वहाँ अकाल और तरह तरह की बीमारियाँ हो जाती हैं और वह राज्य बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है (8-22). यह व्यवस्था साफ़ साफ़ मौर्य राज्य के विरुद्ध थी. इस शास्त्र के शुरू के श्लोकों में ब्राह्मणों को शूद्र स्त्रियों से विवाह की इजाज़त थी (3,12-13). लेकिन बाद के श्लोकों में यह इजाज़त वापस ले ली गई (3,14-19). इसमें लिखा है—"इतिहास और कथाओं में कहीं इस बात का ज़िक्र नहीं है कि ब्राह्मणों और क्षत्रियों ने आपत् काल

§—Ibid.

❀—Ibid also Jolly—p. 21.

†—Ibid—p. 199.

☫—Jayaswal, of. cit. pp. 40-41

اس دھرم شاستر کی ویوستھاؤں کو دیکھتے ہوئے پتہ چلتا ھے کہ اس کا ایک اُدیش پشیہ متر کے وشواس گھات کا ایک سمرتھن بھی تھا.§ 'ناردا سمرتی' کے انوسار اس کا رچئیتا بھارگو نامک ویکتی تھا ❀ یا کم سے کم اُس نے پرانی 'منوسمرتی' میں دقیانوسی نئی ویوستھائیں شامل کردیں. یہی ایک کارن ھوسکتا ھے جس سے ھمیں منوسمرتی کے اندر الگ الگ ویوستھاؤں میں زبردست ورودھ کا آبھاس ھوتا ھے !

جو آدمی بھی دھیان سے اِس مانو 'دھرم شاستر' کو پڑھیگا اُسے صاف صاف دکھائی دے جائیگا کہ اِس دھرم شاستر نے کوٹلیہ کے ارتھ شاستر اور موریوں کے شاسن نیموں کا بالکل خاتمہ کردیا. اِس کے صفحوں میں نیچے کے تین ورنوں کی طرف نفرت بھری ھوئی ھے. شودروں کے پرتی اور دوسرے ورنوں کے پرتی اِس کی نفرت بالکل صاف ھے.† جیسوال اِس بات کو منظور کرتے ھیں کہ اِس مانو دھرم شاستر کے اندر "راجنیتک' سماجک اور دھارمک دویش بھاؤ بھرا ھوا ھے." ھوسکتا ھے کہ اِسی لئے اِس دھرم شاستر کو اِتنا مان اور اِتنی پرتشٹھا ملی. اِتنی شیگھرتا کے ساتھ جو یہ مان لیا گیا اُس کا سبب یہ ھوسکتا ھے کہ راجہ نے اِسے اپنی سوئیکرتی دی اور یہ سونگ راجیہ کا مانا ھوا ویوستھا شاستر ھوگیا.☫

مانو دھرم شاستر یا منوسمرتی کی چھان بین کرنے پر اُس میں آپ کو اِس پرکار کی ویوستھا ملیگی کہ کن حالتوں میں آپ کس پرکار کے راجہ کو نشٹ کرسکتے ھیں (7-27,28,111). شاید پشیہ متر کے وشواس گھات کو جایز قرار دینے کے لئے ھی یہ ویوستھا ھو. پھر یہ شاستر شودروں کے بالکل خلاف ھے. اِس میں براھمنوں کو آدیش ھے کہ وے شودر راجاؤں کے راجیہ میں نہ رھیں (4-61). کوئی شودر نیایادھیش نہیں ھوسکتا (8-20). موریہ زمانے میں شودروں کے خلاف ایسی کوئی رکاوٹ نہ تھی. اِس شاستر کے انوسار جس راجیہ میں بہت بڑی تعداد میں پڑھے لکھے شودر رھتے ھیں اور جہاں دوِج نہیں رھتے وھاں اکال اور طرح طرح کی بیماریاں ھو جاتی ھیں اور وہ راجیہ بہت جلدی نشٹ ھو جاتا ھے (8-22). یہ ویوستھا صاف صاف موریہ راجیہ کے ورودھ تھی. اِس شاستر کے شروع کے شلوکوں میں براھمنوں کو شودر اِستریوں سے وواہ کی اِجازت تھی (3,12-13). کنتو بعد کے شلوکوں میں یہ اِجازت واپس لے لی گئی (3,14-19). اِس میں لکھا ھے—"اِتہاس اور کتھاؤں میں کہیں اِس بات کا ذکر نہیں ھے کہ براھمنوں اور چھتریوں نے آپت کال

में भी शूद्र स्त्रियों से विवाह किया हो (3-14)." यह कितनी अनैतिहासिक बात है! पुराने इतिहास में और अर्थशास्त्र में असवर्ण विवाह के काफ़ी उल्लेख मिलते हैं (अर्थशास्त्र भाग 3, अध्याय 7-164). मानव धर्मशास्त्र में एक जगह लिखा है—"दासी के पुत्र उसके स्वामी की सम्पत्ति हैं" (9-55). अर्थात् यह धर्मशास्त्र पशुओं, घोड़ों और गुलाम मनुष्यों की औलाद में कोई फ़र्क़ नहीं करता. इसके विपरीत अर्थशास्त्र में साफ़ लिखा है कि दासी पुत्र भी 'आर्य' है. सम्राट् अशोक ने इस बात का ऐलान किया था कि क़ानून की नज़र में ब्राह्मण और शूद्र सब बराबर हैं, किन्तु मानव धर्मशास्त्र ने सम्राट अशोक की इस व्यवस्था को रद्द करके एक ही जुर्म में ब्राह्मणों और शूद्रों के लिये अलग अलग सज़ाओं की व्यवस्था कर दी. मानव धर्मशास्त्र के अनुसार यदि कोई द्विज किसी शूद्र के साथ ज़ालिमाना बर्ताव करता है तो उसे कम सज़ा मिलेगी, किन्तु यदि कोई शूद्र किसी द्विज के साथ ऐसा बर्ताव करता है तो उसे ज़्यादा सज़ा मिलेगी (8-267,277;366-376). इसके अनुसार ब्राह्मणों का पुराना दबदबा फिर क़ायम हो गया. किन्तु शूद्रों के प्रति बैरभाव की चरम सीमा उस समय पहुंची जब यह व्यवस्था दी गई कि—"यदि कोई शूद्र किसी द्विज को गाली दे तो उसकी जीभ काट ली जाय, क्योंकि वह नीच है (8-270).† इसके विपरीत अर्थशास्त्र कहता है कि—"राजा ऐसे पुरोहित को बरख़ास्त कर दे जो आज्ञा देने पर भी किसी अयाज्य को वेद पढ़ाने से इनकार करता है, या जो किसी अयाज्य के यज्ञ में शामिल होने से इनकार करता है (अर्थशास्त्र भाग 1, अध्याय 10-16). अर्थशास्त्र की इस व्यवस्था के अनुसार शूद्रों को वेद पढ़ने और यज्ञ करने दोनों का हक़ था. मानव धर्मशास्त्र ने इस अधिकार को छीन लिया. यही नहीं, आगे चलकर मानव धर्मशास्त्र कहता है—"यदि कोई शूद्र किसी द्विज के नाम और जाति की चरचा अपमानजनक शब्दों में करता है तो दस अंगुल लम्बी लोहे की कील उसके मुंह में घुसेड़ देनी चाहिये" (8-271). एक दूसरी जगह लिखा है—"यदि कोई अद्विज घमण्ड के साथ किसी ब्राह्मण को उसके कर्तव्य का बोध कराये तो राजा को ऐसे अद्विज के मुंह और कान में जलता हुआ गरम तेल डलवा देना चाहिये" (8-272). एक और जगह लिखा है—"शरीर के जिस अंग से कोई शूद्र ऊंची जाति वाले को चोट पहुँचाये उस शूद्र के उस अंग को काट डालना चाहिये. यह मनु की शिक्षा है" (8-279). वर्ण व्यवस्था का इससे ज़्यादा ख़ौफ़नाक रूप और क्या हो सकता है?

میں بھی شودر استریوں سے وواہ کیا ہو (3-14)." یہ کتنی اِتہاسک بات ہے! پرانے اِتہاس میں اور ارتھ شاستر میں اسورن وواہ کے کافی اُلیکھ ملتے ہیں (ارتھ شاستر بھاگ 3' ادھیائے 7-164). مانو دھرم شاستر میں ایک جگہ لکھا ہے—"داسی کے پتر اُس کے سوامی کی سمپتی ہیں" (9-55). ارتھات یہ دھرم شاستر پشوؤں' گھوڑوں اور غلام منشیوں کی اولاد میں کوئی فرق نہیں کرتا. اِس کے وپریت ارتھ شاستر میں صاف لکھا ہے کہ داسی پتر بھی 'آریہ' ہے. سمراٹ اشوک نے اِس بات کا اعلان کیا تھا کہ قانون کی نظر میں براھمن اور شودر سب برابر ہیں' کنتو مانو دھرم شاستر نے سمراٹ اشوک کی اِس ویوستھا کو رد کرکے ایک ہی جرم میں براھمنوں اور شودروں کے لئے الگ الگ سزاؤں کی ویوستھا کردی. مانو دھرم شاستر کے انوسار یدی کوئی دوِنج کسی شودر کے ساتھ ظالمانہ برتاؤ کرتا ہے تو اُسے کم سزا ملیگی' کنتو یدی کوئی شودر کسی دوِنج کے ساتھ ایسا برتاؤ کرتا ہے تو اُسے زیادہ سزا ملیگی (8-267,277;366-376). اِس کے انوسار براھمنوں کا پرانا دبدبہ پھر قایم ہوگیا. کنتو شودروں کے پرتی بیر بھاؤ کی چرم سیما اُس سمے پہونچی جب یہ ویوستھا دی گئی کہ—"یدی کوئی شودر کسی دوِنج کو گالی دے تو اُس کی جیبھ کاٹ لی جائے' کیونکہ وہ نیچ ہے.† اِس کے وپریت ارتھ شاستر کہتا ہے کہ—"راجہ ایسے پروہت کو برخاست کردے جو آگیاں دینے پر بھی کسی اياجیہ کو وید پڑھانے سے اِنکار کرتا ہے' یا جو کسی اياجیہ کے یگیہ میں شامل ہونے سے اِنکار کرتا ہے (ارتھ شاستر بھاگ 1' ادھیائے 10-16). ارتھ شاستر کی اِس ویوستھا کے انوسار شودروں کو وید پڑھنے اور یگیہ کرنے دونوں کا حق تھا. مانو دھرم شاستر نے اِس ادھیکار کو چھین لیا. یہی نہیں' آگے چلکر مانو دھرم شاستر کہتا ہے—"یدی کوئی شودر کسی دوِنج کے نام اور جاتی کی چرچا اپمان جنک شبدوں میں کرتا ہے تو دس انگل لمبی لوہے کی کیل اُس کے منہ میں گھسیڑ دینی چاہئے" (8-271). ایک دوسری جگہ لکھا ہے—"یدی کوئی ادوِنج گھمنڈ کے ساتھ کسی براھمن کو اُس کے کرتویہ کا بودھ کرائے تو راجہ کو ایسے ادوِنج کے منہ اور کان میں جلتا ہوا گرم تیل ڈلوا دینا چاہئے" (8-272). ایک اور جگہ لکھا ہے—"شریر کے جس انگ سے کوئی شودر اُونچی جاتی والے کو چوٹ پہونچائے اُس شودر کے اُس انگ کو کاٹ ڈالنا چاہئے. یہ منو کی شکشا ہے" (8-279). ورن ویوستھا کا اِس سے خوفناک روپ اور کیا ہوسکتا ہے؟

†—'The Laws of Manu'—translated by Buhler.

इस तरह मानव धर्मशास्त्र ने मौर्यों की शासन व्यवस्था के बराबरी के उसूल को एक क़लम मिटा दिया और शूद्रों को सम्पत्ति के अधिकार से रोक दिया. धर्मशास्त्र के अनुसार —"ब्राह्मण को दास-शूद्र की सम्पत्ति फ़ौरन ज़ब्त कर लेनी चाहिये, क्योंकि शूद्र की अपनी कोई सम्पत्ति नहीं" (8-417). इसके अलावा "दास को सम्पत्ति रखने का कोई अधिकार नहीं क्योंकि उसकी सम्पत्ति उसके स्वामी की सम्पत्ति है" (8-416). इसके विपरीत अर्थशास्त्र दास को सम्पत्ति के मालिक होने का अधिकार देता था (अर्थशास्त्र 3, अध्याय 13-182). अर्थशास्त्र के अनुसार—"दास की सम्पत्ति उसकी मौत के बाद उसके रिश्तेदारों को मिलेगी और रिश्तेदारों के अभाव में उसके स्वामी को" (उपरोक्त 183). एक ओर धर्मशास्त्र ने शूद्रों के लिए घोर असुविधाएं कर दीं और दूसरी ओर ब्राह्मणों के लिये विधान किया—"यदि धन के अभाव में राजा मृत्यु शय्या पर पड़ा हो तब भी उसे वेद पढ़े हुए ब्राह्मण से राज-कर नहीं लेना चाहिये" (7-133). यहां भी अशोक के विधान को तोड़ा गया. मानव धर्मशास्त्र आगे चलकर कहता है—"दास, दस्यु और चांडाल को गवाह के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता" (8-66). इसके विपरीत अर्थशास्त्र शूद्र को गवाह के रूप में स्वीकार करने में कोई ऐतराज़ नहीं करता (अर्थशास्त्र 3, अ० 11-174). धर्मशास्त्र के अनुसार शूद्र गवाह के शपथ लेने के बाद भी उसे जिसमानी तकलीफ़ देकर उसके झूठ-सच का पता चलाया जाता था जबकि कौटिल्य के अनुसार किसी भी गवाह की गवाही लिखकर उसकी साधारण रूप से जांच करानी चाहिये, किसी गवाह को शारीरिक यातना पहुंचाने की जरूरत नहीं. आर्थिक दृष्टि से भी धर्मशास्त्र ने शूद्रों की हालत अत्यन्त असुविधाजनक रखी है. धर्मशास्त्र के अनुसार—"महाजन को ब्राह्मण क़र्ज़दार से दो पाना प्रतिशत, क्षत्रियों से तीन पाना प्रतिशत, वैश्यों से चार पाना प्रतिशत और शूद्रों से पांच पाना प्रतिशत ब्याज लेना चाहिये" (8-142) जबकि कौटिल्य के अनुसार "हर सैकड़ा हर महीने सवा पाना ब्याज लेना ही जायज़ है." (अर्थशास्त्र 3, अ० 11-173). ब्याज के सम्बन्ध में अर्थशास्त्र ने विविध जातियों के बीच कोई तमीज़ नहीं की.

इस तरह मानव धर्मशास्त्र ने अशोक के समय की व्यवहार समता को बिलकुल नष्ट कर दिया. ब्राह्मणों को किसी भी अपराध में मृत्यु दण्ड देना नाजायज़ क़रार दिया. "ब्राह्मण ने चाहे जो अपराध किया हो उसकी हत्या कभी न करनी चाहिये. केवल उसे देश से बाहर निकाल देना चाहिये, उसकी सारी जायदाद उसे दे देनी चाहिये और उसको ज़रा सी भी जिसमानी तकलीफ़ नहीं पहुंचानी चाहिये." (8-380). "ब्राह्मण वध से ज़्यादा बुरा दुनिया में कोई दूसरा पाप नहीं है. इसलिये राजा को दिमाग़ में

اِس طرح مانو دھرم شاستر نے موریوں کی شاسن ویوستھا کے برابری کے اُصول کو ایک قلم مٹا دیا اور شودروں کو سمپتی کے ادھیکار سے روک دیا۔ دھرم شاستر کے انوسار—"براھمن کو داس شودر کی سمپتی فوراً ضبط کرلینی چاھئے' کیونکہ شودر کی اپنی کوئی سمپتی نہیں" (8-417). اِس کے علاوہ "داس کو سمپتی رکھنے کا کوئی ادھیکار نہیں کیونکہ اُس کی سمپتی اُس کے سوامی کی سمپتی ھے" (8-416). اِس کے وپریت ارتھ شاستر داس کو سمپتی کے مالک ھونے کا ادھیکار دیتا تھا (ارتھ شاستر 3' ادھیائے 13-182). ارتھ شاستر کے انوسار—"داس کی سمپتی اس کی موت کے بعد اس کے رشتہداروں کو ملیگی اور رشتہداروں کے ابھاؤ میں اس کے سوامی کو" (اُپروکت-183). ایک اور دھرم شاستر نے شودروں کے لئے گھور اسوِدھائیں کردیں اور دوسری اُور براھمنوں کے لئے ودھان کیا—"یدی دھن کے ابھاؤ میں راجہ مرتیوشیا پر پڑا ھو تب بھی اُسے وید پڑھے ھوئے براھمن سے راج-کر نہیں لینا چاھئے" (7-133). یہاں بھی اشوک کے ودھان کو توڑا گیا۔ مانو دھرم شاستر آگے چلکر کہتا ھے—"داس' دسیو اور چانڈال کو گواہ کے روپ میں سوئیکار نہیں کیا جاسکتا" (8-66). اِس کے وِپریت ارتھ شاستر شودر کو گواہ کے روپ میں سوئیکار کرنے میں کوئی اعتراض نہیں کرتا (ارتھ شاستر 3' الف 11-174). دھرم شاستر کے انوسار شودر گواہ کے شپتھ لینے کے بعد بھی اُسے جسمانی تکلیف دیکر اُس کے جھوٹ سچ کا پتہ چلایا جاتا تھا جبکہ کوٹلیہ کے انوسار کسی بھی گواہ کی گواھی لکھکر اُس کی سادھارن روپ سے جانچ کرانی چاھئے' کسی گواہ کو شاریرک یاتنا پہونچانے کی ضرورت نہیں۔ آرتھک درشٹی سے بھی دھرم شاستر نے شودروں کی حالت اسینت اسودھاجنک رکھی ھے۔ دھرم شاستر کے انوسار—"مہاجن کو براھمن قرضدار سے دو پانا پرتیشت' چھتریوں سے تین پانا پرتیشت' ویشیوں سے چار پانا پرتیشت اور شودروں سے پانچ پانا پرتیشت بیاج لینی چاھئے" (8-142) جبکہ کوٹلیہ کے انوسار "ھر سیکڑہ ھر مہینے سوا پانا بیاج لینا ھی جایز ھے" (ارتھ شاستر 3' A-11-173). بیاج کے سمبندھ میں ارتھ شاستر نے وِودھ جاتیوں کے بیچ کوئی تمیز نہیں کی۔

اِس طرح مانو دھرم شاستر نے اشوک کے سمے کی وِیوھار سمتا کو بالکل نشٹ کردیا۔ براھمنوں کو کسی بھی اپرادھ میں مرتیو دنڈ دینا ناجایز قرار دیا۔ "براھمن نے چاھے جو اپرادھ کیا ھو اُس کی ھتیا کبھی نہ کرنی چاھئے۔ کیول اُسے دیش سے باھر نکال دینا چاھئے' اُس کی ساری جایداد اُسے دے دینی چاھئے اور اُس کو ذراسی بھی جسمانی تکلیف نہیں پہونچانی چاھئے" (8-380). "براھمن بدھ سے زیادہ برا دنیا میں دوسرا پاپ نہیں ھے۔ اِس لئے راجہ کو دماغ میں

भी इस विचार को नहीं लाना चाहिये कि उसे किसी ब्राह्मण की हत्या करनी है" (8-381). दूसरी ओर शूद्र के सम्बन्ध में लिखा गया है—"यदि कोई स्वामी शूद्र को दासता से मुक्त भी कर दे, तब भी वह शूद्र स्वतन्त्र नहीं हो सकता. उसके लिये गुलामी स्वाभाविक है, इसलिये कौन उसे गुलामी से मुक्त कर सकता है ?" (8,412-414).* इस तरह शूद्रों को अर्थशास्त्र और सम्राट अशोक ने समाज में जो बराबरी का दरजा दिया था, उसे 'मानव धर्मशास्त्र' ने वापस ले लिया.

मानव धर्मशास्त्र ने जन्म और उत्तराधिकार को भी खास अहमियत दी है.† मानव धर्मशास्त्र के मुताबिक़—"सब वर्णों में जो बच्चे शास्त्रानुसार विवाहित स्त्रियों से (ऐसी स्त्रियों से जो सजातीय हों और कुमारी के रूप में विवाह में हासिल की गई हों) पैदा हुए हों वे अपने पिता के वर्ण के ही माने जायंगे." इस व्यवस्था के अन्दर शास्त्रानुकूल विवाह और सवर्ण विवाह के ऊपर ज़ोर दिया गया है. आगे एक जगह लिखा है—"द्विज पुरुषों को अपने से एक दरजा नीचे की पत्नी से जो सन्तान प्राप्त हों वे भी पिता के ही वर्ण को प्राप्त करती हैं और उनका एकमात्र दोष उनकी मां के कारण है (10-6)." इस व्यवस्था के अनुसार असवर्ण विवाह जायज़ है, किन्तु नीची जाति की मां का दाग़ सन्तान पर रह जाता है. आगे चलकर इसे तफ़सील से समझाया गया है—"ब्राह्मण की सन्तान क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र स्त्री से, क्षत्रिय की सन्तान वैश्य और शूद्र स्त्री से, वैश्य की सन्तान शूद्र से ये छहों सन्तानें 'अपासद' कहलाती हैं.‡ यह व्यवस्था उस पहले की व्यवस्था को काट देती है जिसके मुताबिक़ अपने से एक दरजा नीची जाति की स्त्री से प्राप्त सन्तति पिता के वर्ण को प्राप्त होती है. जो सन्तान अपासद कहलाएंगी वे कैसे पिता के वर्ण को प्राप्त कर सकती हैं ? मानव धर्मशास्त्र की एक और व्यवस्था में कहा गया है—"द्विजों की जो सन्तानें एक दरजा नीचे के वर्ण की स्त्री से हों वे अपनी मां की हीनता के कारण 'अनन्तरस' कहलाती हैं. इस व्यवस्था से यह ज़ाहिर है कि हीन जाति की मांओं की सन्तानें पिता के वर्ण को प्राप्त नहीं कर सकतीं. पहले की व्यवस्थाओं के मुक़ाबले में यह एक विरोधी और बाद की व्यवस्था मालूम होती है.

फिर मानव धर्मशास्त्र 'खिचड़ी वर्णों' का ज़िक्र करता है. उसके अनुसार—"वर्णों की मिलावट से जिन स्त्रियों के साथ विवाह नहीं होना चाहिये, उनके विवाह से और

بھی اِس وچار کو نہیں لانا چاہئیے کہ اُسے کسی براہمن کی ہتیا کرنی ہے" (8-381). دوسری اور شودر کے سمبندھ میں لکھا گیا ہے—"یدی کوئی سوامی شودر کو داستا سے مکت بھی کردے، تب بھی وہ شودر سوتنتر نہیں ہوسکتا. اُس کے لئے غلامی سوابھاوک ہے، اس لئے کون اُسے غلامی سے مکت کرسکتا ہے؟" (8,412-114).* اِس طرح شودروں کو ارتھ شاستر اور سمراٹ اشوک نے سماج میں جو برابری کا درجہ دیا تھا، اُسے 'مانو دھرم شاستر' نے واپس لے لیا.

مانو دھرم شاستر نے جنم اور اُترادھیکار کو بھی خاص اہمیت دی ہے.† مانو دھرم شاستر کے مطابق—"سب ورنوں میں جو بچے شاستر انوسار وواہت اِستریوں سے (ایسی استریوں سے جو سجاتیہ ہوں اور کماری کے روپ میں وواہ میں حاصل کی گئی ہوں) پیدا ہوئے ہوں وے اپنے پتا کے ورن کے ہی مانے جائینگے." اِس ویوستھا کے اندر شاستر انوکول وواہ اور سوورن وواہ کے اُوپر زور دیا گیا ہے. آگے ایک جگہ لکھا ہے—"دوِنج پرشوں کو اپنے سے ایک درجہ نیچے کی پتنی سے جو سنتان پراپت ہوں وے بھی پتا کے ہی ورن کو پراپت کرتی ہیں اور اُنکا ایک ماتر دوش اُن کی ماں کے کارن ہے (10-6)." اس ویوستھا کے انوسار اسورن وواہ جائز ہے، کنتو نیچی جاتی کی ماں کا داغ سنتان پر رہ جاتا ہے. آگے چلکر اسے تفصیل سے سمجھایا گیا ہے—"براہمن کی سنتان چھتریہ، ویشیہ اور شودر اِستری سے، چھتریہ کی سنتان ویشیہ اور شودر اِستری سے، ویشیہ کی سنتان شودر سے یہ چھہوں سنتانیں 'اپاسد' کہلاتی ہیں.‡ یہ ویوستھا اُس پہلے کی ویوستھا کو کاٹ دیتی ہے جس کے انوسار اپنے سے ایک درجہ نیچی جاتی کی اِستری سے پراپت سنتتی پتا کے ورن کو پراپت ہوتی ہے. جو سنتان اَپاسد کہلائینگی وے کیسے پتا کے ورن کو پراپت کرسکتی ہیں؟ مانو دھرم شاستر کی ایک اور ویوستھا میں کہا گیا ہے—"دوِنجوں کی جو سنتانیں ایک درجہ نیچے کے ورن کی اِستری سے ہوں وے اپنی ماں کی ہینتا کے کارن 'اننترس' کہلاتی ہیں. اِس ویوستھا سے یہ ظاہر ہے کہ ہین جاتی کی ماؤں کی سنتانیں پتا کے ورن کو پراپت نہیں کرسکتیں. پہلے کی ویوستھاؤں کے مقابلے یہ ایک وِرودھی اور بعد کی ویوستھا معلوم ہوتی ہے.

پھر مانو دھرم شاستر 'کھچڑی ورنوں' کا ذکر کرتا ہے. اُسکے انوسار—"ورنوں کی ملاوٹ سے جن اِستریوں کے ساتھ وواہ نہیں ہونا چاہئیے' اُنکے وواہ سے اور

---

* Buhlers' translation.
† Ibid—pp. 319-321.
‡ Ibid pp. 403-404.

कर्तव्यच्युत होने से अपवित्र जातियां बन गई हैं. §" (10-24). इस तरह अलग अलग जाति के माँ बाप की सन्तानें मनु के मुताबिक़ वर्णसंकर हैं. इसका साफ़ मतलब यह है कि इजाजत होते हुए भी मानव 'धर्मशास्त्र' असवर्ण विवाहों को प्रोत्साहन नहीं देता.❀ इसका ब्राह्मणों की उस प्रतिक्रान्ति से मेल है जिसका मक़सद पैदायशी वर्णाश्रम धर्म के मुताबिक़ सामाजिक व्यवस्था फिर से क़ायम करना था.

मानव धर्मशास्त्र में इस बात पर जोर दिया गया है कि ऊंची जाति के लोगों का रक्त नीची जाति के लोगों से अधिक पवित्र होता है. "यदि कोई कुल ब्राह्मण पुरुष और शूद्र स्त्री के संयोग से फले और बढ़े तो इस तरह के कुल की लड़कियों की ब्राह्मणों के साथ शादी होने से वह नीच कुल सातवीं पीढ़ी में उच्चवर्ण ब्राह्मण कुल हो जायगा." (10-64). इसके अनुसार ब्राह्मण पिता और अद्विज माता की पुत्री यदि किसी ब्राह्मण से ब्याही जाय और इस संयोग से उत्पन्न लड़की फिर किसी ब्राह्मण को ब्याही जाय और यह क्रम सातवीं पीढ़ी तक चलता रहे तो उसके बाद की संततियां ब्राह्मण हो जायंगी, क्योंकि मानव धर्मशास्त्र कहता है "अच्छा वीर्य सदा प्रशंसनीय है." (10-72). यही नियम सभी जातियों के लिये लागू है. इस संबंध में कहा है—"शूद्र पुत्र इस तरह से ब्राह्मण के पद को प्राप्त होता है और इसी नियम से ब्राह्मण शूद्र की स्थिति को पहुंचता है. यही नियम क्षत्रिय-पुत्र के लिये है और यही नियम वैश्य-पुत्र के लिये है." (10-65). इसका अर्थ यह है कि ऊंची जात के पुरुष के संयोग से औलाद का रुतबा ऊंचा होता है और नीची जाति के पुरुष के संयोग से औलाद भी नीची जाति की होती है !

अन्त में वंश परम्परा के प्रश्न का इस तरह जिक्र किया गया है—ब्राह्मण पिता और अनार्य माता के संयोग से उत्पन्न संतान श्रेष्ठ है या अनार्य पिता और ब्राह्मण माता के संयोग से उत्पन्न संतान ? धर्मशास्त्र इसका उत्तर देता है कि यदि ब्राह्मण पिता की सन्तान में 'पाक' और 'यज्ञ' की विशेषता है तो वह अनार्य पिता की सन्तान की अपेक्षा उच्चतर है. (10-66). इसका साफ़ मतलब यह है कि

کرتویہ چیوت ہونے سے اپوتر جاتیاں بن گئی ہیں ."§ (10-21) . اس طرح الگ الگ جاتی کے ماں باپ کی سنتانیں منو کے مطابق ورنسنکر ہیں . اِسکا صاف مطلب یہ ہے کہ اِجازت ہوتے ہوئے بھی مانو 'دھرم شاستر' اسورن وواہوں کو پروتساہن نہیں دیتا .❀ اِسکا براہمنوں کی اُس پرتی کرانتی سے میل ہے جسکا مقصد پیدایشی ورناشرم دھرم کے مطابق سماجک ویوستھا پھر سے قایم کرنا تھا .

مانو دھرم شاستر میں اِس بات پر زور دیا گیا ہے کہ اُونچی جاتی کے لوگوں کا رکت نیچی جاتی کے لوگوں سے ادھک پوتر ہوتا ہے . "یدی کوئی کل براہمن پرش اور شودر اِستری کے سنیوگ سے پھلے اور بڑھے تو اِس طرح کے کل کی لڑکیوں کی براہمنوں کے ساتھ شادی ہونے سے وہ نیچ کل ساتویں پیڑھی میں اُوچ ورن براہمن کل ہو جائیگا " (10-64). اِسکے انوسار براہمن پتا اور ادوِج ماتا کی پتری یدی کسی براہمن سے بیاہی جائے اور اس سنیوگ سے اُتپن لڑکی پھر کسی براہمن کو بیاہی جائے اور یہ کرم ساتویں پیڑھی تک چلتا رہے تو اُسکے بعد کی سنتتیاں براہمن ہو جائینگی' کیونکہ مانو دھرم شاستر کہتا ہے "اچھا ویریہ سدا پرشنسنیہ ہے ." (10-72) یہی نیم سبھی جاتیوں کے لیئے لاگو ہے . اِس سمبندھ میں کہا ہے—"شودر پتر اِس طرح سے براہمن کے پد کو پراپت ہوتا ہے اور اِسی نیم سے براہمن شودر کی اِستھتی کو پہونچتا ہے . یہی نیم چھتری پتر کے لیئے ہے اور یہی نیم ویشیہ پتر کے لیئے ہے ." (10.65) اِسکا ارتھ یہ ہے کہ اُونچی جات کے پرش کے سنیوگ سے اولاد کا رتبہ اُونچا ہوتا ہے اور نیچی جاتی کے پرش کے سنیوگ سے اولاد بھی نیچی جاتی کی ہوتی ہے !

انت میں ونش پرمپرا کے پرشن کا اِس طرح ذکر کیا گیا ہے—براہمن پتا اور اناریہ ماتا کے سنیوگ سے اُتپن سنتان شریشٹھ ہے یا اناریہ پتا اور براہمن ماتا کے سنیوگ سے اُتپن سنتان ؟ دھرم شاستر اِسکا اُتر دیتا ہے کہ یدی براہمن پتا کی سنتان میں 'پاک' اور 'یگیہ' کی وشیشتا ہے تو وہ اناریہ پتا کی سنتان کی اپیکشا اُوچتر ہے. (10-66) اِسکا صاف مطلب یہ ہے کہ

---

§ Jones' translation of "The Ordinances of Manu" p. 343.

❀ मानव धर्मशास्त्र के अन्दर यह विरोधी (मुतजाद) भाव इसलिये है कि इसमें दो तरह की व्यवस्थायें हैं. पुरानी व्यवस्था 'मनुस्मृति' है और नई सुमति भार्गव की लिखी हुई 'मानव धर्मशास्त्र' है. सुमति भार्गव के ऊपर ब्राह्मण-प्रतिक्रिया (reaction) का साफ़ असर है—लेखक.

مانو دھرم شاستر کے اندر یہ وِرودھی (متزاد) بھاؤ اِس لئے ہے کہ اِس میں دو طرح کی ویوستھائیں ہیں . پرانی ویوستھا 'منوسمرتی' ہے اور نئی سومتی بھارگو کی لکھی ہوئی 'مانودھرم شاستر' ہے . سومتی بھارگو کے اُوپر براہمن پرتیکریا (reaction) کا صاف اثر ہے—لیکھک .

वंश क्रम में पिता को महानता है, माता को नहीं. *

मानव धर्मशास्त्र में ब्राह्मणों के बड़प्पन का नक़्शा हमें राजनैतिक क्षेत्र में भी मिलता है. एक जगह लिखा है—"राजा को चाहे जितना ख़तरा क्यों न हो तब भी उसे ब्राह्मण के क्रोध को न जगाना चाहिये, क्योंकि ब्राह्मण ख़फ़ा होकर क्षण भर में हुकूमत को बरबाद कर सकता है......चाहे विद्वान हो या अपढ़, ब्राह्मण महा देवता के समान है." (9,313-317). इस वाक्य में हमें ब्राह्मण ग्रन्थों और ब्रह्मजय सूत्रों की गूंज मिलती है. राजा के लिये भी आदेश है कि राजा को ख़ानदानी पुरोहितों के परिवार से सात या आठ मन्त्री चुनने चाहियें जो ऊंचे कुल के, परखे हुए, साहसी और वेद शास्त्रों में निपुण हों (7-58). इस व्यवस्था के अनुसार तो ब्राह्मण ब्यूरोक्रैसी लाज़मी हो जाती है क्योंकि वेद शास्त्रों में ब्राह्मणों के अलावा और कौन निपुण होगा ? अर्थशास्त्र ने मंत्रियों के चुनाव के लिए इस तरह की कोई क़ैद नहीं रखी जिसमें केवल ब्राह्मण ही आ सकें. अर्थशास्त्र के अनुसार अमात्य सम्पत (मन्त्री) के पद के लिये ये गुण ज़रूरी हैं कि वह देश का अधिवासी हो, ऊंचे ख़ानदान का हो और कलाओं में निपुण हो. (अर्थशास्त्र 1, अ० 8-14 अ० 9-15). कौटिल्य बहुदन्ति के पुत्र से सहमत है कि मन्त्री के लिये आवश्यक गुण यह होना चाहिये कि वह "ऊंचे ख़ानदान का हो और विद्वान हो." अन्त में धर्मशास्त्र राजनैतिक क्षेत्र में एक बहुत बड़ी मांग पेश करता है. उसके अनुसार—"प्रधान सेनापति का पद, प्रधान न्यायाधीश का पद, राज-प्रबन्ध करने वाले राजा का पद—ये सब पद स्वीकार करने योग्य वही है जो वेदों का पूर्ण ज्ञाता हो" (12-19-100). इसका अर्थ यह है कि मानव धर्मशास्त्र साफ़ इस बात की हिदायत देता है कि वेदों के जानकार ही इन पदों पर आसीन हो सकते हैं. इससे पहले किसी भी स्मृति में इस तरह की कोई हिदायत नहीं मिलती. शायद, जैसा कि श्री जायसवाल कहते हैं, ब्राह्मण पुष्यमित्र के राज्य हड़पने की यह नैतिक दलील हो.

इसी धर्मशास्त्र में हमें "राजा के दैवी अधिकार" की दलील मिलती है। इसी मानव धर्मशास्त्र में ही पहली मरतबा 'नर-देव' के विचार का प्रतिपादन किया जाता है. इससे पता चलता है कि भारत में उस समय तक सामन्त-शाही बन चुकी थी। इस तरह ब्राह्मणों की सत्ता क़ायम होते ही वर्णों की भी नई हैसियत हो गई. जातियों की सामाजिक जगह बदल गई।

ونش کرم میں پتا کو مہانتا ہے' ماتا کو نہیں .*

مانو دھرم شاستر میں براہمنوں کے بڑپن کا نقشہ ہمیں راجنیتک چھیتر میں بھی ملتا ہے . ایک جگہہ لکھا ہے—"راجہ کو چاہے جتنا خطرہ کیوں نہ ہو تب بھی اُسے براہمن کے کرودھ کو نہ جگانا چاہیئے' کیونکہ براہمن خفا ہو کر چھن بھر میں حکومت کو برباد کر سکتا ہے...چاہے ودوان ہو یا اپڑھ' براہمن مہا دیوتا کے سمان ہے " (9,313-317). اِس واکیہ میں ہمیں براہمن گرنتھوں اور برہمجیہ سوتروں کی گونج ملتی ہے . راجہ کے لئے بھی آدیش ہے کہ راجہ کو خاندانی پروہتوں کے پریوار سے سات یا آٹھ منتری چننے چاہیئیں جو اُونچے کل کے' پرکھے ہوئے' ساہسی اور وید شاستروں میں نپن ہوں (7-58) . اِس ویوستھا کے انوسار تو براہمن بیوروکریسی لازمی ہو جاتی ہے کیونکہ وید شاستروں میں براہمنوں کے علاوہ اور کون نپن ہوگا ؟ ارتھ شاستر نے منتریوں کے چناؤ کے لئے اِس طرح کی کوئی قید نہیں رکھی جسمیں کیول براہمن ہی آسکیں . ارتھ شاستر کے انوسار اماتیہ سمپت (منتری) کے پد کے لئے یہ گن ضروری ہیں کہ وہ دیش کا ادھیواسی ہو' اُونچے خاندان کا ہو اور کلاؤں میں نپن ہو . (ارتھ شاستر 1' الف 14-8. الف 15-9). کوٹلیہ بہودنتی کے پتر سے سہمت ہے کہ منتری کے لیئے آوشیک گن یہ ہونا چاہیئے کہ وہ "اُونچے خاندان کا ہو اور ودوان ہو ." انت میں دھرم شاستر راجنیتک چھیتر میں ایک بہت بڑی مانگ پیش کرتا ہے . اُس کے انوسار—"پردھان سیناپتی کا پد' پردھان نیایادھیش کا پد' راج پربندھ کرنے والے راجہ کا پد—یہ سب پد سویکار کرنے یوگیہ وہی ہے جو ویدوں کا پورن گیاتا ہو (100-19-12) . اِسکا ارتھ یہ ہے کہ مانو دھرم شاستر صاف اِس بات کی ہدایت دیتا ہے کہ ویدوں کے جانکار ہی اِن پدوں پر آسین ہو سکتے ہیں . اِس سے پہلے کسی بھی اِسمرتی میں اِس طرح کی کوئی ہدایت نہیں ملتی . شاید' جیسا کہ شری جیسوال کہتے ہیں' براہمن پوشیہ متر کے راج ہڑپنے کی یہ نیتک دلیل ہو .

اِسی دھرم شاستر میں ہمیں "راجہ کے دیوی ادھیکار" کی دلیل ملتی ہے . اِسی مانو دھرم شاستر میں ہی پہلی مرتبہ 'نردیو' کے وچار کا پرتیپادن کیا جا تا ہے . اِس سے پتہ چلتا ہے کہ بھارت میں اُس سمے تک سامنت شاہی بن چکی تھی . اِس طرح براہمنوں کی ستتا قایم ہوتے ہی ورنوں کی بھی نئی حیثیت ہوگئی . جاتیوں کی سماجک جگہ بدل گئی .

---

* इस सम्बन्ध में मध्यकालीन यूरोप में ग़ुलामों के संसर्ग से पैदा औलादें और मनुस्मृति का तुलनात्मक अध्ययन दिलचस्प है.

اِس سمبندھ میں مدھیہ کالین یورپ میں غلاموں کے سنسرگ سے پیدا اولادیں اور منوسمرتی کی تولناتمک ادھین دلچسپ ہے .

एक दूसरा धर्मशास्त्र जो ब्राह्मणों की प्रभुता के काल में लिखा गया 'वसिष्ठ स्मृति' है. केन के अनुसार इसका रचना-काल ईसा की पहली सदी है. * हालांकि इस स्मृति में ऐसे विचार जाहिर किये गये हैं जो पुराने मालूम होते हैं और इसमें आपस्तम्ब का भी समर्थन है. फिर भी इसमें जो ब्राह्मणों के बड़प्पन की वकालत की गयी है उससे यह मालूम पड़ता है कि यह ग्रन्थ उस समय लिखा गया जब ब्राह्मणों की प्रभुता थी। मालूम होता है वसिष्ठ स्मृति ऐसी जगह लिखी गई जहाँ अतिथि के स्वागत में गोवध का पुराना रिवाज तब भी जारी था, हलांकि कभी कभी गाय की जगह बकरा हलाल करने का भी रिवाज चल पड़ा था (अध्याय-3) उसमें एक स्थान पर लिखा है—"ब्राह्मण या क्षत्रिय अतिथि के लिये गृहस्थ या तो परिपक्व अवस्था का बैल रांध सकता है या बकरा।" † इससे साफ़ अनुमान लगाया जा सकता है कि 'वसिष्ठ स्मृति' उत्तर भारत में ही कहीं लिखी गई है.

वसिष्ठ का आदेश है कि तीनों उच्च वर्णों की सेवा करना शूद्र का धर्म है। इस लिहाज से वसिष्ठ मनु से भिन्न नहीं है। † फिर वह कहते हैं—"यदि कोई द्विज शूद्र का अन्न खाकर मर जाय तो वह दूसरे जन्म में या तो गाँव का सुअर होता है या उसी शूद्र के घर पैदा होता है. † (अ० 3) फिर वह पडितों से कहते हैं—"म्लेच्छों की भाषा न सीखो † (अ० 3)। एक दूसरी जगह लिखा है—'कुछ लोग कहते हैं कि शूद्र शव के समान हैं इसलिये शूद्र के निकट वेदों का पाठ नहीं होना चाहिये † (अ० 15) ऐसे अ-ब्राह्मण पुरुष के लिए जिनका ब्राह्मण स्त्रियों से सम्बन्ध है वसिष्ठ नीचे लिखी सजा का विधान करते हैं —"यदि कोई शूद्र ब्राह्मण स्त्री के परिचय में है तो राजा को उस शूद्र को 'विरण' घास में बंधवा कर जिन्दा आग में डलवा देना चाहिये। यदि कोई वैश्य ब्राह्मण स्त्री के परिचय में है तो राजा को उस वैश्य को 'लोहित' घास में बंधवा कर आग में डाल देना चाहिए और यदि कोई क्षत्रिय ब्राह्मण स्त्री के परिचय में है तो राजा को उसे 'सर' घास में बंधवा कर आग में डाल देना चाहिये. † (अ० 19) वसिष्ठ स्मृति के न्याय का यह नमूना है. वर्ण के हिसाब से सज़ा की मात्रा भी बढ़ती जाती है. † (अ० 19).

कुछ अंशों में वसिष्ठ स्मृति और दूसरी स्मृतियों से अधिक कड़ी है, क्योंकि वसिष्ठ स्मृति में क्षत्रियों को सज़ा देने का जो विधान है वह उससे पहले कभी किसी स्मृति ने नहीं दिया। इसमें ब्राह्मणों का दरजा बहुत ऊँचा कर दिया गया। इस चीज़ को अधिक सफ़ाई से समझने के

ایک دوسرا دھرم شاستر جو براھمنوں کی پربھوتا کے کال میں لکھا گیا 'وسشٹھ اِسمرتی' ھے . کین کے انوسار اِسکا رچنا کال عیسیٰ کی پہلی صدی ھے"* حالانکہ اِس اِسمرتی میں ایسے وچار ظاھر کئے گئے ھیں جو پرانے معلوم ھوتے ھیں اور اُسمیں 'آپستمب کا بھی سمرتھن ھے. پھر بھی اِسمیں جو براھمنوں کے بڑپن کی وکالت کی گئی ھے اُس سے یہ معلوم پڑتا ھے کہ یہ گرنتھ اُس سمے لکھا گیا جب براھمنوں کی پربھوتا تھی . معلوم ھوتا ھے وسشٹھ اِسمرتی ایسی جگہہ لکھی گئی جہاں اتیتھی کے سواگت میں گوبدھ کا پرانا رواج تب بھی جاری تھا' حالانکہ کبھی کبھی گئے کی جگہ بکرا حلال کرنے کا بھی رواج چل پڑا تھا (ادھیائے-3) . اُسمیں ایک اِستھان پر لکھا ھے—"براھمن یا چھتریہ اتیتھی کے لیئے گرھستھ یا تو پریپکو اوستھا کا بیل راندھ سکتا ھے یا بکرا ." † اِس سے صاف انومان لگایا جا سکتا ھے کہ 'وسشٹھ اِسمرتی' اُتر بھارت میں ھی کہیں لکھی گئی ھے .

وسشٹھ کا آدیش ھے کہ تینوں اُونچ ورنوں کی سیوا کرنا شودرکا دھرم ھے . اِس لحاظ سے وسشٹھ منو سے بھن نہیں ھے .† پھر وہ کہتے ھیں—"یدی کوئی دوئج شودر کا ان کھا کر مر جائے تو وہ دوسرے جنم میں یا تو گاؤں کا سور ھوتا ھے یا اُسی شودر کے گھر پیدا ھوتا ھے . † (3 الف) پر وہ پنڈتوں سے کہتے ھیں—"ملیچھوں کی بھاشا نہ سیکھو † (3 الف) ایک دوسری جگہ لکھا ھے—"کچھ لوگ کہتے ھیں کہ شودر شو کے سمان ھیں اِسلئے شودر کے نکٹ ویدوں کا پاٹھ نہیں ھونا چاھیے ." † (15 الف) ایسے براھمن پرش کے لئے جنکا براھمن استریوں سے سمبندھ ھے وسشٹھ نیچے لکھی سزا کا ودھان کرتے ھیں—"یدی کوئی شودر براھمن اِستری کے پریچے میں ھے تو راجا کو اُس شودر کو 'وِیرن' گھاس میں بندھوا کر زندہ آگ میں ڈلوا دینا چاھیئے . یدی کوئی ویشیہ براھمن اِستری کے پریچے میں ھے تو راجہ کو اُس ویشیہ کو 'لوھت' گھاس میں بندھواکر آگ میں ڈال دینا چاھیے اور یدی کوئی چھتریہ براھمن استری کے پریچے میں ھے تو راجہ کو اُسے 'سر' گھاس میں بندھوا کر آگ میں ڈال دینا چاھیے ."† (19 الف) وسشٹھ اِسمرتی کے نیائے کا یہ نمونہ ھے . ورن کے حساب سے سزا کی ماترا بھی بڑھتی جاتی ھے .† (19 الف) .

کچھ انشوں میں وسشٹھ اِسمرتی اور دوسری اِسمرتیوں سے ادھک کڑی ھے' کیونکہ وسشٹھ اِسمرتی میں چھتریوں کو سزا دینے کا جو ودھان ھے وہ اُس سے پہلے کبھی کسی اِسمرتی نے نہیں دیا . اِسمیں براھمنوں کا درجہ بہت اُونچا کر دیا گیا . اِس چیز کو ادھک صفائی سے سمجھنے کے

---

* **Kane.** p. 58

† 22—वसिष्ठ संहिता—अनु० एम० दत्त, सफ़ा 764, 765, 771, 772, 802, 803, 810.

وسشٹھ سنگھتا—انو. ایم. این دت' صفہ 764, 765, 771, 772, 802, 803, 810

लिये वसिष्ठ स्मृति के एक दूसरे विधान पर ध्यान दीजिये उसमें लिखा है—"ब्राह्मण का धन अपहरण करके अपराधी के रोंगटे खड़े हो जाने चाहियें. उसे भाग कर राजा के पास जाना चाहिये और उससे कहना चाहिये 'मैं चोर हूँ! राजन् मुझे सज़ा दीजिये' राजा को तब उसे उदुम्बर लकड़ी का बना हुआ हथियार देना चाहिये जिससे वह अपने आपको मार डाले. वेदों में लिखा है कि मौत के बाद वह अपराधी पवित्र हो जाता है." (अ० 18) ‡ जब तक राजा भी ब्राह्मण न हो तब तक इस तरह की व्यवस्था प्रचलित करना सहज नहीं. मनु और वसिष्ठ में ब्राह्मणों के बड़प्पन का आदि से अन्त तक बखान है और यह बड़प्पन उस समय तक बेमतलब है जब तक इसकी पीठ पर राजा का हाथ न हो. इससे यह ज़ाहिर होता है कि ये दोनों स्मृतियां ब्राह्मणों के शासन काल में ही लिखी गईं लेकिन श्री जायसवाल के मुताबिक़ 'वसिष्ठ संहिता' को ज़्यादा अहमियत नहीं मिली और वह आख़री नज़ीर के रूप में कभी नहीं क़बूल की गई. ❀

अब हम याज्ञवल्क्य स्मृति पर ग़ौर करेंगे.

पातञ्जलि ने अपने महाभाष्य में इस पर बहस की है कि ऊँची वर्ण की जातियों के बर्तनों में यदि कोई खाये तो वे बर्तन अपनी शुद्धता नहीं खोते. पातञ्जलि को पुष्यमित्र का समकालीन माना जाता है इसलिये कि पातञ्जलि ने अपने महाभाष्य में पुष्यमित्र के अश्वमेध यज्ञ की चरचा की है. (महाभाष्य 3, 2-123.) पाणिनि ने अपने व्याकरण में एक जगह लिखा है—शूद्राणाम् अनिर् सितानाम्' (2-4-10) अर्थात् 'ऐसे शूद्र जो अलहदा नहीं किये गये.' पातञ्जलि इसकी व्याख्या करते हुए लिखता है कि ऐसे शूद्र जो अलग नहीं किये गये अनिर्वासित कहलाते हैं और वह आर्यावर्त की सीमा का भी उल्लेख करता है। किन्तु यह भी लिखता है कि इस सीमा में सक और यवन भी रहते हैं. तब अनिर्वासित से मतलब यह होगा कि आर्य निवास से जो निर्वासित नहीं. और आर्य-निवास क्या है? आर्य गावों में रहते हैं, घोशों (गोचर भूमि) में रहते हैं, नगरों में रहते हैं और सम्बन्ध (वैश्यपुरी) में रहते हैं. और इन निवासों में चांडाल और डोम भी रहते हैं. * किन्तु इनका शुमार आर्यावर्त में नहीं है. इससे तात्पर्य यह निकला कि अनिर्वासित वे लोग हैं जो यज्ञ में आहुति देने में शामिल हैं किन्तु पातञ्जलि रजक (धोबी) और तन्तुवाई (जुलाहा) को भी अनिर्वासित मानता है. इसका अर्थ यह हुआ कि जिन लोगों के खाने के बाद बर्तन धोकर रख लिए जाते

لئے وسشٹھ اِسمرتی کے ایک دوسرے ودھان پر دھیان دیجئے اُسمیں لکھا ہے—"براہمن کا دھن اپہرن کر کے اپرادھی کے رونگٹے کھڑے ہو جانے چاہیئں اُسے بھاگ کر راجہ کے پاس جانا چاہیئے اور اُس سے کہنا چاہیئے' میں چور ہوں راجن! مجھے سزا دیجیئے' راجہ کو تب اُسے اُدمبر لکڑی کا بنا ہوا ہتھیار دینا چاہیئے جس سے وہ اپنے آپ کو مار ڈالے. ویدوں میں لکھا ہے کہ موت کے بعد وہ اپرادھی پوتر ہو جاتا ہے." (18 الف) ‡ جب تک راجہ بھی براہمن نہ ہو تب تک اِس طرح کی ویوستھا پرچلت کرنا سہج نہیں. منو اور وسشٹھ میں براہمنوں کے بڑپن کا آدی سے انت تک بکھان ہے اور یہ بڑپن اُس سمے تک بے مطلب ہے جب تک اسکی پیٹھ پر راجہ کا ہاتھ نہ ہو. اِس سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ یہ دونوں اسمرتیاں براہمنوں کے شاسن کال میں ہی لکھی گئیں. لیکن شری جیسوال کے مطابق 'وسشٹھ سنگھتا' کو زیادہ اہمیت نہیں ملی اور وہ آخری نظیر کے روپ میں کبھی نہیں قبول کی گئی. ❀

اب ہم یاگیہ ولکیہ اِسمرتی پر غور کرینگے.

پاتنجلی نے اپنے مہابھاشیہ میں اِس پر بحث کی ہے کہ اُونچی ورن کی جاتیوں کے برتنوں میں یدی کوئی کھائے تو وہ برتن اپنی شدھتا نہیں کھوتے. پاتنجلی کو پوشیہ متر کا سمکالین مانا جاتا ہے اِسلئے کہ پاتنجلی نے اپنے مہابھاشیہ میں پوشیہ متر کے اشومیدھ یگیہ کی چرچا کی ہے. (مہابھاشیہ 3'2-123). پانِنی نے اپنے ویاکرن میں ایک جگہہ لکھا ہے—"شودرا نام انِرستا نام' (2-4-10) ارتھات ایسے شودر جو علیحدہ نہیں کئے گئے' پاتنجلی اِسکی ویاکھیا کرتے ہوئے لکھتا ہے کہ ایسے شودر جو آریہ ورت سے الگ نہیں کئے گئے انرواست' کہلاتے ہیں اور وہ آریہ ورت کی سیما کا بھی اُللیکھ کرتا ہے. کنتو یہ بھی لکھتا ہے کہ اِس سیما میں سک اور یون بھی رہتے ہیں. تب انرواست سے مطلب یہ ہوگا کہ آریہ نواس سے جو نرواست نہیں. اور آریہ نواس کیا ہے؟ آریہ گاؤں میں رہتے ہیں' گھوشوں (گوچر بھومی) میں رہتے ہیں' نگروں میں رہتے ہیں اور سمبندھ (ویشیہ پوری) میں رہتے ہیں. اور اِن نواسوں میں چانڈال اور ڈوم بھی رہتے ہیں.* کنتو اِنکا شمار آریہ ورت میں نہیں ہے. اس سے تاتپریہ یہ نکلا کہ انرواست وے لوگ ہیں جو یگیہ میں آہوتی دینے میں شامل ہیں. کنتو پاتنجلی رجک (دھوبی) اور تنتوبائی (جولاہا) کو بھی انرواست مانتا ہے. اسکا ارتھ یہ ہوا کہ جن لوگوں کے کھانے کے بعد برتن دھو کر رکھ لئے جاتے

‡ वसिष्ठ संहिता, सफा-808 وسشٹھ سنگھتا صفہ

❀ Jagnavalkya-oq cit 66.

* स्मृतियों के अनुसार चांडाल और डोम नगर की सीमा के बराबर रहते हैं—लेखक.

*اسمرتی کے انوسار چانڈال اور ڈوم نگر کی سیما کے برابر رہتے ہیں—لیکھک.

हैं वे अनिर्वासित हुए और जिनके खाने के बाद बर्तन अशुद्ध होकर फेंक दिये जाते हैं वे निर्वासित समझे जाते थे.

इससे यह जाहिर होता है कि आर्यनिवास में रहने वाले आर्य कहलाते थे. इसलिये शूद्र भी आर्य थे क्योंकि उनके भोजन करने पर आर्य अपने बर्तन फेंक नहीं देते थे. केवल वे लोग जिनकी औलादें आज अन्त्यज कहलाती हैं आर्य नहीं समझे जाते थे. इसका अर्थ यह हुआ कि शूद्र हालांकि द्विज नहीं थे, फिर भी आर्य थे. कौटिल्य भी इसी विचार का था. मनु ने भी कहीं यह नहीं लिखा कि शूद्र अनार्य हैं. फिर मनु के अनुसार सक और यवन भी शूद्र हैं. पातञ्जलि शूद्रों को डोम से ऊँचा समझता है. उन्हें 'अनिर्वासित' मानता है. पातञ्जलि ने शूद्रों को ये सुविधायें उस समय दीं जब मनु शूद्रा और यवनों के विरुद्ध गरज रहे थे. पातञ्जलि की इस विवेचना से यह पता चलता है कि धोबियों के समान कुछ जातियाँ पहले पवित्र समझी जाती थीं, किन्तु बाद में उन्हें पतित समझा जाने लगा. ‡ अहिन्दू यवन अनिर्वासित हो सकते हैं यह विचार आज ध्यान में भी नहीं लाया जा सकता. इससे इस बात का समर्थन होता है कि जातियों और उपजातियो की भिन्न भिन्न काल में भिन्न भिन्न अवस्था रही है.

هیں، وہ انرواست ہوئے اور جنکے کھانے کے بعد برتن اشدھ ہو کر پھینک دئے جاتے ہیں وہ نرواست سمجھے جاتے تھے.

اِس سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ آریہ نواس میں رہنے والے آریہ کہلاتے تھے. اِس لئے شودر بھی آریہ تھے کیونکہ اُن کے بھوجن کرنے پر آریہ اپنے برتن پھینک نہیں دیتے تھے. کیول وے لوگ جنکی اولادیں آج انتیج کہلاتی ہیں آریہ نہیں سمجھے جاتے تھے. اِسکا ارتھ یہ ہوا کہ شودر، حالانکہ دوئج نہیں تھے، پھر بھی آریہ تھے. کوٹلیہ بھی اِسی وچار کا تھا. منو نے بھی کہیں یہ نہیں لکھا کہ شودر اناریہ ہیں. پھر منو کے انوسار سک اور یون بھی شودر ہیں. پاتنجلی شودروں کو ڈوم سے اُونچا سمجھتا ہے. اُنہیں 'انرواست' مانتا ہے. پاتنجلی نے شودروں کو یہ سویدھائیں اُس سمے دیں جب منو شودروں اور یونوں کے وِرودھ گرج رہے تھے. پاتنجلی کی اِس وویچنا سے یہ پتہ چلتا ہے کہ دھوبیوں کے سمان کچھ جاتیاں پہلے پوتر سمجھی جاتی تھیں، کنتو بعد میں انہیں پتت سمجھا جانے لگا. ‡ اہندو یون انرواست ہو سکتے ہیں، یہ وچار آج دھیان میں نہیں لایا جا سکتا. اِس سے اس بات کا سمرتھن ہوتا ہے کہ جاتیوں اور اُپ جاتیوں کی بھن بھن کال میں بھن بھن اوستھا رہی ہے.

‡ यह संहिता धोबियों को पतित वर्ण का समझती है—लेखक.

‡ یہ سنہتا دھوبیوں کو پتت ورن کا سمجھتی ہے—لیکھک.

भाषा का सवाल

भाई ओ० शंकर

हिन्दी और उर्दू की तरक़्क़ी का अपना एक इतिहास है. इसको समझने के लिये हमें हिन्दी और उर्दू के जनम पर विचार करना होगा. आरम्भ में हिन्दी और उर्दू में अन्तर नहीं था. सं० 1902 तक हिन्दी को ही उर्दू के नाम से पुकारा जाता था. 'वली' हिन्दी को ही अपनी भाषा कहते थे. 'मीर' ने अपनी ज़बान को हिन्दी बताते हुए कहा था—

क्या जानूं लोग कहते हैं,
किसको सरूरे – क़ल्ब।
आया नहीं है लफ़्ज़ यह,
हिन्दी ज़बां के बीच ॥

पर उर्दू भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सैयद इंशा अल्ला ख़ाँ ने कहा है—अमीं दानद कि मुवाए फ़साहत न मादने बलाग़त कि ज़बाने शाँ मशहूर ब उर्दूस्त, सिवाये बादशाह हिन्दुस्तान कि ताजे फ़साहत बर्सरए मी जेबद, चन्द अमीर व मसाहिबे शाँ, व चन्द ज़ने क़ाबिल, अज़ क़िस्म बेगम व ख़ानम व कस्बी हस्तदं—हर लफ़्ज़े कि दरीहां इस्तेमाल याफ़्त ज़बाने उर्दू शुद, न ईं कि, हर कस कि दर शाहजेहानाबाद मी बाशद, हस्ब गुफ़्तगू कुनद मौतबिर बाशद. अगर चुनीं बाशद साकिनाने मुग़लपुरा च तक़सीर करदा अन्द कि ज़बाने एशां मायूब व ख़िलाफ़ उर्दू शुमुर्दा शवद, [दरिया-ए-लताफ़त, दुरे दाना शिकम्मे, सफ़ा 64]

अर्थात्—ऐसे सज्जनों को नहीं मालूम कि उस भाषा के जिसे उर्दू कहते हैं, सौन्दर्य्य लालित्य का उद्गम स्थान स्वयं हिन्दुस्तान के सम्राट हैं, जिनके सिर पर उर्दू भाषा की ओजस्विता का मुकुट शोभा देता है. उनके कतिपय व विशेष सेवक व उनके राज भवन की स्त्रियाँ, जिनमें बेगमें व अन्य घरों की स्त्रियाँ व क़स्बियां शामिल हैं, जिन शब्दों का इस्तेमाल करती हैं, वही उर्दू भाषा है. शाहजहानाबाद का हर बाशिन्दा जो कुछ कहे वह ज़बान के लिहाज़ से मुस्तनद नहीं समझा जा सकता. यदि ऐसा न होता तो मुग़लपुरा के निवासियों की भाषा को दूषित व उर्दू के ख़िलाफ़ क्यों समझा जाता ?

'दरिया-ये-लताफ़त' एक प्रसिद्ध किताब है. मौलाना अब्दुल हक़ साहब ने इस किताब के सम्बन्ध में कहा है, "उर्दू ज़बान के क़वायद, मुहावरात और रोज़मर्रह के मुताल्लिक़ इससे पहले कोई किताब नहीं लिखी गई थी

بھاشا کا سوال

بھائی . او . شنکر

ھندی اور اُردو کی ترقی کا اپنا ایک اِتہاس ھے . اِس کو سمجھنے کے لئے ھمیں ھندی اور اُردو کے جنم پر وچار کرنا ھوگا . آرمبھ میں ھندی اور اُردو میں انتر نہیں تھا . سن 1902 تک ھندی کو ھی اُردو کے نام سے پکارا جاتا تھا . 'ولی' ھندی کو ھی اپنی بھاشا کہتے تھے . 'میر' نے اپنی زبان کو ھندی بتاتے ھوئے کہا تھا—

کیا جانوں لوگ کہتے ھیں'
کس کو سرور قلب .
آیا نہیں ھے لفظ یہ'
ھندی زباں کے بیچ .

پر اُردو بھاشا کی اُتپتی کے سمبندھ میں سید اِنشااللہ خاں نے کہا ھے—زمیں داند کہ موائے فصاحت نہ معدن بلاغت' کہ زبان شاں' مشہور بہ اردوست' سوائے بادشاہ ھندستان کہ تاج فصاحت بروئے می زیبد' چند امیر و مصاحب شاں' و چند زن قابل' از قسم بیگم و خانم وکسبی ھستند—ھر لفظے کہ دریں‌ہا استعمال یافت زبان اُردو شد . نہ ایں کہ ھر کس کہ درشاہجہاں آباد می باشد' حسب گفتگو کند معتبر باشد . اگر چنیں باشد ساکنان مغل‌پورہ چہ تقسیر کردہ اند کہ زبان ایشاں معیوب و خلاف اُردو شمردہ شود . [دریائے لطافت' در دانہ شکمے' صفحہ 64]

ارتھات—ایسے سجنوں کو نہیں معلوم کہ اُس بھاشا کے جسے اُردو کہتے ھیں' سوندریہ لالتیہ کا اُدگم استھان سوئم ھندستان کے سمراٹ ھیں' جن کے سر پر اُردو بھاشا کی اُوجسوتا کا مکٹ شوبھا دیتا ھے . اُن کے کتپئے و وشیش سیوک و اُن کے راج بھون کی "ستریاں' جنمیں بیگمیں و انیہ گھروں کی اِستریاں و کسبیاں شامل ھیں' جن شبدوں کا استعمال کرتی ھیں' وھی اُردو بھاشا ھے . شاھجہاں‌آباد کا ھر باشندہ جو کچھ کہے وہ زبان کے لحاظ سے مستند نہیں سمجھا جاسکتا . یدی ایسا نہ ھوتا تو مغل‌پورہ کے نواسیوں کی بھاشا کو دوشت و اُردو کے خلاف کیوں سمجھا جاتا ؟

'دریائے لطافت' ایک پرسدھ کتاب ھے . مولانا عبدالحق صاحب نے اس کتاب کے سمبندھ میں کہا ھے' "اُردو زبان کے قواید' محاورات اور روزمرہ کے متعلق اس سے پہلے کوئی کتاب نہیں لکھی گئی تھی

और अजीब बात यह है कि इसके बाद भी कोई किताब इस पाये की नहीं लिखी गयी. जो लोग उर्दू ज़बान का मुहक़्क़िक़ान: मुताला करना चाहते हैं, या उसकी सर्फ़ नह्व या लुग़ात पर कोई मुहक़्क़िक़ान: तालीफ़ करना चाहते हैं, उनके लिए इनका मुताला ज़रूरी ही नहीं बल्कि नागुज़ीर है." सैयद इंशा अल्ला ख़ाँ से ख़ुलासा सर सैयद अहमद ख़ाँ ने अपनी पुस्तक 'आसारुस्सनादीद' में कहा है—"जब-कि शाहजहाँ बादशाह ने सन् 1648 में शहर शाहजहानाबाद आबाद किया तो हर मुल्कों के लोगों का मज्मा हुआ. इस ज़माने में फ़ारसी ज़बान और हिन्दी भाषा बहुत मिल गई और बाज़ फ़ारसी लफ़्ज़ों में और अक्सर भाषा के लफ़्ज़ों में ब सबब कसरत इस्तेमाल के तग़य्युर व तब्दीली हो गई. ग़रज़ कि लश्कर बादशाही और उर्दूये मुअल्ला में इन दोनों ज़ुबानों की तरकीब से नई ज़ुबान पैदा हो गई और इसी सबब से ज़ुबान का उर्दू नाम हुआ. फिर कसरत इस्तेमाल से लफ़्ज़ ज़बान का महज़ूफ़ होकर इस ज़बान को उर्दू कहने लगे."

इन अवतरणों से प्रकट हो जाता है कि उर्दू का जनम शाहजहाँ के समय हुआ है, पर उर्दू भाषा का शुरु का नाम हिन्दी ही था. हिन्दी को हिन्दू मुसलमान दोनों की मिलवां भाषा का द्योतक माना जाता था. अमीर ख़ुसरो, आतिश, इंशा, जुरअत इत्यादि ने अपनी रचनाओं में उर्दू के लिये हिन्दी शब्द का ही प्रयोग किया है. इस बात को सभी उर्दू इतिहास लेखकों ने भी स्वीकार कर लिया है. 'उर्दू-ए-क़दीम' 'तारीख़ नस्र उर्दू' इत्यादि ग्रन्थों के विद्वान् लेखकों ने बहुत छान बीन के बाद यह साबित कर दिया है कि उर्दू का शुरु का नाम हिन्दी है.

अब देखिए, हरिडत पद्मसिंह शर्मा ने अपनी 'हिन्दी, उर्दू, और हिंदुस्तानी' नामक पुस्तक में लिखा है—"इस हिन्दी नाम की सृष्टि हिन्दुओं ने नहीं की, और न इन्होंने प्रचार ही किया है, हिन्दू लेखकों ने तो इसके लिए सर्वत्र भाषा शब्द का ही प्रयोग किया है. भाषा के लिये हिन्दी शब्द के सर्व प्रथम नामकरण का सारा श्रेय मुसलमान लेखकों और कवियों को ही दिया जा सकता है. हिन्दुओं का इसमें ज़रा भी हाथ नहीं."

अत: यह मानना होगा कि यद्यपि यहाँ के साधारण लोगों में एक ऐसी भाषा या ज़बान मौजूद थी जिसमें वे एक दूसरे को समझ सकते थे पर उसका 'हिन्दी' नामकरण हिन्दुओं ने नहीं किया. हिन्दी और उर्दू दोनों प्राय: एक सी भाषा का नाम था. दोनों में विशेष अन्तर नहीं था. उर्दू को हिन्दी कहते ही थे. आतिश साहब उर्दू के लिए हिन्दी शब्द का प्रयोग किया करते थे और उनका प्रसिद्ध शैर है—

मतलब की मेरे यार,
न समझे तो क्या अजब।

اور عجیب بات یہ ہے کہ اِس کے بعد بھی کوئی کتاب اس پایہ کی نہیں لکھی گئی . جو لوگ اُردو زبان کا محققانہ مطالعہ کرنا چاہتے ہیں' یا اس کی صرف نحو یا لغت پر کوئی محققانہ تالیف کرنا چاہتے ہیں' اُن کے لئے اُن کا مطالعہ ضروری ہی نہیں بلکہ ناگزیر ہے ." سید اِنشااللہ خاں سے خلاصہ سر سید احمد خاں نے اپنی پستک 'آثارالصنادید' میں کہا ہے—"جب کہ شاہجہاں بادشاہ نے سن 1648 میں شہر شاہجہاں‌آباد آباد کیا تو ہر ملکوں کے لوگوں کا مجمع ہوا . اُس زمانہ میں فارسی زبان اور ہندی بھاشا' بہت مل گئی اور بعض فارسی لفظوں میں اور اکثر بھاشا کے لفظوں میں بہ سبب کثرت استعمال کے تغیر و تبدیلی ہوگئی . غرض کہ لشکر بادشاہی اور اُردوئے معلا میں اِن دونوں زبانوں کی ترکیب سے نئی زبان پیدا ہوگئی اور اِسی سبب سے زبان کا اُردو نام ہوا . پھر کثرت استعمال سے لفظ زبان کا محذوف ہوکر اِس زبان کو اُردو کہنے لگے ."

اِن اوترنوں سے پرکٹ ہو جاتا ہے کہ اُردو کا جنم شاہجہاں کے سمے ہوا ہے' پر اُردو بھاشا کا شروع کا نام ہندی ہی تھا . ہندی کو ہندو مسلمان دونوں کی ملواں بھاشا کا دیوتک مانا جاتا تھا . امیر خسرو' آتش' اِنشا' جرئت اِتیادی نے اپنی رچناؤں میں اُردو کے لئے ہندی شبد کا ہی پریوگ کیا ہے . اِس بات کو سبھی اُردو اِتہاس لیکھکوں نے بھی سوئیکار کرلیا ہے . اُردوئے قدیم' تاریخ نسب اُردو' اتیادی گرنتھوں کے ودوان لیکھکوں نے بہت چھان‌بین کے بعد یہ ثابت کردیا ہے کہ اُردو کا شروع کا نام ہندی ہے .

اب دیکھئے' پنڈت پدم سنگھ شرما نے اپنی 'ہندی اُردو اور ہندستانی' نامک پستک میں لکھا ہے—"اس ہندی نام کی سرشٹی ہندوؤں نے نہیں کی' اور نہ انھوں نے پرچار ہی کیا ہے' ہندو لیکھکوں نے تو اس کے لئے سروتر بھاشا شبد کا ہی پریوگ کیا ہے . بھاشا کے لئے ہندی شبد کے سرو پرتھم نامکرن کا سارا شریئے مسلمان لیکھکوں اور کویؤں کو ہی دیا جاسکتا ہے . ہندوؤں کا اس میں ذرا بھی ہاتھ نہیں ."

اتہ یہ ماننا ہوگا کہ یدیپی یہاں کے سادھارن لوگوں میں ایک ایسی بھاشا یا زبان موجود تھی جس میں وے ایک دوسرے کو سمجھ سکتے تھے پر اُس کا 'ہندی' نامکرن ہندوؤں نے نہیں کیا . ہندی اور اُردو دونوں پرایہ ایک سی بھاشا کا نام تھا . دونوں میں وشیش انتر نہیں تھا . اُردو کو ہندی کہتے ہی تھے . آتش صاحب اُردو کے لئے ہندی شبد کا پریوگ کیا کرتے تھے اور ان کا پرسدھ شعر ہے—

مطلب کی میرے یار'
نہ سمجھے تو کیا عجب .

सब जानते हैं तुर्की की,
हिन्दी ज़ुबां नहीं ॥

यहाँ हिन्दी उर्दू पर्य्यायवाची शब्द हैं. इस शेर से यह भी साफ़ हो जाता है कि यह जन-साधारण हिन्दुस्तानी की ज़बान थी पर ज्यादातर तुर्की लोग इसे न समझ पाते थे. इसलिये पहले हिन्दी और उर्दू में कोई भेद हम नहीं पाते. अमीर ख़ुसरो को हिन्दी वाले खड़ी बोली का पहला कवि मानते हैं, और उर्दू कविता का आरम्भ तो उनसे होता ही है. दोनों उन्हें अपना पहला कवि मानते हैं, उनकी एक ही कविता को अपनी अपनी कहते हैं. डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने सातवें बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति के पद से भाषण देते हुए कहा था—"हिन्दी और उर्दू, चाहे उनकी उत्पत्ति और विकास जिस क्रम और जिस रीति से हुआ हो, दो भिन्न भाषायें नहीं हैं. इसका अकाट्य प्रमाण जिसे मुसलमान लोग उर्दू भाषा कहते हैं उसका पुराना रूप है. उर्दू के बड़े से बड़े हिमायती यही कह सकते हैं कि उर्दू की पैदाइश हिन्दुस्तान में मुसलमानी बादशाहत क़ायम होने पर हुई. अब उस समय के लेखक की भाषा पर ग़ौर करें. बहुत पीछे जाने की जरूरत नहीं. मुसलमानी राज्य स्थापित होने पर सैकड़ों वर्ष के बाद के मशहूर लेखक अमीर ख़ुसरो की कविताओं को लीजिये और विचार कीजिये कि उनकी भाषा आज की खड़ी बोली से किस प्रकार अलहदा है. अमीर ख़ुसरो ने अनपढ़ चम्मों के लिए यह कविता लिखी थी—

औरों की चौपहरी बाजे,
चम्मों की अठपहरी।
बाहर के कोई आये नहीं,
आये सारे शहरी ॥

"इसे देखने से पता लगेगा कि आज की हिन्दी और उस समय की उर्दू में बहुत मतभेद नहीं है......इसलिये यह कह देना कि कुछ अरबी फ़ारसी शब्दों के मिलावट से ही एक नई और स्वतंत्र भाषा पैदा हो गई मुनासिब नहीं है."

दूसरे देशों के मुसलमानों के साथ सम्पर्क होने के कारण उनकी संस्कृति, सभ्यता, भाषा और उनके साहित्य का प्रभाव हमारी संस्कृति, भाषा और साहित्य पर पड़ने लगा. अरबी, फ़ारसी के अनेक शब्द, रचना-शैलियां और वाक्य-विन्यास भी हिन्दी भाषा में रायज हो गये. हिन्दी के आदि प्राप्त ग्रन्थ 'पृथ्वीराज रासो' में अरबी फ़ारसी के शब्द हैं. तुलसी और सूर की रचनाओं में भी अरबी और फ़ारसी के शब्द आये हैं. इसी तरह उर्दू में भी संस्कृत तथा प्राकृत के बहुत से शब्दों का समावेश हो गया. उर्दू के प्रसिद्ध कोष 'फरहंगे आसफ़िया' में कुल 54 हजार शब्द हैं, जिनमें 32 हजार हिन्दी के ही शब्द हैं. फरहंग वाले ने अपनी

سب جانتے ھیں ترکی کی'
ھندی زباں نہیں ۔

یہاں ھندی اُردو پریائیواچی شبد ھیں ۔ اِس شعر سے یہ بھی صاف ھو جاتا ھے کہ یہ جن سادھارن ھندستانی کی زبان تھی پر زیادہتر ترکی لوگ اِسے نہ سمجھ پاتے تھے ۔ اس لئے پہلے ھندی اور اُردو میں کوئی بھید ھم نہیں پاتے ۔ امیر خسرو کو ھندی والے کھڑی بولی کا پہلا کوی مانتے ھیں' اور اُردو کویتا کا آرمبھ تو اُن سے ھوتا ھی ھے ۔ دونوں اُنھیں اپنا پہلا کوی مانتے ھیں' اُن کی ایک-ھی کویتا کو اپنی اپنی کہتے ھیں ۔ ڈاکٹر راجیندر پرساد نے ساتویں بہار پرادیشک ھندی ساھتیہ سمیلن کے سبھاپتی کے پد سے بھاشن دیتے ھوئے کہا تھا—"ھندی اور اُردو' چاھے اُن کی اُتپتی اور وکاس جس کرم اور جس ریتی سے ھوا ھو' دو بھن بھاشائیں نہیں ھیں ۔ اِس کا اکاٹیہ پرمان جسے مسلمان لوگ اُردو بھاشا کہتے ھیں اُس کا پرانا روپ ھے ۔ اُردو کے بڑے سے بڑے حمایتی یہی کہ سکتے ھیں کہ اُردو کی پیدایش ھندستان میں مسلمانی بادشاھت قایم ھونے پر ھوئی ۔ اب اُس سمے کے لیکھک کی بھاشا پر غور کریں ۔ بہت پیچھے جانے کی ضرورت نہیں ۔ مسلمانی راجیہ استھاپت ھونے پر سیکڑوں ورش کے بعد مشہور لیکھک امیر خسرو کی کویتاؤں کو لیجئے اور وچار کیجئے کہ اُن کی بھاشا آج کی کھڑی بولی سے کس پرکار علیحدہ ھے ۔ امیر خسرو نے انپڑھ چموں کے لئے یہ کویتا لکھی تھی—

"اوروں کی چوپہری باجے'
چموں کی اٹھ پہری ۔
باھر سے کوئی آئے نہیں'
آئے سارے شہری ۔

"اسے دیکھنے سے پتہ لگیگا کہ آج کی ھندی اور اس سمے کی اُردو میں بہت مت-بھید نہیں ھے......اِس لئے یہ کہ دینا کہ کچھ عربی فارسی شبدوں کے ملاوٹ سے ھی ایک نئی اور سوتنتر بھاشا پیدا ھوگئی مناسب نہیں ھے ۔"

دوسرے دیشوں کے مسلمانوں کے ساتھ سمپرک ھونے کے کارن اُن کی سنسکرتی' سبھیتا' بھاشا اور اُن کے ساھتیہ کا پربھاؤ ھماری سنسکرتی' بھاشا اور ساھتیہ پر پڑنے لگا ۔ عربی' فارسی کے انیک شبد' رچنا شیلیاں اور واکیہ ونیاس بھی ھندی بھاشا میں رائج ھوگئے۔ ھندی کے آدی پراپت گرنتھ 'پرتھوی راج راسو' میں عربی فارسی کے شبد ھیں ۔ تلسی اور سور کی رچناؤں میں بھی عربی اور فارسی کے شبد آئے ھیں۔ اِسی طرح اُردو میں بھی سنسکرت تتھا پراکرت کے بہت سے شبدوں کا سماویش ھوگیا ۔ اُردو کے پرسدھ کوش 'فرھنگ آصفیہ' میں کل 54 ھزار شبد ھیں' جن میں 32 ھزار ھندی کے ھی شبد ھیں۔ فرھنگ والے نے اپنی

भूमिका में खुद मान लिया है कि उर्दू में 32 हजार हिन्दी के ही शब्द हैं. 22 हजार के लगभग ऐसे शब्द हैं जो विदेशी भाषाओं से निकले हुए माने जाते हैं. पण्डित सुन्दरलाल जी ने अपने 'हिन्दी, उर्दू या हिन्दुस्तानी' शीर्षक लेख में कहा है कि अंग्रेजों के आने के पहले हिन्दुओं को यह डर नहीं था कि 'आवश्यकता' की जगह 'जरूरत' लिख दिया गया तो हिन्दू-संस्कृति मिट जायगी, और मुसलमानों को यह डर नहीं था कि 'जरूरत' की जगह 'आवश्यकता' आ गया तो इस्लाम खतरे में पड़ जायेगा. यह वह समय था जब कि सचमुच उदार हिन्दू मुसलमानों को राम और रहीम में फ़र्क़ नज़र न आता था, जबकि रहीम ने अपना 'मदन-शतक' 'श्रीगणेशायनम:' से शुरू किया था, जबकि जहांगीर के जमाने में अहमद ने सामुद्रिक शास्त्र पर अपनी किताब 'श्री गणेशायनम:' से शुरू की थी, जबकि अहमदुल्लाह दक्खिनी ने नायिका भेद पर अपनी पुस्तक के सबके ऊपर लिखा था 'श्री राम जी सहाय', 'अत: सरस्वती जी की स्तुति', जबकि याक़ूब खां ने 'रस-भूषण' लिखने से पहले सबसे ऊपर 'श्री गणेश जी', 'श्री सरस्वती जी', 'श्री राधाकृष्ण जी', 'श्री गौरीशंकर जी' को नमस्कार किया था, जबकि ग़ुलाम नबी रसलिन ने अपनी दोनों पुस्तकों के शुरू में ही 'श्रीगणेशायनम:' लिखा था. ......इस तरह सैकड़ों हिन्दी विद्वान अपनी रचनाओं को 'बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम' से शुरू करते थे."

अंग्रेजों के आने के बाद वातावरण में काफी तब्दीली हुई. मुग़ल काल में जो आबोहवा थी, बदली. हमारी भाषा और उनकी जबान अलग अलग होने लगीं. अंग्रेज राज-नीतिज्ञ यह समझते हैं कि हमारी फूट उनकी रोटी है और अपनी रोटी के लिए फूट डालनी शुरू की. अगर हम कहें कि हम में फूट डालने के लिए फ़ोर्ट विलियम कॉलेज बना तो मुबालग़ा नहीं हो सकता. सर चार्ल्स उड के शिक्षा सम्बन्धी मसविदे से, जो सन् 1854 में पास हुआ था, देशी भाषा के माध्यम द्वारा शिक्षा का प्रबन्ध अवश्य हुआ, पर उससे हम में फूट भी फैली. हम एक से दो हुए. जॉन गिलक्राइस्ट ने दो हिन्दी के विद्वानों और दो उर्दू के विद्वानों को बुलाकर आदेश दिया कि अपनी अपनी भाषा में पुस्तकें लिखें. जॉन गिलक्राइस्ट ने यह आदेश उस समय दिया था जब हिन्दी वाले यह नहीं मानते थे कि लिपि भेद अथवा कुछ विदेशी शब्द आ जाने से उर्दू दूसरी भाषा हो सकती है और उर्दू वाले लिपि भेद अथवा देशज शब्द आ जाने से हिन्दी को दूसरी भाषा समझते थे. यहां तक कि रानी केतकी की कहानी को, उसके फ़ारसी लिपि में लिखी जाने पर भी, हिन्दी साहित्य में स्थान मिला. 'रानी केतकी की कहानी' से ही इन दोनों भाषाओं की कहानी-कला का विकास होता है. 'रानी केतकी की कहानी' उसी समय

بھومکا میں خود مان لیا ہے کہ اُردو میں 32 ہزار ہندی کے ہی شبد ہیں۔ 22 ہزار کے لگ بھگ ایسے شبد ہیں جو ودیشی بھاشاؤں سے نکلے ہوئے مانے جاتے ہیں۔ پنڈت سندرلال جی نے اپنے 'ہندی' اُردو یا ہندستانی' شیرشک لیکھ میں کہا ہے کہ انگریزوں کے آنے کے پہلے ہندوؤں کو یہ ڈر نہیں تھا کہ 'آوشیکتا' کی جگہ 'ضرورت' لکھ دیا گیا تو ہندو سنسکرتی مٹ جائیگی' اور مسلمانوں کو یہ ڈر نہیں تھا کہ 'ضرورت' کی جگہ 'آوشیکتا' آگیا تو اِسلام خطرے میں پڑ جائیگا . یہ وہ سمے تھا جب کہ سچ مچ اُدار ہندو مسلمانوں کو رام اور رحیم میں فرق نظر نہ آتا تھا' جب کہ رحیم نے اپنا 'مدن شتک' 'شری گنیش آیہ نمہ' سے شروع کیا تھا' جب کہ جہانگیر کے زمانہ میں احمد نے سا-ودرک شاستر پر اپنی کتاب 'شری گنیش آیہ نمہ 'سے شروع کی تھی' جب کہ احمد اللہ دکھنی نے نایکہ بھید پر اپنی پستک کے سب کے اوپر لکھا تھا 'شری رام جی سہائے' 'اتہ سرسوتی جی کی استوتی .' جب کہ یعقوب خاں نے 'رس بھوشن' لکھنے سے پہلے سب سے اوپر 'شری گنیش جی' 'شری سرسوتی، جی' شری رادھا کرشن جی' 'شری گوری شنکر جی' کو نمسکار کیا تھا' جب کہ غلام نبی اِسلن نے اپنی دونوں پستکوں کے شروع میں ہی 'شری گنیش آیہ نمہ' لکھا تھا.....اِس طرح سیکڑوں ہندی ودوان اپنی رچناؤں کو 'بسم اللہ الرحمان الرحیم' سے شروع کرتے تھے ."

انگریزوں کے آنے کے بعد واتاورن میں کافی تبدیلی ہوئی . منل کال میں جو آب و ہوا تھی' بدلی . ہماری بھاشا اور اُن کی زبان الگ الگ ہونے لگیں . انگریز راج نیتگیہ یہ سمجھتے ہیں کہ ہماری پھوٹ اُن کی روٹی ہے اور اپنی روٹی کے لئے پھوٹ ڈالنی شروع کی . اگر ہم کہیں کہ ہم میں پھوٹ ڈالنے کے لئے فورٹ ولیم کالج بنا تو مبالغہ نہیں ہوسکتا . سر چارلس اُڈ کے شکشا سمبندھی مسودے سے' جو سن 1854 میں پاس ہوا تھا' دیشی بھاشا کے مادھیم دوارا شکشا کا پربندھ اوشیہ ہوا' پر اُس سے ہم میں پھوٹ بھی پھیلی . ہم ایک سے دو ہوئے . جان گلکرایسٹ نے دو ہندی کے ودوانوں اور دو اُردو کے ودوانوں کو بلاکر آدیش دیا کہ اپنی اپنی بھاشا میں پستکیں لکھیں. جان گلکرایسٹ نے یہ آدیش اُس سمے دیا تھا جب ہندی والے یہ نہیں مانتے تھے کہ لپی بھید اتھوا کچھ ودیشی شبد آجانے سے اُردو دوسری بھاشا ہو سکتی ہے اور نہ اُردو والے لپی بھید اتھوا دیشج شبد آجانے سے ہندی کو دوسری بھاشا سمجھتے تھے . یہاں تک کہ رانی کیتکی کی کہانی کو' اُس کے فارسی لپی میں لکھی جانے پر بھی' ہندی ساہتیہ میں استھان ملا . 'رانی کیتکی کی کہانی' سے ہی اِن دونوں بھاشاؤں کی کہانی کا وکاس ہوتا ہے . 'رانی کیتکی کی کہانی' اُس سمے

लिखी गई थी जिस समय गिलक्राइस्ट ने हिन्दी और उर्दू में अलग अलग रचना करने की आज्ञा दी थी. इसके बाद हिन्दी के विद्वानों ने विदेशी शब्दों का बहिष्कार किया, और उर्दू के विद्वानों ने देशज शब्दों का. हिन्दी और उर्दू अलग अलग भाषायें हो गई. गिलक्राइस्ट की ही छत्रछाया में हिन्दी उर्दू संघर्ष का श्रीगणेश हुआ. अंग्रेजों ने हिन्दू और और मुसलमानों में फूट डालने का प्रयास भाषा के द्वारा भी किया. वे जानते थे कि बाह्य अनेक रूपता के होते हुए भी दोनों में कैसी समानता है. यही समानता भारतीय एकता का मौलिक आधार थी. यही कारण था कि उन्होंने एकता की शृङ्खलायें तोड़ डालीं. संस्कृत के पण्डित और अरबी के आलिम भाषा का नेतृत्व करने लगे. अरबी फ़ारसीदाँ आलिमों की मेहरबानी से उर्दू में अरबी फ़ारसी के मुशकिल शब्दों और संस्कृतज्ञों की कृपा से हिन्दी में क्लिष्ट शब्दों की भरमार होने लगी. थोड़े ही दिनों में दोनों भाषायें बहुत अलग जा पड़ीं.

शुरू में अंग्रेज़ों ने उर्दू को प्रोत्साहन देना आरम्भ किया. उर्दू कोर्ट की भाषा थी और कोर्ट की भाषा उनके शब्दों में 'सबसे अधिक फ़ैशनेबिल' मानी जाती है. अंग्रेज़ों का यह काम हिन्दी पर कुठाराघात सा हुआ. उस समय की हिन्दी की संकटमय अवस्था का वर्णन करते हुए बाबू बाल-मुकुन्द गुप्त ने दुख के साथ कहा है—"जो लोग नागरी अक्षर सीखते थे, वह फ़ारसी अक्षर सीखने पर विवश हुए और हिन्दी भाषा हिन्दी न रह कर उर्दू बन गई. हिन्दी उस भाषा का नाम रहा जो टूटी फूटी चाल पर देवनागरी अक्षरों में लिखी जाती थी."

'प्रजाहितैषी', 'सुधाकर,' 'ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका' आदि ने हिन्दी की रक्षा करने के लिए एक आन्दोलन चलाया पर इन पत्र-पत्रिकाओं की भाषा ध्यान से देखने से साफ़ हो जाता है कि उनका नजरिया संस्कृतमय था. राजा लक्ष्मण प्रसाद सिंह ने आगे बढ़कर यह कहा कि हिन्दी में संस्कृत के शब्द बहुत आते हैं, उर्दू में अरबी-फ़ारसी के. कुछ आवश्यक नहीं है कि अरबी फ़ारसी के शब्दों के बिना हिन्दी न बोली जाय, और न हम उस भाषा को हिन्दी कहते हैं जिनमें अरबी फ़ारसी के शब्द भरे हों.' उधर उर्दू को अंग्रेजी सरकार ने प्रोत्साहन दिया और इधर यूरोपियन ईसाई पादरियों ने राजा लक्ष्मण सिंह और उनके साथियों की अरबी फ़ारसी के शब्दों को हटाकर उनकी जगह संस्कृत शब्द रखने के प्रयास को सहायता पहुँचाई.

सौभाग्य से हिन्दी और उर्दू दोनों के विद्वानों ने अंग्रेज़ों की चाल समझ ली. सर सैयद अहमद, मौलाना सग़ीर आदि ने उर्दू को हिन्दी के निकट लाने की कोशिश की, और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनके लेखक मण्डल ने हिन्दी को उर्दू के नज़दीक पहुँचाने की कोशिश की. सन् 1903

لکھی گئی جس سمے گلکرایسٹ نے ہندی اور اُردو میں الگ الگ رچنا کرنے کی آگیاں دی تھی ۔ اس کے بعد ہندی کے ودوانوں نے ودیشی شبدوں کا بہشکار کیا' اور اُردو کے ودوانوں نے دیشج شبدوں کا ۔ ہندی اور اُردو الگ الگ بھاشائیں ہوگئیں ۔ گلکرایسٹ کی ہی چھتر چھایا میں ہندی اُردو سنگھرش کا شری گنیش ہوا ۔ انگریزوں نے ہندو اور مسلمانوں میں پھوٹ ڈالنے کا پریاس بھاشا کے دوارا بھی کیا ۔ وے جانتے تھے کہ واہیہ انیک روپتا کے ہوتے ہوئے بھی دونوں میں کیسی سمانتا ہے ۔ یہی سمانتا بھارتیہ ایکتا کا مولک آدھار تھی ۔ یہی کارن تھا کہ انھوں نے ایکتا کی شرنکھلائیں توڑ ڈالیں ۔ سنسکرت کے پنڈت اور عربی کے عالم بھاشا کا نیترتو کرنے لگے ۔ عربی فارسی داں عالموں کی مہربانی سے اُردو میں عربی فارسی کے مشکل شبدوں اور سنسکرتگیوں کی کرپا سے ہندی میں کلشٹ شبدوں کی بھرمار ہونے لگی ۔ تھوڑے ہی دنوں میں دونوں بھاشائیں بہت الگ جا پڑیں ۔

شروع میں انگریزوں نے اُردو کو پروتساہن دینا آرمبھ کیا ۔ اُردو کورٹ کی بھاشا تھی اور کورٹ کی بھاشا انکے شبدوں میں 'سب سے ادھک فیشن ایبل' مانی جاتی ہے ۔ انگریزوں کا یہ کام ہندی پر کٹھاراگھات سا ہوا ۔ اس سمے کی ہندی کی سنکٹمئے اوستھا کا ورنن کرتے ہوئے بابو بال مکند گپت نے دکھ کے ساتھ کہا ہے—"جو لوگ ناگری اکشر سیکھتے تھے' وہ فارسی اکشر سیکھنے پر وِوش ہوئے اور ہندی بھاشا ہندی نہ رہ کہ اُردو بن گئی ۔ ہندی اس بھاشا نام رہا جو ٹوٹی پھوٹی چال پر دیوناگری اکشروں میں لکھی جاتی تھی ۔"

'پرجاہتیشی' سدھا کر' گیان پردایِنی پتریکا' آدی نے ہندی کی رکشا کرنے کے لئے ایک آندولن چلایا پر ان پتر پتریکاؤں کی بھاشا دھیان سے دیکھنے سے صاف ہو جاتا ہے کہ اُنکا نظریہ سنسکرتمے تھا ۔ راجہ لکشمن پرساد سنگھ نے آگے بڑھکر یہ کہا کہ ہندی میں سنسکرت کے شبد بہت آتے ہیں' اُردو میں عربی فارسی کے ۔ کچھ آوشیک نہیں ہے کہ عربی فارسی کے شبدوں کے بنا ہندی نہ بولی جائے' اور نہ ہم اس بھاشا کو ہندی کہتے ہیں جسمیں عربی فارسی کے شبد کے بھرے ہوں ۔ اُدھر اُردو کو انگریزی سرکار نے پروتساہن دیا اور اِدھر یوروپین عیسائی پادریوں نے راجہ لکشمن سنگھ اور اُنکے ساتھیوں کی عربی فارسی کے شبدوں کو ہٹا کر اُنکی جگہہ سنسکرت شبد رکھنے کے پریاس کو سہایتا پہونچائی ۔

سوبھاگیہ سے ہندی اور اُردو دونوں کے ودوانوں نے انگریزوں کی چال سمجھ لی ۔ سرسید احمد' مولانا صغیر آدی نے اردو کو ہندی کے نکٹ لانے کی کوشش کی' اور بھارتیندو ہریشچندر اور اُنکے لیکھک منڈل نے ہندی کو اُردو کے نزدیک پہونچانے کی کوشش کی ۔ سنہ 1903

में पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी भाषा और उसका साहित्य' शीर्षक लेख में लिखा—"उर्दू कोई भिन्न भाषा नहीं. वह भी हिन्दी ही है. उसमें चाहे जितने फ़ारसी और अरबी के शब्द भर दें पर जब तक उसकी क्रियायें हिन्दी की ही बनी रहती हैं, उसकी रचना हिन्दी ही के व्याकरण का अनुसरण करती है. चाहे कोई जो कुछ कहे वली और सौदा के काव्यों में जो भाषा है वही तुलसीदास और बिहारी के काव्यों में है. 'मेरा बाप' के स्थान पर 'बाप मेरा' अथवा 'आपके हुक्म से' के स्थान में 'बहुक्म आपके' करने से कहीं भाषा दूसरी हो सकती है ?......लिखने की प्रणाली को बदलने अथवा उसमें किसी अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग करने से मुख्य भाषा के अस्तित्व में कदापि अन्तर नहीं आ सकता.' पर गिलक्राइस्ट ने जिस फूट का 'इन्जेक्शन' दिया था उसका ज़हर, धीरे धीरे हम में से बहुतों के नस नस में फैलता गया और अब भी फैल रहा है. हाँ, उन विद्वानों और आलिम फ़ाज़िलों को सफलता नहीं मिली. पंडित भीमसेन शर्मा ने हिन्दी लेखकों को सलाह दी—"संस्कृत भाषा के अक्षय भण्डार में शब्दों की न्यूनता नहीं है. हमको चाहिये कि अपनी भाषा की पूर्ति संस्कृत के सहारे यथोचित करें. जिन लोगों को जिन विशेष प्रचलित अन्य भाषान्तर्गत शब्दों के स्थान में उनसे सर्वथा भिन्न संस्कृत शब्दों का व्यवहार करने की रुचि नहीं हैं उन्हें उसी से मिलते हुए संस्कृत शब्दों का वहाँ प्रयोग करना चाहिये." नासिक साहब ने उर्दू वालों के लिये कड़ा नियम बनाकर कहा—"उसूल इसका यह रक्खा गया है कि फ़ारसी और अरबी अल्फ़ाज़ जहाँ तक मुफ़ीद मिलें, हिन्दी अलफ़ाज न बाँधो (तज़किरा जलवये खिज़्र, हिस्सा दोयम सफ़ा 392).

इसका परिणाम यह हुआ कि हिंदी में तत्सम शब्दों का प्रयोग बढ़ने लगा. विदेशी शब्दों का बहिष्कार किया गया. शिकायत के स्थान पर 'शिक्षा यत्न' दुश्मन के स्थान पर 'दु:शमन', चश्मा को चक्ष्मा', लालटेन के स्थान पर 'हस्तकाचदीपिका' आदि आदि के प्रयोग होने लगे. इसी तरह, पण्डित पद्मसिंह शर्मा के शब्दों में, "उर्दू वाले नये नये मुअर्रब और मुसर्रफ़ अलफ़ाज़ तक से गुरेज़ करते हैं और उनके बजाय अरबी और फ़ारसी की मुस्तनद लुग़ात से इस्तलाहात नौ बनौ से अपने तर्ज़े तहरीर में ऐसा तसौना पैदा करते हैं कि उनका एक एक फ़िक़रा ग़ालिब के बाज़ मुश्किल मिसरे की पेचीदगी पर भी ग़ालिब आ जाता है." गिलक्राइस्ट ने हमें जिस ज़हर का घूँट पिलाया उसका परिणाम देखकर रे० एडविन ग्रविस ने अपने 'हिन्दी और नागरी प्रचारिणी सभा' शीर्षक लेख में लिखा है—"भाषा की समस्या का विचार छोड़कर इतना ज़रूर मानना पड़ेगा कि बाज़ारू भाषा की अवस्था चाहे जो हो लेकिन शिक्षित

میں پنڈت مہاویر پرساد دویدی نے 'ھندی بھاشا اور اُسکا ساھتیہ' شیرشک لیکھ میں لکھا— "اُردو کوئی بھن بھاشا نہیں۔ وہ بھی ھندی ھی ھے۔ اسمیں چاھے جتنے فارسی اور عربی کے شبد بھردیں پر جب تک اُسکی کریائیں ھندی کی ھی بنی رھتی ھیں' اُسکی رچنا ھندی ھی کے ویاکرن کا انوسرن کرتی ھے۔ چاھے کوئی جو کچھ کہے ولی اور سوداؔ کے کاویوں میں جو بھاشا ھے وھی تلسی‌داس اور بہاری کے کاویوں میں ھے۔ میرا باپ' کے استھان پر 'باپ میرا' اتھوا 'آپکے حکم سے' کے استھان میں 'بحکم آپکے' کرنے سے کہیں بھاشا دوسری ھوسکتی ھے؟ ... لکھنے کی پرنالی کو بدلنے اتھوا اُسمیں کسی انیہ بھاشا کے شبدوں کا پریوگ کرنے سے مکھیہ بھاشا کے استتو میں کداپی انتر نہیں آسکتا! پر گلسکرائسٹ نے جس پھوٹ کا 'انجیکشن' دیا تھا اسکا زھر دھیرے دھیرے ھم میں سے بہوتوں کے نس نس میں پھیلتا گیا اور اب بھی پھیل رھا ھے۔ ھاں' اُن ودانوں اور عالم فاضلوں کو سپھلتا نہیں ملی۔ پنڈت بھیم‌سین شرما نے ھندی لیکھکوں کو صلاح دی— "سنسکرت بھاشا کے اکشے بھنڈار میں شبدوں کی نیونتا نہیں ھے۔ ھمکو چاھیے کہ اپنی بھاشا کی پورتی سنسکرت کے سہارے یتھوچت کریں۔ جن لوگوں‌کو جن وشیش‌پرچلت انیہ بھاشانترگت شبدوں کے استھان میں اُن سے سروتھا بھن سنسکرت شبدوں کا ویوھار کرنے کی رچی نہیں ھے اُنھیں اُسی سے ملتے ھوئے سنسکرت شبدوں کا وھاں پریوگ کرنا چاھئے۔" ناسک صاحب نے اُردو والوں کے لئے کڑا نیم بنا کر کہا— "اُصول اُسکا یہ رکھا گیا ھے کہ فارسی اور عربی الفاظ جہاں تک مفید ملیں' ھندی الفاظ نہ باندھو (تذکرہ جلوۂ خزر' حصہ دویم صفحہ 392)۔

اُسکا پرینام یہ ھوا کہ ھندی میں تتسم شبدوں کا پریوگ بڑھنے لگا۔ ودیشی شبدوں کا بہشکار کیا گیا۔ شکایت کے استھان پر 'شکشا یتن' دشمن کے استھان پر 'دہشمن' چشمہ کو 'چکشمہ'، لالٹین کے استھان پر 'ھستکا چدیپکا' آدی آدی کے پریوگ ھونے لگے۔ اُسی طرح' پنڈت پدم سنگھ شرما کے شبدوں میں "اُردو والے نئے نئے معرب اور مصرف الفرظ تک سے گریز کرتے ھیں اور اُنکے بجائے عربی اور فارسی کی مستند لغات سے اصطلاحات نوبنو سے اپنے طرز تحریر میں ایسا توصنع پیدا کرتے ھیں کہ اُنکا ایک ایک فقرہ غالب کے بعض مشکل مصرعہ‌کی پیچدگی پر بھی غالب آجاتا ھے۔" گلسکرایسٹ نے ھمیں جس زھر کا گھونٹ پلایا اُسکا پرینام دیکھکر رے۔ ایڈون گروس نے اپنے 'ھندی اور ناگری پرچارنی سبھا' شیرشک لیکھ میں لکھا ھے— "بھاشا کی سمسیا کا وچار چھوڑ کر اتنا ضرور ماننا پڑیگا کہ بازارو بھاشا کی اوستھا جو ھو لیکن شکشت

लोगों के लिए हिंदी और उर्दू दोनों अलग अलग भाषायें हैं. इसलिये नागरी लिपि में मुद्रित हुई शब्दों से भरी भाषा हिंदी की जगह न पढ़ाई जाकर इन दोनों भाषाओं की शिक्षा का पृथक् प्रबन्ध करना चाहिये."

इस तरह हमें ग़ुलाम बनाये रखने के लिए हिन्दी और उर्दू को पूरी तरह अलग करने की कोशिशें होती गईं. आज़ादी प्राप्त करने के बाद अब हिन्दी और उर्दू को फिर से एक जगह लाना जरूरी है. उनके बाहरी फ़रक को ख़तम कर के एकरूपता लानी है. हिन्दी महज़ हिन्दूओं की सम्पत्ति नहीं, उर्दू भी मुसलमानों की महज़ अपनी नहीं. पंद्रहवें बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष की हैसियत से राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह ने कहा था—"अब तक हिन्दी सत्यनारायण की कथा की पंजीरी पाती रही, उसे अब मौलूद शरीफ़ की जलेबियां भी चखनी होंगी." इसी तरह बिहार सरकार के भूतपूर्व शिक्षा सचिव डाक्टर सैयद महमूद साहब ने पटना में 'अंजुमन तरक़्क़ी' की नयी इमारत का संगे बुनियाद रखते वक्त कहा—"यह मुसलमानों की सख्त ग़लती है कि वह उर्दू को अपनी ज़बान कहते हैं. ऐसा करने से उर्दू को जो सारे मुलक की ज़बान है नुक़सान पहुँचा रहे हैं."

हिन्दी और उर्दू को हमें फिर गंगा और जमना का संगम बनाना है और नई त्रिवेणी की धारा बहाना है. यह काम हो कैसे? इसके लिये हिन्दी उर्दू के लेखकों को एक मञ्च पर जमा होना और एक दूसरे को समझना है—यानी एक भाषा का आदर्श पैदा करना है. टेक्स्ट बुक कमेटियों का सहयोग प्राप्त करके उस आदर्श को बच्चों तक पहुंचाना है. हमें मनोवृत्ति में परिवर्तन करना है.

لوگوں کے لئے ھندی اور اُردو دونوں الگ الگ بھاشائیں ھیں ۔ اسلئے ناگری لپی میں مدرت ھوئی شبدوں سے بھری بھاشا ھندی کی جگہہ نہ پڑھائی جاکر ان دونوں بھاشاؤں کی شکشا کا پرتھک پربندھ کرنا چاھئے ۔"

اِس طرح ھمیں غلام بنائے رکھنے کے لئے ھندی اور اُردو کو پوری طرح الگ کرنے کی کوششیں ھوتی گئیں ۔ آزادی پراپت کرنے کے بعد اب ھندی اور اُردو کو پھر سے ایک جگہہ لانا ضروری ھے ۔ انکے باھری فرق کو ختم کرکے ایکروپتا لانی ھے ۔ ھندی محض ھندؤں کی سمپتی نہیں' اُردو بھی مسلمانوں کی محض اپنی نہیں ۔ پندرھویں بہار پرادیشک ھندی ساھتیہ سمیلن کے سواگتادھیکش کی حیثیت سے راجہ رادھیکارمن پرساد سنگھ نے کہا تھا—"اب تک ھندی ستیہ‌نارائن کی کتھا کی پنجیری پاتی رھی' اُسے اب مولود شریف کی جلیبیاں بھی چکھنی ھونگی ۔" اسی طرح بہار سرکار کے بھوت پورو شکشا سچو ڈاکٹر سید محمود صاحب نے پٹنہ میں 'انجمن ترقی' کی نئی عمارت کا سنگ بنیاد رکھتے وقت کہا—"یہ مسلمانوں کی سخت غلطی ھے کہ وہ اُردو کو اپنی زبان کہتے ھیں ۔ ایسا کرنے سے اُردو کو' جو سارے ملک کی زبان ھے' نقصان پہونچا رھے ھیں ۔"

ھندی اور اُردو کو ھمیں پھر گنگا جمنا کا سنگم بنانا ھے اور نئی تروینی کی دھارا بہانا ھے ۔ یہ کام ھو کیسے ؟ اِسکے لئے ھندی اُردو کے لیکھکوں کو ایک منچ پر جمع ھونا اور ایک دوسرے کو سمجھنا ھے—یعنی ایک بھاشا کا آدرش پیدا کرنا ھے ۔ ٹیکسٹ بک کمیٹی کا سہیوگ پراپت کر کے اُس آدرش کو بچوں تک پہونچانا ھے ۔ ھمیں منوورتی میں پریورتن کرنا ھے ۔

प्रेम कुछ नहीं मांगता. बल्कि कुछ न कुछ देता रहता है. प्रेम दुख सहता है कभी नाराज़ नहीं होता और न कभी बदला लेता है. जहां प्रेम है, वहां भगवान भी है.

—महात्मा गांधी

پریم کچھ نہیں مانگتا بلکہ کچھ نہ کچھ دیتا رھتا ھے ۔ پریم دکھ سہتا ھے' کبھی ناراض نہیں ھوتا اور نہ کبھی بدلہ لیتا ھے ۔ جہاں پریم ھے' وھاں بھگوان بھی ھے ۔

—مہاتما گاندھی

शिवाजी की मज़हबी नीति

ख० सय्यद ए० एफ० एम० अब्दुल अली

औसत दरजे के पढ़े लिखे मुसलमान भाइयों का यह आम ख़याल है कि शिवाजी इसलाम का दुश्मन था और वह मुसलमानों का नामोनिशान मिटाकर भारत में शुद्ध हिन्दू बादशाहत क़ायम करना चाहता था. ¦शिवाजी के सम्बन्ध में जो कुछ मैंने जांच पड़ताल की है, उसमें मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि मुसलमान भाइयों की यह राय बिलकुल ग़लत है.'शिवाजी में मज़हबी तरफ़दारी बिलकुल नहीं थी और अगर उसे बादशाहत क़ायम करने में कामयाबी हासिल होती, तो उसकी बादशाहत ख़ालिस हिन्दुस्तानी होती जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों को यकसाँ अधिकार होते. उसकी बादशाहत मराठा बादशाहत होती जिसके झंडे के नीचे सब धर्म वाले अमन और मुहब्बत से रहते और जिसमें हिन्दू मुसलमानों का कोई फ़र्क़ न किया जाता.

आम तौर पर इतिहास लेखकों ने शिवाजी के बारे में तरह तरह की ग़लतफ़हमियां फैला रखी हैं. स्कूली इतिहास हमें सिखाता है कि शिवाजी हत्यारा और लुटेरा था, उसने दोस्ती का ढोंग रच कर अफ़ज़ल ख़ां की धोखे से हत्या की और वह मुसलमानों का दुश्मन था. शिवाजी ने अफ़ज़ल ख़ां की धोखे से हत्या की या नहीं इस सवाल पर अब भी कई रायें हैं. फ़र्ज़ कीजिये थोड़ी देर के लिये यह बात मान भी ली जाय कि शिवाजी ने ऐसा किया, तो भी उससे यह कैसे साबित हो सकता है कि शिवाजी मुसलमानों का नामोनिशान मिटा देना चाहता था या शुद्ध हिन्दू बादशाहत क़ायम करना चाहता था ?

शिवाजी की नीति तथा उसके चरित्र के सम्बन्ध में सब में प्रामाणिक (मुस्तनद) इतिहास लेखक काफ़ी ख़ां समझा जाता है. काफ़ी ख़ां का पिता शिवाजी का समकालीन था. काफ़ी ख़ां ख़ुद शिवाजी की मौत के 13 बरस बाद मुग़ल बादशाह के कर्मचारी की हैसियत से सूरत, अहमदनगर तथा महाराष्ट्र के कई स्थानों में रहा था. उसने अपनी मशहूर किताब 'शिवाजी की जीवनी' में अफ़ज़ल ख़ां की हत्या की घोर निन्दा की है, लेकिन शिवाजी के सम्बन्ध में उसने यह भी लिखा है कि—

"शिवाजी ने नये नये क़िले बनवाये. अगर एक तरफ़ उसने बीजापुर के राज्य में लूटपाट की तो दूसरी ओर

شواجی کی مذھبی نیتی

سورگیہ سید اے ایف ایم عبدالعلی

اوسط درجے کے پڑھے لکھے مسلمان بھائیوں کا یہ عام خیال ھے کہ شواجی اسلام کا دشمن تھا اور وہ مسلمانوں کا نام ونشان مٹاکر بھارت میں شدھ ھندو بادشاھت قایم کرنا چاھتا تھا۔ شواجی کے سمبندھ میں جو کچھ میں نے جانچ پڑتال کی ھے' اُس سے میں اس نتیجے پر پہونچا ھوں کہ مسلمان بھائیوں کی یہ رائے بالکل غلط ھے۔ شواجی میں مذھبی طرفداری بالکل نہیں تھی اور اگر اُسے بادشاھت قایم کرنے میں کامیابی حاصل ھوتی' تو اُسکی بادشاھت خالص ھندستانی ھوتی جسمیں ھندو اور مسلمان دونوں کو یکساں ادھیکار ھوتے۔ اُسکی بادشاھت مرآٹھا بادشاھت ھوتی جسکے جھنڈے کے نیچے سب دھرم والے امن اور محبت سے رھتے اور جسمیں ھندو مسلمانوں کا کوئی فرق نہ کیا جاتا۔

عام طور پر اِتہاس لیکھکوں نے شواجی کے بارے میں طرح طرح کی غلط فہمیاں پھیلا رکھی ھیں۔ اِسکولی اِتہاس ھمیں سکھاتا ھے کہ شواجی ھتیارا اور لٹیرا تھا' اُسنے دوستی کا ڈھونگ رچ کر افضل خاں کی دھوکے سے ھتیا کی اور وہ مسلمانوں کا دشمن تھا۔ شواجی نے افضل خاں کی دھوکے سے ھتیا کی یا نہیں اِس سوال پر اب بھی کئی رائیں ھیں۔ فرض کیجئے تھوڑی دیر کے لئے یہ بات مان بھی لی جائے کہ شواجی نے ایسا کیا' توبھی اُس سے یہ کیسے ثابت ھو سکتا ھے کہ شواجی مسلمانوں کا نام و نشان مٹا دینا چاھتا تھا یا شدھ ھندو بادشاھت قایم کرنا چاھتا تھا ؟

شواجی کی نیتی تتھا اُسکے چرتر کے سمبندھ میں سب میں پرامانک (مستند) اِتہاس لیکھک کافی خاں سمجھا جاتا ھے۔ کافی خاں کا پتا شواجی کا سمکالین تھا۔ کافی خاں خود شواجی کی موت کے 13 برس بعد مغل بادشاہ کے کرمچاری کی حیثیت سے صورت' احمد نگر تتھا مہاراشٹر کے کئی استھانوں میں رھا تھا۔ اُسنے اپنی مشہور کتاب 'شواجی کی جیونی' میں افضل خان کی ھتیا کی گھور نندا کی ھے' لیکن شواجی کے سمبندھ میں اُسنے یہ بھی لکھا ھے کہ—

"شواجی نے نئے نئے قلعے بنوائے۔ اگر ایک طرف اُسنے بیجا پور کے راجیہ میں لوٹ پاٹ کی تو دوسری اور

उसने अपने राज्य को बसाया भी. यह सही है कि वह तिजारती काफ़िलों को लूट लिया करता था, लेकिन साथ ही साथ यह भी सही है कि उसने अपने सैनिकों के लिये यह नियम बना दिया था कि वे जहां कहीं भी लूट मार करें वहाँ क़ुरान शरीफ़ की, मसजिदों की और किसी की बहू बेटियों की बेइज्ज़ती न करें. जब कभी क़ुरान शरीफ़ की कोई प्रति उसके हाथ में पड़ जाती तो वह उसे बड़ी इज्ज़त से रखता था और अपने किसी मुसलमान अनुयायी को भेंट दे देता था."

एक दूसरे मुसलमान इतिहास लेखक बशीरुद्दीन अहमद ने अपनी पुस्तक 'बीजापुर की तारीख़' में काफ़ी ख़ां के बयान की ताईद की है. उसने लिखा है—

"शिवाजी में बहुत से अच्छे गुण थे. मुसलमान इतिहास लेखकों का कहना है कि वह क़ुरान शरीफ़ की बड़ी इज्ज़त करता था. मसजिदों को वह पाक समझ कर उनका सम्मान करता था. स्त्रियों और बच्चों की तरफ़ उसका बर्ताव बेहद तारीफ़ के क़ाबिल रहा. शिवाजी का नाम हिन्दुस्तान के इतिहास में सदा अमर रहेगा."

बशीरुद्दीन अहमद ने अपनी इसी पुस्तक में आगे चल कर लिखा है—

"जिन लोगों ने शिवाजी के जीवन का अध्ययन (मुताला) किया है वह जानते हैं कि वह कैसा बुद्धिमान, बहादुर और मेहनती आदमी था. दूरन्देशी, क़ाबलियत, दरियादिली, बहादुरी, हिम्मत, मेहनत और मर्दानगी उसके क़ुदरती गुण थे. कुछ लोग उसे डाकू, लुटेरा और धोकेबाज़ कहते हैं; लेकिन उसकी ज़िन्दगी हमें कुछ और ही बताती है. उन दिनों लूटमार करना और आग लगा देना बड़ी मामूली सी बात थी. रही धोकेबाज़ी, सो जंग में कौन दुश्मन को धोका देना नहीं चाहता? शिष्ट भाषा में धोकेबाज़ी को ही कूटनीतिज्ञता कहते हैं. शिवाजी की बहादुरी की जितनी भी तारीफ़ की जाय, कम है. एक साधारण व्यक्ति होते हुए उसने मुग़ल सम्राट तथा आदिलशाही सुल्तान के नाक में दम कर दिया था. कभी वह आदिलशाही वालों से मिल कर मुग़लों के राज्य में लूट मार करने लगता था और कभी मुग़लों की ओर मिलकर बीजापुर के राज्य में लूट पाट मचा देता था. सच तो यह है कि वह जिधर जाता था, किसी को उससे टक्कर लेने की हिम्मत न पड़ती थी. 25 बरस तक उसने दोनों से लोहा लिया और सन् 1091 हिजरी यानी 1680 ईसवी में वह वीरों के लोक को कूच कर गया."

यह बात बड़ी मशहूर है कि शिवाजी रत्नागिरी ज़िले में वंकोट के निकट रहने वाले बाबा याक़ूत नामक एक मुसलमान फ़क़ीर का पक्का भक्त था. उसकी सेना ही में

اُسنے اپنے راجیہ کو بسایا بھی . یہ صحیح ھے کہ وہ تجارتی قافلوں کو لوٹ لیا کرتا تھا' لیکن ساتھ ھی ساتھ یہ بھی صحیح ھے کہ اُسنے اپنے سینکوں کے لئے یہ نیم بنا دیا تھا کہ وے جہاں کہیں بھی لوٹ مار کریں وھاں قران شریف کی' مسجدوں کی اور کسی کی بہو بیٹیوں کی بے عزتی نہ کریں . جب کبھی قران شریف کی کوئی پرتی اُسکے ھاتھ میں پڑجاتی تو وہ اُسے بڑی عزت سے رکھتا تھا اور اپنے کسی مسلمان انویائی کو بھینٹ دے دیتا تھا ."
اُسنے لکھا ھے—

ایک دوسرے مسلمان اِتہاس لیکھک بشیرالدین احمد نے اپنی پستک 'بیجاپور کی تاریخ' میں کافی خاں کے بیان کی تائید کی ھے . اُس نے لکھا ھے—

"شواجی میں بہت سے اچھے گن تھے . مسلمان اِتہاس لیکھکوں کا کہنا ھے کہ وہ قران شریف کی بڑی عزت کرتا تھا . مسجدوں کو وہ پاک سمجھکر اُنکا سمان کرتا تھا . استریوں اور بچوں کی طرف اُس کا برتاؤ بے حد تعریف کے قابل رھا . شواجی کا نام ھندستان کے اِتہاس میں سدا امر رھیگا ."

بشیر الدین احمد نے اپنی اِسی پستک میں آگے چل کر لکھا ھے—

"جن لوگوں نے شواجی کے جیون کا ادھین (مطالعہ) کیا ھے وہ جانتے ھیں کہ وہ کیسا بدھیمان' بہادر اور محنتی آدمی تھا . دوراندیشی' قابلیت' دریا دلی' بہادری' ھمت' محنت اور مردانگی اُسکے قدرتی گن تھے . کچھ لوگ اُسے ڈاکو' لٹیرا اور دھوکے باز کہتے ھیں؛ لیکن اُسکی زندگی ھمیں کچھ اور ھی بتاتی ھے . اُن دنوں لوٹ مار کرنا اور آگ لگا دینا بڑی معمولی سی بات تھی . رھی دھوکے بازی' سو جنگ میں کون دشمن کو دھوکا دینا نہیں چاھتا ؟ شِشٹ بھاشا میں دھوکے بازی کو ھی کوٹ نیتگیتا کہتے ھیں . شواجی کی بہادری کی جتنی بھی تعریف کی جائے کم ھے . ایک سادھارن ویکتی ھوتے ھوئے اُس نے مغل سمراٹ تتھا عادل شاھی سلطان کے ناک میں دم کردیا تھا . کبھی وہ عادل شاھی والوں سے ملکر مغلوں کے راجیہ میں لوٹ مار کرنے لگتا تھا اور کبھی مغلوں کی اُور ملکر بیجاپور کے راجیہ میں لوٹ پاٹ مچا دیتا تھا . سچ تو یہ ھے کہ وہ جدھر جاتا تھا' کسی کو اُس سے ٹکر لینے کی ھمت نہ پڑتی تھی . 25 برس تک اُسنے دونوں سے لوھا لیا اور سن 1091 ھجری یعنی 1680 عیسوی میں وہ ویروں کے لوک کو کوچ کر گیا ."

یہ بات بڑی مشہور ھے کہ شواجی رتناگری ضلع میں بنکوٹ کے نکٹ رھنے والے بابا یاقوت نامک ایک مسلمان فقیر کا پکا بھگت تھا . اُس کی سینا ھی میں

नहीं, बल्कि शासन विभाग में भी अच्छे अच्छे पदों पर अनेक मुसलमान कर्मचारी थे. उसके मुन्शी का नाम क़ाजी हैदर था. शराबी सम्भाजी के राजा होने पर उसने मराठों की नौकरी छोड़ कर मुग़लों की नौकरी कर ली थी और कुछ समय बाद वह मुग़ल साम्राज्य का प्रधान क़ाज़ी हो गया था.

स्वर्गीय श्री काशीनाथ तैलंग ने अपने एक लेख में लिखा था कि "ऐसा मालूम होता है कि जहाँ शिवाजी ने मन्दिरों, मठों आदि की रक्षा की थी, वहां उसने मसजिदों, पीरों, आदि को मिलने वाली सरकारी सहायता भी बन्द नहीं की थी." अपने इस कथन के समर्थन में उन्होंने कई यूरोपियन लेखकों का हवाला दिया है. इस निष्पक्ष विदेशी लेखकों की बात को मान लेने में इतिहास के विद्यार्थियों को किसी तरह का संकोच न करना चाहिए.

खुद औरंगजेब के शिवाजी के नाम लिखे हुए पांच पत्र अभी तक मौजूद हैं और सितारा के अजायबघर में पारसनीस के संग्रह में सुरक्षित हैं. इनमें से कई पत्र अफ़ज़ल खां के वध के पश्चात लिखे गये थे और इन सब पत्रों में औरंगजेब ने शिवाजी को 'मुतीउल इसलाम' अर्थात् इसलाम का आज्ञाकारी लिखा है. इन सब प्रमाणों के रहते हुए क्या कोई भी समझदार आदमी इस नतीजे पर पहुंच सकता है कि शिवाजी मुसलमानों से नफ़रत करता था, उन का नामोनिशान मिटा देना चाहता था और भारत में शुद्ध हिन्दू राज्य की स्थापना करना चाहता था ?

نہیں، بلکہ شاسن وبھاگ میں بھی اچھے اچھے پدوں پر انیک مسلمان کرمچاری تھے. اُس کے منشی کا نام قاضی حیدر تھا. شرابی سمبھا جی کے راجا ہونے پر اُس نے مراٹھوں کی نوکری چھوڑ کر مغلوں کی نوکری کرلی تھی اور کچھ سمئے بعد وہ مغل سامراجیہ کا پردھان قاضی ہو گیا تھا ۔

سورگیہ شری کاشی ناتھ تیلنگ نے اپنے ایک لیکھ میں لکھا تھا کہ "ایسا معلوم ہوتا ھے کہ جہاں شواجی نے مندروں، مٹھوں آدی کی رکشا کی تھی، وہیں اِس نے مسجدوں، پیروں آدی کو ملنے والی سرکاری سہائتا بھی بند نہیں کی تھی." اپنے اس کتھن کے سمرتھن میں اُنھوں نے کئی یوروپین لیکھکوں کا حوالہ دیا ھے ۔ اُن نشپکش ودیشی لیکھکوں کی بات کو مان لینے میں اِتہاس کے ودیارتھیوں کو کسی طرح کا سنکوچ نہ کرنا چاہیئے ۔

خود اورنگزیب کے شواجی کے نام لکھے ہوئے پانچ پتر ابھی تک موجود ھیں اور ستارا کے عجائب گھر میں پارس نیس کے سنگرہ میں سورکشت ھیں. اُنمیں سے کئی پتر افضل خاں کے بدھ کے پشچات لکھے گئے تھے اور اِن سب پتروں میں اورنگزیب نے شواجی کو 'مطیع الاسلام' اَرتھات اسلام کا آگیاں کاری لکھا ھے ۔ اِن سب پرمانوں کے رھتے ہوئے کیا کوئی بھی سمجھدار آدمی اِس نتیجے پر پہونچ سکتا ھے کہ شواجی مسلمانوں سے نفرت کرتا تھا، اُن کا نام و نشان مٹا دینا چاھتا تھا اور بھارت میں شدھ ھندو راجیہ کی اِستھاپنا کرنا چاھتا تھا ؟

"............मैं तो रामराज यानी दुनिया में ईश्वर के राज का सपना देखता हूँ. वही आज़ादी है. स्वर्ग में यह राज कैसा होगा, सो मैं नहीं जानता. बहुत दूर की चीज़ जानने की मुझे इच्छा भी नहीं है. अगर वर्तमान (हाल) दिल को काफ़ी अच्छा लगता हो, तो भविष्य (मुस्तक़बिल) उससे बहुत अलग नहीं हो सकता.

"इसलिये राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक (अख़लाक़ी) तीनों तरह की आज़ादी ही सच्ची आज़ादी है......"

—महात्मा गांधी

"..........میں تو رام راج یعنی دنیا میں ایشور کے راج کا سپنا دیکھتا ھوں ۔ وھی آزادی ھے ۔ سورگ میں یہ راج کیسا ہوگا، سو میں نہیں جانتا ۔ بہت دور کی چیز جاننے کی مجھے اچھا بھی نہیں ھے ۔ اگر ورتمان (حال) دل کو کافی اچھا لگتا ہو، تو بھوشیہ (مستقبل) اُس سے بہت الگ نہیں ہوسکتا ۔

"اِس لئے راج نیتک، آرتھک اور نیتک (اخلاقی) تینوں طرح کی آزادی ھی سچی آزادی ھے......"

—مہاتما گاندھی

आलमगीर का वसीयतनामा

श्री ज्ञानशंकर कृपाशंकर पंड्या

सम्राट आलमगीर भारत के जालिम बादशाहों में से एक गिना जाता है. लेकिन जहाँ एक ओर उसने अपने पिता शाहजहाँ को क़ैद में रखा और भाइयों को क़त्ल किया, वहाँ दूसरी ओर वह क़ुरबानी, सदाचार और कठोर जीवन की प्रतिमूर्ति समझा जाता है. यदि एक ओर वह जबरदस्त स्वेच्छाचारी था तो दूसरी ओर ग़रीबी और नम्रता से भरा हुआ. प्रजा की गाढ़ी कमाई का एक पैसा भी अपने स्वार्थ के लिये ख़र्च करने को वह पाप समझता था. टोपी सीकर और क़ुरान लिखकर वह अपना पेट पालता था. दुनिया के बड़े से बड़े सम्राटों में उसकी गिनती थी. उसका ख़ज़ाना हीरे जवाहरात से लबालब था. लेकिन नमक और बाजरे की रोटी ही पर वह अपना जीवन काटता था. वह अपनी सल्तनत को 'ख़ुदादाद' मानता था. मरने से पहले सम्राट आलमगीर ने जो वसीयत की है, उसे देखकर हम इस महान सम्राट के आख़री दिनों की मानसिक हालत को भली भांति समझ सकते हैं. वसीयत की धारायें ये हैं—

(1) बुराइयों में डूबा हुआ मैं गुनहगार, वली हज़रत हसन की दरगाह पर एक चादर चढ़ाना चाहता हूँ, क्योंकि जो शख़्स पाप की नदी में डूब गया है, उसे रहम और क्षमा के भंडार के पास जाकर क्षमा की भीक माँगने के सिवाय और क्या सहारा है. इस पाक काम के लिये मैंने अपनी कमाई का रुपया अपने बेटे मुहम्मद आज़म के पास रख दिया है. उससे लेकर यह चादर चढ़ा दी जाय.

(2) टोपियों की सिलाई करके मैंने चार रुपये दो आने जमा किये हैं. यह रक़म महालदार लाइलाही बेग के पास जमा है. इस रक़म से मुझ गुनहगार पापी का कफ़न ख़रीदा जाय.

(3) क़ुरान शरीफ़ की नक़ल करके मैंने तीन सौ पांच रुपये इकट्ठे किये हैं. मेरे मरने के बाद यह रक़म फ़क़ीरों में बाँट दी जाय. यह पाक पैसा है, इसलिये इसे मेरे कफ़न या किसी भी दूसरी ज़रूरी चीज़ पर न ख़र्च किया जाय.

(4) नेक राह को छोड़कर गुमराह हो जाने वाले लोगों को आगाह करने के लिये मुझे खुली जगह पर दफ़नाना और मेरा सर खुला रहने देना, क्योंकि उस महान शहन्शाह परवरदिगारे आलम के दरबार में जब कोई पापी नंगे सिर जाता है तो उसे ज़रूर दया आ जाती होगी.

عالمگیر کا وصیت‌نامہ

شری گیان شنکر کرپا شنکر پنڈیا

سمراٹ عالمگیر بھارت کے ظالم بادشاہوں میں سے ایک گنا جاتا ہے . لیکن جہاں ایک اور اس نے اپنے پتا شاہجہاں کو قید میں رکھا اور بھائیوں کو قتل کیا' وہاں دوسری اور وہ قربانی' سداچار اور کٹھور جیون کی پرتی مورتی سمجھا جاتا ہے . یدی ایک اور وہ زبردست سویچھاچاری تھا تو دوسری اور غریبی اور نمرتا سے بھرا ہوا . پرجا کی گاڑھی کمائی کا ایک پیسہ بھی اپنے سوارتھ کے لئے خرچ کرنے کو وہ پاپ سمجھتا تھا . ٹوپی سی کر اور قرآن لکھکر وہ اپنا پیٹ پالتا تھا . دنیا کے بڑے سے بڑے سمراٹوں میں اس کی گنتی تھی . اس کا خزانہ ہیرے جواہرات سے لبالب تھا . لیکن نمک اور باجرے کی روٹی ہی پر وہ اپنا جیون کاٹتا تھا . وہ اپنی سلطنت کو 'خداداد' مانتا تھا . مرنے سے پہلے سمراٹ عالمگیر نے جو وصیت کی ہے' اسے دیکھکر ہم اِس مہان سمراٹ کے آخری دنوں کی مانسک حالت کو بھلی بھانتی سمجھ سکتے ہیں . وصیت کی دھارائیں یہ ہیں—

(1) برائیوں میں ڈوبا ہوا میں گنہگار' ولی حضرت حسن کی درگاہ پر ایک چادر چڑھانا چاہتا ہوں' کیونکہ جو شخص پاپ کی ندی میں ڈوب گیا ہے' اُسے رحم اور چھما کے بھنڈار کے پاس جاکر چھما کی بھیک مانگنے کے سوائے اور کیا سہارا ہے . اِس پاک کام کے لئے میں نے اپنی کمائی کا روپیہ اپنے بیٹے محمد اعظم کے پاس رکھ دیا ہے . اُس سے لیکر یہ چادر چڑھا دی جائے .

(2) ٹوپیوں کی سلائی کرکے میں نے چار روپئے دو آنے جمع کئے ہیں . یہ رقم محالدار لاالٰہی بیگ کے پاس جمع ہے . اِس رقم سے مجھ گنہگار پاپی کا کفن خریدا جائے .

(3) قرآن شریف کی نقل کرکے میں نے تین سو پانچ روپئے اِکٹھے کئے ہیں . میرے مرنے کے بعد وہ رقم فقیروں میں بانٹ دی جائے . یہ پاک پیسہ ہے' اِس لئے اِسے میرے کفن یا کسی بھی دوسری ضروری چیز پر نہ خرچ کیا جائے .

(4) نیک راہ کو چھوڑکر گمراہ ہو جانے والے لوگوں کو آگاہ کرنے کے لئے مجھے کھلی جگہ پر دفنانا اور میرا سر کھلا رہنے دینا' کیونکہ اُس مہان شہنشاہ پروردگار عالم کے دربار میں جب کوئی پاپی ننگے سر جاتا ہے تو اُسے ضرور دیا آجاتی ہوگی .

(5) मेरी लाश को ऊपर से सफ़ेद खद्दर के कपड़े से ढक देना. चद्दर या छतरी नहीं लगाना, न गाजे बाजे के साथ जुलूस निकालना और न मौलूद करना.

(6) अपने कुटुम्बियों की मदद करना और उनकी इज़्ज़त करना. क़ुरान शरीफ़ की आयत है—प्राणिमात्र से प्रेम करो. मेरे बेटो! यही तुम्हें मेरी हिदायत है. यही पैग़म्बर का हुक्म है. इसका इनाम अगर तुम्हें इस जिन्दगी में नहीं तो अगली जिन्दगी में जरूर मिलेगा.

(7) अपने कुटुम्बियों के साथ मुहब्बत का बर्ताव करने के साथ साथ तुम्हें यह बात भी ध्यान में रखनी होगी कि उनकी ताक़त इतनी ज्यादा न बढ़ जाय कि उससे हुकूमत को ख़तरा हो जाय.

(8) मेरे बेटे! हुकूमत की बागडोर मजबूती से अगर पकड़े रहोगे तो तमाम बदनामियों से बच जाओगे.

(9) बादशाह को अपनी हुकूमत में चारों ओर दौरा करते रहना चाहिये. बादशाह को कभी एक मुक़ाम पर नहीं रहना चाहिये. एक जगह रहने से आराम तो जरूर मिलता है, लेकिन कई तरह की मुसीबतों का सामना करना पड़ता है.

(10) अपने बेटों पर कभी भूल कर भी एतबार न करना, न उनके साथ कभी नज़दीकी ताल्लुक़ रखना.

(11) हुकूमत के अन्दर होने वाली तमाम बातों की तुम्हें इत्तला रखनी चाहिये—यही हुकूमत की कुंजी है.

(12) बादशाह को हुकूमत के काम में जरा भी सुस्ती नहीं करनी चाहिये. एक लम्हे की सुस्ती सारी जिन्दगी की मुसीबत की बाइस बन जाती है.

यह है मुख़्तसिर में सम्राट आलमगीर का वसीयतनामा. इस वसीयतनामे की धाराओं को देखकर यह पता चलता है कि सम्राट को अपने अन्तिम दिनों में अपने पिता को क़ैद करने, अपने भाइयों को क़त्ल करने और अपनी स्वेच्छाचारिता पर दिली अफ़सोस और मलाल था.

इसी वसीयतनामे के मुताबिक़ औरंगाबाद के निकट खुल्दाबाद नामक छोटे से गाँव में, जो आलमगीर का मक़बरा बनाया गया, उसमें उसे सीधे सादे तरीक़े से दफ़न किया गया. उसकी क़ब्र कच्ची मिट्टी की बनाई गई, जिस पर आसमान के सिवाय कोई दूसरी छत नहीं रखी गई. क़ब्र के मुजाविर उसकी क़ब्र पर जब तब हरी दूब लगा देते हैं. इसी कच्चे मजार में पड़ा हुआ भारत का यह महान सम्राट रोज़े महशर के दिन तक अपने अल्लाह से रूबरू होने के इन्तज़ार में है.

(5) میری لاش کو اُوپر سے سفید کھدر کے کپڑے سے ڈھک دینا ، چدر یا چھتری نہیں لگانا' نہ گاجے باجے کے ساتھ جلوس نکالنا اور نہ مولود کرنا .

(6) اپنے کٹمبیوں کی مدد کرنا اور اُن کی عزت کرنا. قرآن شریف کی آیت ہے—پرانی ماتر سے پریم کرو . میرے بیٹو ! یہی تمہیں میری ہدایت ہے . یہی پیغمبر کا حکم ہے . اِس کا اِنعام اگر تمہیں اِس زندگی میں نہیں تو اگلی زندگی میں ضرور ملیگا .

(7) اپنے کٹمبیوں کے ساتھ محبت کا برتاؤ کرنے کے ساتھ ساتھ تمہیں یہ بات بھی دھیان میں رکھنی ہوگی کہ اُن کی طاقت اِتنی زیادہ نہ بڑھ جائے کہ اُس سے حکومت کو خطرہ ہوجائے .

(8) میرے بیٹے ! حکومت کی باگ‌ڈور مضبوطی سے اگر پکڑے رہوگے تو تمام بدنامیوں سے بچ جاؤگے .

(9) بادشاہ کو اپنی حکومت میں چاروں اُور دورہ کرتے رہنا چاہئے . بادشاہ کو کبھی ایک مقام پر نہیں رہنا چاہئے . ایک جگہ رہنے سے آرام تو ضرور ملتا ہے' لیکن کئی طرح کی مصیبتوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے .

(10) اپنے بیٹوں پر کبھی بھول‌کر بھی اعتبار نہ کرنا' نہ اُن کے ساتھ کبھی نزدیکی تعلق رکھنا .

(11) حکومت کے اندر ہونے والی تمام باتوں کی تمہیں اطلاع رکھنی چاہئے—یہی حکومت کی کنجی ہے .

(12) بادشاہ کو حکومت کے کام میں ذرا بھی سستی نہیں کرنی چاہئے . ایک لمحے کی سستی ساری زندگی کی مصیبت کی باعث بن جاتی ہے .

یہ ہے مختصر میں سمراٹ عالمگیر کا وصیت‌نامہ . اِس وصیت‌نامے کی دھاراؤں کو دیکھکر یہ پتہ چلتا ہے کہ سمراٹ کو اپنے انتم دنوں میں اپنے پتا کو قید کرنے' اپنے بھائیوں کو قتل کرنے اور اپنی سوئیچھاچاریتا پر دلی افسوس اور ملال تھا .

اِسی وصیت‌نامہ کے مطابق اورنگ‌آباد کے نکٹ خلدآباد نامک چھوٹے سے گاؤں میں' جو عالمگیر کا مقبرہ بنایا گیا' اس میں اُسے سیدھے سادے طریقے سے دفن کیا گیا . اُس کی قبر کچی مٹی کی بنائی گئی' جس پر آسمان کے سوائے کوئی دوسری چھت نہیں رکھی گئی . قبر کے مجاور اُس کی قبر پر جب تب ہری دوب لگا دیتے ہیں . اِسی کچے مزار میں پڑا ہوا بھارت کا یہ مہان سمراٹ روز محشر کے دن تک اپنے اللہ سے روبرو ہونے کے انتظار میں ہے .

अपने बेटे मुअज्जम शाह को अपने मरने से पहले जो ख़त लिखा, उसमें लिखा—

"बादशाहों को कभी आराम या ऐशोइशरत की ज़िन्दगी नहीं बितानी चाहिये. यह ग़ैर मर्दानगी की आदत ही मुल्कों और बादशाहों की बरबादी की वजह साबित हुई है. बादशाहों को अपनी हुकूमत में नशीली चीज़ों और शराब बेचने या पीने की कभी इजाज़त न देनी चाहिये. इससे रिआया का चरित्र नाश होता है. इस मद की आमदनी को उन्हें हराम समझना चाहिये."

अपने बनारस के सूबेदार के नाम एक ख़त में आलमगीर लिखता है—

"अपनी हिन्दू रिआया के साथ ज़ुल्म न करना. उनके साथ धार्मिक उदारता बरतना और उनकी धार्मिक भावनाओं का लिहाज़ करना."

आलमगीर मनुष्य मनुष्य के बीच के फ़र्क़ को अल्लाह की नज़रों में गुनाह समझता था. शाहजहाँ जब तख़्त पर था तो एक बार उसने आलमगीर से शिकायत की कि उसे शाहज़ादे की हैसियत से छोटे बड़े सब से एक तरह नहीं मिलना चाहिये. इस पर आलमगीर ने अपने बाप की हर तरह इज़्ज़त करते हुये जवाब दिया—

"लोगों के साथ मेरा बराबरी का बर्ताव इसलाम के उसूलों के मुताबिक़ है. इसलाम के पैग़म्बर ने कभी अपनी ज़िन्दगी में छोटे बड़े की तमीज़ नहीं की. ख़ुदा की नज़रों में सब इनसान बराबर हैं. इसलिये मैं आपकी आज्ञा मानने में अपने को लाचार पाता हूँ."

ऐसा था वह बादशाह जिस पर इतिहास ने एक काली चादर डाल रखी है और जिसके मुतािल्लिक़ आम पढ़े लिखे आदमी के दिल में ज़ुल्म की एक ख़ौफ़नाक तसवीर खिंची हुई है. जैसे जैसे जांच पड़ताल की तेज़ आँखें बीते ज़माने के परदे को हटाती जाती हैं, वैसे वैसे हमें सम्राट आलमगीर के जीवन के सुन्दर पहलू भी दिखाई दे रहे हैं.

"......सत्याग्रह एक ऐसी तलवार है जिसके सब तरफ़ धार है. उसे जैसे चाहो वैसे काम में लाया जा सकता है. काम में लाने वाला और जिस पर वह काम में लाई जाती है, दोनों उससे सुखी होते हैं. ख़ून न बहाकर भी वह बड़ी कारगर होती है. उस पर न तो कभी ज़ंग लगता है, और न कोई उसे चुरा ही सकता है......"

—महात्मा गांधी

اپنے بیٹے معظم شاہ کو اس نے مرنے کے پہلے جو خط لکھا اس میں لکھا—

"بادشاہوں کو کبھی آرام یا عیش و عشرت کی زندگی نہیں بتانی چاہئے. یہ غیر مردانگی کی عادت ہی ملکوں اور بادشاہوں کی بربادی کی وجہ ثابت ہوئی ہے. بادشاہوں کو اپنی حکومت میں نشیلی چیزوں اور شراب بیچنے یا پینے کی کبھی اِجازت نہ دینی چاہئے. اِس سے رعایا کا چرتر ناش ہوتا ہے. اِس مد کی آمدنی کو انہیں حرام سمجھنا چاہئے."

اپنے بنارس کے صوبیدار کے نام ایک خط میں عالمگیر لکھتا ہے—

"اپنی ہندو رعایا کے ساتھ ظلم نہ کرنا. اُن کے ساتھ دھارمک اُدارتا برتنا اور اُن کی دھارمک بھاوناؤں کا لحاظ کرنا."

عالمگیر منشیہ منشیہ کے بیچ کے فرق کو اللہ کی نظروں میں گناہ سمجھتا تھا. شاہجہاں جب تخت پر تھا تو ایک بار اس نے عالمگیر سے شکایت کی کہ اُسے شہزادے کی حیثیت سے چھوٹے بڑے سب سے ایک طرح نہیں ملنا چاہئے. اِس پر عالمگیر نے اپنے باپ کی ہر طرح عزت کرتے ہوئے جواب دیا—

"لوگوں کے ساتھ میرا برابری کا برتاؤ اِسلام کے اُصولوں کے مطابق ہے. اِسلام کے پیغمبر نے کبھی اپنی زندگی میں چھوٹے بڑے کی تمیز نہیں کی. خدا کی نظروں میں سب اِنسان برابر ہیں. اِس لئے میں آپ کی آگیاں ماننے میں اپنے کو لاچار پاتا ہوں."

ایسا تھا وہ بادشاہ جس پر اِتہاس نے ایک کالی چادر ڈال رکھی ہے اور جس کے متعلق عام پڑھے لکھے آدمی کے دل میں ظلم کی ایک خوفناک تصویر کھنچی ہوئی ہے. جیسے جیسے جانچ پڑتال کی تیز آنکھیں بیتے زمانے کے پردے کو ہٹاتی جاتی ہیں' ویسے ویسے ہمیں سمراٹ عالمگیر کے جیون کے سندر پہلو بھی دکھائی دے رہے ہیں.

"........ستیاگرہ ایک ایسی تلوار ہے جس کے سب طرف دھار ہے. اُسے جیسے چاہو ویسے کام میں لیا جاسکتا ہے. کام میں لانے والا اور جس پر وہ کام میں لائی جاتی ہے' دونوں اُس سے سکھی ہوتے ہیں. خون نہ بہاکر بھی وہ بڑی کارگر ہوتی ہے. اُس پر نہ تو کبھی زنگ لگتا ہے' اور نہ کوئی اُسے چرا ہی سکتا ہے........"

—مہاتما گاندھی

हमारी ख़ुराक में तरकारियों की जगह

श्रीमती शान्ता पांडे

हम हिन्दुस्तानियों के रोज़ के खाने में तरकारियों की एक खास जगह है. हमारी गृहदेवियाँ तरह तरह के साग सब्ज़ियों से भोजन को ज्यादा से ज्यादा लज़ीज़ और स्वादिष्ट बनाने की कोशिश करती हैं. पढ़े लिखे लोगों की भूक तो रोचक और लज़ीज़ तरकारियाँ देखकर ही जागती है. हम लोग तरकारियाँ स्वाद के लिहाज़ से ही खाते हैं और हम जानते भी नहीं कि ये तरकारियाँ हमारी पाचन शक्ति को दुरुस्त रखने की कितनी कोशिश करती हैं. इधर कुछ दिनों से हमने भोजन के अन्दर तरकारियों की अहमियत को समझना शुरू किया है पर अभी तक हमारे रोज़ के भोजन में तरकारियों को, उनकी अहमियत के लिहाज़ से, ठीक जगह नहीं मिली है.

अब नई नई खोजों की रोशनी में तरकारियां हमारे भोजन का महत्वपूर्ण अङ्ग बनती जा रही हैं. लोग यह जान गए हैं कि तरकारियों के अन्दर खनिज द्रव्य और विटेमिन होते हैं. यह भी लोग जान रहे हैं कि तरकारियों में स्टार्च (मैदा), शक्कर और थोड़ी मिक़दार में प्रोटीन और सेलुलोज़ भी होते हैं. मोटे तौर पर तरकारियां दो श्रेणियों में बांटी जा सकती हैं—

(१) वे तरकारियां जिनमें पानी का अंश ज्यादा है और स्टार्च कम, जैसे—टमाटर, गोभी, करमकल्ला, सहजन, सलाद, खीरा वग़ैरह.

(२) वे तरकारियाँ जिनमें स्टार्च और शकर अधिक मिक़दार में है, जैसे—आलू, शकरकन्द, गाजर, मटर, चुक़न्दर, कद्दू, पेठा, लौकी, कच्चा केला, वग़ैरह. स्वाद के लिहाज़ से भी तरकारियों का वर्गीकरण किया जा सकता है, कुछ तरकारियों में फ़ासफोरस (गन्धक) ज्यादा होता है, जिसके स्वाद को कुछ लोग पसन्द करते हैं और कुछ नहीं. तरकारियों का अधिक उपयोगी वर्गीकरण पौधों के जिस हिस्से से वे प्राप्त होती हैं, उसके लिहाज़ से किया जा सकता है जैसे—(१) फलियाँ—इनमें काफ़ी मिक़दार स्टार्च, शकर और चिकनाई की होती है. बड़े काम के खनिज द्रव्य और विटेमिन भी होते हैं और प्रोटीन भी थोड़ी मिक़दार में रहता है. फलियों में मटर और कई तरह की सेम, सोयाबीन, लोबिया आदि हैं.

ھماری خوراک میں ترکاریوں کی جگہ

شریمتی شانتا پانڈے

ہم ھندستانیوں کے روز کے کھانے میں ترکاریوں کی ایک خاص جگہ ھے ۔ ھماری گرہ دیویاں طرح طرح کے ساگ سبزیوں سے بھوجن کو زیادہ سے زیادہ لذیذ اور سوادشٹ بنانے کی کوشش کرتی ھیں ۔ پڑھے لکھے لوگوں کی بھوک تو روچک اور لذیذ ترکاریاں دیکھکر ھی جاگتی ھے ۔ ھم لوگ ترکاریاں سواد کے لحاظ سے ھی کھاتے ھیں اور ھم جانتے بھی نہیں کہ یہ ترکاریاں ھماری پاچن شکتی کو درست رکھنے کی کتنی کوشش کرتی ھیں ۔ ادھر کچھ دنوں سے ھم نے بھوجن کے اندر ترکاریوں کی اھمیت کو سمجھنا شروع کیا ھے پر ابھی تک ھمارے روز کے بھوجن میں ترکاریوں کو، انکی اھمیت کے لحاظ سے، ٹھیک جگہ نہیں ملی ھے ۔

اب نئی نئی کھوجوں کی روشنی میں ترکاریاں ھمارے بھوجن کا مہتو پورن انگ بنتی جا رھی ھیں ۔ لوگ یہ جان گئے ھیں کہ ترکاریوں کے اندر کھنج درویہ اور وٹیمن ھوتے ھیں ۔ یہ بھی لوگ جان رھے ھیں کہ ترکاریوں میں اسٹارچ (میدا)، شکر اور تھوڑی مقدار میں پروٹین اور سیلولوز بھی ھوتے ھیں ۔ موٹے طور پر ترکاریاں دو شرینیوں میں بانٹی جاسکتی ھیں—

(1) وے ترکاریاں جنمیں پانی کا انش زیادہ ھے اور اسٹارچ کم، جیسے—ٹماٹر، گوبھی، کرم‌کلہ، سہجن، سلاد، کھیرا وغیرہ ۔

(2) وے ترکاریاں جنمیں اسٹارچ اور شکر ادھک مقدار میں ھیں، جیسے—آلو، شکرقند، گاجر، مٹر، چقندر، کدو، پیٹھا، لوکی، کچا کیلا، وغیرہ ۔ سواد کے لحاظ سے بھی ترکاریوں کا ورگیکرن کیا جاسکتا ھے ۔ کچھ ترکاریوں میں فاسفورس (گندھک) زیادہ ھوتا ھے، جسکے سواد کو کچھ لوگ پسند کرتے ھیں اور کچھ نہیں ۔ ترکاریوں کا ادھک اپیوگی ورگیکرن پودھوں کے جس حصے سے وے پراپت ھوتی ھیں، اس کے لحاظ سے کیا جاسکتا ھے، جیسے—(1) پھلیاں— ان میں کافی مقدار اسٹارچ، شکر اور چکنائی کی ھوتی ھے ۔ بڑے کام کے کھنج درویہ اور وٹیمن بھی ھوتے ھیں اور پروٹین بھی تھوڑی مقدار میں رھتا ھے ۔ پھلیوں میں مٹر اور کئی طرح کی سیم، سویابین، لوبیا آدی ھیں ۔

(२) मूल—मूलों में भी थोड़ा स्टार्च, अधिक मिक़दार शकर, उपयोगी खनिज द्रव्य और विटेमिन होते हैं. इनमें ाजर, मूली, शलजम, चुक़न्दर मुख्य हैं.

(३) डण्ठल—केवल खनिज द्रव्य ज्यादा होने के ारण ही डण्ठल पौष्टिक होते हैं. डण्ठलों में खास अज-ायन, सहजन, केला, प्याज आदि के डण्ठल हैं.

(४) पत्ते और फूल—इनमें खनिज द्रव्य और विटेमिन याद़ह होते हैं. इनमें हरा धनिया, करमकल्ला, सहजन के ूल, सलाद, पोदीना, मेथी का साग, पालक का साग, गोभी फूल, हाथीचक आदि ख़ास हैं.

(५) फल—अधिकतर तरकारियाँ इसी श्रेणी की हैं. माटर, बैंगन, कुम्हड़ा, लौकी, भिण्डी, कच्चा केला, मिर्च, ्वी आदि इनमें से कुछ हैं. इनमें प्रोटीन के ालावा तरह तरह के खनिज द्रव्य और विटेमिन भी ोते हैं.

(६) कन्द—जो ज़मीन के नीचे होते हैं, जैसे—आलू, ाकरक़न्द, प्याज, बण्डा, रतालु आदि. इनमें भी स्टार्च, ाकर, कई महत्वपूर्ण खनिज द्रव्य और विटेमिन होते हैं.

रकारियों में खनिज द्रव्य

तरकारियों में कई तरह के ऐसे खनिज द्रव्य मिलेंगे जो ाजों में नहीं होते—जैसे कैल्सिअम (चूना), फ़ासफ़ोरस गन्धक), फ़ौलाद आदि. जिस्म को रोज़ ही एक खास ेक़दार में इन खनिज द्रव्यों की जरूरत होती है, क्योंकि नसे ख़ून बनता है और मज्जा और हड्डियों को ठीक और ाजबूत रखने के लिये कैल्सिअम की सब से अधिक जरूरत . शरीर के रसों के बनने में भी कैल्सिअम का बहुत बड़ा थान है. कैल्सिअम हरी मटर, सेम, भिण्डी, करमकल्ला, ाथी का साग, अरवी के पत्ते आदि में काफ़ी होता है. दूध ं भी कैल्सिअम होता है और बच्चों का शरीर तरकारियों ै कैल्सिअम को उतनी अच्छी तरह अपने अन्दर नहीं ले ाकता जितना दूध के कैल्सिअम को. लेकिन बड़े आदमियों ा शरीर तरकारियों के कैल्सिअम को बहुत अच्छी तरह बूल करता है. निरामिष भोजियों के लिये तरकारियों का ेल्सिअम बहुत जरूरी चीज है.

फ़ासफ़ोरस भी शरीर के जीवित अणुओं (सैल्स) ो बनाने और हड्डियों और दाँतों के लिये बहुत मुफ़ीद . तन्दुरुस्ती के लिये फ़ासफ़ोरस बेहद जरूरी चीज है. ासफ़ोरस सेम, मटर, नये आलू, करमकल्ला, पालक, ेघाड़ा, गोल लौकी, भिण्डी और केले के फूल में बहुत ोता है.

फ़ौलाद शरीर के हर ज़िन्दा अणु के अन्दर मौजूद और ख़ून बनने में इसकी बेहद जरूरत है. काफ़ी मिक़दार ं यदि फ़ौलाद हो तो वह अनीमिया (ख़ून की कमी) के

(2) مول—مولوں میں بھی تھوڑا اسٹارچ، ادھک مقدار میں شکر، اپیوگی کھنج دروبہ اور وٹیمن ہوتے ہیں۔ انمیں گاجر، مولی، شلجم، چقندر مکھیہ ہیں۔

(3) ڈنٹھل—کیول کھنج دروبہ زیادہ ہونے کے کارن ہی ڈنٹھل پوشٹک ہوتے ہیں۔ ڈنٹھلوں میں خاص اجوائن، سہجن، کیلا، پیاز آدی کے ڈنٹھل ہیں۔

(4) پتے اور پھول—انمیں کھنج دروبہ اور وٹیمن زیادہ ہوتے ہیں۔ انمیں ہرا دھنیا، کرم کلہ، سہجن کے پھول، سلاد، پودینہ میتھی کا ساگ، پالک کا ساگ، گوبھی کے پھول، ہاتھی چک آدی خاص ہیں۔

(5) پھل—ادھکتر ترکاریاں اسی شرینی کی ہیں۔ ٹماٹر، بیگن، کمڑھا، لوکی، بھنڈی، کچا کیلا، مرچ، توری آدی انمیں سے کچھ ہیں۔ انمیں پروٹین کے علاوہ طرح طرح کے کھنج دروبہ اور وٹیمن بھی ہوتے ہیں۔

(6) کند—جو زمین کے نیچے ہوتے ہیں، جیسے—آلو، شکرقند، پیاز، بنڈا، رتالو آدی۔ انمیں بھی اسٹارچ، شکر، کئی مہتوپورن کھنج دروبہ اور وٹیمن ہوتے ہیں۔

ترکاریوں میں کھنج دروبہ

ترکاریوں میں کئی طرح کے ایسے کھنج دروبہ ملینگے جو اناجوں میں نہیں ہوتے—جیسے کیلسیم (چونا) فاسفورس (گندھک)، فولاد آدی۔ جسم کو روز ہی ایک خاص مقدار میں ان کھنج دروبوں کی ضرورت ہوتی ہے، کیونکہ ان سے خون بنتا ہے اور مججا اور ہڈیوں کو ٹھیک اور مضبوط رکھنے کے لئے کیلسیم کی سب سے ادھک ضرورت ہے۔ شریر کے رسوں کے بننے میں بھی کیلسیم کا بہت بڑا استھان ہے۔ کیلسیم ہری مٹر، سیم، بھنڈی، کرم کلہ، میتھی کا ساگ، اروی کے پتے آدی میں کافی ہوتا ہے۔ دودھ میں بھی کیلسیم ہوتا ہے اور بچوں کا شریر ترکاریوں کے کیلسیم کو اتنی اچھی طرح اپنے اندر نہیں لے سکتا جتنا دودھ کے کیلسیم کو۔ لیکن بڑے آدمیوں کا شریر ترکاریوں کے کیلسیم کو بہت اچھی طرح قبول کرتا ہے۔ نرامش بھوجیوں کے لئے ترکاریوں کا کیلسیم بہت ضروری چیز ہے۔

فاسفورس بھی شریر کے جیوت انوؤں (سیلس) کو بنانے اور ہڈیوں اور دانتوں کے لئے بہت مفید ہے۔ تندرستی کے لئے فاسفورس بےحد ضروری چیز ہے۔ فاسفورس سیم، مٹر، نئے آلو، کرم کلہ، پالک، سنگھاڑا، گول لوکی، بھنڈی اور کیلے کے پھول میں بہت ہوتا ہے۔

فولاد شریر کے ہر زندہ انو کے اندر موجود ہے اور خون بننے میں اسکی بےحد ضرورت ہے۔ کافی مقدار میں یدی فولاد ہو تو وہ انیمیا (خون کی کمی) کے

शिकार बन जाते हैं. तरकारियों में बहुत बड़ी मात्रा में फौलाद होता है. मेथी का साग, पौदीना, धनिया की पत्ती, सलाद, सहजन के डण्ठल, छोटी गोल लौकी, हरे आम, प्याज के डण्ठल आदि में फौलाद बहुत काफी होता है. यूं तो हर हरे साग में फौलाद होता है लेकिन साग का पत्ता जितना हरा, मुलायम और पतला होगा उसी अनुपात में उसमें फौलाद और विटेमिन भी ज्यादा होंगे. यदि हम काफी मिक़दार में तरकारियाँ खावें तो हमारे शरीर में कैल्सियम, फासफोरस और फौलाद का अभाव न रहे और न इनके अभाव में पैदा होने वाली बीमारियों के ही हम शिकार बनें.

विटेमिन और तरकारियाँ

खनिज द्रव्यों की तरह तरकारियों में विटेमिन भी बहुत क़ीमती चीज़ है. तरकारियों में 'ए' और 'सी' विटेमिन काफी मात्रा में होते हैं और कुछ हद तक 'बी' ग्रुप के विटेमिन भी होते हैं. विटेमिन जिस्म के मुख्तलिफ़ अङ्गों को ठीक और सुचारु रूप से काम करने लायक़ रखते हैं.

विटेमिन ए—शरीर को जुकाम, फेफड़े की बीमारियों और क्षय रोग से बचाता है, शरीर की बढ़ती करता है और शरीर की मशीन को दुरुस्त रखता है. अच्छे दांतों के बनाने और अच्छे तन्तुओं के लिये भी वह जरूरी है. यही एक अकेला विटेमिन है जो शरीर की चर्बी में और जिगर में जमा करके रखा जा सकता है. इस विटेमिन की कमी न होने पाये इसलिये काफी मिक़दार में सहजन, हरा धनिया, मेथी का साग, पौदीने की पत्ती, पालक का साग, सलाद, करम कल्ला और पीले और नारङ्गी रंग की तरकारियां जैसे गाजर, पका कद्दू और दूसरी तरकारियां जैसे चुक़न्दर, हरी मटर, सेम, लौकी, रतालू आदि खाने चाहियें. हरी मिर्च में भी काफी मिक़दार में यह विटेमिन होता है.

विटेमिन बी—कई तरह के होते हैं. शरीर की उन्नति, खुली हुई भूक, ठीक हाजमा और स्वस्थ नरवस सिस्टम के लिये बेहद जरूरी हैं. तरकारियों में यह विटेमिन अधिक मात्रा में नहीं होते. फिर भी यदि काफी मिक़दार में तरकारियां खाई जांय तो कई तरह के इन बी विटेमिनों की पूर्ति हो सकती है. जड़ वाली तरकारियों में बी विटेमिन काफी होते हैं जैसे गाजर, चुक़न्दर आदि. इनके अलावा टमाटर, करमकल्ला, पालक, गोभी, सलाद, मेथी का साग, मटर और शलजम में भी थोड़ी बहुत मात्रा में बी विटेमिन होते हैं.

विटेमिन सी—की बढ़ते हुए बच्चों की खूराक़ में बेहद अहमियत है. यह मजबूत दांतों के बनाने और शरीर की बढ़ती के लिये जरूरी है. खाल इससे मुलायम और स्वस्थ रहती है और यह रक्त वाहिनी नसों को दुरुस्त रखता है.

خلاف ایک ڈھال ہے ۔ ترکاریوں میں بہت بڑی ماترا میں فولاد ہوتا ہے ۔ میتھی کا ساگ، پودینہ، دھنیا کی پتی، سلاد، سہجن کے ڈنٹھل، چھوٹی گول لوکی، ہرے آم، پیاز کے ڈنٹھل آدی میں فولاد بہت کافی ہوتا ہے ۔ یوں تو ہر ہرے ساگ میں فولاد ہوتا ہے لیکن ساگ کا پتہ جتنا ہرا، ملایم اور پتلا ہوگا اسی انوپات میں اسمیں فولاد اور وٹیمن بھی زیادہ ہونگے ۔ یدی ہم کافی مقدار میں ترکاریاں کھاویں تو ہمارے شریر میں کیلسیم، فاسفورس اور فولاد کا ابھاو نہ رہے اور نہ انکے ابھاؤ میں پیدا ہونے والی بیماریوں کے ہی ہم شکار بنیں ۔

وٹیمن اور ترکاریاں

کھنج دربوں کی طرح ترکاریوں میں وٹیمن بھی بہت قیمتی چیز ہے ۔ ترکاریوں میں 'اے' اور 'سی' وٹیمن کافی ماترا میں ہوتے ہیں اور کچھ حد تک 'بی' گروپ کے وٹیمن بھی ہوتے ہیں ۔ وٹیمن جسم کے مختلف انگوں کو ٹھیک اور سچارو روپ سے کام کرنے لایق رکھتے ہیں ۔

وٹیمن اے—شریر کو زکام، پھیپھڑے کی بیماریوں اور چھئے روگ سے بچاتا ہے، شریر کی بڑھتی کرتا ہے اور شریر کی مشین کو درست رکھتا ہے ۔ اچھے دانتوں کے بنانے اور اچھے تنتوؤں کے لئے بھی وہ ضروری ہے ۔ یہی ایک اکیلا وٹیمن ہے جو شریر کی چربی میں اور جگر میں جمع کرکے رکھا جاسکتا ہے ۔ اس وٹیمن کی کمی نہ ہونے پائے اس لئے کافی مقدار میں سہجن، ہرا دھنیا، میتھی کا ساگ، پودینہ کی پتی، پالک کا ساگ، سلاد، کرم کلہ اور پیلے اور نارنگی رنگ کی ترکاریاں جیسے گاجر، پکا کدو اور دوسری ترکاریاں جیسے چقندر، ہری مٹر، سیم، لوکی، رتالو آدی کھانے چاہئیں ۔ ہری مرچ میں بھی کافی مقدار میں یہ وٹیمن ہوتا ہے ۔

وٹیمن بی—کئی طرح کے ہوتے ہیں ۔ شریر کی اُنتی، کھلی ہوئی بھوک، ٹھیک ہاضمہ اور سوستھ نروس سسٹم کے لئے بےحد ضروری ہیں ۔ ترکاریوں میں یہ وٹیمن ادھک ماترا میں نہیں ہوتے ۔ پھر بھی یدی کافی مقدار میں ترکاریاں کھائی جائیں تو کئی طرح کے اِن بی وٹیمنوں کی پورتی ہوسکتی ہے ۔ جڑ والی ترکاریوں میں بی وٹیمن کافی ہوتے ہیں جیسے گاجر، چقندر آدی ۔ اِن کے علاوہ ٹماٹر، کرم کلہ، پالک، گوبھی، سلاد، میتھی کا ساگ، مٹر اور شلجم میں بھی تھوڑی بہت ماترا میں بی وٹیمن ہوتے ہیں ۔

وٹیمن سی—کی بڑھتے ہوئے بچوں کی خوراک میں بےحد اہمیت ہے ۔ یہ مضبوط دانتوں کے بنانے اور شریر کی بڑھتی کے لئے ضروری ہے ۔ کھال اس سے ملایم اور سوستھ رہتی ہے اور یہ رکت واہنی نسوں کو درست رکھتا ہے ۔

टमाटर, सहजन, धनिये की पत्ती, शकरक़न्द की पत्ती, पालक, करमकल्ला और हरी मीठी मिर्च, आदि चीज़ें, सी विटेमिन की मात्रा में, साइट्रस फलों यानी सन्तरा, मौसम्बी मीठा नींबू आदि का मुक़ाबला करती हैं. सेम, हरी मटर, लोबिया, तूम्बी लौकी, करमकल्ला और शलजम आदि में और कभी प्याज़ में भी विटेमिन काफ़ी होता है.

कारबोहाइड्रेट और तरकारियाँ

खनिज द्रव्यों और विटेमिन के अलावा कुछ तरकारियों में काफ़ी स्टार्च और शक्कर भी होती है. इनसे मेहनत करने की ताक़त और चैतन्यता बढ़ती है. इस तरह की तरकारियों में हरी मटर, करेला, ककड़ी, टिन्डा, परवल, कच्चा पपीता, ज़िमीक़न्द, अरबी, बन्डा, रतालू, कच्चे केले, गाजर, चुक़न्दर, आलू, शकरक़न्द, कुम्हड़ा आदि हैं. जिन लोगों को अपने भोजन की मात्रा कम करने की धुन है उन्हें वे तरकारियां अधिक मात्रा में नहीं खानी चाहिएं जिनमें कारबोहाइड्रेट अधिक है. कारबोहाइड्रेट से जिस्म के पट्ठे बनते हैं.

प्रोटीन और तरकारियाँ

मटर, सेम और जितनी फलियों वाली तरकारियां हैं उन सब में काफ़ी मात्रा में प्रोटीन रहता है. कहा जाता है कि तरकारियों का प्रोटीन दूध और मांस आदि के प्रोटीन की तरह पौष्टिक नहीं है. उसमें वे सब एसिड नहीं होते जो तन्दुरुस्ती को अच्छा रखते हैं. इसके लिए तरकारियों के साथ दूध या दूध से बनी चीज़ें खाने से यह कमी पूरी हो सकती है.

सेलुलोज़ और तरकारियाँ

तरकारियों में सेलुलोज़ यानी फ़ुज़ला भी होता है जो आंतों को क़ब्ज़ से बचाता है; किन्तु पकी हुई तरकारियों का फ़ुज़ला कच्ची तरकारियों के फ़ुज़ले से ज़्यादा मुफ़ीद होता है. पत्ते वाले सागों में बहुत अधिक फ़ुज़ला होता है. दुबला होने के लिए अधिक सेलुलोज़ वाली तरकारियां खानी चाहियें क्योंकि उनमें कारबोहाइड्रेट की मिक़दार ज़्यादा होने से तसल्ली जल्दी हो जाती है.

कुछ ख़ास तरकारियों की विशेषतायें

टमाटर हमेशा ताज़गी लाता है. लज़ीज़ होने के साथ साथ वह आरोग्यवर्धक भी है. उसे कच्चा या पक्का चाहे जैसा खाया जा सकता है. उसका रस बच्चों के लिये बड़ा हितकर है. विटेमिन सी की पूर्ति दूध के अभाव में टमाटर के रस से कर सकते हैं. विटेमिन सी आग में पकाने से नष्ट हो जाता है. केवल टमाटर ही ऐसी चीज़ है जिसका विटेमिन सी एसिड के कारण पकाने से भी नष्ट नहीं होता.

ٹماٹر، سہجن، دھنیہ کی پتی، شکرقند کی پتی، پالک، کرم کلہ اور ہری میٹھی مرچ، آدی چیزیں، سی وٹیمن کی ماترا میں، سائیٹرس پھلوں یعنی سنترہ، موسمبی، میٹھا نیبو آدی کا مقابلہ کرتی ہیں۔ سیم، ہری مٹر، لوبیا، تومبی لوکی، کرم کلہ اور شلجم آدی میں اور کبھی پیاز میں بھی وٹیمن کافی ہوتا ہے۔

کاربوہائیڈریٹ اور ترکاریاں

کھنج دربوں اور وٹیمن کے علاوہ کچھ ترکاریوں میں کافی اسٹارچ اور شکر بھی ہوتی ہے۔ ان سے محنت کرنے کی طاقت اور چیتنیتا بڑھتی ہے۔ اِس طرح کی ترکاریوں میں ہری مٹر، کریلا، ککڑی، ٹنڈا، پرول، کچا پپیتا، زمین قند، اروی، بنڈا، رتالو، کچے کیلے، گاجر، چقندر، آلو، شکرقند، کمڑھا آدی ہیں۔ جن لوگوں کو اپنے بھوجن کی ماترا کم کرنے کی دھن ہے اُنہیں وے ترکاریاں ادھک ماترا میں نہیں کھانی چاہئیں جن میں کاربوہائیڈریٹ ادھک ہے۔ کاربوہائیڈریٹ سے جسم کے پٹھے بنتے ہیں۔

پروٹین اور ترکاریاں

مٹر، سیم اور جتنی پھلیوں والی ترکاریاں ہیں اُن سب میں کافی ماترا میں پروٹین رہتا ہے۔ کہا جاتا ہے کہ ترکاریوں کا پروٹین دودھ اور مانس آدی کے پروٹین کی طرح پوشٹک نہیں ہے۔ اُس میں وے سب ایسڈ نہیں ہوتے جو تندرستی کو اچھا رکھتے ہیں۔ اِس کے لئے ترکاریوں کے ساتھ دودھ یا دودھ سے بنی چیزیں کھانے سے یہ کمی پوری ہوسکتی ہے۔

سیلولوز اور ترکاریاں

ترکاریوں میں سیلولوز یعنی فضلہ بھی ہوتا ہے جو آنتوں کو قبض سے بچاتا ہے؛ کنتو پکی ہوئی ترکاریوں کا فضلہ کچی ترکاریوں کے فضلے سے زیادہ مفید ہوتا ہے۔ پتے والے ساگوں میں بہت ادھک فضلہ ہوتا ہے۔ دبلا ہونے کے لئے ادھک سیلولوز والی ترکاریاں کھانی چاہئیں کیونکہ اُن میں کاربوہائیڈریٹ کی مقدار زیادہ ہونے سے تسلی جلدی ہوجاتی ہے۔

کچھ خاص ترکاریوں کی وشیشتائیں

ٹماٹر ہمیشہ تازگی لاتا ہے۔ لذیذ ہونے کے ساتھ ساتھ وہ آروگیہ وردھک بھی ہے۔ اُسے کچا یا پکا چاہے جیسا کھایا جا سکتا ہے۔ اُس کا رس بچوں کے لئے بڑا ہتکر ہے۔ وٹیمن سی کی پورتی دودھ کے ابھاؤ میں ٹماٹر کے رس سے کرسکتے ہیں۔ وٹیمن سی آگ میں پکانے سے نشٹ ہوجاتا ہے۔ کیول ٹماٹر ہی ایسی چیز ہے جس کا وٹیمن سی ایسڈ کے کارن پکانے سے بھی نشٹ نہیں ہوتا۔

गाजर भी बड़ी पौष्टिक चीज है. उसमें विटेमिन ए बड़ी मिक़दार में रहता है. करमकल्ला, हरी मटर और सेम भी बड़ी स्वास्थ्यवर्धक और पौष्टिक तरकारियाँ हैं. पत्तियों के साग भी बड़े फ़ायदे के होते हैं. मूली, शलजम, चुक़न्दर और गांठ गोभी की पत्तियां भी अच्छी होती हैं. प्याज भी अत्यन्त गुणकारक चीज है और हाज़मे को दुरुस्त रखने में बहुत मदद देती है. आलू में स्टार्च, खनिज द्रव्य और विटेमिन काफ़ी होते हैं. भिंडी और लौकी दिमाग़ी काम करने योग्य ख़ास तरकारियां हैं.

तरकारियां अधिकतर ताज़ी ही इस्तेमाल करनी चाहियें. तरकारियों का विटेमिन सी बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है. तरकारियां हमेशा ठंडी जगह में रखी जानी चाहियें. कुछ तरकारियां जैसे कद्दू आदि में रखने से ही अच्छी होती हैं. तरकारियां छिलके समेत ही उबालनी चाहियें. जिस पानी में तरकारी उबाली जाय उसे रसे की तरह काम में ले आना चाहिये. सागों को कम से कम पकाना चाहिये. सोडा डालकर कभी तरकारी न पकानी चाहिये. बजाय पानीके दूध या मट्ठे में तरकारी पकाने से उसके पौष्टिक तत्व बढ़ जाते हैं. जहां तक हो सके तरकारियां छीलनी न चाहियें. यदि छीलना ज़रूरी ही हो तो केवल ख़राश लेना काफ़ी होगा. तरकारियों में मिर्च, मसाले और चिकनाई जहां तक हो सके कम से कम डालना चाहिये. हमारी गृह देवियां यदि तरकारियों के पौष्टिक और स्वास्थ्य वर्धक महत्व को ठीक ठीक समझ लें तो परिवार के स्वास्थ्य में 100 फ़ीसदी सुधार कर सकती हैं.

"वह धन को उसके सिंहासन से हटा कर ईश्वर के लिये थोड़ी जगह ख़ाली करे. मेरा ख़याल है कि अमरीका का भविश्य उज्जवल है. लेकिन अगर वह धन की ही पूजा करता रहा तो उसका भविश्य अंधकारमय है. फिर लोग चाहे जो कहें, धन आख़ीर तक किसी का सगा नहीं रहा. वह हमेशा बेवफ़ा दोस्त साबित हुआ है."

—महात्मा गांधी

گاجر بھی بڑی پوشٹِک چیز ہے۔ اُس میں وٹیمن اے بڑی مقدار میں رہتا ہے۔ کرم‌کلہ، ہری مٹر اور سیم بھی بڑی سواستھ وردھک اور پوشٹک ترکاریاں ہیں۔ پتیوں کے ساگ بھی بڑے فائدے کے ہوتے ہیں۔ مولی، شلجم، چقندر اور گانٹھ گوبھی کی پتیاں بھی اچھی ہوتی ہیں۔ پیاز بھی اتینت گن‌کارک چیز ہے اور ہاضمہ کو درست رکھنے میں بہت مدد دیتی ہے۔ آلو میں اسٹارچ، کھنج درویہ اور وٹیمن کافی ہوتے ہیں۔ بھنڈی اور لوکی دماغی کام کرنے والوں کے کھانے یوگیہ خاص ترکاریاں ہیں۔

ترکاریاں ادھک‌تر تازی ہی استعمال کرنی چاہئیں۔ ترکاریوں کا وٹیمن سی بہت جلدی نشٹ ہوجاتا ہے۔ ترکاریاں ہمیشہ ٹھنڈی جگہ میں رکھی جانی چاہئیں۔ کچھ ترکاریاں جیسے کدو آدی رکھنے سے ہی اچھی ہوتی ہیں۔ ترکاریاں چھلکے سمیت ہی اُبالنی چاہئیں۔ جس پانی میں ترکاری اُبالی جائے اُسے رسے کی طرح کام میں لے آنا چاہئے۔ ساگوں کو کم سے کم پکانا چاہئے۔ سوڈا ڈالکر کبھی ترکاری نہ پکانی چاہئے۔ بجائے پانی کے دودھ یا مٹھے میں ترکاری پکانے سے اُس کے پوشٹک تتو بڑھ جاتے ہیں۔ جہاں تک ہوسکے ترکاریاں چھیلنی نہ چاہئیں۔ یدی چھیلنا ضروری ہی ہو تو کیول خراش لینا کافی ہوگا۔ ترکاریوں میں مرچ، مسالے اور چکنائی جہاں تک ہوسکے کم سے کم ڈالنا چاہئے۔ ہماری گرہ دیویاں یدی ترکاریوں کے پوشٹک اور سواستھ وردھک مہتو کو ٹھیک ٹھیک سمجھ لیں تو پریوار کے سواستھ میں 100 فیصدی سدھار کرسکتی ہیں۔

"وہ دھن کو اُس کے سنگھاسن سے ہٹاکر ایشور کے لئے تھوڑی جگہ خالی کرے۔ میرا خیال ہے کہ امریکہ کا بھوشیہ اُجول ہے۔ لیکن اگر وہ دھن کی ہی پوجا کرتا رہا تو اُس کا بھوشیہ اندھکارمے ہے۔ پھر لوگ چاہے جو کہیں، دھن آخیر تک کسی کا سگا نہیں رہا۔ وہ ہمیشہ بیوفا دوست ثابت ہوا ہے۔"

—مہاتما گاندھی

उन्नीसवीं सदी के एक फ़क़ीर की डायरी

पण्डित सुन्दरलाल

ग़ौसअलीशाह इस देश के पिछली सदी के एक बहुत बड़े और मशहूर मुसलमान फ़क़ीर थे. सन् 1857 के कुछ पहले से लेकर उसके कुछ बाद तक का ज़माना उनका ख़ास ज़माना था. हिन्दुस्तान भर में ख़ूब घूमे. बाहर भी हज्ज वग़ैरह के सिलसिले में गए. बाद के दिनों में उन्होंने अपनी ज़िन्दगी के बहुत से हालात अपने चेलों को सुनाए जो लिख लिए गए. इनसे उस ज़माने के हिन्दू मुसलमानों के आपसी मेल ओल पर ख़ासी रोशनी पड़ती है. एक तरह से ये ग़ौसअलीशाह की डायरी के कुछ पन्ने हैं, ऐसी डायरी जो दूसरों ने उनसे सुनकर लिख ली थी.

[1]

एक दिन बचपन में हमें एक सन्यासी ने जड़ ताड़ी कपाली चढ़ाना सिखाया. इस कपाली में ज़ाहिरा होश जाता रहता है और रूह दिमाग़ में आ जाती है. जिस ख़याल में आदमी बैठता है उसी में रहता है. जब हमें इसका अभ्यास हो गया तो एक दिन ख़्याल आया कि देखें दूसरे पर भी इसका असर होता है या नहीं. हमने अपने सौतेले भाई को कपाली चढ़वाई. वह बिलकुल बेहोश होकर मुर्दे की तरह ज़मीन पर गिर पड़े. उतारना हमें आता नहीं था. हम बड़े घबराए कि अब क्या इलाज करें. हमने अपनी सौतेली मां को ख़बर दी. वे घबराई हुई आई और कहने लगीं,—"एक तो गया ही अब दूसरा भी चला. लोग यही शक करेंगे कि इसने सौतेले भाई को मार डाला." यह कह कर वे एक प्याला दही का लाईं और बेटे के सामने गिरा दिया. जो आकर पूछता उससे कहतीं—"कि न जाने क्या हुआ दही खा कर क़ै की है." मैं घबरा कर उस सन्यासी के पास गया और सारा हाल कह सुनाया. उन्होंने बहुत नाराज़ होकर मुझसे कहा,—"क्या तुमको इस वास्ते यह क्रिया सिखलाई थी कि लोगों का तमाशा देखो. हमने तो इसलिये सिखलाया था कि ईश्वर की याद में लगे रहोगे. ख़बरदार फिर ऐसा काम न करना." यह कहकर हमारे घर आए और भाई के सर पर पानी की मश्कें छुड़वाई. जब तीसरी मश्क छोड़ी गई तो उठ बैठे. फिर हमने भाई से बेहोशी की हालत का हाल पूछा. उसने कहा—"मैं तो ज़िन्दा था और तुम सब को पुकार पुकार कर कहता था कि मैं ज़िन्दा हूँ,

اُنیسویں صدی کے ایک فقیر کی ڈایری

پنڈت سندر لال

غوث علی شاہ اس دیش کے پچھلی صدی کے ایک بہت بڑے اور مشہور مسلمان فقیر تھے. سن 1857 کے کچھ پہلے سے لیکر اُسکے کچھ بعد تک کا زمانہ اُن کا خاص زمانہ تھا. ہندستان بھر میں خوب گھومے. باہر بھی حج وغیرہ کے سلسلے میں گئے. بعد کے دنوں میں اُنھوں نے اپنی زندگی کے بہت سے حالات اپنے چیلوں کو سنائے جو لکھ لئے گئے. ان سے اُس زمانے کے ہندو مسلمانوں کے آپسی میل جول پر خاصی روشنی پڑتی ھے. ایک طرح سے یہ غوث علی شاہ کی ڈایری کے کچھ پنّے ہیں، ایسی ڈایری جو دوسروں نے اُن سے سن کر لکھ لی تھی.

[1]

ایک دن بچپن میں ھمیں ایک سنیاسی نے جڑ تاڑی کپالی چڑھانا سکھایا. اِس کپالی میں ظاہرہ ہوش جاتا رھتا ھے اور روح دماغ میں آجاتی ھے. جس خیال میں آدمی بیٹھتا ھے اُسی میں رھتا ھے. جب ھمیں اِسکا ابھیاس ھو گیا تو ایک دن خیال آیا کہ دیکھیں دوسرے پر بھی اس کا اثر ھوتا ھے یا نہیں. ھمنے اپنے سوتیلے بھائی کو کپالی چڑھوائی. وہ بالکل بیہوش ھو کر مُردے کی طرح زمین پر گر پڑے. اُتارنا ھمیں آتا نہیں تھا. ھم بڑے گھبرائے کہ اب کیا علاج کریں. ھمنے اپنی سوتیلی ماں کو خبر دی. وے گھبرائی ھوئی آئیں اور کہنے لگیں—"ایک تو گیا ھی اب دوسرا بھی چلا. لوگ یہی شک کرینگے کہ اِس نے سوتیلے بھائی کو مارڈالا." یہ کہہ کر وے ایک پیالہ دھی کا لائیں اور بیٹے کے سامنے گرادیا. جو آکر پوچھتا اُس سے کہتیں—"کہ نہ جانے کیا ھوا دھی کھا کر قے کی ھے." میں گھبرا کر اُس سنیاسی کے پاس گیا اور سارا حال کہہ سنایا. اُنھوں نے بہت ناراض ھوکر مجھسے کہا—"کیا تمکو اِس واسطے یہ کریا سکھائی تھی کہ لوگوں کا تماشہ دیکھو. ھمنے تو اِسلئے سکھلایا تھا کہ ایشور کی یاد میں لگے رھوگے. خبردار پھر ایسا کام نہ کرنا." یہ کہہ کر ھمارے گھر آئے اور بھائی کے سر پر پانی کی مشکیں چھڑوائیں. جب تیسری مشک چھوڑی گئی تو اُٹھ بیٹھے. پھر ھمنے بھائی سے بیہوشی کی حالت کا حال پوچھا. اُس نے کہا—"میں تو زندہ تھا اور تم سب کو پکار پکار کر کہتا تھا کہ میں زندہ ھوں،

तुम घबराओ मत. मैं कुएं में पड़ा हूँ. मुझको निकाल लो. लेकिन तुम सुनते न थे. और मुझे किसी तरह की तकलीफ़ न थी." उस दिन से हमने तोबा कर ली कि फिर ऐसा काम कभी न करेंगे.

[2]

एक दिन हम बावरी से हरिद्वार को चले कि कुम्भ का स्नान और ब्रह्म गायत्री का पाठ करें, क्योंकि हमारे रज़ाई बाप* पण्डित रामसनेही जी ने घर से चलते वक़्त हमें गायत्री सिखा कर कह दिया था कि हरिद्वार में गंगा के किनारे इसका जाप कर लेना. जब कनखल में पहुंचे तो वहां दो हिन्दू परमहंस देखे. किसी निर्दयी ने उनकी जाँघों पर दहकते हुए अंगारे रख दिये थे. एक की जाँघ तो जल गई थी और दूसरे पर कुछ असर न था. हमने झटपट अंगारे अलग किए और उनको डोली में सवार करा कर ज्वालापुर के थाने में लाए. थानेदार से हमारी जान पहचान थी. उसने जले हुए की मरहम पट्टी करवाई.

कुछ दिनों बाद एक दिन यह क़िस्सा अपने कुछ चेलों को सुना कर ग़ौसअलीशाह ने उनसे पूछा कि—"इन दोनों परमहंसों में से कौन बढ़कर था?" एक चेले ने जवाब दिया कि—"जिसकी जाँघ नहीं जली थी." आपने कहा कि—"नहीं, जिसकी जांघ नहीं जली थी वह अभी अपने बदन की हिफ़ाज़त करने की ताक़त रखता था. लेकिन दूसरे का इनहमाक (ध्यान में डूबा हुआ होना) ज्यादा ऊंचे दरजे का था कि तन बदन का भी होश बाक़ी न रहा था. अगर उसके इस कामिल इनहमाक का इसलाम के बड़े बड़े लोगों से मुक़ाबला करें तो लोग बुरा मानें. 'अलहक़्क़ो मुर्रुन' यानी सच्चाई कड़वी होती है. लेकिन सच यह है कि ऐसा इनहमाक करोड़ों में से किसी एक को हासिल होता है. हर एक इसके क़ाबिल नहीं.

"इसरारे मुहब्बत रा हर दिल न बुवद क़ाबिल,
दुर नेस्त बहर दरिया, ज़र नेस्त बहर काने.

यानी—हर दिल प्रेम के रहस्यों को समझने के क़ाबिल नहीं होता. न हर दरिया में मोती होते हैं और न हर खान में सोना होता है.

लेकिन मुबारिक वह इनहमाक (तल्लीनता) कि न हम सेवा करने वालों से ख़ुश और न अंगारा रखने वाले से नाराज़, जिस हालत में थे उसी में रहे."

تم گھبراؤ مت. میں کوئیں میں پڑا ہوں. مجھکو نکال لو. لیکن تم سنتے نہ تھے. اور مجھے کسی طرح کی تکلیف نہ تھی." اُس دن سے ہم نے توبہ کرلی کہ پھر ایسا کام کبھی نہ کرینگے.

[2]

ایک دن ہم باوری سے ہری‌دوار کو چلے کہ کمبھ کا اسنان اور برہم گایتری کا پاٹھ کریں' کیونکہ ہمارے رضائی باپ* پنڈت رام سنیہی جی نے گھر سے چلتے وقت ہمیں گایتری سکھا کر کہہ دیا تھا کہ ہری‌دوار میں گنگا کے کنارے اس کا جاپ کر لینا. جب کنکھل میں پہونچے تو وہاں دو ہندو پرم ہنس دیکھے. کسی نردئی نے اُنکی جانگھوں پر دہکتے ہوئے انگارے رکھ دیئے تھے. ایک کی جانگھ تو جل گئی تھی اور دوسرے پر کچھ اثر نہ تھا. ہم نے جھٹ پٹ انگارے الگ کئے اور اُنکو ڈولی میں سوار کرا کر جوالا پور کے تھانے میں لائے. تھانیدار سے ہماری جان پہچان تھی. اُس نے جلے ہوئے کی مرہم پٹی کروائی.

کچھ دنوں بعد ایک دن وہ قصہ اپنے کچھ چیلوں کو سنا کر غوث علی شاہ نے اُن سے پوچھا کہ—"اِن دونوں پرم ہنسوں میں سے کون بڑھکر تھا؟" ایک چیلے نے جواب دیا کہ—"جس کی جانگھ نہیں جلی تھی." آپ نے کہا کہ—"نہیں' جس کی جانگھ نہیں جلی تھی وہ ابھی اپنے بدن کی حفاظت کرنے کی طاقت رکھتا تھا. لیکن دوسرے کا انہماک (دھیان میں ڈوبا ہوا ہونا) زیادہ اونچے درجہ کا تھا کہ تن بدن کا بھی ہوش باقی نہ رہا تھا. اگر اُس کے اِس کامل اِنہماک کا اِسلام کے بڑے بڑے لوگوں سے مقابلہ کریں تو لوگ برا مانیں. 'الحق و مرعون' یعنی سچائی کڑوی ہوتی ہے. لیکن سچ یہ ہے کہ ایسا انہماک کروڑوں میں سے کسی ایک کو حاصل ہوتا ہے. ہر ایک اِس کے قابل نہیں.

اسرار محبت را ہر دل نہ بود قابل'
در نیست بہر دریا' زر نیست بہر کانے'

یعنی ہر دل پریم کے رہسیوں کو سمجھنے کے قابل نہیں ہوتا. نہ ہر دریا میں موتی ہوتے ہیں اور نہ ہر کھان میں سونا ہوتا ہے.

لیکن مبارک وہ انہماک (تلینتا) کہ نہ ہم سیوا کرنے والوں سے خوش اور نہ انگارا رکھنے والے سے ناراض' جس حالت میں تھے اُسی میں رہے.

* मां के अलावा यदि कोई स्त्री बच्चे को दूध पिला कर पाले तो उसका पति बालक का 'रज़ाई बाप' कहलाता है.

ماں کے علاوہ یدی کوئی اِستری بچے کو دودھ پلا کر پالے تو اُسکا پتی بالک کا 'رضائی باپ' کہلاتا ہے.

[3]

एक दिन जब हम ज्वालापुर से चलकर हरिद्वार पहुंचे तो सरवननाथ जी से भेंट हुई. बड़ा आदर सत्कार किया. अपने मकान पर ठैहराया. दोनों वक़्त बढ़िया खाना खिलाया. जब परवी का वक़्त आया तो हम धोती बाँध तिलक लगा कमण्डल हाथ में ले हर की पैड़ी पर जा मौजूद हुए. बाबरी के एक ब्राह्मण ने ठीक स्नान के वक़्त पहचान लिया और दाँतों के तले उंगली देकर चुप रह गया. हम नहाकर बाहर निकले तो वह ब्राह्मण हमें अलग ले गया और कहने लगा—"मियाँ साहब! यहाँ और वहां कुछ फ़रक़ है जो आप स्नान करने आए? अगर कोई पहचान लेता तो बड़ी ख़राबी होती. ख़ुदा तो सब जगह एक है, यह भी एक तमाशा है कि हर एक फ़िरक़े का मज़हब जुदा है, हर एक दूसरे को झूटा कहता है और अपने आपको सच्चा बताता है. अगर सच्चाई की राह से देखो तो मक़सद दोनों का एक ही है.

पड़ा बुतख़ाने* में हो या तवाफ़े-काबा❀ करता हो,
यहाँ क्या और वहाँ क्या है कहीं हो तेरा जोया† हो.

यह मिसाल उस ब्राह्मण ने हमें सुनाई. चार मुसाफ़िर सफ़र में साथ थे मगर बोलियां चारों की अलग अलग थीं. चारों भूके थे. चारों ने अपनी अपनी ज़बान में अंगूर ख़रीदने का इरादा ज़ाहिर किया. लेकिन 'अंगूर' का नाम चारों ज़बानों में अलग अलग था. इसलिये एक की बात को दूसरा न समझ पाया, आपस में लड़ने लगे. इत्तफ़ाक़ से एक आदमी जो उन चारों की ज़बानों को जानता था, आ निकला. उसने एक का मतलब दूसरे को समझा दिया. तब शरमिन्दा हुए कि क्या फ़ज़ूल का झगड़ा था. मतलब तो सब का एक ही था. यानी जब तक कोई असलियत का जानने वाला नहीं मिलता, यह दुई नहीं मिटती.

जब वे ब्राह्मण हमें समझा चुके तो हमने कहा कि साहब यह स्नान हमने अपने रज़ाई बाप पण्डित रामसनेही जी की तरफ़ से और उनकी आज्ञा से किया. फिर हमने ब्रह्मगायत्री का पाठ शुरू किया. ब्रह्मगायत्री यह है—

ओ३म भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्; ओ३म्.

लफ़्ज़ी माइने गायत्री के यह हैं—ओ३म् यानी अल्लाह. यह अल्लाह के नामों में सबसे बढ़कर है, भूर यानी पहला आसमान यानी अपने भक्तों को सब दुखों से आज़ाद करके हमेशा आनन्द में रखने वाला, भुवः—दूसरा आसमान जो

ایک دن جب ہم جوالا پور سے چل کر ہری دوار پہونچے تو سرون ناتھ جی سے بھینٹ ہوئی . بڑا آدر ستکار کیا . اپنے مکان پر ٹھہرایا . دونوں وقت بڑھیا کھانا کھلایا . جب پروی کا وقت آیا تو ہم دھوتی باندھ تلک لگا کمنڈل ہاتھ میں لے ہر کی پیڑی پر جا موجود ہوئے . بابری کے ایک براہمن نے ٹھیک اسنان کے وقت پہچان لیا اور دانتوں کے تلے اِنگلی دیکر چپ رہ گیا . ہم نہا کر باہر نکلے تو وہ براہمن ہمیں الگ لے گیا اور کہنے لگا—"میاں صاحب ! یہاں اور وہاں کچھ فرق ہے جو آپ اسنان کرنے آئے ؟ اگر اور کوئی پہچان لیتا تو بڑی خرابی ہوتی . خدا تو سب جگہ ایک ہے' یہ بھی ایک تماشہ ہے کہ ہر ایک فرقے کا مذہب جدا ہے' ہر اِیک دوسرے کو جھوٹا کہتا ہے اور اپنے آپ کو سچا بتا تا ہے . اگر سچائی کی راہ سے دیکھو تو مقصد دونوں کا ایک ہی ہے .

پڑا بتخانے* میں ہو یا طواف کعبہ❀ کرتا ہو'
یہاں کیا اور وہاں کیا ہے کہیں ہو تیرا جویا† ہو"

یہ مثال اُس براہمن نے ہمیں سنائی . چار مسافر سفر میں ساتھ تھے' مگر بولیاں چاروں کی الگ الگ تھیں . چاروں بھوکے تھے . چاروں نے اپنی اپنی زبان میں انگور خریدنے کا ارادہ ظاہر کیا . لیکن 'انگور' کا نام چاروں زبانوں میں الگ الگ تھا . اِس لئے ایک کی بات کو دوسرا نہ سمجھ پایا' آپس میں لڑنے لگے . اتفاق سے ایک آدمی جو اُن چاروں کی زبانوں کو جانتا تھا' آنکلا . اُس نے ایک کا مطلب دوسرے کو سمجھا دیا . تب شرمندہ ہوئے کہ کیا فضول کا جھگڑا تھا . مطلب تو سب کا ایک ہی تھا . یعنی جب تک کوئی اصلیت کا جاننے والا نہیں ملتا' یہ دوئی نہیں مٹتی .

جب وے براہمن ہمیں سمجھا چکے تو ہمنے کہا کہ صاحب یہ اسنان ہمنے اپنے رضائی باپ پنڈت رام سنیہی جی کی طرف سے اور اُنکی آگیاں سے دیا . پھر ہم نے برہم گایتری کا پاٹھ شروع کیا . برہم گایتری یہ ہے—

اوم بھور بھوہ سوہ تتس وتوررو ریئیم بھرگو دیوسیہ دھیمہی دھیویو نہ پر چودیات؛ اوم .

لفظی معنے گایتری کے یہ ہیں—اوم یعنی اللہ . یہ اللہ کے نا-وں میں سب سے بڑھکر ہے' بھور یعنی پہلا آسمان یعنی اپنے بھکتوں کو سب دکھوں سے آزاد کر کے ہمیشہ آنند میں رکھنے والا' بھوہ :—دوسرا آسمان جو

*—देवालय
❀—काबे की परिक्रमा
†—ढूँढ़ने वाला

دیوالئہ
کعبہ کی پریکرما
ڈھونڈھنے والا

तमाम जानदारों में रोशन होकर सब को अपनी अपनी राह पर रखता है. स्वः—तीसरा आसमान यानी ज़िन्दगी, तत्—यानी उस, सवितुर—यानी पैदा करने वाला यानी जो आलिक और इज़्ज़त का देने वाला है, वरेण्यम्-यानी जो बहुत मानने के क़ाबिल है, भर्गो यानी ज्योति यानी जो पाक है, देवस्य—रोशन—यानी जो सब जानों का रोशन करने वाला और आराम का देने वाला है, धीमहि—यानी हम ध्यान करते हैं, यानी हम लोग हमेशा अपने पूरे यक़ीन से एतक़ाद (विश्वास) करके मान लें, धियो—यानी इन्द्रियां, मन और बुद्धि, यो—जो, नः—हमारी, प्रचोदयात—यानी हिदायत करे यानी अपनी मेहरबानी से हमें सब बुरे कामों से अलग करके हमेशा अपनी तरफ़ लगाए रखे, ओ३म्—यानी अल्लाह. तरजुमा—अल्लाह ताला जो सब जानदारों में मौजूद है और पूजने के क़ाबिल है, उस पैदा करने वाले का नूर सब जानों में रोशन है, हम फ़रमांबरदार बन्दे सच्चे यक़ीन के साथ एतक़ाद करते हैं कि जो हमारी इन्द्रियां और मन बुद्धि हैं उनको वह अपनी तरफ़ लगाए रखे, अल्लाह.

जिस रोज़ हमारा पाठ पूरा हुआ तो आख़री रात को हमने यह सपना देखा कि ठीक गंगा के बीच में एक तरफ़ इसलाम के पैग़म्बर मोहम्मद साहब अपने साथियों को लिए आए और एक मजलिस सजाई गई और दूसरी तरफ़ महाराज श्रीकृष्ण जी अपने प्रेमियों को लिए पधारे और एक सभा जम गई. कृष्ण जी ने मोहम्मद साहब से कहा कि—"आप इनको समझाइये कि ये क्या करते हैं." मोहम्मद साहब ने कहा कि—"महाराज आप ही समझाइये." फिर महाराज ने मुझको बुलाया और कहा कि—"सुनो बेटा, तुम्हारे यहाँ क्या कुछ नहीं जो दूसरी जगह ढूँढते हो, क्या तुमने दुई समझी है ? यहाँ और वहां सब एक बात है, गोकि पन्थ जुदा जुदा हैं."

कुफ़्रो इसलाम दर राहे तो पायाँ
वहीदुल्ला शरीकुल गोयाँ.

यानी—कुफ़ और इसलाम सब उसी की राह में दौड़ रहे हैं और सब यही कह रहे हैं कि उस एक के सिवा दूसरा कोई नहीं है.

[4]

एक दिन जब हम देहरादून को गए वहां एक हिन्दू फ़क़ीर की ख़बर सुनकर पहाड़ पर पहुंचे. उनकी मुलाक़ात से दिल बड़ा ख़ुश हुआ. जैसा सुना था वैसा ही पाया. चार पांच दिन ठहरे. एक दिन हम अकेले में उनके पास गए तो बाबा जी राम गीता लिख रहे थे. हमने कहा "नमोनारायण !"

م جانداروں میں روشن ھو کر سب کو اپنی اپنی
پر رکھتا ھے. سوہ—تیسرا آسمان یعنی زندگی'
ت—یعنی اُس' سویتور—یعنی پیدا کرنے والا یعنی جو
الق اور عزت کا دینے والا ھے' وریئیم—یعنی جو بہت ماننے
، قابل ھے' بھرگو یعنی جیوتی یعنی جو پاک ھے' دیوسیہ—
شن—یعنی جو سب جانوں کا روشن کرنے والا اور آرام کا دینے
ا ھے' دھیمہی—یعنی ہم دھیان کرتے ھیں' یعنی ہم لوگ ھمیشہ
نے پورے یقین سے اعتقاد (وشواس) کر کے مان لیں' دھیو—
نی اندریاں' من اور بدھی' یو—جو' نہ—ھماری' پرچودیات—
یعنی ھدایت کرے یعنی اپنی مہربانی سے ھمیں سب
رے کاموں سے الگ کرکے ھمیشہ اپنی طرف لگائے رکھے' اوم—
نی اللہ. ترجمہ—اللہ تعلی جو سب جانداروں میں موجود
ے اور پوجنے کے قابل ھے' اُس پیدا کرنے والے کا نور سب جانوں
میں روشن ھے' ھم فرمانبردار بندے سچے یقین کے ساتھ اعتقاد
کرتے ھیں کہ جو ھماری اندریاں اور من بدھی ھیں اُنکو وہ
اپنی طرف لگائے رکھے' اللہ.

جس روز ھمارا پاٹھ پورا ھوا تو آخری رات کو ھمنے یہ سپنا دیکھا کہ ٹھیک گنگا کے بیچ میں ایک طرف اِسلام کے پیغمبر محمد صاحب اپنے ساتھیوں کو لئے آئے اور ایک مجلس سجائی گئی اور دوسری طرف مہاراج شری کرشن جی اپنے پریمیوں کو لئے پدھارے اور ایک سبھا جم گئی. کرشن جی نے محمد صاحب سے کہا—"آپ اِن کو سمجھائیے کہ یہ کیا کرتے ھیں." محمد صاحب نے کہا کہ—"مہاراج آپ ھی سمجھائیے." پھر مہاراج نے مجھکو بلایا اور کہا کہ—"سنو بیٹا' تمہارے یہاں کیا کچھ نہیں جو دوسری جگہہ ڈھونڈھتے ھو' کیا تم نے دوئی سمجھی ھے ؟ یہاں اور وھاں سب ایک بات ھے' گو کہ پنتھ جدا جدا ھیں."

کفر و اسلام در راہ تو پایاں
وحید اللہ شریک آلگویاں

یعنی—کفر اور اسلام سب اُسی کی راہ میں دوڑ رھے ھیں اور سب یہی کہہ رھے ھیں کہ اُس ایک کے سوا دوسرا کوئی نہیں ھے.

[4]

ایک دن جب ہم دھرادون کو گئے وھاں ایک ھندو فقیر کی خبرسن کر پہاڑ پر پہونچے. اُن کی ملاقات سے دل بڑا خوش ھوا. جیسا سنا تھا ویسا ھی پایا. چار پانچ دن ٹھہرے. ایک دن ہم اکیلے میں اُن کے پاس گئے تو بابا جی رام گیتا لکھ رھے تھے. ہم نے کہا "نمو نارایَن !"

बोले—"बाजी ! अस्सलामअलैकुम कहो." यह फ़िक़रा सुनकर हम चौंके. उन्होंने अपना हाल सुनाया और कहने लगे—"मैं सय्यद हूँ, मेरा नाम मोहम्मद हुसेन है, पहले तो मैंने शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब से गुरुमन्त्र लिया, फिर वेद और शास्त्रों को पढ़ने का शौक़ हुआ, बनारस में आकर यह भी पढ़ा. ख़ानदान क़ादरिया का चेला हूँ. अब योग के लिए यहां आ रहा हूँ. चेले काम करते हैं, मैं ख़ुदा की याद में लगा हूँ."

हमने पूछा कि "हिन्दुओं और मुसलमानों की फ़क़ीरी में आपने क्या फ़रक़ देखा ?" जवाब दिया—"फ़क़ीरी की बात तो दोनों जगह एक सी है, सिर्फ़ कुछ लफ़्ज़ और इस्तलाहें (परिभाषाएं) अलग अलग हैं.

हिन्दियां रा इस्तलाहे हिन्द मदूह
सिन्धियां रा इस्तलाहे सिन्ध मदूह.

यानी—सब के लिए हम्द (स्तुति) करने का अपना अपना तरीक़ा है, हिन्दुस्तानियों के लिए हिन्दुस्तानियों का तरीक़ा ठीक है और सिन्धियों के लिए सिन्धियों का तरीक़ा.

न मन बर आं गुले आरिज़ ग़ज़ल सरायमो बस,
के अन्दलीबे तो अज़ हर तरफ़ हज़ारां अन्द.

यानी—तेरे उस फूल से चेहरे की हम्द (स्तुति) गाने वाला सिर्फ़ एक मैं ही नहीं हूँ, हर तरफ़ से हज़ारों बुलबुलें तेरी हम्द (स्तुति) गा रही हैं.

[5]

एक दिन हम देहरादून के पहाड़ की सैर करते हुए श्रीनगर में पहुँचे. एक पहाड़ पर एक बाबा जी रहते थे. उनसे भेंट हुई. बड़ी आवभगत से मिले. हमें एक अलग मकान दिया. चारपाई मंगाई. हमने बहुतेरा इनकार किया कि आप ज़मीन पर सोते हैं, हम भी इसी तरह आराम करेंगे. लेकिन उन्होंने न माना और ज़िद की कि नहीं तुम को चारपाई ज़रूर चाहिए. आहिस्ता आहिस्ता उनसे मेल जोल बढ़ गया. एक दिन उसके किसी चेले को पद्मनाग ने, जो हाथ भर का और बड़ा ज़हरीला सांप होता है, काट लिया. दूसरे चेले ने सांप को पत्थर के कूंडे से ढांक दिया और आकर गुरू जी को ख़बर दी. उन्होंने कहा कि जल्दी से भभूत यानी अकसीर ला. इतने में चेले का मुंह बन्द हो गया और गरदन का मनका ढल गया. गुरू जी ने कहा कि जिस तरह हो सके इसके गले से भभूत उतार दो. बड़ी मुश्किल से ख़शख़ाश के एक दाने के बराबर वह राख सींक से उसको खिला दी. दवा का कन्ठ से उतरना ही था कि चेला झुरझुरी लेकर सीधा हो गया. दूसरे चेलों को हुक्म दिया कि अब इसे बैठाओ. थोड़ी देर में उसने भूक ज़ाहिर

بولے—"اجی ! اسلام علیکم کہو." یہ فقیرہ سن کر ہم چونکے. اُنھوں نے اپنا حال سنایا اور کہنے لگے—"میں سید ہوں، میرا نام محمد حسین ہے، پہلے تو میں نے شاہ عبدالعزیز صاحب سے گورومنتر لیا، پھر وید اور شاستروں کو پڑھنے کا شوق ہوا، بنارس میں جا کر یہ بھی پڑھا. خاندان قادریہ کا چیلا ہوں. اب یوگ کے لئے یہاں آرہا ہوں. چیلے کام کرتے ہیں، میں خدا کی یاد میں لگا ہوں."

ہم نے پوچھا کہ—"ہندؤں اور مسلمانوں کی فقیری میں آپ نے کیا فرق دیکھا ؟" جواب دیا—"فقیری کی بات تو دونوں جگہ ایک سی ہے، صرف کچھ لفظ اور اصطلاحیں (پریبھاشائیں) الگ الگ ہیں.

ہندیاں را اصطلاح ہند مدح
سندھیاں را اصطلاح سندھ مدح

یعنی—سب کے لئے حمد (استوتی) کرنے کا اپنا اپنا طریقہ ہے، ہندستانیوں کے لئے ہندستانیوں کا طریقہ ٹھیک ہے اور سندھیوں کے لئے سندھیوں کا طریقہ.

نہ من بر آں گل عارض غزل سرایم و بس
کہ عندلیب تو از ہر طرف ہزاراں اند

یعنی—تیرے اُس پھول سے چہرے کی حمد (استوتی) گانے والا صرف ایک میں ہی نہیں ہوں، ہر طرف سے ہزاروں بلبلیں تیری حمد (استوتی) گا رہی ہیں.

[5]

ایک دن ہم دہرادون کے پہاڑ کی سیر کرتے ہوئے شری نگر میں پہونچے. ایک پہاڑ پر ایک بابا جی رہتے تھے. اُن سے بھینٹ ہوئی. بڑی آؤبھگت سے ملے. ہمیں ایک الگ مکان دیا. چارپائی منگائی. ہم نے بہتیرا اِنکار کیا کہ آپ زمین پر سوتے ہیں، ہم بھی اِسی طرح پر آرام کریں گے. لیکن اُنھوں نے نہ مانا اور ضد کی کہ نہیں تم کو چارپائی ضرور چاہئے. آہستہ آہستہ اُن سے میل جول بڑھ گیا. ایک دن اُن کے کسی چیلے کو پدم ناگ نے، جو ہاتھ بھر کا اور بڑا زہریلا سانپ ہوتا ہے، کاٹ لیا. دوسرے چیلے نے سانپ کو پتھر کے کونڈے سے ڈھانک دیا اور آکر گروجی کو خبر دی. اُنھوں نے کہا کہ جلدی سے بھبھوت یعنی اکسیر لا. اِتنے میں چیلے کا منھ بند ہوگیا اور گردن کا منکا ڈھل گیا. گروجی نے کہا کہ جس طرح ہوسکے اِس کے گلے سے بھبھوت اُتار دو. بڑی مشکل سے خشخاش کے ایک دانے برابر وہ راکھ سینک سے اس کو کھلا دی. دوا کا کنٹھ سے اُترنا ہی تھا کہ چیلا جھرجھری لیکر سیدھا ہوگیا. دوسرے چیلوں کو حکم دیا کہ اب اِسے بیٹھاؤ. تھوڑی دیر میں اُس نے بھوک ظاہر

[illegible] सेर घी उसे पिलवा दिया और फिर टहलाना शुरू किया. जब उसे फिर ख्वाहिश हुई तो फिर घी पिलाया गया. कुछ देर पीछे उसे ख़ून का दस्त हुआ. फिर घी पिला कर टहलाया तो कचलहू का दस्त आया. इसके बाद मामूली पाख़ाना आया और भला चंगा हो गया. अब गुरू जी ने कहा कि उस सांप को लाओ. चेले पकड़ लाए. एक सींक से उसके मुंह में भी वही भभूत डाल दी. उसी दम ऐंठ कर रह गया और थोड़ी ही देर में पानी हो कर बह गया और वह भस्म पानी पर तैरने लगी. बाबा जी ने कहा कि—"देखिये इसका विष इसके लिए तो अकसीर है, लेकिन आदमी के लिए मुहलिक (घातक) है और आदमी की अकसीर इसके लिए हलाहल है.

आं यके रा मदह दर हक़्क़े तो ज़म,
आं यके रा शहद दर हक़्क़े तो सम.

यानी—जो एक के लिए स्तुति है वह दूसरे के लिए निन्दा और जो एक के लिए शहद है वह दूसरे के लिए ज़हर.

इसके बाद बाबा जी ने कहा कि आओ तुम को एक और तमाशा दिखावें. एक कढ़ाही दूध की भरी हुई मंगाई, उसमें सिरका और नमक डाल कर दूध को फाड़ दिया. मुझसे बोले कि—"भला अब कोई चीज़ इसे दुरुस्त कर सकती है?" मैंने कहा कि "नहीं." फिर वही भस्म एक चावल भर उसमें डाल कर लकड़ी से हिलाना शुरू किया. फ़ौरन दूध असली हालत पर आ गया. फिर कितना ही सिरका और नमक डाला उस पर कुछ असर न हुआ, जैसा था वैसा ही रहा. बाबा जी ने चेलों को हुक्म दिया कि गड्ढा खोद कर इस दूध को दबा दो. हमने कहा कि महाराज इन चेलों को क्यों नहीं पिला देते? कहने लगे कि ये पिएंगे तो कामी हो जावेंगे. फिर हमसे प्यार के साथ कहा कि अगर तुम खाओ तो हम खिलावें. सात पीढ़ी तक इसका असर रहेगा. मैंने कहा बहुत अच्छा, लेकिन इसका उतार भी तो बता दीजिये नहीं तो पांच सेर घी रोज़ कहां से लावेंगे. कहने लगे मियां ख़ुदा मालिक है. हमने कहा अच्छे रहे. दवा खिलाने को तो आप मालिक हैं और खाना खिलाने के लिये ख़ुदा मालिक है. मैं ऐसी दवा से बाज़ आया. यह सुन कर बाबा जी चुप हो रहे. इन बाबा जी की उमर चार सौ बरस की थी. हर सत्तर बरस में कायाकल्प करते थे. उसकी विधि यह थी कि छै महीने तक एक कोठरी में बैठ कर जहां हवा न पहुँच सके एक दवा खाते थे. पहला जिस्म फट जाता था और उसके अन्दर से एक दूसरा बारह बरस के लड़के का सा नया जिस्म निकल आता था. जिन दिनों हम गए थे वह दवा तैयार हो रही थी. यह बाबा जी अकसीर के खिलाने में बड़े उस्ताद थे. कुछ दिनों के बाद मीर आज़म अली साहब हमें ढूँढते ढूँढते वहां जा पहुंचे. उन्हें देखकर बाबाजी

ی تو دو سیر گھی اُسے پلوا دیا اور پھر ٹہلانا شروع کیا. جب اُسے
ر خواہش ہوئی تو پھر گھی پلایا گیا. کچھ دیر پیچھے اُسے
خون کا دست ہوا. پھر گھی پلاکر ٹہلایا تو کچ لہو کا دست آیا.
س کے بعد معمولی پاخانہ آیا اور بھلا چنگا ہوگیا. اب گروجی
ے کہا کہ اُس سانپ کو لاؤ. چیلے پکڑ لائے. ایک سینک سے
س کے منھ میں بھی وہی بھبھوت ڈال دی. اُسی دم اینٹھ کر
ہ گیا اور تھوڑی سی دیر میں پانی پانی ہوکر بہ گیا اور وہ
بھسم پانی پر تیرنے لگی. بابا جی نے کہا کہ—"دیکھئے اِس کا
بش اِس کے لئے تو اکسیر ہے' لیکن آدمی کے لئے مہلک
گھاتک) ہے اور آدمی کی اکسیر اِس کے لئے ہلاہل ہے.

آں یکےرا مدح' درحق تو زم'
آں یکے را شہد درحق تو سم،

یعنی—جو ایک کے لئے استوتی ہے وہ دوسرے کے لئے نندا اور جو ایک کے لئے شہد ہے وہ دوسرے کے لئے زہر.

اِس کے بعد بابا جی نے کہا کہ آؤ تم کو ایک اور تماشا دکھاویں. ایک کڑاھی دودھ کی بھری ہوئی منگائی' اُس میں سرکہ اور نمک ڈال کر دودھ پھاڑ دیا. مجھ سے بولے کہ—"بھلا اب کوئی چیز اِسے درست کرسکتی ہے؟" میں نے کہا کہ—"نہیں." پھر وہی بھسم ایک چاول بھر اُس میں ڈال کر لکڑی سے ہلانا شروع کیا. فوراً دودھ اصلی حالت پر آگیا. پھر کتنا ہی سرکہ اور نمک ڈالا اُس پر کچھ اثر نہ ہوا' جیسا تھا ویسا ہی رہا. بابا جی نے چیلوں کو حکم دیا کہ گڈھا کھودکر اِس دودھ کو دبا دو. ہم نے کہا کہ مہاراج اِن چیلوں کو کیوں نہیں پلا دیتے؟ کہنے لگے کہ یہ پئیں گے تو کامی ہوجاوینگے. پھر ہم سے پیار کے ساتھ کہا کہ اگر تم کھاؤ تو ہم کھلاویں. سات پیڑھی تک اِس کا اثر رہیگا. میں نے کہا بہت اچھا' لیکن اس کا اُتار بھی تو بتا دیجئے' نہیں تو پانچ سیر گھی روز کہاں سے لاوینگے. کہنے لگے میاں خدا مالک ہے. ہم نے کہا اچھے رہے. دوا کھلانے کو تو آپ مالک ہیں اور کھانا کھلانے کے لئے خدا مالک ہے. میں ایسی دوا سے باز آیا. یہ سنکر بابا جی چپ ہو رہے. اِن بابا جی کی عمر چار سو برس کی تھی. ہر ستر برس میں کایا کلپ کرتے تھے. اس کی ودھی یہ تھی کہ چھ مہینے تک ایک کوٹھری میں بیٹھکر جہاں ہوا نہ پہونچ سکے ایک دوا کھاتے تھے. پہلا جسم پھٹ جاتا تھا اور اُس کے اندر سے ایک دوسرا بارہ برس کے لڑکے کا سا نیا جسم نکل آتا تھا. جن دنوں ہم گئے تھے وہ دوا تیار ہو رہی تھی. یہ بابا جی اکسیر کے کھلانے میں بڑے اُستاد تھے. کچھ دنوں کے بعد میر اعظم علی صاحب ہمیں ڈھونڈھتے ڈھونڈھتے وہاں جا پہونچے. اُنھیں دیکھکر بابا جی

ने पूछा कि ये कौन हैं ? मैंने कहा मेरे पिता हैं. बोले रूप रंग से तो यह बात ठीक नहीं मालूम होती. तब मैंने कहा कि हमारे गुरू हैं. उन्होंने कहा कि हां यह हो सकता है. चलते वक़्त बाबा जी ने मीर साहब को सत्तर रुपये और एक बेल अकसीर की दी. वहां से बाबरी को चले. रास्ते में मीर साहब ने कहा कि अकसीर की बेल को फेंक दो. मैंने कहा कि आप बाल बच्चों वाले हैं, उनके काम आवेगी. कहा कि नहीं इसको देख कर ख़राब हो जावेंगे. तब हमने वह बेल फेंक दी.

अकसीर पर मुहव्विस इतना न नाज़ करना,
बेहतर है कीमिया से दिल का गुदाज़ करना.

[6]

एक दिन जब हम मेरठ में ठहरे हुए थे तब कपड़े बिलकुल फट गए. गिरह में कौड़ी न थी. मजबूर होकर लड़के पढ़ाने शुरू किए. जब कपड़ों के लायक़ दाम आ गए तो पढ़ाना छोड़ दिया. उन दिनों मौलवी हबीबुल्ला शाह की सेवा में रहे. हक़ीक़त में उनकी निगाह जिस पर पड़ जाती थी उसके दिल को पाक करने में उससे बहुत बड़ी मदद मिलती थी. हमारे दिल पर भी उनकी निगाह का बहुत बड़ा असर पड़ा. योग की कई क्रियाएं जो नक़्शबन्दी फ़क़ीरों में रायज थीं हमने उनसे सीखीं. जब चक्रों, ज्योतियों और तरह तरह के अन्दरूनी तजरुबों की सैर हो चुकी तो मैंने अर्ज़ किया कि "आपकी कृपा से यह सब तमाशा तो ख़ूब देखा पर गुस्ताख़ी माफ़ कीजिये ख़ुदा का पता तो न किसी चक्र में लगा, न किसी लतीफ़े* में. यह सब भानमती का स्वांग मालूम होता है." उस वक़्त तो यह बात उनको नापसन्द आई लेकिन आदमी बहुत सच्चे और समझदार थे. रात को सोचा तो बात समझ में आ गई. सुबह को कहने लगे कि तुम सच कहते हो, सचमुच वह बेचून और बेचगून ईश्वर न किसी चक्र में क़ैद है और न किसी ऋद्धि सिद्धि में. सैकड़ों मुतलाशी (जिज्ञासु) हमारे पास आए लेकिन किसी ने इस सूझ बूझ की बात नहीं की. आओ दिल्ली चलकर शाह अबू सईद साहब से पूछें. वह मुझे दिल्ली ले गए. शाह साहब से बात चीत हुई. उन्होंने बहुत ही ठीक जवाब दिया और कहा कि—"सुनो बेटा, जो कुछ हमें अपने बुज़ुर्गों से मिला है वह तुम्हें पहुंचा दिया, अब अगर तुम्हारी हिम्मत बड़ी और तलाश ज़ोर की है तो और जगह ढूंढो." फिर हम दिल्ली से चल दिए.

[7]

एक दिन मंडावर में हम वहां के सज्जादानशीन पीर साहब के पास बैठे थे. अकसर पीरों की आदत होती है कि अपने चेलों से हर तरह के काम लेते हैं. मियां साहब ने

لے پوچھا کہ یہ کون ھیں ؟ میں نے کہا میرے پتا ھیں ۔ بولے روپ رنگ سے تو یہ بات ٹھیک نہیں معلوم ھوتی ۔ تب میں نے کہا کہ ھمارے گرو ھیں ۔ اُنہوں نے کہا کہ ھاں یہ ھوسکتا ھے ۔ چلتے وقت بابا جی نے میر صاحب کو ستر روپئے اور ایک بیل اِکسیر کی دی ۔ وھاں سے باہری کو چلے ۔ راستے میں میر صاحب نے کہا کہ اکسیر کی بیل کو پھینک دو ۔ میں نے کہا کہ آپ بال بچوں والے ھیں' اُن کے کام آویگی ۔ کہا کہ نہیں اِس کو دیکھکر خراب ھوجاوینگے ۔ تب ھم نے وہ بیل پھینک دی ۔

اکسیر پر محوس اتنا نہ ناز کرنا
بہتر ھے کیمیا سے دل کا گداز کرنا

[6]

ایک دن جب ھم میرٹھ میں ٹھہرے ھوئے تھے تب کپڑے بالکل پھٹ گئے ۔ گرہ میں کوڑی نہ تھی ۔ مجبور ھوکر لڑکے پڑھانے شروع کئے ۔ جب کپڑوں کے لایق دام آگئے تو پڑھانا چھوڑ دیا ۔ اُن دنوں مولوی حبیب اللہ شاہ کی سیوا میں رھے ۔ حقیقت میں اُن کی نگاہ جس پر پڑ جاتی تھی اُس کے دل کو پاک کرنے میں اُس سے بہت بڑی مدد ملتی تھی ۔ ھمارے دل پر بھی اُن کی نگاہ کا بہت بڑا اثر پڑا ۔ یوگ کی کئی کریائیں جو نقشبندی فقیروں میں رائج تھیں ھم نے اُن سے سیکھیں ۔ جب چکروں' جیوتیوں اور طرح طرح کے اندرونی تجربوں کی سیر ھوچکی تو میں نے عرض کیا کہ "آپ کی کرپا سے یہ سب تماشہ تو خوب دیکھا پر گستاخی معاف کیجئے خدا کا پتہ تو نہ کسی چکر میں لگا' نہ کسی لطیفے* میں ۔ یہ سب بھانمتی کا سوانگ معلوم ھوتا ھے ۔" اُس وقت تو یہ بات اُن کو ناپسند آئی لیکن آدمی بہت سچے اور سمجھدار تھے ۔ رات کو سوچا تو بات سمجھ میں آگئی ۔ صبح کو کہنے لگے کہ تم سچ کہتے ھو' سچ مچ وہ بے چون اور بے چگون اِیشور نہ کسی چکر میں قید ھے اور نہ کسی ردھی سدھی میں ۔ سیکڑوں متلاشی (جگیاسو) ھمارے پاس آئے لیکن کسی نے اِس سوجھ بوجھ کی بات نہیں کی ۔ آؤ دلی چلکر شاہ ابوسعید صاحب سے پوچھیں ۔ وہ مجھے دلی لے گئے ۔ شاہ صاحب سے بات چیت ھوئی ۔ اُنہوں نے بہت ھی ٹھیک جواب دیا اور کہا کہ — "سنو بیٹا' جو کچھ ھمیں اپنے بزرگوں سے ملا ھے وہ تمہیں پہونچا دیا' اب اگر تمہاری ھمت بڑھی اور تلاش زور کی ھے تو اور جگہ ڈھونڈھو ۔" پھر ھم دلی سے چل دئے ۔

[7]

ایک دن میں منڈاور میں ھم وھاں کے سجادہ نشین پیر صاحب کے پاس بیٹھے تھے ۔ اکثر پیروں کی عادت ھوتی ھے کہ اپنے چیلوں سے ھر طرح کے کام لیتے ھیں ۔ میاں صاحب نے

* ऋद्धि सिद्धि ردھی سدھی

भी अपने चेलों को हलों में जोत रखा था. एक दिन जब चेले हल जोत कर आए तो आपने उनसे कहा कि—"अरे रात को कुछ अल्लाह, अल्लाह ! भी कर लिया करो." इस पर एक चेला क्या कहता है कि—"अब आई हम बदनसीबों की कमबख़्ती. दिन को तो हल जोतें और रात को अल्लाह, अल्लाह करें ! बस अब हम कैसे जिएंगे, किस मुसीबत में फंस गए ? हम ऐसी पीरी-मुरीदी से भर पाए." यह बात सुनकर हम तो हंसने लगे और पीर जी चुप रह गए. कुछ जवाब न दिया. हक़ीक़त में चेलों से काम लेना बुरा है, ख़ास कर उनसे जो ईश्वर के खोजी हों. यूं तो कोई कोई सन्त महात्मा भी चेलों से बहुत सख़्त काम लिया करते थे, लेकिन उसमें कुछ मतलब था और आख़ीर में उनको अपने मक़सद (लक्ष्य) तक भी पहुंचा देते थे. ख़राबी तो यह है कि ज़्यादहतर पीरज़ादे सिवाय अपने ख़ानदान का घमन्ड करने के अपनी गिरह का कुछ नहीं रखते और चेलों की ख़ूब ख़बर लेते हैं. अगर कोई प्रेमी चेला अपने प्रेम से गुरू का कोई काम करे तो दूसरी बात है. लेकिन कुछ बदला उसको भी मिलना चाहिए. .क़ुरान की आयत है—जो तुम पर अहसान करे उस पर तुम भी अहसान करो.

[8]

एक दिन जब हम करतपुर में गए तो देखा कि वहां के सज्जादा नशीन पीरजी ने सुबह आकर हज़रत अहमद शाह के मज़ार का तवाफ़ (परिक्रमा) और सिज्दा किया. हमने पूछा कि "साहब ! तवाफ़ और सिज्दा तो यहां हो गया अब अगर हज़रत ग़ौसुल आज़म के मज़ार पर आप जायं तो वहां क्या कीजियेगा और रसूल अल्लाह मोहम्मद साहब के लिए क्या बाक़ी रखा है ? और ख़ुदा से तो कुछ मतलब ही नहीं जिसके लिए कुछ अदब तमीज़ की ज़रूरत हो ?" वे नाराज़ हो गए और बोले—"मियां, तालिबइल्म लोग हुज्जती होते हैं, इसीलिये उन्हें कुछ फ़ायदा नहीं होता." हमने कहा—"साहब ! ऐसे फ़ायदे को हमारा सलाम है जिसके लिए ख़ुदा को छोड़कर दूसरे के सामने सर झुकावें और तौहीद (एकेश्वरवाद) से निकल कर दुई में फंस जावें.

[9]

एक दिन जब हम बनारस में पहुंचे तो एक बुज़ुर्ग के पास ठहरे जो हमारे हमनाम थे. पूछने से मालूम हुआ कि ख़ानदान नक़्शबन्दिया में मौलवी हबीबुल्ला शाह के चेले हैं. हमने कहा कि "आप न सिर्फ़ हमारे हमनाम ही हैं बल्कि हमारे गुरुभाई भी हैं." फिर तो बड़ा प्रेम हो गया. एक दिन कहने लगे कि "यहां एक मन्दिर है जिसमें रोज़ सुबह को गाना होता है कल वहां चलो." अगले दिन सुबह की नमाज़ के बाद हम दोनों वहां गए. देखा कि एक पन्डित जी, जवान उमर के, चौकी पर बैठे हुए बड़े ज़ोर शोर से अद्वैतवाद की व्याख्या कर रहे हैं. जब वह उपदेश दे चुके

بی اپنے چیلوں کو هلوں میں جوت رکھا تها. ایک دن جب چیلے بهی هل جوت کر آئے تو آپ نے اُن سے کہا کہ—"ارے رات کو کچھ الله' الله ! بهی کرلیا کرو." اِس پر ایک چیلا کیا کہتا هے کہ —"اب آئی هم بدنصیبوں کی کمبختی. دن کو تو هل جوتیں اور رات کو الله' الله کریں ! بس اب هم کیسے جئیں گے' کس مصیبت میں پهنس گئے ؟ هم ایسی پیری مریدی سے بهرپائے." یہ بات سنکر هم تو هنسنے لگے اور پیر جی چپ رہ گئے. کچھ جواب نہ دیا. حقیقت میں چیلوں سے کام لینا برا هے' خاصکر اُن سے جو ایشور کے کهوجی هوں. یوں تو کوئی کوئی سنت مہاتما بهی چیلوں سے بہت سخت کام لیا کرتے تهے' لیکن اُس میں کچھ مطلب تها اور آخیر میں اپنے مقصد (لکشیہ) تک بهی پہونچا دیتے تهے. خرابی تو یہ هے کہ زیادہتر پیرزادے سوائے اپنے خاندان کا گهمنڈ کرنے کے اپنی گرہ کا کچھ نہیں رکهتے اور چیلوں کی خوب خبر لیتے هیں. اگر کوئی پریمی چیلا اپنے پریم سے گرو کا کوئی کام کرے تو دوسری بات هے. لیکن کچھ بدلہ اُس کو بهی ملنا چاهئے. قرآن کی آیت هے—جو تم پر احسان کرے اُس پر تم بهی احسان کرو.

[8]

ایک دن جب هم کرتپور میں گئے تو دیکھا کہ وهاں کے سجادہ نشین پیر جی نے صبح آکر حضرت احمد شاہ کے مزار کا طواف (پریکرما) اور سجدہ کیا. هم نے پوچها کہ "صاحب ! طواف اور سجدہ تو یہاں هوگیا اب اگر حضرت غوث الاعظم کے مزار پر آپ جائیں تو وهاں کیا کیجئیگا اور رسول الله محمد صاحب کے لئے کیا باقی رکھا هے ؟ اور خدا سے تو کچھ مطلب هی نہیں جس کے لئے کچھ ادب تمیز کی ضرورت هو ؟" وے ناراض هوگئے اور بولے—"میاں' طالب علم لوگ حجتی هوتے هیں' اس لئے اُنہیں کچھ فایدہ نہیں هوتا." هم نے کہا—"صاحب ! ایسے فایدے کو همارا سلام هے جس کے لئے خدا کو چهوڑکر دوسرے کے سامنے سر جهکاویں اور توحید (ایکیشورواد) سے نکل کر دوئی میں پهنس جاویں.

[9]

ایک دن جب هم بنارس میں پہونچے تو ایک بزرگ کے پاس ٹهہرے جو همارے هم نام تهے. پوچهنے سے معلوم هوا کہ خاندان نقشبندیہ میں مولوی حبیب الله شاہ کے چیلے هیں. هم نے کہا کہ "آپ نہ صرف همارے همنام هی هیں بلکہ همارے گرو بهائی بهی هیں." پهر تو بڑا پریم هوگیا. ایک دن کہنے لگے کہ "یہاں ایک مندر هے جس میں روز صبح کو گانا هوتا هے کل وهاں چلو." اگلے دن صبح کی نماز کے بعد هم دونوں وهاں گئے. دیکھا کہ ایک پنڈت جی' جوان عمر کے' چوکی پر بیٹهے هوئے بڑے زورشور سے ادویتواد کی ویاکهیا کررهے هیں. جب وہ اُپدیش دے چکے

तो सुबह की रागिनी में आरती शुरू की. हमारे गुरु भाई सैयद ग़ौस अली शाह हुसैनी तो सुनकर इतने मुग्ध हो गए कि गिर ही पड़े. लेकिन हमने एक खम्भा पकड़ लिया और अपने आपको सम्हाले रखा. फिर भी हमारे सारे बदन में एक कंपकपी सी दौड़ गई. आरती ख़त्म हुई तो हमारे पीर भाई होश में आए और मकान को चले. आठ दिन तक हमारे दिल पर उसका गहरा असर रहा. एक दिन सैयद ग़ौस अलीशाह ने हमसे कहा कि "आज गंगापुर चलो वहां एक चेले को सन्यास मिलेगा." हम दोनों पहुंचे. देखा कि एक पन्डित किसी चेले को दीक्षा देने वाला है. हमारे गुरुभाई झट सर खोल कर पन्डित के सामने जा बैठे और कहा कि—"पंडित जी पहले हमको मूंड़ दो." यह सुन कर पन्डित रोने लगा और बड़ी सच्चाई के साथ उसने यह कहा कि "मियां साहब, जो बात तुम चाहते हो उसकी हम को हवा भी नहीं लगी. सोचो, अगर हम इस क़ाबिल होते तो टके टके पर क्यों मारे मारे फिरते. यह रुतबा तो हमारे बुज़ुर्गों को हासिल था कि इधर उस्तरा सर पर रखा और उधर अन्त:-करण ने पलटा खाया. हम लोग तो सिर्फ़ उनकी लकीर पीटते हैं."

सचमुच हरिद्वार में हमने यही बात देखी जो इस पन्डित ने कही थी. यानी एक सन्यासी अपने चेले को सन्यास देना चाहता था कि एक मुसलमान फ़क़ीर सिर खोलकर आगे आ बैठा. सन्यासी ने जोश में आकर नाई को इशारा किया कि अच्छा पहले इसी को मूंड़. नाई ने अपना काम शुरू किया. गुरू ने यूँ दीक्षा देनी शुरू की—"न पापी न पुन्नी, न स्वर्गी न नरकी, न ब्रह्मी न विशनी इत्यादि."

इस दीक्षा के बाद उस मुसलमान फ़क़ीर की ऐसी अजीब हालत हुई कि फिर वह परमहंस हो गया. इसके बाद असली चेले की बारी आई. उस पर भी असर तो गहरा पड़ा मगर वह बात न हुई जो मुसलमान फ़क़ीर को हासिल हुई थी.

10]

एक रोज़ जब हम कोट पूतली से चले तो रास्ते में एक मन्दिर मिला. वहां एक साधू बड़े मनोहर स्वर से भजन गा रहा था. हम उसके पास जा बैठे. भजन सुनते रहे. फिर उनसे बातें होने लगीं, यहां तक कि नमाज़ का वक़्त आया. हमने कपड़ा बिछा कर नमाज़ पढ़ ली. नमाज़ के बाद वह साधू जी हमसे कहने लगे कि "मियां साहब, आपकी तबीयत में तो बड़ी आज़ादी मालूम होती है फिर यह नमाज़ की इल्लत क्यों लगा रखी है ?" हमने कहा कि "बाबा जी ! इल्लत से तो न तुम ख़ाली, न हम ख़ाली. तुमको इस पत्थर के पूजने की इल्लत लगी हुई है, हमको नमाज़ की. तुम

انیسویں صدی کے فقیر کی ڈائری

تو صبح کی راگنی میں آرتی شروع کی۔ ہمارے گرو بھائی سید غوث علی شاہ حسینی تو سنکر اِتنے مگدھ ہوگئے کہ گر ہی پڑے۔ لیکن ہم نے ایک کھمبا پکڑلیا اور اپنے آپ کو سنبھالے رکھا۔ پھر بھی ہمارے سارے بدن میں ایک کنپکپی سے دوڑ گئی۔ آرتی ختم ہوئی تو ہمارے پیر بھائی ہوش میں آئے اور مکان کو چلے۔ آٹھ دن تک ہمارے دل پر اُس کا گہرا اثر رہا۔ ایک دن سید غوث علی شاہ نے ہم سے کہا کہ "آج گنگاپور چلو وہاں ایک چیلے کو سنیاس ملیگا۔" ہم دونوں پہونچے۔ دیکھا کہ ایک پنڈت کسی چیلے کو دیکشا دینے والا ہے۔ ہمارے گرو بھائی جھٹ سر کھول پنڈت کے سامنے جا بیٹھے اور کہا کہ—"پنڈت جی پہلے ہم کو موڑ دو۔" یہ سنکر پنڈت رونے لگا اور بڑی سچائی کے ساتھ اُس نے یہ کہا کہ "میاں صاحب' جو بات تم چاہتے ہو اُس کی ہم کو ہوا بھی نہیں لگی۔ سوچو' اگر ہم اِس قابل ہوتے تو ٹکے ٹکے پر کیوں مارے مارے پھرتے۔ یہ رتبہ تو ہمارے بزرگوں کو حاصل تھا کہ اِدھر اُسترا سر پر رکھا اور اُدھر انتہکرن نے پلٹا کھایا۔ ہم لوگ تو صرف اُن کی لکیر پیٹتے ہیں۔"

سچ مچ ہری‌دوار میں ہم نے یہی بات دیکھی جو اِس پنڈت نے کہی تھی۔ یعنی ایک سنیاسی اپنے چیلے کو سنیاس دینا چاہتا تھا کہ ایک مسلمان فقیر سر کھول‌کر آگے آ بیٹھا۔ سنیاسی نے جوش میں آکر نائی کو اِشارہ کیا کہ اچھا پہلے اِسی کو مونڑ۔ نائی نے اپنا کام شروع کیا۔ گرو نے یوں دیکشا دینی شروع کی—"نہ پاپی نہ پنی' نہ سورگی نہ نرکی' نہ برھمی نہ وشنی اِتیادی۔"

اِس دیکشا کے بعد اُس مسلمان فقیر کی ایسی عجیب حالت ہوئی کہ پھر وہ پرم ہنس ہوگیا۔ اِس کے بعد اصلی چیلے کی باری آئی۔ اُس پر بھی اثر تو گہرا پڑا مگر وہ بات نہ ہوئی جو مسلمان فقیر کو حاصل ہوئی تھی۔

[10]

ایک روز جب ہم کوٹ پوتلی سے چلے تو راستے میں ایک مندر ملا۔ وہاں ایک سادھو بڑے منوہر سور سے بھجن گا رہا تھا۔ ہم اُس کے پاس جا بیٹھے۔ بھجن سنتے رہے۔ پھر اُن سے باتیں ہونے لگیں' یہاں تک کہ نماز کا وقت آیا۔ ہم نے کپڑا بچھاکر نماز پڑھ لی۔ نماز کے بعد وہ سادھو جی ہم سے کہنے لگے کہ "میاں صاحب' آپ کی طبیعت میں تو بڑی آزادی معلوم ہوتی ہے پھر یہ نماز کی علت کیوں لگا رکھی ہے ؟" ہم نے کہا کہ "بابا جی ! علت سے تو نہ تم خالی' نہ ہم خالی۔ تم کو اِس پتھر کے پوجنے کی علت لگی ہوئی ہے' ہم کو نماز کی۔ تم

घण्टा बजाते हो हम माला हिलाते हैं."

रसाई नेस्त ता सरे मंज़िले ऊ कुफ़्रो ईमाँ रा,
के दैरो काबा संगे रह बुवद गबरो मुसलमाँ रा.

यानी—उस परमेश्वर के मुक़ाम तक कुफ़्र और ईमान दोनों में से किसी की भी पहुंच नहीं, क्योंकि मन्दिर और काबा दोनों हिन्दू और मुसलमानों के रास्ते के पत्थर हैं.

दिला* मायल❋ न हो दैरो† हरम‡ का,
यहाँ दोनों जगह पत्थर पड़े हैं.

گھنٹا بجاتے هو هم مالا هلاتے هیں ."

رسائی نیست تا سر منزل او کفر و ایماں را
که دیر و کعبه سنگ رہ بود گبر و مسلماں را

یعنی—اُس پرمیشور کے مقام تک کفر اور ایمان دونوں میں سے کسی کی بھی پہونچ نہیں' کیونکہ مندر اور کعبہ دونوں هندو اور مسلمانوں کے راستے کے پتھر هیں .

دلا* مائل❋ نہ هو دیرو† حرم‡ کا'
یہاں دونوں جگہ پتھر پڑے هیں .

जल कन्या के आँसू

جل کنیا کے آنسو

विश्वम्भर नाथ पांडे

وشومبھر ناتھ پانڈے

मुसलमानों की नमाज़ में मुझे एक ख़ास खिंचाव मालूम होता है, और ख़ास तौर पर इशा की नमाज़. कितनी ही बार मैंने मौअ़ज़्ज़िन को अज़ान देते हुए और इमाम को नमाज़ पढ़ाते देखा है. ज़ाहिद सुरीले लहजे से क़ुरान की तेलावत करता है और नमाज़ियों की क़तारें बेख़ुदी में डूब कर उस पाक परवर्दिगार अल्लाह ताला के साथ एक तार में बँध जाती हैं. मुझे नहीं मालूम कि औरों को भी नमाज़ इस तरह रुजू करती है या नहीं और न मैंने इस असर की ही छानबीन करने की कोशिश की कि मुझे यह क्यों इतनी दिलकश लगती है.

नमाज़ का ज़िक्र करते करते मेरे मन में मलाया की उस घटना की याद ताज़ा हो गई. सूरज डूब चुका था. नमाज़ी मस्जिद में आकर इशा की नमाज़ का इन्तज़ार कर रहे थे. कुछ कलाम मजीद का मुताला कर रहे थे और कुछ हदीसों की चरचा. एक बूढ़े से हाजी हज़रत पैग़म्बर के वफ़ादार साथियों की क़ुरबानी और जाँनिसारी की कहानियाँ सुना रहे थे. दक्खिन पूरब के इन मुल्कों में और ख़ास तौर पर मलाया में मुसाफ़िर का मन ख़ास तौर पर रम जाता है. उसे ख़्वाहिश ही नहीं होती कि सफ़र तमाम करके आगे की मंज़िल की ओर बढ़े.

इस खिंचाव का राज़ क्या है, उसके पीछे रहस्य क्या है, यह बताना ज़रा मुश्किल है. कुछ तो देश की सुन्दरता,

مسلمانوں کی نماز میں مجھے ایک خاص کھنچاؤ معلوم هوتا هے. اور خاص طور پر عشاء کی نماز. کتنی هی بار میں نے موذن کو آذان دیتے هوئے اور امام کو نماز پڑھاتے دیکھا هے . زاهد سریلے لہجے سے قران کی تلاوت کرتا هے اور نمازیوں کی قطاریں بیخودی میں ڈوب کر اُس پاک پروردگار اللہ تعالی کے ساتھ ایک تار میں بندھ جاتی هیں . مجھے نہیں معلوم کہ اوروں کو بھی نماز اس طرح رجوع کرتی یا نہیں اور نہ میں نے اس اثر کی هی چھان بین کرنے کی کوشش کی کہ مجھے یہ کیوں اتنی دلکش لگتی هے .

نماز کا ذکر کرتے کرتے میرے من میں ملایا کی اُس گھٹنا کی یاد تازہ هوگئی. سورج ڈوب چکا تھا . نمازی مسجد میں آکر عشاء کی نماز کا انتظار کر رهے تھے . کچھ کلام مجید کا مطالعہ کر رهے تھے اور کچھ حدیثوں کی چرچا . ایک بوڑھے سے حاجی حضرت پیغمبر کے وفادار ساتھیوں کی قربانی اور جانثاری کی کہانیاں سنا رهے تھے . دکھن پورب کے اُن ملکوں میں اور خاص طور پر ملایا میں مسافر کا من خاص طور پر رم جاتا هے . اُسے خواهش هی نہیں هوتی کہ سفر تمام کر کے آگے کی منزل کی اور بڑھے .

اِس کھچاؤ کا راز کیا هے' اِس کے پیچھے رهسیہ کیا هے' یہ بتانا ذرا مشکل هے . کچھ تو دیش کی سندرتا'

---

* ऐ दिल اے دل ❋ आसक्त آسکت † मन्दिर مندر ‡ काबा کعبہ

कुछ देशवासियों की परदेसियों के साथ मोहब्बत, कुछ कुदरत के नज्ज़ारे, कुछ मौसम और आबो हवा की मनपसन्दगी मुसाफ़िर की तबियत पर एक अजीबो ग़रीब असर डालते हैं. और अगर उसे मजबूरन मलाया छोड़ना ही पड़े तो वह यही पुख्ता इरादा लेकर छोड़ता है कि दूसरी बार कुछ ज्यादा फ़ुर्सत साथ लेकर वह वहाँ लौटेगा. किताबों से अपनी मालूमात बढ़ाने वाले इस बात का अन्दाज़ा ही नहीं लगा सकते कि सफ़र में जो बातें दिखाई देती हैं उनका ज़िक्र तक किताबों में नहीं होता. फिर भी कितनी तसल्ली की बात है कि यह चीज़ें खुद अपनी आँखों से देखने को मिलती हैं. हालाँकि मैं वहाँ दूसरी बार न जा सका फिर भी रह रह कर मुझे मलाया के उस सफ़र की याद आती है.

वह देश क्या है, दो तूफ़ानी समन्दरों के बीच धरती की एक पतली सी लकीर है. लेकिन समन्दरी तूफ़ान उसके किनारों से टक्कर नहीं लेते. वहाँ हर वक्त मौसमे बहार छाया रहता है. न लोग ज्वालामुखी जानते हैं, न भूँचाल और न तूफ़ान. चीन सागर और हिन्द महासागर की भूकी लहरें इस सुन्दर जज़ीरे के लामहफ़ूज़ किनारों तक पहुंचते पहुंचते थक कर लस्त हो जाती हैं.

मैं इशा की नमाज़ का ज़िक्र कर रहा था. इमाम आये और नमाज़ पढ़ाकर नमाज़ियों को दुआ देकर आराम करने चले गये. कुछ बुज़ुर्ग निमाज़ी, जिनका घर से लाग लगाव कम हो चुका था, वहीं दीवार का सहारा लेकर बैठे रहे. कई क़िस्म के चरचे शुरू हुए, जिनके सिलसिले ख़त्म होते ही इस तरह जुड़ जाते थे कि वह एक लम्बी दास्तान मालूम होते थे. वह सारे चरचे इतने दिलचस्प थे कि मन होता था कि बस सुनता ही रहूँ. सुनाने वाले कई थे और एक के ख़त्म करते न करते दूसरा फ़ौरन कड़ी पकड़ लेता था.

सामने बैठे हुए एक बुज़ुर्ग ने मेरी तरफ़ इशारा करते हुए कहा—"आप तो मलाया के लिये अजनबी हैं ना? बहुत पहले यहाँ एक अजनबी आया था. लोग उसे नाख़ुदा माबीन कह कर पुकारते थे. वह 'बातूबारा' का रहने वाला एक सौदागर था. अपने वतन सुमात्रा से वह वहाँ की बनी मशहूर रेशम नाव पर लाद कर लाया था. नदी के रास्ते गाँव गाँव में उसे बेच कर और अपना रुपया वसूल करके वह नदी के मुहाने की ओर चल पड़ा. सुमात्रा के लिये लंगर उठाने से पहले लोग सफ़र के लिये पीने का पानी इकट्ठा कर लेते हैं. हमारा यह बन्दर 'तेलुकबातू' ही ऐसी जगह है जहाँ उम्दा मीठा पानी मन चाही मिक़दार में मिल सकता है. इसीलिये नाख़ुदा मीठा पानी इकट्ठा करने के लिये यहाँ ठहर गया. उसे जल्दी न थी और इस काम के लिये वह हफ़्ते भर से महीने भर ठहर सकता था.

کچھ دیش واسیوں کی پردیسیوں کے ساتھ محبت، کچھ قدرت کے نظارے، کچھ موسم اور آب و ہوا کی من پسندگی مسافر کی طبیعت پر ایک عجیب و غریب اثر ڈالتے ہیں. اور اگر اِسے مجبوراً ملایا چھوڑنا ہی پڑے تو وہ یہی پختہ ارادہ لیکر چھوڑتا ہے کہ دوسری بار کچھ زیادہ فرصت ساتھ لیکر وہ وہاں لوٹے گا. کتابوں سے اپنی معلومات بڑھانے والے اس بات کا اندازہ ہی نہیں لگا سکتے کہ سفر میں جو باتیں دکھائی دیتی ہیں انکا ذکر تک کتابوں میں نہیں ہوتا. پھر بھی کتنی تسلی کی بات ہے کہ یہ چیزیں خود اپنی آنکھوں سے دیکھنے کو ملتی ہیں. حالانکہ میں وہاں دوسری بار نہ جا سکا پھر بھی رہ رہ کر مجھے ملایا کے اُس سفر کی یاد آتی ہے.

وہ دیش کیا ہے، دو طوفانی سمندروں کے بیچ دھرتی کی ایک پتلی سی لکیر ہے. لیکن سمندری طوفان اُس کے کناروں سے ٹکر نہیں لیتے. وہاں ہر وقت موسم بہار چھایا رہتا ہے. نہ لوگ جوالامکھی جانتے ہیں، نہ بھونچال اور نہ طوفان. چین ساگر اور ہند ساگر کی بھوکی لہریں اس سندر جزیرہ کے لامحفوظ کناروں تک پہونچتے پہونچتے تھک کر لست ہو جاتی ہیں.

میں عشاء کی نماز کا ذکر کر رہا تھا. امام آئے اور نماز پڑھا کر نمازیوں کو دعا دیکر آرام کرنے چلے گئے. کچھ بزرگ نمازی، جنکا گھر سے لاگ لگاؤ کم ہو چکا تھا، وہیں دیوار کا سہارا لیکر بیٹھے رہے. کئی قسم کے چرچے شروع ہوئے، جن کے سلسلے ختم ہوتے ہی اس طرح جڑ جاتے تھے کہ وہ ایک لمبی داستان معلوم ہوتے تھے. وہ سارے چرچے اتنے دلچسپ تھے کہ من ہوتا تھا کہ بس سنتا ہی رہوں. سنانے والے کئی تھے اور ایک کے ختم کرتے نہ کرتے دوسرا فوراً کڑی پکڑ لیتا تھا.

سامنے بیٹھے ہوئے ایک بزرگ نے میری طرف اشارہ کرتے ہوئے کہا—"آپ تو ملایا کے لئے اجنبی ہیں نا؟ بہت پہلے یہاں ایک اجنبی آیا تھا. لوگ اُسے ناخدا مبین کہہ کر پکارتے تھے. وہ باتو بارہ کا رہنے والا ایک سوداگر تھا. اپنے وطن سماترا سے وہ وہاں کی بنی مشہور ریشم ناؤ پر لاد کر لایا تھا. ندی کے راستے گاؤں گاؤں میں اسے بیچ کر اور اپنا روپیہ وصول کر کے وہ ندی کے مہانے کی اور چل پڑا. سماترا کے لئے لنگر اُٹھانے سے پہلے لوگ سفر کے لئے پینے کا پانی اکٹھا کر لیتے ہیں. ہمارا یہ بندر، تیلک باتو، ہی ایسی جگہہ ہے جہاں عمدہ میٹھا پانی من چاہی مقدار میں مل سکتا ہے. اِسی لئے ناخدا میٹھا پانی اکٹھا کرنے کے لئے یہاں ٹھہر گیا. اُسے جلدی نہ تھی اور اس کام کے لئے وہ ہفتہ بھر سے مہینہ بھر ٹھہر سکتا تھا.

नाख़ुदा 'तेक्कुकबादू' के मुखिया 'तोह परमितांग' की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनकी इजाज़त से मीठा पानी भरवाने की स्कीम बनाने लगा. 'तोह परमितांग' की चार बेटियाँ थीं जिनमें तीसरी 'राउना' बेहद ख़ूबसूरत थी. किसी छोटे से नगर में अगर कोई ख़ूबसूरत लड़की हो तो लोग उसकी काफ़ी चरचा करते हैं. नाख़ुदा के कानों में भी राउना की तारीफ़ की बात पड़ी और उसने इत्तफ़ाक़ से राउना को देखा भी. लोग कहते हैं कि प्रेम मौक़ा और महल नहीं देखता. राउना को देखते ही नाख़ुदा ने अपना दिलो जान उस पर निछावर कर दिया. वह दिन रात उसके प्रेम में तड़पने लगा. दरयाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि राउना तो पहले से ही मोहब्बत की मंज़िल की मुसाफ़िर है. उसकी शादी बन चुकी थी और वह एक दूसरे शख़्स की मंगेतर थी. मगर नाख़ुदा का प्रेम भी हार क़बूल करने से इन्कार कर रहा था. आख़िर तो वह सौदागर था और प्रेम भी तो एक सौदा ही है. वह इसके लिये तैयार था कि इस सौदे में उसे जो भी बाज़ी लगानी पड़े वह पीछे न हटेगा.

बयान सुनते सुनते मेरा मन राउना की ख़ूबसूरती की कल्पना करने में मशग़ूल था. बूढ़े निमाज़ी ने मेरा ध्यान खींचते हुए कहा—"अजनबी! तुम जानते हो कि यह सुमात्रा वाले रेशम और ख़ंजर के अलावा वशीकरन की दवा बनाना भी जानते हैं." मैंने शरमिन्दा होकर अपनी लाइल्मी ज़ाहिर की. मैंने पूछा कि—"यह वशीकरन की दवा है क्या?" बुज़ुर्गवार ने जवाब दिया—"यह दवा 'जल कन्या' के आँसू से बनती है. इस जल कन्या को हम लोग 'दो योंग' कहते हैं. जल कन्या समुद्र में रहती है. तरंगों के साथ इठलाती है और तूफ़ानी मौजों के साथ खेलती है. उसकी ख़ुराक सिर्फ़ दूब है. समुद्र से निकल कर जब वह दूब खाने आती है तो लोग घेरा डालकर उसे पकड़ लेते हैं. उसका क़द आदमी से कुछ बड़ा होता है, कुछ लोग उसका गोश्त भी खाते हैं. भैंस के गोश्त की तरह उसका भी गोश्त लाल होता है. गिरफ़्तार होने पर यह जल कन्या रोने लगती है. उसकी आँखों से टप टप लाल आँसू गिरने लगते हैं. वह समुद्र की लहरों में लौटने के लिये छटपटाने लगती है. जिस वक़्त वह रोती है तो लोग कटोरों में उसके लाल लाल आँसू जमा कर लेते हैं. अगर इन आँसुओं को भात के साथ मिला दिया जाये तो भात का रंग भी लाल हो जाता है.

कहते हैं नाख़ुदा के पास भी एक शीशी में इसी जल कन्या के आँसू थे. तोह परमितांग के बावरची को रिश्वत की एक बड़ी रक़म देकर राउना के भात में उसने जल कन्या के आँसू मिलवा दिये. सुन्दरता की देवी इस लड़की ने

ناخدا 'تیکک باتو' کے مکھیا 'توہ پرمتانگ' کی خدمت میں حاظر ہوا اور اُن کی اجازت سے میٹھا پانی بھروانے کی اسکیم بنانے لگا. 'توہ پرمتانگ' کی چار بیٹیاں تھیں جن میں تیسری 'راؤنا' بیحد خوبصورت تھی. کسی چھوٹے سے نگر میں اگر کوئی خوبصورت لڑکی ہو تو لوگ اس کی کافی چرچا کرتے ہیں. ناخدا کے کانوں میں بھی راؤنا کی تعریف کی بات پڑی اور اُس نے اتفاق سے راؤنا کو دیکھا بھی. لوگ کہتے ہیں کہ پریم موقع اور محل نہیں دیکھتا. راؤنا کو دیکھتے ہی ناخدا نے اپنا دل و جان اس پر نچھاور کر دیا. وہ دن رات اُس کے پریم میں تڑپنے لگا. دریافت کرنے پر معلوم ہوا کہ راؤنا تو پہلے سے ہی محبت کی منزل کی مسافر ہے. اُسکی شادی بن چکی تھی اور وہ ایک دوسرے شخص کی منگیتر تھی. مگر ناخدا کا پریم بھی ہار قبول کرنے سے اِنکار کر رہا تھا. آخر تو وہ سوداگر تھا اور پریم بھی تو ایک سودا ہی ہے. وہ اس کے لئے تیار تھا کہ اِس سودے میں اُسے جو بھی بازی لگانی پڑے وہ پیچھے نہ ہٹے گا.

بیان سنتے سنتے میرا من راؤنا کی خوبصورتی کی کلپنا کرنے میں مشغول تھا. بوڑھے نمازی نے میرا دھیان کھینچتے ہوئے کہا—"اجنبی! تم جانتے ہو کہ یہ سماترا والے ریشم اور خنجر کے علاوہ بشیکرن کی دوا بنا نا بھی جانتے ہیں." میں نے شرمندہ ہو کر اپنی لاعلمی ظاہر کی. میں نے پوچھا کہ—"یہ بشیکرن کی دوا ہے کیا؟" بزرگوار نے جواب دیا—"یہ دوا 'جل کنیا' کے آنسو سے بنتی ہے. اِس جل کنیا کو ہم لوگ 'دو یونگ' کہتے ہیں. جل کنیا سمدر میں رہتی ہے، ترنگوں کے ساتھ اٹھلاتی ہے اور طوفانی موجوں کے ساتھ کھیلتی ہے. اُس کی خوراک صرف دوب ہے. سمندر سے نکل کر جب وہ دوب کھانے آتی ہے تو لوگ گھیرا ڈال کر اُسے پکڑ لیتے ہیں. اُس کا قد آدمی سے کچھ بڑا ہوتا ہے. کچھ لوگ اس کا گوشت بھی کھاتے ہیں. بھینس کے گوشت کی طرح اُس کا بھی گوشت لال ہوتا ہے. گرفتار ہونے پر یہ جل کنیا رونے لگتی ہے. اس کی آنکھوں سے ٹپ ٹپ لال آنسو گرنے لگتے ہیں. وہ سمندر کی لہروں میں لوٹنے کے لئے چھٹپٹانے لگتی ہے. جس وقت وہ روتی ہے تو لوگ کٹوروں میں اِس کے لال لال آنسو جمع کر لیتے ہیں. اگر اِن آنسوؤں کو بھات کے ساتھ ملا دیا جائے تو بھات کا رنگ بھی لال ہو جاتا ہے.

کہتے ہیں ناخدا کے پاس بھی ایک شیشی میں اسی جل کنیا کے آنسو تھے. توہ پر متانگ کے باورچی کو رشوت کی ایک بڑی رقم دیکر راؤنا کے بھات میں اس نے جل کنیا کے آنسو ملوا دیئے. سندرتا کی دیوی اس لڑکی نے

अनजान में वह मात खा लिया. राउना उसे खाकर नाखुदा के प्यार में दीवानी हो गई.

नाखुदा एक महीने तक तेलुक बातू में ठेहरा रहा. राउना की दासी को क़ीमती रेशम भेंट देकर उसकी मदद से वह रोज़ राउना से मिलता रहा. इस तरह की बात अर्से तक चलती रहे और कोई संदेह न करे यह नामुमकिन है. उसके प्रेम पर अब डर हावी होने लगा. राउना एक ताक़तवर मुखिया की लड़की और वह एक अजनबी परदेसी. अगर तोह परमितांग को ज़रा भी शुब्हा हुआ तो या उसकी बोटी बोटी काट ली जायेगी और या वह कुत्तों से नुचवा कर फेंक दिया जायेगा. रेशम का सौदागर प्रेम का सौदा न निभा सका. इसलिये पीने का पानी भरकर बिना किसी को इत्तला दिये एक दिन उसने अपनी किश्ती के लंगर उठा लिये.

छोटी सी जगह में ज़रा ज़रा सी बात की चरचा होती है. राउना के कान में ज्यों ही नाखुदा भावीन की रवानगी की भनक पड़ी वह बदहवास होकर बन्दरगाह की तरफ़ दौड़ी, उसकी बहनें उसके पीछे पीछे. नाव ने पाल उठा दिये थे मगर हवा की रफ़्तार मन्थर थी, इसलिये नाखुदा की किश्ती किनारे से कुछ थोड़ा आगे लहरों के हलकोरों से खेल रही थी. राउना समुद्र की लहरों को चीरते हुए आगे बढ़ी. उसकी बहनों ने उसे पूरी ताक़त से पकड़ कर रोका और मुश्किल से उसे डूबने से बचा पाईं. चीख़ पुकार सुनकर किनारे के कुछ लोग इकट्ठा हो गये. सारी कहानी सुनकर उन्होंने नाखुदा को वापिस आने को कहा. मगर सुमात्रा का वह सौदागर उस वापसी का मतलब ख़ूब समझता था. लोगों ने उसकी नाव का पीछा किया मगर तब तक अनुकूल वायु पाकर वह उनकी गिरिफ़्त में न आ सका.

राउना अपने बुज़दिल और निर्दयी प्रेमी की जुदाई में ज़ार ज़ार रोती और आहें भरती रही. नाखुदा फिर कभी तेलुकबातू वापस नहीं लौटा. राउना की बिपता पर अर्सा हुआ मौत ने काली चादर ढक दी. मगर राउना की जुदाई का गीत अब तक मलाया में गाया जाता है. उसकी कुछ सतरें मैं आपको सुनाता हूँ और मुझे उम्मेद है आप ऊबेंगे नहीं.

मेरे नाखुदा !
मेरे प्राणों के सहारे ! तुम कहां हो ?
ऊंचे ऊंचे ताड़ के दरख़्त,
मेरे क़ासिदों की हैसियत से
तुम्हारी आमद का इन्तज़ार कर रहे हैं,
फल दरख़्तों से टूट कर अपना सर धुन रहे हैं.

मेरे नाखुदा !
मैं तुम्हारी बहुत सुन्दर महबूबा,

انجان میں وہ بھات کھا لیا ۔ راؤنا اُسے کھا کر ناخدا کے پیار میں دیوانی ہو گئی ۔

ناخدا ایک مہینے تک تیلک باتو میں ٹھہرا رہا ۔ راؤنا کی داسی کو قیمتی ریشم بھینٹ دیکر اِس کی مدد سے وہ روز راؤنا سے ملتا رہا ۔ اِس طرح کی بات عرصہ تک چلتی رہے اور کوئی سندیہہ نہ کرے یہ ناممکن ہے ۔ اُس کے پریم پر اب ڈر حاوی ہونے لگا ۔ راؤنا ایک طاقتور مکھیا کی لڑکی اور وہ ایک اجنبی پردیسی ۔ اگر توہ پر متانگ کو ذرا بھی شبہ ہوا تو یا اُسکی بوٹی بوٹی کاٹ لیجائیگی اور یا وہ کتوں سے نچوا کر پھینک دیا جائیگا ۔ ریشم کا سوداگر پریم کا سودا نہ نبھا سکا ۔ اس لئے پینے کا پانی بھر کر بنا کسی کو اطلاع دیئے ایک دن اُس نے اپنی کشتی کے لنگر اُٹھا لئے ۔

چھوٹی سی جگہ میں ذرا ذرا سی بات کی چرچا ہوتی ہے ۔ راؤنا کے کان میں جیوں ہی ناخدا مبھین کی روانگی کی بھنک پڑی وہ بدحواس ہوکر بندرگاہ کی طرف دوڑی' اُس کی بہنیں اُس کے پیچھے پیچھے ۔ ناؤ نے پال اُٹھا دئے تھے مگر ہوا کی رفتار منتھر تھی' اس لئے ناخدا کی کشتی کنارے سے کچھ تھوڑا آگے لہروں کے ھلکوروں سے کھیل رہی تھی ۔ راؤنا سمندر کی لہروں کو چیرتے ہوئے آگے بڑھی ۔ اُس کی بہنوں نے اُسے پوری طاقت سے پکڑ کر روکا اور مشکل سے اُسے ڈوبنے سے بچا پائیں ۔ چیخ پکار سنکر کنارے کے کچھ لوگ اِکٹھا ہوگئے ۔ ساری کہانی سنکر اُنہوں نے ناخدا کو واپس آنے کو کہا۔ مگر سماترا کا وہ سوداگر اُس واپسی کا مطلب خوب سمجھتا تھا ۔ لوگوں نے اُس کی ناؤ کا پیچھا کیا مگر تب تک انوکول وایو پاکر وہ اُن کی گرفت میں نہ آسکا ۔

راؤنا اپنے بزدل اور نردئی پریمی کی جدائی میں زار زار روتی اور آہیں بھرتی رہی۔ ناخدا پھر کبھی تیلک باتو واپس نہیں لوٹا ۔ راؤنا کی بپتا پر عرصہ ہوا موت نے کالی چادر ڈھک دی ۔ مگر راؤنا کی جدائی کا گیت اب تک ملایا میں گایا جاتا ہے ۔ اُس کی کچھ سطریں میں آپ کو سناتا ہوں اور مجھے اُمید ہے آپ اُوبیں گے نہیں ۔

میرے ناخدا !
میرے پرانوں کے سہارے ! تم کہاں ہو ؟
اُونچے اُونچے تاڑ کے درخت'
میرے قاصدوں کی حیثیت سے
تمہاری آمد کا انتظار کر رہے ہیں ۔
پھل درختوں سے ٹوٹ کر اپنا سر دھن رہے ہیں۔

میرے ناخدا !
میں تمہاری بہت سندر محبوبہ'

तुम्हारी अंगूठी की हीरक कनी,
परसिवांग गुम्तांग की ज्योति,
तुम्हारे विरह में तड़प रही हूँ.

मेरे नाखुदा !
तुम्हारे चाक़ुओं की नपी तुली छप छप,
मेरे कानों में पड़ रही है,
तुम्हारी नाव चपल तरंगों में तैरती हुई,
दूर, बहुत दूर, हर मिनट दूर चली जा रही है !

मेरे नाखुदा !
मेरे प्राण !
मेरे ज़िन्दगी के आधार !
मेरे प्राचीन !
तुम्हारी पुजारिन तुम्हारी पूजा में व्यस्त है.

प्रियतम ! सूरज की किरणें बेदम हो रही थीं,
जब तुमने लंगर उठाया था,
हवा का रुख़ म्वाफ़िक़ न था,
लेकिन अल्लाह के रहम की कोई हद नहीं,
ख़ुदा के फ़ज़ल से हम जन्नत के बाग़ में मिलेंगे.

प्रियतम ! रह रह कर दक्खिन से तूफ़ानी तरंगें उठरही हैं,
देखो होशियार रहना,
बाईं ओर का पाल न खोलना,
तीन महीने और दस दिन में,
मेरे प्रियतम तुम ज़रूर लौट आना.

मेरी ज़िन्दगी के आधार !
श्रीराम टापू पर पहुँच कर थोड़ा आराम कर लेना,
तुम मुझे छोड़ कर जा रहे हो,
लेकिन मुझे लम्बी जुदाई न सहने देना,
दो महीने बस—
ज़्यादा से ज़्यादा तीन महीने में लौट आना.

प्रियतम ! समन्दर की लहरें शान्त हैं,
किनारे पर किश्ती क्यों नहीं लगाते,
क्या मेरे डर से डरते हो,
क्या तुम ने अपने ख़ंजर की धार,
अभी हाल ही में नहीं तेज़ कराई थी ?

मेरे प्राणों के आधार !
तुम तेलुक बातू आये,
और मेरे दिल की शान्ती चली गई,
शैतान मेरी तड़पन को देखकर ख़ुश हो रहा है,
मेरा दिल तो तुम्हारे पास है !

تمہاری انگوٹھی کی ھیرک کنی،
پرسانگ گنتانگ کی جیوتی،
تمہارے برہ میں تڑپ رہی ھوں .

میرے ناخدا !
تمہارے چاقوؤں کی نپی تلی چھپ چھپ،
میرے کانوں میں پڑ رہی ھے،
تمہاری ناؤ چپل ترنگوں میں تیرتی ہوئی،
دور، بہت دور، ہر منٹ دور چلی جارہی ھے !

میرے ناخدا !
میرے پران !
میرے زندگی کے آدھار !
میرے معبود !
تمہاری پجارن تمہاری پوجا میں ویست ھے .

پریتم ! سورج کی کرنیں بے دم ہو رہی تھیں،
جب تم نے لنگر اٹھایا تھا،
ہوا کا رخ موافق نہ تھا،
لیکن اللہ کے رحم کی کوئی حد نہیں،
خدا کے فضل سے ہم جنت کے باغ میں ملینگے .

پریتم ! رہ رہ کر دکھن سے طوفانی ترنگیں اٹھ رہی ھیں،
دیکھو ھوشیار رہنا،
بائیں اور کا پال نہ کھولنا،
تین مہینے اور دس دن میں،
میرے پریتم تم ضرور لوٹ آنا

میری زندگی کے آدھار !
شری رام ٹاپو پر پہونچ کر تھوڑا آرام کرلینا،
تم مجھے چھوڑکر جا رہے ھو،
لیکن مجھے لمبی جدائی نہ سہنے دینا،
دو مہینے بس—
زیادہ سے زیادہ تین مہینے میں لوٹ آنا .

پریتم ! سمندر کی لہریں شانت ھیں،
کنارے پر کشتی کیوں نہیں لگاتے،
کیا میرے ڈر سے ڈرتے ھو،
کیا تم نے اپنے خنجر کی دھار،
ابھی حال ھی میں نہیں تیز کرائی تھی ؟

میرے پرانوں کے آدھار !
تم تیلک باتو آئے،
اورمیرے دل کی شانتی چلی گئی،
شیطان میری تڑپن کو دیکھکر خوش ھو رہا ھے،
میرا دل تو تمہارے پاس ھے !

प्रियतम !
मेरी आरज़ू पर ग़ौर करो,
अनमोल हीरे को अपने हाथ से न फेंको,
वर्ना सब तुम्हारी हंसी उड़ाएंगे !

मेरे नाख़ुदा !
सुनहरे तारों से बुनी इस चटाई पर कौन लेटेगा ?
इस रेशमी दुलाई को कौन ओढ़ेगा ?
इस चांदी की चौकी पर कौन बैठेगा ?
और यह तकिया अब किसको सहारा देगा ?

मेरे नाख़ुदा !
थाली में सजे पकवान अब कौन खायेगा ?
बर्फ़ सा ठंडा पानी अब कौन पियेगा ?
तुम्हारी मायूस दिलरुबा को कौन ढारस देगा ?
ओ मौत ! आ और मुझे तकलीफ़ों से बरी कर.

नाख़ुदा की किश्ती आंखों से ओझल हो गई. राउना रोती और चिल्लाती रही. समुन्दर की लहरों में समा जाने को छटपटाती रही. अगर उसकी बहनें उसके पास न होतीं तो जुदाई का यह गीत समन्दर की सतह में ख़मोश पड़ा रहता. राउना और नाख़ुदा की यही कहानी है. मलाया का बच्चा बच्चा उसे जानता है. राउना पूरे छै महीने तक नाख़ुदा की जुदाई में दीवानी रही. आख़ीर में उसके बाप ने ज़बरदस्ती उसके मंगेतर के साथ उसकी शादी कर दी. उस पर कैसी बीती यह जान सकना मुमकिन नहीं, क्योंकि उसका नाज़ुक बदन उसकी रूह को ज़्यादा दिनों तक अपने भीतर समेट कर न रख सका.

नाख़ुदा और राउना की कहानी में खोया खोया सा मैंने बुज़ुर्गवार से पूछा—"हज़रत ! यह जल-कन्या के आँसू मिलेंगे कैसे ?"

बुज़ुर्गवार ने हंसकर जवाब दिया—"बहुत आसान बात है. जल-कन्या जब किनारे की मीठी दूब खाने समुद्र से बाहर निकले तब उसे पकड़ लो और उसे किनारे से कस कर बांध दो. थोड़ी देर में वह अपने साथी की जुदाई में तड़प तड़प कर रोने लगेगी. तुम उसके आंसुओं को एक प्याले में इकट्ठा कर लो. बस इसी से तुम लोगों को अपने बस में कर सकते हो.

उसके बाद मस्जिद में सन्नाटा छा गया. फिर कोने में बैठा हुआ एक आदमी बोल पड़ा—"मैंने सुना है पेनांग शहर में जल-कन्या के आंसू बिकते हैं.

कहानी सुनाने वाले ने फ़ौरन जवाब दिया—"वह तो मैंने भी सुना है, मगर लोगों का ख़याल है कि वे नक़ली आंसू हैं. बग़ैर इम्तहान लिये उसे ख़रीदना बेकार है."

پریتم !
میری آرزو پر غور کرو،
انمول هیرے کو اپنے هاتھ سے نه پهینکو،
ورنه سب تمهاری هنسی اڑائینگے !

میرے ناخدا !
سنهرے تاروں سے بنی اِس چٹائی پر کون لیٹیگا ؟
اس ریشمی دلائی کو کون اوڑھے گا ؟
اس چاندی کی چوکی پر کون بیٹھے گا ؟
اور یه تکیه اب کس کو سهارا دے گا ؟

میرے ناخدا !
تهالی میں سجے پکوان اب کون کهائیگا ؟
برف سا ٹهنڈا پانی اب کون پئے گا ؟
تمهاری مایوس دلربا کو کون ڈهارس دیگا ؟
او موت ! آ اور مجهے تکلیفوں سے بری کر .

ناحدا کی کشتی آنکهوں سے اوجهل هوگئی . راؤنا روتی ر چلاتی رهی . سمندر کی لهروں میں سما جانے کو چهٹپٹاتی ی . اگر اس کی بهنیں اس کے پاس نه هوتیں تو جدائی کا ، گیت سمندر کی سطح میں خاموش پڑا رهتا . راؤنا اور ناخدا ، یهی کهانی هے . ملایا کا بچه بچه اسے جانتا هے . راؤنا پورے ه مهینے تک ناخدا کی جدائی میں دیوانی رهی . آخر بں اس کے باپ نے زبردستی اس کے منگیتر کے ساتھ اس کی ادی کردی . اس پر کیسی بیتی یه جان سکنا ممکن نهیں، ونکه اس کا نازک بدن اس کی روح کو زیادہ دنوں تک نی بهیتر سمیٹ کر نه رکھ سکا .

ناخدا اور راؤنا کی کهانی میں کهویا کهویا سا میں نے بزرگوار ، پوچها—"حضرت ! یه جل کنیا کے آنسو ملیں گے کیسے ؟"

بزرگوار نے هنسکر جواب دیا—"بهت آسان بات هے . ل کنیا جب کنارے کی میٹهی دوب کهانے سمندر سے باهر لے تب اسے پکڑ لو اور اسے کنارے سے کس کر باندھ دو . تهوڑی ر میں وہ اپنے ساتهی کی جدائی میں تڑپ تڑپ کر رونے گی . تم اس کے آنسوؤں کو ایک پیالے میں اکٹها کرلو . بس ی سے تم لوگوں کو اپنے بس میں کرسکتے هو ."

اس کے بعد مسجد میں سناٹا چها گیا . پهر کونے میں بیٹها ا ایک آدمی بول پڑا—"میں نے سنا هے پینانگ شهر میں ل کنیا کے آنسو بکتے هیں ."

کهانی سنانے والے نے فوراً جواب دیا—"وہ تو میں نے بهی ا هے، مگر لوگوں کا خیال هے که وے نقلی آنسو هیں . بغیر تحان لئے اسے خریدنا بیکار هے ."

मैंने पूछा—"मगर इम्तहान कैसे लिया जाय ?"

बुज़ुर्गवार बोले—"वह भी आसान है. एक बत्तख की चोंच में उसे ज़रा सा मल दीजिये. अगर जल-कन्या के आंसू सच्चे हैं तो बत्तख दीवानी होकर आपके पीछे लग जायेगी. जहां जहां आप जायेंगे, पीछे पीछे बत्तख होगी."

मैंने संजीदगी से पूछा—"क्या आपने इसकी आज़माइश भी की है ?"

"जी नहीं ! मुझे वशीकरण की ज़रूरत नहीं. मैं ऐसी आग नहीं सुलगाना चाहता जिसकी लपटें मेरे क़ाबू में न हों. किसी को जल-कन्या के आंसू से अपनी मोहब्बत में दीवाना बना देना तो आसान है मगर उस प्यार के सौदे को निभा सकना बहुत मुश्किल है. बहर हाल अगर ख़ुद मैं यह आंसू ख़रीदूं तो उन्हें पहले बत्तख़ पर ज़रूर आज़माऊं."

रात घने अंधेरे की चादर ओढ़ कर ख़ामोश सो रही. दूर समन्दर की लहरों की छप छप सुनाई दे रही है और मैं उनींदी पल्कों से राउना के प्रेम और जल-कन्या के आंसुओं की बात सोच रहा हूं.

× × ×

नया हिन्द के पाठकों के लिये मैंने राउना के विरह गीत का तरजुमा ज्यों का त्यों दिया है. सिर्फ़ 'आधार' लफ़्ज़ का मलाया में बुनियादी तरजुमा 'छाता' होता है. छाता मेंह और धूप से बचाता है. पुरुष चूंकि स्त्री की हिफ़ाज़त करता है इसलिये मलाया में ख़ाविन्द को 'छाता' कहकर पुकारा जाता है. इसी तरह 'तकिया' का मूल अर्थ 'पत्नी' है और चूंकि पत्नी पुरुष को सहारा देती है इसलिये मलाया ज़बान में 'तकिया' कहकर पुकारा जाता है—लेखक.

———

"सच्चे सुधार का, सच्ची सभ्यता का लक्षन परिग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि उसका विचार और इच्छा पूर्वक घटाना है. ज्यों ज्यों परिग्रह घटाइये त्यों त्यों सच्चा सुख और सच्चा संतोष बढ़ता है, सेवा शक्ति बढ़ती है."

—बापू

———

میں نے پوچھا—"مگر امتحان کیسے لیا جائے ؟"

بزرگوار بولے—"وہ بھی آسان ہے . ایک بطخ کی چونچ میں اُسے ذرا سا مل دیجئے . اگر جل کنیا کے آنسو سچے ہیں تو بطخ دیوانی ہوکر آپ کے پیچھے لگ جائیگی . جہاں جہاں آپ جائیں گے' پیچھے پیچھے بطخ ہوگی ."

میں نے سنجیدگی سے پوچھا—"کیا آپ نے اِس کی آزمایش بھی کی ہے ؟"

"جی نہیں ! مجھے بشیکرن کی ضرورت نہیں . میں ایسی آگ نہیں سلگانا چاہتا جس کی لپٹیں میرے قابو میں نہ ہوں . کسی کو جل کنیا کے آنسو سے اپنی محبت میں دیوانہ بنا دینا تو آسان ہے مگر اُس پیار کے سودے کو نبھا سکنا بہت مشکل ہے . بہر حال اگر خود میں یہ آنسو خریدوں تو اُنہیں پہلے بطخ پر ضرور آزماؤں ."

رات گھنے اندھیرے کی چادر اوڑھ کر خاموش سو رہی . دور سمندر کی لہروں کی چھپ چھپ سنائی دے رہی ہے اور میں اُنیندی پلکوں سے راؤنا کے پریم اور جل کنیا کے آنسوؤں کی بات سوچ رہا ہوں .

× × × ×

نیا هند کے پاٹھکوں کے لئے میں نے راؤنا کے برہ گیت کا ترجمہ جیوں کا تیوں دیا ہے . صرف 'آدھار' لفظ کا ملایا میں بنیادی ترجمہ 'چھاتا' ہوا ہے . چھاتا مینھ اور دھوپ سے بچاتا ہے . پرش چونکہ استری کی حفاظت کرتا ہے اس لئے ملایا میں خاوند کو 'چھاتا' کہکر پکارا جاتا ہے . اسی طرح 'تکیہ' کا مول ارتھ 'پتنی' ہے اور چونکہ پتنی پرش کو سہارا دیتی ہے اس لئے ملایا زبان میں پتنی کو 'تکیہ' کہکر پکارا جاتا ہے—لیکھک .

———

"سچے سدھار کا' سچی سبھیتا کا لکشن پری گرہ بڑھانا نہیں ہے' بلکہ اُس کا وچار اور اِچھا پوروک گھٹانا ہے. جیوں جیوں پری گرہ ھٹائیے تیوں تیوں سچا سکھ اور سچا سنتوش بڑھتا ہے' سیوا شکتی بڑھتی ہے."

—باپو

———

अल्ला मियां के गीत

श्रीमती हाजरह बेगम

अंग्रेज मिशनरियों ने जब अफ्रिका के हबशियों को इन्सानियत की तालीम देनी चाही तो उनको ईसाई बनाया. लेकिन न तो उनको हबशियों की जबान, न पुराने तमद्दुन (सभ्यता) न रस्म रिवाज से इतनी वाक़फ़ियत थी कि वह उनको मसीही मजहब का फ़लसफ़ा समझा सकते और न ही उनको इसकी ज्यादा परवाह थी. मक़सद तो यह था कि जल्द से जल्द ज्यादा से ज्यादा हबशी अपने आप को ईसाई समझने लगें. चुनांचे जो अजब नतीजा नये और पुराने फ़लसफ़े की टक्कर का निकला और जो रंग इस नई वारनिश ने पुरानी लकड़ी पर चढ़ाया, उसका अन्दाज़ा हम इन गीतों से कर सकते हैं, जो आज भी अमरीका के हबशी अपनी सोज़ भरी आवाज़ में गाते हैं और जिनको कि 'निग्रो स्प्रीचुएल्स' कहा जाता है.

कुछ ऐसा ही असर हिन्दुस्तान के पुराने बाशिन्दों (आर्येतर) के दिमाग़ पर जरूर हुआ होगा जब कि फ़रांमरवा के मुसलमान होने की वजह से उन्होंने इस्लाम क़बूल किया. उनका मजहब उनके वह रस्मो रिवाज थे जो कि फ़ितरत के क़ानूनों की मुनासबत से अख्तियार किये गये थे और इस मजहब का फ़लसफ़ा समझने की उन्हें कभी जरूरत न पड़ी थी, क्योंकि वह तो नसलन बाद नसलन (पुश्त दर पुश्त) से बनता और बदलता आया था और उनके रगों रेशों में पैवस्त था. लेकिन अब एक ग़ैर मुल्की क़ौम ने अपना फ़लसफ़ा वहदत और रसालत का उनके सामने रखा, जिसको उन्होंने इस हद तक क़बूल तो जरूर किया कि मुसलमान कहलाने लगे. लेकिन हुआ वही कि पुराने पर नई क़लई चढ़ गई, यानी बजाय कृष्ण कन्हैया के बड़े पीर साहब, राम लछमन की जगह हसन हुसेन, सीता की जगह बीबी फ़ातमा हो गई. इस दौर की एक झलक हमें अल्लामियां के गीतों से मिलती है.

पूर्वीय हिन्दुस्तान में जब कोई ख़ुशी की तक़रीब होती है तो रतजगा होता है यानी औरतें रात भर जागती हैं, ढोलक बजाती और गाती हैं और गुलगुले पकाती है. सुबह होते होते गुलगुले लेकर मस्जिद जाती हैं और ताक़ भरती हैं. मुसलमानों में दस्तूर है कि ऐसे मौक़ों पर पहले सात गीत अल्ला मियां के गाये जाते हैं, फिर सात सहरे लड़के या भाई के और फिर तक़रीब के मुनासिब जो गीत हो, मसलन सुहाग के या स्वयंबर के गीत.

اللہ میاں کے گیت

شریمتی حاجرہ بیگم

انگریز مشنریوں نے جب افریقہ کے حبشیوں کو اِنسانیت ی تعلیم دینی چاہی تو ان کو عیسائی بنایا . لیکن نہ تو اُن و حبشیوں کی زبان' نہ پرانے تمدن (سبھیتا) نہ رسم رواج سے تنی واقفیت تھی کہ وہ اُنکو مسیحی مذہب کا فلسفہ سمجھا سکتے اور نہ ھی اُنکو اس کی زیادہ پرواہ تھی . مقصد تو یہ ہا کہ جلد سے جلد زیادہ سے زیادہ حبشی اپنے آپ کو عیسائی سمجھنے لگیں . چنانچہ جو عجب نتیجہ نئے اور پرانے فلسفے ی ٹکر کا نکلا اور جو رنگ اِس نئی وارنش نے پرانی لکڑی ر چڑھایا' اُس کا اندازہ ہم اِن گیتوں سے کرسکتے ھیں' جو آج ی امریکہ کے حبشی اپنی سوز بھری آواز میں گاتے ھیں اور جن کو کہ 'نیگرو اسپریچوایلس' کہا جاتا ھے .

کچھ ایسا ھی اثر ھندستان کے پرانے باشندوں (آریتر) کے ماغ پر ضرور ھوا ھوگا جب کہ فرمانروا کے مسلمان ھونے کی جہ سے اُنھوں نے اِسلام قبول کیا . اُن کا مذھب اُن کے وہ سم و رواج تھے جو کہ فطرت کے قانونوں کی مناسبت سے اختیار ئے گئے تھے اور اس مذھب کا فلسفہ سمجھنے کی اُنھیں کبھی ضرورت نہ پڑی تھی ' کیونکہ وہ تو نسلاً بعد نسلاً (پشت در پشت) سے بنتا اور بدلتا آیا تھا اور اُن کے رگوں ریشوں میں پیوست تھا . لیکن اب ایک غیر ملکی قوم نے اپنا فلسفہ وحدت اور رسالت کا اُن کے سامنے رکھا' جس کو اُنھوں نے اِس حد تک قبول تو ضرور کیا کہ مسلمان کہلانے لگے . لیکن ھوا وھی کہ پرانے پر نئی قلعی چڑھ گئی' یعنی بجائے کرشن کنھیا کے بڑے پیر صاحب' رام لچھمن کی جگہ حسن حسین' سیتا کی جگہ بی بی فاطمہ ھوگئیں . اِس دور کی ایک جھلک ھمیں اللہ میاں کے گیتوں سے ملتی ھے .

پوروِیہ ھندستان میں جب کوئی خوشی کی تقریب ھوتی ھے' تو رتجگا ھوتا ھے' یعنی عورتیں رات بھر جاگتی ھیں' ڈھولک بجاتی اور گاتی ھیں اور گلگلے پکاتی ھیں . صبح ھوتے ھوتے گلگلے لیکر مسجد جاتی ھیں اور طاق بھرتی ھیں . مسلمانوں میں دستور ھے کہ ایسے موقعوں پر پہلے سات گیت اللہ میاں کے گائے جاتے ھیں' پھر سات سہرے لڑکے یا بھائی کے اور پھر تقریب کے مناسب جو گیت ھو مثلاً سہاگ کے یا سوئمبر کے گیت.

नीचे अल्लामियां के गीतों में से कुछ दिये जाते हैं—

अल्ला मियां खूब बनी तोरी शान.
सब महिनन में एको महीना अल्ला,
वह भी महीना रमज़ान.
सब किताबन में एको किताब अल्ला,
वह भी किताब क़ुरान.
सब छतन में एको छत अल्ला,
वह भी छते आसमान.
सब बीबिन में एको बीबी अल्ला,
वह भी बीबी फ़ातमा.
सब पीरन में एको पीर अल्ला,
वह भी पीर बड़े पीर.

अर्थात्—अल्ला मियां तेरी शान खूब बनी है. सब महीनों में एक ही महीना अच्छा होता है, वह रमज़ान का महीना होता है और सब किताबों में बढ़कर किताब क़ुरान है, इसी तरह सारी छतों से ज्यादा उम्दा छत आसमान की है. बीबियों में एक ही बीबी क़ाबिले तारीफ़ है, वह बीबी फ़ातमा है. और पीरों में अगर कोई है तो वह बड़े पीर हैं यानी ख्वाजा मुईन उद्दीन अजमेरी.

खूब बनी रे अल्ला तोरी महजद,
खूब बनी रे नबी तोरा रोजा—नबी तोरा रोजा.
काहे बनी रे अल्ला तोरी महजद,
काहे बना रे नबी तोरा रोजा—नबी तोरा रोजा.
सोने बनी रे अल्ला तोरी महजद,
सोने बना रे नबी तोरा रोजा—नबी तोरा रोजा.
काहे बहारूँ अल्ला तोरी महजद,
काहे बहारूँ नबी तोरा रोजा—नबी तोरा रोजा.
हाथों बहारूँ अल्ला तोरी महजद,
पलकों बहारूँ नबी तोरा रोजा—नबी तोरा रोजा.
काहे चढ़ाऊँ अल्ला तोरी महजद,
काहे चढ़ाऊँ नबी तोरा रोजा—नबी तोरा रोजा.
लड्डू चढ़ाऊँ अल्ला तोरी महजद,
पेड़ा चढ़ाऊँ नबी तोरा रोजा—नबी तोरा रोजा.

अर्थात्—अल्ला मियां तेरी मस्जिद खूब बनी है और ऐ नबी तेरा रोज़ा भी खूब बना है. अल्ला तेरी मस्जिद किस चीज़ की बनी है और ऐ नबी तेरा रोज़ा किस चीज़ का बना है ? सोने की तो मस्जिद अल्ला तेरी है और सोने का ही रोज़ा नबी का है. अल्ला मैं तेरी मस्जिद में काहे से सुथराई दूँ और नबी का रोज़ा मैं काहे से झाड़ूँ ? हाथों से अल्ला मैं तेरी मस्जिद झाड़ूँ और पलकों से नबी तेरा रोज़ा झाड़ूँ. और फिर चढ़ाऊँ क्या मैं तेरी मस्जिद और रोज़े में ? लड्डू

نیچے اللہ میاں کے گیتوں میں سے کچھ دئے جاتے ہیں—

اللہ میاں خوب بنی توری شان .
سب مہنن میں ایکو مہینہ اللہ،
وہ بھی مہینہ رمضان .
سب کتابن میں ایکو کتاب اللہ،
وہ بھی کتاب قرآن.
سب چھتن میں ایکو چھت اللہ،
وہ بھی چھت آسمان.
سب بیبن میں ایکو بی بی اللہ،
وہ بھی بی بی فاطمہ.
سب پیرن میں ایکو پیر اللہ،
وہ بھی پیر بڑے پیر.

ارتھات— اللہ میاں تیری شان خوب بنی ہے. سب مہینوں میں ایک ہی مہینہ اچھا ہوتا ہے، وہ رمضان کا مہینہ ہوتا ہے اور سب کتابوں میں بڑھکر کتاب قرآن ہے، اسی طرح ساری چھتوں سے زیادہ عمدہ چھت آسمان کی ہے . بیبیوں میں ایک ہی بی بی قابل تعریف ہے، وہ بی بی فاطمہ ہے. اور پیروں میں اگر کوئی ہے تو وہ بڑے پیر ہیں یعنی خواجہ معین الدین اجمیری .

خوب بنی رے اللہ توری مہجد،
خوب بنی رے نبی تورا روجا—نبی تورا روجا .
کاہے بنی رے اللہ توری مہجد،
کاہے بنا رے نبی تورا روجا—نبی تورا روجا .
سونے بنی رے اللہ توری مہجد،
سونے بنا رے نبی تورا روجا—نبی تورا روجا .
کاہے بہاروں اللہ توری مہجد،
کاہے بہاروں نبی تورا روجا—نبی تورا روجا .
ہاتھوں بہاروں اللہ توری مہجد،
پلکوں بہاروں نبی تورا روجا—نبی تورا روجا .
کاہے چڑھاؤں اللہ توری مہجد،
کاہے چڑھاؤں نبی تورا روجا—نبی تورا روجا .
لڈو چڑھاؤں اللہ توری مہجد،
پیڑا چڑھاؤں نبی تورا روجا—نبی تورا روجا .

ارتھات— اللہ میاں تیری مسجد خوب بنی ہے اور اے نبی تیرا روضہ بھی خوب بنا ہے . اللہ تیری مسجد کس چیز کی بنی ہے اور اے نبی تیرا روضہ کس چیز کا بنا ہے ؟ سونے کی تو مسجد اللہ تیری ہے اور سونے کا ہی روضہ نبی کا ہے . اللہ میں تیری مسجد میں کاہے سے ستھرائی دوں اور نبی کا روضہ میں کاہے سے جھاڑوں ؟ ہاتھوں سے اللہ میں تیری مسجد جھاڑوں اور پلکوں سے نبی تیرا روضہ جھاڑوں . اور پھر چڑھاؤں کیا میں تیری مسجد اور روضہ میں ؟ لڈو

तो मैं अल्ला तेरी मस्जिद में चढ़ाऊँ और पैगम्बर नबी तेरे रोज़े पर चढ़ाऊं.

अल्ला मियां के कलसों पै बरसत नूर.
केहर से उतरी सन्दल कटुरिया,
केहर से उतरा फूल—हो......
केहर से उतरा जाजम बिछौना,
बैठ गये नबी रसूल—हो......
अल्ला मियां के कलसों पै बरसत नूर.
मक्के से उतरी सन्दल कटुरिया,
मदीने से उतरा फूल—हो......
काबे से उतरा जाजम बिछौना,
बैठ गये नबी रसूल—हो......
किन ने जुठारी सन्दल कटुरिया
किन ने जुठारा फूल—हो......
किन ने जुठारा जाजम बिछौना
रूठ गये नबी रसूल—हो......
मक्खी जुठारी सन्दल कटुरिया,
भौंरा जुठारा फूल—हो......
च्यूँटी जुठारा जाजम बिछौना,
रूठ गये नबी रसूल—हो......
अल्ला मियां के कलसों पै बरसत नूर.

अर्थात्—अल्ला मियां के कलसों पर नूर बरसता है. किधर से उतरा संदल का कटोरा और किधर से उतरे फूल? और किधर से जाजम बिछाना उतरा जिस पर कि नबी रसूल बैठे? मक्के से तो सन्दल का कटोरा उतरा और मदीने से फूल उतरे और काबे से जाजम बिछौना उतरा जिस पर नबी रसूल बैठे. सन्दल का कटोरा किसने जूठा किया और फूल और जाजम बिछौना किसने जूठा किया कि नबी रसूल रूठ गये? मक्खियों ने सन्दल के कटोरे को और भौंरे ने फूल को जूठा किया और च्यूँटी जाजम बिछौने पर चढ़ गई, इसलिये नबी रसूल रूठ गये.

चले आइयो बड़े पीर—महजद में.
सोने की थाली में भोजन परोसा,
खइयो खइयो बड़े पीर—महजद में.
चांदी का गडुआ गंगा जल पानी,
पियो पियो बड़े पीर—महजद में.
चले आइये बड़े पीर—महजद में.

अर्थात्—बड़े पीर (ख्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी) तुम मस्जिद में चले आना. मैंने सोने की थाली में अच्छा अच्छा खाना सजाया है, तुम मस्जिद में खा लेना. चांदी के बर्तन में मैंने गंगा जल भरा है, ऐ बड़े पीर तुम आकर पी जाना.

و میں اللہ تیری مسجد میں چڑھاؤں اور پیغمبر نبی تیرے روضہ پر چڑھاؤں ۔

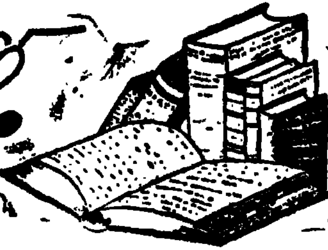
اللہ میاں کے کلسوں پے برست نور ۔
کیہر سے اُتری صندل کٹوریا '
کیہر سے اُترا پھول—ھو......
کیہر سے اُترا جاجم بچھونا '
بیٹھ گئے نبی رسول—ھو......
اللہ میاں کے کلسوں پے برست نور ۔
مکے سے اُتری صندل کٹوریا '
مدینے سے اُترا پھول—ھو......
کعبے سے اُترا جاجم بچھونا '
بیٹھ گئے نبی رسول—ھو......
کن نے جوٹھاری صندل کٹوریا '
کن نے جوٹھارا پھول—ھو......
کن نے جوٹھارا جاجم بچھونا '
روٹھ گئے نبی رسول—ھو......
مکھی جوٹھاری صندل کٹوریا '
بھونرا جوٹھارا پھول—ھو......
چیونٹی جوٹھاری جاجم بچھونا '
روٹھ گئے نبی رسول—ھو......
اللہ میاں کے کلسوں پے برست نور ۔

ارتھات—اللہ میاں کے کلسوں پر نور برستا ھے ۔ کدھر سے اُترا صندل کا کٹورہ اور کدھر سے اُترے پھول ؟ اور کدھر سے جاجم بچھونا اُترا جس پر کہ نبی رسول بیٹھے ؟ مکہ سے تو صندل کا کٹورہ اُترا اور مدینہ سے پھول اُترے اور کعبہ سے جاجم بچھونا اُترا جس پر نبی رسول بیٹھے ۔ صندل کا کٹورہ کس نے جوٹھا کیا اور پھول اور جاجم بچھونا کس نے جوٹھا کیا کہ نبی رسول روٹھ گئے ؟ مکھیوں نے صندل کے کٹورے کو اور بھونرے نے پھول کو جوٹھا کیا اور چیونٹی جاجم بچھونے پر چڑھ گئی' اس لئے نبی رسول روٹھ گئے ۔

چلے آئیو بڑے پیر مہجد میں ۔
سونے کی تھالی میں بھوجن پروسا '
کھئیو کھئیو بڑے پیر—مہجد میں ۔
چاندی کا گڑوا گنگا جل پانی '
پیو پیو بڑے پیر—مہجد میں ۔
چلے آئیو بڑے پیر—مہجد میں ۔

ارتھات— بڑے پیر (خواجہ معین الدین اجمیری) تم مہجد میں چلے آنا ۔ میں نے سونے کی تھالی میں اچھا اچھا کھانا سجایا ھے' تم مسجد میں کھا لینا ۔ چاندی کے برتن میں میں نے گنگا جل بھرا ھے' اے بڑے پیر تم آکر پی جانا ۔

नई किताबें



نئی کتابیں

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद की छपी हुई छै किताबें हमारे सामने हैं :—

1. सर्वोदय, लेखक गान्धी जी, सफ़े 244, मूल्य ढाई रुपया.

2. Truth Is God (महात्मा गान्धी के लेखों का संग्रह) सफ़े. 168, मूल्य दो रुपया.

3. For Workers Against Untouchability, (महात्मा गान्धी के लेखों का संग्रह) सफ़े 34. मूल्य आठ आना.

4. How To Serve The Cow (महात्मा गान्धी के लेखों का संग्रह), सफ़े 109, मूल्य सवा रुपया.

5. Nature Cure (महात्मा गान्धी के लेखों का संग्रह), सफ़े 68, मूल्य बारह आना.

6. A Discipline For Nonviolence, लेखक रिचर्ड बी. ग्रेग, सफ़े 32, मूल्य दस आना.

पहली किताब 'सर्वोदय' दो विभागों में बंटी हुई है. पहले विभाग के सात भाग हैं, और दूसरे के पांच. पहले विभाग में समय समय पर लिखी हुई सर्वोदय के बारे में गान्धी जी की रायें और दूसरे विभाग में श्री राज गोपालाचारी, आचार्य विनोबा, श्री जे. सी. कुमारप्पा, श्री मशरूवाला और श्री धीरेन्द्र मजूमदार के सर्वोदय के सम्बन्ध में विचार हैं.

स्वतंत्र भारत में कैसा समाज बनेगा, आज यह विचार सब के सामने है. तरह तरह के वाद का लोग ज़िक्र करते हैं. हम आज तरक़्क़ी के मंज़िल के चौराहे पर खड़े हैं. ऐसे नाज़ुक वक़्त में यह बेहद ज़रूरी है कि हम महात्मा गान्धी के बताये हुए रास्ते पर संजीदगी से ग़ौर करें. इस लिहाज़ से हर समझदार आदमी को यह किताब पढ़नी चाहिये.

दूसरी किताब 'Truth is God' समय समय पर गान्धी जी के लिखे हुए लेखों या विचारों का संग्रह है. राम नाम पर गान्धी जी कि कितनी श्रद्धा थी यह सबको मालूम है. लेकिन उस राम नाम के साथ कैसे अपने को एक करना, इसके पीछे गान्धी जी की 75 बरसों की साधना थी. ईश्वर

نو جیون پرکاشن مندر احمداباد کی چھپی ہوئی چھ کتابیں ہمارے سامنے ہیں:—

1. سرودے' لیکھک گاندھی جی' صفحے 244' مول ڈھائی روپیہ ۔

2. Truth is God (مہاتما گاندھی کے لیکھوں کا سنگرہ) صفحے 168' مول دو روپیہ ۔

3. For Workers Against Untouchability (مہاتما گاندھی کے لیکھوں کا سنگرہ) صفحے 34' مول آٹھ آنہ ۔

4. How To Serve The Cow (مہاتما گاندھی کے لیکھوں کا سنگرہ) صفحے 109' مول سوا روپیہ ۔

5. Nature Cure (مہاتما گاندھی کے لیکھوں کا سنگرہ) صفحے 68' مول بارہ آنہ ۔

6. A Discipline For Nonviolence 'لیکھک رچرڈ بی . گریگ' صفحے 32' مول دس آنہ ۔

پہلی کتاب 'سرودے' دو وبھاگوں میں بنٹی ہوئی ہے ۔ پہلے وبھاگ کے سات بھاگ ہیں' اور دوسرے کے پانچ ۔ پہلے وبھاگ میں سمئے سمئے پر لکھی ہوئی سرودے کے بارے میں گاندھی جی کی رائیں اور دوسرے وبھاگ میں شری راج گوپالا چاری' اچاریہ ونوبا' شری جے. سی. کمار پپا' شری مشروالا اور شری دھیریندر مجومدار کے سرودے کے سمبندھ میں وچار ہیں ۔

سوتنتر بھارت میں کیسا سماج بنے گا' آج یہ وچار سب کے سامنے ہے۔ طرح طرح کے واد کا لوگ ذکر کرتے ہیں۔ ہم آج ترقی کے منزل کے چوراہے پر کھڑے ہیں ۔ ایسے نازک وقت میں یہ بےحد ضروری ہے کہ ہم مہاتما گاندھی کے بتائے ہوئے راستے پر سنجیدگی سے غور کریں ۔ اِس لحاظ سے ہر سمجھدار آدمی کو یہ کتاب پڑھنی چاہئے ۔

دوسری کتاب 'Truth Is God' سمئے سمئے پر گاندھی جی کے لکھے ہوئے لیکھوں یا وچاروں کا سنگرہ ہے ۔ رام نام پر گاندھی جی کی کتنی شردھا تھی یہ سب کو معلوم ہے ۔ لیکن اس رام نام کے ساتھ کیسے اپنے کو ایک کرنا' اس کے پیچھے گاندھی جی کی 75 برسوں کی سادھنا تھی ۔ ایشور

तक पहुँचने के जो अलग अलग धर्मों के पुल हैं, उस पर गान्धी जी की बड़ी उदार राय थी. वे विवेक को किसी भी भले या बुरे काम की तराज़ू मानते थे. गीता पर उनकी अगाध श्रद्धा थी, लेकिन वे कहते हैं—

"I exercise my judgment about every scripture including the Geeta. I cannot lead a scriptural text supersede my reason."

गांधी जी के राम नाम में विवेक था, साधना थी और इन सब के अलावा वैज्ञानिक विश्वास था. आज की मोह में फंसी हुई दुनिया के लिये इस किताब की नसीहतें दवा का काम देंगी.

तीसरी किताब 'For Workers Against untouchability' अपने नाम के मुताबिक़ हरिजन सेवकों के लिये रास्ता दिखाने वाली अनमोल पुस्तक है.

चौथी किताब 'How To Serve The Cow' इस विवाद ग्रस्त प्रश्न पर गांधी जी के समय समय पर लिखे हुए लेखों के लिये इस प्रश्न पर ज्ञान का एक जख़ीरा है. हर एक गो-सेवक को इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

पांचवीं किताब 'Nature Cure' में भी गांधी जी के लेखों और विचारों का संग्रह है. क़ुदरती इलाज को गांधी जी इस मुल्क के रहने वाले ग़रीब लोगों के लिये इलाज का रामबाण तरीक़ा समझते थे. क़ुदरत के अन्दर ऐसी सिफ़तें हैं जो इनसान को ख़ुद बख़ुद अच्छा करती रहती हैं. अगर क़ुदरत के उन गुणों की जानकारी हासिल कर ली जाये तो रास्ता साफ़ हो जाता है. इलाज के पच्छिमी तरीक़े बेहद ख़र्चीले हैं और कहां तक फ़ाइदेमन्द हैं, इसमें भी बहुत लोगों को शुब्हा है. इस किताब से पाठकों को इस सवाल पर सही रोशनी मिलेगी.

छटवीं किताब अहिंसा के सम्बन्ध में श्री रिचर्ड बी. ग्रेग की लिखी हुई पुरानी किताब का तीसरा नया संस्करण है. अहिंसा का पच्छिमी वैज्ञानिक उसूलों के आधार पर निराकरण किया गया है. पुस्तक प्रत्येक समझदार पाठक को ज़रूर पढ़नी चाहिये.

18-8-'55 —वी. न. पांडे

تک پہونچنے کے جو الگ الگ دھرموں کے پل ہیں' اُس پر بھی گاندھی جی کی بڑی اُدار رائے تھی . وے ویویک کو کسی بھی بھلے یا برے کام کی ترازو مانتے تھے . گیتا پر اُن کی اگادھ شردھا تھی' لیکن وے کہتے ہیں—

"I exercise my judgment about every scripture including the Geeta. I cannot lead a scriptural text supersede my reason."

گاندھی جی کے رام نام میں ویویک تھا' سادھنا تھی اور اِن سب کے علاوہ ویگیانک وشواس تھا . آج کی موہ میں پھنسی ہوئی دنیا کے لئے اِس کتاب کی نصیحتیں دوا کا کام دینگی .

تیسری کتاب 'For Workers Against Untouchability' اپنے نام کے مطابق ہریجن سیوکوں کے لئے راستہ دکھانے والی انمول پستک ہے .

چوتھی کتاب 'How To Serve The Cow' اِس وواد گرست پرشن پر گاندھی جی کے سمے سمے پر لکھے ہوئے لیکھوں کے لئے اِس پرشن پر گیان کا ایک زخیرہ ہے . ہر ایک گو سیوک کو اِس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے .

پانچویں کتاب 'Nature Cure' میں بھی گاندھی جی کے لیکھوں اور وچاروں کا سنگرہ ہے . قدرتی علاج کو گاندھی جی اِس ملک کے رہنے والے غریب لوگوں کے لئے علاج کا رامبان طریقہ سمجھتے تھے . قدرت کے اندر ایسی صفتیں ہیں جو اِنسان کو خود بخود اچھا کرتی رہتی ہیں . اگر قدرت کے اِن گنوں کی جانکاری حاصل کرلی جائے تو راستہ صاف ہوجاتا ہے . علاج کے پچھمی طریقے بےحد خرچیلے ہیں اور کہاں تک فایدہمند ہیں' اس میں بھی بہت لوگوں کو شبہ ہے . اِس کتاب سے پاٹھکوں کو اس سوال پر صحیح روشنی ملیگی .

چھٹویں کتاب اہنسا کے سمبندھ میں شری رچرڈ بی . گریگ کی لکھی ہوئی پرانی کتاب کا تیسرا نیا سنسکرن ہے . ہنسا کا پشچمی ویگیانک اُصولوں کے آدھار پر نراکرن کیا گیا ہے . پستک پرتییک سمجھدار پاٹھک کو ضرور پڑھنی چاہئے .

—وی . نا . پانڈے 18 . 8 . '55

हमारी राय

ہماری رائے

विनोबा जी और ज़मीन कि मिलकियत

श्री विनोबा भावे गाँधी जी के उन इने गिने अनुयायियों में से हैं जो अपनी पूरी सूझ और पूरी शक्ति के साथ गाँधी जी के सिद्धान्तों को अमल में लाने और उन्हें आगे बढ़ाने में अपना सब कुछ होमे हुए है. हमारे दिल में उनका बड़ा आदर है. गाँधी जी के इस तरह के भक्तों का हम उन्हें सरताज मानते हैं.

विनोबा जी ने देश को कई नए शब्द दिये हैं, जैसे भूमिदान, कूपदान, जीवनदान सम्पत्तिदान, श्रमदान और सबसे हाल में ग्रामदान. पिछली 14 जुलाई को उड़ीसा के सुन्धी धामिनी गाँव में ग्रामदान का मतलब और उससे लाभ गाँव के लोगों को समझाते हुए विनोबा जी ने एक बड़ा सुन्दर भाषण दिया. उनके इस भाषण का सार लगभग उनहीं के शब्दों में हम नीचे देते हैं :—

"ग्रामदान से चार बड़े लाभ हैं. पहला लाभ आर्थिक लाभ है. जब कोई आदमी किसी ज़मीन को अपनी ज़मीन नहीं समझेगा, और गाँव की सारी ज़मीन एक इकाई समझी जायगी, जो सबकी एक बराबर मिलकीयत होगी, तो उससे ज़मीन की पैदावार यानी गाँव की दौलत बढ़ेगी. सब गाँव वाले मिलकर तय कर सकेंगे कि कब क्या बोया जाय और उसमें से कितना बाहर बेचा जाय. तब सब मिलकर खेती के तरीक़ों में सुधार कर सकेंगे. ज़रूरत पड़ने पर सरकार से या किसी बाहर वाले से मदद ले सकना आसान हो जायगा. गाँव का कोई आदमी किसी का क़र्ज़दार न रहेगा. सबको सुख और सन्तोष मिलेगा. यह एक आर्थिक इन्क़लाब होगा.

"दूसरा बड़ा लाभ यह होगा कि जब सारे गाँव के लोग एक मिले जुले कुनबे की तरह रहने लगेंगे तो आपस में प्रेम बढ़ेगा. सारा गाँव एक स्वर्ग की तरह दिखाई देने लगेगा. सब सब के दुख सुख में शरीक रहेंगे, इससे सब का सुख बढ़ेगा. यह दूसरा लाभ ग्रामदान का कलचरी लाभ है.

ونوبا جی اور زمین کی ملکیت

شری ونوبا بھاوے گاندھی جی کے اُن اِنے گنے انویائیوں میں سے ہیں جو اپنی پوری سوجھ اور پوری شکتی کے ساتھ گاندھی جی کے سدھانتوں کو عمل میں لانے اور اُنہیں آگے بڑھانے میں اپنا سب کچھ ہومے ہوئے ہیں. ہمارے دل میں اُن کا بڑا آدر ہے. گاندھی جی کے اِس طرح کے بھکتوں کا ہم اُنہیں سرتاج مانتے ہیں.

ونوباجی نے دیش کو کئی نئے شبد دیئے ہیں، جیسے بھومی دان، کوپ دان، جیون دان، سمپتی دان، شرم دان اور سب سے حال میں گرام دان. پچھلی 14 جولائی کو اڑیسہ کے سندھی دھاملی گاؤں میں گرام دان کا مطلب اور اُس سے لابھ گاؤں کے لوگوں کو سمجھاتے ہوئے ونوبا جی نے ایک بڑا سندر بھاشن دیا. اُن کے اِس بھاشن کا سار لگ بھگ اُنہیں کے شبدوں میں ہم نیچے دیتے ہیں:—

"گرام دان سے چار بڑے لابھ ہیں. پہلا لابھ آرتھک لابھ ہے. جب کوئی آدمی کسی زمین کو اپنی زمین نہیں سمجھے گا اور گاؤں کی ساری زمین ایک اکائی سمجھی جائیگی، جو سب کی ایک برابر ملکیت ہوگی، تو اُس سے زمین کی پیداوار یعنی گاؤں کی دولت بڑھے گی. سب گاؤں والے ملکر طے کر سکیں گے کہ کب کیا بویا جائے اور اُس میں سے کتنا باہر بیچا جائے تب سب ملکر کھیتی کے طریقوں میں سدھار کر سکیں گے. ضرورت پڑنے پر سرکار سے یا کسی باہر والے سے مدد لے سکنا آسان ہو جائیگا. گاؤں کا کوئی آدمی کس کا قرض دار نہ رہے گا. سب کو سکھ اور سنتوش ملے گا. یہ ایک آرتھک انقلاب ہوگا.

"دوسرا بڑا لابھ یہ ہوگا کہ جب سارے گاؤں کے لوگ ایک ملے جلے کنبے کی طرح رہنے لگیں گے تو آپس میں پریم بڑھیگا. سارا گاؤں ایک سورگ کی طرح دکھائی دینے لگے گا. سب سب کے دکھ سکھ میں شریک رہینگے. اِس سے سب کا سکھ بڑھے گا. یہ دوسرا لابھ گرام دان کا کلچری لابھ ہے.

"तीसरा लाभ यह होगा कि लोगों का आचार ऊँचा जायगा. आपस के झगड़े, चोरियां और दुश्मनियां मिट जायँगी. हम अपने घरों के अन्दर चोरी नहीं करते. जब सारा गाँव एक घर बन जायगा तो गाँव में भी कोई चोरी नहीं करेगा. हमारा आचार इसलिये नीचे गिर गया है कि अपने अलग अलग घर और अलग अलग मिलकियतें बनाकर हम छोटे छोटे स्वार्थों में फंस गए हैं. आज एक डाकटर भी, जिसका धर्म यह है कि किसी भी रोगी के रोग को सुनकर उसके पास दौड़कर पहुंचे, इलाज करने से पहले रोगी से अपना बटुआ खोलने के लिये कहता है. इसी से हमारे सबके दिल तंग हो गए हैं क्योंकि हमने अपने छोटे छोटे घर और छोटे छोटे कुनबे बना रखे हैं. दुनिया के सब झगड़ों की यही जड़ है. जब जमीन और धन दौलत पर से लोगों की अलग अलग मिलकियत जाती रहेगी तो हमारा आचार जरूरी तौर पर ऊँचा हो जायगा. यही ग्रामदान का सबसे बड़ा लाभ है. जिस दिन यह हो जायगा उस दिन दुनिया खुशी से नाचने लगेगी. आज हम दुखी इस-लिये हैं क्योंकि हमारे अलग अलग स्वार्थ टकराते रहते हैं. इसी से दुनियां में हिंसा बढ़ रही है. अगर गाँव की जमीन और गाँव की सब सम्पत्ति सारे गाँव की जमीन और सारे गाँव की सम्पत्ति हो जावे तो दुनिया का आचार सचमुच ऊपर उठ जावेगा. यह लाभ ग्रामदान का नैतिक लाभ है.

"चौथा लाभ ग्रामदान का अध्यात्मिक यानी रूहानी लाभ है. जब हम 'मेरा घर', 'मेरी जमीन' और 'मेरा पैसा' इस तरह की बातें करते हैं तो हम में इन चीजों से मोह पैदा होता है. पर जब आदमी इस 'मैं' और 'मेरे' से आजाद हो जायगा और समझ लेगा कि सब चीजें सबके फ़ायदे और सबके इस्तेमाल के लिये हैं, कोई मेरी अलग चीज नहीं है तो आदमी निजात के नजदीक पहुँच जावेगा. आज इस 'मैं' और 'मेरे' ने ही हमें दुनिया में बाँध रखा है. यही हमारी मुक्ति में सबसे बड़ी रुकावट है. हमें यह मानना चाहिये कि सारा गाँव हमारा घर है और जिस घर में हम रह रहे हैं, वह भी सबका है. मुक्ति पाने का पुराना ढंग जिसमें आदमी सब चीज छोड़ कर जंगल में जा बैठता था वह भी ग़लत ढंग है. हमें यह नहीं सोचना चाहिये कि न कोई मेरा और न मैं किसी का. इसके खिलाफ़ हमें यह सोचना चाहिये कि सब मेरे और मैं सबका. मुक्ति का यही रास्ता है. कोई दूसरा रास्ता नहीं. इसलिये हमें यही समझना चाहिये कि हमारे पास जो कुछ है यहां तक कि हमारा अपना आपा भी वह सारे गाँव की मिलकियत है और सारा गाँव हमारा है. ग्रामदान का यह एक बहुत बड़ा लाभ है."

"تیسرا لابھ یہ ہوگا کہ لوگوں کا آچار اونچا جائیگا. آپس
جھگڑے' چوریاں اور دشمنیاں مٹ جائینگی. ہم اپنے گھروں کے
ر چوری نہیں کرتے. جب سارا گاؤں ایک گھر بن جائیگا
گاؤں میں بھی کوئی چوری نہیں کریگا. ہمارا آچار اِس لئے
چے گر گیا ہے کہ اپنے الگ الگ گھر اور الگ الگ ملکیتیں
ا کر ہم چھوٹے چھوٹے سوارتھوں میں پھنس گئے ہیں. آج
ک ڈاکٹر بھی' جس کا دھرم یہ ہے کہ کسی بھی روگی کے روگ
سن کر اُس کے پاس دوڑ کر پہنچے' علاج کرنے سے پہلے روگی
اپنا بٹوا کھولنے کے لئے کہتا ہے. اِسی سے ہمارے سب کے دل تنگ
گئے ہیں کیونکہ ہم نے اپنے چھوٹے چھوٹے گھر اور چھوٹے چھوٹے کنبے بنا
ے ہیں. دنیا کے سب جھگڑوں کی یہی جڑ ہے. جب زمین
ر دھن دولت پر سے لوگوں کی الگ الگ ملکیت جاتی
ے گی تو ہمارا آچار ضروری طور پر اونچا ہو جائے گا. یہی گرام
ن کا سب سے بڑا لابھ ہے. جس دن یہ ہو جائے گا اُس دن دنیا
وشی سے ناچنے لگے گی. آج ہم دکھی اس لئے ہیں کیونکہ
ارے الگ الگ سوارتھ ٹکراتے رہتے ہیں. اِسی سے دنیا میں
سا بڑھ رہی ہے. اگر گاؤں کی زمین اور گاؤں کی سب سمپتی
رے گاؤں کی زمین اور سارے گاؤں کی سمپتی ہو جاوے تو
یا کا آچار سچ مچ اوپر اُٹھ جاوے گا. یہ لابھ گرام دان کا
تک لابھ ہے.

"چوتھا لابھ گرام دان کا آدھیاتمک یعنی روحانی لابھ ہے.
ب ہم 'میرا گھر' 'میری زمین' اور 'میرا پیسہ' اِس طرح کی
یں کرتے ہیں تو ہم میں ان چیزوں سے موہ پیدا ہوتا ہے.
جب آدمی اِس 'میں' اور 'میرے' سے آزاد ہو جائے گا اور
مجھ لے گا کہ سب چیزیں سب کے فائدے اور سب کے استعمال
لئے ہیں' کوئی میری الگ چیز نہیں ہے تو آدمی نجات
نزدیک پہنچ جائے گا. آج اِس 'میں' اور 'میرے' نے ہی
ہیں دنیا میں باندھ رکھا ہے. یہی ہماری مکتی میں سب
بڑی رکاوٹ ہے. ہمیں یہ ماننا چاہئے کہ سارا گاؤں ہمارا
ر ہے اور جس گھر میں ہم رہ رہے ہیں' وہ بھی سب کا ہے.
کتی پانے کا پرانا ڈھنگ جس میں آدمی سب چیز چھوڑ
جنگل میں جا بیٹھتا تھا وہ بھی غلط ڈھنگ ہے. ہمیں یہ
ہیں سوچنا چاہئے کہ نہ کوئی میرا اور نہ میں کسی کا. اِس
خلاف ہمیں یہ سوچنا چاہئے کہ سب میرے اور میں سب
. مکتی کا یہی راستہ ہے. کوئی دوسرا راستہ نہیں. اِس لئے
میں یہی سمجھنا چاہئے کہ ہمارے پاس جو کچھ ہے یہاں
ک کہ ہمارا اپنا آپا بھی وہ سارے گاؤں کی ملکیت ہے اور
ارا گاؤں ہمارا ہے. گرام دان کا یہ ایک بہت بڑا لابھ ہے."

हमें याद है एक बार हम एक विद्वान मुसलमान भाई से बौद्ध धर्म के बारे में बात चीत कर रहे थे. बात करते करते जब ईश्वर और ईश्वर पूजा पर महात्मा बुद्ध के उपदेशों का ज़िक्र आया तो हमारे मुसलमान मित्र चिल्ला पड़े "यह भी कोई मज़हब हो सकता है !" चन्द घंटे और शान्ति से बात करने के बाद उन्होंने महसूस किया कि बौद्ध धर्म और इस्लाम में बहुत बड़ी समानता है और दोनों एक ही सिक्के के दो रुख़ हैं, बल्कि एक ही हक़ीक़त के दो रूप. हम नहीं कह सकते कोई समझदार कम्युनिस्ट बिनोबा जी के इन विचारों को पढ़कर क्या सोचता होगा. एक बड़े दरजे तक जो शकल बिनोबा जी ने ग्रामदान की खींची है वही शकल कम्युनिज़्म की है. फ़रक़ भी है. किसी एक दरख़्त के कोई दो पत्ते एक रंग के नहीं होते. फ़रक़ देखने वाले के लिये सब जगह फ़रक़ काफ़ी मिलते हैं. एकता देखने वाले के लिये एकता की कमी नहीं है. हमारा यह विश्वास दिन दिन मज़बूत होता जा रहा है कि जिसे आज अच्छे से अच्छे मानी में अध्यात्मवाद या अहिंसावाद या गाँधीवाद कहा जाता है, उसके और जिसे कम्युनिज़्म कहा जाता है उसके, इन दोनों के सच्चे मेल में ही इस देश और दुनिया का भला है.

16-7-55 —सुन्दरलाल

श्री बी. जी. खेर और सरकार

एक दूसरी लेख में हम "बम्बई का एक दुख भरा नज़ारा" सरनाम से एक लेख दे चुके हैं. उसमें हमने बम्बई के अन्दर कुछ ग़रीबों की बस्तियों की हालत और श्री बी. जी. खेर और उनके साथियों की नेक सेवाओं की चरचा की है. उस सम्बन्ध में एक ख़ास सवाल सरकार के कर्तव्य और उसके सहयोग का पैदा होता है. हम उस लेख में लिख चुके हैं कि बाला साहब को सरकार से बहुत अधिक आशाएं नहीं हैं. वह जहां तक हो सके ग़ैर सरकारी यानी जनता की मदद से अपने पैरों पर खड़ा होना चाहते हैं. इसके कई साफ़ कारन हैं. हम सरकार की कठिनाई को भी थोड़ा बहुत समझ सकते हैं. अंग्रेज़ी राज की जगह हिन्दुस्तानी राज हमने क़ायम कर लिया. पर नीचे से ऊपर तक हमारा सारा हकूमत का ढांचा लगभग वही है जो अंगरेज़ों के समय में था. अगर कुछ बातों में आजकल का ढांचा पहले से अच्छा है तो कई में पहले से भी बदतर है. आर्थिक मामलों में वह लोग, जिनके हाथों में देश के शासन की बाग डोर है, देश से बेकारी, बेरोज़गारी, भुकमरी और भिकमंगेपन को मिटाना अपना फ़र्ज़ ज़रूर समझते हैं पर

همیں یاد ھے ایک بار ھم ایک ودوان مسلمان بھائی سے بودھ دھرم کے بارے میں بات چیت کر رھے تھے . بات کرتے کرتے جب ایشور اور ایشور پوجا پر مہاتما بدھ کے اپدیشوں کا ذکر آیا تو ھمارے مسلمان متر چلا پڑے "یہ بھی کوئی مذھب ھو سکتا ھے !" چند گھنٹے اور شانتی سے بات کرنے کے بعد اُنھوں نے محسوس کیا کہ بودھ دھرم اور اسلام میں بہت بڑی سمانتا ھے اور دونوں ایک ھی سکے کے دو رخ ھیں' بلکہ ایک ھی حقیقت کے دو روپ . ھم نہیں کہہ سکتے کوئی سمجھدار کمیونسٹ ونوباجی کے اِن وچاروں کو پڑھکر کیا سوچتا ھوگا . ایک بڑے درجے تک جو شکل ونوباجی نے گرام دان کی کھینچی ھے وھی شکل کمیونزم کی ھے . فرق بھی ھے . کسی ایک درخت کے کوئی دو پتے ایک رنگ کے نہیں ھوتے. فرق دیکھنے والے کے لئے سب جگہ فرق کافی ملتے ھیں . ایکتا دیکھنے والے کے لئے ایکتا کی کمی نہیں ھے . ھمارا یہ وشواس دن دن مضبوط ھرتا جا رھا ھے کہ جسے آج اچھے سے اچھے معنی میں ادھیاتمواد یا اھنساواد یا گاندھی واد کہا جاتا ھے' اس کے اور جسے کمیونزم کہا جاتا ھے اُس کے' اِن دونوں کے سچے میل میں ھی اس دیش اور دنیا کا بھلا ھے .

16 .7 .55 ـــــسندر لال

شری بی. جی. کھیر اور سرکار

ایک دوسرے لیکھ میں ھم "بمبئی کا ایک دکھ بھرا نظارہ" سرنام سے ایک لیکھ دے چکے ھیں . اُس میں ھم نے بمبئی کے اندر کچھ غریبوں کی بستیوں کی حالت اور شری بی. جی. کھیر اور اُن کے ساتھیوں کی نیک سیواؤں کی چرچا کی ھے . اُس سمبندھ میں ایک خاص سوال سرکار کے کرتویہ اور اُس کے سہیوگ کا پیدا ھوتا ھے . ھم اُس لیکھ میں لکھ چکے ھیں کہ بالا صاحب کو سرکار سے بہت ادھک آشائیں نہیں ھیں . وہ جہاں تک ھوسکے غیر سرکاری یعنی جنتا کی مدد سے اپنے پیروں پر کھڑا ھونا چاھتے ھیں . اِس کے کئی صاف کارن ھیں. ھم سرکار کی کٹھنائی کو بھی تھوڑا بہت سمجھ سکتے ھیں. انگریزی راج کی جگہ ھندستانی راج ھم نے قائم کرلیا . پر نیچے سے اُوپر تک ھمارا سارا حکومت کا ڈھانچہ لگ بھگ وھی ھے جو انگریزوں کے سمے میں تھا . اگر کچھ باتوں میں آجکل کا ڈھانچہ پہلے سے اچھا ھے تو کئی میں پہلے سے بھی بدتر ھے . آرتھک معاملوں میں وہ لوگ' جن کے ھاتھوں میں دیش کے شاسن کی باگ ڈور ھے ' دیش سے بےکاری' بےروزگاری' بھکمری اور بھک منگےپن کو مٹانا اپنا فرض ضرور سمجھتے ھیں پر

उतना जरूरी कभी नहीं समझते जितना इस देश की मजमूई पैदावार और मजमूई दौलत को बढ़ाना, चाहे वह पैदावार फिर कहीं जाकर भी बिके और वह दौलत किसी के हाथों में भी जमा हो जावे. इस आर्थिक संगठन में घरेलू धंधों के लिये कोई जगह नहीं है, सिवाय उस दरजे तक कि जिस दरजे तक हमारे शासक अपनी राजकाजी जरूरतों के लिये या कला की निगाह से उन्हें जिन्दा रखना जरूरी समझें. उनकी राय में घरेलू धंधे अगर मिलों की पैदावार से मुक़ाबले की टक्कर नहीं ले सकते, और जाहिर है कि वह नहीं ले सकते, तो वह मिट जायें. लाखों और करोड़ों आदमियों की बेकारी और बेरोजगारी उन्हें इतना अधिक नहीं सताती. इसीलिये सात बरस की आजादी के बाद भी मुल्क के अन्दर बेकारों की तादाद और ग़रीबों की ग़रीबी बढ़ती जा रही है. यह आर्थिक व्यवस्था न कम्युनिस्ट व्यवस्था है और न गांधी वादी व्यवस्था है. यह है पूँजीवादी और साम्राजवादी व्यवस्था. जाहिर है कि हमारे आजकल के शासकों के सामने इस मामले में आदर्श न रूस है न चीन और न गांधी जी का आदर्श देश. उनके सामने आदर्श हैं अमरीका और इंगलैंड. इसीलिये हम बग़ैर इस बात की फ़िक्र किये कि हमारे सब जुलाहों और बुनकरों को काम मिले, इस फ़िक्र में रहते हैं कि अपनी मिलों से कम से कम मजदूरों की मदद से अधिक से अधिक कपड़ा बुनकर ईरान, इराक़, मलाया और दूसरे पिछड़े हुए देशों में बेच कर उन देशों से अधिक धन कमा सकें. इसीलिये हम अपनी योजनाओं में देश के रहे सहे बुनकरों को भी आजाद कारीगर न रहने देकर धीरे धीरे पहले छोटे कारख़ाने के मालिकों के और फिर बड़े कारख़ाने के मालिकों के रोज़ीना पाने वाले मजदूर बना देना चाहते हैं. ख़ास कर कपड़े के धंदे के बारे में सरकारी योजनाओं का यह पहलू बिलकुल साफ़ है.

पंडित जवाहरलाल नेहरू बहुत सच्चे, साफ़ और ईमानदार आदमी हैं. दुनिया जानती है कि अन्तरराष्ट्रीय मामलों में उन्होंने देश को कितना ऊंचा बढ़ाया है. पर इन मामलों में उनके विचार बिलकुल साफ़ हैं. अगर अख़बारों की रिपोर्टें सच हैं तो एक बार मद्रास की किसी तक़रीर में उन्होंने कहा था कि देश की पैदावार और दौलत को बढ़ाने के लिये घरेलू दस्तकारियों और दस्तकारों की क़ुरबानी एक जरूरी चीज है. कहा जाता है कि इलाहाबाद में कांग्रेसी काम करने वालों के सामने बोलते हुए उन्होंने इस से भी अधिक साफ़ शब्दों में क़रीब क़रीब यह कहा था कि मैं चाहूँ तो बेकारी आज मिटा सकता हूँ. सब मिलें बन्द कर दूँ तो बेकारी अपने आप बन्द हो जायगी, पर लोगों के जीवन का स्तर एक दम नीचे चला जावेगा जो मैं नहीं चाहता.

اتنا ضروری فرض نہیں سمجھتے جتنا کل دیش کی مجموعی پیداوار اور مجموعی دولت کو بڑھانا، چاہے وہ پیداوار پھر کہیں جاکر ہی بکے اور وہ دولت کسی کے ہاتھوں میں ہی جمع ہو جائے۔ اس آرتھک سنگٹھن میں گھریلو دھندوں کے لئے کوئی جگہ نہیں ہے، سوائے اس درجے تک کہ جس درجے تک ہمارے شاسک اپنی راج کاجی ضرورتوں کے لئے یا کلا کی نگاہ سے انہیں زندہ رکھنا ضروری سمجھیں۔ ان کی رائے میں گھریلو دھندے اگر ملوں کی پیداوار سے مقابلہ کی ٹکر نہیں لے سکتے، اور ظاہر ہے کہ وہ نہیں لے سکتے، تو وہ مٹ جائیں۔ لاکھوں اور کروڑوں آدمیوں کی بےکاری اور بےروزگاری انہیں اتنا ادھک نہیں ستاتی۔ اسی لئے سات برس کی آزادی کے بعد بھی ملک کے اندر بےکاروں کی تعداد اور غریبوں کی غریبی بڑھتی جارہی ہے۔ یہ آرتھک ویوستھا نہ کمیونسٹ ویوستھا ہے اور نہ گاندھی وادی ویوستھا ہے۔ یہ ہے پونجی وادی اور سامراج وادی ویوستھا۔ ظاہر ہے کہ ہمارے آجکل کے شاسکوں کے سامنے اس معاملے میں آدرش نہ روس ہے نہ چین اور نہ گاندھی جی کا آدرش دیش۔ ان کے سامنے آدرش ہیں امریکہ اور انگلینڈ۔ اسی لئے ہم بغیر اس بات کی فکر کئے کہ ہمارے سب جولاہوں اور بنکروں کو کام ملے، اس فکر میں رہتے ہیں کہ اپنی ملوں سے کم سے کم مزدوروں کی مدد سے ادھک سے ادھک کپڑا بنکر ایران، عراق، ملایا اور دوسرے پچھڑے ہوئے دیشوں میں بیچ کر ان دیشوں سے ادھک دھن کما سکیں۔ اسی لئے ہم اپنی یوجناؤں میں دیش کے رہے سہے بنکروں کو بھی آزاد کاریگر نہ رہنے دے کر دھیرے دھیرے پہلے چھوٹے کارخانوں کے مالکوں کے اور پھر بڑے کارخانوں کے مالکوں کے روزینہ پانے والے مزدور بنا دینا چاہتے ہیں۔ خاص کر کپڑے کے دھندے کے بارے میں سرکاری یوجناؤں کا یہ پہلو بالکل صاف ہے۔

پنڈت جواہر لال نہرو بہت سچے، صاف اور ایماندار آدمی ہیں۔ دنیا جانتی ہے کہ انتر راشٹریہ معاملوں میں انہوں نے دیش کو کتنا اونچا بڑھایا ہے۔ پر ان معاملوں میں ان کے وچار بالکل صاف ہیں۔ اگر اخباروں کی رپورٹیں سچ ہیں تو ایک بار مدراس کی کسی تقریر میں انہوں نے کہا تھا کہ دیش کی پیداوار اور دولت کو بڑھانے کے لئے گھریلو دستکاریوں اور دستکاروں کی قربانی ایک ضروری چیز ہے۔ کہا جاتا ہے کہ الٰہ آباد میں کانگریسی کام کرنے والوں کے سامنے بولتے ہوئے انہوں نے اس سے بھی ادھک صاف شبدوں میں قریب قریب یہ کہا تھا کہ میں چاہوں تو بےکاری آج مٹا سکتا ہوں۔ سب ملیں بند کردوں تو بےکاری اپنے آپ بند ہوجائیگی، پر لوگوں کے جیون کا استر ایکدم نیچے چلا جاویگا جو میں نہیں چاہتا۔

"इसीलिये हमारे आजकल के शासक जिस तरह भी हो सके आबादी को घटाने की भी फ़िक्र में रहते हैं. इसीलिये बच्चों की पैदायश को रोकने का साइंसी सामान बाहर के देशों से फ़्री जनरल लाइसेंस में आने की इजाज़त है और सरकारी अस्पतालों में पैदायश को रोकने के तरीक़ों की तालीम दी जाती है.

हम इन सारे विचारों को ग़लत और जनता के लिये बरबादकुन मानते हैं. चीन ने अपनी तरह से एक मिले जुले रास्ते पर चलकर अपने सारे घरेलू धंदों को ज़िन्दा रख लिया और दो साल के अन्दर अन्दर इस तरह का इन्तज़ाम कर लिया कि एक चीनी मर्द या औरत भी बेकार न रह सके. हमारे यहां सात साल के बाद भी बेकारी बढ़ती जा रही है. उन्होंने दो साल के अन्दर देश में एक भी भिकमंगा रहने नहीं दिया. हमारे यहां भीक मांगने वालों की तादाद हर शहर में बढ़ रही है. अगर हम इस मामले में गांधी जी के बताए हुए रास्ते पर चले होते तो हमें चीन या किसी दूसरे देश की तरफ़ देखने की भी ज़रूरत नहीं थी. पर हमें न उस रास्ते पर विश्वास था और न है.

श्री बी. जी. खेर अपने सत्तर हज़ार परिश्रमालयों के ज़रिये देश को जिस तरफ़ ले जाना चाहते हैं वह ठीक गांधी जी का बताया हुआ रास्ता है. हमें विश्वास है कि वही रास्ता इस देश के लिये बेकारी और भिकमंगेपन को मिटाने और जनता की ख़ुशहाली का रास्ता है. अगर देश की जनता और जनता के सेवक उसे सचमुच हाथ में ले लें और उस पर लग जाएं तो हम अपनी सरकार की सारी कमी को पूरा कर सकेंगे. पर काम आसान नहीं है. लाखों के इस में खप जाने की ज़रूरत है. देश के लिये दूसरा रास्ता भी नहीं है. आज या कल हमें इस रास्ते पर चलना ही होगा.

अब अगर हम बम्बई सरकार की तरफ़ निगाह डालें तो इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी हमें कुछ अधिक उम्मीद बन सकती है. बम्बई के चीफ़ मिनिस्टर श्री मुरार जी भाई देसाई देश के अच्छे से अच्छे सच्चे और ईमानदार शासकों में से हैं. वह गांधी जी के भी काफ़ी भक्त हैं. श्री बी. जी. खेर में और उनमें बहुत बड़ा प्रेम है. पंडित जवाहरलाल नेहरू के दिल में भी श्री बी. जी. खेर का काफ़ी आदर है. इसलिये हम आशा करते हैं कि भारत सरकार और बम्बई सरकार दोनों अपनी हदों के अन्दर श्री बी. जी. खेर को उनकी नेक कोशिशों में जहां तक बन पड़ेगा जी खोल कर मदद देंगी.

28-6-'55 —सुन्दरलाल

اِسی لئے همارے آجکل کے شاسک جس طرح بھی هوسکے آبادی کو گھٹانے کی بھی فکر میں رهتے هیں . اِسی لئے بچوں کی پیدائش کو روکنے کا سائنسی سامان باهر کے دیشوں سے فری جنرل لائسنس میں آنے کی اِجازت هے اور سرکاری اسپتالوں میں پیدائش کو روکنے کے طریقوں کی تعلیم دی جاتی هے .

هم اِن سارے وچاروں کو غلط اور جنتا کے لئے برباد کن مانتے هیں . چین نے اپنی طرح سے ایک ملے جلے راستے پر چلکر اپنے سارے گھریلو دهندوں کو زندہ رکھ لیا اور دو سال کے اندر اندر اِس طرح کا انتظام کرلیا کہ ایک چینی مرد یا عورت بھی بیکار نہ رہ سکے . همارے یہاں سات سال کے بعد بھی بیکاری بڑھتی جارهی هے . اُنہوں نے دو سال کے اندر دیش میں ایک بھی بھکمنگا رهنے نہیں دیا . همارے یہاں بھیک مانگنے والوں کی تعداد هر شہر میں بڑھ رهی هے . اگر هم اِس معاملے میں گاندهی جی کے بتائے هوئے راستے پر چلے هوتے تو همیں چین یا کسی دوسرے دیش کی طرف دیکھنے کی بھی ضرورت نہیں تھی . پر همیں نہ اُس راستے پر وشواس تھا اور نہ هے .

شری بی . جی . کھیر اپنے ستر هزار پریشرمالیوں کے ذریعہ دیش کو جس طرف لے جانا چاهتے هیں وہ ٹھیک گاندهی جی کا بتایا هوا راستہ هے . همیں وشواس هے کہ وهی راستہ اِس دیش کے لئے بیکاری اور بھکمنگےپن کو مٹانے اور جنتا کی خوشحالی کا راستہ هے . اگر دیش کی جنتا اور جنتا کے سیوک اُسے سچ مچ هاتھ میں لے لیں اور اُس پر لگ جائیں تو هم اپنی سرکار کی ساری کمی کو پورا کرسکیں گے . پر کام آسان نہیں هے . لاکھوں کے اِس میں کھپ جانے کی ضرورت هے . دیش کے لئے دوسرا راستہ بھی نہیں هے . آج یا کل همیں اِس راستے پر چلنا هی هوگا .

اب اگر هم بمبئی سرکار کی طرف نگاہ ڈالیں تو اِن سب کٹھنائیوں کے هوتے هوئے بھی همیں کچھ ادهک اُمید بن سکتی هے . بمبئی کے چیف منسٹر شری مرار جی بھائی دیسائی دیش کے اچھے سے اچھے سچے اور ایماندار شاسکوں میں سے هیں . وہ گاندهی جی کے بھی کافی بھکت هیں . شری بی . جی . کھیر میں اور اُن میں بہت بڑا پریم هے . پنڈت جواهر لال نہرو کے دل میں بھی شری بی . جی . کھیر کا کافی آدر هے . اِس لئے هم آشا کرتے هیں کہ بھارت سرکار اور بمبئی سرکار دونوں اپنی حدوں کے اندر شری بی . جی . کھیر کو اُن کی نیک کوششوں میں جہاں تک بن پڑےگا جی کھول کر مدد دینگی .

—سندر لال 28 . 6 . 55

भारत के बच्चे और बी० सी० जी० का टीका

इस से पहले के एक सम्पादकी नोट में हम बी० सी० जी० के टीके के बारे में अपने विचार प्रकट कर चुके हैं.

उसके बाद भारत की स्वास्थ्य वज़ीर राजकुमारी अमृत कौर का एक बयान निकला कि उन्हें इस में कोई शक नहीं कि बी० सी० जी० देश और देश के बच्चों के लिये एक बहुत ही लाभदायक चीज़ है और सरकार अपने बी० सी० जी० के प्रचार को जारी रखेगी. श्री राजा गोपालाचारी के विरोध की चरचा करते हुए राजकुमारी अमृत कौर ने कहा कि राजा जी इस मामले को नहीं समझते और ख़ामख़ाह दख़ल देते हैं. राजकुमारी अमृत कौर ने उन बच्चों और उनके माता पिता पर दया प्रकट की जो श्री राजा गोपालाचारी के बहकाए में आकर बी० सी० जी० जैसी बरकत के ख़िलाफ़ आवाज़ उठा रहे हैं.

इसके बाद न्यूयार्क, अमरीका, से यह ख़बर अख़बारों में छपी है कि यू० एन० ओ० के दफ़्तर से मालूम हुआ कि सन् 1955 के आख़ीर तक भारत में छै करोड़ साठ लाख बच्चों के तपेदिक़ के आज़मायशी टीके लगाए जायंगे और दो करोड़ पन्द्रह लाख बच्चों के बी० सी० जी० के टीके लगाए जायंगे.

यह आज़मायशी टीका आज से चालीस साल पहले हमारे भी लग चुका है. टीका लगाने के दो तीन दिन बाद अगर वह जगह थोड़ी बहुत फफद आवे तो समझा जाता है कि जिसके टीका लगा है, उसमें तपेदिक का असर नहीं है, और अगर न फफद आवे तो समझा जाता है कि जिस्म के अन्दर कुछ न कुछ तपेदिक़ का असर है. जिस अंग्रेज़ डाक्टर ने हमारे यह आज़मायशी टीका लगाया था उसने हम से ख़ुद कहा था कि इस टीके का कोई असर कोई ख़ास मानी नहीं रखता और जो नतीजे निकाले जाते हैं वह दावे के साथ सही नतीजे नहीं कहे जा सकते.

यू० एन० ओ० की कमेटी ने सिफ़ारिश की है कि इन सब टीकों और उनके साथ के ज़रूरी सामान को अमरीका से भारत पहुँचाने के लिये और इसके लिये कि भारत सरकार सन् 1956 और सन् 1957 में बी० सी० जी० के टीकों का प्रोग्राम जारी रख सके यू० एन० ओ० की तरफ़ से अठासी हज़ार डालर की भारत सरकार को मदद दी जावे. इस मदद के मिलने पर भारत सरकार को आशा है कि वह सन् 19:7 के अंत तक भारत के बारह करोड़ साठ लाख बच्चों के आज़मायशी टीके लगा चुकेगी और उनमें से जिन बच्चों के अन्दर तपेदिक़ के असर का शक होगा उन सब के बी० सी० जी० के टीके लगा चुकेगी.

بھارت کے بچے اور بی. سی. جی. کا ٹیکہ

اس سے پہلے کے ایک سمپادکی نوٹ میں ہم بی.سی.جی. ے ٹیکے کے بارے میں اپنے وچار پرکٹ کر چکے ہیں ۔

اُس کے بعد بھارت کی سواستھ وزیر راج کماری امرت کور ایک بیان نکلا کہ اُنہیں اِس میں کوئی شک نہیں کہ ۔ سی ۔ جی ۔ دیش اور دیش کے بچوں کے لئے ایک ت ہی لابھ دائک چیز ہے اور سرکار اپنے بی ۔ سی ۔ جی ۔ ، پرچار کو جاری رکھےگی ۔ شری راجا گوپالا چاری کے ورودھ چرچا کرتے ہوئے راج کماری امرت کور نے کہا کہ راجا جی اِس املے کو نہیں سمجھتے اور خواہ مخواہ دخل دیتے ہیں۔ راج کماری رت کور نے اُن بچوں اور اُن کے ماتا پتا پر دیا پرکٹ کی ؛ شری راجا گوپالا چاری کے بہکائے میں آکر بی ۔ سی ۔ جی ۔ یسی برکت کے خلاف آواز اُٹھا رہے ہیں ۔

اِس کے بعد نیویارک 'امریکہ' سے یہ خبر اخباروں میں چھپی ہے یو ۔ اِین ۔ او ۔ کے دفتر سے معلوم ہوا کہ سن 1955 کے ر تک بھارت میں چھ کروڑ ساٹھ لاکھ بچوں کے تپ دق کے ائشی ٹیکے لگائے جائینگے اور دو کروڑ پندرہ لاکھ بچوں کے ۔ سی ۔ جی ۔ کے ٹیکے لگائے جائینگے ۔

یہ آزمائشی ٹیکہ آج سے چالیس سال پہلے ہمارے بھی ، چکا ہے ۔ ٹیکہ لگانے کے دو تین دن بعد اگر وہ جگہ ی بہت پھپھد آوے تو سمجھا جاتا ہے کہ جس کے ٹیکہ ے اُس میں تپ دق کا اثر نہیں ہے، اور اگر نہ پھپھد آوے سمجھا جاتا ہے کہ جسم کے اندر کچھ نہ کچھ تپ دق کا اثر جس انگریز ڈاکٹر نے ہمارے یہ آزمائشی ٹیکہ لگایا تھا اُس ہم سے خود کہا تھا کہ اِس ٹیکے کا کوئی اثر کوئی خاص ، نہیں رکھتا اور جو نتیجے نکالے جاتے ہیں وہ دعوے کے صحیح نتیجے نہیں کہے جاسکتے ۔

یو ۔ اِین ۔ او ۔ کی کمیٹی نے سفارش کی ہے کہ اِن سب اور اُن کے ساتھ کے ضروری سامان کو امریکہ سے بھارت پہونچانے ئے اور اسکے لئے کہ بھارت سرکار سن 1956 اور سن 1957 بی ۔ سی ۔ جی ۔ کے ٹیکوں کا پروگرام جاری رکھ سکے ین ۔ او ۔ کی طرف سے اٹھاسی ہزار ڈالر کی بھارت سرکار د دی جاوے ۔ اِس مدد کے ملنے پر بھارت سرکار کو آشا وہ سن 1957 کے انت تک بھارت کے بارہ کروڑ ساٹھ لاکھ کے آزمائشی ٹیکے لگا چکے گی اور اُن میں سے جن بچوں ر تپ دق کے اثر کا شک ہوگا اُن سب کے بی. سی. جی. ے لگا چکے گی ۔

सन् 1955 के आखीर तक हिन्द सरकार इस काम के लिये कुल बीस लाख डालर खर्च करेगी, और दस लाख डालर सन् 1956 में और दस लाख सन् 1957 में खर्च करेगी.

कहा जाता है कि यू० एन० ओ० की कमेटी अब तक इस काम के लिये साढ़े गियारह लाख डालर दे चुकी है.

भारत सरकार का इरादा है कि वह इस काम को खूब बड़े पैमाने पर चलावे और देश की तन्दुरुस्ती को ठीक रखने के लिये इसे एक मुस्तक़िल प्रोग्राम बना ले ताकि बी० सी० जी० के टीके भारत के बच्चों को हमेशा लगते रहें.

इस काम में लगे हुए डाक्टरों और दूसरे लोगों को तनख़ाहों के अलावा बड़े बड़े भत्ते दिये जावेंगे और यू० एन० ओ० की तरफ़ से इनाम भी मिलेंगे.

इस बीच श्री राजा गोपालाचारी के समर्थन में अख़बारों के अन्दर बच्चों के माता पिता और सरपरस्तों के काफ़ी ख़त भी निकल चुके हैं, जिन में लिखा है कि उनके अपने बच्चों को बी० सी० जी० के टीके से क्या क्या नुक़सान पहुँचे. कुछ ख़त ऐसे डाक्टरों के भी हैं जिन्होंने डाक्टरी और साइन्सी तरीक़े से बहस करके यह साबित करने की कोशिश की है कि बी० सी० जी० का टीका सचमुच कितना बुरा और हानिकर है. ऐसे डाक्टरों के भी ख़त हैं जिन्होंने लिखा है कि बी० सी० जी० के टीके के कारन वह ख़ुद अपने प्यारे बच्चों की जान से हाथ धो बैठे. ज़ाहिर है इस समय के भारत में इस तरह के मां बाप जो ऐसे मामलों में अपनी आवाज़ अख़बारों तक पहुँचा सकें एक लाख में एक भी नहीं हो सकते. गांव गांव और गली गली घूम कर कोई इस तरह के ख़त जमा करना चाहे तो हो सकता है कि लाखों ही ऐसे ख़त जमा हो सकें.

पर सरकार के भी अपने डाक्टर हैं और अपने बड़े बड़े माहिर और विशेषज्ञ हैं! सरकार इस बात की तहक़ीक़ात भी करती रहती है और आंकड़े जमा करती रहती है कि असलियत में किसी बच्चे को बी० सी० जी० से कोई नुक़सान पहुँचा या नहीं और कितनों को फ़ायदा पहुँचा और पहुँच रहा है. सरकार के पता लगाने वाले सरकार को बताते हैं कि किसी बच्चे को बी० सी० जी० से न नुक़सान पहुँचा है और न पहुँच सकता है. अगर बी० सी० जी० के टीके के बाद किसी की आँख फूट गई तो उसका कारन आँख की कोई और बीमारी थी जिसका बी० सी० जी० से कोई सम्बन्ध नहीं और अगर कोई बच्चा मर गया तो उसके भी बहुत से कारन हो सकते हैं!

इस तरह की तहक़ीक़ातों और इस तरह के आंकड़ों के बारे में हमें सचमुच दुनिया की सरकारों पर दया आती है.

سن 1955 کے آخیر تک ہند سرکار اِس کام کے لئے کل بیس لاکھ ڈالر خرچ کریگی' اور دس لاکھ ڈالر سن 1956 میں اور دس لاکھ سن 1957 میں خرچ کریگی ۔

کہا جاتا ہے کہ یو ۔ این ۔ او ۔ کی کمیٹی اب تک اِس کام کے لئے ساڑھے گیارہ لاکھ ڈالر دے چکی ہے ۔

بھارت سرکار کا اِرادہ ہے کہ وہ اِس کام کو خوب بڑے پیمانے پر چلاوے اور دیش کی تندرستی کو ٹھیک رکھنے کے لئے اِسے ایک مستقل پروگرام بنا لے تاکہ بی ۔ سی ۔ جی ۔ کے ٹیکے بھارت کے بچوں کو ہمیشہ لگتے رہیں ۔

اِس کام میں لگے ہوئے ڈاکٹروں اور دوسرے لوگوں کو تنخواہوں کے علاوہ بڑے بڑے بھتے دئے جائینگے اور یو ۔ این ۔ او ۔ کی طرف سے اِنعام بھی ملینگے ۔

اِس بیچ شری راجا گوپالا چاری کے سمرتھن میں اخباروں کے اندر بچوں کے ماتا پتا اور سرپرستوں کے کافی خط بھی نکل چکے ہیں' جن میں لکھا ہے کہ اُن کے اپنے بچوں کو بی ۔ سی ۔ جی ۔ کے ٹیکے سے کیا کیا نقصان پہونچے ۔ کچھ خط ایسے ڈاکٹروں کے بھی ہیں جنھوں نے ڈاکٹری اور سائنسی طریقے سے بحث کرکے یہ ثابت کرنے کی کوشش کی ہے کہ بی. سی. جی. کا ٹیکہ سچ مچ کتنا برا اور ہانیکر ہے ۔ ایسے ڈاکٹروں کے بھی خط ہیں جنھوں نے لکھا ہے کہ بی ۔ سی ۔ جی ۔ کے ٹیکے کے کارن وہ خود اپنے پیارے بچوں کی جان سے ہاتھ دھو بیٹھے ۔ ظاہر ہے اِس سمے کے بھارت میں اِس طرح کے ماں باپ جو ایسے معاملوں میں اپنی آواز اخباروں تک پہونچا سکیں ایک لاکھ میں ایک بھی نہیں ہوسکتے ۔ گاؤں گاؤں اور گلی گلی گھوم کر کوئی اِس طرح کے خط جمع کرنا چاہے تو ہوسکتا ہے کہ لاکھوں ہی ایسے خط جمع ہوسکیں ۔

پر سرکار کے بھی اپنے ڈاکٹر ہیں اور اپنے بڑے بڑے ماہر اور وشیشگیہ ہیں ! سرکار اِس بات کی تحقیقات بھی کرتی رہتی ہے اور آنکڑے جمع کرتی رہتی ہے کہ اصلیت میں کسی بچے کو بی. سی. جی. سے کوئی نقصان پہنچا یا نہیں اور کتنوں کو فائدہ پہنچا اور پہنچ رہا ہے ۔ سرکار کے پتہ لگانے والے سرکار کو بتاتے ہیں کہ کسی بچے کو بی. سی. جی. سے نہ نقصان پہنچا ہے اور نہ پہنچ سکتا ہے ۔ اگر بی. سی. جی. کے ٹیکے کے بعد کسی کی آنکھ پھوٹ گئی تو اُس کا کارن آنکھ کی کوئی اور بیماری تھی جس کا بی. سی. جی. سے کوئی سمبندھ نہیں اور اگر کوئی بچہ مر گیا تو مرنے کے بھی بہت سے کارن ہو سکتے ہیں !

اِس طرح کی تحقیقاتوں اور اِس طرح کے آنکڑوں کے بارے میں ہمیں سچ مچ دنیا کی سرکاروں پر دیا آتی ہے ۔

वह बेचारी बेबस होती हैं. उनके नियुक्त किये हुए खोजी और आंकड़े जमा करने वाले आम तौर पर अपनी खोज के वही नतीजे निकाल लेते हैं और उसी तरह के आंकड़े जमा कर देते हैं जो वह समझते हैं कि उनके नियुक्त करने वाले चाहते हैं और जान कर खुश होंगे. अगर कभी कोई ऐसी कमेटी या इस तरह का खोजी निकल भी आया कि जिसने सरकार की मन चाही बात न कही तो उसकी राय के खिलाफ राय देने वाले दस खड़े हो जाते हैं और पहली राय "जनता के हित के लिये" आसानी से चुपचाप किसी अलमारी में बन्द कर दी जाती है.

इसका तजरबा भारतवासियों को बहुत पुराना और काफ़ी है. हमने खुद सन् 1908 के और दूसरे दुष्कालों में अवध के अन्दर लोगों को तड़ातड़ भूक से मरते देखा है, और सरकारी रिपोर्टों में उनकी मौत का कारन आम तौर पर पेचिश या बुखार दर्ज होता था. और सबसे अजीब बात यह है कि अकसर यह भी और वह भी दोनों ही बातें ठीक होती थी. जिस किसी की मौत का कोई खास कारन न पता चले या न बताना मंजूर हो उसे आसानी से कहा जा सकता है कि 'हार्ट फ़ेल' होने से मर गया. बात भी सच, हार्ट फ़ेल हुए बिना कोई मर भी कैसे सकता है !

हम इस तरह के मामलों में सरकार को और खासकर सरकार के ऊपर के आदमियों को जैसे राजकुमारी अमृत-कौर को बेक़सूर मानते हैं. हमें इसमें कोई शक नहीं कि उनकी नीयत अच्छी से अच्छी है. पर वह अपने आस पास की फ़िजा और खुद अपने से लाचार हैं. हम आज भी बी० सी० जी० के टीके को देश और देश के बच्चों के लिये एक शाप और एक लानत मानते हैं. पच्छिमीयता, अन्धी पच्छिमीयता के जिस रोग से गाँधी जी इस देश को बचाना चाहते थे वह जाहिर है इस समय पूरे जोर पर है और खासकर उन देश भक्तों में जिनके हाथों में बदक़िस्मती से इस समय देश के शासन की बाग है. देश के करोड़ों बच्चों पर यह गन्दे और जहरीले तजरबे तो होंगे ही, सबसे अधिक दुख इस बात का है कि इन करोड़ों बच्चों में बहुत बड़ी तादाद ग़रीबों और गाँव वालों के उन बच्चों की है जिन्हें पेट भर ढंग का खाना भी नहीं मिलता. पर दुनिया शायद तजरबों से ही सीखती है. इनसानी जिस्मों से जहर को निकालने के तरीक़े भी हैं ही. हम निराश नहीं हैं. हमारी आशा का आधार देश की वह करोड़ों जनता है जो अभी तक इस अंधी पच्छिमीयता के इतने अधिक असर में नहीं है और जिसे किसी तहक़ीक़ात के लिये खुद अपनी गलियों, अपने गाँव और अपने निजी अनुभवों से दूर जाना नहीं पड़ता. जनता की सीधी सादी सूझ हम पढ़े लिखों की गढ़ी गढ़ाई अक़्ल से उन्हें कहीं अच्छा और ठीक रास्ता दिखाती है.

وہ بیچاری بے بس ہوتی ہیں ۔ اُن کے نیکت کئے ہوئے کھوجی اور آنکڑے جمع کرنے والے عام طور پر اپنی کھوج کے وہی نتیجے نکال لیتے ہیں اور اُسی طرح کے آنکڑے جمع کر دیتے ہیں جو وہ سمجھتے ہیں کہ اُن کے نیکت کرنے والے چاہتے ہیں اور جان کر خوش ہونگے ۔ اگر کبھی کوئی ایسی کمیٹی یا اِس طرح کا کھوجی نکل بھی آیا جس نے سرکار کی من چاہی بات نہ کہی تو اُس کی رائے کے خلاف رائے دینے والے دس کھڑے ہو جاتے ہیں اور پہلی رائے "جنتا کے ہت کے لئے" آسانی سے چپ چاپ کسی الماری میں بند کردی جاتی ہے ۔

اِس کا تجربہ بھارت واسیوں کو بہت پرانا اور کافی ہے ۔ ہم نے خود سن 1908 کے اور دوسرے 'دُشکالوں میں اودھ کے اندر لوگوں کو تڑاتڑا بھوک سے مرتے دیکھا ہے اور سرکاری رپورٹوں میں اُن کی موت کا کارن عام طور پر پیچش یا بخار درج ہوتا تھا ۔ اور سب سے عجیب بات یہ ہے کہ اکثر یہ بھی اور وہ بھی دونوں ہی باتیں ٹھیک ہوتی تھیں ۔ جس کسی کی موت کا کوئی خاص کارن نہ پتہ چلے یا نہ بتانا منظور ہو اسے آسانی سے کہا جا سکتا ہے کہ 'ہارٹ فیل' ہونے سے مر گیا ۔ بات بھی سچ' ہارٹ فیل ہوئے بنا کوئی مر بھی کیسے سکتا ہے !

ہم اِس طرح کے معاملوں میں سرکار کو اور خاص کر سرکار کے اُوپر کے آدمیوں کو جیسے راج کماری اُمرت کور کو بے قصور مانتے ہیں ۔ ہمیں اِس میں کوئی شک نہیں کہ اُن کی نیت اچھی سے اچھی ہے ۔ پر وہ اپنے آس پاس کی فضا اور خود اپنے سے لاچار ہیں ۔ ہم آج بھی بی. سی. جی. کے ٹیکے کو دیش اور دیش کے بچوں کے لئے ایک شاپ اور ایک لعنت مانتے ہیں ۔ پشچمیتا' اندھی پشچمیتا کے جس روگ سے گاندھی جی اِس دیش کو بچانا چاہتے تھے وہ ظاہر ہے اِس سمئے پورے زور پر ہے اور خاص کر اُن دیش بھگتوں میں جن کے ہاتھوں میں بدقسمتی سے اِس سمے دیش کے شاسن کی باگ ہے ۔ دیش کے کروڑوں بچوں پر یہ گندے' اور زہریلے تجربے تو ہونگے ہی' سب سے ادھک دکھ اِس بات کا ہے کہ اِن کروڑوں بچوں میں بہت بڑی تعداد غریبوں اور گاؤں والوں کے اُن بچوں کی ہے جنہیں پیٹ بھر ڈھنگ کا کھانا بھی نہیں ملتا ۔ پر دنیا شاید تجربوں سے ہی سیکھتی ہے ۔ اِنسانی جسموں سے زہر کو نکالنے کے طریقے بھی ہیں ہی۔ ہم نراش نہیں ہیں ۔ ہماری آشا کا آدھار دیش کی وہ کروڑوں جنتا ہے جو ابھی تک اِس اندھی پشچمیتا کے اتنے ادھک اثر میں نہیں ہے اور جسے کسی تحقیقات کے لئے خود اپنی گلیوں' اپنے گاؤں اور اپنے نجی انوبھوں سے دور جانا نہیں پڑتا ۔ جنتا کی سیدھی سادی سوجھ ہم پڑھے لکھوں کی گڑھی گڑھائی عقل سے اُنہیں کہیں اچھا اور ٹھیک راستہ دکھاتی ہے ۔

हम अपने राज को जनता का राज कहते हैं. अभी हम इस आदर्श से काफ़ी दूर हैं. भारत के रहे सहे दुख उसी दिन दूर होंगे और भारत उसी दिन बाहर की टीपटाप से नहीं अपने अन्दर की चमक से चमकेगा जिस दिन हम सचमुच इस आदर्श तक पहुँच जावेंगे.

23-7-55 — सुन्दरलाल

एक आदर्श गवर्नर

हाल में कलकत्ते के दौरे में हमें पच्छिमी बंगाल के गवर्नर डाक्टर एच. सी. मुकरजी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. उनसे मिलकर हमें बड़ी .ख़ुशी हुई. डाक्टर एच. सी. मुकरजी की उमर इस समय लगभग उन्नासी बरस की है. उनका रहन सहन और लिबास हद दरजे का सादा है. उनके तर्ज़ और लिबास से यह मालूम नहीं होता कि वह भारत की गलियों और गावों में फिरने वाले आम लोगों से किसी तरह कोई अलग इनसान हैं. बातें करते हुए हमारा ध्यान इस बात की तरफ़ गया कि गवर्नर एच. सी. मुकरजी अपनी पाँच हज़ार की तनख़्वाह में से केवल पाँच सौ रुपये अपने और अपने परिवार के ख़र्च के लिये रखकर बाक़ी साढ़े चार हज़ार रुपये महीने एक ट्रस्ट के हवाले कर देते हैं इसलिये कि उसे ग़रीब विद्यार्थियों की तालीम आदि पर ख़र्च किया जावे. हम डाक्टर मुकरजी को यह याद दिलाए बिना न रह सके कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वतंत्र भारत के मिनिस्टरों और गवर्नरों के सामने ख़लीफ़ा उमर का आदर्श पेश किया था. गांधी जी ने कहा था कि हमारे देश के मिनिस्टर और गवर्नर कम से कम तनख़ाहें लें और ख़लीफ़ा उमर का सा सादा जीवन बितावें ताकि उनमें और जनता में गहरा सम्बन्ध बना रहे. इस पर डाक्टर मुकरजी ने ख़लीफ़ा उमर के जीवन की कुछ घटनाएं हम से जानना चाहीं. हमने उन्हें कई घटनाएं सुनाईं. यहां हम उन्हें दुहराना नहीं चाहते. डाक्टर मुकरजी सुनकर बहुत .ख़ुश हुए. हमने उनसे यह भी कहा कि जहां तक हमें मालूम है अगर भारत भर में आज कोई गवर्नर गांधी जी के बताए उस आदर्श के निकट पहुँचता है तो डाक्टर मुकरजी. डाक्टर मुकरजी ने इस पर बड़ा संतोष प्रकट किया.

उनकी सादगी की बाबत एक छोटी सी घटना हमने और सुनी. दिल्ली सरकार के एक बहुत बड़े सज्जन ने अपने कलकत्ते के दौरे के समय गवर्नर मुकरजी के रहन सहन को देखकर उनसे कहा कि अगर आप थोड़ा सा और ख़र्च अपने ऊपर गवारा कर लें तो आप ज़रा अच्छी तरह रह सकेंगे. गवर्नर मुकरजी ने बड़ा सुन्दर जवाब दिया. उन्होंने कहा कि—"मैं देश का असली हाकिम नहीं हूँ,

هم اپنے راج کو جنتا کا راج کہتے هیں . ابھی هم اِس آدرش سے کافی دور هیں . بھارت کے رهے سہے دکھ اُسی دن دور هونگے اور بھارت اُسی دن باهر کی ٹیپ ٹاپ سے نہیں اپنے اندر کی چمک سے چمکے گا جس دن هم سچ مچ اِس آدرش تک پہنچ جاوینگے .

23. 7. 55 ——سندر لال

ایک آدرش گورنر

حال میں کلکتے کے دورے میں همیں پچھمی بنگال کے گورنر ڈاکٹر ایچ . سی . مکرجی سے ملنے کا سوبھاگیہ پراپت هوا . اُن سے ملکر همیں بڑی خوشی هوئی . ڈاکٹر ایچ . سی . مکرجی کی عمر اِس سمے لگ بھگ اُناسی برس کی هے . اُن کا رهن سهن اور لباس حد درجه کا ساده هے . اُن کے طرز اور لباس سے یه معلوم نهیں هوتا که وه بھارت کی گلیوں اور گاؤں میں پھرنے والے عام لوگوں سے کسی طرح کوئی الگ اِنسان هیں. باتیں کرتے هوئے همارا دھیان اِس بات کی طرف گیا که گورنر ایچ . سی . مکرجی اپنی پانچ هزار کی تنخواه میں سے کیول پانچ سو روپیه اپنے اور اپنے پریوار کے خرچ کے لئے رکھکر باقی ساڑھے چار هزار روپئے هر مهینے ایک ٹرسٹ کے حوالے کردیتے هیں اِس لئے که اُسے غریب ودیارتھیوں کی تعلیم آدی پر خرچ کیا جاوے . هم ڈاکٹر مکرجی کو یه یاد دلائے بنا نه ره سکے که راشٹر پتا مهاتما گاندھی نے سوتنتر بھارت کے منسٹروں اور گورنروں کے سامنے خلیفه عمر کا آدرش پیش کیا تھا . گاندھی جی نے کہا تھا که همارے دیش کے منسٹر اور گورنر کم سے کم تنخواهیں لیں اور خلیفه عمر کا سا ساده جیون بتاویں تاکه اُن میں اور جنتا میں گهرا سمبندھ بنا رهے . اِس پر ڈاکٹر مکرجی نے خلیفه عمر کے جیون کی کچھ گھٹنائیں هم سے جاننا چاهیں. هم نے اُنهیں کئی گھٹنائیں سنائیں . یهاں هم اُنهیں دهرانا نهیں چاهتے . ڈاکٹر مکرجی سنکر بہت خوش هوئے . هم نے اُن سے یه بھی کہا که جهاں تک همیں معلوم هے اگر بھارت بھر میں آج کوئی گورنر گاندھی جی کے بتائے هوئے اُس آدرش کے نکٹ پهونچتا هے تو ڈاکٹر مکرجی . ڈاکٹر مکرجی نے اِس پر بڑا سنتوش پرگٹ کیا .

اُن کی اِس سادگی کی بابت ایک چھوٹی سی گھٹنا هم نے اور سنی . دلی سرکار کے ایک بہت بڑے سجن نے اپنے کلکتے کے دورے کے سمے گورنر مکرجی کے رهن سهن کو دیکھ کر اُن سے کہا که اگر آپ تھوڑا سا اور خرچ اپنے اوپر گوارا کریں تو آپ ذرا اچھی طرح ره سکیں گے. گورنر مکرجی نے بڑا سندر جواب دیا . اُنهوں نے کہا که—"میں دیش کا اصلی حاکم نهیں هوں"

असली हाकिम आप हैं. अगर कल किसी कारन से मेरी कोई बात आपको पसन्द न आई और आपने मुझे अलग कर दिया तो मेरे केवल आठ आने खर्च होंगे. आठ आने की रिक्शा मंगाकर मैं उसमें अपनी पत्नी सहित शहर के अपने पुराने मकान में चला जाऊँगा. मुझे कोई भी कष्ट न होगा. पर यदि मैंने अपने रहन सहन को बदल लिया और अपने ऊपर अधिक खर्च करना शुरू कर दिया तो मुझे गवर्नरी छोड़ने पर तकलीफ़ होगी. इसलिये मेरे लिये यही सादा जीवन अच्छा है."

डाक्टर मुकरजी ईसाई हैं. हमें वह सचमुच सच्चे ईसाई मालूम हुए. हम थोड़े से दुख के साथ यह कहे बिना नहीं रह सकते कि अगर स्वतंत्र भारत के दूसरे गवर्नर और मिनिस्टर भी गाँधी जी की बात मान कर डाक्टर मुकरजी की मिसाल पर अमल कर सके होते तो देश की दशा आज कुछ और ही होती !

24. 6. 55 —सुन्दरलाल

अंधविश्वास का अनर्थ

उज्जैन के पास तराना जाने वाली सड़क पर टुकराल गांव में, जुलाई महीने के आखिरी दिनों में, जो घटना हुई वह चौंका देने वाली है. हमारे देश की ग़रीब जनता को धर्म के नाम पर किस बुरी तरह बहकाया जा सकता है, इसका एक ताज़ा नमूना इस घटना से हमारे सामने एक बार फिर आ गया. वैसे तो ऐसी छोटी मोटी घटनाएं आम तौर पर होती रहती हैं, परन्तु इस घटना ने उन सब को मात कर दिया है. उस दिन नई दिल्ली में भी एक भयानक घटना हो गई. मदनलाल नाम के एक क्लर्क को किसी ज्योतिषी ने यह कह दिया कि 28 जून को उसकी मौत हो जाएगी और उसकी मौत के बाद उसके परिवार को बहुत मुसीबत उठानी पड़ेगी. अपनी मौत और अपने परिवार वालों की मुसीबत का ख्याल उसके दिमाग़ में कुछ ऐसा घर कर गया कि उसने अपने मासूम 8 साल, 6 साल, और 9 महीने के तीन बच्चों को और अपनी स्त्री को अपने हाथों से मौत के घाट उतार कर स्वयं रेल की पटरी पर जाकर अपनी जान दे दी और ज्योतिषी की भविष्यवाणी का बहुत सा हिस्सा ख़ुद पूरा कर डाला. बहुत साल नहीं हुए हैं, जब चमत्कारों पर विश्वास रखने वाले, हमारे देश के हज़ारों लोग, जिनमें अच्छे पढ़े लिखों की संख्या भी कुछ कम न थी, अंगूल (उड़ीसा) की ओर भागे चले गये थे—केवल इसलिए कि वहां ग्वाला परिवार का एक छोटा सा लड़का दवाई के नाम पर किसी पेड़ की छाल का कुछ टुकड़ा देता था, जिससे सभी तरह की बीमारियां दूर हो जाती थीं ! अंधविश्वास के उस

اصلی حاکم آپ ہیں۔ اگر کل کسی کارن سے میری کوئی بات آپ کو پسند نہ آئی اور آپ نے مجھے الگ کر دیا تو میرے کیول آٹھ آنے خرچ ہونگے۔ آٹھ آنے کی رکشا منگا کر میں اُس میں اپنی پتنی سہت شہر کے اپنے پرانے مکان میں چلا جاؤنگا۔ مجھے کوئی بھی کشٹ نہ ہوگا۔ پر یدی میں نے اپنے رہن سہن کو بدل لیا اور اپنے اوپر ادھک خرچ کرنا شروع کر دیا تو مجھے گورنری چھوڑنے پر تکلیف ہوگی۔ اِس لئے میرے لئے یہی سادہ جیون اچھا ہے۔"

ڈاکٹر مکرجی عیسائی ہیں۔ ہمیں وہ سچ مچ سچے عیسائی معلوم ہوئے۔ ہم تھوڑے سے دکھ کے ساتھ یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ اگر سوتنتر بھارت کے دوسرے گورنر اور منسٹر بھی گاندھی جی کی بات مان کر ڈاکٹر مکرجی کی مثال پر عمل کر سکے ہوتے تو دیش کی دشا آج کچھ اور ہی ہوتی !

—سندر لال 24 .6 .55

اندھ وشواس کا انرتھ

اُجین کے پاس ترانا جانے والی سڑک پر ٹکرال گاؤں میں، جولائی مہینے کے آخری دنوں میں، جو گھٹنا ہوئی وہ چونکا دینے والی ہے۔ ہمارے دیش کی غریب جنتا کو دھرم کے نام پر کس بری طرح بہکایا جاسکتا ہے، اُس کا ایک تازہ نمونہ اس گھٹنا سے ہمارے سامنے ایک بار پھر آگیا۔ ویسے تو ایسی چھوٹی موٹی گھٹنائیں عام طور پر ہوتی رہتی ہیں، پرنتو اِس گھٹنا نے ان سب کو مات کردیا ہے۔ اُس دن نئی دلی میں بھی ایک بھیانک گھٹنا ہوگئی۔ مدن لال نام کے ایک کلرک کو کسی جیوتشی نے یہ کہہ دیا کہ 28 جون کو اُس کی موت ہوجائیگی اور اُس کی موت کے بعد اُس کے پریوار کو بہت مصیبت اٹھانی پڑیگی۔ اپنی موت اور اپنے پریوار والوں کی مصیبت کا خیال اُس کے دماغ میں کچھ ایسا گھر کر گیا کہ اُس نے اپنے معصوم 8 سال، 6 سال، اور 9 مہینے کے تین بچوں کو اور اپنی استری کو اپنے ہاتھوں سے موت کے گھاٹ اُتار کر سویم ریل کی پٹری پر جاکر اپنی جان دے دی اور جیوتشی کی بھوشیہ وانی کا بہت سا حصہ خود پورا کر ڈالا۔ بہت سال نہیں ہوئے ہیں، جب چمتکاروں پر وشواس رکھنے والے، ہمارے دیش کے ہزاروں لوگ، جن میں اچھے پڑھے لکھوں کی سنکھیا بھی کچھ کم نہ تھی، انگول (اڑیسہ) کی اور بھاگے چلے گئے تھے—کیول اِس لئے کہ وہاں گوالا پریوار کا ایک چھوٹا سا لڑکا دوائی کے نام پر کسی پیڑ کی چھال کا کچھ ٹکڑا دیتا تھا، جس سے سبھی طرح کی بیماریاں دور ہوجاتی تھیں ! اندھ وشواس کے اُس

चक्कर में लोग पागल से बनकर अंगूल चल देते थे. किसी को यह सोचने की फ़ुर्सत भी नहीं थी कि असलियत क्या है. भेड़िया धसान की तरह देश के चारों ओर से हजारों लाखों स्त्री पुरुष वहां पहुंच गये. सरकार की सारी सूचनाओं और विज्ञप्तियों को लोगों ने झूठा ठहरा दिया और उन पर कुछ भी असर नहीं हुआ. लाखों रुपया बरबाद हुआ और जो मुसीबतें उठाई गईं, उनका तो कहना ही क्या. उस छोटे से स्थान में हजारों लोगों के खाने पीने और ठहरने का कोई इंतज़ाम न था और न हो सकता था,

टुकराल की जिस घटना का हम यहां चर्चा करना चाहते हैं, वह थोड़े में यह है कि गेंद कुंवरबाई नाम की एक स्त्री को यह सपना आया कि 28 जुलाई को उसके पति की मौत हो जाएगी और वह उसकी साथ सती हो जायेगी. हालांकि वह स्त्री ऐसा कोई सपना देखने से भी इनकार करती है. पर उस सपने का जो क़िस्सा चारों ओर फैला, उसका नतीजा यह हुआ कि टुकराल में उस सती के दर्शनों के लिए लाखों स्त्री पुरुष जमा हो गये. कहते हैं कि मथुरा, गवालियर, झांसी, ललितपुर और बम्बई तक से लोग वहां गये. पुलिस की ओर से पति पत्नी दोनों के ज़िन्दा होने की ख़बरों का एलान करने पर भी लोगों का आस पास से चारों ओर से वहां जाना जारी रहा. गेंदकुंवर का पति सिद्धनाथ इंदौर के अस्पताल में अपनी बीमारी का इलाज करवा रहा था और गेंदकुंवर वहां उसकी सेवा के लिए गई हुई थी. गांव में उनकी इस ग़ैरहाज़िरी का मतलब यह लगाया गया कि सिद्धनाथ के मरने पर गेंदकुंवर बाई सती हो चुकी है और इस "धार्मिक" घटना को लोगों से छिपा दिया गया है. उन दोनों को जनता के सामने पेश करने की जो मांग की गई, उसका पूरा कर सकना मुमकिन न होने से सती होने की लोगों की कल्पना को और भी अधिक बल मिल गया. फिर वहां मौजूद दो नागा साधुओं ने, जिनकी बात को अंधविश्वासी जनता आज भी हमारे देश में वेद वाक्य की तरह सच मानती है, लोगों की उस कल्पना को इतना अधिक भड़का दिया कि वे पुलिस की बात को सच मानने की बजाय, उसी पर हमला कर बैठे और पुलिस वालों को अपनी जान बचाना मुश्किल हो गया. टीयर गैस छोड़ने और लाठी चलाने का भी जब कोई नतीजा न निकला तब गोली चलाने की नौबत आ गई. कहते हैं कि 13 मिनट तक गोली चली. हालांकि 6 आदमियों के मरने की बात स्वीकार की गई है पर उनकी संख्या कहीं अधिक होने का शक किया जाता है.

घटना का दूसरा पहलू और भी अधिक भयानक है. क़ानून से सती-प्रथा को बंद हुए क़रीब डेढ़ सौ साल बीत जाने पर भी उसका अन्ध विश्वास लोगों के दिल और दिमाग़ पर अभी तक छाया हुआ है. यह पुरानी प्रथा है कि

چکر میں لوگ پاگل سے بن کر انگول چل دیتے تھے. کسی کو یہ سوچنے کی فرصت بھی نہیں تھی کہ اصلیت کیا ہے. بھیڑیا دھسان کی طرح دیش کے چاروں اور سے ہزاروں لاکھوں اِستری پرش وہاں پہونچ گئے. سرکار کی ساری سوچناؤں اور وگیپتیوں کو لوگوں نے جھوٹا ٹھہرا دیا اور اُن پر کچھ بھی اثر نہیں ہوا. لاکھوں روپیہ برباد ہوا اور جو مصیبتیں اُٹھائی گئیں، اُن کا تو کہنا ہی کیا. اُس چھوٹے سے استھان میں ہزاروں لوگوں کے کھانے پینے اور ٹھہرنے کا کوئی اِنتظام نہ تھا اور نہ ہوسکتا تھا.

ٹکرال کی جس گھٹنا کا ہم یہاں چرچا کرنا چاہتے ہیں، وہ تھوڑے میں یہ ہے کہ گیندکنوربائی نام کی ایک اِستری کو یہ سپنا آیا کہ 28 جولائی کو اُس کے پتی کی موت ہوجائیگی اور وہ اُس کے ساتھ ستی ہوجائیگی. حالانکہ وہ اِستری ایسا کوئی سپنا دیکھنے سے بھی اِنکار کرتی ہے. پر اُس سپنے کا جو قصہ چاروں اور پھیلا، اُس کا نتیجہ یہ ہوا کہ ٹکرال میں اُس ستی کے درشنوں کے لئے لاکھوں اِستری پرش جمع ہوگئے. کہتے ہیں کہ متھرا، گوالیر، جھانسی، للت پور اور بمبئی تک سے لوگ وہاں گئے. پولس کی اور سے پتی پتنی دونوں کے زندہ ہونے کی خبروں کا اعلان کرنے پر بھی لوگوں کا آس پاس سے چاروں اور سے وہاں جانا جاری رہا. گیندکنور کا پتی سدھ ناتھ اِندور کے اسپتال میں اپنی بیماری کا علاج کروا رہا تھا اور گیندکنور وہاں اُس کی سیوا کے لئے گئی ہوئی تھی. گاؤں میں اُن کی اِس غیرحاضری کا مطلب یہ لگایا گیا کہ سدھ ناتھ کے مرنے پر گیندر کنور بائی ستی ہوچکی ہے اور اِس "دھارمک" گھٹنا کو لوگوں سے چھپا دیا گیا ہے. اُن دونوں کو جنتا کے سامنے پیش کرنے کی جو مانگ کی گئی، اس کا پورا کرسکنا ممکن نہ ہونے سے ستی ہونے کی لوگوں کی کلپنا کو اور بھی ادھک بل مل گیا. پھر، وہاں موجود دو ناگا سادھوؤں نے، جن کی بات کو اندھ وشواسی جنتا آج بھی ہمارے دیش میں وید واکیہ کی طرح سچ مانتی ہے، لوگوں کی اُس کلپنا کو اِتنا ادھک بھڑکا دیا کہ وے پولس کی بات کو سچ ماننے کی بجائے، اُسی پر حملہ کر بیٹھے اور پولس والوں کو اپنی جان بچانا مشکل ہوگیا. ٹیئرگیس چھوڑنے اور لاٹھی چلانے کا بھی جب کوئی نتیجہ نہ نکلا تب گولی چلانے کی نوبت آگئی. کہتے ہیں کہ 13 منٹ تک گولی چلی. حالانکہ چھ آدمیوں کے مرنے کی بات سوئیکار کی گئی ہے، پر اُن کی سنکھیا کہیں ادھک ہونے کا شک کیا جاتا ہے.

گھٹنا کا دوسرا پہلو اور بھی ادھک بھیانک ہے. قانون سے ستی پرتھا کو بند ہوئے قریب ڈیڑھ سو سال بیت جانے پر بھی اُس کا اندھ وشواس لوگوں کے دل اور دماغ پر ابھی تک چھایا ہوا ہے. یہ پرانی پرتھا ہے کہ

सती के नाम पर एक चबूतरा बनाकर मंदिर की तरह से उसकी पूजा की जाती है. गेंदकुंवर बाई के जिन्दा होने पर भी, उसका चबूतरा बना दिया गया और चबूतरे पर चढ़ावा चढ़ना भी शुरू हो गया. आंखों देखा हाल लिखने वाले ने लिखा है कि वहाँ इतना चढ़ावा चढ़ा कि 70-80 हजार रुपए के तो नोट जमा करके यार दोस्त कहीं चम्पत हो गये और उन नोटों के अलावा जो नक़दी वहाँ जमा हुई उसका वज़न कई मन तक पहुँच गया. रंग-बिरंगे कपड़ों का भी वहाँ एक बड़ा ढेर लग गया. नोट लेकर चम्पत हो जाने वालों की पुलिस खोज कर रही है और 'धर्मावतार' बने हुए वे नागा साधू पुलिस की हिरासत में ले लिए गये हैं. कुछ समाचार पत्रों में यह भी प्रकाशित किया गया है कि जनसंघ वालों ने जनता की धार्मिक भावनाओं को उभाड़ने में कुछ भी उठा नहीं रखा. जनसंघ के अधिकारियों ने इसका प्रतिवाद किया है.

जनसंघ अथवा ऐसी ही किसी दूसरी संस्था का इस घटना के पीछे हाथ हो या न हो, इतना तो साफ़ है कि उन धार्मिक अंध विश्वासों और झूठे धर्मों की वजह से ही यह सारी घटना हुई, जिन पर साम्प्रदायिक संस्थाएं फलती फूलती और पलती हैं. भोली भाली जनता के धार्मिक अंध-विश्वासों को भड़का कर कितना अनर्थ किया जा सकता है, इसका एक नमूना यह सारी घटनाएं हैं.

कुछ ही वर्ष पहले शायद 1950 में इसी से मिलती जुलती एक घटना ग्वालियर में हुई थी. तब मध्यभारत राज की विधान सभा तक में यह मंजूर किया गया था कि उस मौक़े पर पुलिस के अफ़सरों और दूसरे अधिकारियों ने अपने कर्तव्य का पालन पूरी तत्परता और ईमानदारी से नहीं किया था. कारण यह था कि पुलिस वाले और दूसरे सरकारी अधिकारी भी जनता की तरह अंधविश्वास में फंसे हुए थे. आखिर वे भी तो उन लोगों में से ही हैं, जिनके दिल और दिमाग़ पर यह और ऐसे अंधविश्वास पूरी तरह छाए हुए हैं. अफ़सोस यह देखकर होता है कि हमारे कांगरेसी वज़ीर भी उनसे अपना पिंड नहीं छुड़ा सके हैं. हमारे बहुत से वज़ीर अब भी ज्योतषियों के चक्कर में फंसे हुए हैं और वे बात बात में उनसे मुहूर्त निकलवाते रहते हैं. उनकी भविष्यवाणियों पर भी उनका वैसा ही विश्वास है जैसा कि आम जनता का. हमारे ख्याल में ऐसी घटनाओं के होने पर कोई सख्त क़दम इसीलिए नहीं उठाया जा सकता कि उस क़दम को उठाने की जिम्मेवारी जिन लोगों पर होती है, उनके दिल और दिमाग़ अपने कर्तव्य के प्रति साफ़ नहीं और वे अपने कर्तव्य से अपने अंधविश्वास को तरजीह दे जाते हैं. इसलिए इन घटनाओं को रोकने के लिए यह जरूरी है कि पहले वे लोग अपना दिल और दिमाग़ साफ़ करें जिन पर शासन की जिम्मेवारी है, नहीं तो हमारी

ستی کے نام پر ایک چبوترا بنا کر مندر کی طرح سے اُس کی پوجا کی جاتی ھے . گیند کنور بائی کے زندہ ہونے پر بھی، اُس کا چبوترا بنا دیا گیا اور چبوترے پر چڑھاوا چڑھنا بھی شروع ہو گیا . آنکھوں دیکھا حال لکھنے والے نے لکھا ھے کہ وہاں اتنا چڑھاوا چڑھا کہ 70-80 ہزار روپئے کے تو نوٹ جمع کر کے یار دوست کہیں چمپت ہوگئے اور اُن نوٹوں کے علاوہ جو نقدی وہاں جمع ہوئی اُس کا وزن کئی من تک پہونچ گیا . رنگ برنگے کپڑوں کا بھی وہاں ایک بڑا ڈھیر لگ گیا . نوٹ لیکر چمپت ہو جانے والوں کی پولس کھوج کر رہی ھے اور 'دھرماوتار' بنے ہوئے وے ناگا سادھو پولس کی حراست میں لے لئے گئے ہیں . کچھ سماچار پتروں میں یہ بھی پرکاشت کیا گیا ھے کہ جن سنگھ والوں نے جنتا کی دھارمک بھاوناؤں کو اُبھارنے میں کچھ بھی اُٹھا نہیں رکھا . جن سنگھ کے ادھیکاریوں نے اِس کا پرتیواد کیا ھے .

جن سنگھ اتھوا ایسی ھی کسی دوسری سنستھا کا اِس گھٹنا کے پیچھے ہاتھ ہو یا نہ ہو، اِتنا تو صاف ھے کہ اُن دھارمک اندھ وشواسوں اور جھوٹے دھرموں کی وجہ سے ھی یہ ساری گھٹنا ہوئی، جن پر سامپردایک سنستھائیں پھلتی پھولتی اور پلتی ہیں . بھولی بھالی جنتا کے دھارمک اندھ وشواسوں کو بھڑکا کر کتنا انرتھ کیا جا سکتا ھے، اِس کا ایک نمونہ یہ ساری گھٹنائیں ہیں .

کچھ ھی ورش پہلے شاید 1950 میں اِسی سے ملتی جلتی ایک گھٹنا گوالیر میں ہوئی تھی . تب مدھیہ بھارت راج کی ودھان سبھا تک میں یہ منظور کیا گیا تھا کہ اُس موقع پر پولس کے افسروں اور دوسرے ادھیکاریوں نے اپنے کرتویہ کا پالن پوری تتپرتا اور ایمانداری سے نہیں کیا تھا . کارن یہ تھا کہ پولس والے اور دوسرے سرکاری ادھیکاری بھی جنتا کی طرح اندھ وشواس میں پھنسے ہوئے تھے . آخر وے بھی تو اُن لوگوں میں سے ھی ہیں، جن کے دل اور دماغ پر یہ اور ایسے اندھ وشواس پوری طرح چھائے ہوئے ہیں . افسوس یہ دیکھ کر ہوتا ھے کہ ہمارے کانگریسی وزیر بھی اُن سے اپنا پنڈ نہیں چھڑا سکے ہیں . ہمارے بہت سے وزیر اب بھی جیوتشیوں کے چکر میں پھنسے ہوئے ہیں اور وے بات بات میں اُن سے مہورت نکلواتے رہتے ہیں . اُنکی بھوشیہ وانیوں پر بھی اُنکا ویسا ھی وشواس ھے جیسا کہ عام جنتا کا . ہمارے خیال میں ایسی گھٹناؤں کے ہونے پر کوئی سخت قدم اس لئے نہیں اُٹھایا جا سکتا کہ اُس قدم کو اُٹھانے کی ذمہ واری جن لوگوں پر ہوتی ھے، اُن کے دل اور دماغ اپنے کرتویہ کے پرتی صاف نہیں اور وے اپنے کرتویہ سے اپنے اندھوشواس کو ترجیح دے جاتے ہیں . اِس لئے اُن گھٹناؤں کو روکنے کے لئے یہ ضروری ھے کہ پہلے وے لوگ اپنا دل اور دماغ صاف کریں جن پر شاسن کی ذمہ واری ھے، نہیں تو ہماری

हालत अंधे नेताओं के अंधे अनुयायी की सी हुए बिना न रहेगी. टुकराल की इस घटना पर पुलिस की कार्यवाही की लीपापोती कर देना ही काफ़ी नहीं है, उसकी जड़ में जाकर लोगों के दिलों और दिमाग़ों को भी बदलने की कोशिश की जानी चाहिए. धर्म का झूठा आडंबर, माया-जाल और अंधविश्वास दूर किए बिना इस ओर ऐसे अनर्थों को रोका नहीं जा सकता.

15. 8. 55 — सत्यदेव विद्यालंकार

गोआ की आज़ादी का सवाल

15 अगस्त सन् 1955 को जबकि एक ओर हिन्दुस्तान में आज़ादी के दिन की ख़ुशियां मनाई जा रही थीं निहत्थे सत्याग्रहियों के जत्थे यक बाद दीगरे गोआ, दमन और दयु में तिरंगा निशान लिये हुए दाखिल हो रहे थे. 16 अगस्त की रात को रेडियो ने हमें इत्तला दी कि अहिंसक और निहत्थे सत्याग्रहियों पर पुर्तगाली सैनिकों ने गोलियाँ चलाईं और यह भी इत्तला दी कि 28 सत्याग्रही ने गोलियाँ खाकर बलिदान हुए और 44 सत्याग्रही गोलियों से घायल होकर लबे दम अस्पताल में पड़े हुए हैं. घायलोंमें औरतें और बच्चे भी हैं.

इन दर्दनाक ख़बर को पढ़कर हर हिन्दुस्तानी के ख़ून में जोश आए बिना न रहेगा. निहत्थे सत्याग्रहियों पर गोलियां चलाना, इस से ज्यादा ज़ालिमाना चीज़ और क्या हो सकती है. एक तरफ़ चीन की हकूमत है जिसने अम्रीकी उड़ाकों को, जिन्होंने चीन की सरहद के अन्दर क़दम रक्खा, गिरफ़्तार कर लिया और दूसरी तरफ़ पुर्तगाल की साम्राजवादी सरकार सत्याग्रहियों पर गोली चलाने में अभिमान महसूस करती है. अपने हिन्सक दुशमनों के साथ भी कोई ऐसा सलूक नहीं करेगा जैसा पुर्तगाल की सरकार निहत्थे भारतवासियों के साथ कर रही है.

इतिहास ने उस मनहूस दिन के वाक़ये को दर्ज किया है जब 22 मई सन् 1498 ई० को मालाबार के किनारे पुर्तगाल के रहने वाले वास्कोदिगामा का जहाज़ कालीकट के पास आकर ठैहरा. उस समय कालीकट का राजा ज़मोरिन था. वास्कोदिगामा ने दोज़ानू होकर ज़मोरिन की ख़िदमत में अपने राजा की अर्ज़ी पेश की और उस से यह प्रार्थना की कि वह उन्हें अपने राज में रहने और व्यापार करने की इजाज़त दे दे.

सन् 1500 ई० में पुर्तगालियों ने अपने व्यापार के लिये कालीकट में एक कोठी बनाई. 3 साल बाद ज़मोरिन की इजाज़त से उसकी क़िलेबन्दी कर ली और एक पुर्तगाली अफ़सर अल्बूकर्क को उसका क़िलेदार मुक़र्रर किया.

حالت اندھے نیتاؤں کے اندھے انویائی کی سی ہوئے بنا نہ رھیگی. ٹکرال کی اِس گھٹنا پر پولس کی کاریواھی کی لیپا پوتی کر دینا ھی کافی نہیں ھے' اُس کی جڑ میں جاکر لوگوں کے دلوں اور دماغوں کو بھی بدلنے کی کوشش کی جانی چاھئے. دھرم کا جھوٹا آڈمبر' مایا جال اور اندھ وشواس دور کئے بنا اِس اور سے انرتھوں کو روکا نہیں جاسکتا.

15 .8 .55 — ستیہ دیو ودیالنکار

گوآ کی آزادی کا سوال

15 اگست سن 1955 کو جب کہ ایک اور هندستان میں آزادی کے دن کی خوشیاں منائی جا رھی تھیں نہتھے ستیاگرھیوں کے جتھے یکے بعد دیگرے گوآ' دمن اور دیو میں ترنگا نشان لئے ہوئے داخل ھو رھے تھے. 16 اگست کی رات کو ریڈیو نے ھمیں اطلاع دی کہ اھنسک اور نہتھے ستیاگرھیوں پر پرتگالی سینکوں نے گولیاں چلائیں اور یہ بھی اطلاع دی کہ 28 ستیاگرھی گولیاں کھاکر بلیدان ہوئے اور 44 ستیاگرھی گولیوں سے گھائل ھوکر لب دم اسپتال میں پڑے ہوئے ھیں. گھایلوں میں عورتیں اور بچے بھی ھیں.

اس دردناک خبر کو پڑھکر هر هندستانی کے خون میں جوش آئے بنا نہ رھیگا. نہتھے ستیاگرھیوں پر گولیاں چلانا' اس سے زیادہ ظالمانہ چیز اور کیا ھوسکتی ھے. ایک طرف چین کی حکومت ھے جس نے امریکی اُڑاکوں کو' جنھوں نے چین کی سرحد کے اندر قدم رکھا' گرفتار کرلیا اور دوسری طرف پرتگال کی سامراجوادی سرکار ستیاگرھیوں پر گولی چلانے میں ابھیمان محسوس کرتی ھے. اپنے ھنسک دشمنوں کے ساتھ بھی کوئی ایسا بسلوک نہیں کریگا جیسا پرتگال کی سرکار نہتھے بھارت واسیوں کے ساتھ کر رھی ھے.

اِتہاس نے اُس منحوس دن کے واقعہ کو درج کیا ھے جب 22 مئی سن 1498ع کو ملابار کے کنارے پرتگال کے رھنے والے واسکوڈیگاما کا جہاز کالیکٹ کے پاس آکر ٹھہرا. اس سمے کالیکٹ کا راجہ زمورن تھا. واسکو دیگاما نے دو زانو ھوکر زمورن کی خدمت میں اپنے راجہ کی عرضی پیش کی اور اُس سے یہ پرارتھنا کی کہ وہ اُنھیں اپنے راج میں رھنے اور ویاپار کرنے کی اجازت دیدے.

سن 1500ع میں پرتگالیوں نے اپنے ویاپار کے لئے کالیکٹ میں ایک کوٹھی بنائی. 3 سال بعد زمورن کی اِجازت سے اس کی قلعہ‌بندی کرلی اور ایک پرتگالی افسر البوکرک کو اس کا قلعہ‌دار مقرر کیا.

ल्बूकर्क ने किनारे किनारे उत्तर की तरफ़ बढ़कर सन् 1506 ई० में गोआ पर क़ब्ज़ा कर लिया. होते होते सन् 1510 ई० में पुर्तगालियों का कालीकट के राजा के साथ कुछ झगड़ा हो गया जिसमें पुर्तगालियों ने कालीकट के राज महल को आग लगा दी और शहर को लूट लिया. सिर्फ़ 12 साल पहले इन परदेसियों पर मेहरबानी करने का भोले ज़मोरिन को यह फल मिला. इसके बाद बराबर पुर्तगाली अपनी हुकूमत बढ़ाते रहे और सौ सवा सौ साल के अन्दर वे मंगलौर, कोचिन, लङ्का, दियु, गोआ, बम्बई के टापू और नागापट्टम के मालिक बन बैठे.

पुर्तगालियों की इस समय की तिजारत की दो बातें ख़ास तौर पर जानने क़ाबिल हैं—एक यह कि उन लोगों के कुछ जहाज़ भारत के पच्छिमी और पूरबी किनारे पर बराबर घूमते रहे और किसी भी भारतीय जहाज़ को पास से निकलते हुए देख कर उसे पकड़ कर लूट लेते थे. कभी कभी मौक़ा पाकर यह किनारे की आबादियों पर भी धावा बोल देते थे, उन्हें लूट लेते थे और मौक़ा पाकर वहाँ के जवान मर्द और औरतों को ग़ुलाम बनाकर पकड़ ले जाते थे और यूरप के बाज़ारों में बेचते थे. दूसरे यह लोग अफ़्रीका और दूसरे मुल्कों से अपने जहाज़ों में ग़ुलाम भरकर लाते थे और भारत के बाज़ारों में उन्हें बेचते थे.

भारत के जिन हिस्सों पर पुर्तगालियों का क़ब्ज़ा हो गया था वहाँ की जनता के साथ शुरू दिन से ही इन लोगों का बर्ताव बेहद ज़ालिमाना था. यह लोग कट्टर क़िस्म के ईसाई थे और जनता को ज़बरदस्ती ईसाई बना लेना वे अपना मज़हबी फ़र्ज़ समझते थे. गोआ में उन्होंने अपनी ग़ैर ईसाई प्रजा को पकड़ कर और उन्हें लामज़हब कह कर मार डालने और ज़िन्दा जला देने के लिये एक अदालत क़ायम कर रक्खी थी जिसे 'इनक्वीज़ीशन' कहते थे. इसलिये आज तक गोआ की ज़्यादातर आबादी ईसाई है. अपनी हिन्दुस्तानी रिआया की बेहतरी के लिये पुर्तगालियों ने कभी कोई क़दम नहीं उठाया.

सत्तरहवीं सदी के शुरू में पुर्तगालियों की तिजारत बंगाल की ओर फैलने लगी. हालांकि वहाँ उनकी हुकूमत क़ायम नहीं हुई, लेकिन वहाँ भी वही लूट मार, वही ज़्यादतियाँ, वही ग़ुलाम और बाँदियों का व्यापार चल पड़ा. शाहजहाँ उस वक़्त दिल्ली के तख़्त पर था. उसके कानों तक पुर्तगालियों की शिकायत पहुँची. उसने फ़ौरन एक फ़ौजी दस्ता भेजा. पुर्तगाली हरा दिये गये. उनकी हुगली की कोठियाँ गिरा दी गईं. उनके जहाज़ जला डाले गये. हिन्दुस्तान में उनकी रियासत ज़ब्त करली गई और पुर्तगालियों को क़ैद करके आगरे पहुँचा दिया गया. बेहद आरज़ू मिन्नत करने के बाद और इस वादे पर कि आइन्दा वे हिन्दुस्तान की जनता के साथ कभी गुस्ताख़ी से पेश न

البوکرک نے کنارے کنارے اُتر کی طرف بڑھکر سن 1506ع میں گوآ پر قبضہ کرلیا. ہوتے ہوتے سن 1510ع میں پرتگالیوں کا کالیکٹ کے راجہ کے ساتھ کچھ جھگڑا ہوگیا جس میں پرتگالیوں نے کالیکٹ کے راج محل کو آگ لگادی اور شہر کو لوٹ لیا. صرف 12 سال پہلے اِن پردیسیوں پر مہربانی کرنے کا بھولے زمورن کو یہ پھل ملا. اس کے بعد برابر پرتگالی اپنی حکومت بڑھاتے رہے اور سو سوا سو سال کے اندر وے منگلور، کوچن، لنکا، دیو، گوآ، بمبئی کے ٹاپو اور نیگاپٹم کے مالک بن بیٹھے.

پرتگالیوں کی اِس سمے کی تجارت کی دو باتیں خاص طور پر جاننے قابل ہیں—ایک یہ کہ ان لوگوں کے کچھ جہاز بھارت کے پچھمی اور پوربی کنارے پر برابر گھومتے رہے اور کسی بھی بھارتیہ جہاز کو پاس سے نکلتے ہوئے دیکھکر اُسے پکڑ کر لوٹ لیتے تھے. کبھی کبھی موقعہ پاکر یہ کنارے کی آبادیوں پر بھی دھاوا بول دیتے تھے، اُنھیں لوٹ لیتے تھے اور موقعہ پاکر وہاں کے جوان مرد اور عورتوں کو غلام بناکر پکڑ لے جاتے تھے اور یورپ کے بازاروں میں بیچتے تھے. دوسرے یہ لوگ افریقہ اور دوسرے ملکوں سے اپنے جہازوں میں غلام بھرکر لاتے تھے اور بھارت کے بازاروں میں اُنھیں بیچتے تھے.

بھارت کے جن حصوں پر پرتگالیوں کا قبضہ ہوگیا تھا وہاں کی جنتا کے ساتھ شروع دن سے ہی اِن لوگوں کا برتاؤ بےحد ظالمانہ تھا. یہ لوگ کٹر قسم کے عیسائی تھے اور جنتا کو زبردستی عیسائی بنا لینا وے اپنا مذہبی فرض سمجھتے تھے. گوآ میں اُنھوں نے اپنی غیر عیسائی پرجا کو پکڑ کر اور اُنھیں لا-مذہب کہکر مار ڈالنے اور زندہ جلا دینے کے لئے ایک عدالت قایم کر رکھی تھی جسے 'انکوئیزیشن' کہتے تھے. اس لئے آج تک گوآ کی زیادہتر آبادی عیسائی ہے. اپنی ہندستانی رعایا کی بہتری کے لئے پرتگالیوں نے کبھی کوئی قدم نہیں اُٹھایا.

سترھویں صدی کے شروع میں پرتگالیوں کی تجارت بنگال کی اور پھیلنے لگی. حالانکہ وہاں اُن کی حکومت قایم نہیں ہوئی، لیکن وہاں بھی وہی لوٹ مار، وہی زیادتیاں، وہی غلام اور باندیوں کا ویاپار چل پڑا. شاہجہاں اُسوقت دلی کے تخت پر تھا. اس کے کانوں تک پرتگالیوں کی شکایت پہونچی. اُس نے فوراً ایک فوجی دستہ بھیجا. پرتگالی ہرا دئے گئے. اُن کی ہگلی کی کوٹھیاں گرا دی گئیں. اُن کے جہاز جلا ڈالے گئے. ہندستان میں اُن کی ریاست ضبط کرلی گئی اور پرتگالیوں کو قید کر کے آگرہ پہونچا دیا گیا. بیحد آرزو منت کرنے کے بعد اور اس وعدہ پر کہ آئندہ وے ہندستان کی جنتا کے ساتھ کبھی گستاخی سے پیش نہ

बादशाह शाहजहाँ ने उन्हें गोआ, दमन और दयु में बने रहने की इजाजत देदी. भारत के उस उदार बादशाह की उस भलमंसाहत का हिन्दुस्तान की जनता को आज यह बदला मिल रहा है.

भारत से पुर्तगालियों की सत्ता के मिट जाने का सबब बताते हुए एक पुर्तगाली लेखक लिखता है—

"पुर्तगाल निवासियों ने एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में सलीब (क्रास) लेकर भारत में प्रवेश किया. लेकिन जब उन्हें यहाँ बहुत ज्यादा सोना नजर आया तो उन्होंने सलीब को अलग रखकर उस हाथ से अपनी जेबें भरनी शुरू कर दीं और जब उनकी जेबें इतनी भारी हो गई कि वे उन्हें एक हाथ से न संभाल सके तो उन्होंने दूसरे हाथ से भी तलवार फेंक दी."

लेकिन आज ऐसा महसूस होता है कि उन्होंने अपनी वह जंग लगी तलवार फिर से अपने हाथ में ले ली है. लेकिन हम उस सालाजार की सरकार को यक़ीन दिलाना चाहते हैं कि शाहजहाँ के वक़्त से जमना का जाने कितना पानी समन्दर की तरफ़ जा चुका. आज 1955 में हिन्दुस्तान की आजाद क़ौम इस बात को कभी ग्वारा नहीं कर सकती कि पुर्तगाल की वहशी और हैवानी हुकूमत यहाँ एक दिन भी ज्यादा ठहरे. सम्राट शाहजहाँ ने अपनी फ़ौलादी हुकूमत से पुर्तगालियों की ताक़त को ख़त्म किया. हम आज अहिंसा और सत्याग्रह से उन नतीजों को दोहराना चाहते हैं. भोले शाहजहाँ को क्या मालूम था कि उसके रहम की क़ीमत आज उसके देश वालों को अपना ख़ून बहा कर चुकानी पड़ेगी.

महात्मा गाँधी ने सन् 1946 में गोआ की आजादी की हिमायत में कहा था कि गोआ जल्द से जल्द आजाद हिन्दुस्तान का हिस्सा बनेगा. वह हिन्दुस्तान का एक जुज है और इसका अलग रहना, हमारी ग़ैरियत को एक तक़ाजा है.

हमें अफ़सोस इस बात का है कि इंगलिस्तान की सरकार पुर्तगालियों की हिमायत में ब्यान शाया करने में शर्म महसूस नहीं करती. वे पुर्तगालियों के साथ अपने अहदनामे की हमें याद दिलाते हैं और चाहते हैं कि उस सुलहनामे की शर्तों को मानते हुए हम अपने मुल्क के एक हिस्से पर पुर्तगालियों की हुकूमत क़ायम रहने दें. वजीर आजम नेहरू ने हिक़ारत के साथ इससे इन्कार कर दिया. पुर्तगालियों के धर्म के बहाने का पोप ने पर्दा फ़ाश कर दिया. सुलह की आज कोई सूरत नहीं सिवाय इसके कि पुर्तगाली गोआ ख़ाली करें.

16 अगस्त को पार्लिमेंट में अपना ब्यान देते हुए पंडित नेहरू ने फ़रमाया कि पुर्तगाल में कुछ ऐसी ताक़तें काम कर रही हैं जो यह चाहती हैं कि गोआ ख़ाली कर दिया जाये. उन्हें विश्वास है कि यह ताक़तें जोर पकड़ेंगी और बहुत जल्द पुर्तगाली गोआ ख़ाली कर देंगे. अगर ऐसा होता है तो ठीक है वर्ना हिन्दुस्तान की जनता ने यह फ़ैसला कर लिया है कि वह अहिंसा और सत्याग्रह के जरिये पुर्तगालियों को गोआ से निकाल कर ही दम लेगी.

17-8-55 —वि. ना. पांडे

ہی کے شاہجہاں نے اُنھیں گوا دمن اور دیو میں بنے رہنے کی اجازت دیدی ۔ بھارت کے اس اُدار بادشاہ کی اُس بھلمنساہت کا ہندستان کی جنتا کو آج یہ بدلہ مل رہا ہے ۔

بھارت سے پرتگالیوں کی ستا کے مٹ جانے کا سبب بتاتے ہوئے ایک پرتگالی لیکھک لکھتا ہے—

"پرتگال نواسیوں نے ایک ہاتھ میں تلوار اور دوسرے ہاتھ میں سلیب (کراس) لیکر بھارت میں پرویش کیا ۔ لیکن جب انھیں یہاں بہت زیادہ سونا نظر آیا تو اُنھوں نے سلیب کو الگ رکھ کر اُس ہاتھ سے اپنی جیبیں بھرنی شروع کردیں اور جب اُن کی جیبیں اتنی بھاری ہو گئیں کہ وے اُنھیں ایک ہاتھ سے نہ سنبھال سکے تو اُنھوں نے دوسرے ہاتھ سے بھی تلوار پھینک دی۔"

لیکن آج ایسا محسوس ہوتا ہے کہ اُنھوں نے اپنی وہ زنگ لگی تلوار پھر سے اپنے ہاتھ میں لے لی ہے ۔ لیکن ہم اُس سالازار کی سرکار کو یقین دلانا چاہتے ہیں کہ شاہجہاں کے وقت سے جمنا کا جانے کتنا پانی سمندر کی طرف جا چکا ۔ آج 1955 میں ہندستان کی آزاد قوم اس بات کو کبھی گوارا نہیں کر سکتی کہ پرتگال کی وحشی اور حیوانی حکومت یہاں ایک دن بھی زیادہ ٹھہرے ۔ سمراٹ شاہجہاں نے اپنی فولادی حکومت سے پرتگالیوں کی طاقت کو ختم کیا ۔ ہم آج اہنسا اور ستیاگرہ سے اُن نتیجوں کو دہرانا چاہتے ہیں ۔ بھولے شاہجہاں کو کیا معلوم تھا کہ اس کے رحم کی قیمت آج اس کے دیش والوں کو اپنا خون بہا کر چکانی پڑیگی ۔

مہاتما گاندھی نے سن 1946 میں گوا کی آزادی کی حمایت میں کہا تھا کہ گوا جلد سے جلد آزاد ہندستان کا حصہ بنے گا ۔ وہ ہندستان کا ایک جز ہے اور اس کا الگ رہنا ہماری غیریت کو ایک تقاضہ ہے ۔

ہمیں افسوس اِس بات کا ہے کہ انگلستان کی سرکار پرتگالیوں کی حمایت میں بیان شائع کرنے میں شرم محسوس نہیں کرتی ۔ وے پرتگالیوں کے ساتھ اپنے عہدنامہ کی ہمیں یاد دلاتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ اس صلحنامہ کی شرطوں کو مانتے ہوئے ہم اپنے ملک کے ایک حصہ پر پرتگالیوں کی حکومت قایم رہنے دیں ۔ وزیرِاعظم نہرو نے حقارت کے ساتھ اس سے اِنکار کیا ۔ پرتگالیوں کے دھرم کے بہانے کا پوپ نے پردہ فاش کردیا ۔ صلح کی آج کوئی صورت نہیں سوائے اس کے کہ پرتگالی گوا خالی کریں ۔

16 اگست کو پارلیمنٹ میں اپنا بیان دیتے ہوئے پنڈت نہرو نے یہ فرمایا کہ پرتگال میں کچھ ایسی طاقتیں کام کر رہی ہیں جو یہ چاہتی ہیں کہ گوا خالی کر دیا جائے ۔ اُنھیں وشواس ہے کہ یہ طاقتیں زور پکڑینگی اور بہت جلد پرتگالی گوا خالی کر دیں گے ۔ اگر ایسا ہوتا ہے تو ٹھیک ہے ورنہ ہندستان کی جنتا نے یہ فیصلہ کر لیا ہے کہ وہ اہنسا اور ستیاگرہ کے ذریعہ پرتگالیوں کو گوا سے نکال کر ہی دم لیگی ۔

—وی. نا. پانڈے 17.8.55

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख — **اس نمبر کے خاص لیکھ**

...नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद  ...ستانی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

सितम्बर 1955 ستمبر

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

Can be had from

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

नया हिन्द

نیا ہند

जिल्द 20 جلد नम्बर 3 نمبر

सितम्बर 1955 ستمبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145، مٹھی گنج، الہ آباد

सितम्बर 1955 ستمبر

दुनिया की तालीम और तालीम देने वाले

डा० भगवानदास

पहले के लेखों में हमने सब धर्मों की बुनियादी एकता के बारे में कुछ मोटी मोटी पर बुनियादी बातों की चर्चा की है. अब हम यह देखना चाहते हैं कि आजकल के विद्वानों, साइंसदानों और तालीम और तालीम देने वालों के साथ इसका क्या सम्बन्ध है.

बच्चों की तालीम हमारे जीवन का बीज और उसकी जड़ होती है. जिसे हम सभ्यता कहते हैं वह इस जीवन का फूल और फल है. बोने वाला यदि अच्छे बीज बोएगा तो फ़सल काटने वाला अच्छे और मीठे फल पाएगा. वह अगर कड़वे और जहरीले बीज बोएगा तो काटने वालों को फल भी कड़वे और जहरीले मिलेंगे. हमारे बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापक बीज बोने वाले हैं. वही मानव सभ्यता को बनाते हैं. वह हमारे बच्चों के दिलों और दिमाग़ों में अच्छे बीज बो सकें इसके लिए आवश्यक है कि वह ख़ुद सच्चे अर्थों में उस्ताद यानी ब्राह्मण हों, सच्चे मौलवी हों, सच्चे रब्बी हों. सच्चा ब्राह्मण वह जो ब्रह्म यानी ईश्वर में रहता हो. सच्चा मौलवी वह जो अपने मौला अल्लाह का सच्चा बंदा हो. यहूदी अपने पुरोहितों को रब्बी कहते हैं. सच्चा रब्बी वही है जो रब्ब यानी ख़ुदा के हुकुम को समझे और उसके अनुसार चले. दूसरे धर्मों में भी ब्राह्मणों और मौलवियों के लिए जो शब्द आए हैं उनके भी इसी तरह के अर्थ हैं. सच्चे ब्राह्मण को ईश्वर अल्लाह का मिशनरी या प्रचारक होना चाहिए, शैतान का तनख्वाहदार नौकर नहीं होना चाहिए, क्योंकि शैतान अल्लाह का दुश्मन है.

यदि सन् 1914-18 के पहले महायुद्ध से पहले योरप के अध्यापकों, साइंसदानों, पादरियों और विद्वानों ने अपना कर्तव्य पालन किया होता और अपने अपने देश के बच्चों को नेकी की तालीम दी होती तो उस महायुद्ध का अवसर ही न आता. यदि उस महायुद्ध के बाद भी योरप के इन ब्राह्मणों ने अपने अपने देशों के क्षत्रियों यानी जंगजू शासकों और वैश्यों यानी धन लोलुप उद्योगपतियों के हाथ अपनी आत्माओं को न बेचा होता और विद्या, धर्म और साइंस का इस तरह दुरुपयोग होने न दिया होता, यदि वे मिलकर खड़े हो गए होते और अपने आत्मबल, धर्मबल और सत्यबल से उन्होंने अपने अपने यहाँ के बहके हुए क्षत्रियों और वैश्यों की शैतानियत का मुक़ाबला किया होता तो हमारे अंदर का शैतान ज़रूर हार जाता. यदि सब देशों में

دنیا کی تعلیم اور تعلیم دینے والے

ڈاکٹر بھگوان داس

پہلے کے لیکھوں میں ہم نے سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کے بارے میں کچھ موٹی موٹی پر بنیادی باتوں کی چرچا کی ہے ۔ اب ہم یہ دیکھنا چاہتے ہیں کہ آجکل کے ودوانوں، سائنسدانوں اور تعلیم اور تعلیم دینے والوں کے ساتھ اِس کا کیا سمبندھ ہے ۔

بچوں کی تعلیم ہمارے جیون کا بیج اور اُس کی جڑ ہوتی ہے ۔ جسے ہم سبھیتا کہتے ہیں وہ اِس جیون کا پھول اور پھل ہے ۔ بونے والا یدی اچھے بیج بوئےگا تو فصل کاٹنے والا اچھے اور میٹھے پھل پائیگا ۔ وہ اگر کڑوے اور زہریلے بیج بوئےگا تو کاٹنے والوں کو پھل بھی کڑوے اور زہریلے ملینگے ۔ ہمارے بچوں کو پڑھانے والے ادھیاپک بیج بونے والے ہیں ۔ وہی مانو سبھیتا کو بناتے ہیں ۔ وہ ہمارے بچوں کے دلوں اور دماغوں میں اچھے بیج بو سکیں اِس کے لئے آوشیک ہے کہ وہ خود سچے ارتھوں میں اُستاد یعنی براہمن ہوں، سچے مولوی ہوں، سچے ربی ہوں ۔ سچا براہمن وہ جو برہم یعنی ایشور میں رہتا ہو ۔ سچا مولوی وہ جو اپنے مولا اللہ کا سچا بندہ ہو ۔ یہودی اپنے پروہتوں کو ربی کہتے ہیں ۔ سچا ربی وہی ہے جو رب یعنی خدا کے حکم کو سمجھے اور اُس کے انوسار چلے ۔ دوسرے دھرموں میں بھی براہمنوں اور مولویوں کے لئے جو شبد آئے ہیں اُن کے بھی اِسی طرح کے ارتھ ہیں ۔ سچے براہمن کو ایشور اللہ کا مشنری یا پرچارک ہونا چاہئے، شیطان کا تنخواہ دار نوکر نہیں ہونا چاہئے، کیونکہ شیطان اللہ کا دشمن ہے ۔

یدی سن 1914-18 کے پہلے مہایدھ سے پہلے یورپ کے ادھیاپکوں، سائنسدانوں، پادریوں اور ودوانوں نے اپنا کرتویہ پالن کیا ہوتا اور اپنے اپنے دیش کے بچوں کو نیکی کی تعلیم دی ہوتی تو اُس مہایدھ کا اوسر ہی نہ آتا ۔ یدی اُس مہایدھ کے بعد بھی یورپ کے اِن براہمنوں نے اپنے اپنے دیشوں کے چھتریوں یعنی جنگجو شاسکوں اور ویشیوں یعنی دھن لولپ اُدیوگ پتیوں کے ہاتھ اپنی آتماؤں کو نہ بیچا ہوتا اور ودیا، دھرم اور سائنس کا اِس طرح دورپیوگ ہونے نہ دیا ہوتا، یدی وے ملکر کھڑے ہوگئے ہوتے اور اپنے آتم بل، دھرم بل اور ستیہ بل سے اُنہوں نے اپنے اپنے یہاں کے بہکے ہوئے چھتریوں اور ویشیوں کی شیطانیت کا مقابلہ کیا ہوتا تو ہمارے اندر کا شیطان ضرور ہار جاتا ۔ یدی سب دیشوں میں

इस तरह के सब लोग मिलकर युद्ध के खिलाफ़ खड़े हो गए होते और अपनी आत्मा की आवाज पर युद्ध में किसी तरह का भी सहयोग देने से साफ़ इंकार करते तो दुनिया दूसरे महायुद्ध के भयंकर क़त्ले आम से बच गई होती. पर इसके खिलाफ़ थोड़े से मुबारिक और सराहनीय अपवादों को छोड़ कर लगभग सब देशों में विद्वानों, अध्यापकों, पादरियों और साइंसदानों ने प्रेम के खिलाफ़ नफ़रत का, शांति के खिलाफ़ युद्ध का और ईश्वर के खिलाफ़ शैतान का साथ दिया.

इन सराहनीय अपवादों में एक खास नाम श्री बरट्रेंड-रसल का है. एक सच्चे साइंसदां और दार्शनिक की तरह उन्होंने जेल जाना स्वीकार किया पर युद्ध में सहयोग देना या उसका समर्थन करना स्वीकार नहीं किया. दुनिया के सबसे बड़े साइंसदां डा० आइंसटीन ने भी सन् 1932 में एक युद्ध विरोधी एसोसियेशन क़ायम की. अपनी सच्चाई के कारण उन्हें अपने देश से जिलावतन होना पड़ा. प्रो. एच. ई. आर्मस्ट्रोंग ने "नेचर" नाम की पत्रिका में, दुनिया के साइंसदानों की सोई हुई आत्मा को जगाने के लिए लिखा था :—

"सौ बरस की साइंस की उन्नति का यह नतीजा हुआ है कि जिन बातों का असली महत्व कुछ नहीं है उनमें हमारी जानकारी ग़ज़ब की बढ़ गई है. पर इन सौ बरस ने हमें उन चीजों की बाबत बहुत कम जानकारी दी है जिन से हमारा सबका सचमुच पेट भरे और हम मिलकर शांति के साथ रह सकें और एक दूसरे को सह सकें. एक दूसरे को देखकर ख़ुश होना और एक सच्चे ईसाई की तरह सबके साथ प्रेम और मित्रता निबाहना तो और भी दूर की बात है.........भविष्य में साइंस के मैदान में काम करने वाला कोई भी आदमी तब ही साइंस का सच्चा सेवक कहला सकेगा जब वह सारे मानव समाज की सेवा के ज़रिए सबका भला करके अपने वजूद को सार्थक करे."

सच्चे ब्राह्मण की यही तारीफ़ है. ब्राह्मण, अध्यापक, उस्ताद, मौलवी या साइंसदां केवल अपने लोगों की दिमाग़ी जानकारी को ही नहीं बढ़ाता, वह उनके सदाचार को, उनके आपसी सम्बन्धों को, उनके घरेलू और शहरी जीवन को और उनकी आत्मा को भी ऊँचा ले जाता है, जीवन के हर काम और हर महकमे में वह लोगों की सच्ची रहनुमाई करता है.

एडिनबरा के प्रो. क्रू ने दिसम्बर सन् 1931 में 'साइंस और मानव समाज' पर बोलते हुए कहा था :—

"आदमी के अंदर के लोभ और लालच के कारण साइंस का दुरुपयोग करके उससे आदमी की गंदी और

اِس طرح کے سب لوگ ملکر یدھ کے خلاف کھڑے ہوگئے ہوتے اور اپنی آتما کی آواز پر یدھ میں کسی طرح کا بھی سہیوگ دینے سے صاف اِنکار کرتے تو دنیا دوسرے مہایدھ کے بھینکر قتل عام سے بچ گئی ہوتی۔ پر اِس کے خلاف تھوڑے سے مبارک اور سراہنیہ اپوادوں کو چھوڑکر لگ بھگ سب دیشوں میں ودوانوں، ادھیاپکوں، پادریوں اور سائنسدانوں نے پریم کے خلاف نفرت کا، شانتی کے خلاف یدھ کا اور ایشور کے خلاف شیطان کا ساتھ دیا۔

اِن سراہنیہ اپوادوں میں ایک خاص نام شری برٹرینڈ رسل کا ہے۔ ایک سچے سائنسداں اور دارشنک کی طرح انہوں نے جیل جانا سوئیکار کیا پر یدھ میں سہیوگ دینا یا اُس کا سمرتھن کرنا سوئیکار نہیں کیا۔ دنیا کے سب سے بڑے سائنسداں ڈاکٹر آئنسٹائن نے بھی سن 1932 میں ایک یدھ ورودھی ایسوسیئیشن قایم کی۔ اپنی سچائی کے کارن اُنھیں اپنے دیش سے جلاوطن ہونا پڑا۔ پروفیسر ایچ۔ ای۔ آرمسٹرانگ نے "نیچر" نام کی پتریکا میں، دنیا کے سائنسدانوں کی سوئی ہوئی آتما کو جگانے کے لئے لکھا تھا :—

"سو برس کی سائنس کی اُنتی کا یہ نتیجہ ہوا ہے کہ جن باتوں کا اصلی مہتو کچھ نہیں ہے اُن میں ہماری جانکاری غضب کی بڑھ گئی ہے۔ پر اِن سو برس نے ہمیں اُن چیزوں کی بابت بہت کم جانکاری دی ہے جن سے ہمارا سب کا سچ مچ پیٹ بھرے اور ہم ملکر شانتی کے ساتھ رہ سکیں اور ایک دوسرے کو سہہ سکیں۔ ایک دوسرے کو دیکھکر خوش ہونا اور ایک سچے عیسائی کی طرح سب کے ساتھ پریم اور مترتا نباھنا تو اور بھی دور کی بات ہے......بھوشیہ میں سائنس کے میدان میں کام کرنے والا کوئی بھی آدمی تب ہی سائنس کا سچا سیوک کہلا سکیگا جب وہ سارے مانو سماج کی سیوا کے ذریعہ سب کا بھلا کرکے اپنے وجود کو سارتھک کرے۔"

سچے براھمن کی یہی تعریف ہے۔ براھمن، ادھیاپک، اُستاد، مولوی یا سائنسداں کیول اپنے لوگوں کی دماغی جانکاری کو ہی نہیں بڑھاتا، وہ اُن کے سداچار کو، اُن کے آپسی سمبندھوں کو، اُن کے گھریلو اور شہری جیون کو اور اُن کی آتما کو بھی اُونچا لیجاتا ہے، جیون کے ہر کام اور ہر محکمہ میں وہ لوگوں کی سچی رہنمائی کرتا ہے۔

ایڈنبرا کے پروفیسر کرو نے دسمبر سن 1931 میں 'سائنس اور مانو سماج' پر بولتے ہوئے کہا تھا :—

"آدمی کے اندر کے لوبھ اور لالچ کے کارن سائنس دورپیوگ کرکے اُس سے آدمی کی گندی اور

बुरी इच्छाओं को पूरा करने का काम लिया जा रहा है........आजकल की सबसे बड़ी समस्या यह नहीं है कि आदमी आदमी में माद्दी चीजों का बैठ बिठाव या बटवारा कैसे किया जाय, बल्कि सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोगों की आत्माओं के बीच में बैठ बिठाव कैसे किया जाय. दुनिया में इस समय इतना ज्ञान मौजूद है और इतनी शक्ति भी है कि जिससे सारे मानव समाज को फिर से ठीक रूप दिया जा सकता है. पर यह ठीक रूप देने की इच्छा अभी हममें नहीं है. हमारे सामने कोई ऐसा आदर्श नहीं है जिसकी तरफ़ हम सब चलें. जिंदगी को कैसे क़ायम रखा जावे इसके तरीक़ों को तो हम थोड़ा बहुत जानते हैं, पर ज़िन्दगी कैसे बसर की जावे या किस बात के लिए जिया जावे यह हम नहीं जानते. साइंस आजकल आदमी की धन लोलुपता और शक्ति लोलुपता की ग़ुलाम बन गई है. वह अब ज़ालिमों के हाथ का एक हथियार है. हमें फिर से यह पता लगाना होगा कि मनुष्य जाति का असली भला किस बात में है और फिर यह देखना होगा कि साइंस से हमें जो शक्ति मिलती है वह उसी मतलब को पूरा करने के लिए काम में लाई जावे. ज्ञान ने प्रेम से अलग होकर दुनिया में नफ़रत और दुख की आग भड़का दी है, अब हमें एक नई नैतिक यानी इख़लाक़ी निगाह की ज़रूरत है. यह निगाह हमें कहाँ से मिले ?"

जो 'निगाह' प्रोफ़ेसर क्रू चाह रहे हैं वह हमें केवल उस व्यापक यानी आलमगीर वैज्ञानिक धर्म से ही मिल सकती है जो दुनिया के सब धर्मों की जान है, उसी से हमें यह पता चल सकता है कि 'सारे मानव समाज का भला किस बात में है', 'हम किस चीज़ के लिए ज़िंदा रहें', 'किस आदर्श की तरफ़ बढ़ें', 'कैसे जीएँ', 'जीवन का असली मतलब और ग़रज़ क्या है' और साइंस के मैदान में काम करने वाला समाज की सेवा करके अपने जीवन को किस तरह सार्थक करे. इसके लिए एक ठीक योजना के साथ समाज का फिर से संगठन करना ज़रूरी है. हम में 'नेक इरादों या इच्छाओं की कमी' इसलिए है क्योंकि हर नई पीढ़ी के लोग धन लोलपता और शह्वत परस्ती में ही पैदा होते हैं और उसी में पलते और तालीम पाते हैं. उन्हें आत्मबल और मानव प्रेम की तालीम दी ही नहीं जाती. हमारी सारी तालीम बिलकुल ग़लत और उलटी है. उसी से हमारे जीवन के सब सोते ज़हरीले हो जाते हैं. यदि हम बाहरी युद्ध को मिटाना चाहते हैं तो पहले हमें अपनी गिरी हुई प्रवृत्तियों, अपने अन्दर की शैतानियत से युद्ध शुरू करना होगा. उसके बाद हम बाहर की शक्तियों पर क़ाबू पा सकेंगे. यह रास्ता बहुत ही ठीक और अमली रास्ता है. यही सच्चा रास्ता है. बच्चों की ठीक ठीक तालीम ही सारी मानव

بری اِچھاؤں کو پورا کرنے کا کام لیا جارہا ھے......آجکل کی سب سے بڑی سمسیا یہ نہیں ھے کہ آدمی آدمی میں مادی چیزوں کا بیٹھ بٹھاؤ یا بٹوارہ کیسے کیا جائے' بلکہ سب سے بڑی سمسیا یہ ھے کہ لوگوں کی آتماؤں کے بیچ میں بیٹھ بٹھاؤ کیسے کیا جائے. دنیا میں اِس سمے اتنا گیان موجود ھے اور اِتنی شکتی بھی ھے کہ جس سے سارے مانو سماج کو پھر سے ٹھیک روپ دیا جاسکتا ھے . پر یہ ٹھیک روپ دینے کی اِچھا ابھی ہم میں نہیں ھے . ھمارے سامنے کوئی ایسا آدرش نہیں ھے جس کی طرف ہم سب چلیں . زندگی کو کیسے قایم رکھا جاوے اِس کے طریقوں کو تو ہم تھوڑا بہت جانتے ھیں' پر زندگی کیسے بسر کی جاوے یا کس بات کے لئے جیا جاوے یہ ھم نہیں جانتے. سائنس آجکل آدمی کی دھن لولپتا اور شکتی لولپتا کی غلام بن گئی ھے . وہ اب ظالموں کے ھاتھ کا ایک ھتھیار ھے . ھمیں پھر سے یہ پتہ لگانا ھوگا کہ منشیہ جاتی کا اصلی بھلا کس بات میں ھے اور پھر یہ دیکھنا ھوگا کہ سائنس سے ھمیں جو شکتی ملتی ھے وہ اُسی مطلب کو پورا کرنے کے لئے کام میں لائی جاوے . گیان نے پریم سے الگ ھوکر دنیا میں نفرت اور دکھ کی آگ بھڑکا دی ھے' اب ھمیں ایک نئی نیتک یعنی اِخلاقی نگاہ کی ضرورت ھے . یہ نگاہ ھمیں کہاں سے ملے؟"

جو'نگاہ' پروفیسر کرو چاہ رھے ھیں وہ ھمیں کیول اُس وباپک یعنی عالمگیر ویگیانک دھرم سے ھی مل سکتی ھے جو دنیا کے سب دھرموں کی جان ھے' اُسی سے ھمیں یہ پتہ چل سکتا ھے کہ 'سارے مانو سماج کا بھلا کس بات میں ھے' 'ھم کس چیز کے لئے زندہ رھیں' 'کس آدرش کی طرف بڑھیں' 'کیسے جیئں' 'جیون کا اصلی مطلب اور غرض کیا ھے' اور سائنس کے میدان میں کام کرنے والا سماج کی سیوا کر کے اپنے جیون کو کس طرح سارتھک کرے . اِس کے لئے ایک ٹھیک یوجنا کے ساتھ سماج کا پھر سے سنگٹھن کرنا ضروری ھے . ھم میں 'نیک اِرادوں یا اِچھاؤں کی کمی' اِس لئے ھے کیونکہ ھر نئی پیڑھی کے لوگ دھن لولپتا اور شھوت پرستی میں ھی پیدا ھوتے ھیں اور اُسی میں پلتے اور تعلیم پاتے ھیں . اُنھیں آتم بل اور مانو پریم کی تعلیم دی ھی نہیں جاتی . ھماری ساری تعلیم بالکل غلط اور اُلٹی ھے . اُسی سے ھمارے جیون کے سب سوتے زھریلے ھو جاتے ھیں . یدی ھم باھری یدھ کو مٹانا چاھتے ھیں تو پہلے ھمیں اپنی گری ھوئی پرورتیوں' اپنے اندر کی شیطانیت سے یدھ شروع کرنا ھوگا . اس کے بعد ھم باھر کی شکتیوں پر قابو پا سکیں گے. یہ راستہ بہت ھی ٹھیک اور عملی راستہ ھے. یہی سچا راستہ ھے. بچوں کی ٹھیک ٹھیک تعلیم ھی ساری مانو

आदमी के दिलों और दिमाग़ों को मोड़ कर ठीक रास्ते पर लेजा सकती है.

पिछले पच्चीस तीस बरस में दुनिया के अन्दर शान्ति और अमन बनाए रखने के लिए कई तहरीकें चल चुकी हैं. इनमें एक खास तहरीक "वर्ल्ड फ़ेलोशिप ऑफ़ फ़ेथ्स" है जो सन् 1933 में शिकागो (अमरीका) में शुरू हुई. वर्ल्ड फ़ेलोशिप ऑफ़ फ़ेथ्स के मानी हैं—दुनिया के सब धर्मों का मिलाप. शिकागो में इस तहरीक की जो पहली सभा हुई थी उसकी बाबत कहा गया कि :—"सब धर्मों, नसलों और देशों के लोग इस सभा में आए थे......उन्होंने मिलकर इंसान की आजकल की सब समस्याओं के रूहानी हल खोजने की कोशिश की—वे समस्याएँ यह हैं; जंग, मतभेद के कारण एक दूसरे को तकलीफ़ें पहुँचाना, पक्षपात, एक तरफ़ धन के अंबार और दूसरी तरफ़ ग़रीबी, बेरोज़गारी, राष्ट्रों राष्ट्रों में टक्करें, जहालत, नफ़रतें और एक दूसरे से डर."

इससे बहुत पहले सन् 1875 में न्यूयार्क में थियोसोफ़ीकल सोसाइटी क़ायम हुई थी. इस सोसाइटी के तीन मक़सद थे और हैं. यह तीनों, इसमें कोई शक नहीं, सराहनीय है. वे यह हैं—(1) नसल, धम, मर्द, औरत, जात और रंग के भेदभावों से ऊपर उठकर सारे मानव समाज के व्यापक भाईचारे का एक केन्द्र बनाना. (2) अलग अलग धर्मों, अलग अलग दर्शन शास्त्रों, और साइंस इन सब को मिलाकर पढ़ना और पढ़ाना. (3) क़ुदरत के उन क़ानूनों का जो अभी तक समझ में नहीं आए और आदमी के अन्दर की छिपी हुई शक्तियों का पता लगाना. इन तीनों बातों की ग़रज़ वही है यानी दुनिया की शान्ति और सब की ख़ुशहाली. थियोसोफ़ीकल सोसाइटी का सदर दफ़्तर मद्रास के पास अडियार में है और उसकी शाख़ें दुनिया के पचास से ऊपर देशों में क़ायम हैं.

बहुत से देशों के बड़े बड़े शहरों में 'पार्लिमेंट्स ऑफ़ रिलिजन्स' यानी धर्मों की पार्लिमेंटें हो चुकी हैं. इनमें से भी पहली 1893 में शिकागो ही में हुई थी. इन सबका मक़सद भी शान्ति क़ायम करना था.

सन् 1920 में लीग आफ़ नेशन्स क़ायम हुई जिसका मक़सद था—"राष्ट्रों राष्ट्रों के बीच सहयोग को बढ़ाना और सब के बीच अमन क़ायम करना."

बहुत से देशों में साइंसदानों की एसोसिएशनें भी बन चुकी हैं. यह एसोसियेशन अब साइंस के 'इंसानी' पहलू पर यानी समाजी या इख़लाक़ी पहलू पर अधिक ध्यान देने लगी हैं यानी इस बात पर कि साइंस का मनुष्य के मिले जुले समाजी जीवन के साथ क्या संबंध है. इस तरह के नेक साइंसदानों के लेखों में यह विचार अब आम तौर पर प्रगट किया जाता है कि साइंस अब इतनी तेजी से आगे

انی کے دلوں اور دماغوں کو موڑ کر ٹھیک راستے پر لیجا
تی ھے .

پچھلے پچیس تیس برس میں دنیا کے اندر شانتی اور
ن بنائے رکھنے کے لئے کئی تحریکیں چل چکی ھیں . انمیں
ب خاص تحریک "ورلڈ فیلوشپ آف فیتھس" ھے جو
ن 1933 میں شکاگو (امریکہ) میں شروع ھوئی . ورلڈ
وشپ آف فیتھس کے معنی ھیں—دنیا کے سب دھرموں
ملاپ . شکاگو میں اِس تحریک کی جو پہلی سبھا ھوئی تھی
ں کی بابت کہا گیا کہ:—"سب دھرموں' نسلوں اور دیشوں
لوگ اِس سبھا میں آئے تھے... انھوں نے ملکر اِنسان کی
کل کی سب سمسیاؤں کے روحانی حل کھوجنے کی کوشش کی—
سمسیائیں یہ ھیں؛ جنگ' مت بھید کے کارن ایک دوسرے کو
یفیں پہونچانا' پکشپات' ایک طرف دھن کے انبار اور
سری طرف غریبی' بے روز گاری' راشٹروں راشٹروں میں ٹکریں'
الت' نفرتیں اور ایک دوسرے سے ڈر ."

اِس سے بہت پہلے سن 1875 میں نیویارک میں تھیوسوفیکل
سائٹی قایم ھوئی تھی . اِس سوسائٹی کے تین مقصد
اور ھیں . یہ تینوں' اِسمیں کوئی شک نہیں' سراھنیہ
ں . وے یہ ھیں—(1) نسل' دھرم' مرد' عورت' جات
رنگ کے بھید بھاؤں سے اوپر اُٹھکر سارے مانو سماج کے
یک بھائی چارے کا ایک کیندر بنانا . (2) الگ الگ
رموں' الگ الگ درشن شاستروں' اور سائنس اِن سب
ملا کر پڑھنا اور پڑھانا . (3) قدرت کے اُن قانونوں کا
ابھی تک سمجھ میں نہیں آئے اور آدمی کے اندر کی
ی ھوئی شکتیوں کا پتہ لگانا . اِس تینوں باتوں کی غرض
ھے یعنی دنیا کی شانتی اور سب کی خوشحالی .
سوفیکل سوسائٹی کا صدر دفتر مدراس کے پاس اڈیار میں
اور اُس کی شاخیں دنیا کے پچاس سے اوپر دیشوں
قایم ھیں .

بہت سے دیشوں کے بڑے بڑے شہروں میں 'پارلیمینٹس آف
جنس' یعنی دھرموں کی پارلیمنٹیں ھو چکی ھیں . اِنمیں
بھی پہلی 1893 میں شکاگو ھی میں ھوئی تھی . اِن سب
مقصد بھی شانتی قایم کرنا تھا .

سن 1920 میں لیگ آف نیشنس قایم ھوئی جس کا
د تھا—"راشٹروں راشٹروں کے بیچ سہیوگ کو بڑھانا اور
کے بیچ امن قایم کرنا ."

بہت سے دیشوں میں سائنسدانوں کی ایسوسیئشنیں بھی
چکی ھیں . یہ ایسوسیئیشن اب سائنس کے 'اِنسانی' پہلو
ملی سماجی یا اِخلاقی پہلو پر ادھک دھیان دینے لگی
یعنی اِس بات پر کہ سائنس کا منشیہ کے ملے جلے سماجی
ن کے ساتھ کیا سمبندھ ھے . اِس طرح کے نیک
سدانوں کے لیکھوں میں یہ وچار اب عام طور پر
ٹ کیا جاتا ھے کہ سائنس اب اِتنی تیزی سے آگے

बढ़ गई कि सदाचार का और साइंस का साथ छूट गया. हालैंड के शहर डेल्फ़्ट में एक इन्टरनेशनल कौंसिल आफ़ साइंटिफिक युनियन्स है जिसकी एक खास कमेटी साइंस और मानव समाज के परस्पर संबंध पर है.

यह सब कोशिशें इसलिये फ़जूल जा रही हैं क्योंकि साइंसदां अभी तक इस बात को नहीं समझ रहे हैं कि मादूदी साइंस की बड़ी से बड़ी और अजीब से अजीब ईजादें भी बुराई की बाढ़ और उसके अन्यायों को बढ़ाती ही रहेंगी. बुराई की यह बाढ़ तभी रुक सकती है जब हम कोई ऐसा ढंग निकालें जिससे दुनिया के सब लोग इस पुराने सुनहरे असूल पर अमल करने लगें कि हर आदमी हर दूसरे आदमी के साथ वैसा ही बरताव करे जैसा वह चाहता है कि दूसरे उसके साथ करें. इसके लिए मानव समाज के संगठन की एक ऐसी व्यापक योजना बनानी होगी जिसके अनुसार हर आदमी साइंस की नई से नई ईजादों को सारी मनुष्य जाति के भले के लिए काम में लाने लगे. कोई इन ईजादों को किसी एक राष्ट्र के फ़ायदे के लिए या उस राष्ट्र के अन्दर भी किसी एक गिरोह के लाभ के लिए काम में न ला सके. हमारा समाज संगठन ऐसा होना चाहिए जिसमें हर आदमी को इसके लिए अपने अंदर से स्वाभाविक प्रेरना मिले.

बरसों से दुनिया की हर "बड़ी क़ौम' पागलों की तरह अपनी फ़ौजें और अपने हथियार बढ़ाती जा रही है और साथ ही शान्ति और अमन की बात करती है. सन 1939 में दुनिया की उन फ़ौजों की तादाद जो हर समय युद्ध के लिए तैयार रहती थीं साढ़े पांच करोड़ से ऊपर थी. इन पर ख़र्च सन् 1939 में कहा जाता है पचास अरब रुपए से ऊपर हुआ. आज इन फ़ौजों की तादाद और इन पर ख़र्च इस से भी कई गुना बढ़ चुका है. बहुत से देश हथियारों की इस घुड़दौड़ में हिस्सा लेने के कारण भारी क़र्ज़ों के नीचे दबते जा रहे हैं. दूसरे महायुद्ध ने इस सारी विषम स्थिति को और भी भयंकर कर दिया है. अब तीसरे महायुद्ध का डर दुनिया के सामने है. दुनिया बरबादी के गड्ढे के मुंह पर खड़ी हुई है.

हर आदमी महसूस करता है और कहता है कि यह सब पागलपन है. पर मालूम होता है कि क़िस्मत या कोई दैवी शक्ति सब की गरदन पकड़े उन्हें धकेले लिए जा रही है.

यदि यह करोड़ों आदमी जो एक दूसरे को क़तल करने के लिए तैयार किए जा रहे हैं और वह अरबों और खरबों रुपया जो करोड़ों निहत्थों को जिंदा भून डालने के लिए नए नए हथियार बनाने में ख़र्च किया जा रहा है, यदि यह सारी शक्ति और यह सारा धन साइंस की मदद से सब के भले के लिए ख़र्च किया जा सकता तो हमारी यह धरती, यह

بڑھ گئی کہ سداچار کا اور سائنس کا ساتھ چھوٹ گیا ۔ ھالینڈ کے شہر ڈیلفٹ میں ایک انٹرنیشنل کونسل آف سائنٹفک یونینس ھے جس کی ایک خاص کمیٹی سائنس اور مانو سماج کے پرسپر سمبندھ پر ھے ۔

یہ سب کوششیں اِس لئے فضول جا رھی ھیں کیونکہ سائنسداں ابھی تک اِس بات کو نہیں سمجھ رھے ھیں کہ مادی سائنس کی بڑی سے بڑی اور عجیب سے عجیب ایجادیں بھی برائی کی باڑھ کو نہیں روک سکتیں ۔ یہ ایجادیں برائی کی باڑھ اور اُس کے انیایوں کو بڑھاتی ھی رھینگی ۔ برائی کی یہ باڑھ تبھی رک سکتی ھے جب ھم کوئی ایسا ڈھنگ نکالیں جس سے دنیا کے سب لوگ اِس پرانے سنہرے اصول پر عمل کرنے لگیں کہ ھر آدمی ھر دوسرے آدمی کے ساتھ ویسا ھی برتاؤ کرے جیسا وہ چاھتا ھے کہ دوسرے اُس کے ساتھ کریں ۔ اِس کے لئے مانو سماج کے سنگٹھن کی ایک ایسی ویاپک یوجنا بنانی ھوگی جس کے انوسار ھر آدمی سائنس کی نئی سے نئی ایجادوں کو ساری منشیہ جاتی کے بھلے کے لئے کام میں لانے لگے۔ کوئی اِن ایجادوں کو کسی ایک راشٹر کے فایدے کے لئے یا اُس راشٹر کے اندر بھی کسی ایک گروہ کے لابھ کے لئے کام میں نہ لاسکے ۔ ھمارا سماج سنگٹھن ایسا ھونا چاھئے جس میں ھر آدمی کو اِس کے لئے اپنے اندر سے سوابھاوک پریرنا ملے ۔

برسوں سے دنیا کی ھر "بڑی قوم" پاگلوں کی طرح اپنی فوجیں اور اپنے ھتیار بڑھاتی جا رھی ھے اور ساتھ ھی شانتی اور امن کی بات کہتی ھے ۔ سن 1939 میں دنیا کی اُن فوجوں کی تعداد جو ھر سمے یدھ کے لئے تیار رھتی تھیں ساڑھے پانچ کروڑ سے اُوپر تھی ۔ اِن پر خرچ سن 1939 میں کہا جاتا ھے پچاس ارب روپئے سے اوپر ھوا ۔ آج اِن فوجوں کی تعداد اور اِن پر خرچ اِس سے بھی کئی گنا بڑھ چکا ھے ۔ بہت سے دیش ھتیاروں کی اِس گھڑ دوڑ میں حصہ لینے کے کارن بھاری قرضوں کے نیچے دبتے جا رھے ھیں ۔ دوسرے مہا یدھ نے اِس ساری وشم اِستھتی کو اور بھی بھینکر کر دیا ھے ۔ اَب تیسرے مہایدھ کا ڈر دنیا کے سامنے ھے ۔ دنیا بربادی کے گڈھے کے منھ پر کھڑی ھوئی ھے ۔

ھر آدمی محسوس کرتا ھے اور کہتا ھے کہ یہ سب پاگل پن ھے ۔ پر معلوم ھوتا ھے کہ قسمت یا کوئی دیوی شکتی سب کی گردن پکڑ اُنھیں ڈھکیلے لئے جارھی ھے ۔

یدی یہ کروڑوں آدمی جو ایک دوسرے کو قتل کرنے کے لئے تیار کئے جارھے ھیں اور وہ اربوں اور کھربوں روپیہ جو کروڑوں نہتھوں کو زندہ بھون ڈالنے کے لئے نئے نئے ھتیار بنانے میں خرچ کیا جارھا ھے، یدی یہ ساری شکتی اور یہ سارا دھن سائنس کی مدد سے سب کے بھلے کے لئے خرچ کیا جاسکتا تو ھماری یہ دھرتی، یہ

सारी ज़मीन, एक हरे भरे खेत या बाग़ की तरह नाज, फल और फूल से लहलहा उठती. पर माया, जहालत, हिर्स, तकब्बुर, घमंड, अंधा लोभ, ऐशपरस्ती और दूसरों से नफ़रत इन सबने मिलकर हमें इतना अंधा कर दिया है कि दुनिया के बड़े से बड़े नेता न केवल दूसरे देशों के लोगों को बल्कि अपने अपने देशों की करोड़ों जनता को भी जोश के साथ तोपों और गोलों का चारा बनने के लिये तैयार कर रहे हैं. इस से बढ़कर अंधापन, पागलपन और शैतान-परस्ती और क्या हो सकती है ?

दुनिया के बड़े से बड़े मानव प्रेमी, राह दिखाने वाले फ़ज़ूल ही चिल्लाते रहे—"एक दूसरे से प्रेम करो", "दूसरों के साथ वैसा ही सलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें." अंधकार की शक्तियाँ उजाले की शक्तियों पर हावी हो रही हैं. सारी दुनिया इस आफ़त के नीचे तड़प रही है. आदमी पर बोझ बढ़ते जा रहे हैं, नफ़रत का बोझ डर का बोझ, हथियारों का बोझ और करोड़ों इंसानों के आर्थिक शोषण का बोझ. हथियारों का यह बोझ अब बहुत दिनों नहीं चल सकता. यह हथियार ख़तम तो होंगे ही, चाहे एक दूसरे को ख़तम करके ख़तम हों और चाहे सब को ज़िंदा रख कर आपसी समझौते से ख़तम हों !

इस मुसीबत से बचने के लिए और मानव जाति की आइन्दा की शान्ति, सलामती और ख़ुशहाली के लिए सबसे पहली ज़रूरत यह है कि दुनिया के क़ानून बनाने वालों, हाकिमों, हर घर, हर उद्योग, हर महकमे और हर संस्था के सरदार या नेता में और इन सबसे बढ़कर दुनिया के बच्चों को तालीम देने वाले अध्यापकों में दिमाग़ी जानकारी और होशियारी से कहीं बढ़कर ऊँचे नैतिक गुण हों, उनके दिलों में दूसरों के लिये वैसा ही प्रेम हो जैसा पिता के दिल में अपनी औलाद के लिये. हमारा दिमाग़ अगर बहुत चतुर न भी हो तो भी सच्चा प्रेम भरा दिल हम सब को ठीक रास्ते पर और सब के भले के रास्ते पर लगा सकता है. दिमाग़ की चतुराई अगर उसके साथ दिल ख़राब है तो हमें तबाही के गढ़े में गिराए बग़ैर नहीं रह सकती. दिमाग़ जितना चतुर होगा उतना ही जल्दी हम सब बरबाद होंगे, इसलिए यह ज़रूरी है कि हमारी शिक्षा संस्थाओं में, हमारी तालीमगाहों में बच्चों को बहुत अधिक जानकारी देने की अपेक्षा उनके चरित्र को अच्छा, ऊँचा और मज़बूत बनाने की तरफ़ कहीं अधिक ध्यान दिया जावे. इसके लिए यह ज़रूरी है कि हमारे अध्यापक ख़ुद नेक, निस्वार्थ, प्रेमी और ऊँचे चरित्र के हों. सच्चा अध्यापक, सच्चा ब्राह्मण होना चाहिए, सच्चा मौलवी होना चाहिए. उसमें विद्या होनी चाहिए, इल्म होना चाहिए और ज़ोहद होना चाहिए. ज्ञान और परोपकार भावना दोनों से मिलकर बुद्धि यानी अक़्ले सलीम बनती है.

ری زمین' ایک ہرے بھرے کھیت یا باغ کی طرح
ج' پھل اور پھول سے لہلہا اُٹھتی. پر مایا' جہالت'
ص' تکبر' گھمنڈ' اندھا لوبھ' عیش پرستی اور دوسروں سے
رت ان سب نے ملکر ہمیں اِتنا اندھا کردیا ھے کہ دنیا کے
ے سے بڑے نیتا نہ کیول دوسرے دیشوں کے لوگوں کو بلکہ اپنے
، دیشوں کی کروڑوں جنتا کو بھی جوش کے ساتھ توپوں اور گولوں
چارا بننے کے لئے تیار کر رہے ہیں . اِس سے بڑھکر اندھاپن'
لپن اور شیطان پرستی اور کیا ہوسکتی ھے ؟

دنیا کے بڑے سے بڑے مانو پریمی راہ دکھانے والے فضول ھی
تے رہے—"ایک دوسرے سے پریم کرو" "دوسروں کے ساتھ
سا ھی سلوک کرو جیسا تم چاھتے ہو کہ وہ تمہارے ساتھ
کریں ." اندھکار کی شکتیاں اُجالے کی شکتیوں پر حاوی ہو
رہی ہیں . ساری دنیا اِس آفت کے نیچے تڑپ رہی ھے .
آدمی پر بوجھ بڑھتے جا رہے ہیں' نفرت کا بوجھ' ڈر کا بوجھ'
ہتھیاروں کا بوجھ اور کروڑوں اِنسانوں کے آرتھک شوشن کا بوجھ
ہتھیاروں کا یہ بوجھ اب بہت دنوں نہیں چل سکتا . یہ
ہتیار ختم تو ہونگے ھی' چاھے ایک دوسرے کو ختم کرکے ختم
ہوں اور چاھے سب کو زندہ رکھکر آپسی سمجھوتے سے ختم ہوں !

اِس مصیبت سے بچنے کے لئے اور مانو جاتی کی آئندہ
کی شانتی' سلامتی اور خوشحالی کے لئے سب سے پہلی ضرورت
یہ ھے کہ دنیا کے قانون بنانے والوں' حاکموں' ہر گھر' ہر
اُدیوگ' ہر محکمے اور ہر سنستھا کے سردار یا نیتا میں اور
اِن سب سے بڑھکر دنیا کے بچوں کو تعلیم دینے والے ادھیاپکوں
میں دماغی جانکاری اور ہوشیاری سے کہیں بڑھکر اُونچے نیتک
گن ہوں' اُن کے دلوں میں دوسروں کے لئے ویسا ھی پریم ہو
جیسا پتا کے دل میں اپنی اولاد کے لئے . ہمارا دماغ اگر
بہت چتر نہ بھی ہو تو بھی سچا پریم بھرا دل ہم سب کو
ٹھیک راستے پر اور سب کے بھلے کے راستے پر لگا سکتا ھے . دماغ
کی چترائی اگر اُس کے ساتھ دل خراب ھے تو ہمیں تباھی کے
گڈھے میں گرائے بغیر نہیں رہ سکتی . دماغ جتنا چتر ہوگا اتنا
ھی جلدی ہم سب برباد ہونگے' اِس لئے یہ ضروری ھے کہ
ہماری شکشا سنستھاؤں میں' ہماری تعلیم گاہوں میں بچوں
کو بہت ادھک جانکاری دینے کی اپیکشا اُن کے چرتر کو اچھا'
اُونچا اور مضبوط بنانے کی طرف کہیں ادھک دھیان دیا
جاوے . اِس کے لئے یہ ضروری ھے کہ ہمارے ادھیاپک خود نیک'
نسوارتھ' پریمی اور اُونچے چرتر کے ہوں . سچا ادھیاپک' سچا
براھمن ہونا چاھئے' سچا مولوی ہونا چاھئے . اُس میں ودیا
ہونی چاھئے' تپ ہونا چاھئے' علم ہونا چاھئے اور زہد ہونا
چاھئے . گیان اور پروپکار بھاؤنا دونوں سے ملکر بدھی یعنی
عقل سلیم بنتی ھے .

धर्म या मजहब जिसका काम सब के दिलों को तसल्ली देना, सबके चरित्र को ऊँचा ले जाना, सब को मिलाना और सबका भला करना था, अब सब जगह गिर कर स्वार्थी पंडे पुरोहितों और पादरी मुल्लाओं के हाथों में निकम्मे रीति रिवाजों और अंध विश्वासों को बढ़ाने वाला, दुनिया को धोका देने वाला, और आदमी को आदमी से फाड़ने वाला एक भयंकर जाल बनकर रह गया है. राज जिसका काम सब की रक्षा और सबकी तरक़्क़ी करना था अब स्वार्थी राजनैतिक नेताओं के हाथों में पड़कर दुनिया को चूसने वाली और खुले अन्याय करने वाली संस्था बन गया है. पंचायतें और अदालतें जिनका काम सबके झगड़े तय कराकर उन्हें मिलाना था अब ख़ुदग़रज़ और चालाक वकीलों के अड्डे बन गई हैं. डाक्टर और वैद्य जिनका काम दुनिया के रोगों के दूर करके उन्हें फिर से तनदुरुस्त करना था धन के लोभ में अब अपने शिकारों को जोंकों की तरह चूसने लगे हैं. व्यापार और तिजारत जिन से सब को खाना, कपड़ा और ज़िन्दगी की ज़रूरतें मिलनी चाहिए थीं अब बदल कर सब को बरबाद करने वाला नया अर्थ-शास्त्र बन गया है, जिसमें स्टाक जमा किए जाते हैं, कंपनियों के हिस्सों का जूआ खेला जाता है, सट्टा किया जाता है, फाटका लड़ाया जाता है, दुनिया के सिक्कों के साथ जादूगरों की तरह तमाशे किए जाते हैं, सरकारों की इच्छा पर कहीं सिक्कों के दाम घटाए जाते हैं कहीं बढ़ाए जाते हैं, कहीं रुपयों की कौड़ियां कर दी जाती हैं और कहीं कौड़ियों के रुपए कर दिए जाते हैं, बिल्कुल बनावटी ढंग से और ज़बरदस्ती, ख़ास ख़ास गुटों, कंपनियों और गिरोहों के तुच्छ लाभ के लिए चीज़ों की क़ीमतों को मनमाना बढ़ाया और घटाया जाता रहता है, जूआ चोरी एक बड़े पैमाने पर और खुले बेशरमी के साथ जारी है, बड़े बड़े शास्त्री, विद्वान, नेता और माहिर उसे बढ़ावा देते हैं, अपने अंधेपन में हम अशर्फ़ियां लुटा रहे हैं और कोयलों पर या काग़ज़ों के टुकड़ों पर मोहर लगा रहे हैं. गृहस्थ जीवन जिससे ज़िन्दगी में मिठास भर जानी चाहिए थी, नई जान आनी चाहिए थी और आदमी का बल बढ़ना चाहिए था, अब केवल कामटन्टा का साधन रह गया है. इसका ख़ास कारण यह है कि हमारे बच्चों और नौजवानों की तालीम जिससे सब को ठीक रास्ता मिलना चाहिए था, ख़ुद ग़लत रास्ते पर पड़ गई है. हमारे मास्टर, अध्यापक और प्रोफ़ेसर अपने असली मिशन से बेपरवाह होकर ग़लत तरफ़ भटक गए हैं. उनके अन्दर जो ज़बरदस्त नैतिक शक्ति, त्याग और तपस्या का बल और आत्मबल होना चाहिए था वह जाता रहा. वे फ़ौजी लीडरों और स्वार्थी पूंजीपतियों के हाथों में खेलने लगे, जबकि उनका काम था इन लीडरों और पूंजीपतियों को ठीक रास्ते पर रखना. हमारे अध्यापकों ने

دھرم یا مذہب جس کا کام سب کے دلوں کو تسلی دینا' سب کے چرتر کو اونچا لیجانا' سب کو ملانا اور سب کا بھلا کرنا تھا' اب سب جگہ گر کر سوارتھی پنڈے پروہتوں اور پادری ملاؤں کے ہاتھوں میں نکمے ریت رواجوں اور اندھ وشواسوں کو بڑھانے والا اور دنیا کو دھوکا دینے والا اور آدمی کو آدمی سے پھاڑنے والا ایک بھینکر جال بن کر رہ گیا ہے ۔ راج جس کا کام سب کی رکشا اور سب کی ترقی کرنا تھا اب سوارتھی راجنیتک نیتاؤں کے ہاتھوں میں پڑکر دنیا کو چوسنے والی اور کھلے انیائے کرنے والی سنستھا بن گیا ہے ۔ پنچائتیں اور عدالتیں جن کا کام سب کے جھگڑے طے کراکر انھیں ملانا تھا اب خودغرض اور چالاک وکیلوں کے اڈے بن گئی ہیں ۔ ڈاکٹر اور وید جن کا کام دنیا کے روگوں کو دور کرکے انھیں پھر سے تندرست کرنا تھا دھن کے لوبھ میں اب اپنے شکاروں کو جونکوں کی طرح چوسنے لگے ہیں ۔ ویاپار اور تجارت جن سے سب کو کھانا' کپڑا اور زندگی کی ضرورتیں ملنی چاہئے تھیں اب بدل کر سب کو برباد کرنے والا نیا ارتھ شاستر بن گیا ہے' جس میں اسٹاک جمع کئے جاتے ہیں' کمپنیوں کے حصوں کا جوا کھیلا جاتا ہے' سٹا کیا جاتا ہے' پھاٹکا لڑایا جاتا ہے' دنیا کے سکوں کے ساتھ جادوگروں کی طرح تماشے کئے جاتے ہیں' سرکاروں کی اچھا پر کہیں سکوں کے دام گھٹائے جاتے ہیں کہیں بڑھائے جاتے ہیں' کہیں روپیوں کی کوڑیاں کردی جاتی ہیں اور کہیں کوڑیوں کے روپئے کردئے جاتے ہیں' بالکل بناوٹی ڈھنگ سے اور زبردستی' خاص گٹوں' کمپنیوں اور گروہوں کے تچھ لابھ کے لئے چیزوں کی قیمتوں کو من مانا بڑھایا اور گھٹایا جاتا رہتا ہے' جوا چوری ایک بڑے پیمانے پر اور کھلے بےشرمی کے ساتھ جاری ہے' بڑے بڑے شاستری' ودوان' نیتا اور ماہر اسے بڑھاوا دیتے ہیں' اپنے اندھےپن میں ہم اشرفیاں لٹا رہے ہیں اور کوئلوں یا کاغذوں کے ٹکڑوں پر مہر لگا رہے ہیں ۔ گرستھ جیون جس سے زندگی میں مٹھاس بھر جانی چاہئے تھی' نئی جان آنی چاہئے تھی اور آدمی کا بل بڑھنا چاہئے تھا' اب کیول کام تنتا کا سادھن رہ گیا ہے ۔ اس کا خاص کارن یہ ہے کہ ہمارے بچوں اور نوجوانوں کی تعلیم جس سے سب کو ٹھیک راستہ ملنا چاہئے تھا' خود غلط راستے پر پڑ گئی ہے ۔ ہمارے ماسٹر' ادھیاپک اور پروفیسر اپنے اصلی مشن سے بے پرواہ ہوکر غلط طرف بھٹک گئے ہیں۔ ان کے اندر جو زبردست نیتک شکتی' تیاگ اور تپسیا کا بل اور آتم بل ہونا چاہئے تھا وہ جاتا رہا ۔ وے فوجی لیڈروں اور سوارتھی پونجی پتیوں کے ہاتھوں میں کھیلنے لگے' جب کہ ان کا کام تھا ان لیڈروں اور پونجی پتیوں کو ٹھیک راستے پر رکھنا ۔ ہمارے ادھیاپکوں نے

उसके ऊंचे और पवित्र काम को नीचे गिराकर अब मशीन की तरह और एक अफ़सरी ढंग से बच्चों को इस तरह चलाना शुरू कर दिया है जिस तरह जानवरों के गल्लों को चलाया जाता है. अध्यापकों के दिल जो माता पिता के से प्रेम से भरे होने चाहिए थे अब सूखे, स्वार्थी और निर्दय हो गए हैं. हम सब एक शैतानी चक्कर में फंस गए हैं. ख़राब बीज से हमने ख़राब फल पैदा किए, उन फलों से और भी ख़राब बीज निकले, उनसे और अधिक ख़राब फल लगे. यहाँ तक कि तीसरा महायुद्ध और इंसानी क़ौम या कम से कम इंसानियत का ख़ात्मा अब हमारी आँखों के सामने नाच रहा है.

आज जो क़ौम जितनी ज्यादा सभ्य समझी जाती है उतना ही उसकी सारी ज़िंदगी में ख़ुदी, अहंकार और आपाधापी बढ़ी हुई दिखाई देती है. हर आदमी बड़े से बड़ा बनना चाहता है. हरेक दूसरे से बढ़कर रहना चाहता है. और जितनी तेज़ी से हो सके ऊपर उठना चाहता है. सब किसी न किसी रूप में भोग बिलास और ऐशपरस्ती की तरफ़ दौड़े चले जा रहे हैं. इसी का नाम हम लोगों ने "जीवन के स्तर को ऊँचा करना" (raising of the standard of life) रख रक्खा है! ऐशपरस्ती के साथ नफ़रतों का चलना लाज़मी है. हम पहले एक लेख में कह चुके हैं कि आदमी के अन्दर उसके छै सब से बड़े दुश्मन हैं. आजकल यह छहों पूरे ज़ोर पर हैं. ये हैं :— ऐशपरस्ती, जंग की तैयारियाँ, पूंजीवाद, दूसरों को डराकर रखना, साम्राज्यवाद, और दूसरों को चूसकर अपने अपने राष्ट्र का धन और बढ़ाना. आजकल की सभ्यता जीवन के हर मैदान में, व्यक्तिगत, समाजी, राष्ट्रीय, घरेलू, माली, आर्थिक और राजनैतिक, सब पहलुओं से आंख बंद किए बरबादी की तरफ़ बढ़ी चली जा रही है. अलग अलग देश अपने अपने क़ौमी क़रज़े को बेतहाशा बढ़ाते चले जा रहे हैं. हथियारों के अंबार लग रहे हैं और उनमें होड़ जारी है. ख़र्च को रोकने या कम करने का किसी को ध्यान तक नहीं है. आगे की किसी को परवाह नहीं है. कोई अपनी छोटी सी ज़िन्दगी से आगे या अपनी नाक के सिरे से आगे तक देखने की चिंता नहीं करता. आजकल की सरकारें जिस तरह चल रही हैं उस तरह कोई व्यक्ति चलता तो पागल और आत्म-हत्यारा कहा जाता. दुनिया की बेगुनाह जनता की अधिकतर शक्ति जीवन की आवश्यक वस्तुएँ बनाने की जगह और सब को आराम पहुंचने वाली जीज़ें तैयार करने की जगह थोड़े से लोगों को ऐश आराम के सामान तैयार करने और मनोरंजन के गंदे और फ़ोहश सामान तैयार करने, और उससे अधिक ज़मीनी, समन्दरी और हवाई लड़ाई के वे सामान तैयार करने में लगी हुई हैं जिनका एक मात्र उद्देश्य यह है कि आदमी की ज़िन्दगी, उसकी मेहनत, उसके माल असबाब और बाल बच्चों को मिटाया जाय.

اپنے اُونچے اور پوتر کام کو نیچے گراکر اب مشین کی طرح اور ایک افسری ڈھنگ سے بچوں کو اِس طرح چلانا شروع کردیا ہے جِس طرح جانوروں کے گلوں کو چلایا جاتا ہے۔ ادھیاپکوں کے دل جو ماتا پتا کے سے پریم سے بھرے ہونے چاہئے تھے اب سوکھے، سوارتھی اور نردئی ہوگئے ہیں۔ ہم سب ایک شیطانی چکر میں پھنس گئے ہیں۔ خراب بیج سے ہم نے خراب پھل پیدا کئے، اِن پھلوں سے اور بھی خراب بیج نکلے، اُن سے اور ادھک خراب پھل لگے۔ یہاں تک کہ تیسرا مہایدھ اور اِنسانی قوم یا کم سے کم اِنسانیت کا خاتمہ اب ہماری آنکھوں کے سامنے ناچ رہا ہے۔

آج جو قوم جتنی زیادہ سبھیہ سمجھی جاتی ہے اتنا ہی اُس کی ساری زندگی میں خودی، اہنکار اور آپا دھاپی بڑھی ہوئی دکھائی دیتی ہے۔ ہر آدمی بڑے سے بڑا بننا چاہتا ہے۔ ہر ایک دوسرے سے بڑھکر رہنا چاہتا ہے اور جتنی تیزی سے ہوسکے اُوپر اُٹھنا چاہتا ہے۔ سب کسی نہ کسی روپ میں بھوگ ولاس اور عیش پرستی کی طرف دوڑے چلے جا رہے ہیں۔ اِسی کا نام ہم لوگوں نے "جیون کے استر کو اُونچا کرنا" (raising of the standard of life) رکھ رکھا ہے! عیش پرستی کے ساتھ نفرتوں کا چلنا لازمی ہے۔ ہم پہلے ایک لیکھ میں کہہ چکے ہیں کہ آدمی کے اندر اُس کے چھ سب سے بڑے دشمن ہیں۔ آجکل یہ چھؤں پورے زور پر ہیں۔ یہ ہیں :— عیش پرستی، جنگ کی تیاریاں، پونجی واد، دوسروں کو ڈرا کر رکھنا، سامراجیہ واد، اور دوسروں کو چوس کر اپنے اپنے راشٹر کا دھن اور بل بڑھانا۔ آجکل کی سبھیتا جیون کے ہر میدان میں، ویکتی گت، سماجی، راشٹریہ، گھریلو، مالی، آرتھک اور راجنیتک، سب پہلوؤں سے آنکھ بند کئے بربادی کی طرف بڑھی چلی جارہی ہے۔ الگ الگ دیش اپنے اپنے قومی قرضے کو بے تحاشا بڑھاتے چلے جارہے ہیں۔ ہتھیاروں کے انبار لگ رہے ہیں اور اُن میں ہوڑ جاری ہے۔ خرچ کو روکنے یا کم کرنے کا کسی کو دھیان تک نہیں ہے۔ آگے کی کسی کو پرواہ نہیں ہے کوئی اپنی چھوٹی سی زندگی سے آگے یا اپنی ناک کے سرے سے آگے تک دیکھنے کی چنتا نہیں کرتا۔ آجکل کی سرکاریں جس طرح چل رہی ہیں اُس طرح کوئی ویکتی چلتا تو پاگل اور آتم ہتیارا کہا جاتا۔ دنیا کی بے گناہ جنتا کی ادھکتر شکتی جیون کی آوشیک وستوئیں بنانے کی جگہ اور سب کو آرام پہونچانے والی چیزیں تیار کرنے کی جگہ تھوڑے سے لوگوں کو عیش آرام کے سامان تیار کرنے اور منورنجن کے گندے اور فحش سامان تیار کرنے، اور اُس سے ادھک زمینی، سمندری اور ہوائی لڑائی کے وہ سامان تیار کرنے میں لگی ہوئی ہیں جن کا ایک ماتر اُدیشیہ یہ ہے کہ آدمی کی زندگی، اس کی محنت، اُس کے مال اسباب اور بال بچوں کو مٹایا جائے۔

इन्हीं चीज़ों की रक्षा करना, बढ़ाना और तरक़्क़ी देना सरकारों का काम था. और सब सरकारें इन्हीं को मिटाने की तरकीबों में लगी हुई हैं. अलग अलग देशों के वे शासक, नेता और राजनीतिज्ञ जो अपने को बहुत होशियार और 'व्यावहारिक' समझते हैं आज इसी पागलपन की दौड़ में एक दूसरे से होड़ लगा रहे हैं.

आजकल की सभ्यता ने जो कई तरह की धोके की टट्टियाँ हमारे सामने खड़ी कर दी हैं, उनमें से एक सब से अधिक धोके की और शैतानी चीज़ यही "व्यवहारिकता" है.

हममें से बहुत से अकसर इस बात पर बहस करते रहते हैं कि क्या चीज़ व्यावहारिक यानी प्रेक्टिकल है और क्या अव्यावहारिक यानी इमप्रेक्टिकल के बल है.

जब दुनिया में धर्म का ज़ोर था तो अक्सर लोग समझते थे और कहते थे कि मेरा धर्म ठीक और दूसरे का धर्म ग़लत. आज जब राजनीति का ज़ोर है तो उसी तरह के लोग कहते हैं कि मेरी राय, मेरा सुझाव और मेरी योजना व्यावहारिक और दूसरे की अव्यावहारिक या कोरा आदर्शवाद. मतलब यह कि जो मुझे ठीक जँचे वह 'व्यावहारिक' (अमली) और जो दूसरे को ठीक जँचे वह 'अव्यावहारिक' (ग़ैर अमली).

बहुत सी चीज़ें जो पहले कोरा आदर्शवाद और ग़ैर अमली मालूम होती थीं अब अमल में आ गईं. भाप, बिजली, रेडियो, हवाई जहाज़, पनडुब्बी, सोवियत रूस, चीन, सत्याग्रह, टैलीविज़न, ऐटम बम और हाइड्रोजन बम इसकी चंद मिसालें हैं. फिर भी हमारा यह 'व्यवहारिकता' का भूत क़ाबू में नहीं आता. दरख़्त अपने फलों से पहचाना जाता है. आजकल के इन चतुर राजनीतिज्ञों और नेताओं की इस व्यावहारिकता के नतीजों पर हम एक निगाह डालकर देखें

पहले धर्म ही को लीजिए. सच्चे धर्म से नेकी, सदाचार और एक दूसरे के साथ ईमानदारी का बर्ताव पैदा होने चाहियें थे. अब लगभग सब "तरक़्क़ीयाफ़्ता" क़ौमों की जिन्दगी से धर्म क़रीब क़रीब मिट चुका. सदाचार में गहरा 'इन्क़लाब' पैदा हो चुका है. एक तरफ़ क़ानूनी ऐयाशी और स्वतंत्र प्रेम और दूसरी तरफ़ आत्म संयम और गृहस्थ यानी कौटुम्बिक प्रेम, इन दोनों के बीच वह संग्राम जारी है कि इनमें से कोई न कोई दूसरे को मिटाकर रहेगा.

अब राजनीति को लीजिए. दुनिया की पार्लिमेंटें और क़ानून सभाएं स्वार्थी लोगों और गिरोहों की खींचा तानी के अखाड़े बनी हुई हैं. आपसी झगड़े, साज़िशें, एक दूसरे के ख़िलाफ़ धुआँधार तक़रीरें, सब अपने अपने गिरोहों के नाम पर होती हैं. सबके भले की सोचने का कहीं नाम नहीं

انہیں چیزوں کی رکشا کرنا، بڑھانا اور ترقی دینا سرکاروں کا کام تھا. اور سب سرکاریں انہیں کو مٹانے کی ترکیبوں میں لگی ہوئی ہیں. الگ الگ دیشوں کے وے شاسک، نیتا اور راجنیتگیہ جو اپنے کو بہت ہوشیار اور 'ویاوہارک' سمجھتے ہیں آج اسی پاگل پن کی دوڑ میں ایک دوسرے سے ہوڑ لگا رہے ہیں.

آجکل کی سبھیتا نے جو کئی طرح کی دھوکے کی ٹٹیاں ہمارے سامنے کھڑی کردی ہیں، ان میں سے ایک سب سے ادھک دھوکے کی اور شیطانی چیز یہی "ویاوہارکتا" ہے.

ہم میں سے بہت سے اکثر اس بات پر بحث کرتے رہتے ہیں کہ کیا چیز ویاوہارک یعنی پریکٹیکل ہے اور کیا اویاوہارک یعنی اِمپریکٹیکل کے بل ہے.

جب دنیا میں دھرم کا زور تھا تو اکثر لوگ سمجھتے تھے اور کہتے تھے کہ میرا دھرم ٹھیک اور دوسرے کا دھرم غلط. آج جب راجنیتی کا زور ہے تو اسی طرح کے لوگ کہتے ہیں کہ میری رائے، میرا سجھاؤ اور میری یوجنا ویاوہارک اور دوسرے کی اویاوہارک یا کورا آدرشواد. مطلب یہ کہ جو مجھے ٹھیک جنچے وہ 'ویاوہارک' (عملی) اور جو دوسرے کو ٹھیک جنچے وہ 'اویاوہارک' (غیر عملی).

بہت سی چیزیں جو پہلے کورا آدرشواد اور غیر عملی معلوم ہوتی تھیں اب عمل میں آگئیں. بھاپ، بجلی، ریڈیو، ہوائی جہاز، پن ڈبی، سوویت روس، چین، ستیاگرہ، ٹیلیویژن، ایٹم بم اور ہائڈروجن بم اس کی چند مثالیں ہیں. پھر بھی ہمارا یہ 'ویاوہارکتا' کا بھوت قابو میں نہیں آتا. درخت اپنے پھلوں سے پہچانا جاتا ہے. آجکل کے ان چتر راجنیتگیوں اور نیتاؤں کی اس ویاوہارکتا کے نتیجوں پر ہم ایک نگاہ ڈالکر دیکھیں.

پہلے دھرم ہی کو لیجئے. سچے دھرم سے نیکی، سداچار اور ایک دوسرے کے ساتھ ایمانداری کا برتاؤ پیدا ہونے چاہئیں تھے. اب لگ بھگ سب "ترقی یافتہ" قوموں کی زندگی سے دھرم قریب قریب مٹ چکا. سداچار میں گہرا 'انقلاب' پیدا ہوچکا ہے. ایک طرف قانونی عیاشی اور سوتنتر پریم اور دوسری طرف آتم سنیم اور گرہستھ یعنی کوٹمبک پریم، ان دونوں کے بیچ وہ سنگرام جاری ہے کہ ان میں سے کوئی نہ کوئی دوسرے کو مٹاکر رہیگا.

اب راجنیتی کو لیجئے. دنیا کی پارلیمینٹیں اور قانون سبھائیں سوارتھی لوگوں اور گروہوں کی کھینچا تانی کے اکھاڑے بنی ہوئی ہیں. آپسی جھگڑے، سازشیں، ایک دوسرے کے خلاف دھواں دھار تقریریں، سب اپنے اپنے گروہوں کے نام پر ہوتی ہیں. سب کے بھلے کی سوچنے کا کہیں نام نہیں

दिखाई देता. क़ानून आए दिन इस तरह के बनते रहते हैं जिनसे आपसी झगड़े और गिरोहों गिरोहों के बीच होड़ और बढ़े. पहले महायुद्ध में ही एक करोड़ से ऊपर आदमी मारे गए और लगभग सात सौ अरब रुपए के माल का दुनिया का नुक़सान हुआ. बड़ी बड़ी क़ौमों पर क़रज़े के बोझ लद गए. कमज़ोर और ग़रीब क़ौमें पीढ़ियों तक के लिए दूसरों के यहाँ रहन रख दी गईं. दूसरे महायुद्ध में इससे कई गुना अधिक बरबादी हुई और आज तीसरे महायुद्ध से पहले दुनिया की बड़ी बड़ी क़ौमों ने अपने पंजों, अपनी चोंचों और अपने दांतों को इतना पैना कर लिया है और लोभ लालच, एक दूसरे पर अविश्वास, घमंड और नफ़रतों का बाज़ार इतना गरम हो गया है कि सबको डर होने लगा है कि अगले महायुद्ध के बाद कोई भी बचेगा या नहीं. यह है हमारी "व्यावहारिक" राजनीति !

अब अर्थशास्त्र को लीजिए. हम ईमानदारी से देखें तो दुनिया की अधिकतर क़ौमें आज दिवालिया हो चुकीं या तेज़ी से दिवालियापन की तरफ़ जा रही हैं. बेकारों की तादाद बीस करोड़ से ऊपर तक पहुँच चुकी है. बेकारों से पँचगुने वे हैं जो एक दूसरे की बरबादी के कामों में लगे हैं. पुराने असूल थे—"ईमानदारी सबसे अच्छी पालिसी है" और "उधार व्यापार करो तो क़र्ज़ा अदा करने के लिए रुपया पहले पास रख लो." अब ऐसी बातें 'अव्यावहारिक' समझी जाती हैं. अब उसूल है—"अंदर जमा हो या न हो, हवाई साख पर व्यापार बढ़ाए चलो." यह उसूल 'व्यावहारिक' माना जाता है. अगर कोई यह कहे कि इस अरबों खरबों रुपए को जो ग़लत कार्यों पर ख़र्च किया जाता है समझ के साथ सबके भले के लिए ख़र्च किया जावे और दुनिया भर के बेकारों को धरती के उन बड़े बड़े हिस्सों पर जहाँ हरे भरे खेत और ख़ुशहाल आबादियाँ खड़ी की जा सकती हैं, जैसे कनाडा, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अमरीका, अफ़रीका में लेजाकर बसाया जावे तो इस तरह की बात सुझाने वाला 'अव्यावहारिक' और 'कोरा आदर्शवाद, समझा जाता है.

अब घरेलू जीवन को लीजिए. पच्छिम के बहुत से बड़े बड़े शहरों में साल में जितनी शादियाँ होती हैं उससे आधे से अधिक तलाक़ होते हैं. शादी और तलाक़ के बीच का समय जगह जगह कुछ बरसों से घटते घटते कुछ महीने और अब कुछ हफ़्ते रह गया है. गर्भ गिराने और औलाद पैदा न करने की दवाओं का खुले आम प्रचार होता है. यह है हमारे सदाचार में इंक़लाब ! आबादी फिर भी बढ़ती चली जा रही है और किसी योजना के साथ लोगों को जगह ब जगह लेजाकर बसाने के बजाय रोटी के लिए खींचातानी और जंगों की संभावना बढ़ती जा रही है. ग़ैर

دکھائی دیتا ۔ قانون آئے دن اِس طرح کے بنتے رہتے ہیں جن سے آپسی جھگڑے اور گروہوں گروہوں کے بیچ ہوڑ اور بڑھے ۔ پہلے مہایدھ میں ہی ایک کروڑ سے اوپر آدمی مارے گئے اور لگ بھگ سات سو ارب روپئے کے مال کا دنیا کا نقصان ہوا ۔ بڑی بڑی قوموں پر قرضے کے بوجھ لد گئے ۔ کمزور اور غریب قومیں پیڑھیوں تک کے لئے دوسروں کے یہاں رہن رکھ دی گئیں ۔ دوسرے مہایدھ میں اِس سے کئی گنا ادھک بربادی ہوئی اور آج تیسرے مہایدھ سے پہلے دنیا کی بڑی بڑی قوموں نے اپنے پنجوں، اپنی چونچوں اور اپنے دانتوں کو اِتنا پینا کر لیا ہے اور لوبھ لالچ 'ایک دوسرے پر اوشواس، گھمنڈ اور نفرتوں کا بازار اِتنا گرم ہوگیا ہے کہ سب کو ڈر ہونے لگا ہے کہ اگلے مہایدھ کے بعد کوئی بھی بچیگا یا نہیں ۔ یہ ہے ہماری "ویا وہارک" راجنیتی !

اب ارتھ شاستر کو لیجئے ۔ ہم ایمانداری سے دیکھیں تو دنیا کی ادھکتر قومیں آج دیوالیہ ہو چکیں یا تیزی سے دیوالیہ پن کی طرف جا رہی ہیں ۔ بے کاروں کی تعداد بیس کروڑ سے اوپر تک پہونچ چکی ہے ۔ بے کاروں سے پنچ گنے وے ہیں جو ایک دوسرے کی بربادی کے کاموں میں لگے ہیں ۔ پرانے اُصول تھے—"ایمانداری سب سے اچھی پالسی ہے" اور "اُدھار ویاپار کرو تو قرضہ ادا کرنے کے لئے روپیہ پہلے پاس رکھ لو ۔"
اب ایسی باتیں 'اویاوہارک' سمجھی جاتی ہیں ۔ اب اُصول ہے—"اندر جمع ہو یا نہ ہو' ہوائی ساکھ پر ویاپار بڑھائے چلو ۔" یہ اُصول 'ویاوہارک' مانا جاتا ہے ۔ اگر کوئی یہ کہے کہ اِس اربوں کھربوں روپئے کو جو غلط کاریوں پر خرچ کیا جاتا ہے سمجھ کے ساتھ سب کے بھلے کے لئے خرچ کیا جاوے اور دنیا بھر کے بیکاروں کو دھرتی کے اُن بڑے بڑے حصوں پر جہاں ہرے بھرے کھیت اور خوشحال آبادیاں کھڑی کی جا سکتی ہیں جیسے کناڈا' آسٹریلیا' دکھن امریکہ' افریقہ میں لیجا کر بسایا جاوے تو اِس طرح کی بات سجھانے والا 'اویاوہارک' اور 'کورا آدرشوادی' سمجھا جاتا ہے ۔

اب گھریلو جیون کو لیجئے ۔ پچھم کے بہت سے بڑے بڑے شہروں میں سال میں جتنی شادیاں ہوتی ہیں اُس سے آدھے سے ادھک طلاق ہوتے ہیں ۔ شادی اور طلاق کے بیچ کا سمے جگہہ جگہہ کچھ برسوں سے گھٹتے گھٹتے کچھ مہینے اور اب کچھ ہفتے رہ گیا ہے ۔ گربھ گرانے اور اولاد پیدا نہ کرنے کی دواؤں کا کھلے عام پرچار ہوتا ہے ۔ یہ ہے ہمارے سداچار میں انقلاب ! آبادی پھر بھی بڑھتی چلی جا رہی ہے اور کسی یوجنا کے ساتھ لوگوں کو جگہہ بہ جگہہ لیجا کر بسانے کے بجائے روٹی کے لئے کھینچاتانی اور جنگوں کی سمبھاونا بڑھتی جارہی ہے ۔ غیر

शादीशुदा लोगों में बच्चों की पैदाइश बेहद बढ़ गई है. पागलों और गंदी बीमारियों के रोगियों की गिनती दुनिया भर में बढ़ रही है. बहुत जगह तो बच्चे ही इन बुराइयों को साथ लेकर पैदा होते हैं. समझ, सोच विचार और भलमंसियत का कहीं पता नहीं. घरों के अंदर "चादर देखकर पैर पसारो" जैसी बातें अब ग़ैर अमली मानी जाती हैं. कोई यह कहे कि अलग अलग राष्ट्रों का इंतज़ाम उसी तरह होना चाहिए जिस तरह अलग अलग घरों का, यानी यह कि एक हद के अंदर और जहाँ तक हो सके हर राष्ट्र अपनी ज़रूरत की चीज़ें ख़ुद तैयार करे और अपने पैरों पर खड़ा हो, तो इस तरह के सुझाव ग़ैर अमली बताए जाते हैं !

अब तालीम को लीजिए. पुराना उसूल था "सादी ज़िंदगी बसर करो और अपने विचारों को ऊँचा रखो." अब कहा जाता है "अपनी ज़रूरतों को बढ़ाए जाना और उन ज़रूरतों के पूरा करने के साधनों को भी लगातार बढ़ाए जाना इसी का नाम सभ्यता है." साइंस आज नेकी और परोपकार के रास्ते से हट कर लोगों की बुरी इच्छाओं और आपसी नफ़रतों को पूरा करने के लिए एक गंदे साधन का काम दे रही है. गैसें तैयार की जा रही हैं जिन्हें हवाई जहाज़ से बरसा कर लंदन, न्यूयार्क और बर्लिन जैसे शहरों की कुल आबादी को चंद घंटों के अंदर दम घोटकर ख़तम किया जा सकता है. चीर फाड़ के तजरबों में ज़िंदा इंसानी बच्चे और बालिग़ मर्द औरत तक काम में लाए जाने लगे हैं. अख़बारों का अधिकतर काम रह गया है एक बड़े पैमाने पर झूठा प्रोपेगेंडा, झूठे इश्तहार और जनता को सच्ची रोशनी देने की जगह उन्हें पूरा पूरा धोका देना. पुराना उसूल था कि दुनिया मिलकर चलने के लिए है और एक दूसरे के लिए क़ुर्बानियाँ करते हुए ही हम आगे बढ़ सकते हैं. यह "अव्यावहारिक" बात बताई जाती है. व्यावहारिक उसूल अब यह बताया जाता है कि हर आदमी का जीवन एक लगातार "संघर्ष" है, जो जितनों को मिटा सके उतना ही उसका जीवन सफल होगा. यह है आजकल की 'व्यावहारिकता !'

कला और मनोरंजन में आजकल के बड़े शहरों के रात के जीवन पर जो कहा जा सके वह थोड़ा है. शराब, बदचलनी, दौलत की चाट ही जीवन में सुख पैदा करने के एकमात्र साधन रह गए हैं. नैतिक या आध्यात्मिक यानी इख़लाक़ी और रूहानी सुख कोई चीज़ ही नहीं रही. क़ुदरत के साथ मेल या संपर्क की तो हमारे जीवन में कोई जगह ही नहीं रही.

पच्छिम की बड़ी से बड़ी क़ौमें आज इसी बात को सबसे ज़ियादा 'व्यावहारिक' मानती हैं कि दूसरी कमज़ोर और निर्धन क़ौमों को और ख़ुद अपने ही यहाँ के कमज़ोर और निर्धन लोगों को जितना हो सके चूस कर, आर्थिक

شادی شدہ لوگوں میں بچوں کی پیدایش بے حد بڑھ گئی ہے۔ پاگلوں اور گندی بیماریوں کے روگیوں کی گنتی دنیا بھر میں بڑھ رہی ہے. بہت جگہہ تو بچے ہی اِن برائیوں کو ساتھ لیکر پیدا ہوتے ہیں. سمجھ' سوچ وچار اور بھلمنسیت' کا کہیں پتہ نہیں۔ گھروں کے اندر "چادر دیکھر پیر پسارو" جیسی باتیں اب غیر عملی مانی جاتی ہیں۔ کوئی یہ کہے کہ الگ الگ راشٹروں کا اِنتظام اُسی طرح ہونا چاہئے جس طرح الگ الگ گھروں کا' یعنی یہ کہ ایک حد کے اندر اور جہاں تک ہوسکے ہر راشٹر اپنی ضرورت کی چیزیں خود تیار کرے اور اپنے پیروں پر کھڑا ہو' تو اِس طرح کے سجھاؤ غیر عملی بتائے جاتے ہیں!

اب تعلیم کو لیجئے۔ پرانا اُصول تھا "سادہ زندگی بسر کرو اور اپنے وچاروں کو اُونچا رکھو۔" اب کہا جاتا ہے "اپنی ضرورتوں کو بڑھائے جانا اور اِن ضرورتوں کو پورا کرنے کے سادھنوں کو بھی لگاتار بڑھائے جانا اِسی کا نام سبھیتا ہے۔" سائنس آج نیکی اور پروپکار کے راستے سے ہٹ کر لوگوں کی بری اِچھاؤں اور آپسی نفرتوں کو پورا کرنے کے لیئے ایک گندے سادھن کا کام دے رہی ہے۔ گیسیں تیار کی جارہی ہیں جنہیں ہوائی جہاز سے برسا کر لندن' نیویارک اور برلن جیسے شہروں کی کل آبادی کو چند گھنٹوں کے اندر دم گھوٹ کر ختم کیا جا سکتا ہے۔ چیر پھاڑ کے تجربوں میں زندہ انسانی بچے اور بالغ مرد عورت تک کام میں لائے جانے لگے ہیں۔ اخباروں کا ادھکتر کام رہ گیا ہے ایک بڑے پیمانے پر جھوٹا پروپیگنڈا' جھوٹے اشتہار اور جنتا کو سچی روشنی دینے کی جگہہ اُنہیں پورا پورا دھوکا دینا۔ پرانا اُصول تھا کہ دنیا مل کر چلنے کے لئے ہے اور ایک دوسرے کے لئے قربانیاں کرتے ہوئے ہی ہم آگے بڑھ سکتے ہیں۔ یہ "اویاوھارک" بات بتائی جاتی ہے۔ ویاوھارک اصول اب یہ بتایا جاتا ہے کہ ہر آدمی کا جیون ایک لگاتار "سنگھرش" ہے' جو جتنوں کو مٹا سکے اُتنا ہی اُس کا جیون سپھل ہو گا۔ یہ ہے آج کل کی 'ویاوھارکتا'!

کلا اور منورنجن میں آجکل کے بڑے شہروں کے رات کے جیون پر جو کہا جا سکے وہ تھوڑا ہے۔ شراب' بدچلنی' دولت کی چاٹ ہی جیون میں سکھ پیدا کرنے کے ایک ماتر سادھن رہ گئے ہیں۔ نیتک یا آدھیاتمک یعنی اِخلاقی اور روحانی سکھ کوئی چیز ہی نہیں رہی۔ قدرت کے ساتھ میل یا سمپرک کی تو ہمارے جیون میں کوئی جگہہ ہی نہیں رہی۔

پچھم کی بڑی سے بڑی قومیں آج اِسی بات کو سب سے زیادہ 'ویاوھارک' مانتی ہیں کہ دوسری کمزور اور نردھن قوموں کو خود اپنے ہی یہاں کے کمزور اور نردھن لوگوں کو جتنا ہو سکے چوس کر' آرتھک

निगाह से भी चूस कर और राजनीतिक निगाह से भी चूस कर, अपनी "शान्दार सभ्यता" को क़ायम रक्खा जाय !

यह सब बुराइयाँ केवल एक ऐसे व्यापक और वैज्ञानिक धर्म की मदद से और एक ऐसे समाज संगठन के ज़रिये ही दूर हो सकती हैं जो इस धरती की सारी मानव जाति को अपने अंदर समा सके.

दुनिया के राजनीतिज्ञों और नेताओं को चाहिये कि वे केवल 'राष्ट्रीय' या नेशनेलिस्ट न होकर 'मानवीय' यानी ह्यूमेनिस्ट हों, और समाज संगठन की इस तरह की योजनाएँ तैयार करें और दुनिया के सामने रक्खें, जिनमें सबकी सब ज़रूरतें पूरी हो सकें और सबके दिलों को तसल्ली और संतोष मिल सके. लोग नारों और फ़िक़रों के चक्कर में न पड़कर मेल और सबके भले की बातें सोचें. पूरब और पच्छिम, एशिया और योरप आज एक दूसरे के काफ़ी निकट आ गए हैं और आ रहे हैं. दोनों में कमज़ोरियाँ हैं. दोनों में गुण हैं. दुनिया के नेताओं का काम है कि दोनों की कमज़ोरियों को दूर करते हुए दोनों के गुणों को चमकावें और सबको सबके गुणों से फ़ायदा उठाने का मौक़ा दें. पुराना पूरब और नया पच्छिम दोनों का आज गठबन्धन हो रहा है. क़ुदरत दोनों का आज संगम चाहती है और पूरा पूरा संगम चाहती है. हमें अपनी योजनाओं और उनके अमल से यह साबित करना है कि क़ुदरत ने पूरब और पच्छिम को निकट लाकर ग़लती नहीं की, और इनको निकट लाना शैतान का काम नहीं है बल्कि भलाई के फ़रिश्ते का काम है. यही इस समय दुनिया के सामने काम करने को है. यही व्यावहारिक बात है, अमली है बाक़ी सब ग़ैर अमली.

रेल, जहाज़, हवाई जहाज़ इन सबने मिलकर बनावटी राजनैतिक सीमाओं को तोड़ दिया है. सब क़ौमों के अच्छे से अच्छे लोग समझ रहे हैं और कह रहे हैं कि हमें अब दुनिया भर के एक संगठन की आवश्यकता है जो हमें बरबादी से बचा सके. एच. जी. वैल्स ने अपनी किताब "ए शार्ट हिस्ट्री आफ़ दी वर्ल्ड" में लिखा है कि—"पुराने ढंग के अलग अलग बिलकुल ख़ुदमुख़्तार राष्ट्र अब नहीं चल सकते." दुनिया के नेक और अच्छे दिमाग़ किस तरह सोच रहे हैं इसकी एक मिसाल सन् 1933 के शिकागो के वर्ल्ड फ़ेलोशिप आफ़ फ़ेथ्स के जलसे में ईसाई पादरी डा. डी. करटिस. डब्लू. रीज़ की तक़रीर थी. उनके कुछ फ़िक़रे हम नीचे देते हैं. उन्होंने कहा कि :—

"राजशाही, लोकशाही और कम्यूनिस्ट तीनों तरह के देशों में एक बड़े पैमाने पर समाज का फिर से संगठन करने की योजना तैयार करने का विचार बढ़ता जा रहा है. लोग

نگاہ سے بھی چوس کر اور راجنیتک نگاہ سے بھی چوس کر اپنی "شاندار سبھیتا" کو قایم رکھا جائے !

یہ سب برائیاں کیول ایک ایسے ویاپک اور ویگیانک دھرم کی مدد سے اور ایک ایسے سماج سنگٹھن کے ذریعہ ہی دور ہو سکتی ہیں جو اِس دھرتی کی ساری مانو جاتی کو اپنے اندر سما سکے۔

دنیا کے راج نیتگیوں اور نیتاؤں کو چاہئے کہ وے کیول 'راشٹریہ' یا نیشنیلسٹ نہ ہوکر 'مانویہ' یعنی 'ہیومینسٹ' ہوں، اور سماج سنگٹھن کی اِس طرح کی یوجنائیں تیار کریں اور دنیا کے سامنے رکھیں، جن میں سب کی سب ضرورتیں پوری ہو سکیں اور سب کے دلوں کو تسلی اور سنتوش مل سکے۔ لوگ نعروں اور فقروں کے چکر میں نہ پڑ کر میل اور سب کے بھلے کی باتیں سوچیں۔ پورب اور پچھم، ایشیا اور یورپ آج ایک دوسرے کے کافی نکٹ آگئے ہیں اور آرہے ہیں۔ دونوں میں کمزوریاں ہیں۔ دونوں میں گن ہیں۔ دنیا کے نیتاؤں کا کام ہے کہ دونوں کی کمزوریوں کو دور کرتے ہوئے دونوں کے گنوں کو چمکاویں اور سب کو سب کے گنوں سے فایدہ اٹھانے کا موقع دیں۔ پرانا پورب اور نیا پچھم دونوں کا آج گٹھ بندھن ہو رہا ہے۔ قدرت دونوں کا آج سنگم چاہتی ہے اور پورا پورا سنگم چاہتی ہے۔ ہمیں اپنی یوجناؤں اور اُن کے عمل سے یہ ثابت کرنا ہے کہ قدرت نے پورب اور پچھم کو نکٹ لا کر غلطی نہیں کی، اور اِن کو نکٹ لانا شیطان کا کام نہیں ہے بلکہ بھلائی کے فرشتے کا کام ہے۔ یہی اِس سمئے دنیا کے سامنے کام کرنے کو ہے۔ یہی ویاوہارک بات ہے، عملی ہے، باقی سب غیر عملی۔

ریل، جہاز، ہوائی جہاز اِن سب نے مل کر بناوٹی راج نیتک سیماؤں کو توڑ دیا ہے۔ سب قوموں کے اچھے سے اچھے لوگ سمجھ رہے ہیں اور کہہ رہے ہیں کہ ہمیں اب دنیا بھر کے ایک سنگٹھن کی اوشیکتا ہے جو ہمیں بربادی سے بچا سکے۔ ایچ۔ جی۔ ویلس نے اپنی کتاب "اے شارٹ ہسٹری آف دی ورلڈ" میں کہا ہے کہ—"پرانے ڈھنگ کے الگ الگ بالکل خود مختار راشٹر اب نہیں چل سکتے۔" دنیا کے نیک اور اچھے دماغ کس طرح سوچ رہے ہیں اِس کی ایک مثال سن 1933 کے شکاگو کے ورلڈ فیلو شپ آف فیتھس کے جلسہ میں عیسائی پادری ڈاکٹر ڈی کرٹس ڈبلو۔ ریز کی تقریر تھی۔ اُن کے کچھ فقرے ہم نیچے دیتے ہیں۔ اُنھوں نے کہا کہ:—

"راج شاہی، لوک شاہی اور کمیونسٹ تینوں طرح کے دیشوں میں ایک بڑے پیمانے پر سماج کا پھر سے سنگٹھن کرنے کی یوجنا تیار کرنے کا وچار بڑھتا جا رہا ہے۔ لوگ

अब दूर तक आगे देखने लगे हैं." इसके बाद जापान, जरमनी, फ्रांस, इंगलैंड, इटली, स्पेन और अमरीका में इस तरह की कोशिशों को बयान करने के बाद डा. रीज़ ने कहा कि :—"इसमें शक नहीं कि राष्ट्रीय योजनाओं के तैयार करने में रूस की योजना और रूस की मिसाल सबसे अधिक चमकती हुई है. यह योजना इन विचारों को सामने रखकर बनाई गई है कि क्या क्या चीज़ें पैदा की जावें, कितनी पैदा की जावें, कब और कहाँ पैदा की जावें और किस क़ीमत पर पैदा की जावें........इसमें कोई अचरज की बात नहीं कि रूस बहुत आगे बढ़ रहा है. रूस का फ़लसफ़ा सामाजिक नियंत्रण का फ़लसफ़ा है यानी समाज पर क़ाबू और समाज का अपने ऊपर क़ाबू. रूस की योजना एक व्यापक योजना है. उसमें हर तफ़सील की तरफ़ ध्यान दिया गया है. इसलिए रूस की कामयाबी में लगभग कोई शक नहीं हो सकता. यह कहना भी बढ़ाकर बात करना न होगा कि रूस में जिस तरह की योजनाएँ बनाई जा रही हैं उनका रंग ढंग और उनका मक़सद धार्मिक (religious) है." आगे चलकर डा. रीज़ ने कहा है कि :—"समाज का मक़सद एक ऐसा समाज क़ायम करना है जिनमें अलग अलग ऊँची नीची जमाअतें न हों (a classless society). यह मक़सद जब सारी दुनिया के लिए लगाया जाय तो अलग अलग जमाअतों के बीच के संघर्ष के कड़वेपन के सामने यह कहीं अधिक शक्तिशाली चीज़ होगा."

जहाँ तक अमीर और ग़रीब और जनम से जात पात का सवाल है वहाँ तक यह बिलकुल ठीक है कि हमें एक ऐसा समाज बनाना है जिसमें इस तरह की जमाअतों का फ़रक़ बिलकुल बाक़ी न रहे. पर दुनिया में सब जगह चार तरह के आदमी, उनके चार तरह के क़ुदरती शौक़ और उनकी चार तरह की क़ाबलियतें बराबर रहेंगी, कुछ विद्या प्रेमी, कुछ हुकूमत प्रेमी, कुछ धन प्रेमी और कुछ केवल सेवा प्रेमी. इस फ़रक़ को अभी न समझ पाना इस समय के रूसी तजरबे की एक मात्र कमी है. इसके कारण ग़लतियाँ भी हो रही हैं. इसलिए काट छाँट भी करनी पड़ रही हैं. पर ख़ुशी की बात है कि उस बड़े तजरबे की सारी पालिसी में सुधार और तब्दीलियाँ भी होती जा रही हैं.

दुनिया के अध्यापकों का फ़र्ज़ है कि इन सब चीज़ों को ठीक ठीक समझें और आइन्दा की नसलों को समझावें.

اب دور تک آگے دیکھنے لگے ہیں ۔ اِس کے بعد جاپان' جرمنی' فرانس' انگلینڈ' اِٹلی' اِسپین اور امریکہ میں اِس طرح کی کوششوں کو بیان کرنے کے بعد ڈاکٹر ریز نے کہا کہ:—"اِس میں شک نہیں کہ راشٹریہ یوجناؤں کے تیار کرنے میں روس کی یوجنا ور روس کی مثال سب سے ادھک چمکتی ہوئی ہے ۔ یہ یوجنا اِن وچاروں کو سامنے رکھکر بنائی گئی ہے کہ کیا کیا چیزیں پیدا کی جاویں' کتنی پیدا کی جاویں' کب اور کہاں پیدا کی جاویں اور کس قیمت پر پیدا کی جاویں...اِس میں کوئی اچرج کی بات نہیں ہے کہ روس بہت آگے بڑھ رہا ہے ۔ روس کا فلسفہ ساماجک نینترن کا فلسفہ ہے یعنی سماج پر قابو اور سماج کا اپنے اُوپر قابو ۔ روس کی یوجنا ایک ویاپک یوجنا ہے ۔ اس میں ہر تفصیل کی طرف دھیان دیا گیا ہے ۔ اِس لئے روس کی کامیابی میں لگ بھگ کوئی شک نہیں ہو سکتا ۔ یہ کہنا بھی بڑھا کر بات کرنا نہ ہوگا کہ روس میں جس طرح کی یوجنائیں بنائی جارہی ہیں اُن کا رنگ ڈھنگ اور اُن کا مقصد دھارمک (Religious) ہے ۔" آگے چل کر ڈاکٹر ریز نے کہا ہے کہ:—"سماج کا مقصد ایک ایسا سماج قایم کرنا ہے جن میں الگ الگ اُونچی نیچی جماعتیں نہ ہوں (a classless society) ۔ یہ مقصد جب ساری دنیا کے لئے لگایا جائے تو الگ الگ جماعتوں کے بیچ کے سنگھرش کے کڑوے پن کے سامنے یہ کہیں ادھک شکتی شالی چیز ہوگا ۔"

جہاں تک امیر اور غریب اور جنم سے جات پات کا سوال ہے وہاں تک یہ بالکل ٹھیک ہے کہ ہمیں ایک ایسا سماج بنانا ہے جس میں اِس طرح کی جماعتوں کا فرق بالکل باقی نہ رہے ۔ پر دنیا میں سب جگہ چار طرح کے آدمی' ان کے چار طرح کے قدرتی شوق اور اُن کی چار طرح کی قابلیتیں برابر رہیں گی' کچھ ودیا پریمی' کچھ حکومت پریمی' کچھ دھن پریمی اور کچھ کیول سیوا پریمی ۔ اِس فرق کو ابھی نہ سمجھ پانا اِس سمئے کے روسی تجربے کی ایک ماتر کمی ہے ۔ اِس کے کارن غلطیاں بھی ہو رہی ہیں ۔ اس لئے کاٹ چھانٹ بھی کرنی پڑ رہی ہے ۔ پر خوشی کی بات ہے کہ اس بڑے تجربے کی ساری پالیسی میں سدھار اور تبدیلیاں بھی ہوتی جا رہی ہیں ۔

دنیا کے ادھیاپکوں کا فرض ہے کہ اِن سب چیزوں کو ٹھیک ٹھیک سمجھیں اور آئندہ کی نسلوں کو سمجھاویں ۔

अकबरी राज के उसूल

डाक्टर ताराचन्द

यूं तो दुनिया की तारीख में बहुत से बड़े राजा हुए हैं जिन्होंने क़ौमों के जीवन पर अपना सिक्का जमाया है. किसी ने लड़ाइयों में देशों को जीत कर बड़े साम्राज क़ायम किए; किसी ने प्रजा की भलाई के काम किए और धन-दौलत को बढ़ाया; किसी ने कलाओं को तरक़्क़ी दी, सुन्दर इमारतें बनवाईं, नहरें और तालाब खुदवाए, नगर बसाए; किसी ने सरकारी संगठन को सुधारा, राजा और प्रजा के सम्बन्धों को मज़बूत किया, न्याय की नींव पर राज का मन्दिर खड़ा किया; और किसी ने लोगों में धर्म का प्रचार किया, इस लोक के साथ परलोक के हित को सँवारा, मेल जोल और प्रेम के रिश्तों को बढ़ाया और आदमियों के चलन पर गहरा असर डाला. पर ऐसे राजा बिरले ही दिखाई देते हैं जिन्होंने इन सब अंगों में काम कर दिखाया हो. इन बिरले राजाओं में अकबर का नाम सबसे ऊँची पाँत में रखने के क़ाबिल है.

अकबर के कामों का ब्योरा लें तो मालूम होता है कि वह सब गुणों से पूरा था. जिस वक़्त उसके बाप की मौत हुई उसकी उम्र तेरह बरस की थी और सिवाय पंजाब के कुछ ज़िलों और देहली के सारा हिन्दुस्तान ग़ैरों के हाथ में था. अकबर चारों तरफ़ दुश्मनों से घिरा हुआ था. उसने अपने अद्भुत बल और कौशल से सब बैरियों को हराया और हिमालय से सतपुड़ा तक सारे देश पर मुग़ल राज क़ायम किया. वह लड़ाई में जिस तेज़ी और बहादुरी से काम करता था उसे देखकर अचम्भा होता है. उसके धावों की ऐसी धाक थी कि दुश्मन उसके नाम से दहलते थे. उसकी जंगी क़ाबलियत की सबसे बड़ी मिसालें 1581 की बग़ावत का दबाना और सरहद्दी सूबों का जीतना है. यह वह साल था जब अकबर की धर्मनीति से कट्टर मुसलमानों में बड़ी हलचल फैली थी. उन्होंने उसके भाई मुहम्मद हकीम को जो काबुल में हाकिम था उकसाया, उधर मुल्ला मुहम्मद यज़्दी ने जो जौनपुर का क़ाज़ी था बादशाह के ख़िलाफ़ फ़तवा दे दिया और बग़ावत को धर्म के अनुकूल ठहराया. बंगाल और बिहार के अफ़सरों ने अकबर के हुक्मों को मानने से इन्कार कर दिया. इस आड़े वक़्त में जब बैर की आग चारों तरफ़ भड़क रही थी और बहुत से मुसलमानों के दिलों में राज के लिए दुबिधा पैदा हो गई थी अकबर ने

اکبری راج کے اُصول

ڈاکٹر تارا چند

یوں تو دنیا کی تاریخ میں بہت سے بڑے راجہ ہوئے ہیں جنھوں نے قوموں کے جیون پر اپنا سکہ جمایا ہے ۔ کسی نے لڑائیوں میں دیشوں کو جیت کر بڑے سامراج قایم کئے؛ کسی نے پرجا کی بھلائی کے کام کئے اور دھن دولت کو بڑھایا؛ کسی نے کلاؤں کو ترقی دی، سندر عمارتیں بنوائیں، نہریں اور تالاب کھدوائے، نگر بسائے؛ کسی نے سرکاری سنگٹھن کو سدھارا، راجہ اور پرجا کے سمبندھوں کو مضبوط کیا، نیائے کی نیو پر راج کا مندر کھڑا کیا؛ اور کسی نے لوگوں میں دھرم کا پرچار کیا، اِس لوک کے ساتھ پرلوک کے ہت کو سنوارا، میل جول اور پریم کے رشتوں کو بڑھایا اور آدمیوں کے چلن پر گہرا اثر ڈالا ۔ پر ایسے راجہ برلے ہی دکھائی دیتے ہیں جنھوں نے اِن سب انگوں میں کام کر دکھایا ہو ۔ اِن برلے راجاؤں میں اکبر کا نام سب سے اُونچی پانت میں رکھنے کے قابل ہے ۔

اکبر کے کاموں کا ویورا لیں تو معلوم ہوتا ہے کہ وہ سب گنوں سے پورا تھا ۔ جس وقت اُس کے باپ کی موت ہوئی اُس کی عمر تیرہ برس کی تھی اور سوائے پنجاب کے کچھ ضلعوں اور دہلی کے سارا ہندستان غیروں کے ہاتھ میں تھا ۔ اکبر چاروں طرف دشمنوں سے گھرا ہوا تھا ۔ اُس نے اپنے ادبھت بل اور کوشل سے سب بیریوں کو ہرایا اور ہمالیہ سے ستپڑا تک سارے دیش پر مغل راج قایم کیا۔ وہ لڑائی میں جس تیزی اور بہادری سے کام کرتا تھا اُسے دیکھکر اچنبھا ہوتا ہے ۔ اُس کے دھاووں کی ایسی دھاک تھی کہ دشمن اُس کے نام سے دہلتے تھے ۔ اُس کی جنگی قابلیت کی سب سے بڑی مثالیں 1581 کی بغاوت کا دبانا اور سرحدی صوبوں کا جیتنا ہے ۔ یہ وہ سال تھا جب اکبر کی دھرم نیتی سے کٹر مسلمانوں میں بڑی ہلچل پھیلی تھی ۔ اُنھوں نے اُس کے بھائی محمد حکیم کو جو کابل میں حاکم تھا اُکسایا، اُدھر ملا محمد یزدی نے جو جونپور کا قاضی تھا بادشاہ کے خلاف فتویٰ دے دیا اور بغاوت کو دھرم کے انوکول ٹھہرایا ۔ بنگال اور بہار کے افسروں نے اکبر کے حکموں کو ماننے سے اِنکار کردیا ۔ اِس آڑے وقت میں جب بیر کی آگ چاروں طرف بھڑک رہی تھی اور بہت سے مسلمانوں کے دلوں میں راج کے لئے دبدھا پیدا ہوگئی تھی اکبر نے

…ती और हिम्मत से काम लिया कि थोड़े ही दिनों ठंडा हुआ, दुश्मनों को पनाह माँगनी पड़ी और …ान क़ायम हो गया.

…तने के आठ बरस बाद अकबर ने हिन्दुस्तान मुल्कों—काश्मीर, अफ़ग़ानिस्तान, सिन्ध, बिलो-…पर इस ख़याल से क़ब्ज़ा करने की ठानी कि इनके …दरिया में उज़बेगों का ज़ोर बढ़ रहा था. ताश के …रह अपनी फ़ौजों को फैला कर उसने ऐसे व्यूह की कि कुछ ही दिनों में सब मुल्कों को अपने राज लिया और हिन्दुस्तान को बाहरी हमला करने …नसूबों से बचाया.

…ी और शूरवीरता की मिसालों से उसका जीवन है. इनमें बहुत-सी बाग़ियों के कुचलने के सम्बन्ध हैं. एक का यहाँ ज़िक्र किया जाता है. अकबर ने गुजरात का सूबा जीता और वहां अपना सूबेदार …या. जब वह लौटकर आगरे आया तो सूबेदार ने …कि अकबर के रिश्तेदारों ने बलवा मचा रखा है …के अमन को बिगाड़ दिया है. अकबर ने ख़बर …यारी शुरू की और 23 अगस्त 1573 के दिन कूच कर दिया. एक एक दिन में ऊँट और घोड़े से पचास पचास मील का सफ़र तै किया और …ल का रास्ता नौ दिन में पूरा कर अहमदाबाद आ …सके साथ कुल 3000 सवारों की फ़ौज थी और …ी तादाद 20,000 से ज्यादा थी. साबरमती के …कबरी नक़्क़ारे की आवाज़ गूंजी तो दुश्मनों को …रज हुआ. उनके मुख़बिरों ने ख़बर दी थी कि दस अकबर फ़तहपुर सीकरी में आराम करता था, यह …कता था कि इतनी जल्दी गुजरात पहुंच जाय! …ाथी नज़र आते थे, न ख़ेमे और न क़नातें. पर साक्षी भी झूट नहीं हो सकती थी. अभी …चम्भे से सम्हले न थे कि अकबर ने ललकारा. न …ी तादाद का विचार किया, न अपने सूबेदार की …आने का. बढ़कर घोड़े को दरिया में डाल दिया …लगा उस पार जा पहुँचा. दुश्मनों की सफ़ों पर …र की तरह धावा किया. इन्हें चीरता फाड़ता बढ़ा …े सरदार को पकड़ लिया. दूसरी फ़ौज जो घात …ी अब उस पर टूट पड़ी. पर उसके सिपाही डर से …ताए कि अकबर के सवारों ने उन्हीं के तरकशों में …काले और उन पर बरसाए. इस फ़ौज का सरदार …ाया और बाग़ियों का ख़ात्मा हो गया.

…कबर बहादुर सिपाही, जोशीला विजेता और …सिपहसालार ही नहीं था जिसने एक विशाल …ी नींव डाली, उसने प्रजा की भलाई की बहुत सी

ایسی چترائی اور ہمت سے کام لیا کہ تھوڑے ہی دنوں میں فساد ٹھنڈا ہوا، دشمنوں کو پناہ مانگنی پڑی اور امن امان قایم ہوگیا .

اِس فتنہ کے آٹھ برس بعد اکبر نے ھندستان کے سرحدی ملکوں—کاشمیر، افغانستان، سندھ، بلوچستان—پر اِس خیال سے قبضہ کرنے کی ٹھانی کہ اِن کے پرے مدھیہ ایشیا میں اُزبیگوں کا زور بڑھ رہا تھا . تاش کے پنکھے کی طرح اپنی فوجوں کو پھیلاکر اُس نے ایسے ویوہ کی رچنا کی کہ کچھ ہی دنوں میں سب ملکوں کو اپنے راج میں ملا لیا اور ھندستان کو باہری حملہ کرنے والوں کے منصوبوں سے بچایا .

مستعدی اور شور ویرتا کی مثالوں سے اُس کا جیون بھرا ہوا ھے . اِن میں بہت سی باغیوں کے کچلنے کے سمبندھ میں ملتی ھیں . ایک کا یہاں ذکر کیا جاتا ھے . اکبر نے 1572 میں گجرات کا صوبہ جیتا اور وھاں اپنا صوبیدار مقرر کیا . جب وہ لوٹکر آگرے آیا تو صوبیدار نے خبر دی کہ اکبر کے رشتہ داروں نے بلوہ مچا رکھا ھے اور صوبہ کے امن کو بگاڑ دیا ھے . اکبر نے خبر پاتے ہی تیاری شروع کی اور 23 اگست 1573 کے دن آگرے سے کوچ کردیا. ایک ایک دن میں اُونٹ اور گھوڑے کی سواری سے پچاس پچاس میل کا سفر طے کیا اور چھ سو میل کا راستہ نو دن میں پورا کر احمدآباد آدھمکا . اُس کے ساتھ دل 3000 سواروں کی فوج تھی اور دشمنوں کی تعداد 20,000 سے زیادہ تھی . سابرمتی کے کنارے اکبری نقارے کی آواز گونجی تو دشمنوں کو بڑا اچرج ہوا . اُن کے مخبروں نے خبر دی تھی کہ دس روز پہلے اکبر فتحپور سیکری میں آرام کرتا تھا، یہ کیسے ھوسکتا تھا کہ اِتنی جلدی گجرات پہونچ جائے ! نہ شاہی ھاتھی نظر آتے تھے، نہ خیمے اور قناتیں . پر کانوں کی ساکشی بھی جھوٹ نہیں ھوسکتی تھی . ابھی دشمن اچنبھے سے سنبھلے نہ تھے کہ اکبر نے للکارا . نہ دشمن کی تعداد کا وچار کیا، نہ اپنے صوبیدار کی کمک کے آنے کا . بڑھکر گھوڑے کو دریا میں ڈال دیا اور اِیڑ لگا اُس پار جا پہونچا . دشمنوں کی صفوں پر خونخوار شیر کی طرح دھاوا کیا . اُنھیں چیرتا پھاڑتا بڑھا اور اُن کے سردار کو پکڑ لیا . دوسری فوج جو گھات میں لگی تھی اب اُس پر ٹوٹ پڑی . پر اُس کے سپاھی ڈر سے ایسے بوکھلائے کہ اکبر کے سواروں نے اُنھیں کے ترکشوں میں سے تیر نکالے اور اُن پر برسائے . اِس فوج کا سردار بھی بھاگ گیا اور باغیوں کا خاتمہ ہوگیا .

پر اکبر بہادر سپاھی، جوشیلا وجیتا اور بدھیمان سپہسالار ہی نہیں تھا جس نے ایک وشال سامراج کی نیو ڈالی، اُس نے پرجا کی بھلائی کی بہت سی

तजवीज़ें कीं. हिन्दुस्तान खेती प्रधान देश है. अकबर ने ज़मीन के बन्दोबस्त के लिए टोडरमल की मदद से ऐसी तरकीबें कीं कि काश्तकारों पर सख़्ती न हो और सरकारी मालगुज़ारी भी आसानी से वसूल हो जाय. उसे आबादी बढ़ाने और खेती की तरक़्क़ी की सदा लगन रहती थी. उसके ज़माने में दस्तकारी में ख़ूब उन्नति हुई, उसके कारख़ानों में अच्छे से अच्छे कारीगर रहते थे और वह कलावन्तों के गुणों का बड़ा गाहक था. हिन्दुस्तान के बने माल की सारी दुनिया में क़दर होती थी. एशिया और यूरोप के सभी देशों से व्यापारी तिजारत के लिए आते थे. हिन्दुस्तानी सेठ और साहूकार, दुनिया के लखपतियों का मुक़ाबला करते थे. दूध, घी और अनाज की इतनी बहुतात थी कि उस ज़माने में जितने यात्री यूरोप से यहां आये सभी ने इनके सस्तेपन की गवाही दी है. इसी से रिआया सुखी और ख़ुशहाल थी.

अकबर को सरकारी इन्तज़ाम के मामलों में जैसी सूझबूझ थी उसका अंदाज़ा उसके फ़ौजी और दीवानी संगठन से हो सकता है. यह संगठन अकबर के वक़्त में क़ायम हुआ पर आज भी क़रीब पौने चार सौ बरस बीतने पर उसकी रूपरेखा बनी है. अंग्रेज़ों को इस बात का घमंड है कि उनकी क़ौम ने रियासती इन्तज़ाम में दुनिया को राह दिखलाई है. पर उन्होंने भी हिन्दुस्तान में अकबरी बुनियादों पर ही अपनी हुकूमत की इमारत खड़ी की. जैसा ढांचा कुल हिन्द सूबों और सरकारों की हुकूमत का उस वक़्त बना था उसी की नक़ल थोड़े बदले रूप में आज भी दिखाई देती है. अकबर के मनसबदारी संगठन की जगह सिविल सर्विस ने ली है, फ़र्क़ इतना ही है कि आज फ़ौजी और दीवानी काम बिल्कुल अलग कर दिए गए हैं, उस ज़माने में वह मिले थे और एक ही अफ़सर के अख़्तियार में थे. जिस तरह बादशाह और उसके वज़ीर सारे देश की देखभाल करते थे उसी तरह वाइसरॉय और उसकी इन्तज़ामी कौंसिल (एक्ज़ीक्यूटिव कौंसिल) मुल्क पर हुकूमत करते थे. एक बात में अकबर की हुकूमत को आजकल की हुकूमत पर तरजीह थी. अकबर और उसके वज़ीर हिन्दुस्तानी थे. अकबर ने कई बार हिन्दुओं को सब से ऊंचे ओहदों पर नियत किया. अंग्रेज़ी राज के डेढ़ सौ बरस बीतने पर भी बागडोर अंग्रेज़ों के ही हाथ में रही. अंग्रेज़ न ख़ुद हिन्दुस्तानी बने, न उन्होंने हिन्दुस्तानियों को अपनाया और न अपने बराबर माना.

अगर कला, संगीत, कविता, साइंस और फ़लसफ़े की तरफ़ ध्यान दें तो मालूम होता है कि अकबर ने इनकी ऐसी दिल खोलकर सेवा की और इनका ऐसी उदारता के साथ पालन पोषण किया कि हर तरफ़ अनोखी तरक़्क़ी, हर फ़न में अजीब चमाचमी दिखाई देने लगी. चित्रकला में उसने

تجویزیں کیں ۔ ہندستان کھیتی پردھان دیش ہے ۔ اکبر نے زمین کے بندوبست کے لئے ٹوڈرمل کی مدد سے ایسی ترکیبیں کیں کہ کاشتکاروں پر سختی نہ ہو اور سرکاری مالگذاری بھی آسانی سے وصول ہوجائے ۔ اُسے آبادی بڑھانے اور کھیتی کی ترقی کی سدا لگن رہتی تھی ۔ اُس کے زمانے میں دستکاری میں خوب اُنتی ہوئی، اُس کے کارخانوں میں اچھے سے اچھے کاریگر رہتے تھے اور وہ کلاونتوں کے گنوں کا بڑا گاہک تھا ۔ ہندستان کے بنے مال کی ساری دنیا میں قدر ہوتی تھی ۔ ایشیا اور یورپ کے سبھی دیشوں سے بیاپاری تجارت کے لئے آتے تھے ۔ ہندستانی سیٹھ اور ساہوکار دنیا کے لکھپتیوں کا مقابلہ کرتے تھے ۔ دودھ، گھی اور اناج کی اِتنی بہوتات تھی کہ اُس زمانے میں جتنے یاتری یورپ سے یہاں آئے سبھی نے اِن کے سستے پن کی گواہی دی ہے ۔ اِسی سے رعایا سکھی اور خوشحال تھی ۔

اکبر کو سرکاری اِنتظام کے معاملوں میں جیسی سوجھ بوجھ تھی اُس کا اندازہ اس کے فوجی اور دیوانی سنگٹھن سے ہو سکتا ہے ۔ یہ سنگٹھن اکبر کے وقت میں قایم ہوا پر آج بھی قریب پونے چار سو برس بیتنے پر اُس کی روپ ریکھا بنی ہے ۔ انگریزوں کو اِس بات کا گھمنڈ ہے کہ اُن کی قوم نے ریاستی اِنتظام میں دنیا کو راہ دکھلائی ہے ۔ پر اُنہوں نے بھی ہندستان میں اکبری بنیادوں پر ہی اپنی حکومت کی عمارت کھڑی کی ۔ جیسا ڈھانچہ کل ہند صوبوں اور سرکاروں کی حکومت کا اُس وقت بنا تھا اُسی کی نقل تھوڑے بدلے روپ میں آج بھی دکھائی دیتی ہے ۔ اکبر کے منصبداری سنگٹھن کی جگہ سول سروس نے لی ہے، فرق اِتنا ہی ہے کہ آج فوجی اور دیوانی کام بالکل الگ کردئیے گئے ہیں، اُس زمانہ میں وہ ملے تھے اور ایک ہی افسر کے اختیار میں تھے ۔ جس طرح بادشاہ اور اُس کے وزیر سارے دیش کی دیکھ بھال کرتے تھے اُسی طرح وایسرائے اور اُس کی انتظامی کونسل (ایگزیکیوٹو کونسل) ملک پر حکومت کرتے تھے ۔ ایک بات میں اکبر کی حکومت کو آجکل کی حکومت پر ترجیح تھی ۔ اکبر اور اُس کے وزیر ہندستانی تھے ۔ اکبر نے کئی بار ہندؤں کو سب سے اُونچے عہدوں پر نیت کیا ۔ انگریزی راج کے ڈیڑھ سو برس بیتنے پر بھی باگڈور انگریزوں کے ہی ہاتھ میں رہی ۔ انگریز نہ خود ہندستانی بنے، نہ اُنہوں نے ہندستانیوں کو اپنایا اور نہ اپنے برابر مانا ۔

اگر کلا، سنگیت، کویتا، سائنس اور فلسفے کی طرف دھیان دیں تو معلوم ہوتا ہے کہ اکبر نے اُن کی ایسی دل کھول کر سیوا کی اور اِن کا ایسی اُدارتا کے ساتھ پالن پوشن کیا کہ ہر طرف انوکھی ترقی، ہر فن میں عجیب چماچمی دکھائی دینے لگی ۔ چتر کلا میں اُس نے

एक नए ढंग की ईजाद की जिसमें ईरानी और हिन्दू तर्ज़ को ऐसा समोया कि एक नया और अनूठा ढंग पैदा होगया. बेहज़ाद और अजंता को एक साँचे में ढालकर हिन्दुस्तानी क़लम का खूबसूरत तर्ज़ पैदा किया. इस तर्ज़ के उस्ताद ख़्वाजा अब्दुस्समद शीरीं क़लम, दसवंत और बसावन थे. इमारत की कला में यही बात पैदा की. इसलामी और हिन्दू तरीक़ों को इस खूबी से मिलाया कि एक नया शानदार तर्ज़ बन गया. फ़तेहपुर सीकरी में इस तरह की इमारतों के नमूने आज भी अकबर के खूबसूरती के सुपने के निशान दिखाते हैं. संगीत में तानसेन और बाबा हरिदास के नाम अकबरी दरबार की याद सदा जिन्दा रखेंगे. अदब के मैदान में जिधर निगाह उठाकर देखिये अकबर के फ़ैज़ की तस्वीरें सामने आती हैं. सूरदास, हरिदास, गङ्ग भट्ट, नरहरि, परमानन्द, माधो, रहीम, ब्रजभाषा के कवि; विट्ठल, कृष्णदास, गङ्गाधर, नृसिंह, भानुचन्द, सिद्धचन्द, नारायण भट्ट, नीलकंठ, कालिदास संस्कृत के विद्वान उसके आश्रय में रहते थे. फ़ारसी के शायर, तारीख़दाँ, नजूमी, अदीब, फ़लसफ़ी बड़ी तादाद में इनाम इकराम और तनख़्वाहें पाते थे. हिन्दू मुसलमानों में मेलजोल पैदा करने के लिये बादशाह ने संस्कृत की पुस्तकों के फ़ारसी में तर्जुमे करवाये. इस सिलसिले में अथर्व वेद, महाभारत, हरिवंश, भगवद्गीता, रामायण, योग वसिष्ट, भागवत, विष्णु पुराण वग़ैरा के तर्जुमे हुए. अबुल फ़ज़्ल ने महाभारत के तर्जुमे के दीबाचे में इस नीति का ज़िक्र किया है. वह कहता है—

"चूँ ब दरयाफ़्ते कामिल ख़ुद निज़ाए फ़िरायक़े मिल्लते मुहम्मदी व यहूद व हनूद रा बेश्तर याफ़्त व इन्कार यक-दीगर ज़्यादह अज़ अन्दाज़ह मालूम शुद, ख़ातिरे नुक्तादाँ बराँ क़रार याफ़्त कि कुतूबे मुअ्तबरए तारफ़ीन ब ज़बाने मुख़ालिफ़ तरजुमह करदह आयद ता हर दो फ़रीक़ ब बर-कते अन्फ़ासे क़ुदसीए हज़रते अकमल-उल-ज़मानी अज़ तअन्नत व इनाद बरआमदह जूयाए हक़ शवन्द, व बर महासन व अयूबे यक दीगर इत्तिला याफ़्तह दर इसलाह अहवाल ख़ुद मसाई जमीलह नुमायन्द."

"अर्थात्—पूरी तरह से छानबीन करने पर जब यह मालूम हुआ कि मुसलमान, यहूदी और हिन्दू धर्म के लोगों में बहुत झगड़े हैं और वह एक दूसरे की बातों को बहुत ज़्यादा उलटते हैं तो बादशाह ने, जो इन मामलों को ख़ूब समझते हैं, दिल में यह निश्चय किया कि इन सम्प्रदायों की विश्वासी पुस्तकों का एक दूसरे की भाषा में तर्जुमा कराया जाय ताकि सब दलों के लोग बादशाह की मेहरबानी की वजह से झगड़े और लड़ाई से हटकर सच की तलाश में लगें और एक दूसरे के धर्म की अच्छाइयों और बुराइयों को जानकर अपनी हालत के सुधारने में पूरी-पूरी कोशिश करें."

ایک نئے ڈھنگ کی ایجاد کی جسمیں ایرانی اور ہندو طرز کو ایسے سمویا کہ ایک نیا اور انوٹھا ڈھنگ پیدا ہو گیا۔ بہزاد اور اجنتا کو ایک سانچے میں ڈھال کر ہندستانی قلم کا خوبصورت طرز پیدا کیا۔ اِس طرز کے اُستاد خواجہ عبدالصمد شیریں قلم، دسونت اور بساون تھے۔ عمارت کی کلا میں یہی بات پیدا کی۔ اِسلامی اور ہندو طریقوں کو اِس خوبی سے ملایا کہ ایک نیا شاندار طرز بن گیا۔ فتح پور سیکری میں اِس طرح کی عمارتوں کے نمونے آج بھی اکبر کے خوبصورتی کے سپنے کے نشان دکھاتے ھیں۔ سنگیت میں تان سین اور بابا هریداس کے نام اکبری دربار کی یاد سدا زندہ رکھیں گے۔ ادب کے میدان میں اِن میں جدھر نگاہ اُٹھا کر دیکھئے اکبر کے فیض کی تصویریں سامنے آتی ھیں۔ سورداس، هریداس، گنگ بھٹ، نرهری، پرمانند، مادھو، رحیم، برج بھاشا کے کوی؛ وٹھل، کرشن داس، گنگا دھر، نرسنگھ، بھانو چند، سدھ چند، نارائن بھٹ، نیل کنٹھ، کالیداس سنسکرت کے ودوان اُس کے آشرے میں رہتے تھے۔ فارسی کے شاعر، تاریخ داں، نجومی، ادیب، فلسفی بڑی تعداد میں اِنعام اکرام اور تنخواھیں پاتے تھے۔ ھندو مسلمانوں میں میل جول پیدا کرنے کے لئے بادشاہ نے سنسکرت کی پستکوں کے فارسی میں ترجمے کروائے۔ اِس سلسلہ میں اتھرو وید، مہا بھارت، هری ونش، بھگودگیتا، راماین، یوگ وسشٹ، بھاگوت، وشنو پران وغیرہ کے ترجمے ہوئے۔ ابوالفضل نے مہابھارت کے ترجمے کے دیباچے میں اِس نیتی کا ذکر کیا ھے۔ وہ کہتا ھے:—

"چوں بہ دریافت کامل خود نزاع فرایق ملت محمدی و یہود و ہنود را بیشتر یافت و اِنکار یک دیگر از اندازہ معلوم شد، خاطر نکتہ داں براں قرار یافت کہ کتوب معتبرۂ طارفین بہ زبان مخالف ترجمہ کردہ آید تا ہردو فریق بہ برکت اِنفاس قدسئے حضرت اکمل الزمانی از طعنت وانعاد برآمادہ جویائے حق شوند، و برمحاسن و عیوب یک دیگر اطلاع یافتہ در اصلاح احوال خود مساعی جمیلہ نمایند۔"

ارتھات—"پوری طرح سے چھان بین کرنے پر جب یہ معلوم ھوا کہ مسلمان، یہودی اور ھندو دھرم کے لوگوں میں بہت جھگڑے ھیں اور وہ ایک دوسرے کی باتوں کو بہت زیادہ اُلٹتے ہیں تو بادشاہ نے، جو اِن معلوں کو خوب سمجھتے ھیں، دل میں یہ نشچے کیا کہ اِن سمپردایوں کی وشواسی پستکوں کا ایک دوسرے کی بھاشا میں ترجمہ کرایا جائے تاکہ سب دلوں کے لوگ بادشاہ کی مہربانی کی وجہ سے جھگڑے اور لڑائی سے ھٹ کر سچ کی تلاش میں لگیں اور ایک دوسرے کے دھرم کی اچھائیوں اور برائیوں کو جان کر اپنی حالت کے سدھارنے میں پوری پوری کوشش کریں۔"

अकबर ने धर्म के बखेड़ों का अन्त करने के लिये ही उस नीति का सहारा लिया जिसे सुलह कुल (ऐक्य, शान्ति) का नाम देते हैं. उसके दिल में सब धर्मों के लिए आदर था. वह रात रात भर जैनियों, हिन्दुओं, शीओं, ईसाइयों के पण्डितों से धर्म की बात चीत करता था, सच की खोज में लगा रहता था. पर उसका मन सिर्फ़ खोज करने वाले विद्यार्थी का सा न था. वह एक अनुभवी आदमी था जिसकी आत्मा परं ज्योति के दर्शनों की भूकी थी. उसे इस तलाश में कामयाबी भी हुई और उसने देख लिया कि बाहरी आडम्बरों की अनेकताओं के भीतर एक तत्त्व है जो सब में एकसा झलकता है और सब धर्मों के मानने वाले अपनी अपनी रीत से इसकी ही खोज करते हैं. इस उसूल पर पहुंच कर अकबर ने एक सम्प्रदाय की बुनियाद डाली जिसका मक़सद तौहीदे इलाही (ईश्वर की एकता) का फैलाना था. इसे दीने इलाही के नाम से पुकारते हैं. यह कोइ नया धर्म नहीं था. धर्मों की एकता ही इसका असली सिद्धान्त था.

ग़रज़ यह कि समाज के जीवन का कोई पहलू न था जिस पर अकबर ने गहरा असर न डाला हो. इसी सबब से उसका पाया दुनिया के बड़े बादशाहों में ऊँचा है और इस बात की जरूरत है कि उसके राज के उसूलों को समझने की कोशिश की जाए. किसी राज के बुनियादी उसूलों को जानने के लिए चाहिए कि राज और समाज का मतलब और सम्बन्ध समझ लिया जाए. समाज से मामूली तौर पर आदमियों के एक गिरोह से मतलब लिया जाता है. गिरोह बनाकर रहना आदमी का स्वभाव है. इसकी वजह यह है कि आदमी की जरूरतें बिना गिरोहबन्दी के पूरी नहीं हो सकतीं. आदमी का निजी जीवन, खाना पीना, सन्तान और उसकी रक्षा बिना आपस की मदद के मुमकिन नहीं. फिर आदमी भाव और प्रवृत्तियों का पुतला है. इनके पूरा करने में ही उसकी जिन्दगी की सफलता है. संसार की वस्तुएं उसे अपनी तरफ़ खींचती हैं, और उन्हें अपनाने के लिये वह उनके पीछे दौड़ता है. गर्मी, बरसात और ठंड से बचना, अमन से रहना, ख़तरे से घबराना उसे घर बनाने पर मजबूर करते हैं. आदमी स्वभाव से लड़ाका, साहसी, आगे चलने वाला है. इसी से फ़ौजें बनाता है. शिकार खेलता है, दुनिया के जंगल पहाड़ों को खूंदता है और लोगों का नेता बनता है. एक तरफ़ उसमें घमंड, मान, दिखावा है तो दूसरी तरफ़ बन्दगी, बेचारगी, विनय. कभी कभी अपने धन को शान शौक़त में धुंए की तरह उड़ाता है और कभी नगर और बस्ती से मुंह मोड़ निर्जन जंगलों में उम्र बिताता है. भूक, प्यास, बदन का रखाव, औलाद यह ऐसी जरूरतें हैं जिनके पूरा किए बिना उसका जीना दूभर है.

اکبر نے دھرم کے بکھیڑوں کا انت کرنے کے لئے ہی اُس نیتی کا سہارا لیا جسے صلح کل (ایکیہ، شانتی) کا نام دیتے ہیں . اُس کے دل میں سب دھرموں کے لئے آدر تھا . وہ رات رات بھر جینیوں، ہندؤں شیعوں، عیسائیوں کے پنڈتوں سے دھرم کی بات چیت کرتا تھا، سچ کی کھوج میں لگا رہتا تھا . پر اُس کا من صرف کھوج کرنے والے ودیارتھی کا سا نہ تھا . وہ ایک انبھوی آدمی تھا جس کی آتما پرم جیوتی کے درشنوں کی بھوکی تھی . اُسے اس تلاش میں کامیابی بھی ہوئی اور اُس نے دیکھ لیا کہ باہری آڈمبروں کی انیکتاؤں کے بھیتر ایک تتو ہے جو سب میں ایکسا جھلکتا ہے اور سب دھرموں کے ماننے والے اپنی اپنی ریت سے اِس کی ہی کھوج کرتے ہیں . اِس اُصول پر پہونچ کر اکبر نے ایک سمپردائے کی بنیاد ڈالی جس کا مقصد توحیدالٰہی (ایشور کی ایکتا) کا پھیلانا تھا . اسے دین الٰہی کے نام سے پکارتے ہیں . یہ کوئی نیا دھرم نہیں تھا . دھرموں کی ایکتا ہی اِس کا اصلی سدھانت تھا .

غرض یہ کہ سماج کے جیون کا کوئی پہلو نہ تھا جس پر اکبر نے گہرا اثر نہ ڈالا ہو . اِسی سبب سے اُس کا پایہ دنیا کے بڑے بادشاہوں میں اُونچا ہے اور اِس بات کی ضرورت ہے کہ اُس کے راج کے اُصولوں کو سمجھنے کی کوشش کی جائے . کسی راج کے بنیادی اُصولوں کو جاننے کے لئے چاہئے کہ راج اور سماج کا مطلب اور سمبندھ سمجھ لیا جائے . سماج سے معمولی طور پر آدمیوں کے ایک گروہ سے مطلب لیا جاتا ہے . گروہ بنا کر رہنا آدمی کا سبھاؤ ہے . اِس کی وجہہ یہ ہے کہ آدمی کی ضرورتیں بنا گروہ بندی کے پوری نہیں ہو سکتیں . آدمی کا نجی جیون، کھانا پینا، سنتان اور اُس کی رکشا بنا آپس کی مدد کے ممکن نہیں . پھر آدمی بھاؤ اور پرورتیوں کا پتلا ہے . اِن کے پورا کرنے میں ہی اُس کی زندگی کی سپھلتا ہے . سنسار کی وستوئیں اُسے اپنی طرف کھینچتی ہیں، اور اُنھیں اپنانے کے لئے وہ اُن کے پیچھے دوڑتا ہے . گرمی، برسات اور ٹھنڈ سے بچنا، امن سے رہنا، خطرے سے گھبرانا اُسے گھر بنانے پر مجبور کرتے ہیں . آدمی سوبھاؤ سے لڑاکا، ساہسی، آگے چلنے والا ہے . اِسی سے فوجیں بناتا ہے، شکار کھیلتا ہے، دنیا کے جنگل پہاڑوں کو کھوندتا ہے اور لوگوں کا نیتا بنتا ہے . ایک طرف اُس میں گھمنڈ، مان، دکھاوا ہے تو دوسری طرف بندگی، بے چارگی، ونئے . کبھی کبھی دھن کو شان شوکت میں دھوئیں کی طرح اُڑاتا ہے اور کبھی نگر اور بستی سے منھ موڑ نرجن جنگلوں میں عمر بتاتا ہے . بھوک، پیاس، بدن کا رکھاؤ، اولاد یہ ایسی ضرورتیں ہیں جن کے پورا کئے بنا اُس کا جینا دوبھر ہے .

पर आदमी निरा-भाव का बन्दा नहीं है. उसमें अक़्ल, बुद्धि, समझ की रोशनी है जो उसे जानवरों से अलहदा करती है. उसके सब काम क़ुदरत के क़ानूनों के साथ-साथ अक़्ल के क़ानूनों के मातहत हैं. उसे भूक लगती है तो वह जानवरों की तरह अपना पेट भर कर ख़ुश नहीं होता. उसे गर्मी या ठंड सताती है तो वह पानी में बैठकर या खोहों में छुपकर अपनी ज़रूरतों को पूरा नहीं करता. ख़ाहिशों के पूरा करने में वह वक़्त का ग़ुलाम नहीं, वह दूर की बात सोचता है, आगा पीछा देखकर नतीजों पर ग़ौर करने के बाद कार्रवाई करता है. बुद्धि उसकी प्रवृत्तियों को एक सूत में बाँधने और उनमें ज़ाबता क़ायम करने की तरफ़ झुकाती है. यही वजह है कि वह अपने और दूसरों के फ़ायदों को मिलाकर ऊँचे आदर्श बनाता है और उन्हें हासिल करने के जतन करता रहता है.

जिस एक गिरोह के ज़रिये से आदमी अपनी ज़िन्दगी की इन ज़रूरतों को एकसां आदर्शों को सामने रखते हुए पूरा करते हैं उसी को समाज कहते हैं. समाज की असलियत उसकी एकता में है. जब तक वह एकता क़ायम है समाज ज़िन्दा है. समाज टूट कर छोटे टुकड़ों में बँट गया या दूसरे समाजों से मिल गया तो उससे नया समाज पैदा होगा और उसके असली निजी जीवन का अंत हो जायगा. अपने जीवन की यात्रा पूरी करने के लिए समाज को क़ायदे क़ानूनों की ज़रूरत होती है. रीति रिवाज और धर्म बनाने पड़ते हैं. क़ानूनों को व्यौहार में लाने के लिए राज बनते हैं. जब समाज के अपने बनाए क़ानूनों का राज पालन करता है तो उसे स्वराज कहते हैं, लेकिन जब राज ऐसे क़ानून चलाता है जो समाज ने नहीं बनाए हैं तो वह राज परराज और वह समाज पराधीन समाज कहलाते हैं.

हमारा हिन्दुस्तान एक महान देश है जिसका बड़ा भारी विस्तार है. यह बहुत पुराने ज़माने से अनेक समाजों का घर रहा है. पर इसके इतिहास में जो ख़ासियत साफ़ तौर पर झलकती है वह अनेकताओं को मिटा कर एकता की तरफ़ बढ़ने का झुकाव है. हमारे देश में समय समय पर बहुत सी नसलों के गिरोह आए जो फ़िर्क़ों और बंशों में बटे हुए थे. पहले आर्यों की कई शाखें आईं जो देश के अलग अलग हिस्सों में बसीं. उसके अलग अलग राज क़ायम हुए. आर्यों के दो बंश मशहूर थे, सूर्य बंश और चन्द्र बंश, फिर इनकी शाखों का नाम चला जैसे चन्द्र बंशियों के यदु, तुर्वस, द्रुह्यु, अनु पुरु, सूर्य बंशियों में कोशलों की चर्चा सबसे ज़्यादा हुई. इस पुराने वक़्त में इन नामों से अलग अलग गिरोह समझे जाते थे. इन गिरोहों को जन कहते थे. बाद में जिन देशों में यह जन बसे उनके नाम पर राज्य क़ायम हुए और यह जनपद कहलाए. जिस वक़्त गौतम बुद्ध ने

پر آدمی نرا بھاؤ کا بندہ نہیں ہے۔ اُس میں عقل، بدھی، سمجھ کی روشنی ہے جو اُسے جانوروں سے علیحدہ کرتی ہے۔ اُس کے سب کام قدرت کے قانونوں کے ساتھ ساتھ عقل کے قانونوں کے ماتحت ہیں۔ اُسے بھوک لگتی ہے تو وہ جانوروں کی طرح اپنا پیٹ بھر کر خوش نہیں ہوتا۔ اُسے گرمی یا ٹھنڈ ستاتی ہے تو وہ پانی میں بیٹھ کر یا کھوہوں میں چھپ کر اپنی ضرورتوں کو پورا نہیں کرتا۔ خواہشوں کے پورا کرنے میں وہ وقت کا غلام نہیں، وہ دور کی بات سوچتا ہے، آگا پیچھا دیکھ کر نتیجوں پر غور کرنے کے بعد کار روائی کرتا ہے۔ بدھی اُس کی پرورتیوں کو ایک سوت میں باندھنے اور اُن میں ضابطہ قایم کرنے کی طرف جھکاتی ہے۔ یہی وجہہ ہے کہ وہ اپنے اور دوسروں کے فائدوں کو ملا کر اُونچے آدرش بناتا ہے اور اُنہیں حاصل کرنے کے جتن کرتا رہتا ہے۔

جس ایک گروہ کے ذریعہ سے آدمی اپنی زندگی کی اِن ضرورتوں کو ایکساں آدرشوں کو سامنے رکھتے ہوئے پورا کرتے ہیں اُسی کو سماج کہتے ہیں۔ سماج کی اصلیت اُس کی ایکتا میں ہے۔ جب تک وہ ایکتا قایم ہے سماج زندہ ہے۔ سماج ٹوٹ کر چھوٹے ٹکڑوں میں بٹ گیا یا دوسرے سماجوں سے مل گیا تو اُس سے نیا سماج پیدا ہوگا اور اُس کے اصلی نجی جیون کا انت ہو جائیگا۔ اپنے جیون کی یاترا پوری کرنے کے لئے سماج کو قایدے قانونوں کی ضرورت ہوتی ہے، ریتی رواج اور دھرم بنانے پڑتے ہیں۔ قانونوں کو بیوہار میں لانے کے لئے راج بنتے ہیں۔ جب سماج کے اپنے بنائے قانونوں کا راج پالن کرتا ہے تو اُسے سوراج کہتے ہیں، لیکن جب راج ایسے قانون چلاتا ہے جو سماج نے نہیں بنائے ہیں تو وہ راج پرراج اور وہ سماج پرادھین سماج کہلاتے ہیں۔

ہمارا ہندستان ایک مہان دیش ہے جس کا بڑا بھاری وستار ہے۔ یہ بہت پرانے زمانے سے انیک سماجوں کا گھر رہا ہے۔ پر اس کے اِتہاس میں جو خاصیت صاف طور پر جھلکتی ہے وہ انیکتاؤں کو مٹا کر ایکتا کی طرف بڑھنے کا جھکاؤ ہے۔ ہمارے دیش میں سمے سمے پر بہت سی نسلوں کے گروہ آئے جو فرقوں اور بنشوں میں بٹے ہوئے تھے۔ پہلے آریوں کی کئی شاخیں آئیں جو دیش کے الگ الگ حصوں میں بسیں۔ اُس کے الگ الگ راج قایم ہوئے۔ آریوں کے دو ونش مشہور تھے، سوریہ ونش اور چندر ونش، پھر اِن کی شاخوں کا نام چلا جیسے چندر ونشیوں کے یدو، تروس، درتھیو، انو، پرو۔ سوریہ ونشیوں میں کوشلوں کی چرچا سب سے زیادہ ہوئی۔ اِس پرانے وقت میں اِن ناموں سے الگ الگ گروہ سمجھے جاتے تھے۔ اِن گروہوں کو جن کہتے تھے۔ بعد میں جن دیشوں میں یہ جن بسے اُن کے نام پر راجیہ قایم ہوئے اور یہ جن پد کہلائے۔ جس وقت گوتم بدھ نے

अपने धर्म का प्रचार किया. उत्तरी हिन्दुस्तान में सोलह महान जनपद थे. मौर्य वंश के बादशाहों ने इन्हें एक छत्र की छाया के नीचे जमा किया और एक बड़ा साम्राज क़ायम किया. यह हिन्दुस्तान की तारीख़ में पहला मौक़ा था कि क़रीब कुल हिन्द एक रिश्ते में बंधा.

मौर्यों की ताक़त घटी तो हिन्दुस्तान पर पच्छिम उत्तर से नए हमले होने लगे. शक और कुशन जातियों ने देश में डेरा जमाया. इन जातियों को हिन्दुस्तानी बना कर देश ने एक नए साम्राज को जन्म दिया. इसके बनाने वाले समुद्र गुप्त और चन्द्रगुप्त थे. गुप्त वंश के सुनहरे युग की इमारत मेल की बुनियाद पर रखी गई. गुप्तों के बाद पांचवीं सदी ईस्वी में हुणों, गूर्जरों, जाटों और और जातियों ने हमारे देश में पैर रखा. इनके आने से बड़ी उथल पुथल मची. पुराने और नए समाजों का ऐसा मंथन हुआ कि सभ्यता के सभी अंगों में नयापन आ गया. इन नए समाजों का वर्धनों और राजपूत वंशों ने राज्य के रूप में संगठन किया.

जब राजपूतों में कमज़ोरी आई तो ग्यारहवीं सदी से तुर्कों के हमले शुरू हुए और तेरहवीं सदी में इसलामी राज का झंडा देश पर फहराने लगा. अब तक जो लोग हिन्दुस्तान में आए थे उन्होंने यहां के धर्म और सभ्यता को क़ुबूल किया था. पर तुर्क अपने साथ एक ज़बरदस्त धर्म और अनोखी सभ्यता लाए और इन्होंने देश के सामने एक नया सवाल खड़ा कर दिया. पर हिन्दुस्तान की आत्मा जो मेल और एकता के उसूलों में बसी है इस सवाल से घबराई नहीं और उसने अनेकता को मिटाने और इन्सानियत को पैदा करने का अमल शुरू कर दिया.

अकबर के ज़माने तक इस अमल का बहुत कुछ असर हो चुका था. अकबर का पुरखा तैमूर 1398 में हिन्दुस्तान में आया था और उसने बहाना ही यह निकाला था कि हिन्दुस्तान के मुसलमान अपने मज़हब और तहज़ीब से दूर चले गए थे. अकबर के बाबा बाबर ने हिन्दुस्तान में जो ढंग देखा उसके बारे में लिखता है :—

"हिन्दुस्तान, यह एक अजनबी मुल्क है. हमारी विलायत से दूर दुनिया है. पहाड़, दरिया, जंगल, जानवर, नबातात, आदमी, ज़बान, हवा और मेंह सब और हैं. अगरचे काबुल के इलाक़ेजात में से गर्म सीर बाज़ चीज़ों में हिन्दुस्तान से मुशाबह है और बाज़ में नहीं है, मगर दरियाए सिंध के इधर आते ही ज़मीन, दरख़्त, पत्थर, क़ौमें, और इनके राहो रस्म सब हिन्दुस्तानी तरीक़ की." (तुज़ुके बाबरी)

इस हिन्दुस्तानी तरीक़, हिन्दुस्तानी चाल ढाल, रीति रिवाज को अकबर ने बड़ी चतुराई और दूरअन्देशी से बढ़ाया. उसने अपने राज को इसी बुनियादी उसूल पर

اپنے دھرم کا پرچار کیا ۔ اُتری ہندستان میں سولہ مہان جن پد تھے ۔ موریہ ونش کے بادشاہوں نے انہیں ایک چھتر کی چھایا کے نیچے جمع کیا اور ایک بڑا سامراج قایم کیا ۔ یہ ہندستان کی تاریخ میں پہلا موقع تھا کہ قریب کل ہند ایک رشتے میں بندھا ۔

موریوں کی طاقت گھٹی تو ہندستان پر پچھم اُتر سے نئے حملے ہونے لگے ۔ شک اور کشن جاتیوں نے دیش میں ڈیرا جمایا ۔ اِن جاتیوں کو ہندستانی بناکر دیش نے ایک نئے سامراج کو جنم دیا ۔ اِس کے بنانے والے سمدر گپت اور چندر گپت تھے ۔ گپت ونش کے سنہرے یگ کی عمارت میل کی بنیاد پر رکھی گئی ۔ گپتوں کے بعد پانچویں صدی عیسوی میں ہنوں، گرجروں، جاٹوں اور اور جاتیوں نے ہمارے دیش میں پیر رکھا ۔ اِن کے آنے سے بڑی اُتھل پتھل مچی ۔ پرانے اور نئے سماجوں کا ایسا منتھن ہوا کہ سبھیتا کے سبھی انگوں میں نیا پن آ گیا ۔ اِن نئے سماجوں کا وردھنوں اور راجپوت ونشوں نے راجیہ کے روپ میں سنگٹھن کیا ۔

جب راجپوتوں میں کمزوری آئی تو گیارھویں صدی سے ترکوں کے حملے شروع ہوئے اور تیرھویں صدی میں اِسلامی راج کا جھنڈا دیش پر پھہرانے لگا ۔ اب تک جو لوگ ہندستان میں آئے تھے اُنہوں نے یہاں کے دھرم اور سبھیتا کو قبول کیا تھا ۔ پر ترک اپنے ساتھ ایک زبردست دھرم اور انوکھی سبھیتا لائے اور اُنہوں نے دیش کے سامنے ایک نیا سوال کھڑا کردیا ۔ پر ہندستان کی آتما جو میل اور ایکتا کے اُصولوں میں بسی ہے اِس سوال سے گھبرائی نہیں اور اُس نے انیکتا کو مٹانے اور اِنسانیت کو پیدا کرنے کا عمل شروع کردیا ۔

اکبر کے زمانے تک اِس عمل کا بہت کچھ اثر ہوچکا تھا ۔ اکبر کا پرکھا تیمور 1398 میں ہندستان میں آیا تھا اور اُس نے بہانہ ہی یہ نکالا تھا کہ ہندستان کے مسلمان اپنے مذہب اور تہذیب سے دور چلے گئے تھے ۔ اکبر کے بابا بابر نے ہندستان میں جو ڈھنگ دیکھا اُس کے بارے میں لکھتا ہے :—

"ہندستان، یہ ایک اجنبی ملک ہے ۔ ہماری ولایت سے دور دنیا ہے ۔ پہاڑ، دریا، جنگل، جانور، نباتات، آدمی، زبان، ہوا اور مینھ سب اور ہیں ۔ اگرچہ کابل کے علاقہ جات میں سے گرم سیر بعض چیزوں میں ہندستان سے مشابہ ہے اور بعض میں نہیں ہے، مگر دریائے سندھ کے اِدھر آتے ہی زمین، درخت، پتھر، قومیں، اور اُن کے راہ و رسم سب ہندستانی طریق کی ۔" (تزک بابری)

اِس ہندستانی طریق، ہندستانی چال ڈھال، ریتی رواج کو اکبر نے بڑی چترائی اور دوراندیشی سے بڑھایا ۔ اس نے اپنے راج کو اِسی بنیادی اُصول پر

क़ायम किया कि जातियों और धर्मों के आपस के झगड़े मिट जाएँ और हिन्दुस्तानी में हिन्दुस्तानियत का बोल बाला हो. अकबर के विचारों और आदर्शों को उसके समझदार वज़ीर अबुलफ़ज़्ल ने इन लफ़्ज़ों में ज़ाहिर किया है. यह लफ़्ज़ कश्मीर के एक मंदिर की दीवार पर खुदवाए गए थे.

इलाही ब हर ख़ाना कि मी निगरम जूयाए तू अंद व ब हर ज़बाने कि मी शिनवम गोयाए तू.

कुफ़्रो इसलाम दर रहत पोयाँ,
वहदहु लाशरीक लागोयाँ.

अगर मस्जिदेस्त ब यादे तू नारए क़ुद्दूस मी ज़नन्द, व अगर कलीसास्त ब शौक़ तू नाक़ूस मी जुंबनन्द.

गह मुतकफ़े दैरम व गह साकिने मस्जिद,
यानी कि तुरा मी तलबम ख़ाना ब ख़ाना.

अगर ख़ासाँ तुरा ब कुफ़्र व इसलाम कारे नेस्त, ईं हर दो रा दर परदए इसलाम तू बारे नह.

कुफ़्र काफ़िर रा व दीं दींदार रा,
गर्दए वरदीं दिले अत्तार रा.

ईं ख़ाना ब नीयते इत्तफ़ाक़ क़ुलूब मवहिदान हिन्दुस्तान व ख़ुसूसन मअबूद परस्तान अरसए कश्मीर तामीर याफ़्तह.

अर्थात्—"हे ईश्वर जिस घर को देखता हूँ उसमें तेरे ढूँढने वाले हैं, और जिस भाषा को सुनता हूँ उसमें तेरा ही चर्चा है. कुफ़्र (देवताओं का पूजन) और इसलाम तेरे ही रास्ते पर दौड़ते हैं और कहते हैं 'तू एक है, तेरा कोई साझी नहीं.' मस्जिद है तो उसमें तेरी याद में धर्म के नारे लगाते हैं और गिर्जा है तो तेरे ही प्रेम में घंटे बजाते हैं.

"कभी मैं मन्दिर में बैठकर ध्यान करता हूँ, कभी मस्जिद में. यानी कि तुझे ही घर घर में ढूँढता हूँ.

"जो तेरे चुने लोग हैं उन्हें न कुफ़्र और न इस्लाम से काम है, क्योंकि इन दोनों के लिये तेरी क़ुबूलियत के पर्दे में जगह नहीं है.

"कुफ़्र काफ़िर के लिये और दीन दीनदार के लिये है, पर गन्धी (इत्र बेचने वाले) के दिल के लिए तो गुलाब के फूल की रज ही चाहिये.

"यह मन्दिर हिन्दुस्तान के अद्वैतवादियों के दिलों को मिलाने के लिए और ख़ास तौर पर कश्मीर देश के पुजारियों के लिये बनाया गया."

हिन्दुस्तान के इतिहास के मँझले काल में अद्वैतवाद का आदर्श दोनों हिन्दू और मुसलमानों को एकसाँ तरीक़े से पसन्द था, और दोनों भक्ति के रास्ते इस आदर्श तक पहुँचने की कोशिश में लगे रहते थे. इनकी सभ्यता में इसी आदर्श की शक्ति काम कर रही थी. इसी से इनकी कला,

قایم کیا کہ جاتیوں اور دھرموں کے آپس کے جھگڑے مٹ جائیں اور ہندستانی میں ہندستانیت کا بول بالا ہو. اکبر کے وچاروں اور آدرشوں کو اُس کے سمجھدار وزیر ابوالفضل نے اِن لفظوں میں ظاہر کیا ھے. یہ لفظ کشمیر کے ایک مندر کی دیوار پر کھدوائے گئے تھے—

اِلٰہی بہر خانہ کہ می نگرم جو یائے تو اند و بہر زبانے کہ می شنوم گویائے تو.

کفر و اسلام در رہت پویاں،
وحدہٗ لاشریک لا گویاں.

اگر مسجدیست بہ یاد تو نعرۂ قدوس می زنند، و اگر کلیساست بہ شوق تو ناقوس می جنبانند.

گہہ معتکف دیرم و گہہ ساکن مسجد،
یعنی کہ ترا می طلبم خانہ بہ خانہ.

اگر خاصاں ترا بہ کفر و اسلام کارے نیست، ایں ہر دو را درپردۂ اسلام تو بارے نہ.

کفر کافر را و دیں دیندار را،
گردۂ وردی دل عطار را.

ایں خانہ بہ نیت اِتفاق قلوب موحدان ہندستان و خصوصاً معبود پرستان عرصۂ کشمیر تعمیر یافتہ.

ارتھات—"ھے ایشور جس گھر کو دیکھتا ہوں اُسمیں تیرے ڈھونڈھنے والے ھیں، اور جس بھاشا کو سنتا ھوں اُس میں تیرا ھی چرچا ھے. کفر (دیوتاؤں کا پوجن) اور اسلام تیرے ھی راستے پر دوڑتے ھیں اور کہتے ھیں 'تو ایک ھے' تیرا کوئی ساجھی نہیں.' مسجد ھے تو اُس میں تیری یاد میں دھرم کے نعرے لگاتے ھیں اور گرجا ھے تو تیرے ھی پریم میں گھنٹے بجاتے ھیں.

"کبھی میں مندر میں بیٹھ کر دھیان کرتا ھوں، کبھی مسجد میں. یعنی کہ تجھے ھی ھر گھر میں ڈھونڈھتا ھوں.

جو تیرے چنے لوگ ھیں اُنھیں نہ کفر اور نہ اِسلام سے کام ھے، کیونکہ اِن دونوں کے لئے تیری قبولیت کے پردے میں جگہہ نہیں ھے.

"کفر کافر کے لئے اور دین دیندار کے لئے ھے، پر گندھی (عطر بیچنے والے) کے دل کے لئے تو گلاب کے پھول کی رج ھی چاھئے.

"یہ مندر ہندستان کے ادویتوادیوں کے دلوں کو ملانے کے لئے اور خاص طور پر کشمیر دیش کے پجاریوں کے لئے بنایا گیا."

ہندستان کے اِتہاس کے منجھلے کال میں ادویتواد کا آدرش دونوں ہندو اور مسلمانوں کو ایکساں طریقے سے پسند تھا، اور دونوں بھکتی کے راستے اِس آدرش تک پہونچنے کی کوشش میں لگے رھتے تھے. اِن کی سبھیتا میں اسی آدرش کی شکتی کام کر رھی تھی. اِسی سے اِن کی کلا،

कविता, अदब में एकसानियत आ गई थी. समाज और राज के संगठन में भी इसी आदर्श की प्रेरणा दिखाई देती है.

यह सच है कि मँझले काल में कुल हिन्द एक समाज के रिश्तों में नहीं बँध सका, सारे हिन्दुस्तानी एक जत्थे के अन्दर नहीं समा सके. इसीलिये एक क़ौम या राष्ट्र का जन्म नहीं हुआ. लेकिन यह मानना पड़ेगा कि हिन्दुस्तान ने इस मंज़िल की तरफ़ बढ़ने की पूरी कोशिश की. मुसलमानों के हिन्दुस्तान में आने के वक़्त हिन्दुस्तान अनेक वंशों, सम्प्रदायों, जातियों, क़बीलों, रजवाड़ों, राजों में बँटा हुआ था. मुसलमानी साम्राज क़ायम होने की वजह से इस तक़सीम में कुछ कमी हुई. हिन्दू समाज के संगठन का मुसलमानों पर असर पड़ा और उनका संगठन एक हद तक हिन्दू ढाँचे की नक़ल बना. अगर हिन्दुओं में देश, जाति, धन्धे, दौलत, मत, राजनीति के विचारों से अलग-अलग सम्प्रदाय, फ़िर्क़े और गिरोह थे तो ऐसा ही हाल मुसलमानों का भी था. राजपूत, मराठा, द्राविड़, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र और इनकी अनेक शाखें; सुनार, लुहार, केवट, कायस्थ; शैव, वैष्णव, शाक में हिन्दू बँटे थे तो ईरानी, ख़ुरासानी, पठान; दकनी हिन्दुस्तानी, जुलाहे, क़साई, हज्जाम, सुन्नी, शिआ मुसलमानों में थे. दौलत और रुतबे के लिहाज़ से हिन्दुओं में ब्राह्मण, क्षत्री, सेठ, साहूकार और कायस्थ ऊँचे दर्जे में समझे जाते थे और ज़ातें जो दस्तकारी, धन्धे, मज़दूरी में लगी थीं वह नीचे दर्जे में थीं. इसी तरह मुसलमानों में शरीफ़ और रज़ील की तक़सीम थी.

आईने अकबरी में समाज के संगठन पर बहस की है. समाज को एक पुरुष (शख़्स) के समान माना है. जिस तरह दुनिया चार तत्त्वों से मिलकर बनती है यानी आग, पानी, हवा और मिट्टी से उसी तरह इस दुनिया को बसाने वाला आदमी (पुरुष, शख़्स) चार तत्त्वों का पुतला है. आदमियों का गिरोह जिसे समाज कहते हैं और जो आदमी के समान है वह भी चार तत्त्वों पर निर्भर करता है. इसीलिये इसमें चार तरह के आदमी होते हैं. मुबारिज़ (लड़ाके) जो समाज में आग के समान हैं, पेशेवर (काम धन्धे वाले) जो हवा के समान हैं. अहले क़लम (पढ़ने लिखने वाले) जो पानी से समानता रखते हैं. बर्ज़ागर या कशावर्ज़ (खेतिहर) जिनका मिट्टी से मिलान किया जा सकता है. इन्हीं चारों पर समाज के जीवन का सहारा है. इन्हीं से समाज को बल और सुख का लाभ होता है. इन्हीं चारों तत्त्वों के समान गिरोहों के तानेबाने से समाज का कपड़ा बुना जाता है और इनके मेल से अनेक एक में तब्दील होता है. यह चार गिरोह दो जमाअतों में रखे जा सकते हैं. अशराफ़ (ऊँचे) जिनमें एहले सैफ़ (तलवार चलाने वाले) शामिल हैं और असलाफ़ (नीचे) जिनमें पेशेवर और

کویتا، ادب میں ایکسانیت آگئی تھی ۔ سماج اور راج کے سنگٹھن میں بھی اسی آدرش کی پریرنا دکھائی دیتی ہے ۔

یہ سچ ہے کہ منجھلے کال میں کل ہند ایک سماج کے رشتوں میں نہیں بندھ سکا، سارے ہندستانی ایک جتھے کے اندر نہیں سما سکے ۔ اِسی لئے ایک قوم یا راشٹر کا جنم نہیں ہوا. لیکن یہ ماننا پڑیگا کہ ہندستان نے اِس منزل کی طرف بڑھنے کی پوری کوشش کی. مسلمانوں کے ہندستان میں آنے کے وقت ہندستان انیک ونشوں، سمپردایوں، جاتیوں، قبیلوں، رجواڑوں، راجوں میں بٹا ہوا تھا ۔ مسلمانی سامراج قایم ہونے کی وجہہ سے اِس تقسیم میں کچھ کمی ہوئی ۔ ہندو سماج کے سنگٹھن کا مسلمانوں پر اثر پڑا اور اُن کا سنگٹھن ایک حد تک ہندو ڈھانچے کی نقل بنا ۔ اگر ہندؤں میں دیش، جاتی، دھندھے، دولت، مت، راج نیتی کے وچاروں سے الگ الگ سمپردائے، فرقے اور گروہ تھے تو ایسا ہی حال مسلمانوں کا بھی تھا ۔ راجپوت، مراٹھا، دراوڑ، براہمن، چھتری، ویشیہ، شودر اور اُن کی انیک شاخیں؛ سونار، لوہار، کیوٹ، کایستھ؛ شیو، ویشنو، شک میں ہندو بٹے تھے تو ایرانی، خراسانی پٹھان، دکنی ہندستانی، جلاہے، قصائی، حجام، سنی، شیعہ مسلمانوں میں تھے ۔ دولت اور رتبہ کے لحاظ سے ہندؤں میں براہمن، چھتری، سیٹھ، ساہوکار اور کایستھ اُونچے درجے میں سمجھے جاتے تھے اور ذاتیں جو دستکاری، دھندھے مزدوری میں لگی تھیں وہ نیچے درجے میں تھیں ۔ اِسی طرح مسلمانوں میں شریف اور رذیل کی تقسیم تھی ۔

آئین اکبری میں سماج کے سنگٹھن پر بحث کی ہے ۔ سماج کو ایک پرش (شخص) کے سمان مانا ہے ۔ جس طرح دنیا چار تتوؤں سے ملکر بنتی ہے یعنی آگ، پانی، ہوا اور مٹی سے اُسی طرح اِس دنیا کو بسانے والا آدمی (پرش، شخص) چار تتوؤں کا پتلا ہے ۔ آدمیوں کا گروہ جسے سماج کہتے ہیں اور جو آدمی کے سمان ہے وہ بھی چار تتوؤں پر نربھر کرتا ہے ۔ اِسی لئے اس میں چار طرح کے آدمی ہوتے ہیں ۔ مبارز (لڑاکے) جو سماج میں آگ کے سمان ہیں، پیشہ‌ور (کام دھندھے والے) جو ہوا کے سمان ہیں ۔ اہل قلم (پڑھنے لکھنے والے) جو پانی سے سمانتا رکھتے ہیں ۔ برزہ‌گر یا کشاورز (کھیتہر) جن کا مٹی سے ملان کیا جاسکتا ہے ۔ اِنہیں چاروں پر سماج کے جیون کا سہارا ہے ۔ اِنہیں سے سماج کو بل اور سکھ کا لابھ ہوتا ہے. اِنہیں چاروں تتوؤں کے سمان گروہوں کے تانے بانے سے سماج کا کپڑا بنا جاتا ہے اور اِن کے میل سے انیک ایک میں تبدیل ہوتا ہے ۔ یہ چار گروہ دو جماعتوں میں رکھے جاسکتے ہیں ۔ اشراف (اُونچے) جن میں اہل‌سیف (تلوار چلانے والے) شامل ہیں اور اسلاف (نیچے) جن میں پیشہ‌ور اور

ज़बूर लेजिहर शामिल हैं. राज का यही काम है कि इन ोरों का पलड़ा बराबर रखे और हरएक को अपने कर्तव्य, ाह और मर्यादा से हटने न दे.

समाज की जिस एकता का आदर्श अकबर की आँखों सामने था इसका ढाँचा आईने अकबरी के पढ़ने से लूम होता है. पर समाजी ढाँचे का ठहराव राज के संगठन आसरे पर है. इसलिए अकबरी राज के सिद्धांतों पर ध्यान ा जरूरी है.

यह सिद्धांत न तो इसलामी राजनीति से उधार लिए ए थे, न हिन्दू राजनीति से नक़ल किए गए थे. बल्कि दोनों ाजनीतियों से चुने गए थे.

हिन्दू राजनीति के उसूल हिन्दू जीवन के उसूलों पर ायम थे. और हिन्दू आदमी के जीवन को अलहदा ालहदा हिस्सों में बँटा हुआ नहीं मानते थे. इनके नज़दीक ीवन एक ऐसा पूरा और अटूट व्यापार है जिसके टुकड़े हीं हो सकते. इसकी मिसाल यह है कि जिस तरह आदमी सी वक़्त तक आदमी है जब तक उसके सब अंग एक ाथ जुड़े हुए हैं, और अगर अंग भंग हो जायं तो आदमी ा अंत हो जाता है. जीवन के दो मक़सद हैं—एक दुन्यावी क दीनी. दुन्यावी की तीन क़िस्में हैं—काम, अर्थ, धर्म. दीनी ी एक—मोक्ष. पहले तीन वर्गों को हासिल करने से इस ुनिया का भला होता है, अभ्युदय मिलता है. दूसरे से ादमी सदा के लिए दुखों से छूट जाता है, परम आनन्द ाभ करता है.

दुन्यावी फ़ायदों या अर्थों की तीन क़िस्में हमारी तिरंगी ज़िन्दगी के साथ बँधी हैं. हमारी पहली जरूरत वंश का ायम रखना, दूसरी जरूरत शरीर का पालन और तीसरी ामाज की रक्षा है. काम, अर्थ और धर्म का त्रिवर्ग इन्हीं रूरतों को पूरा करने का नाम है. यह जरूरतें बिना शाँति ौर संगठन के पूरी नहीं हो सकतीं. शाँति और संगठन के ाये राज की ताक़त चाहिए. इसी ताक़त को हिन्दू राजनीति ें दंड कहा गया है. दंडशास्त्र नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और ामाज शास्त्र का मेल जोल है.

राजा दंड को धारण करता है इसी लिए उसकी त्ता सब से भारी है. महाभारत और दूसरी राजनीति की ुस्तकों में राजा को नरदेव कहा गया है. राजा की देह िष्णु का स्थान है इसलिए राजा पूजने क़ाबिल है. मनु ंहिता में लिखा है कि ब्रह्मा ने राजा को आठ देवताओं के ंशों से मिलाकर बनाया. इसलिए उसमें इन्द्र, मरुत, यम, ूर्य, अग्नि, वरुण, चन्द्र और कुबेर की शक्ति है.

राजा का ओहदा देवताओं के बराबर है क्योंकि वह ैवी शक्ति का स्वामी है. राज के कामों को दो हिस्सों में ांटा गया है—दिग्पाल और दिग्विजय. लोकपालन में त्रिवर्ग की प्राप्ति के साधनों को मुहैया करना, न्याय या

موذور کھیتھر شامل ھیں . راج کا یہی کام ھے کہ ان چاروں کا پلڑا برابر رکھے اور ھر ایک کو اپنے کرتویہ' جگہ اور مریادا سے ھٹنے نہ دے .

سماج کی جس ایکتا کا آدرش اکبر کی آنکھوں کے سامنے تھا اِس کا ڈھانچہ آئین اکبری کے پڑھنے سے معلوم ھوتا ھے . پر سماجی ڈھانچے کا ٹھہراؤ راج کے سنگٹھن کے آسرے پر ھے . اِس لئے اکبری راج کے سدھانتوں پر دھیان دینا ضروری ھے .

یہ سدھانت نہ تو اِسلامی راج‌نیتی سے اُدھار لئے گئے تھے' نہ ھندو راج‌نیتی سے نقل کئے گئے تھے . بلکہ دونوں راج‌نیتیوں سے چنے گئے تھے .

ھندو راج‌نیتی کے اُصول ھندو جیون کے اُصولوں پر قایم تھے . اور ھندو آدمی کے جیون کو علیحدہ علیحدہ حصوں میں بنٹا ھوا نہیں مانتے تھے . اِن کے نزدیک جیون ایک ایسا پورا اور اٹوٹ ویاپار ھے جس کے ٹکڑے نہیں ھوسکتے . اِس کی مثال یہ ھے کہ جس طرح آدمی اُسی وقت تک آدمی ھے جب تک اُس کے سب انگ ایک ساتھ جڑے ھوئے ھیں' اور اگر انگ بھنگ ھوجائیں تو آدمی کا انت ھوجاتا ھے . جیون کے دو مقصد ھیں—ایک دنیاوی' ایک دینی . دنیاوی کی تین قسمیں ھیں—کام' ارتھ' دھرم . دینی کی ایک —موکش . پہلے تین ورگوں کو حاصل کرنے سے اِس دنیا کا بھلا ھوتا ھے' ابھیودئے ملتا ھے . دوسرے سے آدمی سدا کے لئے دکھوں سے چھوٹ جاتا ھے' پرم آنند لابھ کرتا ھے .

دنیاوی فایدوں یا ارتھوں کی تین قسمیں ھماری ترنگی زندگی کے ساتھ بندھی ھیں . ھماری پہلی ضرورت ونش کو قایم رکھنا' دوسری ضرورت شریر کا پالن اور تیسری سماج کی رکشا ھے . کام' ارتھ اور دھرم کا تریورگ اِنھیں ضرورتوں کو پورا کرنے کا نام ھے . یہ ضرورتیں بنا شانتی اور سنگٹھن کے پوری نہیں ھوسکتیں. شانتی اور سنگٹھن کے لئے راج کی طاقت چاھئے . اِسی طاقت کو ھندو راج‌نیتی میں دنڈ کہا گیا ھے . دنڈ شاستر نیتی شاستر' ارتھ شاستر اور سماج شاستر' کا میل جول ھے .

راجہ دنڈ کو دھارن کرتا ھے اسی لئے اُس کی ستا سب سے بھاری ھے . مہابھارت اور دوسری راج‌نیتی کی پستکوں میں راجہ کو نردیو کہا گیا ھے . راجہ کی دیہ وشنو کا استھان ھے اِس لئے راجہ پوجنے قابل ھے . منو سنگھتا میں لکھا ھے کہ برھما نے راجہ کو آٹھ دیوتاؤں کے انشوں سے ملاکر بنایا . اس لئے اُس میں اندر' مروت' یم' سوریہ' اگنی' ورون' چندر اور کبیر کی شکتی ھے .

راجہ کا عہدہ دیوتاؤں کے برابر ھے کیونکہ وہ دیوی شکتی کا سوامی ھے . راج کے کاموں کو دو حصوں میں بانٹا گیا ھے—دگپال اور دگوجئے . لوک پالن میں تریورگ کی پراپتی کے سادھنوں کو مہیا کرنا' نیائے یا

इन्साफ़, शामिल हैं. दिग्विजय से मतलब है राज की सरहदों को फैलाना. हर हिन्दू राजा का फ़र्ज़ था कि बरसात के बंद होते ही दशहरा मनाकर देशों को जीतने के लिए फ़ौज लेकर निकले. चक्रवर्त्ती राज क़ायम करना, सारी दुनिया को एक छत्र की छाया के नीचे जमा करना ही राजा के असली गुणों के उचित समझा जाता था. और वही राजा सचमुच राज के क़ाबिल समझा जाता था जो लोकपालन और दिग्विजय का भार संभाल सके.

दंड शास्त्र में लिखा है कि राजा को अच्छे गुणों से सम्पन्न होना चाहिए. गुणों में अच्छा कुल, शूर वीरता, सेना के कमान की योग्यता, धर्म शास्त्र का ज्ञान, राजधर्म के सिद्धांतों की जानकारी और सदाचार शामिल हैं. जिस राजा में यह खबियाँ नहीं, जिसके बदन के किसी अंग में खराबी है या जो रोगी है वह राजसिंहासन पर बैठने के लायक़ नहीं समझा जाता था. राजा की ज़िम्मेदारी इतनी भारी थी कि इस ओहदे को मौरूसी नहीं बनाया गया. इसीलिए कोई विरासत का क़ानून नहीं था.

राजाओं को ऊंचे पद, ज़िम्मेदारी के कामों और भारी कर्तव्यों के विचार से ऊंची उपाधियाँ दी जाती थीं. गुप्त वंश के राजाओं के खिताब यह थे—महाराज, राजाधिराज, परमेश्वर, परमभट्टारक, परमेष्ठिन्, सार्वभौम, चक्रवर्तिन्, धर्मप्रवर्त्तक.

हिन्दू राजनीति में जो राज की प्रकृति, राज के धर्म, राज के मक़सद बतलाये गए हैं उन का मुक़ाबला इसलामी राजनीति से करें तो दोनों के भेद और समानताओं का पता चलता है. इसलाम आदमी के जीवन के सब अंगों को एक रिश्ते में बंधा मानता है. वह धर्म और व्यवहार, परलोक और इसलोक के अर्थों को अलग अलग नहीं समझता. आदमी किसी भी काम में लगे—कुन्बे के धन्धों में, धन दौलत के पैदा करने में, राज की सेवा में, विद्या के हासिल करने में, ईश्वर पूजा में—सब कामों में उसके लिए नियम बने हुए हैं जो उसकी धर्म पुस्तक क़ुरान में दिये हुए हैं.

इसलाम का दावा है कि वह सारी दुनिया का धर्म है. वह न जातियों में भेद करता है न आदमियों के रंगों में. कुल दुनिया और सब जातियों को एक समाज, एक राज की एक मज़बूत रस्सी में बाँधना उसका आदर्श है. ऐसी सूरत में सब दुनिया के लिए एक क़ानून का होना ज़रूरी है और वह क़ानून किसी आदमी का बनाया नहीं हो सकता. इसीलिए वह कहता है कि शरीयत का क़ानून तो अल्लाह का भेजा हुआ है, सब के ऊपर एकसां लागू है. इस क़ानून को पाने वाला अल्लाह का रसूल या पैग़म्बर है और इस क़ानून की रक्षा करने वाला खलीफ़ा, बादशाह या सुलतान. क़ुरान में आया है:—

अतीयू अल्लाहि अतीयू अर्रसूलि उल अम्र मिन्कुम

انصاف' شامل ھیں۔ دگوجئے سے مطلب ھے راج کی سرحدوں کو پھیلانا ۔ ھر ھندو راجہ کا فرض تھا کہ برسات کے بند ھوتے ھی دشھرہ مناکر دیشوں کو جیتنے کے لئے فوج لیکر نکلے ۔ چکرورتی راج قایم کرنا' ساری دنیا کو ایک چھتر کی چھایا کے نیچے جمع کرنا ھی راجہ کے اصلی گنوں کے اُچت سمجھا جاتا تھا. اور وھی راجہ سچ مچ راج کے قابل سمجھا جاتا تھا جو لوک پالن اور دگوجئے کا بھار سنبھال سکے ۔

دنڈ شاستر میں لکھا ھے کہ راجہ کو اچھے گنوں سے سمپن ھونا چاھئے ۔ گنوں میں اچھا کل' شوربیرتا' سینا کے کمان کی یوگتا' دھرم شاستر کا گیان' راج دھرم کے سدھانتوں کی جانکاری اور سداچار شامل ھیں ۔ جس راجہ میں یہ خوبیاں نہیں' جس کے بدن کے کسی انگ میں خرابی ھے یا جو روگی ھے وہ راج سنگھاسن پر بیٹھنے کے لایق نہیں سمجھا جاتا تھا ۔ راجہ کی ذمہداری اِتنی بھاری تھی کہ اِس عہدے کو موروثی نہیں بنایا گیا ۔ اِسی لئے کوئی وراثت کا قانون نہیں تھا ۔

راجاؤں کو اُونچے پد' ذمہداری کے کاموں اور بھاری کرتبیوں کے وچار سے اُونچی اُپادھیاں دی جاتی تھیں ۔ گپت ونش کے راجاؤں کے خطاب یہ تھے—مہاراج' راجا دھیراج' پرمیشور' پرم بھٹارک' پرمیشٹھن' ساروبھوم 'چکرورتن' دھرم پرورتک ۔

ھندو راجنیتی میں جو راج کی پرکرتی' راج کے دھرم' راج کے مقصد بتلائے گئے ھیں اُن کا مقابلہ اِسلامی راجنیتی سے کریں تو دونوں کے بھید اور سمانتاؤں کا پتہ چلتا ھے ۔ اِسلام آدمی کے جیون کے سب انگوں کو ایک رشتہ میں بندھا مانتا ھے ۔ وہ دھرم اور ویوھار' پرلوک اور اِس لوک کے ارتھوں کو الگ الگ نہیں سمجھتا ۔ آدمی کسی بھی کام میں لگے—کنبے کے دھندوں میں' دھن دولت کے پیدا کرنے میں' راج کی سیوا میں' ودیا کے حاصل کرنے میں' ایشور پوجا میں—سب کاموں میں اُس کے لئے نیم بنے ھوئے ھیں جو اُس کی دھرم پستک قرآن میں دئے ھوئے ھیں ۔

اِسلام کا دعویٰ ھے کہ وہ ساری دنیا کا دھرم ھے. وہ نہ جاتیوں میں بھید کرتا ھے نہ آدمیوں کے رنگوں میں ۔ کل دنیا اور سب جاتیوں کو ایک سماج' ایک راج کی ایک مضبوط رسی میں باندھنا اُس کا آدرش ھے ۔ ایسی صورت میں سب دنیا کے لئے ایک قانون کا ھونا ضروری ھے اور یہ قانون کسی آدمی کا بنایا نہیں ھوسکتا ۔ اِسی لئے وہ کہتا ھے کہ شریعت کا قانون تو اللہ کا بھیجا ھوا ھے' سب کے اُوپر ایکساں لاگو ھے ۔ اِس قانون کو پانے والا اللہ کا رسول یا پیغمبر ھے اور اِس قانون کی رکشا کرنے والا خلیفہ' بادشاہ یا مسلمان ۔ قرآن میں آیا ھے :—

عطیو' اللہ ھی عطیھ' الرسول الامر ملکم

"ऐ लोगो, अल्लाह की इताअत करो, रसूल की इताअत करो और उनकी इताअत करो जो तुम में हाकिम हों."

अपनी ज़िन्दगी में हज़रत मुहम्मद रसूल थे और हाकिम भी थे. पर उनके मरने के बाद उनके ख़लीफ़ा इसलामी मिल्लत के हाकिम हुए, साथ साथ वह इमाम और अमीरुल मोमनीन भी कहलाए. ख़लीफ़ा की हैसियत से वह हज़रत मुहम्मद के वारिस थे लेकिन इस फ़र्क़ के साथ कि उनको पैग़म्बरी का दर्जा हासिल नहीं था. अमीर की हैसियत से वह मुसलमानी फ़ौजों के सेनापति थे और इमाम की हैसियत से मज़हबी कामों में पेशवा थे.

ख़लीफ़ा के फ़र्ज़ यह थे कि वह धर्म का पालन करें, मुक़द्दमों का फ़ैसला करें, फ़ौजदारी क़ानून के मुताबिक़ सज़ा दें, देश की रक्षा करें, दुश्मनों से जंग करें, महसूल जमा करें, ग़रीबों की मदद करें, वज़ीर और ओहदेदार मुक़र्रर करें और राजकाज का इन्तज़ाम करें. इन फ़र्ज़ों को पूरा करने के लिए मुसलमानों को इख़्तियार था कि अपना ख़लीफ़ा चुन लें. चुनाव की शर्तें यह थीं कि जिसे चुना जाय वह सदाचारी हो, धर्म शास्त्र (फ़िक़ह) जानने वाला हो, आंख नाक हाथ पांव से ठीक हो, काना कुतरा, लंगड़ा लूला न हो, बहादुर हो, क़ुरैश वंश का हो.

इसलामी सिद्धांतों के मुताबिक़ ख़लीफ़ा के इख़्तियार ईश्वर की तरफ़ से हैं और सब मुसलमानों का कर्तव्य है कि उसकी आज्ञा को मानें. ख़लीफ़ा को इसी विचार से ज़िल्ले अल्लाह (ईश्वर का साया) की ऊँची पदवी दी गई. लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि ख़लीफ़ा के इख़्तियारों की कोई हदबंदी नहीं थी. उसका फ़र्ज़ था कि शरीयत (धर्म के क़ानूनों) की पाबंदी करे, क्योंकि शरीयत ईश्वर के दिए हुए क़ानूनों पर आश्रित है. शरीयत आदमी के सभी कामों और जीवन के हर अंग पर हावी है. इसलिए ख़लीफ़ा या हाकिम को क़ानूनी मुआमलात में बहुत कम दख़ल है. ख़लीफ़ा को शरीयत की व्याख्या का हक़ है पर उसमें घटाने बढ़ाने का नहीं.

इसलामी इतिहास में एक समाज और एक राज का आदर्श बहुत दिनों तक क़ायम न रहा. ज्यों ज्यों इसलामी साम्राज्य फैलता गया दुनिया के अलग हिस्सों में हाकिम ख़ुदमुख़्तारी हुकूमतें बनाने लगे. और यह सवाल पैदा हुआ कि ख़लीफ़ा और इन हाकिमों के बीच में क्या रिश्ता होना चाहिए. कुछ राजनीति शास्त्रियों की राय में इन हाकिमों को ख़लीफ़ा का नाइब समझना चाहिए. इस ख़याल से हिन्दुस्तान के मुसलमान बादशाहों ने अपने ख़िताबों में ऐसे नाम रखे जैसे यमीने ख़लीफ़तुलल्लाह (अल्लाह के ख़लीफ़ा का दायाँ हाथ), नासिरे अमीरुल मोमनीन (अमीरुल मोमनीन का मददगार), सुलतान (हुकूमत करने वाला).

"اے لوگو، اللہ کی اطاعت کرو، رسول کی اطاعت کرو اور ن کی اطاعت کرو جو تم میں حاکم ہوں ۔"

اپنی زندگی میں حضرت محمد رسول تھے اور حاکم بھی ھ ۔ پر اُن کے مرنے کے بعد اُن کے خلیفہ اِسلامی ملت کے حاکم ہوئے، ساتھ ساتھ وہ اِمام اور امیرالمومنین بھی کہلائے ۔ خلیفہ کی حیثیت سے وہ حضرت محمد کے وارث تھے لیکن اِس رق کے ساتھ کہ اُن کو پیغمبری کا درجہ حاصل نہیں تھا ۔ میر کی حیثیت سے وہ مسلمانی فوجوں کے سیناپتی تھے اور مام کی حیثیت سے مذہبی کاموں میں پیشوا تھے ۔

خلیفہ کے فرض یہ تھے کہ وہ دھرم کا پالن کریں، مقدموں کا یصلہ کریں، فوجداری قانون کے مطابق سزا دیں، دیش کی کشا کریں، دشمنوں سے جنگ کریں، محصول جمع کریں، ریبوں کی مدد کریں، وزیر اور عہدہ‌دار مقرر کریں اور راج کاج ا اِنتظام کریں ۔ اِن فرضوں کو پورا کرنے کے لئے مسلمانوں کو ختیار تھا کہ اپنا خلیفہ چن لیں ۔ چناؤ کی شرطیں یہ تھیں ہ جسے چنا جائے وہ سداچاری ہو، دھرم شاستر (فقہ) جاننے والا ہو، آنکھ ناک ہاتھ پاؤں سے ٹھیک ہو، کانا کترا، نگرا لولا نہ ہو، بہادر ہو، قریش ونش کا ہو ۔

اِسلامی سدھانتوں کے مطابق خلیفہ کے اختیار ایشور کی طرف سے ہیں اور سب مسلمانوں کا کرتویہ ھے کہ اُس کی آگیاں و مانیں ۔ خلیفہ کو اِسی وچار سے ظل‌اللہ (ایشور کا سایہ) ی اونچی پدوی دی گئی ۔ لیکن اِس سے یہ نہیں سمجھنا چاہئے کہ خلیفہ کے اختیاروں کی کوئی حد بندی نہیں تھی ۔ س کا فرض تھا کہ شریعت (دھرم کے قانونوں) کی پابندی رے، کیونکہ شریعت ایشور کے دیئے ہوئے قانونوں پر شرت ھے ۔ شریعت آدمی کے سبھی کاموں اور جیون کے ہر انگ ر حاوی ھے ۔ اِس لئے خلیفہ یا حاکم کو قانونی معاملات میں بہت کم دخل ھے ۔ خلیفہ کو شریعت کی ویاکھیا کا حق ھے ر اُس میں گھٹانے بڑھانے کا نہیں ۔

اسلامی اتہاس میں ایک سماج اور ایک راج کا آدرش بہت دنوں تک قایم نہ رہا ۔ جیوں جیوں اِسلامی سامراج پھیلتا گیا دنیا کے الگ حصوں میں حاکم خود مختاری حکومتیں بنانے لگے ۔ اور یہ سوال پیدا ہوا کہ خلیفہ اور اِن حاکموں کے بیچ میں کیا رشتہ ہونا چاہئے ۔ کچھ راج نیتی شاستریوں کی رائے میں اِن حاکموں کو خلیفہ کا نایب سمجھنا چاہئے ۔ اِس خیال سے ہندستان کے مسلمان بادشاہوں نے اپنے خطابوں میں ایسے نام رکھے جیسے یمین خلیفت اللہ (اللہ کے خلیفہ کا دایاں ہاتھ)، ناصر امیرالمومنین (امیرالمومنین کا مددگار)، سلطان (حکومت کرنے والا) ۔

शुरू में खिलाफ़त एक मज़हबी ओहदा था, पर पहले चार ख़लीफ़ाओं के बाद इसकी ख़ासियत में तब्दीली आ गई और मज़हब के साथ दुनिया की बादशाहत के तत्त्व शामिल हो गए. जब खिलाफ़त की ताक़त बिलकुल ख़त्म हो गई तो सिर्फ़ नाम रह गया और उसके साथ ओहदे का मान. इसलामी देशों के हाकिम अपने अपने राज्य के मालिक बन गए जो ख़लीफ़ा की दिखावे की इज़्ज़त करते थे. वे मस्जिद में ख़ुतबे (जुम्मे की नमाज़ में मिम्बर से व्याख्यान) में ख़लीफ़ा का नाम लेते थे और अपने सिक्कों पर उसके नाम का ठप्पा लगाते थे. यह सब इसलिए भी होता था कि मुसलमान रियाया के दिलों पर यह असर डालें कि उनकी हुकूमत ख़लीफ़ाओं की आज्ञाओं पर निर्भर है. हिन्दुस्तान की तारीख़ में इसकी कई मिसालें मिलती हैं. इल्तुमिश ने 1229 में ख़लीफ़ा से फ़र्मान मंगाया और इसे दरबार में बड़े आदर के साथ पढ़कर सुनाया. मुहम्मद बिन तुग़लक़ जो 1325 में सिंहासन पर बैठा बड़ी कठिनाइयों में फँसा. उसने अपने राज के अठारवें साल में ख़लीफ़ा से सनद हासिल की.

जब मुग़लों ने दिल्ली पर क़ब्ज़ा किया उस वक़्त खिलाफ़त तुर्कों के हाथ में थी, पर मुग़ल इन्हें ख़लीफ़ा मानने को तैयार न थे. उनके सामने सवाल यह था कि मुग़ल बादशाहत को किन उसूलों पर क़ायम करें. बाबर ने जिस बादशाहत की दाग़बेल डाली उस पर उसके बाद के बादशाहों ने एक शानदार महल खड़ा किया. इसका पूरा नक़शा अबुलफ़ज़्ल ने आईने अकबरी में खींचा और इससे अकबरी राज के उसूलों की तस्वीर हमारी निगाहों के सामने आती है. अबुलफ़ज़्ल लिखता है—

"उस न्याय करने वाले (ईश्वर) के सामने जिसके समान कोई दूसरा नहीं, बादशाही से बढ़कर कोई रुतबा नहीं और जितने बुद्धिमान लोग हैं वह उसी के इक़बाल के सोते से प्यास बुझाते हैं. जो इस बात की दलील चाहते हैं उनके लिये यह कहना काफ़ी है कि बादशाही आदमियों के गिरोहों के विद्रोह का इलाज और रिआया के हुक्म मानने की वजह है. इस बात को पादशाह का लफ़्ज़ भी ज़ाहिर करता है. क्योंकि "पाद के माने हैं प्रतिष्ठा और अधिकार (मज़बूती और क़ब्ज़ा) और "शाह" के माने हैं जड़ (असल) और मालिक (ख़ुदावन्द). पादशाह प्रतिष्ठा और अधिकार का सोता और ईश्वर है. आज हुकूमत का दबदबा न रहे तो झगड़े की आँधी कैसे दब सकती है और स्वार्थ की बुराई कैसे दूर हो सकती है? आदमी काम और क्रोध के बस में आकर नाश के गढ़े में गिर पड़ें, दुनिया में चारों ओर से रौनक़ उठ जाए और थोड़े दिनों में पृथ्वी सूनी हो जाए......शाह का मतलब उस चीज़ से भी होता है जो सबसे अच्छी हो जैसे शाहसवार और शाहराह.

شروع میں خلافت ایک مذہبی عہدہ تھا، پر پہلے چار خلیفاؤں کے بعد اِس کی خاصیت میں تبدیلی آگئی اور مذہب کے ساتھ دنیا کی بادشاہت کے تتو شامل ہوگئے . جب خلافت کی طاقت بالکل ختم ہو گئی تو صرف نام رہ گیا اور اُس کے ساتھ عہدے کا مان . اسلامی دیشوں کے حاکم اپنے اپنے راجیہ کے مالک بن گئے جو خلیفہ کی دکھاوے کی عزت کرتے تھے . وہ مسجد میں خطبے (جمعہ کی نماز میں ممبر سے ویاکھیان) میں خلیفہ کا نام لیتے تھے اور اپنے سکوں پر اُن کے نام کا ٹھپہ لگاتے تھے . یہ سب اِس لئے بھی ہوتا تھا کہ مسلمان رعایا کے دلوں پر یہ اثر ڈالیں کہ اُن کی حکومت خلیفاؤں کی آگیاؤں پر نربھر ہے. ہندستان کی تاریخ میں اِس کی کئی مثالیں ملتی ہیں . التمش نے 1229 میں خلیفہ سے فرمان منگا یا اور اِسے دربار میں بڑے آدر کے ساتھ پڑھکر سنایا . محمد بن تغلق جو 1325 میں سنگھاسن پر بیٹھا بڑی کٹھنائیوں میں پھنسا . اُس نے اپنے راج کے اٹھارھویں سال میں خلیفہ سے سند حاصل کی .

جب مغلوں نے دلی پر قبضہ کیا اُس وقت خلافت ترکوں کے ساتھ میں تھی پر مغل اِنھیں خلیفہ ماننے کو تیار نہ تھے . اُن کے سامنے سوال یہ تھا کہ مغل بادشاہت کو کن اُصولوں پر قایم کریں . بابر نے جس بادشاہت کی داغ بیل ڈالی اُس پر اُس کے بعد کے بادشاہوں نے ایک شاندار محل کھڑا کیا . اِس کا پورا نقشہ ابوالفضل نے آئینِ اکبری میں کھینچا اور اِس سے اکبری راج کے اُصولوں کی تصویر ہماری نگاہوں کے سامنے آتی ہے . ابوالفضل لکھتا ہے—

"اُس نیائے کرنے والے (ایشور) کے سامنے جس کے سمان کوئی دوسرا نہیں، بادشاہی سے بڑھکر کوئی رتبہ نہیں اور جتنے بدھیمان لوگ ہیں وہ اُسی کے اِقبال کے سوتے سے پیاس بجھاتے ہیں . جو اِس بات کی دلیل چاہتے ہیں اُن کے لئے یہ کہنا کافی ہے کہ بادشاہی آدمیوں کے گروہوں کے وِرودھ کا علاج اور رعایا کے حکم ماننے کی وجہہ ہے . اِس بات کو پادشاہ کا لفظ بھی ظاہر کرتا ہے . کیونکہ "پاد" کے معنے ہیں پرتشٹھا اور ادھیکار (مضبوطی اور قبضہ) اور "شاہ" کے معنے ہیں جڑ (اصل) اور مالک (خداوند) . بادشاہ پرتشٹھا اور ادھیکار کا سوتا اور ایشور ہے . آج حکومت کا دبدبہ نہ رہے تو جھگڑے کی آندھی کیسے دب سکتی ہے اور سوارتھ کی برائی کیسے دور ہوسکتی ہے ؟ آدمی کام اور کرودھ کے بس میں آکر ناش کے گڑھے میں گر پڑیں، دنیا میں چاروں اور سے رونق اُٹھ جائے اور تھوڑے دنوں میں پرتھوی سونی ہوجائے...شاہ کا مطلب اُس چیز سے بھی ہوتا ہے جو سب سے اچھی ہو جیسے شاہ سوار اور شاہ راہ .

और इसके माने दामाद के भी हैं. दुनिया की दुल्हन बादशाह को बरती है और वह सुन्दर बहू उसकी पूजा करती है.......बादशाही वह ज्योति है जो ईश्वर से निकली है, वह किरन है जो संसार को रौशन करने वाले सूरज से उगती है. सब सिद्धियों की पुस्तकों की तालिका और सारे गुणों का खज़ाना है. चलती भाषा में इसे फ़र्रे एज़दी (दैवी ज्योति) और पुरानी भाषा में कियान ख़्वारह (पारमार्थिक तेज) कहते हैं.

"बादशाह में चार ख़ासियतें होनी ज़रूरी हैं. पहली यह कि राजा को प्रजा के माँ-बाप की जगह होना चाहिए क्योंकि रिआया उसकी मेहरबानी से सुख पाती है और मत मतांतरों के झगड़ों से बचती है. दूसरे राजा का दिल और हौसला बड़ा होना चाहिये. तीसरे उसे ईश्वर पर दिनों दिन बढ़ता भरोसा करना चाहिये. और चौथे उसका मन प्रार्थना और भक्ति में लगा रहना चाहिये. अपने कामों में सफलता देखते हुए ईश्वर को भूलना नहीं चाहिये और आफ़तों में पड़कर मत भ्रांत न होना चाहिये. बादशाह का काम है कि प्रजा की भलाई और उसके दुखों के इलाज में लगा रहे."

अबुल फ़ज़्ल के मुताबिक़ बादशाही व्यापार के तीन अंग हैं—एक राजनिवास की उन्नति, दूसरे फ़ौज की सफलता, और तीसरे प्रजा की बढ़ोतरी. पहले अंग में शाही ख़ज़ाना, हाथी, घोड़े, साज़ सामान, कारख़ाने, दरबार, महल, रनिवास और परिवार शामिल हैं; दूसरे में पैदल, सवार, तोपख़ाना, सिपाही और अफ़सर; और तीसरे में खेती और गाँव की आबादी. इन तीनों को मिलाकर जहाँबानी (लोकपालन) और जहाँदारी (दिग्विजय) के अन्दर रखा जा सकता है.

अबुलफ़ज़्ल के बयान से साफ़ मालूम होता है कि अकबर राज की शक्ति को ईश्वर की देन समझता था और अपनी चेष्टाओं का बहुत ऊँचा आदर्श रखता था. जहाँ वह यह चाहता था कि राज की शक्ति को समाज के जीवन के हर एक अंग में इस्तेमाल करे, धर्म और चाल चलन के सुधार में भी और बनिज ब्योपार और खेती दस्तकारी की उन्नति में भी, वहाँ वह यह भी समझता था कि इस विशाल शक्ति को ईश्वरी न्याय और क़ानून की हदों से बाहर न जाने दे. अपनी राज शक्ति को वह दुनिया की किसी बाहरी ताक़त से नीचा मानने को तैयार न था. इसीलिये उसने अपने ख़िताबों के ज़रिये अपनी पूरी आज़ादी का ऐलान किया. उसके ख़िताब यह थे :—

सुल्तानुलआज़म (सुलतानों में सबसे बड़ा सुलतान),

ख़ाक़ाने मुअज़्ज़म (बादशाहों में सबसे बड़ा बादशाह),

وہ اِس کے معنے داماد کے بھی ہیں۔ دنیا کی دلہن بادشاہ کو برتی ہے اور وہ سندر بہو اُس کی پوجا کرتی ہے... بادشاہی وہ جیوتی ہے جو ایشور سے نکلی ہے' وہ کرن ہے جو سنسار کو روشن کرنے والے سورج سے اُگتی ہے۔ سب سدھیوں کی پستکوں کی تالیکا اور سارے گنوں کا خزانہ ہے۔ چلتی بھاشا میں اِسے فر ایزدی (دیوی جیوتی) اور پرانی بھاشا میں کیان خوارہ (پارمارتھک تیج) کہتے ہیں۔

"بادشاہ میں چار خاصیتیں ہونی ضروری ہیں۔ پہلی یہ کہ راجہ کو پرجا کے ماں باپ کی جگہہ ہونا چاہئے کیونکہ رعایا اُس کی مہربانی سے سکھ پاتی ہے اور مت متانتروں کے جھگڑوں سے بچتی ہے۔ دوسرے راجہ کا دل اور حوصلہ بڑا ہونا چاہئے۔ تیسرے اُسے ایشور پر دنوں دن بڑھتا بھروسہ کرنا چاہئے۔ اور چوتھے اُس کا من پرارتھنا اور بھکتی میں لگا رہنا چاہئے۔ اپنے کاموں میں سپھلتا دیکھتے ہوئے ایشور کو بھولنا نہیں چاہئے اور آفتوں میں پڑ کر مت بھرانت نہ ہونا چاہئے۔ بادشاہ کا کام ہے کہ پرجا کی بھلائی اور اُس کے دکھوں کے علاج میں لگا رہے۔"

ابوالفضل کے مطابق بادشاہی ویاپار کے تین انگ ہیں—ایک اور راج نواس کی اُنتی' دوسرے فوج کی سپھلتا اور تیسرے پرجا کی بڑھوتری۔ پہلے انگ میں شاہی خزانہ' ہاتھی' گھوڑے' ساز سامان' کار خانے' دربار' محل' رنواس اور پریوار شامل ہیں؛ دوسرے میں پیدل' سوار' توپخانہ' سپاہی اور افسر' اور تیسرے میں کھیتی اور گاؤں کی آبادی۔ اِن تینوں کو ملاکر جہانبانی (لوک پالن) اور جہانداری (دگوجئے) کے اندر رکھا جا سکتا ہے۔

ابوالفضل کے بیان سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ اکبر راج کی شکتی کو ایشور کی دین سمجھتا تھا اور اپنی چیشٹاؤں کا بہت اُنچا آدرش رکھتا تھا۔ جہاں وہ یہ چاہتا تھا کہ راج کی شکتی کو سماج کے جیون کے ہر ایک انگ میں استعمال کرے' دھرم اور چال چلن کے سدھار میں بھی اور بنج بیوپار اور کھیتی دستکاری کی اُنتی میں بھی' وہاں وہ یہ بھی سمجھتا تھا کہ اِس وشال شکتی کو ایشوری نیائے اور قانون کی حدوں سے باہر نہ جانے دے۔ اپنی راج شکتی کو وہ دنیا کی کسی باہری طاقت سے نیچا ماننے کو تیار نہ تھا۔ اسی لئے اُس نے اپنے خطابوں کے ذریعہ اپنی پوری آزادی کا اعلان کیا۔ اس کے خطاب یہ تھے:—

سلطان الاعظم (سلطانوں میں سب سے بڑا سلطان)'

خاقان معظم (بادشاہوں میں سب سے بڑا بادشاہ)'

खलीफ़ा-ए-मुतआली (ऊँची पदवी वाला ख़लीफ़ा)
इमामे आदिल (मज़हबी पेशवा).

बादशाह ईश्वर का अंश है. इसलिए उसने कोर्निश, तसलीम, ज़मींबोस, नज़्र और नियाज़ के रिवाज जारी किये. ईश्वर की आँखों में सारे जगत के प्राणी एक समान हैं, इसीलिये अकबर ने हिन्दू, मुसलमान, जैन, ईसाई सबके साथ एकसा बरताव मुनासिब समझा. यही सुलह कुल (सब के साथ प्रेम) की नीति थी जिसने हिन्दुस्तान की तारीख़ में उस जगमगाते सुनहले पन्ने का इज़ाफ़ा किया जिसको पढ़कर आज भी हम अपने क़ौमी जीवन के लिए अच्छा सबक़ हासिल कर सकते हैं.

خلیفۂ متعالی (اُونچی پدوی والا خلیفہ)'
امام عادل (مذهبی پیشوا) .

بادشاہ ایشور کا انش هے . اسی لئے اُس نے کورنش' تسلیم زمیں‌بوس' نذر اور نیاز کے رواج جاری کئے . ایشور کی آنکھوں میں سارے جگت کے پرانی ایک سمان هیں' اسی لئے اکبر نے هندو' مسلمان' جین' عیسائی سب کے ساتھ ایکسا برتاؤ مناسب سمجھا . یہی صلح کل (سب کے ساتھ پریم) کی نیتی تھی جس نے هندستان کی تاریخ میں اُس جگمگاتے سنہلے پنّے کا اضافہ کیا جس کو پڑھکر آج بھی هم اپنے قومی جیون کے لئے اچھا سبق حاصل کر سکتے هیں .

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

अनुवादक—श्री मुजीब रिज़वी

انوواد‌ک—شری مجیب رضوی

मुहम्मद साहब ने कहा :—"अल्लाह का जो कोई बन्दा दुनिया के सुखों को उपेक्षा (बेपरवाही) की निगाह से देखता है ईश्वर उसके दिल में विवेक पैदा करता है और उसकी ज़बान को ऐसा बना देता है कि वह उसी विवेक की रोशनी में बोलती है. ईश्वर उसे दुनिया की बुराइयां और बीमारियां और इन सब का इलाज बता देता है, और उसे इन सब के बीच से बचाता हुआ अनन्त शान्ति के लोक में पहुँचा देता है."

—अबुज़रः बेहक़ी.

محمد صاحب نے کہا :—"اللہ کا جو کوئی بندہ دنیا کے سکھوں کو اُپیکشا (بےپرواھی) کی نگاہ سے دیکھتا هے اِیشور اُس کے دل میں وویک پیدا کرتا هے اور اُس کی زبان کو ایسا بنا دیتا هے کہ وہ اُسی وویک کی روشنی میں بولتی هے . اِیشور اُسے دنیا کی برائیاں اور بیماریاں اور اِن سب کا علاج بتا دیتا هے' اور اُسے اِن سب کے بیچ سے بچاتا هوا اَننت شانتی کے لوک میں پہونچا دیتا هے ."

—اَبو زر : بیہقی.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"केवल मोटा और खुरदरा कपड़ा पहनना और रूखा सूखा खाना इस दुनिया का त्यागना नहीं है, इस दुनिया का त्यागने का मतलब यह है कि आदमी अपनी ख़्वाहिशों यानी इच्छाओं को कम करे."

—सुफ़ियान.

محمد صاحب نے کہا :—"کیول موٹا اور کھردرا کپڑا پہننا اور روکھا سوکھا کھانا اِس دنیا کو تیاگنا نہیں هے' اِس دنیا کو تیاگنے کا مطلب یہ هے کہ آدمی اپنی خواهشوں یعنی اِچھاؤں کو کم کرے ."

—صفیان.

मैंने कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे कुछ उपदेश दीजिये." मुहम्मद साहब ने कहा—"कभी किसी को गाली न दो." इसके बाद से मैंने कभी भी किसी आज़ाद आदमी, ग़ुलाम, ऊँट या भेड़ तक को गाली नहीं दी. मुहम्मद साहब ने यह भी कहा कि—"किसी अच्छी चीज़ से नफ़रत न करो, और प्रसन्न चित्त होकर अपने भाई से बात करो; सच यह है कि ऐसा करना नेकी और दया के कामों में से है;

میں نے کہا—"اَے اللہ کے رسول ! مجھے کچھ اُپدیش دیجئے ." محمد صاحب نے کہا—"کبھی کسی کو گالی نہ دو ." اِس کے بعد سے میں نے کبھی بھی کسی آزاد آدمی' غلام' اُونٹ یا بھیڑ تک کو گالی نہیں دی . محمد صاحب نے یہ بھی کہا کہ—"کسی اچھی چیز سے نفرت نہ کرو' اور پرسن چت هوکر اپنے بھائی سے بات کرو؛ سچ یہ هے کہ ایسا کرنا نیکی اور دیا کے کاموں میں سے هے؛

और अगर तुम्हारी किसी कमज़ोरी को जानने के कारण कोई तुम्हें बुरा भला कहता है और तुम से नफ़रत करता है तो तुम उसकी उन कमज़ोरियों के आधार पर जिन्हें तुम जानते हो उससे नफ़रत न करो ताकि तुम्हें इस नेकी का इनाम मिल सके और उसका पाप उसके सर रहे.

—जाबिर बिन सुलेमान : अबुदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जो मर चुके हैं उन्हें बुरा भला न कहो क्योंकि ऐसा करके तुम उन लोगों का दिल दुखाते हो जो ज़िन्दा हैं.

—मुग़ैरा : तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"आँखों का व्यभिचार (बदचलनी) किसी को बुरी निगाह से देखना है, कानों का व्यभिचार बुरी बातों को सुनकर उनमें रस लेना है, ज़बान का व्यभिचार बुरी बातों का बोलना है, हाथों का व्यभिचार बिना हक़ के किसी को हाथ लगाना है, पैरों का व्यभिचार बुरे इरादे से कहीं जाना है. दिल बुरे काम की इच्छा करता है, अपने में लालसा पैदा करता है, और आदमी की इन्द्रियाँ (हवास) या तो उस बुराई को अमल में लाती हैं और या बुराई के इरादे को ही ख़तम कर देती हैं."

—बुख़ारी; मुसलिम; अबुदाऊद.

पैग़म्बर ने अपने साथियों से पूछा:—"आप लोग किसे बलवान समझते हैं ?" उनके साथियों ने कहा—"उसे जो दूसरे को कुश्ती में पछाड़ दे." पैग़म्बर ने कहा—"नहीं ! वह आदमी सब से ज्यादा बलवान है जो ग़ुस्से में अपने ऊपर क़ाबू रखता है."

—इब्न मसऊद : मुसलिम; अबुदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"वह आदमी बलवान या बहादुर नहीं है जो लोगों को पछाड़ देता है, हम में से वह आदमी बलवान और बहादुर है जो अपने ग़ुस्से को क़ाबू में कर लेता है."

—बुख़ारी; मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"सच बात यह है कि आदम के बेटों के दिलों में ग़ुस्सा एक शोले की तरह है. क्या ग़ुस्से वाले आदमी के आँखों की लाली और उसके गले की फूलती हुई नसें तुम्हें दिखाई नहीं देतीं ? यदि इन अलामतों में से कोई भी किसी को अपने अन्दर अनुभव हो तो उसे तुरन्त ज़मीन पर बैठ जाना चाहिये."

—अबुसईद अलख़ुदरी : तिरमिज़ी.

اور اگر تمہاری کسی کمزوری کو جاننے کے کارن کوئی تمہیں برا بھلا کہتا ہے اور تم سے نفرت کرتا ہے تو تم اُس کی اُن کمزوریوں کے آدھار پر جنہیں تم جانتے ہو اُس سے نفرت نہ کرو۔ تاکہ تمہیں اِس نیکی کا اِنعام مل سکے اور اُس کا پاپ اُس کے سر رہے۔"

—جابر بن سلیمان: ابوداؤد ۔

محمد صاحب نے کہا :—"جو مر چکے ہیں اُنہیں برا بھلا نہ کہو کیونکہ ایسا کرکے تم اُن لوگوں کا دل دکھاتے ہو جو زندہ ہیں۔"

—مغیرہ : ترمزی ۔

محمد صاحب نے کہا :—آنکھوں کا ویبھچار (بدچلنی) کسی کو بری نگاہ سے دیکھنا ہے، کانوں کا ویبھچار بری باتوں کو سنکر اُن میں رس لینا ہے، زبان کا ویبھچار بری باتوں کا بولنا ہے، ہاتھوں کا ویبھچار بنا حق کے کسی کو ہاتھ لگانا ہے، پیروں کا ویبھچار برے اِرادے سے کہیں جانا ہے ۔ دل برے کام کی اِچھا کرتا ہے، اپنے میں لالسا پیدا کرتا ہے، اور آدمی کی اِندریاں (حواس) یا تو اُس برائی کو عمل میں لاتی ہیں اور یا برائی کے اِرادے کو ہی ختم کردیتی ہیں۔"

—بخاری؛ مسلم؛ ابوداؤد ۔

پیغمبر نے اپنے ساتھیوں سے پوچھا :—"آپ لوگ کسے بلوان سمجھتے ہیں ؟" اُن کے ساتھیوں نے کہا—"اُسے جو دوسرے کو کشتی میں پچھاڑ دے۔" پیغمبر نے کہا—"نہیں ! وہ آدمی سب سے زیادہ بلوان ہے جو غصے میں اپنے اُوپر قابو رکھتا ہے۔"

—اِبن مسعود : مسلم؛ ابوداؤ ۔

محمد صاحب نے کہا کہ :—"وہ آدمی بلوان یا بہادر نہیں ہے جو لوگوں کو پچھاڑ دیتا ہے، ہم میں سے وہ آدمی بلوان اور بہادر ہے جو اپنے غصے کو قابو میں کرلیتا ہے۔"

—بخاری؛ مسلم ۔

محمد صاحب نے کہا کہ :—"سچ بات یہ ہے کہ آدم کے بیٹوں کے دلوں میں غصہ ایک شعلے کی طرح ہے ۔ کیا غصہ والے آدمی کے آنکھوں کی لالی اور اُس کے گلے کی پھولتی ہوئی نسیں تمہیں دکھائی نہیں دیتیں ؟ یدی اِن علامتوں میں سے کوئی بھی کسی کو اپنے اندر انوبھو ہو تو اُسے ترنت زمین پر بیٹھ جانا چاہئے۔"

ابو سعید الخدری : ترمزی ۔

मुहम्मद साहब ने कहा :—"खड़े होने की हालत में अगर तुम में से किसी को ग़ुस्सा आजाय तो उसे बैठ जाना चाहिये; फिर अगर उसका ग़ुस्सा उतर जाया तो अच्छा, नहीं तो उसे लेट जाना चाहिये."

—अबुदाऊद.

पैग़म्बर के पास एक आदमी आया और कहने लगा—"ऐ रसूल ! मुझे कोई ऐसी बात बताइये जिसका मैं पालन किया करूँ, लेकिन वह बात मेरे लिये इतनी कठिन न हो कि मैं और सब भूल जाऊं." पैग़म्बर ने जवाब दिया—"ग़ुस्सा न किया करो."

—बुख़ारी; मुसलिम; तिरमिज़ी.

पैग़म्बर ने कहा :—"किसी की चुग़ली करना अपने भाई का मांस खाने के बराबर है. जो कोई किसी को इससे रोकता है ख़ुदा के सामने उसका यह हक़ क़ायम हो जाता है कि ख़ुदा उसे दोज़ख़ की आग से बचाले."

—बेहक़ी.

अन्सार में से एक आदमी मुहम्मद साहब के पास आया और उसने उनसे भीक मांगी. पैग़म्बर ने उससे पूछा—"क्या तुम्हारे घर में कुछ भी नहीं है ?" उसने कहा—"हां, मेरे पास एक ऊनी दरी है जिसका एक हिस्सा हम ओढ़ते हैं और दूसरा हम बिछाते हैं, और हमारे पास एक प्याला है जिससे हम पानी पीते हैं." पैग़म्बर ने कहा कि—"यह दोनों चीज़ें लेकर तुम मेरे पास आओ." वह आदमी दोनों चीज़ें मुहम्मद साहब के पास लेकर आया. उन्होंने उन चीज़ों को हाथ में लेकर कहा—"इन दोनों चीज़ों को कौन ख़रीदेगा ?" एक आदमी ने कहा—"मैं एक दिरम में दोनों चीज़ें ख़रीद लूँगा." पैग़म्बर ने फिर कहा—"कोई है जो एक दिरम से अधिक दे ?" यह बात उन्होंने दोबारा तिबारा कही. एक दूसरे आदमी ने कहा—"मैं दोनों चीज़ों के लिये दो दिरम दे दूँगा." पैग़म्बर ने दोनों चीज़ें उस आदमी के हवाले कर दीं और दो दिरम लेकर चीज़ों के मालिक को देकर कहा—"इनमें से एक दिरम का खाना ख़रीदो और अपने घर वालों को पहुंचा दो और दूसरे दिरम से एक कुल्हाड़ी ख़रीद लो. उसे लेकर मेरे पास आओ." कुल्हाड़ी लेकर वह आदमी मुहम्मद साहब के पास आया. पैग़म्बर ने अपने हाथों से उसमें बेंट लगाया और कहा—"जाओ जंगल से लकड़ी काट कर बेचो और पन्द्रह दिन तक मुझे शकल न दिखाना." उस आदमी ने वैसा ही किया जैसा उसे हुक्म मिला था. जब उसके पास दस दिरम हो गए तब वह आदमी मुहम्मद साहब के पास

محمد صاحب نے کہا :—کھڑے ہونے کی حالت میں اگر تم میں سے کسی کو غصہ آجائے تو اُسے بیٹھ جانا چاھئے؛ پھر اگر اُس کا غصہ اُتر جائے تو اَچھا' نہیں تو اُسے لیٹ جانا چاھئے ."

—ابوداؤد .

پیغمبر کے پاس ایک آدمی آیا اور کہنے لگا—"اے رسول ! مجھے کوئی ایسی بات بتائیے جس کا میں پالن کیا کروں' لیکن وہ بات میرے لئے اتنی کٹھن نہ ہو کہ میں اور سب بھول جاؤں" پیغمبر نے جواب دیا—"غصہ نہ کیا کرو ."

—بخاری؛ مسلم؛ ترمزی.

پیغمبر نے کہا:—"کسی کی چغلی کرنا اپنے بھائی کا مانس کھانے کے برابر ھے . جو کوئی کسی کو اِس سے روکتا ھے خدا کے سامنے اُس کا یہ حق قائم ہو جا تا ھے کہ خدا اُسے دوزخ کی آگ سے بچالے ."

—بیہقی .

انصار میں سے ایک آدمی محمد صاحب کے پاس آیا اور اُس نے اُن سے بھیک مانگی . پیغمبر نے اُس سے پوچھا—"کیا تمہارے گھر میں کچھ بھی نہیں ھے ؟" اُس نے کہا—"ھاں میرے پاس ایک اُونی دری ھے جس کا ایک حصہ ھم اوڑھتے ھیں اور دوسرا ھم بچھاتے ھیں' اور ھمارے پاس ایک پیالہ ھے جس سے ھم پانی پیتے ھیں ." پیغمبر نے کہا کہ—"یہ دونوں چیزیں لیکر تم میرے پاس آؤ ." وہ آدمی دونوں چیزیں محمد صاحب کے پاس لیکر آیا . اُنھوں نے اُن چیزوں کو ھاتھ میں لیکر کہا—"اِن دونوں چیزوں کو کون خریدیگا ؟" ایک آدمی نے کہا—"میں ایک درم میں دونوں چیزیں خرید لونگا ." پیغمبر نے پھر کہا—"کوئی ھے جو ایک درم سے ادھک دے ؟" یہ بات اُنھوں نے دوبارہ تبارہ کہی . ایک دوسرے آدمی نے کہا—"میں دونوں چیزوں کے لئے دو درم دے دونگا ." پیغمبر نے دونوں چیزیں اُس آدمی کے حوالے کر دیں اور دو درم لیکر چیزوں کے مالک کو دیکر کہا—"اِن میں سے ایک درم کا کھانا خریدو اور اپنے گھروالوں کو پہنچا دو اور دوسرے درم سے ایک کلھاڑی خرید لو . اُسے لیکر میرے پاس آؤ ." کلھاڑی لیکر وہ آدمی محمد صاحب کے پاس آیا . پیغمبر نے اپنے ھاتھوں سے اُس میں بینٹ لگایا اور کہا—"جاؤ جنگل سے لکڑی کاٹ کر بیچو اور پندرہ دن تک مجھے شکل نہ دکھانا ." اُس آدمی نے ویسا ھی کیا جیسا اُسے حکم ملا تھا . جب اُس کے پاس دس درم ھو گئے تب وہ آدمی محمد صاحب کے پاس

आया. इस रक़म में से कुछ का उसने कपड़ा ख़रीदा और बाक़ी का खाना. पैग़म्बर ने तब कहा—"क़यामत के दिन कालिक पोते सामने आने से यह तुम्हारे लिये बेहतर है."

—अनस: अबुदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा—"सच यह है कि पास रखते भीक मांगना जायज़ नहीं है, और न उन लोगों के लिये भीक मांगना जायज़ है जिनका शरीर मज़बूत है या जो ख़ासी अच्छी तरह रहते हैं. माँगना उसके लिये जायज़ है जो नादार है और दुख से जीवन व्यतीत करता है, या जिसका दिवाला निकल गया है और जो क़र्ज़ में दबा हुआ है; और जो कोई अपना धन बढ़ाने के लिये दूसरों से भीक माँगता है क़यामत के दिन उसके बदन पर दाग़ होंगे और उसका शरीर ज़ख़्मों से भरा होगा और उसपर उसे बुरी तरह दोज़ख़ी पत्थर खाने होंगे. अब फ़ैसला तुम्हारे हाथों में है कि या तो अपनी थोड़ी सी पूंजी से सन्तुष्ट रहो और या अपनी पूंजी को भीक माँग कर बढ़ाने की कोशिश करो."

—तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा.—तुम में जो कोई अपनी रस्सी लेकर पहाड़ पर जाता है और लकड़ी का बोझ पीठ पर लादकर लाता है और उसे बेचता है तो ख़ुदा उसकी रक्षा करता है. दूसरों से भीख माँगने के मुक़ाबले में, चाहे वह दें या न दें, यह काम उसके लिये बेहतर है."

—ज़ुबैर: बुख़ारी.

★★★

मन्त्र पढ़ना, भजन गाना और माला फेरना छोड़, मन्दिर के सारे दरवाज़े बन्द कर. इस अंधेरे एकान्त कोने में तू किस की पूजा करता है ? अपनी आंखें खोल कर देख तेरा देवता तेरे सामने नहीं है.

हल चलाने वाला जहां कठोर भूमि में हल चला रहा है और सड़क बनाने वाला जहां पत्थर तोड़ रहा है, भगवान वहां ही उनके साथ धूप में है और बारिश में है, उसका कपड़ा धूल में लतपत है.

—रविन्द्र नाथ ठाकुर

★★★

آیا ۔ اِس رقم میں سے کچھ کا اُس نے کپڑا خریدا اور باقی کا کھانا ۔ پیغمبر نے تب کہا—"قیامت کے دن کالک پوتے سامنے آنے سے یہ تمہارے لئے بہتر ہے ۔"

—انس: ابوداؤد ۔

محمد صاحب نے کہا:—سچ یہ ہے کہ پاس رکھتے ہوئے بھیک مانگنا جائز نہیں ہے، اور نہ اُن لوگوں کے لئے بھیک مانگنا جائز ہے جن کا شریر مضبوط ہے یا جو خاصی اچھی طرح رہتے ہیں ۔ مانگنا اُس کے لئے جائز ہے جو نادار ہے اور دکھ سے جیون ویتیت کرتا ہے، یا جس کا دیوالہ نکل گیا ہے اور جو قرض میں دبا ہوا ہے؛ اور جو کوئی اپنا دھن بڑھانے کے لئے دوسروں سے بھیک مانگتا ہے قیامت کے دن اُس کے بدن پر داغ ہونگے اور اُس کا شریر زخموں سے بھرا ہوگا اور اُس پر اُسے بری طرح دوزخی پتھر کھانے ہونگے ۔ اب فیصلہ تمہارے ہاتھوں میں ہے کہ یا تو اپنی تھوڑی سی پونجی سے سنتشٹ رہو اور یا اپنی پونجی کو بھیک مانگ کر بڑھانے کی کوشش کرو ۔"

—ترمزی ۔

محمد صاحب نے کہا:—"تم میں جو کوئی اپنی رسی لیکر پہاڑ پر جاتا ہے اور لکڑی کا بوجھ پیٹھ پر لاد کر لاتا ہے اور اُسے بیچتا ہے تو خدا اُس کی رکشا کرتا ہے ۔ دوسروں سے بھیک مانگنے کے مقابلے میں، چاہے وہ دیں یا نہ دیں، یہ کام اُس کے لئے بہتر ہے ۔"

—زبیر؛ بخاری

★★★

منتر پڑھنا، بھجن گانا اور مالا پھیرنا چھوڑ، مندر کے سارے دروازے بند کر ۔ اِس اندھیرے اکانت کونے میں تو کس کی پوجا کرتا ہے ؟ اپنی آنکھیں کھولکر دیکھ تیرا دیوتا تیرے سامنے نہیں ہے ۔

ہل چلانے والا جہاں کٹھور بھومی میں ہل چلا رہا ہے اور سڑک بنانے والا جہاں پتھر توڑ رہا ہے، بھگوان وہاں ہی اُن کے ساتھ دھوپ میں ہے اور بارش میں ہے، اُس کا کپڑا دھول میں لت پت ہے ۔

—رویندر ناتھ ٹھاکر

★★★

उन्नीसवीं सदी के एक फ़क़ीर की डायरी

[2]

पण्डित सुन्दरलाल

(पिछले नम्बर से आगे)

(11)

एक दिन जब हम हज्ज के इरादे से चले तो अलवर के रास्ते में एक हिन्दू फ़क़ीर चार चेलों समेत हमारे साथ हो लिए. कहने लगे कि रात को हमारे साथ ठहरना. रात हुई तो हम सब के सब एक धरमशाला में जा उतरे. उन्होंने चेलों से पूछा क्या खाओगे ? सबने अपनी अपनी तबियत की चीज़ कह दी. वही खाना मौजूद होगया. फिर हमसे पूछा. हमने कहा साहब ! जो आप खाएंगे वही हम खावेंगे. कहा मैं तो मूंग की दाल और चपाती खाया करता हूँ. जब उनका खाना तय्यार हुआ तो हमने भी वही खाया. बात चीत शुरू हुई तो आपस में प्रेम होगया. मैंने उनसे कहा कुछ उपदेश दीजिये. कहने लगे तीन दिन हमारे पास रहो तो चौथे दिन उपदेश देंगे. हम ठहर गए. उन्होंने तीन दिन तक हमसे व्रत रखवाया. फिर कृपादृष्टि डाली और उपदेश दिया. सचमुच बड़े पहुँचे हुए आदमी थे. हम बहुत लोगों से मिले और उपदेश लिया, पर यह बात और यह असर किसी में नहीं देखा. उनकी दृष्टि पड़ते ही हमारा दिल गुलाब के फूल की तरह खिल गया और क़ायम होगया. एक दिन रूह (आत्मा) के एक जिस्म (शरीर) से दूसरे जिस्म में जाने की बात आई. कहा कि हाँ हो सकता है. क्या तुम तमाशा देखोगे ? मैंने कहा—ज़रूर. कहा तो एक मरा हुआ जानवर लाओ. अगले दिन हम एक मरा हुआ तोता लाए. रात के वक़्त वह दीवार से तकिया लगाकर बैठ गए और तोते को सामने रख लिया. दिया बुझा दिया. सिसकी लेकर दम खींचा. खट से एक आवाज़ हुई, बिजली सी चमकी और तोते में जान आगई. हमने उसे पकड़ लिया और बातें करनी शुरू कीं. वह बोल तो न सकता था लेकिन इशारे से बातें करता था. फिर हमने कहा कि अच्छा अब अपने जिस्म में आजाइये. तमाशा देख लिया. वह उसी चमक दमक से अपने जिस्म में आगए. हमने कहा कि यह बात हमको भी सिखला दीजिये. कहा कि अच्छा 15 दिन में सिखला देंगे. मगर रोटी खाने को मना कर दिया. सिर्फ़ दूध और चावल खाने को कहा और कपाली चढ़ाना बताया. कपाली दो तरह

اُنیسویں صدی کے ایک فقیر کی ڈایری

[2]

پنڈت سندر لال

(پچھلے نمبر سے آگے)

(11)

ایک دن جب ہم حج کے ارادے سے چلے تو الور کے راستے میں ایک ہندو فقیر چار چیلوں سمیت ہمارے ساتھ ہولیئے۔ کہنے لگے کہ رات کو ہمارے ساتھ ٹھہرنا۔ رات ہوئی تو ہم سب کے سب ایک دھرم شالہ میں جا اُترے۔ اُنہوں نے چیلوں سے پوچھا کیا کھاؤ گے ؟ سب نے اپنی اپنی طبیعت کی چیز کہدی۔ وہی کھانا موجود ہوگیا۔ پھر ہم سے پوچھا۔ ہم نے کہا صاحب ! جو آپ کھائینگے وہی ہم کھاوینگے۔ کہا میں تو مونگ کی دال اور چپاتی کھایا کرتا ہوں۔ جب اُن کا کھانا تیار ہوا تو ہم نے بھی وہی کھایا۔ بات چیت شروع ہوئی تو آپس میں پریم ہوگیا۔ میں نے اُن سے کہا کچھ اُپدیش دیجئے۔ کہنے لگے تین دن ہمارے پاس رہو تو چوتھے دن اُپدیش دینگے۔ ہم ٹھہر گئے۔ اُنہوں نے تین دن تک ہم سے ورت رکھوایا۔ پھر کرپا درشٹی ڈالی اور اُپدیش دیا۔ سچ مچ بڑے پہونچے ہوئے آدمی تھے۔ ہم بہت لوگوں سے ملے اور اُپدیش لیا، پر یہ بات اور یہ اثر کسی میں نہیں دیکھا۔ اُن کی درشٹی پڑتے ہی ہمارا دل گلاب کے پھول کی طرح کھل گیا اور قایم ہوگیا۔ ایک دن رُوح (آتما) کے ایک جسم (شریر) سے دوسرے جسم میں جانے کی بات آئی۔ کہا کہ ہاں ہوسکتا ہے۔ کیا تم تماشہ دیکھوگے ؟ میں نے کہا—ضرور۔ کہا تو ایک مرا ہوا جانور لاؤ۔ اگلے دن ہم ایک مرا ہوا طوطا لائے۔ رات کے وقت وہ دیوار سے تکیہ لگاکر بیٹھ گئے اور طوطے کو سامنے رکھ لیا۔ دیا بجھا دیا۔ سسکی لیکر دم کھینچا۔ کھٹ سے ایک آواز ہوئی، بجلی سی چمکی اور طوطے میں جان آگئی۔ ہم نے اُسے پکڑ لیا اور باتیں کرنی شروع کیں۔ وہ بول تو نہ سکتا تھا لیکن اِشارے سے باتیں کرتا تھا۔ پھر ہم نے کہا کہ اچھا اب اپنے جسم میں آجائیے۔ تماشہ دیکھ لیا۔ وہ اُسی چمک دمک سے اپنے جسم میں آگئے۔ ہم نے کہا کہ یہ بات ہم کو بھی سکھلا دیجئے۔ کہا کہ اچھا 15 دن میں سکھلا دینگے۔ مگر روٹی کھانے کو منع کردیا۔ صرف دودھ اور چاول کھانے کو کہا اور کپالی چڑھانا بتایا۔ کپالی دو طرح

की होती है—एक [illegible], जिसमें साँस को रोकते हैं मगर होश क़ायम रहता है, दूसरी जड़ताकी जिसमें सांस रोकने के बाद होश भी नहीं रहता. इससे पहले नेती, धोती और कुंजर क्रिया कराई और 15 दिन में अपना वादा पूरा कर दिया. हमने कई दिन करके यह काम छोड़ दिया, क्योंकि एक बखेड़ा था. कपाली चढ़ाना हमें लड़कपन से याद था, इसीलिये 15 दिन में सब काम पूरा होगया.

(12)

भोपाल में एक हिन्दू फ़क़ीर थे बाबा सीतलदास. हमने सुना कि उनकी दृष्टि में बड़ा असर है. हम भी उनके पास गए और दरख़्वास्त (प्रार्थना) की. उन्होंने कहा तीन दिन तक निर्जल उपवास करो. हमने ऐसा ही किया. तीसरे दिन बाबा जी ने कृपा दृष्टि डाली तो सारा जिस्म शीशे की तरह होगया. भीतर और बाहर रगो-रेशा सब दिखाई देते थे और एक जोत (ज्योति) ज़मीन से आसमान तक चमकती मालूम होती थी. हमने अर्ज़ की कि बाबा जी हमको—"मन् अरफ़ नफ़सहु फ़क़द् अरफ़ रब्बहु" [अर्थात्—जिसने अपनी आत्मा को पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया] के अर्थ समझा दीजिये. इस दृष्टि से तो यह बात हासिल नहीं होती. हम तो अपनी आत्मा को देखना चाहते हैं, जिस्म को और संसार को नहीं. ग़ैर को देखा तो क्या देखा. असली देखना तो अपना ही देखना है.

उन्होंने जवाब दिया कि यह तो मुश्किल है. हमने कहा कि अगर यह मुश्किल है तो हमारा भी सलाम है.

(13)

एक दिन जब हम काबे में पहुँचे तो हसनअली ज़मज़मी के हुजरे (कुटिया) में ठहरे. कुछ दिनों के बाद मौलवी मोहम्मद याक़ूब और मौलाना शाह इसहाक़ से मुलाक़ात हुई. धीरे धीरे उनसे आना जाना बढ़ गया. एक दिन हमने मौलवी मोहम्मद याक़ूब से पूछा कि 'अल्लाह का जलवा (प्रकाश) क्या अरब और हिन्दुस्तान में कुछ अलग अलग है ?' कहा—'नहीं.' फिर हमने पूछा—'हरिद्वार और काबे में क्या फ़रक़ है ?' कहा—'कुछ नहीं.' इसके बाद हमने कहा कि—'फिर आप हिन्दुस्तान से क्यों भागे ?' कहा कि—'भाई ! हम मोहम्मदी भी तो हैं.' हमारी यह बात चीत मौलाना शाह इसहाक़ भी परदे की आड़ में बैठे सुन रहे थे और हमको कुछ ख़बर न थी. इसके बाद हमने मौलवी मोहम्मद याक़ूब से दरख़्वास्त (प्रार्थना) की कि हमें 'हिस्न हसीन' (एक तरह का मन्त्र) की इजाज़त दीजिये. उन्होंने कहा कि बड़े भाई साहब से लो. दूसरे दिन शाह साहब से दरख़्वास्त की. बड़े ख़फ़ा हुए कि 'तुम्हें

کی ہوتی ہے—ایک جھاتی تاری' جس میں سانس کو روکتے ہیں مگر ہوش قایم رہتا ہے' دوسری جڑتاری جس میں سانس روکنے کے بعد ہوش بھی نہیں رہتا . اس سے پہلے نیتی' دھوتی اور کنجر کریا کرائی اور 15 دن میں اپنا وعدہ پورا کردیا . ہم نے کئی دن کرکے یہ کام چھوڑ دیا' کیونکہ ایک بکھیڑا تھا . کپالی چڑھانا ہمیں لڑکپن سے یاد تھا' اسی لئے 15 دن میں سب کام پورا ہوگیا .

(12)

بھوپال میں ایک ہندو فقیر تھے بابا سیتل داس . ہم نے سنا کہ اُن کی درشٹی میں بڑا اثر ہے . ہم بھی اُن کے پاس گئے اور درخواست (پرارتھنا) کی . اُنہوں نے کہا تین دن تک نرجل اُپواس کرو . ہم نے ایسا ہی کیا . تیسرے دن بابا جی نے کرپا درشٹی ڈالی تو سارا جسم شیشے کی طرح ہوگیا . بھیتر اور باہر رگ و ریشہ سب دکھائی دیتے تھے اور ایک جوت (جیوتی) زمین سے آسمان تک چمکتی معلوم ہوتی تھی. ہم نے عرض کی کہ بابا جی ہم کو—"من عرف نفسہ' عرف ربہ" [ارتھات—جس نے اپنی آتما کو پہچان لیا اس نے اپنے رب کو پہچان لیا] کے ارتھ سمجھا دیجئے . اِس درشٹی سے تو یہ بات حاصل نہیں ہوتی . ہم تو اپنی آتما کو دیکھنا چاہتے ہیں' جسم کو اور سنسار کو نہیں . غیر کو دیکھا تو کیا دیکھا . اصلی دیکھنا تو اپنا ہی دیکھنا ہے .

اُنہوں نے جواب دیا کہ یہ تو مشکل ہے . ہم نے کہا کہ اگر یہ مشکل ہے تو ہمارا بھی سلام ہے .

(13)

ایک دن جب ہم کعبہ میں پہونچے تو حسن علی زمزمی کے حجرہ (کٹیا) میں ٹھہرے . کچھ دنوں کے بعد مولوی محمد یعقوب اور مولانا شاہ اسحاق سے ملاقات ہوئی . دھیرے دھیرے اُن سے آنا جانا بڑھ گیا . ایک دن ہم نے مولوی محمد یعقوب سے پوچھا کہ 'اللہ کا جلوہ (پرکاش) کیا عرب اور ہندستان میں کچھ الگ الگ ہے ؟' کہا—'نہیں .' پھر ہم نے پوچھا—'ہری دوار اور کعبہ میں کیا فرق ہے؟' کہا—'کچھ نہیں .' اِس کے بعد ہم نے کہا کہ—'پھر آپ ہندستان سے کیوں بھاگے ؟' کہا کہ—'بھائی ! ہم محمدی بھی تو ہیں' ہماری یہ بات چیت مولانا شاہ اسحاق بھی پردے کی آڑ میں بیٹھے سن رہے تھے اور ہم کو کچھ خبر نہ تھی . اِس کے بعد ہم نے مولوی محمد یعقوب سے درخواست (پرارتھنا) کی کہ ہمیں 'حصن حصین' (ایک طرح کا منتر) کی اِجازت دیجئے . اُنہوں نے کہا کہ بڑے بھائی صاحب سے لو . دوسرے دن شاہ صاحب سے درخواست کی . بڑے خفا ہوئے کہ 'تمہیں

इजाज़त नहीं देंगे. कल तुम दोनों क्या बक रहे थे ?' हमने माफ़ी चाही. फिर शाह साहब ने हमें 'हिसनहसीन' पढ़ाई और इजाज़त दी. जब इजाज़त मिल गई तो हमने कहा कि हज़रत सच सच कहिए कि हम दोनों जो बात चीत कर रहे थे क्या वह हक़ीक़त (सच्चाई) के ख़िलाफ़ थी ? कुछ ठहरे, कहने लगे कि 'हाँ ' सच तो वही है जो तुम कहते थे मगर भाई हम मोहम्मदियों को ऐसी बात मुँह से निकालना अच्छा नहीं लगता, क्योंकि इन बातों से हज़रत रसूल (मोहम्मद साहब) नाराज़ होते हैं.' हमने कहा—'और ख़ुदा ?' जवाब दिया—'बस रहने दो. आगे बात चीत न करो. आदमी ख़राब हो जाता है.' उस वक़्त हमने कहा—'ख़ुदा का शुक्र है कि आप भी हमारे साथी निकले. बस, हमको इतना ही जानना बाक़ी था.' सुनकर हंस दिये.

(14)

एक दिन काबे में हमारे बाप का एक मुरीद (चेला) शबरात के दिन थोड़ा सा हलवा पकाकर लाया और कहा कि बुज़ुर्गों (पितरों) की फ़ातिहा पढ़ दीजिये. हमने कहा कि भले मानस देख तो कैसी मुसीबत उठाकर हम तुम यहाँ पहुंचे हैं. भला इस ज़रा से हलवे के लिए क्यों बुज़ुर्गों (पितरों) को तकलीफ़ देता है. इतनी दूर का सफ़र, बीच में समुद्र और फिर अगर वे आ भी गए तो इतने से हलवे में भला क्या होगा ? क्या तू उन्हें आपस में लड़ाना चाहता है ? हँसकर कहने लगा 'मियां साहब ! आपको तो हमेशा मज़ाक़ ही सूझता है. अपने बुज़ुर्गों से भी नहीं चूकते !' ख़ैर; हमने फ़ातिहा पढ़कर हलवा बांट दिया.

(15)

एक दिन हम चोली-महेशर में पहुंचे तो शाम हो गई. एक आदमी रास्ते में हमारे साथ हो लिया. उसने कहा कि यहां नर्बदा नदी के किनारे एक बाबा जी का मकान है. चलो उसी में रात बसर करेंगे. बाबा जी से इजाज़त चाही. उन्होंने कहा कि हम तो किसी को ठहरने नहीं देते. हम बाहर आए और पीपल के पेड़ के नीचे बिस्तर लगा दिया.

दुरवेश हरकुजा कि शब आमद सराए ओस्त.

(अर्थात्—फ़क़ीर को जहाँ रात होजाय वहीं उसकी सराय है.)

अपने साथी से हमने कहा कि पहली आधी रात का पहरा तुम दो. पिछली आधी रात हम जागते रहेंगे, क्योंकि यह नदी का किनारा है, मुमकिन है कोई जंगली जानवर चोट कर बैठे. हम नमाज़ पढ़ कर सो गए. वह जगता रहा. इतने में बाबा जी ने अपने मकान का फाटक खोला और हमें देखकर आवाज़ दी—'कौन है ?' मेरी आंख खुल गई.

اجازت نہیں دینگے. کل تم دونوں کیا بک رہے تھے ؟' ہم نے معافی چاہی. پھر شاہ صاحب نے ہمیں 'حسن حسین' پڑھائی اور اِجازت دی۔ جب اِجازت مل گئی تو ہم نے کہا کہ حضرت سچ مچ کہئے کہ ہم دونوں جو بات چیت کر رہے تھے کیا وہ حقیقت (سچائی) کے خلاف تھی ؟ کچھ ٹھہرے' کہنے لگے کہ 'ہاں' سچ تو وہی ہے جو تم کہتے تھے مگر بھائی ہم محمدیوں کو ایسی بات منھ سے نکالنا اچھا نہیں لگتا' کیونکہ اِن باتوں سے حضرت رسول (محمد صاحب) ناراض ہوتے ہیں' ہم نے کہا—'اور خدا ؟' جواب دیا—'بس رہنے دو. آگے بات چیت نہ کرو. آدمی خراب ہوجاتا ہے .' اس وقت ہم نے کہا—'خدا کا شکر ہے کہ آپ بھی ہمارے ساتھی نکلے. بس' ہم کو اِتنا ہی جاننا باقی تھا .' سنکر ہنس دئیے .

(14)

ایک دن کعبے میں ہمارے باپ کا ایک مرید (چیلا) شبرات کے دن تھوڑا سا حلوہ پکا کر لایا اور کہا کہ بزرگوں (پتروں) کی فاتحہ پڑھ دیجئے . ہم نے کہا کہ بھلے مانس دیکھ تو کیسی مصیبت اُٹھاکر ہم تم یہاں پہونچے ہیں . بھلا اِس ذرا سے حلوے کے لئے کیوں بزرگوں (پتروں) کو تکلیف دیتا ہے . اِتنی دور کا سفر' بیچ میں سمدر اور پھر اگر وے آ بھی گئے تو اِتنے سے حلوے میں بھلا کیا ہوگا ؟ کیا تو اُنہیں آپس میں لڑانا چاہتا ہے ؟ ہنسکر کہنے لگا 'میاں صاحب ! آپ کو تو ہمیشہ مذاق ہی سوجھتا ہے . اپنے بزرگوں سے بھی نہیں چوکتے !' خیر' ہم نے فاتحہ پڑھکر حلوہ بانٹ دیا .

(15)

ایک دن ہم چولی - مہیشر میں پہونچے تو شام ہوگئی . ایک آدمی راستے میں ہمارے ساتھ ہولیا . اُس نے کہا نربدا ندی کے کنارے ایک بابا جی کا مکان ہے . چلو اُسی میں رات بسر کرینگے . بابا جی سے اِجازت چاہی . اُنہوں نے کہا کہ ہم تو کسی کو ٹھہرنے نہیں دیتے . ہم باہر آئے اور پیپل کے پیڑ کے نیچے بستر لگادیا .

درویش ہر کجا کہ شب آمد سرائے اُوست .

(ارتھات—فقیر کو جہاں رات ہوجائے وہیں اُس کی سرائے ہے .)

اپنے ساتھی سے ہم نے کہا کہ پہلی آدھی رات کا پہرہ تم دو . پچھلی آدھی رات ہم جاگتے رہیں گے' کیونکہ یہ ندی کا کنارہ ہے' ممکن ہے کوئی جنگلی جانور چوٹ کر بیٹھے . ہم نماز پڑھکر سوگئے . وہ جاگتا رہا . اِتنے میں بابا جی نے اپنے مکان کا پھاٹک کھولا اور ہمیں دیکھکر آواز دی—'کون ہے ؟' میری آنکھ کھل گئی.

मैंने जवाब दिया वही मुसाफ़िर जिन्हें आपने ठहरने नहीं दिया. बोले कि चले आओ. हम अन्दर गए. देखा कि एक बहुत बड़ा घर है. चारों तरफ़ पक्की कोठरियां बनी हैं. नमाज़ के लिए चबूतरा है. नहाने धोने के लिए अलग जगह है, वग़ैरह वग़ैरह. एक कोठरी में उन्होंने मुझे बैठा दिया और खाना लाए. मैंने कहा कि हम दोनों आदमी मुसलमान हैं, साथ खाना खा लेंगे. बाबा जी ने इसे मंजूर न किया और कहा कि नहीं तुम अलग खाओ, उन्हें दूसरी कोठरी में अलग खिलाएंगे. तरह तरह के भोजन मेरे सामने चुन दिए गए, कई तरह के चावल, कई तरह की दालें, तरह तरह की तरकारियां, रोटी वग़ैरह. हमारी अक़्ल दंग होगई कि इतने थोड़े से वक़्त में इस अकेले आदमी ने ये चीज़ें कैसे तय्यार की होंगी. खाना खिलाने के बाद कहने लगे—हमारे इनकार से तुमने बुरा माना होगा; लेकिन बात यह थी कि अगर उस वक़्त तुम्हें बुला लेता तो तुम्हारा आदर सत्कार करता या भोजन पकाता ? मैं जानता था कि आज तुम हमारे मेहमान होगे. इसीलिए जब मैंने सब चीज़ें तय्यार करलीं तब तुम्हें अन्दर बुलाया. इसके बाद यह कहकर कि फ़क़ीर का अकेले रहना ही बेहतर है हम दोनों को अलग अलग कोठरियां सोने को दीं. एक जगह न सोने दिया. सुबह को हमने चलने का इरादा किया तो बाबा जी ने ज़िद करके हमें ठहराया. बीस दिन तक ज़बरदस्ती ठहराए रखा. दोनों वक़्त उसी तरह का खाना खिलाते रहे. हमें इस बात की बड़ी हैरानी थी कि न तो वहां किसी को पानी भरते देखा, न किसी को रोटी पकाते, न धुंआ उठता देखा, न कभी किसी को झाड़ू देते देखा, लेकिन सब मकान बिलकुल उजले और साफ़ रहते थे. बाबा जी की सूरत भी ऐसी सुन्दर और मनोहर थी कि हमने अपनी उमर भर में ऐसा सुन्दर आदमी नहीं देखा. काली डाढ़ी का अक्स चमकते हुए गालों पर ऐसा पड़ता था जैसे शीशे में हो. दिमाग़ी ताक़तें (मानसिक शक्तियां) भी बड़े ऊंचे दरजे की थीं. हर वक़्त काम में लगे रहते थे. एक पहर रात गए से बैठते तो सुबह कर देते थे. जैसे भीतर से पहुंचे हुए और कामिल थे वैसे ही बाहर से भी. वैद्यक वग़ैरह में होशियार थे. एक दिन दो कोढ़ी आए. एक हिन्दू था दूसरा मुसलमान. सूरत देखते ही हिन्दू से कहा कि तुम्हारे गुरू ने कुछ जाप बतलाया था, तुमने उस जाप में स्त्री भोग किया, इसीलिए ख़ून चक्कर खा गया. उसने अपने क़ुसूर को मान लिया. कहने लगे अब अपने गुरू के पास चले जाओ, वही इसका काट कर देंगे. मुसलमान से कहा ठहरो तुम्हें दवा देंगे. दूसरे दिन नर्बदा के अन्दर उसे गले भर पानी में खड़ा करके एक चावल भर दवा खिला दी. थोड़ी देर बाद वह प्यास के मारे चिल्लाने लगा. बाबा जी ने कहा ख़बरदार ! पानी पियेगा तो फ़ौरन

میں نے جواب دیا وہی مسافر جنھیں آپ نے ٹھہرنے نہیں دیا۔ بولے کہ چلے آؤ۔ ہم اندر گئے۔ دیکھا کہ ایک بہت بڑا گھر ہے۔ چاروں طرف پکی کوٹھریاں بنی ہیں۔ نماز کے لئے چبوترہ ہے۔ نہانے دھونے کے لئے الگ جگہ ہے، وغیرہ وغیرہ۔ ایک کوٹھری میں اُنھوں نے مجھے بیٹھا دیا اور کھانا لائے۔ میں نے کہا کہ ہم دونوں آدمی مسلمان ہیں، ساتھ کھانا کھا لیں گے۔ بابا جی نے اِسے منظور نہ کیا اور کہا کہ نہیں تم الگ کھاؤ، انہیں دوسری کوٹھری میں الگ کھلائیں گے۔ طرح طرح کے بھوجن میرے سامنے چن دئے گئے، کئی طرح کے چاول، کئی طرح کی دالیں، طرح طرح کی ترکاریاں، روٹی وغیرہ۔ ہماری عقل دنگ ہوگئی کہ اِتنے تھوڑے سے وقت میں اِس اکیلے آدمی نے یہ چیزیں کیسے تیار کی ہونگی۔ کھانا کھلانے کے بعد کہنے لگے—ہمارے اِنکار سے تم نے برا مانا ہوگا؛ لیکن بات یہ تھی کہ اگر اُس وقت تمھیں بلا لیتا تو تمھارا آدر ستکار کرتا یا بھوجن پکاتا ؟ میں جانتا تھا کہ آج تم ہمارے مہمان ہوگے۔ اسی لئے جب میں نے سب چیزیں تیار کرلیں تب تمھیں اندر بلایا۔ اس کے بعد یہ کہہ کر کہ فقیر کا اکیلے رہنا ہی بہتر ہے ہم دونوں کو الگ الگ کوٹھریاں سونے کو دیں۔ ایک جگہ نہ سونے دیا۔ صبح کو ہم نے چلنے کا اِرادہ کیا تو بابا جی نے ضد کرکے ہمیں ٹھہرایا۔ بیس دن تک زبردستی ٹھہرائے رکھا۔ دونوں وقت اسی طرح کا کھانا کھلاتے رہے۔ ہمیں اِس بات کی بڑی حیرانی تھی کہ نہ تو وہاں کسی کو پانی بھرتے دیکھا، نہ کسی کو روٹی پکاتے، نہ دھواں اُٹھتے دیکھا، نہ کبھی کسی کو جھاڑو دیتے دیکھا، لیکن سب مکان بالکل اُجلے اور صاف رہتے تھے۔ بابا جی کی صورت بھی ایسی سندر اور منوہر تھی کہ ہم نے اپنی عمر بھر میں ایسا سندر آدمی نہیں دیکھا۔ کالی داڑھی کا عکس چمکتے ہوئے گالوں پر ایسا پڑتا تھا جیسے شیشے میں ہو۔ دماغی طاقتیں (مانسک شکتیاں) بھی بڑے اُونچے درجے کی تھیں۔ ہر وقت کام میں لگے رہتے تھے۔ ایک پہر رات گئے سے بیٹھتے تو صبح کردیتے تھے۔ جیسے بھیتر سے پہونچے ہوئے اور کامل تھے ویسے ہی باہر سے بھی۔ ویدیک وغیرہ میں ہوشیار تھے۔ ایک دن دو کوڑھی آئے، ایک ہندو تھا دوسرا مسلمان۔ صورت دیکھتے ہی ہندو سے کہا کہ تمہارے گرو نے کچھ جاپ بتلایا تھا، تم نے اُس جاپ میں اِستری بھوگ کیا، اس لئے خون چکر کھا گیا۔ اُس نے اپنے قصور کو مان لیا۔ کہنے لگے اب اپنے گرو کے پاس چلے جاؤ، وہی اِس کا کاٹ کردینگے۔ مسلمان سے کہا ٹھہرو تمھیں دوا دینگے۔ دوسرے دن نربدا کے اندر اُسے گلے بھر پانی میں کھڑا کرکے ایک چاول بھر دوا کھلا دی۔ تھوڑی دیر بعد وہ پیاس کے مارے چلانے لگا۔ بابا جی نے کہا خبردار ! پانی پئے گا تو فوراً

मर जायगा. एक एक पहर के बाद उसे नदी के अन्दर ही घी पिलाते रहे. जब बाहर निकला तो बदन कुन्दन की तरह चमकने लगा था. फिर उसे बिदा कर दिया. हम बीस दिन रहे, कुछ भेद न खुला कि वह बाबा जी फ़रिश्ते थे या इनसान, सूरत से ये भी पता न चलता था कि हिन्दू हैं या मुसलमान. एक दिन हमसे कहने लगे—मियां साहब ! तुम कहां जाओगे, हमारे पास ही रह जाओ. लेकिन शर्त यह है कि अगर हम मर जावें तो तुम हमारी टांग में रस्सी बांध कर नर्बदा में ले जाकर डाल देना और अगर तुम मर गए तो हम पास के गांव से आदमी बुलाकर मुसलमानी ढंग से तुम्हारा आख़री संस्कार करा देंगे. लेकिन हम वहां ज्यादह न ठहरे.

(16)

एक दिन हम लखनऊ की एक मसजिद में ठहरे हुए थे. (सन् 57 के बाद की बात है) इत्तफ़ाक़ से एक अमीर सैर को जाता था. देखा तो सामने से स्लीमैन साहब अंग्रेज आता था. इस ख्याल से कि अंग्रेज को सलाम करना पड़ेगा, वह अमीर झट मसजिद में चला आया. स्लीमैन साहब भी पीछे पीछे मसजिद में आ पहुंचा. मेरी तरफ़ देखकर पूछने लगा कि आप कौन हैं ? मैंने कहा कि साहब ! ये तो मुझे भी पता नहीं कि मैं कौन हूँ.

कुछ नहीं खुलता मुझे मैं कौन हूँ
सूरते हैरत हूँ या शक्ले जुनूँ ?

फिर पूछा कि आपकी क़ौम क्या है ? मैंने कहा कि जो हज़रते आदम की क़ौम है. कहा आदम की क्या क़ौम है ? मैंने कहा कि मुझे नहीं मालूम, यह आदम से पूछिये. फिर कहा कि आप कहाँ से आए ? मैंने कहा कि जहां से सब आए. वह बड़ा हैरान हुआ और बोला—साहब ! जो बात हम पूछते हैं उसका उल्टा ही जवाब देते हो. फिर तो उनसे प्रेम हो गया. कभी कभी हमारे पास आने लगे. एक दिन बड़े प्रेम से दावत की. मतलब यह कि फ़क़ीर को चाहिए कि हर रंग का तमाशा देखे और किसी को बुरा न जाने, क्योंकि अल्लाह का जहूर हर जगह एकसा है—

ख़ुदा हर शै के अन्दर यूँ निहां है,
कि ज्यूँ बू गुल की गुल के दरमियां है.

अर्थात्—ईश्वर हर पदार्थ में इस तरह छिपा हुआ है कि जिस तरह फूल की गन्ध फूल के अन्दर छिपी है.

(17)

शहर दिल्ली में एक रन्डी (वेश्या) बहुत ख़ूबसूरत किसी अमीर के यहां रहती थी. एक दिन गरमी के दिनों में आधी रात के बाद उसके मकान के नीचे किसी आदमी ने

مرجائیگا . ایک ایک پہر کے بعد اُسے ندی کے اندر ہی گھی پلاتے رہے . جب باہر نکلا تو بدن کندن کی طرح چمکنے لگا تھا . پھر اُسے بدا کردیا . ہم بیس دن رہے' کچھ بھید نہ کھلا کہ وہ بابا جی فرشتہ تھے یا اِنسان . صورت سے یہ بھی پتہ نہ چلتا تھا کہ ھندو ھیں یا مسلمان . ایک دن ہم سے کہنے لگے—میاں صاحب ! تم کہاں جاؤگے' ھمارے پاس ھی رہ جاؤ . لیکن شرط یہ ھے کہ اگر ھم مرجاویں تو تم ھماری ٹانگ میں رسی باندھ کر نربدا میں لے جاکر ڈال دینا اور اگر تم مر گئے تو ھم پاس کے گاؤں سے آدمی بلاکر مسلمانی ڈھنگ سے تمھارا آخری سنسکار کرادینگے . لیکن ہم وھاں زیادہ نہ ٹھہرے .

(16)

ایک دن ہم لکھنؤ کی ایک مسجد میں ٹھہرے ہوئے تھے . (سن 57 کے بعد کی بات ھے) اِتفاق سے ایک امیر سیر کو جا تا تھا . دیکھا تو سامنے سے سلیمین صاحب انگریز آتا تھا . اِس خیال سے کہ انگریز کو سلام کرنا پڑیگا' وہ امیر جھٹ مسجد میں چلا آیا . سلیمین صاحب بھی پیچھے پیچھے مسجد میں آپہونچا . میری طرف دیکھ کر پوچھنے لگا کہ آپ کون ھیں ؟ مینے کہا کہ صاحب ! یہ تو مجھے بھی پتہ نہیں کہ میں کون ھوں .

کچھ نہیں کھلتا مجھے میں کون ھوں
صورت حیرت ھوں یا شکل جنوں ؟

پھر پوچھا کہ آپ کی قوم کیا ھے ؟ مینے کہا کہ جو حضرت آدم کی قوم ھے . کہا آدم کی کیا قوم ھے ؟ مینے کہا کہ مجھے نہیں معلوم یہ آدم سے پوچھیئے . پھر کہا کہ آپ کہاں سے آئے ؟ مینے کہا کہ جہاں سے سب آئے . وہ بڑا حیران ھوا اور بولا—صاحب ! جو بات ھم پوچھتے ھیں اُس کا اُلٹا ھی جواب دیتے ھو . پھر تو اُن سے پریم ھو گیا . کبھی کبھی ھمارے پاس آنے لگے . ایک دن بڑے پریم سے دعوت کی . مطلب یہ کہ فقیر کو چاھئے کہ ھر رنگ کا تماشہ دیکھے اور کسی کو برا نہ جانے' کیونکہ اللہ کا ظہور ھر جگہہ ایکسا ھے—

خدا ھر شے کے اندر یوں نہاں ھے'
کہ جیوں بو گل کی گل کے درمیاں ھے .

ارتھات—ایشور ھر پدارتھ میں اِس طرح چھپا ھوا ھے کہ جس طرح پھول کی گندھ پھول کے اندر چھپی ھے .

(17)

شہر دلی میں ایک رنڈی (ویشیا) بہت خوبصورت کسی امیر کے یہاں رھتی تھی . ایک دن گرمی کے دنوں میں آدھی رات کے بعد اُس کے مکان کے نیچے کسی آدمی نے

ारा किसी कोई ऐसा खुदा का बन्दा जो हमें ठण्डा
नी पिला दे ! आवाज़ सुनकर वह रण्डी जाग उठी और
क सुराही खूब ठण्डे पानी की और एक साफ़ गिलास हाथ
 लिए नीचे उतरी. उसने प्यासे फ़क़ीर को पानी पिलाया.
ब वह पी चुका तो गिलास का बचा हुआ पानी उसने
ण्डी से पीने के लिए कहा. रण्डी ने उसे पी लिया. फ़क़ीर
ल दिया. इस छिन भर की मुलाक़ात का रण्डी के दिल
र इतना ज़बरदस्त असर पड़ा कि वह उसी जगह बैठ गई.
क़ीर की जब आँख खुली तो इधर उधर देखा, वह नज़र
पड़ी. घबराकर ढूँढ़ने लगा. देखा कि वह ज़ीने के नीचे
मिट्टी पर पड़ी है. उठाकर लाया, सब हाल पूछा. रण्डी ने
हा—अब हमसे तुमसे कुछ तआल्लुक़ नहीं, न मैं तुम्हारे
ाम की, न तुम मेरे मतलब के.

अक़्ल गोयद कि दुनियओ उक़बा बजो,
इश्क़ मी गोयद बजुज़ मौला मजो.
अक़्ल मी गोयद के खुद रा पेश कुन,
इश्क़ मी गोयद के तर्के खेश कुन.

(अर्थात्—अक़्ल कहती है कि इस लोक और परलोक
ोनों को ढूंढ़, प्रेम कहता है कि सिवाय मौला (ईश्वर) के
ौर किसी को न ढूंढ़.

रण्डी ने उससे कहा कि मुझ पर इतनी कृपा करो कि एक
अलग मकान दे दो. न मैं किसी के पास जाऊं न कोई मेरे
ास आवे. कुछ दिनों के बाद वह शहर से बाहर एक
मक़बरे पर रहती थी. कोई मुतलाशी (जिज्ञासु) किसी
साधू के पास गए. उस साधू ने उसे पता दिया कि फ़लां
जगह पर एक औरत रहती है, तुम उसके पास जाओ. वह
मुतलाशी वहीं पहुँचा और अपना मतलब कह सुनाया.
औरत बोली मैं तो रण्डी हूँ, अगर कुछ तुम्हारे पास हो तो
लाओ. इसके सिवाय मैं कुछ नहीं जानती. उसने जवाब
दिया आप कुछ ही कहें, मैं एक भेदी का भेजा हुआ हूँ, टाले
से टलूंगा नहीं. तब उसने कहा—अच्छा तुम इस क़ाबिल
तो नहीं हो कि एकदम तुम्हें दीक्षा दे दी जावे, हां रोज़
सुबह शाम मेरे पास आकर बैठा करो. लेकिन अगर कोई पूछे तो
कह देना कि हमसे इससे प्रेम है. छै महीने तक वह आदमी
रोज़ इसी तरह आता रहा. छै महीने के बाद उसकी शिक्षा
को पूरा करके उस रण्डी ने उसे विदा किया.

द्वारका मक्का इबादतगाह हैं,
आपके मिलने की लाखों राह हैं.

(इसके बाद गुरू जी ने कहा कि) जिस ज़माने में हम
मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ से पढ़ते थे तो हम भी कई
बार उस औरत से मिलने गए थे.

(18)

पिछले ज़माने में जेहाद के वक़्त किसी मुसलमान की

پکارا ہے کوئی ایسا خدا کا بندہ جو ہمیں ٹھنڈا پانی پلا
دے ! آواز سن کر وہ رنڈی جاگ اٹھی اور ایک صراحی خوب
ٹھنڈے پانی کی اور ایک صاف گلاس ہاتھ میں لئے نیچے اتری .
اُس نے پیاسے فقیر کو پانی پلایا . جب وہ پی چکا تو گلاس کا
بچا ہوا پانی اُس نے رنڈی سے پینے کے لئے کہا . رنڈی نے
اُسے پی لیا . فقیر چل دیا . اِس چھن بھر کی ملاقات کا رنڈی
کے دل پر اتنا زبردست اثر پڑا کہ وہ اُسی جگہ بیٹھ گئی . اُدھر
فقیر کی جب آنکھ کھلی تو اِدھر اُدھر دیکھا' وہ نظر نہ پڑی . گھبرا
کر ڈھونڈھنے لگا . دیکھا کہ وہ زینہ کے نیچے مٹی پر پڑی ہے .
اُٹھا کر لایا' سب حال پوچھا . رنڈی نے کہا— اب ہم سے تم
سے کچھ تعلق نہیں نہ میں تمہارے کام کی' نہ تم میرے
مطلب کے .

عقل گوید کہ دنیا و عقبیٰ بجو '
عشق می گوید بجز مولا مجو .
عقل می گوید کہ خود را پیش کن '
عشق می گوید کہ ترک خویش کن .

(ارتھات— عقل کہتی ہے کہ اِس لوک اور پرلوک دونوں
کو ڈھونڈھ' پریم کہتا ہے کہ سوائے مولا (ایشور) کے اور کسی کو
نہ ڈھونڈھ .
عقل کہتی ہے کہ اپنے کو آگے بڑھا' پریم کہتا ہے کہ اپنےپن
کو مٹا .)

رنڈی نے اُس سے کہا کہ مجھ پر اِتنی کرپا کرو کہ ایک
الگ مکان دے دو . نہ میں کسی کے پاس جاؤں نہ کوئی
میرے پاس آوے . کچھ دنوں کے بعد وہ شہر سے باہر ایک
مقبرے پر رہتی تھی . کوئی متلاشی (جگیاسو) کسی سادھو
کے پاس گئے . اس سادھو نے اُسے پتہ دیا کہ فلاں جگہ پر ایک
عورت رہتی ہے' تم اُس کے پاس جاؤ . وہ متلاشی وہیں پہونچا
اور اپنا مطلب کہہ سنایا . عورت بولی میں تو رنڈی ہوں' اگر
کچھ تمہارے پاس ہو تو لاؤ . اِس کے سوائے میں کچھ نہیں
جانتی . اُس نے جواب دیا آپ کچھ ہی کہیں' میں ایک
بھیدی کا بھیجا ہوا ہوں' ٹالے سے ٹلونگا نہیں . تب اُس نے
کہا— اچھا تم اِس قابل تو نہیں ہو کہ ایکدم تمہیں دیکشا دے
دی جاوے' ہاں روز صبح شام میرے پاس آکر بیٹھا کرو . لیکن
اگر کوئی پوچھے تو کہہ دینا کہ ہم سے اِس سے پریم ہے . چھ مہینے
تک وہ آدمی روز اِسی طرح آتا رہا . چھ مہینے کے بعد اُس
کی شکشا کو پورا کر کے اُس رنڈی نے اُسے بدا کیا

دوارکا مکہ عبادت گاہ ہیں '
آپ کے ملنے کی لاکھوں راہ ہیں .

(اِس کے بعد گروجی نے کہا کہ) جس زمانے میں ہم
مولانا شاہ عبدالعزیز سے پڑھتے تھے تو ہم بھی کئی بار اُس عورت
سے ملنے گئے تھے .

(18)

پچھلے زمانے میں جہاد کے وقت کسی مسلمان کی

एक बुतपरस्त (मूर्ति पूजक) से लड़ाई हुई. बड़ी देर तक दोनों लड़ते रहे. कोई किसी को हरा न सका. इतने में नमाज़ का वक्त आया. मुसलमान ने कहा कि अब मुझे थोड़ी देर के वास्ते छुट्टी दे ताकि नमाज़ अदा कर लूं. बुतपरस्त ने इजाज़त दे दी. नमाज़ के बाद फिर लड़ाई शुरू हो गई. इतने में बुतपरस्त की पूजा का वक्त हो गया. उसने भी छुट्टी चाही और पूजा में लग गया. मुसलमान को ख्याल आया कि अब अच्छा मौक़ा है. इसका काम तमाम कर दो. तुरन्त ग़ैब (अदृष्ट) से आवाज़ आई—ऐ, बेवफ़ा ! क्या—'औफ़ु बिल ओक़ुदे' (अर्थात्—पूरा करो अपने वादों को)—क़ुरान की एक आयत का यही मतलब है ? इस बात में तुझसे तो बुतपरस्त बढ़कर निकला. यह आवाज़ सुनते ही वह मुसलमान शरमिन्दा होकर रोने लगा और फिर लड़ाई से बाज़ रहा.

ऐसे ही आजकल के मुसलमान भी बेवफ़ाई में यकता (बेमिसाल) हैं. लेकिन ग़ैब की आवाज़ उन्हें सुनाई नहीं देती, और क़ुरान शरीफ़ को देखते नहीं. अगर देखते हैं तो अमल करते नहीं.

बर ज़बां तसबीह व दर दिल गाओ ख़र,
ईं चुनी तसबीह के दारद असर.

(अर्थात्—ज़बान से अल्लाह, अल्लाह जपते हैं और दिल में बैल और गधे का ख्याल भरा हुआ है. इस तरह के जप से क्या असर हो सकता है !)

(19)

जिस चेले ने अपने पीर के मुंह से सुन सुन कर इन सब घटनाओं को लिखा है, उसकी यह आदत थी कि जब कभी वह अपने पीर (गुरू जी) से कुछ सुनना चाहता था तो उनके सामने जाकर यह शेर पढ़ दिया करता था.

बाज़ गो अज़ नज्द वज़ याराने नज्द
ता दरो दीवार रा आरी ब वज्द

एक दिन उसने सामने आकर यही शेर पढ़ा. गुरू जी कहने लगे कि—

जाकी जैसी लगन है वाको वैसो राम,
रोम रोम में रम रही नहीं और से काम.
पास कहूँ तो पास है दूर कहूँ तो दूर,
जान अजान जहान में सब में है भरपूर.
दूर कहूँ तो दूर है पास कहूँ तो पास,
रोम रोम में रम रही ज्यों फूलन में बास.
नहनो अक़रबो इलैहे मिन हब्लिल वरीद.

(क़ुरान)

(अर्थात्—ईश्वर मनुष्य की गरदन की रग की निस्बत से उसके ज़्यादा नज़दीक है.)

ایک بت پرست (مورتی پوجک) سے لڑائی ہوئی. بڑی دیر تک دونوں لڑتے رہے. کوئی کسی کو ہرا نہ سکا. اِتنے میں نماز کا وقت آیا. مسلمان نے کہا کہ اب مجھے تھوڑی دیر کے واسطے چھٹی دے تاکہ نماز ادا کرلوں. بت پرست نے اِجازت دیدی. نماز کے بعد پھر لڑائی شروع ہو گئی. اتنے میں بت پرست کی پوجا کا وقت ہو گیا. اُس نے بھی چھٹی چاہی اور پوجا میں لگ گیا. مسلمان کو خیال آیا کہ اب اچھا موقع ہے. اِس کا کام تمام کر دو. ترنت غیب (ادرشٹ) سے آواز آئی— اے بیوفا! کیا—'عفوبل عقدے' (ارتھات—پورا کرو اپنے وعدوں کو)—قران کی ایک آیت کا یہی مطلب ہے ؟ اس بات میں تجھ سے تو بت پرست بڑھکر نکلا. یہ آواز سنتے ہی وہ مسلمان شرمندہ ہو کر رونے لگا اور پھر لڑائی سے باز رہا.

ایسے ہی آجکل کے مسلمان بھی بیوفائی میں یکتا (بے مثال) ہیں. لیکن غیب کی آواز اُنھیں سنائی نہیں دیتی' اور قران شریف کو دیکھتے نہیں. اگر دیکھتے ہیں تو عمل کرتے نہیں.

برزباں تسبیح و در دل گاؤ وخر'
این چنیں تسبیح کے دارد اثر.

(ارتھات— زبان سے اللہ' اللہ جپتے ہیں اور دل میں بیل اور گدھے کا خیال بھرا ہوا ہے. اِس طرح کے جاپ سے کیا اثر ہو سکتا ہے !)

(19)

جس چیلے نے اپنے پیر کے منھ سے سن سن کر اِن سب گھٹناؤں کو لکھا ہے' اُس کی یہ عادت تھی کہ جب کبھی وہ اپنے پیر (گرو جی) سے کچھ سننا چاہتا تھا تو اُن کے سامنے جا کر یہ شعر پڑھ دیا کرتا تھا—

باز گو از نجد وز یاران نجد
تا در و دیوار را آری بہ وجد

ایک دن اُس نے سامنے آکر یہی شعر پڑھا. گروجی کہنے لگے کہ—

جاکی جیسی لگن ہے واکو ویسو رام'
روم روم میں رم رہی نہیں اور سے کام.
پاس کہوں تو پاس ہے دور کہوں تو دور'
جان اجان جہان میں سب میں ہے بھر پور.
دور کہوں تو دور ہے پاس کہوں تو پاس'
روم روم میں رم رہی جیوں پھولن میں باس.
نحن اقرب الیہ من حبل الورید

(قران)

(ارتھات—ایشور منشیہ کی گردن کی رگ کی نسبت سے اِس کے زیادہ نزدیک ہے.)

यार नज़दीकतर अज़ मन बमनस्त,
वीं अजबतर के मन अज़ वै दूरम्.
चे कुनम ताके तवां गुफ़्त कि ऊ,
दर किनारे मन बमन महजूरम.

(अर्थात्—मेरा यार मेरी निस्बत भी मेरे अधिक निकट है और आश्चर्य यह है कि मैं उससे दूर हूँ! क्या करूँ, मैं यह किससे कह सकता हूँ कि वह मेरी बग़ल में है और मैं उससे दूर हूँ.)

एक राजा था. उसे यह ख्याल हुआ कि आख़िर एक दिन मरना है, मुक्ति हासिल करने के लिए अपनी आत्मा को पहचान लेना चाहिए. इसकी कोई तरकीब करनी चाहिए. उसने बहुत से ब्राह्मणों को जमा किया और कहा—कोई ऐसी बात बतलाओ जिससे मैं अपनी आत्मा को पहचानने लगूं और जीवनमुक्त हो जाऊं. ब्राह्मणों ने विचार कर जवाब दिया कि महाराज! एक सोने की गाय बनवाइये. उसे ब्राह्मणों को दान दीजिये और इस तरह से और धन वग़ैरा दान दीजिये. 68 तीर्थ कर आइये तो भगवान की दया से जीवनमुक्त हो जाइएगा. राजा ने यह सब कर्म किए. पर इनसे न वह अपने को पहचान सका न दिल को शान्ति मिली और न मुक्ति का कोई लच्छन दिखाई दिया. फिर उसने जोगियों की तरफ़ ध्यान दिया और यही प्रार्थना उनसे की. जोगियों ने पहले तो राजा के कान फटवाए और फिर ब्रह्मचर्य, बानप्रस्थ, दण्ड कमण्डल और विजया होम वग़ैरा चार तरह की शिक्षा दी. राजा ने यह सब कुछ भी किया. लेकिन इसका भी कुछ फल न हुआ. इसके बाद उसने मुसलमानों के मौलवियों को जमा किया और यही सवाल उनके सामने रखा. उन्होंने कहा कि साहब! अगर आप इसलाम धर्म मंज़ूर कर लें तो आपकी ख़्वाहिश पूरी हो सकती है. राजा ने मंज़ूर कर लिया. मौलवियों ने उसे मुसलमान बनाया. उसका ख़तना करवाया. उसे नमाज़, रोज़ा, हज्ज, ज़कात वग़ैरा की तालीम दी. जब सब सीख लिया तो कहा कि अब आप हज्ज के लिये मक्के मदीने हो आइये. राजा ने यह सब भी किया. जब वापस अपने देश आया तो फिर मौलवियों को जमा किया और कहा कि मुझे तो कुछ भी हासिल नहीं हुआ. अब आप क्या कहते हैं?

मक्के गए, मदीने गए, करबला गए,
जैसे गए थे वैसे ही फिर फिर के आगए.

मौलवियों ने जवाब दिया कि जो कुछ हमारे धर्म में था हमने आप को सब बता दिया. इससे ज़्यादा हम कुछ नहीं जानते. सब तरफ़ से मायूस (निराश) होकर राजा को एक तरह का पागलपन हो गया. एक हाथ से उसने अपना कान पकड़ा और दूसरे हाथ से ख़तने की जगह और

یار نزدیک تر از من بہ منست
وین عجب تر کہ من از وے دورم
چہ کنم تاکہ تواں گفت کہ او
در کنار من بمن مہجورم

(ارتھات—میرا یار میری نسبت بھی میرے ادھک نکٹ ہے اور آشچریہ یہ ہے کہ میں اُس سے دور ہوں . کیا کروں میں یہ کس سے کہہ سکتا ہوں کہ وہ میری بغل میں ہے اور میں اِس سے دور ہوں .)

ایک راجہ تھا. اُسے یہ خیال ہوا کہ آخر ایک دن مرنا ہے، مکتی حاصل کرنے کے لئے اپنی آتما کو پہچان لینا چاہیئے. اِس کی کوئی ترکیب کرنی چاہئیے. اُس نے بہت سے براہمنوں کو جمع کیا اور کہا—کوئی ایسی بات بتلاؤ جس سے میں اپنی آتما کو پہچاننے لگوں اور جیون مکت ہو جاؤں . برہمنوں نے وچار کر جواب دیا کہ مہاراج ! ایک سونے کی گائے بنوائیے . اُسے براہمنوں کو دان دیجئے اور اِس اِس طرح سے اور دھن وغیرہ دان دیجئے . 64 تیرتھ کر آئیے تو بھگوان کی دیا سے جیون مکت ہو جائیگا . راجہ نے یہ سب کرم کئے . پر اِن سے نہ وہ اپنے کو پہچان سکا نہ دل کو شانتی ملی اور نہ مکتی کا کوئی لچھن دکھائی دیا . پھر اُس نے جوگیوں کی طرف دھیان دیا اور یہی پرارتھنا اُن سے کی . جوگیوں نے پہلے تو راجہ کے کان پھٹوائے اور پھر برہمچریہ، بانپرستھ، دنڈ کمنڈل اور وجیا ہوم وغیرہ چار طرح کی شکشا دی . راجہ نے یہ سب کچھ بھی کیا . لیکن اِس کا بھی کچھ پھل نہ ہوا . اِس کے بعد اُس نے مسلمانوں کے مولویوں کو جمع کیا اور یہی سوال اُن کے سامنے رکھا . اُنہوں نے کہا کہ صاحب ! اگر آپ اسلام دھرم منظور کرلیں تو آپکی خواہش پوری ہو سکتی ہے . راجہ نے منظور کرلیا . مولویوں نے اُسے مسلمان بنایا . اُس کا ختنہ کروایا . اُسے نماز، روزہ، حج، ذکاۃ وغیرہ کی تعلیم دی . جب سب سیکھ لیا تو کہا کہ اب آپ حج کے لئے مکے مدینے ہو آئیے . راجہ نے یہ سب بھی کیا . جب واپس اپنے دیش آیا تو پھر مولویوں کو جمع کیا اور کہا کہ مجھے تو کچھ بھی حاصل نہیں ہوا . اب آپ کیا کہتے ہیں ؟

مکے گئے، مدینے گئے، کربلا گئے،
جیسے گئے تھے ویسے ہی ہر پھر کے آگئے .

مولویوں نے جواب دیا کہ جو کچھ ہمارے دھرم میں تھا ہم نے آپ کو سب بتا دیا . اِس سے زیادہ ہم کچھ نہیں جانتے . سب طرف سے مایوس (نراش) ہو کر راجہ کو ایک طرح کا پاگل پن ہو گیا . ایک ہاتھ سے اُس نے اپنا کان پکڑا اور دوسرے ہاتھ سے ختنہ کی جگہ اور

जगह जगह घूम कर यह कहना शुरू किया कि 'यह हिन्दू है, और वह मुसलमान ! मैं कौन हूँ ?'

आहिर में गरचे बैठा लोगों के दरमियां हूँ,
पर जानता नहीं हूँ मैं कौन हूँ कहाँ हूँ.

आखिर में पागलों की तरह घूमते घूमते 'जोइन्दा याबिन्दा' (अर्थात्—'जिन ढूंढ़ा तिन पाइयां') के मुताबिक़ राजा के पास एक सच्चा फ़क़ीर अपने कुछ चेलों समेत आ पहुंचा. राजा को देखा और पूछने लगा—क्या कहता है ? राजा ने फिर वही कहा—'यह हिन्दू , यह मुसलमान, मैं कौन ?' फ़क़ीर ने उसे अच्छी तरह परखकर तसल्ली देकर उपदेश दिया कि यह हिन्दू मुसलमान का भेद ही आत्मा के असली रूप को समझने में सबसे बड़ी रुकावट है. आत्मा के दीदार (दर्शन) के लिए सबसे पहले इस दुई के परदे को बीच से हटा देना जरूरी है. अब राजा की आखें खुलीं. वह कर्मकाण्ड, हिन्दू मुसलमान और दुई के भेद से ऊपर उठकर हर जानदार में एक आत्मा के दर्शन करने लगा.

सत गुरू पूरा मिल गया जो खोल दिखाए नैन.

(बाक़ी फिर)

جگہہ جگہہ گھوم کر یہ کہنا شروع کیا کہ یہ 'ھندو ھے' اور یہ مسلمان ! میں کون ھوں ؟'

ظاھر میں گرچہ بیٹھا لوگوں کے درمیاں ھوں '
پر جانتا نہیں ھوں میں کون ھوں کہاں ھوں .

آخر میں پاگلوں کی طرح گھومتے گھومتے 'جو ئندہ یابندہ' (ارتھات—جن ڈھونڈھا تن پائیاں) کے مطابق راجہ کے پاس ایک سچا فقیر اپنے کچھ چیلوں سمیت آپہونچا . راجہ کو دیکھا اور پوچھنے لگا—کیا کہتا ھے ؟ راجہ نے پھر وھی کہا—'یہ ھندو' یہ مسلمان' میں کون؟'' فقیر نے اُسے اچھی طرح پرکھ کر تسلی دیکر اُپدیش دیا کہ یہ ھندو مسلمان کا بھید ھی آتما کے اصلی روپ کو سمجھنے میں سب سے بڑی رکاوٹ ھے . آتما کے دیدار (درشن) کے لئے سب سے پہلے اِس دوئی کے پردے کو بیچ سے ھٹا دینا ضروری ھے . اب راجہ کی آنکھیں کھلیں . وہ کرم کانڈ' ھندو مسلمان اور دوئی کے بھید سے اُوپر اُٹھکر ھر جاندار میں ایک آتما کے درشن کرنے لگا .

ست گرو پورا مل گیا جو کھول دکھائے نین .

(باقی پھر)

"ग़रीबों पर ख़ुदा का यह बड़ा एहसान बाक़ी है
कि दुनिया में अभी तक उनका क़ब्रिस्तान बाक़ी है
चबाए जाते हैं लेकर ख़ुदा का नाम इनसाँ को
धरम के ठेकेदारों का मगर ईमान बाक़ी है
बहा ले जाए जो ज़ुल्मो सितम को सारी दुनिया से
ज़माने में अभी आने को वह तूफ़ान बाक़ी है
जहां बिकती है रोटी के एवज़ इन्सानियत नाज़ुक
सितम है अन्नदाताओं की वह दूकान बाक़ी है
ग़रीबों से मिलेगा भोग क्या भगवान को नाज़ुक
जहां रोटी के बदले सिर्फ़ उनकी जान बाक़ी है"

—नाज़ुक इलाहाबादी

"غریبوں پر خدا کا یہ بڑا احسان باقی ھے
کہ دنیا میں ابھی تک اُن کا قبرستان باقی ھے
چبائے جاتے ھیں لے کر خدا کا نام انسان کو
دھرم کے ٹھیکیداروں کا مگر ایمان باقی ھے
بہا لے جائے جو ظلم و ستم کو ساری دنیا سے
زمانے میں ابھی آنے کو وہ طوفان باقی ھے
جہاں بکتی ھے روٹی کے عوض انسانیت نازک
ستم ھے اُن داتاؤں کی وہ دوکان باقی ھے
غریبوں سے ملیگا بھوگ کیا بھگوان کو نازک
جہاں روٹی کے بدلے صرف ان کی جان باقی ھے"

—نازک الہ آبادی

नरगिस के फूल

बिश्वम्भरनाथ पांडे

मैंने अक्सर जापानियों को यह कहते सुना है कि अगर तुमने निक्को के मन्दिर नहीं देखे तो तुमने कुछ भी नहीं देखा. इत्तफ़ाक़ से मैंने निक्को के मन्दिर देखे हैं और मैं यह मानता हूँ कि वे बेहद शानदार और आलीशान हैं, मगर यह कहना कि वे दुनिया की तामीरी कला में लासानी हैं, इससे जापानियों को बेशक तसल्ली हो सकती है मगर कला के प्रेमियों को नहीं.

मैं इसका दावा नहीं करता कि मैंने कला के लिहाज़ से दुनिया की सभी शानदार इमारतों को देखा है. अलबत्ता योरप, एशिया और अफ़्रीक़ा की अपनी सैरों में मैंने कई बेहद सुन्दर इमारतें देखी हैं. मिस्र के पिरैमिड, बाबुल के सात सतून, यूनान की रंगशालाएँ, रोम के थियेटर, ईरान में बेहस्तून के शिला लेख, चीन की बड़ी दीवार, जावा के बोरोबुदुर का मन्दिर, रंगून का पगोदा और अजन्ता और एलोरा की गुफाएं—सब आज भी मेरे नयनों में समाई हुई हैं और अक्स व बक्स मेरी कल्पनाओं में छाई हुई हैं. बरबस मेरा माथा उन जाने और अनजाने कलावन्तों और शिल्पियों के क़दमों पर झुका है जिन्होंने पुराने ज़माने को अपनी कला के ज़रिये, अपनी छेनी और अपने हथौड़े से, वर्तमान ज़माने के साथ जोड़ा है. अनमोल कला के यह अमर नमूने हमें यह तसल्ली देते रहते हैं कि इन्सान की ज़िन्दगी चन्द रोज़ा हो सकती है मगर कला अमर है और उसकी छाप हमेशा हमेशा के लिये दुनिया पर रहती है.

मैं न शिल्पी हूँ और न कलाकार, और न मुझे कला की नुक्ताचीनी करने का ही अधिकार हासिल है. लेकिन एक मामूली सैलानी की हैसियत से यह कह सकता हूँ कि आगरे के ताज को देखकर मुझ पर जो असर पड़ा उसे बयान कर सकना मेरे इमकान से बाहर है. कलाकार की कल्पना और शिल्पियों की चतुराई की इतनी मुकम्मिल तस्वीर मेरी नज़रों से आज तक नहीं गुज़री.

इस बात को जाने कितने बरस बीत चुके. इलायची, दालचीनी और संदल के पेड़ों को थपकियाँ देती हुई चैती हवा के भीने भीने दक्खिनी झकोरे क़ुदरत को गुदगुदा रहे थे. मैं आगरे की तंग गलियों को पार कर जमुना के किनारे किनारे उजाड़ और सुनसान सड़क से चक्कर काटता हुआ, अलसाया सा एक इक्के पर बैठा हुआ जा रहा था. द्वापर

نرگس کے پھول

وشومبھر ناتھ پانڈے

میں نے اکثر جاپانیوں کو یہ کہتے سنا ہے کہ اگر تم نے نکو کے مندر نہیں دیکھے تو تم نے کچھ بھی نہیں دیکھا. اِتفاق سے میں نے نکو کے مندر دیکھے ہیں اور میں یہ مانتا ہوں کہ وے بےحد شاندار اور عالیشان ہیں، مگر یہ کہنا کہ وے دنیا کی تعمیری کلا میں لاثانی ہیں، اس سے جاپانیوں کو بے شک تسلی ہوسکتی ہے مگر کلا کے پریمیوں کو نہیں ۔

میں اِس کا دعویٰ نہیں کرتا کہ میں نے کلا کے لحاظ سے دنیا کی سبھی شاندار عمارتوں کو دیکھا ہے ۔ البتہ یورپ، ایشیا اور افریقہ کی اپنی سیروں میں میں نے کئی بے حد سندر عمارتیں دیکھی ہیں ۔ مصر کے پریمڈ، بابل کے سات ستون، یونان کی رنگ شالائیں، روم کے تھیٹر، ایران میں بےہستون کے شلالیکھ، چین کی بڑی دیوار، جاوا کا بورو بدر کا مندر، رنگون کا پگودا اور اجنتا اور ایلورہ کی گپھائیں—سب آج بھی میرے نینوں میں سمائی ہوئی ہیں اور عکس بہ عکس میری کلپناؤں میں چھائی ہوئی ہیں ۔ بربس میرا ماتھا اُن جانے اور انجانے کلاونتوں اور شلپیوں کے قدموں پر جھکا ہے جنھوں نے پرانے زمانے کو اپنی کلا کے ذریعے، اپنی چھینی اور اپنے ہتوڑے سے، ورتمان زمانے کے ساتھ جوڑا ہے ۔ انمول کلا کے یہ امر نمونے ہمیں یہ تسلی دیتے رہتے ہیں کہ اِنسان کی زندگی چند روزہ ہوسکتی ہے مگر کلا امر ہے اور اس کی چھاپ ہمیشہ ہمیشہ کے لئے دنیا پر رہتی ہے ۔

میں نہ شلپی ہوں اور نہ کلاکار، اور نہ مجھے کلا کی نکتہ چینی کرنے کا ہی ادھیکار حاصل ہے ۔ لیکن ایک معمولی سیلانی کی حیثیت سے یہ کہہ سکتا ہوں کہ آگرے کے تاج کو دیکھکر مجھ پر جو اثر پڑا اُسے بیان کرسکنا میرے اِمکان سے باہر ہے ۔ کلاکار کی کلپنا اور شلپیوں کی چترائی کی اِتنی مکمل تصویر میری نظروں سے آج تک نہیں گذری ۔

اِس بات کو جانے کتنے برس بیت چکے. الائچی، دال‌چینی اور صندل کے پیڑوں کو تھپکیاں دیتی ہوئی چیتی ہوا کے بھینے بھینے دکھنی جھکورے قدرت کو گدگدا رہے تھے ۔ میں آگرے کی تنگ گلیوں کو پارکر جمنا کے کنارے کنارے اُجاڑ اور سنسان سڑک سے چکر کاٹتا ہوا، السایا سا ایک یکہ پر بیٹھا ہوا جا رہا تھا ۔ دواپر

युग में अर्जुन के जिस रथ को कृष्ण भगवान ने सारथी बनकर हाँका था, रिश्ते में यह इक्का उसका पड़पोता लगता है. अब न इस पर राजा बैठते हैं न अमले, न नेता बैठते हैं और न एम. एल. ए. न इसमें रेशमी झालरें हैं और न सुनहरे गाव तकिये. अब यह सौ फ़ीसदी ग़रीबों की सवारी है.

इक्के का मरियल सा घोड़ा एक झटके के साथ रुका. मैंने अचानक देखा कि मैं एक आलीशान लाल फाटक के सामने खड़ा हुआ हूँ. अचानक मेरी निगाह फाटक के भीतर गई और मुझे ऐसा लगा कि एक शानदार लाल मेहराब के फ्रेम में जड़ी हुई ख़ूबसूरती की एक सफ़ेद चमचमाती हुई तस्वीर मेरी आँखों के सामने है. चमकते हुए सूरज की किरनें संगमरमर के सौन्दर्य भवन के साथ अठखेलियाँ कर रही थीं और उसकी ऊँची मीनारें मेघहीन नीले आसमान के दिल में मानो चुभ जाना चाहती थीं.

ताज—महलों का मुकुट—फाटक से बहुत दूर एक भीमकाय कुर्सी पर ख़ामोश खड़ा हुआ है. सामने ख़ुशनुमा बाग़ था जहाँ बिल्लौरी फ़ुव्वारे निर्मल जल की धाराएँ फेंक रहे थे और जहाँ हरी हरी मख़मली दूब का क़ालीन बिछा हुआ था. ताज के दोनों ओर दो पहरेदारों की तरह खड़े हुए थे लाल महल और लाल मस्जिद, मुमताज़ के क़दमों को छूती हुई जमुना मानो उलहना देती हुई कह रही थी— "राधा की जुदाई को भूल कर बिन्द्राबन से मैं यहाँ आई थी मुमताज़ ! तुम्हें इसका भी ख़्याल न रहा !"

इतिहास के पन्ने मेरे दिल की तारीकी को चीर चीर कर कल्पना की सतह पर आ रहे थे और मैं अपने आप में भूला हुआ बदलते हुए युगों के झूले में पेंगें भर रहा था कि अचानक ताज के गाइड की बात मेरे कानों में पड़ी— "हुज़ूर, इस इमारत के बनाने में सत्रह बरस लगे, क़रीब बीस हज़ार मज़दूरों ने काम किया और शाहजहाँ के ख़ज़ाने से 3 करोड़ 80 लाख रुपया ख़र्च हुआ."

हिसाबी आंकड़ों में यह था प्रेम का तख़मीना ! गाइड की बात सुनकर तबियत में मतली सी होने लगी, मगर गाइड का भी क्या क़ुसूर ? बजट के दो तटों के बीच से जिनका जीवन-दरिया बहता है ऐसे योरप और अमरीका के साहब गाइड से पहला सवाल यही करते हैं.

संगमरमर की चादर ताने हुए शाहजहाँ अपनी महबूबा मल्का के लिए, ज़माने की सरहदों को तोड़कर, मानो ख़ुद प्रेम की साकार मूरत बन गया था.

ताज की पूरी इमारत इतनी लासानी है, उसके मुख़्तलिफ़ हिस्सों का संजोग इतना सुन्दर और लाजवाब है और सब मिला कर पूरा असर इतना दिलकश है कि जब तक आप ख़ुद ताज के चबूतरे पर आकर न खड़े हो जाएँ, आप इस बात का क़यास तक नहीं कर सकते कि ताज की इमारत कितनी अज़ीमुश्शान है. कितना बड़ा कलाकार रहा होगा वह

یگ میں ارجن کے جس رتھ کو کرشن بھگوان نے سارتھی بنکر هانکا تھا' رشتے میں یه یکه اُس کا پڑپوتا لگتا هے . اب نه اِس پر راجا بیٹھتے هیں نه عملے' نه نیتا بیٹھتے هیں اور نه ایمّ . ایل . اے . نه اِس میں ریشمی جھالریں هیں اور نه سنهرے گاؤ تکئے . اب یه سو فیصدی غریبوں کی سواری هے .

یکه کا مریل سا گھوڑا ایک جھٹکے کے ساتھ رکا. میں نے اچانک دیکھا که میں ایک عالیشان لال پھاٹک کے سامنے کھڑا هوا هوں. اچانک میری نگاہ پھاٹک کے بھیتر گئی اور مجھے ایسا لگا که ایک شاندار لال محراب کے فریم میں جڑی هوئی خوبصورتی کی ایک سفید چمچماتی هوئی تصویر میری آنکھوں کے سامنے هے . چمکتے هوئے سورج کی کرنیں سنگ مرمر کے سوندریه بھون کے ساتھ اٹکھیلیاں کر رهی تھیں اور اُس کی اُونچی میناریں میگھ هین نیلے آسمان کے دل میں مانو چبھ جانا چاهتی تھیں .

تاج—محلوں کا مکٹ—پھاٹک سے بہت دور ایک بھیم کائے کرسی پر خاموش کھڑا هوا هے . سامنے خوشنما باغ تھا جهاں بلوری فوارے نرمل جل کی دھارائیں پھینک رهے تھے اور جهاں هری هری مخملی دوب کا قالین بچھا هوا تھا . تاج کے دونوں اور دو پهره داروں کی طرح کھڑے هوئے تھے لال محل اور لال مسجد . ممتاز کے قدموں کو چھوتی هوئی جمنا مانو اُلهنا دیتی هوئی کهه رهی تھی—"رادھا کی جدائی کو بھولکر بندرابن سے میں یہاں آئی تھی ممتاز ! تمهیں اس کا بھی خیال نه رها !"

اِتهاس کے پنے میرے دل کی تاریکی کو چیر چیر کر کلپنا کی سطح پر آ رهے تھے اور میں اپنے آپ میں بھولا هوا بدلتے هوئے یگوں کے جھولے میں پینگیں بھر رها تھا که اچانک تاج کے گائڈ کی بات میرے کانوں میں پڑی—"حضور' اس عمارت کے بنانے میں سترہ برس لگے' قریب بیس هزار مزدوروں نے کام کیا اور شاهجهاں کے خزانے سے 3 کروڑ 80 لاکھ روپیه خرچ هوا ."

حسابی آنکڑوں میں یه تھا پریم کا تخمینه ! گائڈ کی بات سنکر طبیعت میں متلی سی هونے لگی' مگر گائڈ کا بھی کیا قصور ؟ بجٹ کے دو تٹوں کے بیچ سے جن کا جیون دریا بهتا هے ایسے یورپ اور امریکه کے صاحب گائڈ سے پهلا سوال یهی کرتے هیں .

سنگ مرمر کی چادر تانے هوئے شاهجهاں اپنی محبوبه ملکه کے لئے' زمانے کی سرحدوں کو توڑ کر' مانو خود پریم کی ساکار مورت بن گیا تھا .

تاج کی پوری عمارت اِتنی لاثانی هے' اُس کے مختلف حصوں کا سنجوگ اِتنا سندر اور لا جواب هے اور سب ملاکر پورا اثر اِتنا دلکش هے که جب تک آپ خود تاج کے چبوترے پر جاکر نه کھڑے هوجائیں' آپ اس بات کا قیاس تک نهیں کرسکتے که تاج کی عمارت کتنی عظیم الشان هے. کتنا بڑا کلا کار رها هوگا وہ

शख्स कि जिसने ताज की कल्पना की थी. उसके बाजुओं में कितनी एकता और कितनी मोहकता है. बेज़बान संगमरमर, ऐसा महसूस होने लगता है कि, हजार हजार ज़बानों से प्रेम की बेअन्त रागिनी की तान छेड़ना चाहता है.

जिस फ्रेम में प्रेम और सुन्दरता का यह लासानी नगीना जड़ा हुआ है, ताज का सारा इर्द गिर्द कितना मौजूँ और कितनी एक-रसता पैदा करने वाला है. जितनी सुन्दर तस्वीर है, उतना ही शानदार फ्रेम है. ऐसा लगता है मानो बहिश्त के चितेरों ने कल्पना के कैनवास पर दैवी सुन्दरता की एक दिलकश तस्वीर खींच दी है. दर्शक अचरज से भरा हुआ एक टक देखता रहता है और हुस्न के इस बेअन्त खज़ाने को देख सकने के लिये अपने को क़िस्मतवर समझता है और अपने मन में ताज के उस नज़्ज़ारे की अमिट झाँकी लेकर वह वहाँ से रुखसत होता है.

रौज़े के बुलन्द मेहराब पर संगमूसा के नगों से अर्बी अल्फ़ाज़ इस तरह जड़े हुए हैं मानो रौज़ा काले पारिजात* फूलों का गजरा पहने खड़ा है. संगमरमरी गोराई पर यह काले रंग का गजरा बेहद सुन्दर लगता है. संगमरमर की जाफ़रियों से सूरज की रूपहली किरनें छन छनकर धूप छाँव खेलती हैं. हल्के हल्के प्रकाश की फीकी रोशनी सदन के भीतरी हिस्से को आलोकित करती रहती है. सदन के बीच में संगमरमर की जालीदार क़नात खड़ी है, मानो किसी अनन्त सफ़र के पड़ाव पर मल्का मुमताज़ परदे में सिंगार कर रही हैं. संगमरमर की उस जाफ़री में अनमोल नगीने जड़े हुए हैं—लाजवर्द, संगसुलेमान, अक़ीक़, सूर्यकान्त, नीलम, चन्द्रकान्त और पुष्प राग—तरह तरह के फूलों और बेल बूटों की शकल में. उस जाफ़री के भीतर शाहजहाँ और मुमताज़ कभी न टूटने वाली नींद में सुध बुध खोये हुए पड़े हैं.

पूनम का चाँद जब अपने सफ़र की आधी मंज़िल तय करके ज़रा आराम करने के लिये ठहर गया था, ठीक ऐसे वक़्त में फिर दोबारा ताजमहल पहुँचा. चाँदनी ने क़ुदरत के आँचल को जूही और चमेली के फूलों से भर दिया था. दक्खिनी हवा ताजमहल के ऊपर चँवर हिला रही थी. आम की डाली पर बैठी हुई कोयल इसराज के तार सँभाल रही थी. ताजमहल की दाहिनी तरफ़ उस लाल महल के आँगन में खड़ा होकर मैं एक टक ताज की शोभा देख रहा था. बाग़ के पेड़ अपनी शाखाएँ फैलाए हुए उस महल से ख़ामोशी के सुरों में अपनी सुख दुख की कहानी कहने में मसरूफ़ थे. ज़माना बीत गया उन घटनाओं को देखे हुए मगर अब भी वे कितनी सफ़ाई से उनके दिलों में जड़ी हुई हैं. बरगद का वह दरख़्त तब कितना नन्हा सा था. शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा ने लाड़ में उसकी कोंपलें तोड़ी थीं तो माबदौलत शाहजहाँ ने शाहज़ादी को डाँटकर हसरत भरी

شخص کہ جس نے تاج کی کلپنا کی تھی. اُس کے بازوؤں میں کتنی ایکتا اور کتنی موہکتا ہے. بے زبان سنگ مرمر، ایسا محسوس ہونے لگتا ہے کہ، ہزار ہزار زبانوں سے پریم کی بےانت راگنی کی تان چھیڑنا چاہتا ہے.

جس فریم میں پریم اور سندرتا کا یہ لاثانی نگینہ جڑا ہوا ہے اُس تاج کا سارا اِردگرد کتنا موزوں اور کتنی ایکرستا پیدا کرنے والا ہے. جتنی سندر تصویر ہے، اُتنا ہی شاندار فریم ہے. ایسا لگتا ہے مانو بہشت کے چتیروں نے کلپنا کے کینواس پر دیوی سندرتا کی ایک دلکش تصویر کھینچ دی ہے. درشک اچرج سے بھرا ہوا ایک ٹک دیکھتا رہتا ہے اور حسن کے اِس بےانت خزانے کو دیکھ سکنے کے لئے اپنے کو قسمتور سمجھتا ہے اور اپنے من میں تاج کے اُس نظارے کی امٹ جھانکی لیکر وہ وہاں سے رخصت ہوتا ہے.

روضے کے بلند محراب پر سنگ موسیٰ کے نگوں سے عربی الفاظ اس طرح جڑے ہوئے ہیں مانو روضہ کالے *پاریجات پھولوں کا گجرا پہنے کھڑا ہے. سنگ مرمری گورائی پر یہ کالے رنگ کا گجرا بےحد سندر لگتا ہے. سنگ مرمر کی جافریوں سے سورج کی رو پہلی کرنیں چھن چھن کر دھوپ چھاں کھیلتی ہیں. ہلکے ہلکے پرکاش کی پھیکی روشنی سدن کے بھیتری حصہ کو آلوکت کرتی رہتی ہے. سدن کے بیچ میں سنگ مرمر کی جالیدار قناعت کھڑی ہے مانو کسی اننت سفر کے پڑاؤ پر ملکہ ممتاز پردے میں سنگار کر رہی ہیں: سنگ مرمر کی اُس جافری میں انمول نگینے جڑے ہوئے ہیں—لاجورد، سنگ سلیمان، عقیق، سوریہ کانت، نیلم، چندر کانت اور پشپ راگ—طرح طرح کے پھولوں اور بیل بوٹوں کی شکل میں. اس جافری کے بھیتر شاہجہاں اور ممتاز کبھی نہ ٹوٹنے والی نیند میں سدھ بدھ کھوئے ہوئے پڑے ہیں.

پونم کا چاند جب اپنے سفر کی آدھی منزل طے کرکے ذرا آرام کرنے کے لئے ٹھہر گیا تھا، ٹھیک ایسے وقت میں پھر دوبارہ تاج محل پہونچا. چاندنی نے قدرت کے آنچل کو جوہی اور چمیلی کے پھولوں سے بھر دیا تھا. دکھنی ہوا تاج محل کے اُوپر چنور ہلا رہی تھی. آم کی ڈالی پر بیٹھی ہوئی کویل اسراج کے تار سنبھال رہی تھی. تاج محل کی داھنی طرف اس لال محل کے آنگن میں کھڑا ہوکر میں ایک ٹک تاج کی شوبھا دیکھ رہا تھا. باغ کے پیڑ اپنی شاکھائیں پھیلائے ہوئے اُس محل سے خاموشی کے سروں میں اپنے سکھ دکھ کی کہانی کہنے میں مصروف تھے. زمانہ بیت گیا اُن گھٹناؤں کو دیکھے ہوئے مگر اب بھی وے کتنی صفائی سے اُن کے دلوں میں جڑی ہوئی ہیں. برگد کا وہ درخت تب کتنا ننھا سا تھا. شہزادی زیب النسا نے لاڈ میں جب اُس کی کونپلیں توڑی تھیں تو مابدولت شاہجہاں نے شہزادی کو ڈانٹ کر حسرت بھری

* एक क़िस्म का बेहिश्ती फूल ایک قسم کا بہشتی پھول.

निगाहों से इस बरगद के पौधे के नन्हे से बदन पर अपने शाही हाथ फेरे थे. महज़ उसी एक याद को ताज़ा किये हुए वह आज चार सदियों से अपने मालिक की क़ब्रगाह को निहारता रहता है. बदन उसका खोखला हो गया है तो क्या हुआ वह अपने लड़खड़ाते पैरों पर खड़ा है, मानो क़यामत के दिन अंगड़ाई लेकर उठते हुए शहन्शाह से कहेगा—"जहाँ पनाह ! मैं तुम्हारा हक़ीर ख़ादिम हूँ." कुछ दरख़्त अपनी अलसाई शाखें जमुना की ओर बढ़ा कर मानों मिन्नतें कर रहे हैं—बहन, ठहरो ! तुम तो दिल्ली से आ रही हो. बहादुरशाह के बाद तुमने दीवाने ख़ास की कोई ख़बर नहीं बताई. क्यों ? क्या लाल क़िले की दीवारें तुम्हें देखकर अब अपना मुँह फेर लेती हैं ? बहन ! तारवर्क़ी तो दोहरा दोहरा कर यह ऐलान कर रहे हैं कि फ़िरंगी अब लाल क़िले से रुख़सत हो गये हैं और वहाँ मुल्की निशान फहरा रहा है." मगर जमुना के कानों में मानो कोई बात ही नहीं पड़ती और अनमनी हो कर आगे बढ़ जाती है, सिर्फ़ कलकल, छपछप की आवाज़ कानों में पड़ती है, मानो जमुना की धाराएं उसके अनमनेपन पर कानाफूसी कर रही हों.

ताज के बाईं तरफ़ लाल मस्जिद खड़ी हुई थी. रुपहले संगमरमर से टकराकर चाँदनी मस्जिद के गुलाबी बदन को सफ़ेद ढाकाई मलमल की चादर से ढकने की बेकार कोशिश कर रही थी. ताज के पीछे से जमुना शहर की ओर इस तरह बह रही थी मानो मुमताज के दामन का रुपहला गोटा सिलन तोड़कर बिखर गया हो. ताज से तीन मील दूर काले धब्बे की तरह क़िला और जहांगीरी महल खड़े हुए थे. क़िले के बाहर के लाल पत्थर की चहारदीवारी धुँधलके में साफ़ नहीं दिखाई दे रही थी, लेकिन भीतर की संगमरमर की मोती मस्जिद रह रह कर चमक उठती थी.

❀ ❀ ❀

रात की ख़ामोशी में तवारीख़ की टूटी कड़ियों को सिलसिलेवार जोड़ने की कोशिश करते हुए कितनी रात बीत गई, इसका मुझे ज़रा भी अन्दाज़ा न था. चाँद की शीतल किरनें, मन्द मन्द हवा के झकोरे, रुपहला और चमकता हुआ ताजमहल—सारा समाँ और नज़्ज़ारा इतना मन मोहने वाला था कि दिमाग़ एक जगह अटक कर रह गया. सहसा उस सुनसान महल को रस में नहलाती हुई इसराज की एक मधुर तान मेरे कानों में गूँज गई. मेरे अचरज का ठिकाना न रहा जब मैंने यह महसूस किया कि उसी सुनसान महल के भीतर से मधुर मधुर गीत की यह धुन उठ रही थी, मेरे तन बदन में कंपकपी सी दौड़ गई.

यकायक बाजे की गत के साथ मुझे एक ईरानी नाच के पदचाप सुनाई दिये. इसराज के तार हवा को मथकर

نگاہوں سے اس برگد کے پودے کے ننھے سے بدن پر اپنے شاہی ہاتھ پھیرے تھے ۔ محض اسی ایک یاد کو تازہ کئے ہوئے وہ آج چار صدیوں سے اپنے مالک کی قبرگاہ کو نہارتا رہتا ہے ۔ بدن اس کا کھوکھلا ہوگیا ہے تو کیا ہوا وہ اپنے لڑکھڑاتے پیروں پر کھڑا ہے' مانو قیامت کے دن انگڑائی لیکر اٹھتے ہوئے شہنشاہ سے کہیگا— "جہاں پناہ! میں تمہارا حقیر خادم ہوں ۔" کچھ درخت اپنی السائی شاخیں جمنا کی اور بڑھا کر مانو منتیں کر رہے ہیں—"بہن' ٹھہرو! تم تو دلی سے آ رہی ہو ۔ بہادرشاہ کے بعد تم نے دیوان خاص کی کوئی خبر نہیں بتائی ۔ کیوں ؟ کیا لال قلعے کی دیواریں تمہیں دیکھکر اب اپنا منھ پھیر لیتی ہیں ؟ بہن' تاروَرقی تو دہرا دہرا کر یہ اعلان کر رہے ہیں کہ فرنگی اب لال قلعہ سے رخصت ہوگئے ہیں اور وہاں ملکی نشان پھہرا رہا ہے ۔" مگر جمنا کے کانوں میں کوئی بات ہی نہیں پڑتی اور وہ ان‌منی ہوکر آگے بڑھ جاتی ہے ۔ صرف کل کل' چھپ چھپ کی آواز کانوں میں پڑتی ہے مانو جمنا کی دھارائیں اس کے ان‌منے پن پر کانا پھوسی کر رہی ہوں ۔

تاج کے بائیں طرف لال مسجد کھڑی ہوئی تھی ۔ روپہلے سنگ مرمر سے ٹکرا کر چاندنی مسجد کے گلابی بدن کو سفید ڈھاکائی ململ کی چادر سے ڈھکنے کی بیکار کوشش کر رہی تھی ۔ تاج کے پیچھے سے جمنا شہر کی اور اس طرح بہ رہی تھی مانو ممتاز کے دامن کا روپہلا گوٹا سیلن توڑکر بکھر گیا ہو ۔ تاج سے تین میل دور کالے دھبے کی طرح قلعہ اور جہانگیری محل کھڑے ہوئے تھے ۔ قلعہ کے باہر کے لال پتھر کی چہاردیواری دھندھلکے میں صاف نہیں دکھائی دے رہی تھی' لیکن بھیتر کی سنگ مرمر کی موتی مسجد رہ رہ کر چمک اٹھتی تھی ۔

❀ ❀ ❀

رات کی خاموشی میں تواریخ کی ٹوٹی کڑیوں کو سلسلہ وار جوڑنے کی کوشش کرتے ہوئے کتنی رات بیت گئی اس کا مجھے ذرا بھی اندازہ نہ تھا ۔ چاند کی شیتل کرنیں' مند مند ہوا کے جھکورے' روپہلا اور چمکتا ہوا تاج محل—سارا سماں اور نظارہ اتنا من موہنے والا تھا کہ دماغ ایک جگہ اٹک کر رہ گیا ۔ سہسا اس سنسان محل کو رس میں نہلاتی ہوئی اسراج کی ایک مدھرتان میرے کانوں میں گونج گئی ۔ میرے اچرج کا ٹھکانہ نہ رہا ۔ جب میں نے یہ محسوس کیا کہ اس سنسان محل کے بھیتر سے مدھر مدھر گیت کی یہ دھن اٹھ رہی تھی تو میرے تن بدن میں کپکپی سی دوڑ گئی ۔

یکایک باجے کی گت کے ساتھ مجھے ایک ایرانی ناچ کے پدچاپ سنائی دیئے ۔ اسراج کے تار ہوا کو متھ کر

मदहोश बना रहे थे. घुंघरुओं की झंकार भी तेज़ी पकड़ रही थी. मैं भी सुर ताल में थपकी भर कर झूमने लगा. मेरे पैर बरबस नाच का ताल और सुर भरने लगे. मैं हैरान होकर सोचने लगा कि इसराज के तारों पर इतना मदमस्त कम्पन आखिर किन उंगलियों ने पैदा किया ? यह नाच और गान आखिर हो कहाँ रहा है ? मैं यह सोच ही रहा था कि मेरे कानों में दमिश्क़ के एक अरबी प्रेम-गीत के सुर पड़े. क्या अपने पिछले सफ़र में मैंने यही प्रेम-गीत नहीं सुना था ? मगर वहाँ उस गीत पर कलाकार के कोमल सुरों ने मिठास का मुलम्मा फेर दिया था. सा...र...ग...म के मधुर सुर पर अलाप दौड़ रहा था. इसराज के सिर्फ़ तीन तारों पर उंगलियाँ फिर रही थीं, मगर मेरा दिल इसराज की कम्पन के साथ तड़पता और चीत्कार करता, रात की ख़ामोशी को चीरता, चाँदनी और अँधेरे में मँडराता, पेड़ों की शाखों पर नाचता, जमुना की तरंगों पर झूमता, सारे समाँ को कम्पित करता अनन्त में 'समा जाना चाहता था. ऐसा लगता था कि मानो किसी बसन्त के सवेरे सारी दुनिया की हसरत बटोर कर पपीहा, अपने पी के साथ एक हो जाना चाहता था. गायक के सुरों में इतना जादू था कि मैं अपनी सुध बुध खो बैठा. नीले आसमान में चमचमाता हुआ पूनम का चाँद दोनों हाथों से अपनी चाँदनी बखेर रहा था. गीत की तान के साथ संसार का सारा रस मानो एक जगह इकट्ठा हो रहा था. जो कुछ मैंने देखा और सुना उसकी सही सही तसवीर लफ़्ज़ों में उतार सकना मेरे लिये क़तई नामुमकिन है.

जब तक वे काँपते हुए और बिलखते हुए संगीत के स्वर चाँदनी पर रीझे हुए चारों दिशाओं में भटकते रहे तब तक मैं सुध-बुध बिसार कर उसे सुनता रहा. थोड़ी देर के लिए गीत यकायक थम गया. जब मेरे होश हवास लौटे तब मुझे अहसास हुआ कि गीत की धुन तो उसी महल के ऊपर की मंज़िल से आ रही थी. यकायक मन में भावना उठी कि क्यों न ऊपर चल कर देखा जाय. कई चक्करदार सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ, रोशनी और अँधेरे से गुज़रता, मैं रास्ता खोजता हुआ ऊपर बढ़ा. इसराज के तार फिर यकायक झनझना उठे और उसकी आवाज़ के सहारे ही मैं ऊपर का रास्ता पाने लगा. गोल चक्कर काटती हुई सीढ़ियाँ छत पर एक छोटे से बराम्दे में ख़त्म होती थीं. बराम्दा कटी हुई जाफ़री से बन्द था. बराम्दे के बाद ही एक बड़ी सी छत थी.

चाँदनी की मासूम किरनें रुपहली पोशाक पहने हुए छत पर रह रह कर गुलाबजल छिड़क रही थीं. चालीस फ़ुट लम्बे चौड़े संगमरमर के फ़र्श पर क़रीब चार इन्च मोटा दमिश्क़ी क़ालीन बिछा हुआ था. पूरब की जानिब एक चाँदी का तख़्त पड़ा हुआ था जिसपर बेशक़ीमत

مدہوش بنا رہے تھے۔ گھنگھروؤں کی جھنکار بھی تیزی پکڑ رہی تھی۔ میں بھی سر تال میں تھپکی بھر کر جھومنے لگا ۔ میرے پیر بربس ناچ کا تال اور سر بھرنے لگے ۔ میں حیران ہو کر سوچنے لگا کہ اسراج کے تاروں پر اتنا مدمست کمپن آخر کن انگلیوں نے پیدا کیا ؟ یہ ناچ اور گان آخر ہو کہاں رہا ہے ؟ میں یہ سوچ ہی رہا تھا کہ میرے کانوں میں دمشق کے ایک عربی پریم گیت کے سر پڑے ۔ کیا اپنے پچھلے سفر میں میں نے یہی پریم گیت نہیں سنا تھا ؟ مگر یہاں اُس گیت پر کلاکار کے کومل سروں نے مٹھاس کا ملمع پھیر دیا تھا۔ سا...رے...گا...ما کے مدھر سر پر الاپ دوڑ رہا تھا ۔ اسراج کے صرف تین تاروں پر انگلیاں پھر رہی تھیں مگر میرا دل اسراج کی کمپن کے ساتھ تڑپتا اور چیتکار کرتا' رات کی خاموشی کو چیرتا" چاندنی اور اندھیرے میں منڈلاتا' پیڑوں کی شاخوں پر ناچتا' جمنا کی ترنگوں پر جھومتا' سارے سماں کو کمپت کرتا انت میں سما جا نا چاہتا تھا ۔ ایسا لگتا تھا مانو کسی بسنت کے سویرے ساری دنیا کی حسرت بٹور کر پپیہا اپنے پی کے ساتھ ایک ہو جا نا چاہتا تھا ۔ گایک کے سروں میں اتنا جادو تھا کہ میں اپنی سدھ بدھ کھو بیٹھا ۔ نیلے آسمان میں چمچماتا ہوا پونم کا چاند دونوں ہاتھوں سے اپنی چاندنی بکھیر رہا تھا ۔ گیت کی تان کے ساتھ سنسار کا سارا رس مانو ایک جگہہ اکٹھا ہو رہا تھا ۔ جو کچھ میں نے دیکھا اور سنا اُس کی صحیح صحیح تصویر لفظوں میں اُتار سکنا میرے لئے قطعی ناممکن ہے ۔

جب تک وہ کانپتے ہوئے اور بلکھتے ہوئے سنگیت کے سور چاندنی پر ریجھے ہوئے چاروں دشاؤں میں بھٹکتے رہے تب تک میں سدھ بدھ بسار کر اُسے سنتا رہا ۔ تھوڑی دیر کے لئے گیت یکا یک تھم گیا ۔ تھوڑی دیر میں میرے ہوش حواس لوٹے ۔ تب مجھے احساس ہوا کے گیت کی دھن تو اُسی محل کے اُوپر کی منزل سے آرہی تھی ۔ یکا یک من میں بھاؤنا اُٹھی کہ کیوں نہ اُوپر چل کر دیکھا جائے ۔ کئی چکر دار سیڑھیوں پر چڑھتا ہوا' روشنی اور اندھیرے سے گذرتا' میں راستہ کھوجتا ہوا اُوپر بڑھا ۔ اسراج کے تار پھر یکایک جھنجھنا اُٹھے اور اس کی آواز کے سہارے ہی میں اوپر کا راستہ پانے لگا ۔ گول چکر کاٹتی ہوئی سیڑھیاں چھت پر ایک چھوٹے سے برآمدہ میں ختم ہوتی تھیں ۔ برآمدہ کٹی ہوئی جافری سے بند تھا ۔ برآمدہ کے بعد ھی ایک بڑی سی چھت تھی ۔

چاندنی کی معصوم کرنیں روپہلی پوشاک پہنے ہوئے چھت پر رہ رہ کر گلاب جل چھڑک رہی تھیں ۔ چالیس فٹ لمبے چوڑے سنگ مر مر کے فرش پر قریب چار انچ موٹا دمشقی قالین بچھا ہوا تھا ۔ پورب کے جانب ایک چاندی کا تخت پڑا ہوا تھا جس پر بیش قیمت

सुनहरा किमख़्वाब बिछा था. कामदार गाव तकिये लगे हुए थे. तख़्त पर एक बूढ़ा सा आदमी गाव तकिये के सहारे बैठा हुआ था—चौड़ी छाती, उठी हुई पेशानी, लम्बी झुकी हुई नाक, उभरी हुई गाल की हड्डियाँ, दाढ़ी और भवें दोनों सफ़ेद. बूढ़े के सामने एक ज़र्द मसनद के सहारे एक नौजवान सुन्दरी बैठी हुई थी जिसकी उम्र का तख़मीना 25 और 30 बरस के बीच किया जा सकता है. उसके चेहरे पर हुस्न बरस रहा था. रंग उसका दमकते हुए सोने का सा था. उसके सर के बाल चार लटों में पिरोये हुए थे जो काली नागिनों की तरह कमर तक लटक रहे थे, आँखें उसकी गोल बादाम जैसी, पेशानी पर कुछ घुँघराली लटें उड़ रही थी, नाक पतली लेकिन सीधी, धनुष जैसे गुलाबी होंट, मोतियों के से दाँत, गोल ठुड्डी और लम्बा चेहरा, हाथ, पैर और कान छोटे लेकिन बेहद सुडौल और भरे हुए. वह गहरे लाल रेशम की कुर्ती, सुनहले साटन की जैकेट पहने हुए थी और उस पर हल्के गुलाबी रंग का सुनहला गोटा टँका था; रतन जटित सल्मा सितारों से भरा और चुन्नट किया हुआ डुपट्टा ओढ़े हुए थी. उसके दाहिने हाथ में नरगिस के फूलों का गुच्छा था. ऐसा मालूम होता था कि वह संगीत में डूबी हुई थी. उन दोनों के अलावा दो ख़ूबसूरत नौजवान नर्तकी और एक अधेड़ शख़्स और था जो डूबा हुआ इसराज के तारों पर अपनी उंगलियाँ फेर रहा था. दोनों नर्तकी भी ज़री और रेशमी कपड़े पहने हुए थीं. मैं तहज़ीब और शायस्तगी भूलकर चाँद की किरनों से धुले हुए सुन्दरी के चेहरे को एक टक देख रहा था. पाँचों में से किसी को मेरी मौजूदगी का अहसास न हो पाया.

❀ ❀ ❀

मैं वहाँ चुपचाप खड़ा था, मानो किसी मंत्र से बँधा हुआ. उस्ताद की उँगलियों के छूते ही इसराज पागल हो उठता था. मद भरा प्रेम गीत, मनमोहक नाच और इसराज की तरंगें जादू का सा समा बाँध रही थी.

यकायक मजलिस रुकी और सब के सब मुँडेर के पास आकर, नीचे बहती हुई जमुना के उस पार कोहरे का डुपट्टा ओढ़े आगरे की सोई हुई नगरी की ओर ध्यान से देखने लगे. मैं भी कौतूहल से भरा हुआ दीवार के पास पहुंचा. जो कुछ देखा, मेरे अचरज का ठिकाना न रहा. फटते हुए कोहरे की चादर से साफ़ होता हुआ संगमरमर का एक पुल दिखाई दिया जिसकी एक मेहराब ताज के इस किनारे पर थी तो दूसरी मेहराब जमुना के उस किनारे पर. सिर्फ़ एक मेहराब वाला रुपहले संगमरमर का बुर्जदार ख़ूबसूरत पुल देखकर मेरी हैरत का ठिकाना न रहा. कोहरा ज़रा और साफ़ हुआ और तब मैंने देखा कि ठीक जमुना के उस

سنہرا کمخواب بچھا تھا ۔ کامدار گاؤ تکئے لگے ہوئے تھے تخت پر ایک بوڑھا سا آدمی گاؤ تکئے کے سہارے بیٹھا ہوا تھا—چوڑی چھاتی، اٹھی ہوئی پیشانی، لمبی جھکی ہوئی ناک، ابھری ہوئی گال کی ہڈیاں، داڑھی اور بھوئیں دونوں سفید. بوڑھے کے ساتھ ایک زرد مسند کے سہارے ایک نوجوان سندری بیٹھی ہوئی تھی جس کی عمر کا تخمینہ 25 اور 30 برس کے بیچ کیا جا سکتا ھے ۔ اُس کے چہرے پر حسن برس رہا تھا ۔ رنگ اُس کا دمکتے ہوئے سونے کا سا تھا ۔ اُس کے سر کے بال چار لٹوں میں پروئے ہوئے تھے جو کالی ناگنوں کی طرح کمر تک لٹک رہے تھے، آنکھیں اُس گول بادام جیسی، پیشانی پر کچھ گھنگھرالی لٹیں اُڑ رہی تھی، ناک پتلی لیکن سیدھی، دھنش جیسے گلابی ہونٹ، موتیوں کے سے دانت، گول ٹھوڑی اور لمبا چہرہ، ہاتھ پیر اور کان چھوٹے لیکن بے حد سڈول اور بھرے ہوئے ۔ وہ گہرے لال ریشم کی کرتی، سنہلے ساٹن کی جیکٹ پہنے ہوئے تھی اور اُس پر ہلکے گلابی رنگ کا سنہلا گوٹا ٹنکا تھا؛ رتن جٹت سلمہ ستاروں سے بھرا اور چنٹ کیا ہوا دوپٹہ اوڑھے ہوئے تھی ۔ اس کے داہنے ہاتھ میں نرگس کے پھولوں کا گچھا تھا ۔ ایسا معلوم ہوتا تھا وہ سنگیت میں ڈوبی ہوئی تھی ۔ ان دونوں کے علاوہ دو خوبصورت نوجوان نرتکی تھیں اور ایک ادھیڑ شخص اور تھا ۔ ڈوبا ہوا اسراج کے تاروں پر اپنی اُنگلیاں پھیر رہا تھا ۔ دونوں نرتکی بھی زری اور ریشمی کپڑے پہنے ہوئے تھیں ۔ میں تہذیب اور شائستگی بھول کر چاند کی کرنوں سے دھلے ہوئے سندری کے چہرے کو ایک ٹک دیکھ رہا تھا ۔ پانچوں میں سے کسی کو میری موجودگی کا احساس نہ ہو پایا ۔

❀ ❀ ❀

میں وہاں چپ چاپ کھڑا تھا مانو کسی منتر سے بندھا ہوا ۔ اُستاد کی اُنگلیوں کے چھوتے ہی اسراج پاگل ہو اٹھتا تھا ۔ مد بھرا پریم گیت، من موہک ناچ اور اِسراج کی ترنگیں جادو کا سا سماں باندھ رہی تھیں ۔

یکا یک مجلس رکی اور سب کے سب منڈیر کے پاس آکر، نیچے بہتی ہوئی جمنا کے اُس پار، کہرے کا دوپٹہ اوڑھے آگرے کی سوئی نگری کی اور دھیان سے دیکھنے لگے ۔ میں بھی کوتوہل سے بھرا ہوا دیوار کے پاس پہونچا، جو کچھ دیکھا، میرے اچرج کا ٹھکانہ نہ رہا. پھٹتے ہوئے کہرے کی چادر سے صاف ہوتا ہوا سنگ مرمر کا ایک پل دکھائی دیا جس کی ایک محراب تاج کے اِس کنارے پر تھی تو دوسری محراب جمنا کے اُس کنارے پر. صرف ایک محراب والا روپہلے سنگ مرمر کا برج دار خوبصورت پل دیکھ کر میری حیرت کا ٹھکانا نہ رہا ۔ کہرا ذرا اور صاف ہوا اور تب میں نے دیکھا کہ ٹھیک جمنا کے اُس

किनारे पर संगमरमर के पुल के उस पाए के पास ताजमहल की हू बहू एक दूसरी इमारत खड़ी थी—उतनी ही साफ़, उतनी ही सुन्दर, उतनी ही कला से भरी हुई, उतनी ही बिल्लौरी—दोनों में किसी क़िस्म का फ़र्क़ कर सकना मुश्किल था. पुल का रास्ता, छत, मेहराब, खिड़कियें सब सफ़ेद चमकदार संगमरमर की बनी हुई थीं. मैं अचरज और हैरत में सरोपा डूब कर अपनी सुध बुध खो बैठा. पुल क्या था मानों संगमरमर का धनुष एक ताज को दूसरे ताज से जोड़ रहा था.

मैं बेचैन होकर उस नज़्ज़ारे के पुट के पुट अपने दिल में भर रहा था कि अचानक जमुना के जल से घना कोहरा उठकर आसमान में छाने लगा. आगरे का शहर, संगमरमर का पुल, उस पार का ताजमहल और नदी सब के सब धुँधल्के के पर्दे में छिप गये. मैंने आसमान की ओर नज़र डाली तो देखा कि पूनम का चाँद उफ़क़ के होंटों का चुम्बन ले रहा था. चाँदनी नीली पड़ रही थी और आने वाली जुदाई के सदमे से सिमटती जा रही थी.

मैंने मुड़ कर मजलिस की तरफ़ नज़र डाली मगर वहाँ पाँचों में से कोई भी न था. बिना किसी आवाज़ के, ख़ामोशी के साथ वे मानो सबके सब हवा में ग़ायब हो गये. वह मोटा मख़मली क़ालीन, जड़ाऊ चाँदी का तख़्त, रेशमी और किमख़्वाब की चादरें, ज़र्री गाव तकिये और मसनदें, उस्ताद और इसराज, नर्तकियाँ और उनके घुँघरू, वह हुस्न की परी और वह इन्सानियत का देवता, सब के सब रहस्य के पर्दे में समा गये. किसी चीज़ की वहाँ परछांई तक बाक़ी न रही. उस अजीबो ग़रीब मजलिस की यादगार को ताज़ा रखने वाला सिर्फ़ रह गया था सदाबहार नरगिस के फूलों का वह गुच्छा ! मैंने एक सर्द आह भर कर धीरे से उसे जाकर उठा लिया.

❋ ❋ ❋

एक ठंडी हवा के झोंके ने मेरी खोई हुई चेतना वापस ला दी. मैंने आगरे की तरफ़ नज़र दौड़ाई. रेल के इंजनों और कारख़ानों की चिमनियों का धुँआ कुन्डली बनाता हुआ हवा के रुख़ उत्तर दिशा में इकट्ठा हो रहा था. दूर, बहुत दूर, पहाड़ियों की एक क़तार थकी माँदी पड़ी थी. मैं गुम सुम सोच रहा था कि वह संगमरकर का पुल और वह दूसरा ताज क्या महज़ मेरी कल्पना और धोका थे ? वह हुस्न की परी और वह शायस्तगी का देवता, क्या वह दोनों भी धोका थे ? वह नौजवान नर्तकियाँ झूम झूम कर नाचती हुई और कला का धनी वह उस्ताद, क्या वे तीनों भी सपना थे ? नहीं, यह क़तई नामुमकिन है. मैं उन सब के चेहरों की राई राई बनावट दोहरा सकता हूँ. कितना सुरीला गला था उस्ताद का, कितना स्वर और ताल से भरा हुआ ! क्या वह

کنارے پر سنگ مرمر کے پل اُس پایہ کے پاس تاج محل کی ہو بہو ایک دوسری عمارت کھڑی تھی. اُتنی ہی صاف، اُتنی ہی سندر اُتنی ہی کلا سے بھری ہوئی، اُتنی ہی بلوری—دونوں میں کس قسم کا فرق کر سکنا مشکل تھا. پل کا راستہ، چھت، محراب، کھڑکیاں سب سفید چمکدار سنگ مرمر کی بنی ہوئی تھیں. میں اچرج اور حیرت میں سروپا ڈوب کر اپنی سدھ بدھ کھو بیٹھا. پل کیا تھا مانو سنگ مرمر کا دھنش تاج کو دوسرے تاج سے جوڑ رہا تھا.

میں بے چین ہو کر اُس نظارے کے پٹ کے پٹ اپنے دل میں بھر رہا تھا کہ اچانک جمنا کے جل سے گھنا کہرا اُٹھکر آسمان میں چھانے لگا. آگرے کا شہر، سنگ مرمر کا پل، اُس پار کا تاج محل اور ندی سب کے سب دھندھلکے کے پردے میں چھپ گئے. میں نے آسمان کی اُور نظر ڈالی تو دیکھا کہ پونم کا چاند اُفق کے ہونٹھوں کا چمبن لے رہا تھا. چاندنی نیلی پڑ رہی تھی اور آنے والی جدائی کے صدمے سے سمٹتی جا رہی تھی.

میں نے مڑکر مجلس کی طرف نظر ڈالی مگر وہاں پانچوں میں سے کوئی بھی نہ تھا. بنا کسی آواز کے، خاموشی کے ساتھ وے مانو سب کے سب ہوا میں غایب ہو گئے. وہ موٹا مخملی قالین، جڑاؤ چاندی کا تخت، ریشمی اور کمخواب کی چادریں، زریں گاؤ تکئے اور مسندیں، اُستاد اور اسراج، نرتکیاں اور ان کے گھنگھرو، وہ حسن کی پری اور وہ انسانیت کا دیوتا، سب کے سب رہسیہ کے پردے میں سما گئے. کسی چیز کی وہاں پرچھائیں تک باقی نہ رہی. اُس عجیب و غریب مجلس کی یادگار کو تازہ رکھنے والا صرف رہ گیا تھا سدا بہار نرگس کے پھولوں کا وہ گچھا! میں نے ایک سرد آہ بھر کر دھیرے سے اُسے جاکر اُٹھا لیا.

❋ ❋ ❋

ایک ٹھنڈی ہوا کے جھونکے نے میری کھوئی ہوئی چیتنا واپس لا دی. میں نے آگرے کی طرف نظر دوڑائی. ریل کے انجنوں اور کارخانوں کی چمنیوں کا دھواں کنڈلی بنا ہوا ہوا کے رخ اُتر دشا میں اکٹھا ہو رہا تھا. دور، بہت دور، پہاڑیوں کی ایک قطار تھکی ماندی پڑی تھی. میں گم سم سوچ رہا تھا کہ وہ سنگ مرمر کا پل اور وہ دوسرا تاج کیا محض میری کلپنا اور دھوکا تھے؟ وہ حسن کی پری اور وہ شایستگی کا دیوتا کیا وہ دونوں بھی دھوکا تھا؟ وہ نوجوان نرتکیاں جھوم جھوم کر ناچتی ہوئی اور کلا کا دھنی وہ اُستاد کیا وے تینوں بھی سپنا تھے؟ نہیں یہ قطعی ناممکن ہے. میں ان سب کے چہروں کی رائی رائی بناوٹ دہرا سکتا ہوں. کتنا سریلا گلا تھا اُستاد کا، کتنا سور اور تال سے بھرا ہوا! کیا وہ

महज़ मेरे दिमाग़ की उपज थी ? कभी नहीं ! कभी नहीं ! अगर यह सब सपना और धोका था तो यह नरगिस के फूल ? इनकी सुगन्ध, इनकी पखड़ियाँ और इनकी मादकता, यह सब कितनी जीती जागती बातें हैं ! मैं इनकी ख़ुशबू को सूँघ रहा हूँ, इन्हें हाथों से छू रहा हूँ और आँखों से देख रहा हूँ. अगर यह सपना और धोका नहीं हैं तो वह हुस्न की परी जिसने इन्हें अपनी कोमल उंगलियों से पकड़ रक्खा था कैसे सपना और धोका हो सकती है ?

❀ ❀ ❀

शफ़क़ ने धीरे से सिंदूर का थाल बिखेर दिया. आसमान ने हँसकर उसकी पेशानी को चूम लिया. सूरज ने कनखियों से उनकी यह प्रेम लीला देखी. मौलसिरी के पेड़ पर बैठा हुआ पपीहा पी कहाँ ! पी कहाँ ! की टेर लगाने लगा. नीचे बाग़ की सफ़ाई और इक्का दुक्का सैलानी की आमद रफ़्त शुरू हो गयी. मैं थका हुआ भारी पैरों से सीढ़ियाँ तय करता हुआ नीचे आया. महल से निकलते ही एक बूढ़े ख़्वास्तगीर पर मेरी नज़र पड़ी. मैंने पास जाकर उससे रात के गीत और नाच की बात पूछी. लापरवाही से बूढ़े ने मुझे टाल दिया. पर जब मैंने उस हुस्न की परी की बात कही तो उसके पैर लड़खड़ा गये. उसके हाथ से लाठी छूट कर गिर पड़ी. वह वहीं कलेजा थाम कर बैठ गया. जब संभल कर उठा तो अस्फुट आवाज़ में 'मल्कए जहान ! मल्कए जहान !' कहता हुआ एक ओर चला गया. मैं उससे ज़्यादा कुछ न पूछ सका.

उस पूनो की रात की बात मैं किस से पूछूँ ? लोग मुझे ख़ब्ती और दीवाना समझेंगे. हालाँकि मुझे इसकी ज़रा भी परवाह नहीं. लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि कोई मल्कए जहान मुमताज़ का मज़ाक़ उड़ाए.

वह सदा सुगंध देने वाले नरगिस के फूल अब भी जतन के साथ मेरे ड्राइंग रूम में चाइना के फूलदान में रक्खे हुए हैं.

محض میرے دماغ کی اپج تھی؟ کبھی نہیں ! کبھی نہیں ! اگر یہ سب سپنا اور دھوکا تھا تو یہ نرگس کے پھول ؟ اِن کی سگندھ، اِن کی پنکھڑیاں اور اِن کی مادکتا یہ سب کتنی جیتی جاگتی باتیں ہیں ! میں اِن کی خوشبو کو سونگھ رہا ہوں، اِنہیں ہاتھوں سے چھو رہا ہوں اور آنکھوں سے دیکھ رہا ہوں ۔ اگر یہ سپنا اور دھوکا نہیں ہیں تو وہ حسن کی پری جس نے اِنہیں اپنی کومل اُنگلیوں سے پکڑ رکھا تھا کیسے سپنا اور دھوکا ہو سکتی ہے ؟

❀ ❀ ❀

اُفق نے دھیرے سے سندور کا تھال بکھیر دیا ۔ آسمان نے ہنس کر اُس کی پیشانی کو چوم لیا ۔ سورج نے کنکھیوں سے اُن کی یہ پریم لیلا دیکھی ۔ مولسری کے پیڑ پر بیٹھا ہوا پپیہا پی کہاں ! پی کہاں ! کی ٹیر لگانے لگا ۔ نیچے باغ کی صفائی اور اِکا دوکا سیلانی کی آمد رفت شروع ہو گئی ۔ میں تھکا ہوا بھاری پیروں سے سیڑھیاں طے کرتا ہوا نیچے آیا ۔ محل سے نکلتے ہی ایک بوڑھے خواستگیر پر میری نظر پڑی ۔ میں نے پاس جا کر اُس سے رات کے گیت اور ناچ کی بات پوچھی ۔ لاپرواہی سے بوڑھے نے مجھے ٹال دیا ۔ پر جب میں نے اُس حسن کی پری کی بات کہی تو اُس کے پیر لڑ کھڑا گئے ۔ اُس کے ہاتھ سے لاٹھی چھوٹ کر گر پڑی ۔ وہ وہیں کلیجہ تھام کر بیٹھ گیا ۔ جب سنبھل کر اُٹھا تو اسپھٹ آواز میں' ملکۂ جہان ! ملکۂ جہان !' کہتا ہوا ایک اور چلا گیا ۔ میں اُس سے زیادہ کچھ نہ پوچھ سکا ۔

اُس پونو کی رات کی بات میں کس سے پوچھوں ؟ لوگ مجھے خبطی اور دیوانہ سمجھیں گے' حالانکہ مجھے اِس کی ذرا بھی پرواہ نہیں ۔ لیکن میں یہ نہیں چاہتا کہ کوئی ملکۂ جہان ممتاز کا مذاق اُڑائے ۔

وہ سدا سگندھ دینے والے نرگس کے پھول اب بھی جتن کے ساتھ میرے ڈرائنگ روم میں چائنا کے پھولدان میں رکھے ہوئے ہیں ۔

एक आदर्श चीनी मजदूर लड़की

श्रीमती प्रभा एम. ए. हिन्दी अध्यापिका
पीकिंग यूनिवर्सिटी पीकिंग, चीन

(1)

हो चेन शू को मैं पहले नहीं जानती थी पर नाम बहुत सुना था. चीन में जहां कहीं भी हम कपड़े की मिल देखने गए मालूम हुआ कि वहां के कारखाने वाले हो चैन शू का तरीक़ा काम में ला रहे हैं. एक दिन मेरे एक विद्यार्थी ल्याओ ची युई ने मुझ से पूछा-"आप हो चेन शू को जानती हैं?" मैंने कहा—"पत्रिकाओं में कुछ उनके बारे में पढ़ा है." उसने कहा—"आप उनसे मिलिये, पीकिंग ही में तो हैं और सारे देश में मशहूर हैं." उसी दिन से मुझे इच्छा हुई कि मैं हो चैन शू से मुलाक़ात करूं. मैंने अपनी इच्छा अपने चीनी अध्यापक साथी श्री यिन हुंग युयेन के सामने रक्खी. उन्होंने बड़ी दिलचस्पी के साथ विश्वविद्यालय के पूर्वी-भाषा विभाग की तरफ़ से मेरे हो चेन शू के पास जाने का प्रबंध कर दिया. मुझे 12 फ़र्वरी को 4 बजे उनसे मिलने का समय दिया गया. मन में अजीब तरह की ख़ुशी महसूस करती हुई मैं उस दिन यिन साहब के साथ हो चेन शू से मिलने चली.

हो चेन शू जनता विश्वविद्यालय (Peoples University) के मिडिल स्कूल में पहले दरजे की विद्यार्थी हैं. जनता विश्वविद्यालय पेकिंग विश्वविद्यालय से तीन चार मील दूर है. जब हम उस विश्वविद्यालय के फाटक पर पहुंचे तो वहां के प्रधान (Vice-Chancellor) व उपप्रधान (नायब वाइस चाँसलर) ने हमारा स्वागत किया. सादी पोशाक में मंझोले क़द की लगभग उन्नीस बरस की एक तन्दुरुस्त व हंसमुख चेहरे वाली लड़की को प्रधान ने आगे कर दिया—"यह हैं हो चेन शू." वह हमसे बड़ी मुहब्बत से मिलीं और उस कमरे में ले गईं जहां मेहमानों के बैठने के लिये ख़ास तौर से इन्तज़ाम है. प्रधान ने मुझ से कहा कि हो चेन शू उनके विश्वविद्यालय में पढ़ती है यह उनके लिये ख़ुशी की बात है. मैं भी बेहद ख़ुश थी. मैंने प्रधान को धन्यवाद दिया कि उन्होंने मुझे हो चेन शू से मिलने का मौक़ा दिया. इस के बाद वे बाहर चले गये और मैं हो चेन शू से बातचीत करने लगी.

हो चेन शू ने मुझे अपने बचपन का हाल बताते हुए कहा:—"मैं शांगतुंग प्रांत के छिंग ताव शहर के पास ताओ

ایک آدرش چینی مزدور لڑکی

شریمتی پربھا ایم . اے . هندی ادھیاپکا پیکنگ یونیورسٹی
پیکنگ، چین

(1)

هوچین‌شو کو میں پہلے نہیں جانتی تھی پر نام بہت سنا تھا . چین میں جہاں کہیں بھی هم کپڑے کی مل دیکھنے گئے معلوم ہوا کہ وهاں کے کارخانے والے هو چین شو کا طریقہ کام میں لا رهے هیں . ایک دن میرے ایک ودیارتھی لیاؤ چی یوئی نے مجھ سے پوچھا—"آپ هوچین شوکو جانتی هیں ؟" میں نے کہا—"پتریکاؤں میں کچھ اُن کے بارے میں پڑھا هے." اُس نے کہا—"آپ اُن سے ملئے، پیکنگ هی میں تو هیں اور سارے دیش میں مشہور هیں." اُسی دن سے مجھے اِچھا هوئی کہ میں هوچین شو سے ملاقات کروں . میں نے اپنی اِچھا اپنے چینی ادھیاپک ساتھی شری ین هنگ یوئین کے سامنے رکھی . اُنھوں نے بڑی دلچسپی کے ساتھ وشودیالیہ کے پوروی بھاشا وبھاگ کی طرف سے میرے هوچین شو کے پاس جانے کا پربندھ کردیا . مجھے 12 فروری کو 4 بجے اُن سے ملنے کا سمے دیا گیا . من میں عجیب طرح کی خوشی محسوس کرتی هوئی میں اُس دن ین صاحب کے ساتھ هوچین شو سے ملنے چلی .

هوچین‌شو جنتا وشودیالیہ (Peoples University) کے مڈل اِسکول میں پہلے درجہ کی ودیارتھی هیں . جنتا وشودیالیہ پیکنگ وشودیالیہ سے تین چار میل دور هے . جب هم اُس وشودیالیہ کے پھاٹک پر پہونچے تو وهاں کے پردھان (Vice-Chancellor) و اُپ پردھان (نائب وائس‌چانسلر) نے همارا سواگت کیا . سادی پوشاک میں منجھولے قد کی لگ بھگ اُنیس برس کی ایک تندرست و هنس مکھ چہرے والی لڑکی کو پردھان نے آگے کردیا—"یہ هیں هوچین شو." وہ هم سے بڑی محبت سے ملیں اور اُس کمرے میں لےگئیں جہاں مہمانوں کے بیٹھنے کے لئے خاص طور سے اِنتظام هے . پردھان نے مجھ سے کہا کہ هوچین شو اُن کے وشودیالیہ میں پڑھتی هے یہ اُن کے لئے خوشی کی بات هے . میں بھی بےحد خوش تھی . میں نے پردھان کو دھنیہ‌واد دیا کہ اُنھوں نے مجھے هوچین شو سے ملنے کا موقع دیا . اِس کے بعد وے باهر چلے گئے اور میں هوچین شو سے بات چیت کرنے لگی .

هوچین شو نے مجھے اپنے بچپن کا حال بتاتے هوئے کہا :— "میں شانگتنگ پرانت کے چھنگ تاو شہر کے پاس تاؤ

नामक गांव में पैदा हुई थी. लाखों और ग़रीब बच्चों की तरह मेरा बचपन भी ग़रीबी में बीता. घर में माता पिता के अलावा चार छोटे भाई और दो बहनें थीं, मैं सबसे बड़ी थी. पिता जी के पास एक गधा गाड़ी थी. उससे वह छिंग ताव से दूसरी जगहों पर अमीरों का सामान ढोया करते थे. उन दिनों चोरों लुटेरों के कारण रास्ता ख़तरनाक था मगर गुज़ारे का दूसरा साधन न होने के कारण मेरे पिताजी कई साल से यही काम करते थे. रास्ते में पुलिस तो रहती थी पर वह बहुत कम ध्यान देती थी और मेरे पिताजी अक्सर गाड़ी लुट जाने के कारण दुखी व उदास होकर घर लौटते थे. उनके दिन चिन्ता में बीतते थे और कभी कभी सामान लुट जाने के कारण उन्हें अमीर मालिकों को उनके माल की क़ीमत भी भरनी पड़ती थी. जब कमाई नहीं तो पैसा कहां से देते ? इसलिये उनकी हालत बहुत ही ख़राब रहती थी."

हो चेन शू कहा कि :—"जब मैं 8 साल की थी तब जापानियों ने वहां क़ब्ज़ा कर लिया. सारा गाँव ख़ाली कराया गया. दूसरे घरों के साथ साथ हमारा घर भी जला दिया गया, क्योंकि जापानियों को वहां हवाई अड्डा बनाना था. माता पिता के साथ मैं गांव के बाहर चली गई पर कहीं रहने के लिये जगह न मिली. हम सब एक पहाड़ी गुफा में रहने लगे." इस पर लम्बी सांस लेते हुए हो चेन शू ने कहा :—"उन दिनों हमारी हालत बहुत ख़राब थी. मैं घर की हालत समझती तो थी लेकिन मुझे क्या करना चाहिये यह समझ न थी. कुछ दिन के बाद मैं माता जी के कहने पर जंगल से सूखी घास जमा करने गई और बाद में रोज़ जंगल से घास, खेतों से सब्ज़ियाँ और समन्दर से कुछ खाने की चीज़ें इकट्ठा करने लगी. उन दिनों मैं कचरा-घरों के आगे और कारख़ानों के पिछवाड़े चक्कर लगाया करती थी और जले हुए कोयलों में से अच्छे अच्छे छांटकर घर ले आती थी. कोयला बटोरने के कारण मेरे हाथ, पांव, मुंह सब काले हो गये थे, इसलिये आस पास के सब लोग मुझे "छोटी काली भूतनी" कहने लगे थे."

यह कहते कहते उसके मुँह पर मुस्कराहट आ गई. पर उस मुस्कराहट में भी उस समय की हालत का दर्दनाक चित्र और उसके प्रति उसका असंतोश साफ़ ज़ाहिर हो रहा था.

परिस्थितियों ने उसे अपनी उमर से कुछ अधिक समझदार बना दिया था. गुड़ियां खेलने की उमर में उसने मज़दूरी करने की इच्छा प्रगट की. माता पिता भी इससे ख़ुश हुए पर उसने मुझ से कहा कि बहुत कोशिश करने पर भी उसे कोई काम न मिला.

जून 1949 में छिंग ताव गांव जापानियों के क़ब्ज़े से आज़ाद हो गया. अब हो चेन शू के जीवन की दशा ही

نامک گاؤں میں پیدا هوئی تھی. لاکھوں اور غریب بچوں کی طرح میرا بچپن بھی غریبی میں بیتا . گھر میں ماتا پتا کے علاوہ چار چھوٹے بھائی اور دو بہنیں تھیں' میں سب سے بڑی تھی . پتا جی کے پاس ایک گدھا گاڑی تھی . اُس سے وہ چھنگ تاؤ سے دوسری جگھوں پر امیروں کا سامان ڈھویا کرتے تھے . اُن دنوں چوروں لٹیروں کے کارن راستہ خطرناک تھا مگر گذارے کا دوسرا سادھن نہ هونے کے کارن میرے پتا جی کئی سال سے یہی کام کرتے تھے . راستے میں پولس تو رهتی تھی پر وہ بہت کم دھیان دیتی تھی اور میرے پتا جی اکثر گاڑی لٹ جانے کے کارن دکھی و اُداس هوکر گھر لوٹتے تھے . اُن کے دن چنتا میں بیتتے تھے . اور کبھی کبھی سامان لٹ جانے کے کارن اُنہیں امیر مالکوں کو اُن کے مال کی قیمت بھی بھرنی پڑتی تھی . جب کمائی نہیں تو پیسہ کہاں سے دیتے ؟ اِس لئے اُن کی حالت بہت هی خراب رهتی تھی ."

هوچین شو نے کہا کہ :—"جب میں آٹھ سال کی تھی تب جاپانیوں نے وهاں قبضہ کرلیا . سارا گاؤں خالی کرایا گیا . دوسرے گھروں کے ساتھ ساتھ همارا گھر بھی جلا دیا گیا' کیونکہ جاپانیوں کو وهاں هوائی اڈا بنانا تھا . ماتا پتا کے ساتھ میں گاؤں کے باهر چلی گئی پر کہیں رهنے کے لئے جگہ نہ ملی . هم سب ایک پہاڑی گپھا میں رهنے لگے ." اِس پر لمبی سانس لیتے هوئے هوچین شو نے کہا :—"اُن دنوں هماری حالت بہت خراب تھی . میں گھر کی حالت سمجھتی تو تھی لیکن مجھے کیا کرنا چاهئے یہ سمجھ نہ تھی . کچھ دن کے بعد میں ماتا جی کے کہنے پر جنگل سے سوکھی گھاس جمع کرنے گئی اور بعد میں روز جنگل سے گھاس' کھیتوں سے سبزیاں اور سمندر سے کچھ کھانے کی چیزیں اکٹھا کرنے لگی . اُن دنوں میں کچرا گھروں کے آگے اور کارخانوں کے پچھواڑے چکر لگایا کرتی تھی اور جلے هوئے کوئلوں میں سے اچھے اچھے چھانٹ‌کر گھر لے آتی تھی . کوئلہ بٹورنے کے کارن میرے هاتھ' پاؤں' منھ سب کالے هوگئے تھے' اس لئے آس پاس کے سب لوگ مجھے 'چھوٹی کالی بھوتنی' کہنے لگے تھے ."

یہ کہتے کہتے اُس کے منھ پر مسکراهٹ آگئی . پر اُس مسکراهٹ میں بھی اُس سمے کی حالت کا دردناک چتر اور اُس کے پرتی اُس کا اسنتوش صاف ظاهر هو رها تھا .

پرستھتیوں نے اُسے اپنی عمر سے کچھ ادھک سمجھدار بنا دیا تھا . گڑیاں کھیلنے کی عمر میں اُس نے مزدوری کرنے کی اِچھا پرگٹ کی . ماتا پتا بھی اِس سے خوش هوئے پر اُس نے مجھ سے کہا کہ بہت کوشش کرنے پر بھی اُسے کوئی کام نہ ملا .

جون 1949 میں چھنگ تاو گاؤں جاپانیوں کے قبضے سے آزاد هوگیا . اب هوچین شو کے جیون کی دشا هی

बदल गई. चीनी कारखानों में मजदूरों की मांग हुई. नवम्बर में उसे सरकारी कपड़ा मिल नं० 6 में काम मिल गया. वह उस समय 14 साल की भी नहीं थी.

घर की ग़रीबी का चित्र उसके सामने था. भाई बहनों का भूक से तड़पना उसे याद था. उससे पहले बीसों बार काम के लिये कोशिश कर चुकी थी, इसलिये जब उसे काम मिला तो वह बहुत ख़ुश हुई और जी लगाकर काम करने लगी. शुरू से ही उसने बड़ी तरक़्क़ी की और अपनी लगन व मेहनत से उसने एक नया तरीका निकाला जिसके अनुसार काम करने में पैदावार बढ़ती थी और सब को बहुत फ़ायदा था. कारख़ाने के अन्दर रुई की कताई और पूनी बनाई में जो रुई आया जाती थी उसमें हो चेन शू के नए तरीक़े से पचासी फ़ीसदी रुई की बचत होने लगी. पहले तो किसी को विश्वास नहीं हुआ. साथियों ने मज़ाक़ भी उड़ाया पर लगातार अध्ययन करने और देखते रहने के बाद अधिकारियों को उसकी बात मंजूर करनी पड़ी. हो चेन शू का तरीक़ा एक नया और सफल तरीका था इसलिये दिसम्बर 1950 में वह अपने कारख़ाने की "आदर्श मज़दूर" कहलाने लगी और मई 1951 में उसे दूसरे दरजे का यानी छिंग ताव का "आदर्श मज़दूर" घोषित कर दिया गया. अगस्त 1951 में वह सारे देश की "आदर्श मज़दूर" कही जाने लगी. उस समय उसका वेतन लगभग 175 रुपए माहवार था और वह मुश्किल से 16 साल की थी.

सितम्बर 1953 में हो चेन शू को कारख़ाने की तरफ़ से जनता विश्वविद्यालय के मिडिल स्कूल में पढ़ने के लिये भेजा गया. यहां वह तीन साल पढ़ेगी और फिर अपने काम पर वापस चली जाएगी. हो चेन शू विश्वविद्यालय में बहुत ख़ुश है, वेतन अब भी उसे बराबर मिलता रहता है. उसके पिता ने गाड़ी चलाने का काम नहीं छोड़ा. गांव आज़ाद होने के बाद अब भी बड़ी ख़ुशी से अपना काम कर रहे हैं. घर लौटते हैं तो मुंह पर प्रसन्नता रहती है क्योंकि एक दिन में क़रीब क़रीब 8-10 रुपये की आमदनी उन्हें हो जाती है. माता घर का काम देखती हैं; मगर उनकी आंखों में अब दुख के आंसू नहीं, ख़ुशी की चमक रहती है. सब भाई-बहिन तन्दुरुस्त और ख़ुश हैं और सब पढ़ते हैं—"आज़ादी ने हमारे परिवार में जीवन ला दिया." हो चेन शू ने कहा—"इस ख़ुशी और आनन्द की पहले हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे; हमारा परिवार अब किसी भी परिवार से कम सुखी नहीं. इन शब्दों को कहते समय उसके चेहरे पर बच्चों की सी सरलता थी. बातचीत के साथ साथ उसके चेहरे के भाव भी बदलते जा रहे थे. परिवार के और अपने सुखी जीवन का ज़िक्र करते ही वह ख़ुशी से गदगद हो गई. अब उसने अपने आप बातचीत का विषय बदल दिया :—"यह

بدل گئی. چینی کارخانوں میں مزدوروں کی مانگ ہوئی. نومبر میں اُسے سرکاری کپڑا مل نمبر 6 میں کام مل گیا. وہ اُس سمے 14 سال کی بھی نہیں تھی.

گھر کی غریبی کا چتر اُس کے سامنے تھا. بھائی بہنوں کا بھوک سے تڑپنا اُسے یاد تھا. اِس سے پہلے بیسوں بار کام کے لئے کوشش کرچکی تھی، اِس لئے جب اُسے کام ملا تو وہ بہت خوش ہوئی اور جی لگاکر کام کرنے لگی. شروع سے ہی اُس نے بڑی ترقی کی اور اپنی لگن و محنت سے اُس نے ایک نیا طریقہ نکالا جس کے انوسار کام کرنے میں پیداوار بڑھتی تھی اور سب کو بہت فایدہ تھا. کارخانے کے اندر روئی کی کتائی اور پونی بنائی میں جو روئی ضائع جاتی تھی اُس میں ہوچین شو کے نئے طریقے سے پچاسی فیصدی روئی کی بچت ہونے لگی. پہلے تو کسی کو وشواس نہیں ہوا. ساتھیوں نے مذاق بھی اُڑایا پر لگاتار ادھین کرنے اور دیکھتے رہنے کے بعد ادھیکاریوں کو اُس کی بات منظور کرنی پڑی. ہوچین شو کا طریقہ ایک نیا اور سپھل طریقہ تھا اِس لئے دسمبر 1950 میں وہ اپنے کارخانے کی "آدرش مزدور" کہلانے لگی اور مئی 1951 میں اُسے دوسرے درجے کا یعنی چھنگ تاو کا "آدرش مزدور" گھوشت کردیا گیا. اگست 1951 میں وہ سارے دیش کی "آدرش مزدور" کہی جانے لگی. اُس سمے اُس کا ویتن لگ بھگ 175 روپئے ماہوار تھا اور وہ مشکل سے 16 سال کی تھی.

ستمبر 1953 میں ہوچین شو کو کارخانے کی طرف سے جنتا وشودیالیہ کے مڈل اِسکول میں پڑھنے کے لئے بھیجا گیا. یہاں وہ تین سال پڑھیگی اور پھر اپنے کام پر واپس چلی جائیگی. ہوچین شو وشودیالیہ میں بہت خوش ہے. ویتن اب بھی اُسے برابر ملتا رہتا ہے. اُس کے پتا نے گاڑی چلانے کا کام نہیں چھوڑا. گاؤں آزاد ہونے کے بعد اب بھی بڑی خوشی سے اپنا کام کر رہے ہیں. گھر لوٹتے ہیں تو منھ پر پرسنتا رہتی ہے کیونکہ ایک دن میں قریب قریب 8-10 روپئے کی آمدنی اُنہیں ہوجاتی ہے. ماتا گھر کا کام دیکھتی ہیں، مگر اُن کی آنکھوں میں اب دکھ کے آنسو نہیں خوشی کی چمک رہتی ہے. سب بھائی بہن تندرست اور خوش ہیں اور سب پڑھتے ہیں. "آزادی نے ہمارے پریوار میں جیون لا دیا" ہوچین شو نے کہا— "اِس خوشی اور آنند کی پہلے ہم کلپنا بھی نہیں کرسکتے تھے؛ ہمارا پریوار اب کسی بھی پریوار سے کم سکھی نہیں." اِن شبدوں کو کہتے سمے اُس کے چہرے پر بچوں کی سی سرلتا تھی. بات چیت کے ساتھ ساتھ اُس کے چہرے کے بھاؤ بھی بدلتے جارہے تھے. پریوار اور اپنے سکھی جیون کا ذکر کرتے ہی وہ خوشی سے گدگد ہوگئی. اب اُس نے اپنے آپ بات چیت کا وشئے بدل دیا :—"یہ

पहला मौक़ा है जब मैं किसी हिन्दुस्तानी महिला से बातचीत कर रही हूँ. मुझे इस समय बेहद ख़ुशी है क्योंकि इतिहास की क्लास में हमने पढ़ा है कि चीन और भारत में कई हज़ार बरस से घनिष्ट मित्रता रही है. पिछले साल प्रधान मंत्री पंडित नेहरू यहां आए और प्रधान मंत्री चाऊ एन लाई भारत गए. अब सब लोग यह जान गए हैं कि दोनों ने जो पंचशील के पांच सिद्धान्त तय किये हैं वे दुनियां की शांति के लिये कितने जरूरी हैं." इसके बाद हो चेन शू ने कहा:—"चीन से एक सांस्कृतिक मंडल भारत गया और भारत का कलाकार मंडल यहां आया. इससे ज़ाहिर है कि दोनों देशों की मित्रता परस्पर उन्नति पर है और अब हमारा संबंध और ज्यादा घनिष्ट होता जा रहा है. मुझे विश्वास है कि निकट भविष्य में हमारा संबंध मित्रता से बढ़कर भाईचारे का हो जायगा."

उसने कहा—"अख़बार में यह पढ़कर हमें बड़ी ख़ुशी हुई कि भारत में चीन के लिये एक ख़ास आन्दोलन हुआ और 'ताइवान छोड़ो' दिन मनाया गया. इससे भी यह ज़ाहिर है कि भारत की जनता चीनी जनता को प्यार करती है और उसकी मदद करती है."

"मेरी बड़ी इच्छा है" हो चेन शू ने चाय के ख़ाली प्याले में चाय डालते हुए कहा कि—"भारत की महिलाओं से मिलूँ और उनसे भारत की स्त्रियों के बारे में जानकारी हासिल करूँ. भविष्य में शायद भारत जाने और भारत की महिलाओं के मिलने का मौक़ा मिले" जिस तरह प्यार से वह बातें कर रही थी, जिस स्नेह से कभी हाथ में हाथ लेकर, कभी गले में बांह डालकर वह मुझे सब कुछ बता रही थी उससे उस थोड़े से समय में ही मुझे लगने लगा कि मैं किसी अजनबी से नहीं अपनी किसी परिचित सहेली से बात कर रही हूँ. मुझे विश्वास हो गया कि वह गंभीर होते हुए भी ख़ुश दिल है, विचार शील होते हुए भी मिलनसार है.

आजकल हो चेन शू का कार्य क्षेत्र काफ़ी बड़ा है. वह कई संस्थाओं की मेम्बर है. इस समय वह कुल चीन मज़दूर फ़ेडरेशन की केन्द्रीय कमेटी की मेम्बर है, चीन के 'युवक संघ' की केन्द्रीय कमेटी की भी मेम्बर है, और 'कुल चीन महिला फ़ेडरेशन' की केन्द्रीय कमेटी की भी मेम्बर है. हो चेन शू को जनता और सरकार की तरफ़ से बहुत सम्मान मिला. 1951 अक्तूबर दिवस के बाद से वह चीनी जनता की 'सलाह मशविरा कमेटी' की मेम्बर बना दी गई. 1952 में उसे चीनी 'ट्रेड यूनियन' के प्रतिनिधि के रूप में सोवियत रूस भेजा गया.

हर मई दिवस और अक्तूबर दिवस पर वह मंचपर आकर जनता के सामने बोलने लगी. 1954 में वह चीन की लोक प्रतिनिधि सभा (चीनी पार्लिमेन्ट) की मेम्बर चुनी गई.

پہلا موقع ہے جب میں کسی هندستانی مہیلا سے بات چیت کر رہی ہوں ۔ مجھے اس سمے بےحد خوشی ہے کیونکہ اِتہاس کی کلاس میں ہم نے پڑھا ہے کہ چین اور بھارت میں کئی ہزار برس سے گھنشٹ مترتا رہی ہے ۔ پچھلے سال پردھان منتری پنڈت نہرو یہاں آئے اور پردھان منتری چاؤ این لائی بھارت گئے ۔ اب سب لوگ یہ جان گئے ہیں کہ دونوں نے جو پنچ شیل کے پانچ سدھانت طے کئے ہیں وہ دنیا کی شانتی کے لئے کتنے ضروری ہیں ۔" اِس کے بعد ہوچین شو نے کہا—"چین سے ایک سانسکرتک منڈل بھارت گیا اور بھارت کا کلاکار منڈل یہاں آیا۔ اِس سے ظاہر ہے کہ دونوں دیشوں کی مترتا پرسپر اُنتی پر ہے اور اب ہمارا سمبندھ اور زیادہ گھنشٹ ہوتا جا رہا ہے ۔ مجھے وشواس ہے کہ نکٹ بھوشیہ میں ہمارا سمبندھ مترتا سے بڑھکر بھائی چارے کا ہوجائیگا ۔"

اُس نے کہا—"اخبار میں یہ پڑھکر ہمیں بڑی خوشی ہوئی کہ بھارت میں چین کے لئے ایک خاص آندولن ہوا اور 'تائیوان چھوڑو' دن منایا گیا' اس سے بھی یہ ظاہر ہے کہ بھارت کی جنتا چینی جنتا کو پیار کرتی ہے اور اِس کی مدد کرتی ہے ۔"

"میری بڑی اِچھا ہے" ہو چین شو نے چائے کے خالی پیالے میں چائے ڈالتے ہوئے کہا کہ—"بھارت کی مہیلاؤں سے ملوں اور اُن سے بھارت کی استریوں کے بارے میں جانکاری حاصل کروں ۔ بھوشیہ میں شاید بھارت جانے اور بھارت کی مہیلاؤں سے ملنے کا موقع ملے ۔" جس طرح پیار سے وہ باتیں کررہی تھی' جس سنیہہ سے کبھی ہاتھ میں ہاتھ لیکر' کبھی گلے میں بانہہ ڈالکر وہ مجھے سب کچھ بتا رہی تھی اُس سے اُس تھوڑے سے سمئے میں ہی مجھے لگنے لگا کہ میں کسی اجنبی سے نہیں اپنی کسی پریچت سہیلی سے بات کر رہی ہوں ۔ مجھے وشواس ہو گیا کہ وہ گمبھیر ہوتے ہوئے بھی خوشدل ہے' وچار شیل ہوتے ہوئے بھی ملنسار ہے ۔

آجکل ہو چین شو کا کاریہ چھیتر کافی بڑا ہے ۔ وہ کئی سنستھاؤں کی میمبر ہے ۔ اِس سمئے وہ 'کل چین مزدور فیڈریشن' کی کیندریہ کمیٹی کی میمبر ہے' چین کے 'لوک سنگھ' کی کیندریہ کمیٹی کی بھی میمبر ہے' اور 'کل چین مہیلا فیڈریشن' کی کیندریہ کمیٹی کی میمبر ہے ۔ ہو چین شو کو جنتا اور سرکار کی طرف سے بہت سمان ملا ۔ 1951 اکتوبر دیوس کے بعد سے وہ چینی جنتا کی 'صلاح مشورہ کمیٹی' کی میمبر بنا دی گئی ۔ 1952 میں اُسے چینی 'ٹریڈ یونین' کے پرتینِدھی کے روپ میں سوویت روس بھیجا گیا ۔

ہر مئی دیوس اور اکتوبر دیوس پر وہ منچ پر جاکر جنتا کے سامنے بولنے لگی ۔ 1954 میں وہ چین کی لوک پرتینِدھی سبھا (چینی پارلیمینٹ) کی میمبر چنی گئی ۔

अब मैंने हो चेन शू से कहा कि अपने जीवन की कोई सबसे बड़ी घटना बताइये तो उसकी आखें चमकने लगीं और वह बोली—"यूँ तो हर दिन एक घटना रहा है, पर चेयरमैन माओ से मुलाक़ात होना मेरे जीवन की सबसे बड़ी घटना है. सितम्बर का महीना था. मेरे कारख़ाने में नए तरीक़े से काम शुरू कर दिया गया था. एक दिन हमारे कारख़ाने के अधिकारी ने आकर एक पत्र देते हुए मुझसे कहा कि:— यह चेयरमैन माओ की चिट्ठी है, तुम्हें पीकिंग बुलाया है' मैं ख़ुशी और आश्चर्य से अवाक् रह गई. कुछ कह न सकी. आसपास के मेरे साथी बड़े ख़ुश हुए, मुझे घेर लिया और कहने लगे कि "हम सबकी तरफ़ से चेयरमैन माओ से कहिये कि हम लोग ज़रूर देश की पैदावार बढ़ावेंगे."

उसने कहा:—"फिर मैं घर वापस आई. माता पिता को बताया. मां ख़ुशी के मारे रोने लगी. 'पिता ने पूछा चेयरमैन माओ के लिये,क्या भेंट ले जाओगी ?' मैंने कहा—"मन में जो बातें हैं वही उनसे कहूँगी, वही मेरी उनके लिये भेंट होगी' दूसरे ही दिन में पीकिंग के लिये रवाना हो गई. रास्ते में सोचती जाती थी कि चेरमैन माओ से किस तरह बातचीत करना चाहिये."

"वह दिन मैं भुला नहीं सकती" हो चेन शू कहती रही—"उस दिन का दृश्य हमेशा आंखों के आगे नाचा करता है. मैं ख़ुशी से कांप रही थी और विश्वास नहीं हो रहा था कि चीन की दुखी और पीड़ित जनता को ख़ुशहाली का जीवन देने वाले माओ तो तुंग मुझसे बात कर रहे हैं. उन्होंने मुझसे जो कहा उसका एक एक शब्द मुझे याद है और वह मेरे लिये एक क़ीमती सबक़ है."

"चेयरमैन माओ ने मुझ से कहा कि 'काम करने में घमंड नहीं करना चाहिये. मेहनत और लगन से काम करके और नए नए तरीक़े निकालने चाहियें. जो हम जानते हैं वह दूसरों को सिखाना चाहिये और जो नहीं जानते उसे नम्रता के साथ दूसरों से सीखना चाहिये और सबके साथ मिलकर काम करना चाहिये."

हो चेन शू अपने कारख़ाने में धीरज के साथ दूसरों को सिखाती थी और दूसरों से सीखती थी. पर अब जनता विश्वविद्यालय में पढ़ने में भी मुश्किल चीज़ों में अपने साथियों से मदद लेती है और अपने साथियों को मदद देती है. नौजवानों के लिये चेयरमैन माओ का आदेश 'ख़ूब तन्दुरुस्त रहो, ख़ूब सीखो और ख़ूब काम करो' उसके सामने है—और इसमें शक नहीं कि वह हर मानी में—तन्दुरुस्ती, तालीम और काम में दूसरों के लिये एक आदर्श है.

جب میں نے ہو چین شو سے کہا کہ اپنے جیون کی کوئی سب سے بڑی گھٹنا بتائیے تو اُس کی آنکھیں چمکنے لگیں اور وہ بولی—"یوں تو ہر دن ایک گھٹنا رہا ہے' پر چیئرمین ماؤ سے ملاقات ہونا میرے جیون کی سب سے بڑی گھٹنا ہے. ستمبر کا مہینہ تھا. میرے کارخانے میں نئے طریقے سے کام شروع کر دیا گیا تھا. ایک دن ہمارے کارخانے کے ادھیکاری نے آکر ایک پتر دیتے ہوئے مجھ سے کہا کہ:—'یہ چیئر مین ماؤ کی چٹھی ہے' تمہیں پیکنگ بلایا ہے' میں خوشی اور آشچریہ سے اواک رہ گئی. کچھ کہہ نہ سکی. آس پاس کے میرے ساتھی بڑے خوش ہوئے' مجھے گھیر لیا اور کہنے لگے کہ "ہم سب کی طرف سے چیئر مین ماؤ سے کہیئے کہ ہم لوگ ضرور دیش کی پیداوار بڑھاوینگے."

اُس نے کہا:—"پھر میں گھر واپس آئی' ماتا پتا کو بتایا. ماں خوشی کے مارے رونے لگی. پتا نے پوچھا چیئر مین ماؤ کے لئے کیا بھینٹ لیجاؤ گی ؟' میں نے کہا—'من میں جو باتیں ہیں وہی اُن سے کہونگی' وہی میری اُن کے لئے بھینٹ ہو گی' دوسرے ہی دن میں پیکنگ کے لئے روانہ ہو گئی. راستے میں سوچتی جاتی تھی کہ چیئر مین ماؤ سے کسی طرح بات چیت کرنا چاہئیے."

"وہ دن میں بھلا نہیں سکتی" ہو چین شو کہتی رہی—'اُس دن کا درشیہ ہمیشہ آنکھوں کے آگے ناچا کرتا ہے. میں خوشی سے کانپ رہی تھی اور وشواس نہیں ہو رہا تھا کہ چین کی دوکھی اور پیڑت جنتا کو خوشحالی کا جیون دینے والے ماؤ-سے - تنگ مجھ سے بات کر رہے ہیں. انہوں نے مجھ سے جو کہا اس کا ایک ایک شبد مجھے یاد ہے اور وہ میرے لئے ایک قیمتی سبق ہے."

"چیئر مین ماؤ نے مجھ سے کہا کہ 'کام کرنے میں گھمنڈ نہیں کرنا چاہئیے. محنت اور لگن سے کام کر کے اور نئے نئے طریقے نکالنے چاہئیں. جو ہم جانتے ہیں وہ دوسروں کو سکھانا چاہئیے اور جو نہیں جانتے اُسے نمرتا کے ساتھ دوسروں سے سیکھنا چاہئیے اور سب کے ساتھ ملکر کام کرنا چاہئیے."

ہو چین شو اپنے کارخانے میں دھیرج کے ساتھ دوسروں کو سکھاتی تھی اور دوسروں سے سیکھتی تھی. پر اب جنتا وشودیالیہ میں پڑھنے میں بھی مشکل چیزوں میں اپنے ساتھیوں سے مدد لیتی ہے اور اپنے ساتھیوں کو مدد دیتی ہے. نوجوانوں کے لئے چیئرمین ماؤ کا آدیش 'خوب تندرست رہو' خوب سیکھو اور خوب کام کرو' اُس کے سامنے ہے—اور اِس میں شک نہیں کہ وہ ہر معنی میں تندرستی' تعلیم اور کام میں دوسروں کے لئے ایک آدرش ہے.

हो चेन शू पहले बे पढ़ी थी, पर कारखाने के छुट्टी के स्कूल में हमेशा जाती थी और वहां पढ़ती थी. अपने काम के बारे में और अपने अनुभवों के बारे में उसने कई लेख लिखे हैं. अब तक उसकी ये चार पुस्तकें भी निकल चुकी हैं :—

1. "पीकिंग की डायरी."
2. "सोवियत रूस की डायरी."
3. "ख़ुशहाली का रास्ता."
4. "हो चेन शू का नया तरीक़ा."

जब हो चेन शू ने ये किताबें लिखीं तब उसे लिखने में बड़ी कठिनाई होती थी. क्यों कि वह बहुत कम चीनी अक्षर जानती थी. 'पीकिंग की डायरी' तो वह सिर्फ़ बोलती थी और दूसरे लिखते थे. 'सोवियत रूस की डायरी' उसने ख़ुद लिखी. यह किताब लिखने के लिये उसने अपनी सुविधा के लिये डायरी में कुछ निशान बना लिये थे. उन निशानों और कुछ अक्षरों की मदद से वह लिखती रही. कई बार ऐसा भी हुआ कि निशान बनाकर भूल गई और ख़ुद अपना लिखा ग़लत पढ़ जाती थी. मगर बाद में उसने बड़ी जल्दी तरक़्क़ी की और अब वह अच्छी तरह लिख पढ़ सकती है.

अपनी पुस्तकें उसने मुझे भेंट कीं. इन पुस्तकों को देखते ही हो चेन शू की याद ताज़ा हो जाती है. अपने अनुभवों का लिखना हो चेन शू का एक ख़ास शौक़ है. इसके अलावा उसे खेल कूद में भी बड़ी दिलचस्पी है. बास्केट बाल, वालीबाल आदि ख़ूब खेलती है. स्वास्थ्य के लिये रोज़ कसरत करती है. इसके अलावा पढ़ना, सिनेमा नाटक आदि देखना, भी उसे बहुत पसंद है. लेकिन स्वयं हो चेन शू के शब्दों में—"सबसे ज़्यादा तो मुझे अपना सूत का काम और उसका अध्ययन पसंद है" चीन के सिनेमा और नाटकों में किसी तरह भी अशलीलता नहीं होती.

बात करते करते चीनी विवाह क़ानून की बात होने लगी. वह बोली :—"नए चीन का विवाह क़ानून थोड़े से शब्दों में चीनी महिलाओं के अधिकारों का क़ानून है. यह क़ानून हमारी राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक आज़ादी की गारंटी करता है" यह कहते कहते वह ज़ोर से खिल-खिलाकर हंस पड़ी। हो चेन शू अभी अविवाहित है.

एकाएक घड़ी पर नज़र पड़ी 6 बज रहा था, इसलिये मैं उससे फिर कभी मिलने का वादा करके उठ खड़ी हुई और घर लौट आई.

वह 12 फ़रवरी की शाम थी जब मैं हो चेन शू से मिली थी. उसके भोले मुस्कराते चेहरे और मिलनसार तबीयत ने हमेशा के लिये अपनी छाप मेरे दिल पर अंकित कर दी है.

هو چین شو پہلے بے پڑھی تھی، پر کارخانے کے چھٹی کے اسکول میں ہمیشہ جاتی تھی اور وہاں پڑھتی تھی ۔ اپنے کام کے بارے میں اور اپنے انوبھووں کے بارے میں اس نے کئی لیکھ لکھے ہیں ۔ اب تک اس کی یہ چار پستکیں بھی نکل چکی ہیں:—

1. پیکنگ کی ڈایری ۔"
2. سوویت روس کی ڈایری ۔"
3. خوشحالی کا راستہ ۔"
4. ہو چین شو کا نیا طریقہ ۔"

جب ہو چین شو نے یہ کتابیں لکھیں تب اسے لکھنے میں بڑی کٹھنائی ہوتی تھی، کیونکہ وہ بہت کم چینی اکشر جانتی تھی ۔ 'پیکنگ کی ڈایری' تو وہ صرف بولتی تھی اور دوسرے لکھتے تھے ۔ سوویت روس کی ڈایری' اس نے خود لکھی ۔ کتاب لکھنے کے لئے اس نے اپنی سویدھا کے لیئے ڈایری میں کچھ نشان بنا لیئے تھے ۔ ان نشانوں اور کچھ اکشروں کی مدد سے وہ لکھتی رہی ۔ کئی بار ایسا بھی ہوا کہ نشان بنا کر بھول گئی اور اپنا لکھا غلط پڑھ جاتی تھی ۔ مگر بعد میں اس نے بڑی جلدی ترقی کی اور اب وہ اچھی طرح لکھ پڑھ سکتی ہے ۔

اپنی پستکیں اس نے مجھے بھینٹ کیں ۔ ان پستکوں کے دیکھتے ہی ہو چین شو کی یاد تازہ ہو جاتی ہے ۔ اپنے انوبھووں کا لکھنا ہو چین شو کا ایک خاص شوق ہے ۔ اس کے علاوہ اسے کھیل کود میں بھی بڑی دلچسپی ہے ۔ باسکیٹ بال' والی بال آدی خوب کھیلتی ہے ۔ سواستھ کے لئے روز کسرت کرتی ہے ۔ اس کے علاوہ پڑھنا' سنیما' ناٹک آدی دیکھنا بھی اسے بہت پسند ہے ۔ لیکن سویم ہو چین شو کے شبدوں میں—"سب سے زیادہ تو مجھے اپنا سوت کا کام اور ادھین پسند ہے ۔" چین کے سنیما اور ناٹکوں میں کسی طرح کی بھی اشلیلتا نہیں ہوتی ۔

بات کرتے کرتے چینی وواہ قانون کی بات ہونے لگی ۔ وہ بولی—"نئے چین کا وواہ قانون تھوڑے سے شبدوں میں چینی مہیلاؤں کے ادھیکاروں کا قانون ہے ۔ یہ قانون ہماری راج نیتک' سماجک اور آرتھک آزادی کی گارنٹی کرتا ہے ۔" یہ کہتے کہتے وہ زور سے کھلکھلا کر ہنس پڑی ۔ ہو چین شو ابھی اوِیواہت ہے ۔

یکایک گھڑی پر نظر گئی ۔ 6 بج رہا تھا' اس لیئے میں اس سے پھر کبھی ملنے کا وعدہ کر کے اٹھ کھڑی ہوئی اور گھر لوٹ آئی ۔

وہ 12 فروری کی شام تھی جب میں ہو چین شو سے ملی تھی ۔ اس بھولے مسکراتے چہرے اور ملنسار طبیعت نے ہمیشہ کے لئے اپنی چھاپ میرے دل پر انکت کر دی ہے ۔

हाल ही में पीकिंग में हमने एक सिनेमा देखा. फ़िल्म
नाम था 'साठ करोड़ जनता का प्रश्न.' इसमें चीनी
क प्रतिनिधि सभा (पारलिमेन्ट) में नए विधान पर बहस
ती हुई दिखाई गई थी. दूसरे बड़े बड़े नेताओं के साथ
ने एक नौजवान लड़की को भी मंच पर से भाषण देते
: सुना. "हो चेन शू" मेरे पास बैठे एक मित्र ने कहा,
र मुझे उस दिन की घटना याद आ गई जब जनता
वविद्यालय में मैंने उससे मुलाक़ात की थी. एक आदर्श
ज़दूर होने के नाते वह मज़दूर प्रतिनिधि के रूप में पारलि-
ट की मेम्बर चुन ली गई. इस समय उसकी उमर केवल
ीस साल की है.

हो चेन शू के छोटे से जीवन से पता चलता है कि नए
न में एक ग़रीब से ग़रीब घर में पैदा हुई गांव की लड़की
जो देश के आज़ाद होने से पहले कचरे खानों में से
ते हुए कोयले बीनती फिरा करती थी, मौक़ा मिलने पर;
स तरह अपनी सूझ से कारखाने के अन्दर पैदावार को
ा सकती है; लिख पढ़ सकती है और थोड़े ही दिनों में
ा छोटी सी उमर में चीन की पारलिमेन्ट की मेम्बर बन
कती है. मैं ऊपर लिख चुकी हूँ उसका जीवन अब भी वैसा
सीधा, सरल और मेहनती है और लाखों चीनी लड़कों
ड़कियों की तरह भारत से उसे विशेष प्रेम है.

حال ہی میں پیکنگ میں ہم نے ایک سنیما دیکھا . فلم
کا نام تھا ــــ ساٹھ کروڑ جنتا کا پرشن؛ اِس میں چینی لوک
پرتیندھی سبھا (پارلیمنٹ) میں نئے ودھان پر بحث ہوتی
ہوئی دکھائی گئی تھی . دوسرے بڑے بڑے نیتاؤں کے ساتھ ہم
نے ایک نوجوان لڑکی کو بھی منچ پر سے بھاشن دیتے ہوئے سنا .
"ہو چین شو" میرے پاس بیٹھے ایک مترنے کہا' اور مجھے
اُس دن کی گھٹنا یاد آگئی جب جنتا وشودیالیہ میں میں نے
اُس سے ملاقات کی تھی . ایک آدرش مزدور ہونے کے ناتے وہ
مزدور پرتندھی کے روپ میں پارلیمنٹ کی ممبر چن لی
گئی . اِس سمئے اُس کی عمر کیول اُنیس سال کی ہے .

ہوچین‌شو کے چھوٹے کے جیون سے پتہ چلتا ہے کہ نئے
چین میں ایک غریب سے غریب گھر میں پیدا ہوئی گاؤں کی
لڑکی بھی' جو دیش کے آزاد ہونے سے پہلے کچرے خانوں میں
سے جلے ہوئے کوئلے بینتی پھرا کرتی تھی' موقع ملنے پر کس طرح
اپنی سوجھ سے کارخانے کے اندر پیداوار کو بڑھا سکتی ہے' لکھ پڑھ
سکتی ہے اور تھوڑے ہی دنوں میں اِس چھوٹی سی عمر میں
چین کی پارلیمنٹ کی ممبر بن سکتی ہے . میں اُوپر لکھ چکی
ہوں کہ اُس کا جیون اب بھی ویسا ہی سیدھا' سرل' اور
محنتی ہے اور لاکھوں چینی لڑکیوں کی طرح بھارت سے اُسے
وشیش پریم ہے .

उर्दू किताबें



اردو کتابیں

1. मीर ग़ज़लों के बादशाह.
2. अकबर इलाहाबादी'

दोनों किताबें इलाहाबाद ला जनरल प्रेस की छपी हुई हैं. दोनों के सम्पादक हैं डाक्टर सैयद ऐजाज़ हुसेन. दोनों की क़ीमत ढाई-ढाई रुपया है. पहली में 287 सफ़े हैं और दूसरी में हैं 160.

मीर तक़ी मीर, जैसा कि किताब के नाम से ज़ाहिर होता है, ग़ज़लों के बादशाह थे. उनका ज़माना वह ज़माना था जब उत्तर भारत के लोगों ने न अलग अलग कलचर की खाइयाँ खोदी थीं और न हिन्दी उर्दू की दीवारें खड़ी की थीं. मीर की ज़बान बड़ी सहल, आसानी से समझ में आने वाली मगर साथ ही साथ ख़्यालों की गहराई लिये हुए है. संग्रह के शुरू में 45 सफ़ों में मीर की ज़िन्दगी और शायरी का परिचय दिया गया है. संग्रह में मीर की दीवानों में से चुनी हुई ग़ज़लें संकलित की गई हैं. कुछ मसनवियाँ भी दी गई हैं और कुछ रुबाइयाँ भी.

मीर तक़ी सन् 1724 ई० में पैदा हुए थे और कहा जाता है कि सन् 1810 ई० में मरे. यह वह ज़माना था जब मुग़ल बादशाहत ख़तम हो रही थी औह अंग्रेज़ी राज का सितारा उभर रहा था. उस बदलते हुए ज़माने और बदलती हुई दुनिया का मीर पर असर पड़ना लाज़मी था. सारा देश क़हत की सी हालतों से गुज़र रहा था. एक गाँव का ज़िक्र करते हुए मीर लिखते हैं—

चार छप्पर कहीं चमारों के — सो भी टूटे गिरे बिचारों के
टूटी फूटी कोई हवेली है — सो भी मैदान में अकेली है
एक-दो मुर्दे से पड़े हैं वाँ — जब हो-हो गए हैं लबे-जाँ
लोग ऐसे मकान सब ऐसे — ऐसी जगह न उचटे दिल कैसे
और जो चार घर नज़र आए — उनकी ख़ूबी खुले वहीं जाए
वह भी कोली चमार थे कोई — फ़ाक़ों से ज़ेरबार थे कोई
सूरतें काली काली रूखे से — सारे कंगाल और भूके से

मीर दिल्ली, मथुरा, भरतपुर, इलाहाबाद और लखनऊ हर जगह गये मगर लखनऊ में ही उन्होंने दम तोड़ा. जब तक जिये आत्म सम्मान लेकर जिये. कभी किसी के आगे न सर झुकाया और न सम्मान कम किया. उनके शिष्यों में हिन्दू मुसलमान सभी थे. अपने मज़हबी उसूलों के बारे में वह लिखते हैं—

1. میر غزلوں کے بادشاہ
2. اکبر الہ‌آبادی

دونوں کتابیں الہ‌آباد لا جنرل پریس کی چھپی ہوئی ہیں. دونوں کے سمپادک ہیں ڈاکٹر سید اعجاز حسین. دونوں کی قیمت ڈھائی ڈھائی روپیہ ہے. پہلی میں 287 صفحے ہیں اور دوسری میں ہیں 160.

میر تقی میر، جیسا کہ کتاب کے نام سے ظاہر ہوتا ہے، غزلوں کے بادشاہ تھے. اُن کا زمانہ وہ زمانہ تھا جب اُتر بھارت کے لوگوں نے نہ الگ الگ کلچروں کی کھائیاں کھودی تھیں اور نہ ہندی اُردو کی دیواریں کھڑی کی تھیں. میر کی زبان بڑی سہل، آسانی سے سمجھ میں آنے والی مگر ساتھ ہی ساتھ خیالوں کی گہرائی لئے ہوئے ہے. سنگرہ کے شروع میں 45 صفحوں میں میر کی زندگی اور شاعری کا پریچے دیا گیا ہے. سنگرہ میں میر کے دیوانوں سے چنی ہوئی غزلیں سنکلت کی گئی ہیں. کچھ مثنویاں بھی دی گئیں ہیں اور کچھ رباعیاں بھی.

میر تقی سن 1724ع میں پیدا ہوئے تھے اور کہا جاتا ہے سن 1810ع میں مرے. یہ وہ زمانہ تھا جب مغل بادشاہت ختم ہو رہی تھی اور انگریزی راج کا ستارہ اُبھر رہا تھا. اُس بدلتے ہوئے زمانے اور بدلتی ہوئی دنیا کا میر پر اثر پڑنا لازمی تھا. سارا دیش قحط کی سی حالتوں سے گذر رہا تھا. ایک گاؤں کا ذکر کرتے ہوئے میر لکھتے ہیں.

چار چھپر کہیں چماروں کے — سو بھی ٹوٹے گرے بچاروں کے
ٹوٹی پھوٹی کوئی حویلی ہے — سو بھی میدان میں اکیلی ہے
ایک‌دو مردے‌سے پڑے‌ہیں‌واں — جب ہو‌ہو‌گئے‌ہیں وے اب جاں
لوگ ایسے مکاں سب ایسے — ایسی جگہ نہ اُچٹے دل کیسے
اور جو چار گھر نظر آئے — ان کی خوبی کھلے وہیں جائے
وہ بھی کولی چمار تھے کوئی — فاقوں سے زیربار تھے کوئی
صورتیں کالی کالی روکھے سے — سارے کنگال اور بھوکے سے

میر دلی، متھرا، بھرتپور، الہ‌آباد اور لکھنؤ ہر جگہ گئے، مگر لکھنؤ میں ہی انہوں نے دم توڑا. جب تک جئے آتم‌سمان لیکر جئے. کبھی کسی کے آگے نہ سر جھکایا اور نہ سمان کم کیا. اُن کے ششیوں میں ہندو مسلمان سبھی تھے. اپنے مذہبی اصولوں کے بارے میں وہ خود لکھتے ہیں—

मीर के दीनो मज़हब को क्या पूछते हो उन ने तो—
क़श्क़ा खींचा, दैर में बैठा कब का तर्क इस्लाम किया

ख़ुद अपने शेरों के मुताल्लिक़ मीर साहब फ़रमाते हैं—

पढ़ते फिरेंगे गलियों में इन रेख़्तों को लोग
मुद्दत रहेंगी याद यह बातें हमारियाँ

और वाक़ई जब तक हिन्दुस्तान के लोगों में कविता की तरफ़ चाह रहेगी मीर की हमेशा क़दर की जायेगी.

अनमोल ग़ज़लों, मसनवियों और रुबाइयों से यह संग्रह भरा पड़ा है. मुश्किल शब्दों के जगह जगह आसान माने भी दिये हुए हैं.

दूसरा संग्रह मशहूर शायर अकबर इलाहाबादी की कविताओं का है. अकबर हास्य-रस के शायर थे. उनका हास्य-रस इस क़दर ऊँचा होता था कि आज तक उससे बढ़िया और पुरलुत्फ़ व्यंग कोई दूसरा शायर अदा नहीं कर पाया. संग्रह के शुरू में शायर की एक छोटी सी जीवनी दी गई है और 45 सफ़े की एक भूमिका है जिसमें अकबर और उनकी शायरी और उर्दू शायरी में व्यंग और हास्य के ऊपर रोशनी डाली गई हैं. मौजूदा संग्रह में अकबर की चुनी हुई शायरी दी हुई है. उनमें छोटे चौपदे और बड़ी नज़्में दोनों शामिल हैं. एक मिली जुली हिन्दुस्तानी कलचर अकबर के मन को भाई थी और आख़ीर वक़्त तक वह उसकी सदा बुलन्द करते रहे. वे लिखते हैं—

यह बोले रो के पीरू और गयादीन
धर्म दुनिया से उठा और गया दीन
हिन्दू मुस्लिम एक हैं दोनों
यानी यह दोनों एशियाई हैं
हम-वतन हम-ज़बाँ व हम-क़िस्मत
क्यों न कह दूँ कि भाई-भाई हैं

एक दूसरी जगह —

इनायत मुझ पै फ़रमाते हैं शेख़ो बरहमन दोनों
मुआफ़िक़ अपने-अपने पाते हैं मेरा चलन दोनों
तराने मेरे हम-आहंग दैरो काबा हैं यकसाँ
ज़बाँ पर मेरी मौज़ूँ होती हैं हम्दो भजन दोनों

हिन्दी दुनिया की यह एक उम्दा कोशिश है कि उर्दू शायरों की चीज़ें देवनागरी हरूफ़ों में छपें ताकि हिन्दी पढ़ने वाले उर्दू शायरी की लज़्ज़त व मिठास का स्वाद ले सकें. यह दोनों किताबें इसी कोशिश का नतीजा हैं. डाक्टर ऐजाज़ हुसेन ख़ुद उर्दू के एक अच्छे शायर हैं और प्रयाग विश्व-विद्यालय में उर्दू के प्रोफ़ैसर हैं. ऐसे योग्य सम्पादक की निगरानी में यह संग्रह प्रकाशित किये गये हैं. हम इस प्रयत्न का स्वागत करते हैं.

میر کے دین و مذھب کو کیا پوچھتے ھو اُن نے تو—
کش آ کھینچا' دیر میں بیٹھا کب کا ترک اسلام کیا ۔

خود اپنے شعروں کے متعلق میر صاحب فرماتے ھیں—

پڑھتے پھرینگے گلیوں میں اِن ریختوں کو لوگ
مدت رھیگی یاد یہ باتیں ھماری یاں

اور واقعی جب تک ھندستان کے لوگوں میں کویتا کی ف چاہ رھیگی میر کی ھمیشہ قدر کی جائیگی ۔

انمول غزلوں' مثنویوں اور رباعیوں سے یہ سنگرہ بھرا پڑا ۔ مشکل شبدوں کے جگہہ جگہہ آسان معنے بھی دئے ھوئے ں ۔

دوسرا سنگرہ مشہور شاعر اکبر اِلہآبادی کی کویتاؤں کا ھے ۔ ر ھاسیہ‌رس کے شاعر تھے ۔ اِن کا ھاسیہ رس اِس قدر اونچا تا تھا کہ آج تک اِس سے بڑھیا اور پرلطف وینگ کوئی دوسرا عر ادا نہیں کر پا یا. سنگرہ کے شروع میں شاعر کی ایک چھوٹی ، جیونی دی گئی ھے اور 45 صفحے کی ایک بھومیکا ھے جس ں اکبر اور اُن کی شاعری اور اُردو شاعری میں وینگ اور سیہ کے اُوپر روشنی ڈالی گئی ھے ۔ موجودہ سنگرہ میں اکبر چنی ھوئی شاعری دی ھوئی ھے ۔ اِن میں چھوٹے چوپدے اور ی نظمیں دونوں شامل ھیں ۔ ایک ملی جلی ھندستانی چر اکبر کے من کو بھائی تھی اور آخری وقت تک وہ اُس صدا بلند کرتے رھے ۔ وے لکھتے ھیں—

یہ بولے رو کے پیرو اور گیادین
دھرم دنیا سے اُٹھا اور گیا دین
ھندو مسلم ایک ھیں دونوں
یعنی یہ دونوں ایشیائی ھیں
ھموطن ھمزباں و ھمقسمت
کیوں نہ کہدوں کہ بھائی بھائی ھیں

ایک دوسری جگہہ—

عنایت مجھ پہ فرماتے ھیں شیخ و برھمن دونوں
موافق اپنے اپنے پاتے ھیں میرا چلن دونوں
ترانے میرے ھم‌آھنگ دیر و کعبہ ھیں یکساں
زباں پر میری موزوں ھوتی ھے حمد و بھجن دونوں

ھندی دنیا کی یہ ایک عمدہ کوشش ھے کہ اُردو شاعروں ی چیزیں دیوناگری حروفوں میں چھپیں تاکہ ھندی پڑھنے والے اُردو اعری کی لذت و مٹھاس کا سواد لے سکیں۔ یہ دونوں کتابیں اِسی وشش کا نتیجہ ھیں ۔ ڈاکٹر اعجاز حسین خود اُردو کے ایک چھے شاعر ھیں اور پریاگ وشودیالہ میں اُردو کے پروفیسر ھیں ۔ یسے یوگیہ سمپادک کی نگرانی میں یہ سنگرہ پرکاشت کئے ئے ھیں ۔ ھم اِس پریتن کا سواگت کرتے ھیں ۔

हमारी राय

ہماری رائے

सत्ता और शक्ति नहीं, सेवा और त्याग

राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी ने आजादी हासिल होने के बाद, अपने एक प्रार्थना प्रवचन में कहा था—"राजनैतिक आजादी किसी भी मुल्क की आजादी का एक अंग है. हिन्दुस्तान ने वह हासिल कर ली. अंगरेज यहाँ से चले गये. मगर अभी तो हमारी मंजिल शुरू हुई है. हमें तो अभी सामाजिक आजादी और आर्थिक आजादी और हासिल करनी हैं. ये तीनों आजादी मिलने पर ही देश पूरी तरक़्क़ी कर सकेगा. जब तक ये दोनों आजादी हमें और न मिलें हमें आराम से नहीं बैठना है, हमें दूने जोश और मेहनत से काम करना है."

गान्धी जी चाहते थे कि कांग्रेस ही इन दोनों आजादियों को हासिल करने का जरिया बने. वह काम कैसे हो जब तक उसका विधान न बदले. गान्धी जी ने ही सन् 1920 1925 और 1934 में जरूरत के मुताबिक़ कांग्रेस के विधान में तब्दीलियाँ की थीं ताकि कांग्रेस एक संघर्ष करने वाली, क्रान्तिकारी जमात की हैसियत से देश को आजादी दिलाने का जरिया बन सके और वह काम उसने बख़ूबी अन्जाम दिया. सन् 1920 से पहले कांग्रेस देश में चोटी के पढ़े लिखे लोगों, बड़े बड़े वकीलों, बैरिस्टरों और रईसों की जमात थी. सन् 1920 के बाद वह निचले मध्यम वर्ग के लोगों के हाथ में आई जिनमें बहुत बड़ी तादाद शहरियों की थी. 1925 में रचनात्मक कामों को, ग्रामसेवा को, ग्रामोद्योगों को कांग्रेस के काम का जुज़ बनाया गया और इस तरह गान्धी जी ने कांग्रेस को ठेठ मुल्क की जड़ों तक, यानी गाँवों तक पहुँचाने की कोशिश की. 1934 के विधान के जरिये उन्होंने उस कोशिश को और गहराई तक पहुँचाने की तजवीज़ की. स्वराज्य हासिल होने के बाद वे चाहते थे कांग्रेस का ढाँचा बदल कर ऐसा कर दिया जाय कि वह नारा लगाने वालों, जुलूस निकालने वालों, तक़रीरें करने वालों के बजाय निस्पृह, त्यागी, सामाजिक और आर्थिक आजादी की मिसाल ख़ुद अपने निजी जीवन में उतारने वाले

ستا اور شکتی نہیں' سیوا اور تیاگ

راشٹر پتا مہاتما گاندھی نے آزادی حاصل ہونے کے بعد' اپنے ک پرارتھنا پروچن میں کہا تھا—"راج نیتک آزادی کسی ں ملک کی آزادی کا ایک انگ ہے. ھندستان نے وہ حاصل لی. انگریز یہاں سے چلے گئے. مگر ابھی تو ھماری منزل وع ہوئی ہے. ھمیں تو ابھی سماجک آزادی اور آرتھک دی اور حاصل کرنی ھیں. یہ تینوں آزادی ملنے پر ھی دیش ری ترقی کر سکیگا. جب تک یہ دونوں آزادی ھمیں اور نہ یں ھمیں آرام سے نہیں بیٹھنا ھے' ھمیں دونے جوش اور حنت سے کام کرنا ھے."

گاندھی جی چاھتے تھے کہ کانگریس ھی اِن دونوں آزادیوں حاصل کرنے کا ذریعہ بنے. وہ کام کیسے ھو جب تک اُس کا ھان نہ بدلے. گاندھی جی نے ھی سن 1920' 1925 اور 193 میں ضرورت کے مطابق کانگریس کے ودھان میں تبدیلیاں ں تھیں تاکہ کانگریس ایک سنگھرش کرنے والی' کرانتیکاری ماعت کی حیثیت سے دیش کو آزادی دلانے کا ذریعہ بن سکے ، وہ کام اُس نے بخوبی انجام دیا. سن 1920 سے پہلے گریس دیش میں چوٹی کے پڑھے لکھے لوگوں' بڑے بڑے وکیلوں' رسٹروں اور رئیسوں کی جماعت تھی. سن 1920 کے بعد وہ چلے مدھیم ورگ کے لوگوں کے ھاتھ میں آئی جن میں بہت ی تعداد شہریوں کی تھی. 1925 میں رچناتمک کاموں ' گرام سیوا کو' گرامودیوگوں کو کانگریس کے کام کا جز بنایا گیا . اِس طرح گاندھی جی نے کانگریس کو ٹھیٹھ ملک کی جڑوں ـ' یعنی گاؤں تک پہونچانے کی کوشش کی. 1934 کے ھان کے ذریعے اُنھوں نے اُس کوشش کو اور گہرائی تک ونچانے کی تجویز کی. سوراجیہ حاصل ہونے کے بعد وے ھتے تھے کانگریس کا ڈھانچہ بدل کر ایسا کر دیا جائے وہ نعرہ لگانے والوں' جلوس نکالنے والوں' تقریریں ے والوں کے بجائے نرسپرہ' تیاگی' سماجک اور آرتھک دی کی مثال خود اپنے نجی جیون میں اُتارنے والے

समग्र ग्रामसेवियों, सर्वोदय वादियों और सच्चे सेवकों की जमात बन जाय, वह पार्लिमेंटरी हुकूमत के पश्चिमी उसूलों की हूबहू नक़ल करने वाली, एक नक़लची संस्था न रहे बल्कि अपनी ज़रूरतों, अपनी परम्पराओं, अपनी तहज़ीब और कल्चर, अपनी विशेष सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुये ख़ुद अपना नया रास्ता निकालने वाली और देश को ठोस तरक़्क़ी के रास्ते पर ले जाने वाली जमात बने. वह कांग्रेस का चोला ही बदल देना चाहते थे. वह उसे शक्ति और सत्ता का नहीं, त्याग और सेवा का पुजारी बनाना चाहते थे. इस उद्देश्य से उन्होंने कांग्रेस का विधान बनाना शुरू किया. उसका कुछ हिस्सा लिखा. मगर देश की बदक़िस्मती कि जिस दिन उन्होंने यह काम शुरू किया उसी दिन एक देश-घातक नर-पिशाच की गोली से वह अपने देशवासियों के कल्याण मार्ग में बलि चढ़ गये. उनकी मौत के कारण कांग्रेस का कायाकल्प न हो सका. वह नया चोला न बदल सकी. वह सेवा का रास्ता न अपना सकी. सरपट प्रभुता के रास्ते पर दौड़ने लगी. काम की अधिकता, जीवन-रस का अभाव, बुढ़ापे का शरीर—नतीजा यह हुआ कि आठ बरस की हुकूमत के बोझ से ही वह थक कर चूर चूर हो गई. उसके अवयव ढीले पड़ने लगे और अंग प्रत्यंग बेकार होने लगे. 27 बरस से वह जनता के दिलों की प्यारी, उसकी आँखों का नूर और उसकी उमीदों का सहारा थी. मुल्क की आज़ादी आख़िर कांग्रेस के ही कोख से जन्मी और पालने पर उसी की लोरियाँ उसने सुनीं. उसी जनता की उम्मीदें कांग्रेस से टूटने लगीं. आज मुल्क का दिल भले ही कांग्रेस के साथ हो मगर दिमाग़ उसका भटक रहा है. जहाँ पहले एक ही तिरंगा निशान लहराता था वहाँ आज दोरंगे, एक रंगे, लाल, पीले, क़िस्म क़िस्म के निशान पार्टी आफ़िसों में फहरा रहे हैं.

यह नहीं कि कांग्रेस इस सारी कैफ़ियत को समझती नहीं. वह ख़ूब समझती है. उसने रोग का सबब भी ढूँढ़ने की कोशिश की. मगर जब तक गान्धी जी ज़िन्दा थे वह हर बुराई का दोषी सबसे पहले अपने को बताते थे. ख़ुद अपनी ज़ात से इलाज शुरू करते थे. मगर उनके बाद क्या हुआ ? कांग्रेस की बढ़ती हुई अनुशासनहीनता और अप्रियता के लिये नेताओं ने छोटे नेताओं को दोष दिया, छोटे नेताओं ने एम. एल. ए. लोगों को ज़िम्मेवार ठहराया और फिर सबने एक राय से मिलकर पदहीन, सत्ताहीन, भूखे और लाचार छोटे छोटे हज़ारों कांग्रेस के काम करने वालों के सर पर कांग्रेस की सारी मुसीबतों की ज़िम्मेवारी मढ़ दी.

रोग का वह सही निदान नहीं था इसलिये हर इलाज कांग्रेस को सेहत देने में नाकाफ़ी साबित हुआ. जनता के

سمگر گرام سیویوں، سرودئے وادیوں اور سچے سیوکوں کی جماعت بن جائے، وہ پارلیمینٹری حکومت کے پچھمی اُصولوں کی ہوبہو نقل کرنے والی، ایک نقلچی سنستھا نہ رہے بلکہ اپنی ضرورتوں، اپنی پرمپراؤں، اپنی تہذیب اور کلچر، اپنی وشیش سماجک اور آرتھک پرستھتیوں کو دیکھتے ہوئے خود اپنا نیا راستہ نکالنے والی اور دیش کو ٹھوس ترقی کے راستے پر لیجانے والی جماعت بنے۔ وہ کانگریس کا چولا ہی بدل دینا چاہتے تھے۔ وہ اُسے شکتی اور ستا کا نہیں، تیاگ اور سیوا کا پجاری بنانا چاہتے تھے۔ اِس اُدیشیہ سے اُنہوں نے کانگریس کا ودھان بنانا شروع کیا۔ اس کا کچھ حصہ لکھا۔ مگر دیش کی بدقسمتی کہ جس دن اُنہوں نے یہ کام شروع کیا اُسی دن ایک دیش گھاتک نرپشاچ کی گولی سے وہ اپنے دیش واسیوں کے کلیان مارگ میں بلی چڑھ گئے۔ اُن کی موت کے کارن کانگریس کا کایا کلپ نہ ہو سکا۔ وہ نیا چولا نہ بدل سکی۔ وہ سیوا کا راستہ نہ اپنا سکی۔ سرپٹ پربھوتا کے راستے پر دوڑنے لگی۔ کام کی ادھکتا، جیون رس کا ابھاؤ، بڑھاپے کا شریر—نتیجہ یہ ہوا کہ آٹھ برس کی حکومت کے بوجھ سے ہی وہ تھک کر چور چور ہوگئی۔ اِس کے اویو ڈھیلے پڑنے لگے اور انگ پرتینگ بیکار ہونے لگے۔ 27 برس سے وہ جنتا کے دلوں کی پیاری، اُس کی آنکھوں کا نور اور اُس کی اُمیدوں کا سہارا تھی۔ ملک کی آزادی آخر کانگریس کے ہی کوکھ سے جنمی اور پالنے پر اُس کی لوریاں اُس نے سنیں۔ اُسی جنتا کی اُمیدیں کانگریس سے ٹوٹنے لگیں۔ آج ملک کا دل بھلے ہی کانگریس کے ساتھ ہو مگر دماغ اُس کا بھٹک رہا ہے۔ جہاں پہلے ایک ہی ترنگا نشان لہراتا تھا وہاں آج دو رنگے، ایک رنگے، لال، پیلے، قسم قسم کے نشان پارٹی آفسوں میں پھہرا رہے ہیں۔

یہ نہیں کہ کانگریس اِس ساری کیفیت کو سمجھتی نہیں۔ وہ خوب سمجھتی ہے۔ اُسے نے روگ کا سبب بھی ڈھونڈھنے کی کوشش کی۔ مگر جب تک گاندھی جی زندہ تھے وہ ہر برائی کا دوشی سب سے پہلے اپنے کو بتاتے تھے۔ خود اپنی ذات سے علاج شروع کرتے تھے۔ مگر اُن کے بعد کیا ہوا ؟ کانگریس کی بڑھتی ہوئی انوشاسن ہینتا اور اپریتا کے لئے نیتاؤں نے چھوٹے نیتاؤں کو دوش دیا، چھوٹے نیتاؤں نے ایم. ایل. اے لوگوں کو ذمہ وار ٹھہرایا اور پھر سب نے ایک رائے سے ملکر پدھین، ستاہین، بھوکے اور لاچار چھوٹے چھوٹے ہزاروں کانگریس کے کام کرنے والوں کے سر پر کانگریس کی ساری مصیبتوں کی ذمہ واری مڑھ دی۔

روگ کا وہ صحیح ندان نہیں تھا اِس لئے ہر علاج کانگریس کو صحت دینے میں ناکافی ثابت ہوا۔ جنتا کے

दिल में यह बात बैठती सी जा रही है कि कांग्रेस रास्ता भटक गई है. आई. सी. एस. अफ़सरों, आंकड़ा-शास्त्रियों, सेक्रेटेरियट की फ़ाइलों, प्राइवेट सेक्रेटरियों और पर्सनल असिसटेंटों की क़तारों, सुनहली वर्दी पेटी से लैस चपरासियों, अपटुडेट डी लक्स मोटरों, एअर कंडीशन्ड हवेलियों ने मिलकर उसके नेताओं के दृष्टिपथ पर एक धुन्ध सा, एक कोहरा सा फैला रखा है. कांग्रेस की नेताशाही त्याग के युग के बाद भोग के युग से गुज़र रही है. जब दुर्वासा ही मेनका पर रीझ गये तब कलियुगी त्यागियों की भला क्या बिसात ! मगर दुर्वासा और मेनका के संयोग से पैदा हुई थी शकुन्तला, किन्तु मंत्रियों और अफ़सरशाही के संयोग से अनेकानेक जारज सन्तानें—कंट्रोल, ब्लैक-मार्केट, करप्शन, रिश्वतख़ोरी. सिफ़ारिश आदि पैदा हुईं, सेक्रेटेरियट के पालनों में ये झूलीं और देश की पूँजीशाही ने इन्हें स्तनपान कराया. जनता ने स्वयं अपने साहस के बल इन पूतनाओं और ताड़काओं का वध करने की कोशिश की, मगर वह भी कुछ थकी हुई सी बेबस नज़र आती है.

हिर फिर कर उसकी नज़रें जवाहरलाल की तरफ़ जाती हैं. मगर अकेले जवाहरलाल क्या करें ? आख़िर वह इनसान हैं और उन्होंने सब कुछ सीखा मगर अपने गुरू से वह कला नहीं सीखी कि मिट्टी के पुतलों में कैसे जान डाली जाती है ? पतित से पतित इनसान को नैतिकता की सीढ़ी से कैसे ऊँचा उठाया जा सकता है ?

जवाहरलाल भी हैरान और परेशान हैं. जनता अपने लाभ की योजनाओं में ख़ुद कोई दिलचस्पी नहीं लेती—ऐसी उन्हें शिकायत है. कभी कभी तो यह शिकायत उनकी तक़रीरों से बरबस फूट पड़ती है. मगर जिस योजना के बनाने में जनता की राय और मशविरा न लिया गया हो उस योजना के लिये जनता में उत्साह की लहर कैसे दौड़ सकती है ? जनता का उत्साह और सहयोग हासिल करने का रामबाण नुस्ख़ा गान्धी जी ने बताया था. उन्होंने कहा था—"जनता की सेवा के लिये सबसे पहले हमें सफ़ेदपोशी की अकड़ छोड़ना होगा. हमें समाज की सबसे नीची सीढ़ी पर जाकर बैठना होगा जहाँ ग़रीब भंगी बैठा है. जब हम अपने को उतना नम्र बना लेंगे तब हम जनता के कृपापात्र बन सकेंगे. तब जनता अपना दिल खोल कर हमारे आगे रखेगी. जब वह देखेगी कि हम उसी के विचारों को अपनी बानी में बोलते हैं तब हम उसके सच्चे प्रतिनिधि बनेंगे." एक दूसरे अवसर पर उन्होंने कहा था—"सत्ता और संगठन को वश में करने की चिन्ता न करो, जनता को वश में करो. अगर जनता वश में हो जायगी तो सत्ता और संगठन रीझे हुये तुम्हारे पीछे फिरेंगे ."

आज देश की मुसीबतों का मूल इसमें है कि शासक

دل میں یہ بات بیٹھتی سی جارہی ہے کہ کانگریس راستہ بھٹک گئی ہے. آئی. سی. ایس. افسروں' آنکڑا شاستریوں' سیکریٹریٹ کی فائلوں' پرائیویٹ سیکریٹریوں اور پرسنل اسسٹنٹوں کی قطاروں' سنہلی وردی پیٹی سے لیس چپراسیوں' اپ. ٹو. ڈیٹ ڈی لکس موٹروں' ائیر کنڈیشنڈ حویلیوں نے ملکر اُس کے نیتاؤں کے درشٹی پتھ پر ایک دھندھ سا' ایک کہرا سا پھیلا رکھا ہے. کانگریس کی نیتاشاہی تیاگ کے یگ کے بعد بھوگ کے یگ سے گذر رہی ہے. جب درواسا ہی مینکا پر ریجھ گئے تب کلیوگی تیاگیوں کی بھلا کیا بساط ! مگر درواسا اور مینکا کے سنیوگ سے پیدا ہوئی تھی شکنتلا' کنتو منتریوں اور افسر شاہی کے سنیوگ سے انیکانیک جارج سنتانیں—کنٹرول' بلیک مارکیٹ' کرپشن' رشوت خوری' سفارش آدی پیدا ہوئیں' سیکریٹریٹ کے پالنوں میں یہ جھولیں اور دیش کی پونجی شاہی نے اِنھیں استن پان کرایا. جنتا نے سویم اپنے ساہس کے بل ان پوتناؤں اور تاڑکاؤں کا بدھ کرنے کی کوشش کی مگر وہ بھی کچھ تھکی ہوئی سی بے بس نظر آتی ہے.

ہر پھر کر اُس کی نظریں جواہر لال کی طرف جاتی ہیں. مگر اکیلے جواہر لال کیا کریں ? آخر وہ انسان ہیں اور اُنھوں نے سب کچھ سیکھا مگر اپنے گرو سے وہ کلا نہیں سیکھی کہ مٹی کے پتلوں میں کیسے جان ڈالی جاتی ہے ? پتت سے پتت اِنسان کو نیتکتا کی سیڑھی سے کیسے اُونچا اُٹھایا جا سکتا ہے ?

جواہر لال بھی حیران اور پریشان ہیں. جنتا اپنے لابھ کی یوجناؤں میں خود کوئی دلچسپی نہیں لیتی—ایسی اُنھیں شکایت ہے. کبھی کبھی تو یہ شکایت اُن کی تقریروں سے بربس پھوٹ پڑتی ہے. مگر جس یوجنا کے بنانے میں جنتا کی رائے اور مشورہ نہ لیا گیا ہو اُس یوجنا کے لئے جنتا میں اُتساہ کی لہر کیسے دوڑ سکتی ہے ? جنتا کا اُتساہ اور سہیوگ حاصل کرنے کا رام بان نسخہ گاندھی جی نے بتایا تھا. اُنھوں نے کہا تھا—"جنتا کی سیوا کے لئے سب سے پہلے ہمیں سفید پوشی کی اکڑ چھوڑنا ہوگا. ہمیں سماج کی سب سے نیچی سیڑھی پر جاکر بیٹھنا ہوگا جہاں غریب بھنگی بیٹھا ہے. جب ہم اپنے کو اُتنا نمر بنا لینگے تب ہم جنتا کے کرپا پاتر بن سکینگے. تب جنتا اپنا دل کھولکر ہمارے آگے رکھیگی جب وہ دیکھیگی کہ ہم اُسی کے وچاروں کو اپنی بانی میں بولتے ہیں تب ہم اُس کے سچے پرتیندھی بنینگے." ایک دوسرے اوسر پر انھوں نے کہا تھا—"ستا اور سنگٹھن کو وش میں کرنے کی چنتا نہ کرو' جنتا کو وش میں کرو. اگر جنتا وش میں ہوجائیگی تو ستا اور سنگٹھن ریجھے ہوئے تمہارے پیچھے پھرینگے."

آج دیش کی مصیبتوں کا مول اِس میں ہے کہ شاسک

सत्ता और शक्ति पर रीझे हुये हैं. त्याग और सेवा की भावना उनके हृदय से निकल गई है. कांग्रेस का संगठन आज कांग्रेस के पालियामेन्टरी ग्रुप का जर-खरीद गुलाम है. उसमें नया खून बनना बन्द हो गया है. पुराने नेता अपने निजी स्वार्थों के लिये एम. एल. ए. की क़तारों से लेकर मंत्रियों तक मोर्चाबन्दी किये हुये हैं. धनी लोग जिन्होंने चोर बाजारी में पैसा पैदा किया है अपनी थैलियों के जोर पर कांग्रेस में प्रवेश पा रहे हैं. पुराने निस्पृह सेवक संस्था से गिरोह-बाजियों के जरिये निकाले जा रहे हैं. धनहीन कांग्रेस कर्मियों के लिये आज सेवा के सब दरवाजे बन्द हैं.

इस कशमकश में जनता की सेवा करने का समय और फ़ुरसत किसे ? झंडे, नारे, जुलूस, दिवस, मेम्बरी, चुनाव, पार्टी, एट-होम, मानपत्र, थैली—इन्हीं के इर्द गिर्द कांग्रेस संगठन का चक्र तेजी से घूम रहा है, मगर न संगठन आगे बढ़ता है, न जनता आगे बढ़ती है और न देश आगे बढ़ता है.

हमें बंगाल के प्रसिद्ध गोपाल भांड का क़िस्सा याद आता है. कुछ उत्साही लोगों ने नौका चलाने की होड़ की ठानी. कई दल मैच में शामिल हुये. सारी रात की होड़ थी. सब ने चप्पू सम्हाले और छप ! छप छपा ! छप ! की जोरदार आवाजों से कान गूँजने लगे. सब एक दूसरे से आगे बढ़ने के ख्याल से चप्पू चला रहे थे. रात भर बिना थके, बिना झपकी लिये लोग चप्पू चला रहे थे. जब सवेरा हुआ, अंधेरा मिटा तो लोगों को बड़ी हैरानी हुई कि सारी रात चप्पू चलाने के बावजूद नावें जहाँ की तहाँ खड़ी हैं. एक इंच भी आगे नहीं बढ़ीं. बात यह थी कि लोग खूँटों से नावों की रस्सी खोलना ही भूल गये थे. नतीजा यह हुआ कि सारी मेहनतों के बावजूद सारी पार्टियाँ जहां की तहां खड़ी रहीं, हालांकि अंधेरे में सब यह समझते थे कि हम इनक़लाबी प्रगति के साथ मंज़िले मक़सूद तक पहुंचने के लिये औरों से बाजी मार रहे हैं.

गोपाल भांड का यह क़िस्सा आज की हमारी राजनैतिक पार्टियों के ऊपर हर्फ़ बहर्फ़ सच उतरता है. सब पार्टियाँ सत्ता और शक्ति की भूखी हैं, भोग के लिये सब के जी मचल रहे हैं. सेवा और त्याग की भावना से कोई काम नहीं कर रहा, चाहे वह पी. एस. पी. हो, कम्यूनिस्ट पार्टी हो, जनसंघ हो, अकाली दल हो, द्रविड़ खजगाम हो या शेड्यूल्ड कास्ट फ़ेडरेशन हो. सब के सब सत्ता हथियाने के लिये व्याकुल हैं. वही नारे, वही झंडे, वही जुलूस, वही हाय हाय ! जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ. जनता की सेवा की भावना से सैकड़ों मील दूर. मन में यही ख्वाहिश कि कब कांग्रेस का दम निकले और कब हम मंत्रियों की कुरसियों पर जा विराजें. सब जोरदार तरीक़े से अंधेरे में नाव चला रहे हैं, मगर सबने स्वार्थ और खुदग़रज़ी की खूँटी में अपनी प्रगति की रस्सी बाँध रखी है ! फिर नाव बढ़े तो कैसे बढ़े ? हाँ दिल

ستا اور شکتی پر ریجھے ہوئے ہیں. تیاگ اور سیوا کی بھاؤنا اُن کے ہردے سے نکل گئی ہے. کانگریس کا سنگٹھن آج کانگریس کے پارلیامینٹری گروپ کا زرخرید غلام ہے. اُس میں نیا خون بننا بند ہوگیا ہے. پرانے نیتا اپنے نجی سوارتھوں کے لئے ایم. ایل. اے. کی قطاروں سے لیکر منتریوں تک مورچہ بندی کئے ہوئے ہیں. دھنی لوگ جنہوں نے چور بازاری میں پیسہ پیدا کیا ہے اپنی تھیلیوں کے زور پر کانگریس میں پرویش پا رہے ہیں. پرانے نسپرہ سیوک سنستھا سے گروہ بازیوں کے ذریعے نکالے جا رہے ہیں. دھن ہین کانگریس کرمیوں کے لئے آج سیوا کے سب دروازے بند ہیں.

اس کشمکش میں جنتا کی سیوا کرنے کا سمے اور فرصت کسے ؟ جھنڈے، نعرے، جلوس، دیوس، ممبری، چناؤ، پارٹی، ایٹ ہوم، مان پتر، تھیلی—انہیں کے اِردگرد کانگریس سنگٹھن کا چکر تیزی سے گھوم رہا ہے، مگر نہ سنگٹھن آگے بڑھتا ہے، نہ جنتا آگے بڑھتی ہے اور نہ دیش آگے بڑھتا ہے.

ہمیں بنگال کے پرسدھ گوپال بھانڈ کا قصہ یاد آتا ہے. کچھ اُتساہی لوگوں نے نوکا چلانے کی ہوڑ کی ٹھانی. کئی دل میچ میں شامل ہوئے. ساری رات کی ہوڑ تھی. سب نے چپو سنبھالے اور چھپ ! چھپ چھپا ! چھپ کی زوردار آوازوں سے کان گونجنے لگے. سب ایک دوسرے سے آگے بڑھنے کے خیال سے چپو چلا رہے تھے. رات بھر بنا تھکے، بنا جھپکی لئے لوگ چپو چلا رہے تھے. جب سویرا ہوا، اندھیرا مٹا تو لوگوں کو بڑی حیرانی ہوئی کہ ساری رات چپو چلانے کے باوجود ناویں جہاں کی تہاں کھڑی ہیں. ایک اِنچ بھی آگے نہیں بڑھیں. بات یہ تھی کہ لوگ کھونٹوں سے ناؤں کی رسی کھولنا ہی بھول گئے تھے. نتیجہ یہ ہوا کہ ساری محنتوں کے باوجود ساری پارٹیاں جہاں کی تہاں کھڑی رہیں حالانکہ اندھیرے میں سب یہ سمجھتے تھے کہ ہم انقلابی پرگتی کے ساتھ منزل مقصود تک پہنچنے کے لئے اوروں سے بازی مار رہے ہیں.

گوپال بھانڈ کا یہ قصہ آج کی ہماری راجنیتک پارٹیوں کے اوپر حرف بحرف سچ اُترتا ہے. سب پارٹیاں ستا اور شکتی کی بھوکی ہیں، بھوگ کے لئے سب کے جی مچل رہے ہیں. سیوا اور تیاگ کی بھاؤنا سے کوئی کام نہیں کر رہا، چاہے وہ پی. ایس. پی. ہو، کمیونسٹ پارٹی ہو، جن سنگھ ہو، اکالی دل ہو، دراوڑ کھجگام ہو یا شیڈولڈ کاسٹ فیڈریشن ہو. سب کے سب ستا ہتھیانے کے لئے ویاکل ہیں. وہی نعرے، وہی جھنڈے، وہی جلوس، وہی ہائے ہائے ! جیسا ناگ ناتھ ویسا سانپ ناتھ ! جنتا کی سیوا کی بھاؤنا سے سیکڑوں میل دور. من میں یہی خواہش کہ کب کانگریس کا دم نکلے اور کب ہم منتریوں کی کرسیوں پر جا وراجیں. سب زوردار طریقے سے اندھیرے میں ناؤ چلا رہے ہیں مگر سب نے سوارتھ اور خودغرضی کی کھونٹی میں اپنی پرگتی کی رسی باندھ رکھی ہے ! پھر ناؤ بڑھے تو کیسے بڑھے ؟ ہاں دل

बहलाने को भले ही यह समझते रहें कि प्रगति-पथ पर सब से आगे बढ़कर बाजी मार रहे हैं.

फिर नया हिन्द सँवरे तो कैसे सँवरे ? हिन्द अपने को नये रूप में गढ़े तो कैसे गढ़े ? देश आगे बढ़े तो कैसे बढ़े ?

गान्धी जी का बताया एक ही मूल मंत्र है—सत्ता और शक्ति से नहीं, त्याग और सेवा से.

ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जो सबसे भयंकर मुसीबत हमें विरसे में मिली वह है—नौकर शाही—नौकर होकर मालिक का दम्भ भरने की नीति ! यूँ कहने को हमारा देश लोकतंत्र है. लोकतंत्र का अर्थ है जनता के हाथों में राज की बागडोर होना. लेकिन यह बात सिर्फ़ एक दिन के लिये—चुनाव के दिन के लिये—ही सही है. बाक़ी पाँच बरस तो सेवक ही स्वामी बना रहता है. अरबों-खरबों की स्कीमें बिना जनता रूपी मालिक से पूछे या सलाह मशविरा किये पास कर ली जाती हैं. नये नये करों का बोझ उसके सर पर मढ़ दिया जाता है. मंत्रियों और जनता के बीच में अफ़सरशाही का दौर-दौरा चल रहा है. जहाँ जनता ने चूँ-चपड़ की, मालिक ने सेवक से कुछ जवाब तलब करने की गुस्ताख़ी की तो बात बात पर लाठी, गोली, टीयर गैस से उसका स्वागत होने लगता है. जनता भूखी है मगर सेवक चमचमाता, मचमचाता बाटा शू पहन कर घूमते हैं. मालिक के बच्चों को पढ़ने का ठिकाना नहीं, सेवक के बच्चे इंगलैंड-अमरीका में मालिक के धन से पढ़ने जाते हैं. मालिक नंगा है पर सेवक रेशमी बुशशर्ट पहन कर घूमते हैं. स्वामी जलती बालू में पैदल चलता है मगर सेवक डी लक्स मोटरों में घूमता है. मालिक झोंपड़ी में रहता है मगर सेवक एअर कंडीशन्ड हवेलियों में रहते हैं. मालिक के बच्चे दवा के बग़ैर तड़प-तड़प कर मर जाते हैं मगर सेवक के ज़ुकाम को दूर करने के लिये सिविलसर्जन और बड़े बड़े डाक्टर हाथ बाँधे खड़े रहते हैं और घंटे घंटे बाद हेल्थ-बुलेटिन निकालते हैं ! आख़िर यह किस प्रकार का सेवक स्वामी का रिश्ता है ? और अगर आज जनता सेवक की योजनाओं में कोई दिलचस्पी नहीं लेती तो जवाहरलाल जी, जो कि जनता के सच्चे सेवक और हमदर्द हैं, उन्हें जनता की दिली कैफ़ियत का विश्लेषण, छान बीन करना चाहिये; सेवकों के तर्जे अमल को उन्हें बदलना चाहिये; हुकूमत के ढाँचे में सुधार करना चाहिये; जनता के स्वामित्व को जनता के हाथों में देना चाहिये; नौकरशाही को समाप्त करना चाहिये; जनता और शासकों के बीच रहन सहन के स्तर की खाई को पाटना चाहिये; कांग्रेस को जन सेवकों की सच्ची जमात बनाना चाहिये; मिली जुली हुकूमत बना कर देश की सेवा करनी चाहिये; और शासकों को सीख देनी चाहिये कि देश के कल्याण का रास्ता सत्ता और भोग में नहीं, सेवा और त्याग में है.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

بہلانے کو بھلے ہی یہ سمجھتے رہیں کہ پرگتی پتھ پر سب سے آگے بڑھکر بازی مار رہے ہیں ۔

پھر نیا ہند سنورے تو کیسے سنورے ؟ ہند اپنے کو نئے روپ میں گڑھے تو کیسے گڑھے ؟ دیش آگے بڑھے تو کیسے بڑھے ؟

گاندھی جی کا بتایا ایک ہی مول منتر ہے—ستا اور شکتی سے نہیں، تیاگ اور سیوا سے ۔

برٹش سامراجواد کی جو سب سے بھینکر مصیبت ہمیں ورثہ میں ملی وہ ہے—نوکر شاہی—نوکر ہوکر مالک کا دمبھ بھرنے کی نیتی ! یوں کہنے کو ہمارا دیش لوک تنتر ہے ۔ لوک تنتر کا ارتھ ہے جنتا کے ہاتھوں میں راج کی باگڈور ہونا ۔ لیکن یہ بات صرف ایک دن کے لئے—چناؤ کے دن کے لئے—ہی صحیح ہے ۔ باقی پانچ برس تو سیوک ہی سوامی بنا رہتا ہے ۔ اربوں کھربوں کی اسکیمیں بنا جنتا روپی مالک سے پوچھے یا صلاح مشورہ کئے پاس کرلی جاتی ہیں ۔ نئے نئے کروں کا بوجھ اس کے سر پر مڑھ دیا جاتا ہے ۔ منتریوں اور جنتا کے بیچ میں افسر شاہی کا دور دورہ چل رہا ہے ۔ جہاں جنتا نے چوں - چپڑ کی، مالک نے سیوک سے کچھ جواب طلب کرنے کی گستاخی کی تو بات بات پر لاٹھی، گولی، ٹیئرگیس سے اس کا سواگت ہونے لگتا ہے ۔ جنتا بھوکی ہے مگر سیوک چمچماتا، مچمچاتا باٹا شو پہن کر گھومتے ہیں ۔ مالک کے بچوں کو پڑھنے کا ٹھکانہ نہیں سیوک کے بچے انگلینڈ - امریکہ میں مالک کے دھن سے پڑھنے جاتے ہیں ۔ مالک ننگا ہے پر سیوک ریشمی بش شرٹ پہن کر گھومتے ہیں ۔ سوامی جلتی بالو میں پیدل چلتا ہے مگر سیوک ڈی لکس موٹروں میں گھومتا ہے ۔ مالک جھونپڑی میں رہتا ہے مگر سیوک ایئرکنڈیشنڈ حویلیوں میں رہتے ہیں ۔ مالک کے بچے دوا کے بغیر تڑپ تڑپ کر مر جاتے ہیں مگر سیوک کے زکام کو دور کرنے کے لئے سول سرجن اور بڑے بڑے ڈاکٹر ہاتھ باندھے کھڑے رہتے ہیں اور گھنٹے گھنٹے بعد ہیلتھ بولیٹن نکالتے ہیں ! آخر یہ کس پرکار کا سیوک سوامی کا رشتہ ہے ؟ اور اگر آج جنتا سیوک کی یوجناؤں میں کوئی دلچسپی نہیں لیتی تو جواہر لال جی، جو کہ جنتا کے سچے سیوک اور ہمدرد ہیں، انہیں جنتا کی دلی کیفیت کا وشلیشن، چھان بین کرنا چاہئے؛ جنتا کے سیوکوں کے طرزِ عمل کو انہیں بدلنا چاہئے؛ حکومت کے ڈھانچے میں سدھار کرنا چاہئے؛ جنتا کے سوامتو کو جنتا کے ہاتھوں میں دینا چاہئے؛ نوکر شاہی کو سماپت کرنا چاہئے؛ جنتا اور شاسکوں کے بیچ رہن سہن کے استر کی کھائی کو پاٹنا چاہئے؛ کانگریس کو جن سیوکوں کی سچی جماعت بنانا چاہئے؛ ملی جلی حکومت بناکر دیش کی سیوا کرنی چاہئے؛ اور شاسکوں کو سیکھ دینی چاہئے کہ دیش کے کلیان کا راستہ ستا اور بھوگ میں نہیں، سیوا اور تیاگ میں ہے ۔

—وشومبھر ناتھ پانڈے

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

इस नम्बर के ख़ास लेख | اِس نمبر کے خاص لیکھ

हिन्दुस्तान और ईरान का सम्बन्ध | ھندستان اور ایران کا سمبندھ
—डाक्टर ताराचन्द | —ڈاکٹر تارا چند

"नया चीन" के नाम | "نیا چین" کے نام
—पंडित सुन्दरलाल | —پنڈت سندر لال

उन्नीसवीं सदी के एक फ़क़ीर की डायरी | اُنیسویں صدی کے ایک فقیر کی ڈائری
—पंडित सुन्दरलाल | —پنڈت سندر لال

डा० भगवानदास और वर्ण व्यवस्था | ڈاکٹر بھگوان داس اور ورن ویوستھا
—भाई रघुपति सहाय 'फ़िराक़' | —بھائی رگھوپتی سہائے 'فراق'

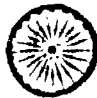
तपेदिक़ का टीका | تپ دق کا ٹیکہ
—श्री चक्रवर्ती राजागोपालाचारी | —شری چکرورتی راجاگوپالاچاری

इसके अलावा | اسکے علاوہ

देस बिदेस के मसलों पर हमारी राय में ज़रूरी सम्पादकी नोट

دیس بدیس کے مسئلوں پر ہماری رائے میں ضروری سمپادکی نوٹ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

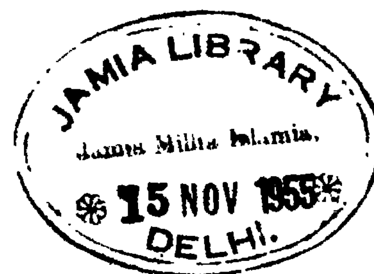


ہندستانی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

अक्तूबर 1955 اکتوبر

हिन्दुस्तानी ہندستانی

जिल्द 20 جلد   नम्बर 4 نمبر



अक्तूबर 1955 اکتوبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145، مٹھی گنج، الہ آباد

अक्तूबर 1955 اکتوبر

पुराने ज़माने से अब तक हिन्दुस्तान और ईरान का सम्बन्ध

[ईरान में 16 अगस्त सन् '55 को एक इन्डो-ईरानी कलचरल ऐसोसिएशन की बुनियाद रखी गई. उस मौक़े पर ईरान में भारत के राजदूत और "नया हिन्द" के ऐडीटर डाक्टर ताराचन्द ने जो तक़रीर की वह नीचे दी जाती है.]

❀ ❀ ❀

हिन्दुस्तान और ईरान एशिया के ऐसे दो देश हैं जिन्हें क़ुदरत ने एक दूसरे के पास पास बसाया है. दोनों के बीच के पहाड़ों के सिलसिले और फैला हुआ समन्दर कभी भी दोनों तरफ़ से लोगों के मेल जोल को नहीं रोक सके. इन बीच की रुकावटों की वजह से दोनों तरफ़ के साहसी और प्रेमी लोग और भी ज़्यादा एक दूसरे की तरफ़ खिंचते रहे हैं. जब से इनसान की तारीख़ शुरू होती है उसके पहले से आज तक लगातार क़ाफ़िले के क़ाफ़िले ज़मीन के और पानी के रास्ते पहाड़ों, जंगलों, रेगिस्तानों और समन्दर को पार करते हुए इधर से उधर और उधर से इधर आते जाते रहे हैं.

हिन्दुस्तान और ईरान के बीच आने जाने की यह कहानी हज़ारों बरस की पुरानी कहानी है. इन दोनों देशों का यह सम्बन्ध केवल पुराना ही नहीं है, यह इतना गहरा है और इनसानी कलचर के हर पहलू पर इस तरह छाया हुआ है कि उसे पूरी तरह बयान करने के लिये बहुत सी जिल्दें भी नाकाफ़ी होंगी.

आज इन दोनों मुल्कों की इस कलचर के केवल एक पहलू का मुख़तसिर सा हाल मैं आपके सामने पेश करूँगा. मैंने अपने आज के मतलब के लिये मज़हब का पहलू चुना है क्योंकि मज़हब हर आदमी के लिये भी और पूरी समाजी ज़िन्दगी के लिये भी, दोनों के लिये, बड़ी गहरी से गहरी अहमियत रखता है, किसी भी क़ौम की आत्मा की गहरी उमंगें और लालसायें उनके मज़हब ही से प्रगट होती हैं.

आज मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान और ईरान एक दूसरे के केवल पड़ोसी ही नहीं हैं, इन दोनों मुल्कों की आत्माएँ भी एक दूसरे के बहुत निकट रही हैं और हैं. यह दोनों क़ौमें एक ही नसल से हैं. इनकी भाषाओं, इनके धार्मिक अनुभवों और धर्म मज़हब की तरफ़ इन दोनों के रुख़ में भी हमेशा बहुत बड़ी समानता रही है.

मालूम पड़ता है कि इन दो मुल्कों के लोगों ने लगभग एक साथ एक ही वक़्त इनसानी तहज़ीब की उन्नति की

پرانے زمانے سے اب تک هندستان اور ایران کا سمبندھ

[ایران میں 16 اگست سن '55 کو ایک اِندو ایرانی کلچرل ایسوسئیشن کی بنیاد رکھی گئی . اُس موقعہ پر ایران میں بھارت کے راج دوت اور "نیا هند" کے ایڈیٹر ڈاکٹر تارا چند نے جو تقریر کی وہ نیچے دی جاتی ھے .]

❀ ❀ ❀

هندستان اور ایران ایشیا کے ایسے دو دیش ھیں جنھیں قدرت نے ایک دوسرے کے پاس پاس بسایا ھے . دونوں کے بیچ کے پہاڑوں کے سلسلے اور پھیلا ھوا سمندر کبھی بھی دونوں طرف سے لوگوں کے میل جول کو نہیں روک سکے . اِن بیچ کی رکاوٹوں کی وجہ سے دونوں طرف کے ساھسی اور پریمی لوگ اور بھی زیادہ ایک دوسرے کی طرف کھنچتے رھے ھیں . جب سے انسان کی تاریخ شروع ھوتی ھے اُس کے پہلے سے آج تک لگاتار قافلے کے قافلے زمین کے اور پانی کے راستے پہاڑوں' جنگلوں' ریگستانوں اور سمندر کو پار کرتے ھوئے اِدھر سے اُدھر اور اُدھر سے اِدھر آتے جاتے رھے ھیں .

هندستان اور اِیران کے بیچ آنے جانے کی یہ کہانی ھزاروں برس کی پرانی کہانی ھے . اِن دونوں دیشوں کا یہ سمبندھ کیول پرانا ھی نہیں ھے' یہ اِتنا گہرا ھے اور انسانی کلچر کے ھر پہلو پر اِس طرح چھایا ھوا ھے کہ اُسے پوری طرح بیان کرنے کے لئے بہت سی جلدیں بھی ناکافی ھونگی .

آج اِن دونوں ملکوں کی اِس کلچر کے کیول ایک پہلو کا مختصر سا حال میں آپ کے سامنے پیش کرونگا . میں نے اپنے آج کے مطلب کے لئے مذھب کا پہلو چنا ھے کیونکہ مذھب ھر آدمی کے لئے بھی اور پوری سماجی زندگی کے لئے بھی' دونوں کے لئے' بڑی گہری سے گہری اھمیت رکھتا ھے' کسی بھی قوم کی آتما کی گہری اُمنگیں اور لالسائیں اُن کے مذھب پرگٹ ھوتی ھیں .

آج میں یہ دکھانا چاھتا ھوں کہ هندستان اور ایران ایک دوسرے کے کیول پڑوسی ھی نہیں ھیں' اِن دونوں ملکوں کی آتمائیں بھی ایک دوسرے کے بہت نکٹ رھی ھیں اور ھیں . یہ دونوں قومیں ایک ھی نسل سے ھیں . اِن کی بھاشاؤں' اِن کے دھارمک انوبھوں اور دھرم مذھب کی طرف اِن دونوں ھی سے کے رخ میں بھی ھمیشہ بہت بڑی سمانتا رھی ھے .

معلوم ھوتا ھے کہ اِن دو ملکوں کے لوگوں نے لگ بھگ ایک ساتھ ایک ھی وقت انسانی تہذیب کی اُنّتی کی

मंज़िलें तय करनी शुरू कीं. यह दोनों मुल्क अरब सागर के दो सिरों पर हैं. पच्छिम के सिरे पर कारूँ नदी दक्खिनी ज़ागरूस में से बहती हुई और उन मैदानों में से होती हुई जहाँ ईरान की सब से पहली सभ्यताओं ने जन्म लिया था, ईरान की खाड़ी में जाकर गिरती है. पूरब में सिंध नदी, जिसका निकास हिमालय की बरफ़ानी चोटियों से है, पंजाब और सिंध के मैदानों को सैलाब करती हुई किसी ज़माने में कच्छ की खाड़ी में जाकर गिरती थी. कारूँ और सिंध दोनों पहाड़ों के पत्थरों और तरह तरह की उपजाऊ मिट्टी को अपने साथ ढकेलती हुई हमेशा अपना रास्ता बदलती और इन दोनों मुल्कों के अलग अलग हिस्सों को उपजाऊ बनाती रही हैं.

अरब सागर के इन दोनों सिरों पर इनसानी तहज़ीब साथ साथ शुरू हुई. दोनों जगह साथ साथ शहर आबाद हुए. खेती बाड़ी, पशु पालन और धातु की चीज़ों के बनने के साथ साथ दोनों जगह इनसान एक बहुत बड़े दरजे तक कुदरत की ग़ुलामी से एक साथ आज़ाद हुआ. दौलत और तिजारत, सामाजिक संस्थाएँ, राज सरकार, इल्म और हुनर दोनों जगह फले फूले और दोनों जगह की सभ्यताओं को तरक़्क़ी देने लगे. पच्छिम में तख़्ते जमशीद, (परसी पोलिस), शूश, काशान और निहावन्द. उत्तर में अस्तराबाद और अनाव जैसे बहुत से प्राचीन ईरानी शहरों की खुदाई से ताँबा, पीतल, काँसा, सोना, जवाहिरात और मिट्टी के वह बर्तन मिले हैं जिन से उस ज़माने की ईरानी तहज़ीब और उसकी तरक़्क़ी की मंज़िलों का पता चलता है. ठीक उसी ज़माने की इसी तरह की चीज़ें मोहन जोदाड़ो, हड़प्पा और सिंध नदी के आस पास के और मुक़ामों की खुदाई में मिली हैं. दोनों तरफ़ की इन चीज़ों से साफ़ पता चलता है कि यह दोनों सभ्यताएं कितनी मिलती जुलती थीं और इन दोनों ने एक दूसरे से किस क़दर लिया था. एलाम में शूश और अनशान के राजकाजी सम्बन्ध और वहाँ की राजकाजी संस्थाएं हड़प्पा और मोहनजोदाड़ों के राजकाजी सम्बन्धों और संस्थाओं से बेहद मिलती जुलती हैं.

एलाम और हड़प्पा दोनों की उस ज़माने की हुकूमतेंराज पुरोहितों या पुरोहित राजाओं के हाथों में थीं. दोनों जगह वही पुरोहित और वही राजा होते थे. दोनों जगह इन बहुत से देवी देवताओं के ऊपर एक सब से बड़ा देवता माना जाता था जो इन सबका राजा समझा जाता था और जो किसी पहाड़ के शिखर पर रहता था. दोनों जगह सूरज और चाँद की पूजा होती थी, जल और थल के देवताओं की पूजा होती थी, प्रेम की देवी और सन्तान उत्पत्ति की देवी की पूजा होती थी. माँ यानी देवी माता की पूजा होती थी. दोनों जगह कुछ जानवरों और दरख़्तों को भी पाक माना

منزلیں طے کرنی شروع کیں۔ یہ دونوں ملک عرب ساگر کے دو سروں پر ہیں ۔ پچھم کے سرے پر کارون ندی' دکھنی زاگروس میں سے بہتی ہوئی اور اُن میدانوں میں سے ہوتی ہوئی جہاں ایران کی سب سے پہلی سبھیتاؤں نے جنم لیا تھا' ایران کی کھاڑی میں جاکر گرتی ہے ۔ پورب میں سندھ ندی جس کا نکاس ہمالیہ کی برفانی چوٹیوں سے ہے' پنجاب اور سندھ کے میدانوں کو سیلاب کرتی ہوئی کسی زمانے میں کچھ کی کھاڑی میں جاکر گرتی تھی ۔ کارون اور سندھ دونوں پہاڑوں کے پتھروں اور طرح طرح کی اُپجاؤ مٹی کو اپنے ساتھ ڈھکیلتی ہوئی ہمیشہ اپنا راستہ بدلتی اور اِن دونوں ملکوں کے الگ الگ حصوں کو اُپجاؤ بناتی رہی ہیں ۔

عرب ساگر کے اِن دونوں سروں پر اِنسانی تہذیب ساتھ ساتھ شروع ہوئی ۔ دونوں جگہ ساتھ ساتھ شہر آباد ہوئے ۔ کھیتی باڑی' پشوپالن اور دھات کی چیزوں کے بننے کے ساتھ ساتھ دونوں جگہ اِنسان ایک بہت بڑے درجے تک قدرت کی غلامی سے ایک ساتھ آزاد ہوا ۔ دولت اور تجارت' ساماجک سنستھائیں' راج سرکار' علم اور ہنر دونوں جگہ پھلے پھولے اور دونوں جگہ کی سبھیتاؤں کو ترقی دینے لگے ۔ پچھم میں تخت جمشید' (پرسی پولس)' شوش' کاشان اور نہاوند ۔ اُتر میں آستراآباد اور اناو جیسے بہت سے پراچین ایرانی شہروں کی کھدائی سے تانبہ' پیتل' کانسا' سونا' جواہرات اور مٹی کے وہ برتن ملے ہیں جن سے اُس زمانے کی ایرانی تہذیب اور اُس کی ترقی کی منزلوں کا پتہ چلتا ہے ۔ ٹھیک اُسی زمانے کی اِسی طرح کی چیزیں موہن جوداڑو' ہڑپا اور سندھ ندی کے آس پاس کے اور مقاموں کی کھدائی میں ملی ہیں ۔ دونوں طرف کی اِن چیزوں سے صاف پتہ چلتا ہے کہ یہ دونوں سبھیتائیں کتنی ملتی جلتی تھیں اور اِن دونوں نے ایک دوسرے سے کسی قدر لیا تھا ۔ اِیلم میں شوش اور انزان کے راجکاجی سمبندھ اور وہاں کی راجکاجی سنستھائیں ہڑپا اور موہن جوداڑو کے راجکاجی سمبندھوں اور سنستھاؤں سے بےحد ملتی جلتی ہیں ۔

ایلم اور ہڑپا دونوں کی اُس زمانے کی حکومتیں راج پروہتوں یا پروہت راجاؤں کے ہاتھوں میں تھیں ۔ دونوں جگہ وہی پروہت اور وہی راجا ہوتے تھے ۔ دونوں جگہ لوگ بہت سے دیوی دیوتاؤں کی پوجا کرتے تھے ۔ دونوں جگہ اِن بہت سے دیوی دیوتاؤں کے اُوپر ایک سب سے بڑا دیوتا مانا جاتا تھا جو اِن سب کا راجا سمجھا جاتا تھا اور جو کسی پہاڑ کے شکھر پر رہتا تھا ۔ دونوں جگہ سورج اور چاند کی پوجا ہوتی تھی' جل اور تھل کے دیوتاؤں کی پوجا ہوتی تھی' پریم کی دیوی اور سنتان اُتپتی کی دیوی کی پوجا ہوتی تھی۔ ماں یعنی دیوی ماتا کی پوجا ہوتی تھی۔ دونوں جگہ کچھ جانوروں اور درختوں کو بھی پاک مانا

जाता था जैसे सांड, सांप, शेर वग़ैरा. हर शहर, हर गाँव और हर घर का अपना एक अलग छोटा सा मंदिर होता था जिसमें इन देवी देवताओं की मिट्टी या पत्थर की छोटी छोटी मूर्तियां होती थीं.

बड़े बड़े मंदिर जो ज़िगूरात या ख़ुदा का घर कहलाते थे चारों तरफ़ ऊँची ऊँची दिवारों से घिरे होते थे. उनके अन्दर बड़े बड़े चबूतरे होते थे. कई कई मंज़िले एवान होते थे जिन तक पहुंचने के लिये ऊँची ऊँची सीढ़ियां होती थीं. इनके चारों तरफ़ ऊँचे मीनार होते थे. यह बिलकुल क़िले की तरह होते थे और इन मंदिरों में बेशुमार दौलत और लाखों मन ग़ल्ला जमा रहता था.

एलाम और सिंध दोनों के इलाक़े पुरोहित राजाओं के हाथों में एक ज़बरदस्त शिकंजे में कसे रहते थे. सारा समाज पुराने रीत-रिवाजों के तंग सांचों में जकड़ा हुआ था. किसी को उससे बाहर निकलने या कोई नई बात करने की इजाज़त नहीं थी.

नतीजा दोनों जगह एक सा हुआ. दोनों जगह के बाशिन्दों पर एक सी आफ़त टूटी. एलाम और सिंध दोनों पर उत्तर से उठाऊ चूल्हा आर्य हमलावरों ने, जो घोड़ों पर सवार और लोहे के हथियार लिये हुए थे, धावा बोल दिया. उन्होंने इन दोनों मुल्कों को रोंद डाला और उन्हें जीत कर अपने अधीन कर लिया. धीरे धीरे पुराने बाशिन्दे और नये हमलावर दोनों की नसलें एक दूसरे में रल मिलकर एक हो गई. यही आजकल के ईरानियों और हिन्दुस्तानियों दोनों के पुरखे थे. उनकी नसल एक थी, बोली एक थी, धर्म एक था और कलचर एक थी.

इन आर्य लोगों के ईरान में बस जाने के बाद उन पर वहाँ के चारों तरफ़ के हालात का पूरा असर पड़ा. ईरान में तरह तरह के भू भाग हैं—कहीं पहाड़ और कहीं रेगिस्तान, कहीं दरियाओं की घाटियां और बीच के मैदान जो आदमियों, जानवरों और हरियाली से भरे हुए हैं, और कहीं रेतीले सफ़ाचट मैदान, जिनमें दूर दूर तक न कोई जानदार दिखाई पड़ता है और न कोई घास का तिनका, जहां सिवाय हवा की सांय सांय के कोई आवाज़ सुनाई नहीं देती. उजाले और अंधेरे, नेकी और बदी की शक्तियां वहां साफ़ अलग अलग काम करती दिखाई देती थीं.

हिन्दुस्तान में इसके ख़िलाफ़ प्रकृति ज़्यादा नरम, मीठी, मुलायम और रहमदिल मालूम होती थी. एक दूसरे के बाद खुलते हुए बड़े मैदान जिन्हें बहुत से बड़े बड़े दरिया सींचते थे और हर साल मौसमी बारिश जिन्हें फिर से शादाब कर देती थी. इन मैदानों में तरह तरह के दरख़्त, जड़ी बूटियां और सब्ज़ाज़ार और तरह तरह के जानवर रहते थे. हर साल की नई बहार वहां आदमी के दिमाग़ में यह ख़्याल

جاتا تھا جیسے سانڈ' سانپ' شیر وغیرہ. ہر شہر ہر گاؤں اور ہر گھر کا اپنا ایک الگ چھوٹا سا مندر ہوتا تھا جس میں اِن دیوی دیوتاؤں کی مٹی یا پتھر کی چھوٹی چھوٹی مورتیاں ہوتی تھیں ۔

بڑے بڑے مندر جو 'زگورات' یا خدا کا گھر کہلاتے تھے چاروں طرف اونچی اونچی دیواروں سے گھرے ہوتے تھے ۔ اُن کے اندر بڑے بڑے چبوترے ہوتے تھے ۔ کئی کئی منزلے ایوان ہوتے تھے جن تک پہونچنے کے لئے اونچی اونچی سیڑھیاں ہوتی تھیں ۔ ان کے چاروں طرف اونچے مینار ہوتے تھے ۔ یہ بالکل قلعہ کی طرح ہوتے تھے اور اِن مندروں میں بیشمار دولت اور لاکھوں من غلہ جمع رہتا تھا ۔

ایلم اور سندھ دونوں کے علاقے پروہت راجاؤں کے ہاتھوں میں ایک زبردست شکنجے میں کسے رہتے تھے ۔ سارا سماج پرانے ریت-رواجوں کے تنگ سانچوں میں جکڑا ہوا تھا ۔ کسی کو اُس سے باہر نکلنے یا کوئی نئی بات کرنے کی اِجازت نہیں تھی ۔

نتیجہ دونوں جگہ ایک سا ہوا ۔ دونوں جگہ کے باشندوں پر ایک سی آفت ٹوٹی ۔ ایلم اور سندھ دونوں پر اُتر سے اُٹھاؤ چولہا آریہ حملہ‌آوروں نے' جو گھوڑوں پر سوار اور لوہے کے ہتھیار لئے ہوئے تھے' دھاوا بول دیا ۔ اُنہوں نے اِن دونوں ملکوں کو روند ڈالا اور اُنہیں جیت‌کر اپنے آدھین کرلیا ۔ دھیرے دھیرے پرانے باشندے اور نئے حملہ‌آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے میں رل مل‌کر ایک ہوگئیں ۔ یہی آجکل کے ایرانیوں اور ہندستانیوں دونوں کے پرکھے تھے ۔ ان کی نسل ایک تھی' بولی ایک تھی' دھرم ایک تھا اور کلچر ایک تھی ۔

اِن آریہ لوگوں کے ایران میں بس جانے کے بعد اُن پر وہاں کے چاروں طرف کے حالات کا پورا اثر پڑا ۔ ایران میں طرح طرح کے بھوبھاگ ہیں—کہیں پہاڑ اور کہیں ریگستان' کہیں دریاؤں کی گھاٹیاں اور بیچ کے میدان جو آدمیوں' جانوروں اور ہریالی سے بھرے ہوئے ہیں' اور کہیں ریتیلے صفاچٹ میدان' جن میں دور دور تک نہ کوئی جاندار دکھائی پڑتا ہے اور نہ کوئی گھاس کا تنکا' جہاں سوائے ہوا کی سائیں سائیں کے کوئی آواز سنائی نہیں دیتی ۔ اُجالے اور اندھیرے' نیکی اور بدی کی شکتیاں وہاں صاف الگ الگ کام کرتی دکھائی دیتی تھیں ۔

ہندستان میں اِس کے خلاف پرکرتی زیادہ نرم' میٹھی' ملائم اور رحم دل معلوم ہوتی تھی ۔ ایک دوسرے کے بعد کھلتے ہوئے بڑے بڑے میدان جنہیں بہت سے بڑے بڑے دریا سینچتے تھے اور ہر سال موسمی بارش جنہیں پھر سے شاداب کردیتی تھی ۔ اِن میدانوں میں طرح طرح کے درخت' جڑی بوٹیاں اور طرح طرح کے جانور رہتے تھے ۔ ہر سال کی نئی بہار وہاں آدمی کے دماغ میں یہ خیال

ही पैदा होने न देती थी कि प्रकृति की फ़य्याज़ी की कहीं हदें भी हैं या आबादी के मुकाबिले में कहीं वीरानी भी है.

पर दुनिया में कहीं भी कोई भी परिवर्तन क्यों न हो शुरू के सांचे की छाप उस पर बराबर रहती ही है.

ईरान के पैग़म्बर ज़रतुश्त के सुधारों से पहले ईरानियों का जो मज़हब था, जो कुछ तबदीलियों के साथ बाद के हख़ामनशी और सासानी ज़माने में भी क़ायम रहा, वह हिन्दुस्तानी आर्यों के वैदिक मज़हब से बेहद मिलता हुआ था. इससे भी अधिक ध्यान देने की बात यह है कि ज़रतुश्त ने धर्म को जो नया रूप दिया वह अपने हर पहलू में साफ़ साफ़ यह बता रहा है कि वह और वैदिक धर्म दोनों एक ही ख़ान्दान से हैं. ज़रतुश्त ने पुरानी निकम्मी पेचीदगियों, ज़टिल रीत रिवाजों और अन्ध विश्वासों को हटाकर जीवन की सादगी और चलन की पाकीज़गी पर ज़ोर दिया. उन्होंने आदमी के नेकी के जीवन के लिये साफ़ साफ़ और सीधे सीधे क़ायदे बना दिये और हदें क़ायम कर दीं.

आर्यों की किताब वेद और ज़रतुश्त की किताब अवस्ता दोनों यही एलान करती हैं कि ख़ुदा, ईश्वर एक है. रिगवेद में लिखा है कि :—"वह एक है, विद्वान लोग उसे तरह तरह से बयान करते हैं." अवस्ता के मुताबिक़ "अहुरमज़्द (ईश्वर) ही इस सारे विश्व का बनाने वाला और सारी ज़िन्दगी का मालिक है."

हिन्दुस्तान की आर्य धार्मिक किताबों का असुर वरुण वही है जो ईरानियों का अहुरमज़्द. यह एक अजीब बात है कि वेदों में वरुण को 'असुर' कहा गया है हालांकि बाद के साहित्य में 'असुर' का मतलब दानव यानी देवताओं का दुश्मन होता है.

वेदों के मुताबिक़ वरुण "इस सारी दुनिया का बनाने वाला, क़ायम रखने वाला और रक्षा करने वाला है और सर्वज्ञ (अलीम) है. वही ज़मीन और आसमान का बनाने वाला है, उसी ने आसमान के अन्दर तारों और उनकी चालों को क़ायम किया है और जल और थल को फैला कर उनमें जानदारों को बसाया है. वही सब कुछ जानने वाला और सब का हाकिम है. वह भूत, भविष्य और वर्तमान (माज़ी, मुस्तक़बिल और हाल) सब को जानता है. वह हवा के रास्तों और उसमें उड़नेवाले परिन्दों और समन्दर में चलने वाले जहाज़ों सब के रास्तों को जानता है. वह आदमी के पलक की छपकियों को भी गिन लेता है. वह दुनियाओं का रक्षक और मालिक है. वह सब चीज़ों को देखता है."

"अगर मैं उड़कर दूर से दूर के आसमान पर भी पहुंच जाऊँ तब भी मैं असुर वरुण के राज से बाहर नहीं निकल सकता. आसमान में बैठे हुए उसके दूत (फ़रिश्ते)

ہی پیدا ہونے نہ دیتی تھی کہ پرکرتی کی فیاضی کی کہیں حدیں بھی ہیں یا آبادی کے مقابلہ میں کہیں ویرانی بھی ہے ۔

پر دنیا میں کہیں بھی کوئی بھی پریورتن کیوں نہ ہو شروع کے سانچے کی چھاپ اُس پر برابر رہتی ہی ہے ۔

ایران کے پیغمبر زرتشت کے سدھاروں سے پہلے ایرانیوں کا جو مذہب تھا، جو کچھ تبدیلیوں کے ساتھ بعد کے ہخامنشی اور ساسانی زمانوں میں بھی قائم رہا، وہ ہندستانی آریوں کے ویدک مذہب سے بےحد ملتا ہوا تھا ۔ اِس سے بھی ادھک دھیان دینے کی بات یہ ہے کہ زرتشت نے دھرم کو جو نیا روپ دیا وہ اپنے ہر پہلو میں صاف صاف یہ بتا رہا ہے کہ وہ اور ویدک دھرم دونوں ایک ہی خاندان سے ہیں ۔ زرتشت نے پرانی نکمی پیچیدگیوں، جٹل ریت رواجوں اور اندھ وشواسوں کو ہٹاکر جیون کی سادگی اور چلن کی پاکیزگی پر زور دیا ۔ اُنھوں نے آدمی کے نیکی کے جیون کے لئے صاف صاف اور سیدھے سیدھے قاعدے بنا دئے اور حدیں قائم کردیں ۔

آریوں کی کتاب وید اور زرتشت کی کتاب آوستا دونوں یہی اعلان کرتی ہیں کہ خدا، ایشور ایک ہے ۔ رگ وید میں لکھا ہے کہ :—"وہ ایک ہے، ودوان لوگ اُسے طرح طرح سے بیان کرتے ہیں ." آوستا کے مطابق "آہورمزد (ایشور) ہی اِس سارے وشو کا بنانے والا اور ساری زندگی کا مالک ہے ."

ہندستان کی آریہ دھارمک کتابوں کا اَسر ورن وہی ہے جو ایرانیوں کا آہورمزد ۔ یہ بھی ایک عجیب بات ہے کہ ویدوں میں ورن کو 'اَسر' کہا گیا ہے حالانکہ بعد کے ساہتیہ میں 'اَسر' کا مطلب دانو یعنی دیوتاؤں کا دشمن ہوتا ہے ۔

ویدوں کے مطابق ورن "اِس ساری دنیا کا بنانے والا، قائم رکھنے والا اور رکشا کرنے والا ہے اور سروگیہ (علیم) ہے ۔ وہی زمین اور آسمانوں کا بنانے والا ہے، اُسی نے آسمان کے اندر تاروں اور اُن کی چالوں کو قائم کیا ہے اور جل اور تھل کو پھیلا کر اُن میں جانداروں کو بسایا ہے ۔ وہی سب کچھ جاننے والا اور سب کا حاکم ہے ۔ وہ بھوت، بھوشیہ اور ورتمان (ماضی، مستقبل اور حال) سب کو جانتا ہے ۔ وہ ہوا کے راستوں اور اُس میں اڑنے والے پرندوں اور سمندر میں چلنے والے جہازوں سب کے راستوں کو جانتا ہے ۔ وہ آدمی کے پلک کی جھپکیوں کو بھی گن لیتا ہے ۔ وہ دنیاؤں کا رکشک اور مالک ہے ۔ وہ سب چیزوں کو دیکھتا ہے ."

"اگر میں اُڑ کر دور سے دور کے آسمان پر بھی پہنچ جاؤں تب بھی میں اسر ورن کے راج سے باہر نہیں نکل سکتا ۔ آسمان سے بیٹھے ہوئے اس کے دوت (فرشتے)

चारों तरफ़ अपनी हज़ारों आंखों से दुनिया को हर वक़्त देखते रहते हैं."

वरुण केवल आदमियों के गुनाहों को ही नहीं देखता और लोगों के दिलों के गहरे से गहरे भेदों को ही नहीं जानता, "वह दया और प्रेम का भी ईश्वर है." इस दुनिया में और अगली दुनिया में दोनों जगह वह अपने भगतों की ख़बर रखता है. वह उन सब पर दया करता है और उनके गुनाह माफ़ कर देता है जो इन शब्दों में उससे प्रार्थना करते हैं :—"ऐ असुर वरुण ! अगर मैंने अपने किसी प्यारे साथी या नातेदार के साथ कोई बुराई की है, या अपने किसी भाई या पड़ोसी के साथ, या अपने किसी हमवतन के साथ, या किसी अजनबी के साथ, तो उसके लिये तू मेरा वह गुनाह माफ़ कर दे' !"

"व इस दुनिया में लोगों का मित्र है, सब से मिलता है और इसके बाद की उस दुनिया में, जो उन लोगों के रहने की जगह है, जिन पर उसकी नेमतें हैं और जहां नेक रूहों के लिये एक जिन्दगी के बाद दूसरी जिन्दगी आती रहती है, और हर आगे की जिन्दगी पहले की जिन्दगी से ज्यादा भरपूर और सुन्दर होती है, उस दुनिया का भी वही मालिक है."

जरतुश्त के अनुसार ईश्वर, ख़ुदा यानी अहुर मज्द के दो साफ़ रूप हैं जो अहुर मज्द नाम से जाहिर हैं. अहुर की हैसियत से वह सारी जान का यानी सब रूहों का मालिक है और मज्द की हैसियत से वह सारी माद्दी दुनिया का बनाने वाला है. "अहुर मज्द सर्व शक्तिमान यानी क़ादिरे मुतलक़ है, वही सब का इनसाफ़ करने वाला है, वह अक़्ले कुल है, वह सब से ऊँचा और सब से बड़ा है, और सब बरबादी है. उसके मन के अन्दर सब चीजों की याद मौजूद है. हर सुनने वाले के दिल में वह गवाह की तरह मौजूद है. उसकी दया और मेहर सब ढूँढ़ते हैं. जो उससे रोशनी चाहते हैं उन्हें उससे रोशनी मिलती है. उसी ने दुनिया को बनाया है, वही उसमें फिर फिर जान डालता है. वह सच्चाई की दुनिया में बास करता है, उसका प्रेम सब जानदारों, आदमियों और जानवरों को अपने दायरे के अन्दर घेरे हुए है."

वेदों के अन्दर वरुण की जितनी तारीफ़ें गिनाई गई हैं वह लगभग सब अवस्ता के अन्दर अहुर मज्द की तारीफ़ें बताई गई हैं.

अवस्ता में 'अमेश स्पन्दों' का भी जिक्र आता है जिस का मतलब पाक रूहें है. कहीं पर इन्हें अहुर मज्द की केवल सिफ़तें यानी उसके गुन बताया गया है और कहीं उसके सेवक या उसकी शक्तियां या उसके अलग अलग रूप कहा गया है. वेदों में भी ठीक इसी तरह से अहुर वरुण के सेवकों और शक्तियों का बयान है.

چاروں طرف اپنی ھزاروں آنکھوں سے دنیا کو ھروقت دیکھتے رھتے ھیں ."

ورن کیول آدمیوں کے گناھوں کو ھی نہیں دیکھتا اور لوگوں کے دلوں کے گہرے سے گہرے بھیدوں کو ھی نہیں جانتا' "وہ دیا اور پریم کا بھی ایشور ھے." اِس دنیا میں اور اگلی دنیا میں دونوں جگہہ وہ اپنے بھگتوں کی خبر رکھتا ھے . وہ اُن سب پر دیا کرتا ھے اور اُن کے گناہ معاف کر دیتا ھے جو اِن شبدوں میں اُس سے پرارتھنا کرتے ھیں:—"اَے اسور ورن ! اگر میں نے اپنے کسی پیارے ساتھی یا ناتےدار کے ساتھ کوئی برائی کی ھے' یا اپنے کسی بھائی یا پڑوسی کے ساتھ' یا اپنے کسی ھم وطن کے ساتھ یا کسی اجنبی کے ساتھ' تو اُس کے لئے تو میرا وہ گناہ معاف کر دے !"

"وہ اُس دنیا میں لوگوں کا متر ھے . سب سے ملتا ھے. اور اِس کے بعد اُس دنیا میں' جو اُن لوگوں کے رھنے کی جگہہ ھے' جن پر اُس کی نعمتیں ھیں اور جہاں نیک روحوں کے لئے ایک زندگی کے بعد دوسری زندگی آتی رھتی ھے' اور ھر آگے کی زندگی پہلے کی زندگی سے زیادہ بھر پور اور سندر ھوتی ھے' اُس دنیا کا بھی وھی مالک ھے ."

زرتشت کے انوسار ایشور' خدا یعنی آھور مزد کے دو صاف روپ ھیں جو آھورمزد نام سے ظاھر ھیں . آھور کی حیثیت سے وہ ساری جان کا یعنی سب روحوں کا مالک ھے اور مزد کی حیثیت سے وہ ساری مادی ذنیا کا بنانے والا ھے . "آھور مزد سرو شکتی مان یعنی قادر مطلق ھے' وھی سب کا انصاف کرنے والا ھے' وہ عقل کل ھے' وہ سب سے اُونچا اور سب سے بڑا ھے' وہ سب پر حاوی ھے . اُس کے من کے اندر سب چیزوں کی یاد موجود ھے . ھر سننے والے کے دل میں وہ گواہ کی طرح موجود ھے. اُس کی یاد اور مہر سب ڈھونڈھتے ھیں. جو اُس سے روشنی چاھتے ھیں اُنھیں اُس سعروشنی ملتی ھے. اُسی نے دنیا کو بنایا ھے' وھی اِس میں پھر پھر جان ڈالتا ھے . وہ سچائی کی دنیا میں باس کرتا ھے' اُس کا پریم سب جانداروں' آدمیوں اور جانوروں کو اپنے دائرے کے اندر گھیرے ھوئے ھے ."

ویدوں کے اندر ورن کی جتنی تعریفیں گنائی گئی ھیں وہ لگ بھگ سب اوستا کے اندر آھورمزد کی تعریفیں بتائی گئی ھیں .

اوستا میں 'آمیش سپندوں' کا بھی ذکر آتا ھے جس کا مطلب پاک روحیں ھے. کہیں پر اِنھیں آھورمزد کی کیول صفتیں یعنی اُس کے گن بتایا گیا ھے اور کہیں اُس کے سیوک یا اُس کی شکتیاں یا اُس کے الگ الگ روپ کہا گیا ھے . ویدوں میں بھی ٹھیک اِس طرح سے آھورورن کے سیوکوں اور شکتیوں کا بیان ھے .

"अमेशा स्पन्द" दो तरह के हैं—एक वह जिनका सम्बन्ध क्रिया यानी फ़ेल से है और दूसरे वह जिनका सम्बन्ध भाव यानी जज़बे से है. इनमें पहले का सम्बन्ध अहुर से है और दूसरे का मज़्द से. इनमें सब से ऊपर 'अशा' है. वेद में 'अशा' का नाम "ऋत" रखा गया है, दोनों बिलकुल एक हैं.

अवस्ता में अशा का मतलब है दुनिया की तरतीब, क़ुदरत का वह क़ानून जो दुनिया को चलाता है और हमेशा एक सा रहता है और अहुर मज़्द की वह इच्छा जो लोगों के सारे सदाचार के क़ानून की नींव है. अशा ही सच्चाई और धर्म का क़ानून है.

वेदों में "ऋत" का मतलब है तीन तरह का क़ानून—एक जड़ यानी मादे का क़ानून जिससे दुनिया का माद्दी रूप क़ायम रहता है, दूसरा क़ुरबानी का क़ानून, और तीसरा नेकी यानी सदाचार का क़ानून. "ऋत ही के ज़रिये सूरज सुबह को निकलता है और बारह महीने के अन्दर आसमान में अपना चक्कर पूरा करता है. ऋत ही के ज़रिये अग्नि यानी आग लोगों की हवन में चढ़ाई हुई चीज़ों को देवताओं तक पहुंचा देती है. ऋत बुराई से रोकता है और नेकी का हुक्म देता है. ऋत ही सच्चाई है, ऋत ही धर्म है."

अवस्ता के दूसरे अमेश स्पन्दों के भी रूप वेदों के अन्दर मिलते हैं.

बहुत से हिन्दुस्तानी देवी देवताओं का अवस्ता में ज़िक्र आता है. वेदों के आदित्य अवस्ता के स्पन्द मैन्यु हैं. वेदों का 'मित्र' और ईरानी 'मित्र' दोनों बिलकुल एक हैं. पर न जाने कैसे वेदों का 'इन्द्र देवता' अवस्ता का 'इन्द्र दानव' यानी इन्द्र शैतान हो गया. वेदों का वृत्राहन ईरान का विरित्राघन है.

ईरानी किताब गाथा में तीन 'एज़द' का ज़िक्र है. उनमें से एक आज़र है, जो पहलवी ज़बान में आतर हो गया और आजकल की ईरानी में आतश हो गया. आज़र वही देवता है जिसे वेदों में अग्नि यानी आग कहा गया है. वेदों के अनुसार अग्नि कई तरह की होती है, आसमानी भी और ज़मीनी भी. "अग्नि बिजली की तरह आसमान में पैदा होती है और दो लकड़ियों की रगड़ से उसी तरह निकल पड़ती है जिस तरह दो प्रेमियों के मेल से. यह अग्नि बादलों से उतर कर पानी में जाती है, पानी से निकल कर पौधों में जाती है और पौधों से आग की लौ और धुंए की शकल में उठकर फिर बादलों में पहुंच जाती है. यही आदमी के अन्दर हरारत उसकी यानी जान है. यही जानवरों और परिन्दों के अन्दर गरमी है. सब दोपायों और चौपायों में यही जान है. यही अमर जीवन यानी हयाते अबदी का मरकज़ है."

ईरानी आज़र के पांच रूप हैं:—(1) बरज़ीस वह (बहराम), (2) वहु फ़रयाना (जानदारों के अन्दर की गरमी)

"امیش سپند" دو طرح کے ہیں—ایک وہ جن کا سمبندھ کریا یعنی فعل سے ہے اور دوسرے وہ جن کا سمبندھ بھاؤ یعنی جذبے سے ہے۔ ان میں پہلے کا سمبندھ اہور سے ہے اور دوسرے کا مزد سے۔ ان میں سب سے اوپر 'اشا' ہے۔ وید میں 'اشا' کا نام "رت" رکھا گیا ہے، دونوں بالکل ایک ہیں۔

اوستا میں اشا کا مطلب ہے دنیا کی ترتیب، قدرت کا وہ قانون جو دنیا کو چلاتا ہے اور ہمیشہ ایک سا رہتا ہے اور اہورمزد کی وہ اچھا جو لوگوں کے سارے سداچار کے قانون کی نیو ہے۔ اشا ہی سچائی اور دھرم کا قانون ہے۔

ویدوں میں "رت" کا مطلب ہے تین طرح کا قانون—ایک جڑ یعنی مادے کا قانون جس سے دنیا کا مادی روپ قائم رہتا ہے، دوسرا قربانی کا قانون، اور تیسرا نیکی یعنی سداچار کا قانون۔ "رت ہی کے ذریعہ سورج صبح کو نکلتا ہے اور بارہ مہینے کے اندر آسمان میں اپنا چکر پورا کرتا ہے۔ رت ہی کے ذریعہ ندیاں بہتی ہیں اور آگ روشن ہوتی ہے۔ رت ہی کے ذریعہ اگنی یعنی آگ لوگوں کی ہون میں چڑھائی ہوئی چیزوں کو دیوتاؤں تک پہنچا دیتی ہے۔ رت برائی سے روکتا ہے اور نیکی کا حکم دیتا ہے۔ رت ہی سچائی ہے، رت ہی دھرم ہے۔"

اوستا کے دوسرے امیش سپندوں کے بھی روپ ویدوں کے اندر ملتے ہیں۔

بہت سے ہندستانی دیوی دیوتاؤں کا اوستا میں ذکر آتا ہے۔ ویدوں کے آدتیہ اوستا کے سپند مینیو ہیں۔ ویدوں کا 'مترا' اور ایرانی 'مترا' دونوں بالکل ایک ہیں۔ پر نہ جانے کیسے ویدوں کا 'اندر دیوتا' اوستا کا 'اندر دانو' یعنی اندر شیطان ہو گیا۔ ویدوں کا ورتراہن ایران کا ویریتراگھن ہے۔

ایرانی کتاب گاتھا میں تین 'ایزد' کا ذکر ہے۔ ان میں سے ایک آذر ہے جو پہلوی زبان میں آتر ہو گیا اور آج کل کی ایرانی میں آتش ہو گیا۔ آذر وہی دیوتا ہے جسے ویدوں میں اگنی یعنی آگ کہا گیا ہے۔ ویدوں کے انوسار اگنی کئی طرح کی ہوتی ہے، آسمانی بھی اور زمینی بھی۔ "اگنی بجلی کی طرح آسمان میں پیدا ہوتی ہے اور دو لکڑیوں کی رگڑ سے اسی طرح نکل پڑتی ہے جس طرح دو پریمیوں کے میل سے۔ یہ اگنی بادلوں سے اتر کر پانی میں جاتی ہے، پانی سے نکل کر پودھوں میں جاتی ہے اور پودھوں سے آگ کی لو اور دھوئیں کی شکل میں اٹھکر پھر بادلوں میں پہنچ جاتی ہے۔ یہی آدمی کے اندر اس کی حرارت یعنی جان ہے۔ یہی جانوروں اور پرندوں کے اندر گرمی ہے۔ سب دوپایوں اور چوپایوں میں یہی جان ہے۔ یہی امر جیون یعنی حیات ابدی کا مرکز ہے۔"

ایرانی آذر کے پانچ روپ ہیں:—(1) برزیس وہ (بہرام)، (2) وہو فریانہ (جانداروں کے اندر کی گرمی)

(3) उरवसीस्ता (वह गरमी जो दो लकड़ियों के रगड़ने से पैदा होती है), (4) वजीश्ता (बिजली) और (5) सपनीस्ता (वह आग जो हमेशा से हमेशा तक क़ायम रहती है).

वेदों के पूजा पाठ में और अवस्ता के पूजा पाठ में दोनों में से किसी में मंदिरों के या मूर्तियों के लिये कोई जगह नहीं है. हर गृहस्थ का यानी हर ख़ानेदार का, चाहे वह राजा हो या मामूली आदमी, यह फ़र्ज़ है कि वह हर वक़्त अपने घर में आग को क़ायम रक्खे और उसमें यज्ञ करता रहे. वेदों में जिसे यज्ञ कहा गया है उसी को अवस्ता में यस्न कहा गया है. जो लोग इन यज्ञों या यस्नों में पुरोहित का काम करते हैं उनके दोनों में एक ही से नाम हैं—जैसे होतार, ज़ोतार, अथरवन, आतरवन, क्रिया अकान, कैकाऊस.

और भी बहुत सी मिलती जुलती चीज़ें हैं. वेदों का मज़हब और अवस्ता का मज़हब दोनों ऐसे लोगों के मज़हब हैं जो जीवन को ख़ुशी और उमंग के साथ देखते थे, दोनों ऊँची ज़िन्दगी और नेकी के उसूलों के सच्चे खोजी थे. दोनों ने इस उसूल को पा लिया था कि सबका ख़ुदा यानी ईश्वर एक है. दोनों यह मानते थे कि ईश्वर की रोशनी सबको मदद देती है और जो इससे फ़ायदा उठाता है उसे अनन्त सुख के मुक़ाम तक पहुँचा देती है. दोनों को इस बात पर पक्का विश्वास था कि यह सारी दुनिया एक ऐसे अच्छे क़ानून के सहारे चल रही है जो हमेशा से है और हमेशा तक रहेगा.

ज़माने के साथ साथ दोनों जगह तब्दीलियाँ हुईं, ईरान और हिन्दुस्तान दोनों फिर से तंग निगाह पुरोहितों के जाल में फंस गये. दोनों जगह मज़हब फिर केवल ऊपरी रीति रिवाज की चीज़ रह गया. मज़हब की रूह दोनों जगह फिर गुम हो गई. सच्चाई की जगह अंध विश्वासों ने फिर लेली और लोगों की नई नई रचना करने और तरक़्क़ी करने की शक्ति मिटकर सब केवल रसूम-परस्ती में फँसकर रह गये.

इस गंदले पानी को फिर से साफ़ करके मज़हब की शुरू की पाकीज़गी को फिर से वापस लाने के लिये ईरान में कोई नया महापुरुष पैदा नहीं हुआ. हिन्दुस्तान में ख़ुशक़िस्मती से गौतम बुद्ध ने जन्म लिया. गौतम बुद्ध ने रीति रिवाजों और अन्ध विश्वासों के बोझ से लोगों को आज़ाद करके उन्हें फिर से यह उपदेश दिया कि वह इस तरह की नेकी और सच्चाई की ज़िन्दगी बसर करें जिसमें उनका इस दुनिया में भी भला हो और आत्मा के हमेशा के जीवन में भी कल्याण हो.

इसके बाद बाहर से फिर एक ऐसी आफ़त आई जिसने हिन्दुस्तान और ईरान दोनों को फिर मिलाकर एक कर

(3) اروسیستہ (وہ گرمی جو دو لکڑیوں کے رگڑنے سے پیدا ھوتی ھے) . (4) وزیشتہ (بجلی) اور (5) سپنیستہ (وہ آگ جو ھمیشہ سے ھمیشہ تک قائم رھتی ھے) .

ویدوں کے پوجاپاٹھ میں اور اوستا کے پوجاپاٹھ میں دونوں میں سے کسی میں مندروں کے یا مورتیوں کے لئے کوئی جگہہ نہیں ھے . ھر گرھستھ کا یعنی ھر خانہ دار کا' چاھے وہ راجا ھو یا معمولی آدمی' یہ فرض ھے کہ وہ ھر وقت اپنے گھر میں آگ کو قائم رکھے اور اس میں یگیہ کرتا رھے . ویدوں میں جسے یگیہ کہا گیا ھے اسی کو اوستا میں یسن کہا گیا ھے . جو لوگ ان یگیوں یا یسنوں میں پروھت کا کام کرتے ھیں ان کے دونوں میں ایک ھی سے نام ھیں—جیسے 'ھوتار' 'زوتار' 'اتھرون' 'آترون' کریا آکان' کےکاؤس .

اور بھی بہت سی ملتی جلتی چیزیں ھیں . ویدوں کا مذھب اور اوستا کا مذھب دونوں ایسے لوگوں کے مذھب ھیں جو جیون کو خوشی اور امنگ کے ساتھ دیکھتے تھے' دونوں اونچی زندگی اور نیکی کے اصولوں کے سچے کھوجی ہے . دونوں نے اس اصول کو پالیا تھا کہ سب کا خدا یعنی ایشور ایک ھے . دونوں یہ مانتے تھے کہ ایشور کی روشنی سب کو مدد دیتی ھے اور جو اس سے فائیدہ اٹھاتا ھے اسے اننت سکھ کے مقام تک پہنچا دیتی ھے . دونوں کو اس بات پر پکا وشواس تھا کہ یہ ساری دنیا ایک ایسے اچھے قانون کے سہارے چل رھی ھے جو ھمیشہ سے ھے اور ھمیشہ تک رھے گا .

زمانے کے ساتھ ساتھ دونوں جگہ تبدیلیاں ھوئیں' ایران اور ھندستان دونوں پھر سے تنگ نگاہ پروھتوں کے جال میں پھنس گئے . دونوں جگہ مذھب پھر کیول اوپری ریت رواج کی چیز رہ گیا . مذھب کی روح دونوں جگہ پھر گم ھو گئی . سچائی کی جگہ اندھ وشواسوں نے پھر لے لی اور لوگوں کی نئی نئی رچنا کرنے اور ترقی کرنے کی شکتی مٹ کر سب کیول رسوم پرستی میں پھنس کر رہ گئے .

اس گدلے پانی کو پھر سے صاف کر کے مذھب کی شروع کی پاکیزگی کو پھر سے واپس لانے کے لئے ایران میں کوئی نیا مہاپرش پیدا نہیں ھوا . ھندستان میں خوش قسمتی سے گوتم بدھ نے جنم لیا . گوتم بدھ نے ریت رواجوں اور اندھ وشواسوں کے بوجھ سے لوگوں کو آزاد کر کے انہیں پھر سے یہ اپدیش دیا کہ وہ اس طرح کی نیکی اور سچائی کی زندگی بسر کریں جس میں ان کا اس دنیا میں بھی بھلا ھو اور آتما کے ھمیشہ کے جیون میں بھی کلیان ھو .

اس کے بعد باھر سے پھر ایک ایسی آفت آئی جس نے ھندستان اور ایران دونوں کو پھر ملا کر ایک کر

दिया. सिकन्दर ने हखामनशी साम्राज को मिटा कर सम्राट अशोक के बौद्ध मिशनरियों के लिये रास्ता खोल दिया कि वह अपने नये मजहब का पैग़ाम हिन्दुस्तान से ले जाकर पच्छिमी दुनिया के देशों तक पहुचा सकें. सेहून (सिर) और जेहून (आमू) नदियों के किनारों से लेकर हीरमन्द तक पूर्वी ईरान बौध मिशनरियों और बौद्ध भिक्खुओं से भर गया. सुग्द से लेकर सीस्तान तक बौद्ध मंदिर और बौद्ध मठ खड़े हो गये. अशोक के बाद उसके जानशीन राजाओं ने भी इस मजहब को क़ुबूल कर लिया और उसे अपने यहाँ के तमाम लोगों में फैलाया.

ईरान में जो गरमा गरमी और जोश इन तहरीकों से पैदा हुआ उससे एक अजीब तरह', का नया संगम, एक नई तरह की तरकीब पैदा हुई जिसमें जरतुश्ती धर्म, ईसाई धर्म और बौद्ध धर्म तीनों आकर मिल गये. इस नये मजहब का नाम 'मानी' मजहब था.

महात्मा मानी ईरान के अन्दर ठीक उस मजहबी उथल पुथल के जमाने में 14 अप्रैल सन् 216 ई० को पैदा हुए. कहा जाता है कि वह उत्तर पच्छिम हिन्दुस्तान गये और वहाँ दो साल रहकर वहाँ के धर्मों को समझते और सीखते रहे. इसके बाद ईरान जाकर उन्होंने अपने धर्म को रूप दिया और उसका प्रचार शुरू किया. 9 अप्रैल सन् 243 ई० को वह पीरोज की मार्फ़त ईरान के बादशाह शाहपुर से मिले और उन्होंने शाहपुर को क़रीब क़रीब अपने मजहब का पैरो बना लिया, लेकिन आखिरकार पुराने मजहब के मग़ पुरोहितों का बोलबाला रहा और सन् 277 ई० में मानी को बड़ी बेदर्दी के साथ सूली पर चढ़ा दिया गया.

महात्मा मानी के विचार मनुष्य जीवन और उसके मक़सद के बारे में बुनियादन बौद्ध विचार थे. उनका कहना था कि यह दुनिया दुख की घाटी है, आदमी का जीवन क़ुदरती तौर पर दर्द और रंज का जीवन है. इससे छुटकारा पाने की इच्छा आदमी में एक क़ुदरती इच्छा है. छुटकारा, मुक्ति या निजात का एक ही तरीक़ा है और वह है त्याग यानी अपने नफ़्स को पूरी तरह क़ाबू में करना, जिसका आखिरी नतीजा फ़ना यानी अपने अलग वजूद को मिटा डालना है. यही निजात है.

चूँकि हर आदमी इतना जबरदस्त त्याग नहीं कर सकता इसलिये मानी ने इनसानों को दो जमातों में तक़सीम किया—एक खास चुने हुए आदमी यानी भिक्खु और दूसरे मामूली इनसान जिन्हें वह मुस्तमईन यानी सुनने वाले कहते थे. खास चुने हुए लोगों को तीन तरह की प्रतिज्ञा करनी पड़ती थीं जिन्हें तीन मुहरें कहा जाता था. इनमें पहली मुँह पर मुहर लगाना था जिसका मतलब था गोश्त,

دیا . سکندر نے ہخا منشی سامراج کو مٹا کر سمراٹ اشوک کے بودھ مشنریوں کے لئے راستہ کھول دیا کہ وہ اپنے نئے مذہب کا پیغام ہندستان سے لے جا کر پچھمی دنیا کے دیشوں تک پہنچا سکیں . سیحون (سر) اور جیحون (آمو) ندیوں کے کناروں سے لے کر ہیرمند تک پوربی ایران بودھ مشنریوں اور بودھ بھکشوؤں سے بھر گیا . سغد سے لے کر سیستان تک بودھ مندر اور مٹھ کھڑے ہو گئے . اشوک کے بعد اُس کے جانشین راجاؤں نے بھی اِس مذہب کو قبول کر لیا اور اُسے اپنے یہاں کے تمام لوگوں میں پھیلایا .

ایران میں جو گرماگرمی اور جوش اِن تحریکوں سے پیدا ہوا اُس سے ایک عجیب طرح کا نیا سنگم' ایک نئی طرح کی ترکیب پیدا ہوئی جس میں زرتشتی دھرم' عیسائی دھرم اور بودھ دھرم تینوں آکر مل گئے . اِس نئے مذہب کا نام 'مانی' مذہب تھا .

مہاتما مانی ایران کے اندر ٹھیک اُس مذہبی اُتھل پتھل کے زمانے میں 14 اپریل سن 216ع کو پیدا ہوئے . کہا جاتا ہے کہ وہ اتر پچھم ہندستان گئے اور وہاں دو سال رہ کر وہاں کے دھرموں کو سمجھتے اور سیکھتے رہے . اِس کے بعد ایران جاکر اُنھوں نے اپنے دھرم کو روپ دیا اور اُس کا پرچار شروع کیا . 9 اپریل سن 243 کو وہ پیروز کی معرفت ایران کے بادشاہ شاہپور سے ملے اور اُنھوں نے شاہ پور کو قریب قریب اپنے مذہب کا پیرو بنا لیا . لیکن آخرکار پرانے مذہب کے مغ پروہتوں کا بول بالا رہا اور سن 277ع میں مانی کو بڑی بیدردی کے ساتھ سولی پر چڑھا دیا گیا .

مہاتما مانی کے وچار منشیہ جیون اور اُس کے مقصد کے بارے میں بنیاداً بودھ وچار تھے . اُن کا کہنا تھا کہ یہ دنیا دکھ کی گھاٹی ہے' آدمی کا جیون قدرتی طور پر درد اور رنج کا جیون ہے . اِس سے چھٹکارا پانے کی اِچھا آدمی میں ایک قدرتی اِچھا ہے . چھٹکارا' مکتی یا نجات کا ایک ہی طریقہ ہے اور وہ ہے تیاگ یعنی اپنے نفس کو پوری طرح قابو میں کرنا' جس کا آخری نتیجہ فنا یعنی اپنے الگ وجود کو مٹا ڈالنا ہے . یہی نجات ہے .

چونکہ ہر آدمی اِتنا زبردست تیاگ نہیں کر سکتا اِس لئے مانی نے انسانوں کو دو جماعتوں میں تقسیم کیا—ایک خاص چنے ہوئے آدمی یعنی بھکشو اور دوسرے معمولی انسان جنہیں وہ مستمعین یعنی سننے والے کہتے تھے. خاص چنے ہوئے لوگوں کو تین طرح کی پرتگیا کرنی پڑتی تھی جنہیں تین مہریں کہا جاتا تھا. اِن میں پہلی منہ پر مہر لگانا تھا جس کا مطلب تھا گوشت

ख़ून और शराब से पूरा परहेज़. दूसरी अपने हाथ पर मुहर लगाना था यानी कोई ऐसा काम न करना जिससे किसी दूसरे को दुख पहुँचे. तीसरी अपने दिल पर मुहर लगाना था यानी हर क़िस्म के शहवाती कामों यानी इन्द्री सुख से परहेज़.

महात्मा मानी का मज़हब बहुत दिनों ईरान में रहा और दूर दूर के मुल्कों में भी पहुँचा. लेकिन ईरानी क़ौम ने क़ौम की हैसियत से कभी उसे न अपनाया. पर इसके बाद ज़रतुश्ती धर्म भी बहुत दिनों तक ईरान में न चल सका. थोड़े ही दिनों में इसलाम उस सारे इलाक़े में फैल गया.

अगरचे ईरानियों ने इसलाम क़ुबूल कर लिया फिर भी ईरान की पुरानी कलचर बाहर के असरात के सामने नहीं झुकी. इसके ख़िलाफ़ ईरान की पुरानी कलचर ने इसलामी दुनिया के इदारों, उसके विचारों, उसके रुख़, उसके साहित्य और उसके फ़लसफ़े पर अपनी पूरी छाप लगाई.

आठवीं सदी में अरबों ने एक मर्तबा ईरान को फ़तह कर लिया. उसी वक़्त से ईरान की पुरानी रूह फिर से जागनी शुरू होगई. क़ुदरती तौर पर इस नई तहरीक का गहवारा भी पूर्वी ईरान ख़ासकर ख़ुरासान ही था. यह इलाक़ा बौद्ध और हिन्दू विचारों में डूबा हुआ था. इसलिये यह लाज़िमी था कि ईरानी कलचर के फिर से चमकने के साथ साथ उस पर हिन्दुस्तानी विचारों की छाप दिखाई दे.

फ़ारसी ज़बान के सबसे पहले रूप देने वाले हंज़ल-बाद-ग़ीसी से लेकर रोदकी तक सब पूरब के रहने वाले थे. रोदकी को सुल्तान-उस-शौरा कहा जाता है. वह समरक़न्द के पास एक गाँव में पैदा हुआ था. मोहम्मद ग़ज़नी के दरबार के शायर जैसे दक़ीक़ी, अनसरी, जो मुमकिन है दामग़ान का रहने वाला रहा हो, असजदी, मनुचेहरी, असदी वग़ैरा ख़ुरासान या सीस्तान के रहने वाले थे. उस ज़माने का सबसे बड़ा फ़ारसी, शायर फ़िरदौसी जिसने प्राचीन ईरान की शान को फिर से चमका कर अमर कर दिया, तूस का रहने वाला था.

प्राचीन ईरानी कलचर की यह बेदारी केवल शेरो शायरी तक ही महदूद नहीं रही. फ़ाराबी, इब्न सीना, अबुरेहान, अलबेरूनी जैसे बड़े बड़े विचारक और फ़िलास्फ़र इसी इलाक़े के रहने वाले थे.

तसव्वुफ़ यानी इसलामी फ़लसफ़ए वेदान्त के फूल सब से पहले इसी इलाक़े में खिले. शुरू के सूफ़ियों में से ज़्यादातर ख़ुरासान के थे. इब्राहीम अजम, अहमद ख़ज़विया, अबु अली शक़ीक़, हातम आसम, यहिया बिन मआज़ सब बलख़ के रहने वाले थे. फ़ुज़ैल बिन अयाज़ मर्व के रहने वाले थे. मारूफ़ करख़ी, अब्दुल हुसैन नूरी, बशर हाफ़ी, बायज़ीद बिस्तामी, अबुबक्र शिबली सब ख़ुरासान के मुख़्तलिफ़ हिस्सों के रहने वाले थे.

خون اور شراب سے پورا پرہیز ۔ دوسری اپنے ہاتھ پر مہر لگانا تھا یعنی کوئی ایسا کام نہ کرنا جس سے کسی دوسرے کو دکھ پہنچے ۔ تیسری اپنے دل پر مہر لگانا تھا یعنی ہر قسم کے شہوانی کاموں یعنی اندری سکھ سے پرہیز ۔

مہاتما مانی کا مذہب بہت دنوں ایران میں رہا اور دور دور کے ملکوں میں بھی پہنچا ۔ لیکن ایرانی قوم نے قوم کی حیثیت سے کبھی اسے نہ اپنایا ۔ پر اس کے بعد زرتشتی دھرم بھی بہت دنوں تک ایران میں نہ چل سکا ۔ تھوڑے ہی دنوں میں اسلام اُس سارے علاقے میں پھیل گیا ۔

اگرچہ ایرانیوں نے اسلام قبول کر لیا پھر بھی ایران کی پرانی کلچر باہر کے اثرات کے سامنے نہیں جھکی ۔ اِس کے خلاف ایران کی پرانی کلچر نے اسلامی دنیا کے اداروں، اُس کے وچاروں، اُس کے رخ، اُس کے ساہتیہ اور اُس کے فلسفے پر اپنی پوری چھاپ لگائی ۔

آٹھویں صدی میں عربوں نے ایک مرتبہ ایران کو فتح کر لیا ۔ اُسی وقت سے ایران کی پرانی روح پھر سے جاگنی شروع ہوگئی ۔ قدرتی طور پر اِس نئی تحریک کا گہوارہ بھی پوربی ایران خاصکر خراسان ہی تھا ۔ یہ علاقہ بودھ اور ہندو وچاروں میں ڈوبا ہوا تھا ۔ اِس لئے یہ لازمی تھا کہ ایرانی کلچر کے پھر سے چمکنے کے ساتھ ساتھ اُس پر ہندستانی وچاروں کی چھاپ دکھائی دے ۔

فارسی زبان کے سب سے پہلے روپ دینے والے حنظل بادغیسی سے لیکر رودکی تک سب پورب کے رہنے والے تھے ۔ رودکی کو سلطان الشعرا کہا جاتا ہے ۔ وہ سمرقند کے پاس ایک گاؤں میں پیدا ہوا تھا ۔ محمود غزنی کے دربار کے شاعر جیسے دقیقی، عنصری، جو ممکن ہے دامغان کا رہنے والا رہا ہو، عسجدی، منوچہری، اسدی وغیرہ خراسان یا سیستان کے رہنے والے تھے ۔ اُس زمانے کا سب سے بڑا فارسی شاعر فردوسی، جس نے پراچین ایران کی شان کو پھر سے چمکا کر امر کر دیا، طوس کا رہنے والا تھا ۔

پراچین ایرانی کلچر کی یہ بیداری کیول شعرو شاعری تک ہی محدود نہیں رہی ۔ فارابی، ابن سینا، ابو ریحان، البیرونی جیسے بڑے بڑے وچارک اور فلاسفر اِسی علاقے کے رہنے والے تھے ۔

تصوف یعنی اسلامی فلسفۂ ویدانت کے پھول سب سے پہلے اِسی علاقے میں کھلے ۔ شروع کے صوفیوں میں سے زیادہ تر خراسان کے تھے ۔ ابراہیم ازم، احمد خذویہ، ابو علی شقیق، حاتم عاصم، یحییٰ بن معاذ سب بلخ کے رہنے والے تھے ۔ فضیل بن ایاز مرو کے رہنے والے تھے ۔ معروف کرخی، عبدالحسین نوری، بشر حافی، بایزید بسطامی، ابو بکر شبلی سب خراسان کے مختلف حصوں کے رہنے والے تھے ۔

तसव्वुफ़ के उसूलों को सब से पहले ख़ुरासानियों ने रूप दिया. तूस के रहने वाले अबुनस्र सरोज ने किताबुल लमा फ़िल तसव्वुफ़ लिखी. अबुलहसन अलहजवीरी ने, जो ग़ज़ना का रहने वाला था, कशफ़ुल महजूब लिखी. तूस के रहने वाले अलग़िज़ाली ने, जो इसलामी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा हकीम और आलिम माना जाता है, तसव्वुफ़ के ऊपर बेशुमार आलिमाना किताबें लिखीं. आख़ीर में अब्दुल रहमान नूरुद्दीन जामी ने लवायह नाम की वह बेनज़ीर किताब लिखी जो इसलामी तसव्वुफ़ की सबसे ज़्यादा हरदिल अज़ीज़ किताब मानी जाती है.

लेकिन तसव्वुफ़ की सबसे बेश क़ीमत ख़िदमत ख़ुरासान के इन सूफ़ी, सन्तों और शायरों ने की—फ़रीदुद्दीन अत्तार जिसने मन्तक़ुत्तैर लिखा. अबुलमज्द सनाई जिसने हदीक़ह-उल-हक़ीक़त लिखी. और इन सबमें बुज़ुर्ग सन्त, जो तसव्वुफ़ के फ़लसफ़े के सरताज माने जाते हैं, मौलाना जलालउद्दीन रूमी बलख़ी ने अपनी मशहूर मसनवी लिखी.

यह भी क़ुदरती था कि पूरबी ईरान का वही हिस्सा जो हिन्दुस्तान के धार्मिक विचारों से ओत प्रोत हो चुका था इसलाम के आने के बाद ईरानी कलचर की बेदारी और इसलामी तसव्वुफ़ का सबसे बड़ा गहवारा साबित हुआ. बलख़ ही का रहने वाला ख़ालिद, जो बौद्ध नव विहार के सबसे बड़े पुरोहित (प्रमुख) के ख़ानदान से था, अब्बासी ख़लीफ़ाओं का 'बरमकी वज़ीर' हुआ. उसने इसलामी सल्तनत को हक़ीक़ी ईरानी रूप देने में बहुत ज़बरदस्त हिस्सा लिया. ख़ालिद ही ने अब्बासी ख़लीफ़ाओं के दरबार में बहुत सी संस्कृत और पहलवी किताबों का अरबी में तरजुमा कराया.

इन सब चीज़ों की तरफ़ ध्यान दिलाने के लिये ज़्यादा वक़्त की ज़रूरत है. अब मैं सिर्फ़ थोड़े से में मौलाना रूम की मशहूर मसनवी का ज़िक्र करूँगा और यह दिखाना चाहूँगा कि मौलाना रूम के विचारों और हिन्दुस्तानी फ़लसफ़ए वेदान्त के विचारों में कितनी गहरी समानता है.

मसनवी में बहुत सी कहानियाँ और क़िस्से हैं. इनमें से कई हिन्दुस्तान की कहानियाँ हैं जो तरजुमों के ज़रिये मौलाना रूम तक पहुंचीं. मिसाल के तौर पर:—

(1) शेर और ख़रगोश की कहानी;

(2) अंधे आदमियों और हाथी की कहानी;

(3) लोमड़ी और ढोल की कहानी;

(4) ख़रगोशों की कहानी जिन्होंने हाथी के पास अपना संदेश भेजा था;

(5) दरवेश की कहानी जिसने ख़ुद अपनी जान दी थी.

मौलाना रूम के विचारों में बहुत से बुनियादी विचार हिन्दुस्तान के विचारों से मिलते हैं. मसलन:—

(1) ख़ुदा का विचार;

تصوف کے اصولوں کو سب سے پہلے خراسانیوں نے روپ دیا. طوس کے رہنے والے ابو نصر سراج نے کتاب اللمعہ فی التصوف لکھی. ابوالحسن الھجویری نے، جو غزنہ کا رہنے والا تھا، کشف المحجوب لکھی. طوس کے رہنے والے الغزالی نے، جو اسلامی زندگی کا سب سے بڑا حکیم اور عالم مانا جاتا ھے، تصوف کے اوپر بیشمار عالمانہ کتابیں لکھیں. آخیر میں عبدالرحمان نورالدین جامی نے لوائح نام کی وہ بے نظیر کتاب لکھی جو اسلامی تصوف کی سب سے زیادہ ہر دل عزیز کتاب مانی جاتی ھے.

لیکن تصوف کی سب سے بیش قیمت خدمت خراسان کے ان صوفی، سنتوں اور شاعروں نے کی— فریدالدین عطار جس نے منطق الطیر لکھا. ابوالمجد سنائی جس نے حدیقۃ الحقیقت لکھی. اور ان سب میں بزرگ سنت، جو تصوف کے فلسفے کے سرتاج مانے جاتے ھیں، مولانا جلال الدین رومی بلخی نے اپنی مشہور مثنوی لکھی.

یہ بھی قدرتی تھا کہ پوربی ایران کا وھی حصہ جو ھندستان کے دھارمک وچاروں سے اوت پروت ہو چکا تھا اسلام کے آنے کے بعد ایرانی کلچر کی بیداری اور اسلامی تصوف کا سب سے بڑا گہوارہ ثابت ہوا. بلخ ھی کا رہنے والا خالد، جو بودھ نووہار کے سب سے بڑے پروھت (پرمکھ) کے خاندان سے تھا، عباسی خلیفاؤں کا 'برمکی وزیر' ھوا. اُس نے اسلامی سلطنت کو حقیقی ایرانی روپ دینے میں بہت زبردست حصہ لیا. خالد ھی نے عباسی خلیفاؤں کے دربار میں بہت سی سنسکرت اور پہلوی کتابوں کا عربی میں ترجمہ کرایا.

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت کی ضرورت ھے. اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی مشہور مثنوی کا ذکر کرونگا اور یہ دکھانا چاھونگا کہ مولانا روم کے وچاروں اور ھندستانی فلسفۂ ویدانت کے وچاروں میں کتنی گہری سمانتا ھے.

مثنوی میں بہت سی کہانیاں اور قصے ھیں. اِن میں سے کئی ھندستان کی کہانیاں ھیں جو ترجموں کے ذریعہ مولانا روم تک پہنچیں. مثال کے طور پر:—

(1) شیر اور خرگوش کی کہانی؛

(2) اندھے آدمیوں اور ھاتھی کی کہانی؛

(3) لومڑی اور ڈھول کی کہانی؛

(4) خرگوشوں کی کہانی جنہوں نے ھاتھی کے پاس اپنا سندیش بھیجا تھا؛

(5) درویش کی کہانی جس نے خود اپنی جان دی تھی.

مولانا روم کے وچاروں میں بہت سے بنیادی وچار ھندستان کے وچاروں سے ملتے ھیں. مثلاً:—

(1) خدا کا وچار؛

मौलाना "वहदतुलवजूद" के मानने वाले थे जिसका मतलब है कि सिवाय ख़ुदा के और कोई चीज़ है ही नहीं, बाक़ी जो दिखाई देता है फ़रेब यानी धोखा है.

मसनवी में लिखा है:—

"हक़ यानी असलियत एक ही वजूद है और ख़ल्क़ यानी दुनिया में जो चीज़ें दिखाई देती हैं वह ऐसी ही हैं जैसे रस्सी एक हो और उसमें जगह जगह सैकड़ों गिरह लगा दी जायें. एक हक़ीक़त का हज़ारों जगह दिखाई देना उस हक़ीक़त को हज़ारों नहीं कर देता. यह सब केवल गिन्ती का फेर है. ख़ुदा की वहदानियत एक समन्दर है, जिसमें एक और दो का सवाल ही नहीं होता. उस समन्दर के अन्दर मोती, मछली और लहरें सब समन्दर ही के रूप और समन्दर ही समन्दर हैं."

हिन्दू फ़लसफ़े में ख़ुदा की बाबत "एकमेवाद्वितीयम" कहा गया है. जिसका मतलब है—वह एक ही है और दूसरा कोई है ही नहीं.

भगवद् गीता में लिखा है :—

"वह आत्मा सब दैवी शक्तियों में सब से अव्वल और सबसे प्राचीन है, इस विश्व में जो कुछ है सब उसी के अन्दर है."

मौलाना रूम लिखते हैं :—

"न उसका कोई इशारा मिल सकता है, न वह ज़ाहिर हो सकता है, न किसी को उसका इल्म हो सकता है, न किसी को उसका निशान मिल सकता है. अक़्ल उसको सोच सकने या बयान में ला सकने की क़ाबलियत नहीं रखती. वह न आगे है न पीछे, न नीचे है न ऊपर, वह नज़दीक से नज़दीक है, फिर भी न उसकी कोई कैफ़ियत बयान की जा सकती है और न वह क़यास यानी गुमान में आ सकता है."

"हिन्दुस्तान के फ़लसफ़े की किताबें कहती हैं :—

"वह अनिर्वचनीय है यानी उसे किसी भी शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता. न आंख उसे देख सकती है, न ज़बान बयान कर सकती है, न ख़याल उस तक पहुंच सकता है."

"परम आत्मा" का मतलब ठीक वही है जो "ज़ाते मुतलक़" का.

मौलाना रूम लिखते हैं—"ख़ुदा दुनिया में ऐसा ही है जैसे "छाछ के अन्दर मक्खन (रौग़न अन्दर दोग़)." उपनिषदों में लिखा है कि—"परम आत्मा दुनिया में इस तरह रमा हुआ है जैसे पानी में नमक."

(2) दुनिया का विचार;

مولانا "وحدت الوجود" کے ماننے والے تھے جس کا مطلب هے که سوائے خدا کے اور کوئی چیز هے هی نہیں' باقی جو دکھائی دیتا هے سب فریب یعنی دھوکھا هے .

مثنوی میں لکھا هے :—

"حق یعنی اصلیت ایک هی وجود هے اور خلق یعنی دنیا میں جو چیزیں دکھائی دیتی هیں وہ ایسی هی هیں جیسے رسی ایک هو اور اُس میں جگه جگه سیکڑوں گرہ لگادی جائیں. ایک حقیقت کا هزاروں جگه دکھائی دینا اُس حقیقت کو هزاروں نہیں کردیتا . یه سب کیول گنتی کا پھیر هے . خدا کی وحدانیت ایک سمندر هے ' جس میں ایک اور دو کا سوال هی نہیں هوتا . اُس سمندر کے اندر موتی' مچھلی اور لہریں سب سمندر هی کے روپ اور سمندر هی سمندر هیں ."

هندو فلسفے میں خدا کی بابت "ایکم‌ایوادوتیم" کہا گیا هے . جس کا مطلب هے—وہ ایک هی هے اور دوسرا کوئی هے هی نہیں .

بھگوت گیتا میں لکھا هے :—

"وہ آتما سب دیوی شکتیوں میں سب سے اول اور سب سے پراچین هے' اِس وشو میں جو کچھ هے سب اُسی کے اندر هے ."

مولانا روم لکھتے هیں :—

"نه اُس کا کوئی اشارہ مل سکتا هے' نه وہ ظاهر هوسکتا هے' نه کسی کو اُس کا علم هوسکتا هے' نه کسی کو اُس کا نشان مل سکتا هے . عقل اُس کو سوچ سکنے یا بیان میں لا سکنے کی قابلیت نہیں رکھتی . وہ نه آگے هے نه پیچھے' نه نیچے هے نه اوپر' وہ نزدیک سے نزدیک هے' پھر بھی نه اُس کی کوئی کیفیت بیان کی جاسکتی هے اور نه وہ قیاس یعنی گمان میں آسکتا هے ."

هندستان کے فلسفے کی کتابیں کہتی هیں :—

"وہ انروچنیه هے یعنی اُسے کسی بھی شبدوں میں بیان نہیں کیا جاسکتا . نه آنکھ اُسے دیکھ سکتی هے' نه زبان بیان کرسکتی هے' نه خیال اُس تک پہونچ سکتا هے ."

"پرم آتما" کا مطلب ٹھیک وهی هے جو "ذات مطلق" کا.

مولانا روم لکھتے هیں—"خدا دنیا میں ایسا هی هے جیسے "چھاچھ کے اندر مکھن (روغن اندر دوغ)." اُپنشدوں میں لکھا هے که—"پرم آتما دنیا میں اِس طرح رما هوا هے جیسے پانی میں نمک ."

(2) دنیا کا وچار—

मौलाना रूम लिखते हैं :—

"यह जहान नफ़ी (नहीं) है, तू अगर असलियत को ढूँढना चाहता है तो उसके अन्दर ढूँढ जो है. जितनी सूरतें दिखाई देती हैं वह सब सिफ़र (शून्य) हैं. हक़ीक़त (असलियत) शब्दों में नहीं, मानी में है. हम सब अदम (नहीं) हैं, हमारा वजूद एक धोखा है. ख़ुदा वजूदे मुतलक़ है. अकेले उसी का वजूद है. शकल केवल जिस्मों के लिये है और मानी के सामने जिस्म केवल नाम ही नाम हैं. हम सब एक हैं. सारा वजूद एक मोती की तरह है, न कोई सिर है और न कोई पैर, या यों कहा जाये कि सब एक ही मोती था जैसे एक आफ़ताब. वह पानी की तरह साफ़ था, उसमें कोई गिरह न थी, वह नूर ही नूर था. जब इससे सूरतें निकलीं तो वह इस तरह ज़ाहिर हुई जिस तरह अलग अलग साए आँख को दिखाई देते हैं."

हिन्दुस्तान के फ़लसफ़े की किताबों में लिखा है :—

"यह सारा विश्व माया से पैदा हुआ है. यह सब एक धोखा है, इसका कोई वजूद नहीं, यह दुनिया केवल एक दिखावा ही दिखावा है. यह केवल नाम और रूप की दुनिया है. परम आत्मा यानी ब्रह्म ही असलियत है. बाक़ी सब साये की तरह धोखा है. शुरू में केवल वही वह था—एक जिसके कोई अंग या हिस्से न थे, जिसमें कोई फ़र्क़ न था, जो आत्मा ही आत्मा था, जो अपनी ही रोशनी से रोशन था, जो रोशनी ही रोशनी था. उसी ने प्रकृति यानी ग़ैर आत्मा को रोशन किया जिससे साये बने और हजारों लाखों रूप बने. इस तरह यह विश्व वजूद में आया."

(3) आदमी का विचार;

मौलाना रूम के मुताबिक़ आदमी की जान यानी आत्मा उस प्रीतम ख़ुदा की आत्मा का केवल एक परतव यानी अक्स है. लेकिन आत्मा नूर ही नूर है. मौलाना लिखते हैं :—

"जिस तरह जान का परतव यानी अक्स जिस्म पर पड़ता है इसी तरह मेरी जान भी केवल उस प्रीतम का केवल एक अक्स है. यह जान नूर ही नूर है और यह जिस्म रंग और बू है. तू इस रंग व बू से हट जा, इसे छोड़ दे और मत कह कि कोई भी दूसरा या ग़ैर है."

मौलाना के मुताबिक़ आदमी की रूह शुरू में एक सोई हुई हालत में थी. लेकिन ज्यों ज्यों उसे मार्फ़त यानी ज्ञान हासिल होता गया वह अपनी असलियत को समझती गई. मौलाना रूम लिखते हैं :—

"आदमी जब सोया हुआ होता है तो उसकी रूह आफ़ताब की तरह आसमान पर चमकती है और वह ख़ुद सपनों में लिपटा रहता है. ऐ मेरे दिल ! जब कि मार्फ़त यानी ज्ञान ही जान की पहचान है तो जिस को जितना

مولانا روم لکھتے ہیں :—

"یہ جہان نفی (نہیں) ہے، تو اگر اصلیت کو ڈھونڈھنا چاہتا ہے تو اُس کے اندر ڈھونڈھ جو ہے ۔ جتنی صورتیں دکھائی دیتی ہیں وہ سب صفر (شونیہ) ہیں ۔ حقیقت (اصلیت) شبدوں میں نہیں، معنی میں ہے ۔ ہم سب عدم (نہیں) ہیں، ہمارا وجود ایک دھوکا ہے ۔ خدا وجود مطلق ہے ۔ اکیلے اُسی کا وجود ہے ۔ شکل کیول جسموں کے لئے ہے اور معنی کے سامنے جسم کیول نام ہی نام ہیں ۔ ہم سب ایک ہیں ۔ سارا وجود ایک موتی کی طرح ہے، نہ کوئی سر ہے اور نہ کوئی پیر، یا یوں کہا جائے کہ سب ایک ہی موتی تھا، جیسے ایک آفتاب ۔ وہ پانی کی طرح صاف تھا، اُس میں کوئی گرہ نہ تھی، وہ نور ہی نور تھا ۔ جب اُس سے صورتیں نکلیں تو وہ اِس طرح ظاہر ہوئیں جس طرح الگ الگ سائے آنکھ کو دکھائی دیتے ہیں ۔"

هندستان کے فلسفے کی کتابوں میں لکھا ہے :—

"یہ سارا وشو مایا سے پیدا ہوا ہے ۔ یہ سب ایک دھوکا ہے، اِس کا کوئی وجود نہیں، یہ دنیا کیول ایک دکھاوا ہی دکھاوا ہے ۔ یہ کیول نام اور روپ کی دنیا ہے ۔ پرم آتما یعنی برہمہ ہی اصلیت ہے ۔ باقی سب سائے کی طرح دھوکا ہے ۔ شروع میں کیول وہی وہ تھا—ایک جس کے کوئی انگ یا حصے نہ تھے، جس میں کوئی فرق نہ تھا، جو آتما ہی آتما تھا، جو اپنی ہی روشنی سے روشن تھا، جو روشنی ہی روشنی تھا ۔ اُسی نے پرکرتی یعنی غیر آتما کو روشن کیا جس سے سائے بنے اور ہزاروں لاکھوں روپ بنے ۔ اِس طرح یہ وشو وجود میں آیا ۔"

(3) آدمی کا وچار :—

مولانا روم کے مطابق آدمی کی جان یعنی آتما اُس پریتم خدا کی آتما کا کیول ایک پرتو یعنی عکس ہے ۔ لیکن آتما نور ہی نور ہے ۔ مولانا لکھتے ہیں :—

"جس طرح جان کا پرتو یعنی عکس جسم پر پڑتا ہے اِسی طرح میری جان بھی کیول اُس پریتم کا کیول ایک عکس ہے ۔ یہ جان نور ہی نور ہے اور جسم رنگ اور بو ہے ۔ تو اِس رنگ و بو سے ہٹ جا، اِسے چھوڑ دے اور مت کہہ کہ کوئی بھی دوسرا یا غیر ہے ۔"

مولانا کے مطابق آدمی کی روح شروع میں ایک سوئی ہوئی حالت میں تھی ۔ لیکن جیوں جیوں اُسے معرفت یعنی گیان حاصل ہوتا گیا وہ اپنی اصلیت کو سمجھتی گئی ۔ مولانا لکھتے ہیں :—

"آدمی جب سویا ہوا ہوتا ہے تو اُس کی روح آفتاب کی طرح آسمان پر چمکتی ہے اور وہ خود سپنوں میں لپٹا رہتا ہے ۔ اے میرے دل! جب کہ معرفت یعنی گیان ہی جان کی پہچان ہے تو جس کو جتنا

ज्यादा ज्ञान हो जायेगा उसकी जान उतनी ही मज़बूत हो जायेगी. रूह की तासीर आगाही यानी ज्ञान है. जिस किसी को पूरा ज्ञान हासिल होगा वही अल्लाह है."

और आदमी का आख़ीर यानी अंजाम क्या है ?

मौलाना रूम के मुताबिक़ आदमी का अंजाम उस मुक़ाम यानी जगह को हासिल करना है जहां पर मंसूर पहुंचा था और जहाँ पहुँचकर उसने कहा था—"अनल-हक़" यानी मैं ही हक़ यानी अल्लाह हूँ. इसी मुक़ाम पर पहुचकर बायज़ीद बिस्तामी ने कहा था—"सुबहानी मा आज़म शानी."

मौलाना रूम लिखते —

"चूं कि आदमी ख़ुदा ही के नूर से पैदा हुआ है और उसी के नूर का एक हिस्सा है इसीलिये वह फ़रिश्तों के लिये भी सिज्दा करने की चीज़ समझा गया. प्रीतम वही है जो अपने प्यार करने वाले के साथ एक हो. वही प्यार करने वाले का शुरू हो और वही उसका अख़ीर हो.

हिन्दुस्तान की वेदान्त फ़िलासफ़ी इसी उसूल से शुरू होती है कि आदमी की आत्मा ही परम आत्मा है. "आत्मा वै ब्रह्म" यानी आत्मा ही ब्रह्म है. "वही वह है, वही तू है, वही मैं हूँ, वही रोशनियों की रोशनी है." हिन्दू फ़लसफ़े के मुताबिक़ आदमी की आत्मा हक़ीक़त में ज्योति यानी नूर है, प्रकृति यानी माया के साथ मिलकर वह अपने को भूल जाती है और फिर जागती है और अपने को पहचानती है. भगवद् गीता में लिखा है :—

"सब लोगों के लिये जो रात है समझदार योगी उसमें जागता है और जिसमें सब जागते हैं समझदार योगी के लिये वह रात होती है."

भगवद् गीता में ईश्वर कहता है कि :—

"मझमें अपने मन को लगा, मुझे प्यार कर, मेरे लिये क़ुरबानी कर और तू बेशक मेरे पास ही आयेगा. यह मैं तुझ से वादा करता हूँ चूं कि तू मुझे प्यारा है."

मौलाना रूम ने लिखा है :—

"हज़रत ह ने अपने दुश्मनों से कहा कि ऐ सर उठाने वालो ! मैं मैं नहीं हूँ, मैं अपनी जान से मर चुका, अब मैं सिर्फ़ अपने माशूक़ यानी ख़ुदा से ज़िन्दा हूँ. चूं कि मैं अपनी जान से मर चुका और अपने माशूक़ से ज़िन्दा हूँ इसलिये मेरे लिये अब कोई मौत नहीं हो सकती. अब मैं हमेशा हमेशा के लिये ज़िन्दा और क़ायम रहूँगा."

यह कुछ थोड़े से ख़यालात हैं जो मैंने इधर उधर से चुन लिये हैं. इन से मालूम होता है कि ईरान और हिन्दुस्तान के धार्मिक विचार एक दूसरे से कितने मिलते हैं.

ادہ گیان ہوجائےگا اُس کی جان اتنی ہی مضبوط ہوجائیگی ۔
ح کی تاثیر آگاہی یعنی گیان ہے ۔ جس کسی کو پورا گیان
اصل ہوگیا وہی اللہ ہے ۔"

اور آدمی کا آخیر یعنی انجام کیا ہے ؟

مولانا روم کے مطابق آدمی کا انجام اُس مقام یعنی جگہ
حاصل کرنا ہے جہاں پر منصور پہونچا تھا اور جہاں پہونچکر
س نے کہا تھا—"اناالحق" یعنی میں ہی حق یعنی اللہ
وں ۔ اِسی مقام پر پہونچکر بایزید بسطامی نے کہا تھا—
سبحانی ما اعظم شانی ۔"

مولانا روم لکھتے ہیں :—

"چونکہ آدمی خدا ہی کے نور سے پیدا ہوا ہے اور اُسی کے
ر کا ایک حصہ ہے اِسی لئے وہ فرشتوں کے لئے بھی سجدہ
نے کی چیز سمجھا گیا ۔ پریتم وہی ہے جو اپنے پیار کرنے والے
ساتھ ایک ہو ۔ وہی پیار کرنے والے کا شروع ہو اور وہی اُس
آخیر ہو ۔"

ھندستان کی ویدانت فلاسفی اِسی اصول سے شروع ھوتی
کہ آدمی کی آتما ھی پرم آتما ھے ۔ "آتماوئی برھمہ" یعنی
ما ھی برھمہ ھے ۔ "وھی وہ ھے' وھی تو ھے' وھی میں ھوں'
ی روشنیوں کی روشنی ھے ۔" ھندو فلسفے کے مطابق آدمی
آتما حقیقت میں جیوتی یعنی نور ھے' پرکرتی یعنی مایا
ساتھ ملکر وہ اپنے کو بھول جاتی ھے اور پھر جاگتی ھے اور اپنے
پہچانتی ھے ۔ بھگوت گیتا میں لکھا ھے :—

"سب لوگوں کے لئے جو رات ھے سمجھدار یوگی اُس میں
اگتا ھے اور جس میں سب جاگتے ھیں سمجھدار یوگی کے لئے
رات ھوتی ھے ۔"

بھگوت گیتا میں ایشور کہتا ھے کہ :—

"مجھ میں اپنے من کو لگا' مجھے پیار کر' میرے لئے قربانی
اور تو بیشک میرے پاس ھی آئے گا ۔ یہ میں تجھ سے وعدہ
تا ھوں چونکہ تو مجھے پیارا ھے ۔"

مولانا روم نے لکھا ھے :—

"حضرت نوح نے اپنے دشمنوں سے کہا کہ اے سر اُٹھانے
الو ! میں میں نہیں ھوں' میں اپنی جان سے مرچکا' اب
ں صرف اپنے معشوق یعنی خدا سے زندہ ھوں ۔ چونکہ میں
نی جان سے مرچکا اور اپنے معشوق سے زندہ ھوں اِس لئے میرے
اب کوئی موت نہیں ھوسکتی ۔ اب میں ھمیشہ ھمیشہ کے
زندہ اور قائم رھونگا ۔"

یہ کچھ تھوڑے سے خیالات ھیں جو میں نے اِدھر اُدھر سے
ن لئے ھیں ۔ اِن سے معلوم ھوتا ھے کہ ایران اور ھندستان کے
ھارمک وچار ایک دوسرے سے کتنے ملتے ھیں ۔

कला यानी फ़न या हुनर में, साहित्य में, फ़लसफ़े में, मज़हब और समाजी ज़िन्दगी में, फ़न्ने तामीर में, गर्ज़ेकि कलचर के हर पहलू में हिन्दुस्तान और ईरान के मेल जोल की हज़ारों मिसालें दी जा सकती हैं.

यह क़िस्सा बहुत लम्बा है. लेकिन मुझे आपको अब बहुत ज़्यादा नहीं रोकना चाहिये.

ज़बान हर्फ़ों से ख़ाली हो गई और राज़ (रहस्य) अभी बाक़ी है, सख़ुन की पूंजी ख़त्म हो गई और सख़ुन अभी बाक़ी है.

کلا یعنی فن یا ھنر میں' ساھتیہ میں' فلسفے میں' مذھب اور سماجی زندگی میں' فن تعمیر میں' غرضیکہ کلچر کے ھر پہلو میں ھندستان اور ایران کے میل جول کی ھزاروں مثالیں دی جاسکتی ھیں ۔

یہ قصہ بہت لمبا ہے ۔ لیکن مجھے آپ کو اب بہت زیادہ نہیں روکنا چاھیئے ۔

زبان حرفوں سے خالی ھوگئی اور راز (رھسیہ) ابھی باقی ھے' سخن کی پونجی ختم ھوگئی اور سخن ابھی باقی ھے ۔

सम्पादिका "नया चीन" के नाम

سمپادیکا "نیا چین" کے نام

बेटी मनोरमा,

तुम्हारा 12-8-55 का पत्र मिला. तुम जानती हो मैं तो ईश्वर का और धर्म का मानने वाला हूँ. पुराणों में कुछ कहानियाँ बड़ी सुन्दर मिलती हैं. एक यह है:—

एक राजा था. उसका एक बाग़ था. बाग़ में दो माली थे. वह दोनों माली दो तबियतों के थे. एक माली का काम यह था कि रोज़ सुबह जब राजा साहब के उठकर महल से निकलने और बाग़ की सैर को जाने का समय आता तो वह माली महल के द्वार पर पहुंच जाता. राजा साहब के निकलते ही वह धरती छूकर उन्हें प्रणाम करता. उनकी और उनके पूर्वजों की स्तुति गान करता. स्तुति गान करते करते वह उनके पीछे पीछे हो लेता. और जब तक राजा साहब बाग़ की सैर करते रहते वह साथ साथ रहकर यही करता रहता. लौटकर जब राजा साहब महल में प्रवेश करते तो वह फिर धरती छूकर उन्हें प्रणाम करता और दिन भर आराम करता. शाम को फिर जब राजा साहब के सैर का समय आता वह फिर महल के द्वार पर पहुंच जाता और यही सब करता. राजा साहब के महल में चले जाने पर घर आकर रात भर आराम से सोता. दूसरा माली बहुत सवेरे उठकर उसी समय से बाग़ के पेड़ों और पौधों की

بیٹی منورما'

تمہارا 12-8-55 کا پتر ملا ۔ تم جانتی ہو میں تو ایشور کا اور دھرم کا ماننے والا ھوں ۔ پرانوں میں کچھ کہانیاں بڑی سندر ملتی ھیں ۔ ایک یہ ھے:—

ایک راجہ تھا ۔ اُس کا ایک باغ تھا ۔ باغ میں دو مالی تھے ۔ وہ دونوں مالی دو طبیعتوں کے تھے ۔ ایک مالی کا کام یہ تھا کہ روز صبح جب راجہ صاحب کے اُٹھ کر محل سے نکلنے اور باغ کی سیر کو جانے کا سمئے آتا تو وہ مالی محل کے دوار پر پہونچ جاتا ۔ راجہ صاحب کے نکلتے ھی وہ دھرتی چھو کر اُنھیں پرنام کرتا ۔ اُن کی اور اُن کے پوروجوں کی استوتی گان کرتا ۔ استوتی گان کرتے کرتے وہ اُن کے پیچھے پیچھے ھو لیتا ۔ اور جب تک راجہ صاحب باغ کی سیر کرتے رھتے وہ ساتھ ساتھ رھکر یہی کرتا رھتا ۔ لوٹکر جب راجہ صاحب محل میں پرویش کرتے تو وہ پھر دھرتی چھو کر اُنھیں پرنام کرتا اور دن بھر آرام کرتا ۔ شام کو پھر جب راجہ صاحب کے سیر کا سمئے آتا وہ پھر محل کے دوار پر پہونچ جاتا اور یہی سب کرتا۔ راجہ صاحب کے محل میں چلے جانے پر پھر آکر رات بھر آرام سے سوتا۔ دوسرا مالی بہت سویرے اُٹھ کر اُسی سمئے سے باغ کے پیڑوں اور پودھوں کی

देख रेख में लग जाता. किसी को सहलाता, किसी को सींचता किसी पर मिट्टी चढ़ाता. वह इस काम में इतना व्यस्त रहता कि कभी कभी जब बाग के अन्दर राजा साहब सैर करते हुए पास से निकलते तो उसे उठकर नमस्कार करने की भी न सूझती. उसे फ़ुरसत ही कहां ! दिन भर इसी तरह लगा रहता. शाम को जब राजा साहब बाग की सैर को आते तब भी उसकी बहुधा यही हालत रहती. रात को राजा साहब के महल में चले जाने के बाद वह दिन भर के अच्छे से अच्छे फल फूल टोकरियों में भर कर सिर पर रखकर महल के द्वार पर पहुंचता और राजा साहब के किसी नौकर को आवाज़ देकर वह फल फूल राजा साहब के बच्चों के लिए देकर और पहले दिन की खाली टोकरियाँ वापस लेकर लौट आता. रात को, आराम करता और सुबह से फिर वही दरख़्तों और पौधों की सेवा. उसे कभी कभी राजा साहब के दर्शन किये भी महीनों बीत जाते.

अब बताओ दोनों में कौन सा माली सच्चा माली था ?

दूसरी एक कहानी यह है :—

नारद मुनि ने एक बार विष्णु भगवान से पूछा—"भगवान ! मृत्यु लोक में आपका सबसे बड़ा भक्त, कौन है ?" भगवान ने कहा—"नारद ! तुम तो पल भर में कहीं भी पहुँच सकते हो. तुम ही जाकर देखो और आकर मुझे बताओ कि मेरा सबसे बड़ा भक्त कौन है.

नारद धरती पर उतरे, सब जगह गए और लौटकर उन्होंने भगवान से कहा—"भगवन् ! मैं देख आया. अमुक नगर में अमुक ब्राह्मण आपका सबसे बड़ा भक्त है. तीनों समय की संध्या करता है. दिन भर स्वाध्याय और निधिध्यासन में लगा रहता है और दैव से जो कुछ मिल जाता है उसे खाकर अपना गुज़ारा करता है ।'

भगवान ने कहा—"नारद ! धोखा खा गए. जाओ फिर जाओ, और देखो हमारा सबसे बड़ा भक्त कौन है.

नारद फिर आए, फिर घूमे और फिर लौट कर भगवान से कहा—"भगवन् ! इस बार मैंने आपका सबसे बड़ा भक्त निकाल लिया. अमुक स्थान पर अमुक ब्राह्मण संध्या हवन आदि सब नित्य कर्मों का पालन करता है, इत्यादि."

भगवान ने फिर वही उत्तर दिया—"नारद ! फिर धोखा खा गए......"

नारद तीसरी बार मृत्यु लोक में आए और बहुत खोज के बाद लौटकर भगवान से कहा—"भगवन् ! इस बार मैंने आपका सबसे बड़ा भक्त पा लिया. अमुक स्थान पर अमुक मनुष्य नित्य कर्म करने के अतिरिक्त सरल, सच्चा, सन्तोषी आदि आदि आपका सबसे बड़ा भक्त है."

विष्णु भगवान ने उत्तर दिया—"नारद ! फिर धोखा खा गए......"

دیکھ ریکھ میں لگ جاتا. کسی کو سہلاتا، کسی کو سینچتا، کسی پر مٹی چڑھاتا. وہ اس کام میں اتنا ویست رہتا کہ کبھی کبھی جب باغ کے اندر راجہ صاحب سیر کرتے ہوئے پاس سے نکلتے تو اسے اٹھ کر نمسکار کرنے کی بھی نہ سوجھتی. اسے فرصت ہی کہاں! دن بھر اسی طرح لگا رہتا. شام کو جب راجہ صاحب باغ کی سیر کو آتے تب بھی اس کی بہودھا یہی حالت رہتی. رات کو راجہ صاحب کے محل میں چلے جانے کے بعد وہ دن بھر کے اچھے سے اچھے پھل پھول ٹوکریوں میں بھر کر سر پر رکھ کر محل کے دوار پر پہونچتا اور راجہ صاحب کے کسی نوکر کو آواز دیکر وہ پھل پھول راجہ صاحب کے بچوں کے لئے دیکر اور پہلے دن کی خالی ٹوکریاں واپس لیکر لوٹ آتا. رات کو آرام کرتا اور صبح سے پھر وہی درختوں اور پودھوں کی سیوا. اسے کبھی کبھی راجہ صاحب کے درشن کئے بھی مہینوں بیت جاتے.

اب بتاؤ دونوں میں کون سا مالی سچا مالی تھا ؟

دوسری ایک کہانی یہ ہے:—

نارد منی نے ایک بار وشنو بھگوان سے پوچھا—"بھگوان! بھگوان سے مرتیو لوک میں آپکا سب سے بڑا بھکت کون ہے؟" بھگوان نے کہا—"نارد! تم تو پل بھر میں کہیں بھی پہونچ سکتے ہو، تم ہی جاکر دیکھو اور آکر مجھے بتاؤ کہ میرا سب سے بڑا بھکت کون ہے."

نارد دھرتی پر اترے، سب جگہ گئے اور لوٹ کر انہوں نے بھگوان سے کہا—"بھگون! میں دیکھ آیا. ایک نگر میں ایک براہمن آپکا سب سے بڑا بھکت ہے. تینوں سمے کی سندھیا کرتا ہے. دن بھر سوادھیائے اور ندھی دھیاسن میں لگا رہتا ہے اور دیو سے جو کچھ مل جاتا ہے اسے کھا کر اپنا گذارا کرتا ہے."

بھگوان نے کہا—"نارد! دھوکھا کھا گئے. جاؤ پھر جاؤ اور دیکھو ہمارا سب سے بڑا بھکت کون ہے؟"

نارد پھر آئے، پھر گھومے اور پھر لوٹ کر بھگوان سے کہا—"بھگون! اس بار میں نے آپکا سب سے بڑا بھکت نکال لیا. ایک استھان پر ایک براہمن سندھیا، ہون آدی سب نتیہ کرموں کا پالن کرتا ہے، اتیادی."

بھگوان نے پھر وہی اتر دیا—"نارد! پھر دھوکھا کھا گئے..."

نارد تیسری بار مرتیو لوک میں آئے اور بہت کھوج کے بعد لوٹ کر بھگوان سے کہا—"بھگوان! اس بار میں نے آپکا سب سے بڑا بھکت پا لیا. ایک استھان پر ایک منوشیہ نتیہ کرم کرنے کے اترکت سرل، سچا، سنتوشی آدی آدی آپکا سب سے بڑا بھکت ہے."

وشنو بھگوان نے اتر دیا—"نارد! پھر دھوکھا کھا گئے..."

इसपर नारद मुनि ने कहा—"भगवन् ! मैं हारा, अब आप ही बताइये आपका सबसे बड़ा भक्त कौन है ?"

विष्णु भगवान ने उत्तर दिया—"नारद ! अमुक ग्राम में जाकर देखो, अमुक नाम का बूढ़ा किसान हमारा सबसे बड़ा भक्त है."

नारद उतरे, उस ग्राम में पहुंचे. अदृष्ट रहकर एक दिन और एक रात उस किसान के साथ रहे. वह तारों की छां उठा, किसी तरह मुंह हाथ धोकर, अपने बैलों को लेकर खेत में पहुंचा, दोपहर तक बैलों के पीछे "ढीह-ढीह" करता रहा. कभी कभी बैलों को गाली भी देता रहा, दोपहर बाद थक कर, बैलों को बांध कर, दरख्त के नीचे बैठ कर, उसने टुकड़ा खाया, पानी पिया और फिर शाम तक वही धरती की सेवा. अंधेरा हो जाने पर वह घर लौटा. पर नारद मुनि ने एक बार भी उसके मुंह से भगवान का नाम निकलते न सुना. फिर भी वह था भगवान की निगाह में भगवान का सबसे बड़ा भक्त !

ऊपर की दोनों कहानियाँ बड़ी मार्मिक हैं.

अब जो भारतवासी चीन हो आए हैं वह अपने दिलों को टटोल कर देखें कि इस सृष्टि रूपी बाग़ के सच्चे माली और भगवान के सच्चे भक्त उन्हें कहां अधिक मिलते हैं—नए चीन में या इस समय के भारत में ?

आज़ाद भारत के शहरों में कहीं भी बिना मिलावट की खाने की चीजें मिलना बहुत मुश्किल है. नए चीन के शहरों में कहीं भी मिलावट वाली कोई चीज़ मिल सकना लगभग असम्भव है. यहां चोरी और रिश्वतख़ोरी का बाज़ार सब जगह गरम है. और मुझे कहते लज्जा आती है कि अंग्रेज़ी राज के ज़माने से कहीं अधिक गरम है. चीन से अभी प्रसिद्ध विद्वान डाक्टर रघुवीर लौटकर आए हैं जिन पर कोई कम्युनिस्ट होने का आरोप नहीं लगा सकता. उन्होंने दिल्ली में कहा है कि बेईमानी और रिश्वतख़ोरी (corruption and bribery) चीन से नाबूद हो चुकी हैं. उन्होंने यह भी कहा है कि उन्होंने दूर-दूर तक सैकड़ों मील घूम कर देखा. सृष्टि रूपी बाग़ के उस भाग में कोई पेड़ कोई पौधा मुरझाया हुआ दिखाई नहीं देता. हर चेहरा खिला और ख़ुशहाल है. विष्णु के उस सब से बड़े भक्त को ध्यान में रखते हुए हमें याद रखना चाहिए कि डाक्टर रघुवीर ने यह भी कहा है कि वहां हर आदमी देश के धन और देश की पैदावार को अधिक से अधिक बढ़ाने में लगा हुआ है. साठ करोड़ की आबादी में कोई बेकार नहीं. वेश्यावृत्ति और भिखमंगों की संख्या में नया चीन शून्य है तो नया भारत धनाढ्य ! भारत के कोई कोई शासक कहते नहीं थकते कि उन्हें बी० ए०, एम० की ज़रूरत नहीं है, उन्हें ज़रूरत है कारीगरों और इंजीनियरों की. मेरी अपनी जानकारी में न

اِس پر نارد منی نے کہا—"بھگون ! میں ہارا، اب آپ ہی بتائیے آپکا سب سے بڑا بھکت کون ہے ؟"

وشنو بھگوان نے اُتر دیا—"نارد ! امک گرام میں جا کر دیکھو، امک نام کا بوڑھا کسان ہمارا سب سے بڑا بھکت ہے ."

نارد اُترے، اُس گرام میں پہونچے . ادرشٹ رہکر ایک دن اور ایک رات اُس کسان کے ساتھ رہے . وہ تاروں کی چھاں اُٹھا، کسی طرح منھ ہاتھ دھو کر، اپنے بیلوں کو لیکر کھیت میں پہونچا، دوپہر تک بیلوں کے پیچھے "ڈھیہہ ڈھیہہ" کرتا رہا . کبھی کبھی بیلوں کو گالی بھی دیتا رہا، دوپہر بعد تھک کر بیلوں کو باندھکر، درخت کے نیچے بیٹھ کر، اِس نے ٹکڑا کھایا، پانی پیا اور پھر شام تک وہی دھرتی کی سیوا . اندھیرا ہو جانے پر وہ گھر لوٹا . پر نارد منی نے ایک بار بھی اُس کے منھ سے بھگوان کا نام نکلتے نہ سنا . پھر بھی وہ تھا بھگوان کی نگاہ میں بھگوان کا سب سے بڑا بھکت !

اُوپر کی دونوں کہانیاں بڑی مارمک ہیں .

اب جو بھارت‌واسی چین ہو آئے ہیں وہ اپنے دلوں کو ٹٹول‌کر دیکھیں کہ اِس سرشٹی روپی باغ کے سچے مالی اور بھگوان کے سچے بھکت انھیں کہاں ادھک ملتے ہیں—نئے چین میں یا اِس سمے کے بھارت میں ؟

آزاد بھارت کے شہروں میں کہیں بھی بنا ملاوٹ کی کھانے کی چیزیں ملنا بہت مشکل ہے . نئے چین کے شہروں میں کہیں بھی ملاوٹ والی کوئی چیز مل سکنا لگ بھگ اسمبھو ہے. یہاں چوری اور رشوت خوری کا بازار سب جگہ گرم ہے . اور مجھے کہتے لجا آتی ہے کہ انگریزی راج کے زمانے سے کہیں ادھک گرم ہے . چین سے ابھی پرسدھ ودوان ڈاکٹر رگھوبیر لوٹ کر آئے ہیں جن پر کوئی کمیونسٹ ہونے کا آروپ نہیں لگا سکتا . اُنھوں نے دلی میں کہا ہے کہ بےایمانی اور رشوت‌خوری (corruption and bribery) چین سے نابود ہوچکی ہے. اُنھوں نے یہ بھی کہا ہے کہ اُنھوں نے دور دور تک سیکڑوں میل گھوم کر دیکھا. سرشٹی‌روپی‌باغ کے اُس بھاگ میں کوئی پیڑ کوئی پودھا مرجھایا ہوا دکھائی نہیں دیتا. ہر چہرہ کھلا ہوا اور خوشحال ہے . وشنو کے اُس سب سے بڑے بھکت کو دھیان میں رکھتے ہوئے ہمیں یاد رکھنا چاہئے کہ ڈاکٹر رگھوبیر نے یہ بھی کہا ہے کہ وہاں ہر آدمی دیش کے دھن اور دیش کی پیداوار کو ادھک سے ادھک بڑھانے میں لگا ہوا ہے . ساٹھ کروڑ کی آبادی میں کوئی بیکار نہیں . ویشیا ورتی اور بھکمنگوں کی سنکھیا میں نیا چین شونیہ ہے تو نیا بھارت دھناڈھیہ ! بھارت کے کوئی کوئی شاسک کہتے نہیں تھکتے کہ اُنھیں بی . اے.' ایم . اے . کی ضرورت نہیں ہے' اُنھیں ضرورت ہے کاریگروں اور انجینیروں کی . میری اپنی جانکاری میں نہ

सम्पादिका "नया चीन" के नाम

जाने कितने इंजीनियरी पास लड़के काम की तलाश में दफ्तर दफ्तर की ठोकरें खाते फिर रहे हैं.

गोस्वामी तुलसीदास जी का 'रामराज' का आदर्श— जिसके लिये गान्धी जी बेचैन थे—वहां अत्यंत निकट दिखाई दे रहा है. यहाँ हम से दूर भागता हुआ मालूम होता है. और 'रामराज' वहीं होता है जहां धर्म का राज हो. यतोधर्म-स्ततोऽभ्युदय' हम सदियों से पढ़ते सुनते आए हैं.

इस सब के अतिरिक्त भारतीय दर्शन शास्त्र के अनुसार इस पृथ्वी पर मनुष्य का सब से बड़ा धर्म सब के अन्दर अपने को और अपने अन्दर सब को देखना है. हमारे उपनिषद् और गीता बारबार इसी बात को दोहराते हैं, धरती के सब मनुष्यों से भेदभाव उठाकर संसार की सारी जनता को एक सूत्र में बांधने का काम आज आध्यात्मिक दृष्टि से सबसे पवित्र काम है. कमज़ोर और बलवान, अच्छे और बुरे, दुनिया के सब धर्मों और सब आन्दोलनों में होते हैं. पर आज मानव समाज को एक करने का काम, दुनिया की नीचे दबी हुई अरबों जनता को मिलाकर एक करने का काम, कोई आन्दोलन इतनी अच्छी तरह और इतने ज़ोरों के साथ नहीं कर रहा है जितना दुनिया का कम्युनिस्ट आन्दोलन. इसी एक आन्दोलन के साथ राष्ट्रों राष्ट्रों और लाल, पीले, गोरे, काले के भेद मिटते जा रहे हैं. पेकिंग के सब से बड़े हाल में—"आसमान के नीचे सब एक हैं" मोटे सुन्दर अक्षरों में लिखा हुआ देखकर और फिर उस पर साथ के चीनी दोस्तों की टीका-टिप्पणी सुनकर मुझे और मेरे साथियों को एक बार आशा बंधी कि सृष्टि के इस बाग़ में भी—

ऐहैं बहुरि बसन्त ऋतु,
इन डारन वे फूल.

उस ऐस्किमो जाति के बच्चों को जो दो हज़ार बरस तक रूसी ईसाई धर्म के स्वर्ण युग में भी सदा जंगली और असभ्य कहलाती रही और थी और मध्य एशिया की नीम जंगली क़ौमों के लड़कों को मास्को के विश्वविद्यालय में गोरे योरपीनों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर पढ़ते, प्रोफ़ेसरी करते और एक कुटुम्ब की तरह प्रेम के साथ रहते देखकर किस का हृदय गद्‌गद न हो उठेगा. अपने देश को पचास बरस तक ध्यान से देखने और इस उमर में बाहर की आधी दुनिया को देखने के बाद मुझे इस में कोई भी सन्देह नहीं कि किसी देश विशेष की कम्युनिस्ट पार्टी के लोग, चाहे समझदार हों या नासमझ, अच्छे हों या बुरे, पर दुनिया का कम्युनिस्ट आन्दोलन, अनेक दोषों के होते हुए भी, इस युग का सबसे बड़ा आध्यात्मिक आन्दोलन है, और भारतीय आध्यात्मिक निगाह से मुझे रूस से भी चीन अधिक प्यारा है.

एक ओर धर्म के नाम पर अपने यहां के ढोंगों में, सड़े अन्धविश्वासों, पाखंडों और रूढ़ि पूजा को देखकर और

سمپادیکا "نیا چین" کے نام

نجانے کتنے انجینیری پاس لڑکے کام کی تلاش میں دفتر دفتر کی ٹھوکریں کھاتے پھر رہے ہیں۔

گوسوامی تلسی داس جی کا 'رام راج' کا آدرش'—جس کے لئے گاندھی جی بےچین تھے—وہاں اتیَنت نکٹ دکھائی دے رہا ہے۔ یہاں ہم سے دور بھاگتا ہوا معلوم ہوتا ہے۔ اور 'رام راج' وہیں ہوتا ہے جہاں دھرم کا راج ہو۔ یتو دھرم استتو ابھیودئے' ہم صدیوں سے پڑھتے سنتے آئے ہیں۔

اِس سب کے اتیرکت بھارتیہ درشن شاستر کے انوسار اِس پرتھوی پر منوشیہ کا سب سے بڑا دھرم سب کے اندر اپنے کو اور اپنے اندر سب کو دیکھنا ہے۔ ہمارے اُپنشد اور گیتا بار بار اِسی بات کو دوہراتے ہیں' دھرتی کے سب منشیوں سے بھید بھاؤ اُٹھاکر سنسار کی ساری جنتا کو ایک سوتر میں باندھنے کا کام آج ادھیاتمک درشٹی سے سب سے پوتر کام ہے۔ کمزور اور بلوان' اچھے اور برے' دنیا کے سب دھرموں اور سب آندولنوں میں ہوتے ہیں۔ پر آج مانو سماج کو ایک کرنے کا کام' دنیا کی نیچے دبی ہوئی اربوں جنتا کو ملاکر ایک کرنے کا کام' کوئی آندولن اِتنی اچھی طرح اور اِتنے زوروں کے ساتھ نہیں کر رہا ہے جتنا دنیا کا کمیونسٹ آندولن۔ اِسی ایک آندولن کے ساتھ راشٹروں راشٹروں اور لال' پیلے' گورے' کالے کے بھید مٹتے جا رہے ہیں۔ پیکنگ کے سب سے بڑے ہال میں—"آسمان کے نیچے سب ایک ہے" موٹے سندر اکشروں میں لکھا ہوا دیکھکر اور پھر اُس پر ساتھ کے چینی دوستوں کی ٹیکا ٹپنی سنکر مجھے اور میرے ساتھیوں کو ایک بار آشا بندھی کہ سرشٹی کے اِس باغ میں بھی—

ائیھے بہوری بسنت رت
اِن ڈارن وے پھول۔

اُس ایسکیمو جاتی کے بچوں کو جو دو ہزار برس تک روسی عیسائی دھرم کے سورن یگ میں بھی سدا جنگلی اور اسبھیہ کہلاتی رہی اور تھی اور مدھیہ ایشیا کی نیم جنگلی قوموں کے لڑکوں کو موسکو کے وشودیالیہ میں گورے یورپینوں کے ساتھ کندھے سے کندھا ملاکر پڑھتے' پروفیسری کرتے اور ایک کٹمب کی طرح پریم کے ساتھ رہتے دیکھکر کس کا ہردئے گدگد نہ ہو اُٹھیگا۔ اپنے دیش کو پچاس برس تک دھیان سے دیکھنے اور اِس عمر میں باہر کی آدھی دنیا کو دیکھنے کے بعد مجھے اِس میں کوئی بھی سندیہہ نہیں کہ کسی دیش وشیش کی کمیونسٹ پارٹی کے لوگ' چاہے سمجھدار ہوں یا ناسمجھ' اچھے ہوں یا برے' پر دنیا کا کمیونسٹ آندولن' انیک دوشوں کے ہوتے ہوئے بھی' اِس یگ کا سب سے بڑا آدھیاتمک آندولن ہے' اور بھارتیہ آدھیاتمک نگاہ سے مجھے روس سے بھی چین ادھک پیارا ہے۔

ایک اور دھرم کے نام پر اپنے یہاں کے ڈھونگوں میں' سڑے گلے اندھ وشواسوں' پاکھنڈوں اور روڑھی پوجا کو دیکھکر اور

दूसरी ओर बाहर की कम्युनिस्ट कहलाने वाली दुनिया को देखकर मुझे बार बार गांधी जी के वह दर्द भरे शब्द याद आते हैं जो उन्होंने सन् 1924 में दिल्ली में जगह जगह के हिन्दू मुस्लिम दंगों की खबरों को सुनकर कहे थे—"मुझसे क्या पूछते हो ? मैं तो यह कहने को तैयार हूँ कि ये सब के सब नास्तिक हो जायं तो अच्छा—इनके न मानने से कोई खुदा थोड़े ही मिट जायेगा—पर ये आदमी तो बनें."

इसमें कोई सन्देह नहीं कि नए चीन और नए भारत को एक दूसरे के निकट लाने की कोशिश इस समय इन दोनों देशों की और इंसानी क़ौम की सब से बड़ी सेवा है. हमें बहुत जल्दी अपने देश को जिधर ले जाना है उसमें भी हमें इस दोस्ती और एक दूसरे की जानकारी से बहुत कुछ मदद मिल सकती है.

इसलिये, बेटी मनोरमा ! मैं तुम्हारी छोटी सी पत्रिका "नया चीन" का दिल से स्वागत करता हूँ, उसकी उन्नति चाहता हूँ और तुम्हें इस नेक काम के लिए बधाई देता हूँ.

तुमने लेख चाहा है, मुझे और लेख लिखने का समय तो नहीं मिलेगा.

खुश रहो.

सस्नेह तुम्हारा,
सुन्दरलाल.

...سری اور باهر کی کمیونسٹ کہلانے والی دنیا کو دیکھکر مجھے بار ... گاندھی جی کے وہ درد بھرے شبد یاد آتے ہیں جو اُنہوں نے ... 1924 میں دلی میں جگہ جگہ کے هندو مسلم دنگوں کی ... خبروں کو سنکر کہے تھے—"مجھ سے کیا پوچھتے ہو ؟ میں تو ... کہنے کو تیار ہوں کہ یہ سب کے سب ناستک ہوجائیں تو ... چھا—ان کے نہ ماننے سے کوئی خدا تھوڑے ہی مٹ جائیگا— ... یہ آدمی تو بنیں."

اِس میں کوئی سندیہہ نہیں کہ نئے چین اور نئے بھارت کو ... ایک دوسرے کے نکٹ لانے کی کوشش اِس سمئے اِن دونوں ... دیشوں کی اور اِنسانی قوم کی سب سے بڑی سیوا ہے . ہمیں ... بہت جلدی اپنے دیش کو جدھر لے جانا ہے اُس میں بھی ہمیں ... اِس دوستی اور ایک دوسرے کی جانکاری سے بہت کچھ مدد ... مل سکتی ہے .

اِس لئے، بیٹی منورما ! میں تمہاری چھوٹی سے پتریکا "نیا چین" کا دل سے سواگت کرتا ہوں، اُس کی اُنتی چاہتا ... ہوں اور تمہیں اِس نیک کام کے لئے بدھائی دیتا ہوں .

تم نے لیکھ چاہا ہے، مجھے اور لیکھ لکھنے کا سمئے تو نہیں ملیگا.

خوش رہو .

—سنیہ تمہارا،
—سندر لال.

उन्नीसवीं सदी के एक फ़क़ीर की डायरी

पण्डित सुन्दरलाल

(पिछले नम्बर से आगे)

(20)

एक दिन तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद के विषय में बात चीत शुरू हुई. कहने लगे मियां सच पूछो तो तौहीद (अर्थात् ईश्वर को एक कहना) भी शिर्क (ईश्वर के साथ किसी को शरीक करना) है. ईश्वर को एक कहना ही उसे सीमा के अन्दर बाँधना है जबकि वह अनन्त है और उसकी कोई सीमा या संख्या नहीं. वह सीमा और संख्या दोनों से परे है. इसलिए उसे एक कहना भी ठीक नहीं और अगर यह कहा कि क़ुरान के अन्दर 'क़ुल हो अल्ला हु अहद' अर्थात् ईश्वर एक है, यह क्यों कहा गया है तो इसका जवाब यह है कि बात कहने के लिये इससे बेहतर कोई शब्द नहीं. यदि मनुष्य सब को छोड़ छाड़कर एक के सर हो रहे तो क्या ही अच्छी बात है और यदि इससे ऊपर उठकर एक से भी पाक साफ़ हो जावे तो फिर क्या ही कहने हैं.

हमें इस सम्बन्ध में एक कहानी याद आई. महात्मा दत्तात्रय ने 24 गुरू किए थे जिनमें से एक भड़भूँजन थी. यह भड़भूँजन जब अपनी सुसराल गई तो उसे कूटने का काम दिया गया. हाथों में चूड़ियां पहने थी. उसे लज्जा आई कि मेरी चूड़ियों की झनकार सुसराल के मरदों के कान में पड़ेगी. यह सोचकर उसने दोनों हाथों से एक एक चूड़ी तोड़ दी. फिर भी आवाज बनी रही. उसने दोनों हाथों की एक एक चूड़ी और तोड़ दी. होते होते दोनों हाथों में केवल एक एक चूड़ी रह गई. उस समय झनकार बिलकुल बन्द हो गई. दत्तात्रय ने इस घटना से एकेश्वरवाद की शिक्षा पाई और इस स्त्री को अपना गुरू माना. किन्तु हमारे नजदीक तो यदि यह एक भी तोड़ दी जाय तो बिलकुल बखेड़ा साफ़ हो जाय. असली अद्वैत यही है कि अद्वैत के भाव को समझने के लिए अद्वैत के विचार को भी मिटा दिया जाय.

नेस्तम मन हरचे हस्ती बस तुई,
चूं यकी न बुवद कुजा बाशद दुई.

अर्थात्—मैं हूँ ही नहीं, जो कुछ है बस तू ही है. जब इकाई भी न रही तो दुई कहाँ रह सकती है ?

أنیسویں صدی کے ایک فقیر کی ڈائری

پنڈت سندر لال

(پچھلے نمبر سے آگے)

(20)

ایک دن توحید ارتھات ایکیشورواد کے وشئے میں بات چیت شروع ہوئی. کہنے لگے میاں سچ پوچھو تو توحید (ارتھات ایشور کو ایک کہنا) بھی شرک (ایشور کے ساتھ کسی کو شریک کرنا) ہے. ایشور کو ایک کہنا ہی اُسے سیما کے اندر باندھنا ہے جب کہ وہ اننت ہے اور اُس کی کوئی سیما یا سنکھیا نہیں. وہ سیما اور سنکھیا دونوں سے پرے ہے. اِس لئے اُسے ایک کہنا بھی ٹھیک نہیں اور اگر یہ کہو کہ قرآن کے اندر 'قل ھو اللہ ھو احد' ارتھات ایشور ایک ہے' یہ کیوں کہا گیا ہے تو اِس کا جواب یہ ہے کہ بات کہنے کے لئے اِس سے بہتر کوئی شبد نہیں. یدی منشیہ سب کو چھوڑ چھاڑکر ایک کے سر ہو رہے تو کیا ہی اچھی بات ہے اور یدی اِس سے اُوپر اُٹھکر ایک سے بھی پاک صاف ہوجاوے تو پھر کیا ہی کہنے ہیں.

ہمیں اِس سمبندھ میں ایک کہانی یاد آئی. مہاتما دتاترئے نے 24 گرو کئے تھے جن میں سے ایک بھڑبھونجن تھی. یہ بھڑبھونجن جب اپنی سسرال گئی تو اُسے کوٹنے کا کام دیا گیا. ہاتھوں میں چوڑیاں پہنے تھی. اُسے لجا آئی کہ میری چوڑیوں کی جھنکار سسرال کے مردوں کے کان میں پڑیگی. یہ سوچکر اُس نے دونوں ہاتھوں سے ایک ایک چوڑی توڑ دی. پھر بھی آواز بنی رہی. اس نے دونوں ہاتھوں کی ایک ایک چوڑی اور توڑ دی. ہوتے ہوتے دونوں ہاتھوں میں کیول ایک ایک چوڑی رہ گئی. اس سمئے جھنکار بالکل بند ہوگئی. دتاترئے نے اِس گھٹنا سے ایکیشورواد کی شکشا پائی اور اِس اِستری کو اپنا گرو مانا. کنتو ہمارے نزدیک تو یدی یہ ایک بھی توڑ دی جائے تو بالکل بکھیڑا صاف ہوجائے. اصلی ادویت یہی ہے کہ ادویت کے بھاؤ کو سمجھنے کے لئے ادویت کے وچار کو بھی مٹا دیا جائے.

نیستم من ہرچہ ہستی بس توئی'
چوں یکی نہ بود کجا باشد دوئی.

ارتھات—میں ہوں ہی نہیں' جو کچھ ہے بس تو ہی ہے جب اِکائی بھی نہ رہی تو دوئی کہاں رہ سکتی ہے ؟

(21)

एक दिन जब मैं सेवा में उपस्थित हुआ तो गुरू जी ने एक पद सुनाया—

आप लगाना आप में और आप ही ढूँढ़नहार,
और होवे तो पाइये यह तो आपही आप.

यह पद सुनाकर गुरू जी कहने लगे कि अद्वैत के इस मुक़ाम पर अज़ाब या सवाब, पाप या पुण्य कुछ बाक़ी नहीं रहता.

ज्ञान ध्यान सब उठ गयो, सभा भई सब सुन्न,
ऊँच नीच अन्तर नहीं, नहीं पाप नहीं पुन्न.

एक आदमी ने उस समय प्रश्न किया कि महाराज जब पाप पुण्य नहीं तब बहिश्त और दोज़ख क्यों है? उत्तर दिया कि है भी और नहीं भी है. अगर दुई है तो सब कुछ है और नहीं तो कुछ भी नहीं.

(22)

एक दिन कहने लगे कि कबीर बड़े सच्चे अद्वैतवादी थे. जब उनके अद्वैत की ख़बर रैदास तक पहुँची तो रैदास ने कबीर के पास यह पद लिखाकर भेजा, क्योंकि रैदास सगुण के उपासक थे, जिन्हें सूफ़ी परिभाषा में 'अहले सिफ़ात' कहते हैं और कबीर निर्गुण के उपासक थे, जिन्हें 'अहले ज़ात' कहते हैं—

मा त्रिगुनी बाप जुलाहा, पूत भये ब्रह्मज्ञानी,
आदि अन्त की जाने नाहीं, अपने मन की ठानी;
जुलहे नहीं नैनहित मोरे रे.

इसका उत्तर कबीर ने इस प्रकार भेजा—

ब्रह्मज्ञान बिन ब्रह्मतत्व बिन, काया शुद्ध न होई,
पूरन ब्रह्म सकल घट व्यापक, दूजे और न कोई;
चमरे नहीं नैनहित मोरे रे.

होते होते एक दिन दोनों की भेंट हुई. दोनों में ज्ञान चर्चा की ठहरी. कबीर ने अपनी भक्ति को उत्तम बताया, रैदास ने अपने मार्ग के उच्चतर होने का दावा किया. अब निर्णय हो तो कैसे? रैदास सगुण के सच्चे उपासक तो थे ही, उन्होंने रामचन्द्र जी को याद किया. तुरन्त घोड़े पर सवार होकर धनुष बाण हाथ में लिए रामचन्द्र आ उपस्थित हुए और कहा कि—"ए कबीर! रैदास की बात क्यों नहीं मानता?" कबीर ने उत्तर दिया—"महाराज! आप सीता जी की चौकसी करें. इस मामले में दख़ल न दीजिए. बात जीत मेरी और इनकी है, हम दोनों भुगत लेंगे." रामचन्द्र जी चुप होकर दूर खड़े हो गए. तब रैदास ने कृष्ण जी को याद किया. वह भी गरुड़ पर सवार, सिर पर मुकट लगाए, मुख पर मुरली धरे सामने आ गए और कबीर को समझाने

(21)

ایک دن جب میں سیوا میں اُپستھت ہوا تو گوروجی نے ایک پد سنایا—

آپ لگانا آپ میں اور آپ ہی ڈھونڈھن‌ہار،
اور ہووے تو پائیے یہ تو آپ ہی آپ۔

یہ پد سناکر گوروجی کہنے لگے کہ ادویت کے اِس مقام پر عذاب یا ثواب، پاپ یا پنیہ کچھ باقی نہیں رہتا۔

گیان دھیان سب اُٹھ گیو، سبھا بھئی سب سن،
اُونچ نیچ انتر نہیں، نہیں پاپ نہیں پن۔

ایک آدمی نے اُس سمئے پرشن کیا کہ مہاراج جب پاپ پنیہ نہیں تب بہشت اور دوزخ کیوں ہے؟ اُتر دیا کہ ہے بھی اور نہیں بھی ہے۔ اگر دوئی ہے تو سب کچھ ہے اور نہیں تو کچھ بھی نہیں۔

(22)

ایک دن کہنے لگے کہ کبیر بڑے سچے ادویت‌وادی تھے۔ جب اُن کے ادویت کی خبر ریداس تک پہونچی تو ریداس نے کبیر کے پاس یہ پد لکھاکر بھیجا، کیونکہ ریداس سگن کے اُپاسک تھے، جنھیں صوفی پریبھاشا میں 'اہل صفات' کہتے ہیں اور کبیر نرگن کے اُپاسک تھے، جنھیں 'اہل‌ذات' کہتے ہیں—

ماں ترگنی باپ جولاہا، پوت بھئے برہم گیانی،
آدی انت کی جانے نہیں، اپنے من کی ٹھانی؛
جولہے نہیں نین ہت مورے رے۔

اِس کا اُتر کبیر نے اِس پرکار بھیجا—

برہم گیان بن برہم تتو بن، کایا شدھ نہ ہوئی،
پورن برہم سکل گھٹ ویاپک، دوجے اور نہ کوئی؛
چمرے نہیں نین ہت مورے رے۔

ہوتے ہوتے ایک دن دونوں کی بھینٹ ہوئی۔ دونوں میں گیان چرچا کی ٹھہری۔ کبیر نے اپنی بھکتی کو اُتم بتایا، ریداس نے اپنے مارگ کے اُچیہ‌تر ہونے کا دعویٰ کیا۔ اب نرنے ہو تو کیسے؟ ریداس سگن کے سچے اُپاسک تو تھے ہی، اُنھوں نے رامچندر جی کو یاد کیا۔ ترنت گھوڑے پر سوار ہوکر دھنش بان ہاتھ میں لئے رامچندر آ اُپستھت ہوئے اور کہا کہ—"اے کبیر! ریداس کی بات کیوں نہیں مانتا؟" کبیر نے اُتر دیا—"مہاراج! آپ سیتا جی کی چوکسی کریں۔ اِس معاملہ میں دخل نہ دیجئے۔ بات جیت میری اور اِنکی ہے، ہم دونوں بھگت لیں گے۔" رامچندر جی چپ ہوکر دور کھڑے ہوگئے۔ تب ریداس نے کرشن جی کو یاد کیا۔ وہ بھی گروڑ پر سوار، سر پر مکٹ لگائے، مکھ پر مرلی دھرے سامنے آگئے اور کبیر کو سمجھانے

लगे. कबीर ने कहा—"हे महाराज ! आप गोपियों से कलोल कीजिए. मेरा इनका झगड़ा है, चुक जायगा." वह भी अलग हो गए. फिर रैदास ने महादेव जी का ध्यान किया. तुरन्त बैल पर सवार त्रिशूल हाथ में लिए आए और दर्शन दिया. कबीर ने उनका कहना भी न माना और उत्तर दिया कि—"महाराज ! आप पार्वती के पास जायें और उनकी खैर मनायें. इस बात से आपको क्या मतलब ?" महादेव जी को क्रोध आया और उन्होंने कबीर के मारने को त्रिशूल उठाया. कबीर तुरन्त 'रम' अर्थात् 'ला' कहकर अन्तर्धान हो गए. उस समय रैदास के तीनों इष्टदेव बोले—"इस अद्वैत और एक मेव के दरिया में जहाँ कबीर ने डुबकी लगाई है हम और वह सब बराबर हैं. यहां हमारा भी कुछ बस नहीं चलता." रैदास ने कहा कि—"महाराज ! मैंने इतने दिनों आपकी सेवा की और इस समय कुछ न हो सका तब भविष्य में आप लोगों से क्या आशा रखूं ? बस मेरा नमस्कार है !" इसके पश्चात् रैदास ने सबको धता बताई, कबीर से दीक्षा ली और अद्वैत का मार्ग अंगीकार किया—

माला लक्कड़, ठाकुर पत्थर, तीरथ सगरे पानी,
रामा कृष्णा मरते देखे, चारों वेद कहानी.
रामा मर गये कृष्णा मर गए, मर गई लक्खोबाई,
उसको साधो क्यों ना पूजो, जिसको मौत न आई.

●

दिल गुफ़्त मरा इल्म लदुन्नी हविस अस्त,
तालीम कुन अगर तुरा दस्तरस अस्त.
गुफ़्तम के अलिफ़ गुफ़्त दिगर गुफ़्तम हेच,
दर ख़ाना अगर कसस्त यक हर्फ़ बसस्त.

अर्थात्—मेरे दिल ने कहा कि मुझे ब्रह्मविद्या सीखने की आकांक्षा है. अगर तू जानता है तो मुझे शिक्षा दे. मैंने उत्तर दिया—'अलिफ़'. दिल ने कहा—इसके आगे ? मैंने कहा—कुछ नहीं. सावधान ! मनुष्य के लिए एक अक्षर काफ़ी है.

(23)

एक दिन कहने लगे कि हमने एक मौलवी से यह बात पूछी कि कलमे 'ला इलाह इलल्लाह' में ला शब्द निषेधात्मक है और इस बात का द्योतक है कि और भी ख़ुदा हैं, जिनमें से एक को हमने ले लिया और औरों को छोड़ दिया. अर्थात् एक को मानते हैं, औरों को नहीं मानते. इसमें तो बड़ा ही 'शिर्क' (बहुत ईश्वरवाद) भरा हुआ है. यह अद्वैत नहीं है. मौलवी साहब ने उत्तर दिया कि बहुत से लोगों ने और और ख़ुदा भी मान रखे हैं. हमने कहा कि हज़रत ! पहले तो यह बताइये कि क़ुरान

لگے۔ کبیر نے کہا—"ھے مہاراج ! آپ گوپیوں سے کلول کیجئے۔ میرا انکا جھگڑا ھے، چک جائیگا۔" وہ بھی الگ ہوگئے۔ پھر ریداس نے مہادیو جی کا دھیان کیا۔ ترنت بیل پر سوار ترشول ہاتھ میں لئے آئے اور درشن دیا۔ کبیر نے اُنکا کہنا بھی نہ مانا اور اُتر دیا کہ—"مہاراج ! آپ پاروتی کے پاس جائیں اور اُن کی خیر منائیں۔ اس بات سے آپ کو کیا مطلب ؟" مہادیو جی کو کرودھ آیا اور اُنہوں نے کبیر کے مارنے کو ترشول اُٹھایا۔ کبیر ترنت 'رم' ارتھات 'لا' کہکر انتر دھان ہوگئے۔ اُس سمئے ریداس کے تینوں اِشٹ دیو بولے—"اِس ادویت اور ایک میو کے دریا میں جہاں کبیر نے ڈبکی لگائی ھے ہم اور وہ سب برابر ہیں۔ یہاں ہمارا بھی کچھ بس نہیں چلتا۔" ریداس نے کہا کہ—"مہاراج ! میں نے اِتنے دنوں آپ کی سیوا کی اور اِس سمئے کچھ نہ ہوسکا تب بھوشیہ میں آپ لوگوں سے کیا آشا رکھوں ؟ بس میرا نمسکار ھے !" اِس کے پشچات ریداس نے سب کو دھتا بتائی، کبیر سے دیکشا لی اور ادویت کا مارگ انگیکار کیا—

مالا لکڑ، ٹھاکر پتھر، تیرتھ سگرے پانی،
راما کرشنا مرتے دیکھے، چاروں وید کہانی۔
راما مرگئے کرشنا مرگئے، مرگئی لکھو بائی،
اُس کو سادھو کیوں نہ پوجو، جس کو موت نہ آئی۔

●

دل گفت مرا علم لدنی و حوس است،
تعلیم کن اگر ترا دسترس است۔
گفتم کہ الف گفت دگر گفتم ہیچ،
درخانہ اگر کس است یک حرف بس است۔

ارتھات—میرے دل نے کہا کہ مجھے برہم ودیا سیکھنے کی آکانشا ھے۔ اگر تو جانتا ھے تو مجھے شکشا دے۔ میں نے اُتر دیا—الف۔ دل نے کہا—اِس کے آگے ؟ میں نے کہا—کچھ نہیں۔ ساودھان ! منشیہ کے لئے ایک اکشر کافی ھے۔

(23)

ایک دن کہنے لگے کہ ہم نے ایک مولوی سے یہ بات پوچھی کہ کلمۂ 'لا الٰہ الا اللہ' میں لا شبد نشیدھ آتمک ھے اور اِس بات کا دیوتک ھے کہ اور بھی خدا ہیں، جن میں سے ایک کو ہم نے لیا اور اوروں کو چھوڑ دیا۔ ارتھات ایک کو مانتے ہیں، اوروں کو نہیں مانتے۔ اِس میں تو بڑا ہی 'شرک' (بہو ایشور واد) بھرا ہوا ھے۔ یہ ادویت نہیں ھے۔ مولوی صاحب نے اُتر دیا کہ بہت سے لوگوں نے اور اور خدا بھی مان رکھے ہیں۔ ہم نے کہا کہ حضرت ! پہلے تو یہ بتائیے کہ قرآن

'लौह महफ़ूज़'* पर कब लिखा गया था ? जिस समय यह कलमा और क़ुरान लौह पर लिखा गया उस समय था कौन जो दूसरा ख़ुदा मानता ? मौलवी साहब ने यह सुनकर कहा कि तुम वहाबी मालूम होते हो ? हमने कहा कि ठीक है, जब हमने एक सच्ची बात कही और आप जवाब न दे सके तो हम वहाबी हो गए !

ला व इल्ला हरदो लफ्ज़े साख़्तन्द
ख़ल्क रा दर दामे वहम अन्दाख़्तन्द

अर्थात्—'ला' और 'इल्ला' इन दो शब्दों को गढ़कर संसार को वहम के जाल में फंसा रखा है.

(24)

एक दिन कहने लगे कि 'सुनपत' में अख़ून्द अब्दुल ग़फ़ूर हमारे पास बैठे थे. इतने में सनाउल्ला दहरिया† आया और एक वृक्ष का पत्ता तोड़कर अख़ून्द साहब के सामने पेश किया और कहने लगा कि भला कोई ऐसा है जो इसे फिर जोड़ दे. अख़ून्द साहब बोले कि ख़ुदा ताला को यह सामर्थ्य है. उसने उत्तर दिया कि यह तो ख़ुदा के बाप से भी नहीं लग सकता. अख़ून्द साहब उसे गालियां देने लगे. मैंने कहा कि साहब ! आप क्यों ख़फ़ा होते हैं. ख़ुदा ताला तो लमयलिद् वलम यूलद् है. न ख़ुदा का बाप होगा न पत्ता लगायेगा. उसे बकने दीजिए.

(25)

एक बार सुखदेव जी ने अपने पिता वेदव्यास से कहा कि मैं ज्ञान हासिल करना चाहता हूँ. पिता ने राय दी कि तुम राजा जनक के पास जाओ. सुखदेव जी सच्चे खोजी थे. चल कर राजा के दरवाज़े पर पहुंचे. दरबानों से कहा कि राजा जनक को मेरे आने की ख़बर कर दो. राजा को ख़बर दी गई कि व्यास के बेटे सुखदेव जी आए हैं. राजा ने कहा अच्छा खड़ा रहने दो. सात दिन के बाद राजा को फिर ख़बर दी गई तो कहा दूसरे दरवाज़े पर लाओ. वहाँ भी सात दिन खड़ा रहना पड़ा. तीसरी बार कहा कि आने दो. सुखदेव जी अन्दर गए तो देखा कि सारा ठाठ बाट दुनियादारी का मौजूद है. दिल में सोचने लगे कि यह तो ख़ुद जगत-व्यवहारी है, मुझे क्या उपदेश देगा. राजा को उनकी इस शंका का पता लग गया. उन्हें ठहराया. दूसरे दिन शहर के सब गली कूचों में नाच रंग करा दिया. फिर

---

* मुसलमानों के मत के अनुसार क़ुरान शरीफ़ सृष्टि के आदि में ईश्वर के यहां एक तख़्ती पर लिख लिया गया था, जिसे 'लौह महफ़ूज़' कहते हैं और वर्तमान क़ुरान उसी समय से ठीक उसी तरह चला आ रहा है.

† सूफ़ियों की एक सम्प्रदाय विशेष का नाम.

'لوح محفوظ'* پر کب لکھا گیا تھا ؟ جس سمئے یہ کلمہ اور قران لوح پر لکھا گیا اُس سمئے تھا کون جو دوسرا خدا مانتا ؟ مولوی صاحب نے یہ سن کر کہا کہ تم وھابی معلوم ھوتے ھو ؟ ھم نے کہا کہ ٹھیک ھے . جب ھم نے ایک سچی بات کہی اور آپ جواب نہ دے سکے تو ھم وھابی ھو گئے !

لا و الا ھر دولفظے ساختند
خلق را در دام وھم انداختند

ارتھات—'لا' اور 'الا' اِن دو شبدوں کو گڑھکر سنسار کو وھم کے جال میں پھنسا رکھا ھے .

(24)

ایک دن کہنے لگے کہ 'سنپت' میں اخوند عبدالغفور ھمارے پاس بیٹھے تھے . اتنے میں ثنا اللہ دھریہ † آیا اور ایک برکش کا پتہ توڑ کر اخوند صاحب کے سامنے پیش کیا اور کہنے لگا کہ بھلا کوئی ایسا ھے جو اِسے پھر جوڑدے . اخوند صاحب بولے کہ خدا تعلی کو یہ سامرتھ ھے . اُس نے اُتر دیا کہ یہ تو خدا کے باپ سے بھی نہیں لگ سکتا . اخوند صاحب اُسے گالیاں دینے لگے . میں نے کہا کہ صاحب ! آپ کیوں خفا ھوتے ھیں . خداتعلی تو لمئیلد ولم یولد ھے . نہ خدا کا باپ ھوگا نہ پتہ لگائیگا . اُسے بکنے دیجئے .

(25)

ایک بار سکھدیوجی نے اپنے پتا ویدویاس سے کہا کہ میں گیان حاصل کرنا چاھتا ھوں . پتا نے رائے دی کہ تم راجہ جنک کے پاس جاؤ . سکھدیو جی سچے کھوجی تھے . چل کر راجہ کے دروازہ پر پھونچے . دربانوں سے کہا کہ راجہ جنک کو میرے آنے کی خبر کر دو . راجہ کو خبر دی گئی کہ ویاس کے بیٹے سکھدیو جی آئے ھیں . راجہ نے کہا اچھا کھڑا رھنے دو . سات دن کے بعد راجہ کو پھر خبر دی گئی تو کہا دوسرے دروازے پر لو . وھاں بھی سات دن کھڑا رھنا پڑا. تیسری بار کہا کہ آنے دو. سکھدیو جی اندر گئےتو دیکھا کہ سارا ٹھاٹھ باٹ دنیاداری کا موجود ھے. دل میں سوچنے لگے کہ یہ تو خود جگت ویوھاری ھے' مجھے کیا اُپدیش دیگا. راجہ کو اُن کی اِس شنکا کا پتہ لگ گیا. اُنھیں ٹھرایا. دوسرے دن شہر کے سب گلی کوچوں میں ناچ رنگ کرا دیا. پھر

---

* مسلمانوں کے مت کے انوسار قران شریف سرشٹی کے آدی میں ایشور کے یہاں ایک تختی پر لکھ لیا گیا تھا' جسے 'لوح محفوظ' کہتے ھیں اور ورتمان قران اُسی سمئے سے ٹھیک اُسی طرح چلا آرھا ھے .

† صوفیوں کی ایک سمپردائے وشیش کا نام .

सुखदेव जी को बुलाया और एक कटोरा दूध से लबालब भरा हुआ उनके हाथ पर रखकर कहा जाओ सारी जनक-पुरी की परिक्रमा करो, लेकिन खबरदार दूध न गिरने पावे. दो सिपाही नंगी तलवार लिए उनके साथ कर दिए कि अगर एक बूँद भी इसमें से गिरे तो सुखदेव के टुकड़े टुकड़े उड़ा दो. राजा जनक के हुक्म से वे दोनों सिपाही सुखदेव जी को शहर के चारों तरफ़ घुमा लाए. राजा ने पूछा कि दूध तो नहीं गिरा. सिपाहियों ने जवाब दिया कि महाराज ! अगर ऐसा होता तो ये आपके पास जीते कैसे पहुंचते. फिर राजा ने सुखदेव जी से पूछा कि आज तुमने शहर में चारों तरफ़ नाच रंग का तमाशा तो खूब देखा उन्होंने जवाब दिया कि महाराज ! मेरे लिए तो इस कटोरे की हिफ़ाज़त जान की एक आफ़त थी. डर था कि कहीं एक बूँद छलकी और मारा गया, भला ऐसी हालत में तमाशा क्या ख़ाक देखता ! मुझे तो इस कटोरे के सिवाय और कोई चीज़ दिखाई ही नहीं दी. इस पर राजा जनक ने कहा कि जिस तरह तुम्हारी यह एक घड़ी बीती है उसी तरह हमारा एक एक पल बीतता है. यह धन दौलत और शान शौकत हमारी नज़रों में सब हेच है. हमारा ध्यान भी उसकी तरफ़ नहीं जाता. माल असबाब, सोना, चाँदी, बीबी बच्चे, ये सब दुनिया नहीं है, दुनिया ईश्वर की तरफ़ से बेख़बर हो जाने का नाम है. तुमने बाहर की सल्तनत और माल और दौलत को देखकर हमारी हालत का ग़लत अन्दाज़ लगा लिया है. ऐ सुखदेव ! इसी बात से जो तुम पर बीती है समझलो कि वे सिपाही यम के दूत हैं, कटोरा तन है, दूध मन है और राग रंग जो रास्ते में हो रहे थे इस असार संसार के ऐश आराम हैं. इसी तरह हम भी दुनिया के धन्धों में इस डर से मशग़ूल नहीं होते कि कहीं दूध न छलक जाय यानी दिल ईश्वर की याद से चूक कर मारा न जाय.

जब कोई ऐसे मन को लगावे,
मन के लगावन से हर पावे.

जैसे कावन भरत कूप जल, कर छोड़त मसकावे.
अपना प्रेम सखी से भाखे, सुरति गगरि में लावे.
जैसे नटनी चढ़त बाँस पर, नटवा ढोल बजावे.
भार आपना तोल देह का, सुरत बाँस में लावे.

इसके बाद राजा जनक ने सुखदेव जी को उनकी समझ के मुताबिक़ ब्रह्म-ज्ञान का उपदेश देकर विदा किया.

(26)

एक फ़क़ीर बटाले में रहते थे, उनका नाम था, सब्बात-उल्लाह. कुछ दिनों के बाद उन्होंने अपने माथे पर तिलक लगाया, गले में जनेऊ डाला, पण्डितों का सा रहन सहन

سکھدیو جی کو بلا یا اور ایک کٹورہ دودھ سے لبالب بھرا ہوا اُن کے ہاتھ پر رکھ کر کہا جاؤ ساری جنک پوری کی پریکرما کرو، لیکن خبردار دودھ نہ گرنے پاوے۔ دو سپاہی ننگی تلوار لئے اُن کے ساتھ کر دیئے کہ اگر ایک بوند بھی اِسمیں سے گرے تو سکھدیو کے ٹکڑے ٹکڑے اُڑا دو۔ راجہ جنک کے حکم سے وے دونوں سپاہی سکھدیو جی کو شہر کے چاروں طرف گھما لائے۔ راجہ نے پوچھا کہ دودھ تو نہیں گرا۔ سپاہیوں نے جواب دیا کہ مہاراج! اگر ایسا ہوتا تو یہ آپ کے پاس جیتے کیسے پہونچتے۔ پھر راجہ نے سکھدیو جی سے پوچھا کہ آج تم نے شہر میں چاروں طرف ناچ رنگ کا تماشہ تو خوب دیکھا۔ اُنہوں نے جواب دیا کہ مہاراج! میرے لئے تو اِس کٹورے کی حفاظت جان کی ایک آفت تھی۔ ڈر تھا کہ کہیں ایک بوند چھلکی اور مارا گیا، بھلا ایسی حالت میں تماشا کیا خاک دیکھتا! مجھے تو اِس کٹورے کے سوائے اور کوئی چیز دکھائی ہی نہیں دی۔ اس پر راجہ جنک نے کہا کہ جس طرح تمہاری یہ ایک گھڑی بیتی ہے اُسی طرح ہمارا ایک ایک پل بیتتا ہے۔ یہ دھن دولت اور شان شوکت ہماری نظروں میں سب ہیچ ہے۔ ہمارا دھیان بھی اُس کی طرف نہیں جاتا۔ مال اسباب، سونا چاندی، بیوی بچے، یہ سب دنیا نہیں ہے، دنیا ایشور کی طرف سے بے خبر ہو جانے کا نام ہے۔ تم نے باہر کی سلطنت اور مال اور دولت کو دیکھ کر ہماری حالت کا غلط انداز لگا لیا ہے۔ اے سکھدیو! اِسی بات سے جو تم پر بیتی ہے سمجھ لو کہ وے سپاہی یم کے دوت ہیں، کٹورہ تن ہے، دودھ من ہے اور راگ رنگ جو راستے میں ہو رہے تھے اِس اسار سنسار کے عیش آرام ہیں۔ اِسی طرح ہم بھی دنیا کے دھندھوں میں اِس ڈر سے مشغول نہیں ہوتے کہ کہیں دودھ نہ چھلک جائے یعنی دل ایشور کی یاد سے چوک کر مارا نہ جائے۔

جب کوئی ایسے من کو لگاوے،
من کے لگاون سے ہر پاوے۔

جیسے کاون بھرت کوپ جل، کر چھوڑت مسکاوے۔
اپنا پریم سکھی سے بھاکھے، سورتی گگر میں لاوے۔
جیسے نٹنی چڑھت بانس پر، نٹوا ڈھول بجاوے۔
بھار آپنا تول دیہہ کا سورت بانس میں لاوے۔

اِس کے بعد راجہ جنک نے سکھدیو جی کو اُن کی سمجھ کے مطابق برہم گیان کا اُپدیش دیکر بدا کیا۔

(26)

ایک فقیر بٹالے میں رہتے تھے، اُن کا نام تھا سبحنت اللہ۔ کچھ دنوں کے بعد اُنہوں نے اپنے ماتھے پر تلک لگایا، گلے میں جنیئو ڈالا، پنڈتوں کا سا رہن سہن

अख्तियार किया और रंगीराम अपना नाम रखा. एक दिन एक दूसरे मुसलमान फ़क़ीर जो शेख करीमुद्दीन दहरिया बुरहानवी के चेलों में से थे, उनसे मिलने बटाले आए और पूछा कि आप का नाम क्या है और यह क्या ढंग है ? उन्होंने जवाब दिया कि सबग़त का मतलब है रंग और अल्लाह की जगह पर हमने राम बदल दिया. यानी सबग़तुल्लाह की जगह अब हमारा नाम रंगीराम है. यह सब सुनकर उसने नफ़रत के साथ रंगीराम से कहा कि तुमने इसलाम और हिन्दू धर्म में क्या फ़रक़ देखा जो एक क़ैद से निकल कर दूसरी क़ैद में जा फंसे. अगर निकलना था तो दोनों ही से निकले होते. हम तो समझते थे कि तुम मुवहिहद (अद्वैत वादी) हो. तुम तो अभी हिन्दू और मुसलमान ही के फेर में पड़े हो. यह कहकर चल दिये और उनके पास न ठहरे.

(बाक़ी फिर)

اختیار کیا اور رنگی رام اپنا نام رکھا۔ ایک دن ایک دوسرے مسلمان فقیر جو شیخ کریم الدین دھریہ برھانوی کے چیلوں میں سے تھے' اُن سے ملنے بٹالے آئے اور پوچھا کہ آپ کا نام کیا ہے اور یہ کیا ڈھنگ ہے؟ انہوں نے جواب دیا کہ سبغت کا مطلب ہے رنگ اور اللہ کی جگہہ پر ہم نے رام بدل دیا ۔ یعنی سبغت اللہ کی جگہہ اب ہمارا نام رنگی رام ہے۔ یہ سب سن کر اُس نے نفرت کے ساتھ رنگی رام سے کہا کہ تم نے اسلام اور ھندو دھرم میں کیا فرق دیکھا جو ایک قید سے نکل کر دوسری قید میں جا پھنسے؟ اگر نکلنا تھا تو دونوں ھی سے نکلے ھوتے ۔ ھم تو سمجھتے تھے کہ تم موحد (ادویت وادی) ھو ۔ تم تو ابھی ھندو اور مسلمان ھی کے پھیر میں پڑے ھو ۔ یہ کہکر چل دیئے اور اُن کے پاس نہ ٹھہرے ۔

(باقی پھر)

हो चेन शू 'आदर्श मज़दूर' कैसे बनी ?

ھو چین شو 'آدرش مزدور' کیسے بنی؟

श्रीमती प्रभा एम. ए. हिन्दी अध्यापिका पेकिंग
यूनिवर्सिटी पेकिंग, चीन

شریمتی پربھا ایم۔ اے۔ ھندی ادھیاپکا پیکنگ
یونیورسٹی پیکنگ' چین

हो चेन शू आदर्श मजदूर कैसे बनी यह एक दिलचस्प कहानी है. 12 फ़रवरी '55 को जब मुझे उससे मुलाकात करने का मौक़ा मिला तो उसने मुझे तफ़सील से बताया. इसे उसी की ज़बानी सुनिये :—

"जब मैं पहली बार छिंगताव की नं० 6 कपड़ा मिल में गई और मशीन देखी तो डर गई. मगर मैंने हिम्मत से काम लिया. पच्चीसाथियों के साथ में कारखाने की वर्कशाप में काम सीखने लगी. शुरू में बड़ी कठिनाई हुई, पर मैं निराश नहीं हुई और दिन पर दिन अधिक मन लगाकर काम सीखती रही. रास्ते में, हर समय मेरा ध्यान अपने काम पर ही रहता था. सूत टूटने पर फ़ौरन उसे मिला लेना एक ख़ास कला (टेकनिक) है, मगर उस समय इसके लिये कोई ख़ास तरीक़ा न था. मैं कारख़ाने से घर वापस आती पर ध्यान कारख़ाने में ही रहता था. घर में माता जी के चरख़े के कच्चे सूत से सूत जोड़ने का अभ्यास करती. इस तरह का अभ्यास करते करते मेरी उंगलियां फूल जाती थीं. अक्सर आधी रात से ही नींद खुल जाती और मैं दिन होने का इन्तज़ार करती जिससे कारख़ाने जाकर अपना अभ्यास कर सकूँ.

ھو چین شو آدرش مزدور کیسے بنی یہ ایک دلچسپ کہانی ھے ۔ 12 فروری '55 کو جب مجھے اُس سے ملاقات کرنے کا موقع ملا تو اُس نے مجھے تفصیل سے بتا یا ۔ اِسے اُسی کی زبانی سنیئے:—

"جب میں پہلی بار چھنگ تاو کی نمبر 6 کپڑا مل میں گئی اور مشین دیکھی تو ڈر گئی ۔ مگر میں نے ھمت سے کام لیا ۔ پچیس ساتھیوں کے ساتھ میں کارخانے کی ورکشاپ میں کام سیکھنے لگی ۔ شروع میں بڑی کٹھنائی ہوئی' پر میں نراش نہیں ہوئی اور دن پر دن ادھک من لگا کر کام سیکھتی رھی ۔ راستے میں' ھر سمئے میرا دھیان اپنے کام پر ھی رھتا تھا ۔ سوت ٹوٹنے پر فوراً اُسے ملا لینا ایک خاص کلا (ٹیکنک) ھے' مگر اُس سمئے اِس کے لئے کوئی خاص طریقہ نہ تھا ۔ میں کارخانے سے گھر واپس آتی پر دھیان کارخانے میں ھی رھتا تھا ۔ گھر میں ما تا جی کے چرخے کے کچے سوت سے سوت جوڑنے کا ابھیاس کرتی ۔ اِس طرح کا ابھیاس کرتے کرتے میری اُنگلیاں پھول جاتی تھیں ۔ اکثر آدھی رات سے ھی نیند کھل جاتی اور میں دن ھونے کا انتظار کرتی جس سے کارخانے جا کر اپنا ابھیاس کر سکوں ۔

"एक दिन अचानक मैंने सूत मिला लिया. आम तौर से कई महीने के बाद इस काम का अभ्यास हो पाता है. पर मैं कुछ ही दिनों में अच्छी तरह सूत मिलाने लगी. इसलिये जब काम बांटा गया तो दूसरे साथियों को 200 स्पिंडिल और मुझे 300 स्पिंडिल दी गई. 300 स्पिंडिल पर अच्छी तरह काम करते देख शीघ्र ही 400 स्पिंडिल मुझे दे दी गईं.

"तीन माह बाद सीखने का काम खतम हुआ और ट्रेनिंग का समय आया. 1950 में नए साल के तीसरे दिन पहली बार मैं काम पर गई. मैं रात की पाली में काम करने के लिये चुनी गई. अगर रात में काम करना है तो दिन में आराम करना चाहिये था, पर काम मिलने से मैं इतनी खुश थी कि मुझे नींद न आई. मैं घर में ठहर भी न सकी. उसी दिन नए साल के उपलक्ष में कारखाने में एक चीनी नाटक हुआ. मैं उसे देखने गई. नाटक था 'ल्यू हू लन'—एक 15 साल की बहादुर लड़की की कहानी थी जो कोमिनतांग फ़ौज से लड़ते लड़ते शहीद हो गई थी. उसके लिये चेयरमैन माओ ने कहा है "उसका जीवन महान था और उसकी मौत शानदार." इस कहानी का मेरे दिल पर बहुत प्रभाव पड़ा और मैंने मन में कहा—'ल्यू हू लन'—मैं तुम से सबक़ लूँगी.

"रात को काम पर गई मगर दिन में न सोने और आदत न होने के कारण 12 बजे रात तक जागती रही. उसके बाद झपकी लग गई. उस समय मशीन से एक सूत टूट गया और बहुत सी रुई फैल गई. मशीन की आवाज़ से मैं जग तो गई पर इंस्पेक्टर ने मुझे चेतावनी दी. मुझे अपनी असावधानी पर बड़ा दुख हुआ. काम खतम होते ही मैं घर वापस आई और बराबर रोती रही. मां ने बहुत पूछा पर मैंने कारण न बताया. मुझे डर था कि बड़ी मुश्किल से तो कारखाने में काम मिला और अब अपनी ही लापरवाही के कारण शायद निकाल दी जाऊंगी. उसी समय मुझे ल्यू हू लन की याद आ गई. मैंने सोचा कि रोने से क्या फ़ायदा ? हिम्मत करके सुधार करना चाहिये. इस विचार से मुझे बड़ी शान्ति मिली और नींद आ गई.

"दूसरे दिन समय से बहुत पहले कारखाने गई. मशीन को साफ़ किया और काम में लग गई. पूरे समय मैं बड़ी सतर्क रही. उस दिन कोई खास घटना नहीं हुई.

"अपने अनुभवों के साथ साथ मैं कारखाने के पुराने मजदूरों से उनके अनुभव भी पूछती और उससे नतीजा निकालकर उसके अनुसार काम करती. धीरे धीरे मेरे सूत मिलाने के काम में तरक़्क़ी हुई. इस काम में तरक़्क़ी होते देख मुझे तीन चार लड़कियों के साथ दूसरे वर्कशाप में भेज दिया गया. हम सब को मन में बड़ा डर लगा. सोचा—शायद हमने कुछ ग़लती की है इससे हमें यहाँ से हटाया जा रहा है. मगर बाद में हमें असली कारण मालूम हो गया. नई वर्कशाप नं० 3 में [illegible] उत्साह से काम करने लगी.

"ایک دن اچانک میں نے سوت ملا لیا . عام طور سے کئی مہینے کے بعد اِس کام کا ابھیاس ہو پاتا ہے . پر میں کچھ ہی دنوں میں اچھی طرح سوت ملانے لگی . اِس لئے جب کام بانٹا گیا تو دوسرے ساتھیوں کو 200 اِسپنڈل اور مجھے 300 اِسپنڈل دی گئیں . 300 اِسپنڈل پر اچھی طرح کام کرتے دیکھ شیگھرہ ہی 400 اِسپنڈل مجھے دے دی گئیں .

"تین ماہ بعد سیکھنے کا کام ختم ہوا اور ٹریننگ کا سمئے آیا . 1950 میں نئے سال کے تیسرے دن میں پہلی بار کام پر گئی . میں رات کی پالی میں کام کرنے کے لئے چنی گئی . اگر رات میں کام کرنا ہے تو دن میں آرام کرنا چاہئے تھا' پر کام ملنے سے میں اتنی خوش تھی کہ مجھے نیند نہ آئی . میں گھر میں ٹھہر بھی نہ سکی . اُسی دن نئے سال کے اُپلکش میں کارخانے میں ایک چینی ناٹک ہوا . میں اُسے دیکھنے گئی . ناٹک تھا 'لیو ہولن'—ایک 15 سال کی بہادر لڑکی کی کہانی تھی جو کومنتانگ فوج سے لڑتے لڑتے شہید ہو گئی تھی . اُس کے لئے چیئرمین ماؤ نے کہا ہے "اُس کا جیون مہان تھا اور اُس کی موت شاندار ." اِس کہانی کا میرے دل پر بہت پربھاؤ پڑا اور میں نے من میں کہا—'لیو ہولن !—میں آپ سے سبق لونگی'

"رات کو کام پر گئی مگر دن میں نہ سونے اور عادت نہ ہونے کے کارن 12 بجے رات تک جاگتی رہی . اُس کے بعد جھپکی لگ گئی . اُس سمئے مشین سے ایک سوت ٹوٹ گیا اور بہت سے روئی پھیل گئی . مشین کی آواز سے میں جگ تو گئی پر انسپکٹر نے مجھے چیتاونی دی . مجھے اپنی اساودھانی پر بڑا دکھ ہوا . کام ختم ہوتے ہی میں گھر واپس آئی اور برابر روتی رہی . ماں نے بہت پوچھا پر میں نے کارن نہ بتایا . مجھے ڈر تھا کہ بڑی مشکل سے تو کارخانے میں کام ملا اور اب اپنی ہی لاپرواہی کے کارن شاید نکال دی جاؤنگی . اُسی سمئے مجھے لیوہولن کی یاد آگئی . میں نے سوچا کہ رونے سے کیا فایدہ ؟ ہمت کر کے سدھار کرنا چاہئے . اِس وچار سے مجھے بڑی شانتی ملی اور نیند آگئی .

"دوسرے دن سمئے سے بہت پہلے کارخانے گئی . مشین کو صاف کیا اور کام میں لگ گئی . پورے سمئے میں بڑی سترک رہی . اُس دن کوئی خاص گھٹنا نہیں ہوئی .

"اپنے انوبھوؤں کے ساتھ ساتھ میں کارخانے کے پرانے مزدوروں سے اُن کے انوبھو بھی پوچھتی اور اُس سے نتیجہ نکالکر اُس کے انوسار کام کرتی . دھیرے دھیرے میرے سوت ملانے کے کام میں ترقی ہوئی . اِس کام میں ترقی ہوتے دیکھ مجھے تین چار لڑکیوں کے ساتھ دوسرے ورکشاپ میں بھیج دیا گیا . ہم سبکو من میں بڑا ڈر لگا . سوچا—شاید ہم نے کچھ غلطی کی ہے اِس سے ہمیں یہاں سے ہٹایا جا رہا ہے . مگر بعد میں ہمیں اصلی کارن معلوم ہو گیا . نئی ورکشاپ نمبر 3 میں میں پورے اُتساہ سے کام کرنے لگی .

"1950 का मई दिवस आया. कारखाने में बहस शुरू हुई. विषय था "पैदावार का बढ़ाना और मशीन की सफ़ाई." मुझे मालूम हुआ कि रोज़ शाम को अधिकारी मुआइना करेंगे और देखेंगे कि किसकी मशीन से कितनी रूई बाहर निकल कर खराब हुई. इसलिये 'कमसे कम रूई खराब होना चाहिये' यह कारखाने का नारा हो गया. मैंने भी इस मुक़ाबले में बड़े उत्साह से भाग लिया. मेरा मुक़ाबला लिंग आयरान नाम की एक लड़की से हुआ. रोज़ एक आदमी कितनी कम रूई खराब करता है इसका मुक़ाबला था. पहले तो हर आदमी की मशीन से कई पौंड रूई खराब हो जाती थी पर इस मुक़ाबले में विशेष सावधानी के कारण एक आदमी की मशीन से सिर्फ़ दो पौंड रूई खराब होती थी.

"उस समय मैं सोचा करती थी कि कैसे कोई अच्छा तरीक़ा निकाला जाय जिससे रूई कम से कम खराब हो. मैंने देखा कि मज़दूर बार बार यहां से वहां और वहां से यहां दौड़ दौड़ कर सूत मिलाया करते हैं, इसलिये हमेशा बहुत व्यस्त दिखाई देते हैं और जब मशीन बहुत गंदी हो जाती है तभी सफ़ाई करते हैं. इससे समय बहुत लगता है. मैंने सोचा क्या दोनों काम एक साथ नहीं हो सकते यानी क्या ऐसा तरीक़ा नहीं हो सकता जिससे सूत मिलाने का काम और मशीन की सफ़ाई का काम एक साथ चलता रहे. तजरबे के तौर पर यहां वहां दौड़ने के बजाय मैं जल्दी जल्दी घूम घूम कर सूत मिलाने लगी और साथ ही मशीन की सफ़ाई का काम करने की कोशिश करने लगी. पूरी मशीन को मैं जल्दी जल्दी घूम घूम कर ध्यान पूर्वक देखती रहती और अगर सूत नहीं टूटता तो सफ़ाई का काम करती रहती. इससे आरंभ में बड़ी कठिनाई हुई यहां तक कि कभी कभी जल्दी से सूत मिलाने में मेरी उंगलियां मशीन से छू जातीं और कट जातीं. कभी कभी कलाई में चोट आ जाती. मगर इससे मैंने अपना तजरबा नहीं छोड़ा. थोड़े दिनों के बाद एक फ़रक़ साफ़ दिखाई देने लगा. मुझे खुद ऐसा लगा कि मैं दूसरे मज़दूरों की तरह परेशान नहीं रहती. एक दम काम खतम होने के बाद रूई खराब होने की तुलना की गई तो मेरी मशीन से केवल 5 औंस रूई खराब हुई थी. जब कि दूसरे मज़दूर एक बार में 27 औंस रूई खराब करते तो मुझसे सिर्फ़ 5 औंस रूई खराब होती थी. यह तादाद मेरी मशीन पर रोज़ रोज़ एक सी रही.

"दूसरे मज़दूर साथियों ने मेरे ऊपर आवाज़ें कसनी शुरू कीं. इससे मुझे बहुत दुख हुआ. कभी कभी मैं सोचती क्यों न पहले के ही तरीक़े से काम करूं. कारखाने के युवक संघ के मेम्बरों ने भी मेरे ऊपर आवाज़ें कसीं. पर युवक संघ की प्रधान श्रीमती वान शू लन ने एक सभा की और मज़दूरों के इस व्यवहार की निन्दा की. साथ ही उन्होंने मुझे भी उत्साहित किया. मेरा उत्साह फिर दूना हो गया.

"1950 کا مئی دیوس آیا۔ کارخانے میں بحث شروع ہوئی۔ وشئے تھا "پیداوار کا بڑھانا اور مشین کی صفائی۔" مجھے معلوم ہوا کہ روز شام کو ادھیکاری معائنہ کرینگے اور دیکھینگے کی کس کی مشین سے کتنی روئی باہر نکل کر خراب ہوئی۔ اِس لئے 'کم سے کم روئی خراب ہونا چاھئے' یہ کارخانے کا نعرہ ہو گیا۔ میں نے بھی اِس مقابلے میں بڑے اُتساہ سے بھاگ لیا۔ میرا مقابلہ لنگ آئے شن نام کی ایک لڑکی سے ہوا۔ روز ایک آدمی کتنی کم روئی خراب کرتا ھے اِس کا مقابلہ تھا۔ پہلے تو ہر آدمی کی مشین سے کئی پونڈ روئی خراب ہو جاتی تھی پر اِس مقابلے میں وشیش ساودھانی کے کارن ایک آدمی کی مشین سے صرف دو پونڈ روئی خراب ہوتی تھی۔

"اُس سمئے میں سوچا کرتی تھی کہ کیسے کوئی اچھا طریقہ نکالا جائے جس سے روئی کم سے کم خراب ہو۔ میں نے دیکھا کہ مزدور بار بار یہاں سے وھاں اور وھاں سے یہاں دوڑ دوڑکر سوت ملایا کرتے ھیں' اِس لئے ھمیشہ بہت ویست دکھائی دیتے ھیں اور جب مشین بہت گندی ھوجاتی ھے تبھی صفائی کرتے ھیں۔ اِس سے سمئے بہت لگتا ھے۔ میں نے سوچا کیا دونوں کام ایک ساتھ نہیں ھوسکتے یعنی کیا ایسا طریقہ نہیں ھوسکتا جس سے سوت ملانے کا کام اور مشین کی صفائی کا کام ایک ساتھ چلتا رھے۔ تجربے کے طور پر یہاں وھاں دوڑنے کے بجائے میں جلدی جلدی گھوم گھوم کر سوت ملانے لگی اور ساتھ ھی مشین کی صفائی کا کام کرنے کی کوشش کرنے لگی۔ پوری مشین کو میں جلدی جلدی گھوم گھوم کر دھیان پوروک دیکھتی رھتی اور اگر سوت نہیں ٹوٹتا تو صفائی کا کام کرتی رھتی۔ اِس سے آرمبھ میں بڑی کٹھنائی ھوئی یہاں تک کہ کبھی کبھی جلدی سے سوت ملانے میں میری اُنگلیاں مشین سے چھو جاتیں اور کٹ جاتیں۔ کبھی کبھی کلائی میں چوٹ آجاتی۔ مگر اِس سے میں نے اپنا تجربہ نہیں چھوڑا۔ تھوڑے دنوں کے بعد ایک فرق صاف دکھائی دینے لگا۔ مجھے خود ایسا لگا کہ میں دوسرے مزدوروں کی طرح پریشان نہیں رھتی۔ ایکدم کام ختم ھونے کے بعد روئی خراب ھونے کی تلنا کی گئی تو میری مشین سے کیول 5 آؤنس روئی خراب ھوئی تھی۔ جب کہ دوسرے مزدور ایک بار میں 27 آؤنس روئی خراب کرتے تو مجھ سے صرف 5 آؤنس روئی خراب ھوتی تھی۔ یہ تعداد میری مشین پر روز روز ایک سی رھی۔

"دوسرے مزدور ساتھیوں نے میرے اُوپر آوازیں کسنا شروع کیں۔ اس سے مجھے بہت دکھ ھوا۔ کبھی کبھی میں سوچتی کیوں نہ پہلے کے ھی طریقے سے کام کروں۔ کارخانے کے یوک سنگھ کے میمبروں نے بھی میرے اُوپر آوازیں کسیں۔ پر یوک سنگھ کی پردھان شریمتی وان شولن نے ایک سبھا کی اور مزدوروں کے اِس ویوھار کی نندا کی۔ ساتھ ھی اُنھوں نے مجھے بھی اُتساھت کیا۔ میرا اُتساہ پھر دونا ھوگیا۔

"मेरे बगल में ही एक दूसरी स्त्री काम करती थी. वह भी अक्सर मुझ पर ताने कस देती थी. उसका एक छोटा बच्चा था और उस बच्चे को देखने वह कई बार बाहर जाती थी. उस समय मैं अपनी मशीन के साथ साथ उसकी मशीन की भी देख भाल करती थी. इस तरह एक बार में आठ सौ स्पिंडिल की देखभाल मैं कर लेती थी. इसलिये बाद में नियमित रूप से 600 स्पिंडिल मुझे सौंप दी गई. इस तरह जब मैं दूसरों की मदद करती तो लोगों के ताने भी कम हो गए.

"हर साल की तरह उस साल भी अधिकारियों ने मजदूरों के नये अनुभवों और तरीक़ों पर सभा की और इस बार मेरे तरीक़े पर भी विचार किया. वाद विवाद होने के बाद मेरे अनुभवों का नतीजा निकाला गया—तीन तरह की मेहनत यानी हाथ की मेहनत, पांव की मेहनत और आंखों की मेहनत. यह नतीजा अखबारों में छापा गया. बाद में कारखाने के सब लोग मेरे तरीक़े से काम करने लगे. मगर असर ठीक नहीं हुआ क्योंकि मजदूर दिन-भर व्यस्त व परेशान रहते और बहुत थक जाते थे और रूई की बरबादी भी होती रहती थी. इससे जाहिर हुआ कि यह तरीक़ा कुछ ठीक नहीं है. लेकिन मैं खुद तो बड़े आराम से काम करती थी और रूई भी कम खराब होती थी इसलिये कारखाने में फिर से मेरे तरीक़े पर विचार हुआ और पहले की तरह नतीजा निकाला गया, वही तीन मेहनत. लेकिन इससे मजदूर प्रभावित नहीं हुए.

"इसके बाद कुल चीन टेक्सटाइल ट्रेड यूनियन के पैदावार विभाग के उपमंत्री चू. स. फू. नए अनुभवों और तरीक़ों को समझने के लिये स्वयं छिंगताव आए. हमारे कारखाने में एक खास कमेटी बनाई गई—'हो चेन शू के तरीक़े की अध्ययन कमेटी.' 4 जून 1951 को इस कमेटी के सब मेम्बर मेरा काम देखने आए. उस समय मैं दिल में बहुत घबराती थी, लेकिन सब लोगों को बहुत ताज्जुब हुआ कि मैं क्रम के साथ और बड़ी आसानी के साथ काम करती हूँ. चार दिन तक मेरा काम देखने के बाद 8 जून 1951 को मेरे तरीक़े के संबंध में एक सभा की गई. सभा में खास खास सवालों पर बहस हुई और यह नतीजा निकाला गया कि मैं एक खास ढंग और क्रम के अनुसार मशीन पर अपना समय बांटती हूँ इससे मुझे कोई कठिनाई नहीं होती. अधिकारियों की राय में यह तरीक़ा ठीक था. सबसे पहले छिंगताव के सरकारी टेक्सटाइल कारखाने नं० 1 में एक प्रगतिशील मजदूरों के दल ने इसे लागू किया जिसकी प्रधान ली. सू. इन थी. दूसरों को सिखाने के लिये मैं ली सू इन के साथ काम करने लगी. कारखाने के और मजदूर देखने आते थे पर उन्हें विश्वास नहीं होता था. लेकिन जब ली सू इन के दल ने इस तरीक़े

"میرے بغل میں ہی ایک دوسری استری کام کرتی تھی وہ بھی اکثر مجھ پر طعنے کس دیتی تھی. اس کے ایک چھوٹا بچہ تھا اور اس بچے کو دیکھنے وہ کئی بار باہر جاتی تھی. اس سمئے میں اپنی مشین کے ساتھ ساتھ اس کی مشین کی بھی دیکھ بھال کرتی تھی. اس طرح ایک بار میں آٹھ سو اسپنڈل کی دیکھ بھال میں کر لیتی تھی. اس لئے بعد میں نیامت روپ سے 600 اسپنڈل مجھے سونپ دی گئیں. اس طرح جب میں دوسروں کی مدد کرتی تو لوگوں کے طعنے بھی کم ہوگئے.

"ہر سال کی طرح اس سال بھی ادھیکاریوں نے مزدوروں کے نئے انوبھوؤں اور طریقوں پر سبھا کی اور اس بار میرے طریقے پر بھی وچار کیا. واد وواد ہونے کے بعد میرے انوبھوؤں کا نتیجہ نکالا گیا—'تین طرح کی محنت' یعنی ہاتھ کی محنت' پاؤں کی محنت اور آنکھوں کی محنت. یہ نتیجہ اخباروں میں چھاپا گیا. بعد میں کارخانے کے سب لوگ میرے طریقے سے کام کرنے لگے. مگر اثر ٹھیک نہیں ہوا کیونکہ مزدور دن بھر ویست و پریشان رہتے اور بہت تھک جاتے تھے اور روئی کی بربادی بھی ہوتی رہتی تھی. اس سے ظاہر ہوا کہ یہ طریقہ کچھ ٹھیک نہیں ہے. لیکن میں خود تو بڑے آرام سے کام کرتی تھی اور روئی بھی کم خراب ہوتی تھی اس لئے کارخانے میں پھر سے میرے طریقے پر وچار ہوا اور پہلے ہی کی طرح نتیجہ نکالا گیا' وہی تین محنت. لیکن اس سے مزدور پربھاوت نہیں ہوئے.

"اس کے بعد کل چین ٹیکسٹائل ٹریڈ یونین کے پیداوار بھاگ کے اپ منتری چو. سو. فو. نئے انوبھوؤں اور طریقوں کو سمجھنے کے لئے سویم چھنگتاؤ آئے. ہمارے کارخانے میں ایک خاص کمیٹی بنائی گئی—'ہو چین شو کے طریقے کی ادھین کمیٹی' 4 جون 1951 کو اس کمیٹی کے سب ممبر میرا کام دیکھنے آئے. اس سمئے میں دل میں بہت گھبراتی تھی' لیکن سب لوگوں کو بہت تعجب ہوا کہ میں کرم کے ساتھ اور بڑی آسانی کے ساتھ کام کرتی ہوں. چار دن تک میرا کام دیکھنے کے بعد 8 جون 1951 کو میرے طریقہ کے سمبندھ میں ایک سبھا کی گئی. سبھا میں خاص خاص سوالوں پر بحث ہوئی اور یہ نتیجہ نکالا گیا کہ میں ایک خاص ڈھنگ اور کرم کے انوسار مشین پر اپنا سمئے بانٹتی ہوں اس سے مجھے کوئی کٹھنائی نہیں ہوتی. ادھیکاریوں کی رائے میں یہ طریقہ ٹھیک تھا. سب سے پہلے چھنگتاؤ کے سرکاری ٹیکسٹائل کارخانے نمبر 1 میں ایک پرگتی شیل مزدوروں کے دل نے اسے لاگو کیا. جس کی پردھان لی. سو. ان. تھیں. دوسروں کو سکھانے کے لئے میں لی سو ان کے ساتھ کام کرنے لگی. کارخانے کے اور مزدور دیکھنے آتے تھے پر انہیں وشواس نہیں ہوتا تھا لیکن جب لی سو ان کے دل نے اس طریقے

के अनुसार सफलता पूर्वक काम कर दिखाया तो दूसरे मज़दूरों को भी विश्वास हो गया. इसके बाद छिंगताव के दूसरे कारख़ानों में भी मज़दूरों ने इस तरीक़े के अनुसार काम किया और इसी साल यानी मई 1951 में मुझे दूसरे दरजे का यानी पूरे छिंगताव का 'आदर्श मज़दूर' ऐलान कर दिया गया.

"मेरे तरीक़े पर अब अधिकारियों को पक्का विश्वास हो गया. छिंगताव के टेक्सटाइल कारख़ानों के बाद अब वह इस तरीक़े को देश के दूसरे टेक्सटाइल कारख़ानों में भी लागू करना चाहते थे. इसलिये अगस्त 1951 में छिंगताव में टेक्सटाइल एडमिनिस्ट्रेशन ब्यूरो ने छिंगताव के टेक्सटाइल मिलों के कर्मचारियों की एक सभा की और फिर मेरे तरीक़े पर एक दूसरे ने अपने अनुभव सुनाये और अपनी अपनी राय बताई. उस मीटिंग में कुल चीन टेक्सटाइल ट्रेड यूनियन के प्रधान छन साव मिन ने हिसाब लगाया कि अगर 'हो चेन शू तरीक़े' से काम लिया जाय तो सारे देश में एक साल में 44460 यूनिट सूत की पैदावार बढ़ सकती है और रूई की बरबादी में से 86 फ़ीसदी रूई बचाई जा सकती है.

"सितम्बर 1951 में मैं अपने पुराने कारख़ाने वापस आ गई और अपने नए तरीक़े से काम शुरू कर दिया.

"अब सब लोग बड़ी ख़ुशी और विश्वास के साथ मुझे सहयोग देते और मेरे तरीक़े के अनुसार काम करते थे. इस समय सारे देश के लिये मेरा तरीक़ा मंज़ूर किया जा चुका था. इसी समय मुझे पहले दरजे का यानी पूरे देश का "आदर्श मज़दूर" घोषित कर दिया गया."

کے انوسار سپھلتاپوروک کام کردکھایا تو دوسرے مزدوروں کو بھی وشواس ہوگیا. اس کے بعد چھنگتاؤ کے دوسرے کارخانوں میں بھی مزدوروں نے اِس طریقے کے انوسار کام کیا اور اسی سال یعنی مئی 1951 میں مجھے دوسرے درجے کا یعنی پورے چھنگتاؤ کا 'آدرش مزدور' اعلان کر دیا گیا.

"میرے طریقے پر اب ادھیکاریوں کو پکا وشواس ہوگیا: چھنگتاؤ کے ٹیکسٹائل کارخانوں کے بعد اب وہ اِس طریقے کو دیش کے دوسرے ٹیکسٹائل کارخانوں میں بھی لاگو کرنا چاہتے تھے. اِس لئے اگست 1951 میں چھنگ تاؤ میں ٹیکسٹائل ایڈمنسٹریشن بیورو نے چھنگتاؤ کے ٹیکسٹائل ملوں کے کرمچاریوں کی ایک سبھا کی اور میرے طریقے پر ایک دوسرے نے اپنے انوبھو سنائے اور اپنی اپنی رائے بتائی. اُس میٹنگ میں کل چین ٹیکسٹائل ٹریڈ یونین کے پردھان چن ساؤ من نے حساب لگایا کہ اگر 'ہوچین شو طریقے' سے کام لیا جائے تو سارے دیش میں ایک سال میں 44460 یونٹ سوت کی پیداوار بڑھ سکتی ہے اور روئی کی بربادی میں سے 86 فیصدی روئی بچائی جاسکتی ہے.

"ستمبر 1951 میں میں اپنے پرانے کارخانے واپس آگئی اور اپنے نئے طریقے سے کام شروع کردیا.

"اب سب لوگ بڑی خوشی اور وشواس کے ساتھ مجھے سہیوگ دیتے اور میرے طریقے کے انوسار کام کرتے تھے. اِس سمئے سارے دیش کے لئے میرا طریقہ منظور کیا جاچکا تھا. اِسی سمئے مجھے پہلے درجے کا یعنی پورے دیش کا "آدرش مزدور" گھوشت کردیا گیا."

अन्धा वह नहीं जिसकी आंख फूट गई है.
अंधा वह है जो अपने दोष ढांकता है.

—गांधी जी

اندھا وہ نہیں جس کی آنکھ پھوٹ گئی ہے.
اندھا وہ ہے جو اپنے دوش ڈھانکتا ہے.

—گاندھی جی

मोहम्मद साहब के कुछ उपदेश

अनुवादक—श्री मुजीब रिज़वी

मोहम्मद साहब ने कहा :—"तुममें से किसी को जब किसी मुर्दे का जनाज़ा जाता दिखाई दे और तुम उसके साथ न चलो तो तुम्हें उस समय तक अपनी जगह पर खड़ा रहना चाहिये जब तक कि वह जनाज़ा निकल न जाय या उसे नीचे उतार कर न रख दिया जाय."

—आमिर बिन रबीह: बुख़ारी; मुसलिम; अबुदाऊद; तिरमिज़ी; नसाई

—— - ——

मोहम्मद साहब के पास से एक जनाज़ा गुज़रा और वह खड़े हो गए. उनसे किसी ने कहा—"यह तो एक यहूदी का जनाज़ा था." पैग़म्बर ने जवाब दिया,—"क्या यहूदी के जान नहीं होती ?'

—अब्दुर्रहमान बिन अबुलैला: बुख़ारी; मुसलिम

———

मोहम्मद साहब ने कहा:—"ऐ आदम की औलाद ! तुम्हारे लिये यह ज़्यादा अच्छा है कि जितनी भी दौलत या सामान तुम्हारे पास अपने गुज़ारे से ज़्यादा हो वह तुम अपने हाथ से दूसरों को दे दो, और यह तुम्हारे लिये बुरा है कि उस दौलत या सामान को तुम अपने पास जोड़े रखो—केवल अपने गुज़ारे भर के लिये रखना बुराई नहीं है—और दूसरों को देना तुम उस आदमी से शुरू करो जो भी तुम्हारे नज़दीक हो या जो तुम्हारा सगा हो.''

—अबु उमामह: मुसलिम; तिरमिज़ी.

———

मोहम्मद साहब ने कहा :—"रोज़ा रखने, ज़कात (दान) देने और नमाज़ पढ़ने से भी बढ़कर जो चीज़ है क्या वह मैं तुम्हें बताऊँ ? वह चीज़ है लोगों में मेल बढ़ाना, क्योंकि सच यह है कि फूट उस चिकनाहट को ख़तम कर देती है जिसके सहारे इनसानी समाज ज़िन्दा है."

—अबुदर्दा: अबुदाऊद; तिरमिज़ी

———

मोहम्मद साहब ने यह भी कहा कि :—मेरे कहने का यह मतलब नहीं है कि फूट की ख़ुश्की से सिर के बाल उड़ जाते हैं, मेरा मतलब यह है कि फूट से दीन की जड़ साफ़ कट जाती है."

—तिरमिज़ी

———

محمد صاحب کے کچھ اپدیش

انوادک—شری مجیب رضوی

محمد صاحب نے کہا:—"تم میں سے کسی کو جب کسی مردے کا جنازہ جاتا دکھائی دے اور تم اُس کے ساتھ نہ چلو تو تمہیں اُس سمئے تک اپنی جگہہ پر کھڑا رہنا چاہئے جب تک کہ وہ جنازہ نکل نہ جائے یا اُسے نیچے اُتار کر نہ رکھ دیا جائے."

—عامر بن ربیع؛ بخاری؛ مسلم؛ ابوداؤد؛ ترمزی، نساعی

———

محمد صاحب کے پاس سے ایک جنازہ گذرا اور وہ کھڑے ہو گئے. اُن سے کسی نے کہا—"یہ تو ایک یہودی کا جنازہ تھا." پیغمبر نے جواب دیا—"کیا یہودی کے جان نہیں ہوتی ؟"

—عبدالرحمان بن ابولیلی؛ بخاری؛ مسلم.

———

محمد صاحب نے کہا:—"اے آدم کی اولاد ! تمہارے لئے یہ زیادہ اچھا ہے کہ جتنی بھی دولت یا سامان تمہارے پاس گذارے سے زیادہ ہو وہ تم اپنے ہاتھ سے دوسروں کو دے دو، اور یہ تمہارے لئے برا ہے کہ اُس دولت یا سامان کو تم اپنے پاس جوڑے رکھو—کیول اپنے گذارے بھر کے لئے رکھنا برائی نہیں ہے—اور دوسروں کو دینا تم اُس آدمی سے شروع کرو جو بھی تمہارے نزدیک ہو یا جو تمہارا سگا ہو."

—ابوعمامہ؛ مسلم؛ ترمزی.

———

محمد صاحب نے کہا:—"روزہ رکھنے، ذکاۃ (دان) دینے اور نماز پڑھنے سے بھی بڑھکر جو چیز ہے کیا وہ میں تمہیں بتاؤں ؟ وہ چیز ہے لوگوں میں میل بڑھانا، کیونکہ سچ یہ ہے کہ پھوٹ اُس چکناہٹ کو ختم کر دیتی ہے جس کے سہارے انسانی سماج زندہ ہے."

—ابودردہ؛ ابو داؤد، ترمزی

———

محمد صاحب نے یہ بھی کہا کہ:—"میرے کہنے کا یہ مطلب نہیں ہے کہ پھوٹ کی خشکی سے سر کے بال اُڑ جاتے ہیں، میرا مطلب یہ ہے کہ پھوٹ سے دین کی جڑ صاف کٹ جاتی ہے."

—ترمزی

———

मोहम्मद साहब ने कहा कि :—"मुसीबत में पड़े किसी आदमी को जो कोई तसल्ली देता है उसको अल्लाह से उचित फल मिलता है."

—इब्न मसूद; तिरमिज़ी

मोहम्मद साहब ने कहा कि :—"सच यह है कि कोई भी आदमी इसलाम का यानी सच्चे सनातन दीन का पालन करनेवाला नहीं कहा जा सकता जब तक कि उसके सब पड़ोसी उसके अत्याचारों से पूरी तरह सुरक्षित न हों."

—इब्न मसूद: अहमद; बेहक़ी

मोहम्मद साहब ने कहा:—"इस ज़मीन पर ख़ुदा की मख़लूक़ (सृष्टि) के साथ जो कोई नफ़रत से पेश आता है वह ख़ुदा के साथ नफ़रत का व्यवहार करता है."

—अबुबकर: तिरमिज़ी

पैग़म्बर से कहा गया कि—"आप मुशरिकों यानी मूर्ति-पूजकों के विरुद्ध ख़ुदा से प्रार्थना कीजिये और उन्हें बद्दुआ दीजिये." पैग़म्बर ने जवाब दिया :—"मैं सबके लिये रहमत बना कर भेजा गया हूँ, किसी को बद्दुआ देने के लिये दुनिया में नहीं आया."

—अबुहुरैरा: मुसलिम

अबुबकर अपने किसी ग़ुलाम को गाली दे रहे थे. उसी समय पैग़म्बर उधर से आ निकले. पैग़म्बर ने अबुबकर से कहा :—"क्या कोई सच्चा और नेक आदमी कभी किसी को गाली देता है ? काबे के ख़ुदा की क़सम ! हरगिज़ नहीं." अबुबकर ने उसी दिन अपने सब ग़ुलामों को आज़ाद कर दिया और आकर पैग़म्बर से कहा :—"मैं आइन्दा ऐसा कभी नहीं करूँगा."

—आयशा: बेहक़ी

मोहम्मद साहब ने कहा कि :—"जो कोई भी चाहता है कि क़यामत के दिन की यातनाओं (अज़ीयतों) से ख़ुदा उसे बचाए उसे चाहिये कि अगर उसका कोई क़र्ज़दार कठिनाई में है तो वह उसे मोहलत दे या उसका क़र्ज़ा माफ़ कर दे."

—मुसलिम

मैंने पैग़म्बर से पूछा :—"नेकी क्या है और गुनाह क्या है ?" उन्होंने जवाब दिया :—"सब के साथ अच्छा सलूक करना नेकी है, और जो चीज़ तुम्हारे दिल में खटके और तुम उसे दूसरों पर ज़ाहिर करना न चाहो वही गुनाह है."

—मुसलिम; तिरमिज़ी

محمد صاحب نے کہا کہ:—"مصیبت میں پڑے کسی آدمی کو جو کوئی تسلی دیتا ہے اُس کو اللہ سے اُچت پھل ملتا ہے."

—ابن مسعود؛ ترمزی

محمد صاحب نے کہا کہ:—"سچ یہ ہے کہ کوئی بھی آدمی اِسلام کا یعنی سچے سناتن دین کا پالن کرنے والا نہیں کہا جا سکتا جب تک کہ اُس کے سب پڑوسی اُس کے اتیاچاروں سے پوری طرح سورکشت نہ ہوں."

—ابن مسعود؛ احمد؛ بیہقی .

محمد صاحب نے کہا:—"اِس زمین پر خدا کی مخلوق (سرشٹی) کے ساتھ جو کوئی نفرت سے پیش آتا ہے وہ خدا کے ساتھ نفرت کا ویوہار کرتا ہے."

—ابو بکر؛ ترمزی .

پیغمبر سے کہا گیا کہ:—"آپ مشرکوں یعنی مورتی پوجکوں کے وِرودھ خدا سے پرارتھنا کیجئے اور اُنہیں بدعا دیجئے." پیغمبر نے جواب دیا:—"میں سب کے لئے رحمت بنا کر بھیجا گیا ہوں، کسی کو بد دعا دینے کے لئے دنیا میں نہیں آیا."

—ابو ہریرۃ؛ مسلم .

ابوبکر اپنے کسی غلام کو گالی دے رہے تھے . اسی سمئے پیغمبر اُدھر سے آنکلے . پیغمبر نے ابوبکر سے کہا :—"کیا کوئی سچا اور نیک آدمی کبھی کسی کو گالی دیتا ہے ؟ کعبے کے خدا کی قسم ! ہرگز نہیں." ابوبکر نے اُسی دن اپنے سب غلاموں کو آزاد کردیا اور آکر پیغمبر سے کہا :—میں آئندہ ایسا کبھی نہیں کرونگا."

—عائشہ؛ بیہقی .

محمد صاحب نے کہا کہ :—"جو کوئی بھی چاہتا ہے کہ قیامت کے دن کی یاتناؤں (اذیتوں) سے خدا اُسے بچائے اُسے چاہئے کہ اگر اُس کا کوئی قرضدار کٹھنائی میں ہے تو وہ اُسے مہلت دے یا اُس کا قرضہ صاف کردے."

—مسلم .

میں نے پیغمبر سے پوچھا :—"نیکی کیا ہے اور گناہ کیا ہے ؟" اُنہوں نے جواب دیا :—"سب کے ساتھ اچھا سلوک کرنا نیکی ہے، اور جو چیز تمہارے دل میں کھٹکے اور تم اُسے دوسروں پر ظاہر کرنا نہ چاہو وہی گناہ ہے."

—مسلم؛ ترمزی .

मोहम्मद साहब के कुछ उपदेश

मोहम्मद साहब ने कहा :—"निस्सन्देह दूसरों के साथ अच्छा बरताव करने वाला आदमी केवल अपने उस बरताव के कारण ही नमाज़ रोज़े के पाबन्द आदमियों का मरतबा हासिल कर लेता है.

—अबुदर्दा; तिरमिज़ी

मोहम्मद साहब ने कहा :—"क़ानून में जिन चीज़ों की इजाज़त है उनमें से अगर किसी चीज़ से अल्लाह को सबसे ज़्यादा नफ़रत है तो वह तलाक़ है."

—अबुदाऊद

मोहम्मद साहब ने कहा :—"ऐ मौज़ ! ज़मीन की सतह पर अल्लाह ने कोई ऐसी चीज़ पैदा नहीं की जो ग़ुलामों को आज़ाद करने के मुक़ाबले में अल्लाह को ज़्यादा प्यारी हो. और अल्लाह ने रूए ज़मीन पर ऐसी कोई चीज़ पैदा नहीं की जिससे वह तलाक़ से ज़्यादा नफ़रत करता हो."

—मौज़ बिन जबल

मोहम्मद साहब ने कहा :—"नशा सारे गुनाहों की जड़ है."

—हुज़ैफ़ह : राज़िन

मोहम्मद साहब ने कहा :—"दूसरों से हसद करने से अपने को बचाओ, क्योंकि सचमुच हसद नेकी को ऐसे ही खा जाता है जैसे आग लकड़ी को हज़म कर जाती है."

—अबु हुरैरा: अबुदाऊद

पैग़म्बर ने कहा:—जिस किसी के पास बारबरदारी के जानवर उसकी ज़रूरत से ज़्यादा हैं उसे चाहिये कि उनमें से कुछ उस आदमी को दे दे जिसके पास कोई जानवर नहीं. और जिसके पास ज़रूरत से ज़्यादा सामान है उसे चाहिये कि कुछ उसे दे दे जिसके पास कुछ नहीं." पैग़म्बर ने और बहुत सी चीज़ों का एक एक कर इसी तरह ज़िक्र किया. इससे पता चला कि ज़रूरत से ज़्यादा किसी चीज़ को रखने का हमको कोई हक़ नहीं.

—अबुसईद : मुसलिम; अबुदाऊद

محمد صاحب کے کچھ اُپدیش

محمد صاحب نے کہا :—"نسندیہ دوسروں کے ساتھ اچھا برتاؤ کرنے والا آدمی کیول اپنے اُس برتاؤ کے کارن ہی نماز روزے پابند آدمیوں کا مرتبہ حاصل کرلیتا ھے."

—ابودردا؛ ترمذی .

محمد صاحب نے کہا :—"قانون میں جن چیزوں کی اجازت ھے اُن میں سے اگر کسی چیز سے اللہ کو سب سے زیادہ نفرت ھے تو وہ طلاق ھے .

—ابوداؤد .

محمد صاحب نے کہا :—اے موز ! زمین کی سطح پر اللہ نے کوئی ایسی چیز پیدا نہیں کی جو غلاموں کو آزاد کرنے کے مقابلہ میں اللہ کو زیادہ پیاری ہو . اور اللہ نے روئے زمین پر ایسی کوئی چیز پیدا نہیں کی جس سے وہ طلاق سے زیادہ نفرت کرتا ہو ."

—موزبن جبل .

محمد صاحب نے کہا :—"نشہ سارے گناہوں کی جڑ ھے."

— حذیفہ؛ شزن .

محمد صاحب نے کہا :—"دوسروں سے حسد کرنے سے اپنے کو بچاؤ' کیونکہ سچ مچ حسد نیکی کو ایسے ہی کھا جاتا ھے جیسے آگ لکڑی کو ھضم کر جاتی ھے ."

—ابوھریرہ؛ ابوداؤد .

پیغمبر نے کہا :—جس کسی کے پاس باربرداری کے جانور اُس کی ضرورت سے زیادہ ھیں اُسے چاھئے کہ اُن میں سے کچھ اُس آدمی کو دیدے جس کے پاس کوئی جانور نہیں . اور جس کے پاس ضرورت سے زیادہ سامان ھے اُسے چاھئے کہ کچھ اُسے دیدے جس کے پاس کچھ نہیں ." پیغمبر نے اور بہت سی چیزوں کا ایک ایک کر اسی طرح ذکر کیا . اِس سے پتہ چلا کہ ضرورت سے زیادہ کسی چیز کو رکھنے کا ھم کو کوئی حق نہیں ھے .

—ابوسعید؛ مسلم؛ ابوداؤد .

डा० भगवानदास और वर्ण व्यवस्था

भाई रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

[पूज्य डा० भगवानदास के लेख "नया हिन्द" में छपते रहे हैं. वह सब बड़े बड़े धर्मों की बुनियादी एकता के मानने वाले हैं, वह अलग अलग धर्मों के ऊपरी रीति रिवाजों को कम और उन सबके उन बुनियादी उसूलों को अधिक महत्व देते हैं जो सब धर्मों में लगभग एक से हैं. यही उनके विद्वत्ता भरे लेखों का ख़ास मज़मून रहा है. उन्हीं से सीख कर और प्रेरणा पाकर "हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी" और "नया हिन्द" सब धर्मों की एकता में विश्वासी रहे हैं और हैं. हिन्दुओं की आजकल की जन्म से जाति को और हर तरह की छुआछूत को डा० भगवानदास बिलकुल ग़लत मानते हैं और उसके ख़िलाफ़ हैं. जन्म की इन सैकड़ों जातों की जगह चार वर्णों का उसूल उनके लेखों और विचारों का केवल एक पहलू है. उनके इन चार वर्णों का जन्म से कोई सम्बन्ध नहीं, न इनमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि का कोई फ़रक़ रह जाता है. सारी दुनिया और सारा मानव समाज उसमें समा जाता है. उनके इस उसूल के अनुसार आइन्सटाइन और बरनर्ड शा वैसे ही पक्के ब्राह्मन थे जैसे बनारस के पं० शिवकुमार शास्त्री. उनके इन वर्णों का जैसे जन्म से या धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं वैसे ही ब्याह शादी से भी कोई सम्बन्ध नहीं. उनके अनुसार उनकी वर्ण व्यवस्था नई दीवारें खड़ी करने वाली चीज़ नहीं, दीवारें तोड़ने वाली चीज़ है. उनकी वर्ण व्यवस्था कोई जड़ या ठोस चीज़ नहीं है. वह रबर की तरह लचीली है. उनके चार वर्णों में ऊंच नीच का भी कोई सवाल नहीं. उनके अनुसार आदमी जब चाहे अपने स्वभाव और पेशे के अनुसार अपना 'वर्ण' भी बदल सकता है, ठीक जिस तरह कम्युनिस्ट समझे जाने वाले देशों में कोई मज़दूर, 'लेबरर', या 'वर्कर' जब चाहे योग्यता हासिल करके 'प्रोफ़ेसर' या पार्लिमेंट का मेम्बर बन सकता है, और अपने को मज़दूर 'लेबरर' या 'वर्कर' कहने में उसे कभी अपमान महसूस नहीं होता. हमारे मित्र श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़' भी बहुत आज़ाद ख़्याल, साफ़ दिल, साफ़गो और तरक़्क़ी पसन्द विद्वान हैं. उनकी इतनी बात हमें बिलकुल ठीक मालूम होती है कि अब वह समय आ रहा है और आना चाहिये जब दुनिया का लगभग

ڈاکٹر بھگوان داس اور ورن ویوستھا

بھائی رگھوپتی سہائے 'فراق'

[پوجیہ ڈاکٹر بھگوان داس کے لیکھ "نیا ہند" میں چھپتے رہے ہیں ۔ وہ سب بڑے بڑے دھرموں کی بنیادی ایکتا کے ماننے والے ہیں ۔ وہ الگ الگ دھرموں کے اوپری ریت رواجوں کو کم اور اُن سب کے اُن بنیادی اصولوں کو ادھک مہتو دیتے ہیں جو سب دھرموں میں لگ بھگ ایک سے ہیں ۔ یہی اُن کے ودوتا بھرے لیکھوں کا خاص مضمون رہا ہے ۔ اُنہیں سے سیکھکر اور پریرنا پاکر "ہندستانی کلچر سوسائٹی" اور "نیا ہند" سب دھرموں کی ایکتا میں وشواسی رہے ہیں اور ہیں ۔ ہندؤں کی آجکل کی جنم سے جاتی کو اور ہر طرح کی چھوا چھوت کو ڈاکٹر بھگوان داس بالکل غلط مانتے ہیں اور اُس کے خلاف ہیں ۔ جنم کی ان سیکڑوں جاتوں کی جگہ چار ورنوں کا اصول اُن کے لیکھوں اور وچاروں کا کیول ایک پہلو ہے ۔ اُن کے ان چار ورنوں کا جنم سے کوئی سمبندھ نہیں، نہ اِن میں ہندو، مسلمان، عیسائی آدی کا کوئی فرق رہ جاتا ہے ۔ ساری دنیا اور سارا مانو سماج اُس میں سما جاتا ہے ۔ اُن کے اِس اصول کے انوسار آئنسٹائن اور برنرڈشا ویسے ہی پکے براہمن تھے جیسے بنارس کے پنڈت شوکمار شاستری ۔ اُن کے اِن ورنوں کا جیسے جنم سے یا دھرم سے کوئی سمبندھ نہیں ویسے ہی بیاہ شادی سے بھی کوئی سمبندھ نہیں ۔ اُن کے انوسار اُن کی ورن ویوستھا نئی دیواریں کھڑی کرنے والی چیز نہیں، دیواریں توڑنے والی چیز ہے ۔ اُن کی ورن ویوستھا کوئی جڑ یا ٹھوس چیز نہیں ہے ۔ وہ ربر کی طرح لچیلی ہے ۔ اُن کے چار ورنوں میں اونچ نیچ کا بھی کوئی سوال نہیں ۔ اُن کے انوسار آدمی جب چاہے اپنے سوبھاؤ اور پیشے کے انوسار اپنا 'ورن' بھی بدل سکتا ہے، ٹھیک جس طرح کمیونسٹ سمجھے جانے والے دیشوں میں کوئی مزدور، 'لیبرر' یا 'ورکر' جب چاہے یوگتا حاصل کرکے 'پروفیسر' یا پارلیمینٹ کا میمبر بن سکتا ہے، اور اپنے کو مزدور، 'لیبرر' یا 'ورکر' کہنے میں اسے کبھی اپمان محسوس نہیں ہوتا ۔ ہمارے متر شری رگھوپتی سہائے 'فراق' بھی بہت آزاد خیال، صاف دل، صاف گو اور ترقی پسند ودوان ہیں ۔ اُن کی اِتنی بات ہمیں بالکل ٹھیک معلوم ہوتی ہے کہ اب وہ سمے آرہا ہے اور آنا چاہئے جب دنیا کا لگ بھگ

हर इन्सान थोड़े थोड़े घन्टों के लिये दूसरों की मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और शारीरिक सब तरह की सेवाओं में हिस्सा लेगा और सब तरह की सेवाओं का आनन्द लेगा. तब ही मानवता सचमुच खिल सकेगी. किसी लेख के किसी पत्रिका में प्रकाशित होने का यह मतलब नहीं होता कि पत्रिका या उसका सम्पादक लेखक के सब विचारों से सहमत है. इसलिये हम सहर्ष भाई रघुपति सहाय 'फ़िराक़' का यह लेख नीचे देते हैं—सम्पादक.]

❀ ❀ ❀

मैं उन बहुत से लेखों को ध्यान से पढ़ता रहा हूँ जो पूज्य डाक्टर भगवानदास के क़लम से 'नया हिन्द' में निकलते रहे हैं, और जिनमें उन्होंने वर्ण व्यवस्था को न्याय, विज्ञान, मनोविज्ञान और नीति के अनुसार बताया है. मैं जिस नतीजे पर पहुंचा हूँ उसे थोड़े शब्दों में नीचे देता हूँ.

अब वह ज़माना आ चुका है जब सौ फ़ीसदी आबादी को अच्छी तरह से पढ़ा लिखा बना दिया जाय. ऐसा होने के बाद सौ फ़ीसदी लोगों में क्या क्या सलाहियत आ जायगी ? मादरी ज़बान में साधारन से साधारन आदमी होमर की ईलियड और ओडेसी, महाभारत, रामायन, मनुस्मृति, फ़िरदौसी का शाहनामा, सादी की गुलिस्ताँ, महात्मा टालस्टाय की किताबें, शेक्सपीयर के नाटक, कालिदास के नाटक, यूनान, फ्रांस और दूसरे देशों के नाटक, दुनिया भर के सफ़रनामे, मशहूर जीवन-चरित्र, दुनिया भर के मशहूर उपन्यास, सार्वजनिक या आम फ़हम विज्ञान, दुनिया भर की कहानियां, और ख़ुद मादरी ज़बान में जो अच्छी शायरी हुई है, उसका बहुत बड़ा हिस्सा, पढ़ और समझ सकेगा. वह ज़माना भी शुरू हो चुका है जब छाती-फाड़, कमर-तोड़ या शरीर को थका देने वाली मेहनत का भार मशीनें उठा लेंगी. स्टालिन से पूछा गया कि जब वर्ग-हीन समाज, या ऐसा समाज जिसमें तबक़े न हों, क़ायम हो जावेगा तो क्या सब लोग क़लम के सूरमा बन जायंगे ? स्टालिन ने जवाब दिया कि सब लोग एंजिनियर बन जायेंगे लेकिन अपनी पसंद के मुताबिक़ क़लम के सूरमाओं की रचनाओं का आनन्द उठा सकेंगे. जिस तरह की किताबों को मैं ऊपर गिनवा चुका हूँ उन्हें जब पढ़कर सब लोग समझ सकेंगे और शरीर या हाथ पांव को कड़ी मेहनत से छुटकारा मिल जावेगा, तो शूद्र कौन रह जावेगा ? इसके साथ ही साथ ऐटम या परमानु शक्ति के जुग में मामूली से मामूली आदमी को वह तमाम सुख और सुविधाएँ हासिल हो जावेंगी जो थोड़े से सम्पन्न लोगों तक आज महदूद हैं. ऐसी दशा में शूद्र कौन रह जावेगा ? इस बात को श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर, एच० जी० वेल्स, साम्यवाद के और दूसरे विचारक अच्छी तरह समझ गए थे. श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर जाति पांति के ही नहीं गुन-कर्म-स्वभाव के अनुसार

ہر انسان تھوڑے تھوڑے گھنٹوں کے لئے دوسروں کی مانسک، آرتھک، سماجک اور شاریرک سب طرح کی سیواؤں میں حصہ لیگا اور سب طرح کی سیواؤں کا آنند لیگا . تب ہی مانوتا سچ مچ کھل سکیگی . کسی لیکھ کے کسی پتریکا میں پرکاشت ہونے کا یہ مطلب نہیں ہوتا کہ پتریکا یا اُس کا سمپادک لیکھک کے سب وچاروں سے سہمت ہے . اس لئے ہم سہرش بھائی رگھوپتی سہائے 'فراق' کا یہ لیکھ نیچے دیتے ہیں—سمپادک.]

❀ ❀ ❀

میں اُن بہت سے لیکھوں کو دھیان سے پڑھتا رہا ہوں جو پوجیہ ڈاکٹر بھگوان داس کے قلم سے 'نیا ہند' میں نکلتے رہے ہیں، اور جنہیں اُنہوں نے ورن ویوستھا کو نیائے، وگیان، منو وگیان اور نیتی کے انوسار بتایا ہے . میں جس نتیجے پر پہونچا ہوں اُسے تھوڑے شبدوں میں نیچے دیتا ہوں .

اب وہ زمانہ آچکا ہے جب سو فیصدی آبادی کو اچھی طرح سے پڑھا لکھا بنا دیا جائے . ایسا ہونے کے بعد سو فیصدی لوگوں میں کیا کیا صلاحیت آجائیگی ؟ مادری زبان میں سادھارن سے سادھارن آدمی ہومر کی اِلیڈ اور اوڈیسی، مہابھارت، راماین، منوسمرتی، فردوسی کا شاہنامہ، سعدی کی گلستاں، مہاتما ٹالسٹائے کی کتابیں، شیکسپیر کے ناٹک، کالی داس کے ناٹک، یونان، فرانس اور دوسرے دیشوں کے ناٹک، دنیا بھر کے سفرنامے، مشہور جیون چرتر، دنیا بھر کے مشہور اُپنیاس، سارو جنک یا عام فہم وگیان، دنیا بھر کی کہانیاں، اور خود مادری زبان میں جو اچھی شاعری ہوئی ہے، اُس کا بہت بڑا حصہ، پڑھ اور سمجھ سکیگا . وہ زمانہ بھی شروع ہو چکا ہے جب چھاتی پھاڑ، کمر توڑ یا شریر کو تھکا دینے والی محنت کا بھار مشینیں اُٹھا لینگی . اِسٹالن سے پوچھا گیا کہ جب ورگ ہین سماج، یا ایسا سماج جس میں طبقے نہ ہوں، قایم ہوجاویگا تو کیا سب لوگ قلم کے سورما بن جائینگے ؟ اِسٹالن نے جواب دیا کہ سب لوگ اِنجینیر بن جائینگے لیکن اپنی پسند کے مطابق قلم کے سورماؤں کی رچناؤں کا آنند اُٹھا سکینگے . جس طرح کی کتابوں کو میں اُوپر گنوا چکا ہوں اُنہیں جب پڑھکر سب لوگ سمجھ سکینگے اور شریر یا ہاتھ پاؤں کو کڑی محنت سے چھٹکارا مل جاویگا، تو شودر کون رہ جاویگا ؟ اِس کے ساتھ ہی ساتھ ایٹم یا پرمانو شکتی کے جگ میں معمولی سے معمولی آدمی تو وہ تمام سکھ اور سویدھائیں حاصل ہوجاوینگی جو تھوڑے سے سمپن لوگوں تک آج محدود ہیں . ایسی دشا میں شودر کون رہ جاویگا ؟ اِس بات کو شری رویندرناتھ ٹیگور، ایچ . جی . ویلس، سامیہ واد کے اور دوسرے وچارک اچھی طرح سمجھ گئے تھے . شری رویندرناتھ ٹیگور جاتی پانتی کے ہی نہیں گن - کرم - سبھاؤ کے انوسار

वर्ण व्यवस्था के भी खिलाफ़ थे. पूज्य डाक्टर भगवानदास ने इस विषय पर अपने लेखों में समाजवाद और साम्यवाद की चरचा भी की है. निवेदन है कि समाजवाद और साम्यवाद के साथ साथ वर्ण व्यवस्था को क़ायम नहीं रक्खा जा सकता. जब पूरा समाज पढ़ा लिखा होगा, सम्पन्न या ख़ुशहाल होगा और छाती-फाड़ मेहनत से बच जावेगा तो कोई शूद्र कैसे रहेगा ? जब पीठ या सर पर बोझ लादकर चलने के बदले बैलगाड़ी पर बोझ लादना शुरू किया गया और बाद को माल गाड़ियों और मोटर ट्रकों पर बोझ लदने लगा या क्रेनों द्वारा टनों बोझ उठने लगा, यानी जब बोझ लाद कर चलने वाला गाड़ीवान बन गया, क्रेन का ऑपरेटर बन गया, ट्रक ड्राइवर या इंजिन ड्राइवर बन गया तो वह शूद्र नहीं रहा हालांकि समाज की सेवा वह अब भी कर रहा है. फिर जब हर आदमी संसार साहित्य पढ़ने लगेगा और कई गुना ज़्यादा मज़दूरी भी पाने लगेगा और वह सब आराम और आसाइश, सुख और सुविधायें भी जन्म-सिद्ध अधिकार या पैदाइशी हक़ की तरह हासिल कर लेगा जो आज केवल मुट्ठी-भर आदमियों को नसीब हैं, तो वह शूद्र नहीं रह जावेगा. अंग्रेजी शब्द लेबरर या फ़ारसी शब्द मज़दूर भी उस पर लागू नहीं होंगे.

पूज्य डाक्टर भगवानदास कुछ लोगों को स्वभाव से ही दौलत कमाने वाला या वैश्य समझते हैं. नई सभ्यता में दूसरों से मज़दूरी या मेहनत कराके किसी को पूंजीपति बनने नहीं दिया जायगा. धन पैदा करना सब का पैदायशी काम होगा. बड़ी बड़ी तिजारतें पंचायत यानी हुकूमत के हाथ में होंगी. दलालों, आढ़तियों, सट्टे बाज़ों और मिल मालिकों के दिन अब लदने वाले हैं. जैसे जैसे हुकूमत, ज़रूरी तालीम देकर लोगों को इस क़ाबिल बनाती जायगी कि यह ज़िम्मेदारी पूंजीपतियों के हाथ से ले ली जाय, वैसे वैसे यह तब्दीली समाज के जीवन में आती जायगी. यह भी सोचने की बात है कि ख़ोन्चा लगाने वाले, पटरियों पर दूकान लगाने वाले, पान और मूँगफली बेचने वाले, अपना रिक्शा या इक्का रखकर चलाने वाले, बुनकर, मोची, वग़ैरा जो किसी की टहल या सेवा नहीं करते और थोड़ा बहुत धन भी कमा लेते हैं, क्या ये सब लोग उन्हीं अर्थों में वैश्य हैं जिन अर्थों में टाटा, बिड़ला, डालमिया, जैपूरिया वग़ैरा ? बन्दर नचाने वाले, सँपेरे, भालू नचाने वाले, भानमती का पिटारा लेकर घूमने वाले, यह सब भी तो किसी की मज़दूरी नहीं करते. रंगरेज़, सुनार, धुनियां, बढ़ई, लोहार, हज्जाम (जो केवल पैसे लेकर बाल काटते हैं) मल्लाह, मछुए, चिड़ीमार, फेरी लगाने वाले, बहुरूपिये क्या ये सब उन्हीं मानों में वैश्य हैं जिन मानों में राजा मोतीचन्द वैश्य थे ? क्या राजा मोतीचन्द या बिड़ला ने जो सेवायें समाज की कीं वह

ورن ویوستھا کے بھی خلاف تھے . پوجیہ ڈاکٹر بھگوان داس نے اِس وشئے پر اپنے لیکھوں میں سماجواد اور سامیہواد کی چرچا بھی کی ھے . نویدن ھے کہ سماجواد اور سامیہواد کے ساتھ ساتھ ورن ویوستھا کو قایم نہیں رکھا جاسکتا . جب پورا سماج پڑھا لکھا ہوگا' سمپن یا خوشحال ہوگا اور چھاتی پھاڑ محنت سے بچ جاویگا تو کوئی شودر کیسے رہیگا ؟ جب پیٹھ یا سر پر بوجھ لاد کر چلنے کے بدلے بیل‌گاڑی پر بوجھ لادنا شروع کیا گیا اور بعد کو مال‌گاڑیوں اور موٹر ٹرکوں پر بوجھ لدنے لگا یا کرینوں دوارا ٹنوں بوجھ اُٹھنے لگا' یعنی جب بوجھ لادکر چلنے والا گاڑی‌وان بن گیا' کرین کا آپریٹر بن گیا' ٹرک ڈرایور یا انجن ڈرایور بن گیا تو وہ شودر نہیں رہا حالانکہ سماج کی سیوا وہ اب بھی کر رہا ھے . پھر جب ہر آدمی سنسار ساھتیہ پڑھنے لگیگا اور کئی گنا زیادہ مزدوری بھی پانے لگیگا اور وہ سب آرام اور آسایش' سکھ اور سوبدھائیں بھی جنم سدھ ادھیکار یا پیدایشی حق کی طرح حاصل کرلیگا' جو آج کیول مٹھی بھر آدمیوں کو نصیب ھیں' تو وہ شودر نہیں رہ جاویگا . انگریزی شبد لیبرر یا فارسی شبد مزدور بھی اُس پر لاگو نہیں ہونگے .

پوجیہ ڈاکٹر بھگوان داس کچھ لوگوں کو سوبھاؤ سے ھی دولت کمانے والا یا ویشیہ سمجھتے ھیں . نئی سبھیتا میں دوسروں سے مزدوری یا محنت کراکے کسی کو پونجی پتی بننے نہیں دیا جایگا . دھن پیدا کرنا سب کا پیدایشی کام ہوگا . بڑی بڑی تجارتیں پنچایت یعنی حکومت کے ہاتھ میں ہونگی . دلالوں' آڑھتیوں' سٹے بازوں اور مل مالکوں کے دن اب لدنے والے ھیں . جیسے جیسے حکومت ضروری تعلیم دیکر لوگوں کو اِس قابل بناتی جائیگی کہ یہ ذمہ‌واری پونجی‌پتیوں کے ہاتھ سے لے لی جائے ویسے ویسے یہ تبدیلی سماج کے جیون میں آتی جاویگی . یہ بھی سوچنے کی بات ھے کہ خونچہ لگانے والے' پٹریوں پر دوکان لگانے والے' پان اور مونگ‌پھلی بیچنے والے' اپنا رکشا یا یکہ رکھکر چلانے والے' بنکر' موچی وغیرہ جو کسی کی ٹہل یا سیوا نہیں کرتے اور تھوڑا بہت دھن بھی کما لیتے ھیں' کیا یہ سب لوگ اُنھیں ارتھوں میں ویشیہ ھیں جن ارتھوں میں ٹاٹا' بڑلا' ڈالمیا' جےپوریا وغیرہ ؟ بندر نچانے والے' سنپیرے' بھالو نچانے والے' بھانمتی کا پٹارا لیکر گھومنے والے' یہ سب بھی تو کسی کی مزدوری نہیں کرتے . رنگریز' سنار' دھنیا' بڑھئی' لوہار' حجام (جو کیول پیسے لیکر بال کاٹتے‌ھیں) ملاح' مچھوئے' چڑیمار' پھیری لگانے والے' بہروپئے کیا یہ سب اُنھیں بھاؤں میں ویشیہ ھیں جن معنوں میں راجہ موتی چند ویشیہ تھے ؟ کیا راجہ موتی چند یا بڑلا نے جو سیوائیں سماج کی کیں وہ

कोई पंचायत (जिसमें कई तरह के काम करने वाले शरीक हों) या कोई सरकारी महकमा या सरकारी कर्मचारी तनख्वाह पाकर नहीं कर सकते ? तो फिर वैश्य शब्द का क्या अर्थ है ? और उन लोगों को आप क्या कहेंगे जो वकील हैं, जमींदार हैं, प्रोफेसर हैं, डिप्टी कलेक्टर हैं, थानेदार हैं, फ़ौजी अफ़सर हैं, ऐक्टर हैं, पेन्टर हैं, साहित्यकार हैं लेकिन कम्पनियों में हिस्सा लेकर डिवीडेन्ड और मुनाफ़ा भी कमाते हैं, ये लोग सब वैश्य हैं या कुछ और ?

फ़र्ज़ कर लीजिये कि किसी देश में कुल रेलवे कम्पनियां महाजन चला रहे हैं. खान का काम भी महाजनों के हाथ में है. सरकारी फ़ौज और पुलिस को जिस सामान और जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है वह सब महाजनों से मोल लिये जाते हैं. लोहे के कारखाने, हर धात की खानें, मोटरों के कारखाने और दूसरे सब बड़े बड़े कारखाने महाजनों के हाथ में हैं. बैंक भी महाजनों के हाथ में हैं, तो ये महाजन और इनके लाखों कर्मचारी तो 'वैश्य' या 'ताजिर' ठहरे. लेकिन समाजवादी या साम्यवादी देश में या मिली जुली आर्थिक प्रणाली या इन्तज़ाम वाले देशों में सब कारबार सरकारी मिल्कीयत हों और बंधी हुई तनख्वाह पाने वाले सरकारी कर्मचारी या मुलाज़िम ये सब कारबार चला रहे हों तब यह सरकारी मुलाज़िम या कर्मचारी और इन विभागों के मिनिस्टर 'आमिल' या 'क्षत्री' हो जायँगे क्योंकि यह सारा कारबार अब हुकूमत कर रही है. इसका मतलब यह निकला कि एक ही काम करने वाले, एक ही तरह की लियाक़त रखनेवाले कहीं क्षत्री कहलाए और कहीं वैश्य. जब बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे कम्पनी को या इम्पीरियल बैंक को भारत सरकार ने ले लिया था या जब कानपुर के पावर हाउस को कम्पनी से भारत सरकार ने ले लिया तो इनके सब कर्मचारी चुटकी बजाते वैश्य से क्षत्री हो गए ! इस युग की हुकूमत, हुकूमत कम करती है, इन्तज़ाम ज़्यादा करती है.

दिल्ली की हुकूमत और सूबों की हुकूमत की विज़ारतों पर एक नज़र डालिये. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद विद्वान और धर्माचार्य होने के नाते ब्राह्मण हैं और शासक होने के नाते क्षत्री. पंडित कैलाश नाथ काटजू स्वभाव और वकालत के पेशे के नाते ब्राह्मण थे और डिफ़ेन्स मिनिस्टर होने के नाते वे क्षत्री बन गए. पंडित जवाहरलाल भी बैरिस्टर (ब्राह्मण) से पल मारते क्षत्री बन गए. एकाध और मिसालें लीजिये. स्वर्गीय श्री रमेश चन्द्र दत्त बड़े भारी शासक (हाकिम) थे, और अनेक उपन्यास, रामायन और महाभारत का अंग्रेज़ी कविता में अनुवाद, अर्थ शास्त्र पर पुस्तकें भी हाकिम होते हुए लिखते रहे यानी एक ही समय वे ब्राह्मण भी थे, और क्षत्री भी थे. स्वर्गीय श्री सी. वाई.

وئی پنچایت (جس میں کئی طرح کے کام کرنے والے شریک ہوں) یا کوئی سرکاری محکمہ یا سرکاری کرمچاری تنخواہ پاکر نہیں کرسکتے ؟ تو پھر ویشیہ شبد کا کیا ارتھ ہے ؟ اور اُن لوگوں کو آپ کیا کہینگے جو وکیل ہیں، زمیندار ہیں، پروفیسر ہیں، ڈپٹی کلکٹر ہیں، تھانیدار ہیں، فوجی افسر ہیں، ایکٹر ہیں، پینٹر ہیں، ساہتیہ کار ہیں لیکن کمپنیوں میں حصہ لیکر ڈویڈینڈ اور منافع بھی کماتے ہیں، یہ لوگ سب ویشیہ ہیں یا کچھ اور ؟

فرض کر لیجئے کہ کسی دیش میں کل ریلوے کمپنیاں مہاجن چلا رہے ہیں. کھان کا کام بھی مہاجنوں کے ہاتھ میں ہے. سرکاری فوج اور پولس کو جس سامان اور جن چیزوں کی ضرورت پڑتی ہے وہ سب مہاجنوں سے مول لیئے جاتے ہیں. لوہے کے کارخانے، ہر دھات کی کھانیں، موٹروں کے کارخانے اور دوسرے سب بڑے بڑے کارخانے مہاجنوں کے ہاتھ میں ہیں. بینک بھی مہاجنوں کے ہاتھ میں ہیں، تو یہ مہاجن اور اِن کے لاکھوں کرمچاری تو 'ویشیہ' یا 'تاجر' ٹھہرے. لیکن سماج وادی یا سامیہ وادی دیش میں یا ملی جلی آرتھک پرنالی یا مالی انتظام والے دیشوں میں یہ سب کار بار سرکاری ملکیت ہوں اور بندھی ہوئی تنخواہ پانے والے سرکاری کرمچاری یا ملازم یہ سب کاروبار چلا رہے ہوں، تب یہ سرکاری ملازم یا کرمچاری اور اِن وبھاگوں کے منسٹر 'عامل' یا 'چھتری' ہو جائیں گے کیونکہ یہ سارا کاربار اب حکومت کر رہی ہے. اِس کا مطلب یہ نکلا کہ ایک ہی کام کرنے والے، ایک ہی طرح کی لیاقت رکھنے والے کہیں چھتری کہلائے اور کہیں ویشیہ. جب بی. این. ڈبلیو. ریلوے کمپنی کو یا امپیریل بینک کو بھارت سرکار نے لے لیا تھا یا جب کانپور کے پاورہاؤس کو کمپنی سے بھارت سرکار نے لے لیا تو اِن کے سب کرمچاری چٹکی بجاتے ویشیہ سے چھتری ہو گئے ! اس یگ کی حکومت، حکومت کم کرتی ہے، انتظام زیادہ کرتی ہے.

دلی کی حکومت اور صوبوں کی حکومت کی وزارتوں پر ایک نظر ڈالیئے. مولانا ابوالکلام آزاد ودوان اور دھرماچاریہ ہونے کے ناتے براہمن ہیں اور شاسک ہونے کے ناتے چھتری. پنڈت کیلاش ناتھ کاٹجو سوبھاؤ اور وکالت کے پیشے کے ناتے براہمن تھے اور ڈفینس منسٹر ہونے کے ناتے وہ چھتری بن گئے. پنڈت جواہر لال بھی بیرسٹر (براہمن) سے پل مارتے چھتری بن گئے. ایک آدھ اور مثالیں لیجئے. سورگیہ شری رمیش چندر دت بڑے بھاری شاسک (حاکم) تھے، اور انیک اپنیاس، راماین اور مہابھارت کا انگریزی کویتا میں انوواد، ارتھ شاستر پر پستکیں بھی حاکم ہوتے ہوئے لکھتے رہے یعنی ایک ہی سمئے وہ براہمن بھی تھے اور چھتری بھی تھے. سورگیہ شری سی. وائی

चिंतामनी सम्पादक थे, राजनीति के पंडित थे और मिनिस्टर भी बन गये. बाद को फिर सम्पादक बन बैठे. ग्लैडस्टन ग्रीक साहित्य का पंडित था, डिज़रेली उच्चकोटि का उपन्यासकार था और ये दोनों इंगलिस्तान के मुख्य मंत्री भी बन गए. लेनिन धुरंधर विद्वान होता हुआ अपने युग का सबसे बड़ा क्षत्री निकला यानी 'आलिम' भी था और 'आमिल' भी. महाकवि गेटे के बारे में कहा जाता है कि जहां वह रहता था वहां से मीलों तक उसके सरीखा कोई कारबारी आदमी नहीं था. मिल्टन सेक्रेटरी था क्रामवेल का. अरस्तू मंत्री था सिकन्दर का. सीज़र ने महान धर्म शास्त्र लिखा. नेपोलियन ने मनुस्मृति से टक्कर लेने वाला क़ानून बनाया. अब 'आलिम' और 'आमिल' की तक़सीम कहां गई ? नये रूस में बीसों हज़ार आदमी मज़दूर से मिलों के मैनेजर, सेनापति और महान शासक बन बैठे. यही चीन में भी हुआ है. इतिहास ने और समाज की तरक़्क़ी ने आलिम, आमिल, ताजिर और मज़दूर के भेद भाव को तोड़ फोड़ कर रख दिया.

क्षत्री किस को कहा जाय ? अगर किसी समाज में दो तीन करोड़ आदमी 'स्वभाव से' क्षत्री हैं तो गोया उस देश में फ़ौज, पुलिस, जहाज़ी सैनिक, हवाई सैनिक, छोटे और बड़े शासक इनमें किसी की तादाद घटाई या बढ़ाई नहीं जा सकती. रूस में हाल में शायद पाँच लाख सैनिक फ़ौज से हटाकर कारख़ानों में लगा दिये गए हैं, गोया क्षत्री से शूद्र बना दिये गए हैं. हिटलर को रूस के जिन फ़ौजियों और गोरिल्लों ने पीछे ढकेल दिया, च्याँग काई शेक को, मैकारथर को और जापानी हमला आवरों को जिन चीनियों ने चीन से निकाल कर देश की रक्षा की उनमें दस पन्द्रह फ़ीसदी ही बाक़ायदा फ़ौजी थे. बाक़ी सब किसान और मज़दूर थे, और देश रक्षा का काम ख़तम करके फिर किसान, मज़दूर और कारीगर बन गए. लड़ाई हो या शासन, ऐन्टी करपशन आन्दोलन हो या खेती और कारख़ानों का बड़े पैमानों पर इन्तज़ाम हो, हकूमत के ऐसे ही सैकड़ों कामों के लिये पूरे समाज के आज़ाद सहयोग और सूझ बूझ और तजरबे की ज़रूरत पड़ती है. मनुष्य साधारण तौर पर नागरिक होते हैं, आलिम, आमिल, ताजिर और मज़दूर नहीं होते. नई शिक्षा लोगों को एकफ़न्ना नहीं बनाएगी. किसी को लकीर का फ़क़ीर नहीं बनाएगी, बल्कि कई तरह की सलाहियतें देने वाली (Multipurpose Education) होगी. आबादी का ज़्यादा हिस्सा कई तरह के काम कर सकेगा या यूँ कहें कि एक काम छोड़कर दूसरा काम भी कर सकेगा. और नए समाज में सब लोग हर रोज़ ऊँचे क़िस्म के मनोरंजनों या मशग़लों में भी समय बिताएंगे. मुट्ठी भर हकूमत करने वाले लोगों के इन्तज़ाम और राज

چنتامنی سمپادک تھے' راج نیتی کے پنڈت تھے اور منسٹر بھی بن گئے ۔ بعد کو پھر سمپادک بن بیٹھے ۔ گلیڈسٹن گریک ساہتیہ کا پنڈت تھا' ڈزریلی اُوچھ کوٹی کا اُپنیاسکار* تھا اور یہ دونوں اِنگلستان کے مکھیہ منتری بھی بن گئے ۔ لینن دھورندھر ودوان ہوتا ہوا اپنے یگ کا سب سے بڑا چھتری نکلا یعنی 'عالم' بھی تھا اور عامل بھی ۔ مہا کوی گیٹے کے بارے میں کہا جاتا ھے کہ جہاں وہ رھتا تھا وہاں سے میلوں تک اُس کے سریکھا کوئی کاربار‏ی آدمی نہیں تھا ۔ ملٹن سیکریٹری تھا کرامویل کا ۔ ارسطو منتری تھا سکندر کا ۔ سیزر نے مہان دھرم شاستر لکھا ۔ نیپولین نے منو اِسمرتی سے ٹکر لینے والا قانون بنایا ۔ اب 'عالم' 'اور عامل' کی تقسیم کہاں گئی ؟ نئے روس میں بیسوں ہزار آدمی مزدور سے ملوں کے منیجر' سینا پتی اور مہان شاسک بن بیٹھے ۔ یہی چین میں بھی ہوا ھے ۔ اِتہاس نے اور سماج کی ترقی نے عالم' عامل' تاجر اور مزدور کے بھید بھاؤ کو توڑ پھوڑ کر رکھ دیا ۔

چھتری کس کو کہا جائے ؟ اگر کسی سماج میں دو تین کروڑ آدمی 'سوبھاؤ' سے چھتری ھیں تو گویا اُس دیش میں فوج' پولس' جہازی سینک' ہوائی سینک' چھوٹے اور بڑے شاسک اِن میں کسی کی تعداد گھٹائی یا بڑھائی نہیں جاسکتی ۔ روس میں حال میں شاید پانچ لاکھ سینک فوج سے ھٹا کر کارخانوں میں لگا دیئے گئے ھیں' گویا چھتری سے شودر بنا دیئے گئے ھیں ۔ ھٹلر کو روس کے جن فوجیوں اور گوریلوں نے پیچھے ڈھکیل دیا' چیانگ کائی شیک کو' میکارتھر کو اور جاپانی حملہ آوروں کو جن چینیوں نے چین سے نکال کر دیش کی رکشا کی اُن میں دس پندرہ فیصدی ھی باقاعدہ فوجی تھے ۔ باقی سب کسان اور مزدور تھے' اور دیش رکشا کا کام ختم کر کے پھر کسان' مزدور اور کاریگر بن گئے ۔ لڑائی ھو یا شاسن' اینٹی کرپشن آندولن ھو یا کھیتی اور کارخانوں کا بڑے پیمانوں پر انتظام ھو' حکومت کے ایسے ھی سیکڑوں کاموں کے لئے پورے سماج کے آزاد سہیوگ اور سوجھ بوجھ اور تجربے کی ضرورت پڑتی ھے ۔ منوشیہ سادھارن طور پر ناگرک ھوتے ھیں' عالم' عامل' تاجر اور مزدور نہیں ھوتے ۔ نئی شکشا لوگوں کو ایک فنا نہیں بنائیگی ۔ کسی کو لکیر کا فقیر نہیں بنائیگی' بلکہ کسی طرح کی صلاحتیں دینے والی (Multipurpose Education) ھوگی ۔ آبادی کا ذیادہ حصہ کئی طرح کے کام کر سکیگا یا یوں کہیں کہ ایک کام چھوڑ کر دوسرا کام بھی کر سکیگا ۔ اور نئے سماج میں سب لوگ ھر روز اونچے قسم کے منورنجنوں یا مشغلوں میں بھی سمئے بتائینگے ۔ مٹھی بھر حکومت کرنے والے لوگوں کے انتظام اور راج

पाट के दिन गए. आगे का पंचायती शासन और पुरानी वर्ण व्यवस्था साथ साथ नहीं चल सकते.

रही ब्राह्मणों की बात. इस लेख के शुरू में मैंने बताया है सौ फ़ीसदी लोग संसार साहित्य को पढ़ और समझ सकते हैं. तो क्या साहित्य, धर्म, विज्ञान की किताबें लिखने वाले ब्राह्मण हैं और इन्हें समझकर आनन्द लेने वाले शूद्र हैं ? महात्मा टालस्टाय ने तो ऐसी चीज़ को कला या साहित्य माना ही नहीं जिसे किसान मज़दूर न समझ सकें. महात्मा टालस्टाय के बयान में थोड़ा सा मुबालग़ा हो सकता है लेकिन बुनियादी तौर पर उनके बयान को ठीक मानना पड़ेगा. लेखक ब्राह्मण और पाठक शूद्र ! यह कैसे हो सकता है ? सब में रचनात्मक शक्ति नहीं होती. लेकिन यह भी कहा गया है कि लन्दन के जन साधारन शेक्सपीयर के नाटकों को एक एक आने का टिकट लेकर देखते थे. यह भी कहा गया है कि जब जब वे नाटक देखते समय अच्छी तरह उसका आनन्द लेते थे उस समय उनकी आत्माएँ शेक्शपीयर की आत्मा को छू लेती थीं. लन्दन के "शूद्र" Groundlings कहलाते थे. इसी तरह जो बहुत कुशल टेकनालजिस्ट है या मूर्ति-निर्माता है, या चित्रकार है या सर्जन अथवा डाक्टर है, उनको आप क्या कहेंगे ? कबीर जुलाहे थे, रविदास मोची थे, सदना क़साई थे, पलटूदास केवट थे, स्पाइनोज़ा ऐनक बनाता था और संसार का महान दार्शनिक था. सुक़रात आत्मज्ञानी और सिपाही था, द्रोणाचार्य धनुर्विद्या में निपुण थे, कृष्ण, समाज में उनका कोई भी काम रहा हो, लेकिन गीता के ज्ञानेश्वर थे, राबट बर्न्स किसान था, इन सब को किस वर्ण में रक्खा जाय ?

अन्त में मैं यही कहूँगा कि वर्ण व्यवस्था एक ऐसी तहज़ीब और एक ऐसे समाजी इन्तज़ाम की पैदावार है जिसमें दस, पन्द्रह फ़ीसदी आदमियों को सुख और आराम से रखने के लिये अस्सी नव्वे फ़ीसदी आदमी जांगर तोड़ मेहनत करते थे और दरिद्र भी थे. यह ऐटम, मशीन और साम्यवाद का युग है. इस युग में जब इसकी सम्भावनायें या इमकानात पूरे होंगे तो रोज़ी कमाने के लिये किसी को चौबीस घंटे में घंटे दो घंटे से अधिक काम न करना पड़ेगा और वह काम भी बहुत हलका होगा. बाक़ी समय में सभी लोग कला, काव्य, साहित्य या अदब के दूसरे रूप विज्ञान और अनेक विद्याओं से दिलचस्पी लेंगे. केवल ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य कहे जाने वाले बहुत कम लोग होंगे. शूद्र कोई होगा ही नहीं. ऐसी मिली जुली लियाक़त वाले सब होंगे जिसमें ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य के गुन-कर्म-स्वभाव मिले हुए हों. ऐसा होकर ही सभ्यता या तहज़ीब का मक़सद पूरा होगा. आदमी पेशे से नहीं पहचाना जायगा बल्कि फ़ुरसत के लमहों में वह क्या करता है इससे पहचाना

پاٹ کے دن گئے . آگے کا پنچایتی شاسن اور پرانی ورن ویوستھا ساتھ ساتھ نہیں چل سکتے .

رہی براہمنوں کی بات . اِس لیکھ کے شروع میں میں نے بتایا ہے سو فیصدی لوگ سنسار ساہتیہ کو پڑھ اور سمجھ سکتے ہیں . تو کیا ساہتیہ' دھرم' وگیان کی کتابیں لکھنے والے براہمن ہیں اور اِنہیں سمجھکر آنند لینے والے شودر ہیں ؟ مہاتما ٹالسٹائے نے تو ایسی چیز کو کلا یا ساہتیہ مانا ہی نہیں جسے کسان مزدور نہ سمجھ سکیں . مہاتما ٹالسٹائے کے بیان میں تھوڑا سا مبالغہ ہو سکتا ہے لیکن بنیادی طور پر اُن کے بیان کو ٹھیک ماننا پڑیگا . لیکھک براہمن اور پاٹھک شودر ! یہ کیسے ہو سکتا ہے ؟ سب میں رچناتمک شکتی نہیں ہوتی . لیکن یہ بھی کہا گیا ہے کہ لندن کے جن سادھارن شیکسپیر کے ناٹکوں کو ایک ایک آنے کا ٹکٹ لیکر دیکھتے تھے . یہ بھی کہا گیا ہے کہ جب جب وے ناٹک دیکھتے سمئے اچھی طرح اُس کا آنند لیتے تھے تو اُس سمئے اُن کی آتمائیں شیکسپیر کی آتما کو چھو لیتی تھیں. لندن کے یہ "شودر" Groundlings کہلاتے تھے . اِسی طرح جو بہت کشل ٹیکنالجسٹ ہے یا مورتی نرماتا ہے' یا چترکار ہے یا سرجن اتھوا ڈاکٹر ہے اُنھیں آپ کیا کہینگے ؟ کبیر جولاہے تھے' رویداس موچی تھے' سدنا قصائی تھے' پلٹو داس کیوٹ تھے' سپائی نوزا عینک بناتا تھا اور سنسار کا مہان دارشنک تھا . سقراط' آتم گیانی اور سپاہی تھا' دورناچاریہ دھنر ودیا میں نپن تھے' کرشن' سماج میں اُن کا کوئی بھی کام رہا ہو' لیکن گیتا کے گیانیشور تھے' رابرٹ برنس کسان تھا' اِن سب کو کس ورن میں رکھا جائے ؟

انت میں میں یہی کہونگا کہ ورن ویوستھا ایک ایسی تہذیب اور ایک ایسے سماجی انتظام کی پیداوار ہے جس میں دس' پندرہ فیصدی آدمیوں کو سکھ اور آرام سے رکھنے کے لئے اسی نوے فیصدی آدمی جانگر توڑ محنت کرتے تھے اور دردر بھی تھے. یہ ایٹم' مشین اور سامیہ واد کا یگ ہے . اِس یگ میں جب اِس کی سمبھاونائیں یا اِمکانات پورے ہونگے تو روزی کمانے کے لئے کسی کو چوبیس گھنٹے میں گھنٹے دو گھنٹے سے ادھک کام نہ کرنا پڑیگا اور وہ کام بھی بہت ہلکا ہوگا . باقی سمئے میں سبھی لوگ کلا' کاویہ' ساہتیہ یا اُدب کے دوسرے روپ وگیان اور انیک ودیاؤں سے دلچسپی لینگے. کیول براہمن' چھتری اور ویشیہ کہے جانے والے بہت کم لوگ ہونگے. شودر کوئی ہوگا ہی نہیں. ایسی ملی جلی لیاقت والے سب ہونگے جسمیں براہمن' چھتری اور ویشیہ کے گن-کرم- سبھاؤ ملے ہوئے ہوں. ایسا ہو کر ہی سبھیتا یا تہذیب کا مقصد پورا ہوگا . آدمی پیشے سے نہیں پہچانا جائیگا بلکہ فرصت کے لمحوں میں وہ کیا کرتا ہے اُس سے پہچانا

जायेगा. जीवन एक कला बन जायगा जिसका कलाकार हर आदमी होगा. और जीवन के कलाकारों में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र का भेद नहीं होगा. वर्गहीन समाज इसी तरह बनेगा.

जब हिटलर की फ़ौज ने रूस पर हमला किया तो कई जगहों से रूसी फ़ौज को भागना पड़ा. मामूली सिपाही भागने की जल्दी में हज़ारों की तादाद में अपने बैग और सामान छोड़ गया जिनमें किताबें भी थीं. इन बैगों से रूसी भाषा में अरस्तू की किताबें, साइंस की अनेक किताबें, दर्शन की अनेक किताबें, शेक्सपीयर और दूसरे शायरों की कई किताबें बरामद हुईं. यह देखकर जर्मन फ़ौजी अफ़सरों ने कहा कि इस क़ौम को हम फ़तह नहीं कर सकते. वर्ण व्यवस्था को मिटा कर यह क़ौम और यह क़ौमी ज़िन्दगी बनाई गई है न कि वर्ण व्यवस्था के निज़ाम को मानकर. मिज़ाजों और तबीयतों में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र का फ़र्क़ नहीं होता बल्कि फ़र्क़ यह होता है कि किसी को शायरी पसंद है, किसी को फ़लसफ़ा पसंद है, किसी को उपन्यास पसन्द है, किसी को साइन्स और इनमें भी ख़ास ख़ास किस्म की रचनाएँ. वर्ण व्यवस्था मिटने पर भी यह फ़र्क़ क़ायम रहेंगे. जहां सब पढ़े लिखे होंगे, काफ़ी समझदार होंगे, समाज में सब के बराबर हैसियत रखने वाले आदमी होंगे, ख़ुशहाल होंगे, हाथ पांव की कड़ी मेहनत से आज़ाद होंगे, ज़िन्दगी की ज़रूरतों के लिये जिस समाज में हर एक को बहुत कम काम करना पड़ेगा, ऐसे समाज में वर्ण व्यवस्था की कहां ज़रूरत ?

जاریگا. جیون ایک کلا بن جایگا جس کا کلاکار ہر آدمی ہوگا. اور جیون کے کلاکاروں میں براہمن' چھتری' ویشیہ اور شودر کا بھید نہیں ہوگا' ورگ ہین سماج اِسی طرح بنیگا.

جب ہٹلر کی فوج نے روس پر حملہ کیا تو کئی جگہوں سے روسی فوج کو بھاگنا پڑا. معمولی سپاہی بھاگنے کی جلدی میں ہزاروں کی تعداد میں اپنے بیگ اور سامان چھوڑ گیا جن میں کتابیں بھی تھیں. ان بیگوں سے روسی بھاشا میں ارسطو کی کتابیں' سائنس کی انیک کتابیں' درشن کی انیک کتابیں' شیکسپیر اور دوسرے شاعروں کی کئی کتابیں برامد ہوئیں. یہ دیکھ کر جرمن فوجی افسروں نے کہاکہ اِس قوم کو ہم فتح نہیں کر سکتے. ورن ویوستھا کو مٹا کر یہ قوم اور یہ قومی زندگی بنائی گئی ہے نہ کہ ورن ویوستھا کے نظام کو مان کر. مزاجوں اور طبیعتوں میں براہمن' چھتری' ویشیہ اور شودر کا فرق نہیں ہوتا بلکہ فرق یہ ہوتا ہے کہ کسی کو شاعری پسند ہے' کسی کو فلسفہ پسند ہے' کسی کو اُپنیاس پسند ہے' کسی کو سائنس' اور اِن میں بھی خاص خاص قسم کی رچنائیں. ورن ویوستھا مٹنے پر بھی یہ فرق قایم رہینگے. جہاں سب پڑھے لکھے ہونگے' کافی سمجھدار ہونگے' سماج میں سب کے برابر حیثیت رکھنے والے آدمی ہونگے' خوشحال ہونگے' ہاتھ پاؤں کی کڑی محنت سے آزاد ہونگے' زندگی کی ضرورتوں کے لئے جس سماج میں ہر ایک کو بہت کم کام کرنا پڑیگا' ایسے سماج میں ورن ویوستھا کی کہاں ضرورت ؟

सामाजिक जीवन में मैं एक काम करने की योग्यता रखता हूँ, तुम कोई दूसरा काम करने की योग्यता रखते हो. तुम देश का शासन कर सकते हो, मैं पुराने जूतों की मरम्मत कर सकता हूँ. लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि तुम मुझसे बड़े हो. मैं देश का शासन नहीं कर सकता तो तुम भी जूतों की मरम्मत नहीं कर सकते. मैं जूतों की मरम्मत करने में कुशल हूँ और तुम वेद पढ़ने में. लेकिन यह कोई वजह नहीं कि तुम मेरे सर पर पांव रक्खो.

—स्वामी विवेकानन्द

ساماجک جیون میں میں ایک کام کرنے کی یوگتا رکھتا ہوں' تم کوئی دوسرا کام کرنے کی یوگتا رکھتے ہو. تم دیش کا شاسن کرسکتے ہو' میں پرانے جوتوں کی مرمت کرسکتا ہوں. لیکن اِس سے یہ ثابت نہیں ہوتا کہ تم مجھ سے بڑے ہو. میں دیش کا شاسن نہیں کرسکتا تو تم بھی جوتوں کی مرمت نہیں کرسکتے. میں جوتوں کی مرمت کرنے میں کشل ہوں اور تم وید پڑھنے میں. لیکن یہ کوئی وجہ نہیں کہ تم میرے سر پر پاؤں رکھو.

——سوامی ویویکانند

तपेदिक़ का टीका

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

इस टीके की कोई साइंसी बुनियाद नहीं

मैं इस विषय की जितनी जितनी जांच करता हूँ और जितना जितना उस पर ग़ौर करता हूँ उतना उतना ही मेरा यह विश्वास और अधिक पक्का होता जाता है कि इस बड़े पैमाने पर बी० सी० जी० के टीके लगाने का काम 'नीम हकीम ख़तरए जान' वाली चीज़ है और इस टीके के लिये कोई सच्ची साइंसी बुनियाद है ही नहीं. अधिकतर तो इससे किसी तरह का कोई फ़ायदा नहीं होता और काफ़ी सूरतों में इससे नुक़सान होता है. जिन सूरतों में इससे नुक़सान हो जाता है उनमें कह दिया जाता है कि जिस आदमी को टीके से नुक़सान हुआ है उसमें 'बीमारी का मुक़ाबला करने की शक्ति पहले ही से कम थी.' भारत में इस टीके का काम जिस तरह बड़े पैमाने पर चलाया जा रहा है उसमें सारी बातें ख़तरनाक और अनाड़ीपन की हैं. दूसरे सभ्य देशों में जहां कहीं यह टीका आज़माया गया है बड़ी बड़ी अहतियातें बरती जाती थीं. भारत के बच्चों पर आज उसी तरह के तजरबे किये जा रहे हैं जिस तरह के जंग के बाद नीम जंगली और पराधीन क़ौमों के अन्दर इन इलाक़ों में किये गये थे जो जंग से वीरान और बरबाद हो गये थे. सरकार की तरफ़ से बार बार कहा जा रहा है और अख़बारों में निकल रहा है कि इस साल इतने लाख बच्चे तपेदिक़ के ख़तरे से सदा के लिये बचा दिये गये और अगले दो साल के अन्दर इतने करोड़ और बच्चे बचा दिये जायेंगे, वग़ैरा. इस बारे में जनता में जो प्रोपेगैंडा किया जाता है वह बहुत धोखे का है. क्योंकि तपेदिक़ के हामी बड़े से बड़े डाक्टरों का दावा केवल इतना ही है कि टीका लगने के दो साल तक बच्चे को तपेदिक़ नहीं होगा और दो साल के अन्दर भी अगर कहीं ज़ोर का तपेदिक़ फैल गया और बच्चे को कहीं से लग गया तो उस हालत में भी टीका उसे नहीं बचा सकेगा और इस दो साल की मीआद को बढ़ाने के लिये दोबारा टीका लगाने का भी कोई सवाल नहीं होता. सब डाक्टरों की यह साफ़ राय है कि दोबारा बी० सी० जी० का टीका लगाना ख़तरनाक होगा. डाक्टरों-डाक्टरों की राय में फ़र्क़ इस बात पर है कि शुरू के यानी पहले एक टीके से भी सचमुच कुछ फ़ायदा होता है या नहीं, या फ़ायदे की जगह और उल्टा नुक़सान होता है. इसलिये अब हमें ख़ुद अपना नफ़ा नुक़सान सोचना है.

تپ دق کا ٹیکہ

شری چکرورتی راجا گوپالا چاری

اِس ٹیکے کی کوئی سائنسی بنیاد نہیں

میں اِس وشے کی جتنی جتنی جانچ کرتا ہوں اور جتنا جتنا اُس پر غور کرتا ہوں اُتنا اُتنا ہی میرا یہ وشواس اور ادھک پکا ہوتا جاتا ہے کہ اِس بڑے پیمانے پر بی۔ سی۔ جی کے ٹیکے لگانے کا کام 'نیم حکیم خطرۂ جان' والی چیز ہے اور اِس ٹیکے کے لئے کوئی سچی سائنسی بنیاد ہے ہی نہیں۔ ادھک تر تو اِس سے کسی طرح کا کوئی فائیدہ نہیں ہوتا اور کافی صورتوں میں اِس سے نقصان ہوتا ہے۔ جن صورتوں میں اِس سے نقصان ہو جاتا ہے اُن میں کہہ دیا جاتا ہے کہ جس آدمی کو ٹیکے سے نقصان ہوا ہے اُس میں 'بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکتی پہلے ہی سے کم تھی'۔ بھارت میں اِس ٹیکے کا کام جس طرح بڑے پیمانے پر چلایا جا رہا ہے اُس میں ساری باتیں خطرناک اور اناڑی پن کی ہیں۔ دوسرے سبھیہ دیشوں میں جہاں کہیں یہ ٹیکہ آزمایا گیا ہے بڑی بڑی احتیاطیں برتی جاتی تھیں۔ بھارت کے بچوں پر آج اُسی طرح کے تجربے کئے جا رہے ہیں جس طرح کے جنگ کے بعد نیم جنگلی اور پرادھین قوموں کے اندر اُن علاقوں میں کئے گئے تھے جو جنگ سے ویران اور برباد ہو گئے تھے۔ سرکار کی طرف سے بار بار کہا جا رہا ہے اور اخباروں میں نکل رہا ہے کہ اِس سال اِتنے لاکھ بچے تپ دق کے خطرے سے سدا کے لئے بچا دیئے گئے اور اگلے دو سال کے اندر اِتنے کروڑ اور بچے بچا دیئے جائینگے' وغیرہ۔ اِس بارے میں جنتا میں جو پروپیگنڈا کیا جاتا ہے وہ بہت دھوکے کا ہے۔ کیونکہ تپ دق کے حامی بڑے سے بڑے ڈاکٹروں کا دعویٰ کیول اِتنا ہی ہے کہ ٹیکہ لگنے کے دو سال تک بچے کو تپ دق نہیں ہوگا اور دو سال کے اندر بھی اگر کہیں زور کا تپ دق پھیل گیا اور بچے کو کہیں سے لگ گیا تو اُس حالت میں بھی ٹیکہ اُسے نہیں بچا سکے گا اور اِس دو سال کی میعاد کو بڑھانے کے لئے دو بارہ ٹیکہ لگانے کا بھی کوئی سوال نہیں ہوتا۔ سب ڈاکٹروں کی یہ صاف رائے ہے کہ دوبارہ بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ لگانا خطرناک ہوگا۔ ڈاکٹروں - ڈاکٹروں کی رائے میں فرق اِس بات پر ہے کہ شروع کے یعنی پہلے ایک ٹیکے سے بھی سچ مچ کچھ فائدہ ہوتا ہے یا نہیں' یا فائدہ کی جگہ اور اُلٹا نقصان ہوتا ہے۔ اِس لئے اب ہمیں خود اپنا نفع نقصان سوچنا ہے۔

यह चीज़ सारे राष्ट्र के जीवन के साथ सम्बन्ध रखती है. जब बड़े बड़े विद्वान डाक्टरों की राय इसमें एक दूसरे से नहीं मिलती! तो यह तो एक ऐसी बात नहीं है जिसमें बहुमत या अल्पमत यानी डाक्टरों की गिन्ती पर इसका फ़ैसला छोड़ दिया जाये. साइंस जब नये नये मैदानों में बढ़ेगी तो साइंसदानों की रायें अलग अलग होंगी ही. ऐसे मामलों में, जहां आम जनता पर उसका असर न पड़ता हो, वहां हम साइंसदानों पर यह बात छोड़ सकते हैं कि वह ख़ुद अपने मतभेद को तय कर लें. लेकिन जहाँ आम जनता की भलाई या बुराई, उनकी जिन्दगी और मौत पर उसका असर पड़ता, हो तो हम इस तरह का फ़ैसला केवल साइंसदानों पर नहीं छोड़ सकते.

मुझे पूरा विश्वास है कि वह दिन आने वाला है कि जब दुनिया के सब साइंसदां बी० सी० जी० की बाबत इस नतीजे पर पहुँच जायेंगे कि इससे कोई फ़ायदा नहीं है, वह अपने इस फ़ैसले का ऐलान कर देंगे, बी० सी० जी० का टीके लगाना छोड़ देंगे और इसे भूल जायेंगे. लेकिन भारत में चूंकि सरकार का तन्दुरुस्ती का महकमा इस ख़िलाफ़ साइंस काम की तरफ़ अपना सारा वज़न डाल रहा है इसलिये यहां के साइंसदानों के इस टीके को छोड़ देने में देर लगेगी. इस बीच सारे मुल्क के अन्दर हमारे बच्चों और हमारे अच्छे से अच्छे होनहार बच्चों के अन्दर जान बूझ कर इतने बड़े पैमाने पर एक ऐसी बीमारी के जिन्दा कीड़े दाख़िल किये जा रहे हैं जो मोहलिक से मोहलिक बीमारियों में से है. कई बड़े से बड़े और मशहूर साइंसदां यह कह चुके हैं कि उन्हें इसका बहुत बड़ा डर है कि आदमी के जिस्म के अन्दर पहुँच कर यह कीड़े थोड़े ही दिनों के बाद क्या कुछ नही बन सकेंगे और क्या कुछ नहीं कर सकेंगे. फिर जब लाखों और करोड़ों आदमियों पर उसका असर पड़ता है और इतनी तेज़ी के साथ इतने बड़े पैमाने पर टीके लगने की वजह से एक से दूसरे को बीमारी लगने का मौक़ा रहता है तो यह ख़तरा और भी बढ़ जाता है.

इस टीके के लगाने की ग़रज़ यह बताई जाती है कि बच्चों को तपेदिक़ की बीमारी न होने पावे. अव्वल तो भारत में तपेदिक़ से मरने के जो आंकड़े हमें आम तौर पर बताए जाते हैं वह ठीक आंकड़े नहीं हैं. वह केवल अंदाज़े से तैयार कर लिये गये हैं. दूसरी यह बात कि यह बीमारी प्लेग या वबा की तरह इस तरह न आज तक कभी फैली और न फैलेगी कि उससे किसी के लिये यह जायज़ हो जाए कि वह सब बच्चों के जिस्मों के अन्दर एक इस तरह का ज़हर दाख़िल कर दे जिसकी बाबत अभी तक यह साबित नहीं हुआ है कि वह नुक़सान नहीं करता. इस टीके के लिये जो दावा किया जाता है वह भी यह नहीं है कि उससे बच्चा

یہ چیز سارے راشٹر کے جیون کے ساتھ سمبندھ رکھتی ہے ۔ جب بڑے بڑے ودوان ڈاکٹروں کی رائے اِس میں ایک دوسرے سے نہیں ملتی تو ایک ایسی بات نہیں ہے جس میں بہومت یا الپمت یعنی ڈاکٹروں کی گنتی پر اِس کا فیصلہ چھوڑ دیا جائے. سائنس جب نئے نئے میدانوں میں بڑھیگی تو سائنسدانوں کی رائیں الگ الگ ہونگی ہی ۔ ایسے معاملوں میں جہاں عام جنتا پر اُس کا اثر نہ پڑتا ہو وہاں ہم سائنس دانوں پر یہ بات چھوڑ سکتے ہیں کہ وہ خود اپنے مت بھید کو طے کر لیں ۔ لیکن جہاں عام جنتا کی بھلائی یا برائی، اُن کی زندگی اور موت پر اُس کا اثر پڑتا ہو تو ہم اِس طرح کا فیصلہ کیول سائنس دانوں پر نہیں چھوڑ سکتے ۔

مجھے پورا وشواس ہے کہ وہ دن آنے والا ہے جب دنیا کے سب سائنس داں بی. سی. جی. کی بابت اِس نتیجے پر پہنچ جائینگے کہ اِس سے کوئی فائیدہ نہیں ہے، وہ اپنے اِس فیصلے کا اعلان کر دینگے، بی. سی. جی کے ٹیکے لگانا چھوڑ دینگے اور اُسے بھول جائینگے ۔ لیکن بھارت میں چونکہ سرکار کا تندرستی کا محکمہ اِس خلاف سائنس کام کی طرف اپنا سارا وزن ڈال رہا ہے اِس لئے یہاں کے سائنس دانوں کے اِس ٹیکے کو چھوڑ دینے میں دیر لگے گی ۔ اِس بیچ سارے ملک کے اندر ہمارے بچوں اور ہمارے اچھے سے اچھے ہونہار بچوں کے اندر جان بوجھ کر اتنے بڑے پیمانے پر ایک ایسی بیماری کے زندہ کیڑے داخل کئے جا رہے ہیں جو مہلک سے مہلک بیماریوں میں سے ہے ۔ کئی بڑے سے بڑے اور مشہور سائنس داں یہ کہہ چکے ہیں کہ انہیں اِس کا بہت بڑا ڈر ہے کہ آدمی کے جسم کے اندر پہنچ کر یہ کیڑے تھوڑے ہی دنوں کے بعد کیا کچھ نہیں بن سکیں گے اور کیا کچھ نہیں کر سکیں گے ۔ پھر جب لاکھوں اور کروڑوں آدمیوں پر اُس کا اثر پڑتا ہے اور اِتنی تیزی کے ساتھ اتنے بڑے پیمانے پر ٹیکے لگنے کی وجہ سے ایک سے دوسرے کو بیماری لگنے کا موقعہ رہتا ہے تو یہ خطرہ اور بھی بڑھ جاتا ہے ۔

اِس ٹیکے کے لگانے کی غرض یہ بتائی جاتی ہے کہ بچوں کو تپ دق کی بیماری نہ ہونے پاوے ۔ اول تو بھارت میں بچوں کے تپ دق سے مرنے کے جو آنکڑے ہمیں عام طور پر بتائے جاتے ہیں وہ ٹھیک آنکڑے نہیں ہیں ۔ وہ کیول اندازے سے تیار کر لئے گئے ہیں ۔ دوسری بات کہ یہ بیماری پلیگ یا وبا کی طرح اِس طرح نہ آج تک کبھی پھیلی اور نہ پھیلے گی کہ اُس سے کسی کے لئے یہ جائز ہو جائے کہ وہ سب بچوں کے جسموں کے اندر ایک اِس طرح کا زہر داخل کردے جس کی بابت ابھی تک یہ ثابت نہیں ہوا ہے کہ وہ نقصان نہیں کرتا ۔ اِس ٹیکے کے لئے جو دعویٰ کیا جاتا ہے وہ بھی یہ نہیں ہے کہ اُس سے بچہ

ज़रूर तपेदिक़ से बचा ही रहेगा. बचे रहने की जो थोड़ी बहुत उम्मीद दिलाई जाती है वह भी अधिक से अधिक दो साल के लिये दिलाई जाती है. इन सब बातों पर विचार करते हुए आदमी इस नतीजे पर पहुँचे बग़ैर नहीं रह सकता कि यह टीके लगाने का काम जो चलाया जा रहा है यह बिलकुल ग़लत है.

जब इस तरह का काम इतने बड़े पैमाने पर किया जाता है तो उसमें एक बहुत बुरी बात यह हो जाती है कि वह लोग, जिन की बात का लोगों पर असर पड़ता है, इस कोशिश में लगे रहते हैं कि अधिकतर जनता के अन्दर उस बीमारी का डर पैदा हो जावे. हर आदमी के अन्दर हर बीमारी का मुक़ाबला करने की एक दर्जे तक क़ुदरती शक्ति होती है. पर जब यह डर फैल जाता है तो लोगों के अन्दर से वह डर इस शक्ति को कम कर देता है. नतीजा यह होता है कि जो लोग अभी तक अपने अन्दर की शक्ति से अपने को बीमारी से बचाये रखते थे अब वह बीमारी के शिकार हो जाते हैं. एक दूसरा बुरा नतीजा इस तरह की तहरीक का यह भी होता है कि तपेदिक़ को सचमुच क़ाबू में रखने के जो दूसरे अधिक कारामद तरीक़े हैं उनकी तरफ़ से लोग बेपरवाह हो जाते हैं.

बी० सी० जी० का तरीक़ा असली साइंसी इलाज के तरीक़े के भी ख़िलाफ़ है. एक दर्जे तक यह कुछ कुछ होम्योपैथी से मिलता है. इसका उसूल यह है कि बीमारी का इलाज करने के लिये उन चीज़ों को ही, जिनसे बीमारी पैदा होती है, हल्की मात्रा में जिस्म के अन्दर दाख़िल कर दिया जावे. बी० सी० जी० के इस उसूल में और होम्योपैथी के असली उसूल में फ़र्क़ यह है कि होम्योपैथ आदमी के जिस्म के अन्दर कभी कोई ऐसी चीज़ दाख़िल नहीं करता जो जिस्म के अन्दर पहुंच कर बच्चे दे और बढ़े. बी० सी० जी० वाला इस तरह के ज़िन्दे कीड़े काफ़ी बड़ी मात्रा में आदमी के जिस्म के अन्दर दाख़िल कर देता है फिर जो कभी भी इस जिस्म से बाहर नहीं निकलते बल्कि अन्दर रह कर बच्चे दे दे कर ख़ूब बढ़ते रहते हैं और हमेशा के लिये इस जिस्म को अपना घर बना लेते हैं.

हमें यह भी याद रखना चाहिये कि बी० सी० जी० के टीके की हिमायत करने वाले यह दावा नहीं करते कि उससे किसी बीमारी का इलाज हो सकता है. उन का दावा सिर्फ़ यह है कि इस टीके के लग जाने से जिनके टीका लगाया जायेगा उनमें से कुछ लोग एक बहुत थोड़े से अरसे तक के लिये मुमकिन है बीमारी से बचे रहें. यानी—अगर इन्हें बीमारी अभी तक नहीं हुई है तो उम्मीद की जाती है कि कुछ अरसे तक और न हो. मुझे यह इसलिये दोहराना पड़ रहा है क्योंकि कुछ अच्छे पढ़े लिखे लोगों ने मुझ पर यह ऐतराज़

ضرور تپ‌دق سے بچا ہی رہے گا۔ بچے رہنے کی جو تھوڑی بہت اُمید دلائی جاتی ہے وہ بھی ادھک سے ادھک دو سال کے لئے دلائی جاتی ہے۔ اِن سب باتوں پر وچار کرتے ہوئے آدمی اِس نتیجے پر پہنچے بغیر نہیں رہ سکتا کہ یہ ٹیکے لگانے کا کام جو چلایا جا رہا ہے یہ بالکل غلط ہے۔

جب اِسی طرح کا کام اتنے بڑے پیمانے پر کیا جاتا ہے تو اُس میں ایک بہت بری بات یہ ہو جاتی ہے کہ وہ لوگ، جن کی بات کا لوگوں پر اثر پڑتا ہے، اِس کوشش میں لگے رہتے ہیں کہ ادھک تر جنتا کے اندر اُس بیماری کا ڈر پیدا ہو جاوے۔ ہر آدمی کے اندر ہر بیماری کا مقابلہ کرنے کی ایک درجے تک قدرتی شکتی ہوتی ہے۔ پر جب یہ ڈر پھیل جاتا ہے تو لوگوں کے اندر سے وہ ڈر اِس شکتی کو کم کر دیتا ہے۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ جو لوگ ابھی تک اپنے اندر کی شکتی سے اپنے کو بیماری سے بچائے رکھتے تھے اب وہ بیماری کے شکار ہوجاتے ہیں۔ ایک دوسرا برا نتیجہ اِس طرح کی تحریک کا یہ بھی ہوتا ہے کہ تپ‌دق کو سچ مچ قابو میں رکھنے کے جو دوسرے ادھک کارآمد طریقے ہیں ان کی طرف سے لوگ بے پرواہ ہو جاتے ہیں۔

بی۔ سی۔ جی کا طریقہ اصلی سائنسی علاج کے طریقے کے بھی خلاف ہے۔ ایک درجے تک یہ کچھ کچھ ہومیوپیتھی سے ملتا ہے۔ اِس کا اصول یہ ہے کہ بیماری کا علاج کرنے کے لئے اُن چیزوں کو ہی، جن سے بیماری پیدا ہوتی ہے، ہلکی ماترا میں جسم کے اندر داخل کر دیا جاوے۔ بی۔ سی۔ جی کے اِس اصول میں اور ہومیوپیتھی کے اصلی اُصول میں فرق یہ ہے کہ ہومیوپیتھ آدمی کے جسم کے اندر کبھی کوئی ایسی چیز داخل نہیں کرتا جو جسم کے اندر پہنچ کر بچے دے اور بڑھے۔ بی۔ سی۔ جی والا اِس طرح کے زندہ کیڑے کافی بڑی ماترا میں آدمی کے جسم کے اندر داخل کردیتا ہے جو پھر کبھی بھی اُس جسم سے باہر نہیں نکلتے بلکہ اندر رہ کر بچے دے دے کر خوب بڑھتے رہتے ہیں اور ہمیشہ کے لئے اُس جسم کو اپنا گھر بنا لیتے ہیں۔

ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ بی۔ سی۔ جی کے ٹیکے کی حمایت کرنے والے یہ دعویٰ نہیں کرتے کہ اُس سے کسی بیماری کا علاج ہو سکتا ہے۔ اُن کا دعویٰ صرف یہ ہے کہ اِس ٹیکے کے لگ جانے سے جن کے ٹیکہ لگایا جائیگا، اُن میں سے کچھ لوگ ایک بہت تھوڑے سے عرصے تک کے لئے ممکن ہے بیماری سے بچے رہیں۔ یعنی—اگر اِنہیں بیماری ابھی تک نہیں ہوئی ہے تو امید کی جاتی ہے کہ کچھ عرصے تک اور نہ ہو۔ مجھے یہ اِس لئے دہرانا پڑ رہا ہے کیونکہ کچھ اچھے پڑھے لکھے لوگوں نے مجھ پر یہ اعتراض

किया है कि मैं ऐसी चीज़ का विरोध क्यों करता हूँ कि जिससे कुछ बीमार अपनी बीमारी से अच्छे हो सकें. बी० सी० जी० किसी बीमार की बीमारी को दूर नहीं करता. उसकी यह ग़रज़ ही नहीं है.

नीम हकीम यानी अनाड़ी हकीम हमेशा जान के लिये खतरनाक होता है, चाहे वह आजकल का साइंसी नीम हकीम हो और चाहे पुरानी चाल का दक़यानूसी नीम हकीम- पुरानी चाल के नीम हकीम से बचना आसान होता है लेकिन नई चाल के नीम हकीमों से बचना मुशकिल पड़ जाता है. क्योंकि यह नया नीम हकीम अपनी ग़लत बात के समर्थन में बड़े बड़े मोटे शब्द और साइंसी फ़िक़रे इस्तेमाल करता है. कोई झूठ अगर पूरा झूठ हो तो उसका मुक़ाबला करना आसान होता है लेकिन जिसमें कुछ झूठ और कुछ सच मिला हुआ हो उससे लड़ना मुशकिल हो जाता है.

इस तरह के नीम डाक्टर या अनाड़ी साइंसदां पहले कोई उसूल निकाल बैठते हैं जो कहीं लगता है और कहीं नहीं लगता और फिर जहां वह नहीं लगता वहां भी उसे ज़बर-दस्ती थोपने की कोशिश करते हैं. और फिर अगर कहीं ग़लती निकल आती है तो अपनी बात की पच में पड़कर ज़िद करते हैं. बी० सी० जी० का उसूल सीधा सादा यह है कि जिस तरह के जहर या जिस तरह के कीड़ों से कोई बीमारी पैदा होती है उसी तरह के जहर या उसी तरह के कीड़ों को अगर हम ख़ुद बाहर से लेकर जिस्म के अन्दर दाखिल कर दें तो जिस्म फिर उस बीमारी के हमले से बच जाता है. कहा यह जाता है कि उस जहर या उन कीड़ों के जिस्म में दाखिल होते ही जिस्म उनके मुक़ाबले की तैयारी करता है. ठीक उसी तरह जिस तरह हर मामूली बीमारी में भी जिस्म ख़ुद बख़ुद बीमारी के मुक़ाबले की कोशिश करता है. लेकिन तपेदिक़ की सूरत में इस उसूल को लगाना बिलकुल ग़लत है क्योंकि तपेदिक़ हो जाने पर जिस्म के अन्दर कोई ऐसी नई चीज़ या नई तरह के कीड़े ख़ुद बख़ुद पैदा नहीं होते जो बीमारी का मुक़ाबला करें. इसके जवाब में बी० सी० जी० के हामी हमें बताते हैं कि बी० सी० जी० का टीका लगाने से टीके की जगह जो फफद आती है या बुख़ार आ जाता है उस से यह पता चलता है कि जिस्म अन्दर से बीमारी का मुक़ाबला करने की तैयारी कर रहा है. यह ग़लत दलील देकर वह चाहता है कि हम उन सब ख़तरों को अपने सिर पर ले लें जो इस टीके से हमेशा के लिये पैदा हो जाते हैं, और वह भी सिर्फ़ दो बरस तक बचे रहने की थोथी उम्मीद में.

अब एक दलील आंकड़ों की रह जाती है कि कितनों के टीके लगे और कितनों को नुकसान हुआ और कितनों को नहीं हुआ. यह आंकड़े सब धोके के हैं. इनसे अधिक से

کیا ہے کہ میں ایسی چیز کا ورودھ کیوں کرتا ہوں کہ جس سے کچھ بیمار اپنی بیماری سے اچھے ہو سکیں ۔ بی. سی. جی کسی بیمار کی بیماری کو دور نہیں کرتا ۔ اُس کی یہ غرض ہی نہیں ہے ۔

نیم حکیم یعنی اناڑی حکیم ہمیشہ جان کے لئے خطرناک ہوتا ہے، چاہے وہ آج کل کا سائنسی نیم حکیم ہو اور چاہے پرانی چال کا دقیانوسی نیم حکیم ۔ پرانی چال کے نیم حکیم سے بچنا آسان ہوتا ہے لیکن نئی چال کے نیم حکیموں سے بچنا مشکل پڑ جاتا ہے ۔ کیونکہ یہ نیا نیم حکیم اپنی غلط بات کے سمرتھن میں بڑے بڑے موٹے شبد اور سائنسی فقرے استعمال کرتا ہے ۔ کوئی جھوٹھ اگر پورا جھوٹھ ہو تو اُس کا مقابلہ کرنا آسان ہوتا ہے لیکن جس میں کچھ جھوٹھ اور کچھ سچ ملا ہوا ہو اُس سے لڑنا مشکل ہو جاتا ہے ۔

اِس طرح کے نیم ڈاکٹر یا اناڑی سائنس‌داں پہلے کوئی اصول نکال بیٹھتے ہیں جو کہیں لگتا ہے اور کہیں نہیں لگتا اور پھر جہاں وہ نہیں لگتا وہاں بھی اُسے زبردستی تھوپنے کی کوشش کرتے ہیں ۔ اور پھر اگر کہیں غلطی نکل آتی ہے تو اپنی بات کی پیچ میں پڑکر ضد کرتے ہیں ۔ بی ۔ سی ۔ جی ۔ کا اصول سیدھا سادا یہ ہے کہ جس طرح کے زہر یا جس طرح کے کیڑوں سے کوئی بیماری پیدا ہوتی ہے اُسی طرح کے زہر یا اُسی طرح کے کیڑوں کو اگر ہم خود باہر سے لیکر جسم کے اندر داخل کردیں تو جسم پھر اُس بیماری کے حملے سے بچ جاتا ہے ۔ کہا یہ جاتا ہے کہ اُس زہر یا اُن کیڑوں کے جسم میں داخل ہوتے ہی جسم اُن کے مقابلے کی تیاری کرتا ہے ۔ ٹھیک اُسی طرح جس طرح ہر معمولی بیماری میں بھی جسم خود بخود بیماری کے مقابلے کی کوشش کرتا ہے ۔ لیکن تپ‌دق کی صورت میں اِس اصول کو لگانا بالکل غلط ہے کیونکہ تپ‌دق ہوجانے پر جسم کے اندر کوئی ایسی نئی چیز یا نئی طرح کے کیڑے خود بخود پیدا نہیں ہوتے جو بیماری کا مقابلہ کریں ۔ اِس کے جواب میں بی ۔ سی ۔ جی ۔ کے حامی ہمیں بتاتے ہیں کہ بی ۔ سی ۔ جی ۔ کا ٹیکہ لگانے سے ٹیکے کی جگہ جو پھپھد آتی ہے یا بخار آجاتا ہے اُس سے یہ پتا چلتا ہے کہ جسم اندر سے بیماری کا مقابلہ کرنے کی تیاری کررہا ہے ۔ یہ غلط دلیل دےکر وہ چاہتا ہے کہ ہم اُن سب خطروں کو اپنے سر پر لے لیں جو اِس ٹیکے سے ہمیشہ کے لئے پیدا ہو جاتے ہیں، اور وہ بھی صرف دو برس تک بچے رہنے کی تھوتھی اُمید میں ۔

اب ایک دلیل آنکڑوں کی رہ جاتی ہے کہ کتنوں کے ٹیکے لگے اور کتنوں کو نقصان ہوا اور کتنوں کو نہیں ہوا ۔ یہ آنکڑے سب دھوکے کے ہیں ۔ اِن سے ادھک سے

अधिक यही मालूम होता है कि बी० सी० जी० के हामियों का कितना असर है और उनके कितने वसीले हैं.

मैं फिर कहता हूँ कि बी० सी० जी० खतरनाक नीम हकीमी है. मैं डाक्टर नहीं हूँ. लेकिन मैं केवल डर और शक की बात नहीं कर रहा हूँ. मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह सभ्य दुनिया के बहुत से बड़े बड़े और मशहूर डाक्टरों की साफ़ साफ़ राय के आधार पर कह रहा हूँ. जो हिन्दुस्तानी डाक्टर सरकार की हैल्थ मिनिस्ट्री ने, बी० सी० जी० के टीके लगाने और उसकी तारीफ़ें करने के लिये, रख रक्खे हैं उनमें बड़े से बड़े डाक्टर भी उतने बड़े और मशहूर डाक्टर नहीं हैं जितने दुनिया के वह डाक्टर जिनके तजरबों और जिनकी राय के आधार पर मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि तपेदिक़ के जिन्दा कीड़ों का टीका इस तरह सब बच्चों के लगाना ग़लत है और इसे बन्द कर देना चाहिये.

बदक़िस्मती से सरकार की चलाई हुई किसी भी बात का जो लोग विरोध करते हैं उन्हें हमारे आजकल के अख़बार भी ज्यादा जगह देने या उनकी बात जनता तक पहुंचाने के लिये बहुत अधिक तैयार नहीं होते चाहे उनकी बात कितनी भी सच्ची क्यों न हो और जनता के लिये कितनी भी जरूरी और मुफ़ीद क्यों न हो. मेरी ग़रज़ कोई राजकाजी ग़रज़ नहीं है. अख़बार जब कभी कृपा करके मेरी इस विषय की तक़रीरें या मेरे लिखे हुए बयान छाप देते हैं तब भी जितने डाक्टरों के हवाले मैं देता हूँ उन सब को वह अपने अख़बार में जगह नहीं दे पाते. इसीलिये मुझे यह छोटा सा लेख निकालना पड़ा. इसमें मैं कुछ बड़े बड़े डाक्टरों की राय दे रहा हूँ. अपनी बात मैंने कम से कम कही है.

इस टीके से तपेदिक़ होकर फेफड़े गल सकते हैं

प्रोफ़ेसर हैफ़ बी० सी० जी० के टीके के एक बहुत बड़े हामी थे. इंगलैंड के "लेन्सैट" (Lancet) अख़बार में बी० सी० जी० के पक्ष में प्रोफ़ेसर हैफ़ का एक लेख निकला. 5 मार्च सन् 1955 ई० के "लेन्सैट" में प्रोफ़ेसर हैफ़ के जवाब में डाक्टर आर० सी० वैब्सटर का एक ख़त शाया हुआ. इस ख़त में डाक्टर वैब्सटर ने दो बातों पर ज़ोर दिया. पहली यह कि मार्च सन् 1955 तक पच्चीस साल से ऊपर के तजरबों के बाद भी "कोई आंकड़े इस बात के सबूत में नहीं मिलते कि बी० सी० जी० के टीके के लगने से आदमी के अन्दर तपेदिक़ की बीमारी का मुक़ाबला करने की शक्ति बढ़ जाती है." उन्होंने इस ख़त में यह भी लिखा है कि इस टीके से कोई फ़ायदा होता है इस पर अभी बहुत से बड़े बड़े डाक्टरों को शक है. दूसरी बात उन्होंने इस ख़त में यह बताई है कि बी० सी० जी० के टीके लगने से उस जगह

ادھک یہی معلوم ہوتا ہے کہ بی . سی . جی . کے حامیوں کا کتنا اثر ہے اور اُن کے کتنے وسیلے ہیں .

میں پھر کہتا ہوں کہ بی.سی.جی. خطرناک نیم حکیمی ہے. میں ڈاکٹر نہیں ہوں. لیکن میں کیول ڈر اور شک کی بات نہیں کر رہا ہوں . میں جو کچھ کہ رہا ہوں وہ سبھیہ دنیا کے بہت سے بڑے بڑے اور مشہور ڈاکٹروں کی صاف صاف رائے کے آدھار پر کہ رہا ہوں . جو ہندستانی ڈاکٹر سرکار کی ہیلتھ منسٹری نے' بی . سی . جی . کے ٹیکے لگانے اور اُس کی تعریفیں کرنے کے لئے' رکھ رکھے ہیں اُن میں بڑے سے بڑے ڈاکٹر بھی اُتنے بڑے اور مشہور ڈاکٹر نہیں ہیں جتنے دنیا کے وہ ڈاکٹر جن کے تجربوں اور جن کی رائے کے آدھار پر میں اِس نتیجے پر پہونچا ہوں کہ تپ‌دق کے زندہ کیڑوں کا ٹیکہ اِس طرح سب بچوں کے لگانا غلط ہے اور اِسے بند کردینا چاہئے .

بدقسمتی سے سرکار کی چلائی ہوئی کسی بھی بات کا جو لوگ وِرودھ کرتے ہیں اُنھیں ہمارے آجکل کے اخبار بھی زیادہ جگہ دینے یا اُن کی بات جنتا تک پہونچانے کے لئے بہت آدھک تیار نہیں ہوتے چاہے اُن کی بات کتنی ہی سچی کیوں نہ ہو اور جنتا کے لئے کتنی ہی ضروری اور مفید کیوں نہ ہو . میری غرض کوئی راج کاجی غرض نہیں ہے . اخبار جب کبھی کرپا کرکے میری اِس وشے کی تقریریں یا میرے لکھے ہوئے بیان چھاپ دیتے ہیں تب بھی جتنے ڈاکٹروں کے حوالے میں دیتا ہوں اُن سب کو وہ اپنے اخبار میں جگہ نہیں دے پاتے . اِسی لئے مجھے یہ چھوٹا سا لیکھ نکالنا پڑا . اِس میں میں کچھ بڑے بڑے ڈاکٹروں کی رائے دے رہا ہوں . اپنی بات میں نے کم سے کم کہی ہے .

اِس ٹیکے سے تپ‌دق ہوکر پھیپھڑے گل سکتے ہیں

پروفیسر ہیف بی . سی . جی . کے ٹیکے کے ایک بہت بڑے حامی تھے . انگلینڈ کے "لینسٹ" (Lancet) اخبار میں بی . سی . جی . کے پکش میں پروفیسر ہیف کا ایک لیکھ نکلا. 5 مارچ سن 1955 کے "لینسٹ" میں پروفیسر ہیف کے جواب میں ڈاکٹر آر . سی . وبسٹر کا ایک خط شائع ہوا . اِس خط میں ڈاکٹر وبسٹر نے دو باتوں پر زور دیا ہے . پہلی یہ کہ مارچ سن 1955 تک پچیس سال سے اُوپر کے تجربوں کے بعد بھی "کوئی آنکڑے اِس بات کے ثبوت میں نہیں ملتے کہ بی . سی . جی . کے ٹیکے کے لگنے سے آدمی کے اندر تپ‌دق کی بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکتی بڑھ جاتی ہے ." اُنھوں نے اس خط میں یہ بھی لکھا ہے کہ اِس ٹیکے سے کوئی فائدہ ہوتا ہے اِس پر ابھی بہت سے بڑے بڑے ڈاکٹروں کو شک ہے . دوسری بات اُنھوں نے اِس خط میں یہ دکھائی ہے کہ بی . سی . جی . کے ٹیکے کے لگنے سے اُس جگہ

की खाल जो फफद आती है उसकी बाबत बहुत से बड़े बड़े डाक्टरों की यह साफ़ राय है कि वह फफदना हरगिज़ यह साबित नहीं करता कि जिस के टीका लगा है वह तपेदिक़ से अब बचा ही रहेगा.

डाक्टर वैब्सटर ने इस खत में लिखा है कि कि प्रोफ़ेसर हैफ़ ने भी अपने बयान में इस बात को माना है कि आंकड़ों से इस बात का सबूत नहीं मिलता कि बी० सी० जी० के टीके से आदमी में बीमारी का मुक़ाबला करने की शक्ति बढ़ जाती है. टीका लगने से खाल का फफद आना हरगिज़ यह साबित नहीं करता कि आदमी में बीमारी का मुक़ाबला करने की शक्ति बढ़ गई है. डाक्टर वैब्सटर ने कई बीमारियों का ज़िक्र किया है जिन में इसी तरह के टीके लगाने और खाल के फफद आने से आदमी के अन्दर बीमारी का मुक़ाबला करने की शक्ति बढ़ने का कोई सम्बन्ध नहीं होता और कोई भी यह नहीं मानता कि उन बीमारियों के टीके से बीमारी का मुक़ाबला करने की शक्ति किसी में बढ़ती है. डाक्टर वैब्सटर ने लिखा है कि :—"क्या सचमुच हमारे लिये यह इन्साफ़ की बात है कि हम बच्चों के मां बाप से यह कहें कि वह अपने बच्चों के इस तरह के टीके लगने दें जिनमें कुछ सूरतों में टीके की जगह फफद आवे और थोड़ी बहुत तकलीफ़ हो जावे और साथ ही थोड़ा या बहुत इस बात का खतरा भी हो कि जिसके टीका लगाया गया है उसे सचमुच वही बीमारी हो जावे, और यह उस सूरत में जब कि टीके के अच्छे नतीजों का हमें कोई पक्का इल्म नहीं है ?"

उन्होंने यह भी लिखा है कि :—"हमें याद है कि स्कार्लेट फ़ीवर (एक तरह का बुखार) के इसी तरह के टीके लगाने का बीस साल हुए काफ़ी खब्त चला था. अब मैं समझता हूँ वह टीका बिलकुल ग़लत साबित हो चुका और छोड़ दिया गया. हमें यह भी याद है कि कूकर खांसी के लिये भी इसी तरह के टीके लगाने में लोगों ने किसी समय बहुत जोश दिखाया था. पर अब सब मान गये कि वह चीज़ भी बिलकुल बेकार थी."

वह लिखते हैं कि :—"यह बात सब मानते हैं कि बहुत से बड़े बड़े होशियार डाक्टर बी० सी० जी० के बारे में अब शक करने लगे हैं और हाल में इन शक करने वालों की आवाज़ बढ़ती जा रही है. इसका किसी के पास कोई जवाब नहीं है. डंडी शहर के फेफड़ों की बीमारी के सब से बड़े डाक्टर मेकिंटाश ने लिखा है कि सन् 1947 से लेकर सन् 1951 तक उनके शहर में तपेदिक़ से मौतें बहुत घट गईं. पर वहां इस अर्से में बी० सी० जी० का टीका नहीं लगाया गया था. दूसरे ही अहतियात के तरीक़े काम में लाये गये थे."

19 मार्च सन् 1955 के "लेन्सेट" में एक और मशहूर

کی کھال جو پھپھد آتی ہے اُس کی بابت بہت سے بڑے بڑے ڈاکٹروں کی یہ صاف رائے ہے کہ وہ پھپھدنا ہرگز یہ ثابت نہیں کرتا کہ جس کے ٹیکہ لگا ہے وہ تپدق سے اب بچا ہی رہےگا۔

ڈاکٹر ویبسٹر نے اِس خط میں لکھا ہے کہ پروفیسر ہیف نے بھی اپنے بیان میں اِس بات کو مانا ہے کہ آنکڑوں سے اِس بات کا ثبوت نہیں ملتا کہ بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے سے آدمی میں بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکتی بڑھ جاتی ہے۔ ٹیکہ لگنے سے کھال کا پھپھد آنا ہرگز یہ ثابت نہیں کرتا کہ آدمی میں بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکتی بڑھ گئی ہے۔ ڈاکٹر ویبسٹر نے کئی بیماریوں کا ذکر کیا ہے جن میں اِسی طرح کے ٹیکے لگانے اور کھال کے پھپھد آنے سے آدمی کے اندر بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکتی بڑھنے کا کوئی سمبندھ نہیں ہوتا اور کوئی بھی یہ نہیں مانتا کہ اُن بیماریوں کے ٹیکے سے بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکتی کسی میں بڑھتی ہے۔ ڈاکٹر ویبسٹر نے لکھا ہے کہ :—"کیا سچ مچ ہمارے لئے یہ انصاف کی بات ہے کہ ہم بچوں کے ماں باپ سے یہ کہیں کہ وہ اپنے بچوں کے اِس طرح کے ٹیکے لگنے دیں جن میں کچھ صورتوں میں ٹیکے کی جگہ پھپھد آوے اور تھوڑی بہت تکلیف ہوجاوے اور ساتھ ہی تھوڑا یا بہت اِس بات کا خطرہ بھی ہو کہ جس کے ٹیکہ لگایا گیا ہے اُسے سچ مچ وہی بیماری ہوجاوے' اور یہ اُس صورت میں جب کہ ٹیکے کے اچھے نتیجوں کا ہمیں کوئی پکا علم نہیں ہے ؟"

اُنہوں نے یہ بھی لکھا ہے کہ :—"ہمیں یاد ہے کہ اِسکارلیٹ فیور (ایک طرح کا بخار) کے اِسی طرح کے ٹیکے لگانے کا بیس سال ہوئے کافی خبط چلا تھا۔ اب میں سمجھتا ہوں وہ ٹیکہ بالکل غلط ثابت ہوچکا اور چھوڑ دیا گیا۔ ہمیں یہ بھی یاد ہے کہ کوکر کھانسی کے لئے بھی اِسی طرح کے ٹیکے لگانے میں لوگوں نے کسی سمے بہت جوش دکھایا تھا۔ پر اب سب مان گئے کہ وہ چیز بھی بالکل بیکار تھی۔"

وہ لکھتے ہیں کہ :—"یہ بات سب مانتے ہیں کہ بہت سے بڑے بڑے ہوشیار ڈاکٹر بی۔ سی۔ جی۔ کے بارے میں اب شک کرنے لگے ہیں اور حال میں اِن شک کرنے والوں کی آواز بڑھتی جارہی ہے۔ اِس کا کسی کے پاس کوئی جواب نہیں ہے۔ ڈنڈی شہر کے پھیپھڑوں کی بیماری کے سب سے بڑے ڈاکٹر میکنٹاش نے لکھا ہے کہ سن 1947 سے لےکر سن 1951 تک ان کے شہر میں تپدق سے موتیں بہت گھٹ گئیں۔ پر وہاں اِس عرصے میں بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ نہیں لگایا گیا تھا۔ دوسرے ہی احتیاط کے طریقے کام میں لائے گئے تھے۔"

19 مارچ سن 1955 کے "لینسٹ" میں ایک اور مشہور

डाक्टर डाक्टर जी. ई. जानस्टन ने लिखा है कि—"डाक्टर हैस्टर की यह राय बिलकुल दुरुस्त है कि खाल के फफद आने से यह साबित नहीं होता कि आदमी आइन्दा तपेदिक़ से बचा रहेगा." वह लिखते हैं कि "बी० सी० जी० के टीके के खिलाफ़ डाक्टर हैस्टर की यह दलील बड़ी पक्की और ऐसी दलील है जिसे कोई काट नहीं सकता." उन्होंने लिखा है कि-"एक तीसरे डाक्टर, डाक्टर ब्राउन्की (Brownke) ने यह दिखलाया है कि बहुत लोगों के एक तरफ़ टीके की जगह की खाल खूब फफद भी जाती है और साथ ही दूसरी तरफ़ उसके बाद फेफड़े गलकर तपेदिक़ से ख़तम भी हो जाते हैं. खाल के फफद आने से जब बीमारी से बचत नहीं होती तो यह बहुत बुरी चीज़ है."

डाक्टर जान्सटन ने यह भी लिखा है कि ख़ुद प्रोफ़ेसर हैफ़ ने यह साफ़ लिखा है कि—"बी० सी० जी० के टीके से तपेदिक़ के बिलकुल नए सिरे से पैदा होने या न होने पर कुछ असर पड़ सकता है. लेकिन अगर बीमारी कुछ भी छिपी दबी अन्दर मौजूद है तो उस पर कोई असर नहीं पड़ सकता." अब यह कह सकना बहुत मुशकिल है कि बी० सी० जी० से नफ़े की उम्मीद ज़्यादा है या नुक़सान की और आदमी के बचे रहने की उम्मीद ज़्यादा है या बीमार होकर मरने की. वह लिखते हैं कि प्रोफ़ेसर हैफ़ ने ख़ुद इस बात को माना है कि—"बी० सी० जी० के टीके से शायद सब से बड़ा नुक़सान यह होता है कि बहुत से देशों में मामूली जनता को यह ग़लत बिश्वास हो जाता है कि वह अब तपेदिक़ से बचे रहेंगे. हमें अपने को इस धोके में नहीं रखना चाहिये कि टीके से खाल के फफद आने यानी टीके का जिल्द पर एक ख़ास असर होने से और तपेदिक़ से बचे रहने से कुछ भी सम्बन्ध है."

16 मई सन् 1952 के "लेन्सेट" में डाक्टर कैरोल ई. पामर ऐम. डी. (Dr. Caroll E. Palmer M. D.) ने, जो कोपेनहैगन टी. बी. रिसर्च टीम के हैड हैं, लिखा है कि :—"लेकिन आजकल तपेदिक़ के बड़े से बड़े माहिरों में भी इस बात पर बहुत मतभेद है कि तपेदिक़ के टीके के खाल पर एक ख़ास असर होने या न होने का असली मतलब क्या होता है. हमारा ज्ञान इस बारे में इतना अधूरा है कि हमारे दफ़्तर ने ख़ास तौर पर इस बात का पता लगाने की कोशिश की है कि बी० सी० जी० के टीके का खाल पर जो असर होता है उसका क्या मतलब है. इसमें कोई शक नहीं कि यह बात अब ज़ाहिर हो चुकी है कि बी० सी० जी० के टीके की बाबत आम तौर पर हम जो कुछ जानते थे और जो कुछ हमने मान रक्खा था वह सब बेबुनियाद था. जो बातें हम ठीक समझते थे अब वही ग़लत निकलीं तो इस टीके के इन बड़े बड़े नतीजों की बाबत अभी

ڈاکٹر جی . ای . جانسٹن نے لکھا ہے کہ—"ڈاکٹر ہیسٹر کی یہ رائے بالکل درست ہے کہ کھال کے پھپھد آنے سے یہ ثابت نہیں ہوتا کہ آدمی آئندہ تپ‌دق سے بچا رہیگا ." وہ لکھتے ہیں کہ "بی . سی . جی . کے ٹیکے کے خلاف ڈاکٹر ہیسٹر کی یہ دلیل بڑی پکی اور ایسی دلیل ہے جسے کوئی کاٹ نہیں سکتا ." انہوں نے لکھا ہے کہ—"ایک تیسرے ڈاکٹر، ڈاکٹر براؤنکی (Brownke) نے یہ دکھلایا ہے کہ بہت سے لوگوں کے ایک طرف ٹیکے کی جگہ کی کھال خوب پھپھد بھی جاتی ہے اور ساتھ ہی دوسری طرف اُس کے بعد پھیپھڑے گل‌کر تپ‌دق سے ختم بھی ہوجاتے ہیں . کھال کے پھپھد آنے سے جب بیماری سے بچت نہیں ہوتی تو یہ بہت بری چیز ہے ."

ڈاکٹر جانسٹن نے یہ بھی لکھا ہے کہ خود پروفیسر ہیف نے یہ صاف لکھا ہے کہ—"بی . سی . جی . کے ٹیکے سے تپ‌دق کے بالکل نئے سرے سے پیدا ہونے یا نہ ہونے پر کچھ اثر پڑسکتا ہے . لیکن اگر بیماری کچھ بھی چھپی دبی اندر موجود ہے تو اُس پر کوئی اثر نہیں پڑسکتا ." اب یہ کہہ سکنا بہت مشکل ہے کہ بی . سی . جی . سے نفع کی اُمید زیادہ ہے یا نقصان کی اور آدمی کے بچے رہنے کی اُمید زیادہ ہے یا بیمار ہوکر مرنے کی . وہ لکھتے ہیں کہ پروفیسر ہیف نے خود اِس بات کو مانا ہے کہ—"بی . سی . جی . کے ٹیکے سے شاید سب سے بڑا نقصان یہ ہوتا ہے کہ بہت سے دیشوں میں معمولی جنتا کو یہ غلط وشواس ہوجاتا ہے کہ وہ اب تپ‌دق سے بچے رہینگے . ہمیں اپنے کو اِس دھوکے میں نہیں رکھنا چاہئیے کہ ٹیکے سے کھال کے پھپھد آنے یعنی ٹیکے کا جلد پر ایک خاص اثر ہونے سے اور تپ‌دق سے بچے رہنے سے کچھ بھی سمبندھ ہے ."

16 مئی سن 1952 کے "لینسٹ" میں ڈاکٹر کیرول ای . پامر ایم . ڈی . (Dr. Carroll E. Palmer M.D.) نے، جو کوپن ہیگن ٹی . بی . ریسرچ ٹیم کے ہیڈ ہیں، لکھا ہے کہ :—"لیکن آجکل تپ‌دق کے بڑے سے بڑے ماہروں میں بھی اِس بات پر بہت مت بھید ہے کہ تپ‌دق کے ٹیکے کے کھال پر ایک خاص اثر ہونے یا نہ ہونے کا اصلی مطلب کیا ہوتا ہے . ہمارا گیان اِس بارے میں اتنا ادھورا ہے کہ ہمارے دفتر نے خاص طور پر اِسی بات کا پتہ لگانے کی کوشش کی ہے کہ بی . سی . جی . کے ٹیکے کا کھال پر جو اثر ہوتا ہے اُس کا کیا مطلب ہے . اِس میں کوئی شک نہیں کہ یہ بات اب ظاہر ہوچکی ہے کہ بی . سی . جی . کے ٹیکے کی بابت عام‌طور پر ہم جو کچھ جانتے تھے اور جو کچھ ہم نے مان رکھا تھا وہ سب بےبنیاد تھا . جو باتیں ہم ٹھیک سمجھتے تھے جب وہی غلط نکلیں تو اِس ٹیکے کے اُن بڑے بڑے نتیجوں کی بابت ابھی

हम क्या कह सकते हैं जिनके ठीक ठीक मालूम करने का और साबित करने का अभी हमें समय भी नहीं मिला."

इसका मतलब यह है कि तपेदिक़ और उसके टीके की साइंसी खोज में लगी हुई दुनिया की एक बहुत बड़ी डाक्टरी संस्था भी अभी तक इस टीके की बाबत कोई अच्छी बात नहीं कह सकती और उसके बुरे नतीजों से डरती है.

आदमी के जिस्म में ज़हरीले कीड़ों को दाख़िल कर देना बहुत बुरा है

लन्दन यूनिवर्सिटी के डाक्टरी के प्रोफ़ेसर प्रोफ़ेसर जेम्स मैकिन्टाश ने रायल सोसाइटी आफ़ मैडिसिन के सामने बयान देते हुए कहा :—"साइन्सी निगाह से इस बात में किसी तरह का शक नहीं किया जा सकता कि चाहे हम किसी भी पहलू से देखें किसी आदमी के जिस्म में इस तरह के ज़हरीले कीड़ों को दाख़िल कर देना, जो बदन के अन्दर जाकर बच्चे दे सकते हैं, और बढ़ सकते हैं, बहुत ही बुरी बात है. जब यह कीड़े बढ़ जाते हैं तो हम किसी तरह यह अन्दाज़ा नहीं लगा सकते कि रोगी के अन्दर जो कीड़े दाख़िल किये गये थे वह किस मात्रा में थे. नतीजे पर हमारा कोई क़ाबू नहीं रहता और नतीजे इतने बुरे पैदा हो सकते हैं कि जिनका हमें कोई अन्दाज़ा नहीं हो सकता."

प्रोफ़ेसर वान पिरके (Prof. Von Pirquet) ने, जो अपने समय के बहुत बड़े माहिर डाक्टर माने जाते थे, सन् 1930 में कहा था :—"इस तरह के टीके से तपेदिक़ के कीड़े बदन के अन्दर अपनी बस्तियां बना सकते हैं जिसके नतीजों का हमें पहले से कोई अन्दाज़ा नहीं हो सकता. इस तरह की ख़तरनाक कार्रवाई को न पसन्द किया जा सकता है और न बरदाश्त किया जा सकता है."

अमरीका के डाक्टर जे. डब्लू. रेने (J. W. Rainey) ने लिखा है:—"हम पहले यह समझते थे कि बी० सी० जी० का टीका बीमारी का जवाब हो सकता है. लेकिन 'टाइम्स' अख़बार के मैडिकल सेक्शन में बड़े से बड़े अमरीकी डाक्टरों ने यह राय ज़ाहिर की है कि बी० सी० जी० से जो ख़तरे पैदा हो सकते हैं उनका न अभी तक हम पूरा अन्दाज़ा लगा सकते हैं और न उन्हें रोक सकते हैं."

ऊपर की थोड़ी सी रायें उन लोगों के जवाब के लिये काफ़ी हैं जो भारत की हैल्थ मिनिस्ट्री की तरफ़ से माहिर होने का दावा करते हैं और हैल्थ मिनिस्ट्री को सलाह देते हैं.

अमरीका के बड़े से बड़े डाक्टरों की राय बी० सी० जी० के ख़िलाफ़

अमरीका में बी० सी० जी० के बड़े से बड़े हामियों में डाक्टर मायर्स (Dr. Myers) का नाम आता था. लम्बे

هم کیا کہہ سکتے هیں جن کے ٹھیک ٹھیک معلوم کرنے کا اور ثابت کرنے کا ابھی همیں سمے بھی نہیں ملا۔"

اِس کا صاف مطلب یہ هے کہ تپدق اور اُس کے ٹیکے کی سائنسی کھوج میں لگی هوئی دنیا کی ایک بہت بڑی ڈاکٹری سنستھا بھی ابھی تک اِس ٹیکے کی بابت کوئی اچھی بات نہیں کہہ سکتی اور اُس کے بُرے نتیجوں سے ڈرتی هے۔

آدمی کے جسم میں زهریلے کیڑوں کو داخل کردینا بہت بُرا هے

لندن یونیورسٹی کے ڈاکٹری کے پروفیسر جیمس میکنٹاش نے رائل سوسائٹی آف میڈیسن کے سامنے بیان دیتے هوئے کہا :—"سائنسی نگاہ سے اِس بات میں کسی طرح کا شک نہیں کیا جاسکتا کہ چاهے هم کسی بھی پہلو سے دیکھیں کسی آدمی کے جسم میں اِس طرح کے زهریلے کیڑوں کو داخل کردینا، جو بدن کے اندر جاکر بچے دے سکتے هیں اور بڑھ سکتے هیں، بہت هی بُری بات هے۔ جب یہ کیڑے بڑھ جاتے هیں تو هم کسی طرح یہ اندازہ نہیں لگا سکتے کہ روگی کے اندر جو کیڑے داخل کئے گئے تھے وہ کس ماترا میں تھے۔ نتیجے پر پھر همارا کوئی قابو نہیں رهتا اور نتیجے اِتنے بُرے پیدا هوسکتے هیں کہ جن کا همیں کوئی اندازہ نہیں هوسکتا۔"

پروفیسر وان پِر کے (Prof. Von Pirquet) نے، جو اپنے سمے کے بہت بڑے ماهر ڈاکٹر مانے جاتے تھے، سن 1930 میں کہا تھا :—"اِس طرح کے ٹیکے سے تپدق کے کیڑے بدن کے اندر اپنی بستیاں بناسکتے هیں جس کے نتیجوں کا همیں پہلے سے کوئی اندازہ نہیں هوسکتا۔ اِس طرح کی خطرناک کاروائی کو نہ پسند کیا جاسکتا هے اور نہ برداشت کیا جاسکتا هے۔"

امریکہ کے ڈاکٹر جے ڈبلو. رینے (J. W. Rainey) نے لکھا هے :—"هم پہلے یہ سمجھتے تھے کہ بی. سی. جی. کا ٹیکہ بیماری کا جواب هوسکتا هے. لیکن ٹائمس اخبار کے میڈیکل سیکشن میں بڑے سے بڑے امریکی ڈاکٹروں نے یہ رائے ظاهر کی هے کہ بی. سی. جی. سے جو خطرے پیدا هوسکتے هیں اُن کا نہ ابھی تک هم پورا اندازہ لگا سکتے هیں اور نہ اُنہیں روک سکتے هیں۔"

اُوپر کی تھوڑی سی رائیں اُن لوگوں کے جواب کے لئے کافی هیں جو بھارت کی هیلتھ منسٹری کی طرف سے ماهر هونے کا دعوی کرتے هیں اور هیلتھ منسٹری کو صلاح دیتے هیں۔

امریکہ کے بڑے سے بڑے ڈاکٹروں کی رائے بی. سی. جی. کے خلاف

امریکہ میں بی. سی. جی. کے بڑے سے بڑے حامیوں میں ڈاکٹر مائرس (Dr. Myers) کا نام آتا تھا. لمبے

तजरबे के बाद डाक्टर मायर्स खुद इस बारे में इन नतीजों पर पहुंचे हैं:—

"(1) बी० सी० जी० के टीके से आदमी तपेदिक से बचा रहता है इस बात पर भरोसा नहीं किया जा सकता.

"(2) जिन जानवरों के बी० सी० जी० लगाया गया उन्हें यह टीका तपेदिक से नहीं बचा सका. अमरीका के जानवरों के डाक्टरों ने काफ़ी तजरबे करने के बाद यह मालूम किया है कि मवेशियों में तपेदिक को रोकने के काम में बी० सी० जी० का टीका बिलकुल बेअसर रहा.

"(3) पच्चीस साल से ऊपर हमें लोगों के बी० सी० जी० का टीका लगाते हो गये. इस अर्से में दुनिया भर के अन्दर सत्तर लाख से ऊपर लोगों के टीका लग चुका है. अगर बी० सी० जी० का टीका सचमुच बड़ा कारगर होता तो इसके काफ़ी सबूत अब तक हमारे सामने आ गये होते. लेकिन जिन क़ौमों में यह टीका बहुत ज़्यादा इस्तेमाल किया गया है उनमें न तपेदिक की बीमारी पर इसके अच्छे असर का सबूत मिलता है और न तपेदिक से मौतों पर इसका कोई अच्छा असर हमें देखने को मिलता है. इसके ख़िलाफ़ दुनिया के जिन हिस्सों में बी० सी० जी० अभी तक नहीं चला उनमें तपेदिक से बीमार भी कम पड़े हैं और मरे भी कम हैं.

"(4) यह बात साबित नहीं हुई है कि बी० सी० जी० से नुक़सान नहीं होता. कोई यह साबित नहीं कर सका कि जो कीड़े आदमी के जिस्म में दाख़िल कर दिये जाते हैं वह बरसों बल्कि दसियों बरस ज़िन्दा नहीं रहते और धीरे धीरे ख़तरनाक नहीं हो जाते.

"(5) इस टीके के कारामद होने की बाबत जो नतीजे पहले निकाले गये थे वह ग़लत और बेमेल बातों से निकाले गये थे.

"(6) जिन्हें एक मर्तबा तपेदिक हो चुका होता है उनकी बाबत भी यह भरोसे से नहीं कहा जा सकता कि उन्हें दोबारा यह बीमारी नहीं होगी.

"(7) अगर यह टीके बड़े पैमाने पर लगाये जाते रहे तो आजकल जो हम लोग तपेदिक का आज़मायशी टीका लगाते हैं वह भी फिर बिलकुल बेकार हो जायेगा और तपेदिक के रोक थाम के जो तरीक़े थोड़े बहुत कारगर भी हो सकते हैं उन्हें भी हम खो बैठेंगे. मिनेसूटा नाम के इलाक़े में दूर दूर तक तपेदिक की बीमारी ख़ासकर बच्चों में रोक दी गई है और यह बिना बी० सी० जी० के टीके के हुआ है. यह कामयाबी उन ज़्यादा अच्छे और कारगर तरीक़ों से हुई है जिन्हें हम इससे पहले काम में लाते रहे हैं.

"(8) अगर हम बी० सी० जी० के टीके पर ज़ोर देते रहे तो इस बात का डर है कि लोगों को यह ग़लत भरोसा हो जायगा कि चेचक के टीके की तरह बी० सी० जी० का

تجربے کے بعد ڈاکٹر مائرس خود اِس بارے میں اِن نتیجوں پر پہونچے ہیں :—

"(1) بی . سی . جی . کے ٹیکے سے آدمی تپ دق سے بچا رہتا ہے اِس بات پر بھروسہ نہیں کیا جاسکتا .

"(2) جن جانوروں کے بی . سی . جی . لگایا گیا اُنہیں یہ ٹیکہ تپ دق سے نہیں بچا سکا . امریکہ کے جانوروں کے ڈاکٹروں نے کافی تجربہ کرنے کے بعد یہ معلوم کیا ہے کہ مویشیوں میں تپ دق کو روکنے کے کام میں بی . سی . جی . کا ٹیکہ بالکل بے اثر رہا .

"(3) پچیس سال سے اُوپر ہمیں لوگوں کے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگاتے ہوئے ہوگئے . اِس عرصے میں دنیا بھر کے اندر ستر لاکھ سے اُوپر لوگوں کے ٹیکہ لگ چکا ہے . اگر بی . سی . جی . کا ٹیکہ سچ مچ بڑا کارگر ہوتا تو اِس کے کافی ثبوت اب تک ہمارے سامنے آگئے ہوتے . لیکن جن قوموں میں یہ ٹیکہ بہت زیادہ استعمال کیا گیا ہے اُن میں نہ تپ دق کی بیماری پر اس کے اچھے اثر کا ثبوت ملتا ہے اور نہ تپ دق سے موتوں پر اس کا کوئی اچھا اثر ہمیں دیکھنے کو ملتا ہے . اِس کے خلاف دنیا کے جن حصوں میں بی . سی . جی . ابھی تک نہیں چلا اُن میں تپ دق سے بیمار بھی کم پڑے ہیں اور مرے بھی کم ہیں .

"(4) یہ بات ثابت نہیں ہوئی ہے کہ بی. سی. جی. سے نقصان نہیں ہوتا . کوئی یہ ثابت نہیں کرسکا کہ جو کیڑے آدمی کے جسم میں داخل کردیئے جاتے ہیں وہ برسوں بلکہ دسیوں برس زندہ نہیں رہتے اور دھیرے دھیرے خطرناک نہیں ہوجاتے .

"(5) اِس ٹیکے کے کارآمد ہونے کی بابت جو نتیجے پہلے نکالے گئے تھے وہ غلط اور بے میل باتوں سے نکالے گئے تھے .

"(6) جنہیں ایک مرتبہ تپ دق ہوچکا ہوتا ہے اُن کی بابت بھی یہ بھروسے سے نہیں کہا جاسکتا کہ اُنہیں دوبارہ یہ بیماری نہیں ہوگی .

"(7) اگر یہ ٹیکے بڑے پیمانے پر لگائے جاتے رہے تو آجکل جو ہم لوگ تپ دق کا آزمائشی ٹیکہ لگاتے ہیں وہ بھی پھر بالکل بےکار ہو جائیگا اور تپ دق کے روک تھام کے جو طریقے تھوڑے بہت کارگر بھی ہوسکتے ہیں انہیں بھی ہم کھو بیٹھیں گے. منیسوٹا نام کے علاقے میں دور دور تک تپ دق کی بیماری خاصکر بچوں میں روک دی گئی ہے اور یہ بنا بی. سی. جی. کے ٹیکے کے ہوا ہے . یہ کامیابی اُن زیادہ اچھے اور کارگر طریقوں سے ہوئی ہے جنہیں ہم اِس سے پہلے کام میں لاتے رہے ہیں .

"(8) اگر ہم بی . سی . جی . کے ٹیکے پر زور دیتے رہے تو اِس بات کا ڈر ہے کہ لوگوں کو یہ غلط بھروسہ ہوجائیگا کہ چیچک کے ٹیکے کی طرح بی . سی . جی . کا

टीका भी उन्हें बीमारी से बचा सकता है. अभी तक बी० सी० जी० के टीके पर इसके लिये ज़रा भी भरोसा नहीं किया जा सकता."

कुछ डाक्टरों का यह भी ख़याल है कि बी० सी० जी० का टीका सिर्फ़ उन डाक्टरों, नर्सों और उन नौकरों को लगना चाहिये जो अस्पतालों में काम करते हैं, और तपेदिक़ के बीमारों की देख रेख और सेवा करते हैं.

डाक्टर जे. ए. मायर्स ने 18 अगस्त सन् 1951 के जरनल आफ़ दी अमरीकन मैडिकल एसोसियेशन में बी० सी० जी० के टीके पर बहुत ज़बरदस्त हमला किया है. उनकी दो दलीलें ख़ास हैं. पहली यह कि इस टीके से जो एक छोटा सा शुरू का तपेदिक़ का हमला आदमी पर हो जाता है उससे हरगिज़ यह नतीजा नहीं निकाला जा सकता कि उस आदमी को फिर यह बीमारी नहीं हो सकती या बहुत ज़्यादा ज़ोर के साथ नहीं हो सकती. दूसरे उनका कहना है कि इस टीके का एक यह नतीजा भी होता है कि आदमी तपेदिक़ से बचने के दूसरे ज़्यादा कारामद तरीक़ों की तरफ़ से बेपरवाह हो जाता है. उनका यह भी साफ़ साफ़ ख़याल है कि जिन बच्चों को काफ़ी अच्छा खाना और शक्ति देने वाला खाना नहीं मिलता उन्हें बी० सी० जी० के टीके से ज़्यादा नुक़सान हो सकता है.

बी० सी० जी० के कीड़े आदमी की जान ले सकते हैं

हमारे देश में एक तरफ़ से सब बच्चों के बी० सी० जी० का टीका लगाने का जो काम जारी है उससे बीमारी के और फैलने का ख़तरा नीचे की बातों से मालूम होता है.

सन् 1955 की छपी इंगलैंड की ग्लैक्सो लैबोरेट्रीज़ की एक किताब में लिखा है :—"ज़ाहिर है कि टीका लगाने के लिये कीड़ों का जो वैकसीन तैयार किया जाता है उसमें इस बात का बहुत डर रहता है कि कीड़े और बढ़ जावें. ख़ास कर बी० सी० जी० के वैकसीन में ख़तरनाक क़िस्म के कीड़े बढ़ सकते हैं. इसे रोकने के लिये वैकसीन की तैयारी में बहुत बड़ी अहतियात की ज़रूरत है. यहां एक और मुश्किल आ पड़ती है और वह यह कि तपेदिक़ के कीड़े जिस तरह धीरे धीरे बढ़ते हैं, चाहे शीशे की नली के अन्दर और चाहे आदमी या जानवर के बदन के अन्दर, उससे वैकसीन को बचा हुआ मान सकने में छै हफ़्ते से लेकर बारह हफ़्ते तक लग जाते हैं, और वैकसीन का क़ायदा यह है कि वैकसीन तैयार होते ही दो या तीन हफ़्ते के अन्दर काम में आ जाना चाहिये. यानी इस ख़तरे से बच सकने का पूरा यक़ीन हो ही नहीं सकता."

[बाक़ी फिर]

ٹیکہ بھی اُنہیں بیماری سے بچا سکتا ہے. ابھی تک بی. سی. جی. کے ٹیکہ پر اِس کے لئے ذرا بھی بھروسہ نہیں کیا جاسکتا."

کچھ ڈاکٹروں کا یہ بھی خیال ہے کہ بی. سی. جی. کا ٹیکہ صرف اُن ڈاکٹروں، نرسوں اور اُن نوکروں کو لگنا چاہئے جو اسپتالوں میں کام کرتے ہیں اور تپدق کے بیماروں کی دیکھ ریکھ اور سیوا کرتے ہیں.

ڈاکٹر جے. اے. مائرس نے 18 اگست سن 1951 کے جنرل آف دی امریکن میڈیکل ایسوسئیشن میں بی. سی. جی. کے ٹیکہ پر بہت زبردست حملہ کیا ہے. اُن کی دو دلیلیں خاص ہیں. پہلی یہ کہ اِس ٹیکے سے جو ایک چھوٹا سا شروع کا تپدق کا حملہ آدمی پر ہو جاتا ہے اُس سے ہرگز یہ نتیجہ نہیں نکالا جاسکتا کہ اُس آدمی کو پھر یہ بیماری نہیں ہوسکتی یا بہت زیادہ زور کے ساتھ نہیں ہوسکتی. دوسرے اُن کا کہنا ہے کہ اِس ٹیکے کا ایک یہ نتیجہ بھی ہوتا ہے کہ آدمی تپدق سے بچنے کے دوسرے زیادہ کارآمد طریقوں کی طرف سے بےپرواہ ہو جاتا ہے. اُن کا یہ بھی صاف صاف خیال ہے کہ جن بچوں کو کافی اچھا کھانا اور شکتی دینے والا کھانا نہیں ملتا اُنہیں بی. سی. جی. کے ٹیکے سے سب سے زیادہ نقصان ہوسکتا ہے.

بی. سی. جی. کے کیڑے آدمی کی جان لے سکتے ہیں

ہمارے دیش میں ایک طرف سے سب بچوں کے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگانے کا جو کام جاری ہے اُس سے بیماری کے اور پھیلنے کا خطرہ نیچے کی باتوں سے معلوم ہوتا ہے.

سن 1955 کی چھپی اِنگلینڈ کی گلیکسو لیبوریٹریز کی ایک کتاب میں لکھا ہے :—"ظاہر ہے کہ ٹیکہ لگانے کے لئے کیڑوں کا جو ویکسین تیار کیا جاتا ہے اُس میں اِس بات کا بہت ڈر رہتا ہے کہ کیڑے اور بڑھ جاویں. خاصکر بی. سی. جی. کے ویکسین میں خطرناک قسم کے کیڑے بڑھ سکتے ہیں. اِسے روکنے کے لئے ویکسین کی تیاری میں بہت بڑی احتیاط کی ضرورت ہے. یہاں ایک اور مشکل آپڑتی ہے وہ یہ کہ تپدق کے کیڑے جس طرح دھیرے دھیرے بڑھتے ہیں، چاہے شیشے کی نلی کے اندر اور چاہے آدمی یا جانور کے بدن کے اندر، اُس سے ویکسین کو بچا ہوا مان سکنے میں چھ ہفتے سے لیکر بارہ ہفتے تک لگ جاتے ہیں، اور ویکسین کا قاعدہ یہ ہے کہ ویکسین تیار ہوتے ہی دو یا تین ہفتے کے اندر کام میں آجانا چاہئے. یعنی اِس خطرے سے بچ سکنے کا پورا یقین ہو ہی نہیں سکتا."

[باقی پھر]

कुछ किताबें — کچھ کتابیں

'The Story Of My Life'—by M. K. Gandhi.

छापने वाले नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद; सफ़े 208; क़ीमत एक रुपया आठ आना; ज़बान अंगरेज़ी.

महात्मा गान्धी की अंगरेज़ी आत्मकथा को श्री भारतन कुमारप्पा ने 170 सफ़े में इस ख़ूबी के साथ मुख़्तसिर किया है कि दिलचस्पी और ज़बान दोनों की ख़ूबसूरती ज़रा भी नहीं घटी है. किताब के आख़ीर में डाक्टर सी० एन० ज़ुत्शी ने 38 सफ़े में किताब से ताल्लुक़ रखने वाले ग्रामर के सबक़ दिये हैं. गांधीजी की आत्मकथा का यह छोटा एडीशन ख़ास तौर पर विद्यार्थियों के लिये तैयार किया गया है. हाई स्कूल और इण्टरमीजिएट दरजों के तालिबइल्मों के लिये यह किताब बड़े काम की, शिक्षाप्रद (सबक़ आमेज़) और उनके ज्ञान को बढ़ाने वाली साबित होगी.

چھاپنے والے نوجیون پبلشنگ ھاؤس' احمدآباد؛ صفحے 208؛ قیمت ایک روپیہ آٹھ آنے؛ زبان انگریزی ۔

مہاتما گاندھی کی انگریزی آتم کتھا کو شری بھارتن کمارپا نے 170 صفحے میں اِس خوبی کے ساتھ مختصر کیا ھے کہ دلچسپی اور زبان دونوں کی خوبصورتی ذرا بھی نہیں گھٹی ھے ۔ کتاب کے آخیر میں ڈاکٹر سی. این. زتشی نے 38 صفحے میں کتاب سے تعلق رکھنے والے گرامر کے سبق دئے ھیں. گاندھی جی کی آتم کتھا کا یہ چھوٹا ایڈیشن خاص طور پر ودیارتھیوں کے لئے تیار کیا گیا ھے ۔ ھائی اسکول اور انٹرمیجئیٹ درجوں کے طالب‌علموں کے لئے یہ کتاب بڑے کام کی' شکشاپرد (سبق آموز) اور اُن کے گیان کو بڑھانے والی ثابت ھوگی ۔

Ashram Observances in Action—by M. K. Gandhi.

छापने वाले ऊपर के; सफ़े 151; क़ीमत एक रुपया. गुजराती से अंगरेज़ी तर्जुमा करने वाले वालजी, गोविंदजी देसाई.

दक्खिन अफ़रीक़ा से ही गान्धी जी ने समाजी जीवन की बुनियाद डालने के लिये आश्रम क़ायम करने और उसमें बहुत से ख़ानदानों के एक साथ मिलकर रहने की परम्परा क़ायम की. अलग-अलग धर्म मानने वाले, अलग अलग जाति वाले, अलग अलग रंग वाले कैसे प्रेम, सदाचार और मज़हबी ज़िन्दगी बिताते हुये सब एक साथ मिलकर रह सकते हैं यह आश्रम इसी मक़सद से गान्धी जी ने क़ायम किये थे. दक्खिन अफ़रीक़ा में फ़िनिक्स आश्रम, अहमदाबाद में पहले कोचरब और बाद में साबरमती आश्रम, और उसके बाद वर्धा के पास सेवाग्राम आश्रम गान्धी जी के केन्द्र बने.

इन आश्रमों में रहने वाले आश्रमवासियों के लिये उन्होंने ज़िन्दगी के कुछ बुनियादी उसूल बनाये थे. वे थे सत्य पर आग्रह, प्रार्थना यानी इबादत, अहिंसा या प्रेम, ब्रह्मचर्य यानी नफ़्सकुशी, अस्तेय यानी अपने हक़ यानी ज़रूरत से ज़्यादा किसी चीज़ को लेने को चोरी समझना चाहे वह पानी ही क्यों न हो, श्रमदान यानी जो मेहनत करे उसी को

چھاپنے والے اُوپر کے؛ صفحے 151؛ قیمت ایک روپیہ ۔ گجراتی سے انگریزی ترجمہ کرنے والے وال جی' گووند جی دیسائی ۔

دکھن افریقہ سے ھی گاندھی جی نے سماجی جیون کی بنیاد ڈالنے کے لئے آشرم قایم کرنے اور اُس میں بہت سے خاندانوں کے ایک ساتھ ملکر رھنے کی پرمپرا قایم کی ۔ الگ الگ دھرم ماننے والے' الگ الگ جاتی والے' الگ الگ رنگ والے کیسے پریم' سداچار اور مذھبی زندگی بتاتے ھوئے سب ایک ساتھ ملکر رہ سکتے ھیں یہ آشرم اسی مقصد سے گاندھی جی نے قایم کئے تھے ۔ دکھن افریقہ میں فنکس آشرم' احمدآباد میں پہلے کوچرب اور بعد میں سابرمتی آشرم' اور اُس کے بعد وردھا کے پاس سیواگرام آشرم گاندھی جی کے کیندر بنے ۔

اِن آشرم میں رھنے والے آشرم واسیوں کے لئے اُنھوں نے زندگی کے کچھ بنیادی اُصول بنائے تھے ۔ وے تھے ستیہ پر آگرہ' پرارتھنا یعنی عبادت' اھنسا یا پریم' برھمچریہ یعنی نفس‌کشی' استییہ یعنی اپنے حق یعنی ضرورت سے زیادہ کسی چیز کو لینے کو چوری سمجھنا چاھے وہ پانی ھی کیوں نہ ھو' شرمدان یعنی جو محنت کرے اُسی کو

रोटी पाने का हक़ है, स्वदेशी, हरिजनों का उत्थान, खेती, गोपालन, बुनियादी तालीम जिसमें दस्तकारी के ज़रिये शिक्षा देने का तरीक़ा ईजाद किया गया है और सत्याग्रह यानी सचाई के रास्ते को जान देकर भी न छोड़ना. इन उसूलों को अपनी ज़िन्दगी में गान्धी जी ने ख़ुद उतारा था और दूसरों को भी वे इसी की तालीम देते थे. यह गान्धी जी की ज़िन्दगी का फ़लसफ़ा है.

किताब के आख़ीर में सत्याग्रह आश्रम, गान्धी जी की इन उसूलों के बारे में तफ़सीर, और सेवाग्राम आश्रम के क़ायदों का भी वर्णन है.

गान्धी जी के उसूल और उनकी शख़्सीयत को समझने के लिये किताब बड़े काम की है.

روٹی پانے کا حق ہے' سودیشی' ہریجنوں کا اُتھان' کھیتی' گوپالن' بنیادی تعلیم جسمیں دستکاری کے ذریعے شکشا دینے کا طریقہ ایجاد کیا گیا ہے اور ستیاگرہ یعنی سچائی کے راستے کو جان دے کر بھی نہ چھوڑنا. ان اُصولوں کو اپنی زندگی میں گاندھی جی نے خود اُتارا تھا اور دوسروں کو بھی وہ اِسی کی تعلیم دیتے تھے. یہ گاندھی جی کی زندگی کا فلسفہ ہے.

کتاب کے آخیر میں ستیاگرہ آشرم' گاندھی جی کی ان اُصولوں کے بارے میں تفسیر' اور سیواگرام آشرم کے قاعدوں کا بھی ورنن ہے.

گاندھی جی کے اُصول اور اُن کی شخصیت کو سمجھنے کے لئے کتاب بڑے کام کی ہے.

'Gandhiji's First Struggl ein India'—by P. C. Ray-chaudhary.

छापने वाले ऊपर के; सफ़े 167; मोल दो रुपया.

चम्पारन के सत्याग्रह के इतिहास पर लेखक की इस किताब से बेहद रोशनी पड़ती है. वैसे तो ख़ुद महात्मा गांधी और डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने चम्पारन के सत्याग्रह पर विस्तार से लिखा है मगर इस किताब की ख़ूबी यह है कि बिहार सरकार के सहयोग से लेखक ने असल रिकार्डों की छान बीन करके गान्धी जी के हाथ के लिखे हुए असली ख़तों के फ़ोटो भी इसमें छापे हैं जो उन्होंने चम्पारन सत्याग्रह के सम्बन्ध में सरकारी अफ़सरों और दूसरे लोगों को लिखे. इस नुक़्ते नज़र से यह किताब प्रमाणित और बड़े काम की है.

چھاپنے والے اُوپر کے؛ صفحے 167؛ مول دو روپیہ.

چمپارن کے ستیا گرہ کے اِتہاس پر لیکھک کی اس کتاب سے بے حد روشنی پڑتی ہے. ویسے تو خود مہاتما گاندھی اور ڈاکٹر راجیندر پرساد نے چمپارن کے ستیاگرہ پر وستار سے لکھا ہے مگر اِس کتاب کی خوبی یہ ہے کہ بہار سرکار کے سہیوگ سے لیکھک نے اصل ریکارڈوں کی چھان بین کر کے گاندھی جی کے ہاتھ کے لکھے ہوئے اصلی خطوں کے فوٹو بھی اِس میں چھاپے ہیں جو اُنہوں نے چمپارن ستیا گرہ کے سمبندھ میں سرکاری افسروں اور دوسرے لوگوں کو لکھے. اِس نقطہ نظر سے یہ کتاب پرمانت اور بڑے کام کی ہے.

'Gokhle: My Political Guru—by M. K. Gandhi.

छापने वाले वही नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद; सफ़े 67; मोल एक रुपया.

चन्द महीने पहले इस किताब के हिन्दी एडीशन की रिव्यू हमने 'नया हिन्द' के कालमों में की थी. यह उसी का अंग्रेज़ी एडीशन है. अंग्रेज़ी जानने वालों के लिये यह किताब न सिर्फ़ गोखले को जानने समझने बल्कि ख़ुद गान्धी जी के व्यक्तित्व को समझने के लिये भी बड़ी उपयोगी साबित होगी.

چھاپنے والے وہی نوجیون پبلشنگ ہاؤس' احمدآباد؛ صفحے 67؛ مول ایک روپیہ.

چند مہینے پہلے اِس کتاب کے ہندی ایڈیشن کی ریویو ہم نے 'نیاہند' کے کالموں میں کی تھی. یہ اُسی کا انگریزی ایڈیشن ہے. انگریزی جاننے والوں کے لئے یہ کتاب نہ صرف گوکھلے کو جاننے سمجھنے بلکہ خود گاندھی جی کے ویکتتو کو سمجھنے کے لئے بھی بڑی اُپیوگی ثابت ہو گی.

'अहिंसक समाजवाद की ओर'—लेखक गांधी जी

छापने वाले नवजीवन प्रकाशन मन्दिर; सफ़े 20; क़ीमत दो रुपये.

अब जबकि हिन्दुस्तान ने समाजवादी ढाँचे को अपना मक़सद बना लिया है देशवासियों को यह समझना ज़रूरी हो गया है कि वे समाजवाद को तफ़सील से जानें और यह समझें कि समाजवाद की कौनसी रूप रेखा उनके लिये फ़ायदे-मन्द होगी.

भारत पूरे 30 बरसों तक गांधी जी के बताये हुए रास्ते पर चला. उन्हीं के विचारों की छाया में उसने आज़ादी हासिल की. वे विचार उसकी रग-रग में पैवस्त हैं. इसलिये यह ज़रूरी है कि देशवासी समाजवाद के बारे में गान्धीजी के विचार जानें और समझें.

'اہنسک سماج واد کی اور'—لیکھک گاندھی جی

چھاپنے والے نوجیون پرکاشن مندر؛ صفحے 204؛ قیمت دو روپئے.

اب جب کہ ہندستان نے سماج وادی ڈھانچے کو اپنا مقصد بنا لیا ہے دیش واسیوں کو یہ سمجھنا ضروری ہو گیا ہے کہ وہ سماج واد کو تفصیل سے جانیں اور یہ سمجھیں کہ سماج واد کی کونسی روپ ریکھا اُن کے لئے فایدہ مند ہوگی.

بھارت پورے 30 برسوں تک گاندھی جی کے بتائے ہوئے راستے پر چلا. اُنہیں کے وچاروں کی چھایا میں اُس نے آزادی حاصل کی. وہ وچار اُس کی رگ رگ میں پیوست ہیں. اِس لئے یہ ضروری ہے کہ دیش واسی سماج واد کے بارے میں گاندھی جی کے وچار جانیں اور سمجھیں.

गान्धी जी के ग्यारह व्रत—सत्य, प्रेम या अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह (दौलत पर निजी मालिकाना छोड़ना), अस्तेय (जरूरत से ज्यादा किसी चीज़ को लेने को चोरी समझना), शरीर-श्रम, अस्वाद, अभय, (निडरता), सर्वधर्म समभाव, अस्पृश्यता निवारण और स्वदेशी—गान्धी जी के समाजवादी ढाँचे के बुनियादी उसूल थे. गान्धी जी अमली उसूलवादी थे. जो दूसरों को कहते थे उसे पहले खुद अपनी ज़िन्दगी में उतारते थे. इस नुक्ते नजर से यह किताब बड़े काम की है. हमारी सिफ़ारिश है कि हर पढ़े लिखे हिन्दुस्तानी को यह किताब, समाजवाद का असली मोल आँकने के लिये, ज़रूर पढ़नी चाहिये.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

گاندھی جی کے گیارہ ورت—ستیہ، پریم یا اہنسا، برہمچریہ، اپریگرہ (دولت پر نجی مالکانہ چھوڑنا) استیہ (ضرورت سے زیادہ کسی چیز کو لینے کو چوری سمجھنا) شریر شرم، اسواد، ابھئے (نڈرتا)، سرو دھرم سمبھاؤ، اسپرشتانوارن اور سودیشی —گاندھی جی کے سماج‌وادی ڈھانچے کے بنیادی اصول تھے. گاندھی جی عملی اصول وادی تھے. جو دوسروں کو کہتے تھے اسے پہلے خود اپنی زندگی میں اتارتے تھے. اس نقطہ نظر سے یہ کتاب بڑے کام کی ہے. ہماری سفارش ہے کہ ہر پڑھے لکھے ہندستانی کو یہ کتاب، سماج واد کا اصلی مول آنکنے کے لئے، ضرور پڑھنی چاہیئے.

—وشومبھرناتھ پانڈے.

हमारी राय

ہماری رائے

नए चीन को मुबारकबाद !

1 अक्तूबर सन् 1955 को चीन में नए चीनी लोक राज (पीपुल्स रिपब्लिक आफ़ चाइना) की छठी सालगिरह बड़ी धूम धाम से मनाई गई. दुनिया के सब स्वतंत्रता प्रेमी देशों ने चीन के शासकों और नेताओं को बधाई दी. भारत के राष्ट्रपति और प्रधान-मंत्री ने भी चीन के राष्ट्रपति और प्रधान-मंत्री को इस शुभ अवसर पर बधाई के संदेश भेजे. भारत-चीन मैत्री-संघ के प्रेसीडेन्ट ने दिल्ली से चीन-भारत मैत्री संघ के प्रेसीडेन्ट को पीकिंग में बधाई का तार भेजा और उन्हें विश्वास दिलाया कि भारत की जनता दुनिया में शान्ति क़ायम रखने और दुनिया के दूसरे देशों की जनता को आज़ाद और ख़ुशहाल करने की कोशिशों में चीनी जनता का हमेशा पूरा पूरा साथ देगी.

इन छै बरस के अन्दर नए चीन ने जीवन के हर मैदान में जो ज़बरदस्त तरक़्क़ी की है वह दुनिया भर पर उजागर हो चुकी है. यहां उसे दुहराने की ज़रूरत नहीं है. नए चीन ने दुनिया के लोगों को और उन लोगों को भी जिन्हें नए चीन के इरादों पर किसी तरह के शक थे यह साबित कर दिया कि नया चीन किसी से लड़ना नहीं चाहता. वह सब देशों और सब लोगों के साथ शान्ति और दोस्ती से रहना चाहता है. चीन और भारत के नेताओं ने मिलकर वह पांच ऊँचे सिद्धान्त दुनिया के सामने रक्खे जो आज पंचशील के नाम से मशहूर हैं, जिन्हें एक दूसरे के बाद दुनिया के सब देश अपनी अन्तर्राष्ट्री नीति के बुनियादी असूल मानते जा रहे हैं, और जिन्होंने बता दिया कि कम्युनिस्ट चीन उन सब देशों के साथ मित्रता से रहना चाहता है जो उसके साथ मित्रता से रहना चाहें. इसमें चीन की नज़रों में कम्युनिस्ट और ग़ैर कम्युनिस्ट मार्क्सिस्ट और ग़ैर मार्क्सिस्ट का कोई फ़र्क़ नहीं.

कोरिया में उन पच्छिमी मुल्कों की फ़ौजों ने जिनकी दूसरों पर हकूमत करने और उनके धन और शक्ति से बेजा फ़ायदा उठाने की नापाक लालसा अभी ख़तम नहीं हुई है

نئے چین کو مبارک باد !

1 اکتوبر سن 1955ع کو چین میں نئے چینی لوک راج (پیپلس ریپبلک آف چائنا) کی چھٹی سالگرہ بڑی دھوم دھام سے منائی گئی ۔ دنیا کے سب سوتنترتا پریمی دیشوں نے چین کے شاسکوں اور نیتاؤں کو بدھائی دی ۔ بھارت کے راشٹرپتی اور پردھان منتری نے بھی چین کے راشٹرپتی اور پردھان منتری کو اِس شبھ اوسر پر بدھائی کے سندیش بھیجے۔ بھارت چین میتری سنگھ کے پریسیڈنٹ نے دلی سے چین بھارت میتری سنگھ کے پریسیڈنٹ کو پیکنگ میں بدھائی کا تار بھیجا اور اُنھیں وشواس دلایا کہ بھارت کی جنتا دنیا میں شانتی قائم رکھنے اور دنیا کے دوسرے دیشوں کی جنتا کو آزاد اور خوشحال کرنے کی کوششوں میں چینی جنتا کا ہمیشہ پورا پورا ساتھ دے گی ۔

اِن چھ برس کے اندر نئے چین نے جیون کے ہر میدان میں جو زبردست ترقی کی ہے وہ دنیا بھر پر اُجاگر ہوچکی ہے ۔ یہاں اُسے دھرانے کی ضرورت نہیں ہے ۔ نئے چین نے دنیا کے لوگوں کو اور اُن لوگوں کو بھی جنھیں نئے چین کے اِرادوں پر کسی طرح کے شک تھے یہ ثابت کردیا کہ نیا چین کسی سے لڑنا نہیں چاہتا ۔ وہ سب دیشوں اور سب لوگوں کے ساتھ شانتی اور دوستی سے رہنا چاہتا ہے ۔ چین اور بھارت کے نیتاؤں نے مل کر وہ پانچ اُونچے سدھانت دنیا کے سامنے رکھے جو آج پنچ شیل کے نام سے مشہور ہیں، جنھیں ایک دوسرے کے بعد دنیا کے سب دیش اپنی انتر راشٹرنیتی کے بنیادی اُصول مانتے جارہے ہیں، اور جنھوں نے بتا دیا کہ کمیونسٹ چین اُن سب دیشوں کے ساتھ مترتا سے رہنا چاہتا ہے جو اُس کے ساتھ مترتا سے رہنا چاہیں ۔ اس میں چین کی نظروں میں کمیونسٹ اور غیر کمیونسٹ، مارکسسٹ اور غیر مارکسسٹ کا کوئی فرق نہیں ۔

کوریا میں اُن پچھمی ملکوں کی فوجوں نے جن کی دوسروں پر حکومت کرنے اُن کے دھن اور شکتی سے بیجا فائدہ اُٹھانے کی ناپاک لالسا ابھی ختم نہیں ہوئی ہے

वहां के घरेलू झगड़े में ज़बरदस्ती दख़ल देकर कोरिया वालों को कोरिया वालों से लड़ा कर फ़ायदा उठाना चाहा. कोरिया के बहादुर सपूतों ने उनका डट कर मुकाबला किया. नए चीन ने उस समय तक दख़ल नहीं दिया जब तक कि लड़ाई चीन की सरहद तक नहीं पहुंच गई और नए चीन की भूमि पर बरसने वाले गोलों ने यह साबित नहीं कर दिया कि दूसरों की आज़ादी के दुशमनों की निगाहें केवल कोरिया पर ही नहीं चीन पर भी लगी हुई हैं. देखते देखते लड़ाई का पलड़ा पलटा. ठीक उस जीत के समय जब दुनिया के दूसरे शान्ति-प्रिय देशों ने, जिन में भारत ख़ास था, चाहा कि कोरिया का मामला शान्ति के साथ तय हो जावे और चीन को इसकी आशा दिलाई तो चीन ने अपने हाथ लड़ाई से खेंच लिये. कोरिया की लड़ाई को बन्द करने में चीन का हिस्सा सबसे ज़बरदस्त, चीन के यश को बढ़ाने वाला और नए चीन की अमन पसन्दी का बहुत बड़ा सबूत है.

हिन्द चीन (इन्डो चाइना) की लड़ाई को बन्द कराने में चीन और भारत दोनों ने मिल कर जो हिस्सा लिया है वह इन दोनों देशों के लिये बड़े गौरव की चीज़ है.

ताईवान (फ़ारमूसा) चीन के शरीर का एक टुकड़ा है. किसी भी बाहर की क़ौम का वहां दख़ल देना और उसे अपना फ़ौजी अड्डा बनाए रखना अन्तर्राष्ट्री अन्याय है. ताईवान के उपद्रवियों को, जो ताईवान के रहने वाले नहीं हैं, चीनी महाद्वीप से हार कर और भाग कर ग़ैरों की किरचों के साए में वहां पर पनाह लिये हुए हैं, क़ाबू में कर लेना नए चीन के लिये बाएं हाथ का खेल था और ताईवान और वहां की जनता को आज़ाद करना नए चीन का फ़र्ज़ भी है. फिर भी नए चीन ने ताईवान की लड़ाई से फ़िलहाल अपना हाथ खेंच लिया इसलिये ताकि दुनिया की जनता जंग की बरबादी से बची रहे, ताईवान का यह मामला भी सुलह सफ़ाई ही से तय हो सके और सब मुल्कों के बीच शान्ति और दोस्ती क़ायम रह सके.

दुनिया की अन्तर्राष्ट्री कानफ़रेंसों में ख़ास कर जनीवा में और बान्डुंग में नए चीन के नेताओं ने दुनिया भर पर यह उजागर कर दिया कि वह नया चीन जिसने केवल कुछ साल पहले दुनिया की सब से बड़ी साम्राजी ताक़तों से लोहा लेकर अपनी साठ करोड़ जनता को सच्ची आज़ादी दिलवाई है वही नया चीन शान्ति का सब से बड़ा हामी और मददगार और जंग का सब से बड़ा दुशमन भी है. एशिया का सब से शक्तिशाली देश और दुनिया के सब से अधिक शक्तिशाली देशों में से एक होते हुए भी वह दुनिया के सब देशों के साथ अमन और दोस्ती से रहना चाहता है. यही कारण है कि नए चीन और

وہاں کے گھریلو جھگڑے میں زبردستی دخل دے کر کوریا والوں کو کوریا والوں سے لڑا کر فائدہ اُٹھانا چاہا. کوریا کے بہادر سپوتوں نے اُن کا ڈٹ کر مقابلہ کیا. نئے چین نے اُس سمے تک دخل نہیں دیا جب تک کہ لڑائی چین کی سرحد تک نہیں پہونچ گئی اور نئے چین کی بھومی پر برسنے والے گولوں نے یہ ثابت نہیں کردیا کہ دوسروں کی آزادی کے دشمنوں کی نگاہیں کیول کوریا پر ہی نہیں چین پر بھی لگی ہوئی ہیں. دیکھتے دیکھتے لڑائی کا پلڑا پلٹا. ٹھیک اُس جیت کے سمے جب دنیا کے دوسرے شانتی پریہ دیشوں نے، جن میں بھارت خاص تھا، چاہا کہ کوریا کا معاملہ شانتی کے ساتھ طے ہو جاوے اور چین کو اس کی آشا دلائی تو چین نے اپنے ہاتھ لڑائی سے کھینچ لئے. کوریا کی لڑائی کو بند کرنے میں چین کا حصہ سب سے زبردست، چین کے یش کو بڑھانے والا اور نئے چین کی اَمن پسندی کا بہت بڑا ثبوت ہے.

ہند چین (اِنڈو چائنا) کی لڑائی کو بند کرانے میں چین اور بھارت دونوں نے مل کر جو حصہ لیا ہے وہ اِن دونوں دیشوں کے لئے بڑے گورو کی چیز ہے.

تائیوان (فارموسا) چین کے شریر کا ایک ٹکڑا ہے. کسی بھی باہر کی قوم کا وہاں دخل دینا اور اُسے اپنا فوجی اڈا بنائے رکھنا انتر راشٹری انیایہ ہے. تائیوان کے اُپدرویوں کو، جو تائیوان کے رہنے والے نہیں ہیں، چینی مہادیپ سے ہار کر اور بھاگ کر غیروں کی کرچوں کے سایہ میں وہاں پر پناہ لئے ہوئے ہیں، قابو میں کر لینا نئے چین کے لئے بائیں ہاتھ کا کھیل تھا اور تائیوان اور وہاں کی جنتا کو آزاد کرنا نئے چین کا فرض بھی ہے. پھر بھی نئے چین نے تائیوان کی لڑائی سے فی الحال اپنا ہاتھ کھینچ لیا اس لئے تاکہ دنیا کی جنتا جنگ کی بربادی سے بچی رہے، تائیوان کا یہ معاملہ بھی صلح صفائی ہی سے طے ہو سکے اور سب ملکوں کے بیچ شانتی اور دوستی قائم رہ سکے.

دنیا کی انتر راشٹری کانفرنسوں میں خاص کر جنیوا میں اور بانڈنگ میں نئے چین کے نیتاؤں نے دنیا بھر پر یہ اُجاگر کر دیا کہ وہ نیا چین جس نے کیول کچھ سال پہلے دنیا کی سب سے بڑی سامراجی طاقتوں سے لوہا لے کر اپنی ساٹھ کروڑ جنتا کو سچی آزادی دلوائی ہے وہی نیا چین شانتی کا سب سے بڑا حامی اور مددگار اور جنگ کا سب سے بڑا دشمن بھی ہے. ایشیا کا سب سے شکتی شالی دیش اور دنیا کے سب سے ادھک شکتی شالی دیشوں میں سے ایک ہوتے ہوئے بھی وہ دنیا کے سب دیشوں کے ساتھ امن اور دوستی سے رہنا چاہتا ہے. یہی کارن ہے کہ نئے چین اور

उसके नेताओं का मान और उनके साथ प्रेम आज दुनिया भर में बढ़ता चला जा रहा है.

इस सबके साथ साथ नए चीन के नेताओं ने अपने देश के अन्दर के जीवन को इस थोड़े से समय में जिस तरह ऊपर उठाया है, जिस तरह देश की आर्थिक अवस्था को सुधारा है, करोड़ों जनता के सदाचार को ऊँचा किया है, सारे देश से बेकारी, भिखमंगी, चोरी, रिशवतखोरी और वीरानी को मिटाकर उसे एक हरा भरा बाग़ बना दिया है उसकी दूसरी मिसाल दुनिया के अभी तक के इतिहास में आसानी से नहीं मिल सकती.

एशिया और अफ्रीका के उन देशों के लिये जो अभी तक ग़ैरों से कुछ न कुछ दबे हुए और इनसानी तरक़्क़ी की दौड़ में पिछड़े हुए हैं नया चीन सब से बड़ा आदर्श और सब से बड़ा सहारा है. दुनिया की जनता को ऐक करने के लिये नया चीन आज सब से बड़ी शक्ति दिखाई देता है. कारण यह है कि नया चीन "जनता का चीन" है. दुनिया की जनता एक है. काली या गोरी, लाल या पीली जनता कहीं भी एक दूसरे से लड़ना नहीं चाहती. जनता में प्रेम है. जनता में ही जनार्दन हैं. जनता में अनन्त शक्ति छिपी हुई है. वह शक्ति अब तेज़ी के साथ जागती जा रही है और दुनिया को एक करती जा रही है. इन सब बातों में जो भाव, जो विचार और जो उमंगें चीनी जनता के अन्दर जाग चुकी हैं वही भारत की जनता के दिलों में हिलोरें मार रही हैं. यह दोनों पुराने देश सच्चे से सच्चे मानी में अध्यात्म प्रधान देश हैं. दोनों की पिछली अंधेरी सदियों की बहुत कुछ कालिख धुल चुकी है, बाक़ी धुलती जा रही है. दोनों पर इन्सानी समाज को उसके लक्ष तक पहुंचाने के लिये ज़बरदस्त ज़िम्मेवारी है. इसलिये हम "नया हिन्द" परिवार की तरफ़ से नए चीन की जनता को उनकी इस छठी सालगिरह के अवसर पर दिल से बधाई देते हैं. हमारी दिली इच्छा है कि चीन के लिये यह दिन हज़ारों साल तक बढ़ती हुई शान्ति और चमक दमक के साथ बार बार आता रहे. हमारी यह भी इच्छा है कि मानव सामाज की सच्ची सेवा के लिये हिन्दुस्तान और चीन की दोस्ती हमेशा हमेशा के लिये क़ायम रहे !

1. 10. '55 —सुन्दरलाल

اُس کے نیتاؤں کا مان اور اُن کے ساتھ پریم آج دنیا بھر میں بڑھتا چلا جا رہا ہے ۔

اِس سب کے ساتھ ساتھ نئے چین کے نیتاؤں نے اپنے دیش کے اندر کے جیون کو اِس تھوڑے سے سمے میں جس طرح اُوپر اُٹھایا ہے، جس طرح دیش کی آرتھک اوستھا کو سدھارا ہے، کروڑوں جنتا کے سداچار کو اُونچا کیا ہے، سارے دیش سے بیکاری، بھکمنگی، چوری اور ویرانی کو مٹا کر اُسے ایک ہرا بھرا باغ بنا دیا ہے اُس کی دوسری مثال دنیا کے ابھی تک کے اِتہاس میں آسانی سے نہیں مل سکتی ۔

ایشیا اور افریقہ کے اُن دیشوں کے لئے جو ابھی تک غیروں سے کچھ نہ کچھ دبے ہوئے اور انسانی ترقی کی دوڑ میں پچھڑے ہوئے ہیں نیا چین سب سے بڑا آدرش اور سب سے بڑا سہارا ہے ۔ دنیا کی جنتا کو ایک کرنے کے لئے نیا چین آج سب سے بڑی شکتی دکھائی دیتا ہے ۔ کارن یہ ہے کہ نیا چین "جنتا کا چین" ہے ۔ دنیا کی جنتا ایک ہے ۔ کالی یا گوری، لال یا پیلی جنتا کہیں بھی ایک دوسرے سے لڑنا نہیں چاہتی ۔ جنتا میں پریم ہے ۔ جنتا میں ہی جناردن ہیں ۔ جنتا میں اننت شکتی چھپی ہوئی ہے ۔ وہ شکتی اب تیزی کے ساتھ جاگتی جا رہی ہے اور دنیا کو ایک کرتی جا رہی ہے ۔ اِن سب باتوں میں جو بھاؤ، جو وچار اور جو اُمنگیں چینی جنتا کے اندر جاگ چکی ہیں وہی بھارت کی جنتا کے دلوں میں ہلورے مار رہی ہیں ۔ یہ دونوں پرانے دیش سچے سے سچے معنی میں ادھیاتم پردھان دیش ہیں ۔ دونوں کی پچھلی اندھیری صدیوں کی بہت کچھ کالکھ دھل چکی ہے، باقی دھلتی جا رہی ہے ۔ دونوں پر اِنسانی سماج کو اُس کے لکش تک پہنچانے کے لئے زبردست ذمہ واری ہے ۔ اِس لئے ہم "نیا ہند" پریوار کی طرف سے نئے چین کی جنتا کو اُن کی اِس چھٹی سالگرہ کے اوسر پر دل سے بدھائی دیتے ہیں ۔ ہماری دلی اِچھا ہے کہ چین کے لئے یہ دن ہزاروں سال تک بڑھتی ہوئی شان اور چمک دمک کے ساتھ بار بار آتا رہے ۔ ہماری یہ بھی اِچھا ہے کہ مانو سماج کی سچی سیوا کے لئے ہندستان اور چین کی دوستی ہمیشہ ہمیشہ کے لئے قائم رہے !

—سندر لال 1.10 '55

यह क्यों ?

देश में सरकार की तरफ़ से तपेदिक़ के 'टीके का काम' जिसे बी. सी. जी. का टीका कहा जाता है बराबर जारी है. ख़ास कर स्कूलों के अन्दर जगह जगह एक तरफ़ से सब बच्चों के यह टीके लगाये जा रहे हैं. देश के कुछ हितैशियों

یہ کیوں ؟

دیش میں سرکار کی طرف سے تپ دق کے 'ٹیکہ کا کام' جسے بی. سی. جی کا ٹیکہ کہا جاتا ہے، برابر جاری ہے ۔ خاص کر اسکولوں کے اندر جگہ جگہ ایک طرف سے سب بچوں کے یہ ٹیکے لگائے جا رہے ہیں ۔ دیش کے کچھ ہتیشیوں

ने इस टीके का विरोध किया. उनमें दो खास नाम श्री सी. राजागोपालाचारी और श्री विनोबा भावे के हैं. राजा जी के कई बयान और भाषण इस विषय पर समाचार पत्रों में छप चुके हैं. सरकारी अफ़सरों ने इस विरोध की कोई परवाह नहीं की. यहां तक कि कुछ सरकारी अफसरों और राजा जी के बीच थोड़ी बहुत बहसा बहसी भी हुई. देश के कई बड़े बड़े डाक्टरों ने राजा जी का समर्थन किया. राजा जी ने अपने एक बयान में कहा है कि सरकार ने किसी सरकुलर के ज़रिये देश के डाक्टरों, खास कर सरकारी नौकरों को, यह हिदायत की है कि वह देश के मामूली अखबारों के अन्दर इस विषय पर अपनी राय जाहिर न करें और अगर उन्हें कुछ कहना ही हो तो साइंसी ढंग से साइंसी पत्रिकाओं के अन्दर कहें. राजा जी का कहना है कि इस पर बहुत से डाक्टरों को डर हो गया कि अगर वह सरकार की पालिसी के खिलाफ़ बी० सी० जी० के टीके पर कोई राय जाहिर करेंगे तो उनका रजिस्ट्रेशन छिन सकता है. भारत सरकार की हैल्थ मिनिस्टर राजकुमारी अमृत कौर ने पार्लिमेंट के अन्दर कहा कि राजाजी का यह कहना कि डाक्टरों पर इस तरह का दबाव डाला गया है ग़लत है. हम इस बारे में केवल इतना ही कह सकते हैं कि सच कई तरह के होते हैं. अदालती या क़ानूनी सच एक अलग चीज़ है, सरकारी या राजकाजी सच दूसरी चीज़ है और मामूली जनता का सच तीसरी चीज़ है. राजा जी के चरित्र और उनकी निस्वार्थता से भी देश अच्छी तरह परिचित है. जो हो, इतने दिनों की बहसा बहसी के बाद भी सरकार का टीके लगाने का काम बेधड़क ज़ोरों के साथ जारी है, और राजा जी ज्यों के त्यों अपनी बात पर डटे हैं.

हाल में राजा जी ने अंग्रेजी में एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित की है जिसमें उन्होंने दिखाया है कि वह बी० सी० जी० का विरोध क्यों करते हैं. इसमें उन्होंने यह भी लिखा है कि इस पुस्तिका के निकालने की उन्हें जरूरत क्यों पड़ी. हम इस बी० सी० जी० के मामले में राजा जी राय से पूरी तरह सहमत हैं. इसलिये हम अपना फ़र्ज़ समझकर राजा जी की पुस्तिका का हिन्दुस्तानी अनुवाद पाठकों की भेंट कर रहे हैं. हम चाहते हैं कि हमारे अधिक से अधिक देशवासी इसे पढ़कर या सुनकर लाभ उठावें.

14. 10. '55 —सुन्दरलाल

"दुनिया की माताओं की कांग्रेस"

दुनिया को जंग के खतरे से बचाने और दुनिया में अमन क़ायम रखने के लिये जो कोशिशें आज जगह जगह हो रही हैं उनमें एक बहुत बड़ी कोशिश दुनिया भर की माताओं की कांग्रेस है जो 7 जुलाई 1955 से 10 जुलाई 1955

نے اِس ٹیکے کا ورودھ کیا. اِن میں دو خاص نام شری سی. راجا گوپالا چاری اور شری ونوبا بھاوے کے ہیں. راجا جی کے کئی بیان اور بھاشن اِس وشئے پر سماچار پتروں میں چھپ چکے ہیں. سرکاری افسروں نے اِس ورودھ کی کوئی پرواہ نہیں کی. یہاں تک کہ کچھ سرکاری افسروں اور راجا جی کے بیچ تھوڑی بہت بحثا بحثی بھی ہوئی. دیش کے کئی بڑے بڑے ڈاکٹروں نے راجا جی کا سمرتھن کیا. راجا جی نے اپنے ایک بیان میں کہا ہے کہ سرکار نے کسی سرکلر کے ذریعے دیش کے ڈاکٹروں، خاص کر سرکاری نوکروں کو، یہ ہدایت کی ہے کہ وہ دیش کے معمولی اخباروں کے اندر اِس وشئے پر اپنی رائے ظاہر نہ کریں اور اگر اُنہیں کچھ کہنا ہی ہو تو سائنسی ڈھنگ سے سائنسی پتریکاؤں کے اندر کہیں. راجا جی کا کہنا ہے کہ اس پر بہت سے ڈاکٹروں کو ڈر ہو گیا کہ اگر وہ سرکار کی پالیسی کے خلاف بی. سی. جی کے ٹیکے پر کوئی رائے ظاہر کریں گے تو اُن کا رجسٹریشن چھن سکتا ہے. بھارت سرکار کی ہیلتھ منسٹر راج کماری امرت کور نے پارلیمنٹ کے اندر کہا کہ راجا جی کا یہ کہنا کہ ڈاکٹروں پر اِس طرح کا دباؤ ڈالا گیا ہے غلط ہے. ہم اِس بارے میں کیول اِتنا ہی کہہ سکتے ہیں کہ سچ کئی طرح کے ہوتے ہیں. عدالتی یا قانونی سچ ایک الگ چیز ہے، سرکاری یا راج کاجی سچ دوسری چیز ہے اور معمولی جنتا کا سچ تیسری چیز ہے. راجاجی کے چرتر اور اُن کی نیسوارتھتا سے بھی دیش اچھی طرح پریچت ہے. جو ہو، اتنے دنوں کی بحثابحثی کے بعد بھی سرکار کا ٹیکے لگانے کا کام بے دھڑک زوروں کے ساتھ جاری ہے، اور راجا جی جیوں کے تیوں اپنی بات پر ڈٹے ہیں.

حال میں راجا جی نے انگریزی میں ایک چھوٹی سی پستکا پرکاشت کی ہے جسمیں اُنہوں نے دکھایا ہے کہ وہ بی. سی. جی کا ورودھ کیوں کرتے ہیں. اِس میں اُنہوں نے یہ بھی لکھا ہے کہ اِس پستکا کے نکالنے کی اُنہیں ضرورت کیوں پڑی. ہم اِس بی. سی. جی کے معاملے میں راجا جی کی رائے سے پوری طرح سہمت ہیں. اِس لئے ہم اپنا فرض سمجھ کر راجا جی کی پستکا کا ہندستانی انوواد پاٹھکوں کی بھینٹ کر رہے ہیں. ہم چاہتے ہیں کہ ہمارے ادھک سے ادھک دیش واسی اِسے پڑھ کر یا سن کر لابھ اُٹھا ویں.

—سندر لال 14. 10. 55

"دنیا کی ماتاؤں کی کانگریس"

دنیا کو جنگ کے خطرے سے بچانے اور دنیا میں امن قائم رکھنے کے لئے جو کوششیں آج جگہ جگہ ہو رہی ہیں اُن میں ایک بہت بڑی کوشش دنیا بھر کی ماتاؤں کی وہ کانگریس ہے جو 7 جولائی سن 1955 سے 10 جولائی سن 1955

तक योरप के मशहूर शहर लासेन में हुई. इस कांग्रेस में दुनिया के छयासठ देशों से, जिनमें अमरीका, इंगलैंड, फ्रांस, रूस, चीन और हिन्दुस्तान सब शामिल थे, एक हज़ार से ऊपर माएं जमा हुई थीं. उनमें छयों महाद्वीपों, सब धर्मों और सब बोलियों वाली माएं मौजूद थीं. दुनिया की तारीख़ में अपनी क़िस्म की यह पहली कांग्रेस थी.

चार दिन की बहस के बाद जो फ़ैसला उन एक हज़ार से ऊपर माओं ने एक राय से दुनिया के सामने रक्खा उसके कुछ वाक्य हम नीचे देते हैं :—

"छयासठ मुल्कों और सब महाद्वीपों से आने वाली, अलग अलग बोलियों वाली, अलग अलग धार्मिक विश्वास, अलग अलग विचार और तरह तरह के सामाजिक हालात में रहने वाली हम औरतें और माएं इतिहास में पहली बार इस कांग्रेस में जमा हुई हैं.

"हम सब एक ही पक्के इरादे के साथ जमा हुई हैं और वह यह है कि अपने बच्चों को जंग के हर तरह के ख़तरे से बचावें और उन्हें सुख और चैन के साथ जिन्दा रहने का मौक़ा दें.

"यह कांग्रेस जंग से पैदा होने वाली मुसीबतों से गूँज रही है. दूसरी बड़ी जंग ने जिन करोड़ों माओं को रुलाया, जिन बच्चों को मिटा डाला और जिस तरह दुनिया के इनसानों को रंज और ग़म में डुबो दिया उसे हम भूल नहीं सकतीं. चार करोड़ से ऊपर आदमी उस जंग में मरे, तीन करोड़ से ऊपर जख़मी या हमेशा के लिये बेकार हो गए, करोड़ों यतीम हो गए, करोड़ों उसके बाद दरिद्रता और अकाल का शिकार हुए. न जाने कितनी उम्मीदें टूटीं, कितनों की क़ाबलीयतें मिट्टी में मिल गईं. कितने बरबाद हो गए !

"उन तमाम मुसीबतों को याद रखते हुए हम इस पक्के इरादे के साथ जमा हुई हैं कि अब हम नई जङ्ग न होने देंगी. हमने यहां एक दूसरे को जान और पहचान लिया है. हमें एक दूसरे से प्यार है. हमने इस बात को भी देख लिया है कि हम माओं में कितनी बड़ी शक्ति छिपी हुई है. जो चीज़ें हम में एक दूसरे से फ़र्क़ करती हैं वह तुच्छ और छोटी हैं, जो हमें एक दूसरे से मिलाती हैं वह अहम और बड़ी हैं, हम इस बात को अच्छी तरह समझ गई हैं कि कोई कारण नहीं है कि दुनिया की अलग अलग क़ौमें एक दूसरे की दुश्मन बन कर रहें. यह दुनिया काफ़ी बड़ी है, इसमें सब के लिये गुंजाइश है. सब मिलकर अमन से रह सकते हैं.

"लेकिन दुनिया में जब तक अलग अलग मुल्क हथियारों की दौड़ में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करते रहेंगे, जब तक अलग अलग फ़ौजी दल और अखाड़े बने

تک یورپ کے مشہور شہر لاسین میں ہوئی . اِس کانگریس میں دنیا کے چھیاسٹھ دیشوں سے' جن میں امریکہ' انگلینڈ' فرانس' روس' چین اور هندستان سب شامل تھے' ایک ہزار سے اوپر مائیں جمع ہوئی تھیں . اُن میں چھیوں مہادیپوں' سب دھرموں اور سب بولیوں والی مائیں موجود تھیں . دنیا کی تاریخ میں اپنی قسم کی یہ پہلی کانگریس تھی .

چار دن کی بحث کے بعد اپنا جو فیصلہ اُن ایک ہزار سے اوپرماؤں نے ایک رائے سے دنیا کے سامنے رکھا اُس کے کچھ واکیہ ہم نیچے دیتے ہیں:—

چھیاسٹھ ملکوں اور سب مہادیپوں سے آنے والی' الگ الگ بولیوں والی' الگ الگ دھارمک وشواس' الگ الگ وچار اور طرح طرح کے ساماجک حالات میں رہنے والی ہم عورتیں اور مائیں اتہاس میں پہلی بار اِس کانگریس میں جمع ہوئی ہیں .

"ہم سب ایک ہی پکے ارادے کے ساتھ جمع ہوئی ہیں اور وہ یہ ہے کہ اپنے بچوں کو جنگ کے ہر طرح کے خطرے سے بچاویں اور اُنھیں سکھ اور چین کے ساتھ زندہ رہنے کا موقع دیں .

"یہ کانگریس جنگ سے پیدا ہونے والی مصیبتوں سے گونج رہی ہے . دوسری بڑی جنگ نے جن کروڑوں ماؤں کو رلایا' جن بچوں کو مٹاڈالا اور جس طرح دنیا کے انسانوں کو رنج اور غم میں ڈبو دیا اُسے ہم بھول نہیں سکتیں . چار کروڑ سے اوپر آدمی اُس جنگ میں مرے' تین کروڑ سے اوپر زخمی یا ہمیشہ کے لئے بےکار ہوگئے' کروڑوں یتیم ہوگئے' کروڑوں اُس کے بعد دردرتا اور اکال کا شکار ہوئے . نہ جانے کتنی اُمیدیں ٹوٹیں' کتنوں ہی قابلیتیں مٹی میں مل گئیں . کتنے برباد ہوگئے !

"اُن تمام مصیبتوں کو یاد رکھتے ہوئے ہم اِس پکے ارادے کے ساتھ جمع ہوئی ہیں کہ اب ہم نئی جنگ نہ ہونے دینگی . ہم نے یہاں ایک دوسرے کو جان اور پہچان لیا ہے . ہمیں ایک دوسرے سے پیار ہے . ہم نے اِس بات کو بھی دیکھ لیا ہے کہ ہم ماؤں میں کتنی بڑی شکتی چھپی ہوئی ہے . جو چیزیں ہم میں ایک دوسرے سے فرق کرتی ہیں وہ تچھ اور چھوٹی ہیں' جو ہمیں ایک دوسرے سے ملاتی ہیں وہ اہم اور بڑی ہیں . ہم اِس بات کو اچھی طرح سمجھ گئی ہیں کہ کوئی کارن نہیں ہے کہ دنیا کی الگ الگ قومیں ایک دوسرے کی دشمن بن کر رہیں . یہ دنیا کافی بڑی ہے' اِس میں سب کے لئے گنجائش ہے . سب ملکر امن سے رہ سکتے ہیں .

"لیکن دنیا میں جب تک الگ الگ ملک ہتھیاروں کی دوڑ میں ایک دوسرے سے بڑھنے کی کوشش کرتے رہینگے' جب تک الگ الگ فوجی دل اور اکھاڑے بنے

रहेंगे, जब तक एक दूसरे की हिंसा की जाती रहेगी और जङ्ग का प्रोपेगंडा किया जाता रहेगा, जब तक ऐटमी हथियार जमा होते रहेंगे और उनके अम्बार बढ़ते रहेंगे, जब तक अलग अलग सरकारें एक दूसरे को समझने और एक दूसरे पर विश्वास करने की कोशिश नहीं करेंगी, तब तक दुनिया के अमन को खतरा बना रहेगा.

"हर आदमी को यह हक़ है कि वह आज़ाद ज़िन्दगी बसर करे और हर दूसरे की क़ौमी आज़ादी की भी इज़्ज़त करे. अमन केवल इसी तरह क़ायम रह सकता है.

"आज हमने यह जान लिया है कि जङ्ग ज़रूरी नहीं है. जङ्ग को रोका जा सकता है और अमन क़ायम रक्खा जा सकता है.

"दुनिया के कुछ लोगों ने इरादा किया और कोरिया और वीतनाम में दोनों जगह जङ्ग रुक गई.

"बान्डुंग कान्फ़रेन्स में जो दस उसूल क़ायम किये गए उन से मालूम होता है कि अलग अलग व्यवस्था या निज़ाम रखने वाले देश भी मिलकर अमन से रह सकते हैं.

"आस्ट्रिया के सुलहनामे से साबित है कि दुनिया के सब सवालों को बिना मार काट किये सुलह के साथ हल किया जा सकता है.

"हथियारबन्दी के सवाल प समझौता साफ़ मुमकिन दिखाई दे रहा है.

"हम औरतें आधी इनसानी क़ौम हैं. अपने बच्चों की तरफ़ और दुनिया के सब लोगों की तरफ़ हमारी भी ज़बरदस्त ज़िम्मेवारियां हैं.

"सब देशों की माओं से हमारा कहना है कि माओं! यह दुनिया भर की माओं की कांग्रेस तुम्हें प्रेम और एकता का संदेश भेजती है. हमें मालूम है कि बच्चों के पैदा करने, उन्हें पालने और उन्हें आदमी बनाने में कितना वक़्त लगता है और कितनी मेहनत करनी पड़ती है. हम अपने बच्चों को जीवन देती हैं, हम उस जीवन को बरबाद होते नहीं देखना चाहतीं.

"हम जंग नहीं होने देंगी.

"हमारी यह माँग है कि ऐटमी हथियारों का बनना बन्द किया जाय और जो हैं उनको नष्ट कर दिया जाय.

"हम यह बरदाश्त नहीं कर सकतीं कि जबकि बेशुमार इनसान पेट भर खाना भी नहीं पा सकते अरबों और खरबों रुपया जंग की तैयारियों में फूका जावे.

"हथियार और हथियारों की दौड़ ख़तम होनी चाहिये.

"हमारी यह माँग है कि जो रुपया हथियारों के बनाने में ख़र्च किया जाता है वह मकानों, अस्पतालों, स्कूलों, ज़च्चा ख़ानों के बनाने में और हमारे बच्चों को जीवन का सुख पहुँचाने में ख़र्च किया जावे.

ہینگی، جب تک ایک دوسرے کی ہنسا کی جاتی رہے گی ر جنگ کا پروپیگنڈا کیا جاتا رہے گا، جب تک ایٹمی ہتھیار مع ہوتے رہینگے اور اُن کے انبار بڑھتے رہینگے، جب تک گ الگ سرکاریں ایک دوسرے کو سمجھنے اور ایک دوسرے ، وشواس کرنے کی کوشش نہیں کرینگی، تب تک دنیا کے ن کو خطرہ بنا رہے گا۔

"ہر آدمی کو یہ حق ہے کہ وہ آزاد زندگی بسر کرے اور ر دوسرے کی قومی آزادی کی بھی عزت کرے۔ امن کیول اِسی لرح قائم رہ سکتا ہے۔

"آج ہم نے یہ جان لیا ہے کہ جنگ ضروری نہیں ہے۔ نگ کو روکا جا سکتا ہے اور امن قائم رکھا جا سکتا ہے۔

"دنیا کے کچھ لوگوں نے ارادہ کیا اور کوریا اور ویت نام یں دونوں جگہ جنگ رک گئی۔

"بانڈنگ کانفرنس میں جو دس اصول قائم کئے گئے اُن ے معلوم ہوتا ہے کہ الگ الگ ویوستھا یا نظام رکھنے والے دیش ی ملکر امن سے رہ سکتے ہیں۔

"آسٹریا کے صلح نامے سے ثابت ہے کہ دنیا کے سب سوالوں و بنا مار کاٹ کئے صلح کے ساتھ حل کیا جا سکتا ہے۔

"ہتھیاربندی کے سوال پر سمجھوتا صاف ممکن دکھائی ے رہا ہے۔

"ہم عورتیں آدھی انسانی قوم ہیں۔ اپنے بچوں کی طرف اور دنیا کے سب لوگوں کی طرف ہماری بھی زبردست ذمہ‌واریاں ہیں۔

"سب دیشوں کی ماؤں سے ہمارا کہنا ہے کہ ماؤں! یہ دنیا بھر کی ماؤں کی کانگریس تمہیں پریم اور ایکتا کا سندیش بھیجتی ہے۔ ہمیں معلوم ہے کہ بچوں کے پیدا کرنے، اُنہیں پالنے اور اُنہیں آدمی بنانے میں کتنا وقت لگتا ہے اور کتنی محنت کرنی پڑتی ہے۔ ہم اپنے بچوں کو جیون دیتی ہیں، ہم اُس جیون کو برباد ہوتے نہیں دیکھنا چاہتیں۔

"ہم جنگ نہیں ہونے دینگی۔

"ہماری یہ مانگ ہے کہ ایٹمی ہتھیاروں کا بننا بند کیا جائے اور جو ہیں اُن کو نشٹ کردیا جائے۔

"ہم یہ برداشت نہیں کرسکتیں کہ جب کہ بےشمار انسان پیٹ بھر کھانا بھی نہیں پاسکتے اربوں اور کھربوں روپیہ جنگ کی تیاریوں میں پھوکا جاوے۔

"ہتھیار اور ہتھیاروں کی دوڑ ختم ہونی چاہئے۔

"ہماری یہ مانگ ہے کہ جو روپیہ ہتھیاروں کے بنانے میں خرچ کیا جاتا ہے وہ مکانوں، اسپتالوں، اسکولوں، زچہ خانوں کے بنانے میں اور ہمارے بچوں کو جیون کا سکھ پہونچانے میں خرچ کیا جاوے۔

"जब तक हमारा यह उद्देश्य पूरा नहीं होगा हम चैन नहीं लेंगी.

"सब देशों की औरतों से हमारा कहना है बहनो! हम यह नहीं चाहतीं कि हमारे सबके बेटे एक दूसरे को क़त्ल करें. हमें अपने बच्चों को सिखाना चाहिये कि वह सब देशों और सब क़ौमों के लोगों से प्यार करें. हम इस बात की इजाज़त नहीं दे सकतीं कि हमारे बच्चों को एक दूसरे से नफ़रत और एक दूसरे के साथ बदतमीज़ी का बरताव सिखा कर उनके दिलों और दिमाग़ों को गंदा किया जावे.

"सब बच्चे चाहे वह गोरे हों, या पीले, या काले, बराबर हैं. सबके बराबर के हक़ हैं. सबको जान प्यारी है. सबकी रक्षा होनी ज़रूरी है.

"हमारी कांग्रेस ने यह दिखा दिया है कि तमाम दुनिया की औरतें एक दूसरे की मित्र हैं.

"हम यह प्रतिज्ञा करती हैं कि हम मिलकर रहेंगी. और अपने बच्चों को जंग से बचाने के लिये, हथियार बन्दी कराने के लिये और दुनिया की तमाम कौमों में दोस्ती कराने के लिये बार बार मिलती रहेंगी.

"हमारे करोड़ों हाथ सारी जमीन पर फैल कर इनसानी दोस्ती और इनसानी मुहब्बत को मज़बूत करते रहेंगे."

यह ऐलान 10 जुलाई सन् 1955 को लासेन में दुनिया की माओं की कांग्रेस में एक राय से पास हुआ. इस ऐलान की नक़लें दुनिया के बड़े बड़े देशों की सरकारों को और यू. एन. ओ. के दफ़्तर को भेजी गई. माओं की एक स्थाई कमेटी भी बना दी गई जिसका काम होगा दुनिया भर की माओं में दोस्ती को बढ़ाना और मजबूत करना और दुनिया भर के बच्चों को जंग के ख़तरे से बचाए रखना.

हम इस कांगरेस की तजवीज़ करने वाली और उसमें शरीक होने वाली दुनिया भर की सब माओं और बहनों को दिल से बधाई देते हैं. आज तक अमन के लिये जितनी कोशिशें की गई हैं और की जा रही हैं उनमें सबसे मुबारक, सबसे ज़बरदस्त और सबसे शुभ निस्सन्देह यही कोशिश है. मनुस्मृति में लिखा है:—"जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता आकर वास करते हैं." मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है:—"इसमें शक नहीं कि जन्नत माओं के क़दमों के नीचे रहती है." इस शुभ लक्षन के बाद हमें पूरा यक़ीन है कि दुनिया अब नई जंग के ख़तरे में नहीं पड़ सकती.

22-9-55 —सुन्दरलाल

جب تک ہمارا یہ اُدیش پورا نہیں ہوگا ہم چین نہیں لینگی .

"سب دیشوں کی عورتوں سے ہمارا کہنا ہے بہنوں ! ہم یہ نہیں چاہتیں کہ ہمارے سب کے بیٹے ایک دوسرے کو قتل کریں . ہمیں اپنے بچوں کو سکھانا چاہئے کہ وہ سب دیشوں اور سب قوموں کے لوگوں سے پیار کریں . ہم اِس بات کی اِجازت نہیں دے سکتیں کہ ہمارے بچوں کو ایک دوسرے سے نفرت اور ایک دوسرے کے ساتھ بدتمیزی کا برتاؤ سکھاکر اُن کے دلوں اور دماغوں کو گندہ کیا جاوے .

"سب بچے چاہے وہ گورے ہوں، یا پیلے، یا کالے، برابر ہیں . سب کے برابر کے حق ہیں . سب کو جان پیاری ہے . سب کی رکشا ہونی ضروری ہے .

"ہماری کانگریس نے یہ دکھا دیا ہے کہ تمام دنیا کی عورتیں ایک دوسرے کی متر ہیں .

"ہم یہ پرتگیا کرتی ہیں کہ ہم ملکر رہینگی اور اپنے بچوں کو جنگ سے بچانے کے لئے، ہتھیار بندی کرانے کے لئے اور دنیا کی تمام قوموں میں دوستی کرانے کے لئے بار بار ملتی رہینگی .

"ہمارے کروڑوں ہاتھ ساری زمین پر پھیل کر انسانی دوستی اور انسانی محبت کو مضبوط کرتے رہینگے ."

یہ اعلان 10 جولائی سن 1955 کو لاسین میں دنیا کی ماؤں کی کانگریس میں ایک رائے سے پاس ہوا . اِس اعلان کی نقلیں دنیا کے بڑے بڑے دیشوں کی سرکاروں کو اور یو. این. او. کے دفتر کو بھیجی گئیں . ماؤں کی ایک استھائی کمیٹی بھی بنادی گئی جس کا کام ہوگا دنیا بھر کی ماؤں میں دوستی کو بڑھانا اور مضبوط کرنا اور دنیا بھر کے بچوں کو جنگ کے خطرے سے بچائے رکھنا .

ہم اِس کانگریس کی تجویز کرنے والی اور اُس میں شریک ہونے والی دنیا بھر کی سب ماؤں اور بہنوں کو دل سے بدھائی دیتے ہیں . آج تک امن کے لئے جتنی کوششیں کی گئی ہیں اور کی جارہی ہیں اُن میں سب سے مبارک، سب سے زبردست اور سب سے شبھ نسندیہ یہی کوشش ہے . منوسمرتی میں لکھا ہے :—"جہاں ناریوں کی پوجا ہوتی ہے وہاں دیوتا آکر باس کرتے ہیں ." محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ہے :—"اِس میں شک نہیں کہ جنت ماؤں کے قدموں کے نیچے رہتی ہے ." اِس شبھ لکشن کے بعد ہمیں پورا یقین ہے کہ دنیا اب نئی جنگ کے خطرے میں نہیں پڑسکتی .

—سندر لال 22 . 9 . 55

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख

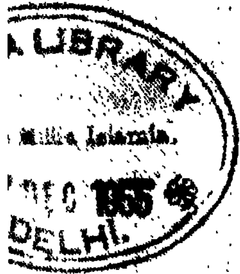
اِس نمبر کے خاص لیکھ

इसके अलावा

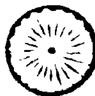
اسکے علاوہ

देस बिदेस के मसलों पर हमारी राय में ज़रूरी सम्पादकी नोट

دیس بدیس کے مسئلوں پر ہماری رائے میں ضروری سمپادکی نوٹ



...नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद



...ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

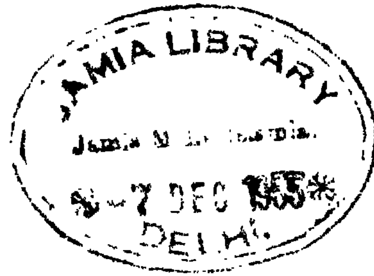
Can be had from—

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

नया हिंद نیا ہند

जिल्द 20 جلد नम्बर 5 نمبر



नवम्बर 1955 نومبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145' مٹھی گنج' الہ آباد

नवम्बर 1955 نومبر

क्या किस से	सफ़ा صفحہ	کیا کس سے
1. कल्यान जात्री (कविता)		1. کلیان جاتری (کویتا)
—श्री गुनवन्त मेहता	251	ـــشری گنونت مہتا
2. धर्म और राजनीति		2. دھرم اور راج نیتی
—डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त	253	ـــڈاکٹر بھوپیندرناتھ دت
3. मेल मिलाप का संगम—बंगाल		3. میل ملاپ کا سنگم—بنگال
—डाक्टर लतीफ़ दफ़्तरी एम० ए०, डी० फ़िल०	266	ـــڈاکٹر لطیف دفتری ایم. اے.، ڈی. فل.
4. रामनाम धन जाको ! (एकांकी नाटक)		4. رام نام دھن جاکو ! (ایکانکی ناٹک)
—श्री साधु टी० एल० वस्वानी	270	ـــشری سادھو ٹی . ایل . وسوانی
5. स्वतंत्रता की यात्रा की तीसरी पीढ़ी		5. سوتنترا کی یاترا کی تیسری پیڑھی
—लेखक—श्री मगन भाई देसाई		لیکھک—شری مگن بھائی دیسائی
—अनुवादक—कनुभाई नानालाल पटेल	274	انوادک—کنو بھائی نانالال پٹیل
6. तपेदिक़ का टीका		6. تپ‌دق کا ٹیکہ
श्री चक्रवर्ती राजागोपालाचारी	277	ـــشری چکرورتی راجاگوپالاچاری
7. मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें		7. محمد صاحب کی کچھ حدیثیں
—अनुवादक श्री मुजीब रिज़वी	293	ـــانوادک شری مجیب رضوی
8. दोस्ती और कलचरी सहयोग की राह पर		8. دوستی اور کلچری سہیوگ کی راہ پر
श्री व्लोडिमिर याकोवलेव	299	شری ولیڈیمیر یاکوولیو
9. हमारी राय		9. ہماری رائے—
श्री बुलगानिन और श्री ख़ुश्चेव भारत में—सुन्दरलाल.		شری بلگانن اور شری کھرشچیو بھارت میں—سندرلال .

कल्याण जात्री

श्री गुणवन्त मेहता

दर दर घूमे दीन दुलारा घर घर गूँजे नारा;
"दे दो हमको भूमी अपनी करता हूँ बँटवारा।'
भाई, करता हूँ बँटवारा !

कौन है दुबला पतला बूढ़ा लम्बी दाढ़ी वाला ?
लाठी थामें डगमग चलता छोटी धोती वाला ?
बापू की परछाई' का सा किसने रूप सँवारा ?
हाँ, किसने रूप सँवारा !

क्या कहता है सबके आगे उड़ती जुल्फों वाला ?
"मैं भी एक तुम्हारा बेटा, मैं भी हिस्से वाला !"
"दे दो मुझको मेरा हिस्सा"—कहकर हाथ पसारा।
भाई, कहकर हाथ पसारा !

एकड़ छत्तिस कोटी भूमी हरी भरी अलबेली;
"सप्तम हिस्सा करो हवाले भरदो मेरी झोली !"
आजादी अँगड़ाई लेती होता स्वर्ण सबेरा !
हाँ, होता स्वर्ण सबेरा !

क्यों चाहे है भूमि हमारी भूमी का मतवाला;
आब, हवा और धरती का है हर कोई हक़वाला।
एक नज़र से सबको देखे सबका सिरजन हारा।
भाई, सबका सिरजन हारा !

कृषकों, मजदूरों, दुखियों और दीन दलित का प्यारा;
बेबस, मोहताजों, मासूमों की आँखों का तारा !
मानवता की मूर्ति फिर रहा दर-दर माँगन हारा !
हाँ, दर-दर माँगन हारा !

कौन यगाना, कौन बिगाना ? सबको गले लगाना !
इन्सानी अतलस का देखो कैसा ताना बाना !
रौशन करती है भारत को नव प्रकाश की धारा !
भाई, नव प्रकाश की धारा !

کلیان جاتری

شری گنونت مہتا

در در گھومے دین دلارا گھر گھر گونجے نعرا؛
"دے دو ہم کو بھومی اپنی کرتا ہوں بٹوارا."
بھائی، کرتا ہوں بٹوارا !

کون ہے دبلا پتلا بوڑھا لمبی داڑھی والا ؟
لاٹھی تھامے ڈگمگ چلتا چھوٹی دھوتی والا ؟
باپو کی پرچھائیں کا سا کس نے روپ سنوارا ؟
ہاں، کس نے روپ سنوارا !

کیا کہتا ہے سب کے آگے اُڑتی ذلفوں والا ؟
میں بھی ایک تمہارا بیٹا، میں بھی حصے والا !"
"دیدو مجھکو میرا حصہ"—کہکر ہاتھ پسارا .
بھئی، کہکر ہاتھ پسارا !

ایکڑ چھتیس کوٹی بھومی ہری بھری البیلی؛
"سپتم حصہ کرو حوالے بھردو میری جھولی !"
آزادی انگڑائی لیتی ہوتا سورن سویرا !
ہاں، ہوتا سورن سویرا !

کیوں چاہے ہے بھوم ہماری بھومی کا متوالا؛
آب، ہوا اور دھرتی کا ہے ہر کوئی حق والا .
ایک نظر سے سبکو دیکھے سب کا سرجن ہارا .
بھئی، سب کا سرجن ہارا !

کرشکوں، مزدوروں، دکھیوں اور دین دلت کا پیارا؛
بے بس، محتاجوں، معصوموں کی آنکھوں کا تارا !
مانوتا کی مورتی پھر رہا در در مانگن ہارا !
ہاں، در در مانگن ہارا !

کون یگانا کون بگانا ؟ سب کو گلے لگانا !
انسانی اطلس کا دیکھو کیسا تانا بانا !
روشن کرتی ہے بھارت کو نو پرکاش کی دھارا !
بھئی، نو پرکاش کی دھارا !

धन का उसको ध्यान नहीं है धुन है मानवता की
देख रहा है सब जग उसमें ऐसी झाँकी बाँकी !
माली और समाजी काया चला पलटने हारा !
हाँ, चला पलटने हारा !

घर बैठे गंगाजी आई फिर काहे की देरी ?
मुँह ना मोड़ो, दिल ना तोड़ो, आशा लगी घनेरी !
डोल रहा है डगर-डगर बावन रूपी बनजारा !
बावन रूपी बनजारा !

गाँव-गाँव गोकुल बन जाये ग्रामोद्योग बढ़ाओ;
सर्वोदय कल्याण मार्ग में आओ क़दम मिलाओ !
जीवन-लक्ष्मी पार लगेगी रामहि खेवन हारा !
भई, रामहि खेवन हारा !

भूमि, ग्राम, सम्पत्ति दान से नया समाज बनेगा;
वर्गहीन, शोषण विहीन वह चिन्ता सभी हरेगा !
भारत की क़िस्मत का तारा सन्त विनोबा प्यारा !
भई, सन्त विनोबा प्यारा !

دھن کا اُس کو دھیان نہیں ہے دھن ہے مانوتا کی ،
دیکھ رہا ہے سب جگ اُس میں ایسی جھانکی بانکی !
مالی اور سماجی کایا چلا پلٹنے ہارا !
ہاں، چلا پلٹنے ہارا !

گھر بیٹھے گنگا جی آئیں پھر کاہے کی دیری ؟
منہ نا موڑو، دل نا توڑو، آشا لگی گھنیری !
ڈول رہا ہے ڈگر ڈگر باون روپی بنجارا !
باون روپی بنجارا !

گاؤں گاؤں گوکل بن جائے گرامودیوگ بڑھاؤ ؛
سرودیہ کلیان مارگ میں آؤ قدم ملاؤ !
جیون لکشمی پار لگیگی رام ہی کھیون ہارا !
بھئی، رام ہی کھیون ہارا !

بھومی، گرام، سمپتی دان سے نیا سماج بنیگا ؛
ورگ ہین، شوشن وہین وہ چنتا سبھی ہریگا !
بھارت کی قسمت کا تارا سنت ونوبا پیارا !
بھئی، سنت ونوبا پیارا !

धर्म और राजनीति

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

आज इस लेख में जो बातें मैं कहने जा रहा हूँ उससे पाठकों के दिल में बेसब्री पैदा होगी. लेखक इसलिये बदनाम है कि वह 'नई बातें कहता है' और ख़ास तौर पर हिन्दुओं के बारे में इतिहास के ख़िलाफ़ बात कहता है. यह बात मैं सन् 1925 से सुनता आ रहा हूँ कि लेखक बहुत बरस तक बिदेशों में रहकर अशास्त्रीय विद्या सीखकर इस देश में उसका प्रचार कर रहा है. पहले लेखक इस इलज़ाम का राज़ नहीं समझ पाया. उन्नीसवीं सदी में जो किताबें इंगलिस्तान में छपीं वह इस समय तक कलकत्ता विश्वविद्यालय के गले का फन्दा बनी हुई हैं, जबकि लेखक ने यूरोप और अमरीका में बीसवीं शताब्दी में तालीम पाई है. इसीलिये शायद लेखक और कुछ पाठकों के बीच में खाई पैदा हो गई है.

इस अनुष्ठान (Phenomenon) के मुताल्लिक लेखक के पास एक नज़ीर है. श्री प्रमथनाथ चौधरी (बीरबल) ने ज़मींदारी प्रथा का ज़िक्र करते हुये कहा था—"आजकल की अर्थनीतिक (इक्तसादी) व्यवस्था देखकर लोग सोचेंगे कि यह बंगाल की हमेशा की व्यवस्था है. वे यह समझ न पायेंगे कि मौजूदा अर्थनीतिक व्यवस्था अंगरेज़ों की रची हुई है. कोई भी समाज अपनी अर्थनीति के ऊपर खड़ा रहता है. मौजूदा भारत की अर्थनीति अंगरेज़ी हुकूमत ने रची थी और उसे मज़बूत किया था. हमारे सामने तो अंगरेज़ों की बनाई हुई तसवीर ही है. आम जनता के सामने यह तसवीर रहती है. इसीलिये अंगरेज़ों तथा यूरोपीय आलिमों ने भारत के समाज, धर्म, अर्थनीति, इतिहास आदि विषयों के ऊपर जो विचार ज़ाहिर किये हैं उन्हीं को हम भारत वासियों ने बिना किसी विरोध के 'वैदिक और सनातन' मानकर गले से उतार लिया है और उन्हें अपने पुरखों के कारनामे मानने लगे हैं." हाँ दो-चार खोजियों और छान बीन करने वालों के ऊपर यह इलज़ाम नहीं लगाया जा सकता. बल्कि उन्हीं की खोजों की बिना पर भारत के इतिहास का नया रूप निखर रहा है. असल बात यह है कि लम्बी गुलामी ने भारतवासियों के दिल और दिमाग़ पर परदा डाल दिया था. वे गुज़रे ज़माने के अपने बड़प्पन और अपनी कल्चर को भूल गये थे. पुराने ज़माने के विजेताओं का क़ायदा था कि किसी मुल्क को जीतने के

دھرم اور راج نیتی

ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

آج اِس لیکھ میں جو باتیں میں کہنے جا رہا ہوں اس سے بہت سے پاٹھکوں کے دل میں بے صبری پیدا ہوگی. لیکھک اِس لئے بدنام ہے کہ وہ 'نئی باتیں کہتا ہے' اور خاص طور پر ہندؤں کے بارے میں اِتہاس کے خلاف بات کہتا ہے. یہ بات میں سن 1925 سے سنتا آ رہا ہوں کہ لیکھک بہت برس تک ودیشوں میں رہ کر اشاستریہ ودیا سیکھکر اِس دیش میں اُس کا پرچار کر رہا ہے. پہلے لیکھک اِس اِلزام کا راز نہیں سمجھ پایا. اُنیسویں صدی میں جو کتابیں اِنگلستان میں چھپیں وہ اِس سمئے تک کلکتہ وشودیالئے کے گلے کا پھندا بنی ہوئی ہیں' جب کہ لیکھک نے یورپ اور امریکہ میں بیسویں شتابدی میں تعلیم پائی ہے. اسی لئے شاید لیکھک اور کچھ پاٹھکوں کے بیچ میں کھائی پیدا ہوگئی ہے.

اِس انوشٹھان (Phenomenon) کے متعلق لیکھک کے پاس ایک نظیر ہے. شری پرمتھ ناتھ چودھری (بیربل) نے زمینداری پرتھا کا ذکر کرتے ہوئے کہا تھا—"آجکل کی ارتھ نیتک (اختصادی) ویوستھا دیکھکر لوگ سوچینگے کہ یہ بنگال کی ہمیشہ کی ویوستھا ہے. وے یہ سمجھ نہ پائینگے کہ موجودہ ارتھ نیتک ویوستھا انگریزوں کی رچی ہوئی ہے. کوئی بھی سماج اپنی ارتھ نیتی کے اُوپر کھڑا رہتا ہے. موجودہ بھارت کی ارتھ نیتی انگریزی حکومت نے رچی تھی اور اُسے مضبوط کیا تھا. ہمارے سامنے تو انگریزوں کی بنائی ہوئی تصویر ہی ہے. عام جنتا کے سامنے یہ تصویر رہتی ہے. اِسی لئے انگریزوں تتھا یوروپیہ عالموں نے بھارت کے سماج' دھرم' ارتھ نیتی' اِتہاس آدی وشیوں کے اُوپر جو وچار ظاہر کئے ہیں اُنہیں کو ہم بھارت واسیوں نے بنا کسی وِرودھ کے 'ویدک اور سناتن' مانکر گلے سے اُتار لیا ہے اور اُنہیں اپنے پرکھوں کے کارنامے ماننے لگے ہیں." ہاں دو چار کھوجیوں اور چھان بین کرنے والوں کے اُوپر یہ اِلزام نہیں لگایا جاسکتا. بلکہ اُنہیں کی کھوجوں کی بنا پر بھارت کے اِتہاس کا نیا روپ نکھر رہا ہے. اصل بات یہ ہے کہ لمبی غلامی نے بھارت واسیوں کے دل اور دماغ پر پردہ ڈال دیا تھا. وہ گزرے زمانے کے اپنے بڑپن اور اپنی کلچر کو بھول گئے تھے. پرانے زمانے کے وجیتاؤں کا قاعدہ تھا کہ کسی ملک کو جیتنے کے

बाद वे वहाँ के पुस्तकालयों को जला डालते थे. इसका मक़सद यह होता था कि उस देश वाले अपने बड़प्पन और गुज़रे ज़माने की अपनी महानता को भूल जायें. लेकिन अंगरेज़ हाकिमों ने यहाँ दूसरी नीति अपनाई. उन्होंने हिन्दुस्तान के ऊपर क़यामी हुकूमत करने के ख़याल से इसकी कल्चर को समझने की कोशिशें शुरू कीं. वे पंडितों और मौलवीयों की शरण में गये. पुरानी धूल भरी पोथियों की गर्द झाड़कर पंडितों ने अंगरेज़ हाकिमों के सामने पेश किया. अंगरेज़ विद्वान उनको पढ़कर इस नतीजे पर पहुँचे कि हिन्दुस्तानी सिर्फ़ मज़हबी पागल हैं. उन्हें देश और राजनीति की कोई जानकारी न थी. कहा है—'मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक', वही हालत हमारे पंडितों की विद्या की थी. मंझले ज़माने के हिन्दुस्तान में प्रतिक्रियावादी (तनज़्ज़ुली पसन्द) पुरोहितों ने जो निबन्ध लिखे उन्हें पंडित लोग धर्म और समाज के सम्बन्ध में प्रामाणिक (मुस्तनद) मानकर इनकी इज़्ज़त करने लगे. देशी भाषाओं में लिखी रामायण और महाभारत के क़िस्से कहानियाँ इतिहास और राजनीति की प्रामाणिक पुस्तक मानी जाने लगीं और उस दिन तक मानी जाती रहीं.

जो भी हो, काल का पहिया घूमता गया. दूर दक्खिन भारत से एक एक कर प्राचीन पोथियाँ ढूँढ़ ढूँढ़ कर रोशनी में लाई जाने लगीं. उन पोथियों के देखने के बाद इतिहास के मुताल्लिक़ हमारी राय में भी तब्दीली होने लगी. हम अपने बचपन से ही चाणक्य नाम के एक शख़्स का नाम सुनते आ रहे थे. लेकिन बीसवीं सदी में एक दिन सवेरे अचानक 'कौटिल्य की अर्थनीति' नामक एक मोटी राजनैतिक पुस्तक रोशनी में आई. इस पुस्तक ने देशी और विलायती पंडितों के महल को ढा दिया. विलायती पंडितों ने सम्हल कर कहा—"यह मुक़ाबलेतन बाद की किताब है." पहली बात तो यह है कि जो भारतीय पेड़ के नीचे बैठकर नाक दाब कर 'माँ' 'माँ' करते थे वे क्या कूट राजनीतिक पुस्तक लिखेंगे!" इसके बाद भारतीय इतिहास की छान बीन करने वाले भारतीय विद्वानों ने कहा कि 'धर्म शास्त्र' भारतीयों की एक मात्र पुस्तक है, 'अर्थ शास्त्र' नाम की एक और ऊँचे दरजे की पुस्तक है. वह धर्मशास्त्र से भी ऊँचे दरजे की है. अर्थशास्त्र की तीन पुस्तकों के नाम हमें मिलते हैं—एक कौटिल्य की, दूसरी कामन्दक की और तीसरी शुक्रनीतिसार. इसपर बहस उठी कि कौटिल्य किस ज़माने में हुआ ? कामन्दक के मुताबिक़ मौर्यों का शासन चलाने के लिये ही कौटिल्य व विष्णु गुप्त ने यह पुस्तक लिखी. उसके बाद डाक्टर काशी प्रसाद जायसवाल ने और अनेक पोथियों के नाम खोज निकाले जो आज मिलती नहीं. इसके बाद वात्स्यायन की 'काम शास्त्र' नामक पुस्तक खोजकर निकाली गई. इस पुस्तक में 'ख़तने' (Cicumcision) का

بعد وے یہاں کے پستکالیوں کو جلا ڈالتے تھے. اِس کا مقصد یہ ہوتا تھا کہ اُس دیش والے اپنے بڑپن اور گذرے زمانے کی اپنی مہانتا کو بھول جائیں . لیکن انگریز حاکموں نے یہاں دوسری نیتی اپنائی . اُنھوں نے ہندستان کے اُوپر قیامی حکومت کرنے کے خیال سے اِس کی کلچر کو سمجھنے کی کوششیں شروع کیں. وے پنڈتوں اور مولویوں کی شرن میں گئے . پرانی دھول بھری پوتھیوں کی گرد جھاڑکر پنڈتوں نے انگریز حاکموں کے سامنے پیش کیا . انگریز ودوان اُن کو پڑھکر اِس نتیجے پر پہونچے کہ ہندستانی صرف مذھبی پاگل ھیں . اُنھیں دیش اور راج نیتی کی کوئی جانکاری نہ تھی. کہا ھے ملا کی دوڑ مسجد تک' وھی حالت ھمارے پنڈتوں کی ودیا کی تھی. منجھلے زمانے کے ہندستان میں پرتھکریاوادی (تنزلی پسند) پروھتوں نے جو نبندھ لکھے اُنھیں پنڈت لوگ دھرم اور سماج کے سمبندھ میں پرامانک (مستند) مان کر اُنکی عزت کرنے لگے . دیشی بھاشاؤں میں لکھی راماین اور مہابھارت کے قصے کہانیاں اِتہاس اور راج نیتی کی پرامانک پستک مانی جانے لگیں اور اُس دن تک مانی جاتی رھیں .

جو بھی ھو' کال کا پہیہ گھومتا گیا . دور دکھن بھارت سے ایک ایک کر پراچین پوتھیاں ڈھونڈھ ڈھونڈھکر روشنی میں لائی جانے لگیں . اُن پوتھیوں کے دیکھنے کے بعد اِتہاس کے متعلق ھماری رائے میں بھی تبدیلی ھونے لگی . ھم اپنے بچپن سے ھی چانکیہ نام کے ایک شخص کا نام سنتے آرھے تھے . لیکن بیسویں صدی میں ایک دن سویرے اچانک 'کوٹلیہ کی ارتھ نیتی' نامک ایک موٹی راجنیتک پستک روشنی میں آئی . اِس پستک نے دیشی اور ولایتی پنڈتوں کے محل کو ڈھا دیا . ولایتی پنڈتوں نے سنبھل کر کہا—"یہ مقابلہ تن بعد کی کتاب ھے." پہلی بات تو یہ ھے کہ جو بھارتیہ پیڑ کے نیچے بیٹھکر ناک داب کر 'ماں' 'ماں' کرتے تھے وے کیا کوٹ راجنیتک پستک لکھیں گے!" اِس کے بعد بھارتیہ اِتہاس کی چھان بین کرنے والے بھارتیہ ودوانوں نے کہا کہ 'دھرم شاستر' بھارتیوں کی ایک ماتر پستک نہیں ھے' 'ارتھ شاستر' نام کی ایک اور اُونچے درجہ کی پستک ھے . وہ دھرم شاستر سے بھی اُونچے درجے کی ھے . ارتھ شاستر کی تین پستکوں کے نام ھمیں ملتے ھیں—ایک کوٹلیہ کی' دوسری کامندک کی اور تیسری شکر نیتی سار . اس پر بحث اُٹھی کہ کوٹلیہ کس زمانے میں ھوا ؟ کامندک کے مطابق موریوں کا شاسن چلانے کے لئے ھی کوٹلیہ و وشنو گپت نے یہ پستک لکھی . اُس کے بعد ڈاکٹر کاشی پرساد جائسوال نے اور انیک پوتھیوں کے نام کھوج نکالے جو آج ملتی نہیں . اِس کے بعد واتسیاین کی 'کام شاستر' نامک پستک کھوج کر نکالی گئی . اِس پستک میں 'ختنے' (Circumcision) کا

श्लोक है, यह विनय आज तक ब्राह्मण और पंडितों ने भी इसको छुपाकर रखा. इसके बाद महाकवि भास के 13 नाटकों को दक्षिण भारत के विद्वानों ने खोज निकाला. इन नाटकों से उस समय के भारतीय समाज, रामचन्द्र के युद्ध और महाभारत में वर्णित व्यापार के मुताल्लिक एक नई तस्वीर पाठकों के सामने रखी. इसके बाद दक्षिण भारत और तिब्बत में 'आर्य मन्जुश्रीमूलकल्प' नामक एक इतिहास की पोथी प्रकाश में आई. इसके पहले तिब्बती लामा तारानाथ राय की लिखी 'भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास' नामक पुस्तक खोज निकाली गई और उसका अंगरेज़ी में तर्जुमा भी हुआ. इन सब छान बीन और खोजों से पढ़े लिखे हिन्दुस्तानियों की धारणा अपने देश के इतिहास और कल्चर के मुताल्लिक बदली. भारतीय इतिहास और संस्कृति पर लिखी एक दूसरी पुस्तक 'बोस्तान' जिसे एक बौद्ध विद्वान ने लिखा है जिसका जर्मन में तो अनुवाद होगया लेकिन जो इस देश में अज्ञात रही. इसके बाद बंगाली विद्वान मधुरक्षित द्वारा लिखी एक अर्थनीति सम्बन्धी पुस्तक का तिब्बती अनुवाद हाथ लगा. इस देश के लोगों को इस पुस्तक का भी ज्ञान नहीं है. बहुत सी पुस्तकें अभी तक खोजकर ढूँढ़ी जा रही हैं. बहुत सी खास खास पोथियाँ एक दम से, मालूम होता है, नष्ट होगईं—जैसे बृहस्पति और शुक्राचार्य की 'रणनीति' सम्बन्धी पुस्तक. जिन्होंने संस्कृत भाषा में रामायण और महाभारत पढ़ा है वे जानते हैं कि किस प्रकार योधा लोग बार बार बृहस्पति और शुक्राचार्य की दोहाई देकर युद्ध का संचालन करते थे. अगर 'रणनीति' पर ये पुस्तकें खोजकर ढूँढ़ी जा सकें तो भारतीयों के युद्ध कौशल को लेकर जो उपहास किया जाता है उससे हमें निजात मिल जाती.

नारद और कात्यायन की लिखी पुस्तकें भी आज तक लाइल्मी के अँधेरे में पड़ी हुई हैं. एक जर्मन पण्डित ने कहीं से 'नारद स्मृति' की एक कापी खोजकर उसका जमन भाषा में तरजुमा किया है, किन्तु कात्यायन स्मृति अब तक प्रकाश में नहीं आई. एक बार कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्मृति के अध्यापक ने लेखक से दुख के साथ कहा था—"देखा, कात्यायन और नारद की स्मृतियां ज़मीन में दबी पड़ी हैं." लेखक ने जवाब दिया—"नारद स्मृति इतनी ज्यादा चरम पन्थी (radical) है कि आज का भारत भी उसकी शिक्षा को बरदाश्त न कर सकेगा."

इसका कारण क्या है ? जब राजशक्ति और पुरोहितों की शक्ति एक साथ मिलकर हिन्दुओं के हृदय पर चढ़ी बैठी थी तब इन सब पुस्तकों से जनता की आंखें खोलने की क्या ज़रूरत थी ? (चाणक्य, नारद, कात्यायन विधवा-विवाह, तलाक (Divorce) और फिर से विवाह करने की व्यवस्था

اُٹھیم ھے . وہ رواج آج آنے گیا اور پنڈتوں نے بھی اِس کو چھپا کر رکھا . اِس کے بعد مہاکوی بھاس کے 13 ناٹکوں کو دکشن بھارت کے ودوانوں نے کھوج نکالا . اِن ناٹکوں سے اُس سمے کے بھارتیہ سماج' رام چندر کے یدھ اور مہابھارت میں ورنت ویاپار کے متعلق ایک نئی تصویر پاٹھکوں کے سامنے رکھی . اِس کے بعد دکشن بھارت اور تبت میں 'آریہ منجوشری مول کلپ' نامک ایک اِتہاس کی پوتھی پرکاش میں آئی . اِس کے پہلے تبتی لاما تارا ناتھ رائے کی لکھی 'بھارت میں بودھ دھرم کا اِتہاس' نامک پستک کھوج نکالی گئی اور اُس کا انگریزی میں ترجمہ بھی ہوا. اِن سب چھان بین اور کھوجوں سے پڑھے لکھے ھندستانیوں کی دھارنا اپنے دیش کے اِتہاس اور کلچر کے متعلق بدلی . بھارتیہ اِتہاس اور سنسکرتی پر لکھی ایک دوسری پستک 'بوستان' جسے ایک بودھ ودوان نے لکھا ھے جس کا جرمن میں تو انوواد ھوگیا لیکن جو اِس دیش میں اگیات رھی . اس کے بعد بنگالی ودوان مدھورکشت دوارا لکھی ایک ارتھ نیتی سمبندھی پستک کا تبتی انوواد ھاتھ لگا . اِس دیش کے لوگوں کو اِس پستک کا بھی گیان نہیں ھے . بہت سی پستکیں ابھی تک کھوج کر ڈھونڈھی جارھی ھیں . بہت سی خاص خاص پوتھیاں ایکدم سے' معلوم ھوتا ھے' نشٹ ھوگئیں—جیسے برھسپتی اور شکراچاریہ کی 'رن نیتی' سمبندھی پستک . جنھوں نے سنسکرت بھاشا میں راماین اور مہابھارت پڑھا ھے وے جانتے ھیں کہ کس پرکار یودھا لوگ بار بار برھسپتی اور شکراچاریہ کی دوھائی دیکر یدھ کا سنچالن کرتے تھے . اگر 'رن نیتی' پر یہ پستکیں کھوج کر ڈھونڈھی جاسکیں تو بھارتیوں کے یدھ کوشل کو لیکر جو اُپہاس کیا جاتا ھے اُس سے ھمیں نجات مل جاتی .

نارد اور کاتیاین کی لکھی پستکیں بھی آج تک لاعلمی کے اندھیرے میں پڑی ھوئی ھیں . ایک جرمن پنڈت نے کہیں سے 'ناردسمرتی' کی ایک کاپی ڈھونڈ کر اُس کا جرمن بھاشا میں ترجمہ کیا ھے' کنتو کاتیاین سمرتی اب تک پرکاش میں نہیں آئی . ایک بار کلکتہ وشودیالیہ کے اِسمرتی کے ادھیاپک نے لیکھک سے دکھ کے ساتھ کہا تھا—"دیکھا' کاتیاین اور نارد کی اِسمرتیاں زمین میں دبی پڑی ھیں ." لیکھک نے جواب دیا—"ناردسمرتی اِتنی زیادہ چرم پنتھی (radical) ھے کہ آج کا بھارت بھی اُس کی شکشا کو برداشت نہ کرسکیگا ."

اِس کا کارن کیا ھے ؟ جب راج شکتی اور پروھتوں کی شکتی ایک ساتھ ملکر ھندوؤں کے ھردئے پر چڑھی بیٹھی تھی تب اِن سب پستکوں سے جنتا کی آنکھیں کھولنے کی کیا ضرورت تھی ؟ (چانکیہ' نارد' کاتیاین ودھوا وواہ' طلاق (Divorce) اور پھر سے وواہ کرنے کی ویوستھا

देते हैं. नारद ने नौजवानों के विवाह पर बहुत से बन्धन लगाये थे). इन स्मृतियों को हम निबन्धकारों ने प्रामाणिक मानना शुरू किया. बौद्ध तांत्रिकों के अलौकिक गल्प समूह को हमने धर्म और विज्ञान के आसन पर बैठाया. पुरोहित गुट के मुक़ाबले में हमने इन सब पुस्तकों को समाज की सनातन व्यवस्था कहकर मान्यता दिलाई और उन्हें विदेशी शासकों के हाथ में यह कहकर रखा कि यह हमारी संस्कृति की मुस्तनद पोथियां हैं. विदेशियों ने इन्हीं की बिना पर हमारी संस्कृति का इतिहास लिख कर हमारे सामने रखा. इसका नतीजा यह हुआ कि दुनिया की यह धारणा बन गई कि प्राचीन काल में हिन्दुस्तानी सिर्फ़ धर्म पागल (Religious Paranoiac) थे. धर्म को छोड़कर उनका दुनिया से और कोई नाता रिशता नहीं था. इसी धारणा के वश में होकर रूस के मनीषी टालसटाय ने डाक्टर तारकनाथ दास को "An open letter to a young Hindu." (एक नौजवान हिन्दू के नाम खुला पत्र) लिखा—"तुम्हारे बुद्ध और कृष्ण के देश, तुम्हारे अहिंसा के देश में, तुम्हारे विवेकानन्द और बाबा भारतीय वग़ैरह हिंसा के रास्ते पर लेजाकर भ्रांत कर रहे हैं."

इसीलिये हमारा यह मक़सद है कि धर्म और राजनीति का लोगों में ज्ञान बढ़े. आज़ाद भारतीय राष्ट्र को इसकी बड़ी ज़रूरत है. एक दल अभी तक पुरोहितों के हाथ में है. इसी वर्ग के हाथ में आज शासन का भार पड़ा है. आज यह अपने बुनियादी स्वार्थ क़ायम रखने की बात करते हैं. भारत की लोक परमपरा अहिन्सावाद की वार्ता को वहन करती हुई आ रही है. भविष्य में भी भारत को अहिंसा-वाद के ऊपर प्रतिष्ठित करना होगा. इसी के प्रतिउत्तर में Indian History Congress के पिछले अधिवेशन में महामहोपाध्याय पांडुरंग ने कहा था,—"अगर यही है तो हमें बारहवीं शताब्दी (तुर्की हमलों का जमाना) से लेकर 1921 (अहिंसा आन्दोलन आरम्भ काल) तक भारत के इतिहास को बिलकुल निकाल देना होगा. यहां पर यह सवाल उठता है कि जिस जाति ने सुदूर अतीत में रणनीति विषय पर पुस्तक लिखी हो, हज़रत ईसा से तीसरी शताब्दी पहले राजनीति पर पुस्तक लिखी हो, उससे भी पहले कामसूत्र पर पुस्तक लिखी हो, किसी अजाने जमाने में गीता का दूसरा अध्याय लिखा हो, फिर अरब देश से लेकर फ़िलीपाइन द्वीप समूह तक नौ-आबादियाँ बसाई हों, जिसने भारत से लेकर फिलीपाइन द्वीप तक विशाल शैलेन्द्र साम्राज्य की स्थापना की हो, वह जाति क्या सिर्फ़ पेड़ के नीचे बैठकर, नाक दबाकर हज़ारों वर्षों तक केवल प्राणायाम ही करती रही.

इसीलिये यह ज़रूरी है कि हम इस बात को जानें कि धर्म

دیتے ہیں. نارد نے نوجوانوں کے وواہ پر بہت سے بندھن لگائے تھے). ان اسمرتیوں کو ہم نبندھکاروں نے پرامانک ماننا شروع کیا. بودھ تانترکوں کے الوکک گلپ سموہ کو ہم نے دھرم اور وگیان کے آسن پر بیٹھایا. پروہت گٹ کے مقابلہ میں ہم نے ان سب پستکوں کو سماج کی سناتن ویوستھا کہہ کر مانیتا دلائی اور انہیں ودیشی شاسکوں کے ہاتھ میں یہ کہہ کر رکھا کہ یہ ہماری سنسکرتی کی مستند پوتھیاں ہیں. ودیشیوں نے انہیں کی بنا پر ہماری سنسکرتی کا اتہاس لکھ کر ہمارے سامنے رکھا. اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ دنیا کی یہ دھارنا بن گئی کہ پراچین کال میں ہندستانی صرف دھرم پاگل (Religious Paranoiac) ہے. دھرم کو چھوڑکر اُن کا دنیا سے اور کوئی ناتا رشتہ نہیں تھا. اسی دھارنا کے وش میں ہوکر روس کے منیشی ٹالسٹائے نے ڈاکٹر تارکناتھ داس کو "An open letter to a young Hindu" (ایک نوجوان ہندو کے نام کھلا پتر) لکھا—"تمہارے بدھ اور کرشن کے دیش، تمہارے اہنسا کے دیش میں، تمہارے ویویکانند اور بابا بھارتی وغیرہ ہنسا کے راستے پر لیجا کر بھرانت کر رہے ہیں."

اس لئے ہمارا یہ مقصد ہے کہ دھرم اور راج نیتی کا لوگوں میں گیان بڑھے. آزاد بھارتیہ - راشٹر کو اس کی بڑی ضرورت ہے. ایک دل ابھی تک پروہتوں کے ہاتھ میں ہے. اسی ورگ کے ہاتھ میں آج شاسن کا بھار پڑا ہے. آج یہ اپنے بنیادی سوارتھ قایم رکھنے کی بات کرتے ہیں. بھارت کی لوک پرمپرا اہنساواد کی وارتا کو وہن کرتی ہوئی آ رہی ہے. بھوشیہ میں بھی بھارت کو اہنساواد کے اوپر پرتشٹھت کرنا ہوگا. اسی کے پرتی اُتر میں Indian History Congress کے پچھلے ادھیویشن میں مہامہوپادھیائے پانڈورنگ نے کہا تھا—"اگر یہی ہے تو ہمیں بارہویں شتابدی (ترکی حملوں کا زمانہ) سے لیکر 1921 (اہنسا آندولن آرمبھ کال) تک بھارت کے اتہاس کو بالکل نکال دینا ہوگا. یہاں پر یہ سوال اٹھتا ہے کہ جس جاتی نے سدور اتیت میں رن نیتی وشئے پر پستک لکھی ہو، حضرت عیسیٰ سے تیسری شتابدی پہلے راج نیتی پر پستک لکھی ہو، اس سے بھی پہلے کام سوتر پر پستک لکھی ہو، کسی اجانے زمانے میں گیتا کا دوسرا ادھیائے لکھا ہو، پھر عرب دیش سے لیکر فلیپائن دویپ سموہ تک نو - آبادیاں بسائی ہوں، جس نے بھارت سے لیکر فلیپائن دویپ تک وشال شیلیندر سامراجیہ کی استھاپنا کی ہو، وہ جاتی کیا صرف پیڑ کے نیچے بیٹھکر، ناک دباکر ہزاروں ورشوں تک کیول پرانایام ہی کرتی رہی.

اسی لئے یہ ضروری ہے کہ ہم اس بات کو جانیں کہ دھرم

के साथ राजनीति का क्या योगायोग है. जिस तरह मंझले ज़माने में बार-बार निबन्धकारों ने हमारे इतिहास को माक़ूल ढंग से रखा, उसी तरह आज भी राजनीतिक पुरोहित श्रेणी के हाथ से बचाकर हमें भारत के इतिहास के यथार्थ स्वरूप को सामने रखना है.

अंगरेज़ी में एक कहावत है कि, "Religion follows the flag" यानी धर्म राजशक्ति के पीछे-पीछे चलता है. पुराने ज़माने से लेकर हाल तक ज़माने का यही दस्तूर रहा है. जनता जिस शासन के मातहत रहती है उसी शासन के बीच में अपनी ज़िंदगी में स्फूर्ति पाने के लिये राजा का ही धर्म ग्रहण करती है.

हम बंगाल को ही लें. कितनी ही बार बंगाल के लोगों ने अपने मज़हब को बदला है. मिस्र और ईरान में भी यही अनुष्ठान (Phenomenon) रहा है. तारीख़ को अगर आप उठाकर देखें तो पता चलेगा कि किसी देश को जीत कर विजेता हारे हुये लोगों का धर्म नष्ट कर देते हैं. उसके पश्चात् उनकी भाषा में तब्दीली करने की कोशिश करते हैं. पुराने ज़माने में ईरानी विजेता कुरु (Cyrus the Great) बेबीलोन को जीत करके वहां के मन्दिर की देव-मूर्ति लेकर अपनी राजधानी परसूपोलि ले आया था. उसके लड़के कैम्बीसस ने मिस्र को जीतकर वहां के मन्दिर के पवित्र नन्दी का वध किया था. सिकन्दर ने ईरान को जीत कर पारसियों की धर्म पुस्तकों को नष्ट करवा दिया था. अरबों ने उत्तर-पश्चिम भारत के अन्दर क़ंधार नगर को जीतकर मणि-माणिक्यों से जड़ी हुई बुद्ध मूर्ति को नष्ट कर दिया था. उसके बाद ईरानी और तुर्क मुसलमानों ने भारत के हिस्सों को विजय करके बुद्ध और दूसरी बौद्ध समूह की मूर्तियों को विध्वंस किया था. बामिया (अफ़ग़ानिस्तान) की गुफा में रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं ने भागकर खोतन में शरण ली. उन्हीं की कोशिशों से पूर्वी तुर्किस्तान (मौजूदा सिंकियांग) और पश्चिम चीन की (हज़ार बुद्धों की गुफा) में अद्भुत मूर्ति कला ने जन्म लिया. यह मूर्ति कला भारत के इतिहास की गुप्त काल की कला का बहुत सुन्दर नमूना है. इसके बाद के तुर्क आक्रमणों के फलस्वरूप अफ़ग़ानिस्तान के हिरात से लेकर पूर्वी बंगाल के चटगाम तक बहुत से पूजाघर धूल में बिखर गये. कहते हैं कान्यकुब्ज नगर में 10 हज़ार मन्दिर थे. कान्यकुब्ज नगर की ख़ूबसूरती को देखकर महमूद गज़नवी हैरान रह गया. उसने कान्यकुब्ज के नमूने पर गज़नी का शहर आबाद करने की योजना बनाई. इसीलिये वह यहाँ से बहुत से कारीगरों को ले गया. ग़ज़नवी के हमले के पश्चात् उत्तर भारत की सैकड़ों बरस बसी हुई मशहूर राजधानी कान्यकुब्ज (क़न्नौज) आज सुनसान नगरी बन गई है. दो-एक जगह मिट्टी के ढेर

سان راج نیتی کا کیا جوگا جوگ ھے. جس طرح منجھلے زمانے ں بار بار نبندھکاروں نے ھمارے اِتہاس کو معقول ڈھنگ سے ا، اُسی طرح آج بھی راجنیتک پروھت شرینی کے ھاتھ سے چاکر ھمیں بھارت کے اِتہاس کے یتھارتھ سروپ کو سامنے رکھنا .

انگریزی میں ایک کہاوت ھے کہ "Religion follows the flag" یعنی دھرم راج شکتی کے پیچھے پیچھے تا ھے. پرانے زمانے سے لیکر حال تک زمانے کا یہی دستور رہا . جنتا جس شاسن کے ماتحت رہتی ھے اُسی شاسن کے چ میں اپنی زندگی میں اِسپھورتی پانے کے لئے راجہ کا ھی رم گرھن کرتی ھے .

ھم بنگال کو ھی لیں . کتنی ھی بار بنگال کے لوگوں نے ، مذھب کو بدلا ھے . مصر اور ایران میں بھی یہی انوشٹھان (Phenomenon) رہا ھے . تاریخ کو اگر آپ اُٹھاکر دیکھیں پتہ چلیگا کہ کسی دیش کو جیت کر وجیتا ھارے ھوئے لوگوں دھرم نشٹ کردیتے ھیں . اُس کے پشچات اُن کی بھاشا ں تبدیلی کرنے کی کوشش کرتے ھیں . پرانے زمانے میں رانی وجیتا کرو (Cyrus the Great) بیبیلون کو جیت کے وھاں کے مندر کی دیو-مورتی لیکر اپنی راجدھانی سپولی لے آیا تھا . اُس کے لڑکے کیمبیس نے مصر کو جیت کر اں کے مندر کے پوتر نندی کا بدھ کیا تھا . سکندر نے ایران کو بیت کر پارسیوں کی دھرم پستکوں کو نشٹ کروا دیا تھا . بوں نے اُتر پشچم بھارت کے اندر قندھارنگر کو جیت کر منی انکیوں سے جڑی ھوئی بدھ مورتی کو نشٹ کردیا تھا . اُس کے د ایرانی اور ترک مسلمانوں نے بھارت کے حصوں کو وجئے کے بدھ اور دوسری بودھ سموہ کی مورتیوں کو ودھونس کیا ا . بامیا (افغانستان) کی گپھا میں رہنے والے بودھ بھکشوں ، بھاگ کر ختن میں شرن لی . اُنھیں کی کوششوں سے پوروی رکستان (موجودہ سنکیانگ) اور پشچم چین کی (ھزار دھوں کی گپھا) میں ادبھت مورتی کلا نے جنم لیا . یہ مورتی لا بھارت کے اِتہاس کی گپت کال کی کلا کا بہت سندر نمونہ ے . اِس کے بعد کے ترک آکرمنوں کے پھل سروپ افغانستان کے ھرات سے لیکر پوروی بنگال کے چٹگام تک بہت سے پوجا گھر ھول میں بکھر گئے . کہتے ھیں کانیہ‌کبج نگر میں 10 ھزار مندر ھے . کانیہ‌کبج نگر کی خوبصورتی کو دیکھکر محمود غزنوی ھیران رہ گیا . اُس نے کانیہ‌کبج کے نمونے پر غزنی کا شہر آباد رنے کی یوجنا بنائی . اِسی لئے وہ یہاں سے بہت سے کاریگروں کو ے گیا . غزنوی کے حملے کے پشچات اُتر بھارت کی سیکڑوں رس بسی ھوئی مشہور راجدھانی کانیہ‌کبج (قنوج) ج سنسان نگری بن گئی ھے . دو ایک جگہ مٹی کے ڈھیر

उसकी पुरानी शान-बान को ज़ाहिर करते दिखाई देते हैं. गाँधार आज अफ़ग़ानिस्तान का हिस्सा बन गया है और उसके पुराने शानदार इतिहास को लोग भूल गये हैं.

इसीलिये आज उत्तर भारत के रहने वाले एक आत्म-विस्मृति जाति हैं. चौदह शताब्दी पहले हमारे देश पर विदेशियों के समुद्री हमले होने लगे, लेकिन भारतवासियों के लिये समुद्र यात्रा तक निषिद्ध क़रार दी गई. सौर पुराण नामक ग्रन्थ में लिखा है कि कलयुग में समुद्र यात्रा की मनाही रहेगी. गुप्त युग के बाद राजशक्ति और पुरोहितों की शक्ति ने इकट्ठा होकर भारत के जन-जीवन को लंगड़ा बना दिया था. उसके बाद इस देश के ऊपर विदेशियों के आक्रमण शुरू होगये और उन आक्रमणों के फलस्वरूप भारतीय समाज बेबस और बेदम होगया. विदेशी इतिहास लिखने वालों ने लिखा कि भारतवासियों की यही दीनहीन दशा स्वाभाविक दशा है और हमेशा की दशा है. उन्होंने लिखा कि भारतीय एक नीम-जंगली क़ौम है. इन लोगों को न ठीक से खाना आता है, न ठीक से कपड़े पहिनना आता है, न इन्हें बिछौने का इस्तेमाल आता है और न अच्छे मकानों में रहना आता है. विदेशियों ने ही इन्हें चोग़ा चपकन पहिनना सिखाया. पावों में बूट जूता पहिनना सिखाया. पोलाव, पराठा, सीख़ कबाब, हलुआ खाना सिखाया और बीमारी दूर करने के लिये हकीमी औषधि का व्यवहार करना सिखाया.

और हम लोग हाहाकार करते हुये कहने लगे यही हमारी वैदिक आर्य सभ्यता है. चतुर पुरोहित वर्ग, अपनी ज़ाती ख़ुदग़र्ज़ियों के लिये, भारतीय सभ्यता के बारे में, जिसका उस समय 'हिन्दू संस्कृति' नाम पड़ गया था, तरह तरह की ग़लत इत्तलायें जनता को देने लगा. इसीलिये कुल्लुक भट्ट ने वैदिक शब्द 'शिग्रु' की व्याख्या की. वह वाह्लीक (बलख़) देश में पैदा होने वाली एक सब्ज़ी है. उसे ब्राह्मण नहीं खायेंगे लेकिन शूद्र उसे खा सकते थे. शकों ने 'सहमरण' का रिवाज जारी किया, लेकिन रघुनन्दन ने यह दावा किया कि यह वैदिक विधान है. यह भी कहा कि लम्बा कोट (वैदिक-आतका), चोग़ा, चपकन, इज़ार, बूट, जूता वग़ैरा यवनों ने ईजाद किये हैं और अब भी मूढ़ लोग ऐसा विश्वास करते हैं. रामायण में जहाँ जहाँ 'परिच्छेद' शब्द आता है उसकी व्याख्या लोचन गोस्वामी ने की कि इसका मतलब 'अलङ्कार' है. और अन्य पंडितों ने ऐलान किया कि पुलाव, कबाब और पराठा आदि खाने की वस्तुयें यवनों और विदेशियों की देन हैं. अंगरेज़ी विद्या के पंडित की लिखी हुई मशहूर किताब 'अदब-ए-उर्दू' (History of Urdu Literature) में लिखा कि 'रोटी' लफ़्ज़ हमने पुर्तगालियों के पास से पाया. इन देशमान्य विशिष्ट पंडितों की मूर्खता से भरी हुई बातों की नाप तोल कौन करेगा ? यह पंडित हैं कि मूढ़ हैं इसका फ़ैसला कौन करेगा ?

س کی پرانی شان بان کو ظاہر کرتے دکھائی دیتے ہیں۔ دھار آج افغانستان کا حصہ بن گیا ہے اور اس کے پرانے شاندار ہاس کو لوگ بھول گئے ہیں۔

یسی لئے آج اُتر بھارت کے رہنے والے ایک آتم وسمرت جاتی یں۔ چودہ شتابدی پہلے ہمارے دیش پر ودیشیوں کے سمدری ملے ہونے لگے، لیکن بھارت واسیوں کے لئے سمدر یاترا تک رار دی گئی۔ سور پران نامک گرنتھ میں لکھا ہے کہ لگ میں سمدر یاترا کی مناہی رہیگی۔ گپت یگ کے بعد ج شکتی اور پروہتوں کی شکتی نے اکٹھا ہوکر بھارت کے جن یون کو لنگڑا بنا دیا تھا۔ اس کے بعد اِس دیش کے اوپر دیشوں کے آکرمن شروع ہوگئے اور ان آکرمنوں کے پھل سروپ ارتیہ سماج بےبس اور بےدم ہوگیا۔ ودیشی اِتہاس لکھنے الوں نے لکھا کہ بھارت واسیوں کی یہی دین ہین دشا وابھاوک دشا ہے اور ہمیشہ کی دشا ہے۔ اُنھوں نے لکھا کہ ارتیہ ایک نیم جنگلی قوم ہے۔ ان لوگوں کو نہ ٹھیک سے کھانا تا ہے، نہ ٹھیک سے کپڑے پہننا آتا ہے، نہ اِنہیں بچھونے کا ستعمال آتا ہے اور نہ اچھے مکانوں میں رہنا آتا ہے۔ ودیشیوں ے ہی اِنہیں چوغہ - چپکن پہننا سکھایا۔ پاؤں میں بوٹ جوتا ہننا سکھایا۔ پلاؤ، پراٹھا، سیخ کباب، حلوہ کھانا سکھایا اور یماری دور کرنے کے لئے حکیمی اوشدھی کا ویوہار کرنا سکھایا۔

اور ہم لوگ ہاہاکار کرتے ہوئے کہنے لگے یہی ہماری ویدک ریہ سبھیتا ہے۔ چتر پروہت ورگ، اپنی ذاتی خود غرضیوں ے لئے، بھارتیہ سبھیتا کے بارے میں، جس کا اُس سمے 'ہندو سنسکرتی' نام پڑگیا تھا، طرح طرح کی غلط اطلاعیں جنتا کو ینے لگا۔ اِسی لئے کلک بھٹ نے ویدک شبد 'شگرو' کی ویاکھیا ی۔ وہ واہلیک (بلخ) دیش میں پیدا ہونے والی ایک سبزی ہے۔ اُسے براہمن نہیں کھائینگے لیکن شودر اُسے کھاسکتے ے۔ شکوں نے 'سہمرن' کا رواج جاری کیا، لیکن رگھونندن نے ہ دعویٰ کیا کہ یہ ویدک ودھان ہے۔ یہ بھی کہا کہ لمبا کوٹ (ویدک——آتکا) چوغہ، چپکن، اِزار، بوٹ، جوتا وغیرہ یونوں نے اِیجاد کئے ہیں اور اب بھی موڑھ لوگ ایسا وشواس کرتے یں۔ رامائن میں جہاں جہاں 'پریچھید' شبد آتا ہے اُسی ی ویاکھیا لوچن گوسوامی نے کی کہ اُس کا مطلب 'النکار' ہے۔ ور انیہ پنڈتوں نے اعلان کیا کہ پلاؤ، کباب اور پراٹھا آدی کھانے ی وستوئیں یونوں اور ودیشیوں کی دین ہیں۔ انگریزی ودیا ے پنڈت کی لکھی ہوئی مشہور کتاب 'ادب اُردو' (History of Urdu Literature) میں لکھا کہ 'روٹی' لفظ ہم نے پرتگالیوں کے پاس سے پایا۔ اِن دیش مانیہ وششٹ پنڈتوں کی مورکھتا سے بھری ہوئی باتوں کی ناپ تول کون کریگا ؟ یہ پنڈت ہیں کہ موڑھ ہیں اِس کا فیصلہ کون کریگا ؟

पंडित लोग कहते हैं कि 'छान्दोग्य उपनिषद्' ईसा से सातवीं सदी पहले लिखा गया. छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है कि यदि कोई बुद्धिमान पुत्र सन्तान हासिल करना चाहता है तो उसे 'उक्षपलोधन' अर्थात् सांड के मांस के साथ चावल रांध कर उसे खाना चाहिये! पुलाव का मौजूदा संस्कृत नाम 'पलान्न' है लेकिन पुरानी संस्कृत किताबों में पुलाव के लिये 'पलौदन' और 'ओदन मांस' नाम इस्तेमाल किये गये हैं. अरब देश में चावल पैदा नहीं होता. ईरान में सिकन्दर के वक़्त से चावल का आयात (import) शुरू हुआ. संस्कृत 'व्रीहि' शब्द से पारसी 'व्रीहिस' (Vries), 'बिरियानी' वगैरह नाम फ़ारसी, अरबी, सीरियन और अरमनी ज़बानों में लिया गया.* बाद में व्रीहि शब्द से ही यूरोपीय Rice, Reis, Riz वगैरह शब्द बनाये गये. उसी तरह 'शूल्य मांस' यानी सीख़ कबाब, 'उल्लुप्त मांस' यानी शामी कबाब (क़ीमा मांस का बड़ा), और फलों के साथ पोलाव खाने का ज़िक्र चरक के शास्त्र में है. उसी तरह पूरोडास, परोठा, रोटी आजकल की रोटी के लिये इस्तेमाल होते थे. सन्ध्याकर नन्दी के ऐतिहासिक संस्कृत ग्रन्थ 'रामचरित' में 'रोटिका' शब्द का उल्लेख आया है. ऊपर लिखे हवालों से उर्दू इतिहासकार और पंडितों की अक़्ल की नापजोख की जा सकती है.

बंगला में एक कहावत है—'हाथी पांव और उसके ऊपर विष-फोड़ा.' उसी तरह हमारे कई विश्वविद्यालय के पंडितों का कहना है कि भारतीय आर्य उत्तरी यूरोप से आये. किन्तु मैं जानता हूँ कि बर्लिन विश्वविद्यालय के पंडितों ने नार्डिक (Nordic) की परिभाषा देते हुये कहा है कि नार्डिक यानी लाल मुँह और भूरे बाल वाले लोग ही आर्य हैं. कुछ विश्वविद्यालयों के अध्यापकों का कहना है कि ब्राह्मण लोग ही नार्डिकों के वंशधर हैं. इन्हीं विद्वानों के मुताबिक़ मछली भात खाने वाले बंगाली कम्बोडिया (असल में कम्बूजिया) के रहने वाली 'मन-खेमर' जाति की सन्तान हैं. पराधीनता के अभिशाप के रूप में हमारे विद्वानों के ये विचार भारतीय इतिहास और संस्कृति के लिये बेहद ज़हरीले साबित हो सकते हैं. जर्मनी के ओयारबूर्क विश्वविद्यालय के संस्कृत के अध्यापक डा० फान ग्लासेनाफ़ (जो तीन बार भारत आ चुके हैं) ने लेखक की एक पुस्तक की समालोचना करते हुये लिखा था—You give importance to Natzi propaganda (तुम नाज़ियों के प्रचार को अहमीयत देते हो). इसका जवाब देते हुये लेखक ने लिखा था—"पहले युद्ध के बाद हमारे कुछ भारतीय विद्यार्थी पढ़ने के लिये बर्लिन गये थे. ये ही लोग भारत लौटने पर ऊपर के अद्भुत मत को 'वैज्ञानिक मत' कहकर प्रचार करने लगे." पता नहीं इन

پنڈت لوگ کہتے ہیں کہ 'چھاندوگیہ اُپنشد' عیسیٰ سے ساتویں صدی پہلے لکھا گیا. چھاندوگیہ اُپنشد میں لکھا ہے کہ یدی کوئی بدھیمان پتر سنتان حاصل کرنا چاہتا ہے تو اُسے 'اُکش پاودن' ارتھات سانڈ کے مانس کے ساتھ چاول راندھکر کھانا چاہیئے! پلاؤ کا موجودہ سنسکرت نام 'پلان' ہے لیکن پرانی سنسکرت کتابوں میں پلاؤ کے لئے 'پلودن' اور 'اُودن مانس' نام استعمال کیئے گئے ہیں. عرب دیش میں چاول پیدا نہیں ہوتا. ایران میں سکندر کے وقت سے چاول کا آیات (import) شروع ہوا. سنسکرت 'وریہی' شبد سے پارسی 'وریہس' (Vries) 'وریانی' وغیرہ نام فارسی' عربی' سیرین اور ارمنی زبانوں میں لیا گیا. * بعد میں وریہی شبد سے ہی یوروپیہ Rice, Reis, Riz, وغیرہ شبد بنائے گئے. اُسی طرح 'شولیہ مانس' یعنی سیخ کباب' اُلاپت مانس' یعنی شامی کباب (قیمہ مانس کا بڑا)' اور پھلوں کے ساتھ پلاؤ کھانے کا ذکر چرک کے شاستر میں ہے. اُسی طرح پورو ڈاس' پروٹھا' روٹی آج کل کی روٹی کے لئے اِستعمال ہوتے تھے. سندھیا کر نندی کے ایتہاسک سنسکرت گرنتھ 'رام چرت' میں روٹیکا' شبد کا اُلیکھ آیا ہے. اُوپر لکھے حوالوں سے اُردو اِتہاسکار اور پنڈتوں کی عقل کی ناپ جوکھ کی جا سکتی ہے.

بنگلا میں ایک کہاوت ہے—'ہاتھی پاؤں اور اُس کے اُوپر وش پھوڑا'؛ اُسی طرح ہمارے کئی وشودیالیہ کے پنڈتوں کا کہنا ہے کہ بھارتیہ آریہ اُتری یورپ سے آئے. کنتو میں جانتا ہوں کہ برلن وشودیالیہ کے پنڈتوں نے نارڈک (Nordic) کی پریبھاشا دیتے ہوئے کہا ہے کہ نارڈک یعنی لال منھ اور بھورے بال والے لوگ ہی آریہ ہیں. کچھ وشودیالیوں کے ادھیاپکوں کا کہنا ہے کہ براہمن لوگ ہی نارڈکوں کے ونشدھر ہیں. اِنھیں ودوانوں کے مطابق مچھلی بھات کھانے والے بنگالی کمبوڈیا (اصل میں کمبوجیا) کے رہنے والی 'من کھیمر' جاتی کی سنتان ہیں. پرادھینتا کے ابھیشاپ کے روپ میں ہمارے ودوانوں کے یہ وچار بھارتیہ اِتہاس اور سنسکرتی کے لئے بے حد زہریلے ثابت ہو سکتے ہیں. جرمنی کے اُویار وورک وشودیالیہ کے سنسکرت کے ادھیاپک ڈاکٹر فان گلاسیناف (جو تین بار بھارت آچکے ہیں) نے لیکھک کی ایک پستک کی سمالوچنا کرتے ہوئے لکھا تھا— You give importance to Natzi propaganda (تم نازیوں کے پرچار کو اہمیت دیتے ہو). اُس کا جواب دیتے ہوئے لیکھک نے لکھا تھا—"پہلے یدھ کے بعد ہمارے کچھ بھارتیہ ودیارتھی پڑھنے کے لئے برلن گئے تھے. یہ ہی لوگ بھارت لوٹنے پر اوپر کے ادبھت مت کو 'ویگیانک مت' کہہ کر پرچار کرنے لگے." پتہ نہیں اِن

* Hen kultur phlanfen des ostens.

अद्भुत और अवैज्ञानिक मतों का प्रचार करके दुनिया की निगाहों में भारतवासियों के सम्मान के साथ खिलवाड़ करने में इन भारतीय विद्वानों को क्या हासिल होता है ? लेखक ने एक बार विश्वविद्यालय के एक इतिहास के अध्यापक से पूछा—"इन बेसिर पैर के अद्भुत मतों के प्रचार में इनका क्या मक़सद है ?" उन्होंने जवाब दिया—"जिस अर्थनीति या इक़्तसादियात की जिस हवा में ये फले फूले उससे ये बाहर नहीं निकल पा रहे." इसका साफ़ मतलब यह है कि ये लोग अपने इन मतों को ज़ाहिर करके चाकरी के लिये अंगरेज़ों की ख़ुशामद कर रहे थे और इस डर से कि कहीं अंगरेज़ फिर वापस न आ जाय ये अपना सुर नहीं बदल रहे. लेखक की यह बात सुनकर इतिहास के अध्यापक ख़ामोश रह गये.

बात साफ़ है. अंगरेज़ अब वापस आने से रहे. इसलिये दूसरा रास्ता पकड़ कर अपनी तक़दीर की आज़माइश करो. मुसलमानों की हुकूमत जब ख़त्म हुई तो उनके समय के प्रचलित आचार, विचार, व्यवहार और भाव धारा को देश ने छोड़ दिया. मध्य युग की सामाजिक व्यवस्था न तो वैदिक थी और न सनातन थी. उसी तरह आजकल की सामाजिक अवस्था और क्रम विकास अंगरेज़ी शासन व्यवस्था की दस-साला बन्दोबस्त थी. पूर्व भारत में अंगरेज़ शासन ने पहले ज़मींदारों और ताल्लुक़ेदारों की सृष्टि की. फिर पश्चिमी शिक्षा देकर उन्हें नौकरियाँ दीं. फिर उनके लिये डाक्टर, वकील और मुख़्तार के पेशे खोलकर समाज में एक मध्यम वर्ग तैयार किया. उसके बाद कल कारख़ाने और रेल-पथ बनाकर एक मज़दूरों का गिरोह तैयार किया. अंगरेज़ी शासन की यही समाज व्यवस्था थी जो भारत को उनके सम्पर्क में प्राप्त हुई. नई अर्थनीति की व्यवस्था से समाज का नये रूप में गठन हुआ. नये आचार और व्यवहार जारी हुये. नये वातावरण में पैदा होकर नये समाज में नई शिक्षा पाकर लोग अपने पुरखों और उनकी संस्कृति के मूल स्रोत को खोजने लगे. इसीके फलस्वरूप नया संस्कार आन्दोलन (Reformation) और पुनर्जागरण (Rinaissance) का आन्दोलन चला. इसी के ज़रिये नये भारत की बुनियादें पड़ीं.

दुनिया का यह चिरन्तन नियम है कि हुकूमत करने वाला गिरोह अपनी ख़ुदग़र्ज़ियों को पूरा करने के लिये शासित वर्ग को अपनी विचार धारा, अपनी चिन्ता धारा, अपने आचार व्यवहार और अपने दिमाग़ी रुझान के मुआफ़िक़ बनाता है. यह किसी 'मतलब-बाज़' की बड़ नहीं है बल्कि समाज शास्त्रियों द्वारा माना हुआ उसूल है. इसीलिये हमने देखा है कि धीरे धीरे हममें से बहुत से सुशिक्षित हिन्दुस्तानी अपने मन प्राण में 'काले अंगरेज़' बन गये हैं. मैकाले की पेशीनगोई सच साबित हो रही है. हमने बाहरी

ادبہت اور اویگیانک متوں کا پرچار کرکے دنیا کی نگاہوں
میں بھارت واسیوں کے سمان کے ساتھ کھلواڑ کرنے میں
ن بھارتیہ ودوانوں کو کیا حاصل ہوتا ہے ؟ لیکھک نے ایک
بار وشوودیالیہ کے ایک اِتہاس کے ادھیاپک سے پوچھا—"اِن بے
سر پیر کے ادبہت متوں کے پرچار میں اِن کا کیا مقصد ہے؟" اُنھوں
نے جواب دیا—"جس ارتھ نیتی یا اقتصادیات کی جس ہوا
میں یہ پھلے پھولے اُس سے یہ باہر نہیں نکل پا رہے." اِس
کا صاف مطلب یہ ہے کہ یہ لوگ اپنے اِن متوں کو ظاہر کر کے
چاکری کے لئے انگریزوں کی خوشامد کر رہے تھے اور اِس ڈر سے
کہ کہیں انگریز پھر واپس نہ آجائے یہ اپنا سور نہیں بدل رہے .
لیکھک کی یہ بات سنکر اتہاس کے ادھیاپک خاموش رہ گئے .

بات صاف ہے . انگریز اب واپس آنے سے رہے . اِس لئے
دوسرا راستہ پکڑ کر اپنی تقدیر کی آزمایش کرو . مسلمانوں کی
حکومت جب ختم ہوئی تو اُن کے سمئے کے پرچلت آچار' وچار'
بیوہار اور بھاوا دھارا کو دیش نے چھوڑ دیا . مدھیہ یگ کی
سماجک ویوستھا نہ تو ویدک تھی اور نہ سناتن تھی . اُسی
طرح آجکل کی سماجک اوستھا اور کرم وکاس انگریزی شاسن
ویوستھا کی دس سالہ بندوبست تھی . پورو بھارت میں انگریز
شاسن نے پہلے زمینداروں اور تعلقہ داروں کی سرشٹی کی . پھر
پشچمی شکشا دیکر اُنھیں نوکریاں دیں . پھر اُن کے لئے ڈاکٹر'
وکیل اور مختار کے پیشے کھولکر سماج میں ایک مدھیم ورگ
تیار کیا . اُس کے بعد کل کارخانے اور ریل پتھ بنا کر ایک
مزدوروں کا گروہ تیار کیا . انگریزی شاسن کی یہی سماج
ویوستھا تھی جو بھارت کو ان کے سمپرک میں پراپت ہوئی .
نئی ارتھ نیتی کی ویوستھا سے سماج کا نئے روپ میں گٹھن ہوا .
نئے آچار اور ویوہار جاری ہوئے . نئے واتاورن میں پیدا ہو کر
نئے سماج میں نئی شکشا پا کر لوگ اپنے پرکھوں اور اُن کی
سنسکرتی کے مول سروت کو کھوجنے لگے . اِسی کے پھل سروپ
نیا سنسکار آندولن (Reformation) اور پنر جاگرن
(Renaissance) کا آندولن چلا . اِسی کے ذریعہ نئے
بھارت کی بنیادیں پڑیں .

دنیا کا یہ چرنتن نیم ہے کہ حکومت کرنے والا گروہ اپنی
خودغرضیوں کو پورا کرنے کے لیئے شاست ورگ کو اپنی وچار
دھارا' اپنی چنتا دھارا' اپنے آچار ویوہار اور اپنے دماغی رجحان کے
موافق بناتا ہے . یہ کسی 'مطلب باز' کی بڑ نہیں
ہے بلکہ سماج شاستریوں دوارا مانا ہوا اُصول ہے . اِسلئے ہم نے
دیکھا ہے کہ دھیرے دھیرے ہم میں سے بہت سے سوشکشت
ہندستانی اپنے من پران میں 'کالے انگریز' بن گئے ہیں . میکالے
کی پیشین گوئی سچ ثابت ہو رہی ہے . ہم نے باہری

दुनिया को अंगरेज़ों के नुक़्ते नज़र से देखना शुरू किया. डाक्टर राजेन्द्र लाल मित्र और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के ज़माने में मालूम होता है इस अंगरेज़ियत की इतनी छाप नहीं थी मगर बाद में यह छाप साफ़ नज़र आने लगी. इसके दो सबब हैं. एक तो यह कि ऊँची तालीम का ज़रिया सिर्फ़ अंगरेज़ी ज़बान थी. इसलिये ऊँची तालीम हासिल करने के बाद हम बाहरी दुनिया की व्याख्या अंगरेज़ों के मुताबिक़ ही करने लगे. दुनिया के जितने अनुष्ठान (Phenomenon) हैं उनमें अंगरेज़ों के सिवाय और भी दूसरी जातियों के मत और रायें हैं ये हमारे पढ़े लिखे लोग मानने को तैयार ही न थे. कुछ दिन पहले तक यह हालत थी. दिमाग़ी हल्क़े में दास मनोवृत्ति का सबसे ज़्यादा असर पड़ता है. आज के आज़ाद भारत में भी हमें उसी दास मनोवृत्ति की परछाईं जब-तब घनी होती हुई दिखाई देती है. सात-आठ बरस की स्वाधीनता अब तक इन लोगों के देह और चमड़े को भेद कर दिल के अन्दर दाख़िल नहीं हो सकी. आज भी इनके दिल और दिमाग़ ने दास मनोवृत्ति को दोनों हाथों से कसकर पकड़ रखा है. अपने मन प्राण में हम अब तक ग़ुलाम, वही ग़ुलाम हैं.

दूसरा सबब यह है कि हमारे दिल में यह बात बैठ गई थी कि जब तक ग़ुलाम जाति हाकिमों की 'हाँ में हाँ' न मिलाये तब तक उसकी दुनयावी तरक़्क़ी नहीं हो सकती. नौकर पेशा लोग अपनी नौकरी में आज़ाद ख़याली दिखाकर कैसे तरक़्क़ी कर सकते हैं? जिसने अपने मन और अपने देश को आज़ाद करने का भाव दिखाया उसे या तो अन्दमान निर्वासन मिला और या फाँसी का तख़्ता मिला. यह आँखों के अनजानेपन का व्यापार था. इसीलिये जब भारत के चिन्ता-क्षेत्र में विज्ञान की तरक़्क़ी जब हुकूमत के मातहत हुई तब अपनी सुविधा के मुताबिक़ 'हाँ-जी, हाँ-जी' कहने ही में भारतीय विद्वानों ने श्रेय और प्रेय समझा. इसीलिये हमारे जितने भी विद्वान थे वैदिक, प्रागैतिहासिक और भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रकाण्ड पंडित वे सब 'हाँ में हाँ' मिलाने की नीति से ऊपर न उठ सके. 'कर्ता की इच्छा के मुताबिक़ कर्म' इस उसूल को किसी ने पूरी तरह समझा नहीं. जब तक नौकर हैं तब तक शासक वर्ग से प्रतिकूल अपनी कोई राय ज़ाहिर करने में नौकरी के ऊपर संकट आ सकता था. जिन्होंने फ़र्ग्यूसन के मत के ख़िलाफ़ राजेन्द्रलाल मित्र की पुस्तक पढ़ी है वही इस समस्या को ठीक ठीक समझ सकते हैं.* ख़ुशक़िस्मती से राजेन्द्रलाल सरकारी ठाकुर नहीं थे मगर तब भी वे "बंगाली बाबू" थे.

एक मौजूदा मिसाल देकर इस प्रसङ्ग को बन्द करूँगा. पिछले महायुद्ध से पहले एक नौजवान खोजी के साथ 'सिंधु की

* देखें फ़र्ग्यूसन की बुद्ध गया विषय की पुस्तक.

دنیا کو انگریزوں کے نقطہ نظر سے دیکھنا شروع کیا. ڈاکٹر راجیندر لال متر اور ایشور چندر ودیا ساگر کے زمانے میں معلوم ہوتا ہے اِس انگریزیت کی اِتنی چھاپ نہیں تھی مگر بعد میں یہ چھاپ صاف نظر آنے لگی . اِس کے دو سبب ہیں . ایک تو یہ کہ اونچی تعلیم کا ذریعہ صرف انگریزی زبان تھی . اس لئے اُنچی تعلیم حاصل کرنے کے بعد ہم باہری دنیا کی ویاکھیا انگریزوں کے مطابق ہی کرنے لگے . دنیا کے جتنے انوشٹھان (Phenomenon) ہیں . اُن میں انگریزوں کے سوائے اور بھی دوسری جاتیوں کے مت اور رائیں ہیں یہ ہمارے پڑھے لکھے لوگ ماننے کو تیار ہی نہ تھے . کچھ دن پہلے تک یہ حالت تھی . دماغی حلقے میں داس منوورتی کا سب سے زیادہ اثر پڑتا ہے . آج کے آزاد بھارت میں بھی ہمیں اُسی داس منوورتی کی پرچھائیں جب تب گھنی ہوتی ہوئی دکھائی دیتی ہے . سات آٹھ برس کی سوادھینتا اب تک اِن لوگوں کے دیہہ اور چمڑے کو بھید کر دل کے اندر داخل نہیں ہو سکی . آج بھی اِن کے دل اور دماغ نے داس منوورتی کو دونوں ہاتھوں سے کس کر پکڑ رکھا ہے . اپنے من پران میں ہم اب تک غلام' وہی غلام ہیں .

دوسرا سبب یہ ہے کہ ہمارے دل میں یہ بات بیٹھ گئی تھی کہ جب تک غلام جاتی حاکموں کی 'ہاں میں ہاں' نہ ملائے تب تک اُس کی دنیاوی ترقی نہیں ہو سکتی . نوکر پیشہ لوگ اپنی نوکری میں آزاد خیالی دکھا کر کیسے ترقی کر سکتے ہیں ؟ جس نے اپنے من اور اپنے دیش کو آزاد کرنے کا بھاؤ دکھایا اُسے یا تو اندمان میں نرواسن ملا اور یا پھانسی کا تختہ ملا . یہ آنکھوں کے انجانے پن کا ویاپار تھا . اِسی لئے جب بھارت کے چنتا چھیتر میں وگیان کی ترقی جب حکومت کے ماتحت ہوئی تب اپنی سویدھا کے مطابق 'ہاں جی' ہاں جی' کہنے ہی میں بھارتیہ ودوانوں نے شریئے اور پریئے سمجھا. اِس لئے ہمارے جتنے بھی ودوان تھے ویدک' پراگیتہاسک اور بھارتیہ سبھیتا اور سنسکرتی کے پرکانڈ پنڈت وے سب 'ہاں میں ہاں' ملانے کی نیتی سے اوپر نہ اُٹھ سکے . 'کرتا کی اِچھا کے مطابق کرم' اِس اُصول کو کسی نے پوری طرح سمجھا نہیں . جب تک نوکر ہیں تب تک شاسک ورگ سے پرتی کول اپنی کوئی رائے ظاہر کرنے میں نوکری کے اُوپر سنکٹ آسکتا تھا . جنھوں نے فرگیوسن کے مت کے خلاف راجیندر لال متر کی پستک پڑھی ہے وہی اِس سمسیا کو ٹھیک ٹھیک سمجھ سکتے ہیں . * خوش قسمتی سے راجیندر لال سرکاری ٹھاکر نہیں تھے مگر تب بھی وے "بنگالی بابو" تھے .

ایک موجودہ مثال دیکر اس پرسنگ کو بند کرونگا . پچھلے مہایدھ سے پہلے ایک نوجوان کھوجی کے ساتھ 'سندھو کی

دیکھیں فرگیوسن کی بدھ گیا وشئے کی پستک.

प्रागैतिहासिक सभ्यता' को लेकर लेखक की आलोचना अकसर होती थी. वे कहते थे—"देखा महाशय! हमारे ही देश के लोग, हमारा ही टका पैसा पाकर मोहन-जो-दड़ो के सम्बन्ध में मिथ्या बातें बोलते हैं. किन्तु अमुक ने एक बात कही थी. उन्होंने कहा था कि 'क्या करें भाई, चाकरी में जो हूँ.' बाद में मैंने उनसे कहा कि अमुक महाशय ने (वह अब स्वर्ग में हैं) जो आपसे इस सम्बन्ध में कहा था क्या मैं उसे समाचार-पत्रों में प्रकाशित कर सकता हूँ? उन्होंने जवाब दिया—"वह आज जीवित नहीं हैं. आप अगर कुछ छपवायेंगे भी तो वे उसका प्रतिवाद न कर सकेंगे. उन्होंने मुझसे यह बात निजी तौर पर कही थी, छपाने के लिये नहीं." फिर कहा यह तो बहुत पहले कहा था और यह बात अंगरेज विद्वानों के कानों में नहीं पड़ी. मैंने बाद में समझा कि यह नौजवान खोजी महाशय भी सरकारी चाकरी के फेर में हैं और अपने नाम के साथ कोई ऐसी बात रोशनी में नहीं लाना चाहते जिससे इनके रास्ते में सरकारी नौकरी मिलने में बाधा पड़े. इन्हीं खोजी महाशय ने एक और दूसरे सज्जन से भी, जो सिन्धु सभ्यता के बारे में अनुसन्धान का काम करते हैं, सन् 1948 में कहा कि, "मैंने भूपेन्द्रदत्त से झूठी बात कही थी कि फ़लाँ शख्स ने मुझसे यह बात कही." इन सज्जन ने जवाब दिया—"अब तो अङ्गरेज नहीं हैं. डरका कोई सबब भी नहीं है. अब आप सच्ची बात कह सकते हैं. आगे इसके बारे में सच्ची बात कहेंगे तो?"

विश्वविद्यालय के अध्यापकों की जब यह हालत है तो फिर भारत के साधारण इतिहास के सम्बन्ध में सच्ची बातों की जानकारी और कहाँ मिलेगी? हमारे दिमाग़ के हर एक सेल (Cell) के बीच में अब तक विराजमान है! इसलिये हर नई ऐतिहासिक सचाई की बात सुनकर हमारे देश के लोग चौंक उठते हैं और कहते हैं यह—"नई बात!"

इसीलिये कहा है "धर्म राजनीति का एक जुज़ है." जैसा राष्ट्र होता है वैसा ही उसका धर्म होता है. राजनीति राष्ट्र के हर अङ्ग में अनुरूप असर डालती है. राजनीति को छोड़ कर धर्म नहीं खड़ा हो सकता. आकाशवाणी यानी ग़ैब की आवाज और निभ्रन्ति इलहाम से धर्म का सिरजन हुआ और उसे सच कर लोगों ने फ़ौरन क़ुबूल कर लिया. यह अनैतिहासिक और गपोड़ियों की कहानी है. इसीलिये पुराने जमाने में राजाओं को धर्म का यानी 'वर्णाश्रम का नियामक और चालक' (धर्मपाल, विग्रहपाल—देखो प्रभाकर वर्धन का ताम्रलेख) कहकर पुकारा जाता था.

धर्म चूँकि सियासत का एक जुज़ है इसलिये अनुयाइयों की राजनीति शासक के धर्म का रूप ले लेती है. दर-अस्ल धर्म राष्ट्र को चलाने वाला एक यंत्र होता है. हिन्दुस्तान में बार बार इसकी मिसाल देखने को मिलती है.

پراگیتہاسک سبھیتا' کو لیکر لیکھک کی آلوچنا اکثر ہوتی تھی. وے کہتے تھے—"دیکھا مہاشئے! ہمارے ہی دیش کے لوگ' ہمارا ہی ٹکا پیسہ پاکر موہن-جودڑو کے سمبندھ میں متھیا باتیں بولتے ہیں. کنتو امک نے ایک بات کہی تھی. اُنہوں نے کہا تھا کہ 'کیا کریں بھائی' چاکری میں جو ہوں!' بعد میں میں نے اُن سے کہا کہ امک مہاشئے نے (وہ اب سورگ میں ہیں) جو آپ سے اِس سمبندھ میں کہا تھا کیا میں اُسے ساچار پتروں میں پرکاشت کر سکتا ہوں؟ اُنہوں نے جواب دیا—"وہ آج جیوت نہیں ہیں. آپ اگر کچھ چھپوائینگے بھی تو وے اُس کا پرتیواد نہ کر سکینگے. اُنہوں نے مجھ سے یہ بات نجی طور پر کہی تھی' چھپانے کے لئے نہیں." پھر کہا یہ تو بہت پہلے کہا تھا اور یہ بات انگریز ودوانوں کے کانوں میں نہیں پڑی. میں نے بعد میں سمجھا کہ یہ نوجوان کھوجی مہاشئے بھی سرکاری چاکری کے پھیر میں ہیں اور اپنے نام کے ساتھ کوئی ایسی بات روشنی میں نہیں لانا چاہتے جس سے اُن کے راستے میں سرکاری نوکری ملنے میں بادھا پڑے. اِنہیں کھوجی مہاشئے نے ایک اور دوسرے سجن سے بھی' جو سندھو سبھیتا کے بارے میں انوسندھان کا کام کرتے ہیں' سن 1948 میں کہا کہ' "میں نے بھوپیندر دت سے جھوٹی بات کہی تھی کہ فلاں شخص نے مجھ سے یہ بات کہی." اِن سجن نے جواب دیا—"اب تو انگریز نہیں ہیں. ڈر کا کوئی سبب بھی نہیں ہے. اب آپ سچی بات کہہ سکتے ہیں. آگے اِس کے بارے میں سچی بات کہیں گے تو؟"

وشودیالیہ کے ادھیاپکوں کی جب یہ حالت ہے تو پھر بھارت کے سادھارن اِتہاس کے سمبندھ میں سچی باتوں کی جانکاری اور کہاں ملیگی؟ ہمارے دماغ کے ہر ایک سیل (Cell) کے بیچ میں اب تک وراجمان ہے! اِس لیئے ہر نئی ایتہاسک سچائی کی بات سن کر ہمارے دیش کے لوگ چونک اُٹھتے ہیں اور کہتے ہیں یہ—"نئی بات!"

اِسی لئے کہا ہے "دھرم راج نیتی کا ایک جز ہے." جیسا راشٹر ہوتا ہے ویسا ہی اُس کا دھرم ہوتا ہے. راج نیتی راشٹر کے ہر انگ میں انوروپ اثر ڈالتی ہے. راج نیتی کو چھوڑ کر دھرم نہیں کھڑا ہو سکتا. آکاشوانی یعنی غیب کی آواز اور نربھرانت الہام سے دھرم کا سرجن ہوا اور اُسے سچ کر لوگوں نے فوراً قبول کر لیا. یہ انیتہاسک اور گپوڑیوں کی کہانی ہے. اِسی لئے پرانے زمانے میں راجاؤں کو دھرم کا یعنی ورناشرم کا نیامک اور چالک (دھرم پال' وگرہ پال—دیکھو پربھا کر وردھن کا تامر لیکھ) کہہ کر پکارا جاتا تھا.

دھرم چونکہ سیاست کا ایک جز ہے اِس لئے انویائیوں کی راج نیتی شاسک کے دھرم کا روپ لے لیتی ہے. دراصل دھرم راشٹر کو چلانے والا ایک یَنتر ہوتا ہے. ہندستان میں بار بار اِس کی مثال دیکھنے کو ملتی ہے.

राजनीति को ठीक से चलाने के लिये धर्म को उसी तरह गढ़ा जाता है. अगर इस मसले को हम यथार्थवादी नुक्ते नज़र से देखें तो हमें दिखाई देगा कि छान्दोग्य उपनिषद् के पांचाल राज प्रवाहन जैवाली के समय से लेकर अंगरेज़ी राज के वक़्त तक इसकी नज़ीरें मिलेंगी. राजा और राष्ट्र की सुविधा के मुताबिक़ ही धर्म अपना रूप गढ़ता है. अशोक ने अपने मत के अनुसार राष्ट्र के गठन का प्रयत्न किया. बंगाल के सूर, बर्मन और सेन राजाओं ने प्राचीन बौद्ध संस्कृति को जड़मूल से उखाड़कर उसकी जगह ब्राह्मणवाद को अपनाया. इस ज़माने में भवदेव भट्ट ने नई स्मृति चलाई और जीमूतवाहन 'दाय भाग' नामक नये आईन के प्रणेता थे. ये सब मिसालें इस सामाजिक सचाई की गवाह हैं. इसके बाद हम देखते हैं कि बंगाल में हुसेन-शाह सत्यपीर (हिन्दुओं के सत्यनारायण) की पूजा जारी करते हैं व उसके पृष्ठ पोषक बनते हैं. उसके बाद अकबर द्वारा अपने नये धर्म दीने इलाही का प्रचार होता है. फिर औरंगज़ेब ज़बरदस्ती जनता के ऊपर अपना धर्म लादने की कोशिश करता है. फिर हम देखते हैं कि दिल्ली दरबार में रानी विक्टोरिया को 'भारत की साम्राज्ञी' कहकर पुकारा जाता है और अंगरेज़ सरकार केशव चन्द्र सेन, स्वामी दया-नन्द और सय्यद अहमद को मिलाकर एक सार्वजनीन धर्म संगठित करने की कोशिश करती है.* इन सब मिसालों से इसी समाजी उसूल पर रोशनी पड़ती है कि एक राष्ट्र, एक राजा, एक नेशन, एक धर्म—यही हमेशा से साम्राज्य-वादियों की कामना रही है. यह कोई नई बात नहीं है. इति-हास उसे बार बार दोहरा रहा है.

इन तथ्यों से साफ़ है कि राजनीति के क्षेत्र से धर्म को अलग नहीं किया जा सकता. जैसी राजनीति होगी उसी तरह धर्म का क्रम विकास और रूप होगा. बुनियादी तौर पर सब धर्म Anthropological religion होते हैं यानी जातियों की अभिव्यक्ति के साथ धर्म का भी विवर्तन होता है. जो लोग धर्म को ईश्वर कृत या इलहामी मानते हैं उनसे पूछा जा सकता है कि काल की दूरबीन लेकर बहुत दूर गुज़रे हुये ज़माने से अब तक यदि नज़र दौड़ाई जाय तो दिखाई देगा कि आज जिसे ईश्वर प्रेरित, इलहामी या अपौरुषेय, और ऋषियों द्वारा बताया निर्भ्रान्त सत्य कहा जाता है वह दूर ज़माने के एक बीज का ही तरक़्क़ी किया हुआ रूप है. इस पर उसी बीज की छाप होती है. रिगवेद के यज्ञ के 'ब्रह्मा' (सायण ने इस शब्द के सात अर्थ किये हैं) बाद में सृष्टि के बनाने वाले ब्रह्मा के रूप में पूजे जाने लगे. बाद में ब्रह्मा ने 'शत ब्रह्मा' व 'सहस्र ब्रह्मा' के रूप बुद्धदेव से उपदेश सुना. फिर उपनिषदों में

راج نیتی کو ٹھیک سے چلانے کے لئے دھرم کو اُسی طرح گڑھا جاتا ھے . اگر اِس مسئلے کو ہم یتھارتھوادی نقطہ نظر سے دیکھیں تو ہمیں دکھائی دیگا کہ چھاندوگیہ اُپنشد کے پانچال راج پرواھن جیوالی کے سمئے سے لیکر انگریزی راج کے وقت تک اِس کی نظیریں ملینگی . راجہ اور راشٹر کی سویدھا کے مطابق ھی دھرم اپنا روپ گڑھتا ھے . اشوک نے اپنے مت کے انوسار راشٹر کے گٹھن کا پریتن کیا . بنگال کے سور، برمن اور سین راجاؤں نے پراچین بودھ سنسکرتی کو جڑ مول سے اُکھاڑ کر اُس کی جگہہ براھمن واد کو اپنایا . اِس زمانے میں بھودیو بھٹ نے نئی اسمرتی چلائی اور جیمھوت واھن 'دائے بھاگ' نامک نئے آئین کے پرنیتا تھے . یہ سب مثالیں اس سماجک سچائی کی گواہ ھیں . اِس کے بعد ہم دیکھتے ھیں کہ بنگال میں حسین شاہ ستیہ پیر (ھندؤں کے ستیہ نارائن) کی پوجا جاری کرتے ھیں و اُس کے پرشٹھ پوشک بنتے ھیں . اُس کے بعد اکبر دوارا اپنے نئے دھرم دین اِلٰہی کا پرچار ھوتا ھے . پھر اورنگ زیب زبردستی جنتا کے اُوپر اپنا دھرم لادنے کی کوشش کرتا ھے . پھر ہم دیکھتے ھیں کہ دلی دربار میں رانی وکٹوریا کو 'بھارت کی سامراگی' کہہ کر پکارا جاتا ھے اور انگریز سرکار کیشو چندر سین' سوامی دیا نند اور سید احمد کو ملا کر ایک سارو جنین دھرم سنگٹھت کرنے کی کوشش کرتی ھے*. اِن سب مثالوں سے اِسی سماجی اُصول پر روشنی پڑتی ھے کہ ایک راشٹر' ایک راجا' ایک نیشن' ایک دھرم—یہی ھمیشہ سے سامراجیہ وادیوں کی کامنا رھی ھے . یہ کوئی نئی بات نہیں ھے . اِتہاس اُسے بار بار دوھرا رھا ھے .

اِن تتھیوں سے صاف ھے کہ راج نیتی کے چھیتر سے دھرم کو الگ نہیں کیا جا سکتا . جیسی راج نیتی ھوگی اُسی طرح دھرم کا کرم وکاس اور روپ ھوگا . بنیادی طور پر سب دھرم Anthropoligical religion ھوتے ھیں یعنی جاتیوں کی ابھیویکتی کے ساتھ دھرم کا بھی ویورتن ھوتا ھے. جو لوگ دھرم کو ایشور کرت یا اِلہامی مانتے ھیں اُن سے پوچھ جا سکتا ھے کہ کال کی دوربین لیکر بہت دور گذرے ھوئے زمانے سے اب تک یدی نظر دوڑائی جائے تو دکھائی دیگا کہ آج جسے ایشور پریرت' اِلہامی یا اَپوروشرئیہ' اور رشیوں دوارا بتایا نربھرانت ستیہ کہا جاتا ھے وہ دور زمانے کے ایک بیج کا ھی ترقی کیا ھوا روپ ھے . اِس پر اُسی بیج کی چھاپ ھوتی ھے . رگوید کے یگیہ کے 'برھما' (ساین نے اِس شبد کے سات ارتھ کئے ھیں) بعد میں سرشٹی کے بنانے والے برھما کے روپ میں پوجے جانے لگے . بعد میں برھما نے 'شبت برھما' وسہسٹر برھما' کے روپ بدھ دیو سے اُپدیش سنا . پھر اُپنشدوں میں

* Iife and Teachings of Keshub Charda Sen by Pratap Chandra Mazumdar.

ब्रह्मा 'परब्रह्म' के पद पर पहुंचते हैं और अन्त में सावित्री के अभिशाप से ब्रह्मा अपने पद से पदच्युत होकर ब्रह्मा का भारत से लोप हो जाता है.*

इसी तरह प्रागैतिहासिक जमाने का Yave यहूदी क़ौम का सर्वशक्तिमान 'जेहोवा' (Jehovah) हो जाता है. इसी तरह सेमेटिक जातियों के रेगिस्तान में 'एलि,' 'एल,' 'एलियन' और उसके बाद वही क़ुरान में 'अल्लाह' बन जाते हैं. भगवान की धारणा का यही जातितात्त्विक (enthrological) रूप है. वैदिक 'भग' देवता ही बाद में सृष्टि कर्त्ता भगवान बन गये. रूस में इनकी Bugus नाम से पूजा होती है. जैसे जैसे क़ौम की राजनीति का चक्र घूमता है वैसे वैसे क्रिया कांड, ध्यान धारणा और भगवान के रूप की अभिव्यक्ति होती है. इसी नुक़्ते नज़र से हम आर्यों की राजनीतिक और समाजनीतिक प्रगति पर ज़रा ग़ौर करें. आर्यों की जातिगत संस्कृति को ज़रा देखें. आर्य सोमरस पीने वाले, हल्दी रंग की दाढ़ी वाले, और हल्दी रंग के कपड़े पहनने वाले और उनके नेता 'हरित' (हल्दी रंग के) घोड़े पर सवार इन्द्र हैं जिन्होंने सम्बर असुर को ध्वंस किया. वही पुराणों के इन्द्र बनकर दैत्य और असुरों के हाथों पराजित होते हैं. इसका सबब क्या है ? इसका सबब यह है कि आर्यों के नेता इन्द्र की हैसियत अब बेहद घट गई थी, उसके सर पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर बैठा दिये गये थे. इन्द्र ख़ाली स्वर्ग का इन्तज़ाम करने वाला रह गया. इन्द्र को बार बार पराजित होने वाला दिखाकर त्रिमूर्ति की प्रतिष्ठा जो क़ायम करनी थी. स्वर्ग के ऊपर भी और दूसरे लोकों की कल्पना करके इन्द्र का दरजा बेहद घटा दिया गया. 'महेश्वर,' महाभारत के मुताबिक़, सबसे बड़ा देवता बन जाता है. (वाकाटक और भारशिवों के वक़्त महेश्वर की पूजा सबसे प्रधान पूजा ऐलान की गई). लेकिन गुप्तों के ज़माने में विष्णु की पूजा सबसे मुख्य पूजा क़रार दी गई.

यह भी देखा जाता है कि हर ज़माने में हुकूमत करने वाले समाज को अपनी राय का बनाने के लिये धर्म पुस्तकें तैयार कराते हैं और नये नये क्रिया कांड और आचार व्यवहार जारी करते हैं. चण्डाशोक ने 'धर्माशोक' बनकर स्त्रियों से सम्बन्धित कई आचार व्यवहार बदले. बुद्ध की ज़िन्दगी को लेकर तरह तरह की जात्राएँ, और क्रीड़ा प्रदर्शन जारी किये गये. (जिस तरह ईसा की ज़िन्दगी को लेकर Passion play शुरू किये गये). वाकाटक और भारशिवों के समय भारत मे शिव के मन्दिर बनाये जाने लगे; ब्राह्मणों को ग्रामदान मिलने लगा; यज्ञ वग़ैरह फिर से जारी किये गये और शिव को लेकर अनेक पुराण लिखे गये.

बहुत गुज़रे हुये ज़माने के इतिहास में न जाकर अगर हम बंगाल के इतिहास पर ही नज़र डालें तो देखेंगे कि बौद्ध

* स्कन्द पुराण, नाग खण्ड.

برھما 'پرم برھم' کے پد پر پہونچتے ھیں اور انت میں ساوتری کے ابھیشاپ سے برھما اپنے پد سے پدچیوت ھو کر برھما کا بھارت سے لوپ ھو جاتا ھے . *

اِسی طرح پراگیتہاسک زمانے کا Yave یہودی قوم کا سروشکتیمان 'جیہووا' (Jehovah) ھو جاتا ھے . اِسی طرح سیمیٹک جاتیوں کے ریگستان میں 'ایلی' 'ایل' ایلین' اور اُس کے بعد وھی قرآن میں اللہ بن جاتے ھیں. بھگوان کی دھارنا کا یہی جاتاتیوک (enthrological) روپ ھے . ویدک 'بھگ' دیوتا ھی بعد میں سرشٹی کرتا بھگوان بن گئے . روس میں اِن کی Bugus نام سے پوجا ھوتی ھے . جیسے جیسے قوم کی راج نیتی کا چکر گھومتا ھے ویسے ویسے کریا کانڈ' دھیان دھارنا اور بھگوان کے روپ کی ابھیویکتی ھوتی ھے . اِسی نقطہ نظر سے ھم آریوں کی راج نیتک اور ساماجک پرگتی پر ذرا غور کریں. آریوں کی جاتیگت سنسکرتی کو ذرا دیکھیں . آریہ سوم رس پینے والے؛ ھلدی رنگ کی داڑھی والے اور ھلدی رنگ کے کپڑے پہننے والے اور اُن کے نیتا 'ھرت' (ھلدی رنگ کے) گھوڑے پر سوار اِندر ھیں جنھوں نے سمبر اسر کو دھونس کیا . وھی پرانوں کے اندر بن کر دیتہ اور اسوروں کے ھاتھوں پراجت ھوتے ھیں . اِس کا سبب کیا ھے ؟ اِس کا سبب یہ ھے کہ آریوں کے نیتا اِندر کی حیثیت اب بے حد گھٹ گئی تھی' اُس کے سر پر برھما' وشنو اور مہیشور بیٹھا دیئے گئے تھے . اِندر خالی سورگ کا انتظام کرنے والا رہ گیا. اِندر کو بار بار پراجت ھونے والا دکھا کر تریمورتی کی پرتشٹھا جو قائم کرنی تھی . سورگ کے اوپر بھی اور دوسرے لوکوں کی کلپنا کر کے اندر کا درجہ بے حد گھٹا دیا گیا . 'مہیشور' مہابھارت کے مطابق' سب سے بڑا دیوتا بن جاتا ھے. (واکاٹک اور بھارشوں کے وقت مہیشور کی پوجا سب سے پردھان پوجا اعلان کی گئی) . لیکن گپتوں کے زمانے میں وشنو کی پوجا سب سے مکھیہ پوجا قرار دی گئی .

یہ بھی دیکھا جاتا ھے کہ ھر زمانے میں حکومت کرنے والے سماج کو اپنی رائے کا بنانے کے لئے دھرم پستکیں تیار کراتے ھیں اور نئے نئے کریا کانڈ اور آچار ویوھار جاری کرتے ھیں . چنڈاشوک نے 'دھرماشوک' بن کر استریوں سے سمبندھت کئی آچار ویوھار بدلے . بدھ کی زندگی کو لیکر طرح طرح کی جاترائیں' اور کریڑا پردرشن جاری کئے گئے . (جس طرح عیسیٰ کی زندگی کو لیکر Passion Play شروع کئے گئے) . واکاٹک اور بھارشوں کے سمئے بھارت میں شو کے مندر بنائے جانے لگے؛ براھمنوں کو گرام دان ملنے لگا؛ یگیہ وغیرہ پھر سے جاری کئے گئے اور شو کو لیکر اُن کے پران لکھے گئے .

بہت گذرے ھوئے زمانے کے اِتہاس میں نہ جاکر اگر ھم بنگال کے اِتہاس پر ھی نظر ڈالیں تو دیکھینگے کہ بودھ

* اسکند پران' ناگ کھنڈ .

शासन को खत्म करके राढ़ के शूरों, बर्मनों, और गौड़ के सेन शासकों ने ब्राह्मणवाद को जारी करने की बेहद कोशिशें कीं. इसके लिये क़न्नौज से सात्विक ब्राह्मणों को बुलाया गया. भवदेव भट्ट ने नई स्मृति बनाई. नये क्रिया कर्म, और नये पाठ मंत्र बनाये गये. जीमूतवाहन की 'दायरत्न' बल्लाल सेन की 'दान सागर,' हलायुध की 'ब्राह्मण सर्वस्व' आदि एक सौ पुस्तकें लिखवाई गईं.

पशुपति ने 'मत्सूक्त' और उनके भाई ने 'आह्निक पद्धति' पुस्तक लिखी. इस तरह बौद्ध संस्कृति को हर प्रकार से मिटाने की कोशिश की गई. यह सब बाहर से आये हुये ब्राह्मणवादी ग़ैर बङ्गालियों द्वारा कराया गया. इसीलिये बङ्किमचन्द्र ने आक्षेप किया था कि बंगाल का राजत्व कन्नौज तक है. देवपाल देव, हलायुध, श्री हर्ष आदि की स्मृतियाँ ही बंगाल के दिल और दिमाग़ पर छा गईं. स्वर्गीय हर प्रसाद शास्त्री ने लिखा था—"बंगाली एक ऐसी जाति है जो अपने को भूल चुकी है."• बंगाली इस बात को भूल गये हैं कि धर्मपाल ने किस प्रकार बंगाल को सार्वभौम हुकूमत बनाया था और किस तरह धनाधन के जंगी हाथियों ने बिजली की तड़प से कामरूप राज्य को हराया था. बंगाली यह भी भूल गये हैं कि किस तरह 'हि ! हि' ! (war cry) के साथ उनकी नौ सेनायें जंगी नारे लगाकर हमला करती थीं. बंगाली यह भी भूल गये हैं कि किस तरह जावा और सिंहल में बंगाली व्यापारी तिजारत के लिये जाया करते थे (देखो चाँद, धनपति और श्रीमन्त आदि उपाख्यान). जमीन खोदकर ताम्रलिप्ति का जो प्राचीन वैभव सम्पन्न शहर निकला है उसका ज़िक्र सिर्फ़ कहानियों में मिलता है.

श्रेणी संग्राम इसी भयानक रूप से काम करता है. आपसी हमला और जवाबी हमला और बदले की भावना में लगे हुये लोगों के बारे में शान्ति पर्व में भीष्म ने कहा है—"पूर्व देश के लोग सब शास्त्रों के विशारद यानी जानकार हैं." उन्हीं बंगालियों को आज सब लोग 'भातखाऊ' बंगाली कहकर पुकारते हैं. आज बंगाली जंग का नाम सुनकर काँपने लगते हैं. बंगाली यह लिखकर दरख़ास्त देने में भी शर्म महसूस नहीं करते कि—"We are a cowardly people !"❋

इसीलिये हम कहते हैं कि राजनीति के साथ धर्म का गहरा ताल्लुक़ है. हुकूमत करने वाले जिस तरह राजनीति को चलाते हैं उस देश में वहाँ की संस्कृति उसी के मुताबिक़ रूप लेती है.

[बाक़ी फिर]

شاسن کو ختم کر کے راڈھ کے شوروں، برمنوں، اور گوڑ کے سین شاسکوں نے براہمنیواد کو جاری کرنے کی بے حد کوششیں کیں ۔ اس کے لئے قنوج سے ساتوک براہمنوں کو بلایا گیا ۔ بھو دیو بھٹ نے نئی اسمرتی بنائی ۔ نئی کریا کرم، اور نئے پاٹھ منتر بنائے گئے ۔ جیموتواہن کی 'دایہ رتن' بلال سین کی 'دان ساگر' ہلایدھ کی برہمن 'سروسو' آدی ایک سو پستکیں لکھوائی گئیں ۔

پشوپتی نے 'متسوکت' اور اُن کے بھائی نے 'آہنک پدھتی' پستک لکھی ۔ اِس طرح بودھ سنسکرتی کو ہر پرکار سے مٹانے کی کوشش کی گئی ۔ یہ سب باہر سے آئے ہوئے براہمن وادی غیر بنگالیوں دوآرا کرایا گیا ۔ اِسی لئے بنکم چندر نے آکشیپ کیا تھا ۔ کہ بنگال کا راجتو قنوج تک ہے ۔ دیوپال دیو' ہلا یدھ' شری ہرش آدی کی اِسمرتیاں ہی بنگال کے دل اور دماغ پر چھا گئیں ۔ سورگیہ ہر پرساد شاستری نے لکھا تھا —"بنگالی ایک جاتی ہے جو اپنے کو بھول چکی ہے ۔* بنگالی اِس بات کو بھول گئے ہیں کہ دھرم پال نے کس پرکار بنگال کو سارو بھوم حکومت بنایا تھا اور کس طرح دھنادھن کے جنگی ہاتھیوں نے بجلی کی تڑپ سے کامروپ راجیہ کو ہرایا تھا ۔ بنگالی یہ بھی بھول گئے ہیں کہ کس طرح 'ہی'! 'ہی'! (war cry) کے ساتھ اُن کی نو سینائیں جنگی نعرے لگا کر حملہ کرتی تھیں ۔ بنگالی یہ بھی بھول گئے ہیں کہ کس طرح جاوا اور سنگھل میں بنگالی ویاپاری تجارت کے لیئے جایا کرتے تھے ۔ (دیکھو چاند' دھنپتی اور شریمنت آدی اُپاکھیان) زمین کھود کر تامرلپتی کا جو پراچین ویبھو سمپن شہر نکلا ہے اُس کا ذکر صرف کہانیوں میں ملتا ہے ۔

شرینی سنگرام اِسی بھیانک روپ سے کام کرتا ہے ۔ آپسی حملہ اور جوابی حملہ اور بدلے کی بھاونا میں لگے ہوئے لوگوں کے بارے میں شانتی پرو میں بھیشم نے کہا ہے—"پورو دیش کے لوگ سب شاستروں کے وشارد یعنی جانکار ہیں ۔" اُنہیں بنگالیوں کو آج سب لوگ 'بھات کھاؤ' بنگالی کہہ کر پکارتے ہیں ۔ آج بنگالی جنگ کا نام سن کر کانپنے لگتے ہیں ۔ بنگالی یہ لکھکر درخواست دینے میں بھی شرم محسوس نہیں کرتے
❋We are a cowardly people ! —" کہ

اِس لئے ہم کہتے ہیں کہ راج نیتی کے ساتھ دھرم کا گہرا تعلق ہے ۔ حکومت کرنے والے جس طرح راج نیتی کو چلاتے ہیں اُس دیش میں وہاں کی سنسکرتی اُسی کے مطابق روپ لیتی ہے ۔

[باقی پھر]

• वर्धमान साहित्य सम्मेलन—सभापति का अभिभाषण.
❋Charles Ball—History of Sepoy War.

*بردھمان ساہتیہ سمیلن— سبھاپتی کا ابھیبھاشن ۔

मेल मिलाप का संगम—बंगाल

डाक्टर लतीफ़ दफ़्तरी एम. ए., डी. फ़िल.

क़रीब आठ सदियों तक बङ्गाल मुसलमानी हुकूमतों के मातहत रहा. इस सारे समय में बङ्गाल के हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे से मिल जुलकर आपसी भाई चारे के साथ रहते रहे. कभी कभी कोई तानाशाह बङ्गाल की गद्दी पर बैठा पर वह अपनी तानाशाही से बङ्गाल के प्रेम पूर्ण वातावरण को ज्यादा ठेस पहुँचाने में कामयाब न हो सका. ज्यादातर शासकों और आम जनता ने बङ्गाल में हिन्दू मुसलमानों के सांस्कृतिक मेल जोल में ही योग दिया. हिन्दू मुसलमानों में मजहबी कठमुल्लापन का उस जमाने में पता तक न था. समाज में और जाती व्यवहार में प्रेम, मित्रता और भाई चारे की भावना ही दिखाई देती थी.

हिन्दू मुसलमानों के सांस्कृतिक मेल जोल को बङ्गाल के जिन सुलतानों ने बढ़ावा दिया उनमें सुलतान ग़यासुद्दीन, नसीरशाह, हुसेनशाह और इनके अलावा सूबेदार परागल खां, छोटे खां आदि के नाम खास हैं. मैथिल कवि विद्यापति ने नसीरशाह की बेहद तारीफ़ की है.

नसीर शाह ने बङ्गाल पर चालीस बरस तक यानी सन् 1325 ईसवी तक राज किया. कहा जाता है कि नसीर शाह ने ही पहले पहल महाभारत का संस्कृत से बंगला में तरजुमा कराया. हुसेनशाह का जमाना (15वीं सदी) तो बंगला साहित्य का सुनहला युग था. जिस तरह इङ्गलैंड की रानी एलिज़बेथ (16वीं सदी) ने साहित्य को अपना संरक्षण दिया और स्पेन्सर, मेरली, शेक्सपीयर, और दूसरे अनेक साहित्यिकों को बढ़ावा और राज्याश्रय दिया उसी तरह बङ्गाल के चक्रवर्ती राजा हुसेनशाह ने बङ्गाल साहित्य को प्रोत्साहन देकर प्रसिद्ध बंगाली कवि मलधर बसु, बिजय गुप्त, जसोराज खां और अन्य अनेक साहित्यिकों को संरक्षण, उपहार और आश्रय दिया.

हुसेन शाह के जोर देने पर ही सन् 1480 में मलधर बसु ने भागवत् का संस्कृत से बंगला में अनुवाद किया. इस अनुवाद के पूरा हो जाने पर हुसेन शाह ने मलधर बसु को 'गुणराज खां' का खिताब दिया. प्रसिद्ध बङ्गला कवि बिजय गुप्त ने लिखा है कि हुसेनशाह ने बङ्गला साहित्य को जितना प्रोत्साहन दिया उतना किसी दूसरे राजा ने नहीं दिया. कवि जसोराज खां कहता है—"चक्रवर्ती सम्राट हुसेन शाह, जो कि पृथ्वी के आभूषण हैं, कविता की भावनाओं से खूब वाक़िफ़ हैं और वे उनकी बड़ी सुन्दर छानबीन करते हैं."

میل ملاپ کا سنگم—بنگال

ڈاکٹر لطیف دفتری ایم . اے . ڈی . فل .

قریب آٹھ صدیوں تک بنگال مسلمانی حکومتوں کے ماتحت رہا . اِس سارے سمے میں بنگال کے هندو مسلمان ایک دوسرے سے مل جلکر آپسی بھائی چارے کے ساتھ رهتے رهے . کبھی کبھی کوئی تاناشاہ بنگال کی گدی پر بیٹھا پر وہ اپنی تاناشاهی سے بنگال کے پریم پورن واتاورن کو زیادہ ٹھیس پہونچانے میں کامیاب نہ هوسکا . زیادہتر شاسکوں اور عام جنتا نے بنگال میں هندو مسلمانوں کے سانسکرتک میل جول میں هی یوگ دیا . هندو مسلمانوں میں مذهبی کٹھ ملاپن کا اُس زمانے میں پتہ تک نہ تھا . سماج میں اور ذاتی ویوهار میں پریم' مترتا اور بھائی چارے کی بھاؤنا هی دکھائی دیتی تھی .

هندو مسلمانوں کے سانسکرتک میل جول کو بنگال کے جن سلطانوں نے بڑھاوا دیا اُن میں سلطان غیاث الدین' نصیر شاہ' حسین شاہ اور اِن کے علاوہ صوبیدار پراگل خاں' چھوٹے خاں' آدی کے نام خاص هیں . میتھل کوی ودیاپتی نے نصیر شاہ کی بےحد تعریف کی هے .

نصیر شاہ نے بنگال پر چالیس برس تک یعنی سن 1325 عیسوی تک راج کیا . کہا جاتا هے کہ نصیر شاہ نے هی پہلے پہل مہابھارت کا سنسکرت سے بنگلا میں ترجمہ کرایا . حسین شاہ کا زمانہ (15 ویں صدی) تو بنگلا ساهتیہ کا سنہلا یگ تھا . جس طرح انگلینڈ کی رانی ایلیزبیتھ (16 ویں صدی) نے ساهتیہ کو اپنا سنرکشن دیا اور اسپینسر' میرلی' شیکسپیئر اور دوسرے انیک ساهتیکوں کو بڑھاوا اور راجا شرئے دیا اُسی طرح بنگال کے چکرورتی راجا حسین شاہ نے بنگلا ساهتیہ کو پروتساهن دیکر پرسدھ بنگالی کوی ملدھر بسو' بجے گپت' جسو راج خاں اور انیہ انیک ساهتیکوں کو سنرکشن' اُپہار اور آشرئے دیا .

حسین شاہ کے زور دینے پر هی سن 1480 میں ملدھر بسو نے بھاگوت کا سنسکرت سے بنگلا میں انواد کیا . اِس انواد کے پورا هو جانے پر حسین شاہ نے ملدھر بسو کو 'گنراج خاں' کا خطاب دیا . پرسدھ بنگلا کوی بجے گپت نے لکھا هے کہ حسین شاہ نے بنگلا ساهتیہ کو جتنا پروتساهن دیا اُتنا کسی دوسرے راجا نے نہیں دیا . کوی جسو راج خاں کہتا هے—"چکرورتی سمراٹ حسین شاہ' جو کہ پرتھوی کے آبھوشن هیں' کویتا کی بھاوناؤں سے خوب واقف هیں اور وے اُن کی بڑی سندر چھان بین کرتے هیں ."

सम्राट हुसेन शाह की इस मिसाल से सम्राट के दूसरे अन्य कर्मचारी और दरबारी भी बेहद प्रभावित हुए. सम्राट के सूबेदार और सेनापति परागल खां ने कवीन्द्र परमेश्वर को प्रोत्साहन देकर महाभारत का संस्कृत से बंगला में 'श्री पर्व' तक तर्जुमा करवाया. इस तरह बंगला भाषा में पहली बार जनता को महाभारत हासिल हुआ. परागल चटगाँव का सूबेदार था, जहाँ वह लगभग एक स्वाधीन शासक की हैसियत से हुकूमत करता था. परागल का योग्य पुत्र और उत्तराधिकारी छोटे खां भी अपने बाप की तरह ही उदार और सर्व धर्म समभावी था. छोटे खां ने कवीन्द्र परमेश्वर के अधूरे काम को पूरा करने के लिये श्री कर्ण नन्दी को नियुक्त किया. श्री कर्ण नन्दी ने महाभारत के अनुवाद के पहले अध्याय में खुले दिल से इन मुसलमान शासकों की भरपूर तारीफ़ की है.

स्वर्गीय दिनेशचन्द्र सेन ने, जिनकी पुस्तक बंगला भाषा और बंगला साहित्य के इतिहास पर बहुत मुस्तनद मानी जाती है, लिखा है—

"बंगला भाषा को साहित्य के दरजे तक पहुँचाने में कई असरों ने काम किया है, जिनमें निस्सन्देह एक सब से अधिक महत्वपूर्ण प्रभाव मुसलमानों का बंगाल विजय करना था. यदि हिन्दू राजाओं का अधिकार बना रहता तो बंगला भाषा को राज-दरबार तक पहुँचने का मुश्किल से ही मौक़ा मिल सकता था".❀

राजा कंस के उत्तराधिकारी ने इसलाम मत स्वीकार किया और कृत्तिवास द्वारा संस्कृत से बंगला में रामायण का अनुवाद कराने का इन्तज़ाम किया. एक दूसरे मुसलमान उमरा अलाउल ने मलिक मोहम्मद जायसी की हिन्दी पुस्तक पद्मावत का बंगला में अनुवाद किया. अलाउल ने और भी अनेक फ़ारसी किताबों का बंगला में अनुवाद किया है. दिनेशचन्द्र सेन लिखते हैं—

"इस तरह की बेहद मिसालें मिलती हैं जिनमें कि मुसलमान सम्राटों और सरदारों ने संस्कृत और फ़ारसी के ग्रन्थों का अपनी ओर से बंगला में तर्जुमा करवाया और दूसरों को इस तरह के कामों में मदद दी. जबकि बंगाल के बलवान मुसलमान बादशाहों ने देश की भाषा को अपने दरबारों में यह उच्च स्थान दिया है तो क़ुदरती तौर पर हिन्दू राजाओं ने उनका अनुसरण किया. इस तरह हिन्दू राजाओं के दरबारों में बंगाली कवियों की नियुक्ति का रिवाज मुसलमान बादशाहों की देखा देखी शुरू हुआ."*

न सिर्फ़ भाषा और सामाजिक दायरे में ही सांस्कृतिक मेल जाल की यह धारा बह रही थी बल्कि धार्मिक क्षेत्र में

سمراٹ حسین شاہ کی اِس مثال سے سمراٹ کے دوسرے انیہ کرمچاری اور درباری بھی بےحد پربھاوت ہوئے۔ سمراٹ کے صوبیدار اور سیناپتی پراگل خاں نے کویندر پرمیشور کو پروتساہن دیکر مہابھارت کا سنسکرت سے بنگلا میں 'شری پرو' تک ترجمہ کروایا۔ اِس طرح بنگلا بھاشا میں پہلی بار جنتا کو مہابھارت حاصل ہوا۔ پراگل چٹگاؤں کا صوبیدار تھا' جہاں وہ لگ بھگ ایک سوادھین شاسک کی حیثیت سے حکومت کرتا تھا. پراگل کا یوگیہ پتر اور اُترادھیکاری چھوٹے خاں بھی اپنے باپ کی طرح ھی اُدار اور سرو دھرم سمبھاوی تھا۔ چھوٹے خاں نے کویندر پرمیشور کے ادھورے کام کو پورا کرنے کے لئے شری کرشن نندی کو نیکت کیا۔ شری کرشن نندی نے مہابھارت کے انواد کے پہلے ادھیائے میں کھلے دل سے اِن مسلمان شاسکوں کی بھرپور تعریف کی ھے۔

سورگیہ دنیش چندر سین نے' جن کی پستک بنگلا بھاشا اور بنگلا ساھتیہ کے اِتہاس پر بہت مستند مانی جاتی ھے' لکھا ھے—

"بنگلا بھاشا کو ساھتیہ کے درجے تک پہونچانے میں کئی اثروں نے کام کیا ھے' جن میں نسندیہہ ایک سب سے ادھک مہتوپورن پربھاؤ مسلمانوں کا بنگال وجئے کرنا تھا۔ یدی ھندو راجاؤں کا ادھیکار بنا رھتا تو بنگلا بھاشا کو راج دربار تک پہونچنے کا مشکل سے ھی موقع مل سکتا تھا۔"❀

راجا کنس کے اُترادھیکاری نے اِسلام مت سویکار کیا اور کرتیواس دوارا سنسکرت سے بنگلا میں راماین کا انواد کرانے کا اِنتظام کیا۔ ایک دوسرے مسلمان اُمرا علاول نے ملک محمد جائسی کی ھندی پستک پدماوت کا بنگلا میں انواد کیا۔ علاول نے اور بھی انیک فارسی کتابوں کا بنگلا میں انوواد کیا ھے۔ دنیش چندر سین لکھتے ھیں—

"اِس طرح کی بےحد مثالیں ملتی ھیں جن میں کہ مسلمان سمراٹوں اور سرداروں نے سنسکرت اور فارسی کے گرنتھوں کا اپنی اُور سے بنگلا میں ترجمہ کروایا اور دوسروں کو اِس طرح کے کاموں میں مدد دی۔ جب کہ بنگال کے بلوان مسلمان بادشاھوں نے دیش کی بھاشا کو اپنے درباروں میں یہ اُوچ استھان دیا ھے تو قدرتی طور پر ھندو راجاؤں نے اُن کا انوسرن کیا۔ اِس طرح ھندو راجاؤں کے درباروں میں بنگالی کویوں کی نیوکتی کا رواج مسلمان بادشاھوں کی دیکھا دیکھی شروع ھوا۔"*

نہ صرف بھاشا اور سماجک دایرے میں ھی سانسکرتک میل جول کی یہ دھارا بہہ رھی تھی بلکہ دھارمک چھیتر میں

❀ History of Bengali Language and Literature p. 10.
* Ibid pp. 13, 14.

हिन्दू और मुसलमान दोनों एक दूसरे के बेहद नजदीक आ रहे थे. वैष्णव धर्म के इतिहास में मुसलमान वैष्णव सन्तों की मिसालें बेहद भरी पड़ी हैं. बारहवीं सदी के बंगाल में हिन्दुओं का मुसलमानों की दरगाहों में मिठाई चढ़ाना, क़ुरान पढ़ना और मुसलमानों के त्योहार मनाना और इसी तरह मुसलमानों का हिन्दुओं के धार्मिक रिवाजों की ओर अमली आदर दिखलाना एक आम बात थी. इसी मेल जोल में से बंगाल के अन्दर एक नये देवता की पूजा शुरू हुई जिसे 'सत्य पीर' कहते थे. हिन्दू और मुसलमान दोनों सत्यपीर की पूजा करते थे. कहा जाता है कि सम्राट हुसैन शाह इस नए पन्थ का संस्थापक था.

पन्द्रहवीं सदी के आखीर में बङ्गाल में महाप्रभु चैतन्य का जन्म हुआ. चैतन्य के जन्म से पहले की हालत बयान करते हुये दिनेशचन्द्र सेन लिखते हैं—

"ब्राह्मणों का प्रभुत्व बहुत तकलीफ़देह हो गया था. जाति भेद ने शिकंजे की तरह समाज की गर्दन को जकड़ रक्खा था.······नीची जातियों के लोग ऊँची जातियों के लोगों के जुल्मों के नीचे आहें भर रहे थे. इन ऊँची जाति के लोगों ने नीची जाति वालों के लिये विद्या के दरवाजे बन्द कर रक्खे थे. इन लोगों के लिये अधिक ऊँचे जीवन में प्रवेश करने की मनाही थी और नये पौराणिक धर्म पर इस तरह ब्राह्मणों का ठेका हो गया था मानो वह कोई बाजारू चीज हो."†

महाप्रभु चैतन्य ने इस हालत पर गम्भीरता से विचार किया. घर बार छोड़कर वे देशाटन के लिये निकले. अनेक साधुओं और फ़क़ीरों के साथ उनकी ज्ञान चर्चा हुई. चैतन्य के जीवन चरित्र का रचयिता कृष्णदास लिखता है कि वृन्दावन में चैतन्यने कई महीने एक मुसलमान फ़क़ीर के साथ धर्म चर्चा की. जदु भट्टाचार्य लिखता है—

"चैतन्य के जीवन की अनेक घटनायें ऐसी हैं जिनसे यह बात पूरी तरह साफ़ हो जाती है कि चैतन्य को मुसलमानों से बेहद प्रेम था."*

चैतन्य ने गुरु की सेवा और भक्ति का उपदेश दिया. जातिभेद की जबर्दस्त मुखालफ़त की. ब्राह्मणों के कर्म काण्डों को त्याज्य बताया. चैतन्य के शिष्यों में हिन्दू और मुसलमान, ऊँची जाति और नीची जाति के लोग, सभी शामिल थे. चैतन्य अपने सभी शिष्यों में हरिदास को सबसे अधिक प्यार करते थे. हरिदास पहले एक मुसलमान फ़क़ीर थे, बाद में वैष्णव साधु हो गये. चैतन्य 'चरितामृत' में बिजुली ख़ाँ और दूसरे पठानों के वैष्णव धर्म क़ुबूल करने का भी जिक्र है. मुसलमान शासक चैतन्य को ईश्वर का अवतार समझते

هندو اور مسلمان دونوں ایک دوسرے کے بےحد نزدیک آرھے تھے ۔ ویشنو دھرم کے اِتہاس میں مسلمان ویشنوسنتوں کی مثالیں بےحد بھری پڑی ھیں ۔ بارھویں صدی کے بنگال میں ھندؤں کا مسلمانوں کی درگاھوں میں مٹھائی چڑھانا' قرآن پڑھنا اور مسلمانوں کے تیوھار منانا اور اِسی طرح مسلمانوں کا ھندؤں کے دھارمک رواجوں کی اور عملی آدر دکھلانا ایک عام بات تھی ۔ اِسی میل جول میں سے بنگال کے اندر ایک نئے دیوتا کی پوجا شروع ھوئی جسے 'ستیہ پیر' کہتے تھے ۔ ھندو اور مسلمان دونوں ستیہ پیر کی پوجا کرتے تھے ۔ کہا جاتا ھے کہ سمراٹ حسین شاہ اِس نئے پنتھ کا سنستھاپک تھا ۔

پندرھویں صدی کے آخیر میں بنگال میں مہا پربھو چیتنیہ کا جنم ھوا ۔ چیتنیہ کے جنم سے پہلے کی حالت بیان کرتے ھوئے دنیش چندر سین لکھتے ھیں—

"براھمنوں کا پربھوتو بہت تکلیف دہ ھو گیا تھا ۔ جاتی بھید نے شکنجے کی طرح سماج کی گردن کو جکڑ رکھا تھا... نیچی جاتیوں کے لوگ اونچی جاتیوں کے لوگوں کے ظلموں کے نیچے آھیں بھر رھے تھے ۔ اِن اونچی جاتی کے لوگوں نے نیچی جاتی والوں کے لئے ودیا کے دروازے بند کر رکھے تھے ۔ اِن لوگوں کے لئے ادھک اونچے جیون میں پرویش کرنے کی مناھی تھی اور نئے پورانک دھرم پر اِس طرح براھمنوں کا ٹھیکہ ھو گیا تھا مانو وہ کوئی بازارو چیز ھو ۔" †

مہا پربھو چیتنیہ نے اِس حالت پر گمبھیرتا سے وچار کیا ۔ گھر بار چھوڑ کر وے دیشاٹن کے لئے نکلے ۔ انیک سادھؤں اور فقیروں کے ساتھ اُن کی گیان چرچا ھوئی ۔ چیتنیہ کے جیون چرتر کا رچئیتا کرشن داس لکھتا ھے کہ بندراون میں چیتنیہ نے کئی مہینے ایک مسلمان فقیر کے ساتھ دھرم چرچا کی ۔ جدو بھٹاچاریہ لکھتا ھے—

"چیتنیہ کے جیون کی انیک گھٹنائیں ایسی ھیں جن سے یہ بات پوری طرح صاف ھو جاتی ھے کہ چیتنیہ کو مسلمانوں سے بے حد پریم تھا ۔"*

چیتنیہ نے گرو کی سیوا اور بھکتی کا اُپدیش دیا ۔ جاتی بھید کی زبردست مخالفت کی ۔ براھمنوں کے کرم کانڈوں کو تیاجیہ بتایا ۔ چیتنیہ کے ششیوں میں ھندو اور مسلمان' اونچی جاتی اور نیچی جاتی کے لوگ' سبھی شامل تھے ۔ چیتنیہ اپنے سبھی ششیوں میں ھریداس کو سب سے ادھک پیار کرتے تھے ۔ ھریداس، پہلے ایک مسلمان فقیر تھے' بعد میں ویشنو سادھو ھوگئے ۔ 'چیتنیہ چرتا مرت' میں بجولی خاں اور دوسرے پٹھانوں کے ویشنو دھرم قبول کرنے کا ذکر بھی ھے ۔ مسلمان شاسک چیتنیہ کو ایشور کا اوتار سمجھتے

† Ibid.

*Hindu Castes and Sects, by Jadu Bhattacharya, p. 464.

थे. मध्य खण्ड में एक क़ाज़ी का हाल दिया हुआ है जो चैतन्य को 'ईश्वर' कहकर पुकारता था.

चैतन्य के सम्प्रदाय की एक शाखा का नाम 'कर्त्ताभज' था. उसके संस्थापक कर्त्ता बाबा को एक मुसलमान फ़क़ीर ने ही पाला था. इस सम्प्रदाय के आचार्यों में कई हिन्दू और कई मुसलमान हुये हैं. ये लोग केवल एक ईश्वर की उपासना करते थे, दिन में पाँच बार गुरुमन्त्र जपते थे, मांस मदिरा से परहेज़ करते थे, शुक्रवार को पवित्र दिन मानते थे और जात-पाँत, हिन्दू-मुसलमान-ईसाई और ऊंच-नीच में कोई भेद न करते थे.

बंगाल के समकालीन बौद्ध ग्रन्थों—'शून्य पुराण,' 'धर्म पूजा पद्धति,' 'धर्म गजन' और 'बाद जननी' वग़ैरह में और बौद्ध गीतों में ब्राह्मणों की तरफ़ ग़ुस्सा और बदले की भावना और मुसलमानों के प्रति मोहब्बत के भाव भरे हुये हैं. इन बौद्ध ग्रन्थों से पता चलता है कि उस समय के बंगाली मुसलमान माँस से परहेज़ करते थे. एक जगह लिखा है—

"खोंकड़ मग़रिब की तरफ़ मुँह किये ख़ुदा से दुआ माँगता है.

"कोई अल्लाह की पूजा करता है, कोई अली की और कोई ममूँद साईं की.

"मियाँ किसी जीव की हत्या नहीं करता और न मुरदार खाता है. धीमी आँच के ऊपर वह अपना भोजन पकाता है.

"जात पाँत के भेद अब धीरे धीरे टूट जाँयगे क्योंकि देखो हिन्दू कुटुम्ब के अन्दर एक मुसलमान है."

मुसलमान जो पहले कट्टरता के साथ एक ख़ुदा की इबादत करते थे धीरे धीरे हिन्दुओं के धार्मिक असर में आकर काली, शीतला, सरस्वती, शिव, विष्णु आदि अनेक देवी-देवताओं की उपासना करने लगे.

मशहूर विजेता शमसेर ग़ाज़ी के बारे में कहा जाता है कि एक मर्त्तबा उसे सपने में भगवती काली ने दर्शन दिया और कहा—"देखो ! टिपरा राज वाले मेरी पूजा इबादत करते हैं. यदि तुम भी मेरी उपासना करोगे और मुझ पर बलि चढ़ाओगे तो उसके एवज़ में मैं तुम्हें वर दूँगी कि तुम आसानी के साथ जंग में फ़तहयाबी हासिल करो." दूसरी बार फिर देवी ने शमसेर को दर्शन देकर अपनी वही माँग दुहराई. इस पर ग़ाज़ी ने डरते डरते देवी से कहा—"आप हिन्दुओं की देवी हैं और मैं मुसलमान हूँ, तब आप कैसे मेरी पूजा क़ुबूल करेंगी ?" देवी ने उसे ब्राह्मण द्वारा पूजा करने के लिये राज़ी किया और परिणाम स्वरूप वह अपने सभी युद्धों में विजयी हुआ.

تھے . مدھیہ کھنڈ میں ایک قاضی کا حال دیا ہوا ہے جو چیتنیہ کو 'ایشور' کہہ کر پکارتا تھا .

چیتنیہ کے سمپردائے کی ایک شاکھا کا نام 'کرتابھج' تھا . اُس کے سنستھاپک کرتا با با کو ایک مسلمان فقیر نے ہی پالا تھا . اِس سمپردائے کے آچاریوں میں کئی ہندو اور مسلمان ہوئے ہیں . یہ لوگ کیول ایک ایشور کی اُپاسنا کرتے تھے' دن میں پانچ بار گرومنتر جپتے تھے' مانس-مدیرا سے پرہیز کرتے تھے' شکروار کو پوتر دن مانتے تھے اور جات-پانت' ہندو-مسلمان عیسائی اور اُونچ نیچ میں کوئی بھید نہ کرتے تھے .

بنگال کے سمکالین بودھ گرنتھوں—'شونیہ پران' 'دھرم پوجا پدھتی' 'دھرم گجن' اور 'باد جننی' وغیرہ میں اور بودھ گیتوں میں براہمنوں کی طرف غصہ اور بدلے کی بھاؤنا اور مسلمانوں کے پرتی محبت کے بھاؤ بھرے ہوئے ہیں . اِن بودھ گرنتھوں سے پتہ چلتا ہے کہ اُس سمئے کے بنگالی مسلمان مانس سے پرہیز کرتے تھے . ایک جگہہ لکھا ہے—

"کھونکڑ مغرب کی طرف منھ کئے خدا سے دعا مانگتا ہے .

"کوئی اللہ کی پوجا کرتا ہے' کوئی علی کی اور کوئی ممونْد سائیں کی .

"میاں کسی جیو کی ہتیا نہیں کرتا اور نہ مردار کھاتا ہے . دھیمی آنچ کے اُوپر وہ اپنا بھوجن پکاتا ہے .

جات پانت کے بھید اب دھیرے دھیرے ٹوٹ جائینگے کیونکہ دیکھو ہندو کٹمب کے اندر ایک مسلمان ہے ."

مسلمان جو پہلے کٹرتا کے ساتھ ایک خدا کی عبادت کرتے تھے دھیرے دھیرے ہندؤں کے دھارمک اثر میں آکر کالی' شیتلا' سرسوتی' شو' وشنو آدی انیک دیوتاؤں کی اُپاسنا کرنے لگے .

مشہور وجیتا شمسیر غازی کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ ایک مرتبہ اُسے سپنے میں بھگوتی کالی نے درشن دیا اور کہا—"دیکھو ! ٹپرا راج والے میری پوجا عبادت کرتے ہیں . یدی تم بھی میری اُپاسنا کرو گے اور مجھپر بلی چڑھاؤ گے تو اُس کے عیوض میں میں تمھیں ور دونگی کہ تم آسانی کے ساتھ جنگ میں فتحیابی حاصل کرو ." دوسری بار پھر دیوی نے شمسیر کو درشن دیکر اپنی وہی مانگ دوہرائی . اِس پر غازی نے ڈرتے ڈرتے دیوی سے کہا—"آپ ہندؤں کی دیوی ہیں اور میں مسلمان ہوں' تب آپ کیسے میری پوجا قبول کرینگی ؟" دیوی نے اُسے براہمن دوارا پوجا کرنے کے لئے راضی کیا اور پریڻام سروپ وہ اپنے سبھی یدھوں میں وجئی ہوا .

'इमाम यातार पन्थी' नामक एक समकालीन बंगला ग्रन्थ के मुसलमान लेखक ने अपनी पुस्तक सरस्वती देवी की प्रार्थना से शुरू की है. एक दूसरा लेखक करीमुल्ला अपने ग्रन्थ 'यावनी बशाल' में देवादि देव शिव की स्तुति करता है. 'जमील दिलाराम' नामक पुस्तक का कवि आफ़्ता-बुद्दीन अपने नायक से सप्तर्षियों की पूजा कराता है. एक दूसरे लेखक हमीदुल्ला की पुस्तक 'भेलुआ सुन्दरी' में ब्राह्मण लोग क़ुरान की मदद से शुभ मुहूर्त निकालते हैं. 'पद्मों' का रचयिता प्रसिद्ध कवि करम अली अपनी अनेक कविताओं को राधा और कृष्ण को भेंट करता है. मुसलमानों का एक फ़िर्क़ा लक्ष्मी की उपासना के गीत गा गाकर ही अपना पेट पालता था. ये लोग अब तक यही करते हैं.

ये कुछ मिसालें हैं जिनसे उस ज़माने के बंगाल के हिन्दू मुसलमानों के सांस्कृतिक मेल जोल के जीवन पर थोड़ी सी रोशनी पड़ती है.

'اِملم یاتار پنتھی' نامک ایک سمکالین بنگلا گرنتھ کے مسلمان لیکھک نے اپنی پستک سرسوتی دیوی کی پراتھنا سے شروع کی ہے . ایک دوسرا لیکھک کریم اللہ اپنے گرنتھ 'یا ونی وشال' میں دیوادی دیوشو کی استوتی کرتا ہے. 'جمیل دلا رام' نامک پستک کا کوی افتاب الدین اپنے نایک سے سپت رشیوں کی پوجا کراتا ہے. ایک دوسرے لیکھک حمید اللہ کی پستک 'بھیلوآسندری' میں براہمن لوگ قران کی مدد سے شبھ مہورت نکالتے ہیں . 'پدوں' کا رچئیتا پرسدھ کوی کرم علی اپنے انیک کویتاؤں کو رادھا اور کرشن کو بھینٹ کرتا ہے . مسلمانوں کا ایک فرقہ لکشمی کی اُپاسنا کے گیت گا گا کر ھی اپنا پیٹ پالتا تھا . یہ لوگ اب تک یہی کرتے ہیں .

یہ کچھ مثالیں ہیں جن سے اُس زمانے کے بنگال کے ہندو مسلمانوں کے سانسکرت میل جول کے جیون پر تھوڑی سی روشنی پڑتی ہے .

रामनाम धन जा को !

साधु टी. एल. वस्वानी

[एकांकी नाटक]

पात्र:

गुरु नानक (गुरू बनने से पहले)
कालू—गुरु नानक के पिता
ग़रीब—कालू का नौकर
ख़रीदार—ग़रीब, अपाहिज, फ़क़ीर आदि

दृश्य पहला

स्थान—कालू के घर का एक कमरा

[कालू और ग़रीब दोनों आपस में बातें कर रहे हैं. बातें करते करते कालू गुरू नानक को आवाज़ देता है. नानक धीमे पाँव रखते हुये कमरे में दाख़िल होते हैं. उनकी आँखें जगमग हो रही हैं, मानो वे दिल की गहराई में कोई रौशन नज़ारा देख रहे हैं. कालू चिन्तित और कुछ ग़ुस्से में भरा हुआ दिखाई देता है.]

कालू—नानक ! तेरे तरीक़ों से मैं बेहद परेशान होगया हूँ ! मेरी समझ में नहीं आता कि मैं तेरा क्या करूँ !

رام نام دھن جا کو!

سادھو ٹی . ایل . وسوانی

[ایکانکی ناٹک]

پاتر :

گرونانک (گرو بننے سے پہلے
کالو—گرونانک کے پتا
غریب—کالو کا نوکر
خریدار—غریب' اپاہج' فقیر آدی

درشیہ پہلا

استھان—کالو کے گھر کا ایک کمرہ

[کالو اور غریب دونوں آپس میں باتیں کر رہے ہیں . باتیں کرتے کرتے کالو گرونانک کو آواز دیتا ہے . نانک دھیمے پاؤں رکھتے ہوئے کمرے میں داخل ہوتے ہیں . اُن کی آنکھیں جگمگ ہو رہی ہیں' مانو وے دل کی گہرائی میں کوئی روشن نظارہ دیکھ رہے ہیں . کالو چنتت اور کچھ غصے میں بھرا ہوا دکھائی دیتا ہے .]

کالو—نانک ! تیرے طریقوں سے میں بےحد پریشان ہوگیا ہوں ! میری سمجھ میں نہیں آتا کہ میں تیرا کیا کروں !

नानक—(गाने लगते हैं)—

साधो यह तन मिथ्या जानो !
या भीतर जो राम बसत है, साँचो ताहि पिछानो ॥
यह जग है सम्पति सुपने की, देख कहा ऐड़ानो ।
संग तिहारे कछू न चाले, ताहि कहा लपटानो ॥
अस्तुति निंदा दोऊ परिहरि, हरि-कीरति उर आनो ।
जन 'नानक' सब ही में पूरन, एक पुरुष भगवानो ॥

कालू—(ग़रीब से)—नानक को तलवण्डी ले जाओ ! वहाँ इसके लिये एक आटे की दूकान खोल देना; यह पैसा लो (रुपये की थैली देता है) और इसे खुश रखना, और यह देखते रहना कि इसका रोजगार ठीक से चल रहा है.

ग़रीब—हाँ सरकार !

[ग़रीब नानक को ले जाता है. नानक उसके साथ भजन गाते हुये जाते हैं.]

दृश्य दूसरा

स्थान—आटे की दूकान

[नानक दूकान में बैठे हुये हैं. एक ग़रीब और अपाहिज आदमी वहाँ से गुजरता है. नानक तराजू में आटा तोलते हुये उसे बुलाते हैं.]

नानक—क्यों भाई ! तुम तो बहुत बूढ़े, ग़रीब और भूखे मालूम होते हो ? लो यह आटा लो (तराजू उसकी तरफ़ बढ़ाते हैं), इसकी तुम्हें कोई क़ीमत न देनी पड़ेगी ! लो इसे लो और अल्लाह के गुन गाओ !

(फिर एक दूसरे फ़क़ीर को बुलाकर)—

लो भाई यह आटा तुम्हारे लिये है ! यह मेरी मोहब्बत की सौगात क़ुबूल करो फ़क़ीर ! और लोगों को अल्लाह की नियामतों की बात बताओ !

(फिर एक बूढ़ी भिखमंगन को गोद में बच्चा लिये हुए देखकर)—

लो मेरी माँ ! यह आटा तुम्हारे और तुम्हारे इस देवता जैसे सुकुमार छौने के लिये है ! जाओ उसी ईश्वर की महिमा का बखान करो !

(फिर एक ग़रीब मुसलमान को देखकर)—

भाई ! तेरे अन्दर भी उसी अल्लाह का ज़हूर है ! उस अल्लाह का जो सब के अन्दर है और सब जिसके अन्दर हैं !

हिन्दू जपते राम नाम, मुसलमान खुदाय,
इक्को राम रहीम है, मन में देखो लाय ।

ऐ मेरे भाई, इस आटे से अपनी झोली भरलो, अपना मुँह उस परवरदिगार की तरफ़ उठाओ; और उसी के पाक नाम का सुमिरन करो !

نانک—(گانے لگتے ھیں)—

سادھو یہ تن متھیا جانو !
یا بھیتر جو رام بست ھے' سانچو تاھی پچھانو ۔
یہ جگ ھے سمپتی سپنے کی' دیکھ کہا ایڑانو ۔
سنگ تہارے کچھو نہ چالے' تاھی کہا لپٹانو ۔
استوتی نندا دوؤ پرھری' ھری کیرتی اُر آنو ۔
جن 'نانک' سب ھی میں پورن' ایک پرش بھگوانو ۔

کالو—(غریب سے)—نانک کو تلونڈی لے جاؤ ! وھاں اِس کے لئے ایک آٹے کی دوکان کھول دینا؛ یہ پیسہ لو (روپئے کی تھیلی دیتا ھے) اور اسے خوش رکھنا' اور یہ دیکھتے رھنا کہ اِس کا روزگار ٹھیک سے چل رھا ھے ۔

غریب—ھاں سرکار !

[غریب نانک کو لے جاتا ھے ۔ نانک اُس کے ساتھ بھجن گاتے ھوئے جاتے ھیں ۔]

درشیہ دوسرا

استھان—آٹے کی دوکان ۔

[نانک دوکان میں بیٹھے ھوئے ھیں ۔ ایک غریب اور اپاھج آدمی وھاں سے گذرتا ھے ۔ نانک ترازو میں آٹا تولتے ھوئے اُسے بلاتے ھیں ۔]

نانک—کیوں بھائی ! تم تو بہت بوڑھے' غریب اور بھوکے معلوم ھوتے ھو ؟ لو یہ آٹا لو (ترازو اُس کی طرف بڑھاتے ھیں)' اس کی تمھیں کوئی قیمت نہ دینی پڑیگی ! لو اسے لو اور اللہ کے گن گاؤ !

(پھر ایک دوسرے فقیر کو بلاکر)—

لو بھائی یہ آٹا تمھارے لئے ھے ! یہ میری محبت کی سوغات قبول کرو فقیر ! اور لوگوں کو اللہ کی نعمتوں کی بات بتاؤ !

(پھر ایک بوڑھی بھکمنگن کو گود میں بچہ لئے ھوئے دیکھکر)—

لو میری ماں ! یہ آٹا تمھارے اور تمھارے اِس دیوتا جیسے سوکمار چھونے کے لئے ھے ! جاؤ اُسی ایشور کی مہما کا بکھان کرو !

(پھر ایک غریب مسلمان کو دیکھکر)—

بھائی ! تیرے اندر بھی اُسی اللہ کا ظہور ھے ! اُس اللہ کا جو سب کے اندر ھے اور سب جس کے اندر ھیں !

ھندو جپتے رام نام' مسلمان خدائے'
اِکو رام رحیم ھے' من میں دیکھو لائے ۔

اے میرے بھائی' اِس آٹے سے اپنی جھولی بھر لو' اپنا منھ اُس پروردگار کی طرف اٹھاؤ؛ اور اُسی کے پاک نام کا سمرن کرو !

(ग़रीब लौटकर जब दूकान पर आता है तो वहाँ भीड़ को खड़ा पाता है और नानक से कहता है)—

ग़रीब—तुम्हारी दूकान पर तो ख़रीदारों की भीड़ है. आज तो तुमने काफ़ी कमाया होगा. तुम्हारे बाप यह जान कर बहुत ख़ुश होंगे.

नानक—मैं जानता हूँ मेरा वह पिता बहुत ख़ुश होगा; पिता ! जिसने मुझे यहाँ भेजा है !

ग़रीब—अब तक तुमने कितना कमाया ?

नानक—इतना कि जिसे मैं बयान नहीं कर सकता !

ग़रीब—कितना ? लाओ देखूँ तुम्हारा सन्दूक़ ?

(सन्दूक़ खोलकर देखता है तो उसे छूछा पाता है)

हैं ! रुपये कहां हैं ?

नानक—मेरा ख़ज़ाना इन आँखों से नहीं दिखाई देता !

ग़रीब—नानक, भइया ! बता दो रुपये कहाँ हैं, नहीं तो मैं तुम्हारे बाप से जाकर शिकायत करूँगा.

नानक—त्याग के बने मेरे रुपये हैं ! अपरिग्रह मेरी दौलत है ! तर्के दुनिया ही ज़िन्दगी की सब से बड़ी कमाई है ! और राम नाम ही सच्चा लेन देन है !

(वह फिर आटा तोल तोल कर ग़रीबों को मुफ़्त देते हुये गाते हैं)—

जो नर दुख में दुख नहिं माने.

सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जाने.
नहिं निन्दा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना,
हर्ष सोक तें रहै नियारो, नाहिं मान अभिमाना.
आसा मनसा सकल त्यागि के, जग तें रहे निरासा,
काम क्रोध जेहि परसें नाहिंन, तेहि घट ब्रह्म निवासा.
गुरु-किरपा जेहि नर पै कीन्हीं, तिन यह जुगति पिछानी,
नानक लीन भयो गोबिन्द सों, ज्यों पानी संग पानी.

ग़रीब--(बहुत दुखी होकर), नानक, तुम तो बिलकुल पागल हो गये हो !

नानक—धन्य हैं ऐसे पागल ! और नियामत है यह पागल पन ! क्योंकि ये पागल असहायों और दुखियों में, उस सारी दुनिया के शहन्शाह को देखते हैं जो नाना रूप और नाना भेदों में पृथ्वी में व्याप्त है ! धन्य हैं, धन्य हैं ऐसे पागल ! वे दौलत ग़रीबों में बाँट देते हैं और उसके नाम की महिमा का बखान करते हैं !

दृश्य तीसरा

[नानक गाते हैं और आटा बाँटते हैं और गाते हैं. दूसरे दिन दूकान बन्द हो जाती है, आटा बचा ही नहीं जिसे ग़रीबों में बाँटा जाता. ग़रीब कालू के पास जाकर "पागल" नानक की शिकायत करता है और कालू बेहद लाल पीला हुआ आता है.]

(غریب لوٹ کر جب دوکان پر آتا ہے تو وہاں بھیڑ کو کھڑا پاتا ہے اور نانک سے کہتا ہے)—

غریب—تمہاری دوکان پر تو خریداروں کی بھیڑ ہے. آج تو تم نے کافی کمایا ہوگا. تمہارے باپ یہ جان کر بہت خوش ہونگے.

نانک— میں جانتا ہوں میرا وہ پتا بہت خوش ہوگا! پتا! جس نے مجھے یہاں بھیجا ہے!

غریب—اب تک تم نے کتنا کمایا؟

نانک—اتنا کہ جسے میں بیان نہیں کر سکتا!

غریب—کتنا؟ لاؤ دیکھوں تمہارا صندوق؟

(صندوق کھولکر دیکھتا ہے تو اُسے چھوچھا پاتا ہے)

ہیں! روپئے کہاں گئے؟

نانک—میرا خزانہ اِن آنکھوں سے نہیں دکھائی دیتا!

غریب—نانک، بھیا! بتا دو روپئے کہاں ہیں، نہیں تو میں تمہارے باپ سے جا کر شکایت کرونگا.

نانک—تیاگ کے بنے میرے روپئے ہیں! اپریگرہ میری دولت ہے! ترک دنیا ہی زندگی کی سب سے بڑی کمائی ہے! اور رام نام ہی سچا لین دین ہے!

(وہ پھر آٹا تول تول کر غریبوں کو مفت دیتے ہوئے گاتے ہیں)—

جو نر دکھ میں دکھ نہیں مانے.

سکھ سنیہہ ارو بھئے نہیں جاکے، کنچن ماٹی جانے.
نہیں نندا نہیں استوتی جاکے، لوبھ موہ ابھیما نا،
ہرش سوک تیں رہے نیارو، ناہیں مان ابھیمانا.
آسا منسا سکل تیاگ کے، جگ تیں رہے نراسا،
کام کرودھ جیہی پرسیں ناہن، تیہی گھٹ برہم نواسا.
گرو کرپا جیہی نر پے کینھی، تن یہ جوگت پچھانی،
نانک لین بھیو گووند سوں، جیوں پانی سنگ پانی.

غریب—(بہت دکھی ہو کر)، نانک، تم تو بالکل پاگل ہو گئے ہو!

نانک—دھنیہ ہیں ایسے پاگل! اور نعمت ہے یہ پاگل پن! کیونکہ یہ پاگل اسہایوں اور دکھیوں میں، اُس ساری دنیا کے شہنشاہ کو دیکھتے ہیں جو نا نا روپ اور نا نا بھیدوں میں پرتھوی میں ویاپت ہے! دھنیہ ہیں، دھنیہ ہیں ایسے پاگل! وے دولت غریبوں میں بانٹ دیتے ہیں اور اُس کے نام کی مہما کا بکھان کرتے ہیں!

درشیہ تیسرا

[نانک گاتے ہیں اور آٹا بانٹتے ہیں اور گاتے ہیں. دوسرے دن دوکان بند ہوجاتی ہے، آٹا بچا ہی نہیں جسے غریبوں میں بانٹا جاتا. غریب کالو کے پاس جاکر "پاگل" نانک کی شکایت کرتا ہے اور کالو بے حد لال پیلا ہوا آتا ہے.]

कालू—तुमने मेरी जिन्दगी तल्ख़ कर दी नानक ! तुमने अपने ख़ान्दान का नाम डुबा दिया नानक ! तुमने नवाब की नौकरी से इनकार किया, मैंने तुम्हें यह दूकान कर दी. लेकिन तुमने दे देकर दूकान का भी सफ़ाया कर दिया !

नानक—पिता जी ! अपने इस अज्ञान बेटे पर ख़फ़ा न होइये ! यह देना ही सब से बड़ा पाना है पिता जी ! क्योंकि चीथड़ों में लिपटे हुये इन दुखियों के वेश में ही वह सारे जगत का राजा आता है !

कालू—लेकिन तुमने तो मेरी सारी दौलत लुटा दी !

नानक—मैंने यह सब उसी परम पिता के नाम पर किया जिसने मुझे यहाँ भेजा है.

कालू—मैंने तुम्हें कमाने के लिये भेजा था, लुटाने के लिये नहीं !

नानक—मुहब्बत की राह में कोई चीज़ नहीं लुटती पिता जी ! वह दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती है. सच्चाई के महल में इसका लेखा जोखा होकर भण्डार लगता जाता है.

कालू—पागलचन्द ! तुम मुझे अमीर से ग़रीब कर दोगे !

नानक—धन्य हैं वे ग़रीब, क्योंकि उनके पास रामनाम की अथाह दौलत है !

कालू—क्यों बकवास करते हो. तुम्हें कोई नहीं समझा बुझा सकता. चलो वापस. व्यापार रोज़गार तुम्हारे बस का नहीं है !

नानक—पिता जी ! राम नाम ही मेरा व्यापार है ! दुखियों से ही मेरा लेन देन है ! उन्हीं के हृदय के भीतर जो सतमंज़ला महल है वहीं ईश्वर वास करता है और जब उसकी मेहर होती है तो वह हमारे दिलों की गाँठ खोलकर हमें त्याग में जो रहस्यमय सत्य छिपा हुआ है उसके दर्शन कराता है !

کالو— تم نے میری زندگی تلخ کردی نانک ! تم نے اپنے خاندان کا نام ڈبو دیا نانک ! تم نے نواب کی نوکری سے اِنکار کیا، میں نے تمھیں یہ دوکان کردی، لیکن تم نے دے دیکر دوکان کا بھی صفایا کر دیا !

نانک— پتاجی ! اپنے اِس اگیان بیٹے پر خفا نہ ہوئیے ! یہ دینا ہی سب سے بڑا پانا ہے پتاجی ! کیونکہ چیتھڑوں میں لپٹے ہوئے اِن دکھیوں کے ویش میں ہی وہ سارے جگت کا راجا آتا ہے !

کالو— لیکن تم نے میری ساری دولت لٹادی !

نانک— میں نے یہ سب اُسی پرم پتا کے نام پر کیا جس نے مجھے یہاں بھیجا ہے .

کالو— میں نے تمھیں کمانے کے لئے بھیجا تھا، لٹانے کے لئے نہیں !

نانک— محبت کی راہ میں کوئی چیز نہیں لٹتی پتاجی ! وہ دن دونی رات چوگنی بڑھتی ہے . سچائی کے محل میں اِس کا لیکھا جوکھا ہو کر بھنڈار لگتا جاتا ہے .

کالو— پاگل چند ! تم مجھے امیر سے غریب کر دو گے !

نانک— دھنیہ ہیں وے غریب، کیونکہ اُن کے پاس رام نام کی اتھاہ دولت ہے !

کالو— کیوں بکواس کرتے ہو . تمھیں کوئی نہیں سمجھا بجھا سکتا . چلو واپس . ویاپار روزگار تمھارے بس کا نہیں ہے !

نانک— پتاجی ! رام نام ہی میرا ویاپار ہے ! دکھیوں سے ہی میرا لین دین ہے . اُنھیں کے ہردے کے بھیتر جو ست منزلہ محل ہے وہیں ایشور واس کرتا ہے اور جب اس کی مہر ہوتی ہے تو وہ ہمارے دلوں کی گانٹھ کھولکر ہمیں تیاگ میں جو رہسیہ مئے ستیہ چھپا ہوا ہے اُس کے درشن کراتا ہے !

स्वतंत्रता की यात्रा की तीसरी पीढ़ी

(1885 से 1920)

श्री मगन भाई देसाई

सन् 1885, इण्डियन नैशनल कांग्रेस की स्थापना का वर्ष था. यहाँ तक पहुँचते पहुँचते भारत की स्वतंत्रता की यात्रा की दो पीढ़ियाँ पूरी हुईं और तीसरी नयी पीढ़ी शुरू हुई जैसा कह सकते हैं.

दूसरी पीढ़ी के बुजुर्गों ने मिलकर इस संस्था की स्थापना की. उस समय उन लोगों को इस बात का ख्याल तक न होगा कि यह संस्था आगे चलकर भारत को स्वतन्त्र करने में कामयाब साबित होगी. क़ौम, जाति, धर्म, भाषा इत्यादि किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना सब हिन्दुस्तानी और हिंद-हित-चिंतक अन्य देशवासी—ख़ास तौर पर अंग्रेज भी—उसमें शामिल हो सकते थे. इस प्रकार की स्थापना करने वाले उस समय के नेता वर्ग ने इसके जरिये नया हिन्द कैसा होगा इसकी एक मोटी रूप-रेखा पेश की, इस नई संस्था का यह विचार उसका एक मुस्तक़िल अंश रहा है.

शुरू के 20 सालों में—1885 से 1905 तक—इस संस्था का जो कार्य हुआ, उसके मुद्दों पर और उसके फ़ैसलों पर ग़ौर करें तो उसमें से बहुत दिलचस्प सामग्री हासिल हो सकती है. इस बारे में एक ख़ास ध्यान में लेने जैसी बात यह है कि काम काज की नीति रीति और उद्देश्यों के बारे में उन बीस साल के अन्दर कोई ख़ास अलग दृष्टि या पक्ष साफ़ नहीं हुये थे. जिस सामान्य नीति और उद्देश्य को लेकर दूसरी पीढ़ी चली थी, आमतौर पर उसी को मंज़ूर करके काम चलाया गया. देश के भावी मक़सद और उसके हासिल करने के बारे में भी, 1905 के बाद ही ऐसा साफ़ भेद नज़र आने लगा. स्वराज्य-यात्रा की तीसरी पीढ़ी इसी भेद पर खड़ी हुई दिखाई देती है.

इस भेद से मन्शा नरम और गरम, या जहाल और मवाल पक्षों और नुक़्ते नज़र की पैदाइश से है. हिन्द और इंगलेंड के इकट्ठे होने में दोनों की भलाई का ईश्वरीय संकेत है—यही भावना मवाल पक्ष की नींव है. हिन्द एक प्राचीन अलग राष्ट्र है और उसके अनुरूप उसे अपनी प्रतिष्ठा हासिल करनी चाहिये, इस प्रकार की भावना और प्रतिज्ञा, जहाल पक्ष की नींव है. पार्लियामेन्टरी तरीक़े से हमें काम करके आगे चलना चाहिये, यह मवाल पक्ष की नींव है.

سوتنترتا کی یاترا کی تیسری پیڑھی

(1920 سے 1885)

شری مگن بھائی دیسائی

سن 1885' انڈین نیشنل کانگریس کی استھاپنا کا ورش تھا . یہاں تک پہونچتے پہونچتے بھارت کی سوتنترتا کی یاترا کی دو پیڑھیاں پوری ہوئیں اور تیسری نئی پیڑھی شروع ہوئی جیسا کہہ سکتے ہیں .

دوسری پیڑھی کے بزرگوں نے ملکر اِس سنستھا کی استھاپنا کی . اُس سمئے ان لوگوں کو اِس بات کا خیال تک نہ ہوگا کہ یہ سنستھا آگے چل کر بھارت کو سوتنتر کرنے میں کامیاب ثابت ہوگی . قوم' جاتی' دھرم' بھاشا اتیادی کسی بھی پرکار کے بھید بھاؤ کے بنا سب ہندستانی اور ہندو ہت چنتک انیہ دیش واسی—خاص طور پر انگریز بھی—اُس میں شامل ہو سکتے تھے . اِس پرکار کی استھاپنا کرنے والے اُس سمئے کے نیتا ورگ نے اِس کے ذریعہ نیا ہند کیسا ہوگا اِس کی ایک موٹی روپ ریکھا پیش کی' جس نئی سنستھا کا یہ وچار اِس کا ایک مستقل انش رہا ہے .

شروع کے بیس سالوں میں—1885 سے 1905 تک—اِس سنستھا کا جو کاریہ ہوا' اُس کے مدوں پر اور اُس کے فیصلوں پر غور کریں تو اُس میں سے بہت دلچسپ سامگری حاصل ہو سکتی ہے . اِس بارے میں ایک خاص دھیان میں لینے جیسی بات یہ ہے کہ کام کاج کی نیتی ریتی اور اُدیشوں کے بارے میں بیس سال کے اندر کوئی خاص الگ درشٹی یا پکش صاف نہیں ہوئے تھے . جس سامانیہ نیتی اور اُدیشہ کو لیکر دوسری پیڑھی چلی تھی' عام طور پر اُس کو منظور کر کے کام چلایا گیا . دیش کے بھاوی مقصد اور اُس کے حاصل کرنے کے بارے میں بھی' 1905 کے بعد ہی ایسا صاف بھید نظر آنے لگا . سوراج یاترا کی تیسری پیڑھی اِسی بھید پر کھڑی ہوئی دکھائی دیتی ہے .

اِس بھید سے منشا نرم اور گرم' یا جہال اور موال پکشوں اور نقطۂ نظر کی پیدائش سے ہے . ہند اور انگلینڈ کے اِکٹھے ہونے میں دونوں کی بھلائی کا ایشوریہ سنکیت ہے—یہی بھاونا موال پکش کی نیو ہے . ہند ایک پراچین الگ راشٹر ہے اور اُس کے انوروپ اُسے اپنی پرتشٹھا حاصل کرنی چاہئے' اِس پرکار کی بھاونا اور پرتگیا' جہال پکش کی نیو ہے . پارلیامینٹری طریقے سے ہمیں کام کرکے آگے چلنا چاہئے' یہ موال پکش کی نیو ہے .

इस ढङ्ग से काम नहीं चल सकता, स्वदेशी इत्यादि स्वतन्त्र रीतों से जनता में काम करके राष्ट्र को जगाना चाहिये यह जहाल पक्ष की रीति है. अंग्रेजी के माध्यम से काम चलाने की पद्धति मवालों की और लोकभाषा के माध्यम से कार्य चलाने की पद्धति जहालों की है. इस प्रकार के साफ़ रास्ते तीसरी पीढ़ी में देखने को मिलते हैं. भारत-सेवक नाम गोखले और लोकमान्य तिलक की इस पीढ़ी के दूसरे कई नाम लिखे जा सकते हैं.

इस पीढ़ी का ध्यान देने लायक़ एक आम लक्षण यह है कि राष्ट्र की सेवा के लिये ज़िन्दगी वक़्फ़ करनी चाहिये, यह भाव इस युग में साफ़ तौर से प्रकट हुआ. राजनीति एक सेवा धर्म है, उसमें राष्ट्र सेवा है, इस मन्त्र पर यह पीढ़ी खड़ी हुई. राजनीति में भी मज़हबी निगाह से काम लेना चाहिये, इस प्रकार की उदार भावना सियासी कामों को मिली. त्याग, बलिदान, अपने आप को खपा देना इत्यादि गुण राष्ट्र सेवक के लिये जरूरी समझे जाने लगे. 190) में भारत सेवक समाज की स्थापना हुई. साथ ही साथ क़ौमियत का भी महत्व बढ़ा. अंग्रेज़ी पर-राज्य के बदले स्वराज्य आना चाहिये, ऐसा भाव लोगों में पैदा होने लगा.

ऐसी सियासत के अलावा मज़हबी और रूहानी रंग भी इसके साथ लोगों पर चढ़ने लगा, बल्कि यह रंग प्रेरणा देने वाला बुनियादी रंग था. सामुदायिक पुरषार्थ की नींव धर्म और आध्यात्म में से प्राप्त की गई. गीता इत्यादि के ज़रिये ऊपर बताते हुये जहाल समाज और राष्ट्र धर्म का समर्थन किया जाने लगा. अंग्रेज़ी शिक्षा की नई विद्याओं से एक प्रकार के शंकावाद, शून्यवाद तथा नास्तिकवाद का जो ज़ोर पढ़े लिखे वर्ग में पैदा होता जाता था, उसपर इस बात ने बहुत ही अच्छा असर डाला. इसमें स्वामी विवेकानन्द की देन सब से ऊँची है. स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, अरविन्द घोष, लाला हरदयाल, ऐनी बिसेंट इत्यादि कई महान विचारकों के नाम भी नोट किये जाने चाहिऐं. राष्ट्र के इस नये धर्म के लिये और नये पराक्रम के लिये नयी शिक्षा होनी चाहिये, इस ख़्याल में से राष्ट्रीय शिक्षा का भी मंत्र पैदा हुआ और उसके मुख़्तलिफ़ प्रयोग शुरू हुये.

किन साधनों को काम में लेना चाहिये उसके बारे में हमने थोड़ा-सा देखा. जहाल पक्ष के साथ-साथ त्रासवाद और क्रान्तिकारी विचार भी इस काल में प्रकट हुये. इनकी मिसालें भी एक ख़ास विषय के तौर पर देखने जैसी हैं.

190 से 1915-20 तक इस पीढ़ी की सरगर्मी यहाँ तक पहुँची कि कांग्रेस से अलग एक राजकीय संस्था भी क़ायम हुई, और इस तरह आख़िर में दोनों दल व्यवस्थित तौर पर अलग हुये.

اِس ڈھنگ سے کام نہیں چل سکتا' سودیشی اِتیادی سوتنتر ریتوں سے جنتا میں کام کر کے راشٹر کو جگانا چاہئیے یہ جہال پکش کی ریت ہے ۔ انگریزی کے مادھیم سے کام چلانے کی پدھتی موالوں کی اور لوک بھاشا کے مادھیم سے کام چلانے کی پدھتی جہالوں کی ہے ۔ اِس پرکار کے صاف راستے تیسری پیڑھی میں دیکھنے کو ملتے ہیں ۔ بھارت سیوک گوکھلے اور لوکمانیہ تلک کی اِس پیڑھی کے دوسرے کئی نام لکھے جا سکتے ہیں ۔

اِس پیڑھی کا دھیان دینے لائق ایک عام لکشن یہ ہے کہ راشٹر کی سیوا کے لئے زندگی وقف کرنی چاہئیے' یہ بھاؤ اِس یگ میں صاف طور سے پرگٹ ہوا ۔ راج نیتی ایک سیوا دھرم ہے' اُس میں راشٹر سیوا ہے' اِس منتر پر یہ پیڑھی کھڑی ہوئی ۔ راج نیتی میں بھی مذہبی نگاہ سے کام لینا چاہئیے' اِس پرکار کی اُدار بھاؤنا سیاسی کاموں کو ملی ۔ تیاگ' بلیدان' اپنے آپ کو کھپا دینا اِتیادی گن راشٹر سیوک کے لئے ضروری سمجھے جانے لگے ۔ [illegible] میں بھارت سیوک سماج کی استھاپنا ہوئی ۔ ساتھ ہی ساتھ قومیت کا بھی مہتو بڑھا ۔ انگریزی پرراجیہ کے بدلے سوراجیہ آنا چاہئیے' ایسا بھاؤ لوگوں میں پیدا ہونے لگا ۔

ایسی سیاست کے علاوہ مذہبی اور روحانی رنگ بھی اِس کے ساتھ لوگوں پر چڑھنے لگا' بلکہ یہ رنگ پریرنا دینے والا بنیادی رنگ تھا ۔ سامواٗیک پروشارتھ کی نیو دھرم اور ادھیاتم میں سے پراپت کی گئی ۔ گیتا اِتیادی کے ذریعے اوپر بتاتے ہوئے جہال سماج اور راشٹر دھرم کا سمرتھن کیا جانے لگا ۔ انگریزی شکشا کی نئی ودیاؤں سے ایک پرکار کے شنکاواد' شونیہ واد تتھا ناستک واد کا جو زور پڑھے لکھے ورگ میں پیدا ہوتا جاتا تھا' اُس پر اِس بات نے بہت ہی اچھا اثر ڈالا ۔ اِس میں سوامی ویویکانند کی دین سب سے اُونچی ہے. سوامی شردھانند' لالہ لاجپت رائے' اروند گھوش' لالہ ہردیال' اینی بسینٹ اِتیادی کئی مہان وچارکوں کے نام بھی نوٹ کئے جانے چاہئیں. راشٹر کے اِس نئے دھرم کے لئے اور نئے پراکرم کے لئے نئی شکشا ہونی چاہئیے' اس خیال میں سے راشٹریہ شکشا کا بھی منتر پیدا ہوا اور اس کے مختلف پریوگ شروع ہوئے ۔

کن سادھنوں کو کام میں لینا چاہئیے اُس کے بارے میں ہم نے تھوڑا سا دیکھا ۔ جہال پکش کے ساتھ ساتھ تراس واد اور کرانتکاری وچار بھی اُس کال میں پرگٹ ہوئے ۔ اِن کی مثالیں بھی ایک خاص وشے کے طور پر دیکھنے جیسی ہیں ۔

1905 سے 1915-20 تک اِس پیڑھی کی سرگرمی یہاں تک پہونچی کہ کانگریس سے الگ ایک راجکیہ سنستھا بھی قایم ہوئی' اور اس طرح آخر میں دونوں دل ویوستھت طور پر الگ ہوئے ۔

क़ौमी भेद का जन्म भी इसी युग में साफ़ साफ़ देखने को मिला. फ़िरक़ावाराना मताधिकार इस समय की खोज थी. आग़ा ख़ां जैसे नेताओं ने अपनी अलग मुस्लिम संस्था की स्थापना की. इससे हिन्द की जन जागृति और उसकी स्वराज्य-यात्रा में एक नया सिलसिला शुरू हुआ. हिन्दी-उर्दू भाषा इत्यादि की कड़वी बहस तथा हिन्दुवाद का जन्म भी इस युग में हो चुका था, यह साफ़ तौर से बताया जा सकता है.

क़ौमी-एकता एक महान राष्ट्रीय कार्य है, यह बात साफ़ होती गई. कांग्रेस के लिये तो वह एक रचनात्मक कार्य माना गया.

यह ठीक है कि इस युग में जिस क़ौमीयत के फ़लसफ़े की चर्चा और फैलाव हुआ, उसकी भावना ख़ास तौर पर हिन्दू धर्म की भाषा और भावों में थी. लेकिन जान बूझ कर ऐसा हुआ था ऐसा नहीं कहा जा सकता, वह तो स्वाभाविक ही था. फिर भी वह एक ध्यान देने योग्य बात जरूर है. कांग्रेस के मंच पर तो सब क़ौमों के लोग सर्वधर्म की यानी सच्चे स्वराज्य धर्म की ग़रज़ से इकट्ठे होते थे, और एकता के लिये कोशिश करते थे.

ऐसे महान् पराक्रमी युग का असर अंग्रेज हाकिमों पर पड़ना लाजमी था. राजकीय सुधार होने लगे. गोरों का 'गुरुभार' जिसे कहा जाता है ऐसा सूत्र अनुभव में आने लगा. राष्ट्रीय अभिमान को ठेस पहुंचे ऐसा भी कुछ इस पीढ़ी के अंग्रेज हाकिमों के बर्ताव में देखने को मिलता है. अंग्रेज राज्य और हिन्द की प्रजा अब एक दूसरे के आमने सामने है, ऐसा भाव आहिस्ता आहिस्ता सरकार में आने लगा. दो क़ौमों का इकट्ठा होना ईश्वरीय संकेत है, पढ़े लिखे लोगों का ऐसा फ़लसफ़ा अब कमजोर होने लगा. उसमें जाने अनजाने अंगरेज हाकिम भी वजह होने लगे. हिन्द अब आज़ादी चाहता है, यह नारा जोर पकड़ने लगा. देशाभिमान, देशभक्ति और उसके लिये तकलीफ़ें बरदाश्त करना, इत्यादि गुण उस वातावरण में दाख़िल हो गये.

इस युग में एक ऐशियाई देश—जापान—का जो उत्थान देखने को मिला, उसने एक भारी प्रेरणा का काम किया. गोरे राष्ट्र के साथ हरीफ़ायी की जा सकती है, यह ज्ञान ख़ुद्दारी को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ.

सन् 1914 के जंग का असर इस पीढ़ी की सबसे बड़ी आख़िरी घटना कही जा सकती है. उसके ख़त्म होने के साथ ही नई पीढ़ी का और नये युग का भी उदय होता है. यह चौथी पीढ़ी, गांधी जी की पीढ़ी या 'गांधी युग' है। इस पीढ़ी ने स्वराज्य-यात्रा की आख़री मंज़िल तै की. इसका विचार हम आगे करेंगे.

अनुवादक:—कनुभाई नानलाल पटेल

قومی بھید کا جنم بھی اِسی یگ میں صاف صاف دیکھنے کو ملا ۔ فرقہوارانہ متادھیکار اِس سمے کی کھوج تھی ۔ آغاخاں جیسے نیتاؤں نے اپنی الگ مسلم سنستھا کی استھاپنا کی ۔ اِس سے ھند کی جن جاگرتی اور اُس کی سوراجیہ یاترا میں ایک نیا سلسلہ شروع ھوا ۔ ھندی اُردو بھاشا اِتیادی کی کڑوی بحث تتھا ھندو واد کا جنم بھی اِس یگ میں ھوچکا تھا' یہ صاف طور سے بتایا جاسکتا ھے ۔

قومی ایکتا ایک مہان راشٹریہ کاریہ ھے' یہ بات صاف ھوتی گئی. کانگریس کے لئے تو وہ ایک رچناتمک کاریہ مانا گیا.

یہ ٹھیک ھے کہ اِس یگ میں جس قومیت کے فلسفے کی چرچا اور پھیلاؤ ھوا' اُس کی بھاونا خاص طور پر ھندو دھرم کی بھاشا اور بھاؤں میں تھی ۔ لیکن جان بوجھکر ایسا ھوا تھا ایسا نہیں کہا جاسکتا' وہ تو سوابھاوک ھی تھا ۔ پھر بھی وہ ایک دھیان دینے یوگیہ بات ضرور ھے ۔ کانگریس کے منچ پر تو سب قوموں کے لوگ سرو دھرم کی یعنی سچے سوراجیہ دھرم کی غرض سے اکٹھے ھوتے تھے' اور ایکتا کے لئے کوشش کرتے تھے ۔

ایسے مہان پراکرمی یگ کا اثر اِنگریز حاکموں پر پڑنا لازمی تھا. راجکیہ سدھار ھونے لگے ۔ گوروں کا 'گروبھار' جسے کہا جاتا ھے ایسا سوتر انوبھو میں آنے لگا ۔ راشٹریہ ابھیمان کو ٹھیس پہونچے ایسا بھی کچھ اِس پیڑھی کے انگریز حاکموں کے برتاؤ میں دیکھنے کو ملتا ھے ۔ انگریز راجیہ اور ھند کی پرجا اب ایک دوسرے کے آمنے سامنے ھے' ایسا بھاؤ آھستہ آھستہ سرکار میں آنے لگا ۔ دو قوموں کا اِکٹھا ھونا ایشوری سنکیت ھے' پڑھے لکھے لوگوں کا ایسا فلسفہ اب کمزور ھونے لگا ۔ اُس میں جانے انجانے انگریز حاکم بھی وجہ ھونے لگے ۔ ھند اب آزادی چاھتا ھے' یہ نعرہ زور پکڑنے لگا ۔ دیشابھیمان' دیش بھکتی اور اُس کے لئے تکلیفیں برداشت کرنا' اِتیادی گن اُس واتاورن میں داخل ھوگئے ۔

اِس یگ میں ایک ایشیائی دیش—جاپان—کا جو اُتھان دیکھنے کو ملا' اُس نے ایک بھاری پریرنا کا کام کیا ۔ گورے راشٹر کے ساتھ ھری‌جھائی کی جاسکتی ھے' یہ گیان خوداری کو بڑھانے میں سہایک سدھ ھوا ۔

سن 1914 کے جنگ کا اثر اِس پیڑھی کی سب سے بڑی آخری گھٹنا کہی جاسکتی ھے ۔ اُس کے ختم ھونے کے ساتھ ھی نئی پیڑھی کا اور نئے یگ کا بھی اُدئے ھوتا ھے ۔ یہ چوتھی پیڑھی' گاندھی جی کی پیڑھی یا 'گاندھی یگ' ھے ۔ اِس پیڑھی نے سوراجیہ یاترا کی آخری منزل طے کی ۔ اِس کا وچار ھم آگے کرینگے ۔

انوادک—شری کنو بھائی نانا لال پٹیل

तपेदिक़ का टीका

श्री चक्रवर्ती राजागोपालाचारी

(पिछले नम्बर से आगे)

अमरीका के डाक्टरों ने सैकड़ों तजरबे करके इस ख़तरे
ो समझा है. उन सब तजरबों को हम यहां नहीं दे सकते.
नसे पता चलता है कि यह टीका कितना ख़तरनाक हो
सकता है और है. अमरीका के जरनल आफ़ दी अमरीकन
डिकल एसोसियेशन में इस तरह के तजरबे छपते रहते हैं.

अब हम सन् 1954 और सन् 1955 के बड़े बड़े
डिकल पत्र पत्रिकाओं से कुछ घटनाएँ बयान करते हैं. इन
यानों में से तकनीकी डाक्टरी बातें और बड़े बड़े डाक्टरी
ब्द छोड़ दिये गये हैं.

27 नवम्बर 1954 के जरनल आफ़ दी अमरीकन मैडिकल
सोसियेशन में लिखा है कि डैनमार्क के एक लड़के को पांच
रस की उम्र में बी० सी० जी० का टीका लगाया गया.
ीका लगने के दो हफ़्ते के अन्दर उसे बहुत ख़तरनाक
क़स्म का तपेदिक़ शुरू हो गया और दो साल के अन्दर वह
स बीमारी से मर गया. बीमारी किस तरह पैदा हुई और
ढ़ी इसकी तफ़सील वहां दी हुई है. यह साफ़ देखा गया कि
पेदिक़ के जो कीड़े लड़के के अन्दर फैले और जिन्होंने आख़ीर
ं उसकी जान ले ली वह बी० सी० जी० के ही कीड़े थे.

इस घटना के बारे में जरनल आफ़ दी अमरीकन मैडिकल
सोसियेशन में लिखा है कि:—"इस घटना से हम यह कह
सकते हैं कि बी० सी० जी० के टीके से जो कीड़े जिस्म के
अन्दर दाख़िल किये जाते हैं उनसे आदमी को इस तरह का
पेदिक़ हो सकता है जो उसकी जान ले ले."

एक दूसरी घटना 13 नवम्बर सन् 1954 के जरनल
आफ़ दी अमरीकन मैडिकल एसोसियेशन में यह छपी है:—
लैंड में साढ़े चौबीस बरस की उम्र के एक आदमी के
ाहिने बाज़ू पर बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. टीके
ी जगह फफद आई जिसका मतलब यह लिया जाता है
क यह टीके के कारगर और सफल होने की ख़ास पहचान
. साल भर के बाद उस आदमी के दाहिनी तरफ़ एक फोड़ा
िकला. फोड़े को चीर दिया गया. अगले साढ़े चार बरस
ं अन्दर उस आदमी को तरह तरह की बीमारियाँ हुईं.
ायाँ हाथ सूजा, जांघ पर, कमर में और जगह जगह फोड़े
िकले और फिर फेफड़े ख़राब हुए. अब बड़े बड़े डाक्टरों ने
स का अच्छी तरह से इम्तहान किया. आख़िर पहला

تپ‌دق کا ٹیکہ

شری چکرورتی راجاگوپالاچاری

[بچھلے نمبر سے آگے]

امریکہ کے ڈاکٹروں نے سیکڑوں تجربے کرکے اِس خطرے کو سمجھا ھے. اُن سب تجربوں کو ھم یہاں نہیں دے سکتے. اُن سے پتہ چلتا ھے کہ یہ ٹیکہ کتنا خطرناک ھوسکتا ھے اور ھے. امریکہ کے جرنل آف دی امریکن میڈیکل اسوسئیشن میں اس طرح کے تجربے چھپتے رھے ھیں.

اب ھم سن 1954 میں اور سن 1955 کے بڑے بڑے میڈیکل پتر پترکاؤں سے کچھ گھٹنائیں بیان کرتے ھیں. اِن بیانوں میں سے تکنیکی ڈاکٹری باتیں اور بڑے بڑے ڈاکٹری شبد چھوڑ دئے گئے ھیں.

27 نومبر سن 1951 کے جرنل آف دی امریکن میڈیکل اسوسئیشن میں لکھا ھے کہ ڈنمارک کے ایک لڑکے کو پانچ برس کی عمر میں بی. سی. جی کا ٹیکہ لگایا گیا. ٹیکہ لگنے کے دو ھفتے کے اندر اُسے بہت خطرناک قسم کا تپ‌دق شروع ھو گیا اور دو سال کے اندر وہ اُس بیماری سے مر گیا. بیماری کس طرح پیدا ھوئی اور بڑھی اِس کی تفصیل وھاں دی ھوئی ھے. یہ صاف دیکھا گیا کہ تپ‌دق کے جو کیڑے لڑکے کے اندر پھیلے اور جنھوں نے آخیر میں اُس کی جان لے لی وہ بی. سی. جی کے ھی کیڑے تھے.

اِس گھٹنا کے بارے میں جرنل آف دی امریکن میڈیکل اسوسئیشن میں لکھا ھے کہ:—"اِس گھٹنا سے ھم یہ کہہ سکتے ھیں کہ بی. سی. جی کے ٹیکے سے جو کیڑے جسم کے اندر داخل کئے جاتے ھیں اُن سے آدمی کو اِس طرح کا تپ‌دق ھو سکتا ھے جو اُس کی جان لے لے."

ایک دوسری گھٹنا 13 نومبر سن 1954 کے جرنل آف دی امریکن میڈیکل اسوسئیشن میں یہ چھپی ھے:—ھالینڈ میں ساڑھے چوبیس برس کی عمر کے ایک آدمی کے داھنے بازو پر بی. سی. جی کا ٹیکہ لگایا گیا. ٹیکے کی جگہ پھپھد آئی جس کا مطلب یہ لیا جاتا ھے کہ یہ ٹیکے کے کارگر اور سپھل ھونے کی خاص پہچان ھے. سال بھر کے بعد اُس آدمی کے داھنی طرف ایک پھوڑا نکلا. پھوڑے کو چیر دیا گیا. اگلے ساڑھے چار برس کے اندر اُس آدمی کو طرح طرح کی بیماریاں ھوئیں. بایاں ھاتھ سوجا، جانگھ پر، کمر میں اور جگہ جگہ پھوڑے نکلے اور پھر پھیپھڑے خراب ھوئے. اب بڑے بڑے ڈاکٹروں نے اُس کا اچھی طرح سے امتحان کیا. آخر پہلا

फोड़ा निकलने के साढ़े चार बरस के अन्दर और बी० सी० जी० का टीका लगने के साढ़े पांच बरस के अन्दर वह आदमी तरह तरह की बीमारियों में मुबतिला होकर मर गया. इस बीच समय समय पर उसकी पीप व खून वग़ैरा का जो इम्तहान लिया गया तो बी० सी० जी० के टीके के कीड़े उसमें साफ़ साफ़ मिले. इस घटना पर अमरीकन मैडिकल एसोसियेशन के जरनल में डाक्टरों ने यह साफ़ राय दी है कि:—
"ज़ाहिर है कि बी० सी० जी० के टीके से आदमी के जिस्म में और ख़ून में इस तरह का मवाद फैल सकता है और उसके शरीर में बहुत सी इस तरह की बीमारी के कीड़ों की बस्तियां बन सकती हैं जिन से उस आदमी की मौत हो जाये."

सन् 1954 के अमरीकन मैडिकल एसोसियेशन के जरनल में अलग तारीख़ों अलग एडीटर के नाम तीन ख़त छपे हैं. इन तीनों ख़तों को मिलाकर पढ़ने की ज़रूरत है. हम उन तीनों का ख़ुलासा नीचे देते हैं.

पहला ख़त 3 जुलाई सन् 1954 के जरनल में छपा है. इस ख़त में किसी आदमी ने एडीटर से पूछा है कि एक नौजवान लड़के को तपेदिक़ का आज़माइशी टीका लगाया गया. टीके की जगह नहीं फफदी तो अब उस आदमी को तपेदिक़ से बचाये रखने के लिये बी० सी० जी० का टीका लगाना मुनासिब है या नहीं ?

यह याद रखने की बात है कि आम तौर पर आदमी के पहले तपेदिक़ का आज़माइशी टीका लगाया जाता है यह देखने के लिये कि उसे तपेदिक़ है या नहीं और फिर अगर मालूम हो कि तपेदिक़ नहीं है तो बी० सी० जी० का टीका लगाया जाता है.

एडीटर ने इस ख़त का जो जवाब दिया वह भी जरनल के उसी नम्बर में छपा है. एडीटर का जवाब यह है कि :—

"यह बात कि उस आदमी के बी० सी० जी० का टीका लगाना ठीक होगा या नहीं बिलकुल हालात पर निर्भर है. अगर वह आदमी एक मामूली शहरी है, चलता फिरता है और ख़ास तौर पर तपेदिक़ से या तपेदिक़ के मरीज़ों से उसका संबन्ध नहीं आता तो बी० सी० जी० का टीका लगाने की ज़रूरत नहीं है. अगरचे टीका लगाने से कोई ख़ास नुक़सान भी नहीं होगा, लेकिन अगर आज़माइशी टीके में उसके टीके की जगह नहीं फफदी और तपेदिक़ के बीमारों से उसको मिलना जुलना पड़ता है यानी उसके घर के अन्दर तपेदिक़ के मरीज़ हैं, या वह कोई ऐसा काम करता है जिसमें उसे तपेदिक़ के मरीज़ों से मिलना पड़ता है तो उसे बी० सी० जी० का टीका लगवा लेना चाहिये."

इस पर एडीटर के पास बड़े-बड़े डाक्टरों के दो ज़ोरदार ख़त और आए. इनमें पहला ख़त 4 सितम्बर सन् 1954 के जरनल में छपा है और अमरीका के मशहूर डाक्टर,

پھوڑا نکلنے کے ساڑھے چار برس کے اندر اور بی. سی. جی کا ٹیکہ لگنے کے ساڑھے پانچ برس کے اندر وہ آدمی طرح طرح کی بیماریوں میں مبتلا ہو کر مر گیا. اس بیچ سمے سمے پر اُس کی پیپ و خون وغیرہ کا جو امتحان لیا گیا تو بی. سی. جی. کے ٹیکے کے کیڑے اُس میں صاف صاف ملے. اِس گھٹنا پر امریکن میڈیکل اسوسئیشن کے جرنل میں ڈاکٹروں نے یہ صاف رائے دی ہے کہ:—"ظاہر ہے کہ بی. سی. جی کے ٹیکے سے آدمی کے جسم میں اور خون میں اِس طرح کا مواد پھیل سکتا ہے اور اُس کے شریر میں بہت سی اِس طرح کی بیماری کے کیڑوں کی بستیاں بن سکتی ہیں جن سے اُس آدمی کی موت ہو جائے."

سن 1954 کے امریکن میڈیکل اسوسئیشن کے جرنل میں الگ الگ تاریخوں میں اِیڈیٹر کے نام تین خط چھپے ہیں. اِن تینوں خطوں کو ملاکر پڑھنے کی ضرورت ہے. ہم اُن تینوں کا خلاصہ نیچے دیتے ہیں.

پہلا خط 3 جولائی سن 1954 کے جرنل میں چھپا ہے. اِس خط میں کسی آدمی نے اِیڈیٹر سے پوچھا ہے کہ ایک نوجوان لڑکے کو تپ‌دق کا آزمائشی ٹیکہ لگایا گیا. ٹیکے کی جگہ نہیں پھپھدی تو اب اُس آدمی کو تپ‌دق سے بچائے رکھنے کے لئے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگانا مناسب ہے یا نہیں ؟

یہ یاد رکھنے کی بات ہے کہ عام طور پر آدمی کے پہلے تپ‌دق کا آزمائشی ٹیکا لگایا جاتا ہے یہ دیکھنے کے لئے کہ اسے تپ‌دق ہے یا نہیں اور پھر اگر معلوم ہو کہ تپ‌دق نہیں ہے تو بی. سی. جی. کا ٹیکا لگایا جاتا ہے.

اِیڈیٹر نے اِس خط کا جو جواب دیا وہ بھی جرنل کے اُسی نمبر میں چھپا ہے. اِیڈیٹر کا جواب یہ ہے کہ :—

"یہ بات کہ اُس آدمی کے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگانا ٹھیک ہوگا یا نہیں بالکل حالات پر نربھر ہے. اگر وہ آدمی ایک معمولی شہری ہے، چلتا پھرتا ہے اور خاص طور پر تپ‌دق سے یا تپ‌دق کے مریضوں سے اُس کا سمبندھ نہیں آتا تو بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگانے کی ضرورت نہیں ہے. اگرچہ ٹیکہ لگانے سے کوئی خاص نقصان بھی نہیں ہوگا، لیکن اگر آزمائشی ٹیکے میں اُس کے ٹیکے کی جگہ نہیں پھپھدی اور تپ‌دق کے بیماروں سے اُس کو ملنا جلنا پڑتا ہے یعنی اُس کے گھر کے اندر تپ‌دق کے مریض ہیں، یا وہ کوئی ایسا کام کرتا ہے جس میں اُسے تپ‌دق کے مریضوں سے ملنا پڑتا ہے تو اُسے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگوا لینا چاہئیے."

اِس پر اِیڈیٹر کے پاس بڑے بڑے ڈاکٹروں کے زوردار خط اور آئے. اِن میں پہلا خط 4 ستمبر سن 1954 کے جرنل میں چھپا ہے اور امریکہ کے مشہور ڈاکٹر،

डाक्टर मायर्स (Dr. J. A. Myers M. D.) का लिखा हुआ है. डाक्टर मायर्स दुनिया भर में तपेदिक़ के बड़े से बड़े माहिर डाक्टरों में गिने जाते हैं. उनके ख़त का ख़ुलासा यह है :—

जनाब एडीटर साहब,

आपके 3 जुलाई सन् 1954 के अंक में सफ़ा 949 पर बी० सी० जी० के टीके के बारे में किसी का एक सवाल और आपका जवाब छपा है. आपने अपने जवाब में यह कहा है कि इस टीके से कोई ख़ास नुक़सान नहीं होगा. इस बात को कि बी० सी० जी० के टीके से कोई ख़ास नुक़सान नहीं होता बहुत से डाक्टर बहुत दिनों से ग़लत बता रहे हैं. मैं समझता हूँ कि उनके इस ग़लत बताने के जो कारन हैं उनमें से कुछ आपके पाठकों को भी मालूम होने चाहियें.

बी० सी० जी० का आजकल का टीका सन् 1921 में दो डाक्टरों ने शुरू किया था जिनके नाम कालमैट (Calmette) और गोरिन (Goerin) थे. उन्हीं दोनों के नाम पर वह कीड़ा जिस का टीका लगाया जाता है बी० सी० जी० कहलाता है. इन दोनों डाक्टरों ने इस टीके के कीड़े को तपेदिक़ की बीमारी के कीड़े से ख़ास तौर पर तैयार किया और सन् 1924 में यह ऐलान किया कि टीके की ख़ास ग़रज़ के लिये जो कीड़े उन्होंने तैयार किये हैं उनमें ज़ोर और ज़हर दोनों इतने कम हो गये हैं कि आदमी के या जानवर के जिस्म में उनसे तपेदिक़ पैदा नहीं हो सकता. लेकिन उस वक़्त से लेकर अब तक जगह जगह दवाख़ानों में जो कीड़े इस टीके के लिये तैयार किये गये हैं और तैयार किये जा रहे हैं उनमें और सन् 1924 के उन कीड़ों में बहुत गहरा फ़र्क़ पड़ गया है. ख़ुद उन दोनों डाक्टरों के दवाख़ानों में जो कीड़े इस काम के लिये अब तैयार किये जा रहे हैं वह भी अब पहले वाले कीड़े नहीं रहे. इसके अलावा दो दवाख़ानों में तैयार किये हुए कीड़े भी एक दूसरे से नहीं मिलते. हमने इस तरह के तैयार किये हुए जितने कीड़ों को देखा है हर एक में बजाय उस एक तरह के कीड़े के जो डाक्टर कालमैट ने तैयार किया था हमें कई तरह के बीमारियों के कीड़े मिलते हैं. इससे यह बात साफ़ हो जाती है कि बी० सी० जी० के टीके के लिये जो कीड़े तैयार किये जा रहे हैं वह डाक्टर कालमैट के वक़्त से लेकर अब तक बेहद बदल गये हैं और साथ ही एक दवाख़ाने के तैयार हुए कीड़े दूसरे दवाख़ानों के तैयार हुए कीड़ों से बिलकुल अलग हैं. कोई दो आपस में नहीं मिलते. शायद इन तब्दीलियों के कारण ही पिछले पच्चीस बरस के अन्दर जिन आदमियों या जिन जानवरों के बी० सी० जी० के टीके लगाये गये हैं उनमें ख़तरनाक सूरतें पैदा होती दिखाई दी हैं. बहुत से लोगों के जिनके बी० सी० जी० का टीका लगाया गया उस

ڈاکٹر مائرس (Dr. J. A. Myers M. D.)‘ کا لکھا ہوا ھے. ڈاکٹر مائرس دنیا بھر میں تپ دق کے بڑے سے بڑے ماہر ڈاکٹروں میں گنے جاتے ھیں. اُن کے خط کا خلاصہ یہ ھے :—

جناب ایڈیٹر صاحب‘

آپ کے 3 جولائی سن 1954 کے انک میں صفحہ 949 پر بی. سی. جی. کے ٹیکے کے بارے میں کسی کا ایک سوال اور آپ کا جواب چھپا ھے. آپ نے اپنے جواب میں یہ کہا ھے کہ اِس ٹیکے سے کوئی خاص نقصان نہیں ھوگا. اِس بات کو کہ بی. سی. جی. کے ٹیکے سے کوئی خاص نقصان نہیں ھوتا بہت سے ڈاکٹر بہت دنوں سے غلط بتا رھے ھیں. میں سمجھتا ھوں کہ اُن کے اِس غلط بتانے کے جو کارن ھیں اُن میں سے کچھ آپ کے پاٹھکوں کو بھی معلوم ھونے چاھئیں.

بی. سی. جی. کا آجکل کا ٹیکہ سن 1921 میں دو ڈاکٹروں نے شروع کیا تھا جن کے نام کالمیٹ (Calmette) اور گورن (Goerin) تھے. اُنھیں دونوں کے نام پر وہ کیڑا جس کا ٹیکہ لگایا جاتا ھے بی. سی. جی. کہلاتا ھے. اِن دونوں ڈاکٹروں نے اِس ٹیکے کے کیڑے کو تپ دق کی بیماری کے کیڑے سے خاص طور پر تیار کیا اور سن 1924 میں یہ اعلان کیا کہ ٹیکے کی خاص غرض کے لئے جو کیڑے اُنھوں نے تیار کئے ھیں اُن میں زور اور زھر دونوں اتنے کم ھوگئے ھیں کہ آدمی کے یا جانور کے جسم میں اُن سے تپ دق پیدا نہیں ھوسکتا. لیکن اُس وقت سے لیکر اب تک جگہ جگہ دواخانوں میں جو کیڑے اِس ٹیکے کے لئے تیار کئے گئے ھیں اور تیار کئے جارھے ھیں اُن میں اور سن 1924 کے ان کیڑوں میں بہت گھرا فرق پڑ گیا ھے. خود اُن دونوں ڈاکٹروں کے دواخانوں میں جو کیڑے اِس کام کے لئے اب تیار کئے جارھے ھیں وہ بھی اب پہلے والے کیڑے نہیں رھے. اس کے علاوہ دو دواخانوں میں تیار کئے ھوئے کیڑے بھی ایک دوسرے سے نہیں ملتے. ھم نے اس طرح کے تیار کئے ھوئے جتنے کیڑوں کو دیکھا ھے ھر ایک میں بجائے اُس طرح کے کیڑے کے جو ڈاکٹر کالمیٹ نے تیار کیا تھا ھمیں کئی طرح کے بیماریوں کے کیڑے ملتے ھیں. اِس سے یہ بات صاف ھو جاتی ھے کہ بی. سی. جی. کے ٹیکے کے لئے جو کیڑے تیار کئے جا رھے ھیں وہ ڈاکٹر کالمیٹ کے وقت سے لیکر اب تک بےحد بدل گئے ھیں اور ساتھ ھی ایک دواخانے کے تیار ھوئے کیڑے دوسرے دواخانوں کے تیار ھوئے کیڑوں سے بالکل الگ ھیں. کوئی دو آپس میں نہیں ملتے. شاید اِن تبدیلیوں کے کارن ھی پچھلے پچیس برس کے اندر جن آدمیوں یا جن جانوروں کے بی. سی. جی. کے ٹیکے لگائے گئے ھیں اُن میں خطرناک صورتیں پیدا ھوتی دکھائی دی ھیں. بہت سے لوگوں کے جن کے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا اُس

जगह पर घाव और फोड़े निकल आये जिनसे महीनों पीप और मवाद बहता रहा यहां तक कि टीका लगाने के तरीक़े को कुछ बदलना पड़ा. इससे तकलीफ़ तो घटी लेकिन फिर भी हर साल इस तरह की बहुत सी घटनाएं हमारे सामने आती रहती हैं. इस तरह के रोगियों को जो घाव और फोड़े होते हैं वह बिलकुल उसी तरह के होते हैं जिस तरह के तपेदिक़ की बीमारी में होते हैं. बहुत से ऐसे बीमारों का चीड़ फाड़ के ज़रिये इलाज करना पड़ता है. बहुत सों को ऐसी दवाएं देनी पड़ती हैं जिन से बीमारी के कीड़े मर जायें.

बहुत से ऐसे लोगों को जिन्हें बी० सी० जी० का टीका लगाया गया बाद में बाज़ाब्ता तपेदिक़ हो गया और उनमें से बहुत से तपेदिक़ से मर भी गये. पहली मई सन् 1954 के आपके रिसाले में सफ़ा 61 पर सात ऐसी घटनाएं दर्ज हैं जिनमें बी० सी० जी० के टीके से लोगों को खाल की वह गन्दी बीमारी हो गई जिसे ल्युपस वलगैरिस कहते हैं. 19 जून सन् 1954 के अंक में सफ़ा 773 पर एक बहुत पक्की घटना दी हुई है जिसमें बी० सी० जी० के टीके से आदमी को तपेदिक़ हुआ और उसी से उसकी मौत हुई. उस आदमी के बीस बरस की उम्र में बी० सी० जी० का टीका लगाया गया था. छै हफ़्ते के अन्दर वह जगह फफद उठी. लगभग एक साल के बाद बीमारी की पहली अलामतें दिखाई दीं. उसके बाद बराबर बदन के बहुत से हिस्सों में, यहां तक कि कि फेफड़ों और गुरदों में भी, बीमारी के लक्षन बढ़ते चले गये. दिसम्बर सन् 1953 में वह आदमी तपेदिक़ से मर गया. उसके घावों का जब इम्तहान लिया गया तो एक नहीं बहुत से घावों से बी० सी० जी० के ही कीड़े मिले. ऐसी घटनाएं बहुत हो चुकी हैं. इनसे हमें यह भी गहरा शक होने लगता है कि इससे पहले बहुत से ऐसे लोगों को जिनके बी० सी० जी० का टीका लग चुका था और जिन्हें इसके बाद तपेदिक़ हुआ और वह तपेदिक़ से मरे, उन्हें दबी छिपी बीमारी पहले से मौजूद नहीं थी जिससे बी० सी० जी० उन्हें न बचा सकी हो बल्कि बात यह थी कि उन्हें बीमारी हुई ही बी० सी० जी० के टीके से. बहर सूरत बी० सी० जी० के कीड़ों की बाबत जो पक्की और प्रामाणिक बातें हमें मालूम हो चुकी हैं और इस टीके से आदमियों और जानवरों में जिस तरह की बीमारियां पैदा हो जाती हैं वह हमें चौकन्ना और सावधान कर देने के लिये काफ़ी हैं. इनकी बिना पर हम पक्की तौर पर यह कह सकते हैं कि आपने अपने जवाब में जो यह कहा है कि बी० सी० जी० से कोई ख़ास नुक़सान नहीं होता यह बिलकुल ग़लत है, कहीं कोई भी यह बात कहे तो यह बिलकुल ग़लत है.

(दस्तख़त) जे. ए. मायर्स एम. डी. वग़ैरा, वग़ैरा.

حصہ پر گھاؤ اور پھوڑے نکل آئے جن سے مہینوں پیپ اور مواد بہتا رہا یہاں تک کہ ٹیکہ لگانے کے طریقہ کو کچھ بدلنا پڑا ۔ اِس سے تکلیف تو گھٹی لیکن پھر بھی ہر سال اِس طرح کی بہت سی گھٹنائیں ہمارے سامنے آتی رہتی ھیں ۔ اِس طرح کے روگیوں کو جو گھاؤ اور پھوڑے ہوتے ھیں وہ بالکل اُسی طرح کے ھوتے ھیں جس طرح کے تپ دق کی بیماری میں ھوتے ھیں ۔ بہت سے ایسے بیماروں کا چیر پھاڑ کے ذریعہ علاج کرنا پڑتا ھے ۔ بہت سوں کو ایسی دوائیں دینی پڑتی ھیں جن سے بیماری کے کیڑے مر جائیں ۔

بہت سے ایسے لوگوں کو جنھیں بی ۔ سی ۔ جی ۔ کا ٹیکہ لگایا گیا بعد میں باضابطہ تپ دق ھوگیا اور اُن میں سے بہت سے تپ دق سے مر بھی گئے ۔ پہلی مئی سن 1954 کے آپ کے رسالے میں صفحہ 61 پر سات ایسی گھٹنائیں درج ھیں جن میں بی ۔ سی ۔ جی ۔ کے ٹیکے سے لوگوں کو کھال کی وہ گندی بیماری ھوگئی جسے لیوپس ولگیرس کہتے ھیں ۔ 19 جون سن 1954 کے انک میں صفحہ 773 پر ایک بہت پکی گھٹنا دی ہوئی ھے جس میں بی ۔ سی ۔ جی ۔ کے ٹیکے سے ھی آدمی کو تپ دق ھوا اور اُسی سے اُس کی موت ھوئی ۔ اُس آدمی کے بیس برس کی عمر میں بی ۔ سی ۔ جی ۔ کا ٹیکہ لگایا گیا تھا ۔ چھ ھفتے کے اندر وہ جگہ پھپھد اُٹھی ۔ لگ بھگ ایک سال کے بعد بیماری کی پہلی علامتیں دکھائی دیں ۔ اُس کے بعد برابر بدن کے بہت سے حصوں میں، یہاں تک کہ پھیپھڑوں اور گردوں میں بھی، بیماری کے لکشن بڑھتے چلے گئے ۔ دسمبر سن 1953 میں وہ آدمی تپ دق سے مر گیا ۔ اُس کے گھاؤں کا جب امتحان لیا گیا تو ایک نہیں بہت سے گھاؤں سے بی ۔ سی ۔ جی ۔ کے ھی کیڑے ملے ۔ ایسی گھٹنائیں بہت ھوچکی ھیں ۔ اِن سے ھمیں یہ بھی گہرا شک ھونے لگتا ھے کہ اِس سے پہلے بہت سے ایسے لوگوں کو جن کے بی ۔ سی ۔ جی ۔ کا ٹیکہ لگ چکا تھا اور جنھیں اس کے بعد تپ دق ھوا اور وہ تپ دق سے مرے، اُنھیں دبی چھپی بیماری پہلے سے موجود نہیں تھی جس سے بی ۔ سی ۔ جی ۔ اُنھیں نہ بچا سکی ھو بلکہ بات یہ تھی کہ اُنھیں بیماری ھوئی ھی بی ۔ سی ۔ جی ۔ کے ٹیکے سے ۔ بہر صورت بی ۔ سی ۔ جی ۔ کے کیڑوں کی بابت جو پکی اور پرامانک باتیں ھمیں معلوم ھوچکی ھیں اور اُس ٹیکے سے آدمیوں اور جانوروں میں جس طرح کی بیماریاں پیدا ھو جاتی ھیں وہ ھمیں چوکنا اور ساودھان کردینے کے لئے کافی ھیں ۔ اِن کی بنا پر ھم پکی طور پر یہ کہ سکتے ھیں کہ آپ نے اپنے جواب میں جو یہ کہا ھے کہ بی ۔ سی ۔ جی ۔ سے کوئی خاص نقصان نہیں ھوتا یہ بالکل غلط ھے، کہیں کوئی بھی یہ بات کہے تو یہ بالکل غلط ھے ۔

(دستخط) جے ۔ اے ۔ مائرس ایم ۔ ڈی ۔ وغیرہ وغیرہ ۔

दूसरा ख़त अमरीका ही के एक और मशहूर डाक्टर, डाक्टर सेमूर एम. फ़ार्बर (Dr. Seymour M. Farber M. D.) का है जो सैनफ्रांसिस्को के अस्पताल में तपेदिक़ के मरीज़ों के ख़ास चार्ज में हैं. उनका ख़त यह है :—

जनाब एडीटर साहब !

3 जुलाई सन् 1954 के जरनल में सफ़ा 949 पर जो आपने बी० सी० जी० की बाबत एक सवाल का जवाब दिया है वह मुझे खटका. मुझे मालूम होता है कि उससे पढ़ने वाले पर यह असर पड़ेगा कि इस चीज़ से जिसे बी० सी० जी० का टीका कहा जाता है कोई नुक़सान नहीं हो सकता. पिछले बरसों में बी० सी० जी० के टीकों की तैयारी को अच्छी तरह देखकर और जानवरों और इनसानों पर उसके असर को मालूम करके जो जानकारी हमें मिली है वह इतनी अधिक और इतनी पक्की है कि हमें मजबूर होकर यह कहना पड़ता है कि बी० सी० जी० से नुक़सान नहीं होता, ग़लत है. लगभग चालीस बरस हमें इसके तजरबे करते और इसे इस्तेमाल करते हो गये. और दुनिया के सारे हिस्सों में तजरबे किये जा चुके हैं. इस सब को सामने रखकर हम यह नहीं कह सकते कि बी० सी० जी० से नुक़सान नहीं हो सकता. बहुत-सों की राय इस टीके के ख़िलाफ़ है. इसमें कोई शक नहीं कि हम इस मामले में बड़ी अहतियात से काम लेना चाहिये.

(दस्तख़त) एम. फ़ार्बर एम. डी. वग़ैरा, वग़ैरा.

धोखे के आंकड़े

बी० सी० जी० के टीके के समर्थन में जो आंकड़े दिये जाते हैं, ख़ास कर योरुप के मुल्कों में, उन पर भी आँख बन्द करके ऐतबार कर लेना ग़लत है.

ऐडिनबरा के फेफड़ों की बीमारी के मशहूर डाक्टर एफ़. कैलर मैन (Dr. F. Kellermann M. D.) ने 15 सितम्बर सन् 1954 के इगलैंड के अख़बार "मैडिकल प्रेस" में लिखा है :—

"बी० सी० जी० के टीके के नफ़ा नुक़सान का ठीक-ठीक अन्दाज़ा लगाने में एक बड़ी मुश्किल यह आ जाती है कि आम तौर पर पिछले पचास बरस के अन्दर दुनिया के बहुत से हिस्सों में तपेदिक़ की बीमारी और उस से मौतें बराबर घटती जा रही हैं. इस मामले में यह बात ख़ास ध्यान देने की है कि अमरीका में कुछ रियासतों ने अपने यहाँ बी० सी० जी० का टीका चलाया, लेकिन तपेदिक़ की बीमारी और उससे मौतों में बहुत बड़ी और साफ़ साफ़ कमी उन्हीं रियासतों में हुई है जिन्होंने अपने यहाँ बी० सी० जी० का टीका नहीं चलाया."

دوسرا خط امریکہ ہی کے ایک اور مشہور ڈاکٹر، ڈاکٹر سیمور ایم۔ فاربر (Dr. Seymour M. Farber M.D.) کا ہے جو سین فرانسسکو کے اسپتال میں تپ دق کے مریضوں کے خاص چارج میں ہیں۔ اُن کا خط یہ ہے :—

جناب ایڈیٹر صاحب !

3 جولائی سن 1954 کے جرنل میں صفحہ 949 پر جو اپنے بی۔ سی۔ جی۔ کی بابت ایک سوال کا جواب دیا ہے وہ مجھے کھٹکا۔ مجھے معلوم ہوتا ہے کہ اُس سے پڑھنے والے پر یہ پڑےگا کہ اِس چیز سے جسے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ کہا جاتا ہے کوئی نقصان نہیں ہوسکتا۔ پچھلے برسوں میں بی۔سی۔جی کے ٹیکوں کی تیاری کو اچھی طرح دیکھکر اور جانوروں اور انسانوں پر اُس کے اثر کو معلوم کرکے جو جانکاری ہمیں ملی ہے وہ اِتنی ادھک اور اِتنی پکی ہے کہ ہمیں مجبور ہوکر یہ کہنا پڑتا ہے کہ بی۔ سی۔ جی۔ سے نقصان نہیں ہوتا، غلط ہے۔ لگ بھگ چالیس برس ہمیں اِس کے تجربے کرتے اور اِسے استعمال کرتے ہوگئے۔ اور دنیا کے سارے حصوں میں تجربے کئے جا چکے ہیں۔ اِس سب کو سامنے رکھکر ہم یہ نہیں کہہ سکتے کہ بی۔ سی۔ جی۔ سے نقصان نہیں ہوسکتا۔ بہتسوں کی رائے اِس ٹیکے کے خلاف ہے۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ ہمیں اِس معاملے میں بڑی احتیاط سے کام لینا چاہئے۔

(دستخط) سیمور ایم۔ فاربر ایم۔ ڈی۔ وغیرہ وغیرہ۔

دھوکے کے آنکڑے

بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے کے سمرتھن میں جو آنکڑے دئے جاتے ہیں، خاص کر یورپ کے ملکوں میں، اُن پر بھی آنکھ بند کرکے اعتبار کرلینا غلط ہے۔

ایڈن برا کے پھیپھڑوں کی بیماری کے مشہور ڈاکٹر ایف کیلر مین (Dr. F. Kellermann M D.) نے 15 ستمبر سن 1951 کے اِنگلینڈ کے اخبار "میڈیکل پریس" میں لکھا ہے :—

"بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے کے نفع نقصان کا ٹھیک ٹھیک اندازہ لگانے میں ایک بڑی مشکل یہ آجاتی ہے کہ عام طور پر پچھلے پچاس برس کے اندر دنیا کے بہت سے حصوں میں تپ دق کی بیماری اور اُس سے موتیں برابر گھٹتی جارہی ہیں۔ اِس معاملے میں یہ بات خاص دھیان دینے کی ہے کہ امریکہ میں کچھ ریاستوں نے اپنے یہاں بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ چلایا اور کچھ نے نہیں چلایا، لیکن تپ دق کی بیماری اور اُس سے موتوں میں بہت بڑی اور صاف صاف کمی اُنہیں ریاستوں میں ہوئی ہے جنھوں نے اپنے یہاں بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ نہیں چلایا"

डाक्टर जे. ए. मायर्स ने लिखा है कि :—

"यह बात भी याद रखनी चाहिये कि सन् 1924 और सन् 1944 के दरमियान न्युयार्क शहर में तपेदिक् से मौतें क़रीब क़रीब 95 फ़ीसदी कम हो गईं, यानी सौ मौतों की जगह सिर्फ़ पांच रह गईं, और वहाँ इस अर्से में बी० सी० जी० का टीका नहीं लगाया गया."

डाक्टर टाप्ले (Dr. Topley) और डाक्टर विल्सन (Dr. Wilson) ने अपनी किताब 'Principles of Bacteriology & Immunity' में लिखा है कि—"फ़्रांस में और फ़्रांसीसी बोलने वाले देशों में बी० सी० जी० के टीके के काफ़ी तजरबे हो चुके हैं. लेकिन इस मामले में जो आंकड़े दिये जाते हैं उन पर बिलकुल ऐतबार नहीं किया जा सकता. वह बिलकुल निकम्मे हैं. हम इस नतीजे पर भी नहीं पहुंच सकते कि बी० सी० जी० के टीके से तपेदिक् का मुक़ाबला करने की शक्ति आदमी में ज़रा सी भी बढ़ती है. अगर दो तीन बरस के बाद दोबारा टीका न लगाया जावे तो पहले टीके से जो कुछ बीमारी के मुक़ाबिले की शक्ति किसी ख़ास आदमी में आई भी हो वह भी साल दो साल के अन्दर बिलकुल ख़तम हो जाती है. और अगर दोबारा टीका लगाया जावे तो उसके नतीजे और भी ज़्यादा गहरे और ख़तरनाक होते हैं. हम तो यह भी मानने को तैयार नहीं कि शुरू में भी इस टीके से किसी को कोई फ़ायदा होता है."

इन्गलैंड की मिनिस्ट्री ऑफ़ हैल्थ की राय

इन्गलैंड की मिनिस्ट्री ऑफ़ हैल्थ ने नवम्बर सन् 1953 में अपने तमाम मैडिकल अफ़सरों के नाम एक मेमोरैन्डम नं० 324 जारी किया था. उस मेमोरैन्डम में बी० सी० जी० के टीके की बाबत यह लिखा है :—

बावजूद इस बात के कि पिछले बीस बरस के अन्दर लोगों की एक बहुत बड़ी तादाद के बी० सी० जी० का टीका लगाया जा चुका है, और टीकों में दोनों तरह का वैकसीन इस्तेमाल किया गया है, यानी कुछ में ताज़ा और कुछ में जमाकर सुखाया हुआ, फिर भी इस टीके से असली फ़ायदे होने की कोई साइंसी शहादत नहीं मिलती."

एक डाक्टर बैनजमिन ने यह बयान दिया था कि इन्गलैंड, फ़्रांस और स्वीडन तीनों मुल्कों में बी० सी० जी० का टीका लाज़िमी तौर पर सब के लगाया जाता है. इस पर इंगलैंड की हैल्थ मिनिस्ट्री को एक ख़त लिखा गया यह मालूम करने के लिये कि डाक्टर बैनजमिन का बयान कहाँ तक ठीक है. इन्गलैंड की हैल्थ मिनिस्ट्री के डाक्टर डी. टामसन ने 24 मई सन् 1955 के अपने ख़त में जवाब दिया. उस जवाब में उन्होंने तफ़सील से लिखा है कि इंगलैंड में यह टीका किन किन के किन किन हालतों में और किस किस

ڈاکٹر جے . اے . مائرس نے لکھا ہے کہ :—

"یہ بات بھی یاد رکھنی چاہئیے کہ سن 1924 اور سن 1944 کے درمیان نیویارک شہر میں تپ‌دق سے موتیں قریب قریب 95 فیصدی کم ہوگئیں، یعنی سو موتوں کی جگہ صرف پانچ رہ گئیں، اور وہاں اِس عرصے میں بی . سی . جی کا ٹیکہ نہیں لگایا گیا ."

ڈاکٹر ٹاپلے (Dr. Topley) اور ڈاکٹر ولسن (Dr. Wilson) نے اپنی کتاب 'Principles of Bacteriology & Immunity' میں لکھا ہے کہ—"فرانس میں اور فرانسیسی بولنے والے دیشوں میں بی. سی. جی کے ٹیکے کے کافی تجربے ہو چکے ہیں . لیکن اِس معاملے میں جو آنکڑے دیئے جاتے ہیں اُن پر بالکل اعتبار نہیں کیا جا سکتا. وہ بالکل نکمے ہیں . ہم اِس نتیجے پر بھی نہیں پہنچ سکتے کہ بی. سی. جی کے ٹیکے سے تپ‌دق کا مقابلہ کرنے کی شکتی آدمی میں ذرا سی بھی بڑھتی ہے . اگر دو تین برس کے بعد دوبارہ ٹیکہ نہ لگایا جاوے تو پہلے ٹیکے سے جو کچھ بیماری کے مقابلے کی شکتی کسی خاص آدمی میں آئی بھی ہو وہ بھی سال دو سال کے اندر بالکل ختم ہو جاتی ہے . اور اگر دوبارہ ٹیکہ لگایا جاوے تو اس کے نتیجے اور بھی زیادہ گہرے اور خطرناک ہوتے ہیں . ہم تو یہ بھی ماننے کو تیار نہیں کہ شروع میں بھی اِس ٹیکے سے کسی کو کوئی فائدہ ہوتا ہے ."

انگلینڈ کی منسٹری آف ہلتھ کی رائے

انگلینڈ کی منسٹری آف ہلتھ نے نومبر سن 1953 میں اپنے تمام میڈیکل افسروں کے نام ایک میمورنڈم نمبر 324 جاری کیا تھا . اُس میمورنڈم میں بی. سی. جی کے ٹیکے کی بابت یہ لکھا ہے:—

"باوجود اِس بات کے کہ پچھلے بیس برس کے اندر لوگوں ایک بہت بڑی تعداد کے بی. سی. جی کا ٹیکہ لگایا جا چکا ہے، اور اِن ٹیکوں میں دونوں طرح کا ویکسین استعمال کیا گیا ہے، یعنی کچھ میں تازہ اور کچھ میں جما کر سکھایا ہوا، پھر بھی اِس ٹیکے سے اصلی فائدے ہونے کی کوئی سائنسی شہادت نہیں ملتی ."

ایک ڈاکٹر بینجمن نے یہ بیان دیا تھا کہ انگلینڈ، فرانس اور سویڈن تینوں ملکوں میں بی. سی. جی کا ٹیکہ لازمی طور پر سب کے لگایا جاتا ہے . اِس پر انگلینڈ کی ہیلتھ منسٹری کو ایک خط لکھا گیا یہ معلوم کرنے کے لئے کہ ڈاکٹر بینجمن کا بیان کہاں تک ٹھیک ہے . انگلینڈ کی ہیلتھ منسٹری کے ڈاکٹر ڈی ٹامسن نے 24 مئی سن 1955 کے اپنے خط میں جواب دیا . اُس جواب میں اُنہوں نے تفصیل سے لکھا ہے کہ انگلینڈ میں یہ ٹیکہ کن کن کے کن کن حالتوں میں اور کس کس

तरह की अहतियात के साथ लगाया जाता है. इन सब चीज़ों के यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं है. डाक्टर डी. टामसन ने अपने ख़त में साफ़ शब्दों में लिखा है कि :—

"इस मुल्क के किसी हिस्से में भी और किसी तरह के लोगों के लिये भी यह टीका लाज़िमी नहीं है और न इस वक़्त हमारा यह कोई इरादा है कि हम अपने इस टीके के प्रोग्राम को बढ़ावें."

डाक्टर टामसन ने यह भी लिखा है कि :—

"फ़्रांस और स्वीडन में भी बी० सी० जी० का टीका लाज़िमी नहीं है और डेनमार्क, नार्वे, स्वीडन और फ़िनलैंड चारों मुल्कों में मौजूदा राय आम तौर से टीके लगाये जाने के ख़िलाफ़ है."

अमरीका ही से 'पोलियो' के लिये जो बच्चों की एक बीमारी है और जिसमें बच्चों को लक़वा मार जाता है एक और नया टीका निकला था जिसे सालक वैकसीन कहते हैं. इस नये टीके की तारीफ़ में बार बार बड़े बड़े आंकड़े दिये गये. यहाँ तक कि कुछ दिनों तक यह इंगलैंड में भी चल पड़ा. पर अब इंगलैंड की ब्रिटिश मैडिकल रिसर्च कौंसिल ने इस नये टीके का लगाना बिलकुल बन्द कर देने का फ़ैसला कर लिया है क्योंकि बच्चों के इस टीके का लगाना उन्हें ख़तरनाक साबित हुआ.

अब हम फिर अपने देश की तरफ़ आते हैं. हम सब लोगों के यह टीका क्यों लगा रहे हैं? और ऐतराज़ों को छोड़कर टीके के हामी हमें इससे क्या उम्मीद दिला रहे हैं. वह हमें ज्यादा से ज्यादा यही उम्मीद दिला रहे हैं कि एक बहुत थोड़े से अर्से के लिये यानी अधिक से अधिक दो बरस के लिये हमारा बच्चा तपेदिक़ से बचा रहेगा और इस दो बरस के लिये भी वह पूरा भरोसा नहीं दिला सकते. इन दो बरस के बाद फिर हमें अपने को बचाने के लिये वही दूसरी तरकीबें, दूसरी तरह की तालीम, खाना पीना और दूसरी तरह की अहतियातों का सहारा लेना पड़ेगा. बी० सी० जी० का असर उनके मुताबिक़ इससे आगे चल ही नहीं सकता.

इस टीके से नई नई बीमारियाँ

एक और बीमारी है जिसे इनसिफ़ेलाइटिस (Encephalitis) कहते हैं जिसमें रोगी के दिमाग़ के अन्दर सूजन आजाती है. बी० सी० जी० का टीका जहाँ जहाँ लगाया गया है वहाँ वहाँ यह बीमारी भी अनेक बार दिखाई दी है. दूसरे मुल्कों में यह कम लोगों को हुई है, हमारे मुल्क में ज्यादा लोगों को हुई है, जिसका कारण यह है कि हमारे देश में ग़रीबी अधिक है और लोगों को काफ़ी और ढङ्ग का खाने को नहीं मिलता. यह भी मालूम हुआ है कि बी० सी० जी० के टीके से इस बीमारी के पैदा होने की

طرح کی احتیاط کے ساتھ لگایا جاتا ہے. اُن سب چیزوں کے یہاں دہرانے کی ضرورت نہیں ہے. ڈاکٹری ڈی. ٹامسن نے اپنے خط میں صاف شبدوں میں لکھا ہے کہ:—

"اِس ملک کے کسی حصے میں بھی اور کسی طرح کے لوگوں کے لئے بھی یہ ٹیکہ لازمی نہیں ہے اور نہ اِس وقت ہمارا یہ کوئی ارادہ ہے کہ ہم اپنے اِس ٹیکے کے پروگرام کو بڑھاویں."

ڈاکٹر ٹامسن نے یہ بھی لکھا ہے کہ:—

"فرانس اور سویڈن میں بھی بی. سی. جی کا ٹیکہ لازمی نہیں ہے اور ڈنمارک، ناروے، سویڈن اور فنلینڈ چاروں ملکوں میں موجودہ رائے عام طور سے ٹیکے لگائے جانے کے خلاف ہے."

امریکہ ہی سے 'پولیو' کے لئے جو بچوں کی ایک بیماری ہے اور جس میں بچوں کو لقوہ مار جاتا ہے ایک اور نیا ٹیکہ نکلا تھا جسے سالک ویکسین کہتے ہیں. اِس نئے ٹیکے کی تعریف میں بار بار بڑے بڑے آنکڑے دئے گئے. یہاں تک کہ کچھ دنوں تک یہ انگلینڈ میں بھی چل پڑا. پر اب انگلینڈ کی برٹش میڈیکل ریسرچ کونسل نے اِس نئے ٹیکے کا لگانا بالکل بند کر دینے کا فیصلہ کر لیا ہے کیونکہ بچوں کے اس ٹیکے کا لگانا اُنھیں خطرناک ثابت ہوا.

اب ہم پھر اپنے دیش کی طرف آتے ہیں. ہم سب لوگوں کے یہ ٹیکہ کیوں لگا رہے ہیں؟ اور اعتراضوں کو چھوڑ کر ٹیکے کے حامی ہمیں اِس سے کیا امید دلا رہے ہیں؟ وہ ہمیں زیادہ سے زیادہ یہی امید دلا رہے ہیں کہ ایک بہت تھوڑے سے عرصے کے لئے یعنی ادھک سے ادھک دو برس کے لئے ہمارا بچہ تپ دق سے بچا رہے گا اور اِس دو برس کے لئے بھی وہ پورا بھروسہ نہیں دلا سکتے. اِن دو برس کے بعد پھر ہمیں اپنے کو بچانے کے لئے وہی دوسری ترکیبیں، دوسری طرح کی تعلیم، کھانا پینا اور دوسری طرح کی احتیاطوں کا سہارا لینا پڑے گا. بی. سی. جی کا اثر اُن کے مطابق اِس سے آگے چل ہی نہیں سکتا.

اِس ٹیکے سے نئی نئی بیماریاں

ایک اور بیماری ہے جسے اِنسیفلائٹس (Encephalitis) کہتے ہیں جس میں روگی کے دماغ کے اندر سوجن آجاتی ہے. بی. سی. جی کا ٹیکہ جہاں جہاں لگایا گیا ہے وہاں وہاں یہ بیماری بھی انیک بار دکھائی دی ہے. دوسرے ملکوں میں یہ کم لوگوں کو ہوئی ہے، ہمارے ملک میں زیادہ لوگوں کو ہوئی ہے جس کا کارن یہ ہے کہ ہمارے دیش میں غریبی ادھک ہے اور لوگوں کو کافی اور ڈھنگ کا کھانے کو نہیں ملتا. یہ بھی معلوم ہوا ہے کہ بی. سی. جی کے ٹیکے سے اِس بیماری کے پیدا ہونے کی

जितनी घटनाएँ होती हैं उनमें बहुत कम हमारे सामने आ पाती हैं. डाक्टर टापले और डाक्टर विलसन ने अपनी किताब में जिसकी चरचा हम ऊपर कर चुके हैं लिखा है कि हाल में बी० सी० जी० का टीका लगने से यह बीमारी भी अक्सर होती दिखाई दी है और इस तरह की "कई सौ घटनाएं" उनके सामने आ चुकी हैं.

डाक्टर फ्रैडरिक डब्लू. प्राइस ने अपनी किताब "ए टैक्स्ट बुक आफ़ दी प्रैकटिस आफ़ मैडिसिन" में लिखा है कि एक और बीमारी अक्सर इस टीके के बाद देखी गई है जो टीके लगने के सात दिन से लेकर बारह दिन के अन्दर नमूदार होती है जिसमें सर में दर्द होता है, क़ै आती है, एक तरह से हल्का सा लक़वा हो जाता है, रोगी बक बक करने लगता है, बेहोशी आ जाती है और कभी कभी मौत भी हो जाती है. इस बीमारी से अक्सर पचास फ़ीसदी आदमी मर जाते हैं. उन्होंने लिखा है कि इस टीके से कभी कभी कई तरह की दबी हुई बीमारियां चमक भी उठती हैं.

जिस बीमारी का डाक्टर फ्रैडरिक डब्लू. प्राइस ने ज़िक्र किया है उसमें वह लिखते हैं कि अक्सर रोगी के आँख की रोशनी भी जाती रहती है. कोइमबटूर की जिस अभागी लड़की का हाल अख़बारों में निकल चुका है उसे यही बीमारी हुई थी.

मद्रास सरकार की तहक़ीक़ाती कमेटी

उस लड़की का नाम वसंत था. जब उसका हाल कुछ डाक्टरों की राय के साथ अख़बारों में छपा तो मद्रास की सरकार ने तहक़ीक़ात के लिये कुछ सरकारी डाक्टरों की एक कमेटी मुक़र्रर की. उस कमेटी ने वसंत और कुछ और रोगियों को भी देखकर अपनी रिपोर्ट सरकार को दे दी. उन और रोगियों को भी कम या अधिक इसी तरह की शिकायतें थीं. उस कमेटी की रिपोर्ट शाया नहीं की गई. उसकी जगह सरकार ने एक अपना ही प्रेस नोट अख़बारों में निकाल दिया कि कमेटी की रिपोर्ट से उन्हें मालूम हुआ है कि वसंत की आँखें बी० सी० जी० के टीके के कारण नहीं गईं बल्कि एक और बीमारी उस इलाक़े में शायद पहले से फैली हुई थी जो वसंत को लग गई और जिसके कारण उसकी आँखें गईं. इस बीमारी का नाम भी सरकार ने अपने प्रेस नोट में दिया है.

मद्रास सरकार ने जब यह कमेटी मुक़र्रर की थी तब 2 जून सन् 1955 को पहले ही से ऐलान कर दिया था कि "अख़बारों में जिस बच्चे की आँखें चले जाने का हाल छपा है उसकी बाबत सरकार की शुरू की तहक़ीक़ात से पता चला है कि आँखें जाने का बी० सी० जी० के टीके से कोई सम्बन्ध नहीं था, फिर भी सरकार और तहक़ीक़ात के लिये डाक्टरों की एक कमेटी मुक़र्रर कर रही है."

جتنی گھٹنائیں ھوتی ھیں اُن میں بہت کم ھمارے سامنے آپاتی ھیں. ڈاکٹر ٹاپلے اور ڈاکٹر ولسن نے اپنی کتاب میں جس کی چرچا ھم اُوپر کر چکے ھیں لکھا ھے کہ حال میں بی. سی. جی کا ٹیکہ لگنے سے یہ بیماری بھی اکثر ھوتی دکھائی دی ھے اور اِس طرح کی "کئی سو گھٹنائیں" اُن کے سامنے آچکی ھیں.

ڈاکٹر فریڈرک ڈبلو. پرائس نے اپنی کتاب "اے ٹکسٹ بک آف دی پریکٹس آف میڈیسن" میں لکھا ھے کہ ایک اور بیماری اکثر اِس ٹیکے کے بعد دیکھی گئی ھے جو ٹیکہ لگنے کے سات دن سے لیکر بارہ دن کے اندر نمودار ھوتی ھے جس میں سر میں درد ھوتا ھے، قے آتی ھے، ایک طرح سے ھلکا سا لقوہ ھو جاتا ھے، روگی بک بک کرنے لگتا ھے، بے ھوشی آجاتی ھے اور کبھی کبھی موت بھی ھو جاتی ھے. اس بیماری سے اکثر پچاس فیصدی آدمی مر جاتے ھیں. اُنھو نے لکھا ھے کہ اِس ٹیکے سے کبھی کبھی کئی طرح کی دبی ھوئی بیماریاں چمک بھی اُٹھتی ھیں.

جس بیماری کا ڈاکٹر فریڈرک ڈبلو. پرائس نے ذکر کیا ھے اُس میں وہ لکھتے ھیں کہ اکثر روگی کے آنکھ کی روشنی بھی جاتی رھتی ھے. کوامبیٹور کی جس اُبھاگی لڑکی کا حال اخباروں میں نکل چکا ھے اُسے یہی بیماری ھوئی تھی.

مدراس سرکار کی تحقیقاتی کمیٹی

اُس لڑکی کا نام وسنت تھا. جب اُس کا حال کچھ ڈاکٹروں کی رائے کے ساتھ اخباروں میں چھپا تو مدراس کی سرکار نے تحقیقات کے لئے کچھ سرکاری ڈاکٹروں کی ایک کمیٹی مقرر کی. اُس کمیٹی نے وسنت اور کچھ اور روگیوں کو بھی دیکھ کر اپنی رپورٹ سرکار کو دے دی. اُن اور روگیوں کو بھی کم یا ادھک اِسی طرح کی شکائتیں تھیں. اُس کمیٹی کی رپورٹ شائع نہیں کی گئی. اُس کی جگہ سرکار نے ایک اپنا ھی پریس نوٹ اخباروں میں نکال دیا کہ کمیٹی کی رپورٹ سے اُنھیں معلوم ھوا ھے کہ وسنت کی آنکھیں بی. سی. جی کے ٹیکے کے کارن نہیں گئیں بلکہ ایک اور بیماری اُس علاقے میں شاید پہلے سے پھیلی ھوئی تھی جو وسنت کو لگ گئی اور جس کے کارن اُس کی آنکھیں گئیں. اِس بیماری کا نام بھی سرکار نے اپنے پریس نوٹ میں دیا ھے.

مدراس سرکار نے جب یہ کمیٹی مقرر کی تھی تب 2 جون سن 1955 کو پہلے ھی سے اعلان کر دیا تھا کہ "اخباروں میں جس بچے کی آنکھیں چلے جانے کا حال چھپا ھے اُس کی بابت سرکار کی شروع کی تحقیقات سے پتہ چلا ھے کہ آنکھیں جانے کا بی. سی. جی کے ٹیکے سے کوئی سمبندھ نہیں تھا. پھر بھی سرکار اور ادھک تحقیقات کے لئے ڈاکٹروں کی ایک کمیٹی مقرر کر رھی ھے."

यही वह कमेटी थी जिसकी रिपोर्ट नहीं छापी गई पर जिससे नतीजा वही निकला जो सरकार पहले से निकाल चुकी थी.

सरकार के प्रेस नोट के बाद डाक्टर ऐल. एन. अनन्त रामन एम. बी. का एक ख़त मद्रास के "हिन्दू" अख़बार में शाया हुआ जिसमें उन्होंने लिखा है कि अव्वल तो सरकार को चाहिये था कि इस मामले के लिये जो तहक़ीक़ाती कमेटी सरकार ने मुक़र्रर की थी उसमें कम से कम एक ग़ैर सरकारी डाक्टर भी रक्खा जाता. दूसरे जिस बीमारी का नाम सरकार ने अपने प्रेस नोट में लिया है और लिखा है कि वसंत को वह बीमारी हुई होगी और उसी से उसकी आंखें गई', उस बीमारी का डाक्टरी की किताबों में आँखों के जाने के साथ कहीं कोई सम्बन्ध नहीं मिलता. डाक्टर अनन्त रामन ने बहुत सी किताबों के नाम अपने ख़त में दिये हैं और लिखा है कि मैं बहुत आभारी हूँगा अगर सरकार मुझे यह बतावे कि इस बीमारी का और अंधे होने से सम्बन्ध किस किताब में मिलता है और यह कैसे होता है.

डाक्टर अनन्त रामन के ख़त का कोई जवाब सरकार की तरफ़ से नहीं मिल सका.

एक क़ानूनी सवाल

अब रहा यह सवाल कि सब बच्चों के इस तरह का टीका लगाना कहाँ तक क़ानून के अनुसार है और उसमें क्या-क्या अहतियातें ज़रूरी हैं. सरकार ने कोई क़ानून पास करा कर यह अधिकार नहीं लिया. कम से कम इतना उसे करना चाहिये था. कहा अभी तक यही जाता है कि यह टीका लाज़िमी नहीं है यानी ज़बरदस्ती किसी के नहीं लगाया जाता, जो चाहते हैं उन्हीं के लगता है. इस मामले में मुझे यह मालूम हुआ कि स्कूल के बच्चों के माँ बाप अगर लिखकर अपना ऐतराज़ स्कूल मास्टर के पास नहीं भेज देते तो यह फ़र्ज़ कर लिया जाता है कि उन्हें कोई ऐतराज़ नहीं है और वह चाहते हैं कि उनके बच्चों के टीका लगाया जाय. मैंने देखा कि यह तरीक़ा बिलकुल क़ानून के ख़िलाफ़ है. ख़ासकर एक ऐसे देश में जिसमें अधिकतर माँ बाप अनपढ़ हैं जिनके छोटे छोटे बच्चे स्कूलों में पढ़ते हैं. मैंने सरकार को लिखा. उसके जवाब में मद्रास सरकार के हैल्थ मिनिस्टर श्री ए. बी. शेटी का पहली जुलाई सन् 1955 का जो ख़त मेरे पास आया उसमें लिखा है कि :—

"मद्रास रियासत में स्कूलों के बच्चों के बी० सी० जी० का टीका लगाने की बाबत जो तरीक़ा बरता जाता है वह यह है. हर स्कूल में सब बच्चों के पहले तपेदिक़ का आज़माइशी टीका और फिर बी० सी० जी० का टीका लगाने के लिये तारीख़ें मुक़र्रर कर दी जाती हैं. फिर स्कूल

یہی وہ کمیٹی تھی جس کی رپورٹ نہیں چھاپی گئی پر جس سے نتیجہ وہی نکلا جو سرکار پہلے سے نکال چکی تھی ۔

سرکار کے پریس نوٹ کے بعد ڈاکٹر ایل' این' آننت رامن ایم بی کا ایک خط مدراس کے "هندو" اخبار میں شائع ہوا جس میں اُنہوں نے لکھا ہے کہ اول تو سرکار کو چاہئے تھا کہ اِس معاملے کے لئے جو تحقیقاتی کمیٹی سرکار نے مقرر کی تھی اُس میں کم سے کم ایک غیر سرکاری ڈاکٹر بھی رکھا جاتا ۔ دوسرے جس بیماری کا نام سرکار نے اپنے پریس نوٹ میں لیا ہے اور لکھا ہے کہ وسنت کو وہ بیماری ہوئی ہوگی اور اُسی سے اُس کی آنکھیں گئیں' اُس بیماری کا ڈاکٹری کی کتابوں میں آنکھوں کے جانے کے ساتھ کہیں کوئی سمبندھ نہیں ملتا ۔ ڈاکٹر اننت رامن نے بہت سی کتابوں کے نام اپنے خط میں دئے ہیں اور لکھا ہے کہ میں بہت آبھاری ہونگا اگر سرکار مجھے یہ بتاوے کہ اِس بیماری کا اور اندھے ہونے سے سمبندھ کس کتب میں ملتا ہے اور یہ کیسے ہوتا ہے ۔

ڈاکٹر اننت رامن کے خط کا کوئی جواب سرکار کی طرف سے نہیں مل سکا ۔

ایک قانونی سوال

اب رہا یہ سوال کہ سب بچوں کے اِس طرح کا ٹیکہ لگانا کہاں تک قانون کے انوسار ہے اور اُس میں کیا کیا احتیاطیں ضروری ہیں ۔ سرکار نے کوئی قانون پاس کرا کر یہ ادھیکار نہیں لیا ۔ کم سے کم اِتنا اُسے کرنا چاہئے تھا ۔ کہا ابھی تک یہی جاتا ہے کہ یہ ٹیکہ لازمی نہیں ہے یعنی زبردستی کسی کے نہیں لگایا جاتا' جو چاہتے ہیں اُنہیں کے لگتا ہے ۔ اِس معاملہ میں مجھے یہ معلوم ہوا کہ اسکول کے بچوں کے ماں باپ اگر لکھ کر اپنا اعتراض اسکول ماسٹر کے پاس نہیں بھیج دیتے تو یہ فرض کر لیا جاتا ہے کہ اُنہیں کوئی اعتراض نہیں ہے اور وہ چاہتے ہیں کہ اُن کے بچوں کے ٹیکہ لگایا جائے ۔ میں نے دیکھا کہ یہ طریقہ بالکل قانون کے خلاف ہے ۔ خاص کر ایک ایسے دیش میں جس میں ادھک تر ماں باپ اَن پڑھ ہیں جن کے چھوٹے چھوٹے بچے اسکولوں میں پڑھتے ہیں ۔ میں نے سرکار کو لکھا ۔ اِس کے جواب میں مدراس سرکار کے ہیلتھ منسٹر شری اے۔ بی۔ شیٹی کا پہلی جولائی سن 1955 کا جو خط میرے پاس آیا اُس میں لکھا ہے کہ:—

"مدراس ریاست میں اسکولوں کے بچوں کے بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ لگانے کی بابت جو طریقہ برتا جاتا ہے وہ یہ ہے۔ ہر اسکول میں بچوں کے پہلے تپ دق کا آزمائشی ٹیکہ اور پھر بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ لگانے کے لئے تاریخیں مقرر کردی جاتی ہیں۔ پھر اسکول

के अधिकारियों की मार्फ़त बच्चों के माँ बाप को उन तारीखों की पहले से सूचना दी जाती है और यह लिख दिया जाता है कि टीका लाज़िमी नहीं है. स्कूलों के अधिकारियों से कहा जाता है कि वह बच्चों के माँ बाप की रज़ामन्दी हासिल कर लें. जिन सरकारी अफ़सरों को टीके का काम सुपुर्द होता है वह फिर हेडमास्टर और स्कूल के दूसरे टीचरों से अलग अलग मिलते हैं या सब टीचरों की मीटिंग कर लेते हैं और उन्हें यह बता देते हैं कि टीका लगवाना माँ बाप की मरज़ी पर है और माँ बाप को पहले से सूचना दे देना ज़रूरी है. जो माँ बाप इस बात पर ऐतराज़ करते हैं कि उनके बच्चों के बी० सी० जी० का टीका न लगाया जाये वे या तो आज़माइशी टीके के दिन अपने बच्चों को स्कूल ही नहीं भेजते या स्कूल के अधिकारियों को अपना ऐतराज़ लिखकर भेज देते हैं.

इस पर मैंने (श्री सी. राजगोपालाचारी) 12 जुलाई सन् 1955 के मद्रास के अखबार 'इन्डियन ऐक्सप्रेस' में अपना एक खत शाया कराया जिसमें लिखा है :—

"मेरे पास मद्रास के हैल्थ मिनिस्टर का पहली जुलाई का लिखा एक खत आया है जिससे मेरा यह ख्याल पक्का हो गया कि जब बच्चों के मां बाप की तरफ़ से कोई लिखा हुआ ऐतराज़ नहीं आता तो यह फ़र्ज़ कर लिया जाता है कि वह अपने बच्चे के टीका लगवाने के लिये रज़ामन्द हैं. असलियत यह है कि स्कूल मास्टर को ही बच्चों के जिस्म और उनकी आत्मा का पूरा मुहाफ़िज़ मान लिया जाता है. यह बात हद दर्जे क़ानून के खिलाफ़ है. सरकार के क़ानूनी अफ़सरों का फ़र्ज़ है कि इस बात को सोचें कि उन्हें सरकार को यह सलाह देनी चाहिये या नहीं कि वह इस बेजा कार्रवाई से बाज़ रहे."

कोइमबटूर की घटनाएं

जब लोगों को मालूम हुआ कि मैं इस मामले में दिलचस्पी ले रहा हूँ तो लोगों ने कुछ घटनाएँ मुझे लिखकर भेजीं. उनमें से बहुत-सी मैं दैनिक अखबारों में शाया करा चुका हूँ ताकि सब उन्हें जान जायें. मैं कुछ घटनाएं नीचे देता हूँ. इनमें पहली दस घटनाएं सब कोइमबटूर की ही हैं.

(1) श्री जी. एम. कृष्ण राजा चेटियर ने मुझे लिखा कि :—

"मेरी छै साल की एक लड़की वसंत लन्दन मिशन स्कूल कोइमबटूर में पहली क्लास में पढ़ती थी. 18 नवम्बर सन् 1954 को उसके बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. उस वक्त तक वह बिलकुल तन्दुरुस्त थी और खूब बढ़ती थी. 3 दिसम्बर सन् 1954 को उसके दूसरा टीका चेचक का लगाया गया. इस दूसरे टीके के लगने के बाद मेरी लड़की अंधी हो गई. अधिकारियों ने बगैर मेरी रज़ामन्दी

کے ادھیکاریوں کی معرفت بچوں کے ماں باپ کو اُن تاریخوں کی پہلے سے سوچنا دی جاتی ہے اور یہ لکھ دیا جاتا ہے کہ ٹیکہ لازمی نہیں ہے۔ اسکولوں کے ادھیکاریوں سے کہا جاتا ہے کہ وہ بچوں کے ماں باپ کی رضامندی حاصل کر لیں۔ جن سرکاری افسروں کو ٹیکے کا کام سپرد ہوتا ہے وہ پھر ہیڈ ماسٹر اور اسکول کے دوسرے ٹیچروں سے الگ الگ ملتے ہیں یا سب ٹیچروں کی میٹنگ کر لیتے ہیں اور انہیں یہ بتا دیتے ہیں کہ ٹیکہ لگوانا ماں باپ کی مرضی پر ہے اور ماں باپ کو پہلے سے سوچنا دے دینا ضروری ہے۔ جو ماں باپ اِس بات پر اعتراض کرتے ہیں کہ اُن کے بچوں کے بی. سی. جی کا ٹیکہ نہ لگایا جائے وے یا تو آزمائشی ٹیکے کے دن اپنے بچوں کو اسکول ہی نہیں بھیجتے یا اسکول کے ادھیکاریوں کو اپنا اعتراض لکھ کر بھیج دیتے ہیں۔

اِس پر میں نے (شری سی. راجاگوپالاچاری نے) 12 جولائی سن 1955 کے مدراس کے اخبار 'انڈین ایکسپریس' میں اپنا ایک خط شائع کرایا جس میں لکھا ہے :—

"میرے پاس مدراس کے ہیلتھ منسٹر کا پہلی جولائی کا لکھا ایک خط آیا ہے جس سے میرا یہ خیال پکا ہوگیا کہ جب بچوں کے ماں باپ کی طرف سے کوئی لکھا ہوا اعتراض نہیں آتا تو یہ فرض کرلیا جاتا ہے کہ وہ اپنے بچے کے ٹیکہ لگوانے کے لئے رضامند ہیں۔ اصلیت یہ ہے کہ اسکول ماسٹر کو ہی بچوں کے جسم اور اُن کی آتما کا پورا محافظ مان لیا جاتا ہے۔ یہ بات حد درجے قانون کے خلاف ہے۔ سرکار کے قانونی افسروں کا فرض ہے کہ وہ اِس بات کو سوچیں کہ انہیں سرکار کو یہ صلاح دینی چاہئے یا نہیں کہ وہ اِس بیجا کاروائی سے باز رہے۔"

کوامبیٹور کی گھٹنائیں

جب لوگوں کو معلوم ہوا کہ میں اِس معاملے میں دلچسپی لے رہا ہوں تو لوگوں نے کچھ گھٹنائیں مجھے لکھ کر بھیجیں۔ اِن میں سے بہت سی میں دینک اخباروں میں شائع کرا چکا ہوں تاکہ سب انہیں جان جائیں۔ میں کچھ گھٹنائیں نیچے دیتا ہوں۔ ان میں پہلی دس گھٹنائیں سب کوامبیٹور کی ہیں۔

(1) شری جی. ایم. کرشن راجا چیٹیور نے مجھے لکھا کہ:—

"میری چھ سال کی ایک لڑکی وسنت لندن مشن اسکول کوامبیٹور میں پہلی کلاس میں پڑھتی تھی۔ 18 نومبر سن 1954 کو اُس کے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا۔ اُس وقت تک وہ بالکل تندرست تھی اور خوب بڑھتی تھی۔ 3 دسمبر سن 1954 کو اُس کے دوسرا ٹیکہ چیچک کا لگایا گیا۔ اِس دوسرے ٹیکے کے لگنے کے بعد میری لڑکی اندھی ہوگئی۔ ادھیکاریوں نے بغیر میری رضامندی

के स्कूल में मेरे बच्चे के टीके लगाये और उसी की वजह से मेरे बच्चे की आँखें जाती रहीं. मैंने मुक़ामी म्युनिस्पल अधिकारियों का ध्यान इस बात की तरफ़ दिलाया लेकिन कुछ न हुआ. मैं इस ख़त के साथ कोइमबटूर के सेनेट्री इन्सपैक्टर की रिपोर्ट और मैडिकल अफ़सर की रिपोर्ट दोनों आपको भेज रहा हूँ. मुझे नहीं मालूम कि मैं इस मामले में और क्या करूँ. यहाँ के डाक्टर यही कहते हैं कि अब मेरे बच्चे की आँखों का ठीक हो सकना नामुमकिन है."

(2) श्री सी. के. सुन्दर राजन ने मुझे एक ख़त में लिखा कि :—

"मेरी एक लड़की सात साल की और एक लड़का दो साल का दोनों के बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. तीन दिन के बाद दोनों के सारे जिस्म के ऊपर फोड़े निकल आये. हर तरह का इलाज किया गया लेकिन तीन महीने तक इन दोनों को बहुत सख्त तकलीफ़ रही. उनके कई इन्जैक्शन लगाये गये. तीसरे महीने में जाकर वह अच्छे हुए. दोनों अभी तक बहुत कमज़ोर चले जाते हैं."

(3) श्री एस. वर्दराज ने अपने ख़त में लिखा है कि :—

"जब से मेरे बी० सी० जी० का टीका लगाया गया है, मेरे बायें बाज़ू में बहुत सख्त दर्द होता है. कई तरह का इलाज किया पर अभी फ़ायदा नहीं हुआ. मैं बीस बरस की उम्र का जवान आदमी हूँ. मेरे एक माँ है, दो भाई हैं और दो बहनें हैं. मुझे ख़ुद काम करके सबको पालना पड़ता है."

(4) श्री बेलास्वामी चेटी लिखते हैं :—

"मेरी छै बरस की लड़की रुक्मिनी के बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. इस पर उसकी आँखें जाती रहीं. मुक़ामी सरकारी अस्पताल में इलाज कराया गया तो उसकी नज़र कुछ कुछ वापस आ गई. लेकिन वह अभी तक बहुत कमज़ोर है और उसका दिमाग़ भी अभी तक बिलकुल ठीक नहीं है."

(5) श्रीमती रंगम्माल लिखती हैं :—

"मेरी अठारह साल की लड़की सरसा के बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. उसी दिन से उसके सर दर्द और गले की ख़राबी शुरू हो गई. कुछ दिनों तक एक मुक़ामी डाक्टर से इलाज कराया गया. फिर उसी डाक्टर के कहने पर हम उस लड़की को सरकारी अस्पताल के आँख के सरजन के पास ले गये. आँख के सरजन ने कहा कि इसकी आँखों में कोई ख़राबी नहीं है. हम फिर पुराने डाक्टर के पास आ गये. उसके इलाज से कुछ थोड़ा-सा फ़ायदा मालूम हुआ. सर का दर्द और क़ै होना फिर भी जारी रहा. हम फिर एक आँख के अस्पताल में गये. वहां उसके ऐनक लगा दी गई. ऐनक लगाने से सर दर्द और क़ै दोनों और बढ़ गये. इसके बाद हम उसे फिर पहले ही वाले सरकारी अस्पताल में ले गये. वहां वह लड़की मर गई."

(6) श्री के. एस. गारादैया सेटी ने लिखा है :—

"मेरे छै साल के लड़के सीम सुन्दरम के बी० सी० जी०

کے اسکول میں میرے بچے کے ٹیکے لگائے اور اُسی کی وجہ سے میرے بچے کی آنکھیں جاتی رہیں. میں نے مقامی میونسپل ادھیکاریوں کا دھیان اِس بات کی طرف دلایا لیکن کچھ نہ ہوا. میں اِس خط کے ساتھ کوئمبٹور کے سینیٹری اِنسپکٹر کی رپورٹ اور میڈیکل افسر کی رپورٹ دونوں آپ کو بھیج رہا ہوں. مجھے نہیں معلوم کہ میں اس معاملے میں اور کیا کروں. یہاں کے ڈاکٹر یہی کہتے ہیں کہ اب میرے بچے کی آنکھوں کا ٹھیک ہوسکنا نامکن ہے."

(2) شری سی. کے. سندر راجن نے مجھے ایک خط میں لکھا کہ :—

"میری ایک لڑکی سات سال کی اور ایک لڑکا دو سال کا دونوں کے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا. تین دن کے بعد دونوں کے سارے جسم کے اوپر پھوڑے نکل آئے. ہر طرح کا علاج کیا گیا لیکن تین مہینے تک اِن دونوں کو بہت سخت تکلیف رہی. اُن کے کئی اِنجکشن لگائے گئے. تیسرے مہینے میں جاکر وہ اچھے ہوئے. دونوں ابھی تک بہت کمزور چلے جاتے ہیں."

(3) شری ایس. وردراج نے اپنے خط میں لکھا ہے کہ :—

"جب سے میرے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا ہے میرے بائیں بازو میں بہت سخت درد ہوتا ہے. کئی طرح کا علاج کیا پر ابھی فائدہ نہیں ہوا. میں بیس برس کی عمر کا جوان آدمی ہوں. میرے ایک ماں ہے، دو بھائی ہیں اور دو بہنیں ہیں. مجھے خود کام کرکے سب کو پالنا پڑتا ہے."

(4) شری بیلا سوامی چیٹی لکھتے ہیں :—

"میری چھ برس کی لڑکی رکمنی کے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا. اِس پر اُس کی آنکھیں جاتی رہیں. مقامی سرکاری اسپتال میں علاج کرایا گیا تو اُس کی نظر کچھ کچھ واپس آگئی. لیکن وہ ابھی تک بہت کمزور ہے اور اُس کا دماغ بھی ابھی تک بالکل ٹھیک نہیں ہے."

(5) شریمتی رنگم مال لکھتی ہیں :—

"میری اٹھارہ سال کی لڑکی سرسو کے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا. اُسی دن سے اُس کے سر درد اور گلے کی خرابی شروع ہوگئی. کچھ دنوں تک ایک مقامی ڈاکٹر سے علاج کرایا گیا. پھر اُسی ڈاکٹر کے کہنے پر ہم اُس لڑکی کو سرکاری اسپتال کے آنکھ کے سرجن کے پاس لے گئے. آنکھ کے سرجن نے کہا کہ اِس کی آنکھوں میں کوئی خرابی نہیں ہے. ہم پھر پرانے ڈاکٹر کے پاس آگئے. اُس کے علاج سے کچھ تھوڑا سا فائدہ معلوم ہوا. سر کا درد اور قے ہونا پھر بھی جاری رہا. ہم پھر ایک آنکھ کے اسپتال میں گئے. وہاں اُس کے عینک لگا دی گئی. عینک لگانے سے سر درد اور قے دونوں اور بڑھ گئے. اس کے بعد ہم اُسے پھر پہلے ہی والے سرکاری اسپتال میں لے گئے. وہاں وہ لڑکی مر گئی."

(6) شری کے. ایس. گورودیا سیٹی نے لکھا ہے :—

"میرے چھ سال کے لڑکے سوم سندرم کے بی. سی. جی.

का टीका लगाया गया. उसके हाथ से पीप आने लगी. तीन महीने तक उसे तकलीफ़ रही. उसके बाद उसने एक महीने तक एक डाक्टर से दवा ली तब वह अच्छा हो गया. लेकिन अभी तक कमज़ोर चला जाता है."

(7) श्री वाई. आर. नारायण स्वामी ने लिखा है :—

"मेरे लड़के जैरथ के पिछली नवम्बर में बी० सी० जी० का टीका लगाया गया था. उसी वक़्त से पीप पड़ गई जो अभी तक अच्छी नहीं हुई. मैंने हर तरह की दवाएं कीं लेकिन अभी तक वह अच्छा नहीं हुआ."

(8) श्री टी. एन. रामाचारी ने लिखा है कि :—

"मेरी तीन साल की लड़की भानुमती के जब से बी० सी० जी० का टीका लगाया गया था तब से ही उस जगह पर एक फोड़ा बन गया है जिससे पीप आती रहती है. वह फोड़ा अभी तक अच्छा नहीं हुआ. लड़की हर वक़्त दर्द से चिल्लाती रहती है. हम उसे कई डाक्टरों के पास ले गये, हेडक्वार्टर्स अस्पताल में भी ले गये और मदुराई अस्पताल में भी ले गये लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ."

(9) श्री सबन्ना गोंडन ने लिखा है :—

"मेरी डेढ़ साल की बच्ची पुनम्माल के बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. उससे उसे बुख़ार आ गया. एक डाक्टर से उसका इलाज कराया. वह एक हफ़्ते के अन्दर मर गई.'

(10) श्री वी. कुप्पू स्वामी ने लिखा है कि :—

"मेरे भाई वी. राम कृष्णन के, जिसकी उम्र साढ़े चार साल की है, बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. उस जगह पर उसके फोड़ा बन गया. हैडक्वार्टर्स अस्पताल में एक हफ़्ते इलाज कराया गया. कोई फ़ायदा नहीं हुआ. एक दूसरे डाक्टर से इलाज कराया. उससे भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ. आज तक वह फोड़ा वैसा ही है और उससे पीप बहती रहती है."

मैं लिख चुका हूँ कि ऊपर की दस की दस घटनाएँ सब एक ही जगह की यानी कोइमबटूर के शहर की हैं.

कुछ और ख़त

9 जुलाई सन् 1955 के हिन्दुस्तान टाइम्स में त्रिचि के डाक्टर आर-सम्बशिवन एम. बी. बी. एस. का एक ख़त छपा है *जिसमें लिखा है कि :—*

"मेरे इलाज में आजकल एक चौदह बरस का लड़का है जो मेरा अपना पोता है और जिसकी तन्दरुस्ती बिलकुल *बरबाद हो गई है. सन् 1954 में उसके बी० सी० जी० का टीका लगाया गया था. टीका लगाने के वक़्त उसकी तन्दरुस्ती* अव्वल दर्जे की थी—बहुत अच्छा मज़बूत जिस्म, ख़ूब शक्ति और बीमारियों को नज़दीक न फटकने देने वाला. उसे बहुत

کا ٹیکہ لگایا گیا ۔ اُس کے ہاتھ سے پیپ آنے لگی ۔ تین مہینے تک اُسے تکلیف رہی ۔ اُس کے بعد اُس نے ایک مہینے تک ایک ڈاکٹر سے دوا لی تب وہ اچھا ہوگیا ۔ لیکن ابھی تک کمزور چلا جاتا ہے ۔"

(7) شری وائی ۔ آر ۔ نارائن سوامی نے لکھا ہے :—

"میرے لڑکے جے رتھ کے پچھلی نومبر میں بی۔سی۔جی۔ کا ٹیکہ لگایا گیا تھا ۔ اُسی وقت سے پیپ پڑ گئی جو ابھی تک اچھی نہیں ہوئی ۔ میں نے ہر طرح کی دوائیں کیں لیکن ابھی تک وہ اچھا نہیں ہوا ۔"

(8) شری ٹی ۔ این ۔ راما چاری نے لکھا ہے کہ :—

"میری تین سال کی لڑکی بھانومتی کے جب سے بی ۔ سی ۔ جی ۔ کا ٹیکہ لگایا گیا تھا تب سے ہی اُس جگہ پر ایک پھوڑا بن گیا ہے جس سے پیپ آتی رہتی ہے ۔ وہ پھوڑا ابھی تک اچھا نہیں ہوا ۔ لڑکی ہر وقت درد سے چلاتی رہتی ہے ۔ ہم اُسے کئی ڈاکٹروں کے پاس لے گئے' ہیڈ کوارٹرس اسپتال میں بھی لے گئے اور مدورائی اسپتال میں بھی لے گئے لیکن کوئی فائدہ نہیں ہوا ۔"

(9) شری سبنا گونڈن نے لکھا ہے :—

"میری ڈیڑھ سال کی بچی پونمال کے بی ۔ سی ۔ جی ۔ کا ٹیکہ لگایا گیا ۔ اُس سے اُسے بخار آگیا ۔ ایک ڈاکٹر سے اُس کا علاج کرایا ۔ وہ ایک ہفتے کے اندر مر گئی ۔"

(10) شری وی ۔ کپو سوامی نے لکھا ہے کہ :—

"میرے بھائی وی ۔ رام ۔ کرشنن کے' جس کی عمر ساڑھے چار سال کی ہے' بی ۔ سی ۔ جی کا ٹیکہ لگایا گیا ۔ اُس جگہ پر اُس کے پھوڑا بن گیا ۔ ہیڈ کوارٹرس اسپتال میں ایک ہفتے علاج کرایا گیا ۔ کوئی فائدہ نہیں ہوا ۔ ایک دوسرے ڈاکٹر سے علاج کرایا ۔ اُس سے بھی کوئی فائدہ نہیں ہوا ۔ آج تک وہ پھوڑا ویسا ہی ہے اور اُس سے پیپ بہتی رہتی ہے ۔"

میں لکھ چکا ہوں کہ اوپر کی دس کی دس گھٹنائیں سب ایک ہی جگہ کی یعنی کوامبیٹور کے شہر کی ہیں ۔

کچھ اور خط

9 جولائی سن 1955 کے ہندستان ٹائمس میں تروچی کے ڈاکٹر آر ۔ سمب شون ایم ۔ بی ۔ بی ۔ ایس ۔ کا ایک خط چھپا ہے جس میں لکھا ہے کہ :—

"میرے علاج میں آجکل ایک چودہ برس کا لڑکا ہے جو میرا اپنا پوتا ہے اور جس کی تندرستی بالکل برباد ہوگئی ہے ۔ سن 1954 میں اُس کے بی ۔ سی ۔ جی ۔ کا ٹیکہ لگایا گیا تھا ۔ ٹیکہ لگانے کے وقت تک اُس کی تندرستی بالکل اول درجے کی تھی—بہت اچھا مضبوط جسم' خوب شکتی اور بیماریوں کو نزدیک نہ پھٹکنے دینے والا ۔ اُسے بہت

अच्छा खाना दिया जाता था. स्कूल के खेल वह खूब खेलता था. टीका लगने के समय से ही उसका बदन फफदना शुरू हो गया. लाल लाल चकत्तियाँ पड़ गईं. तब से अब तक उसके शरीर के अलग अलग भागों पर छोटे बड़े फोड़े बराबर निकलते रहते हैं. यह फोड़े मामूली ढंग से और मामूली समय के अन्दर अच्छे नहीं होते हालांकि इलाज ठीक-ठीक होता रहता है. अब कुछ फोड़ों पर से खुरंट उतर गये हैं. लेकिन खुरंटों के नीचे भी प्याले की शकल के फोड़े बने हुए हैं जिनमें चारों तरफ़ दाने से बनते रहते हैं. दूसरी ख़ास बात इन फोड़ों की यह है कि जबकि मामूली फोड़ों में सूजन फोड़े तक ही रहती है इन फोड़ों में फोड़ों के चारों तरफ़ कई इंच तक सूजन और वरम बना रहता है. जो भी हो, मैं अपनी-सी पूरी कोशिश कर रहा हूँ कि उस बच्चे को फिर से तन्दुरुस्त कर दूँ."

देहरादून से श्री विज्ञान प्रकाश लिखते हैं :—

"मैंने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में आपके लेख और ख़त इस विषय के पढ़े हैं कि बी० सी० जी० से कितना नुक़सान होता है. उन्हें पढ़कर मुझे साहस हुआ कि आप जैसे बड़े आदमी को ख़ुद अपने बेटे जैदेव का हाल लिखूँ. जैदेव की उम्र तेरह साल की है. साधोराम हायर सेकेन्ड्री स्कूल देहरादून में वह आठवीं क्लास में पढ़ता था. लगभग एक साल हुआ स्कूल में उसके बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. तब ही से उसकी तन्दरुस्ती गिरनी शुरू हो गई, यहां तक कि उसके फेफड़े ख़राब हो गये और ख़ून में जहर पैदा हो गया. उसे खांसी और दमा हुआ. मुझे डर है कि उसे तपेदिक़ हो गया है. उसका वजन घटता जा रहा है. अब तक उसका बारह पौंड वजन घट चुका है. मैं उसे चंडीगढ़ इलाज के लिये ले गया. वहां वह एक महीने से ऊपर कर्नल डी. भाटिया ओ. बी. ई. एफ़. आर. सी. एस. चीफ़ मैडिकल अफ़सर चंडीगढ़ के इलाज में रहा. कर्नल भाटिया की भी यही राय है कि उसे तपेदिक़ है. मैं बहुत दिनों वहां के इलाज का ख़र्च बरदाश्त नहीं कर सकता था. इसलिये मैं उसे देहरादून ले गया. वहां उसे कोई फ़ायदा भी नहीं हुआ. यहां स्कूल के हेडमास्टर की सलाह से और हेडमास्टर की चिट्ठी लेकर मैं उसे देहरादून के सिविल सर्जन के पास ले गया. सिविल सर्जन ने कोई परवाह नहीं की और न मेरे लड़के का डाक्टरी इम्तहान किया. मैं फिर एक दूसरे आदमी की मारफ़त सिविल सर्जन के पास गया इस बार अस्पताल में मैंने सोलह रुपया उनकी फ़ीस भी दे दी. उन्होंने मेरे लड़के को थोड़ा-सा देखकर एक नुसखा लिख दिया. अब मैं सिविल सर्जन ही की दवा दे रहा हूँ. सिविल सर्जन ने भी मुझ से यही कहा कि मुमकिन है मेरे लड़के को यह तकलीफ़ बी० सी० जी० के कारण ही हुई हो."

اچھا کھانا دیا جاتا تھا. اسکول کے کھیل وہ خوب کھیلتا تھا. ٹیکہ لگنے کے سمے سے ہی اُس کا بدن پھپھدنا شروع ہوگیا. لال لال چکتیاں پڑگئیں. تب سے اب تک اُس کے شریر کے الگ الگ بھاگوں پر چھوٹے بڑے پھوڑے برابر نکلتے رہتے ہیں. یہ پھوڑے معمولی ڈھنگ سے اور معمولی سمے کے اندر اچھے نہیں ہوتے حالانکہ علاج ٹھیک ٹھیک ہوتا رہتا ہے. اب کچھ پھوڑوں پر سے کھرنٹ اُتر گئے ہیں. لیکن کھرنٹوں کے نیچے بھی پیالے کی شکل کے پھوڑے بنے ہوئے ہیں جن میں چاروں طرف دانے سے بنتے رہتے ہیں. دوسری خاص بات اُن پھوڑوں کی یہ ہے کہ جب کہ معمولی پھوڑوں میں سوجن پھوڑے تک ہی رہتی ہے اِن پھوڑوں میں پھوڑوں کے چاروں طرف کئی انچ تک سوجن اور ورم بنا رہتا ہے. جو بھی ہو، میں اپنی سی پوری کوشش کررہا ہوں کہ اُس بچے کو پھر سے تندرست کردوں."

دھرادون سے شری وگیان پرکاش لکھتے ہیں :—

"میں نے 'ہندستان ٹائمس' میں آپ کے لیکھ اور خط اِس وشے کے پڑھے ہیں کہ بی. سی. جی سے کتنا نقصان ہوتا ہے. اُنہیں پڑھکر مجھے ساہس ہوا کہ آپ جیسے بڑے آدمی کو خود اپنے بیٹے جے دیو کا حال لکھوں. جےدیو کی عمر تیرہ سال کی ہے. سادھو رام ہائرسکنڈری اسکول دھرادون میں وہ آٹھویں کلاس میں پڑھتا تھا. لگ بھگ ایک سال ہوا اسکول میں اُس کے بی. سی. جی کا ٹیکہ لگایا گیا. تب ہی سے اُس کی تندرستی گرنی شروع ہو گئی، یہاں تک کہ اُس کے پھیپھڑے خراب ہوگئے اور خون میں زہر پیدا ہوگیا. اُسے کھانسی اور دمہ ہوا. مجھے ڈر ہے کہ اُسے تپ‌دق ہو گیا ہے. اُس کا وزن گھٹتا جا رہا ہے. اب تک اُس کا بارہ پونڈ وزن گھٹ چکا ہے. میں اُسے چنڈی گڑھ علاج کے لئے لے گیا. وہاں وہ ایک مہینے سے اوپر کرنل ڈی بھاٹیا او. بی. ای. ایف. آر. سی. ایس. چیف میڈیکل افسر چنڈی گڑھ کے علاج میں رہا. کرنل بھاٹیا کی بھی یہی رائے ہے کہ اُسے تپ‌دق ہے. میں بہت دنوں وہاں کے علاج کا خرچ برداشت نہیں کر سکتا تھا. اِس لئے میں اُسے دھرادون لے گیا. وہاں اُسے کوئی فائدہ بھی نہیں ہوا. یہاں اسکول کے ہیڈ ماسٹر کی صلاح سے اور ہیڈ ماسٹر کی چھٹی لے کر میں اُسے دھرادون کے سول سرجن کے پاس لے گیا. سول سرجن نے کوئی پرواہ نہیں کی اور نہ میرے لڑکے کا ڈاکٹری امتحان کیا. میں پھر ایک دوسرے آدمی کی معرفت سول سرجن کے پاس گیا. اِس بار اسپتال میں میں نے سولہ روپیہ اُن کی فیس بھی دے دی. اُنہوں نے میرے لڑکے کو تھوڑا سا دیکھ کر ایک نسخہ لکھ دیا. اب میں سول سرجن ہی کی دوا دے رہا ہوں. سول سرجن نے بھی مجھ سے یہی کہا کہ ممکن ہے میرے لڑکے کو یہ تکلیف بی. سی. جی کے کارن ہی ہوئی ہو."

एक बदक़िस्मत ज़िला अफ़सर का ख़त

अब मैं नीचे एक ऐसे आदमी का ख़त दे रहा हूँ जिसने ख़त में अपना नाम और पता लिख दिया है और जो सरकार के अधीन ज़िला-अफ़सर के पद पर है. उसने मुझे लिखा है कि :—

"आपने यह बहुत अच्छा किया कि गम्भीरता और बहादुरी के साथ तपेदिक़ के बी० सी० जी० के टीके के इस तरह अंधाधुन्धी सब के लगाये जाने का विरोध किया और उसे आप बुरा कह रहे हैं. मैं एक बाप हूँ जो इसी बी० सी० जी० की बदौलत अपना ग्यारह बरस का सुन्दर बेटा खो बैठा हूँ. मेरा बेटा सन् 1951 में यहाँ एक प्राइमरी स्कूल में पढ़ता था. बी० सी० जी० के हामियों और प्रचारकों ने इस स्कूल में टीका लगाये जाने का प्रबंध किया. मेरा बेटा यह कहकर स्कूल के कम्पाउन्ड से भाग आया कि 'मैं बिना अपने बाप की इजाज़त के यह टीका नहीं लगवा सकता, नहीं तो मेरे बाप मुझे मारेंगे'. उसे ज़बरदस्ती पकड़कर खींचकर अन्दर ले जाया गया और टीका लगा दिया गया. उसके शायद ख़सरा निकलने वाली थी. चौथे या पाँचवें दिन उसके ख़सरा निकल आई. उसे ज़ोर का बुख़ार आ गया. उसका टैम्परेचर एक-सो-नौ तक पहुँच गया. उसे मेननजायटीज़ और निमोनिया भी साथ साथ हो गये. दूसरे ही दिन यानी 4 अप्रैल सन् 1951 को वह मर गया. उसकी मौत मेरी पत्नी की मौत के ठीक एक साल बाद हुई. मेरी पत्नी की मौत दूसरी बीमारी के कारण हुई थी. इस तरह मुझ पर दोहरी मुसीबत आई. बी० सी० जी० का टीका लगने से पहले मेरा लड़का ख़ूब तन्दरुस्त था और खेलता था. लेकिन और बातों को छोड़ दीजिये, जैसे यह कि टीका लागने से पहले माता पिता से इजाज़त ले लेना ज़रूरी है. इस टीके के लगाने में यह भी नहीं देखा जाता कि बच्चों को कोई लगनी बीमारी तो होने वाली नहीं है. मैं चाहता हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आप को बड़ी उम्र दे और तन्दरुस्त रक्खे ताकि आप बेगुनाह बच्चों के ऊपर इन ग़ैर ज़रूरी और अंधाधुन्ध टीकों के ख़िलाफ़ लड़ सकें."

मैं उस आदमी का नाम इसलिये नहीं दे रहा हूँ कि वह सरकारी नौकर है और ऐसा न हो कि नाम देने से इस अभागे बाप पर एक तीसरी मुसीबत आ पड़े.

कुछ और घटनाएँ

नीचे की घटनाएँ 12 जुलाई सन् 1955 के मद्रास के अख़बार "इन्डियन ऐक्सप्रेस" में छप चुकी हैं :—

1—चिंगलपट के श्री एन. कृष्ण स्वामी पिल्ले के 18 साल के बेटे बाल सुबरमनियन के स्कूल में बी० सी० जी०

ایک بدقسمت ضلع افسر کا خط

اب میں نیچے ایک ایسے آدمی کا خط دے رہا ہوں جس نے خط میں اپنا نام اور پتہ لکھ دیا ہے اور جو سرکار کے آدھین ضلع افسر کے پد پر ہے . اُس نے مجھے لکھا ہے کہ:—

"آپ نے یہ بہت اچھا کیا کہ گمبھیرتا اور بہادری کے ساتھ تپدق کے بی. سی. جی کے ٹیکے کے اِس طرح اندھا دھندی سب کے لگائے جانے کا وِرودھ کیا اور اُسے آپ برا کہہ رہے ہیں . میں ایک باپ ہوں جو اِسی بی. سی. جی کی بدولت اپنا گیارہ برس کا سندر بیٹا کھو چکا ہوں . میرا بیٹا سن 1951 میں یہاں ایک پرائمری اسکول میں پڑھتا تھا . بی. سی. جی کے حامیوں اور پرچارکوں نے اُس اسکول میں ٹیکہ لگائے جانے کا پربندھ کیا . میرا بیٹا یہ کہکر اسکول کے کمپاؤنڈ سے بھاگ آیا کہ 'میں بنا اپنے باپ کی اجازت کے یہ ٹیکہ نہیں لگوا سکتا' نہیں تو میرے باپ مجھے مارینگے . اُسے زبردستی پکڑ کر کھینچ کر اندر لے جا یا گیا اور ٹیکہ لگا دیا گیا . اُس کے شاید خصرہ نکلنے والی تھی. چوتھے یا پانچویں دن اُس کے خصرہ نکل آئی . اُسے زور کا بخار آ گیا . اُس کا ٹمپریچر ایک سو نو تک پہنچ گیا . اسے مینِنجائیٹیز اور نیمونیہ بھی ساتھ ساتھ ہو گئے . دوسرے دن یعنی 4 اپریل سن 1951 کو وہ مر گیا. اُس کی موت میری پتنی کی موت کے ٹھیک ایک سال بعد ہوئی . میری پتنی کی موت دوسری بیماری کے کارن ہوئی تھی . اِس طرح مجھ پر دوہری مصیبت آئی . بی. سی. جی کا ٹیکہ لگنے سے پہلے میرا لڑکا خوب تندرست تھا اور کھیلتا تھا . لیکن اور باتوں کو چھوڑ دیجئے' جیسے یہ کہ ٹیکہ لگانے سے پہلے ماتا پتا سے اجازت لے لینا ضروری ہے . اِس ٹیکے کے لگانے میں یہ بھی نہیں دیکھا جا تا کہ بچوں کو کوئی لگنی بیماری تو ہونے والی نہیں ہے . میں چاہتا ہوں اور بھگوان سے پرارتھنا کرتا ہوں کہ آپ کو بڑی عمر دے اور تندرست رکھے تاکہ آپ بے گناہ بچوں کے اوپر اِن غیر ضروری اور اندھا دھند ٹیکوں کے خلاف لڑ سکیں ."

میں اُس آدمی کا نام اِس لئے نہیں دے رہا ہوں کہ وہ سرکاری نوکر ہے اور ایسا نہ ہو کہ نام دینے سے اِس ابھاگے باپ پر ایک تیسری مصیبت آپڑے .

کچھ اور گھٹنائیں

نیچے کی گھٹنائیں 12 جولائی سن 1955 کے مدارس کے اخبار "انڈین ایکسپریس" میں چھپ چکی ہیں :—

چنگل پٹ کے شری این کرشن سوامی پلے کے 18 سال کے بیٹے بال سبرمنین کے اسکول میں بی. سی. جی

का टीका लगाया गया. यह पिछले मार्च-अप्रैल की बात है. बाल सुबरमनियन चौथी क्लास में पढ़ता था तब ही से उसकी तन्दुरुस्ती गिरती जा रही है. अब वह अक्सर क़ै करता रहता है. सर में सख्त दर्द रहता है. आँख की रोशनी बहुत खराब हो गई है. चक्कर आते रहते हैं. कभी-कभी बेहोश हो जाता है. दिमाग़ कुछ-कुछ खराब हो चला है. कभी-कभी बोलना बन्द हो जाता है. वज़न कम होता जा रहा है. वह अपने मां बाप का इकलौता लड़का है. मां बाप बहुत परेशान हैं. 3 जुलाई से उसे इलाज के लिये सरकारी अस्पताल में दाखिल कर दिया गया है.

2—माइकल एन्थनी अब औंध कैम्प पूना के फ़ौजी अस्पताल में है. उसे बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. तपेदिक़ हो गया. नौकरी से जाता रहा और अब अस्पताल में बहुत बीमार है. जब उसके टीका लगाया गया तब वह बंगलौर के एक फ़ौजी दफ़्तर में काम कर रहा था. इससे पहले वह बिलकुल तन्दुरुस्त था. उसके घर में कभी किसी को तपेदिक़ नहीं हुआ था. उसने मुझे (श्री राजागोपालाचारी को) एक बहुत दुख और ग़ुस्से से भरा हुआ ख़त लिखा है कि यह विदेशी "दुनिया भर के तन्दुरुस्ती के माहिर" बन कर आते हैं. उनके सामने ही उसके टीका लगाया गया था.

3—श्री एम. एस. फ़क़ीर कोइमबटूर के एक बीड़ी के कारखाने में मजदूरी करता है. उसके एक ढाई बरस के बच्चे के 18 दिसम्बर सन् 1954 को बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. आँख की रोशनी खराब हो गई और तन्दुरुस्ती गिरती गई

लोदी कालोनी दिल्ली से श्री प्रीतसिंह ने 20 जुलाई सन् 1955 को मुझे यह ख़त लिखा :—

"मैं नीचे आपको इस बात का पूरा हाल लिख रहा हूँ कि मेरे बेटे पर बी० सी० जी० के टीके का किस तरह बुरा असर पड़ा. मेरे लड़के का नाम उदयवीर सिंह है. उसकी उम्र साढ़े नौ साल की थी वह उस वक़्त बहुत तन्दुरुस्त था. अगस्त सन् 1953 में स्कूल में उसके बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. हमारी बदक़िस्मती से अगले दिन ही उसके एक तरह कि गिल्टियाँ निकल आईं और गर्दन पर सूजन आ गई. मैंने एक होम्योपैथिक डाक्टर को दिखाया. उसके इलाज से बच्चे को बहुत आराम मिला. पर ठीक एक साल के बाद वही चीज फिर और ज्यादा जोर के साथ निकल आई. अब मेरे बच्चे की हालत खतरनाक हो गई. 8 सितम्बर सन् 1954 को मैंने नई दिल्ली के सफ़दरजंग अस्पताल में उसका ऐक्सरे कराया. एक्सरे से मालूम हुआ कि बायें फेफड़े में तपेदिक़ हो गया है और फेफड़ों के बीच की गिल्टियाँ बढ़ गई हैं. लड़के को नई दिल्ली के इरविन

کا ٹیکہ لگایا گیا۔ یہ پچھلے مارچ اپریل کی بات ھے۔ بال سبر منین چوتھی کلاس میں پڑھتا تھا تب ھی سے اسکی تندرستی گرتی جا رھی ھے۔ اب وہ اکثر قے کرتا رھتا ھے۔ سر میں سخت درد رھتا ھے۔ آنکھ کی روشنی بہت خراب ھو گئی ھے۔ چکر آتے رھتے ھیں۔ کبھی کبھی بےھوش ھو جاتا ھے۔ دماغ کچھ کچھ خراب ھو چلا ھے۔ کبھی کبھی بولنا بند ھو جاتا ھے۔ وزن کم ھوتا جا رھا ھے۔ وہ اپنے ماں باپ کا اِکلوتا لڑکا ھے۔ ماں باپ بہت پریشان ھیں۔ 3 جولائی سے اُسے علاج کے لئے سرکاری اسپتال میں داخل کر دیا گیا ھے۔

2—مائکل اِنتھنی اب اوندھ کیمپ پونا کے فوجی اسپتال میں ھے۔ اُسے بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ لگایا گیا۔ تپ دق ھو گیا۔ نوکری سے جاتا رھا اور اب اسپتال میں بہت بیمار ھے۔ جب اُس کے ٹیکہ لگایا گیا تب وہ بنگلور کے ایک فوجی دفتر میں کام کر رھا تھا۔ اِس سے پہلے وہ بالکل تندرست تھا۔ اُسکے گھر میں کبھی کسی کو تپ دق نہیں ھوا تھا۔ اُس نے مجھے (شری راجا گوپالاچاری کو) ایک بہت دکھ اور غصے سے بھرا ھوا خط لکھا ھے کہ یہ ودیشی "دنیا بھر کے تندرستی کے ماھر" بن کر آتے ھیں۔ اُن کے سامنے ھی اُس کے ٹیکہ لگایا تھا۔

3—شری ایم۔ ایس۔ فقیر کوامبیٹور کے ایک بیڑی کے کارخانے میں مزدوری کرتا ھے۔ اُس کے ایک ڈھائی برس کے بچے کے 18 دسمبر سن 1954 کو بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ لگایا گیا۔ آنکھ کی روشنی خراب ھو گئی اور تندرستی گرتی گئی۔
لودی کالونی دلی سے شری پریت سنگھ نے 20 جولائی سن 1955 کو مجھے یہ خط لکھا:—

"میں نیچے آپ کو اِس بات کا پورا حال لکھ رھا ھوں کہ میرے بیٹے پر بی۔ سی۔ جی کے ٹیکے کا کسی طرح برا اثر پڑا۔ میرے لڑکے کا نام اُدے ویرسنگھ ھے۔ اُس کی عمر ساڑھے نو سال کی تھی۔ وہ اُس وقت بہت تندرست تھا۔ اگست سن 1953 میں اسکول میں اُس کے بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ لگایا گیا۔ ھماری بدقسمتی سے اگلے دن ھی اُس کے ایک طرح کی گلٹیاں نکل آئیں اور گردن پر سوجن آگئی۔ میں نے ایک ھومیوپیتھک ڈاکٹر کو دکھایا۔ اُس کے علاج سے بچے کو بہت آرام ملا۔ پر ٹھیک ایک سال کے بعد وھی چیز پھر اور زیادہ زور کے ساتھ نکل آئی۔ اب میرے بچے کی حالت خطرناک ھو گئی۔ 8 ستمبر سن 1954 کو میں نے نئی دلی کے صفدر جنگ اسپتال میں اُس کا ایکسرے کرایا۔ ایکسرے سے معلوم ھوا کہ بائیں پھیپھڑے میں تپ دق ھو گیا ھے اور پھیپھڑوں کے بیچ کی گلٹیاں بڑھ گئی ھیں۔ لڑکے کو نئی دلی کے اِروِن

अस्पताल में भेजा गया. वहाँ पूरी तरह इम्तहान हुआ. 18 सितम्बर सन् 1954 को उन्होंने कहा कि गर्दन में तपेदिक़ की गिल्टियाँ हैं. उन्होंने ताक़त की दवाएँ और विटामिन खिलाने की सलाह दी और अल्ट्रावायालेट किरनों का इलाज बताया. यह सब इलाज हो चुकने के बाद भी अभी तक वह पूरी तरह ठीक नहीं हुआ. हमारे घर में आज तक कभी किसी को तपेदिक़ नहीं हुआ था. इस मामले में हमें काफ़ी परेशानी हुई और जेरबार होना पड़ा—यह सब बी० सी० जी० के टीके की बदौलत. कई बरस से यह टीका इतना अंधा-धुंधी से लगाया जा रहा है कि अक्सर उससे जो फ़ायदा सोचा जाता है उसकी निस्बत नुक़सान ज्यादा होता है. सरकार को समझाने की ज़रूरत है. इस सब की रोक थाम होनी चाहिए."

हमारे बच्चों पर खतरनाक तजरबा

यह छोटी सी किताब अभी अंग्रेजी में छप ही रही थी कि मदनपल्ली के यूनियन मिशन ट्यूबरक्युलोसिस अस्पताल के सुपरिन्टैन्डैन्ट डाक्टर फ्रैडमूट मूलर ने अपने सेनिटोरियम के काम की चरचा करते हुए यह बयान दिया कि :—"बी० सी० जी० का टीका कहाँ तक बच्चों को बाद में तपेदिक़ की बीमारी से बचा सकता है, इस पर जब तक अभी काफ़ी वक़्त न निकल जाये और नतीजों को न देख लें तब तक अभी हम कुछ नहीं कह सकते." यह एक बहुत ही तजरबेकार और ज़िम्मेवार डाक्टर का बयान है, जिसमें शब्दों को तोल तोलकर रक्खा गया है. हमारे लिये यह काफ़ी अर्थ रखता है. यह बात बिलकुल पक्की है कि हिन्दुस्तान में बी० सी० जी० के टीके लगाने की जो यह तहरीक चल रही है यह किसी बीमारी के रोकने का कोई आजमाया हुआ तरीक़ा नहीं है, यह एक बड़े पैमाने पर हमारे बच्चों पर एक खतरनाक तजरबा किया जा रहा है, जिसे किसी तरह जायज नहीं कहा जा सकता.

اسپتال میں بھیجا گیا۔ وہاں پوری طرح امتحان ہوا. 18 ستمبر سن 1954 کو اُنہوں نے کہا کہ گردن میں تپ‌دق کی گلٹیاں ہیں ۔ اُنہوں نے طاقت کی دوائیں اور وٹامن کھلانے کی صلاح دی اور اُلٹرا وایولیٹ کرنوں کا علاج بتایا ۔ یہ سب علاج ہو چکنے کے بعد بھی ابھی تک وہ پوری طرح ٹھیک نہیں ہوا ۔ ہمارے گھر میں آج تک کبھی کسی کو تپ‌دق نہیں ہوا تھا ۔ اِس معاملے میں ہمیں کافی پریشانی ہوئی اور زیربار ہونا پڑا—یہ سب بی۔ سی۔ جی کے ٹیکے کی بدولت ۔ کئی برس سے یہ ٹیکہ اتنے اندھا دھندی سے لگایا جا رہا ہے کہ اکثر اُس سے جو فایدہ سوچا جاتا ہے اُس کی نسبت نقصان زیادہ ہوتا ہے ۔ سرکار کو سمجھانے کی ضرورت ہے ۔ اِس سب کی روک تھام ہونی چاہئے ۔"

ہمارے بچوں پر خطرناک تجربہ

یہ چھوٹی سی کتاب ابھی انگریزی میں چھپ ہی رہی تھی کہ مدن‌پلی کے یونین مشن‌ٹیوبرکیولوسس اسپتال کے سپرنٹنڈنٹ ڈاکٹر فریڈ موٹ مولر نے اپنے سینی‌ٹوریم کے کام کی چرچا کرتے ہوئے یہ بیان دیا کہ:—"بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ کہاں تک بچوں کو بعد میں تپ‌دق کی بیماری سے بچا سکتا ہے، اِس پر جب تک ابھی کافی وقت نہ نکل جائے اور نتیجوں کو نہ دیکھ لیں تب تک ابھی ہم کچھ نہیں کہہ سکتے۔" یہ ایک بہت ہی تجربے کار اور ذمہ‌وار ڈاکٹر کا بیان ہے، جس میں شبدوں کو تول تول کر رکھا گیا ہے ۔ ہمارے لئے یہ کافی ارتھ رکھتا ہے ۔ یہ بات بالکل پکی ہے کہ ہندستان میں بی۔ سی۔ جی کے ٹیکے لگانے کی جو یہ تحریک چل رہی ہے یہ کسی بیماری کو روکنے کا کوئی آزمایا ہوا طریقہ نہیں ہے، یہ ایک بڑے پیمانے پر ہمارے بچوں پر ایک خطرناک تجربہ کیا جا رہا ہے، جسے کسی طرح جائز نہیں کہا جا سکتا ۔

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

किसी ने मुहम्मद साहब से पूछा:—"ऐ अल्लाह के रसूल! ईमान क्या है?" पैग़म्बर ने जवाब दिया—"जब किसी नेक काम के करने से तुम्हें ख़ुशी हो, और बुरा काम करने से तुम्हें दुख हो तब समझो कि तुम 'मोमिन' यानी ईमान वाले हो." उस आदमी ने फिर पूछा—"और गुनाह क्या है?" उन्होंने जवाब दिया—"जब कोई चीज़ अन्दर ही अन्दर तुम्हें कोंचती हो तो उसे मत करो."

—अबु उमामा, अहमद.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"सचमुच उस आदमी का कोई ईमान नहीं जो किसी के साथ विश्वासघात करता है, और उसका कोई दीन नहीं जो अपने वादों को पूरा नहीं करता."

——अनस, बेहक़ी.

मैंने पूछा—'इसलाम क्या है?" पैग़म्बर ने जवाब दिया—"ज़बान को पाक रखना और मेहमान की ख़ातिर करना."

मैंने पूछा—"ईमान क्या है?" पैग़म्बर ने जवाब दिया—"सब्र करना और दूसरों के साथ भलाई करना."

—अमरू, अहमद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"दूसरों को दुख पहुँचाने से अपने को रोकना ईमान है; मोमिन को चाहिये कि किसी को दुख न पहुँचाए.

—अबु हुरैरा, अबुदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"जो आदमी झूठ बोलना नहीं छोड़ता और जो इसी तरह के दूसरे बुरे कामों से बाज़ नहीं आता उसके खाना और पानी छोड़ कर रोज़ा रखने की अल्लाह को कोई ज़रूरत नहीं है."

—अबु हुरैरा, बुख़ारी

मुहम्मद साहब ने कहा:—"तुमसे पहले जो क़ौमें हुई हैं वह इसलिये बरबाद हुईं कि जब उनमें से किसी बड़े घराने का आदमी चोरी करता था तो वह उसे सज़ा नहीं देते थे, और जब उनमें से कोई कमज़ोर या ग़रीब आदमी चोरी करता था तो उसे वह सज़ा देते थे. अल्लाह की

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

کسی نے محمد صاحب سے پوچھا—"اے الله کے رسول! ایمان کیا ھے؟' پیغمبر نے جواب دیا—'جب کسی نیک کام کے کرنے سے تمہیں خوشی ہو' اور برا کام کرنے سے تمہیں دکھ ہو تب سمجھو کہ تم 'مومن' یعنی ایمان والے ہو." اس آدمی نے پھر پوچھا—"اور گناہ کیا ھے؟" انہوں نے جواب دیا—"جب کوئی چیز اندر ھی اندر تمہیں کوچتی ہو تو اسے مت کرو."

—ابوامامہ' احمد.

محمد صاحب نے کہا:—"سچ مچ اس آدمی کا کوئی ایمان نہیں جو کسی کے ساتھ وشواس گھات کرتا ھے' اور اس کا کوئی دین نہیں جو اپنے وعدوں کو پورا نہیں کرتا."

—انس' بیہقی.

میں نے پوچھا—"اسلام کیا ھے؟" پیغمبر نے جواب دیا—"زبان کو پاک رکھنا اور مہمان کی خاطر کرنا."

میں نے پوچھا—"ایمان کیا ھے؟" پیغمبر نے جواب دیا—"صبر کرنا اور دوسروں کے ساتھ بھلائی کرنا."

—امرو' احمد.

محمد صاحب نے کہا:—"دوسروں کو دکھ پہونچانے سے اپنے کو روکنا ایمان ھے؛ مومن کو چاھئے کہ کسی کو دکھ نہ پہونچائے."

—ابوھریرہ' ابوداؤد.

محمد صاحب نے کہا:—"جو آدمی جھوٹ بولنا نہیں چھوڑتا اور جو اسی طرح کے دوسرے برے کاموں سے باز نہیں آتا اس کے کھانا اور پانی چھوڑ کر روزہ رکھنے کی الله کو کوئی ضرورت نہیں ھے."

—ابوھریرہ' بخاری.

محمد صاحب نے کہا:—"تم سے پہلے جو قومیں ہوئی ھیں وہ اس لئے برباد ہوئیں کہ جب ان میں سے کسی بڑے گھرانے کا آدمی چوری کرتا تھا تو وہ اسے سزا نہیں دیتے تھے' اور جب ان میں سے کوئی کمزور یا غریب آدمی چوری کرتا تھا تو اسے وہ سزا دیتے تھے. الله کی

क़सम ! चोरी करने वाली चाहे मुहम्मद की बेटी फ़ातमा ही क्यों न हो मैं उसके हाथ काट लूँगा."

—आयशा, बुख़ारी: मुसलिम: अबुदाऊद: तिरमिज़ी: नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"तुममें से किसी को इतना बेवक़ूफ़ नहीं होना चाहिये कि वह कहे कि—'मैं लोगों के साथ रहूँगा, अगर लोग मेरे साथ भलाई करेंगे तो मैं उनके साथ भलाई करूँगा, और वह अगर मेरे साथ बुराई करेंगे तो मैं उनके साथ बुराई करूँगा.' इसके ख़िलाफ़ तुम्हें इस तरह समझ से काम लेना चाहिये कि अगर लोग तुम्हारे साथ नेकी करें तो तुम भी उनके साथ नेकी करो और वह अगर तुम्हारे साथ बुराई करें तो तुम उनके साथ बुराई करने से बचो."

—हुज़ैफ़ा, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—सचमुच किसी भी पेशवा या लीडर के लिये यह ज्यादा अच्छा है कि वह ग़लती से किसी को माफ़ कर दे बजाय इसके कि वह ग़लती से किसी को सज़ा दे."

—आयशा, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मूसा ने अल्लाह से पूछा—'ऐ मेरे अल्लाह ! तेरी नज़रों में तेरे बन्दों में सब से ज्यादा इज्जत के क़ाबिल कौन हैं ?' अल्लाह ने जवाब दिया—'वह जिसमें बदला लेने की शक्ति है और फिर भी वह माफ़ कर देता है."

—अबु हुरैरा, बेहक़ी.

मैंने पैग़म्बर की तलवार के कबजे पर यह शब्द खुदे हुये देखे:—"जो तुम्हें नुक़सान पहुंचाए उसे तुम माफ़ कर दो; जो अपने से तुम्हें काटकर अलग करे उससे तुम मेल करो; जो तुम्हारे साथ बुराई करे उसके साथ तुम नेकी करो, और हमेशा सच बोलो चाहे वह 'बात तुम्हारे ही ख़िलाफ़ क्यों न हो,"

—अली, रज़ीन.

एक आदमी ने रसूल से आकर कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं अपने नौकर को कितनी बार माफ़ करूँ ?" मुहम्मद साहब चुप रहे. उस आदमी ने अपने सवाल को तीन बार दुहराया. इस पर मुहम्मद साहब ने कहा—"अपने नौकर को दिन में सत्तर बार माफ़ करो."

—इब्न उमर, अबुदाऊद: तिरमिज़ी.

قسم ! چوری کرنے والی چاہے محمد کی بیٹی فاطمہ ہی کیوں نہ ہو میں اُس کے ہاتھ کاٹ لونگا ."

—عائشہ' بخاری : مسلم : ابوداؤد : ترمذی : نسائی .

محمد صاحب نے کہا :—"تم میں سے کسی کو اتنا بیقوف نہیں ہونا چاہئے کہ وہ کہے کہ—'میں لوگوں کے ساتھ رہونگا' اگر لوگ میرے ساتھ بھلائی کرینگے تو میں اُن کے ساتھ بھلائی کرونگا' اور وہ اگر میرے ساتھ برائی کرینگے تو میں اُن کے ساتھ برائی کرونگا .' اِس کے خلاف تمہیں اِس طرح سمجھ سے کام لینا چاہئے کہ اگر لوگ تمہارے ساتھ نیکی کریں تو تم بھی اُن کے ساتھ نیکی کرو اور وہ اگر تمہارے ساتھ برائی کریں تو تم اُن کے ساتھ برائی کرنے سے بچو ."

—حذیفہ' ترمذی .

محمد صاحب نے کہا :—"سچ مچ کسی بھی پیشوا یا لیڈر کے لئے یہ زیادہ اچھا ہے کہ وہ غلطی سے کسی کو معاف کر دے بجائے اِس کے کہ وہ غلطی سے کسی کو سزا دے ."

—عائشہ' ترمذی .

محمد صاحب نے کہا :—"موسیٰ نے اللہ سے پوچھا—'اے میرے اللہ ! تیری نظروں میں تیرے بندوں میں سب سے زیادہ عزت کے قابل کون ہے ؟' اللہ نے جواب دیا—'وہ جس میں بدلہ لینے کی شکتی ہے اور پھر بھی وہ معاف کردیتا ہے ."

—ابوہریرہ' بیہقی .

میں نے پیغمبر کی تلوار کے قبضہ پر یہ شبد کھدے ہوئے دیکھے:—"جو تمہیں نقصان پہونچائے اُسے تم معاف کردو؛ جو اپنے سے تمہیں کاٹ کر الگ کرے اس سے تم میل کرو؛ جو تمہارے ساتھ برائی کرے اُس کے ساتھ تم نیکی کرو؛ اور ہمیشہ سچ بولو چاہے وہ بات تمہارے ہی خلاف کیوں نہ ہو ."

—علی' رزین .

ایک آدمی نے رسول سے آکر کہا—"اے اللہ کے رسول ! میں اپنے نوکر کو کتنی بار معاف کروں ؟" محمد صاحب چپ رہے . اُس آدمی نے اپنے سوال کو تین بار دہرایا . اِس پر محمد صاحب نے کہا—"اپنے نوکر کو دن میں ستر بار معاف کرو ."

—اِبن عمر' ابوداؤد: ترمذی

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

मुहम्मद साहब ने कहा:—"सब मख़लूक़ (प्राणी) अल्लाह का कुनबा हैं और इस कुनबे में अल्लाह को सबसे ज्यादा प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुनबे के साथ भलाई करता है."

—अनस और अब्दुल्ला, बेहक़ी

मुहम्मद साहब ने कहा—"ऐ अबुज़र ! किसी भी नेक काम को हिक़ारत की निगाह से न देखो चाहे वह अपने किसी भाई से केवल हंसकर बोलना ही क्यों न हो."

—अबुज़र, बुख़ारी; मुसलिम; तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"भूखों को खाना खिलाओ, बीमारों को देखने जाओ और ग़ुलामों और क़ैदियों को आज़ाद करो."

अबूमूसा, बुख़ारी, अबुदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"क़यामत के दिन अल्लाह कहेगा—'ऐ आदमी के बेटे ! मैं बीमार था और तू मुझे देखने नहीं आया, आदमी जवाब देगा—'ऐ मेरे अल्लाह ! तू तो सारी दुनिया का मालिक है. मैं तुझे देखने कैसे आ सकता था ?' अल्लाह कहेगा—'क्या तुझे यह मालूम नहीं था कि मेरे बन्दों में से फ़लां बन्दा बीमार था और तू उसे देखने नहीं गया ? क्या तू यह नहीं जानता था कि अगर तू उसे देखने जाता तो बिला शक मुझे उसके पास पाता ?' अल्लाह फिर कहेगा—'ऐ आदमी के बेटे ! मैंने तुझसे खाना मांगा था और तूने मुझे खाना नहीं दिया था.' आदमी जवाब देगा—'ऐ मेरे अल्लाह ! तू तो सारी दुनिया का मालिक है मैं तुझे खाना कैसे दे सकता था ?' अल्लाह कहेगा—'क्या तू यह नहीं जानता था कि मेरे फ़लां बन्दे ने तुझसे खाना मांगा था और तूने उसे खाना नहीं दिया था ? क्या तू यह नहीं जानता था कि अगर तू उसे खाना देता तो बिला शक वह खाना मुझे पहुंचता ?' अल्लाह फिर कहेगा—'ऐ आदमी के बेटे ! मैंने तुझसे पानी मांगा था और तूने मुझे पानी पीने को नहीं दिया.' आदमी जवाब देगा —'ऐ मेरे अल्लाह ! तू तो सारी दुनिया का मालिक है मैं तुझे पानी कैसे दे सकता था ?' अल्लाह कहेगा—'मेरे फ़लां बन्दे ने तुझ से पानी मांगा था और तूने उसे पानी नहीं दिया. बिलाशक अगर तू उसे पानी पीने को देता तो वह पानी मुझे पहुँचता'."

—अबुहुरैरा, मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"नेक विचार ही अच्छी इबादत हैं."

—अबुहुरैरा, अबुदाऊद: अहमद

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

محمد صاحب نے کہا :—" سب مخلوق (پرانی) اللہ کا
ہ ہیں اور اِس کنبے میں اللہ کو سب سے زیادہ پیارا وہ ہے
و اللہ کے اِس کنبے کے ساتھ بھلائی کرتا ہے ."

— انس اور عبداللہ' بیہقی .

محمد صاحب نے کہا—"اے ابوذر ! کسی بھی نیک کام
حقارت کی نگاہ سے نہ دیکھو چاہے وہ اپنے کسی بھائی سے کیول
س کر بولنا ہی کیوں نہ ہو ."

—ابوذر' بخاری؛ مسلم؛ ترمذی .

محمد صاحب نے کہا:—بھوکوں کو کھانا کھلاؤ' بیماروں کو
کھنے جاؤ اور غلاموں اور قیدیوں کو آزاد کرو ."

—ابو موسیٰ' بخاری: ابوداؤد .

محمد صاحب نے کہا:—"قیامت کے دن اللہ کہے گا—'اے آدمی
بیٹے ! میں بیمار تھا اور تو مجھے دیکھنے نہیں آیا .' آدمی جواب
ے گا—'اے میرے اللہ ! تو تو ساری دنیا کا مالک ہے. میں تجھے
کھنے کیسے آسکتا تھا ؟' اللہ کہے گا—'کیا تجھے یہ معلوم نہیں
کہ میرے بندوں میں سے فلاں بندہ بیمار تھا اور تو اُسے دیکھنے
ہیں گیا ؟ کیا تو یہ نہیں جانتا تھا کہ اگر تو اسے دیکھنے جاتا
بلاشک مجھے اُس کے پاس پاتا ؟" اللہ پھر کہے گا—'اے
می کے بیٹے ! میں نے تجھ سے کھانا مانگا تھا اور تونے مجھے
نا نہیں دیا تھا .' آدمی جواب دے گا . 'اے میرے اللہ !
تو ساری دنیا کا مالک ہے میں تجھے کھانا کیسے دے سکتا
؟' اللہ کہے گا—'کیا تو یہ نہیں جانتا تھا کہ میرے فلاں
دے نے تجھ سے کھانا مانگا تھا اور تونے اُسے کھانا نہیں دیا تھا ؟
ا تو یہ نہیں جانتا تھا کہ اگر تو اُسے کھانا دیتا تو بلاشک وہ
نا مجھے پہنچتا ؟' اللہ پھر کہے گا—'اے آدمی کے بیٹے !
ں نے تجھ سے پانی مانگا تھا اور تونے مجھے پانی پینے کو
یں دیا .' آدمی جواب دے گا—'اے میرے اللہ تو تو ساری
یا کا مالک ہے میں تجھے پانی کیسے دے سکتا تھا ؟' اللہ
ے گا—'میرے فلاں بندے نے تجھ سے پانی مانگا تھا اور تونے
ے پانی نہیں دیا . بلاشک اگر تو اُسے پانی پینے کو دیتا تو
پانی مجھے پہنچتا ."

—ابو ھریرہ' مسلم .

محمد صاحب نے کہا نیک وچار ہی اچھی عبادت
ں ."

—ابو ھریرہ' ابو داؤد: احمد .

मुहम्मद साहब ने कहा:—"अगर मोमिन को यह मालूम हो जाय कि अल्लाह उसके गुनाहों की क्या सज़ा देगा तो कोई मोमिन जन्नत की आशा न रखेगा; और अगर काफ़िर को यह मालूम हो जाय कि अल्लाह कितना रहीम है तो कोई काफ़िर जन्नत से नाउम्मीद नहीं होगा."

—अबुहुरैरा, बुख़ारी: मुसलिम.

—अनुवादक मुजीब रिज़वी

محمد صاحب نے کہا:—"اگر مومن کو یہ معلوم ہو جائے کہ اللہ اُس کے گناہوں کی کیا سزا دے گا تو کوئی مومن جنت کی آشا نہ رکھیگا؛ اور اگر کافر کو یہ معلوم ہوجائے کہ اللہ کتنا رحیم ہے تو کوئی کافر جنت سے نا امید نہیں ہوگا."

—ابو ہریرہ، بخاری: مسلم.

—انوادک مجیب رضوی

आवारा शायर !

श्री अली अकबर आम्बूरी

बाबू साहिबान, प्रणाम ! अरे ! आप लोग ख़ामोश क्यों है ? प्रणाम का अर्थ नहीं जानते ? जिस ज़बान को हमारी हुकूमत ने सरकारी ज़बान बनाया है. उसे जानना तो हर भारती का फ़र्ज़ है. ख़ैर न जानो न सही, लाखों में आप दोनों के नम्बर शामिल हो गये तो क्या हो गया ?

मुझे देखो, अंग्रेज़ी, बंगला, मराठी, गुजराती, सिन्धी, उर्दू, फ़ारसी, हिंदी यह सभी ज़बानें जानता हूँ. मगर किसी भी ज़बान का "डिप्लोमा होल्डर" (Diploma-holder) नहीं हूँ. वैसे ही एक एक करके सीख ली थी. इन्तहा यह कि उर्दू का शायर भी हूँ. 'जोश' मलीहाबादी नहीं, 'मख़दूम' मुहीउद्दीन भी नहीं और 'अल्ताफ़' मशहदी तो हूँ ही नहीं बल्कि एक मामूली शायर हूँ. सनअती कारीगरी भी जानता हूँ. इन तमाम फ़नून के जानने के बावजूद भी आज सुबह से भूखा हूँ. अरे ! आप लोग चौंक क्यों गये ? इसलिये कि मैं आप से कुछ मांगूँगा ? इतमीनान रखिये साहबान, मैं आप से कुछ भी नहीं मांगूंगा.

आज इतवार है. शहर की लगभग सभी दूकानें बन्द हैं. छुट्टी जो है ना ? और मैंने भी अपने पेट को छुट्टी दे रक्खी है. आप लोग पार्क में शायद तफ़रीह के लिये आये हैं. मैं भी इसी ग़रज़ से आया हूँ. आप लोगों को इस जगह बैठे देखकर ख़्याल हुआ चलो कुछ देर बातों से दिल बहला लें. जान पहचान नहीं तो क्या हुआ ? अपना तआर्रुफ़ आप ख़ुद करा लेंगे. यानी कि अदीबों की ज़बान में अपनी डफ़ली आप ख़ुद बजा लेंगे. अरे ! आप लोग हँसते हैं. हँसिये साहब, ख़ूब हँसिये, मुझे उसकी परवाह नहीं. शायद

آوارہ شاعر !

شری علی اکبر آمبوری

بابو صاحبان، پرنام ! ارے ! آپ لوگ خاموش کیوں ہیں؟ "پرنام کا ارتھ نہیں جانتے ؟ جس زبان کو ہماری حکومت نے سرکاری زبان بنایا ہے، اُسے جاننا تو ہر بھارتی کا فرض ہے. خیر نہ جانو سہی، لاکھوں میں آپ دونوں کے نمبر شامل ہوگئے تو کیا ہوگیا ؟

مجھے دیکھو، انگریزی، بنگلا، مراٹھی، گجراتی، سندھی، اُردو، فارسی، ہندی یہ سبھی زبانیں جانتا ہوں. مگر کسی بھی زبان کا "ڈپلوما ہولڈر" (Diploma-holder) نہیں ہوں. ویسے ہی ایک ایک کرکے سیکھ لی تھی. انتہا یہ کہ اُردو کا شاعر بھی ہوں. 'جوش' ملیح آبادی نہیں، 'مخدوم' محی الدین بھی نہیں اور 'الطاف' مشہدی تو ہوں ہی نہیں بلکہ ایک معمولی شاعر ہوں. صنعتی کاریگری بھی جانتا ہوں. اِن تمام فنون کے جاننے کے باوجود بھی آج صبح سے بھوکھا ہوں. ارے ! آپ لوگ چونک کیوں گئے ؟ اِس لئے کہ میں آپ سے کچھ مانگونگا ؟ اطمینان رکھئے صاحبان، میں آپ سے کچھ بھی نہیں مانگونگا.

آج اِتوار ہے. شہر کی لگ بھگ سبھی دوکانیں بند ہیں. چھٹی جو ہے نا ؟ اور میں نے بھی اپنے پیٹ کو چھٹی دے رکھی ہے. آپ لوگ اِس پارک میں شاید تفریح کے لئے آئے ہیں. میں بھی اِسی غرض سے آیا ہوں. آپ لوگوں کو اِس جگہ بیٹھے دیکھکر خیال ہوا. چلو کچھ دیر باتوں سے دل بہلاؤں. جان پہچان نہیں تو کیا ہوا ؟ اپنا تعارف آپ خود کرالیں گے. یعنی کہ ادیبوں کی زبان میں اپنی ڈفلی آپ خود بجا لینگے. ارے ! آپ لوگ ہنستے ہیں. ہنسئے صاحب، خوب ہنسئے. مجھے اُس کی پرواہ نہیں. شاید

आप लोग मुझे नीम पागल समझते हैं. पूरा पागल ही समझिये. आखिर शायर जो ठहरा.

हूँ ! मैं अपना तआरुफ़ कराना तो भूल ही गया. यों ही एंडी बेंडी बकता जा रहा हूँ. मैं एक शरीफ़ खान्दान का चश्मो-चिराग़ हूँ. देहली मेरा जन्म-भूमि है, यानी कि जाये पैदाइश. जब से होश संभाला, अपने आपको आज़ादी का रसिया पाया. सन् 1947 ई० से पहले मेरे वलवले इतने जवान थे कि कुछ पूछो नहीं. मैंने हसूले आज़ादी में जाँ-तोड़ कोशिश की. इस सिलसिले में मुझे जेल भी भेजा गया. जेल में चक्की पीसते-पीसते साहब, हाथों में छाले पड़ गये और जो "मुहज़्ज़ब लोग" मेरे साथ जेल भेजे गये, उन्हें जेल में भी रेलवे कम्पार्टमेंट की तरह "फ़स्ट क्लास" मिली और भारत आज़ाद होने के बाद उन्हें जागीरें भी दी गईं. लेकिन मैं ? एक मामूली इनसान जो ठहरा. मेरी बिसात ही क्या ?

फिर भी मुझे इतनी ख़ुशी तो ज़रूर है कि कुछ न सही, हिन्दुस्तान आज़ाद तो हो गया. मैं अपनी फ़िक्र करूँ ही क्यों ? मैं दिन में एक-दो वक़्त के लिये भूखा भी रहूँ तो क्या बिगड़ गया जब कि अनगिनत इन्सान फ़ुट-पाथ की "पाक फ़िज़ा" में दिन भर भूखे पड़े रहते हैं. कभी कहीं से कुछ मिल गया तो खा लेते हैं. उनका ऐसा करना साइंस की रू से ठीक ही तो है. पेट के लिये ज़्यादा खाना मेदे की ख़राबी का बाइस बनता है और……

क्या कहा ? मेरा पेशा ? साहब ! यों ही दर बदर की ठोकरें खाता फिरता हूँ, जैसे आजकल के ग्रैजुएट और डबल एम. ए. नौकरी की तलाश में मारे-मारे फिरते हैं. उन्हें नौकरी देगा भी कौन साहब ? वह तो नौकरी में नवाबगीरी करना चाहते हैं. "ख़ुद करदा रा इलाजे नेस्त." मैं ठहरा एक आवारा शायर. यों तो आजकल के अदीब और शायर में बहुतेरे अदब-फ़रोश होते हैं मगर मेरी ख़ुददारी मुझे यह बनने नहीं देती. अगर मैं अदब-फ़रोश बनना भी चाहूँ तो कोई मेरी रचनायें अपने परचे में शाया नहीं करेगा. क्योंकि मेरी शायरी ख़ुश्क है जिसमें रंगीनी नहीं, उर्यानियत नहीं और ऐसी चीज़ नहीं जिसे हमारे पाठक चाहते हैं. आख़िर एक मामूली शायर जो ठहरा. और इसके अलावा……

आँ…यह रेडियो पर कौनसा रेकार्ड बज रहा है ? "आजा मेरे बालमा तेरा इन्तज़ार है." न जाने हमारे फ़िल्मी शायर ऐसे गाने क्यों लिखते हैं ? फिर भी इसमें उन बेचारों का क्या क़सूर है. फ़िल्मी ना-ख़ुदाओं की मर्ज़ी है. वह जैसा चाहते हैं फ़िल्मी शायर वसी तरह लिखते हैं. यही क्या कम है कि उर्यां और फ़ोश फ़िल्में बनाने में हमारी मौजूदा फ़िल्म इन्डस्ट्री दूसरे मुमालिक से बाज़ी लेगई है. हमारी हुकूमत को ख़ुद भी इस बात का फ़ख़्र है कि ऐन्टर-टेनमेन्ट टैक्स (entertainment tax) लाखों के

آپ لوگ مجھے نیم پاگل سمجھتے ہیں۔ پورا پاگل ہی سمجھئے۔ آخر شاعر جو ٹھہرا۔

ہوں ! میں اپنا تعارف کرانا تو بھول ہی گیا۔ یوں ہی اینڈی بینڈی بکتا جا رہا ہوں۔ میں ایک شریف خاندان کا چشم و چراغ ہوں۔ دہلی میری جنم بھومی ہے، یعنی کہ جائے پیدائش۔ جب سے ہوش سنبھالا اپنے آپ کو آزادی کا رسیا پایا۔ سن 1947ع سے پہلے میرے ولولے اتنے جوان تھے کہ کچھ پوچھو نہیں۔ میں نے حصول آزادی میں جاں توڑ کوشش کی۔ اس سلسلے میں مجھے جیل بھی بھیجا گیا۔ جیل میں چکی پیستے پیستے صاحب، ہاتھوں میں چھالے پڑ گئے اور جو "مہذب لوگ" میرے ساتھ جیل بھیجے گئے، انہیں جیل میں بھی ریلوے کمپارٹمنٹ کی طرح "فرسٹ کلاس" ملی اور بھارت آزاد ہونے کے بعد انہیں جاگیریں بھی دی گئیں۔ لیکن میں ؟ ایک معمولی انسان جو ٹھہرا۔ میری بساط ہی کیا ؟

پھر بھی مجھے اتنی خوشی تو ضرور ہے کہ کچھ نہ سہی، ہندستان آزاد تو ہوگیا۔ میں اپنی فکر کروں ہی کیوں ؟ میں دن میں ایک دو وقت کے لئے بھوکا بھی رہوں تو کیا بگڑ گیا جب کہ انگنت انسان فٹ پاتھ کی "پاک فضا" میں دن بھر بھوکے پڑے رہتے ہیں۔ کبھی کہیں سے کچھ مل گیا تو کھالیتے ہیں۔ ان کا ایسا کرنا سائنس کی رو سے ٹھیک ہی تو ہے۔ پیٹ کے لئے زیادہ کھانا معدے کی خرابی کا باعث بنتا ہے اور...

کیا کہا ؟ میرا پیشہ ؟ صاحب ! یوں ہی در بدر کی ٹھوکریں کھاتا پھرتا ہوں، جیسے آجکل کے گریجوئیٹ اور ڈبل ایم۔ اے۔ نوکری کی تلاش میں مارے مارے پھرتے ہیں۔ انہیں نوکری دیگا بھی کون صاحب ؟ وہ تو نوکری میں نوابگیری کرنا چاہتے ہیں۔ "خود کردہ را علاجے نیست۔" میں ٹھہرا ایک آوارہ شاعر۔ یوں تو آجکل کے ادیب اور شاعر میں بہتیرے ادب فروش ہوتے ہیں مگر میری خودداری مجھے یہ بننے نہیں دیتی۔ اگر میں ادب فروش بننا بھی چاہوں تو کوئی میری رچنائیں اپنے پرچے میں شائع نہیں کریگا۔ کیونکہ میری شاعری خشک ہے جس میں رنگینی نہیں، عریانیت نہیں اور ایسی چیز نہیں جسے ہمارے پاٹھک چاہتے ہیں۔ آخر ایک معمولی شاعر جو ٹھہرا۔ اور اس کے علاوہ...

آں...... یہ ریڈیو پر کونسا ریکارڈ بج رہا ہے ؟ "آجا میرے بالما تیرا انتظار ہے۔" نہ جانے ہمارے فلمی شاعر ایسے گانے کیوں لکھتے ہیں ؟ پھر بھی اس میں ان بیچاروں کا کیا قصور ہے۔ فلمی ناخداؤں کی مرضی ہے۔ وہ جیسا چاہتے ہیں فلمی شاعر اسی طرح لکھتے ہیں۔ یہی کیا کم ہے کہ عریاں اور فحش فلمیں بنانے میں ہماری موجودہ فلم انڈسٹری دوسرے ممالک سے بازی لے گئی ہے۔ ہماری حکومت کو خود بھی اس بات کا فخر ہے کہ انٹرٹینمینٹ ٹیکس (entertainment tax) لاکھوں کے

हिसाब में जमा हो जाता है. मैं पूछता हूँ क्या रूस और चीन में फ़िल्मी सनअत से इतनी आमदनी होती है? खूब अकड़ते हैं अपनी सयासी पालिसी पर……

क्या कहा? मैं बड़ा दिलचस्प आदमी हूँ? शुक्रिया साहब, बेवक़ूफ़ कहने के बजाय दिलचस्प आदमी का ख़िताब दिया कोई बात नहीं अगर आप मुझे बेवक़ूफ़ भी कह देते तो मेरा बिगड़ता ही क्या? बिगड़ने की तो खूब रही, अव्वल तो मुझे गुस्सा ही नहीं आता. आख़िर किसी पर गुस्सा करके भी क्या फ़ायदा? गुस्सा तो वह लोग करते हैं जिनके पास धन-दौलत की इफ़रात है, जिनके मातहत कई नौकर-चाकर काम करते हैं और जिनकी तोंदें बनस्पति घी से बने लजीज खानों से मोटी रहती हैं. न मेरे पास दौलत है, न नौकर और न ही मैं बनस्पति घी से बनी कोई चीज खाता हूँ. बनस्पति घी—सुना है इससे बनी चीज बहुत ही अच्छी और बहुत ही मजेदार होती है. आख़िर हमारी सरकार से सरटीफ़िकेट हासिल की हुई चीज जो ठहरी!, बक़ौल कसे यह और बात है कि "बनस्पति घी के इस्तेमाल से तीसरी पुश्त में औलाद अंधी पैदा होने लगती है. तीसरी पुश्त—जहन्नुम में जाये, हमें क्या और हमारी सरकार को क्या!

अरे, आप लोग उठने लगे? शायद चाय पीने का वक़्त आ गया. मैं चाय पीने का आदी नहीं हूँ साहब. हूँ! चाय में रक्खा ही क्या है? अगर एक प्याली चाय के पैसे रहे तो एक रूखी सूखी रोटी खा लेता हूँ. चवन्नी रही तो एक वक़्त का खाना मिल जाता है, चाहे अध-पेट ही क्यों न हो. इस वक़्त तो जेब बिलकुल "एम्पटी" (empty) है. न आज रूखी सूखी रोटी ही मिलेगी और न ही आधापेट खाना!

ऐं, यह क्या? अठन्नी! मुझे माफ़ कीजिये साहब. मैं ग़रीब जरूर हूँ मगर भिखारी नहीं. आवारा शायर हूँ, बेकस हूँ, मेरा दुनिया में कोई नहीं, दर बदर की ठोकरें खाता फिरता हूँ, फिर भी खुद्दार हूँ. अठन्नी देकर आप शायद मेरी खुद्दारी को ठेस पहुँचाना चाहते हैं. आप इस अठन्नी के बत्तीस पाव आने बत्तीस भिखारियों में बाँट दीजिये साहब.

अच्छा साहब, तसलीम! आपकी निवाज़िश का शुक्रिया.

حساب میں جمع هو جاتا هے . میں پوچھتا هوں کیا روس اور چین میں فلمی صنعت سے اِتنی آمدنی هوتی هے ؟ خوب اکڑتے هیں اپنی سیاسی پالیسی پر……

کیا کہا ؟ میں بڑا دلچسپ آدمی هوں ؟ شکریہ صاحب' بیوقوف کہنے کے بجائے دلچسپ آدمی کا خطاب دیا . کوئی بات نہیں . اگر آپ مجھے بیوقوف بھی کہ دیتے تو میرا بگڑتا هی کیا ؟ بگڑنے کی تو خوب رهی' اوّل تو مجھے غصہ هی نہیں آتا . آخر کسی پر غصہ کرکے بھی کیا فائدہ ؟ غصہ تو وہ لوگ کرتے هیں جن کے پاس دھن دولت کی افراط هے' جن کے ماتحت کئی نوکر چاکر کام کرتے هیں اور جن کی توندیں بنسپتی گھی سے بنے لذیذ کھانوں سے موٹی رهتی هیں . نہ میرے پاس دولت هے' نہ نوکر اور نہ هی میں بنسپتی گھی سے بنی کوئی چیز کھاتا هوں . بنسپتی گھی—سنا هے اِس سے بنی چیز بہت هی اچھی اور بہت هی مزیدار هوتی هے . آخر هماری سرکار سے سرٹیفکیٹ حاصل کی هوئی چیز جو ٹھہری ! بقول کسے یہ اور بات هے کہ "بنسپتی گھی کے استعمال سے تیسری پشت میں اولاد اندھی پیدا هونے لگتی هے." تیسری پشت— جہنم میں جائے' همیں کیا اور هماری سرکار کو کیا !

ارے' آپ لوگ اُٹھنے لگے ؟ شاید چائے پینے کا وقت آگیا . میں چائے پینے کا عادی نہیں هوں صاحب . هوں ! چائے میں رکھا هی کیا هے ؟ اگر ایک پیالی چائے کے پیسے رهے تو ایک روکھی سوکھی روٹی کھا لیتا هوں . چونی رهی تو ایک وقت کا کھانا مل جاتا هے' چاهے ادھ پیٹ هی کیوں نہ هو . اِس وقت تو جیب بالکل "ایمپٹی" (empty) هے . نہ آج روکھی سوکھی روٹی هی ملیگی اور نہ هی آدھ پیٹ کھانا !

ایں' یہ کیا ؟ اٹھنی ! مجھے معاف کیجئے صاحب . میں غریب ضرور هوں' مگر بھکاری نہیں . آوارہ شاعر هوں' بیکس هوں' میرا دنیا میں کوئی نہیں' دربدر کی ٹھوکریں کھاتا پھرتا هوں' پھر بھی خوددار هوں . اٹھنی دیکر آپ شاید میری خودداری کو ٹھیس پہونچانا چاهتے هیں . آپ اِس اٹھنی کے بتیس پاؤ آنے بتیس بھکاریوں میں بانٹ دیجئے صاحب .

اچھا صاحب' تسلیم ! آپکی نوازش کا شکریہ .

दोस्ती और कलचरी सहयोग की राह पर

श्री व्लेडिमिर याकोवलेव

हिन्दुस्तान के दरिया उस देश की भूमि को धोते हुए और वहाँ के उपजाऊ मैदानों में हर साल नई जान डालते हुए अथाह हिन्द महासागर में अनन्त जल उँडेलते रहते हैं. रूस के बड़े-बड़े दरिया बीच रूस से जन्म लेकर दक्खिन के गरम समन्दरों में या उत्तर के बर्फ़ीले महासागर में अपने को खाली करते रहते हैं.

रूस के दरिया चारों तरफ़ को बहते हैं और कौन जाने कहाँ भारत के गंगाजल की एक बूँद रूस के वोल्गा (Volga) या यैनिस्सी (Yenissi) नदी की एक बूँद के साथ मिलकर उस बड़ी धार में मिल जाती है जो सब महाद्वीपों के किनारों को धोती रहती है और जिसकी तरी सारी दुनिया को जीवन देती है.

इन दोनों देशों की अलग अलग कलचरें बेहद शानदार और मालामाल हैं. उनमें से हर एक की बाबत बहुत कुछ कहा जा सकता है. उनके बाहरी रंग रूप अलग-अलग हैं. पर यह अलग-अलग क़ौमी कलचरें मिलकर एक दूसरे को मालामाल करती हैं और एक दूसरे की कमी को पूरा करती हैं. इसके बाद भारत की कलचर और रूस की कलचर दोनों अपने सुन्दर चमकते हुए रंगों को एक दूसरे के अन्दर ताने बाने की तरह मिलाकर एक ऐसा सुन्दर गुलदस्ता बना देती हैं जिसे हम सारी इनसानी क़ौम के लिये एक मिली-जुली कलचर यानी इनसानी कलचर या मानव संस्कृति कह सकते हैं.

नेहरू ने अपनी किताब "डिसकवरी ऑफ़ इन्डिया" में लिखा है—"पुराने जमाने में हिन्दुस्तान का यही तरीक़ा रहा है कि वह दूसरी कलचरों का स्वागत करके उन्हें अपने में मिलाता रहा है. आज इसकी और भी ज्यादा जरूरत है. क्योंकि कल हम दुनिया भर की उस एकता की तरफ़ बढ़ने वाले हैं जहाँ पहुँच कर सब अलग-अलग राष्ट्रों की अलग-अलग कलचरें सारी इनसानी क़ौम की एक अन्तर्राष्ट्रीय कलचर में मिलकर एक हो जावेंगी. इसलिये जरूरी है कि हमें जहाँ से भी अच्छी बातें, इल्म, जानकारी, दोस्ती और सहयोग मिल सके हम उसका स्वागत करें और जो बड़े-बड़े काम सारी इनसानी क़ौम के भले के हैं उनमें हम सबके साथ मिलकर कोशिश करें."

دوستی اور کلچری سہیوگ کی راہ پر

شری ولیڈیمیر یاکوولیو

ہندستان کے دریا اُس دیش کی بھومی کو دھوتے ہوئے اور ...ہاں کے اُپجاؤ میدانوں میں ہر سال نئی جان ڈالتے ہوئے ...ہاہ ہند مہاساگر میں اَننت جل اُنڈیلتے رہتے ہیں ۔ روس کے ...ے بڑے دریا بیچ روس سے جنم لیکر دکھن کے گرم سمندروں ...وں یا اُتر کے برفیلے مہاساگر میں اپنے کو خالی کرتے رہتے ہیں۔

روس کے دریا چاروں طرف کو بہتے ہیں اور کون جانے ...ہاں بھارت کے گنگا جل کی ایک بوند روس کے وولگا (Volga) ...یونسی (Yenisse) ندی کی ایک بوند کے ساتھ مل کر ...س بڑی دھار میں مل جاتی ہو جو سب مہادیپوں کے کناروں ...و دھوتی رہتی ہے اور جس کی تری ساری دنیا کو جیون ...یتی ہے ۔

اِن دونوں دیشوں کی الگ الگ کلچریں بےحد ...اندار اور مالا مال ہیں ۔ اُن میں سے ہر ایک کی بابت بہت ...چھ کہا جاسکتا ہے ۔ اُن کے باہری رنگ روپ الگ الگ ہیں۔ ...یہ الگ الگ قومی کلچریں مل کر ایک دوسرے کو مالا مال ...رتی ہیں اور ایک دوسرے کی کمی کو پورا کرتی ہیں ۔ اِس ...ے بعد بھارت کی کلچر اور روس کی کلچر دونوں اپنے سندر ...مکتے ہوئے رنگوں کو ایک دوسرے کے اندر تانے بانے کی طرح ...لا کر ایک ایسا سندر گلدستہ بنادیتی ہیں جسے ہم ساری ...نسانی قوم کے لئے ایک ملی جلی کلچر یعنی اِنسانی کلچر ...مانو سنسکرتی کہہ سکتے ہیں ۔

نہرو نے اپنی کتاب "ڈسکوری آف انڈیا" میں لکھا ہے — ...پرانے زمانے میں ہندستان کا یہی طریقہ رہا ہے کہ وہ دوسری ...لچروں کا سواگت کرکے اُنہیں اپنے میں ملاتا رہا ہے ۔ آج اِس ...ی اور بھی زیادہ ضرورت ہے ۔ کیونکہ کل ہم دنیا بھر کی اُس ...یکتا کی طرف بڑھنے والے ہیں جہاں پہونچ کر سب الگ الگ ...اشٹروں کی الگ الگ کلچریں ساری اِنسانی قوم کی ایک ...نترراشٹریہ کلچر میں مل کر ایک ہوجاوینگی۔ اِس لئے ضروری ...ے کہ ہمیں جہاں سے بھی اچھی باتیں' علم - جانکاری - دوستی ...ور سہیوگ مل سکے ہم اُس کا سواگت کریں اور جو بڑے بڑے ...م ساری اِنسانی قوم کے بھلے کے ہیں اُن میں ہم سب کے ...اتھ مل کر کوشش کریں ."

भारत के प्रधान मन्त्री की इस किताब का रूसी तर्जुमा इस साल निकल चुका है. रूस के लोगों ने इन वाक्यों को पढ़ा. हर रूसी नेहरू की इस बात के साथ सहमत है. सोवियत रूस के लोगों के दिल और दिमाग़ और भारत के लोगों के दिल और दिमाग़ इस बात के लिये पूरी तरह खुले हुए हैं कि हम भाई-भाई की तरह एक दूसरे से विचारों और रूहानी सच्चाइयों का लेन-देन करें.

लैनिन ने हमें यह तालीम दी थी कि हक़ीक़ी सोशलिस्ट कलचर की तामीर उस समय तक नहीं की जा सकती जब तक कि हम उस सारी रूहानी दौलत से अपने को मालामाल न कर लें जो इनसानी क़ौम ने आज तक पैदा की है. इसलिये हम क़ौमों क़ौमों के बीच बड़े से बड़े पैमाने पर कलचरी लेन देन के हक़ में हैं. हमें यह दिखाई दे रहा है कि इससे न केवल अलग अलग देशों और अलग-अलग क़ौमों की अपनी-अपनी राष्ट्रीय संस्कृतियाँ ही और अधिक मालामाल होंगी, बल्कि हम एक दूसरे को भी अधिक अच्छी तरह समझ सकेंगे और देशों देशों के बीच दोस्ती बढ़ सकेगी.

सोवियत यूनियन और भारत के बीच मित्रता और हर तरह के सहयोग के सम्बन्ध क़ायम हो चुके हैं. हमारे कलचरी नाते बढ़ते जा रहे हैं. हमारा एक दूसरे के साथ सम्बंध केवल ज़बानी बातों में ही नहीं अमली कामों में भी गहरा और मज़बूत होता जा रहा है.

इस साल जनवरी में भारत सरकार की दावत पर भारत पहुँच कर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई थी. हमारे डैलीगेशन के नेता रूसी शायर ऐलेक्सी सुरकोव (Alexi Surkov) थे. वह एक कलचरल डैलीगेशन था. हम इस पक्के विश्वास को लेकर रूस वापस आये कि भारत के लोगों के दिल सोवियत रूस के लोगों के साथ मित्रता के भावों से भरे हुए हैं. भारत के लोग रूस के लोगों के साथ कलचरी सहयोग को बढ़ाना और अधिक मज़बूत करना चाहते हैं. 'वोक्स' नामी रूसी संस्था के एक काम करने वाले की हैसियत से मुझे यहाँ आकर अपने साथियों से बार-बार यह धिक्कार सुननी पड़ी कि हमारी संस्था भारत और रूस के लोगों के बीच आपसी मेल जोल और कलचरी लेन-देन की बढ़ती हुई माँगों को पूरा करने के लिये काफ़ी काम नहीं कर रही है.

एक हिन्दुस्तानी कहावत है कि हज़ार बार सुनने से एक बार देखना अधिक अच्छा है. तजरबा इस बात को साबित करता है कि एक दूसरे को समझने का और विचारों के लेन-देन का सबसे अच्छा तरीक़ा एक दूसरे से मिलना है. भारतवासियों की ज़बरदस्त कलचरी दौलत को और उनकी अमूल्य और प्राचीन पैत्रिक रूहानी सम्पत्ति को हमने अपनी आँखों से देखा. अपने देश वापस आकर हमने

بھارت کے پردھان منتری کی اِس کتاب کا روسی ترجمہ اِس سال نکل چکا ھے . روس نے وگوں نے اِن وانیوں کو پڑھا . ہر روسی نہرو کی اِس بات کے ساتھ سہمت ھے . سوویت روس کے لوگوں کے دل اور دماغ اور بھارت کے لوگوں کے دل اور دماغ اِس بات کے لئے پوری طرح کھلے ھوئے ھیں کہ ہم بھائی بھائی کی طرح ایک دوسرے سے وچاروں اور روحانی سچائیوں کا لین دین کریں .

لینن نے ھمیں یہ تعلیم دی تھی کہ حقیقی سوشلسٹ کلچر کی تعمیر اُس سمے تک نہیں کی جاسکتی جب تک کہ ہم اُس ساری روحانی دولت سے اپنے کو مالا مال نہ کرلیں جو اِنسانی قوم نے آج تک پیدا کی ھے . اس لئے ہم قوموں قوموں کے بیچ بڑے سے بڑے پیمانے پر کلچری لین دین کے حق میں ھیں. ھمیں یہ دکھائی دے رھا ھے کہ اِس سے نہ کیول الگ الگ دیشوں اور الگ الگ قوموں کی اپنی اپنی راشٹریہ سنسکرتیاں ھی اور ادھک مالا مال ھونگی' بلکہ ہم ایک دوسرے کو بھی ادھک اچھی طرح سمجھ سکیں گے اور دیشوں دیشوں کے بیچ دوستی بڑھ سکےگی .

سوویت یونین اور بھارت کے بیچ مترتا اور ھر طرح کے سہیوگ کے سمبندھ قائم ھوچکے ھیں . ھمارے کلچری ناتے بڑھتے جارھے ھیں . ھمارا ایک دوسرے کے ساتھ سمبندھ کیول زبانی باتوں میں ھی نہیں عملی کاموں میں بھی گہرا اور مضبوط ھوتا جارھا ھے .

اِس سال جنوری میں بھارت سرکار کی دعوت پر بھارت پہنچ کر مجھے بڑی خوشی ھوئی تھی . ھمارے ڈیلیگیشن کے نیتا روسی شاعر ایلیکسئی سرکوو (Alexi Surkov) تھے . وہ ایک کلچرل ڈیلیگیشن تھا . ہم اِس پکے وشواس کو لیکر روس واپس آئے کہ بھارت کے لوگوں کے دل سوویت روس کے لوگوں کے ساتھ مترتا کے بھاؤں سے بھرے ھوئے ھیں بھارت کے لوگ روس کے لوگوں کے ساتھ مترتا کے بھاؤں سے بھرے ھوئے ھیں بھارت کے لوگ روس کے لوگوں کے ساتھ کلچری سہیوگ کو بڑھانا اور ادھک مضبوط کرنا چاھتے ھیں. واکس (Voks) نامی روسی سنستھا کے ایک کام کرنے والے کی حیثیت سے مجھے یہاں آکر اپنے ساتھیوں سے بار بار یہ دھکار سننی پڑی کہ ھماری سنستھا بھارت اور روس کے لوگوں کے بیچ ایسی میل جول اور کلچری لین دین کی بڑھتی ھوئی مانگوں کو پورا کرنے کے لئے کافی کام نہیں کر رھی ھے .

ایک ھندستانی کہاوت ھے کہ ھزار بار سننے سے ایک بار دیکھنا ادھک اچھا ھے. تجربہ اس بات کو ثابت کرتا ھے کہ ایک دوسرے کو سمجھنے کا اور وچاروں کے لین دین کا سب سے اچھا طریقہ ایک دوسرے سے ملنا ھے. بھارتواسیوں کی زبردست کلچری دولت کو اور ان کی امولیہ اور پراچین پیترک روحانی سمپتی کو ہم نے اپنی آنکھوں سے دیکھا. اپنے دیش واپس آکر ہم نے

अखबारों में जलसों में, भारतीय जीवन की और अपने भारतीय दोस्तों की चरचा की. और हम इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि इससे कहीं अधिक बड़े पैमाने पर हमारे दोनों देशों की जबरदस्त कलचरें एक दूसरे से मिल-कर एक दूसरे को और अधिक मालामाल कर सकें.

सोवियत रूस के लोग बड़े प्यार के साथ भारत के कलचरी दूतों का स्वागत करते हैं. इस साल अभी तक अलग-अलग कलचरी काम करने वालों के अलावा उन्नीस डैलीगेशन भारत से सोवियत रूस आ चुके हैं. इनमें भारत की पार्लीमेंट के मैम्बरों का डैलीगेशन, कई ट्रेड यूनियन डैलीगेशन, डाक्टरों का डैलीगेशन, अखबार नवीसों का डैलीगेशन और साइंस वालों का डैलीगेशन सब शामिल हैं. जेनेवा में ऐटमी शक्ति के शान्तिमय उपयोगों के बारे में साइंसदानों की जो कानफ्रेंस हुई थी उसके चेयरमैन श्री ऐच. भाभा भारत के साइंसदानों के डैलीगेशन के नेता थे.

उधर से भारत ने आठ डैलीगेशन इसी अर्से में सोवियत रूस से बुलाये. इनमें रूसी साइंसदानों का डैलीगेशन, कलचरी डैलीगेशन, डाक्टरों का डैलीगेशन और वकीलों का डैलीगेशन सब शामिल थे.

मास्को में हमें मालूम हुआ है कि रूस के महाकवि पुश्किन (Pushkin) की कविता "जिप्सीज़" (Gypsies) का श्री डबल्यू. आर. ऋषी ने हिन्दी भाषा में अनुवाद किया है और वह भारत में छप गया है. पुश्किन उन्नीसवीं सदी का रूस का सब से बड़ा कवि था. रूसी जनता उसे सबसे अधिक चाहती और पसन्द करती थी. अपने समय के रूस के हालात उसने बहुत ही चमकते हुए ढंग से अपनी कविताओं में बयान किये हैं. हमें इस बात की बड़ी ख़ुशी है कि भारत के पढ़ने वाले भी पुश्किन की रचनाओं से वाक़िफ़ हो जायेंगे.

भारतीय साहित्य और भारतीय कला के सुनहरे युग के सब से चमकते हुए तारे, जबरदस्त कलाकार और नाटककार महाकवि कालिदास के नाटक "शकुन्तला" का रूसी में अनुवाद हो चुका है और इसी साल रूस में शाया हो चुका है. कृष्णचन्द्र और मुल्कराज आनन्द की कहानियाँ और उनकी चुनी हुई रचनाएँ रूस में शाया हो चुकी हैं. उन्नीसवीं सदी का रूसी साइंसदां आइ. पी. मिनायेव (I. P. Minayev) अपने समय में हिन्दुस्तान और बरमा आया था. रूस के बहुत से विद्वानों को उसने हिन्दुस्तान के हालात बताये और हिन्दुस्तान की बाबत अधिक जानकारी हासिल करने का रूसियों में शौक़ पैदा किया. उसकी किताब "हिन्दुस्तान और बरमा के सफ़र का रोज़-नामचा" रूस में पहली बार अब शाया हुआ है. रवीन्द्रनाथ टैगोर की कुछ चुनी हुई रचनाओं की पहली जिल्द भी रूसी भाषा में हाल में शाया हुई है. और जिल्दें निकलने वाली हैं.

خباروں میں، جلسوں میں، بھارتیہ جیون کی اور اپنے بھارتیہ دوستوں کی چرچا کی. اور ہم اس بات کی کوشش کر رہے ہیں کہ اِس سے کہیں ادھک بڑے پیمانے پر ہمارے دونوں دیشوں کی زبردست کلچریں ایک دوسرے سے مل کر ایک دوسرے کو اور ادھک مالا مال کرسکیں.

سوویت روس کے لوگ بڑے پیار کے ساتھ بھارت کے کلچری دوتوں کا سواگت کرتے ہیں. اِس سال ابھی تک الگ الگ کلچری کام کرنے والوں کے علاوہ اُنیس ڈیلیگیشن بھارت سے سوویت روس آچکے ہیں. اِن میں بھارت کی پارلیمنٹ کے ممبروں کا ڈیلیگیشن، کئی ٹریڈ یونین ڈیلیگیشن، ڈاکٹروں کا ڈیلیگیشن، اخبار نویسوں کا ڈیلیگیشن، اور سائنس والوں کا ڈیلیگیشن سب شامل ہیں. جنیوا میں ایٹمی شکتی کے شانتی مئے اُپیوگوں کے بارے میں سائنس دانوں کی جو کانفرینس ہوئی تھی اس کے 'چیرمین' شری ایچ. بھابھا بھارت کے سائنس دانوں کے ڈیلیگیشن کے نیتا تھے.

اُدھر سے بھارت نے آٹھ ڈیلیگیشن اِسی عرصہ میں سوویت روس سے بلائے. اِن میں روسی سائنس دانوں کا ڈیلیگیشن، کلچری ڈیلیگیشن، ڈاکٹروں کا ڈیلیگیشن اور وکیلوں کا ڈیلیگیشن شامل تھے.

ماسکو میں ہمیں معلوم ہوا ہے روس کے مہا کوی پشکن (Pushkin) کی کویتا "جپ سیز" (Gypsies) کا شری ڈبلو. آر. رشی نے ہندی بھاشا میں انواد کیا ہے اور وہ بھارت میں چھپ گیا ہے. پشکن اُنیسویں صدی کا روس کا سب سے بڑا کوی تھا. روسی جنتا اُسے سب سے ادھک چاہتی اور پسند کرتی تھی. اپنے سمئے کے روس کے حالات اُس نے بہت ہی چمکتے ہوئے ڈھنگ سے اپنی کویتاؤں میں بیان کئے ہیں. ہمیں اِس بات کی بڑی خوشی ہے کہ بھارت کے پڑھنے والے بھی پشکن کی رچناؤں سے واقف ہو جائینگے.

بھارتیہ ساہتیہ اور بھارتیہ کلا کے سنہرے یگ کے سب سے چمکتے ہوئے تارے، زبردست کلاکار اور ناٹک کار مہاکوی کالیداس کے ناٹک "شکنتلا" کا روسی میں انوواد ہو چکا ہے اور اِسی سال روس میں شائع ہو چکا ہے. کرشن چندر اور ملک راج انند کی کہانیاں اور انکی چنی ہوئی رچنائیں روس میں شائع ہو چکی ہیں. اُنیسویں صدی کا روسی سائنس‌داں آئی. پی. منایو (I. P. Minayev) اپنے سمئے میں ہندستان اور برما آیا تھا. روس کے بہت سے ودوانوں کو اُس نے ہندستان کے حالات بتائے اور ہندستان کی بابت ادھک جان‌کاری حاصل کرنے کا روسیوں میں شوق پیدا کیا. اُس کی کتاب "ہندستان اور برما کے سفر کا روزنامچہ" روس میں پہلی بار اب شائع ہوا ہے. ربیندر ناتھ ٹیگور کی کچھ چنی ہوئی رچناؤں کی پہلی جلد بھی روسی بھاشا میں حال میں شائع ہوئی ہے. اور جلدیں نکلنے والی ہیں.

रूसी कलाकार ए. ग्रासीमोव (A. Gerasimov) हाल में भारत आये थे. उन्होंने कुछ भारतीय चित्रों, तस्वीरों और खाकों का एक संग्रह किताब की शकल में निकाला है. यह किताब रूस में इतनी जल्दी हाथों हाथ बिक गई कि पहली एडीशन बिलकुल खतम हो गई और अब कहीं सेकेंड-हैन्ड किताबों की दूकानों पर भी देखने को नहीं मिल सकती.

यहाँ की वहां और वहाँ की यहाँ नुमाइशों के होने से भी बहुत बड़ा फ़ायदा हुआ है. जवाहरलाल नेहरू ने मास्को में जो भारतीय दस्तकारी की नुमाइश कराई यह बड़ा ग़ज़ब का ख्याल था. हज़ारों मास्को निवासियों ने और सोवियत रूस के कोने-कोने से आये हुए हज़ारों लोगों ने उस नुमाइश को देखा और भारतीय कला और दस्तकारियों की एक जीती जागती तस्वीर उनके सामने आ गई. उस नुमाइश में बाईस हज़ार नमूने थे. पिछले साल वहाँ भारतीय चीजों और पत्थर की खुदाई की चीजों की एक नुमाइश हुई थी उस नुमाइश के बाद हिन्दुस्तानी चीजों की यह सब से बड़ी नुमाइश है जो मास्को में हुई है. एक और नुमाइश रूस में हुई जिसका नाम था 'भारत की कलचर और कला." एक हिन्दुस्तानी भाषाओं के साहित्य की नुमाइश हुई. मास्को की यह सब नुमाइशें इस साल बहुत ही कामयाब रही. इनके अलावा रूस के बहुत से शहरों में भारत की चीजों की नुमाइशें हुई—जैसे लेनिनग्राड (Leningrad), उडेसा (Odessa), क्यूबीशेव (Kuibyshev), चिलियाबिंस्क (Cheliabinsk), सुवर्डलास्क (Sverdlovsk), ऐवानोवो (Ivanovo), कीव (Kiev), लवोव (Lvov) तिबलिसी (Tbilisi), आल्मा आटा (Alma Ata), कारागाँडा (Karaganda), गोमेल (Gomel) पैट्रोज़ाओडिस्क (Petrozavodsk), ताशक़ंद, बाकू, इश्क़बाद, यीरेवान (Yerevan). रीगा (Riga) तिल्लन (Tillhn) वग़ैरा. इन सब नुमाइशों के लिये हिदायतें सोवियत रूस के वह आदमी देते थे जो भारत में हैं. और उनकी हिदायतों के मुताबिक़ इन शहरों और जगहों की सार्वजनिक संस्थाएँ, वहाँ की लाइबरेरियाँ, वहां की कलचरी सोसाइटियाँ और वहाँ के विदेश सम्बन्धी मोहकमे और ख़ास ख़ास आदमी इन नुमाइंशों का सारा सरंजाम करते थे.

दूसरी तरफ़ सोवियत रूस की विदेशों के साथ कलचरी सम्बन्ध की सोसायटी ने इस साल नीचे लिखी नुमाइशें भारत भेजीं :—"सोवियत रूस के कपड़ा मिलों में काम करने वाले मजदूरों का काम और उनका जीवन", "सोवियत रूस की सुन्दर दस्तकारियाँ", "बच्चों की किताबों और गुड़ियों की नुमाइश" फ़ोटो की नुमाइश "सोवियत उज़्बैगिस्तान" वग़ैरा. यह नुमाइशें दिल्ली की अन्तर्राष्ट्रीय नुमाइश में हिस्सा लेने के लिये भेजी गई हैं. दिल्ली में यह रूसी नुमाइशें भारत की भारत रूस कलचरल सोसायटी वहाँ की दूसरी कलचरल सोसायटियों, डाक्टर बालिगा (Dr. Baliga), श्रीमती

روسی کلاکار اے گراسیمو (A. Gerasimov) حال میں بھارت آئے تھے ۔ اُنہوں نے کچھ 'بھارتیہ چتروں' تصویروں اور خاکوں کا ایک سنگرہ کتاب کی شکل میں نکالا ھے ۔ وہ کتاب روس میں اِتنی جلدی ھاتھوں ھاتھ بِک گئی کہ پہلی ایڈیشن بالکل ختم ھو گئی اور اب کہیں سیکنڈ ھینڈ کتابوں کی دکانوں پر بھی دیکھنے کو نہیں مل سکتی ۔

یہاں کی وھاں اور وھاں کی یہاں نمائشوں کے ھونے سے بھی بہت بڑا فائدہ ھوا ھے ۔ جواھرلال نہرو نے ماسکو میں جو بھارتیہ دستکاریوں کی نمائش کرائی یہ بڑا غضب کا خیال تھا ۔ ھزاروں ماسکونواسیوں نے اور سوویت روس کے کونے کونے سے آئے ھوئے ھزاروں لوگوں نے اُس نمائش کو دیکھا اور بھارتیہ کلا اور دستکاروں کی ایک جیتنی جاگتی تصویر اُن کے سامنے آگئی ۔ اُس نمائش میں بائیس ھزار نمونے تھے ۔ پچھلے سال وھاں بھارتیہ چیزوں اور پتھر کی کھدائی کی چیزوں کی ایک نمائش ھوئی تھی ۔ اُس نمائش کے بعد ھندستانی چیزوں کی یہ سب سے بڑی نمائش ھے جو ماسکو میں ھوئی ھے ۔ ایک اور نمائش روس میں ھوئی جسکا نام تھا "بھارت کی کلچر اور کلا ." ایک ھندستانی بھاشاؤں کے ساھیتہ کی نمائش ھوئی ۔ ماسکو کی یہ سب نمائشیں اُس سال بہت ھی کامیاب رھیں ۔ اِن کے علاوہ روس کے اور بہت سے شہروں میں بھارت کی چیزوں کی نمائشیں ھوئیں-جیسے لینن گراڈ (Leningrad)' اَدیسا (Odessa)' کیوبیشیو (Kuibyshev)' چیلیا بِنسک (Cheliabinsk)' سوردلوسک' (Sverdlovsk)' ایوانوو (Ivanovo)' کیو (Kiev)' لوُو (Lvov)' تبلیسی (Tbilisi)' آلما آتا (Alma Ata)' کارا گاندا (Karaganda)' گومل (Gomel)' پیٹروزاؤدسک (Petrozavodfk)' تاشقند' باکو' عشقاباد' یریوان' (Yerevan)' ریگا (Riga)' تلن' (Tillhn) وغیرہ ۔ اِن سب نمائشوں کے لئے ھدائتیں سوویت روس کے وہ آدمی دیتے تھے جو بھارت میں ھیں ۔ اور اُن کی ھدائتوں کے مطابق اِن شہروں اور جگہوں کی سارو جنک سنستھائیں' وھاں کی لائبریریاں' وھاں کی کلچری سوسائٹیاں اور وھاں کے ودیش سمبندھی محکمے اور خاص خاص آدمی اِن نمائشوں کا سارا سرانجام کرتے تھے ۔

دوسری طرف سوویت روس کی ودیشوں کے ساتھ کلچری سمبندھ کی سوسائٹی نے اِس سال نیچے لکھی نمائشیں بھارت بھیجیں:—"سوویت روس کے کپڑا ملوں میں کام کرنے والے مزدوروں کا کام اور اُنکا جیون"—"سوویت روس کی سندر دستکاریاں" "بچوں کی کتابیں اور گڑیوں کی نمائش" "فوٹو کی نمائش' سوویت اُزبیکستان" وغیرہ ۔ یہ نمائشیں دلی کی انترراشٹریہ نمائش میں حصہ لینے کے لئے بھیجی گئی ھیں۔ دلی میں یہ روسی نمایشیں بھارت کی بھارت روس کلچرل سوسائٹی' وھاں کی دوسری کلچرسوسائٹی' ڈاکٹر بالیگا (Dr. Baliga)' شریمتی

रामेश्वरी नेहरू और दूसरे हिन्दुस्तानी मित्रों की सहायता से संगठित की गई और सजाई गई.

हाल में सोवियत रूस के अन्दर भारत के मशहूर लेखक और नाटककार ख्वाजा अहमद अब्बास हमारे मेहमान थे. रूस का एक महान यात्री अफ़ानासी निकितिन (Afanasi Nikitin) पंद्रहवीं सदी ईस्वी में भारत आया था. ख्वाजा अहमद अब्बास उस ज़माने के हालात को निगाह में रखते हुए अफ़ानासी निकितिन के उस लम्बे सफ़र की एक तफ़सीली पृष्ठ भूमि तैयार कर रहे हैं. उस पृष्ठ भूमि के आधार पर रूस और भारत के फ़िल्म बनाने वाले मिलकर भारत के इस सच्चे मित्र रूसी यात्री के सफ़र की एक फ़िल्म तैयार करेंगे.

सन् 1951 में रूसी फ़िल्मकार पुदोवकिन (Pudovkin) और रूसी फ़िल्म ऐक्टर चेरकासोव (Cherkassov, दोनों भारत आये थे. उसी साल हिन्दुस्तान के फ़िल्म वालों का एक डेलीगेशन जिसके नेता एम. भट्टाचार्य थे सोवियत रूस आया. तब से अब तक ज़िन्दगी के इस ख़ास मैदान के अन्दर सोवियत रूस के कलाकारों और भारत के कलाकारों का सम्बन्ध बराबर बढ़ता और अधिक मज़बूत होता जा रहा है. कला का यह मैदान और सब मैदानों से ज़्यादा सर्वप्रिय और दिलचस्प है. आज हज़ारों मीटर फ़िल्में तैयार हो चुकी हैं जो भारत के जीवन को रूसियों के सामने और रूस के जीवन को भारत वालों के सामने दिखाती रहती हैं और एक दूसरे की बाबत एक दूसरे की जानकारी बढ़ाती रहती हैं. फ़िल्म की मदद से ही भारत के लाखों आदमी यह देख सके कि रूस ने अपने प्यारे मेहमान जवाहरलाल नेहरू का किस तरह और कितना ज़बरदस्त स्वागत किया.

जवाहरलाल नेहरू के सोवियत यूनियन आने से एक दूसरे की जानकारी बहुत बढ़ी और दोनों में दोस्ती और मज़बूत हुई. इससे भारत और रूस में कलचरल सहयोग का बढ़ना भी आसान हो गया. हम सोवियत रूस के लोगों को पूरा विश्वास है कि एन० ए० बुलगानिन और एन० एस० ख़ुश्चेव के अब भारत आने से हमारे मित्रता के बंधन और अधिक मज़बूत होंगे और भारत और सोवियत रूस में कलचरी सम्बन्ध और तेज़ी से बढ़ेगा. कलचर और तरक़्क़ी का सब से बड़ा मददगार और दोस्त दुनिया का अमन यानी इस धरती के सब देशों और सब लोगों में शान्ति और भाईचारा है. हमें पूरा विश्वास है कि बुलगानिन और ख़ुश्चेव की इस जवाबी भारत यात्रा से उन कोशिशों को बड़ी मदद मिलेगी जो भारत और रूस दोनों मिल कर इस आलमगीर शान्ति और भाईचारे की जीत के लिये कर रहे हैं.

("न्यूज़ ऐन्ड व्यूज़ फ़्राम दी सोवियत यूनियन" से)

رامیشوری نہرو اور دوسرے ہندستانی متروں کی سہائتا سے سنگٹھت کی گئیں اور سجائی گئیں ۔

حال میں سوویت روس کے اندر بھارت کے مشہور لیکھک اور ناٹک‌کار خواجہ احمد عباس ہمارے مہمان تھے. روس کا ایک مہان یاتری افاناسی نکیتن (Afanasi Nikitin) پندرھویں صدی عیسوی میں بھارت آیا تھا. خواجہ احمد عباس اُس زمانہ کے حالات کو نگاہ میں رکھتے ہوئے افاناسی نکیتن کے اُس لمبے سفر کی ایک تفصیلی پرشٹھ بھومی تیار کر رہے ہیں ۔ اُس پرشٹھ بھومی کے آدھار پر روس اور بھارت کے فلم بنانے والے مل کر بھارت کے اُس سچے متر روسی یاتری کے سفر کی ایک فلم تیار کریں گے ۔

سن 1951 میں روسی فلم کار پدوکن (Pudovkin) اور روسی فلم ایکٹر چرکاسوو (Cherkassov) دونوں بھارت آئے. اسی سال ہندستان کے فلم والوں کا ایک ڈیلیگیشن جس کے نیتا ایم. بھٹاچاریہ تھے سوویت روس آیا. تب سے اب تک زندگی کے اِس خاص میدان کے اندر سوویت روس کے کلاکاروں کے اور بھارت کے کلاکاروں کا سمبندھ برابر بڑھتا اور ادھک مضبوط ہوتا جا رہا ہے. کلا کا یہ میدان اور سب میدانوں سے زیادہ سروپریہ اور دلچسپ ہے ۔ آج ہزاروں میٹر فلمیں تیار ہو چکی ہیں جو بھارت کے جیون کو روسیوں کے سامنے اور روس کے جیون کو بھارت واسیوں کے سامنے دکھاتی رہتی ہیں اور ایک دوسرے کی بابت ایک دوسرے کی جان کاری بڑھاتی رہتی ہیں ۔ فلم کی مدد سے ہی بھارت کے لاکھوں آدمی یہ دیکھ سکے کہ روس نے اپنے پیارے مہمان جواہر لال نہرو کا کس طرح اور کتنا زبردست سواگت کیا ۔

جواہر لال نہرو کے سوویت یونین آنے سے ایک دوسرے کی جانکاری بہت بڑھی اور دونوں میں دوستی اور مضبوط ہوئی ۔ اس سے بھارت اور روس میں کلچرل سہیوگ کا بڑھنا بھی آسان ہو گیا ۔ ہم سوویت روس کے لوگوں کو پورا وشواس ہے کہ این ۔ اے۔ بلگانن اور این. ایس. کھرشچیو کے اب بھارت آنے سے ہمارے مترتا کے بندھن اور ادھک مضبوط ہونگے اور بھارت اور سوویت روس میں کلچری سمبندھ اور تیزی سے بڑھیگا ۔ کلچر اور ترقی کا سب سے بڑا مددگار اور دوست دنیا کا امن یعنی اِس دھرتی کے سب دیشوں اور سب لوگوں میں شانتی اور بھائی چارا ہے ۔ ہمیں پورا وشواس ہے کہ بلگانن اور کھروشچیو کی اِس جوابی بھارت یاترا سے اُن کوششوں کو بڑی مدد ملیگی جو بھارت اور روس دونوں مل کر اِس عالمگیر شانتی اور بھائی چارے کی جیت کے لئے کر رہے ہیں ۔

("نیوز اینڈ ویوز فرام دی سوویت یونین" سے)

हमारी राय

ہماری رائے

श्री बुलगानिन और श्री खुशचेव भारत में

नवम्बर 1955 में सोवियत रूस के प्रधान मंत्री श्री निकोलाई एलेक्ज़ेन्डरोविच बुलगानिन और रूस की कम्युनिस्ट पार्टी की सेन्ट्रल कमेटी के फ़र्स्ट सेक्रेटरी श्री निकीता सरगेयेविच खुशचेव का भारत आना आजकल की दुनिया की शायद सबसे अधिक महत्व की घटना है.

श्री निकोलाई एलेक्ज़ेन्डरोविच बुलगानिन सन् 1895 में एक बहुत ही ग़रीब घर में पैदा हुए थे. उनके पिता किसी दफ़्तर में एक छोटे से क्लर्क थे. बाइस साल की उमर में वह कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर बने. तब से अब तक उनका सारा जीवन कम्युनिस्ट पार्टी के साथ देश के मज़दूरों की सेवा में बीता है. आज वह सोवियत रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के बड़े से बड़े नेताओं में गिने जाते हैं और वहां के मंत्रमंडल के चेयरमैन हैं.

श्री बुलगानिन केवल राज-नीतिज्ञ ही नहीं हैं, वह एक होशियार कारीगर और एनजीनियर भी हैं. मास्को के एक बिजली के कारख़ाने के वह मैनेजर रह चुके हैं. बैंक और साहूकार के काम का भी उन्हें ख़ासा तजरबा है. सोवियत रूस के स्टेट बैंक के बोर्ड के वह एक समय सभापति थे. फ़ौजी कामों का भी उन्हें काफ़ी तजरबा है. सन् 1941 से 1944 तक की जंग में वह अपने देश की कई कई फ़ौजी कौनसिलों के मेम्बर थे.

दूसरे सज्जन श्री निकीता सरगेयेविच खुशचेव सन् 1894 में एक छोटे से गांव में और भी अधिक ग़रीब घर में पैदा हुए थे. उनके पिता किसी खान में मज़दूरी करते थे. श्री खुशचेव को छोटी उमर से ही मज़दूरी पर लगा दिया गया. बहुत दिनों वह भेड़ें चराते रहे. कई कारख़ानों में उन्होंने फ़िटर का काम किया. चौबीस बरस की उमर में वह कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर हुए. सन् 1941 से 1944 तक की जंग में वह एक मामूली सिपाही की हैसियत से जरमनी की फ़ौज से लड़े. जंग के बाद वह फिर खानों और कारख़ानों में मज़दूरी करते रहे. मज़दूर की हैसियत से ही उन्होंने एक ऐसे स्कूल में लिखना पढ़ना सीखा जो ख़ास

شری بلگانن اور شری کھ شچیو بھارت میں

نومبر 1955 میں سوویت روس کے پردھان منتری شری نکولائی الیکزینڈرو وچ بلگانن اور روس کی کمیونسٹ پارٹی کی سینٹرل کمیٹی کے فرسٹ سیکریٹری شری نکیتا سرگیئیے وچ کھرشچیو کا بھارت آنا آجکل کی دنیا کی شاید سب سے ادھک مہتو کی گھٹنا ہے۔

شری نکولائی الیکزینڈرو وچ بلگانن سن 1895 میں ایک بہت ہی غریب گھر میں پیدا ہوئے تھے۔ اُن کے پتا کسی دفتر میں ایک چھوٹے سے کلرک تھے۔ بائیس سال کی عمر میں وہ کمیونسٹ پارٹی کے میمبر بنے۔ تب سے اب تک اُنکا سارا جیون کمیونسٹ پارٹی کے ساتھ دیش کے مزدوروں کی سیوا میں بیتا ہے۔ آج وہ سوویت روس کی کمیونسٹ پارٹی کے بڑے سے بڑے نیتاؤں میں گنے جاتے ہیں اور وہاں کے منتری منڈل کے چیئرمین ہیں۔

شری بلگانن کیول راج نیتگیہ ہی نہیں ہیں، وہ ایک ہوشیار کاریگر اور اینجینیر بھی ہیں۔ ماسکو کے ایک بجلی کے کارخانے کے وہ منیجر رہ چکے ہیں۔ بنک کے اور ساہوکار کے کام کا بھی اُنہیں خاصہ تجربہ ہے۔ سوویت روس کے اسٹیٹ بینک کے بورڈ کے وہ ایک سمئے سبھاپتی تھے۔ فوجی کاموں کا بھی اُنہیں کافی تجربہ ہے۔ سن 1941 سے 1944 تک کی جنگ میں وہ اپنے دیش کی کئی کئی فوجی کونسلوں کے میمبر تھے۔

دوسرے سجن شری نیکیتا سرگیئے وچ کھرشچیو سن 1894 میں ایک چھوٹے سے گاؤں میں اور بھی ادھک غریب گھر میں پیدا ہوئے تھے۔ ان کے پتا کسی کھان میں مزدوری کرتے تھے۔ شری کھرشچیو کو چھوٹی عمر سے ہی مزدوری پر لگا دیا گیا۔ بہت دنوں وہ بھیڑیں چراتے رہے۔ کئی کارخانوں میں اُنہوں نے فٹر کا کام کیا۔ چوبیس برس کی عمر میں وہ کمیونسٹ پارٹی کے میمبر ہوئے۔ سن 1941 سے 1944 تک کی جنگ میں وہ ایک معمولی سپاہی کی حیثیت سے جرمنی کی فوج سے لڑے۔ جنگ کے بعد وہ پھر کھانوں اور کارخانوں میں مزدوری کرتے رہے۔ مزدور کی حیثیت سے ہی انہوں نے ایک ایسے اسکول میں لکھنا پڑھنا سیکھا جو خاص

और पर बड़ी उमर के मजदूरों के लिये खोला गया था. जंग के आख़ीर के दिनों में वह एक इलाक़े की फ़ौजी कौनसिल के मेम्बर थे. सितम्बर सन् 19 3 से वह रूस की कम्युनिस्ट पार्टी की सेन्टरल कमेटी के फ़र्स्ट सेक्रेटरी हैं, जो रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का सबसे अधिक जिम्मेदारी का ओहदा है.

श्री बुलगानिन और श्री ख़ुश्चेव दोनों लेनिन के वफ़ादार चेले हैं और स्टैलिन के साथ काम कर चुके हैं.

इन दोनों चोटी के रूसी नेताओं के भारत आने के अर्थ को समझने के लिये हमें इस समय की दुनिया की राजकाजी हालत पर एक निगाह डालनी होगी.

इसमें संदेह नहीं कि दुनिया धीरे धीरे शान्ति, एकता, सबकी आज़ादी, तरक़्क़ी और ख़ुशहाली की तरफ़ बढ़ रही है. किसी ने सच कहा है कि हाइड्रोजन बम ने जन्म लेकर और कुछ किया हो या न किया हो उसने जंग को मार डाला. एक तरह यह एक शुभ लक्षण है. पर मार्ग की सारी कठिनाइयां अभी दूर नहीं हुई हैं.

हाल में जनीवा में चार बड़े बड़े देशों—अमरीका, इंगलैन्ड, फ़्रान्स और रूस—के विदेश मंत्रियों की जो कानफ़रेंस हुई थी उसके सामने चार ख़ास सवाल थे. एक यह कि जरमनी के दोनों हिस्सों को मिलाकर फिर से एक संयुक्त और आज़ाद जरमनी बना दिया जावे, दूसरा एटमी हथियारों के इस्तेमाल की मनाही कर दी जावे और बाक़ी सब तरह के हथियारों और फ़ौजों को सब देशों में धीरे धीरे कम करके, हथियारों और फ़ौजों का बोझ दुनिया पर से हटा लिया जावे. तीसरा यह कि यूरप के सब राष्ट्रों के मिले जुले समझौते से यूरप के अमन को सुरक्षित और यूरप में जंग की सम्भावना को ख़तम किया जावे. चौथा यह कि पूरब और पच्छिम के बीच तिजारत, लेन देन, आना जाना, इस तरह खोल दिया जावे कि आपस का मनमुटाव मिटे और मेल मिलाप और दोस्ती बढ़े.

चारों देशों के विदेश मंत्रियों में कई दिन तक काफ़ी बात चीत होती रही. मालूम होता था सब शान्ति चाहते हैं, कोई जंग नहीं चाहता, लेकिन फिर भी इन चारों में से किसी बात पर भी वह मिलकर किसी फ़ैसले पर नहीं पहुँच सके. जनीवा की इस कानफ़रेन्स से कोई नुक़सान तो नहीं हुआ, वह फ़ज़ूल भी नहीं गई, लेकिन उससे कोई ख़ास नतीजा भी नहीं निकल सका.

जनीवा की इस कानफ़रेन्स का सम्बन्ध केवल यूरप से था. यह एक बात काफ़ी मनोरंजक है कि ऊपर जो दो शब्द 'पूरब' और 'पच्छिम' इस्तेमाल किये गए हैं और जनीवा की बहस में बार बार आए थे उनमें 'पूरब' से मतलब रूस और पूरबी यूरप के उन छोटे छोटे 6 देशों से है जो

طور پر بڑی عمر کے مزدوروں کے لئے کھولا گیا تھا ۔ جنگ کے آخیر کے دنوں میں وہ ایک علاقے کی فوجی کونسل کے ممبر تھے ۔ ستمبر سن 19 3 سے وہ ادھک روس کی کمیونسٹ پارٹی کی سینٹرل کمیٹی کے فرسٹ سیکریٹری ہیں، جو روسی کمیونسٹ پارٹی کا سب سے زمہ‌واری کا عہدہ ہے ۔

شری بلگانن اور شری کھرشچیو دونوں لینن کے وفادار چیلے ہیں اور اسٹیلن کے ساتھ کام کر چکے ہیں ۔ ان دونوں چوٹی کے روسی نیتاؤں کے بھارت آنے کے ارتھ کو سمجھنے کے لئے ہمیں اس سمے کی دنیا کی راجکاجی حالت پر ایک نگاہ ڈالنی ہوگی ۔

اس میں سندیہہ نہیں کہ دنیا دھیرے دھیرے شانتی، ایکتا، سب کی آزادی، ترقی اور خوشحالی کی طرف بڑھ رہی ہے ۔ کسی نے سچ کہا ہے کہ ہائڈروجن بم نے جنم لیکر اور کچھ کیا ہو یا نہ کیا ہو اس نے جنگ کو مار ڈالا ۔ ایک طرح یہ ایک شبھ لکشن ہے ۔ پر مارگ کی ساری کٹھنائیاں ابھی دور نہیں ہوئی ہیں ۔

حال میں جنیوا میں چار بڑے بڑے دیشوں—امریکہ، انگلینڈ، فرانس اور روس—کے ودیش منتریوں کی جو کانفرنس ہوئی تھی اس کے سامنے چار خاص سوال تھے ۔ ایک یہ کہ جرمنی کے دونوں حصوں کو ملا کر پھر سے ایک سنیکت آزاد جرمنی بنا دیا جاوے، دوسرا ایٹمی ہتھیاروں کے استعمال کی منا ہی کردی جاوے اور باقی سب طرح کے ہتھیاروں اور فوجوں کو سب دیشوں میں دھیرے دھیرے کم کر کے، ہتھیاروں اور فوجوں کا بوجھ دنیا پر سے ہٹا لیا جاوے ۔ تیسرا یہ کہ یورپ کے سب راشٹروں کے ملے جلے سمجھوتے سے یورپ کے امن کو سورکشت اور یورپ میں جنگ کی سمبھاونا کو ختم کیا جاوے ۔ چوتھا یہ کہ پورب اور پچھم کے بیچ تجارت، لین دین، آنا جانا اس طرح کھول دیا جاوے کہ آپس کا من مٹاؤ مٹے اور میل ملاپ اور دوستی بڑھے ۔

چاروں دیشوں کے ودیش منتریوں میں کئی دن تک کافی بات چیت ہوتی رہی ۔ معلوم ہوتا تھا سب شانتی چاہتے ہیں، کوئی جنگ نہیں چاہتا، لیکن پھر بھی ان چاروں میں سے کسی بات پر بھی وہ ملکر کسی فیصلے پر نہیں پہونچ سکے ۔ جنیوا کی اس کانفرنس سے کوئی نقصان تو نہیں ہوا، وہ فضول بھی نہیں گئی، لیکن اس سے کوئی خاص نتیجہ بھی نہیں نکل سکا ۔

جنیوا کی اس کانفرنس کا سمبندھ کیول یورپ سے تھا ۔ یہ ایک بات کافی منورنجک ہے کہ اوپر جو دو شبد 'پورب' اور 'پچھم' استعمال کئے گئے ہیں اور جنیوا کی بحث میں بار بار آئے تھے ان میں 'پورب' سے مطلب روس اور پوربی یورپ کے ان چھوٹے چھوٹے چھ دیشوں سے ہے جو

कम्युनिस्ट या अर्ध-कम्युनिस्ट या रूस के साथी समझे जाते हैं. 'पच्छिम' से मतलब अमरीका, इंगलैन्ड, फ्रान्स और हालैंड, बेलजियम, पुर्तगाल जैसे दूसरी तरफ़ के देशों से है. कुछ साल पहले तक एशिया को पूरब और यूरप को पच्छिम कहा जाता था. आज से पचास साल पहले के रूस-जापान युद्ध में जब उस समय का रूस जापान से जंग में हार गया तो एक बहुत बड़े यूरोपीय विद्वान ने जापान को न्याय की ओर मानते हुए और जापान की जीत पर सन्तोश प्रगट करते हुए भी कहा था:—"But After all the question is between the East and the West." यानी "कुछ भी हो सवाल पूरब और पच्छिम का है." रूस उस समय एक पच्छिमी देश था और उन्हें इस बात का दुख था कि एक पूरबी देश जापान ने एक पच्छिमी देश रूस को नीचा दिखाया. पचास बरस के अन्दर हवा बदल गई. चीन और भारत के साथ सब छोटे बड़े देशों की आज़ादी के लिये खड़ा होने वाला रूस आज एक 'पूरबी' देश है.

साम्राजशाही का मैदान अब धीरे धीरे सुकड़ता जा रहा है. इंगलैन्ड और फ्रान्स अपने साम्राजशाही रुझानों में आज शायद इतने पक्के नहीं रहे जितना अमरीका. कारण भी साफ़ है. यहां हम केवल यह कहना चाहते हैं कि हमें कोई अचरज न होगा अगर कुछ बरसों के बाद इंगलैंड और फ्रान्स भी 'पूरब' में शामिल कर लिये जायं और पच्छिम से मतलब केवल संयुक्त राज अमरीका से रह जाय! हैं भी इंगलैन्ड और फ्रान्स अमरीका के पूरब में और अमरीका इंगलैन्ड और फ्रान्स के पच्छिम में. यह है दुनिया के शब्दों की गति.

जहां तक हमारा सम्बन्ध है हम अपने पुराने आदर्श "वसुदैव कुटुम्बक" (सारी धरती एक छोटा सा कुटुम्ब है) के अनुसार चाहते हैं कि सारी दुनिया इस पूरब और पच्छिम के भेद भाव से ऊपर उठ जाय और इस धरती के सब रहने वाले एक मानव कुटुम्भ की तरह रहने लगें.

हमें इस बात की भी बड़ी खुशी है कि स्वयं श्री बुलगानिन ने दिल्ली में एक बात ऐसी कही जिससे मालूम होता था कि वह सोवियत रूस के एशियाई देश माने जाने में बहुत खुश हैं. कुछ लोग यह भी सोच रहे हैं कि एशिया अफ़रीक़न कानफ्रेन्स में रूस को एक एशियाई देश की हैसियत से बराबर की जगह दी जावे.

एशिया, यूरप और सब मिलाकर दुनिया की शान्ति के रास्ते में आज खास खास बड़ी रुकावटें यह हैं :—

(1) ऐटमी हथियारों के इस्तेमाल की पूरी पूरी मनाही कर देने और बाक़ी सब तरह के हथियारों और फ़ौजों को धीरे-धीरे कम करने में कुछ देशों का आना कानी करना.

کمیونسٹ یا اردھ کمیونسٹ یا روس کے ساتھی سمجھے جاتے ہیں۔ 'پچھم' سے مطلب امریکہ، انگلینڈ، فرانس اور ہالینڈ، بیلجیم، پرتگال جیسے دوسری طرف کے دیشوں سے ہے۔ کچھ سال پہلے تک ایشا کو پورب اور یورپ کو پچھم کہا جاتا تھا۔ آج سے پچاس سال پہلے کے روس۔جاپان یدھ میں جب اُس سمے کا روس جاپان سے جنگ میں ہار گیا تو ایک بہت بڑے یورپیہ ودوان نے جاپان کو نیائے کی اور مانتے ہوئے اور جاپان کی جیت پر سنتوش پرگٹ کرتے ہوئے بھی کہا تھا:—But after all the question is between the East and the West.' یعنی "کچھ بھی ہو سوال پورب اور پچھم کا ہے۔" روس اُس سمے ایک پچھمی دیش تھا اور اُنھیں اِس بات کا دکھ تھا کہ ایک پوربی دیش جاپان نے ایک پچھمی دیش روس کو نیچا دکھایا۔ پچاس برس کے اندر ہوا بدل گئی۔ چین اور بھارت کے ساتھ سب چھوٹے بڑے دیشوں کی آزادی کے لئے کھڑا ہونے والا روس آج ایک 'پوربی' دیش ہے۔

سمراج شاہی کا میدان اب دھیرے دھیرے سکڑتا جا رہا ہے۔ انگلینڈ اور فرانس اپنے سامراج شاہی رجحانوں میں آج شاید اِتنے پکے نہیں رہے جتنا امریکہ۔ کارن بھی صاف ہیں۔ یہاں ہم کیول یہ کہنا چاہتے ہیں کہ ہمیں کوئی اچرج نہ ہوگا اگر کچھ برسوں کے بعد انگلینڈ اور فرانس بھی 'پورب' میں شامل کر لئے جائیں اور پچھم سے مطلب کیول سنیکت راج امریکہ سے رہ جائے! ہیں بھی انگلینڈ اور فرانس امریکہ کے پورب میں اور امریکہ انگلینڈ اور فرانس کے پچھم میں۔ یہ ہے دنیا کے شبدوں کی گتی۔

جہاں تک ہمارا سمبندھ ہے ہم اپنے پرانے آدرش "وسو دیوکٹمبکم" (ساری دھرتی ایک چھوٹا سا کٹمب ہے) کے انوسار چاہتے ہیں کہ ساری دنیا اِس پورب اور پچھم کے بھید بھاؤ سے اُوپر اُٹھ جائے اور اِس دھرتی کے سب رہنے والے ایک مانو کٹمب کی طرح رہنے لگیں۔

ہمیں اِس بات کی بھی بڑی خوشی ہے کہ سویم شری بلگانن نے دلی میں ایک بات ایسی کہی جس سے معلوم ہوتا تھا کہ وہ سوویت روس کے ایشیائی دیش مانے جانے میں بہت خوش ہیں۔ کچھ لوگ یہ بھی سوچ رہے ہیں کہ ایشیا افریقن کانفرنس میں روس کو ایک ایشیائی دیش کی حیثیت سے برابر کی جگہ دی جاوے۔

ایشیا، یورپ اور سب ملاکر دنیا کی شانتی کے راستے میں آج خاص خاص بڑی رکاوٹیں یہ ہیں :—

(1) ایٹمی ہتھیاروں کے استعمال کی پوری پوری مناہی کردینے اور باقی سب طرح کے ہتھیاروں اور فوجوں کو دھیرے دھیرے کم کرنے میں کچھ دیشوں کا آنا کانی کرنا۔

(2) इस तरह के फ़ौजी समझौते और फ़ौजी गुट बन्दियां, जिनमें एक खास तरह के देशों को ही शामिल किया जाता है, इसकी सब से बड़ी मिसालें यूरप में 'नाटो' (NATO) और एशिया में 'सीटो' (SEATO) हैं. हाल में रूस ने यूरप की सुरक्षा के लिये नाटो में शामिल होने की इच्छा प्रगट की थी, फिर भी उसे नहीं लिया गया. जब तक इस तरह की फ़ौजी गुटें दुनिया में रहेंगी दुनिया की शान्ति पर खतरा बना रहेगा.

(3) जरमनी के दो टुकड़ों का बना रहना और उनमें से एक टुकड़े का नाटो गुट की तरफ़ से हथियारों से लैस किया जाना. यूरप की ही नहीं दुनिया की शान्ति के लिये आवश्यक है कि जरमनी के इन दोनों हिस्सों के लोगों को, बाहर की क़ौमों के दबाव या असर से आज़ाद होकर, एक स्वतंत्र, स्वाधीन और संयुक्त जरमनी बनाने का मौक़ा दिया जावे.

(4) हिन्दचीन की बाबत जो समझौता रूस, चीन, भारत और दूसरे शान्ति प्रेमी देशों की कोशिशों से सन् 1954 में जनीवा ही में हो चुका है उसके खिलाफ़ हिन्दचीन के कुछ लोगों को अपनी खास फ़ौजी गुट में मिलाकर बाहर के कुछ देशों का उसमें रुकावटें डालते रहना. जब तक बाहर के कुछ देशों की इस तरह की दखलअन्दाज़ी बन्द नहीं होगी और सन् 1954 वाले जनीवा के समझौते पर ईमानदारी से अमल नहीं होगा, एशिया के उस अभागे कोने से दुनिया की शान्ति के भंग होने का खतरा बना रहेगा.

(5) ताइवान यानी फ़ारमूसा में अमरीकी फ़ौजों का जबरदस्ती डेरे डाले रहना. ताइवान चीन के शरीर का एक अंग है. किसी बाहर की शक्ति को यह हक़ नहीं है कि नए चीन और ताइवान के घरेलू मामले में किसी तरह का दखल दे. अमरीकी फ़ौजें अगर ताइवान से हटा ली जावें तो नई चीनी सरकार और ताइवान के कुछ लोगों के बीच का आपसी झगड़ा बिना किसी तरह की लड़ाई के एक दिन में तय हो सकता है. जब तक यह नहीं होता तब तक चीन को और दुनिया के अमन को खतरा बना रहेगा.

(6) दक्खिन कोरिया को बराबर बढ़ावा दे देकर कोरिया के एक संयुक्त और आज़ाद देश बनने में कुछ लोगों का रुकावटें डालना. कोरिया जब तक बाहर की शक्तियों के दबाव से आज़ाद होकर एक संयुक्त राष्ट्र न बन जायगा तब तक उस तरफ़ से चीन को, एशिया को और दुनिया की शान्ति को खतरा बना रहेगा.

(7) जापान और दूसरे कुछ देशों में बाहर की शक्तियों के फ़ौजी अड्डों और छावनियों की मौजूदगी. जब तक किसी भी विदेशी शक्ति के इस तरह के फ़ौजी अड्डे जापान या

(2) اِس طرح کے فوجی سمجھوتے اور فوجی گٹ بندیاں' جن میں ایک خاص طرح کے دیشوں کو ہی شامل کیا جاتا ہے' اس کی سب سے بڑی مثالیں یورپ میں 'ناٹو' (NATO) اور ایشیا میں 'سیٹو' (SEATO) ہیں. حال میں روس نے یورپ کی سورکشا کے لئے ناٹو میں شامل ہونے کی اچھا پرکٹ کی تھی' پھر بھی اسے نہیں لیا گیا. جب تک اس طرح کی فوجی گٹیں دنیا میں رہیں گی دنیا کی شانتی پر خطرہ بنا رہیگا.

(3) جرمنی کے دو ٹکڑوں کا بنا رہنا اور ان میں سے ایک ٹکڑے کا ناٹو گٹ کی طرف سے ہتھیاروں سے لیس کیا جانا. یورپ کی ہی نہیں دنیا کی شانتی کے لئے آوشیک ہے کہ جرمنی کے ان دونوں حصوں کے لوگوں کو' باہر کی قوموں کے دباؤ یا اثر سے آزاد ہوکر' ایک سوتنتر' سوادھین اور سنیکت جرمنی بنانے کا موقع دیا جائے.

(4) ہند چین کی بابت جو سمجھوتا روس' چین' بھارت اور دوسرے شانتی پریمی دیشوں کی کوششوں سے سن 1954 میں جنیوا ہی میں ہوچکا ہے اس کے خلاف ہند چین کے کچھ لوگوں کو اپنی خاص فوجی گٹ میں ملاکر باہر کے کچھ دیشوں کا اس میں رکاوٹیں ڈالتے رہنا. جب تک باہر کے کچھ دیشوں کی اِس طرح کی دخل اندازی بند نہیں ہوگی اور سن 1954 والے جنیوا کے سمجھوتے پر ایمانداری سے عمل نہیں ہوگا' ایشیا کے اس ابھاگے کونے سے دنیا کی شانتی کے بھنگ ہونے کا خطرہ بنا رہیگا.

(5) تائوان یعنی فارموسا میں امریکی فوجوں کا زبردستی ڈیرے ڈالے رہنا. تائوان چین کے شریر کا ایک انگ ہے. کسی باہر کی شکتی کو یہ حق نہیں ہے کہ نئے چین اور تائوان کے گھریلو معاملے میں کسی طرح کا دخل دے. امریکی فوجیں اگر تائوان سے ہٹائی جاویں تو نئی چینی سرکار اور تائوان کے کچھ لوگوں کے بیچ کا آپسی جھگڑا بنا کسی طرح کی لڑائی کے ایک دن میں طے ہوسکتا ہے. جب تک یہ نہیں ہوتا تب تک چین کو اور دنیا کے امن کو خطرہ بنا رہیگا.

(6) دکھن کوریا کو برابر بڑھاوا دے دے کر کوریا کے ایک سنیکت اور آزاد دیش بننے میں کچھ لوگوں کا رکاوٹیں ڈالنا. کوریا جب تک باہر کی شکتیوں کے دباؤ سے آزاد ہوکر ایک سنیکت راشٹر نہ بن جائیگا تب تک بھی اس طرف سے چین کو' ایشیا کو اور دنیا کی شانتی کو خطرہ بنا رہیگا.

(7) جاپان اور دوسرے کچھ دیشوں میں باہر کی شکتیوں کے فوجی اڈوں اور چھاونیوں کی موجودگی. جب تک کسی بھی ودیشی شکتی کے اِس طرح کے فوجی اڈے جاپان یا

किसी भी देश में मौजूद हैं दुनिया के अमन को ज़बरदस्त खतरा है.

(8) यू. एन. ओ. में नए चीन जैसे साठ करोड़ आदमियों का उचित स्थान का न मिलना. ताइवान की च्यांग काई शेकी सरकार के नुमाइन्दे को चीन का नुमाइन्दा मानकर यू. एन. ओ. में बैठाना एक इतना बड़ा खुला ढोंग और अन्याय है, कि जब तक यह जारी है, न यू. एन. ओ. सच्चे मानी में संयुक्त राष्ट्र संघ कहला सकता है, न उससे दुनिया के अमन को क़ायम रखने में मदद मिल सकती है और न दुनिया से जंग का खतरा जा सकता है.

(9) अफ़रीक़ा में या दुनिया के किसी हिस्से में भी किसी देश या किसी क़ौम के ऊपर किसी भी विदेशी शक्ति के शासन, प्रभुत्व या दबाव का क़ायम रहना या दुनिया के किसी हिस्से में भी रंग या नसल के आधार पर इनसानों के साथ अलग अलग तरह का ब्योहार होना. दुनिया में जब तक गुलाम देश या इस तरह के भेद भाव मौजूद हैं तब तक दुनिया के अमन को खतरा रहेगा.

सोवियत रूस और भारत के नेताओं के सरकारी और ग़ैर सरकारी बयानों और अभी हाल में श्री बुलगानिन और श्री खुशचेव के दिल्ली के भाषणों से साफ़ ज़ाहिर है कि ऊपर की सब बातों में रूस और भारत यानी इन दोनों देशों की जनता और इन की सरकारें बिल्कुल एक राय हैं. यही श्री बुलगानिन और श्री खुशचेव के भारत आने का सब से बड़ा मतलब है. जब तक दुनिया की शान्ति, तरक़्क़ी और बहबूदी के रास्ते की यह सब रुकावटें दूर नहीं होतीं तब तक हमारा फ़र्ज़ है, हमारा धर्म है और हमारी और दुनिया की सलामती इसी में है कि हम मिलकर खड़े हों. दुनिया की जनता को एक करने के लिये और सारी दुनिया के भले के लिये आवश्यक है कि पहले एशिया और अफ़रीक़ा के सारे देश, जिन में से अधिकतर पराधीनता के कड़वे अनुभवों में से निकल चुके हैं या निकल रहे हैं, मिलकर खड़े हों. एशिया और अफ़रीक़ा के सब देशों के मिलकर खड़े होने के लिये ज़रूरी है कि एशिया के तीन सब से बड़े देश—रूस, चीन और भारत—दुनिया के अमन और सब के भले के नाम पर मिलकर खड़े हों. इस ब्योहारिक निगाह से श्री बुलगानिन और श्री खुशचेव का भारत आना इस समय की सब से अधिक महत्व की घटना है. हमें पूरा विश्वास है कि रूस, चीन, और भारत के इस तरह मिलकर खड़े होने के बाद दुनिया के अमन के रास्ते की सब रुकावटें एक एक कर दूर हो जावेंगी और सारा मानव समाज एक बार सब के भले, सब की तरक़्क़ी और सब की खुशहाली की तरफ़ बढ़ता हुआ दिखाई देगा. यही महात्मा गाँधी का बताया हुआ सर्वोदय का आदर्श है.

24. 11. '55 —सुन्दरलाल.

کسی بھی دیش میں موجود ہیں دنیا کے امن کو زبردست خطرہ ہے.

(8) یو. این. او. میں نئے چین جیسے ساٹھ کروڑ آدمیوں کو اُچت استھان کا نہ ملنا. تائیوان کی چیانگ کائی شیکی سرکار کے نمائندے کو چین کا نمائندہ مانکر یو. این. او. میں بیٹھانا ایک اِتنا بڑا کھلا ڈھونگ اور انیائے ہے' کہ جب تک یہ جاری ہے' نہ یو. این. او. سچے معنی میں سنیکت راشٹر سنگھ کہلا سکتا ہے' نہ اُس سے دنیا کے امن کو قایم رکھنے میں مدد مل سکتی ہے اور نہ دنیا سے جنگ کا خطرہ جا سکتا ہے.

(9) افریقہ میں یا دنیا کے کسی حصے میں بھی کسی دیش یا کسی قوم کے اوپر کسی بھی ودیشی شکتی کے شاسن' پربھوتو یا دباؤ کا قایم رہنا یا دنیا کے کسی حصے میں بھی رنگ یا نسل کے آدھار پر انسانوں کے ساتھ الگ الگ طرح کا بیوہار ہونا. دنیا میں جب تک غلام دیش یا اِس طرح کے بھید بھاؤ موجود ہیں تب تک دنیا کے امن کو خطرہ رہیگا.

سوویت روس اور بھارت کے نیتاؤں کے سرکاری اور غیر سرکاری بیانوں اور ابھی حال میں شری بلگانن اور شری کھرشچیو کے دلی کے بھاشنوں سے صاف ظاہر ہے کہ اوپر کی سب باتوں میں روس اور بھارت یعنی اِن دونوں دیشوں کی جنتا اور اِن کی سرکاریں بالکل ایک رائے ہیں. یہی شری بلگانن اور شری کھرشچیو کے بھارت آنے کا سب سے بڑا مطلب ہے. جب تک دنیا کی شانتی' ترقی اور بہبودی کے راستے کی یہ سب رکاوٹیں دور نہیں ہوتیں تب تک ہمارا فرض ہے' ہمارا دھرم ہے اور ہماری اور دنیا کی سلامتی اِسی میں ہے کہ ہم ملکر کھڑے ہوں. دنیا کی جنتا کو ایک کرنے کے لئے اور ساری دنیا کے بھلے کے لئے آوشیک ہے کہ پہلے ایشیا اور افریقہ کے سارے دیش' جن میں سے ادھکتر پرادھینتا کے کڑوے انوبھوؤں میں سے نکل چکے ہیں یا نکل رہے ہیں' ملکر کھڑے ہوں. ایشیا اور افریقہ کے سب دیشوں کے ملکر کھڑے ہونے کے لئے ضروری ہے کہ ایشیا کے تین سب سے بڑے دیش—روس' چین اور بھارت—دنیا کے امن اور سب کے بھلے کے نام پر ملکر کھڑے ہوں. اِس ویوہارک نگاہ سے شری بلگانن اور شری کھرشچیو کا بھارت آنا اِس سمے کی سب سے ادھک مہتو کی گھٹنا ہے. ہمیں پورا وشواس ہے کہ روس' چین اور بھارت کے اِس طرح ملکر کھڑے ہونے کے بعد دنیا کے امن کے راستے کی سب رکاوٹیں ایک ایک کر دور ہوجاوینگی اور سارا مانو سماج ایک بار سب کے بھلے' سب کی ترقی اور سب کی خوشحالی کی طرف بڑھتا ہوا دکھائی دیگا. یہی مہاتما گاندھی کا بتایا ہوا سروودئے کا آدرش ہے.

24 . 11 . '55 —سندر لال.

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान : श्री मंज़र अली सोख़्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

—:o:—

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

—:o:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान

275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़

क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़

क़ीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

هندی گھر

کلچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک ہندی، اُردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں۔

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اُردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: شری منظر علی سوختہ
صفحے 225، قیمت دو روپیہ

—:o:—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواہر لال نہرو
موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—:o:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران

275 صفحے، دام ڈھائی روپیہ

ہندو مسلم ایکتا

100 صفحے دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

قیمت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق

قیمت دو آنے۔

ہندستانی کلچر سوسائٹی

145، مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

इस नम्बर के ख़ास लेख | اِس نمبر کے خاص لیکھ

इसके अलावा | اس کے علاوہ

देस बिदेस के मसलों पर हमारी राय में ज़रूरी सम्पादकी नोट

دیس بدیس کے مسئلوں پر ہماری رائے میں ضروری سمپادکی نوٹ

...नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद | ...انی کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

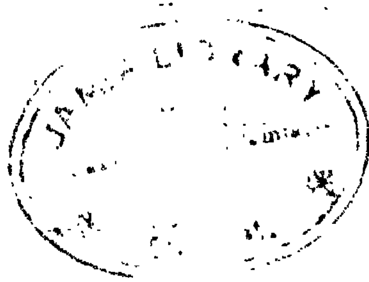
दिसम्बर 1955 دسمبر

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 20 جلد نمبر 6 नम्बर



दिसम्बर 1955 دسمبر

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

145، مٹھی گنج، الہ آباد

दिसम्बर 1955 دسمبر

हिन्दुस्तानी कलचर

[एक आलोचना]

हैदराबाद की एशियाई अध्ययन समिति (Institute of Asian Studies) के डाइरेक्टर, मशहूर विद्वान, श्री भगवत शरण उपाध्याय ने अपना एक छपा हुआ अंगरेजी निबन्ध हमारे पास भेजा है. जिसका नाम है 'भारतीय संस्कृति की प्रगति' (March of Indian Culture). निबन्ध की कुछ चीजें लगभग उन्हीं के शब्दों में हम नीचे देते हैं.

कलचर या संस्कृति की परिभाषा करते हुए लेखक ने लिखा है कि :—

"इतिहास की तरह कलचर या संस्कृति भी एक ऐसी चीज़ है जो लगातार फूलती फलती और बढ़ती रहती है और जिसका सम्बन्ध सारी दुनिया से है. कोई देश या कोई काल ऐसा नहीं है कि जहां खड़ा होकर कोई आदमी भी यह कह सके कि इसके आगे किसी चीज़ से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं. कलचर के अलग अलग रूप आस पास की तब्दीलियों के साथ बदलते रहते हैं, और यह तब्दीलियां अधिकतर अलग अलग जातियों के मिलने से पैदा होती हैं. इसलिये कलचर हम सब की मिली जुली बपौती है जो हम सबकी मिली जुली कोशिश से पैदा होती है. कलचर के अलग अलग हिस्से मिलकर एक शरीर बनाते हैं, फिर यह शरीर खुद एक इकाई बन जाता है, और इस तरह की बहुत सी इकाइयां मिलकर लगातार अपने में दूसरे हिस्सों और दूसरी इकाइयों को मिलाती और समोती रहती है, यहां तक कि यह सिलसिला सारी धरती के ऊपर फैला हुआ दिखाई देता है. कलचर हम सबकी सबको देन है."

इसके बाद लेखक ने शुरू से अब तक की दुनिया की बड़ी बड़ी सभ्यताओं, उनके विकास और एक दूसरे के साथ उनके सम्बन्ध की चरचा की है.

भारत की चरचा करते हुए लेखक ने कहा है कि :—

"इस मामले में कोई देश प्रकृति (क़ुदरत) का इतना चहेता नहीं दिखाई देता जितना हिन्दुस्तान. अनगिनत जातियां, सभ्य और असभ्य, हमारी सरहद को पार कर इस देश में आती रहीं और यहां के समाजी ताने बाने में मिलकर एक होजाती रही हैं. हमारे समाजी ढांचे को उन सब से बल मिला है और उसकी शान और सुन्दरता बढ़ी है. तरह तरह के नमूने और तरह तरह की शकलें मिलकर

ھندستانی کلچر

[ایک آلوچنا]

حیدرآباد کی ایشیائی ادھین سمتی (Institute of Asian Studies) کے ڈائیریکٹر، مشہور ودوان، شری بھگوت شرن اپادھیائے نے اپنا ایک چھپا ھوا انگریزی نبندھ ھمارے پاس بھیجا ھے، جس کا نام ھے 'بھارتیہ سنسکرتی کی پرگتی' (March of Indian Culture). نبندھ کی کچھ چیزیں لگ بھگ اُنھیں کے شبدوں میں ھم نیچے دیتے ھیں .

کلچر یا سنسکرتی کی پریبھاشا کرتے ھوئے لیکھک نے لکھا ھے کہ :—

اِتہاس کی طرح کلچر یا سنسکرتی بھی ایک ایسی چیز ھے جو لگاتار پھولتی پھلتی اور بڑھتی رھتی ھے اور جس کا سمبندھ ساری دنیا سے ھے . کوئی دیش یا کوئی کال ایسا نہیں ھے کہ جہاں کھڑا ھو کر کوئی آدمی بھی یہ کہہ سکے کہ اِس کے آگے کسی چیز سے میرا کوئی سمبندھ نہیں . کلچر کے الگ الگ روپ آس پاس کی تبدیلیوں کے ساتھ بدلتے رھتے ھیں، اور یہ تبدیلیاں ادھکتر الگ الگ جاتیوں کے ملنے سے پیدا ھوتی ھیں . اِس لئے کلچر ھم سب کی ملی جلی بپوتی ھے جو ھم سب کی ملی جلی کوشش سے پیدا ھوتی ھے . کلچر کے الگ الگ حصے ملکر ایک شریر بناتے ھیں، پھر یہ شریر خود ایک اِکائی بن جاتا ھے، اور اِس طرح کی بہت سی اِکائیاں ملکر لگاتار اپنے میں دوسرے حصوں اور دوسری اِکائیوں کو ملاتی اور سموتی رھتی ھے، یہاں تک کہ یہ سلسلہ ساری دھرتی کے اُوپر پھیلا ھوا دکھائی دیتا ھے . کلچر ھم سب کی سب کو دین ھے ."

اِس کے بعد لیکھک نے شروع سے ابتک کی دنیا کی بڑی بڑی سبھیتاؤں، اُن کے وکاس اور ایک دوسرے کے ساتھ اُن کے سمبندھ کی چرچا کی ھے .

بھارت کی چرچا کرتے ھوئے لیکھک نے کہا ھے کہ :—

"اِس معاملے میں کوئی دیش پرکرتی (قدرت) کا اتنا چہیتا نہیں دکھائی دیتا جتنا ھندستان . انگنت جاتیاں، سبھیہ اور اسبھیہ، ھماری سرحد کو پار کر اِس دیش میں آتی رھیں اور یہاں کے سماجی تانے بانے میں ملکر ایک ھو جاتی رھی ھیں . ھمارے سماجی ڈھانچے کو اُن سب سے بل ملا ھے اور اُس کی شان اور سندرتا بڑھی ھے . طرح طرح کے نمونے اور طرح طرح کی شکلیں ملکر

इस देश की कलचर में सैकड़ों तरह के नए नए रंग और नई शान पैदा करते रहे हैं. हज़ारों बरस के अन्दर अनगिनत जातियों के मेल से आजकल की भारतीय संस्कृति बनी है."

लेखक का विचार है कि सिन्धु नदी की पुरानी सभ्यता और दजला और फ़िरात नदियों के किनारे की प्राचीन सुमेरी सभ्यता दोनों में गहरा सम्बन्ध था.

जब जब कोई दो जातियां इस देश में मिलती थीं तो पहली टक्कर में लड़ाइयां और झगड़े होते थे. पर थोड़े ही दिनों में दोनों के मेल से एक नई और दोनों से अधिक सुन्दर चीज़ पैदा हो जाती थी, यहां तक कि दोनों के अलग अलग वजूद का निशान तक न रह जाता था.

आर्य लोगों ने अपने से पहले के बाशिन्दों को नफ़रत के साथ 'कृष्ण' (काले आदमी), 'अनास' (जिनकी नाक दबी हुई थी), 'अदेवयु' (ईश्वर को न मानने वाले), 'अयज्वन' (यज्ञ न करने वाले), 'शिश्न देव' (लिंग पूजने वाले), 'दास' (ग़ुलाम), 'दस्यु' (डाकू) जैसे नामों से पुकारा. उस समय के आर्य अधिकतर या तो उठाऊ चूल्हा रहते थे या छोटी छोटी बस्तियों में बसते थे. यहां के पुराने बाशिन्दे, जो द्रविड़ कहलाते थे, बड़े बड़े शहरों में रहते थे, जिनके चारों तरफ़ पक्की ईंटों की ऊँची दीवारें होती थीं. सदियों दोनों में लड़ाइयां होती रहीं. आख़िर दोनों मिलकर एक दूसरे के रंग में रंग गए.

दुनिया के इतिहास में अकसर कम सभ्य जातियों ने अधिक सभ्य जातियों को जीता है. लेकिन अन्त में कलचर के मामले में जीतने वाली जाति ने हारी हुई क़ौम के सामने जुवा डाल दिया. ईरान में आर्यों के अन्दर शूद्र जाति नहीं थी. अथर्व वेद लिखे जाने के समय तक इस देश में चारों बड़ी बड़ी जातें रूप ले चुकी थीं जिनमें शूद्र सबसे नीचे थे. द्रविड़ों और आर्यों के मिल जाने से शूद्रों की गिनती बहुत बढ़ गई. द्रविड़ों के देवता 'शिव' की पूजा सारे देश में होने लगी और धीरे धीरे लिंग के रूप में सब जगह चल पड़ी. योग और ध्यान, सांड और गाय की पूजा का भी इसी समय रिवाज हुआ. सांड ने नन्दी का रूप लिया. गाय के लिये विशेष आदर भी आर्यों ने इस देश के पुराने बाशिन्दों से सीखा. धीरे धीरे आर्यों के बहुत से नए नए शहर यहां आबाद हो गए जिनमें पुष्कलावती, तक्षशिला, हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, काशी, अयोध्या और मिथिला अधिक मशहूर हैं.

स्वर्गीय श्री बाल गंगाधर तिलक ने बताया था कि ऋग्-वेद और अथर्वेद में बहुत से मंत्र ऐसे हैं जिनसे उस ज़माने की आर्य सभ्यता और सुमेरी सभ्यता के गहरे सम्बन्ध का पता चलता है. श्री भगवत शरण उपाध्याय का कहना

اِس دیش کی کلچر میں سیکڑوں طرح کے نئے نئے رنگ اور نئی شان پیدا کرتے رہے ہیں . ہزاروں برس کے اندر انگنت جاتیوں کے میل سے آجکل کی بھارتیہ سنسکرتی بنی ہے ."

لیکھک کا وچار ہے کہ سندھو ندی کی پرانی سبھیتا اور دجلہ اور فرات ندیوں کے کنارے کی پراچین سومیری سبھیتا دونوں میں گہرا سمبندھ تھا .

جب جب کوئی دو جاتیاں اِس دیش میں ملتی تھیں تو پہلی ٹکر میں لڑائیاں اور جھگڑے ہوتے تھے . پر تھوڑے ہی دنوں میں دونوں کے میل سے ایک نئی اور دونوں سے ادھک سندر چیز پیدا ہو جاتی تھی' یہانتک کہ دونوں کے الگ الگ وجود کا نشان تک نہ رہ جاتا تھا .

آریہ لوگوں نے اپنے سے پہلے کے باشندوں کو نفرت کے ساتھ 'کرشن' (کالے آدمی)' 'اناس' (جن کی ناک دبی ہوئی تھی)' 'اَدیویو' (ایشور کو نہ ماننے والے) 'ایجون' (یگیہ نہ کرنے والے)' 'ششن دیو' (لنگ پوجنے والے)' 'داس' (غلام)' 'دسیو' (ڈاکو) جیسے ناموں سے پکارا. اُس سمئے کے آریہ ادھکتر یا تو اُٹھاؤ چولھا رہتے تھے یا چھوٹی چھوٹی بستیوں میں بستے تھے. یہاں کے پرانے باشندے' جو دروڑ کہلاتے تھے' بڑے بڑے شہروں میں رہتے تھے' جن کے چاروں طرف پکی اینٹوں کی اونچی دیواریں ہوتی تھیں . صدیوں دونوں میں لڑائیاں ہوتی رہیں . آخر دونوں ملکر ایک دوسرے کے رنگ میں رنگ گئے .

دنیا کے اِتہاس میں اکثر کم سبھیہ جاتیوں نے ادھک سبھیہ جاتیوں کو جیتا ہے . لیکن انت میں کلچر کے معاملہ میں جیتنے والی جاتی نے ہاری ہوئی قوم کے سامنے جوا ڈال دیا . ایران میں آریوں کے اندر شودر جاتی نہیں تھی. اتھرو وید لکھے جانے کے سمئے تک اِس دیش میں چاروں بڑی بڑی جاتیں روپ لے چکی تھیں جن میں شودر سب سے نیچے تھے . دروڑوں اور آریوں کے مل جانے سے شودروں کی گنتی بہت بڑھ گئی . دروڑوں کے دیوتا 'شو' کی پوجا سارے دیش میں ہونے لگی اور دھیرے دھیرے لنگ کے روپ میں سب جگہہ چل پڑی . یوگ اور دھیان' سانڈ اور گائے کی پوجا کا بھی اس سمئے رواج ہوا . سانڈ نے نندی کا روپ لیا . گائے کے لئے وشیش آدر بھی آریوں نے اِس دیش کے پرانے باشندوں سے سیکھا . دھیرے دھیرے آریوں کے بہت سے نئے نئے شہر یہاں آباد ہو گئے جن میں پشکلاوتی' تکشلا' ہستناپور' اِندر پرستھ' کاشی' ایودھیا اور متھل ادھک مشہور ہیں .

سورگیہ شری بال گنگا دھر تلک نے بتایا تھا کہ رگوید میں اور اتھروید میں بہت سے منتر ایسے ہیں جن سے اُس زمانے کی آریہ سبھیتا اور سومیری سبھیتا کے گہرے سمبندھ کا پتا چلتا ہے . شری بھگوت شرن اُپادھیائے کا کہنا

है कि अथर्ववेद के एक मंत्र में जो दो शब्द 'आलिगी' और और 'बिलिगी' आते हैं वह सुमेरिया के दो मशहूर राजाओं 'एलुलु' और 'बेलुलु' के नाम हैं. लेखक का ख्याल है भारत की अनेक भाषाओं में जो 'अलाय बलाय' शब्द चलते हैं वह इन्हीं एलुलु और बेलुलु से बने हैं. अर्थवेद के बहुत से जादू और मंत्र प्राचीन बैबीलोनिया (बाबुल) के साहित्य और वहां के रिवाज से लिये गए हैं.

भारत के ग्रन्थ 'शतपथ ब्राह्मण' में तूफ़ान की कहानी हज़रत नूह के उसी तूफ़ान की कहानी है जो कहा जाता है ईसा से लगभग तीन हज़ार बरस पहले बाबुल में आया था. यह कहानी शतपथ ब्राह्मण के लिखे जाने से कम से कम एक हज़ार बरस पहले प्राचीन असुरिया में मौजूद थी. सुमेरी साहित्य में इस कहानी के साथ जियु-सि का नाम लिया जाता है, इंजील और क़ुरान में इसी के साथ हज़रत नूह का नाम लिया जाता है और संस्कृत साहित्य में मनु का नाम लिया जाता है. संस्कृत साहित्य में लिखा है कि जब इतने बड़े तूफ़ान के बाद मनु की किशती किसी पहाड़ पर जाकर लगी और मनु ने देखा कि उनकी किशती में तरह तरह के जानदारों के जोड़े बच गए हैं जिनसे सृष्टि आगे को चल सके तो उन्होंने भगवान को धन्यवाद दिया और यज्ञ करना चाहा, पर उन्होंने देखा कि यज्ञ कराने के लिये पुरोहित इस देश में नहीं थे, तब असुरिया यानी बाबुल देश से पुरोहित बुलाए गए जिन्हें शतपथ ब्राह्मण में 'असुर ब्राह्मण' कहा गया है. असुरिया के लोगों को उन दिनों असुर कहा जाता था.

इसके बाद भारत में ईरानियों का आना हुआ. ईरानी सम्राट दारा का सिन्ध और पच्छमी पंजाब तक राज था. यह राज सौ बरस से ऊपर तक रहा. चाणक्य और चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने दरबार में ईरानी तौर तरीक़े और ईरान के दरबारी रीति रिवाज जारी किये. ईरान के असर से ही भारत में वह खरोष्ठि लिपि चली जो फ़ारसी की तरह दाहने से बाएं को लिखी जाती थी. सम्राट अशोक के बहुत से शिला लेख इसी खरोष्ठि में हैं और उनमें बहुत से ईरानी शब्द आते हैं. पहाड़ों, चट्टानों और ऊँचे ऊँचे खम्बों पर इस तरह के लेख या कतबे खोदने का रिवाज भी, जिसे सम्राट अशोक ने दुनिया में इतना अधिक चमकाया, भारत ने ईरान से और ईरान ने असुरिया से लिया.

उस ज़माने के भारत की मूर्ति निर्माण कला पर ईरान और उसके आस पास के देशों का गहरा असर पड़ा. मिस्र के अन्दर ईसा से तीन हज़ार बरस पहले साँड की पूजा, बाबुल और असुरिया में साँड की पूजा और भारत में नन्दी की पूजा का एक दूसरे के साथ गहरा सम्बन्ध है. तक्षशिला और दूसरे स्थानों की बौद्ध मूर्तियों में ईरानी और यूनानी

هے که اتهرو وید کے ایک منتر میں جو دو شبد 'آلیگی' 'بیلیگی' آتے هیں وہ سومیریا کے دو مشهور راجاؤں 'ایلولو' اور 'بیلولو' کے نام هیں۔ لیکهک کا خیال هے بهارت کی انیک بهاشاؤں میں جو 'ائے بلائے' شبد چلتے هیں وہ اِنهیں ایلولو اور بیلولو سے بنے هیں۔ اتهرووید کے بہت سے جادو اور منتر پراچین بیبیلونیا (بابل) کے ساهتیه اور وهاں کے رواج سے لئے گئے هیں۔

بهارت کے گرنتھ 'شت پتھ براهمن' میں طوفان کی کهانی حضرت نوح کے اُسی طوفان کی کهانی هے جو کہا جاتا هے عیسیٰ سے لگ بهاگ تین هزار برس پهلے بابل میں آیا تها۔ یه کهانی شت پتھ براهمن کے لکھے جانے سے کم سے کم ایک هزا برس پهلے پراچین اسوریا میں موجود تهی۔ سومیری ساهیته میں اِس کهانی کے ساتھ زیو سدو کا نام لیا جاتا هے' اِنجیل اور قرآن میں اِسی کے ساتھ حضرت نوح کا نام لیا جاتا هے اور سنسکرت ساهتیه میں منو کا نام لیا جاتا هے۔ سنسکرت ساهتیه میں لکها هے که جب اِتنے بڑے طوفان کے بعد منو کی کشتی کسی پهاڑ پر جا کر لگی او رمنو نے دیکها که اُن کی کشتی میں طرح طرح کے جانداروں کے جوڑے بچ گئے هیں جن سے سرشٹی آگے کو چل سکے تو اُنهوں نے بهگوان کو دهنیه باد دیا اور یگیه کرنا چاها۔ پر اُنهوں نے دیکها که یگیه کرانے کے لئے پروهت اِس دیش میں نهیں تهے' تب اسوریا یعنی بابل دیش سے پروهت بلائے گئے جنهیں شت پتھ براهمن میں 'اسور براهمن' کہا گیا هے۔ اسوریا کے لوگوں کو اُن دنوں اسور کہا جاتا تها۔

اِس کے بعد بهارت میں اِیرانیوں کا آنا هوا۔ ایرانی سمراٹ دارا کا سندھ اور پچھمی پنجاب تک راج تها۔ یه راج سو برس سے اُوپر تک رها۔ چانکیه اور چندرگپت موریه نے اپنے دربار میں ایرانی طور طریقے اور ایران کے درباری ریت رواج جاری کیئے۔ ایران کے اثر سے هی بهارت میں وہ کهروشٹهی لپی چلی جو فارسی کی طرح داهنے سے بائیں کو لکهی جاتی تهی۔ سمراٹ اشوک کے بہت سے شلا لیکھ اِسی کهروشٹهی میں هیں اور اُن میں بہت سے اِیرانی شبد آتے هیں۔ پهاڑوں' چٹانوں اور اُونچے اُونچے کهمبوں پر اِس طرح کے لیکھ یا کتبے کهودنے کا رواج بهی' جسے سمراٹ اشوک نے دنیا میں اِتنا ادهک چمکایا' بهارت نے ایران سے اور ایران نے اسوریا سے لیا۔

اُس زمانے کے بهارت کی مورتی نرمان کلا پر ایران اور اُس کے آس پاس کے دیشوں کا گهرا اثر پڑا۔ مصر کے اندر عیسیٰ سے تین هزار برس پهلے سانڈ کی پوجا' بابل اور اسوریا میں سانڈ کی پوجا اور بهارت میں نندی کی پوجا کا ایک دوسرے کے ساتھ گهرا سمبندھ هے۔ تکشلا اور دوسرے استهانوں کی بودھ مورتیوں میں ایرانی اور یونانی

असर भारतीय रंग में रंगे हुए साफ़ दिखाई देते हैं. सांची जैसी जगहों के 'स्तूप' हमें मिस्र के 'पिरेमिड' और सुमेर के 'ज़िगुरत' की याद दिलाते हैं. तीनों का मृत्यु के साथ सम्बन्ध था.

ईसा की शुरू की सदियों में भारत के अन्दर शहर के शहर यूनानियों के आबाद थे. बहुत से दूसरे शहरों में यूनानियों के बड़े बड़े मोहल्ले थे. यूरप का दक्खिन पूरब का सारा हिस्सा, मिस्र का उत्तर का भाग और आक्सस और गंगा नदी तक सारा एशिया यूनानियों के क़ब्ज़े में था. पाटलीपुत्र (पटना) तक उनके हमले हुए. उस ज़माने की लिखी हुई गार्गी संहिता में इन यूनानियों को 'दुष्ट विक्रान्त यवनः' यानी बदमाश और बहादुर यवन कहा गया है. लिखा है कि इन लोगों के पाटलीपुत्र के एक हमले के बाद आस पास के तमाम इलाक़े से मर्द इतने अधिक मारे गए थे कि बाद में सारा काम काज औरतों को करना पड़ता था, कई कई औरतें मजबूर होकर एक मर्द से शादी करने लगी थीं और जब कभी इधर उधर अचानक कोई मर्द दिखाई दे जाता था तो औरतें उसे हैरान होकर देखती थीं. लेकिन इस क़त्लेआम के बाद भी जब यूनानी और हिन्दुस्तानी मिल गए तो दोनों दूध और चीनी की तरह एक हो गए और दोनों ने मिलकर भारतीय संस्कृति की रचना की.

उस ज़माने में भारत के अन्दर यूनानी ड्रामे खेले जाते थे. यूनानी साहित्य का भारत की भाषाओं में अनुवाद होता था, और लोग उन किताबों को ख़ूब शौक़ से पढ़ते थे. यूनानी भाषा का भी भारत की भाषाओं पर गहरा असर पड़ा. संस्कृत ड्रामों में 'यवनिका' शब्द यूनानी से लिया हुआ है. भारतीय ड्रामों पर यूनानी ड्रामों का असर है. उस ज़माने के भारतीय सिक्के ज़ाहिर करते हैं कि इस देश के बहुत से लोग उन दिनों यूनानी और खरोष्ठि दोनों भाषाओं को समझते थे.

भारत की ज्योतिष विद्या पर भी यूनानी ज्योतिष का बहुत बड़ा असर पड़ा. आज तक हिन्दुओं की जन्म पत्री में जो 'होराचक्र' बनता है उसमें 'होरा' वही है जो अंगरेज़ी शब्द 'होरास्कोप' का होरा है और दोनों मिस्र के सूर्य देवता 'होरस' से लिये गए हैं. हिन्दू विवाह के लिये सबसे शुभ लग्न जिसमें कालिदास ने शिव और पार्वती की शादी कराई है 'जामित्र' है जो यूनानी 'जियामेत्रान' से लिया गया है. गार्गी संहिता में लिखा है कि ज्योतिष विद्या का जन्म यवनों से ही हुआ और इसके लिये वह "पूज्य" हैं.

उससे पहले के हमारे सिक्के दूसरी शकल के होते थे. आजकल के सिक्कों की शकल हमने यूनानियों से ली. हिन्दी शब्द दाम, जिसके मानी मोल या क़ीमत है, यूनानी शब्द है.

اثر بھارتیہ رنگ میں رنگے ہوئے صاف دکھائی دیتے ہیں . سانچی جیسی جگہوں کے 'استوپ' ہمیں مصر کے 'پریمڈ' اور سومیر کے 'زگورت' کی یاد دلاتے ہیں . تینوں کا مرتیو کے ساتھ سمبندھ تھا .

عیسی کی شروع کی صدیوں میں بھارت کے اندر شہر کے شہر یونانیوں کے آباد تھے . بہت سے دوسرے شہروں میں یونانیوں کے بڑے بڑے محلے تھے . یورپ کا دکھن پورب کا سارا حصہ' مصر کا اُتر کا بھاگ اور آکسس اور گنگا ندی تک سارا ایشیا یونانیوں کے قبضے میں تھا . پاٹلی پتر (پٹنہ) تک اُن کے حملے ہوئے . اُس زمانے کی لکھی ہوئی گارگی سنگھیتا میں اِن یونانیوں کو دشٹ وکرانت یونہ' یعنی بدمعاش اور بہادر یون کہا گیا ہے . لکھا ہے کہ اِن لوگوں کے پاٹلی پتر کے ایک حملے کے بعد آس پاس کے تمام علاقے سے مرد اِتنے ادھک مارے گئے تھے کہ بعد میں سارا کام کاج عورتوں کو کرنا پڑتا تھا' کئی کئی عورتیں مجبور ہو کر ایک مرد سے شادی کرنے لگی تھیں اور جب کبھی اِدھر اُدھر اچانک کوئی مرد دکھائی دے جاتا تھا تو عورتیں اُسے حیران ہو کر دیکھتی تھیں . لیکن اِس قتل عام کے بعد جب یونانی اور ہندستانی مل گئے تو دونوں دودھ اور چینی کی طرح ایک ہو گئے اور دونوں نے ملکر بھارتیہ سنسکرتی کی رچنا کی .

اُس زمانے میں بھارت کے اندر یونانی ڈرامے کھیلے جاتے تھے . یونانی ساہتیہ کا بھارت کی بھاشاؤں میں انوواد ہوتا تھا' اور لوگ اُن کتابوں کو خوب شوق سے پڑھتے تھے . یونانی بھاشا کا بھی بھارت کی بھاشاؤں پر گہرا اثر پڑا . سنسکرت ڈراموں میں 'یونیکا' شبد یونانی سے لیا ہوا ہے . بھارتیہ ڈراموں پر یونانی ڈراموں کا اثر ہے . اس زمانے کے بھارتیہ سکے ظاہر کرتے ہیں کہ اِس دیش کے بہت سے لوگ اُن دنوں یونانی اور کھروشٹھی دونوں بھاشاؤں کو سمجھتے تھے .

بھارت کی جیوتش ودیا پر بھی یونانی جیوتش کا بہت بڑا اثر پڑا . آج تک ہندوؤں کی جنم پتری میں جو 'ہورا چکر' بنتا ہے اُس میں 'ہورا' وہی ہے جو انگریزی شبد 'ہاروسکوپ' کا ہارو ہے اور دونوں مصر کے سوریہ دیوتا 'ہورس' سے لئے گئے ہیں . ہندو وواہ کے لئے سب سے شبھ لگن جس میں کالیداس نے شو اور پاروتی کی شادی کرائی ہے 'جامتر' ہے جو یونانی 'زیا میتران' سے لیا گیا ہے . گارگی سنگھتا میں لکھا ہے کہ جیوتش ودیا کا جنم یونوں سے ہی ہوا اور اِس کے لئے وہ "پوجیہ" ہیں .

اُس سے پہلے کے ہمارے سکے دوسری شکل کے ہوتے تھے . آجکل کے سکوں کی شکل ہم نے یونانیوں سے لی . ہندی شبد دام' جس کے معنی مول یا قیمت ہے' یونانی شبد ہے .

महात्मा बुद्ध ने अपने चेलों को साफ़ शब्दों में मना किया था कि मेरी किसी तरह की मूर्ति हरगिज़ न बनाना. उसी का नतीजा था कि शुरू के बौद्ध धर्म में जिसे 'हीनयान' कहा जाता है बुद्ध की कोई मूर्ति न बनती थी, और जहां किसी चिन्ह की ज़रूरत पड़ती थी तो केवल छत्र या चक्र या बोधि वृक्ष की तसवीर बना दी जाती थी. लेकिन बुद्ध के मरने के कई सौ बरस बाद पहली सदी ईसवी में जब बौद्ध धर्म की महायान सम्प्रदाय क़ायम हुई तो बुद्ध की मूर्तियां भी जगह जगह बनने लगीं, यहां तक कि दुनिया में शायद जितनी बुद्ध की मूर्तियां बनी हैं उतनी आज तक किसी दूसरे की नहीं बनीं. शुरू से अब तक बुद्ध की इन मूर्तियों में और बौद्ध मन्दिरों में यूनानी असर साफ़ दिखाई देता है लेकिन वह सारा असर गहरे भारतीय रंग में रंगा हुआ है.

धीरे धीरे जीवन के हर मैदान में यूनानी और हिन्दुस्तानी मिलकर एक हो गए. सैकड़ों यूनानियों ने वैष्णव धर्म स्वीकार किया और लाखों ने बौद्ध धर्म अपनाया.

यूनानियों के बाद शाक जाति के लोगों ने बाहर से आकर भारत के बड़े बड़े हिस्सों पर राज किया, मालवा और महाराष्ट्र तक उनकी बस्तियां और उनकी हुकूमत थी. उनके राजाओं और यहां के राजाओं में लड़ाइयां भी हुईं. धीरे धीरे वह सब भी भारत के जीवन में रल मिल गए. आजकल की संस्कृत भाषा और संस्कृत साहित्य को सबसे ज़्यादा उन्नति विदेशी शक राजाओं ही ने दी. ज्योतिष ने भी उनके ज़माने में बहुत बड़ी तरक़्क़ी की. ज्योतिष का मशहूर भारतीय विद्वान वराह मिहिर ख़ुद शक जाति का था. उसका नाम ईरानी नाम था. यूनानी विज्ञान भी उन दिनों इस देश में ख़ूब पढ़ा जाता था.

हमारी आजकल की राष्ट्रीय पोशाक अचकन और पाजामा शुरू में शक जाति के लोगों ने इस देश में जारी की, बाद में मुग़ल बादशाहों ने और अवध के नवाबों ने इसे और अधिक सुन्दर रूप दिया. कुरता और शलवार की चाल भी इस देश में शक लोगों से ही आई.

भारत में 'सूर्य' की जो सब से पुरानी मूर्ति मिलती है वह पहली सदी इस्वी की बनी हुई है. उसके शरीर पर यही विदेशी कुरता, विदेशी शलवार और विदेशी चोग़ा दिखाई देता है. पांव में ऊँचे एशियाई जूते हैं, सिर पर ईरानी टोपी और कमर से ख़ंजर लटकता हुआ. किसी हिन्दुस्तानी देवता को उससे पहले इस तरह के कपड़े नहीं पहनाए जाते थे, न इस तरह की टोपी, न इस तरह के जूते.

वैदिक धर्म में भी सूर्य की पूजा का ज़िक्र आता है लेकिन शकों से पहले यहां सूर्य की मूर्ति नहीं बनती थी. सूर्य की जो मूर्तियां धोती पहने हुए और दुपट्टा डाले हुए मिलती

مہاتما بدھ نے اپنے چیلوں کو صاف شبدوں میں منع کیا تھا کہ میری کسی طرح کی مورتی ہرگز نہ بنانا۔ اُسی کا نتیجہ تھا کہ شروع کے بودھ دھرم میں جسے 'ہینیان' کہا جاتا ہے بدھ کی کوئی مورتی نہ بنتی تھی' اور جہاں کسی چنھ کی ضرورت پڑتی تھی تو کیول چھتر یا چکر یا بودھی ورکش کی تصویر بنا دی جاتی تھی۔ لیکن بدھ کے مرنے کے کئی سو برس بعد پہلی صدی عیسوی میں جب بودھ دھرم کی مہایان سمپردائے قایم ہوئی تو بدھ کی مورتیاں بھی جگہہ جگہہ بننے لگیں' یہاں تک کہ دنیا میں شاید جتنی بدھ کی مورتیاں بنی ہیں اُتنی آج تک کسی دوسرے کی نہیں بنیں۔ شروع سے اب تک بدھ کی اِن مورتیوں میں اور بودھ مندروں میں یونانی اثر صاف دکھائی دیتا ہے لیکن وہ سارا اثر گہرے بھارتیہ رنگ میں رنگا ہوا ہے۔

دھیرے دھیرے جیون کے ہر میدان میں یونانی اور ہندستانی ملکر ایک ہو گئے۔ سیکڑوں یونانیوں نے ویشنو دھرم سویکار کیا اور لاکھوں نے بودھ دھرم اپنایا۔

یونانیوں کے بعد شک جاتی کے لوگوں نے باہر سے آکر بھارت کے بڑے بڑے حصوں پر راج کیا' مالوہ اور مہاراشٹر تک اُن کی بستیاں اور اُن کی حکومت تھی۔ اُن کے راجاؤں اور یہاں کے راجاؤں میں لڑائیاں بھی ہوئیں۔ دھیرے دھیرے وہ سب بھی بھارت کے جیون میں رل مل گئے۔ آجکل کی سنسکرت بھاشا اور سنسکرت ساہتیہ کو سب سے زیادہ اُنتی ودیشی شک راجاؤں ہی نے دی۔ جیوتش نے بھی اُن کے زمانے میں بہت بڑی ترقی کی۔ جیوتش کا مشہور بھارتیہ ودوان ورہ مہر خود شک جاتی کا تھا۔ اُس کا نام ایرانی نام تھا۔ یونانی وگیان بھی اُن دنوں اِس دیش میں خوب پڑھا جاتا تھا۔

ہماری آجکل کی راشٹریہ پوشاک اچکن اور پاجامہ شروع میں شک جاتی کے لوگوں نے اِس دیش میں جاری کی' بعد میں مغل بادشاہوں نے اور اودھ کے نوابوں نے اِسے اور ادھک سندر روپ دیا۔ کرتہ اور شلوار کی چال بھی اِس دیش میں شک لوگوں سے ہی آئی۔

بھارت میں 'سوریہ' کی جو سب سے پرانی مورتی ملتی ہے وہ پہلی صدی عیسوی کی بنی ہوئی ہے۔ اُس کے شریر پر یہی ودیشی کرتہ' ودیشی شلوار اور ودیشی چوغہ دکھائی دیتا ہے۔ پاؤں میں اُونچے ایشیائی جوتے ہیں' سر پر ایرانی ٹوپی اور کمر سے خنجر لٹکتا ہوا۔ کسی ہندستانی دیوتا کو اُس سے پہلے اِس طرح کے کپڑے نہیں پہنائے جاتے تھے' نہ اِس طرح کی ٹوپی' نہ اِس طرح کے جوتے۔

ویدک دھرم میں بھی سوریہ کی پوجا کا ذکر آتا ہے لیکن شکوں سے پہلے یہاں سوریہ کی مورتی نہیں بنتی تھی۔ سوریہ کی جو مورتیاں دھوتی پہنے ہوئے اور دوپٹہ ڈالے ہوئے ملتی

हैं वह सब बाद की हैं. जहां तक मालूम होता है सूर्य की मूर्ति बनाकर पूजने का रिवाज इस देश में शक जाति के लोगों से ही आया. हमारे पुराणों में यह कथा आती है कि मुलतान में जब सूर्य का पहला मन्दिर बनाया गया तो मूर्ति की स्थापना करने और उसकी पूजा शुरू करने की विधि यहां के किसी ब्राह्मण को नहीं आती थी. इसलिये इस काम के लिये बाहर से "शाक द्वीपी ब्राह्मण" बुलाए गए थे. आज तक भारत में शाक द्वीपी ब्राह्मण मौजूद हैं और उत्तर भारत में बहुत से दूसरे ब्राह्मण इन 'विदेशी' ब्राह्मणों का छुआ पानी नहीं पीते.

शक जाति के लोगों की बहुत बड़ी तादाद भारत के रहने वालों में मिल गई. आज भारत वासियों के खून में, उनके साहित्य में, उनकी कला और विज्ञान में, और उनकी कलचर में वह पूरी तरह समाई हुई है. उनके बहुत से राजा और सरदार जो 'शाही' और 'शाहानशाही' कहलाते थे भारत से निकलकर बहुत दिनों तक अफ़ग़ानिस्तान में राज करते रहे. साठ पीढ़ियों तक वह उत्तर पच्छिमी सरहद पर जमकर बाहर के हमलों से भारत की रक्षा करते रहे. श्री भगवत शरण उपाध्याय का कहना है कि :—"निस्सन्देह हमारी आन का मूक घमंड कितना चमक उठता है जब हम यह देखते हैं कि जिस समय हमारे पूज्य राजा भोज उस अन्हिलवाड़ा के शहर को लूट रहे थे जिसका राजा मुसलमान हमलावरों से लड़ने दूर गया हुआ था, ठीक उस समय भारत के पच्छिमी फाटक के यह बहादुर सन्तरी, हिन्दूकुश की पहाड़ियों के निडर चौकीदार (शक राजा) अपनी जगह पर डटे हुए लगातार उत्तर पच्छिम के उन जबरदस्त शत्रुओं से लोहा लेते रहते थे जो भारत पर हमला करने के लिये इधर बढ़ते थे. अन्त में वह उस बाढ़ के सामने न ठहर सके और बेइज्जती की जिन्दगी बिताने की जगह उन्होंने आग में कूद कूद कर अपने को ख़तम कर दिया."

इस में सन्देह नहीं इतिहास के बहुत से भूले हुए पन्ने हमारे लिये काफ़ी मनोरंजक और शिक्षाप्रद हो सकते हैं.

आज तक विदेशी कनिष्क का चलाया हुआ शाका संवत स्वदेशी विक्रमादित्य के नाम पर चले हुए विक्रम सम्वत के मुक़ाबले में भारत के अनेक भागों में ख़ासकर जन्म पत्रियों और पंचांगों में अधिक पवित्र माना जाता है.

कनिष्क के राज में मध्य एशिया का बहुत सा हिस्सा, काश्मीर, पंजाब और उत्तर प्रदेश का बहुत सा हिस्सा शामिल था. धर्म के मामले में वह हद दरजे का उदार, सब धर्मों को एक निगाह से देखने वाला और सब के साथ एक सा बर्ताव करने वाला था. बौद्ध धर्म की सेवा एक अशोक को छोड़कर किसी भारतीय राजा ने उससे अधिक नहीं की. चीन के साथ भी उसका गहरा सम्बन्ध था. पूरबी पंजाब में चीनियों की सबसे पहली आबादी 'चीन मुक्ति' उसी की

ہیں وہ سب بعد کی ہیں ۔ جہاں تک معلوم ہوتا ہے سوریہ کی مورتی بناکر پوجنے کا رواج اِس دیش میں شک جاتی کے لوگوں سے ہی آیا ۔ ہمارے پرانوں میں یہ کتھا آتی ہے کہ ملتان میں جب سوریہ کا پہلا مندر بنایا گیا تو مورتی کی استھاپنا کرنے اور اُس کی پوجا شروع کرنے کی ودھی یہاں کے کسی براہمن کو نہیں آتی تھی ۔ اِس لئے اِس کام کے لئے باہر سے "شک دویپی براہمن" بلائے گئے تھے ۔ آج تک بھارت میں شاک دویپی براہمن موجود ہیں اور اُتر بھارت میں بہت سے دوسرے براہمن اُن 'ودیشی' براہمنوں کا چھوا پانی نہیں پیتے ۔

شک جاتی کے لوگوں کی بہت بڑی تعداد بھارت کے رہنے والوں میں مل گئی ۔ آج بھارت واسیوں کے خون میں' اُن کے 'ساہتیہ میں' اُن کی کلا اور وگیان میں' اور اُن کی کلچر میں وہ پوری طرح سمائی ہوئی ہے ۔ اُن کے بہت سے راجا اور سردار جو 'شاہی' اور 'شہان شاہی' کہلاتے تھے بھارت سے نکل کر بہت دنوں تک افغانستان میں راج کرتے رہے ۔ ساٹھ پیڑھیوں تک وہ اُتر پچھمی سرحد پر جم کر باہر کے حملوں سے بھارت کی رکشا کرتے رہے ۔ شری بھگوت شرن اُپادھیائے کا کہنا ہے کہ :—' نسندیہہ ہماری آن کا چھوٹا گھمنڈ کتنا چمک اُٹھتا ہے جب ہم یہ دیکھتے ہیں کہ جس سمے ہمارے پوجیہ راجا بھوج اُس انہلواڑا کے شہر کو لوٹ رہے تھے جس کا راجا مسلمان حملہ آوروں سے لڑنے دور گیا ہوا تھا' ٹھیک اُس سمے بھارت کے پچھمی پھاٹک کے یہ بہادر سنتری' ہندوکش کی پہاڑیوں کے نڈر چوکیدار (شک راجا) اپنی جگہ پر ڈٹے ہوئے لگاتار اُتر پچھم کے اُن زبردست شترؤں سے لوہا لیتے رہتے تھے جو بھارت پر حملہ کرنے کے لئے اِدھر بڑھتے تھے ۔ انت میں وہ اِس باڑھ کے سامنے نہ ٹھہر سکے اور بےعزتی کی زندگی بتانے کی جگہ اُنہوں نے آگ میں کود کود کر اپنے کو ختم کردیا ۔"

اِس میں سندیہہ نہیں اِتہاس کے بہت سے بھولے ہوئے پنّے ہمارے لئے کافی منورنجک اور شکشاپرد ہوسکتے ہیں ۔

آج تک ودیشی کنشک کا چلایا ہوا شاکا سموت سودیشی وکرمادتیہ کے نام پر چلے ہوئے وکرم سموت کے مقابلہ میں بھارت کے انیک بھاگوں میں خاصکر جنم پتریوں اور پنچانگوں میں ادھک پوتر مانا جاتا ہے ۔

کنشک کے راج میں مدھیہ ایشیا کا بہت سا حصہ' کشمیر' پنجاب اور اُتر پردیش کا بہت سا حصہ شامل تھا ۔ دھرم کے معاملے میں وہ حد درجہ کا اُدار' سب دھرموں کو ایک نگاہ سے دیکھنے والا اور سب کے ساتھ ایکسا برتاؤ کرنے والا تھا ۔ بودھ دھرم کی سیوا ایک اشوک کو چھوڑ کر کسی بھارتیہ راجا نے اُس سے ادھک نہیں کی ۔ چین کے ساتھ بھی اُس کا گہرا سمبندھ تھا ۔ پوربی پنجاب میں چینیوں کی سب سے پہلی آبادی 'چین مکتی' اسی کی

क़ायम की हुई थी. आड़ू और नाशपाती दोनों चीन से उसी के समय में आये. कनिष्क के ज़माने के हालात को पढ़ने से मालूम होता है कि भारत की कलचर का रूप देने में चीन का भी बहुत बड़ा हिस्सा है. चीनी सम्राट 'स्वर्ग के पुत्र' कहलाते थे. उसी चाल पर कनिष्क 'देव पुत्र' कहलाता था. कनिष्क के सिक्के जिन पर कई कई धर्मों के देवी देवताओं के चित्र होते थे साबित करते हैं कि धर्म के मामले में भी उस समय चीनियों की मशहूर उदारता और उनके सर्व धर्म सम्भाव का हम पर गहरा असर पड़ा. उस ज़माने की कला, चित्रकारी आदि में साफ़ अनेक देशों और अनेक धर्मों के रंग और उनकी छाप दिखाई देती है., बाद के गुप्ता युग की सारी कला उसी उदार युग की पैदावार है.

श्री भगवत् शरण का कहना है कि भारत के इतिहास में 'राष्ट्रीयता' की यानी भारत के एक राष्ट्र होने की सबसे पहली झलक हमें उस समय मिलती है जब कि विदेशी शक और कुशन बादशाहों ने जिन्हें शाही कहा जाता था सुबुक्तगीन और उसके बेटे महमूद के हमलों से भारत की रक्षा करने के लिये देश की सब शक्तियों को पहली बार मिलाने की कोशिश की. इतिहास में भारत की एकता हमें सबसे पहले उसी समय चमकती हुई दिखाई देती है.

गुप्ता युग भारत का सुनहरा युग माना जाता है. वास्तव में उस युग का सारा बड़प्पन इन ही बाहर के असरों की देन था.

हुण जाति के लोग जो सब से आख़ीर में भारत आए चीन की ह्यूँग-नु जाति से सम्बन्ध रखते थे. यह वही हुण थे जिन्होंने रोमन साम्राज्य की कमर तोड़ी. यही लोग भारत के मैदानों में भी आकर बसे. चार हिन्दू जातों के अन्दर यह आसानी से न खप सके. वह इतने शक्तिशाली थे कि उन सब ने शूद्र बनकर रहना स्वीकार नहीं किया. इसलिये उन्हें क्षत्री मानना पड़ा. बहुत बड़े पैमाने पर आबू पहाड़ के ऊपर एक शुद्धि संस्कार हुआ. और पाँच राजपूत कुलों के नाम से जिन्हें 'अग्निकुल' कहा जाता है वे सब के सब हिन्दुओं में मिला लिये गए. कहा गया कि वे हवन कुण्ड में से पैदा हुए हैं. इस तरह यह सब सोलह आने क्षत्री हो गए. राजपूत स्त्रियों में 'जौहर' का रिवाज उन्हीं से पड़ा. 'जौहर' एक विदेशी शब्द है जिसका निकास एक इबरानी शब्द से है जिसके मानी आग और रोशनी हैं.

अहीर, गूजर, जाट और राजपूत हिन्दू समाज का एक ज़बरदस्त अंग होते हुए भी अपने सुन्दर सुडौल शरीरों और ख़ास स्वभाव के कारण आज भी इस देश में सब से अधिक अलग चमकते हैं. कहने को यह सब विदेशी हैं.

लेखक का कहना है कि इसके बाद भारत में वह लोग आए जिन्होंने आजकल की भारत की कलचर को रूप देने

قایم کی ہوئی تھی ۔ آڑو اور ناشپاتی دونوں چین سے اُسی کے سمے میں آئے ۔ کنشک کے زمانے کے حالات کو پڑھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ بھارت کی کلچر کو روپ دینے میں چین کا بھی بہت بڑا حصہ ہے ۔ چینی سمراٹ 'سورگ کے پتر' کہلاتے تھے ۔ اُسی چال پر کنشک 'دیو پتر' کہلاتا تھا ۔ کنشک کے سکے جن پر کئی کئی دھرموں کے دیوی دیوتاؤں کے چتر ہوتے تھے ثابت کرتے ہیں کہ دھرم کے معاملے میں بھی اُس سمے چینیوں کی مشہور اُدارتا اور اُن کے سرودھرم سمبھاؤ کا ہم پر گہرا اثر پڑا ۔ اُس زمانے کی کلا' چترکاری آدی میں صاف انیک دیشوں اور انیک دھرموں کے رنگ اور اُن کی چھاپ دکھائی دیتی ہے ۔ بعد کے گپتا یگ کی ساری کلا اُسی اُدار یگ کی پیداوار ہے ۔

شری بھگوت شرن کا کہنا ہے کہ بھارت کے اِتہاس میں 'راشٹریتا' کی یعنی بھارت کے ایک راشٹر ہونے کی سب سے پہلی جھلک ہمیں اُس سمے ملتی ہے جب کہ ودیشی شک اور کشن بادشاہوں نے جنھیں شاہی کہا جاتا تھا سبکتگین اور اِس کے بیٹے محمود کے حملوں سے بھارت کی رکشا کرنے کے لئے دیش کی سب شکتیوں کو پہلی بار ملانے کی کوشش کی ۔ اِتہاس میں بھارت کی ایکتا ہمیں سب سے پہلے اُسی سمے چمکتی ہوئی دکھائی دیتی ہے ۔

گپتا یگ بھارت کا سنہرا یگ مانا جاتا ہے ۔ واستو میں اُس یگ کا سارا بڑپن اِن ہی باہر کے اثروں کی دین تھا ۔

ہن جاتی کے لوگ جو سب سے آخیر میں بھارت آئے چین کی ہیونگ - نو جاتی سے سمبندھ رکھتے تھے ۔ یہ وہی ہن تھے جنھوں نے رومن سامراجیہ کی کمر توڑی ۔ یہی لوگ بھارت کے میدانوں میں بھی آکر بسے ۔ چار ہندو جاتوں کے اندر یہ آسانی سے نہ کھپ سکے ۔ وہ اِتنے شکتی شالی تھے کہ اُن سب نے شودر بن کر رہنا سویکار نہیں کیا ۔ اِس لئے اُنھیں چھتری ماننا پڑا ۔ بہت بڑے پیمانے پر آبو پہاڑ کے اوپر ایک شدھی سنسکار ہوا ۔ اور پانچ راجپوت کلوں کے نام سے جنھیں 'اگنی کل' کہا جاتا ہے وے سب کے سب ہندوؤں میں مل گئے ۔ کہا گیا کہ وے ہون کنڈ میں سے پیدا ہوئے ہیں ۔ اِس طرح یہ سب سولہ آنے چھتری ہوگئے ۔ راجپوت اِستریوں میں 'جوہر' کا رواج اُنھیں سے پڑا ۔ 'جوہر' ایک ودیشی شبد ہے جس کا نکاس ایک عبرانی شبد سے ہے جس کے معنی آگ اور روشنی ہیں ۔

اہیر' گوجر' جاٹ اور راجپوت ہندو سماج کا ایک زبردست انگ ہوتے ہوئے بھی اپنے سندر' سڈول شریروں اور خاص سبھاؤ کے کارن آج بھی اِس دیش میں سب سے ادھک الگ چمکتے ہیں ۔ کہنے کو یہ سب ودیشی ہیں ۔

لیکھک کا کہنا ہے کہ اِس کے بعد بھارت میں وہ لوگ آئے جنھوں نے آجکل کی بھارت کی کلچر کو روپ دینے

में शायद सबसे अधिक हिस्सा लिया. सन् 712 ईसवी में मुहम्मद बिन क़ासिम के अधीन अरबों का हमला हुआ. लेखक के शब्द हैं :—"मानव सभ्यता को चमकाने और बढ़ाने में अरबों ने सब से अधिक समझदारी का हिस्सा लिया है. मुहम्मद साहब की मृत्यु के अस्सी बरस के अन्दर पूरब में सिन्धु नदी और आकसस नदी से लेकर पच्छिम में स्पेन यानी अतलान्तिक महासागर के किनारे तक, और उत्तर में कैस्पियन समुद्र से लेकर दक्खिन में नील नदी तक का सारा इलाक़ा अरबों के अधीन था. इस सारे इलाक़े में उन्होंने सब जगह विद्या की ख़ूब रक्षा की और उसको एक जगह से ले जाकर दूसरी जगह प्रचार किया. उन्होंने यूनानी फ़ल्सफ़े और यूनानी विज्ञान की रक्षा की और उन्हें सारे योरप में फैलाया. भारत से गणित और वैद्यक को ले जाकर उनकी मदद से उन्होंने योरप के ज्ञान को बढ़ाया. चीन से काग़ज़ और छापने की कला को ले जाकर उन्होंने दुनिया भर में फैलाया. विद्या और विज्ञान के इस तरह फैलने से बाद में जो जो चमत्कार देखने को मिले वह सब को मालूम हैं. यह सब आजकल की दुनिया को अरबों की देन है."

इसके बाद जो मुसलमान जातियां अलग-अलग देशों से भारत में आईं और बस गईं उन्होंने भी भारत की मिली जुली कलचर को रूप देने में बहुत बड़ा और गहरा हिस्सा लिया. फ़ारसी और अरबी दोनों ज़बानें इस देश में आकर एक बड़े दरजे तक भारत के रंग में रंग गईं. बहुत से बाहर से आने वाले मुसलमानों ने भारत की भाषाओं और बोलियों में लिखना और काव्य रचना करना शुरू किया. उत्तर में खड़ी बोली का एक नया रूप सामने आया जिसे उर्दू कहा जाता है. लालित्य और सौन्दर्य, फ़साहत और बलाग़त में खड़ी बोली का यह नया रूप पहले के रूप से कहीं बढ़ गया. हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों ने मिलकर खड़ी बोली के इस नए रूप को चमकाया. उर्दू का इसलाम धर्म से कोई ख़ास सम्बन्ध नहीं, यह बोली भारत से बाहर किसी भी दूसरे देश में नहीं बोली जाती. यह सब भारत-वासियों की मिली जुली सम्पत्ति है. धीरे-धीरे हिन्दी गद्य साहित्य की रचना में भी इसने बहुत बड़ी मदद दी. इसलाम के साथ साथ मानव एकता की अपूर्व कल्पना ने इस देश में जन्म लिया. तसव्वुफ़ यानी सूफ़ी विचारों ने इस देश में एक नई समाजी क्रान्ति पैदा कर दी. कबीर, नानक और अनेक और सन्त महात्मा उसी क्रान्ति की पैदावार और उसके अलमबरदार थे.

तरह तरह की कला और कारीगरी में भी इस देश के अन्दर इसलाम के आने के साथ साथ एक नई जान पैदा हो गई. इमारतों के बनाने में मुग़ल कला उस समय तक की सबसे

میں شاید سب سے ادھک حصہ لیا. سن 712 عیسوی میں محمد بن قاسم کے ادھین عربوں کا حملہ ہوا. لیکھک کے شبد ہیں :— "مانو سبھیتا کو چمکانے اور بڑھانے میں عربوں نے سب سے ادھک سمجھداری کا حصہ لیا ہے." محمد صاحب کی مرتیو کے اسی برس کے اندر پورب میں سندھو ندی اور آکسس ندی سے لیکر پچھم میں اسپین یعنی اٹلانٹک مہاساگر کے کنارے تک' اور اُتر میں کیسپین سمندر سے لیکر دکھن میں نیل ندی تک کا سارا علاقہ عربوں کے ادھین تھا . اِس سارے علاقے میں اُنہوں نے سب جگہ ودیا کی خوب رکشا کی اور اُس کو ایک جگہ سے لیجاکر دوسری جگہ پرچار کیا . اُنہوں نے یونانی فلسفے اور یونانی وگیان کی رکشا کی اور اُنھیں سارے یورپ میں پھیلایا . بھارت سے گنِت اور ویدک کو لیجاکر اُن کی مدد سے اُنہوں نے یورپ کے گیان کو بڑھایا . چین سے کاغذ اور چھاپنے کی کلا کو لیجاکر اُنہوں نے دنیا بھر میں پھیلایا . ودیا اور وگیان کے اِس طرح پھیلنے سے بعد میں جو جو چمتکار دیکھنے کو ملے وہ سب کو معلوم ہیں . یہ سب آجکل کی دنیا کو عربوں کی دین ہے ."

اِس کے بعد جو مسلمان جاتیاں الگ الگ دیشوں سے بھارت میں آئیں اور بس گئیں اُنہوں نے بھی بھارت کی ملی جلی کلچر کو روپ دینے میں بہت بڑا اور گہرا حصہ لیا. فارسی اور عربی دونوں زبانیں اُس دیش میں آکر ایک بڑے درجہ تک بھارت کے رنگ میں رنگ گئیں . بہت سے باہر سے آنے والے مسلمانوں نے بھارت کی بھاشاؤں اور بولیوں میں لکھنا اور کاویہ رچنا کرنا شروع کیا . اُتر میں کھڑی بولی کا ایک نیا روپ سامنے آیا جسے اُردو کہا جاتا ہے . لالتیہ اور سوندریہ' فصاحت اور بلاغت میں کھڑی بولی کا یہ نیا روپ پہلے کے روپ سے کہیں بڑھ گیا . ہندؤں اور مسلمانوں دونوں نے ملکر کھڑی بولی کے اِس نئے روپ کو چمکایا . اُردو کا اِسلام دھرم سے کوئی خاص سمبندھ نہیں' یہ بولی بھارت سے باہر کسی بھی دوسرے دیش میں نہیں بولی جاتی . یہ سب بھارت واسیوں کی ملی جلی سمپتی ہے . دھیرے دھیرے ہندی گدیہ ساہتیہ کی رچنا میں بھی اِس نے بہت بڑی مدد دی . اِسلام کے ساتھ ساتھ مانو ایکتا کی اپوروکلپنا نے اِس دیش میں جنم لیا . تصوف یعنی صوفی وچاروں نے اِس دیش میں ایک نئی سماجی کرانتی پیدا کردی . کبیر' نانک اور انیک اور سنت مہاتما اسی کرانتی کی پیداوار اور اُس کے علم بردار تھے .

طرح طرح کی کلا اور کاریگری میں بھی اِس دیش کے اندر اِسلام کے آنے کے ساتھ ساتھ ایک نئی جان پیدا ہوگئی . عمارتوں کے بنانے میں مغل کلا اُس سمے تک کی سب سے

शानदार और सब से सुन्दर कला थी. नए ढंग की मीनारें और नए गुम्बद, मेहराबें, महल, क़िले और मसजिदें, सुन्दर मक़बरे, बाग़ और नई नई तरह के फल और फूल देश भर में दिखाई देने लगे. आगरे का ताज भारत के मस्तक पर झूमर की तरह चमकने लगा और दुनिया भर की सुन्दर से सुन्दर इमारतों में गिना जाने लगा. मुग़ल चित्र कला अपने पुराने नमूने ईरानी चित्र कला से सुन्दरता में कहीं बढ़ गई. संगीत में भी उस ज़माने की देन उतनी ही गहरी थी. नए रागों और नई नई लयों ने भारत के संगीत में चार चाँद लगा दिये.

श्री भगवत शरण उपाध्याय का कहना है कि सम्राट अकबर की धार्मिक उदारता को देखकर हमें सम्राट अशोक की फिर से याद आ जाती है. यह दूसरी बात है कि अपने दीने इलाही के अन्दर सब धर्मों की बुनियादी बातों को मिला देने की कोशिश में अकबर समय से शायद तीन सौ बरस पहले पैदा हो गया था. मुग़लों ने ही भारत की राष्ट्रीय पोशाक को रूप दिया. रोटी और तवा, केवल यह दोनों शब्द ही बाहर के नहीं हैं इनका उपयोग भी हमने आगन्तुक मुसलमानों से ही सीखा. आज रोटी शब्द चपाती के मानी में भी और साधारण भोजन के माने में भी भारत के कोने कोने में बोला जाता है.

श्री भगवत शरण के अनुसार योरप वालों या अंगरेज़ों की देन भी हिन्दुस्तानी कलचर की इतनी कम नहीं हैं. हमारी आजकल की राष्ट्रीयता की कल्पना, भारत के एक देश होने का विचार, राजकाजी आज़ादी का प्रेम. हमारा आज का समाजी जीवन, हमारे कल कारख़ाने, नया विज्ञान, हमारी पार्लिमेन्ट, हमारी राजकाजी संस्थाएं, हमारी शिक्षा, हमारा साहित्य इन सब के अन्दर योरप का असर हमें साफ़ चमकता हुआ दिखाई दे रहा है. योरप वालो की नीयत में कहीं कहीं जो कुछ बुराई रही हो, और बुराई काफ़ी थी, इसमें सन्देह नहीं कि योरप वालों ने ही हमारे बहुत से पुराने ख़ज़ानों को खोद कर हमारे सामने रक्खा. उन्होंने ही सम्राट अशोक के शिलालेखों से हमारी जानकारी कराई. सैकड़ों बुराइयों के होते हुए भी हिन्दुस्तानी कलचर को उनकी देन एक स्थाई देन है.

अन्त में श्री भगवत शरण उपाध्याय ने संसार की कलचर को भारत की देन की चरचा की है. उन्होंने दिखाया है कि भारत ने हमेशा खुले दिल से दूसरों से लिया है और खुले दिल से दूसरों को दिया है. उनकी राय में महात्मा बुद्ध के समय से लेकर महात्मा गांधी तक और आज तक दुनिया में शान्ति क़ायम करने के लिये भारत के प्रयत्न कुछ कम गर्व की चीज़ नहीं हैं. अभी दुनिया इतनी तेज़ी से बदल रही है कि उस पर आँखों का टिक सकना भी कठिन है.

شاندار اور سب سے سندر کلا تھی۔ نئے ڈھنگ کی مینارین اور نئے گمبد، محرابیں، محل، قلعے اور مسجدیں، سندر مقبرے، باغ اور نئی نئی طرح کے پھل اور پھول دیش بھر میں دکھائی دینے لگے۔ آگرے کا تاج بھارت کے مستک پر جھومر کی طرح چمکنے لگا اور دنیا بھر کی سندر سے سندر عمارتوں میں گنا جانے لگا۔ مغل چتر کلا اپنے پرانے نمونے ایرانی چتر کلا سے سندرتا میں کہیں بڑھ گئی۔ سنگیت میں بھی اس زمانے کی دین اتنی ہی گہری تھی۔ نئے راگوں اور نئی نئی لیوں نے بھارت کے سنگیت میں چار چاند لگا دئیے۔

شری بھگوت شرن اپادھیائے کا کہنا ہے کہ سمراٹ اکبر کی دھارمک ادارتا کو دیکھکر ہمیں سمراٹ اشوک کی پھر سے یاد آ جاتی ہے۔ یہ دوسری بات ہے کہ اپنے دین الٰہی کے اندر سب دھرموں کی بنیادی باتوں کو ملا دینے کی کوشش میں اکبر سمے سے شاید تین سو برس پہلے پیدا ہوگیا تھا۔ مغلوں نے ہی بھارت کی راشٹریہ پوشاک کو روپ دیا۔ روٹی اور توا، کیول یہ دونوں شبد ہی باہر کے نہیں ہیں اُن کا اپیوگ بھی ہم نے آگنتک مسلمانوں سے ہی سیکھا۔ آج روٹی شبد چپاتی کے معنی میں بھی اور سادھارن بھوجن کے معنے میں بھی بھارت کے کونے کونے میں بولا جاتا ہے۔

شری بھگوت شرن کے انوسار یورپ والوں یا انگریزوں کی دین بھی ہندستانی کلچر کو اِتنی کم نہیں ہیں۔ ہماری آجکل کی راشٹریتا کی کلپنا، بھارت کے ایک دیش ہونے کا وچار، راجکاجی آزادی کا پریم، ہمارا آج کا سماجی جیون، ہمارے کل کارخانے، نیا وگیان، ہماری پارلیمنٹ، ہماری راجکاجی سنستھائیں، ہماری شکشا، ہمارا ساہتیہ اِن سب کے اندر یورپ کا اثر ہمیں صاف چمکتا ہوا دکھائی دے رہا ہے۔ یورپ والوں کی نیت میں کہیں کہیں جو کچھ برائی رہی ہو، اور برائی کافی تھی، اس میں سندیہ نہیں کہ یورپ والوں نے ہی ہمارے بہت سے پرانے خزانوں کو کھود کر ہمارے سامنے رکھا۔ انھوں نے ہی سمراٹ اشوک کے شلالیکھوں سے ہماری جانکاری کرائی۔ سیکڑوں برائیوں کے ہوتے ہوئے بھی ہندستانی کلچر کو اُن کی دین ایک استھائی دین ہے۔

انت میں شری بھگوت شرن اپادھیائے نے سنسار کی کلچر کو بھارت کی دین کی چرچا کی ہے۔ اُنھوں نے دکھایا ہے کہ بھارت نے ہمیشہ کھلے دل سے دوسروں سے لیا ہے اور کھلے دل سے دوسروں کو دیا ہے۔ اُن کی رائے میں مہاتما بدھ کے سمے سے لیکر مہاتما گاندھی تک اور آج تک دنیا میں شانتی قایم کرنے کے لئے بھارت کے پریتن کچھ کم گرو کی چیز نہیں ہیں۔ ابھی دنیا اِتنی تیزی سے بدل رہی ہے کہ اُس پر آنکھوں کا ٹک سکنا بھی کٹھن ہے۔

दुनिया इतनी छोटी हो गई है कि सारी दुनिया हथेली पर रखकर एक साथ देखी जा सकती है. "दुनिया के लिये यह एक शुभ लक्षण है कि अब हम सारी दुनिया को देख सकते हैं और अलग अलग टुकड़ियों से ऊपर उठकर सारे मानव समाज को अपना कह सकते हैं. पच्छिम ने बाहर की माद्दी तरक़्क़ी में कमाल किया है. पूरब ने माद्दे को भी रुहानी रूप दिया है. अब जरूरत है कि यह दोनों मिलकर एक मानव शरीर को रूप दें. भारत अपने हृदय को विशाल करके इस नेक और जरूरी काम में दुनिया को बहुत बड़ी मदद दे सकता है." हम श्री भगवत शरण उपाध्याय को उनके उदार प्रयत्नों पर बधाई देते हैं और चाहते हैं कि वह इस से कहीं अधिक बड़े ग्रंथ के रूप में अपनी खोजों और उनके नतीजों को जल्द से जल्द देश के सामने रख सकें.

—सुन्दरलाल.

دنیا اِتنی چھوٹی ہوگئی ہے کہ ساری دنیا ہتھیلی پر رکھکر ایک ساتھ دیکھی جاسکتی ہے۔ "دنیا کے لئے یہ ایک شبھ لکشن ہے کہ اب ہم ساری دنیا کو دیکھ سکتے ہیں اور الگ الگ ٹکڑیوں سے اُوپر اُٹھکر سارے مانو سماج کو اپنا کہہ سکتے ہیں۔ پچھم نے باہر کی مادی ترقی میں کمال کیا ہے۔ پورب نے مادے کو بھی روحانی روپ دیا ہے۔ اب ضرورت ہے کہ یہ دونوں ملکر ایک مانو شریر کو روپ دیں۔ بھارت اپنے ہردئے کو وشال کرکے اِس نیک اور ضروری کام میں دنیا کو بہت بڑی مدد دے سکتا ہے۔" ہم شری بھگوت شرن اُپادھیائے کو اُن کے اُدار پریتنوں پر بدھائی دیتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ وہ اِس سے کہیں ادھک بڑے گرنتھ کے روپ میں اپنی کھوجوں اور اُن کے نتیجوں کو جلد سے جلد دیش کے سامنے رکھ سکیں۔

—سندر لال۔

चीनी इलाज की कहानी

श्री ली ताओ

प्राचीन समय में अनेक बार दवाएं तैयार करने में, उन्हें बरतने में और जर्राही यानी चीर फाड़ की विद्या में चीन दुनिया को रास्ता दिखाता रहा है. लेकिन सामन्तशाही यानी खानदानी राजाओं और सरदारों का राज हमारे यहां इतने अधिक दिनों तक रहा कि उसके कारण जनता में बल न आ सका और हमारी प्राचीन वैद्यक विद्या का बढ़ना रुक गया. उसके बाद हमारे राजकाजी और कलचरी जीवन पर देशी और विदेशी सम्राजशाही का ज़ोर रहा जिससे हमारे देश के नई तालीम पाए हुए डाक्टरों ने देश की पुरानी वैद्यक विद्या की तरफ़ से बेपरवाही की.

फिर भी चीन की पुरानी वैद्यक विद्या बराबर जारी रही. उसके अनुसार इलाज करने वाले हकीम लाखों और करोड़ों जनता की सेवा करते रहे हैं और उन्हें अच्छा करते रहे हैं. सन् 1949 से, जब से हमारा मुल्क आज़ाद हुआ है, बहुत से उसूल जिन्हें हमारी पुरानी वैद्यक विद्या ने मान रखा था और उसके इलाज के तरीक़े साइंसी ढङ्ग से परखे जा चुके हैं और आजकल के उन्नत से उन्नत विचारों के अनुसार ठीक साबित हो चुके हैं. इस तरह हमारी पुरानी वैद्यक विद्या की महान उपयोगिता साबित हो चुकी है.

आजकल के चीन में पुराने ढङ्ग से इलाज करने वाले लोग और नए ढङ्ग से सीखे हुए डाक्टर दोनों मौजूद हैं. दोनों मिलकर काम करते हैं और दोनों एक दूसरे से सीखते हैं. पर चीनी वैद्यक विद्या और बाक़ी दुनिया के इलाज के तरीक़े इन दोनों के बीच सदियों से एक खाई पैदा हो गई है. इस खाई पर जिस दिन एक पुल बन जायगा तो हमें विश्वास है कि उससे चीनी जनता की तन्दुरुस्ती को और सारे मानव समाज की तन्दुरुस्ती दोनों को बड़ा लाभ होगा.

चीन की वैद्यक विद्या कितनी पुरानी है इसका अन्दाज़ा इस बात से लग सकता है कि चीन में ईसा से तेरह सौ बरस पहले के इस तरह के लेख हड्डियों पर मिले हैं जिनमें आदमी की बहुत सी बीमारियों का ज़िक्र और उनका बयान दिया हुआ है. इसके थोड़े दिनों बाद का एक ग्रंथ The Book of Rites (रिवाजों की किताब) मौजूद है जिसमें अलग अलग रोगों के लिये दवाओं, जर्राही, ताक़त की दवाओं, शक्ति देने वाले खानों और जानवरों

چینی علاج کی کہانی

شری لی تاؤ

پراچین سمے میں انیک بار دوائیں تیار کرنے میں، انہیں برتنے میں اور جراحی یعنی چیر پھاڑ کی ودیا میں چین دنیا کو راستہ دکھاتا رہا ہے۔ لیکن سامنت شاہی یعنی خاندانی راجاؤں اور سرداروں کا راج ہمارے یہاں اتنے ادھک دنوں تک رہا کہ اِس کارن جنتا میں بل نہ آسکا اور ہماری پراچین ویدیک ودیا کا بڑھنا رک گیا۔ اِس کے بعد ہمارے راج کاجی اور کلچری جیون پر دیشی اور ودیشی سامراج شاہی کا زور رہا جس سے ہمارے دیش کے نئے تعلیم پائے ہوئے ڈاکٹروں نے دیش کی پرانی ویدیک ودیا کی طرف سے بے پرواہی کی۔

پھر بھی چین کی پرانی ویدیک ودیا برابر جاری رہی۔ اِس کے انوسار علاج کرنے والے حکیم لاکھوں اور کروڑوں جنتا کی سیوا کرتے رہے ہیں اور انہیں اچھا کرتے رہے ہیں۔ سن 1949 سے، جب سے ہمارا ملک آزاد ہوا ہے، بہت سے اصول جنہیں ہماری پرانی ویدیک ودیا نے مان رکھا تھا اور اِس علاج کے طریقے سائنسی ڈھنگ سے پرکھے جا چکے ہیں اور آجکل کے اُنت سے اُنت وچاروں کے انوسار ٹھیک ثابت ہو چکے ہیں۔ اِس طرح ہماری پرانی ویدیک ودیا کی مہان اُپیوگتا ثابت ہو چکی ہے۔

آجکل کے چین میں پرانے ڈھنگ سے علاج کرنے والے لوگ اور نئے ڈھنگ سے سیکھے ہوئے ڈاکٹر دونوں موجود ہیں۔ دونوں ملکر کام کرتے ہیں اور دونوں ایک دوسرے سے سیکھتے ہیں۔ پر چینی ویدیک ودیا اور باقی دنیا کے علاج کے طریقے اِن دونوں کے بیچ صدیوں سے ایک کھائی پیدا ہو گئی ہے۔ اِس کھائی پر جس دن ایک پل بنجائیگا تو ہمیں وشواس ہے کہ اس سے چینی جنتا کی تندرستی کو اور سارے مانو سماج کی تندرستی دونوں کو بہت بڑا لابھ ہوگا۔

چین کی ویدیک ودیا کتنی پرانی ہے اِس کا اندازہ اِس بات سے لگ سکتا ہے کہ چین میں عیسیٰ سے تیرہ سو برس پہلے کے اِس طرح کے لیکھ ہڈیوں پر ملے ہیں جن میں آدمی کی بہت سی بیماریوں کا ذکر اور انکا بیان دیا ہوا ہے۔ اِس کے تھوڑے دنوں بعد کا ایک گرنتھ The Book of Rites (رواجوں کی کتاب) موجود ہے جس میں الگ الگ روگوں کے لئے دواؤں، جراحی، طاقت کی دواؤں، شکتی دینے والے کھانوں اور جانوروں

की बीमारियों के इलाज सबका बयान है. उसी जमाने की एक और किताब The Book of Odes (गीतों का संग्रह) है जिसमें सौ से ऊपर जड़ी बूटियों और दवाओं को बयान किया गया है.

उसके बाद चीन के अलग अलग हिस्सों में तिजारत बढ़ती गई और चीनी वैद्यक विद्या भी तिजारत के साथ साथ सारे देश में फैलती गई. उन दिनों चीनी वैद्य एक तरह की पत्थर की छुरी से फोड़ों को चीरते थे. उस छुरी को 'पीन शिह' कहते थे. रोगों के इलाज के लिये वह तरह तरह की जड़ी बूटियों को काम में लाते थे. दवाओं और चीर फाड़ के अलावा उन दिनों के इलाज के दो तरीक़े ख़ास तौर से बयान करने की चीज हैं. एक तरीक़े में लम्बी पतली धातु की सुइयों के जरिये उन सुइयों को जिस्म के अन्दर दाखिल करके आदमी की सुस्त पड़ी हुई नसों को फिर से जगाया और ठीक किया जाता है. यह इलाज अलग अलग बीमारियों के लिये शरीर के अलग अलग हिस्सों पर किया जाता है. इसे अंगरेजी में ऐक्युपंकचर (Acupuncture) कहते हैं. दूसरा तरीक़ा है ख़ास तरह की बूटियों को जलाकर उनसे जिस्म के किसी ख़ास हिस्से को सेंकना. इससे भी नसों में जान आजाती है पर खाल को नुक़सान नहीं पहुँचने पाता. इसे अंगरेजी में मौक्सीबशाचन (Moxibustion) कहते हैं. यह दोनों तरीक़े ईसा से बारह सौ बरस पहले से चले आ रहे हैं. और आज तक चीन के सरकारी अस्पतालों तक में बहुत से रोगियों को अच्छा करने के लिये काम में लाए जाते हैं. रोगों के इलाज के लिये शरीर की मालिश भी उन दिनों तरह तरह से की जाती थी.

ईसा से पाँच सौ बरस पहले चीन में आम वैद्य अलग होते थे जो जनता का इलाज करते थे और दरबारी वैद्य अलग होते थे जो सम्राट और उनके घर वालों का इलाज करते थे. रोग का पता उन दिनों रोगी के साँस लेने के ढङ्ग से, उसके चेहरे के रंग से और उसकी आवाज से लगाया जाता था.

ईसा से पाँच सौ बरस पहले चीन के एक मशहूर हकीम पीन चु एह ने दुनिया में पहली बार नब्ज़ (नाड़ी) से रोग का पता लगाने का तरीक़ा ईजाद किया. दुनिया की वैद्यक विद्या में यह एक बहुत बड़ा इन्क़लाब था. नब्ज़ यानी नाड़ी से रोग के पता लगाने का तरीक़ा छठी सदी ईसवी में चीन से कोरिया और वहां से जापान पहुँचा. नवीं सदी ईसवी में यह तरीक़ा अरब पहुँचा. मशहूर मुसलिम हकीम बू अली अबू सैना ने दसवीं सदी ईसवी में वैद्यक के ऊपर अपनी मशहूर किताब लिखी जिसमें उसने नब्ज़ से रोगों का पता लगाने की चरचा की. बू अली की यह किताब अठारहवीं सदी ईसवी तक यूरप के सब हकीमों और

کی بیماریوں کے علاج سب کا بیان ہے ۔ اسی زمانہ کی ایک اور کتاب The Book of Odes (گیتوں کا سنگرہ) ہے جس میں سو سے اوپر جڑی بوٹیوں اور دواؤں کو بیان کیا گیا ہے ۔

اس کے بعد چین کے الگ الگ حصوں میں تجارت بڑھتی گئی اور چینی ویدک ودیا بھی تجارت کے ساتھ ساتھ سارے دیش میں پھیلتی گئی ۔ ان دنوں چینی وید ایک طرح کی پتھر کی چھری سے پھوڑوں کو چیرتے تھے ۔ اس چھری کو "پین شہ" کہتے تھے ۔ روگوں کے علاج کے لئے وہ طرح طرح کی جڑی بوٹیوں کو کام میں لاتے تھے ۔ دواؤں اور چیر پھاڑ کے علاوہ اِن دنوں کے علاج کے دو طریقے خاص طور پر بیان کرنے کی چیز ہیں ۔ ایک طریقہ میں لمبی پتلی دھات کی سوئیوں کے ذریعہ اِن سوئیوں کو جسم کے اندر داخل کر کے آدمی کی سست پڑی ہوئی نسوں کو پھر سے جگایا اور ٹھیک کیا جاتا ہے ۔ یہ علاج الگ الگ بیماریوں کے لئے شریر کے الگ الگ حصوں پر کیا جاتا ہے ۔ اسے انگریزی میں ایکیوپنکچر (Acupuncture) کہتے ہیں۔ دوسرا طریقہ ہے خاص طرح کی بوٹیوں کو جلا کر ان سے جسم کے کسی خاص حصہ کو سینکنا ۔ اس سے بھی نسوں میں جان آجاتی ہے پر کھال کو نقصان نہیں پہونچنے پاتا ۔ اسے انگریزی میں موکسی بشچن (Moxibustion) کہتے ہیں ۔ یہ دونوں طریقے عیسیٰ سے بارہ سو برس پہلے سے چلے آرہے ہیں۔ اور آج تک چین کے سرکاری اسپتالوں تک میں بہت سے روگیوں کو اچھا کرنے کے لئے کام میں لائے جاتے ہیں۔ روگوں کے علاج کے لئے شریر کی مالش بھی اِن دنوں طرح طرح سے کی جاتی تھی ۔

اِسی سے پانچ سو برس پہلے چین میں عام وید الگ ہوتے تھے جو جنتا کا علاج کرتے تھے اور درباری وید الگ ہوتے تھے جو سمراٹ اور اُن کے گھر والوں کا علاج کرتے تھے ۔ روگ کا پتا اِن دنوں روگی کے سانس لینے کے ڈھنگ سے، اِس کے چہرے کے رنگ سے اور اس کی آواز سے لگایا جاتا تھا ۔

عیسیٰ سے پانچ سو برس پہلے چین کے ایک مشہور حکیم پین چو ایہ نے دنیا میں پہلی بار نبض (ناڑی) سے روگ کا پتہ لگانے کا طریقہ ایجاد کیا ۔ دنیا کی ویدک ودیا میں یہ ایک بہت بڑا انقلاب تھا ۔ نبض یعنی ناڑی سے روگ کے پتا لگانے کا طریقہ چھٹی صدی عیسوی میں چین سے کوریا اور وہاں سے جاپان پہونچا ۔ نویں صدی عیسوی میں یہ طریقہ عرب پہونچا ۔ مشہور مسلم حکیم بوعلی ابو سینا نے دسویں صدی عیسوی میں ویدک کے اوپر اپنی مشہور کتاب لکھی جس میں اس نے نبض سے روگوں کا پتا لگانے کی چرچا کی ۔ بوعلی کی یہ کتاب اٹھارھویں صدی عیسوی تک یورپ کے سب حکیموں اور

डाक्टरों को पढ़ाई जाती थी और यूरपीय डाक्टरी की बुनियादी किताब मानी जाती थी. हिन्दुस्तान की वैद्यक की किताबों में तेरहवीं सदी ईसवी से पहले नब्ज़ देखने का ज़िक्र नहीं आता. इससे मालूम होता है कि हिन्दुस्तान ने भी नब्ज़ देखने का तरीक़ा चीन ही से लिया.

चीन की पुरानी किताबों में लिखा है कि उस ज़माने का एक चीनी राजकुमार बीमार पड़ा. वह बेहोश हो गया. दरबार के वैद्यों ने कह दिया कि राजकुमार मर चुका. पीन चु एह ने नब्ज़ देखकर पता लगाया कि राजकुमार अभी ज़िन्दा है. उसने इलाज किया और राजकुमार अच्छा हो गया.

पीन चु एह चीन की अलग अलग रियासतों में गया. उसने सब जगह के इलाज के तरीक़ों का अध्ययन किया और सब जगह अपने तरीक़े का प्रचार किया. उससे पहले चीन में कई जगह रोगों का इलाज जादू टोनों से किया जाता था. पीन चु एह ने इस तरह के अंध विश्वासों का कड़ा विरोध किया और साइंसी ढङ्ग से शरीर के अलग अलग अंगों और उनके कामों के अनुसार इलाज के तरीक़े पर किताबें लिखीं.

ईसा से दो ढाई सौ बरस पहले सारे चीन पर पहली बार एक राज क़ायम हुआ. चीनी वैद्यक विद्या ने अब और तेज़ी के साथ तरक़्क़ी करनी शुरू की. ईसा से छब्बीस बरस पहले ली चु-कुओ नाम के एक चीनी हकीम ने बहुत सी पुरानी चीनी किताबों को दुहराया. इनमें एक मशहूर किताब 'हु आंग ति नेईचिंग' बीसियों पीढ़ियों तक चीनी हकीमों का काम देती रही. इस किताब की एक ख़ास बात यह है कि आजकल के नए से नए डाक्टरी उसूल के अनुसार यह किताब रोग के पैदा हो जाने पर उसका इलाज करने की निसबत रोग के पैदा होने ही को रोकने पर अधिक ज़ोर देती है. इसके अनुसार आदमी का शरीर सारे विश्व का एक हिस्सा है और आदमी अगर बाहर की तब्दीलियों के अनुसार अपनी आदतों को भी बदलता रहे तो वह रोग से बचा रह सकता है. उसमें लिखा है कि बीमारी आ जाने के बाद उसका इलाज करना ऐसा ही है जैसा प्यास लगने पर कुआँ खोदना, या लड़ाई छिड़ जाने पर हथियार गढ़ना. बीमारियों का इलाज बीमार पड़ने से पहले होना चाहिये, और उसका तरीक़ा है ठीक जीवन बिताना, ठीक तरह का खाना खाना, ठीक तरह से काम और आराम करना, और अपने दिल और दिमाग़ दोनों को सदा शान्त रखना.

एक और पुरानी किताब 'शेन नुंग पेन त्साओ चिंग' है जो ईसा से लगभग एक सौ बरस पहले लिखी गई. उसमें तीन सौ से ऊपर दवाओं और उनके इस्तेमाल की चरचा

ڈاکٹروں کو پڑھائی جاتی تھی اور یورپی ڈاکٹری کی بنیادی کتاب مانی جاتی تھی۔ ہندستان کی ویدک کی کتابوں میں تیرھویں صدی عیسوی سے پہلے نبض دیکھنے کا ذکر نہیں آتا. اِس سے معلوم ہوتا ہے کہ ہندستان نے بھی نبض دیکھنے کا طریقہ چین ہی سے لیا۔

چین کی پرانی کتابوں میں لکھا ہے کہ اِس زمانے کا ایک چینی راج کمار بیمار پڑا۔ وہ بیہوش ہو گیا۔ دربار کے ویدیوں نے کہہ دیا کہ راجکمار مر چکا۔ پین چو ایہ نے نبض دیکھ کر پتا لگایا کہ راج کمار ابھی زندہ ہے۔ اُس نے علاج کیا اور راج کمار اچھا ہو گیا۔

پین چو ایہ چین کی الگ الگ ریاستوں میں گیا۔ اُس نے سب جگہہ کے علاج کے طریقوں کا ادھین کیا اور سب جگہہ اپنے طریقہ کا پرچار کیا۔ اِس سے پہلے چین میں کئی جگہہ روگوں کا علاج جادو ٹونوں سے کیا جاتا تھا۔ پین چو ایہ نے اِسی طرح کے اندھ وشواسوں کا کڑا ورودھ کیا اور سائنسی ڈھنگ سے شریر کے الگ الگ انگوں اور اُن کے کاموں کے انوسار علاج کے طریقے پر کتابیں لکھیں۔

عیسیٰ سے دو ڈھائی سو برس پہلے سارے چین پر پہلی بار ایک راج قائم ہوا۔ چینی ویدک ودیا نے اب اور تیزی کے ساتھ ترقی کرنی شروع کی۔ عیسیٰ سے چھبیس برس پہلے لی۔ چو. کواؤ نام کے ایک چینی حکیم نے بہت سی پرانی چینی کتابوں کو دہرایا۔ اِن میں ایک مشہور کتاب 'ہوانگ تی نیئی چنگ' بیسیوں پیڑھیوں تک چینی حکیموں کو کام دیتی رہی۔ اِس کتاب کی ایک خاص بات یہ ہے کہ آجکل کے نئے سے نئے ڈاکٹری اُصول کے انوسار یہ کتاب روگ کے پیدا ہو جانے پر اِس کا علاج کرنے کی نسبت روگ کے پیدا ہونے ہی کو روکنے پر ادھک زور دیتی ہے۔ اِس کے انوسار آدمی کا شریر سارے وشو کا یک حصہ ہے اور آدمی اگر باہر کی تبدیلیوں کے انوسار اپنی عادتوں کو بھی بدلتا رہے تو وہ روگ سے بچا رہ سکتا ہے. اِس میں لکھا ہے کہ بیماری آجانے کے بعد اس کا علاج کرنا ایسا ہی ہے جیسا پیاس لگنے پر کنواں کھودنا' یا لڑائی چھڑ جانے پر ہتھیار گڑھنا۔ بیماریوں کا علاج بیمار پڑنے سے پہلے ہونا چاہئے' اور اس کا طریقہ ہے ٹھیک جیون بتانا' ٹھیک طرح کا کھانا کھانا' ٹھیک طرح سے کام اور آرام کرنا' اور اپنے دل اور دماغ دونوں کو سدا شانت رکھنا۔

ایک اور پرانی کتاب 'شین ننگ پین تساؤچنگ' ہے۔ جو عیسیٰ سے لگ بھگ ایکسو برس پہلے لکھی گئی۔ اُس میں تین سو سے اوپر دواؤں اور اُن کے استعمال کی چرچا

की गई है. दुनिया में यह पहली किताब है जिसमें खाल की बीमारियों के लिये पारे और गंधक का इस्तेमाल बताया गया है. इन बीमारियों के लिये यह इलाज अरब और हिन्दुस्तान में इसके एक हज़ार बरस बाद चला और यूरप में सोलहवीं सदी ईसवी से जारी हुआ.

दूसरी सदी ईसवी में चाँग चुंग-चिंग नाम के एक हकीम ने तरह तरह के बुख़ारों पर एक किताब लिखी जिसका नाम 'शाँग हान लुन' है. उसी ने वैद्यक विद्या के बुनियादी उसूलों पर एक और किताब लिखी जिसका नाम 'चिंग कुए याओ लुएह' है. इन दोनों किताबों से चीन की वैद्यक विद्या में बहुत बड़ी तरक़्क़ी हुई. इनमें तरह तरह के बुख़ारों और दूसरी बीमारियों के लिये अलग अलग नुसख़े दिये हुए हैं. इसमें बुख़ार के इलाज के लिये, दस्त लाने के लिये, पेशाब लाने के लिये, क़ै कराने के लिये, ठंडक पैदा करने के लिये, गरमी लाने के लिये, हाज़मा ठीक करने के लिये और दस्तों को रोकने के लिये लगभग अस्सी इस तरह के नुसख़े दिये हुए हैं जो आज तक चीनी डाक्टरों को बहुत बड़ा काम देते हैं और उनके इलाज के तरीक़ों की बुनियाद कहे जा सकते हैं. 'शाँग हान लुन' का प्रचार कोरिया और जापान में भी ख़ूब हुआ और उसके द्वारा वहां के लोगों की तन्दुरुस्ती का बहुत बड़ा फ़ायदा पहुँचा.

जर्राही यानी चीर फाड़ की विद्या ने भी प्राचीन चीन में काफ़ी तरक़्क़ी की थी. ईसा की शुरू की सदी का एक मशहूर हकीम 'हुआ तो' दवा के ज़रिये यह प्रबन्ध करके कि रोगी को पीड़ा अनुभव न होने पावे, पेट के बड़े बड़े आपरेशन (Major abdominal operations) कर लेता था. अंतड़ियों के कीड़ों का इलाज करने के लिये वह क़ै की दवाएं देता था और ज़ख़्मों का तरह तरह का इलाज वह पानी से करता था. आदमी के तन्दुरुस्त रहने के लिये उसने एक नई तरह की कसरत ईजाद की थी जिसमें पाँच तरह के जानवरों की चालें शामिल थीं—चीता, बारहसिंगा, रीछ, बन्दर और चिड़िया. इस कसरत के ज़रिये वह पुरानी पुरानी बीमारियों को अच्छा कर लेता था.

चीन के दुर्भाग्य से उस ज़माने के एक अन्यायी शासक ने हुआ-तो को पकड़ कर फांसी पर लटका दिया जिसके बाद उसकी लिखी हुई बहुत सी किताबें सदा के लिये नष्ट हो गईं.

इसके बाद की सदियों में बौद्ध धर्म के चीन पहुँचने के बाद प्राचीन ताओ धर्म के लोगों ने बहुत सी पुरानी चीनी वैद्यक किताबों का फिर से सम्पादन किया. बौद्ध धर्म के लोगों ने भारत की बहुत सी वैद्यक किताबों का चीनी में अनुवाद किया. जीवक और सुश्रुत की मशहूर संस्कृत किताबों का उसी समय चीनी में अनुवाद हुआ. इस तरह भारत की वैद्यक विद्या और चीनी वैद्यक विद्या दोनों चीन में मिल

کی گئی ھے ۔ دنیا میں یہ پہلی کتاب ھے جس میں کھال کی بیماریوں کے لئے پارے اور گندھک کا استعمال بتایا گیا ھے ۔ ان بیماریوں کے لئے یہ علاج عرب اور ھندستان میں اِس کے ایک ھزار برس بعد چلا اور یورپ میں سولھویں صدی عیسوی سے جاری ھوا ۔

دوسری صدی عیسوی میں چانگ چونگ چنگ نام کے ایک حکیم نے طرح طرح کے بخاروں پر ایک کتاب لکھی جس کا نام 'شانگ ھان لن' ھے ۔ اُسی نے ویدیک ودیا کے بنیادی اُصولوں پر ایک اور کتاب لکھی جس کا نام 'چنگ کوئی یاؤ لو ایہہ' ھے ۔ اِن دونوں کتابوں سے چین کی ویدیک ودیا میں بہت بڑی ترقی ھوئی ۔ اِن میں طرح طرح کے بخاروں اور دوسری بیماریوں کے لئے الگ الگ نسخے دیئے ھوئے ھیں ۔ اِس میں بخار کے علاج کے لئے' دست لانے کے لئے' پیشاب لانے کے لئے' قے کرانے کے لئے' ٹھنڈک پیدا کرنے کے لئے' گرمی لانے کے لئے' ھاضمہ ٹھیک کرنے کے لئے اور دستوں کو روکنے کے لئے لگ بھگ اَسی اِس طرح کے نسخے دیئے ھوئے ھیں جو آج تک چینی ڈاکٹروں کو بہت بڑا کام دیتے ھیں اور اُن کے علاج کے طریقوں کی بنیاد کہے جا سکتے ھیں ۔ 'شانگ ھان لن' کا پرچار کوریا اور جاپان میں بھی خوب ھوا اور اُس کے دوارا وھاں کے لوگوں کی تندرستی کو بہت بڑا فایدہ پہونچا ۔

جراحی یعنی چیر پھاڑ کی ودیا نے بھی پراچین چین میں کافی ترقی کی تھی ۔ عیسیٰ کی شروع کی صدی کا ایک مشہور حکیم 'ھواتو' دواؤں کے ذریعہ یہ پربندھ کرکے کہ روگی کو پیڑا انوبھو نہ ھونے پاوے' پیٹ کے بڑے بڑے آپریشن (Major abdominal operations) کر لیتا تھا ۔ انتڑیوں کے کیڑوں کا علاج کرنے کے لئے وہ قے کی دوائیں دیتا تھا اور زخموں کا طرح طرح کا علاج وہ پانی سے کرتا تھا ۔ آدمی کے تندرست رھنے کے لئے اس نے ایک نئی طرح کی کسرت ایجاد کی تھی جس میں پانچ طرح کی جانوروں کی چالیں شامل تھیں—چیتا' بارہ سنگا' ریچھ' بندر اور چڑیا ۔ اِس کسرت کے ذریعہ وہ پرانی پرانی بیماریوں کو اچھا کر لیتا تھا ۔

چین کے دربھاگیہ سے اُس زمانے کے ایک انیائی شاسک نے ھواتو کو پکڑ کر پھانسی پر لٹکا دیا جس کے بعد اُس کی لکھی ھوئی بہت سی کتابیں سدا کے لئے نشٹ ھوگئیں ۔

اِس کے بعد کی صدیوں میں بودھ دھرم کے چین پہونچنے کے بعد پراچین تاؤ دھرم کے لوگوں نے بہت سی پرانی چینی ویدیک اور کتابوں کا پھر سے سمپادن کیا ۔ بودھ دھرم کے لوگوں نے بھارت کی بہت سی ویدیک کتابوں کا چینی میں انواد کیا ۔ جیوک اور سو شروت کی مشہور سنسکرت کتابوں کا اُسی سمئے چینی میں انواد ھوا ۔ اِس طرح بھارت کی ویدیک ودیا اور چینی ویدیک ودیا دونوں چین میں مل

गईं. इसका एक नतीजा यह हुआ कि ईसा से सौ बरस पहले की लिखी हुई चीनी किताब 'शेन नुंग पेन त्सा ओ चिंग' को पाँच सौ ईसवी के लगभग जब दुहराया गया तो तीन सौ दवाओं की जगह अब उसमें छै सौ से ऊपर दवाएं दर्ज हो गईं.

सातवीं सदी ईसवी से नवीं सदी ईसवी तक यूरप में अभी अन्धकार युग (Dark ages) का ज़माना था. भारत उन दिनों बहुत सी छोटी छोटी रियासतों में बँटा हुआ था. उस समय वैद्यक विद्या की निगाह से चीन दुनिया का केन्द्र था. अरब, कोरिया, जापान और दूसरे देशों से बड़े बड़े विद्वान वैद्यक पढ़ने के लिये चीन आते थे और चीनी हकीम तालीम देने के लिये बाहर के देशों में बुलाए जाते थे. उससे पहले जापान में रोगों का इलाज जादू टोनों से ही होता था. चीनी वैद्यक विद्या ने वहाँ पहुँच कर लोगों को इन अंध विश्वासों से आज़ाद किया और इलाज का ठीक तरीक़ा बताया. इस नए तरीक़े का जापान में बड़ा आदर हुआ.

दुनिया भर में वैद्यक का सब से पहला विद्यालय (First Medical School) सातवीं सदी ईसवी के शुरू में चीन में क़ायम हुआ. इस का नाम 'वैद्यों का शाही विद्यालय' था. इटली का 'सालेरनों मेडिकल स्कूल' इसके दो सौ बरस बाद क़ायम हुआ, जो यूरप का सब से पहला मेडिकल स्कूल था. इस चीनी वैद्यक विद्यालय के क़ायम होने से पहले चीन के हकीम अपने अपने शागिरदों को साथ रखकर ही वैद्यक सिखाया करते थे.

चीन के इस शाही विद्यालय में वैद्यक के चार महकमे थे जिन में लगभग साढ़े तीन सौ विद्यार्थी शिक्षा पाते थे. इन चार महकमों में दवाओं के अलावा वह चीर फाड़, कान, नाक, मुँह और दाँत के रोगों का इलाज, और दवाएं बनाना आदि सब सिखाया जाता था. सरकार की मंजूर की हुई किताबें पढ़ाई जाती थीं और विद्यार्थियों को तीन साल से लेकर सात साल तक तालीम दी जाती थी.

चीन में रोगियों के लिये सब से पहला अस्पताल पाँच सौ दस ईसवी में क़ायम हुआ. कारन यह था कि उन दिनों चीन के शन्सी प्रान्त में कोई एक बीमारी फैल गई थी. इसके बाद की सदियों में और अधिक अस्पताल खुलते गए. धीरे धीरे राज की तरफ़ से ग़रीबों के लिये बहुत से अस्पताल खुल गए. कोढ़ियों के लिये भी चीन में कई अस्पताल खुले.

'शेन नुंग पेन त्साओ चिंग' नाम की किताब का अब एक और नया एडिशन निकाला गया जिसमें आठ सौ चवालीस तरह की दवाओं का ज़िक्र है. ग्यारहवीं सदी ईसवी में एक नया सरकारी महकमा क़ायम हुआ जिसने बड़े बड़े वैद्यों की मदद से सब पुरानी वैद्यक की किताबों

گئیں ۔ اِس کا ایک نتیجہ یہ ہوا کہ عیسیٰ سے سو برس پہلے کی لکھی ہوئی چینی کتاب 'شین ننگ پین تساؤ چنگ' کو پانچسو عیسوی کے لگ بھگ جب دوہرایا گیا تو تین سو دواؤں کی جگہہ اب اُس میں چھ سو سے اُوپر دوائیں درج ہو گئیں ۔

ساتویں صدی عیسوی سے نویں صدی عیسوی تک یورپ میں ابھی اندھکار یگ (Dark ages) کا زمانہ تھا ۔ بھارت اُن دنوں بہت سی چھوٹی چھوٹی ریاستوں میں بٹا ہوا تھا ۔ اُس سمئے ویدیک ودیا کی نگاہ سے چین دنیا کا کیندر تھا ۔ عرب' کوریا' جاپان اور دوسرے دیشوں سے بڑے بڑے ودوان ویدیک پڑھنے کے لئے چین آتے تھے اور چینی حکیم تعلیم دینے کے لئے باہر کے دیشوں میں بلائے جاتے تھے ۔ اُس سے پہلے جاپان میں روگوں کا علاج جادو ٹونوں سے ہی ہوتا تھا ۔ چینی ویدیک ودیا نے وہاں پہونچکر لوگوں کو اِن اندھ وشواسوں سے آزاد کیا اور علاج کا ٹھیک طریقہ بتایا ۔ اِس نئے طریقے کا جاپان میں بڑا آدر ہوا ۔

دنیا بھر میں ویدک کا سب سے پہلا ودیالیہ (First Medical School) ساتویں صدی عیسوی کے شروع میں چین میں قایم ہوا ۔ اِس کا نام 'ویدیوں کا شاہی ودیالیہ' تھا ۔ اِٹلی کا 'سالیرنو میڈیکل اسکول' اِس کے دو سو برس بعد قایم ہوا' جو یورپ کا سب سے پہلا میڈیکل اسکول تھا ۔ اس چینی ویدک ودیالیہ کے قایم ہونے سے پہلے کے چین کے حکیم اپنے اپنے شاگردوں کو ساتھ رکھکر ہی ویدک سکھایا کرتے تھے ۔

چین کے اِس شاہی ودیالیہ میں ویدک کے چار محکمے تھے جن میں لگ بھگ ساڑھے تین سو ودیارتھی شکشا پاتے تھے ۔ اِن چار محکموں میں دواؤں کے علاوہ وہ چیر پھاڑ' کان' ناک' منھ اور دانت کے روگوں کا علاج' اور دوائیں بنانا آدی سب سکھایا جاتا تھا ۔ سرکار کی منظور کی ہوئی کتابیں پڑھائی جاتی تھیں اور ودیارتھیوں کو تین سال سے لیکر سات سال تک تعلیم دی جاتی تھی ۔

چین میں روگیوں کے لئے سب سے پہلا اسپتال پانچسو دس عیسوی میں قایم ہوا ۔ کارن یہ تھا کہ اُن دنوں چین کے شانسی پرانت میں کوئی ایک بیماری پھیل گئی تھی ۔ اِس کے بعد کی صدیوں میں اور ادھک اسپتال کھلتے گئے ۔ دھیرے دھیرے راج کی طرف سے غریبوں کے لئے بہت سے اسپتال کھل گئے ۔ کوڑھیوں کے لئے بھی چین میں کئی اسپتال کھلے ۔

'شین ننگ پین تساؤ چنگ' نام کی کتاب کا اب ایک اور نیا ایڈیشن نکالا گیا جس میں آٹھ سو چوالیس طرح کی دواؤں کا ذکر ہے ۔ گیارھویں صدی عیسوی میں ایک نیا سرکاری محکمہ قایم ہوا جس نے بڑے بڑے ویدیوں کی مدد سے سب پرانی ویدک کی کتابوں

को दुहराया. इसी समय चीन में छापने की कला ईजाद हुई जिसकी बदौलत चीन का वैद्यक साहित्य देश भर में खूब फैल गया.

दसवीं सदी ईसवी से चौदहवीं सदी ईसवी तक चीन, अरब और पूरबी यूरप के देशों में आना जाना बहुत बढ़ा. इन सब देशों में तिजारत भी खूब होने लगी. चीनी वैद्यक विद्या उन दिनों ही यूरप पहुँची. इस आने जाने के कारण चीनी वैद्यक विद्या में भी काफ़ी तरक़्क़ी हुई. अदरक, (चाइना रूट), कैसिया (Cassia), रुवाब (Rhubarb) चीन से दूसरे देशों को पहुँचे. चीनी वैद्यक विद्या के इस समय लगभग तेरह अलग अलग विभाग बन गए, जिनमें दवाओं का विभाग, चीर फाड़, स्त्रियों की बीमारियाँ, आँख, मुँह और गले की बीमारियाँ, बच्चों की बीमारियाँ, नसों को सुइयों से ठंक करना आदि आदि अलग अलग विभाग समझे जाने लगे. नसों की बीमारियों (नर्वस डिज़ीज़ेज़) को सुइयों से ठीक करने का तरीक़ा जिसे acupuncture कहते हैं चीन का पुराना तरीक़ा है जो आज तक चीनी अस्पतालों में खूब काम में लाया जाता है. पन्द्रहवीं सदी के शुरू में चीन के बने हुए जहाज़ चीन से दक्खिन के देशों और यूरप तक खूब आते जाते थे और चीनी दवाएँ उन दिनों यूरप में खूब बिकती और इस्तेमाल की जाती थीं.

सोलहवीं सदी में चीनी हकीमों का ध्यान चेचक की बीमारी को रोकने की तरफ़ गया. पचास से ऊपर किताबें इस विषय पर लिखी गईं. एक खास महकमा इसी बीमारी के लिये क़ायम हुआ. उसी सदी में चीनी हकीमों ने चेचक का एक तरह का टीका ईजाद किया. चेचक के दानों में से मवाद निकाल कर उसे सुखा लिया जाता था और फिर उसे या तो फुंकनी के ज़रिये आदमी के नथनों में पहुँचा दिया जाता था या रुई पर रखकर नथनों के ऊपर रख दिया जाता था, ताकि साँस के साथ अन्दर चला जावे. जिन लोगों के साथ यह किया जाता था वह फिर चेचक के हमले से बच जाते थे. यानी आजकल के चेचक के टीके की तरह यह भी तन्दुरुस्त आदमी को चेचक के हमले से बचाए रखने का एक तरीक़ा था. सतरहवीं और अठारहवीं सदियों में यह तरीक़ा सारे चीन में फैल गया. सतरहवीं सदी में रूस से कुछ हकीमों ने चीन आकर इस तरीक़े को सीखा. रूस से इसका रिवाज टरकी में फैला. सन् 1717 में अंग्रेज़ों ने इसे तुरकों से सीखा. इसके अस्सी बरस बाद यूरप में जेनर ने गाय की चेचक के मवाद से टीका लगाने का वह तरीक़ा निकाला जो आज तक जारी है. इस तरह आजकल के चेचक का टीका पुराने चीनी तरीक़े से ही निकला है और उसका एक सुधरा हुआ रूप है. दोनों का उसूल एक है.

सन् 1578 ईसवी में मशहूर चीनी हकीम ली शिह-चेन

کو دوهرایا ۔ اِسی سمے چین میں چھاپنے کی کلا ایجاد هوئی جس کی بدولت چین کا ویدک ساهتیہ دیش بھر میں خوب پھیل گیا ۔

دسویں صدی عیسوی سے چودھویں صدی عیسوی تک چین، عرب اور پوربی یورپ کے دیشوں میں آنا جانا بہت بڑھا. اِن سب دیشوں میں تجارت بھی خوب هونے لگی ۔ چینی ویدک ودیا اُن دنوں هی یورپ پہونچی ۔ اِس آنے جانے کے کارن چینی ویدک ودیا میں بھی کافی ترقی هوئی ۔ ادرک، (چائنا روٹ)، کیسیا (Cassia)، روبارب (Rhubarb) چین سے دوسرے دیشوں کو پہونچے ۔ چینی ویدک ودیا کے اس سمے لگ بھگ تیرہ الگ الگ وبھاگ بن گئے، جن میں دواؤں کا وبھاگ، چیر پھاڑ، اِستریوں کی بیماریاں، آنکھ، منھ اور گلے کی بیماریاں، نسوں کو سوئیوں سے ٹھیک کرنا آدی آدی الگ الگ وبھاگ سمجھے جانے لگے ۔ نسوں کی بیماریوں (نروس ڈیزیز) کو سوئیوں سے ٹھیک کرنے کا طریقہ جسے acupuncture کہتے هیں چین کا پرانا طریقہ هے جو آج تک چینی اسپتالوں میں خوب کام میں لایا جاتا هے ۔ پندرهویں صدی کے شروع میں چین کے بنے هوئے جهاز چین سے دکھن کے دیشوں اور یورپ تک خوب آتے جاتے تھے اور چینی دوائیں اُن دنوں یورپ میں خوب بکتی اور استعمال کی جاتی تھیں ۔

سولھویں صدی میں چینی حکیموں کا دھیان چیچک کی بیماری کو روکنے کی طرف گیا ۔ پچاس سے اوپر کتابیں اِس وشے پر لکھی گئیں ۔ ایک خاص محکمہ اِس بیماری کے لئے قایم هوا ۔ اُسی صدی میں چینی حکیموں نے چیچک کا ایک طرح کا ٹیکہ ایجاد کیا ۔ چیچک کے دانوں میں سے مواد نکالکر اُسے سکھا لیا جاتا تھا اور پھر اُسے یا تو پھکنی کے ذریعے آدمی کے نتھنوں میں پہونچا دیا جاتا تھا یا روئی پر رکھکر نتھنوں کے اوپر رکھ دیا جاتا تھا، تاکہ سانس کے ساتھ اندر چلا جاوے ۔ جن لوگوں کے ساتھ یہ کیا جاتا تھا وہ پھر چیچک کے حملے سے بچ جاتے تھے ۔ یعنی آجکل کے چیچک کے ٹیکے کی طرح یہ بھی تندرست آدمی کو چیچک کے حملے سے بچائے رکھنے کا ایک طریقہ تھا ۔ سترھویں اور اٹھارھویں صدیوں میں یہ طریقہ سارے چین میں پھیل گیا ۔ سترھویں صدی میں روس سے کچھ حکیموں نے چین آکر اِس طریقے کو سیکھا ۔ روس سے اِس کا رواج ترکی میں پھیلا ۔ سن 1717 میں انگریزوں نے اِسے ترکوں سے سیکھا ۔ اِس کے اسی برس بعد یورپ میں جینر نے گائے کی چیچک کے مواد سے ٹیکے لگانے کا وہ طریقہ نکالا جو آج تک جاری هے ۔ اِس طرح آجکل کے چیچک کا ٹیکہ پرانے چینی طریقے سے هی نکلا هے اور اُس کا ایک سدھارا هوا روپ هے ۔ دونوں کا اصول ایک هے ۔

سن 1578 عیسوی میں مشہور چینی حکیم لی شہ چین

ने 27 बरस की लगातार खोज के बाद चीनी दवाओं पर "पेन त्साओ कॉंग मु" नाम की किताब लिखी. यह किताब न केवल चीनी वैद्यक विद्या की दवाओं की सब से बड़ी किताब है, बल्कि आजकल की यूरोपीय डाक्टरी में भी इसने बहुत बड़ा हिस्सा लिया है. इसमें 1892 दवाओं का ज़िक्र है और उनके लगभग दस हज़ार नुसखे दर्ज हैं. इन 1892 दवाओं में से 1094 वनस्पति से बनती हैं. इनकी सोलह क़िस्में हैं और सोलह की फिर साठ क़िस्में हैं. किताब में इन सब वनस्पतियों के चित्र भी दिये हुए हैं. इस तरह वनस्पति विज्ञान यानी बाटनी के पढ़ने में इस किताब से बड़ी मदद मिलती है. इस चीनी किताब का अनुवाद लातीनी, फ़्रांसीसी, रूसी, अंग्रेज़ी, जरमन और जापानी छै भाषाओं में हो चुका है.

सतरहवीं सदी के आख़ीर में चीन में मान्चु ख़ानदान का राज शुरू हुआ. मानचु सम्राटों ने विदेशियों के असर से बचने के लिये बाहर के देशों से तिजारत और आना जाना बन्द कर दिया. यह वहम यहाँ तक बढ़ा कि जब चीन के कुछ ज्योतिषियों ने यूरप की ज्योतिष विद्या में खोज करना चाहा तो उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया या देश निकाला दे दिया गया. एक यूरोपियन ईसाई पादरी ने शरीर विच्छेद विद्या यानी ऐनेटामी पर एक फ़्रांसीसी किताब का चीनी में तर्जुमा किया तो उस किताब का चलन चीन में क़ानूनन बन्द कर दिया गया. चीनी वैद्यक विद्या की भी उन्नति रुक गई. केवल पुरानी चीज़ों पर बहसें रह गईं. लगभग ढाई सौ बरस के मानचु शासन में चीन आगे बढ़ने के बजाय हर तरह केवल पीछे ही को हटता रहा.

यूरप के साम्राजवादी पूँजीपतियों ने ज़बरदस्ती चीन के दरवाज़े अपने लिये खुलवाए. सन् 1840 में चीन की मशहूर 'अफ़ीम जंग' के बाद ईस्ट इंडिया कम्पनी ने चीन के दो शहरों—मकाओ और कैन्टन—में अपने अस्पताल खोले. पर उस समय यूरप की डाक्टरी किसी तरह भी चीनी डाक्टरी या चीनी वैद्यक विद्या से बढ़ी हुई नहीं थी.

सन् 1846 में यूरप की सरजरी के अन्दर ईथर का इस्तेमाल पहली बार शुरू हुआ. 1867 में यूरप में चीर फाड़ के साथ कुछ नई दवाएँ इस्तेमाल होने लगीं जिनसे ज़ख़्म सड़ने न पावें. इसके बाद यूरप की वैद्यक विद्या ने ख़ास तरक़्क़ी करनी शुरू की. चीनियों के दिलों में भी यूरप के चीर फाड़ के तरीक़ों की क़दर बढ़ी. लेकिन चूँकि यूरप की यह डाक्टरी 'अफ़ीम जंग' के ज़ालिम हमलावरों के साथ साथ आई थी इसलिये चीनियों के दिलों में उसकी तरफ़ से शक बराबर बना रहा.

डाक्टर सुनयात सेन की अगुवाई में सन् 1911 में मानचु शासन का अन्त हो गया. सन् 1912 में चीनी

نے 27 برس کی لگاتار کھوج کے بعد چینی دواؤں پر "پین تساؤ کانگ مو" نام کی کتاب لکھی۔ یہ کتاب نہ کیول چینی ویدک ودیا کی دواؤں کی سب سے بڑی کتاب ہے، بلکہ آجکل کی یوروپیہ ڈاکٹری میں بھی اس نے بہت بڑا حصہ لیا ہے۔ اِس میں 1892 دواؤں کا ذکر ہے اور اُن کے لگ بھگ دس ہزار نسخے درج ہیں۔ اِن 1892 دواؤں میں سے 1094 بنسپتی سے بنتی ہیں۔ اِن کی سولہ قسمیں ہیں اور سولہ کی پھر ساٹھ قسمیں ہیں۔ کتاب میں اِن سب بنسپتیوں کے چتر بھی دیئے ہوئے ہیں۔ اس طرح ونسپتی وگیان یعنی باٹنی کے پڑھنے میں اِس کتاب سے بڑی مدد ملتی ہے۔ اِس چینی کتاب کا انوواد لاطینی، فرانسیسی، روسی، انگریزی، جرمن اور جاپانی چھ بھاشاؤں میں ہوچکا ہے۔

سترھویں صدی کے آخیر میں چین میں مانچو خاندان کا راج شروع ہوا۔ مانچو سمراٹوں نے ودیشیوں کے اثر سے بچنے کے لئے باہر کے دیشوں سے تجارت اور آنا جانا بند کردیا۔ یہ وہم یہاں تک بڑھا کہ جب چین کے کچھ جوتشیوں نے یورپ کی جیوتش ودیا میں کھوج کرنا چاہا تو اُنہیں پھانسی پر لٹکا دیا گیا یا دیش نکالا دے دیا گیا۔ ایک یوروپین عیسائی پادری نے شریر وچھید ودیا یعنی ایناٹامی پر ایک فرانسیسی کتاب کا چینی میں ترجمہ کیا تو اُس کتاب کا چلن چین میں قانوناً بند کردیا گیا۔ چینی ویدک ودیا کی بھی اُنتی رک گئی۔ کیول پرانی چیزوں پر بحثیں رہ گئیں۔ لگ بھگ ڈھائی سو برس کے مانچو شاسن میں چین آگے بڑھنے کے بجائے ہر طرح کیول پیچھے ہی کو ہٹتا رہا۔

یورپ کے سامراج‌وادی پونجی پتیوں نے زبردستی چین کے دروازے اپنے لئے کھلوائے۔ سن 1840 میں چین کی مشہور 'افیم جنگ' کے بعد ایسٹ انڈیا کمپنی نے چین کے دو شہروں —مکاؤ اور کینٹن— میں اپنے اسپتال کھولے۔ پر اُس سمے یورپ کی ڈاکٹری کسی طرح بھی چینی ڈاکٹری یا چینی ویدک ودیا سے بڑھی ہوئی نہیں تھی۔

سن 1846 میں یورپ کی سرجری کے اندر ایتھر کا استعمال پہلی بار شروع ہوا۔ 1867 میں یورپ میں چیر پھاڑ کے ساتھ کچھ نئی دوائیں استعمال ہونے لگیں جن سے زخم سڑنے نہ پاویں۔ اِس کے بعد یورپ کی ویدک ودیا نے خاص ترقی کرنی شروع کی۔ چینیوں کے دلوں میں بھی یورپ کے چیر پھاڑ کے طریقوں کی قدر بڑھی۔ لیکن چونکہ یورپ کی یہ ڈاکٹری 'افیم جنگ' کے ظالم حملہ‌آوروں کے ساتھ ساتھ آئی تھی اِس لئے چینیوں کے دلوں میں اُس کی طرف سے شک برابر بنا رہا۔

ڈاکٹر سن یات سین کی اگوائی میں سن 1911 میں مانچو شاسن کا انت ہوگیا۔ سن 1912 میں چینی

सरदार यू आन शिह-काई ने क्रान्तिकारियों के साथ दग़ा करके देश को यूरप के साम्राजवादियों का और अधिक ग़ुलाम बना दिया. सरकारी लोगों में पुरानी चीनी वैद्यक विद्या ग़ैर साइंसी और पिछड़ी हुई समझी जाने लगी. नए सरकारी स्कूल क़ायम हुए जिनमें केवल यूरप की डाक्टरी पढ़ाई जाती थी. इस के बाद च्यांग काई शेक का ज़माना आया. सन् 1929 में च्यांग काई शेक ने पुराने चीनी तरीक़े से इलाज करना तक ग़ैर क़ानूनी एेलान कर दिया. चीनी हकीमों के लिये अब कोई जगह न रह गई. लोगों ने इस पर ज़बरदस्त एतराज़ किया. जनता की उत्तेजना से और जनता के साथ मिलकर तीन सौ चीनी हकीमों ने कोमिनटाँग की राजधानी नानकिंग में एक बहुत बड़ा प्रदर्शन किया. कोमिनटाँग को कुछ झुकना पड़ा लेकिन फिर भी वह चीनी वैद्यक विद्या के रास्ते में रुकावटें ही डालते रहे, उन्होंने उसे पनपने न दिया, और यूरोपीय ढंग के डाक्टरों और पुराने ढंग के चीनी हकीमों को एक दूसरे से लड़ाते रहे.

सन् 1949 में नई जनता की सरकार क़ायम हुई. उसने उसी समय से यूरोपीय डाक्टरी और चीनी वैद्यक के बीच की खाई को पाटना शुरू किया. सन् 1950 में चीन की पहली राष्ट्रीय स्वास्थ्य कानफ़रेन्स हुई. उसने यह बुनियादी उसूल तय किया कि दोनों तरह के इलाज के तरीक़ों से पूरा पूरा फ़ायदा उठाया जावे और इलाज के उन तरीक़ों पर सब से ज़्यादा ज़ोर दिया जावे जो ग़रीबों, मज़दूरों, किसानों और सिपाहियों का भला कर सकें, और जिनमें रोग के पैदा हो जाने पर इलाज करने की निस्बत रोगों के पैदा न होने पर ज़्यादा ज़ोर दिया जावे.

पिछले साल यानी सन् 1954 में चीन के सबसे बड़े समाचार पत्र "पीपुल्स डेली" (जन दैनिक) ने पुरानी चीनी वैद्यक विद्या की तरफ़ सरकार के रुख़ को बिलकुल साफ़ कर दिया. उसने कहा कि चीनी वैद्यक के पीछे हज़ारों साल का तजरबा है, इस सारे अरसे में उसने जनता के स्वास्थ्य को ठीक करने और ठीक रखने में बहुत बड़ी मदद दी है. साथ ही उसमें क़ुदरती तौर पर कुछ कमियाँ भी हैं जिन की वजह से वह और अधिक नहीं बढ़ सकी. सरकार चाहती है कि जो चीनी लोग यूरप की डाक्टरी में तालीम पाए हुए हैं वह पुराने ढंग के चीनी वैद्यों और हकीमों के साथ मिलकर काम करें ताकि पुराने तरीक़े की कमियाँ पूरी हो सकें, उसे साइंसी ढङ्ग से चलाया जा सके और आजकल की चीनी डाक्टरी विद्या का वह एक आवश्यक और ख़ास अंग बन जावे.

इसी आधार पर सरकार ने सब जन-स्वास्थ्य महकमों को अमली हिदायतें भेज दी हैं. नई आज़ादी के बाद चीन के स्वास्थ्य मंत्रालय में पुराने चीनी इलाज के तरीक़े का

سردار یو آن شہ کائی نے کرانتیکاریوں کے ساتھ دغا کرکے دیش کو یورپ کے سامراج وادیوں کا اور ادھک غلام بنا دیا. سرکاری لوگوں میں پرانی چینی ویدک ودیا غیر سائنسی اور پچھڑی ہوئی سمجھی جانے لگی. نئے سرکاری اسکول قایم ہوئے جن میں کیول یورپ کی ڈاکٹری پڑھائی جاتی تھی. اس کے بعد چیانگ کائی شیک کا زمانہ آیا. سن 1929 میں چیانگ کائی شیک نے پرانے چینی طریقے سے علاج کرنا تک غیر قانونی اعلان کردیا. چینی حکیموں کے لئے اب کوئی جگہ نہ رہ گئی. لوگوں نے اس پر زبردست اعتراض کیا. جنتا کی اتیجنا سے اور جنتا کے ساتھ ملکر تین سو چینی حکیموں نے کومن تانگ کی راجدھانی نانکنگ میں ایک بہت بڑا پردرشن کیا. کومن-تانگ کو کچھ جھکنا پڑا لیکن پھر بھی وہ چینی ویدک ودیا کے راستے میں رکاوٹیں ہی ڈالتے رہے، انہوں نے اسے پنپنے نہ دیا، اور یوروپیہ ڈھنگ کے ڈاکٹروں اور پرانے ڈھنگ کے چینی حکیموں کو ایک دوسرے سے لڑاتے رہے.

سن 1949 میں نئی جنتا کی سرکار قایم ہوئی. اس نے اسی سمے سے یوروپیہ ڈاکٹری اور چینی ویدک کے بیچ کی کھائی کو پاٹنا شروع کیا. سن 1950 میں چین کی پہلی راشٹریہ سواستھ کانفرنس ہوئی. اس نے یہ بنیادی اصول طے کیا کہ دونوں طرح کے علاج کے طریقوں سے پورا پورا فایدہ اٹھایا جاوے اور علاج کے ان طریقوں پر سب سے زیادہ زور دیا جاوے جو غریبوں، مزدوروں، کسانوں اور سپاہیوں کا بھلا کرسکیں، اور جن میں روگ کے پیدا ہو جانے پر علاج کرنے کی نسبت روگوں کے پیدا نہ ہونے پر زیادہ زور دیا جاوے.

پچھلے سال یعنی سن 1954 میں چین کے سب سے بڑے سماچار پتر "پیپلس ڈیلی" (جن دینک) نے پرانی چینی ویدک ودیا کی طرف سرکار کے رخ کو بالکل صاف کردیا. اس نے کہا کہ چینی ویدک کے پیچھے ہزاروں سال کا تجربہ ہے، اس سارے عرصے میں اس نے جنتا کے سواستھیہ کو ٹھیک کرنے اور ٹھیک رکھنے میں بہت بڑی مدد دی ہے. ساتھ ہی اس میں قدرتی طور پر کچھ کمیاں بھی ہیں جن کی وجہ سے وہ اور ادھک نہیں بڑھ سکی. سرکار چاہتی ہے کہ جو چینی لوگ یورپ کی ڈاکٹری میں تعلیم پائے ہوئے ہیں وہ پرانے ڈھنگ کے چینی ویدیوں اور حکیموں کے ساتھ ملکر کام کریں تاکہ پرانے طریقے کی کمیاں پوری دور ہوسکیں، اسے سائنسی ڈھنگ سے چلایا جاسکے اور آجکل کی چینی ڈاکٹری ودیا کا وہ ایک آوشیک اور خاص انگ بن جاوے.

اسی آدھار پر سرکار نے سب جن سواستھیہ محکموں کو عملی ہدایتیں بھیج دی ہیں. نئی آزادی کے بعد چین کے سواستھیہ منترالیہ میں پرانے چینی علاج کے طریقے کا

एक अलग महकमा क़ायम हुआ. इस महकमे को अब बहुत बढ़ा दिया गया है. पेकिंग में एक राष्ट्रीय अकादमी क़ायम हुई है जिसका काम ही पुरानी वैद्यक विद्या में पूरी पूरी खोज करना है. शंघाई, नानकिंग, पेकिंग और दूसरे शहरों में सरकारी अस्पताल खोल दिये गए हैं जिनमें पुरानी वैद्यक विद्या के तरीक़े से ही रोगियों का इलाज किया जाता है, और पुराने ढंग से बारीक सुइयों के ज़रिये नसों की बीमारियों (Nervous diseases) का इलाज किया जाता है. पेकिंग में एक संस्था क़ायम की गई है जिसमें नसों के इलाज के इस पुराने तरीक़े (acupuncture) और जड़ी बूटियों से दाग़ कर दर्दों को दूर करने के पुराने तरीक़े (Moxibustion) दोनों पर तजरबे करके नए से नए डाक्टरी तरीक़ों से इनका मुक़ाबला करके, इस बात को दिखाते हुए कि बीमारी और तन्दुरुस्ती का नसों के साथ कितना गहरा सम्बन्ध है, इन दोनों पुराने तरीक़ों को नए साइंसी ढंग पर चलाया जा रहा है. नसों की बीमारियों के इलाज में, पेट यानी हाज़मे की बीमारियों के इलाज में और हाथों पैरों की बीमारियों के इलाज में इन पुराने तरीक़ों से बहुत अच्छे अच्छे नतीजे पैदा किये जाते हैं.

चीन में यूरोपीय डाक्टरी के भी अस्पताल मौजूद हैं. इनमें बहुत से अस्पतालों ने अपने अलग महकमे खोल दिये हैं जिनमें पुराने ढंग से ही रोगियों का इलाज होता है. इन अस्पतालों के अधिकारी पुराने ढंग के चीनी डाक्टरों को अपने यहाँ रखते हैं और सब चीज़ों में उनसे सलाहें करते हैं. थोड़े ही दिनों में चीन के बहुत से मेडिकल कालिजों में पुरानी वैद्यक की किताबें और उनके इलाज के तरीक़े भी विद्यार्थियों को पढ़ाए और सिखाए जायेंगे. पुरानी चीनी वैद्यक की किताबें फिर से छापी जा रही हैं और हमारे नए ढंग के डाक्टर उन किताबों को ध्यान के साथ पढ़ रहे हैं. चीन में दवाएँ तैयार करने की जो सबसे बड़ी सोसाइटी है The Chinese Pharmaceutical Society वह अगले पाँच बरस के अन्दर कई सौ पुरानी चीनी दवाओं पर तजरबे करके उन्हें ठीक ठाक तैयार करने की योजना बना रही है. चीन में डाक्टरों की सब से बड़ी एसोसिएशन 'चाइनीज़ मेडिकल एसोसिएशन' है. पहले उसके मेम्बर केवल यूरोपियन ढंग के डाक्टर ही हो सकते थे. अब इस एसोसिएशन ने देश भर में अपनी सब शाखों को हिदायत भेज दी है कि पुराने ढंग के तजरबेकार चीनी हकीमों को भी उसी तरह से ऐसोसिएशन का मेम्बर बनाया जाय जिस तरह नए ढंग के डाक्टरों को.

दोनों तरह के डाक्टर चीन में मिलकर काम कर रहे हैं. दोनों तरीक़ों में खोज जारी है. मक़सद यह है कि देश में जो आम इलाज के तरीक़े आगे को चलें उनमें पुराना चीनी

ایک الگ محکمہ قایم ہوا. اِس محکمے کو اب بہت بڑھا دیا گیا ہے. پیکنگ میں ایک راشٹریہ ایکادمی قایم ہوئی ہے جس کا کام ہی پرانی ویدک ودیا میں پوری پوری کھوج کرنا ہے ۔ شنگھائی' نانکنگ' اور دوسرے شہروں میں سرکاری اسپتال کھول دیئے گئے ہیں جن میں پرانی ویدک ودیا کے طریقے سے ہی روگیوں کا علاج کیا جاتا ہے' اور پرانے ڈھنگ سے باریک سوئیوں کے ذریعے نسوں کی بیماریوں (Nervous. diseases) کا علاج کیا جاتا ہے ۔ پیکنگ میں ایک سنستھا قایم کی گئی ہے جس میں نسوں کے علاج کے اِس پرانے طریقے (acupuncture) اور جڑی بوٹیوں سے داغ کر دردوں کو دور کرنے کے پرانے طریقے (Moxibustion) دونوں پر تجربے کرکے نئے سے نئے ڈاکٹری طریقوں سے اِن کا مقابلہ کرکے' اِس بات کو دکھاتے ہوئے کہ بیماری اور تندرستی کا نسوں کے ساتھ کتنا گہرا سمبندھ ہے' اِن دونوں پرانے طریقوں کو نئے سائنسی ڈھنگ پر چلایا جا رہا ہے ۔ نسوں کی بیماریوں کے علاج میں' پیٹ یعنی ہاضمے کی بیماریوں کے علاج میں اور ہاتھوں پیروں کی بیماریوں کے علاج میں اِن پرانے طریقوں سے بہت اچھے اچھے نتیجے پیدا کئے جاتے ہیں ۔

چین میں یوروپین ڈاکٹری کے بھی اسپتال موجود ہیں ۔ اِن میں سے بہت سے اسپتالوں نے اپنے الگ محکمے کھول دیئے ہیں جن میں پرانے ڈھنگ سے ہی روگیوں کا علاج ہوتا ہے ۔ اِن اسپتالوں کے ادھیکاری پرانے ڈھنگ کے چینی ڈاکٹروں کو اپنے یہاں رکھتے ہیں اور سب چیزوں میں اُن سے صلاحیں کرتے ہیں ۔ تھوڑے ہی دنوں میں چین کے بہت سے میڈیکل کالجوں میں پرانی ویدک کی کتابیں اور اُن کے علاج کے طریقے بھی ودیارتھیوں کو پڑھائے اور سکھائے جائینگے ۔ پرانی چینی ویدک کی کتابیں پھر سے چھاپی جا رہی ہیں اور ہمارے نئے ڈھنگ کے ڈاکٹر اُن کتابوں کو دھیان کے ساتھ پڑھ رہے ہیں ۔ چین میں دوائیں تیار کرنے کی جو سب سے بڑی سوسائٹی ہے The Chinese Pharmceutical Society وہ اگلے پانچ برس کے اندر کئی سو پرانی چینی دواؤں پر تجربے کرکے اُنھیں ٹھیک ٹھیک تیار کرنے کی یوجنا بنا رہی ہے ۔ چین میں ڈاکٹروں کی سب سے بڑی ایسوسئیشن 'چائنیز میڈیکل ایسوسئیشن' ہے ۔ پہلے اُس کے ممبر کیول یوروپین ڈھنگ کے ڈاکٹر ہی ہوسکتے تھے ۔ اب اِس ایسوسئیشن نے دیش بھر میں اپنی سب شاخوں کو ہدایت بھیج دی ہیں کہ پرانے ڈھنگ کے تجربہ‌کار چینی حکیموں کو بھی اُسی طرح سے ایسوسئیشن کا ممبر بنایا جائے جس طرح نئے ڈھنگ کے ڈاکٹروں کو ۔

دونوں طرح کے ڈاکٹر چین میں ملکر کام کر رہے ہیں ۔ دونوں طریقوں میں کھوج جاری ہے ۔ مقصد یہ ہے کہ دیش میں جو عام علاج کے طریقے آگے کو چلیں اُن میں پرانی چینی

वैद्यक की सारी विरासत को खपा लिया जावे. इस काम में अभी बरसों लगेंगे, लेकिन जब यह पूरा हो जायगा तो चीन के लोगों की तन्दुरुस्ती को इस से बहुत बड़ा फ़ायदा पहुंचेगा और दुनिया भर का वैद्यक विज्ञान इस से और अधिक मालामाल होगा.

("चाइना रीकन्सट्रक्ट्स" से)

ویدک کی ساری وراثت کو کھپا لیا جاوے . اس کام میں ابھی برسوں لگیں گے . لیکن جب یہ پورا ھوجائیگا تو چین کے لوگوں کی تندرستی کو اِس سے بہت بڑا فایدہ پہونچیگا اور دنیا بھر کا ویدک وگیان اِس سے اور ادھک مالا مال ھوگا .

("چائنا ریکنسٹرکٹس" سے)

गांधी और कबीर

श्री अम्बाशंकर नागर एम. ए.

इन दोनों महापुरुषों का जीवन एक दूसरे से इतना ज़्यादा मिलता-जुलता है कि एक के बारे में विचार करते वक़्त दूसरे का ख़याल आये बिना नहीं रहता. दोनों ने अपने ज़माने की माँग को महसूस किया था. दोनों ने वक़्त और हालात की ज़रूरतों को समझा था और दोनों ही आम जनता की मुश्किलों को रफ़ा करने में जीवन भर लगे रहे. इतना ही नहीं, इन दोनों महापुरुषों ने आगे बढ़कर अँधेरे में भटकते हुए लोगों को उस समय सहारा दिया था जिस समय उन्हें इस इमदाद की बड़ी ज़रूरत थी.

दोनों हिन्दू-मुसलिम एकता के समर्थक

कबीर और गाँधी दोनों ही कुचले और सताये वर्ग के पैग़म्बर थे. दोनों ऊँच-नीच और जाति-पांति के भेद को फ़िज़ूल मानते थे. दोनों ने पुरानी रूढ़ियों और अंधविश्वासों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई थी. धर्म और मज़हब, मंदिर और मस्जिद, ईश्वर और अल्लाह के नाम पर लड़ने वाले हिन्दू और मुसलमानों में एकता क़ायम करने के लिए तो ये दोनों ही महात्मा जीवन भर लगे रहे.

कबीर अगर कहते थे—

"भाईरे, दुइ जगदीस कहाँ ते आया।
अल्लाह राम करीमा केसो हरि हज़रत नाम धराया॥

तो गाँधी भी प्राथना में 'ईश्वर अल्लाह तेरा नाम' कह कर सबको उसी एकता का पाठ पढ़ाते थे.

گاندھی اور کبیر

شری امبا شنکر ناگر ایم. اے .

اِن دونوں مہاپرشوں کا جیون ایک دوسرے سے اِتنا زیادہ ملتا جلتا ھے کہ ایک کے بارے میں وچار کرتے وقت دوسرے کا خیال آئے بنا نہیں رھتا . دونوں نے اپنے زمانے کی مانگ کو محسوس کیا تھا، دونوں نے وقت اور حالات کی ضرورتوں کو سمجھا تھا اور دونوں ھی عام جنتا کی مشکلوں کو رفع کرنے میں جیون بھر لگے رھے . اِتنا ھی نہیں، اُن دونوں مہا پرشوں نے آگے بڑھکر اندھیرے میں بھٹکتے ھوئے لوگوں کو اُس سمئے سہارا دیا تھا جس سمئے اُنھیں اِس امداد کی بڑی ضرورت تھی .

دونوں ھندو مسلم ایکتا کے سمرتھک

کبیر اور گاندھی دونوں ھی کچلے اور ستائے ورگ کے پیغمبر تھے . اُونچ نیچ اور جاتی پانتی کے بھید کو فضول مانتے تھے . دونوں نے پرانی روڑھیوں اور اندھ وشواسوں کے خلاف آواز اُٹھائی تھی . دھرم اور مذھب، مندر اور مسجد، ایشور اور اللہ کے نام پر لڑنے والے ھندو اور مسلمانوں میں ایکتا قایم کرنے کے لئے تو یہ دونوں ھی مہاتما جیون بھر لگے رھے .

کبیر اگر کہتے تھے—

بھائی رے، دوئی جگدیس کہاں تے آیا،
اللہ رام کریما کیسو، ھری حضرت نام دھرایا ."

تو گاندھی بھی پرارتھنا میں 'ایشور اللہ تیرا نام' کہہ کر سب کو اُسی ایکتا کا پاٹھ پڑھاتے تھے .

दोनों अछूतों के मसीहा

कबीर ने अगर—

> "जात पांत पूछे नहीं कोई।
> हरि को भजे सो हरि का होई॥

कह कर सबको भक्ति का अधिकारी माना था तो गाँधी ने युग युग से दलित अछूतों को सामाजिक कार्यों में शरीक होने का और मंदिरों में प्रवेश करने का अधिकारी क़रार दिया था. गाँधी अछूतों के मसीहा थे. अछूत उद्धार के जिस नेक काम को कबीर ने शुरू किया था गांधी ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर उसे पूरा कर दिखाया.

दोनों की 'करनी' और 'कथनी' में समानता

ये दोनों ही महात्मा सत्य और ज्ञान के पुजारी थे. असत्य और अज्ञान को मिटाना ही जैसे इनके जीवन का मक़सद था. दोनों ही आचार और विचार की शुद्धि को व्यक्ति और समाज के लिए जरूरी मानते थे. सबसे बड़ी बात तो यह है कि इन दोनों महापुरुषों की 'करनी' और 'कथनी' में जरा सा भी भेद नहीं था. जैसा वे खुद करते थे वैसा ही वे दूसरों को करने के लिए कहते थे. 'करनी' के बिना 'कथनी' बिलकुल बेकार है; इस सचाई को समझ कर ही इन महापुरुषों ने अपने काम में हाथ डाला था. यही वजह है कि इनकी जबान में वह तासीर पैदा हुई कि जिसकी वजह से न केवल इस देश की बल्कि एक युग की काया पलट हो गई. जो काम कबीर की वाणी ने सोलहवीं सदी में किया था वही काम इस बीसवीं सदी में महात्मा गांधी की जबान ने किया. इस तरह अगर हम चाहें तो गाँधी को बीसवीं सदी का कबीर भी कह सकते हैं.

दोनों अहिंसा के पुजारी

कबीर और गांधी दोनों अहिंसा के उसूल को मानते थे. जानवरों को मारकर उनका मांस खाने को वे अप्राकृतिक कहते थे. कबीर ने गोश्त-ख़ोरों को इस तरह फटकारा है—

> "बकरी पाती खात है,
> तिसकी काढ़ी खाल।
> जे नर बकरी खात है,
> तिनका कौन हवाल ?"

"बकरी पत्ते खाती है, इस पर तो हम उसकी खाल खींच लेते हैं, जो आदमी बकरी को खाते हैं उनकी क्या दशा होगी ? जरा कल्पना तो कीजिये !"

दोनों ने श्रम का महत्त्व बढ़ाया

इन दोनों महात्माओं ने श्रम के महत्त्व को समझा था. कबीर अगर रात दिन सूत का ताना बुनते रहते थे तो गांधी जी भी सदा चरखे और तकली को लेकर सूत कातने में लगे रहते थे. गांधी ने अपने जीवन में जो बड़े काम किए

دونوں اچھوتوں کے مسیحا

کبیر نے اگر—

> "جات پانت پوچھے نہیں کوئی
> ھری کو بھجے سو ھری کا ھوئی"

کہہ کر سب کو بھکتی کا ادھیکاری مانا تھا تو گاندھی نے یگ یگ سے دلت اچھوتوں کو سماجک کاریوں میں شریک ھونے کا اور مندروں میں پرویش کرنے کا ادھیکاری قرار دیا تھا. گاندھی اچھوتوں کے مسیحا تھے. اچھوت ادھار کے جس نیک کام کو کبیر نے شروع کیا تھا گاندھی نے اپنے پرانوں کی بازی لگا کر اسے پورا کر دکھایا.

دونوں کی 'کرنی' اور 'کتھنی' میں سمانتا

یہ دونوں ھی مہاتما ستیہ اور گیان کے پجاری تھے. استیہ اور اگیان کو مٹانا ھی جیسے ان کے جیون کا مقصد تھا. دونوں ھی آچار اور وچار کی شدھی کو ویکتی اور سماج کے لئے ضروری مانتے تھے. سب سے بڑی بات تو یہ ھے کہ ان دونوں مہاپرشوں کی 'کرنی' اور 'کتھنی' میں ذرا سا بھی بھید نہیں تھا. جیسا خود کرتے تھے ویسا ھی وے دوسروں کو کرنے کے لئے کہتے تھے. 'کرنی' کے بنا 'کتھنی' بالکل بیکار ھے؛ اس سچائی کو سمجھ کر ھی ان مہاپرشوں نے اپنے کام میں ھاتھ ڈالا تھا. یہی وجہ ھے کہ ان کی زبان میں وہ تاثیر پیدا ھوئی کہ جس کی وجہ سے نہ کیول اس دیش کی بلکہ ایک یگ کی کایا پلٹ ھو گئی. جو کام کبیر کی بانی نے سولھویں صدی میں کیا تھا وھی کام اس بیسویں صدی میں مہاتما گاندھی کی زبان نے کیا. اس طرح اگر ھم چاھیں تو گاندھی کو بیسویں صدی کا کبیر بھی کہہ سکتے ھیں.

دونوں اہنسا کے پجاری

کبیر اور گاندھی دونوں اہنسا کے اصول کو مانتے تھے. جانوروں کو مارکر ان کا مانس کھانے کو وے اپراکرتک کہتے تھے. کبیر نے گوشت خوروں کو اس طرح پھٹکارا ھے—

> "بکری پاتی کھات ھے،
> تس کی کاڑھی کھال.
> جے نر بکری کھات ھے
> تن کا کون حوال ؟"

"بکری پتے کھاتی ھے، اس پر تو ھم اس کی کھال کھینچ لیتے ھیں. جو آدمی بکری کو کھاتے ھیں ان کی کیا دشا ھوگی ؟ ذرا کلپنا تو کیجئے !"

دونوں نے شرم کا مہتو بڑھایا

ان دونوں مہاتماؤں نے شرم کے مہتو کو سمجھا تھا. کبیر اگر رات دن سوت کا تانا بنتے رہتے تھے تو گاندھی جی بھی سدا چرخے اور تکلی کو لیکر سوت کاتنے میں لگے رہتے تھے. گاندھی نے اپنے جیون میں جو بڑے کام کئے

हैं, उनमें से एक यह भी है कि इन्होंने उपेक्षित श्रम की फिर से प्रतिष्ठा की. अंग्रेजी सभ्यता की चकाचौंध से लोगों की आँखें चकरा गई थीं दिमाग़ में बाबूगीरी की ऐसी बू भर गई थी कि लोग हाथ से काम करने में अपनी तौहीन समझते थे. ऐसे समय में गांधी जी झाड़ू लेकर ख़ुद भंगी का काम करने लगे. जो काम सबसे नीचा समझा जाता था उसी से उन्होंने शुरूआत की. पेशों में जुलाहे का पेशा बुरा माना जाता था उसे भी गांधी जी ने ऐसी इज्ज़त बख़्शी कि चरखा कातना आज सब इज्ज़त का काम समझते हैं.

भाषा की समस्या पर दोनों एक मत

कहाँ तक कहूँ, मैं तो हर काम में इन दोनों को एक पाता हूँ. हर मसले पर इनके विचार इतने मिलते-जुलते नज़र आते हैं कि ताज्जुब हुए बिना नहीं रहता. आजकल भाषा का सवाल एक अहम सवाल बना हुआ है. पर इस सवाल पर भी इन दोनों पीर-मुर्शिदों की एक ही राय थी. कबीर कहा करते थे—

"संस्किरत जलकूप कबीरा,
भाषा बहता नीर."

गांधी जी भी सरल और चलती भाषा के हिमायती थे. वे कहा करते थे कि भाषा तो विचार का वाहन है. हमें भाषा पर ध्यान देने से ज्यादा भाव या विचार पर ध्यान देना चाहिये.

जीवन ही नहीं मृत्यु में भी समानता

न केवल जीवन में बल्कि इन दोनों महात्माओं की मृत्यु में भी मुझे तो एक अजीबो ग़रीब क़िस्म की समानता दिखाई देती है.

कबीर मगहर में जाकर मरे यह साबित करने के लिए कि हिन्दुओं का ख्याल ग़लत है कि काशी में मरने से आदमी स्वर्ग में और मगहर में मरने से नर्क में जाता है. वे हिन्दू मुसलमानों के अंधविश्वासों को मिटाकर उनमें बुनियादी एकता क़ायम रना चाहते थे.

कबीर की मृत्यु की कहानी भी बड़ी दिलचस्प है. वे मगहर में जाकर मरे. उनकी लाश को लेकर हिन्दू मुसलमान लड़ने लगे. हिन्दू उनके शव को जलाना चाहते थे और मुसलमान गाड़ना. लड़ाई की नौबत आ गई, तलवारें तन गईं. पर जब किसी समझदार ने क़फ़न को उठाकर देखा तो वहाँ सिर्फ़ एक फूलों का ढेर! दोनों ने फूलों को आधा आधा बाँट लिया. हिन्दुओं ने काशी में उन्हें हिन्दू विधि से जलाया, मुसलमानों ने मगहर में गाड़ा.

मैं तो यह कहूँगा कि कबीर ने न केवल जीते जी बल्कि मर कर भी हिन्दू मुसलमानों को एकता के सूत्र में बांधा.

ہیں اُنمیں سے ایک یہ بھی ہے کہ اُنھوں نے اُپیکشت شرم کی پھر سے پرتشٹھا کی. انگریزی سبھیتا کی چکاچوندھ سے لوگوں کی آنکھیں چکرا گئی تھیں. دماغ میں بابوگیری کی ایک ایسی بو بھر گئی تھی کہ لوگ ھاتھ سے کام کرنے میں اپنی توھین سمجھتے تھے . ایسے سمے میں گاندھی جی جھاڑو لیکر خود بھنگی کا کام کرنے لگے . جو کام سب سے نیچا سمجھا جاتا تھا اُسی سے اُنھوں نے شروعات کی . پیشوں میں جلاھے کا پیشہ برا مانا جاتا تھا اُسے بھی گاندھی جی نے ایسی عزت بخشی کہ چرخہ کاتنا آج سب عزت کا کام سمجھتے ھیں .

بھاشا کی سمسیا پر بھی دونوں ایک مت

کہاں تک کہوں' میں تو ہر کام میں اِن دونوں کو ایک پاتا ھوں . ھر مسلے پر اِن کے وچار اِتنے ملتے جلتے نظر آتے ھیں کہ تعجب ھوئے بنا نہیں رھتا . آجکل بھاشا کا سوال ایک اھم سوال بنا ھوا ھے . پر اِس سوال پر بھی اِن دونوں پیر مرشدوں کی ایک ھی رائے تھی . کبیر کہا کرتے تھے—

"سنسکرت جل کوپ کبیرا'
بھاشا بہتا نیر ."

گاندھی جی بھی سرل اور چلتی بھاشا کے حمایتی تھے. وے کہا کرتے تھے کہ بھاشا تو وچار کا واھن ھے . ھمیں بھاشا پر دھیان دینے سے زیادہ بھاؤ یا وچار پر دھیان دینا چاھئے .

جیون میں ھی نہیں مرتیو میں بھی سمانتا

نہ کیول جیون میں بلکہ اِن دونوں مہاتماؤں کی مرتیو میں بھی مجھے تو ایک عجیب و غریب قسم کی سمانتا دکھائی دیتی ھے .

کبیر مگھر میں جاکر مرے' یہ ثابت کرنے کے لئے کہ ھندوؤں کا یہ خیال غلط ھے کہ کاشی میں مرنے سے آدمی سورگ میں اور مگھر میں مرنے سے نرک میں جاتا ھے . وے ھندو مسلمانوں کے اندھ وشواسوں کو مٹاکر اُنمیں بنیادی ایکتا قایم کرنا چاھتے تھے .

کبیر کی مرتیو کی کہانی بھی بڑی دلچسپ ھے . وے مگھر میں جاکر مرے . اُن کی لاش کو لیکر ھندو مسلمان لڑنے لگے . ھندو اُن کے شو کو جلانا چاھتے تھے اور مسلمان گاڑنا . لڑائی کی نوبت آگئی' تلواریں تن گئیں . پر جب کسی سمجھدار نے کفن کو اُٹھاکر دیکھا تو وھاں صرف ایک پھولوں کا ڈھیر ! دونوں نے پھولوں کو آدھا آدھا بانٹ لیا . ھندوں نے کاشی میں اُنھیں ھندو ودھی سے جلایا' مسلمانوں نے مگھر میں گاڑا .

میں تو یہ کہونگا کہ کبیر نے نہ کیول جیتے جی بلکہ مرکر بھی ھندو مسلمانوں کو ایکتا کے سوتر میں باندھا .

जो काम उनके जीवन ने न किया वह उनकी मृत्यु ने कर दिखाया. आज कबीर पंथ के मानने वाले हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं. और दोनों जीवन के बुनियादी उसूलों में एक हैं.

गांधी जी ने भी इसी हिन्दू-मुसलिम एकता की खातिर प्राण दिये. अपनी जीवन की आखरी सांस तक वे इन दोनों जातियों में एकता क़ायम करने के लिए कोशिश करते रहे. जीवन की ही तरह गांधी जी की मृत्यु भी महान थी. वे उस समय मरे जब वे प्रार्थना कर रहे थे, राम नाम ले रहे थे और लोगों को जीने का सही तरीक़ा सिखा रहे थे.

गांधी जी की मृत्यु भी कबीर की मृत्यु की तरह समाज के लिए बड़ी प्रभावशाली साबित हुई. अपने बापू को अपने हाथों से मारकर हिन्दुओं का कलेजा ठंडा हुआ. शर्म से हिन्दुओं का सर अपने आप झुक गया. ऐसा न हुआ होता तो पता नहीं उस समय उस जाशे-जुनून में लोग और क्या-क्या करते !

جو کام اُن کے جیون نے نہ کیا وہ اُن کی مرتیو نے کر دکھایا. آج کبیر پنتھ کے ماننے والے ھندو اور مسلمان دونوں ھیں. اور دونوں جیون کے بنیادی اُصولوں میں ایک ھیں .

گاندھی جی نے بھی اِسی ھندو مسلم ایکتا کی خاطر اپنے پران دیئے . اپنے جیون کی آخری سانس تک وے اِن دونوں جاتیوں میں ایکتا قایم کرنے کے لئے کوشش کرتے رھے . جیون کی ھی طرح گاندھی جی کی مرتیو بھی مہان تھی . وے اُس سمے مرے جب وے پرارتھنا کر رھے تھے' رام نام لے رھے تھے اور لوگوں کو جینے کا صحیح طریقہ سکھا رھے تھے .

گاندھی جی کی مرتیو بھی کبیر کی مرتیو کی طرح سماج کے لئے بڑی پربھاؤشالی ثابت ھوئی . اپنے باپو کو اپنے ھاتھوں سے مارکر ھندوؤں کا کلیجہ ٹھنڈا ھوا . شرم سے ھندوؤں کا سر اپنے آپ جھک گیا . ایسا نہ ھوا ھوتا تو پتہ نہیں اس سمے جوش جنون میں لوگ اور کیا کیا کرتے !

स्वतन्त्रता की यात्रा की चौथी पीढ़ी

श्री मगनभाई देसाई

दक्षिण अफ्रिका से 1915 में गांधी जी भारत आये. युरोपीय जंग उस समय शुरू हो चुका था. भारत आने के बाद उन्होंने जो काम अपने हाथ में लिये उनमें एक खास काम रंगरूटों की भरती का था. उसके साथ ही साथ 1917 से दूसरे काम भी शुरू हुए—चंपारण और खेड़ा का सत्याग्रह अहमदाबाद की मजदूर हड़ताल, विरमगाम की नाकाबंदी इत्यादि सत्याग्रह के प्रयोग थे. और उसके साथ साथ स्वतन्त्र्य यात्रा की नई, हमारी गिनती के मुताबिक़ चौथी, पीढ़ी शुरू हुई.

इस चौथी पीढ़ी को 1915 या 1920 से गिना जाय तो उसे तब से लेकर 1948 तक माना जा सकता है. मतलब यह कि वह पूरी तीस साल की पीढ़ी है कि जिसके दरमियान एक नई पीढ़ी भी पैदा हो सकती है और हुई भी है. फिर भी उस पीढ़ी ने अपनी बुजुर्ग पीढ़ी के मातहत रहकर ही काम किया है, वह अपना खुद का असर डाल सके उतनी

سوتنترتا کی یاترا کی چوتھی پیڑھی

شری مگن بھائی دیسائی

دکشن افریقہ سے 1915 میں گاندھی جی بھارت آئے . یوروپیہ جنگ اُس سمے شروع ھوچکا تھا . بھارت آنے کے بعد اُنھوں نے جو کام اپنے ھاتھ میں لئے اُن میں ایک خاص کام رنگروٹوں کی بھرتی کا تھا . اس کے ساتھ ھی ساتھ 1917 سے دوسرے کام بھی شروع ھوئے—چمپارن اور کھیڑا کا ستیاگرہ' احمدآباد کی مزدور ھڑتال' ورم گام کی ناکہبندی اتیادی ستیاگرہ کے پریوگ تھے . اور اُس کے ساتھ ساتھ سوتنتریہ یاترا کی نئی' ھماری گنتی کے مطابق چوتھی' پیڑھی شروع ھوئی .

اِس چوتھی پیڑھی کو 1915 یا 1920 سے گنا جائے تو اُسے تب سے لیکر 1948 تک مانا جاسکتا ھے . مطلب یہ کہ وہ پوری تیس سال کی پیڑھی ھے کہ جس کے درمیان ایک نئی پیڑھی بھی پیدا ھوسکتی ھے اور ھوئی بھی ھے . پھر بھی اُس پیڑھی نے اپنی بزرگ پیڑھی کے ماتحت رہ کر ھی کام کیا ھے' وہ اپنا خود کا اثر ڈال سکے اُتنی

शक्तिशाली या अपने अलग आदर्श रखने वाली नहीं थी. इस तरह यह एक सिलसिलेवार युग होने से उसे गांधी युग भी कह सकते हैं.

इस युग का इतिहास हमारे देश का एक शानदार और बुलन्द इतिहास है. उसका सही मोल भविश्य के इतिहासकार आँक सकेंगे. उसका असर सारी दुनिया के इतिहास प्रवाह पर भी हो रहा है; इसमे वह हक़ीक़त विश्व-इतिहास में भी एक नया बाब शुरू करने वाली साबित हुई है. उसकी वजह से न सिर्फ़ विदेशियों की ग़ुलामी का अन्त होकर भारत का अपना स्वतंत्र इतिहास फिर से शुरू हुआ है, बल्कि उस घटना से,विश्व-इतिहास में उन्नीसवीं सदी में जो साम्राज्य-युग और यंत्रोद्योगवाद शुरू हुए, उसमें भी भारी फेरफार और महान क्रान्ति के बीज उसने बोये हैं.

इस क्रान्ति से अब दुनिया में नये सवाल और नया पृष्ठ शुरू होता है, जिसकी पहली कड़ी भारत की स्वतंत्रता है. गांधी युग की पीढ़ी ने ऐसी महान घटना को देखा, उसमें हिस्सा लिया और उसे पैदा करने में यह पीढ़ी ख़ास सबब बनी. स्वतंत्र यात्रा के विचार के पीढ़ीनामे को मुख़्तसिर में एक बार याद करके उस की इस चौथी पीढ़ी के ख़ास ख़ास मुद्दों को हम देखेंगे.

हमने इस प्रकार पीढ़ियों की चर्चा की है :—

पहली पीढ़ी—राजा राममोहन राय.

दूसरी पीढ़ी—सन् 1857 और उसके बाद की तरक़्क़ी का ज़माना.

तीसरी पीढ़ी—ज़ाब्तगी से राष्ट्र सेवा का युग. उसके दो प्रवाह—जहाल और मवाल.

इसके बाद आने वाली चौथी पीढ़ी—राष्ट्र की सब शक्तियों को मिलाकर इकट्ठा करने का युग.

[2]

इस समय के दरमियान देश की आज़ादी के नुक़्ते नज़र से देखते हुए उसे हासिल करने के लिए जो कोशिशें शुरू हुईं, उनके अगर मोटे तौर पर हिस्से किये जायँ, तो वे दो थे ऐसा बताया जा सकता है—

(1) जनता का ज्ञान, उसकी समझ, सुधार और विकास इत्यादि शक्तियों के ज़रिये आगे बढ़ने का तरीक़ा जो राजा राममोहन राय से शुरू हुआ, ऐसा कहा जा सकता है.

आगे चलकर यह तरीक़ा बंधारणीय पद्धति इत्यादि नाम से पहचाना गया, जो आगे चलकर गांधी युग में शांत सत्याग्रह तक विकसित हुआ.

(2) हथियारों और बाहर की राज्यद्वारी मदद से लड़कर काम आगे चलाने की कोशिश.

شکتی شالی یا اپنے الگ آدرش رکھنے والی نہیں تھی . اِس طرح یہ ایک سلسلےوار یگ ہونے سے اُسے ہم گاندھی یگ بھی کہ سکتے ہیں .

اِس یگ کا اِتہاس ہمارے دیش کا ایک شاندار اور بہت بلند اِتہاس ھے . اُس کا صحیح مول بھوشیہ کے اِتہاس-کار آنک سکینگے . اس کا اثر ساری دنیا کے اِتہاس پرواہ پر بھی ہورہا ھے' اِس سے وہ حقیقت وشو اِتہاس میں بھی ایک نیا باب شروع کرنے والی ثابت ہوئی ھے . اُس کی وجہ سے نہ صرف ودیشیوں کی غلامی کا انت ہوکر بھارت کا اپنا سوتنتر اِتہاس پھر سے شروع ہوا ھے' بلکہ اُس گھٹنا سے' وشو اِتہاس میں اُنیسویں صدی میں جو سامراجیہ یگ اور یَنتروديوگ واد شروع ہوئے' اُس میں بھی بھاری پھیر پھار اور مہان کرانتی کے بیج اُس نے بوئے ہیں .

اِس کرانتی سے اب دنیا میں نئے سوال اور نیا پرشٹھ شروع ہوتا ھے' جس کی پہلی کڑی بھارت کی سوتنترتا ھے . گاندھی یگ کی پیڑھی نے ایسی مہان گھٹنا کو دیکھا' اُس میں حصہ لیا اور اُسے پیدا کرنے میں یہ پیڑھی خاص سبب بنی . سوتنتریہ یاترا کے وچار کے پیڑھی نامہ کو مختصر میں ایک بار یاد کرکے اُس کی اِس چوتھی پیڑھی کے خاص خاص مدوں کو ہم دیکھینگے .

ہم نے اِس پرکار پیڑھیوں کی چرچا کی ھے :—

پہلی پیڑھی—راجا رام موھن رائے .

دوسری پیڑھی—سن 1857 اور اس کے بعد کی ترقی کا زمانہ .

تیسری پیڑھی—ضابطگی سے راشٹر سیوا کا یگ . اُس کے دو پرواہ—جہال اور موال .

اس کے بعد . آنے والی . چوتھی . پیڑھی—راشٹر کی سب شکتیوں کو ملاکر اکٹھا کرنے کا یگ .

[2]

اس سمے کے درمیان دیش کی آزادی کے نقطہ نظر سے دیکھتے ہوئے اُسے حاصل کرنے کے لئے جو کوششیں شروع ہوئیں' ان کے اگر موٹے طور پر حصے کئے جائیں' تو وے دو تھے' ایسا بتایا جاسکتا ھے—

(1)—جنتا کا گیان' اُس کی سمجھ' سدھار اور وکاس اتیادی شکتیوں کے ذریعے آگے بڑھنے کا طریقہ' جو راجا رام موھن رائے سے شروع ہوا' ایسا کہا جاسکتا ھے .

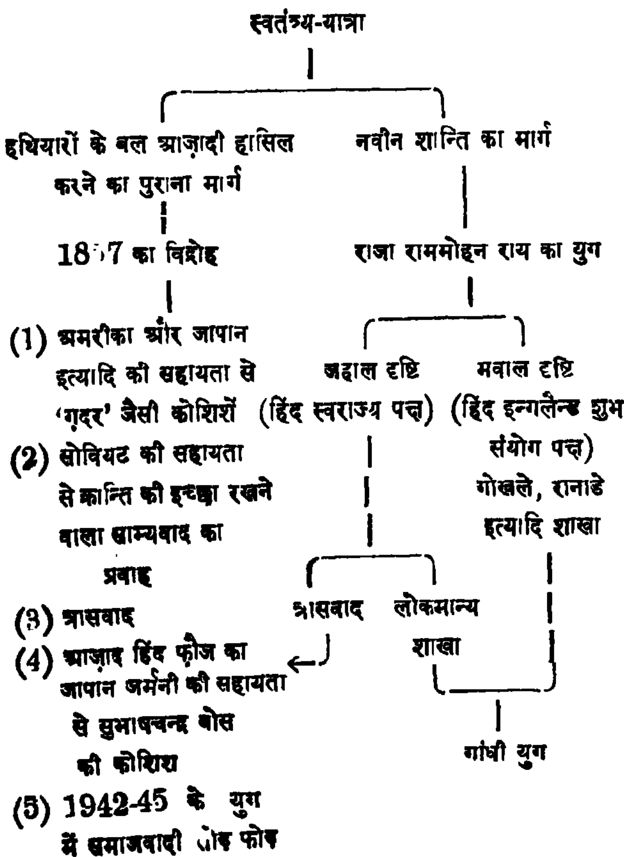
آگے چلکر یہ طریقہ بندھارنیہ پدھتی اتیادی نام سے پہچانا گیا' جو آگے چلکر گاندھی یگ میں شانت ستیاگرہ تک وکست ہوا .

(2)—ہتھیاروں اور باہر کی راجیہ دواری مدد سے لڑکر کام آگے چلانے کی کوشش .

यह तरीका ई० सन् 1757 से 1857 तक के सौ साल में बरता गया है. 1857 के बाद, शस्त्रबन्दी के होते हुए भी, वह एक या दूसरे ढंग से चलता रहा है और उसका प्रवाह 1947 तक चलता दिखाई देता है.

पहला तरीका नया है और दूसरा तरीका इतना पुराना है, जितना मानव-समाज का इतिहास. पहले तरीके की रीति-रस्में अर्वाचीन हैं, हमने उन्हें अंग्रेजों के इतिहास और उनके साहित्य में से तथा भारत में उनके राज्य-तंत्र के अनुभव में से सीखा और उसे उपयोग में लाकर ग्रहण करते गये. इन पद्धतियों को बंधारणीय पद्धतियाँ कहें या लोकशाही की पद्धतियाँ; उनके अलग अलग रूप या भिन्न-भिन्न प्रकार बताते हैं. इसका कारण यह है कि उसमें जनता की शक्ति, विद्रोह, हथियारबन्दी या राज कारण के दाँव पेचों के रास्ते से नहीं, बल्कि उसकी समझ, शक्ति तथा सत्कारिता और मेल जोल इत्यादि गुणों के जरिये काम देती है. गांधी जी ने इसमें उसके कलगी स्वरूप सत्याग्रह का नवीन शस्त्र जोड़ दिया.

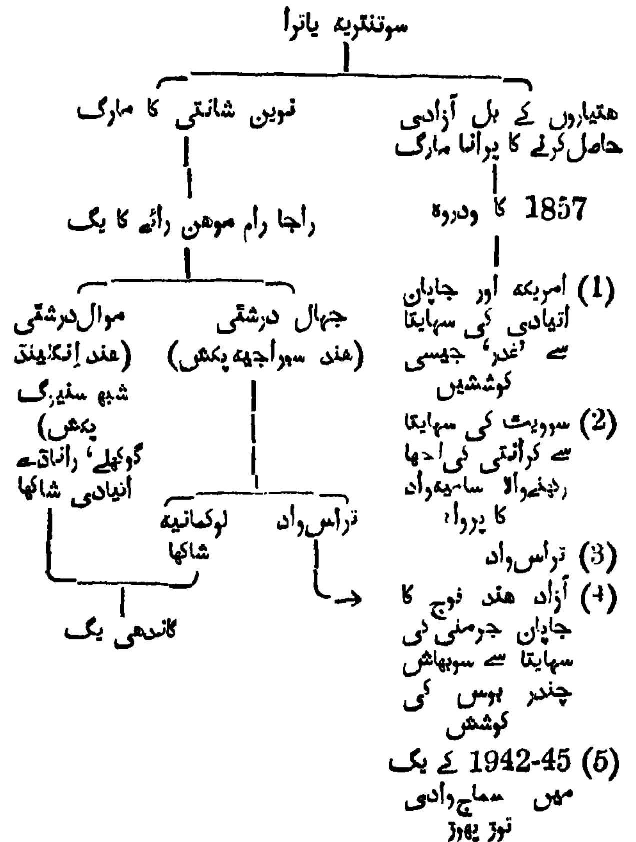
आजादी की मंजिल की किस्में और तरक्की विकास संबंधी इस विचार का मुख्तसिर में इस तरह आलेखन किया जा सकता है—



یہ طریقہ عیسوی سن 1757 سے 1857 تک کے سو سال میں برتا گیا ہے ۔ 1857 کے بعد، شستر بندی کے ہوتے ہوئے بھی، وہ ایک یا دوسرے ڈھنگ سے چلتا رہا ہے اور اُس کا پرواہ 1947 تک چلتا دکھائی دیتا ہے ۔

پہلا طریقہ نیا ہے اور دوسرا طریقہ اِتنا پرانا ہے، جتنا مانو سماج کا اِتہاس ۔ پہلے طریقے کی ریتی رسمیں اروا چین ہیں، ہم نے اِنہیں انگریزوں کے اِتہاس اور ان کے ساھتیہ میں سے تتھا بھارت میں اُن کے راجیہ تنتر کے انوبھو میں سے سیکھا، اور اُسے اُپیوگ میں لاکر گرھن کرتے گئے ۔ اِن پدھتیوں کو بندھارنیہ پدھتیاں کہیں یا لوک شاہی کی پدھتیاں؛ ان کے الگ الگ روپ یا بھن بھن پرکار بتاتے ہیں ۔ اِس کا کارن یہ ہے کہ اُس میں جنتا کی شکتی، ودروہ، ھتیار بندی یا راج کارن کے داؤں پیچوں کے راستے سے نہیں، بلکہ اُس کی سمجھ، شکتی تتھا ستکاریتا اور میل جول اتیادی گنوں کے ذریعے کام دیتی ہے ۔ گاندھی جی نے اِس میں اُس کے کلغی سوروپ ستیاگرہ کا نوین شستر جوڑ دیا ۔

آزادی کی منزل کی قسمیں اور ترقی وکاس سمبندھی اِس وچار کا مختصر میں اِس طرح آلیکھن کیا جاسکتا ہے—



[3]

पाठक देखेंगे कि वंशवृक्ष में गाँधी युग के अन्दर जहाल और मवाल पक्ष के दो अलग अलग धाराओं का संगम बताया है, मतलब यह कि गाँधी जी लोकमान्य पीढ़ी और रानाडे-गोखले पीढ़ी के इकट्ठा पीढ़ीधर थे. गांधी जी ने अपनी सियासी पहचान 'गोखले मेरे सियासी गुरू हैं;" इस प्रकार दी है. इन दो पक्षों में अगर कोई बुनियादी भेद है तो वह यह कि, गोखले शाखा की ऐसी मान्यता थी कि हिन्द और इंगलेन्ड का संयोग ईश्वरदत्त शुभ वस्तु है; जबकि तिलक-शाखा की मान्यता थी कि भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र है और उसका स्वराज्य स्वतन्त्र ही हो सकता है. गांधी जी 1915 में जब भारत आये तब पहले मत के थे, फिर भी वे गोखले शाखा की राजकीय रीति-रस्मों के अतिरिक्त सत्याग्रह की पद्धति में भी श्रद्धा रखते थे, और उस शस्त्र का सफल प्रयोग करने के बाद ही भारत आये थे. उनके व्यक्तित्व और उनकी प्रतिभा का यह अंश उन्हें गोखले-राज्य कारण में शामिल होकर, उनके भारत सेवक समाज के द्वारा कार्य करने में बाधा रूप हुआ. दूसरी ओर, इस चीज़ के कारण तिलक-राज्यकारण-शाखा को, उसमें अपने जहाल राजकारण से कुछ नवीनता का अनुभव जरूर हुआ, लेकिन उसकी उग्रता के कारण उसमें उन्होंने सहधार्मिकता और समानता का अनुभव किया. इस प्रकार गांधी युग के प्रारम्भ में, गांधी जी में जहाल और मवाल दोनों दृष्टियों का संगम देखने को मिलता है.

इतना ही नहीं, दोनों पक्षों की कार्य-प्रणालियाँ उनके युग में एकत्र होकर एक अखंड कार्य प्रणाली के रूप में जन्म लेती हैं. इस पद्धति के लिए जिस प्रकार की रहनुमाई चाहिये वैसा ही गांधी जी की जीवन प्रतिभा पूरा करती है.

इससे क़ौम के अन्दर एक दृष्टि, एक कोशिश, तथा एक नीति-नेतृत्व वग़ैरह एक नये ही ढङ्ग से अपने आप पैदा होते गये. स्वराज्य प्राप्ति अब सारी जनता का पुरुषार्थ बनता है, उसके अंग उपांगों की गहराई तक जाकर वह अपना असर डालने लगता है. ऐसा ही कहना चाहिए कि शस्त्रास्त्र के परंपरागत हिंसा मार्ग को छोड़कर, प्रजा, शांति-अहिंसा मार्ग के नये प्रयोग की पूर्ण रूप से आज़माइश करने के लिए कमर कसती है। जग के व्यापक राज कारण पर गांधी युग का जो कुछ भी असर हुआ वह इसी कारण से हो सका है. गांधी जी का वर्णन करते हुए श्री गोखले ने कहा था कि इस व्यक्ति में भारतीय संस्कृति अपने आला दर्जे तक पहुंची है. गांधी जी के गुरु ने 1915 से भी पहले उनका जो वर्णन किया था उसे गांधी जी पूर्ण रूप से सिद्ध कर दिखाते हैं. न केवल राजनीति में बल्कि भारत की

(3)

پاٹھک دیکھینگے کہ ونش ورکش میں گاندھی یگ کے اندر جہال اور موال پکش کے دو الگ الگ دھاراؤں کا سنگم بتایا ھے. مطلب یہ کہ گاندھی جی لوکمانیہ پیڑھی اور راناڈے گوکھلے پیڑھی کے اِکٹھا پیڑھی‌دھر تھے. گاندھی جی نے اپنی سیاسی پہچان' 'گوکھلے میرے سیاسی گرو ھیں' اِس پرکار دی ھے. اِن دو پکشوں میں اگر کوئی بنیادی بھید ھے تو وہ یہ کہ گوکھلے شاکھا کی ایسی مانیتا تھی کہ ھند اور انگلینڈ کا سنیوگ ایشوردت شبھ وستو ھے؛ جبکہ تلک شاکھا کی مانیتا تھی کہ بھارت ایک سوتنتریہ راشٹر ھے اور اُس کا سوراجیہ سوتنتر ھی ھو سکتا ھے. گاندھی جی 1915 میں جب بھارت آئے تب پہلے مت کے تھے' پھر بھی وے گوکھلے شاکھا کی راجکیہ ریتی رسموں کے اتیرکت ستیا گرہ کی پدھتی میں بھی شردھا رکھتے تھے' اور اُس شستر کا سپھل پریوگ کرنے کے بعد ھی بھارت آئے تھے. اُن کے ویکتتو اور اُن کی پرتیبھا کا یہ انش اُنھیں گوکھلے راج کارن میں شامل ھو کر' اُن کے بھارت سیوک سماج کے دوارا کاریہ کرنے میں بادھا روپ ھوا. دوسری اور' اِس چیز کے کارن تلک راجیہ کارن شاکھا کو' اُسمیں اپنے جہال راج کارن سے کچھ نوینتا کا انوبھو ضرور ھوا' لیکن اُس کی اُگرتا کے کارن اُس میں انہوں نے سہ‌دھارمکتا اور سمانتا کا انوبھو کیا. اِس پرکار گاندھی یگ کے پرارمبھ میں' گاندھی جی میں جہال اور موال دونوں درشٹیوں کا سنگم دیکھنے کو ملتا ھے.

اِتنا ھی نہیں' دونوں پکشوں کی کاریہ پرنالیاں اُن کے یگ میں ایکتر ھو کر اکھنڈ کاریہ پرنالی کے روپ میں جنم لیتی ھیں. اِس پدھتی کے لئے جس پرکار کی رھنمائی چاھیئے ویسا ھی گاندھی جی کی جیون پرتیبھا پورا کرتی ھے.

اِس سے قوم کے اندر ایک درشٹی' ایک کوشش' تتھا ایک نیتی نیترتو وغیرہ ایک نئے ھی ڈھنگ سے اپنے آپ پیدا ھوتے گئے. سوراجیہ پراپتی اب ساری جنتا کا پروشارتھ بنتا ھے؛ اُس کے انگ اُپانگوں کی گہرائی تک جا کر وہ اپنا اثر ڈالنے لگتا ھے' ایسا ھی کہنا چاھیئے کہ شاستر استر کے پرمپراگت ھنسا مارگ کو چھوڑ کر' پرجا' شانتی اھنسا مارگ کے نئے پریوگ کی پورن روپ سے آزمائش کرنے کے لئے کمر کستی ھے. جگ کے ویاپک راج کارن پر گاندھی یگ کا جو کچھ بھی اثر ھوا وہ اِسی کارن سے ھو سکا ھے. گاندھی جی کا ورنن کرتے ھوئے شری گوکھلے نے کہا تھا کہ اِس ویکتی میں بھارتیہ سنسکرتی اپنے عالی درجہ تک پہونچی ھے. گاندھی جی کے گرو نے 1915 سے بھی پہلے اُن کا جو ورنن کیا تھا اُسے گاندھی جی پورن روپ سے سدھ کر دکھاتے ھیں. نہ کیول راج نیتی میں بلکہ بھارت کی

स्वतन्त्रता की यात्रा की चौथी पीढ़ी

जनता के समस्त जीवन में नया प्रकाश, नई दृष्टि, नया अर्थ, नयी सार्थकता और नया सिरजन इस युग में प्रकट होता है. हिन्द की आजादी जनता की सर्वतोमुखी शक्ति संग्रह के बल पर हासिल हो सकी है, और ऐसा होने से हिन्द के इतिहास ने अपना रुख पलटा है।

ऊपर के वंशवृक्ष में पाठक देखेंगे कि परंपरागत हिंसा-मार्ग की धारा भी 1857 से लेकर कई शक्लों में वक़्त के मुताबिक़ तबदील होकर 1945 तक चालू रही है. इस धारा की भी पीढ़ियाँ और दृष्टियाँ रही हैं. स्वतंत्र यात्रा के इतिहास में उसका भी एक अलग प्रकरण है. उस पद्धति को अन्त में यश प्राप्त नहीं हुआ, बाक़ी उसमें भी त्याग और बलिदान पूर्वक अपने आपका अर्पण करने वाले और स्वतंत्र ज्योत को जलता रखने वाले देशभक्त अवश्य थे.

त्रासवाद और तोड़-फोड़ की प्रवृत्ति की भी इसके साथ गिनती की है क्योंकि उनका प्रकार हिंसाबल की परंपरागत विचार पद्धति का था.

अनुवादक—कनुभाई नानालाल पटेल

سوتنترتا کی یاترا کی چوتھی پیڑھی

جنتا کے سمست جیون میں نیا پرکاش، نئی درشٹی، نیا ارتھ، نئی سارتھکتا اور نیا سرجن اِس یگ میں پرگٹ ہوتا ہے. ہند کی آزادی جنتا کی سرروتومکھی شکتی سنگرہ کے بل پر حاصل ہو سکی ہے، اور ایسا ہونے سے ہند کے اتہاس نے اپنا رخ پلٹا ہے.

اُوپر کے ونش ورکش میں پاٹھک دیکھینگے کہ پرمپراگت ہنسا مارگ کی دھارا بھی 1857 سے لیکر کئی شکلوں میں وقت کے مطابق تبدیل ہو کر 1945 تک چالو رہی ہے. اِس دھارا کی بھی پیڑھیاں اور درشٹیاں رہی ہیں. سوتنتر یاترا کے اِتہاس میں اُس کا بھی ایک الگ پرکرن ہے. اُس پدھتی کو انت میں یش پراپت نہیں ہوا، باقی اِس میں بھی تیاگ اور بلیدان پوروک اپنے آپ کو ارپن کرنے والے اور سوتنتر جیوت کو جلتا رکھنے والے دیش بھکت اوشیہ تھے.

تراس واد اور توڑ پھوڑ کی پرورتی کی بھی اُس کے ساتھ گنتی کی ہے کیونکہ اُن کا پرکار ہنسا بل کی پرمپراگت وچار پدھتی کا تھا.

انوادک— کنو بھائی نانا لال پٹیل

मेरे मत से कम्युनिज़म कोई बुरी चीज़ हो ऐसी बात नहीं है. बुरी चीज़ यह है कि वह हिंसा से लादा जाता है. मुझे कम्युनिज़म से डर बिलकुल नहीं लगता, क्योंकि हिन्दुस्तान की हज़ारों बरसों की कलचर हिंसा विरोधी है और गांधी जी ने हमारे देश को अहिंसा की ताक़त दी है. मुझे यक़ीन है कि हिन्दुस्तान उसी की बदौलत बचने वाला है. मुझे यह भी विश्वास है कि अमरीका जैसा देश डर को छोड़ कर अगर अहिंसा की ताक़त को आज़मा कर देखेगा, तो वह सारी दुनिया को निडर करेगा और ख़ुद भी निडर बनेगा.

—विनोबा

میرے مت سے کمیونزم کوئی بری چیز ہو ایسی بات نہیں ہے. بری چیز یہ ہے کہ وہ ہنسا سے لادا جاتا ہے. مجھے کمیونزم سے ڈر بالکل نہیں لگتا، کیونکہ ہندستان کی ہزاروں برسوں کی کلچر ہنسا ورودھی ہے اور گاندھی جی نے ہمارے دیش کو اہنسا کی طاقت دی ہے. مجھے یقین ہے کہ ہندستان اُسی کی بدولت بچنے والا ہے. مجھے یہ بھی وشواش ہے کہ امریکہ جیسا دیش ڈر کو چھوڑ کر اگر اہنسا کی طاقت کو آزما کر دیکھیگا، تو وہ ساری دنیا کو نڈر کریگا اور خود بھی نڈر بنیگا.

—ونوبا

मुहम्मद साहब के कुछ उपदेश

मुहम्मद साहब ने कहा:—"न क़बरों पर बैठो और न उनकी तरफ़ मुंह करके दुआ मांगो."

—अबु मरसद अलग़नवी, मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"ऐ अल्लाह! मेरी क़ब्र को बुत बना कर कोई उसे न पूजे; अल्लाह का ज़बरदस्त क्रोध उन पर नाज़िल होता है जो अपने पैग़म्बरों की क़बरों को पूजते हैं!"

—अताबिन यसार, मालिक.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"दो भूखे भेड़िये अगर भेड़ों के किसी गल्ले में छोड़ दिये जावें तो वह भेड़ों को इतना बरबाद नहीं कर सकते जितना धन और बड़प्पन का लोभ आदमी के दीन को बरबाद कर देता है."

—काब बिन मालिक, तिरमिज़ी: दारिमी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"कोई ज़ालिम जन्नत में दाख़िल नहीं होगा."

—उक़बह बिन आमिर, अबुदाऊद: अहमद: दारिमी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"सब से बड़ा जेहाद वह आदमी करता है जो एक ज़ालिम हाकिम के सामने भी सच्ची बात कहता है."

—अबु सईद, तिरमिज़ी: अबुदाऊद: इब्ने माजह;
तारिक़ बिन शिहाब, नसाई: अहमद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"जैसे तुम होगे वैसे ही वह हो जायेंगे जो तुम्हारे ऊपर हाकिम बनाए जायेंगे."

—यहिया बिन हाशिम ने यूनुस बिन अबु इसहाक़ से और उसने अपने बाप से सुना, बेहक़ी.

محمد صاحب کے کچھ اُپدیش

محمد صاحب نے کہا:—"نہ قبروں پر بیٹھو اور نہ اُن کی طرف منھہ کر کے دعا مانگو."

—ابو مرثد الغنوی، مسلم.

محمد صاحب نے کہا:—"اے اللہ! میری قبر کو بت بنا کر کوئی اُسے نہ پوجے؛ اللہ کا زبردست کرودھ اُن پر نازل ہوتا ہے جو اپنے پیغمبروں کی قبروں کو پوجتے ہیں!"

—عطابن یسار، مالک.

محمد صاحب نے کہا:—"دو بھوکے بھیڑیئے اگر بھیڑوں کے کسی گلے میں چھوڑ دیئے جاویں تو وہ بھیڑوں کو اِتنا برباد نہیں کر سکتے جتنا دھن اور بڑپن کا لوبھ آدمی کے دین کو برباد کر دیتا ہے."

—کعب بن مالک، ترمزی: داریمی.

محمد صاحب نے کہا:—"کوئی ظالم جنت میں داخل نہیں ہوگا."

—عقبہ بن عامر، ابوداؤد: احمد: داریمی.

محمد صاحب نے کہا:—"سب سے بڑا جہاد وہ آدمی کرتا ہے جو ظالم حاکم کے سامنے بھی سچی بات کہتا ہے."

—ابو سعید، ترمذی: ابوداؤد: ابن ماجہ؛
طارق بن شہاب، نسائی: احمد.

محمد صاحب نے کہا:—"جیسے تم ہوگے ویسے ہی وہ ہو جائینگے جو تمہارے اُوپر حاکم بنائے جائینگے."

—یحییٰ بن ہاشم نے یونس بن ابو اسحاق سے اور اُس نے اپنے باپ سے سنا، بیہقی.

एक औरत ने पैग़म्बर से आकर कहा:—"मेरा पेट सचमुच इस मेरे बेटे का घर बना रहा है; मेरी छाती इसकी महक थी जिससे यह अपनी भूख प्यास बुझाता था; मेरी गोद वह जगह थी जहां इसे आश्रय मिलता था; और अब इसके बाप ने मुझे तलाक़ दे दिया है और इसे भी मुझसे ले लेना चाहता है." पैग़म्बर ने कहा:—"तुम्हें इस लड़के को रखने का ज़्यादा हक़ है, जब तक कि तुम दूसरी शादी न करो."

—अमरू बिन शुएब, अबुदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"रात को मेहमान की सेवा और ख़ातिरदारी करना हर मुसलमान का फ़र्ज़ है, चाहे कोई भी उसके सेहन में आकर उतरे."

मैंने पूछा:—"ऐ अल्लाह के रसूल ! एक आदमी है जो जब मैं सफ़र में होता हूँ तो मेरे साथ मेहमान के हक़ को नहीं निबाहता; तो क्या जब वह सफ़र में हो तो मैं उसे अपना मेहमान मानूँ और उसके साथ अपने फ़र्ज़ को पूरा करूं ?"

पैग़म्बर ने जवाब दिया.—"हां, उसका स्वागत करो और उसकी ख़ातिरदारी करो."

—औफ़ बिन मालिक, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"सचमुच आदमी के जिस्म के अन्दर गोश्त का एक टुकड़ा है जिसे दिल कहते हैं : जब वह ठीक रहता है तो सारा जिस्म ठीक रहता है, और जब वह ख़राब होता है तो सारा जिस्म ख़राब होता है."

—नोमान बिन बशीर, बुख़ारी: मुस्लिम:
अबूदाऊद: तिरमिज़ी: नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा :—काम, क्रोध, लोभ, मोह के बाद दोज़ख़ की आग है, और कष्टों के बाद जन्नत है."

—अबुहुरैरा. बुख़ारी: मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मुनाफ़िक़ यानी ढोंगी आदमी की तीन पहचानें हैं, वह रोज़े रखता है और नमाज़ पढ़ता है और समझता है कि मैं मुसलमान हूँ, पर जब बोलता है तो झूट बोलता है, जब वादा करता है तो उसे पूरा नहीं करता, और जब उसपर एतबार किया जाता है तो दग़ा देता है."

—अबु हुरैरा, मुसलिम.

ایک عورت نے پیغمبر سے آکر کہا:—"میرا پیٹ سچ مچ اِس میرے بیٹے کا گھر بنا رہا ھے؛ میری چھاتی اِس کی مشک تھی جس سے یہ اپنی بھوک پیاس بجھاتا تھا؛ میری گود وہ جگہ تھی جہاں اِسے آشرئے ملتا تھا؛ اور اب اس کے باپ نے مجھے طلاق دے دیا ھے اور اِسے بھی مجھ سے لے لینا چاھتا ھے." پیغمبر نے کہا:—"تمھیں اِس لڑکے کو رکھنے کا زیادہ حق ھے، جب تک کہ تم دوسری شادی نہ کرو."

—امرو بن شعیب، ابوداؤد.

محمد صاحب نے کہا:—"رات کو مہمان کی سیوا اور خاطر داری کرنا ھر مسلمان کا فرض ھے، چاھے کوئی بھی اُس کے صحن میں آکر اُترے."

میں نے پوچھا:—"اے اللہ کے رسول ! ایک آدمی ھے جو جب میں سفر میں ھوتا ھوں تو میرے ساتھ مہمان کے حق کو نہیں نباھتا؛ تو کیا جب وہ سفر میں ھو تو میں اُسے اپنا مہمان مانوں اور اُس کے ساتھ اپنے فرض کو پورا کروں؟"

پیغمبر نے جواب دیا—"ھاں، اُس کا سواگت کرو اور اُس کی خاطرداری کرو."

—عوف بن مالک، ترمذی.

محمد صاحب نے کہا :—"سچ مچ آدمی کے جسم کے اندر گوشت کا ایک ٹکڑا ھے جسے دل کہتے ھیں : جب وہ ٹھیک رھتا ھے تو سارا جسم ٹھیک رھتا ھے، اور جب وہ خراب ھوتا ھے تو سارا جسم خراب ھوتا ھے."

—نومان بن بشیر، بخاری : مسلم :
ابوداؤد : ترمذی : نسائی.

محمد صاحب نے کہا :—"کام، کرودھ، لوبھ، موہ کے بعد دوزخ کی آگ ھے، اور کشٹوں کے بعد جنت ھے."

—ابوھریرہ، بخاری : مسلم.

محمد صاحب نے کہا :—"منافق یعنی ڈھونگی آدمی کی تین پہچانیں ھیں، وہ روزے رکھتا ھے اور نماز پڑھتا ھے اور سمجھتا ھے کہ میں مسلمان ھوں، پر جب بولتا ھے تو جھوٹ بولتا ھے، جب وعدہ کرتا ھے تو اُسے پورا نہیں کرتا، اور جب اُس پر اعتبار کیا جاتا ھے تو دغا دیتا ھے."

—ابوھریرہ، مسلم.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"एक दिन आएगा जब ऐसे लोग पैदा होंगे जो दीन के नाम पर दुनिया को धोका देंगे, लोगों के सामने वह नम्रता से भेड़ बने रहेंगे, उनकी ज़बान चीनी से भी अधिक मीठी होगी पर उनके दिल भेड़ियों के से दिल होंगे. अल्लाह कहता है:—'क्या वह ध्यान न देंगे? और मुझ पर झूटी तोह्मत लगाएंगे? मैं अपनी क़सम खाकर कहता हूँ मैं उन ही में से ऐसे लोग पैदा कर दूँगा जो उनके लिये आफ़त हो जायंगे और उनमें जो सबसे अधिक बने हुए होंगे वह घबरा जायंगे'."

—अबु हुरैरा, तिरमिज़ी.

———

मुहम्मद साहब ने कहा:—"सचमुच आदम की औलाद में शैतान का भी ज़ोर है और फ़रिश्ते का भी ज़ोर है, शैतान का ज़ोर आदमी को बदी की तरफ़ और सच को झूट बताने की तरफ़ ले जाता है, और फ़रिश्ते का ज़ोर उसे नेकी की तरफ़ और सच को सच मानने की तरफ़ ले जाता है; इसलिये जो कोई जितना अपने अन्दर फ़रिश्ते का ज़ोर अनुभव करे उसे जानना चाहिये कि यह अल्लाह की तरफ़ से है, इसके लिये उसे अल्लाह का शुक्रगुज़ार होना चाहिये; और जो कोई जितना अपने अन्दर शैतान का ज़ोर अनुभव करे उसे चाहिये कि शैतान से बचने के लिये अल्लाह की पनाह ले."

—इब्ने मसऊद, तिरमिज़ी.

———

मुहम्मद साहब ने कहा:—"जो कोई किसी आदमी की किसी कमज़ोरी को देख लेता है और उसे दूसरों से छिपाता है वह उस आदमी की तरह है जो किसी ज़िन्दा गड़ी हुई लड़की को निकालकर फिर से पाल लेता है."

—उक़्बा बिन आमिर, अबुदाऊद.

———

मुहम्मद साहब ने कहा:—"जो आदमी चीज़ों के ख़रीदने या बेचने में या अपने क़र्ज़दारों से क़र्ज़ा वसूल करने में नरमी से काम लेता है अल्लाह उस पर रहम करेगा."

—जाबिर, बुख़ारी.

———

अनुवादक—श्री मुजीब रिज़वी.

———

محمد صاحب نے کہا :—"ایک دن آئے گا جب ایسے لوگ پیدا ہونگے جو دین کے نام پر دنیا کو دھوکا دینگے، لوگوں کے سامنے وہ نمرتا سے بھیڑ بنے رہینگے، اُن کی زبان چینی سے بھی ادھک میٹھی ہوگی پر اُن کے دل بھیڑیوں کے سے دل ہونگے. اللہ کہتا ہے :—'کیا وہ دھیان نہ دینگے؟ اور مجھ پر جھوٹی تہمت لگائینگے؟ میں اپنی قسم کھاکر کہتا ہوں میں اُن ہی میں سے ایسے لوگ پیدا کردونگا جو اُن کے لئے آفت ہوجائینگے اور اُن میں جو سب سے ادھک بنے ہوئے ہونگے وہ گھبرا جائینگے.'"

—ابو ہریرہ، ترمذی.

———

محمد صاحب نے کہا :—"سچ مچ آدم کی اولاد میں شیطان کا بھی زور ہے اور فرشتے کا بھی زور ہے، شیطان کا زور آدمی کو بدی کی طرف اور سچ کو جھوٹ بتانے کی طرف لے جاتا ہے، اور فرشتے کا زور اُسے نیکی کی طرف اور سچ کو سچ ماننے کی طرف لے جاتا ہے؛ اِس لئے جو کوئی جتنا اپنے اندر فرشتے کا زور انوبھو کرے اُسے جاننا چاہئے کہ یہ اللہ کی طرف سے ہے، اِس کے لئے اُسے اللہ کا شکرگزار ہونا چاہئے؛ اور جو کوئی جتنا اپنے اندر شیطان کا زور انوبھو کرے اُسے چاہئے کہ شیطان سے بچنے کے لئے اللہ کی پناہ لے."

—ابن مسعود، ترمذی.

———

محمد صاحب نے کہا :—"جو کوئی کسی آدمی کی کسی کمزوری کو دیکھ لیتا ہے اور اُسے دوسروں سے چھپاتا ہے وہ اُس آدمی کی طرح ہے جو کسی زندہ گڑی ہوئی لڑکی کو نکال کر پھر سے پال لیتا ہے."

—عقبہ بن عامر، ابوداؤد.

———

محمد صاحب نے کہا :—"جو آدمی چیزوں کے خریدنے یا بیچنے میں یا اپنے قرضداروں سے قرضہ وصول کرنے میں نرمی سے کام لیتا ہے اللہ اُس پر رحم کریگا."

—جابر، بخاری.

———

انوواد ک—شری مجیب رضوی.

———

दुनिया भर की माओं के नाम

श्रीमती चेन कुआंग-यू

[जोलाई सन् 1955 में सुइजरलैंड के शहर लासेन में 'दुनिया भर की माओं की पहली कांगरेस' हुई थी. उसमें दूर दूर के छयासठ देशों से बारह सौ माएं आकर जमा हुई थीं. चीन और हिन्दुस्तान की कुछ माओं ने भी उसमें हिस्सा लिया था. यह लेख एक ऐसी चीनी मां का लिखा हुआ है जो किसी कारण उस कांग्रेस में नहीं पहुँच सकी—एडिटर.]

❀ ❀ ❀

जिस समय सब देशों की माओं के नुमाइन्दे लासेन में जमा हो रहे थे मैं पेकिंग के पाँचवें म्युनिसिपल अस्पताल के जच्चाखाने (मैटरनिटी वार्ड) में पड़ी हुई थी. मेरे बच्चा होने वाला था. अस्पताल का वह वार्ड मुझे बहुत ही प्यारा लगता था, ठंडी और शान्त जगह, सफ़ेद बिस्तरे, सफ़ेद दीवारें और सफ़ेद वरदियां पहने हुए नरसें. थोड़ी थोड़ी देर के बाद कोइ नर्स दवाओं का तास हाथ में लिये टप टप करती हुई किसी एक जच्चाघर की तरफ़ जाती हुई मालूम होती थी, जिस से पता लग जाता था कि किसी कमरे में एक और नई जान पैदा होने वाली है. बड़ी-बड़ी खिड़कियों के बाहर सुन्दर दरख़्तों की हरी कोमल शाखें हवा में लहरा रही थीं. कभी कभी झींगुर की आवाज़ सुनाई दे जाती थी.

2 जोलाई को मेरे बच्चा पैदा हुआ. यह मेरा चौथा बच्चा था. जब मैंने उसका छोटा सा गुलाबी चेहरा, काले बाल और गुदगुदे छोटे छोटे हाथ देखे तो मैंने अपने गर्भवती रहने के दिनों की सारी तकलीफ़ें और बच्चा पैदा होने के समय के सब दर्द भूल गई. मैंने अपनी आँख फिरा कर वार्ड की दूसरी औरतों की तरफ़ देखा. कई के अभी अभी उनका पहला बच्चा पैदा हुआ था. और कई के पहले भी कई कई बच्चे हो चुके थे. वह भी मेरी तरफ़ देख के मुसकराने लगीं. जाहिर है वे सब उतनी ही ख़ुश थीं जितनी मैं. और ख़ुश क्यों न होतीं ? बच्चे ही माओं की उम्मीदें होते हैं. बच्चे मानव समाज के फूल होते हैं.

अपने बिस्तरे में पड़ी हुई मैं बहुत कुछ सोचती रही. सब से अधिक मुझे यह विचार आता था कि पहले के मुक़ाबले में माओं के साथ चीन में अब कितना अधिक अच्छा सलूक होता है. पुराने चीन में औरत होना कोई मज़ाक़

دنیا بھر کی ماؤں کے نام

شریمتی چین کوآنگ-یو

[جولائی سن 1955 میں سوئیزرلینڈ کے شہر لاسین میں 'دنیا بھر کی ماؤں کی پہلی کانگریس' ہوئی تھی . اُس میں دور دور کے چھیاسٹھ دیشوں سے بارہ سو مائیں آکر جمع ہوئی تھیں . چین اور ھندستان کی کچھ ماؤں نے بھی اُس میں حصہ لیا تھا . یہ لیکھ ایک ایسی چینی ماں کا لکھا ہوا ھے جو کسی کارن اُس کانگریس میں نہیں پہونچ سکی—ایڈیٹر .]

❀ ❀ ❀

جس سمے سب دیشوں کی ماؤں کے نمائندے لاسین میں جمع رھے تھے میں پیکنگ کے پانچویں مونسپل اسپتال کے زچہ خانے (میٹرنٹی وارڈ) میں پڑی ہوئی تھی . میرے بچہ ہونے والا تھا . اسپتال کا وہ وارڈ مجھے بہت ھی پیارا لگتا تھا' ٹھنڈی اور شانت جگہ' سفید بستر' سفید دیواریں اور سفید وردیاں پہنے ہوئے نرسیں. تھوڑی تھوڑی دیر کے بعد کوئی نرس دواؤں کا تاس ہاتھ میں لئے ٹپ ٹپ کرتی ہوئی کسی ایک زچہ گھر کی طرف جاتی ہوئی معلوم ہوتی تھی' جس سے پتہ لگ جاتا تھا کہ کسی کمرے میں ایک اور نئی جان پیدا ہونے والی ھے . بڑی بڑی کھڑکیوں کے باہر سندر درختوں کی ھری کومل شاخیں ھوا میں لہرا رھی تھیں . کبھی کبھی جھینگر کی آواز سنائی دے جاتی تھی .

2 جولائی کو میرے بچہ پیدا ہوا . یہ میرا چوتھا بچہ تھا . جب میں نے اُس کا چھوٹا سا گلابی چہرہ' کالے بال اور گدگدے چھوٹے چھوٹے ہاتھ دیکھے تو میں اپنے گربھوتی رہنے کے دنوں کی ساری تکلیفیں اور بچہ پیدا ہونے کے سمے کے سب درد بھول گئی. میں نے اپنی آنکھ پھرا کر وارڈ کی دوسری عورتوں کی طرف دیکھا . کئی کے ابھی ابھی اُن کا پہلا بچہ پیدا ہوا تھا . اور کئی کے پہلے بھی کئی کئی بچے ہو چکے تھے . وہ بھی میری طرف دیکھ کے مسکرانے لگیں . ظاہر ھے وے سب اُتنی ھی خوش تھیں جتنی میں . اور خوش کیوں نہ ہوتیں ؟ بچے ھی ماؤں کی اُمیدیں ہوتے ہیں . بچے مانو سماج کے پھول ہوتے ہیں .

اپنے بستر میں پڑی ہوئی میں بہت کچھ سوچتی رہی . سب سے ادھک مجھے یہ وچار آتا تھا کہ پہلے کے مقابلے میں ماؤں کے ساتھ چین میں اب کتنا ادھک اچھا سلوک ہوتا ھے . پرانے چین میں عورت ہونا کوئی مذاق

नहीं था. एक गीत में यह शब्द आते हैं :—

पुराना चीन गड्ढा था,
अथाह, भयंकर और मनहूस,
आम जनता उस गढ़े में कुचली जाती थी,
पर सब से अधिक दुर्गत औरतों की होती थी.

बात बिलकुल सच्ची है. उन दिनों मां बाप अपनी लड़कियों को एक ऐसे नाम से पुकारा करते थे जिसके मानी हैं "वह माल जिस पर घाटा ही घाटा हो." बहुत सी माएं अगर उनके लड़की होती थी तो पैदा होते ही उसे पानी में डुबो कर मार डालती थीं. लड़कियाँ जब बड़ी हो जाती थीं तो बिलकुल माल असबाब की तरह बेची और खरीदी जाती थीं. आम तौर पर बचपन में ही उनकी सगाई कर दी जाती थीं. कभी कभी ऐसा भी होता था कि जिस लड़के के साथ किसी लड़की की सगाई कर दी जाती थी वह लड़का अगर शादी से पहले मर जाता था तो उस लड़की की शादी लकड़ी की एक ऐसी पट्टी के साथ कर दी जाती थी जिस पर उस लड़के का नाम लिखा होता था. समझा जाता था कि इस तरह लड़की की "शादी" लड़के की रूह के साथ हो गई. जो लड़कियां छोटी उमर में विधवा हो जाती थीं उन्हें उस ज़माने के रिवाज के अनुसार दूसरी शादी करने की हिम्मत न हो सकती थी. सब से बुरी बात यह थी कि जो माएं चाहती थीं कि उनके बच्चे हों उन्हें डराया जाता था, क्योंकि हर नए बच्चे का मतलब यह था कि एक और नए मुँह को खाना देना पड़ेगा. जो माएं यह चाहती थीं कि उनके बच्चों को भले दिन देखने को मिलें उनकी आशाओं के रास्ते में एक हज़ार एक मुसीबतें थीं. भूक, सरदी, बीमारी और मौत तक सदा बच्चों के सामने नाचती रहती थीं. मां का जीवन उन दिनों दुख और चिन्ताओं से भरा रहता था.

इसके बाद इतिहास ने नया पन्ना पलटा. सन् 1949 में चीन के अन्दर जनता के राज ने जनम लिया. हम औरतों को, जिन्हें उससे पहले कुचला जाता था और ग़ुलाम बनाकर रखा जाता था, अब समाज के अन्दर गर्व के साथ उचित स्थान मिला. तब से लेकर औरतों को राजकाजी, माली, समाजी और गृहस्थी के जीवन में मरदों के साथ साथ बराबर के अधिकार मिलने लगे. सरकार ने औरतों और बच्चों की ख़ास तरह से रक्षा करनी शुरू की. नए चीन के विधान में औरतों के अधिकार ऐसे शब्दों में लिखे हुए हैं जिनके कोई दो अर्थ नहीं लगाए जा सकते.

औरतों को सब तरह की नौकरियां मिलने लगीं. सब धंधे और सब कारबार उनके लिये खोल दिये गए. समाचार पत्रों में आए दिन तरह तरह की "पहली औरतों" की चरचा होने लगी, जैसे—पहली ट्रैक्टर चलाने वाली औरत, पहली इंजिन चलाने वाली औरत, पहली हवाई जहाज़ चलाने

نہیں تھا ۔ ایک گیت میں یہ شبد آتے ھیں:—

پرانا چین ایک گڈھا تھا ‘
اتھاہ بھینکر اور منحوس ‘
عام جنتا اُس گڈھے میں کچلی جاتی تھی ‘
پرسب سے ادھک درگت عورتوں کی ھوتی تھی ۔

بات بالکل سچی ھے ۔ اُن دونوں ماں باپ اپنی لڑکیوں کو ایک ایسے نام سے پکارا کرتے تھے جس کے معنی ھیں "وہ مال جس پر گھاٹا ھی گھاٹا ھو ۔" بہت سی مائیں اگر اُن کے لڑکی ھوتی تھی تو پیدا ھوتے ھی اُسے پانی میں ڈبو کو مار ڈالتی تھیں ۔ لڑکیاں جب بڑی ھوجاتی تھیں تو بالکل مال اسباب کی طرح بیچی اور خریدی جاتی تھیں ۔ عام طور پر بچپن میں ھی اُن کی سگائی کردی جاتی تھی ۔ کبھی کبھی ایسا بھی ھوتا تھا کہ جس لڑکے کے ساتھ کسی لڑکی کی سگائی کر دی جاتی تھی وہ لڑکا اگر شادی سے پہلے مر جاتا تھا تو اُس لڑکی کی شادی لکڑی کی ایک ایسی پٹی کے ساتھ کر دی جاتی تھی جس پر اُس لڑکے کا نام لکھا ھوتا تھا ۔ سمجھا جاتا تھا کہ اِس طرح لڑکی کی "شادی" لڑکے کی روح کے ساتھ ھو گئی ۔ جو لڑکیاں چھوٹی عمر میں ودھوا ھو جاتی تھیں اُنھیں اُس زمانے کے رواج کے انوسار دوسری شادی کرنے کی ھمت نہ ھو سکتی تھی ۔ سب سے بری بات یہ تھی کہ جو مائیں چاھتی تھیں کہ اُن کے بچے ھوں اُنھیں ڈرایا جاتا تھا‘ کیونکہ ھر نئے بچے کا مطلب یہ تھا کہ ایک اور نئے منھ کو کھانا دینا پڑےگا ۔ جو مائیں یہ چاھتی تھیں کہ اُن کے بچوں کو بھلے دن دیکھنے کو ملیں اُن کی آشاؤں کے راستے میں ایک ھزار ایک مصیبتیں تھیں ۔ بھوک‘ سردی‘ بیماری اور موت تک سدا بچوں کے سامنے ناچتی رھتی تھیں ۔ ماں کا جیون اُن دنوں دکھ اور چنتاؤں سے بھرا رھتا تھا ۔

اِس کے بعد اِتہاس نے نیا پنّا پلٹا ۔ سن 1949 میں چین کے اندر جنتا کے راج نے جنم لیا ۔ ھم عورتوں کو‘ جنھیں اُس سے پہلے کچلا جاتا تھا اور غلام بنا کر رکھا جاتا تھا‘ اب سماج کے اندر گرو کے ساتھ اُچت استھان ملا ۔ تب سے لیکر عورتوں کو راجکاجی‘ مالی‘ سماجی اور گرھستی کے جیون میں مردوں کے ساتھ ساتھ برابر کے ادھیکار ملنے لگے ۔ سرکار نے عورتوں اور بچوں کی خاص طرح سے رکشا کرنی شروع کی ۔ نئے چین کے ودھان میں عورتوں کے ادھیکار ایسے شبدوں میں لکھے ھوئے ھیں جن کے کوئی دو ارتھ نہیں لگائے جا سکتے ۔

عورتوں کو سب طرح کی نوکریاں ملنے لگیں ۔ سب دھندے اور سب کاربار اُن کے لئے کھول دیئے گئے ۔ سماچار پتروں میں آئے دن طرح طرح کی "پہلی عورتوں" کی چرچا ھونے لگی‘ جیسے—پہلی ٹریکٹر چلانے والی عورت‘ پہلی انجن چلانے والی عورت‘ پہلی ھوائی جہاز چلانے

वाली औरत, वग़ैरा वग़ैरा. आज औरतें कारख़ानों की डाइरेक्टर हैं, औरतें सरकारी वज़ीर हैं. आज यह सब बातें बिलकुल मामूली हो गई हैं.

चीनी सरकार जनता की सरकार है. इस जनता की सरकार ने औरतों और बच्चों के लिये बड़ी बड़ी अजीब बातें कर डाली हैं. मैं पेकिंग के नम्बर 4 म्युनिसिपल गर्ल्स मिडिल स्कूल में पढ़ाती हूं. सन् 1949 से पहले भी मैं वहां पढ़ाती थी. पर उन दिनों मेरी नौकरी हर समय ख़तरे में रहती थी. यह डर रहता था कि जहां किसी पढ़ाने वाली औरत के एक और बच्चा हुआ तुरन्त वह नौकरी से अलग कर दी गई. अब नौकरी के मामले में मैं बिलकुल निश्चिन्त हूँ. दूसरी पढ़ाने वाली स्त्रियों की तरह मुझे बच्चा पैदा होने के समय 56 दिन की छुट्टी पूरी तनख़ाह पर मिलती है. अस्पताल में मुझे एक पैसा भी ख़र्च नहीं करना पड़ता. राज की तरफ़ से मुझे मुफ़्त दवा और अच्छे से अच्छा इलाज मिलता है. अभी जो मेरे बच्चा हुआ है वह लड़की है. मेरी इस लड़की का लड़कपन उसकी मां के लड़कपन के मुक़ाबले में कहीं अधिक सुख से बीतेगा. नई सरकार की बदौलत अब लड़कों और लड़कियों सब के लिये हज़ारों नरसरी हैं, किन्डर गारटन हैं, प्राइमरी और सेकन्डरी स्कूल हैं और कालिज हैं. सारी तालीम या तो बिलकुल मुफ़्त है और या नाम को थोड़ी सी फ़ीस ली जाती है. इन सब संस्थाओं को सरकार से बड़ी बड़ी ग्रान्टें मिलती हैं. मेरी लड़की को हर तरह की तालीम ठीक ठीक मिल सकेगी. अपनी तबीयत और अपने रुजहान के अनुसार वह जिस धंधे या जिस कारबार को चाहेगी अपना सकेगी. सारांश यह कि अपने देश और अपने समाज के लिये एक उपयोगी स्त्री बनने का उसे पूरा पूरा अवसर मिलेगा.

मैं ख़ूब जानती हूँ कि दुनिया में अभी तक मुट्ठी भर आदमी इस तरह के हैं जो अपनी जेबें भरने के लिये दुनिया की जनता को एक दूसरे से लड़ाना और एक दूसरे से कटवा देना चाहते हैं. यह मुट्ठीभर लोग डर और घबराहट की हवा पैदा कर रहे हैं और एक नई बड़ी जंग खड़ी कर देने की फ़िक्र में हैं. बंकों में अपनी जमा बढ़ाने के लिये और उद्योगी कल कारख़ानों में अपने हिस्सों की क़ीमत बढ़ा देने के लिये यह लोग जान बूझकर इस तरह की साज़िशें कर रहे हैं जिनसे लाखों आदमी मजबूर होकर उनकी तोपों का चारा बन जावें और दुनिया की औरतों से उनके पति और उनके बच्चे छिन जावें.

मैं जिस समय बैठी हुई यह लिख रही हूँ मेरे सामने दो दिन का एक पुराना अख़बार पड़ा हुआ है. उसमें लिखा है कि संयुक्त राज अमरीका में 15 जून से 17 जून तक हाइड्रोजिन बम के हमले का एक प्रदर्शन किया गया. यह

والی عورت، وغیرہ وغیرہ۔ آج عورتیں کارخانوں کی ڈائریکٹر ہیں، عورتیں سرکاری وزیر ہیں۔ آج یہ سب باتیں بالکل معمولی ہو گئی ہیں۔

چینی سرکار جنتا کی سرکار ہے۔ اِس جنتا کی سرکار نے عورتوں اور بچوں کے لئے بڑی بڑی عجیب باتیں کر ڈالی ہیں۔ میں پیکنگ کے نمبر 4 میونسپل گرلس مڈل اسکول میں پڑھاتی ہوں۔ سن 1949 سے پہلے بھی میں وہاں پڑھاتی تھی۔ پر اُن دنوں میری نوکری ہر سمے خطرے میں رہتی تھی۔ یہ ڈر رہتا تھا کہ جہاں کسی پڑھانے والی عورت کے ایک اور بچہ پیدا ہوا ترنت وہ نوکری سے الگ کر دی گئی۔ اب نوکری کے معاملے میں میں بالکل نشچنت ہوں۔ دوسری پڑھانے والی اِستریوں کی طرح مجھے بچہ پیدا ہونے کے سمئے 56 دن کی چھٹی پوری تنخواہ پر ملتی ہے۔ اسپتال میں مجھے ایک پیسہ بھی خرچ نہیں کرنا پڑتا۔ راج کی طرف سے مجھے مفت دوا اور اچھے سے اچھا علاج ملتا ہے۔ ابھی جو میرے بچہ ہوا ہے وہ لڑکی ہے۔ میری اِس لڑکی کا لڑکپن اُس کی ماں کے لڑکپن کے مقابلہ میں کہیں ادھک سکھ سے بیتیگا۔ نئی سرکار کی بدولت اب لڑکوں اور لڑکیوں سب کے لئے ہزاروں نرسری ہیں، کنڈرگارٹن ہیں، پرائمری اور سیکنڈری اسکول ہیں اور کالج ہیں۔ ساری تعلیم یا تو بالکل مفت ہے اور یا نام کو تھوڑی سی فیس لی جاتی ہے۔ اِن سب سنستھاؤں کو سرکار سے بڑی بڑی گرانٹیں ملتی ہیں۔ میری لڑکی کو ہر طرح کی تعلیم ٹھیک ٹھیک مل سکے گی۔ اپنی طبیعت اور اپنے رجحان کے انوسار وہ جس دھندے یا جس کاروبار کو چاہیگی اپنا سکیگی۔ سارانش یہ کہ اپنے دیش اور اپنے سماج کے لئے ایک اُپیوگی استری بننے کا اُسے پورا پورا اوسر ملیگا۔

میں خوب جانتی ہوں کہ دنیا میں ابھی تک مٹھی بھر آدمی اِس طرح کے ہیں جو اپنی جیبیں بھرنے کے لئے دنیا کی جنتا کو ایک دوسرے سے لڑانا اور ایک دوسرے سے کٹوا دینا چاہتے ہیں۔ یہ مٹھی بھر لوگ ڈر اور گھبراہٹ کی ہوا پیدا کر رہے ہیں اور ایک نئی بڑی جنگ کھڑی کر دینے کی فکر میں ہیں۔ بینکوں میں اپنی جمع بڑھانے کے لئے اور ادیوگی کل کارخانوں میں اپنے حصوں کی قیمت بڑھا دینے کے لئے یہ لوگ جان بوجھکر اِس طرح کی سازشیں کر رہے ہیں جن سے لاکھوں آدمی مجبور ہوکر اُن کی توپوں کا چارا بن جاویں اور دنیا کی عورتوں سے اُن کے پتی اور اُن کے بچے چھن جاویں۔

میں جس سمے بیٹھی ہوئی یہ لکھ رہی ہوں میرے سامنے دو دن کا ایک پرانا اخبار پڑا ہوا ہے۔ اُس میں لکھا ہے کہ سنیکت راج امریکہ میں 15 جون سے 17 جون تک ہائڈروجن بم کے حملے کا ایک پردرشن کیا گیا۔ یہ

एक बहुत बड़ा प्रदर्शन था जिसके घेरे में वाशिंगटन और न्युयार्क को मिलाकर 50 से ऊपर शहर आगए थे. यूनाइटेड प्रेस नाम की खबर देने वाली एजेन्सी ने इसकी बाबत लिखा है कि इस तरह का इतना बड़ा प्रदर्शन कभी नहीं हुआ था और "यह एक भयंकर पूरी पूरी नक़ल थी जो बिलकुल असल के मुताबिक़ थी."

यह सब क्यों हो रहा है ? क्या कोई अमरीका के ऊपर हाइड्रोजिन बम फेंकने जा रहा है ? नहीं, हरगिज़ नहीं ! अमरीका के कल कारखानों के बड़े बड़े अरबपति और खरबपति सरमायादार और वहां के फ़ौजी जनरल ही एटम बम और हाइड्रोजिन बम पर इतने अधिक लट्टू हैं. वे ही इस तरह की "नक़लें" कराते हैं और उनसे आजकल की ठंडी जंग को गरमा गरम जंग में बदल देना चाहते हैं. जो देश अमन और जनता के हित की तरफ़ है वह शुरू से यह कह रहे हैं कि एटमी हथियारों पर बंदिश लगा दी जावे और आम हथियार भी कम किये जावें. सब माएं अमन चाहती हैं. हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे अपने बिस्तरों में शान्ति से सोवें. हमने कभी दूसरों को धमकियां नहीं दीं, और न हम दूसरों की धमकियों से डरते हैं.

मेरी दूसरी बेटी पेई पेई ने जब किसी को यह कहते सुना कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जो शान्ति पसन्द नहीं करते और जंग छेड़ देना चाहते हैं तो उसने घबराकर मेरी तरफ़ देखा और पूछा:—"क्या उन लोगों के सारे बदन पर जानवरों की तरह बाल हैं ? क्या उनके बड़े बड़े दांत और तेज़ पंजे हैं ?"

हम हंस पड़े. पर सच्ची बात यह है कि यह बात इतनी हंसी की नहीं है. मेरी वह बच्ची अपने छोटे से दिमाग़ से यह समझती है कि हर आदमी में कुछ शान और आन होना जरूरी है. सचमुच जो लोग आदमियों के ख़ून से डालर ढालना चाहते हैं वह आदमी नहीं हैं. वह आदमियों के रूप में दरिन्दे हैं.

मेरे सब से बड़े बेटे का नाम कांग कांग है. वह अब दो बरस से स्कूल जा रहा है और समझता है कि मैं कुछ जानता हूं. उसने कहा कि:—"अगर वह लोग दरिन्दे हैं तो उन्हें ज़ंजीरों से बाँधकर रखना होगा. हम यह नहीं देख सकते कि वह लोगों को खा जाएं." उसका कहना भी ठीक है. हमें ऐसा करना ही पड़ेगा.

हम मानव जाति की माएं हैं. माएं सदा शान्ति चाहती हैं और जंग का विरोध करती हैं. माएं दुनिया भर में बच्चों को पालने पोसने में लिगी रहती हैं. वह नहीं चाहतीं कि उनके बेटे बेटियां जंग में मिट जांय. वह यह नहीं चाहतीं कि उनके बेटे दूसरी माओं के बेटों को काटें, न वह यह चाहती हैं कि दूसरी माओं के बेटे उनके बेटों को काटें. जो जान पैदा करती हैं उन्हीं का काम जान की रक्षा करना भी है.

ایک بہت بڑا پردرشن تھا جس کے گھیرے میں واشنگٹن اور نیویارک کو ملاکر 50 سے اُوپر شہر آگئے تھے ۔ یونائیٹڈ پریس نام کی خبر دینے والی اجینسی نے اس کی بابت لکھا ہے کہ اِس طرح کا اِتنا بڑا پردرشن کبھی نہیں ہوا تھا اور "یہ ایک بھینکر پوری پوری نقل تھی جو بالکل اصل کے مطابق تھی ۔"

یہ سب کیوں ہو رہا ہے ؟ کیا کوئی امریکہ کے اُوپر ہائڈ - روجن بم پھینکنے جا رہا ہے ؟ نہیں' ہرگز نہیں ! امریکہ کے کل کارخانوں کے بڑے بڑے ارب پتی اور کھرب پتی سرمایہ‌دار اور وہاں کے فوجی جنرل ہی ایٹم بم اور ہائڈ روجن بم پر اِتنے ادھک لٹو ہیں ۔ وے ہی اِس طرح کی "نقلیں" کراتے ہیں اور اُن سے آجکل کی ٹھنڈی جنگ کو گرما گرم جنگ میں بدل دینا چاہتے ہیں ۔ جو دیش امن اور جنتا کے ہت کی طرف ہیں وہ شروع سے یہ کہہ رہے ہیں کہ ایٹمی ہتھیاروں پر بندش لگادی جاوے اور عام ہتھیار بھی کم کئے جاویں۔ سب مائیں امن چاہتی ہیں۔ ہم چاہتے ہیں کہ ہمارے بچے اپنے بستروں میں شانتی سے سوئیں ۔ ہم نے کبھی دوسروں کو دھمکیاں نہیں دیں' اور نہ ہم دوسروں کی دھمکیوں سے ڈرتے ہیں ۔

میری دوسری بیٹی پیئی پیئی نے جب کسی کو یہ کہتے سنا کہ کچھ لوگ ایسے بھی ہیں جو شانتی پسند نہیں کرتے اور جنگ چھیڑ دینا چاہتے ہیں تو اُس نے گھبرا کر میری طرف دیکھا اور پوچھا :—"کیا اُن لوگوں کے سارے بدن پر جانوروں کی طرح بال ہیں ؟ کیا اُن کے بڑے بڑے دانت اور تیز پنجے ہیں ؟"

ہم ہنس پڑے۔ پر سچی بات یہ ہے کہ یہ بات اِتنی ہنسی کی نہیں ہے۔ میری وہ بچی اپنے چھوٹے سے دماغ سے یہ سمجھتی ہے کہ ہر آدمی میں کچھ شان اور آن ہونا ضروری ہے۔ سچ مچ جو لوگ آدمیوں کے خون سے ڈالر ڈھالنا چاہتے ہیں وہ آدمی نہیں ہیں ۔ وہ آدمیوں کے روپ میں درندے ہیں ۔

میرے سب سے بڑے بیٹے کا نام کانگ کانگ ہے ۔ وہ اب دو برس سے اسکول جا رہا ہے اور سمجھتا ہے کہ میں کچھ جانتا ہوں ۔ اُس نے کہا کہ :—"اگر وہ لوگ درندے ہیں تو اُنہیں زنجیروں سے باندھکر رکھنا ہوگا ۔ ہم یہ نہیں دیکھ سکتے کہ وہ لوگوں کو کھا جائیں ۔" اُس کا کہنا بھی ٹھیک ہے ۔ ہمیں ایسا کرنا ہی پڑیگا ۔

ہم مانو جاتی کی مائیں ہیں ۔ مائیں سدا شانتی چاہتی ہیں اور جنگ کا ورودھ کرتی ہیں ۔ مائیں دنیا بھر میں بچوں کو پالنے پوسنے میں لگی رہتی ہیں ۔ وہ نہیں چاہتیں کہ اُن کے بیٹے بیٹیاں جنگ میں مٹ جائیں ۔ وہ نہیں چاہتیں کہ ان کے بیٹے دوسری ماؤں کے بیٹوں کو کاٹیں' نہ وہ یہ چاہتی ہیں کہ دوسری ماؤں کے بیٹے اُن کے بیٹوں کو کاٹیں ۔ جو جان پیدا کرتی ہیں اُنہیں کا کام جان کی رکشا کرنا بھی ہے ۔

दुनिया भर की माएं यह कभी नहीं भूल सकतीं कि दूसरे महायुद्ध में चार करोड़ से ऊपर आदमी मरे थे जिनमें बहुत से उनके अपने पति और पुत्र थे. हम माइदानेक, बेलसेन और आसवीशिन के उन जेल कैम्पों को कभी नहीं भूलेंगे जिनमें लाखों युद्ध के क़ैदी रखे जाते थे. लिडाइस शहर के क़त्लेआम को हम कभी नहीं भूलेंगे, न हम हीरोशिमा और नागासाकी पर ऐटम बम बरसाए जाने को कभी भूलेंगे, न हम हाल में जंग के कारण कोरिया और वीतनाम की बरबादी को भूल सकते हैं. चीन की माओं को जंग का काफ़ी भयंकर तजरबा है.

यह सब चीज़ें हमारे दिमाग़ों में अभी ताज़ा हैं. ऐसी हालत में दूसरे महायुद्ध के ख़तम होने के दस बरस के अन्दर हमें ऐसा लगता है कि एक नए महायुद्ध का ख़तरा हमारे और हमारे बच्चों के सामने है.

यही कारण था कि जब मैंने अस्पताल में पड़े पड़े वायरलेस से यह ख़बर सुनी कि दुनिया भर की माओं की पहली कांगरेस होने जा रही है तो जोश और ख़ुशी से मेरे रोंगटे खड़े हो गए. इसके बाद जब मैं घर वापिस गई तो मैंने अख़बारों में वह एलान पढ़ा जो उस कांगरेस ने शाया किया था. उस एलान में यह माँग की गई थी कि सब ऐटमी हथियारों का इस्तेमाल बन्द कर दिया जावे और इस तरह के सब हथियारों को नष्ट कर दिया जावे, ऐटमी शक्ति को शान्ति के रचनात्मक कामों में लगाया जावे, सब देशों में हथियारों और फ़ौजों को कम किया जावे, और जो रुपया इस तरह से बचे उसे समाज सेवा के कामों में और बच्चों की भलाई के कामों में लगाया जावे. दुनिया भर की माओं ने संयुक्त राष्ट्र संघ से और चार बड़ी सरकारों की कानफ़रेन्स से यही अपील की है.

मेरा हाल का बच्चा यानी मेरी चौथी लड़की अभी अभी जाग गई है. मुझे उसे दूध पिलाना है. मैं और मेरे पति उसके बिस्तरे की तरफ़ जा रहे हैं. वह अपनी छोटी छोटी प्यारी आँखें खोलकर हमें देख रही है. पास की मेज़ पर से सफ़ेद चमेली के फूलों की भीनी भीनी महक आ रही है. सुनहरी मछलियां ख़ुशी ख़ुशी पास के तालाब में तैर रही हैं. हमारा दो बरस का बच्चा येन येन सहन में इधर उधर खेल रहा है और ख़ुशी से चिल्ला रहा है. हर चीज़ जीवन और आनन्द से भरी हुई मालूम होती है.

मैं चाहती हूँ कि दुनिया भर के बच्चे फूलों की सुगंध का आनन्द लें और बारूद की दुर्गंध से बचे रहें. मैं चाहती हूँ कि हमारे सब के बच्चे जीवन के सुख को अनुभव करें, जंग की लानत को नहीं. मैं एक मामूली चीनी औरत हूँ. मैं चार बच्चों की मां हूँ. मैं दुनिया भर की माओं को सलाम करना चाहती हूँ और एलान करती हूँ कि लासेन की

دنیا بھر کی مائیں یہ کبھی نہیں بھول سکتیں کہ دوسرے مہایدھ میں چار کروڑ سے اوپر آدمی مرے تھے جن میں بہت سے اُن کے اپنے پتی اور پتر تھے ۔ ہم مائیدانیک' بیلسین اور آسویشن کے اُن جیل کیمپوں کو کبھی نہیں بھولیں گے جن میں لاکھوں یدھ کے قیدی رکھے جاتے تھے ۔ لیڈائس شہر کے قتل عام کو ہم کبھی نہیں بھولینگے' نہ ہم ھیروشما اور ناگا سا کی پر ایٹم بم برسائے جانے کو کبھی بھولینگے' نہ ہم حال میں جنگ کے کارن کوریا اور ویتنام کی بربادی کو بھول سکتے ھیں ۔ چین کی ماؤں کو جنگ کا کافی بھینکر تجربہ ھے ۔

یہ سب چیزیں ھمارے دماغوں میں ابھی تازہ ھیں ۔ ایسی حالت میں دوسرے مہایدھ کے ختم ھونے کے دس برس کے اندر ھمیں ایسا لگتا ھے کہ ایک نئے مہایدھ کا خطرہ ھمارے اور ھمارے بچوں کے سامنے ھے ۔

یہی کارن تھا کہ جب میں نے اسپتال میں پڑے پڑے وائرلیس سے یہ خبر سنی کہ دنیا بھر کی ماؤں کی پہلی کانگریس ھونے جا رھی ھے تو جوش اور خوشی سے میرے رونگٹے کھڑے ھوگئے ۔ اس کے بعد جب میں گھر واپس گئی تو میں نے اخباروں میں وہ اعلان پڑھا جو اُس کانگریس نے شائع کیا تھا. اُس اعلان میں یہ مانگ کی گئی تھی کہ سب ایٹمی ھتیاروں کا استعمال بند کردیا جاوے اور اِس طرح کے سب ھتیاروں کو نشٹ کردیا جاوے' ایٹمی شکتی کو شانتی کے رچناتمک کاموں میں لگایا جاوے' سب دیشوں میں ھتیاروں اور فوجوں کو کم کیا جاوے' اور جو روپیہ اِس طرح سے بچے اُسے سماج سیوا کے کاموں میں اور بچوں کی بھلائی کے کاموں میں لگایا جاوے ۔ دنیا بھر کی ماؤں نے سنجکت راشٹر سنگھ سے اور چار بڑی سرکاروں کی کانفرنس سے یہی اپیل کی ھے ۔

میرا حال کا بچہ یعنی میری چوتھی لڑکی ابھی ابھی جاگ گئی ھے ۔ مجھے اُسے دودھ پلانا ھے ۔ میں اور میرے پتی اُس کے بسترے کی طرف جارھے ھیں ۔ وہ اپنی چھوٹی چھوٹی پیاری آنکھیں کھولکر ھمیں دیکھ رھی ھے ۔ پاس کی میز پر سے سفید چمیلی کے پھولوں کی بھینی بھینی مہک آرھی ھے ۔ سنہری مچھلیاں خوشی خوشی پاس کے تالاب میں تیر رھی ھیں ۔ ھمارا دو برس کا بچہ ین ین صحن میں اِدھر اُدھر کھیل رھا ھے اور خوشی سے چلا رھا ھے. ھر چیز جیون اور آنند سے بھری ھوئی معلوم ھوتی ھے ۔

میں چاھتی ھوں کہ دنیا بھر کے بچے پھولوں کی سگندھ کا آنند لیں اور بارود کی درگندھ سے بچے رھیں ۔ میں چاھتی ھوں کہ ھمارے سب کے بچے جیون کے سکھ کو انوبھو کریں' جنگ کی لعنت کو نہیں ۔ میں ایک معمولی چینی عورت ھوں ۔ میں چار بچوں کی ماں ھوں ۔ میں دنیا بھر کی ماؤں کو سلام کرنا چاھتی ھوں اور اعلان کرتی ھوں کہ لاسین کی

माओं की कॉंगरेस ने जो एलान निकाला है उससे मैं पूरी तरह सहमत हूँ. मेरी अपनी छोटी सी कोशिशों से बहुत कुछ नहीं हो सकता, पर यदि सब देशों की माएं उठ खड़ी हों और इस काम में लग जावें तो मुझे विश्वास है कि हम जंग के ख़ूनी हाथ को रोक सकते हैं, और इस बात का पक्का प्रबन्ध कर सकते हैं कि हमारे बच्चों का भविष्य शान्ति और सुख से भरा हुआ हो.

यदि हम सब मिलकर खड़े हो जावें तो कोई हमें जीत नहीं सकता.

("पीपुल्स चाइना" से)

ماؤں کی کانگریس نے جو اعلان نکالا هے اُس سے میں پوری طرح سہمت هوں ۔ میری اپنی چھوٹی سی کوششوں سے بہت کچھ نہیں هوسکتا' پر یدی سب دیشوں کی مائیں اُٹھ کھڑی هوں اور اِس کام میں لگ جاویں تو مجھے وشواس هے که هم جنگ کے خونی هاتھ کو روک سکتے هیں' اور اِس بات کا پکا پربندھ کرسکتے هیں که همارے بچوں کا بھوشیه شانتی اور سکھ سے بھرا هوا هو ۔

یدی هم سب ملکر کھڑے هوجاویں تو کوئی همیں جیت نہیں سکتا ۔

("پیپلس چائنا" سے)

क़ौमों क़ौमों के बीच दोस्ती

श्री निकिता ख़ुरश्चेव

[24 नवम्बर सन् 1955 की शाम को बम्बई में हिन्द-सोवियत कलचरल सोसाइटी की तरफ़ से श्री बुलगानिन और श्री ख़ुरश्चेव की स्वागत सभा में श्री निकिता ख़ुरश्चेव का भाषण.]

❃ ❃ ❃

दोस्तो,

हम सब दोस्त हैं, क्योंकि यह जलसा एक ऐसी सोसाइटी की तरफ़ से है जिसका मक़सद ही भारत और सोवियत यूनियन में दोस्ती को बढ़ाना और मज़बूत करना है,

अपने दोस्त निकोलाई बुलगानिन की तरह मैं भी इस सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट डाक्टर बालीगा को धन्यवाद देता हूँ. मैं बम्बई के गवर्नर श्री महताब को भी धन्यवाद देता हूँ क्योंकि वह इस सोसाइटी के काम में मदद देते हैं और उन्होंने कृपा करके हमें आपके इस अद्भुत शहर में आने की दावत दी है.

मैं आपकी रियासत के चीफ़ मिनिस्टर श्री देसाई का भी शुक्रिया अदा करता हूँ. मैं आप सब को जो हम से मिलने के लिये यहां आए हैं धन्यवाद देता हूँ.

قوموں قوموں کے بیچ دوستی

شری نکیتا خرشچیو

[24 نومبر سن 1955 کی شام کو بمبئی میں هند سوویت کلچرل سوسائٹی کی طرف سے شری بلگانن اور شری خوشچیو کی سواگت سبھا میں نکیتا خوشچیو کا بھاشن ۔]

❃ ❃ ❃

دوستو'

هم سب دوست هیں' کیونکه یه جلسه ایک ایسی سوسائٹی کی طرف سے هے جس کا مقصد هی بھارت اور سوویت یونین میں دوستی کو بڑھانا اور مضبوط کرنا هے ۔

اپنے دوست نکولائی بلگانن کی طرح میں بھی اِس سوسائٹی کے پریسیڈینٹ ڈاکٹر بالیگا کو دھنیهواد دیتا هوں ۔ میں بمبئی کے گورنر شری مہتاب کو بھی دھنیه واد دیتا هوں کیونکه وہ اس سوسائٹی کے کام میں مدد دیتے هیں اور اُنہوں نے کرپا کر کے همیں آپ کے اِس ادبھت شہر میں آنے کی دعوت دی هے ۔

میں آپ کی ریاست کے چیف منسٹر شری دیسائی کا بھی شکریه ادا کرتا هوں ۔ میں آپ سب کو جو هم سے ملنے کے لیئے یہاں آئے هیں دھنیهواد دیتا هوں ۔

कभी कभी जब आदमी बोलने लगता है तो भावुकता की वजह से वह अपने भाषण को ठीक ठीक रूप नहीं दे पाता.

ऐसा लगता है कि इस समय मेरे लिये सबसे मुनासिब मज़मून क़ौमों क़ौमों के बीच की दोस्ती है.

दोस्तियां कई तरह की होती हैं. एक दोस्ती वह होती है कि जिस में लोग एक दूसरे से घुल मिलकर सचमुच दोस्तों की तरह रहते हैं. लेकिन एक तरह की "दोस्ती" वह भी होती है जिसमें लोग एक दूसरे के पास पास पड़ोसियों की तरह रहते हैं लेकिन एक दूसरे का अपने यहां आने की दावत नहीं देते. यही हालत देशों और राज्यों की है. कुछ लोग अगरचे एक ही धरती पर रहते हैं फिर भी उनमें सच्ची दोस्ती नहीं होती. ऐसी सूरत में आप पसन्द करें या न करें आप को किसी न किसी तरह एक दूसरे से निबाहना ही पड़ता है.

हमारा महान नेता लैनिन इस तरह के निबाहने को "को-एगज़िस्टेन्स" यानी "साथ-साथ रहना" कहा करता था.

यह साथ साथ रहने की बात बहुत ही मज़े की है. दुनिया में कुछ लोग ऐसे हैं जो पूछते हैं कि क्या इस तरह साथ साथ रहना मुमकिन है ? मुझे लगता है कि यह सवाल ही नहीं उठता, क्यों इस तरह के देश अमल में साथ साथ रह ही रहे हैं. फिर भी लोग यह सवाल उठाते रहते हैं. मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि बच्चा पैदा हो या न हो यह बात मां बाप के हाथों में ज़रूर है लेकिन यह बात उनके हाथों में नहीं है कि बच्चा किस दिन और किस घड़ी पैदा हो या बच्चा वैसा ही हो जैसा वह चाहते हैं.

इतिहास की प्रगति को रोक सकना कैसे मुमकिन हो सकता है, और नई नई समाजी व्यवस्थाओं की पैदायश को भी कौन रोक सकता है ? जिस तरह सूरज रोज़ सुबह निकलता है उसी तरह पुराने समाजी ढाँचों की जगह नए और अधिक प्रगतिशील ढाँचों का पैदा होते रहना भी ज़रूरी है.

ठीक इसी नियम के अनुसार हमारे सोवियत राज का जन्म हुआ. दुनिया में अपने हाथ पाँव से काम करने वालों का यह पहला राज था. यह मज़दूरों और किसानों का राज है. जब यह नया राज पैदा हुआ तो और सब देशों और राजों ने घंटे बजाकर उसका स्वागत नहीं किया.

रूस के अन्दर पुरानी ज़ारशाही का ढाँचा बिलकुल खोखला हो चुका था और सड़ चुका था. इसलिये हमारा अक्तूबर (1917) का इनक़लाब लगभग बिना ख़ून बहे ही सफल हो गया. लेकिन बाद में हमसे यह कहा गया, शब्दों में नहीं और सरकारी तौर पर नहीं, लेकिन कामों के ज़रिये कहा गया कि इस सोवियत राज के पैदा होने की

کبھی کبھی جب آدمی بولنے لگتا ہے تو بھاوکتا کی وجہہ سے اپنے بھاشن کو ٹھیک ٹھیک روپ نہیں دے پاتا ۔

ایسا لگتا ہے کہ اِس سمئے میرے لئے سب سے مناسب مضمون قوموں قوموں کے بیچ کی دوستی ہے ۔

دوستیاں کئی طرح کی ہوتی ہیں ۔ ایک دوستی وہ ہوتی ہے کہ جس میں لوگ ایک دوسرے سے گھل ملکر سچ مچ دوستوں کی طرح رہتے ہیں ۔ لیکن ایک طرح کی "دوستی" وہ بھی ہوتی ہے جس میں لوگ ایک دوسرے کے پاس پاس پڑوسیوں کی طرح رہتے ہیں لیکن ایک دوسرے کو اپنے یہاں آنے کی دعوت نہیں دیتے ۔ یہی حالت دیشوں اور راجیوں کی ہے ۔ کچھ لوگ اگرچہ ایک ہی دھرتی پر رہتے ہیں پھر بھی اُن میں سچی دوستی نہیں ہوتی ۔ ایسی صورت میں آپ پسند کریں یا نہ کریں اپ کو کسی نہ کسی طرح ایک دوسرے سے نباھنا ھی پڑتا ہے ۔

ھمارا مہان نیتا لینن اِس طرح کے نباھنے کو "کو-ایگزسٹینس" یعنی "ساتھ ساتھ رھنا" کہا کرتا تھا ۔

یہ ساتھ ساتھ رھنے کی بات بہت ھی مزے کی ہے ۔ دنیا میں کچھ لوگ ایسے ہیں جو پوچھتے ہیں کہ کیا اِس طرح ساتھ ساتھ رھنا ممکن ہے ؟ مجھے لگتا ہے کہ یہ سوال ھی نہیں اُٹھتا' کیونکہ اِس طرح کے دیش عمل میں ساتھ ساتھ رہ ھی رہے ہیں ۔ پھر بھی لوگ یہ سوال اُٹھاتے رہتے ہیں ۔ میں آپ سے کہنا چاھتا ہوں کہ بچہ پیدا ھو یا نہ ھو یہ بات ماں باپ کے ھاتھوں میں ضرور ہے لیکن یہ بات اُن کے ھاتھوں میں نہیں ہے کہ بچہ کس دن اور کس گھڑی پیدا ھو یا بچہ ویسا ھی ھو جیسا وہ چاھتے ہیں ۔

اِتہاس کی پرگتی کو روک سکنا کیسے ممکن ھو سکتا ہے' اور نئی نئی سماجی ویوستھاؤں کی پیدایش کو بھی کون روک سکتا ہے ؟ جس طرح سورج روز صبح نکلتا ہے اُسی طرح پرانے سماجی ڈھانچوں کی جگہہ نئے اور ادھک پرگتی شیل ڈھانچوں کا پیدا ھوتے رھنا بھی ضروری ہے ۔

ٹھیک اِسی نیم کے انوسار ھمارے سوویت راج کا جنم ھوا ۔ دنیا میں اپنے ھاتھ پاؤں سے کام کرنے والوں کا یہ پہلا راج تھا ۔ یہ مزدوروں اور کسانوں کا راج ہے ۔ جب یہ نیا راج پیدا ھوا تو اور سب دیشوں اور راجوں نے گھنٹے بجاکر اُس کا سواگت نہیں کیا ۔

روس کے اندر پرانی زار شاھی کا ڈھانچہ بالکل کھوکھلا ھو چکا تھا اور سڑ چکا تھا ۔ اِس لئے ھمارا اکتوبر (1917) کا اِنقلاب لگ بھگ بنا خون بہے ھی سپھل ھو گیا ۔ لیکن بعد میں ھم سے یہ کہا گیا شبدوں میں نہیں اور سرکاری طور پر نہیں لیکن کاموں کے ذریعہ کہا گیاکہ اِس سوویت راج کے پیدا ھونے کی

क्या जरूरत थी ? मजदूरों और किसानों को हुकूमत अपने हाथ में लेने का क्या हक़ था ?

लोगों ने यह सिर्फ़ कहा ही नहीं उन्होंने नए पैदा हुए सोवियत राज के ख़िलाफ़ अपनी फ़ौजें मैदान में उतार दीं. फ्रांसीसियों ने जबरदस्ती अपनी फ़ौजें हमारे ओडेसा के बन्दरगाह पर उतारीं. अंगरेजी फ़ौजें आर्क एन्जलस्क पर आ धमकीं. अमरीकी फ़ौजें व्लैडीवास्टक में पहुँच गईं. इन सब के पीछे पीछे जापानी फ़ौजें भी हमारे ख़िलाफ़ पहुंच गईं. इस सब से नतीजा क्या निकला यह सारी दुनिया को अच्छी तरह मालूम है. सोवियत रूस के लोगों ने इन सब हमलावर फ़ौजों को इसी तरह खदेड़ कर अपने मुल्क से बाहर निकाल दिया जिस तरह एक अच्छी सुघड़ औरत अपने घर से कूड़े कचरे को झाड़ बुहार कर बाहर फेंक देती है. लेकिन कुछ देशों को इससे भी सन्तोष नहीं हुआ. वह अपने तजरबे को दुहराना चाहते थे और इसके लिये उन्होंने दूसरा महायुद्ध खड़ा कर दिया. इन लोगों ने सोवियत रूस के ख़िलाफ़ हिटलरी जरमनी की अनगिनत हथियारबन्द फ़ौजों को भिड़ा दिया.

सारी दुनिया अच्छी तरह जानती है कि इसका भी नतीजा क्या हुआ. सोवियत यूनियन ने फिर एक बार अपने दुश्मनों पर विजय प्राप्त की. उस जंग से कवल इतना ही नहीं हुआ कि सोवियत यूनियन कमजोर नहीं हुई बल्कि उसकी शक्ति और बढ़ गई. उस जंग से जो घाव हमारे लगे थे आज सोवियत यूनियन के लोगों की कोशिशों से वह सब घाव भर चुके हैं और अच्छे हो गए हैं. युद्ध के कारण हमारा जो कारबार बरबाद हो गया था उसे सोवियत के लोगों ने फिर से ठीक कर लिया है. यहां तक कि हमने कामयाबी के साथ जंग के बाद की अपनी पहली पंचवर्षी योजना पूरी कर ली है और हम दूसरी पंचवर्षी योजना पूरी कर रहे हैं. हमारा देश तेज़ी से बढ़ रहा है और शान के साथ फलता फूलता जा रहा है.

मुझे अक्तूबर के इनक़लाब के शुरू के दिन याद हैं. मुझे अपने यहां की घरेलू जंग की भी याद है. उस समय केवल एक लैनिन देश के भविष्य को साफ़ साफ़ देख सकता था. लैनिन को ही इसका अन्दाजा था कि नया पैदा हुआ सोवियत राज थोड़े दिनों में कितना शक्तिशाली हो जायगा.

जो लोग यहां इस जलसे में मौजूद हैं उनमें बहुत बड़ी तादाद दिमाग़ी काम करने वालों की है. इस सम्बन्ध में मैं आपको अपना उस समय का एक तजरबा बताना चाहता हूँ. उस जमाने के रूस के दिमाग़ी काम करने वालों में उस इनक़लाब को किस निगाह से देखा गया. बहुत से दिमाग़ी काम करने वालों ने उसका स्वागत किया और वह ईमानदारी के साथ नए सोवियत राज की सेवा में लग गए. लेकिन कुछ

کیا ضرورت تھی ؟ مزدوروں اور کسانوں کو حکومت اپنے ہاتھ میں لینے کا کیا حق تھا ؟

لوگوں نے یہ صرف کہا ہی نہیں انہوں نے نئے پیدا ہوئے سوویت راج کے خلاف اپنی فوجیں میدان میں اتار دیں ۔ فرانسیسیوں نے زبردستی اپنی فوجیں ہمارے اوڈیسہ کے بندرگاہ پر اتاریں ۔ انگریزی فوجیں آرک ایلنجلسک پر آدھمکیں ۔ امریکی فوجیں ولیڈیواسٹک میں پہونچ گئیں ۔ ان سب کے پیچھے پیچھے جاپانی فوجیں بھی ہمارے خلاف پہونچ گئیں ۔ اِس سب سے نتیجہ کیا نکلا یہ ساری دنیا کو اچھی طرح معلوم ہے ۔ سوویت روس کے لوگوں نے اِن سب حملہ آور فوجوں کو اِسی طرح کھدیڑ کے اپنے ملک سے باہر نکال دیا جس طرح ایک اچھی سگھڑ عورت اپنے گھر سے کوڑے کچرے کو جھاڑ بوہار کر باہر پھینک دیتی ہے ۔ لیکن کچھ دیشوں کو اِس سے بھی سنتوش نہیں ہوا ۔ وہ اپنے تجربے کو دوہرانا چاہتے تھے اور اِس کے لئے انہوں نے دوسرا مہایدھ کھڑا کردیا ۔ اِن لوگوں نے سوویت روس کے خلاف ہٹلری جرمنی کی انگنت ہتھیار بند فوجوں کو بھڑا دیا ۔

ساری دنیا اچھی طرح جانتی ہے کہ اِس کا بھی نتیجہ کیا ہوا ۔ سوویت یونین نے پھر ایک بار اپنے دشمنوں پر وجئے پراپت کی ۔ اس جنگ سے کیول اِتنا ہی نہیں ہوا کہ سوویت یونین کمزور نہیں ہوئی بلکہ اِس کی شکتی اور بڑھ گئی ۔ اُس جنگ سے جو گھاؤ ہمارے لگے تھے آج سوویت یونین کے لوگوں کی کوششوں سے وہ سب گھاؤ بھر چکے ہیں اور اچھے ہو گئے ہیں ۔ یدھ کے کارن ہمارا جو کاربار برباد ہوگیا تھا اُسے سوویت کے لوگوں نے پھر سے ٹھیک کر لیا ہے ۔ یہاں تک کہ ہم نے کامیابی کے ساتھ جنگ کے بعد کی اپنی پہلی پنچ ورشی یوجنا پوری کر لی ہے اور ہم دوسری پنچ ورشی یوجنا پوری کر رہے ہیں ۔ ہمارا دیش تیزی سے بڑھ رہا ہے اور شان کے ساتھ پھلتا پھولتا جا رہا ہے ۔

مجھے اکتوبر کے انقلاب کے شروع کے دن یاد ہیں ۔ مجھے اپنے یہاں کی گھریلو جنگ کی بھی یاد ہے ۔ اُس سمئے کیول ایک لینن دیش کے بھوشیہ کو صاف صاف دیکھ سکتا تھا ۔ لینن کو ہی اِس کا اندازہ تھا کہ نیا پیدا ہوا سوویت راج تھوڑے دنوں میں کتنا شکتی شالی ہو جائیگا ۔

جو لوگ یہاں اِس جلسے میں موجود ہیں اُن میں بہت بڑی تعداد دماغی کام کرنے والوں کی ہے ۔ اِس سمبندھ میں میں آپ کو اپنا اُس سمئے کا ایک تجربہ بتانا چاہتا ہوں ۔ اُس زمانے کے روس کے دماغی کام کرنے والوں میں اُس اِنقلاب کو کس نگاہ سے دیکھا گیا ۔ بہت سے دماغی کام کرنے والوں نے اُس کا سواگت کیا اور وہ ایمانداری کے ساتھ نئے سوویت راج کی سیوا میں لگ گئے ۔ لیکن کچھ

दिमाग़ी काम करने वालों को तरह तरह की दलीलें सूझने लगीं. वह सोचने लगे कि न जाने क्या होने जा रहा है ? लैनिन ने और कम्युनिस्टों ने देश के शासन का काम मज़दूरों और किसानों के हाथों में दे दिया है. मज़दूर अनपढ़ हैं. किसान उनसे भी अधिक अनपढ़ हैं. यह लोग देश के नेता बन गए हैं ! अब रूसी कलचर का क्या होगा ? रूसी आर्ट की क़दर कौन करेगा ? वह रूसी बैले (नाच) जो सारी दुनिया में मशहूर थे वह अब सदा के लिये ख़तम हो जायंगे ! रूसी ओपेरा (ड्रामा) की वह कला जो इनक़लाब से पहले इतनी ज़बरदस्त तरक़्क़ी कर चुकी थी अब मिट जायगी ! इसी तरह दूसरी तरह के आर्ट, कला और हुनर भी अब मिट जावेंगे ! क्योंकि उनकी सच्ची क़दर करने वाला अब कोई न रहेगा !

लेकिन इतने दिनों के इतिहास ने इन सब शकों को झूठा साबित कर दिया है. नई सोवियत कलचर पुरानी रूसी कलचर के मुक़ाबले में इतनी ऊँची पहुँच चुकी है कि दोनों में कोई तुलना नहीं रही.

आप में से बहुत से इसी साल सोवियत यूनियन जा चुके हैं. आपने अपनी आंखों से देखा है कि सोवियत यूनियन के अन्दर आर्ट और कला की जितनी क़दर आज होती है उतनी इनक़लाब से पहले के रूस में नहीं होती थी. सोवियत कला ने पहले कभी भी इतनी तरक़्क़ी नहीं की थी. मज़दूरों और किसानों ने अपने अन्दर से अच्छे से अच्छे होनहार लोगों को चुनकर यूनीवर्सिटियों और इसी तरह की दूसरी संस्थाओं में भेजा. जो मज़दूर और किसान अपने काम में लगे रहे उनमें भी कलचर ने बहुत उन्नति की. हमें इसका अभिमान है. हमारे दुशमन इसे पसन्द करें या न करें सोवियत यूनियन ज़िन्दा है और केवल ज़िन्दा ही नहीं है, बढ़ रही है और उन्नति कर रही है. हमारा कारबार और हमारी माली हालत बहुत मज़बूत है, कलचर बढ़ रही है. लोगों की ख़ुशहाली भी बढ़ती चली जा रही है.

यह सब ऐसी हालत में हो रहा है जबकि इस तरह की शक्तियां मौजूद हैं जिन्हें हम से दुशमनी है, जिन्होंने अभी तक हमारे देश का गला घोंट कर उसे ख़तम कर देने का विचार छोड़ा नहीं है. हमें मजबूर होकर अपने देश की रक्षा के लिये अपनी बहुत सी शक्ति और अपना बहुत सा धन सामान ख़र्च करना पड़ रहा है. जितना धन और सामान हम हथियारों पर ख़र्च कर रहे हैं उस सब को अगर हम शान्ति के कामों में लगा सकते तो हमारे देश के लोगों की ख़ुशहाली इससे भी कहीं अधिक बढ़ जाती, जिसका अन्दाज़ा कर सकना भी कठिन है.

हमारे दुशमन इस बात को समझते हैं. यही कारण है कि कुछ विदेशी राज-नीतिज्ञ अब हथियारबन्दी की सच्ची

دماغی کام کرنے والوں کو طرح طرح کی دلیلیں سوجھنے لگیں۔ وہ سوچنے لگے کہ نہ جانے کیا ہونے جا رہا ہے؟ لینن نے اور کمیونسٹوں نے دیش کے شاسن کا کام مزدوروں اور کسانوں کے ہاتھوں میں دے دیا ہے۔ مزدور انپڑھ ہیں۔ کسان اُن سے بھی ادھک انپڑھ ہیں۔ یہ لوگ دیش کے نیتا بن گئے ہیں! اب روسی کلچر کا کیا ہوگا؟ روسی آرٹ کی قدر کون کریگا؟ وہ روسی بیلے (ناچ) جو ساری دنیا میں مشہور تھے وہ اب سدا کے لئے ختم ہو جائینگے۔ روسی اُپیرا (ڈراما) کی وہ کلا جو انقلاب سے پہلے اِتنی زبردست ترقی کر چکی تھی اب مٹ جائیگی! اِسی طرح دوسری طرح کے آرٹ، کلا اور ہنر بھی اب مٹ جاوینگے! کیونکہ اُن کی سچی قدر کرنے والا اب کوئی نہ رہیگا!

لیکن اِتنے دنوں کے اِتہاس نے اِن سب شکوں کو جھوٹا ثابت کر دیا ہے۔ نئی سوویت کلچر پرانی روسی کلچر کے مقابلے میں اِتنی اونچی پہونچ چکی ہے کہ دونوں میں کوئی تلنا نہیں رہی۔

آپ میں سے بہت سے اِسی سال سوویت یونین جا چکے ہیں۔ آپنے اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے کہ سوویت یونین کے اندر آرٹ اور کلا کی جتنی قدر آج ہوتی ہے اُتنی انقلاب سے پہلے کے روس میں نہیں ہوتی تھی۔ سوویت کلا نے پہلے کبھی بھی اِتنی ترقی نہیں کی تھی۔ مزدوروں اور کسانوں نے اپنے اندر سے اچھے سے اچھے ہونہار لوگوں کو چن کر یونیورسٹیوں اور اِسی طرح کی دوسری سنستھاؤں میں بھیجا۔ جو مزدور اور کسان اپنے کام میں لگے رہے اُن میں بھی کلچر نے بہت اُنتی کی۔ ہمیں اِس کا ابھیمان ہے۔ ہمارے دشمن اِسے پسند کریں یا نہ کریں سوویت یونین زندہ ہے اور کیول زندہ ہی نہیں ہے، بڑھ رہی ہے اور اُنتی کر رہی ہے۔ ہمارا کاربار اور ہماری مالی حالت بہت مضبوط ہے، کلچر بڑھ رہی ہے۔ لوگوں کی خوشحالی بھی بڑھتی چلی جا رہی ہے۔

یہ سب ایسی حالت میں ہو رہا ہے جب کہ اِس طرح کی شکتیاں موجود ہیں جنہیں ہم سے دشمنی ہے، جنہوں نے ابھی تک ہمارے دیش کا گلا گھونٹ کر اُسے ختم کردینے کا وچار چھوڑا نہیں ہے۔ ہمیں مجبور ہو کر اپنے دیش کی رکشا کے لئے اپنی بہت سی شکتی اور اپنا بہت سا دھن سامان خرچ کرنا پڑ رہا ہے۔ جتنا دھن اور سامان ہم ہتھیاروں پر خرچ کر رہے ہیں اُس سب کو اگر ہم شانتی کے کاموں میں لگا سکتے تو ہمارے دیش کے لوگوں کی خوشحالی اِس سے بھی کہیں ادھک بڑھ جاتی، جس کا اندازہ کر سکنا بھی کٹھن ہے۔

ہمارے دشمن اِس بات کو سمجھتے ہیں۔ یہی کارن ہے کہ کچھ ودیشی راج‌نیتگیہ اب ہتھیار بندی کی سچی

बात करने से डरते हैं. वह देशों के बीच के तनाव को मिटाना नहीं चाहते. उन्हें डर है कि रूस का जो धन और जो शक्ति इस समय फ़ौजी रक्षा के कामों में खर्च हो रही है उसे फिर हम बचा कर देश की शान्तिमय रचना के कामों में लगा सकेंगे.

बावजूद इस सबके हमें पूरा विश्वास है कि आजकल की हालतों में भी पूँजीपति व्यवस्था (कैपिटेलिस्ट सिस्टम) और समाजवादी व्यवस्था (सोशलिस्ट सिस्टम) दोनों अगर शान्ति के साथ जियें और दूसरों को जीने दें और मिलकर चलें तो आखीर में हम जीतेंगे. समाजवाद जीतेगा.

एक बार क्रेमलिन (मास्को) के एक जलसे में मैंने यही बात साफ़ साफ़ कह दी. इस पर पूँजीपति देशों के अखबार वालों ने दुनिया भर में यह ऐलान कर दिया कि ख़ुश्चेव ने सारा भेद खोल दिया और बालशेविकों ने अपनी राजकाजी योजनाओं को छोड़ा नहीं है. नहीं, मैंने कोई भेद नहीं खोला था और न मैंने कोई भूल की थी. मैंने वही बात कही थी जो हम मानते हैं. अपना राजकाजी काम हमने न कभी छोड़ा था और न हम कभी छोड़ेंगे. यह वह रास्ता है जो महान लैनिन ने हमें दिखाया है. अपना राजकाजी प्रोग्राम हमने कभी नहीं छोड़ा, और न हम छोड़ेंगे.

हमारे यहाँ की एक कहावत है—"जिस किसी के पास कोई अच्छी चीज़ है वह फिर किसी घटिया चीज़ की तरफ़ निगाह नहीं डालता."

हमारा देश सैकड़ों बरस तक एक पिछड़ा हुआ देश रहने के बाद जिस चीज़ की बदौलत उस हालत से निकल कर उन देशों के बराबर में पहुँच गया है जो उद्योग धंदों की निगाह से और आर्थिक निगाह से सबसे अधिक उन्नत और बढ़े चढ़े हैं, उस चीज़ को हम क्यों छोड़ें ? उसे हम क्यों और किस चीज़ के लिये छोड़ें ?

इसीलिये हम उन भले मानसों से, जो यह उम्मीद करते हैं कि सोवियत यूनियन अपना राजकाजी प्रोग्राम बदल देगी, यह कहते हैं कि आप अपनी उम्मीद के पूरा होने के लिये उस समय तक इन्तज़ार कीजिये जब तक कि मछलियां सीटी बजाना न शुरू कर दें ! और आप जानते हैं मछलियां सीटी बजाना कब शुरू करेंगी !

इसलिये रास्ता केवल एक है. वह यह कि दोनों व्यवस्थाएं साथ साथ रहें. पूँजीवादी व्यवस्था भी रहे और समाजवादी व्यवस्था भी रहे. इसी का नाम "पीसफ़ुल को-एगज़िस्टेन्स" है.

मैं ख़ुद पूँजीवादी व्यवस्था को पसन्द नहीं करता. मैं साथ रहने की बात इसलिये नहीं कहता क्योंकि मैं यह चाहता हूं कि पूँजीवाद चलता रहे, बल्कि इसलिये कहता हूँ क्योंकि मैं यह देख रहा हूँ कि पूँजीवादी व्यवस्था भी

بات کرنے سے ڈرتے ھیں۔ وہ دیشوں کے بیچ کے تناؤ کو مٹانا نہیں چاھتے۔ اُنھیں ڈر ھے کہ روس کا جو دھن اور جو شکتی اِس سمئے فوجی رکشا کے کاموں میں خرچ ھو رھی ھے اُسے پھر ھم بچا کر دیش کی شانتی مئے رچنا کے کاموں میں لگا سکینگے ۔

باوجود اِس سب کے ھمیں پورا وشواس ھے کہ آجکل کی حالتوں میں بھی پونجی پتی ویوستھا (کیپی ٹیلسٹ سسٹم) اور سماج وادی ویوستھا (سوشلسٹ سسٹم) دونوں اگر شانتی کے ساتھ جئیں اور دوسروں کو جینے دیں اور ملکر چلیں تو آخیر میں ھم جیتینگے ۔ سماج واد جیتے گا ۔

ایکبار کریملن (ماسکو) کے ایک جلسے میں میں نے یہی بات صاف صاف کہہ دی ۔ اِس پر پونجی پتی دیشوں کے اخبار والوں نے دنیا بھر میں یہ اعلان کر دیا کہ خرشچیو نے سارا بھید کھول دیا اور بالشیوکوں نے اپنی راجکاجی یوجناؤں کو چھوڑا نہیں ھے ۔ نہیں، میں نے کوئی بھید نہیں کھولا تھا اور نہ میں نے کوئی بھول کی تھی۔ میں نے وھی بات کہی تھی جو ھم مانتے ھیں ۔ اپنا راج کاجی کام ھم نے نہ کبھی چھوڑا تھا اور نہ ھم کبھی چھوڑینگے ۔ یہ وہ راستہ ھے جو مہان لینن نے ھمیں دکھایا ھے ۔ اپنا راجکاجی پروگرام ھم نے کبھی نہیں چھوڑا، اور نہ ھم چھوڑینگے ۔

ھمارے یہاں کی ایک کہاوت ھے—"جس کسی کے پاس کوئی اچھی چیز ھے وہ پھر کسی گھٹیا چیز کی طرف نگاہ نہیں ڈالتا ۔"

ھمارا دیش سیکڑوں برس تک ایک پچھڑا ھوا دیش رھنے کے بعد جس چیز کی بدولت اُس حالت سے نکل کر اُن دیشوں کے برابر میں پہونچ گیا ھے جو اُدیوگ دھندوں کی نگاہ سے اور آرتھک نگاہ سے سب سے ادھک اُنت اور بڑھے چڑھے ھیں، اُس چیز کو ھم کیوں چھوڑیں ؟ اُسے ھم کیوں اور کس چیز کے لئے چھوڑیں ؟

اِسی لئے ھم اُن بھلے مانسوں سے، جو یہ اُمید کرتے ھیں کہ سوویت یونین اپنا راجکاجی پروگرام بدل دیگی، یہ کہتے ھیں کہ آپ اپنی اُمید کے پورا ھونے کے لئے اُس سمے تک انتظار کیجئے جب تک کہ مچھلیاں سیٹی بجانا نہ شروع کردیں ! اور آپ جانتے ھیں مچھلیاں سیٹی بجانا کب شروع کرینگی !

اِس لئے راستہ کیول ایک ھے ۔ وہ یہ کہ دونوں ویوستھائیں ساتھ ساتھ رھیں ۔ پونجی وادی ویوستھا بھی رھے اور سماج وادی ویوستھا بھی رھے ۔ اِسی کا نام "پیسفل کو - ایگزسٹینس" ھے ۔

میں خود پونجی وادی ویوستھا کو پسند نہیں کرتا ۔ میں ساتھ رھنے کی بات اِس لئے نہیں کہتا کیونکہ میں یہ چاھتا ھوں کہ پونجی واد چلتا رھے، بلکہ اِس لئے کہتا ھوں کیونکہ میں یہ دیکھ رھا ھوں کہ پونجی وادی ویوستھا بھی

मौजूद है और मुझे यह मानना पड़ता है कि इस व्यवस्था का वजूद दुनिया में है.

लेकिन दूसरी तरफ़ के लोग यह मानना ही नहीं चाहते कि समाजवादी व्यवस्था भी है. वह उसे देखना ही नहीं चाहते. हालांकि अकेले हम सोवियत रूस वाले ही नहीं हैं जिन्होंने अपने यहां समाजवादी व्यवस्था क़ायम कर रखी है. और भी बहुत से देश इसी राह पर चल रहे हैं. हमारे बड़े दोस्त महान चीनी राष्ट्र के लोग भी अपने यहां समाजवाद की रचना कर रहे हैं. यह एक ऐसी हालत है जिसे कोई आँख से ओझल नहीं कर सकता. यूरप और एशिया के कई देश जो सोवियत यूनियन के साथ खड़े हैं अपने अपने यहां समाजवाद की रचना कर रहे हैं.

भारत के प्रधानमंत्री श्री नेहरू ने भी ऐलान कर दिया है कि भारत भी इसी समाजवादी राह पर चल रहा है. यह बात बहुत अच्छी है. यह अलग बात है कि हम 'समाजवाद' से जो कुछ समझते हैं वह और चीज़ है. आप जो समझते हैं वह कुछ और है. फिर भी हम इस ऐलान का और इस तरह के रुजहान का स्वागत करते हैं.

बस समाजवादी व्यवस्था दुनिया में है और इसके लिये हमें किसी की इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं है. हम हैं केवल इतना ही नहीं, बल्कि हम अपने वजूद की रक्षा करने की भी अपने में शक्ति रखते हैं. अगर हम अब तक दूसरों से यही प्रार्थनाएं करते रहते कि हमें भी अपने साथ साथ रहने दो तो हम अब तक कभी के मिटा दिये गए होते.

और हमारे दुश्मन कितना भी यह चाहें कि हम मिट जावें मगर हमें मिटाना उनके बूते की चीज़ नहीं है.

इसका अर्थ यह है कि आप चाहें या न चाहें, पसन्द करें या न करें, समाजवादी राज और पूँजीवादी राज दोनों को इसी धरती पर रहना है.

हम पूँजीवादी देशों से कहते हैं कि आप हमें पसन्द नहीं करते तो हमें अपने यहां बुलाकर दावत न दीजिये, लेकिन इसके बिना भी हम क़ायम रहेंगे.

आज दुनिया की हालत ठीक यही है.

हम इस तरह से साथ साथ रहना चाहते हैं जिससे सब क़ौमों की उन्नति में मदद मिले, जिससे सब देशों के आपसी सम्बन्ध बढ़ें. ख़ासकर हम सब देशों के साथ तिजारत करने के पक्ष में हैं. वह हमसे चीज़ें ख़रीदें, हम उनसे चीज़ें ख़रीदें.

इस समय तिजारत के मामले में वे लोग हमसे भेद भाव बरतने की कोशिश कर रहे हैं. ख़ास ख़ास तरह की और काम की चीज़ों में वह हमारे साथ तिजारत करना नहीं चाहते. लेकिन उनकी इस कोशिश के बावजूद हमारा देश बढ़ रहा है और अधिक शक्तिशाली होता जा रहा है.

موجود ہے اور مجھے یہ ماننا پڑتا ہے کہ اِس ویوستھا کا وجود دنیا میں ہے .

لیکن دوسری طرف کے لوگ یہ ماننا ہی نہیں چاہتے کہ سماج‌وادی ویوستھا بھی ہے . وہ اُسے دیکھنا ہی نہیں چاہتے . حالانکہ اکیلے ہم سوویت روس والے ہی نہیں ہیں جنہوں نے اپنے یہاں سماج‌وادی ویوستھا قایم کر رکھی ہے . اور بھی بہت سے دیش اِسی راہ پر چل رہے ہیں . ہمارے بڑے دوست مہان چینی راشٹر کے لوگ بھی اپنے یہاں سماج‌واد کی رچنا کر رہے ہیں . یہ ایک ایسی حالت ہے جسے کوئی آنکھ سے اوجھل نہیں کرسکتا . یورپ اور ایشیا کے کئی دیش جو سوویت یونین کے ساتھ کھڑے ہیں اپنے اپنے یہاں سماج‌واد کی رچنا کررہے ہیں .

بھارت کے پردھان منتری شری نہرو نے بھی اعلان کر دیا ہے کہ بھارت بھی اِسی سماج‌وادی راہ پر چل رہا ہے . یہ بات بہت اچھی ہے . یہ الگ بات ہے کہ ہم 'سماج‌واد' سے جو کچھ سمجھتے ہیں وہ اور چیز ہے . آپ جو سمجھتے ہیں وہ کچھ اور ہے . پھر بھی ہم اِس اعلان کا اور اس طرح کے رجحان کا سواگت کرتے ہیں .

بس سماج‌وادی ویوستھا دنیا میں ہے اور اِس کے لئے ہمیں کسی کی اِجازت لینے کی ضرورت نہیں ہے . ہم ہیں کیول اِتنا ہی نہیں' بلکہ ہم اپنے وجود کی رکشا کرنے کی بھی اپنے میں شکتی رکھتے ہیں . اگر ہم اب تک دوسروں سے یہی پرارتھنائیں کرتے رہتے کہ ہمیں بھی اپنے ساتھ ساتھ رہنے دو تو ہم اب تک کبھی کے مٹا دیئے گئے ہوتے .

اور ہمارے دشمن کتنا بھی یہ چاہیں کہ ہم مٹ جاویں مگر ہمیں مٹانا اُن کے بوتے کی چیز نہیں ہے .

اِس کا ارتھ یہ ہے کہ آپ چاہیں یا نہ چاہیں' پسند کریں یا نہ کریں' سماج‌وادی راج اور پونجی‌وادی راج دونوں کو اِسی دھرتی پر رہنا ہے .

ہم پونجی‌وادی دیشوں سے کہتے ہیں کہ آپ ہمیں پسند نہیں کرتے تو ہمیں اپنے یہاں بلاکر دعوت نہ دیجئے' لیکن اِس کے بنا بھی ہم قایم رہینگے .

آج دنیا کی حالت ٹھیک یہی ہے .

ہم اِس طرح سے ساتھ ساتھ رہنا چاہتے ہیں جس سے سب قوموں کی اُنتی میں مدد ملے' جس سے سب دیشوں کے آپسی سمبندھ بڑھیں . خاصکر ہم سب دیشوں کے ساتھ تجارت کرنے کے پکش میں ہیں . وہ ہم سے چیزیں خریدیں' ہم اُن سے چیزیں خریدیں .

اِس سمے تجارت کے معاملے میں وے لوگ ہم سے بھید بھاؤ برتنے کی کوشش کر رہے ہیں . خاص خاص طرح کی اور کام کی چیزوں میں وہ ہمارے ساتھ تجارت کرنا نہیں چاہتے . لیکن اُن کی اِس کوشش کے باوجود ہمارا دیش بڑھ رہا ہے اور ادھک شکتی شالی ہوتا جا رہا ہے .

और मैं आपको एक गुप्त बात बताना चाहता हूँ, वह यह कि उनके इस भेदभाव का नतीजा केवल यह हुआ कि हमें मजबूर होकर अपनी सारी शक्ति उन चीज़ों के पैदा करने में लगानी पड़ी जो यह पूँजीपति हमारे हाथ बेचना नहीं चाहते थे. अब हम इस तरह का सब माल खुद पैदा कर रहे हैं और इस काम में बढ़ते चले जा रहे हैं. इस तरह तिजारती भेद भाव की इस, चाल ने हमें, नुक़सान नहीं पहुँचाया, बलकि हमें और मदद दी है.

हम इस बात के पक्ष में हैं कि देशों देशों के बीच कलचरी सम्बन्ध बढ़े. हम इसे पसन्द करेंगे कि पूँजीपति देशों से और अधिक लाग हमारे देशों में आवें, और हमारे लोग उनके देशों में जावें.

हम पर यह इलज़ाम लगाया गया था कि हमने किसी तरह का "आहिनी परदा" बनाकर, अपने ऊपर डाल रखा है. पर केवल इसी साल के, अन्दर अमरीका की सेनेट के बहुत से मेम्बर सोवियत रूस आए, बहुत से अमरीकी साइन्सदां हमारे यहां आए, वहां के अखबारों के प्रतिनिधि हमारे यहां आए, अमरीका और इंगलिस्तान के किसान हमारे यहां आए, और दूसरे महायुद्ध के तपे हुए अमरीकी सिपाही भी हमारे यहां आए.

जो लोग हमारे देश आना चाहते हैं उन्हें हम 'विसा' यानी आने की इजाज़त देने से इनकार नहीं करते.

मैं समझता हूँ आपने इंजील के अन्दर नूह की किशती की कहानी सुन रखी होगी. हज़रत नूह ने अपनी किशती में रखने के लिये जब जानवर चुने तो उन्होंने सात जोड़े पाक जानवरों के अपने साथ लिये और सात नापाक जानवरों के लिये. मैं आपसे कह सकता हूँ कि पाक के मुक़ाबले में हमारे यहां नापाक अधिक आए हैं. पर हमने उन सबका स्वागत किया. हमें किसी का डर नहीं. हमने यही सोचा कि अगर कोई नापाक भी हमारे पास आयेगा तो वह हमें नापाक नहीं कर देगा.

इसका मतलब यह है कि अगर देशों देशों के बीच कलचरी आना जाना इतनी तेज़ी से नहीं बढ़ रहा है जितनी तेज़ी से बढ़ना चाहिये तो इसमें क़सूर हमारा नहीं है.

'पीसफ़ुल को-एगज़िस्टेन्स' यानी शान्ति पूर्वक साथ साथ रहने के सवाल के ये कुछ पहलू हैं. मैं समझता हूँ कि अगर आपको पीसफ़ुल को-एगज़िस्टेन्स का सबसे अच्छा नमूना चाहिये तो भारत के साथ हमारा सम्बन्ध इसका सबसे अच्छा नमूना है. यही नहीं है कि हम दोनों साथ साथ मौजूद हैं बलकि कई सवालों पर हमारा अलग अलग दृष्टिकोण होते हुए भी हम एक दूसरे के दोस्त हैं. इस दोस्ती की बुनियाद यह है कि हम दोनों मिलकर अमन क़ायम करने की कोशिशों में लगे हैं. इसीलिये हमें इस

اور میں آپ کو ایک گپت بات بتانا چاہتا ہوں' وہ یہ کہ اُن کے اِس بھید بھاؤ کا نتیجہ کیول یہ ہوا کہ ہمیں مجبور ہوکر اپنی ساری شکتی اُن چیزوں کے پیدا کرنے میں لگانی پڑی جو یہ پونجی پتی ہمارے ہاتھ بیچنا نہیں چاہتے تھے. اب ہم اِس طرح کا سب مال خود پیدا کر رہے ہیں اور اِس کام میں بڑھتے چلے جارہے ہیں . اِس طرح تجارتی بھید بھاؤ کی اِس چال نے ہمیں نقصان نہیں پہونچایا' بلکہ ہمیں اور مدد دی ہے .

ہم اِس بات کے پکش میں ہیں کہ دیشوں دیشوں کے بیچ کلچری سمبندھ بڑھے . ہم اِسے پسند کرینگے کہ پونجی پتی دیشوں سے اور ادھک لوگ ہمارے دیشوں میں آویں اور ہمارے لوگ اُن کے دیشوں میں جاویں .

ہم پر یہ الزام لگایا گیا تھا کہ ہم نے کسی طرح کا "آہنی پردہ" بناکر اپنے اُوپر ڈال رکھا ہے . پر کیول اِسی سال کے اندر امریکہ کی سینیٹ کے بہت سے ممبر سوویت روس آئے' بہت سے امریکی سائنسداں ہمارے یہاں آئے' وہاں کے اخباروں کے پرتیندھی ہمارے یہاں آئے' امریکہ اور انگلستان کے کسان ہمارے یہاں آئے' اور دوسرے مہایدھ کے تپے ہوئے امریکی سپاہی بھی ہمارے یہاں آئے .

جو لوگ ہمارے دیش آنا چاہتے ہیں انہیں ہم 'وسا' یعنی آنے کی اِجازت دینے سے اِنکار نہیں کرتے .

میں سمجھتا ہوں آپنے انجیل کے اندر نوح کی کشتی کی کہانی سن رکھی ہوگی . حضرت نوح نے اپنی کشتی میں رکھنے کے لئے جب جانور چنے تو اُنہوں نے سات جوڑے پاک جانوروں کے اپنے ساتھ لئے اور سات ناپاک جانوروں کے لئے . میں آپ سے کہہ سکتا ہوں کہ پاک کے مقابلے میں ہمارے یہاں ناپاک ادھک آئے ہیں. پر ہم نے اُن سب کا سواگت کیا. ہمیں کسی کا ڈر نہیں. ہم نے یہی سوچا کہ اگر کوئی ناپاک بھی ہمارے پاس آئیگا تو وہ ہمیں ناپاک نہیں کردیگا .

اِس کا مطلب یہ ہے کہ اگر دیشوں دیشوں کے بیچ کلچری آنا جانا اِتنی تیزی سے نہیں بڑھ رہا ہے جتنی تیزی سے بڑھنا چاہئے تو اس میں قصور ہمارا نہیں ہے .

'پیسفل کوایگزسٹینس' یعنی شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے سوال کے یہ کچھ پہلو ہیں . میں سمجھتا ہوں کہ اگر آپ کو پیسفل کوایگزسٹینس کا سب سے اچھا نمونہ چاہئے تو بھارت کے ساتھ ہمارا سمبندھ اِس کا سب سے اچھا نمونہ ہے . یہی نہیں ہے کہ ہم دونوں ساتھ ساتھ موجود ہیں بلکہ کئی سوالوں پر ہمارا الگ الگ درشٹی کونڑ ہوتے ہوئے بھی ہم ایک دوسرے کے دوست ہیں . اِس دوستی کی بنیاد یہ ہے کہ ہم دونوں ملکر امن قایم کرنے کی کوششوں میں لگے ہیں . اِسی لئے ہمیں اِس

मामले में अपनी कोशिशों को ढीला होने देना नहीं चाहिये. शान्ति पूर्वक साथ साथ रहने के रास्ते में जितनी रुकावटें हैं उन सबको हमें दूर करते रहना चाहिये और अलग अलग देशों के शान्ति पूर्वक साथ साथ रहने में जितनी चीज़ें मदद दे सकती हैं उन्हें हमें मज़बूत करना चाहिये.

इस सम्बन्ध में हाल में जनीवा में चार बड़ी शक्तियों के विदेश मंत्रियों की जो कानफ़रेन्स हुई है उससे हमें बहुत ही कम सफलता मिली है या यूँ कहना चाहिये कि जो सफलता मिली है वह इतनी कम है कि उसे देखने के लिये ख़ुर्दबीन की ज़रूरत है. यह कानफ़रेन्स अभी हाल में ख़तम हुई है. पर उससे जिन नतीजों की आशा थी वह पैदा नहीं हुए. लेकिन इससे हमें कोई ख़ास दुख भी नहीं है. ज़ाहिर है कि अभी वक़्त नहीं आया. अभी यह सवाल इतना पक नहीं पाया है कि तय हो सके. हमारे दूसरी तरफ़ के साथी अभी तक यही चाहते हैं कि "अपना बल दिखाकर" हमसे समझौते की बात चीत करें. उन्होंने अभी तक इस विचार को छोड़ा नहीं है.

मजबूर होकर मुझे फिर एक बार उन लोगों को सावधान कर देना पड़ता है कि जो लोग "अपना बल दिखा कर" हमसे बातचीत करना चाहते हैं वह कोई लाभ नहीं उठा सकते.

ज़ाहिर है कि जो जो सवाल जनीवा कानफ़रेन्स के सामने पेश थे उन सबके हल होने के लिये अभी हमें कुछ और इन्तज़ार करना पड़ेगा. इसमें बात ही क्या है ? हम इन्तज़ार करने को तैयार हैं. हम पर कोई आफ़त नहीं आ रही है. हम मौसम के अधिक अच्छा होने तक इन्तज़ार करेंगे. हम उस वक़्त तक इन्तज़ार करेंगे जब तक कि इन सब सवालों का फ़ैसला दुनिया की जनता के हित में न हो सके.

हाल में भारत में रहते हुए मैंने कई विदेशी नीतिज्ञों की तक़रीरें पढ़ी हैं जिनमें उन्होंने जनीवा कानफ़रेंस पर अपनी अपनी राय ज़ाहिर की है. मुझे इस बात से तसल्ली है कि जनीवा कानफ़रेन्स में जिन लोगों ने हिस्सा लिया था उनकी तक़रीरों में काफ़ी संयम है. इससे यह बात ज़ाहिर है कि वह कोई इस तरह के भाव प्रगट करना नहीं चाहते जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय तनाव के बढ़ने का डर हो.

अब मैं अपना भाशण ख़तम करना चाहता हूँ. सबको साथ साथ तो रहना ही है. इसके लिये न हम किसी से कोई माँग करते हैं और न किसी से कोई दरख़ास्त करते हैं. हम दुनिया में हैं वैसे ही जैसे कि पूँजीवादी देश हैं. कोई हमें पकड़ कर इस धरती से मंगल तारे में नहीं भेज सकता. अभी तक साइन्स वालों ने भी इसका कोई तरीक़ा नहीं निकाला. यह भी ज़ाहिर है कि पूँजीवादी देश भी, यहाँ से

معاملے میں اپنی کوششوں کو ڈھیلا ہونے دینا نہیں چاہئے۔ شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے راستے میں جتنی روکاوٹیں ہیں اُن سب کو ہمیں دور کرتے رہنا چاہئے اور الگ الگ دیشوں کے شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے میں جتنی چیزیں مدد دے سکتی ہیں اُنہیں ہمیں مضبوط کرنا چاہئے .

اِس سمبندھ میں حال میں جنیوا میں چار بڑی شکتیوں کے ودیش منتریوں کی جو کانفرنس ہوئی ہے اُس سے ہمیں بہت ہی کم سپھلتا ملی ہے یا یوں کہنا چاہئے کہ جو سپھلتا ملی ہے وہ اِتنی کم ہے کہ اُسے دیکھنے کے لئے خوردبین کی ضرورت ہے. یہ کانفرنس ابھی حال میں ختم ہوئی ہے . پر اُس سے جن نتیجوں کی آشا تھی وہ پیدا نہیں ہوئے . لیکن اِس سے ہمیں کوئی خاص دکھ بھی نہیں ہے . ظاہر ہے کہ ابھی وقت نہیں آیا . ابھی یہ سوال اِتنا پک نہیں پایا ہے کہ طے ہوسکے۔ ہمارے دوسری طرف کے ساتھی ابھی تک یہی چاہتے ہیں کہ "اپنا بل دکھاکر" ہم سے سمجھوتے کی بات چیت کریں . اُنہوں نے ابھی تک اِس وچار کو چھوڑا نہیں ہے .

مجبور ہوکر مجھے پھر ایک بار اُن لوگوں کو ساودھان کردینا پڑتا ہے کہ جو لوگ "اپنا بل دکھاکر" ہم سے بات چیت کرنا چاہتے ہیں وہ کوئی لابھ نہیں اُٹھا سکتے .

ظاہر ہے کہ جو جو سوال جنیوا کانفرنس کے سامنے پیش تھے اُن سب کے حل ہونے کے لئے ابھی ہمیں کچھ اور انتظار کرنا پڑیگا . اِس میں بات ہی کیا ہے ؟ ہم اِنتظار کرنے کو تیار ہیں۔ ہم پر کوئی آفت نہیں آرہی ہے . ہم موسم کے ادھک اچھا ہونے تک اِنتظار کرینگے . ہم اُس وقت تک اِنتظار کرینگے جب تک کہ ان سب سوالوں کا فیصلہ دنیا کی جنتا کے ہت میں نہ ہوسکے .

حال میں بھارت میں رہتے ہوئے میں نے کئی ودیشی نیتگیوں کی تقریریں پڑھی ہیں جن میں اُنہوں نے جنیوا کانفرنس پر اپنی اپنی رائے ظاہر کی ہے . مجھے اِس بات سے تسلی ہے کی جنیوا کانفرنس میں جن لوگوں نے حصہ لیا تھا اُن کی تقریروں میں کافی سنیم ہے . اس سے یہ بات ظاہر ہے کہ وہ کوئی اِس طرح کے بھاؤ پرگٹ کرنا نہیں چاہتے جن سے انترراشٹریہ تناؤ کے بڑھنے کا ڈر ہو .

اب میں اپنا بھاشن ختم کرنا چاہتا ہوں . سب کو ساتھ ساتھ تو رہنا ہی ہے . اِس کے لئے نہ ہم کسی سے کوئی مانگ کرتے ہیں اور نہ کسی سے کوئی درخواست کرتے ہیں . ہم دنیا میں ہیں ویسے ہی جیسے کہ پونجی وادی دیش ہیں . کوئی ہمیں پکڑ کر اِس دھرتی سے منگل تارے میں نہیں بھیج سکتا. ابھی تک سائنس والوں نے بھی اِس کا کوئی طریقہ نہیں نکالا. یہ بھی ظاہر ہے کہ پونجی وادی دیش بھی یہاں سے

उठकर मंगल तारे में चले जाना नहीं चाहते. इसका मतलब यह है कि हम दोनों को इसी धरती पर रहना है. और दोनों के रहने का मतलब ही "साथ साथ रहना" है.

इन हालात में हमारे लिये काम केवल यह है कि जो देश अपनी शक्ति दिखाते रहते हैं उन्हें नई जंग न छेड़ने दिया जावे.

सारे मानव समाज की कोशिश यही होनी चाहिये कि शान्ति पूर्वक साथ साथ रहने के इस सवाल को हल होने में मदद मिले. जितना जितना हम एक दूसरे को अधिक अच्छी तरह समझने लगेंगे, जितना जितना हम मिलकर काम करेंगे, जितनी जितनी हम एक दूसरे की मदद करेंगे, उतना उतना ही शान्ति की ताक़तों को बल मिलेगा, और उतना उतना ही जंगजू ताक़तें रुकी रहेंगी. इस तरह के जंगजू लोगों को जंग की चाह से हटाना असम्भव है. लेकिन अगर दुनिया की जनता शान्ति बनाए रखने के लिये अमली कोशिश करती रहे तो उन्हें जंग छेड़ने से रोका जा सकता है और रोक कर रखा जा सकता है.

आप जितने लोग यहां मौजूद हैं और जितने लोग पूरी लगन के साथ इस मक़सद के लिये काम करते हैं उन सबकी तन्दुरुस्ती के नाम पर मैं अपना प्याला ऊँचा करता हूँ और उनकी तन्दुरुस्ती के लिये दुआ करता हूँ !

दोस्तो ! मैं दोस्ती के लिये और आप सबकी तन्दुरुस्ती के लिये दुआ करता हूँ.

अनुवादक—सुन्दरलाल.

اُٹھکر منگل تارے میں چلے جانا نہیں چاہتے . اِس کا مطلب یہ ہے کہ ہم دونوں کو اِسی دھرتی پر رہنا ہے . اور دونوں کے رہنے کا مطلب ہی "ساتھ ساتھ رہنا" ہے .

اِن حالات میں ہمارے لئے کام کیول یہ ہے کہ جو دیش اپنی شکتی دکھاتے رہتے ہیں اُنہیں نئی جنگ نہ چھیڑنے دیا جاوے.

سارے مانو سماج کی کوشش یہی ہونی چاہئے کہ شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے اِس سوال کو حل ہونے میں مدد ملے. جتنا جتنا ہم ایک دوسرے کو ادھک اچھی طرح سمجھنے لگیں گے' جتنا جتنا ہم ملکر کام کرینگے' جتنی جتنی ہم ایک دوسرے کی مدد کریں گے' اُتنا اُتنا ہی شانتی کی طاقتوں کو بل ملیگا' اور اُتنا اُتنا ہی جنگجو طاقتیں رکی رہینگی . اس طرح کے جنگجو لوگوں کو جنگ کی چاہ سے ہٹانا اسمبھو ہے . لیکن اگر دنیا کی جنتا شانتی بنائے رکھنے کے لئے عملی کوشش کرتی رہے تو اُنہیں جنگ چھیڑنے سے روکا جاسکتا ہے اور روک کر رکھا جاسکتا ہے .

آپ جتنے لوگ یہاں موجود ہیں اور جتنے لوگ پوری لگن کے ساتھ اِس مقصد کے لئے کام کرتے ہیں اُن سب کی تندرستی کے نام پر میں اپنا پیالہ اُونچا کرتا ہوں اور اُن کی تندرستی کے لئے دعا کرتا ہوں !

دوستو ! میں دوستی کے لئے اور آپ سب کی تندرستی کے لئے دعا کرتا ہوں .

انووادک—سندر لال

इन्सान आम तौर पर सांप को बिना जान से मारे नहीं छोड़ता, चाहे वह जहरीला हो या बिना जहर के, चाहे वह चोट करे यह नहीं. अपने भाइयों की मौत का सांप अगर बदला लेने पर उतारू हो जाये तो वह क्या नहीं कर सकता. ग़नीमत है कि इन्सान और सांप अलग अलग रहते हैं. कहने को सांप बदनाम है मगर आज इन्सान इन्सान को डस रहे हैं. सांप से बचना मुमकिन है क्योंकि वह अपने जहर को अपनी रक्षा के लिये ही काम में लाता है मगर जब इन्सान इस जहर को काम में लाये तो फिर भगवान ही ख़ैर कर सकता है.

—अज्ञात

اِنسان عام طور پر سانپ کو بنا جان سے مارے نہیں چھوڑتا' چاہے وہ زہریلا ہو یا بنا زہر کے' چاہے وہ چوٹ کرے یا نہیں . اپنے بھائیوں کی موت کا سانپ اگر بدلہ لینے پر اُتارو ہو جائے تو وہ کیا نہیں کرسکتا . غنیمت ہے کہ اِنسان اور سانپ الگ الگ رہتے ہیں . کہنے کو تو سانپ بدنام ہے مگر آج تو اِنسان اِنسان کو ڈس رہے ہیں . سانپ سے تو بچنا ممکن ہے کیونکہ وہ اپنے زہر کو اپنی رکشا کے لئے ہی کام میں لاتا ہے مگر جب انسان اِس زہر کو کام میں لائے تو پھر بھگوان ہی خیر کرسکتا ہے .

—اگیات

हमारी राय
ہماری رائے

हमारे रूसी मेहमान

जिस समय हम यह लाइनें लिख रहे हैं श्री निकोलाई बुलगानिन, श्री निकिता ख़ुश्चेव और उनके साथियों की भारत यात्रा आधी से अधिक समाप्त हो चुकी है. जगह जगह भारत सरकार और भारत की जनता दोनों ने जिस तरह अपने प्यारे रूसी मेहमानों का स्वागत किया और उनके स्वागत में जितना जोश दिखाया उसने दुनिया भर में एक तहलका सा मचा दिया है. एशिया और अफ़्रीक़ा के अधिकतर देशों में इस स्वागत से एक नया उतसाह, नई आशा और नई उमंग पैदा हो गई है. कुछ साम्राजी देश थोड़ा बहुत घबरा गए हैं, और उनमें से कुछ तो बौखलाकर इस तरह की बातें भी करने लगे हैं कि जिनसे न मानवता का मान बढ़ सकता है और न किसी को कोई लाभ हो सकता है.

कलकत्ते में तो जनता का उत्साह हद को पहुंच गया. कम से कम 20 लाख आदमी अपने प्यारे मेहमानों को देखने के लिये चारों तरफ़ से उमड़ पड़े. उनकी बाढ़ रोके न रुकी. यहां तक की सरकार को अपना प्रोग्राम बदलना पड़ा. कहा जाता है कि जनता की इतनी बड़ी भीड़ आज तक किसी मौक़े पर दुनिया में कहीं जमा नहीं हुई थी. उनका जोश और उनका उबलता हुआ प्रेम उनकी तादाद को भी मात कर रहा था. फिर भी यह एक बड़ी बात है कि स्वयं जवाहरलाल जी ने जनता के जोश को सराहते हुए यह कहा कि इतनी बड़ी भीड़ ने पूरी शान्ति, शिस्त और ग़ज़ब के अनुशासन से काम लिया. किसी तरह की एक भी दुर्घटना कहीं नहीं हो पाई.

हमारे रूसी मेहमानों के दिलों पर भी इस सब का बहुत गहरा असर हुआ. रूसी मेहमानों में दो मुसलमान थे, उज़बेकिस्तान के बड़े वज़ीर श्री राशिद और वहां के खेती वज़ीर श्री रसूल. इन दोनों ने कलकत्ते के स्वागत के बाद अपने और अपने साथियों के भाव प्रगट करते हुए कहा कि—"यह स्वागत कुछ थोड़े से आदमियों या थोड़े से लोगों

ہمارے روسی مہمان

جس سمئے ہم یہ لائنیں لکھ رہے ہیں شری نکولائی بلگانن' شری نکیتا خرشچیو اور اُن کے ساتھیوں کی بھارت یاترا آدھی سے ادھک سماپت ہو چکی ہے . جگہہ جگہہ بھارت سرکار اور بھارت کی جنتا دونوں نے جس طرح اپنے پیارے روسی مہمانوں کا سواگت کیا اور اُن کے سواگت میں جتنا جوش دکھایا اُس نے دنیا بھر میں ایک تہلکہ سامچا دیا ہے . ایشیا اور افریقہ کے ادھکتر دیشوں میں اِس سواگت سے ایک نیا اُتساہ' نئی آشا اور نئی اُمنگ پیدا ہو گئی ہے . کچھ سامراجی دیش تھوڑا بہت گھبرا گئے ہیں' اور اُن میں سے کچھ تو بوکھلا کر اِس طرح کی باتیں بھی کرنے لگے ہیں کہ جن سے نہ مانوتا کا مان بڑھ سکتا ہے اور نہ کسی کو کوئی لابھ ہو سکتا ہے .

کلکتے میں تو جنتا کا اُتساہ حد کو پہونچ گیا . کم سے کم 20 لاکھ آدمی اپنے پیارے مہمانوں کو دیکھنے کے لئے چاروں طرف سے اُمڈ پڑے . اُن کی باڑھ روکے نہ رکی . یہاں تک کہ سرکار کو اپنا پروگرام بدلنا پڑا . کہا جاتا ہے کہ جنتا کی اِتنی بڑی بھیڑ آج تک کسی موقع پر دنیا میں کہیں جمع نہیں ہوئی تھی . اُن کا جوش اور اُن کا اُبلتا ہوا پریم اُن کی تعداد کو بھی مات کر رہا تھا . پھر بھی یہ ایک بڑی بات ہے کہ سویم جواہرلال جی نے جنتا کے جوش کو سراہتے ہوئے یہ کہا کہ اتنی بڑی بھیڑ نے پوری شانتی' شست اور غضب کے انوشاسن سے کام لیا . کسی طرح کی ایک بھی درگھٹنا کہیں نہیں ہو پائی .

ہمارے روسی مہمانوں کے دلوں پر بھی اِس سب کا بہت گہرا اثر ہوا . روسی مہمانوں میں دو مسلمان تھے' اُزبیکستان کے بڑے وزیر شری راشد اور وہاں کے کھیتی وزیر شری رسول . اِن دونوں نے کلکتے کے سواگت کے بعد اپنے اور اپنے ساتھیوں کے بھاؤ پرگٹ کرتے ہوئے کہا کہ—"یہ سواگت کچھ تھوڑے سے آدمیوں یا تھوڑے سے لوگوں

की तरफ़ से नहीं है, यह स्वागत भारत की जनता की तरफ़ से है. उसे देखकर यह पक्का विश्वास जम जाता है कि भारत और रूस की दोस्ती अब किसी के तोड़े टूट नहीं सकती !"

इसमें संदेह नहीं श्री निकोलाई बुलगानिन, श्री निकिता ख़ुरश्चेव और उनके साथियों के स्वागत ने यह साबित कर दिया कि भारत की जनता रूस और रूसियों के साथ न केवल सच्ची और गहरी दोस्ती ही रखती है बल्कि स्वयं अपने आगे के रास्ते के लिये भी, थोड़ी या बहुत, रूस की तरफ़ निगाह लगाए हुए है.

'हिन्दी चीनी भाई भाई' की आवाज़ सारे भारत और सारे चीन में गूँज चुकी है. हमारे रूसी मेहमानों की इस यात्रा के समय 'हिन्दी रूसी भाई भाई' की नई आवाज़ उठी और यह आवाज़ भी तुरन्त बिजली की तरह भारत और रूस दोनों में गूँज गई.

इस स्वागत में नीचे लिखी पाँच बातें सब से अधिक चमक उठीं :—

(1) यह ठीक है कि भारत की जनता अपनी सरकार की विदेशी नीति से सहमत और ख़ुश है. पर यह स्वागत जिन लोगों ने और जिस तरह किया वह केवल सरकार की विदेशी नीति से सहमत होने का ही नतीजा नहीं था. सरकार और सरकारों को अलग रखकर वह जनता के हृदय की उमंग थी. बम्बई के अन्दर उन लोगों ने भी जो—ठीक या बेठीक—किसी बात पर सरकार से काफ़ी असन्तुष्ट थे, उस असन्तोष को और और सब बातों को थोड़ी देर के लिये अलग रखकर, अपने मेहमानों का दिल खोलकर स्वागत किया. कलकत्ते की जनता भी सब की सब अपने यहां की सरकार से पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं है. इस असन्तोष के प्रदर्शन अनेक बार कलकत्ते में हो चुके हैं और सरकार की तरफ़ से भी उनका कड़ाई के साथ जवाब दिया जा चुका है. ज़ाहिर है कलकत्ते की जनता का यह अपूर्व उत्साह सरकार की तरफ़ जनता के भावों से कोई सम्बन्ध नहीं रखता. यह नतीजा था रूस के साथ जनता के प्रेम का. सरकारी लोग कहीं कुछ भी समझ बैठें, इस में संदेह नहीं जनता सरकार को चलाती है, सरकारें जनता को नहीं चलातीं. जनता का बल ही सरकार और सरकारों का एक मात्र बल होता है.

(2) इसमें भी संदेह नहीं कि हमारे रूसी मेहमान भारत के सच्चे दोस्त होते हुए भी काफ़ी समझदार और जागरूक हैं. शायद हम से सच्चे प्रेम के कारण ही वह इतने अधिक जागरूक हैं. उन्होंने हमारी अच्छाइयों के साथ साथ हमारी कमज़ोरियों को भी काफ़ी देख लिया. उन्होंने अपने विचारों को छुपाया भी नहीं. सच्चे प्रेम का यही तक़ाज़ा था. हमारे इंजीनियरों को जहां कंकरीट से काम चल सकता

کی طرف سے نہیں ہے' یہ سواگت بھارت کی جنتا کی طرف سے ہے ۔ اسے دیکھ کر یہ پکا وشواس جم جاتا ہے کہ بھارت اور روس کی دوستی اب کسی کے توڑے ٹوٹ نہیں سکتی !"

اِس میں سندیہہ نہیں شری نکولائی بلگانن' شری نکیتا خرشچیو اور اُن کے ساتھیوں کے سواگت نے یہ ثابت کر دیا کہ بھارت کی جنتا روس اور روسیوں کے ساتھ نہ کیول سچی اور گہری دوستی ہی رکھتی ہے بلکہ سویم اپنے آگے کے راستے کے لئے بھی' تھوڑی یا بہت' روس کی طرف نگاہ لگائے ہوئے ہے ۔

'ہندی چینی بھائی بھائی' کی آواز سارے بھارت اور سارے چین میں گونج چکی ہے ۔ ہمارے روسی مہمانوں کی اِس یاترا کے سمے 'ہندی روسی بھائی بھائی' کی نئی آواز اُٹھی اور یہ آواز بھی ترنت بجلی کی طرح بھارت اور روس دونوں میں گونج گئی ۔

اِس سواگت میں نیچے لکھی پانچ باتیں سب سے ادھک چمک اُٹھیں :—

(1) یہ ٹھیک ہے کہ بھارت کی جنتا اپنی سرکار کی ودیشی نیتی سے سہمت اور خوش ہے ۔ پر یہ سواگت جن لوگوں نے اور جس طرح کیا وہ کیول سرکار کی ودیشی نیتی سے سہمت ہونے کا ہی نتیجہ نہیں تھا ۔ سرکار اور سرکاروں کو الگ رکھ کر وہ جنتا کے ہردئے کی اُمنگ تھی ۔ بمبئی کے اندر اُن لوگوں نے بھی جو—ٹھیک یا بے ٹھیک—کسی بات پر سرکار سے کافی اسنتشٹ تھے' اُس اسنتوش کو اور اور سب باتوں کو تھوڑی دیر کے لئے الگ رکھ کر' اپنے مہمانوں کا دل کھولکر سواگت کیا ۔ کلکتہ کی جنتا بھی سب کی سب اپنے یہاں کی سرکار سے پوری طرح سنتشٹ نہیں ہے ۔ اِس اسنتوش کے پردرشن انیک بار کلکتے میں ہو چکے ہیں اور سرکار کی طرف سے بھی اُن کا کڑائی کے ساتھ جواب دیا جا چکا ہے ۔ ظاہر ہے کلکتہ کی جنتا کا یہ اپورو اتساہ سرکار طرف جنتا کے بھاؤں سے کوئی سمبندھ نہیں رکھتا ۔ یہ نتیجہ تھا روس کےساتھ جنتا کے پریم کا ۔ سرکاری لوگ کہیں کچھ بھی سمجھ بیٹھیں' اِس میں سندیہہ نہیں جنتا سرکار کو چلاتی ہے' سرکاریں جنتا کو نہیں چلاتیں ۔ جنتا کا بل ہی سرکار اور سرکاروں کا ایک ماتربل ہوتا ہے ۔

(2) اِس میں بھی سندیہہ نہیں کہ ہمارے روسی مہمان بھارت کے سچے دوست ہوتے ہوئے بھی کافی سمجھدار اور جاگروک ہیں ۔ شاید ہم سے سچے پریم کے کارن ہی وہ اِتنے ادھک جاگروک ہیں ۔ اُنہوں نے ہماری اچھائیوں کے ساتھ ساتھ ہماری کمزوریوں کو بھی کافی دیکھ لیا ۔ اُنہوں نے اپنے وچاروں کو چھپایا بھی نہیں ۔ سچے پریم کا یہی تقاضا تھا ۔ ہمارے انجینیروں کو جہاں کنکریٹ سے کام چل سکتا

था वहां कंकरीट की जगह फ़ौलाद (स्टील) इस्तेमाल करते देखकर वह कह ही बैठे कि भारत जैसे ग़रीब देश के लिये यह तरीक़ा ग़लत है. हमारे इंजीनियरों के समझाने बुझाने पर उन्होंने यह भी साफ़ कहा कि कुछ दिनों पहले रूस के इंजीनियर भी अपनी सरकार को और वहां की जनता को इसी तरह समझा बुझा दिया करते थे. पर अब वहां यह चीज़ नहीं चलती. भारत सरकार के इस एलान का स्वागत करते हुए भी कि भारत आगे को समाजवादी व्यवस्था की तरफ़ जायगा, उन्होंने यह साफ़ कह दिया कि हम समाजवाद से जो कुछ समझते हैं और वह समाजवाद का जो कुछ मतलब लेते हैं दोनों में फ़रक़ है. उन्होंने भारत को अभी उन देशों में ही गिना है जिन के साथ वह 'को-एगज़िस्ट' करना चाहते हैं, यानी काफ़ी फ़रक़ के होते हुए भी 'साथ साथ जीना' और 'साथ साथ रहना' चाहते हैं. हमारी सरकार भी अधिकतर यही कहती रहती है और इसी पर ज़ोर देती रहती है. पंचशील के उसूल पर ईमानदारी से अमल करते हुए हमारे रूसी दोस्त हमारे अन्दर के मामलों में हमारी इच्छा के विरुद्ध किसी तरह का दख़ल देना नहीं चाहते. पर रूसी मेहमानों की इस यात्रा के समय जनता के उत्साह और उसके रुख़ ने साबित कर दिया कि जनता कुछ और आगे बढ़ना चाहती है और हमारे रूसी मेहमानों ने भी यह दिखा दिया कि जितना हम बढ़ना चाहें उतना वह भी बढ़ने को तैयार हैं. हमें इसमें कोई संदेह नहीं कि इस बढ़ने के लिये भी अभी काफ़ी गुंजायश है.

(3) जिस दिन दिल्ली में रूसी मेहमानों का आगमन हुआ उस दिन हमारे मित्र, भारत के पुराने इनक़लाबी, राजा महेन्द्रप्रताप भी कुछ घंटों के लिये दिल्ली में थे. वह हमें एक छोटी-सी घटना सुनाते थे कि ठीक जिस समय स्वागत का जलूस निकलने वाला था दिल्ली के एक पुल के नीचे एक बीमार भिखमंगा हाथ पसारे पास से निकलने वाली मोटरों में बैठे हुए लोगों से कुछ भीक लेने की कोशिश कर रहा था. दिल्ली एक शानदार शहर है, भारत की राजधानी है. पर लज्जा और दुख के साथ यह मानना पड़ता है कि दिल्ली में भिखमंगों की तादाद सैकड़ों नहीं हज़ारों है. स्वागत में जनता का जोश हमें भी बहुत अच्छा लगा पर सरकार ने स्वागत की तैयारी में और मेहमानवाज़ी में जिस तरह से ख़र्च किया उसे देखकर और सुनकर हमें ऐसा लगा कि ऐसे मौक़ों पर हमारे शासक और नेता यह भूल जाते हैं कि जो धन वह ख़र्च कर रहे हैं वह न उनका पैदा किया हुआ है न किसी पूँजीपति या सरकारी अफ़सर का पैदा किया हुआ है, वह उन ग़रीब किसानों और मज़दूरों का पैदा किया हुआ है जिन्होंने ख़ून पसीना एक करके उसे पैदा किया है, और जिन से अब भी ख़र्च के मामले में कोई

تھا وھاں کنکریٹ کی جگہہ فولاد (اسٹیل) استعمال کرتے دیکھکر وہ کہہ ھی بیٹھے کہ بھارت جیسے غریب دیش کے لئے یہ طریقہ غلط ھے. ھمارے انجینیروں کے سمجھانے بجھانے پر اُنھوں نے یہ بھی صاف کہا کہ کچھ دنوں پہلے روس کے انجینیر بھی اپنی سرکار کو اور وھاں کی جنتا کو اِسی طرح سمجھا بجھا دیا کرتے تھے . پر اب وھاں یہ چیز نہیں چلتی . بھارت سرکار کے اِس اعلان کا سواگت کرتے ھوئے بھی کہ بھارت آگے کو سماج وادی ویوستھا کی طرف جائیگا' اُنھوں نے یہ صاف کہہ دیا کہ ھم سماج واد سے جو کچھ سمجھتے ھیں اور وہ سماج واد کا جو کچھ مطلب لیتے ھیں دونوں میں فرق ھے . اُنھوں نے بھارت کو ابھی اُن دیشوں میں ھی گنا ھے جن کے ساتھ وہ 'کو- ایگزسٹ' کرنا چاھتے ھیں' یعنی کافی فرق کے ھوتے ھوئے بھی 'ساتھ ساتھ جینا' اور 'ساتھ ساتھ رھنا' چاھتے ھیں . ھماری سرکار بھی ادھکتر یہی کہتی رھتی ھے اور اِسی پر زور دیتی رھتی ھے . پنچ شیل کے اُصول پر ایمانداری سے عمل کرتے ھوئے ھمارے روسی دوست ھمارے اندر کے معاملوں میں ھماری اچھا کے وِرودھ کسی طرح کا دخل دینا نہیں چاھتے . پر روسی مہمانوں کی اِس یاترا کے سمئے جنتا کے اُتساہ اور اُس کے رخ نے ثابت کر دیا کہ جنتا کچھ اور آگے بڑھنا چاھتی ھے اور ھمارے روسی مہمانوں نے بھی یہ دکھا دیا کہ جتنا ھم بڑھنا چاھیں اُتنا وہ بھی بڑھنے کو تیار ھیں . ھمیں اِس میں کوئی سندیہہ نہیں کہ اِس بڑھنے کے لئے بھی ابھی کافی گنجائش ھے .

(3) جس دن دلی میں روسی مہمانوں کا آگمن ھوا اُس دن ھمارے متر' بھارت کے پرانے اِنقلابی' راجا مہیندر پرتاپ بھی کچھ گھنٹوں کے لئے دلی میں تھے . وہ ھمیں ایک چھوٹی سی گھٹنا سناتے تھے کہ ٹھیک جس سمے سواگت کا جلوس نکلنے والا تھا دلی کے ایک پل کے نیچے ایک بیمار بھکمنگا ھاتھ پسارے پاس سے نکلنے والی موٹروں میں بیٹھے ھوئے لوگوں سے کچھ بھیک لینے کی کوشش کر رھا تھا . دلی ایک شاندار شہر ھے' بھارت کی راجدھانی ھے . پر لجا اور دکھ کے ساتھ یہ ماننا پڑتا ھے کہ دلی میں بھکمنگوں کی تعداد سیکڑوں نہیں ھزاروں ھے . سواگت میں جنتا کا جوش ھمیں بھی بہت اچھا لگا پر سرکار نے سواگت کی تیاری میں اور مہمانوازی میں جس طرح سے خرچ کیا اُسے دیکھکر اور سنکر ھمیں ایسا لگا کہ ایسے موقعوں پر ھمارے شاسک اور نیتا یہ بھول جاتے ھیں کہ جو دھن وہ خرچ کر رھے ھیں وہ نہ اُن کا پیدا کیا ھوا ھے نہ کسی پونجی پتی یا سرکاری افسر کا پیدا کیا ھوا ھے' وہ اُن غریب کسانوں اور مزدوروں کا پیدا کیا ھوا ھے جنھوں نے خون پسینہ ایک کرکے اُسے پیدا کیا ھے' اور جن سے اب بھی خرچ کے معاملے میں کوئی

राय नहीं ली जाती और न इस व्यवस्था में ली जा सकती है. हम इस मामले को इस समय बढ़ाना नहीं चाहते. पर हमें विश्वास है कि स्वागत का बहुत सा खर्च घटाया जा सकता था और उससे स्वागत की शान बढ़ती ही, घटती नहीं.

दिल्ली सचमुच अब स्वागतों, दावतों, लंचों, डिनरों और रिसेपशनों का शहर बनता जा रहा है. बातें यह सब अच्छी हैं और एक हद तक ज़रूरी भी हैं. पर यह राह बड़ी फिसलनी राह है. इस पर संभल सकना भी ख़ासकर उनके लिये बहुत मुश्किल है जिनके पाँव में ख़ुद कभी बिवाई न फटी हो.

(4) इस प्यार भरी यात्रा में एक ख़ास बात यह भी चमकी कि हमारे रूसी मेहमान काफ़ी मुँहफट हैं. ख़ासकर रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी, श्री निकिता ख़ुरुश्चेव तो इस मामले में रक़म ही निकले. उनकी बातों में एक सादगी, सफ़ाई, सचाई और ताज़गी थी जो तबीयत को खिलखिला देती थी. कहीं कहीं तो हमें डर है कि वह अन्तर्राष्ट्रीय राजकाजी शिष्टाचार के नियमों का भी उल्लंघन कर गए. कम से कम इसमें कोई शक नहीं उन्होंने कई ऐसी बातें कहीं जिन्हें देश के कुछ सरकारी दरबारी यह ज़रूर चाहते थे कि वह न कहते तो अच्छा था. ज़ाहिर है नवजागृत रूस पुराने नियमों और फ़ारमूलों में इतना अधिक बँध कर रहना नहीं चाहता. हैं भी तो वह कल के मज़दूर, दरबारी शिष्टाचार का उन्हें इतना तजरबा भी कहां है ! नमूने के तौर पर हम श्री निकिता ख़ुरुश्चेव की बम्बई की एक तक़रीर "नया हिन्द" में दे रहे हैं.

(5) आख़िरी चीज़ जिस की तरफ़ हमारा ध्यान इस यात्रा के कारण और अधिक ज़ोर के साथ जाने लगता है हमारा अपना भविष्य का मार्ग है. हमें यह बहुत ग़लत और हानिकर ख़ब्त हो गया है कि देश को ऊपर उठाने के लिये हमें बाहर से पैसे की मदद की ज़रूरत है. क़ुदरती तौर पर इस ख़ब्त में पड़कर हम बार बार बाहर के साम्राज्यवादी देशों की तरफ़ देखने लगते हैं. बात बिलकुल ग़लत है. जहां तक धन का सवाल है हमें एक पैसे की भी बाहर से ज़रूरत नहीं है. सात साल पहले चीन भी हमसे कम ग़रीब देश नहीं था. उसने अपने सुधार और तरक़्क़ी के लिये किसी से एक पैसा उधार या दान नहीं लिया. रूस के साथ इस सम्बंध में चीन का जो कुछ समझौता हुआ है वह भी केवल व्यापारी ढङ्ग का लेन देन है. जितनी देर के लिये रूस का माल चीन में अटकता है यानी चीन उसके बदले का माल रूस नहीं भेज पाता उतनी देर के लिये चीन एक फ़ीसदी सलाना सूद देता है, जो माल ही की शकल में अदा किया जाता है. हमें मालूम है कि गांधी जी के विचार भी इस बारे में ठीक यही थे और बड़े पक्के थे. ग़लती हमारी निगाहों,

رائے نہیں لی جاتی اور نہ اِس ویوستھا میں لی جاسکتی ھے. ہم اِس معاملہ کو اِس سمے بڑھانا نہیں چاھتے . پر ھمیں وشواس ھے کہ سواگت کا بہت سا خرچ گھٹایا جاسکتا تھا اور اُس سے سواگت کی شان بڑھتی ھی، گھٹتی نہیں .

دلی سچ مچ اب سواگتوں، دعوتوں، لنچوں، ڈنروں اور رسیپشنوں کا شہر بنتا جا رھا ھے . باتیں یہ سب اچھی ھیں اور ایک حد تک ضروری بھی ھیں . پر یہ راہ بڑی پھسلنی راہ ھے. اِس پر سنبھل سکنا بھی خاصکر اُن کے لئے بہت مشکل ھے جن کے پاؤں میں خود کبھی بوائی نہ پھٹی ھو .

(4) اس پیار بھری یاترا میں ایک خاص بات یہ بھی چمکی کہ ھمارے روسی مہمان کافی منہ پھٹ ھیں . خاصکر روسی کمیونسٹ پارٹی کے جنرل سکریٹری شری نکیتا خرشچیو تو اِس معاملے میں رقم ھی نکلے. اُن کی باتوں میں ایک سادگی، صفائی، سچائی اور تازگی تھی جو طبیعت کو کھلکھلا دیتی تھی. کہیں کہیں تو ھمیں ڈر ھے کہ وہ انترراشٹریہ راجکاجی شِشٹاچار کے نیموں کا بھی اُلّنگھن کرگئے . کم سے کم اِس میں کوئی شک نہیں اُنہوں نے کئی باتیں ایسی کہیں جنھیں دیش کے کچھ سرکاری درباری یہ ضرور چاھتے تھے کہ وہ نہ کہتے تو اچھا تھا . ظاھر ھے نوجاگرت روس پرانے نیموں اور فارمولوں میں اِتنا ادھک بندھکر نہیں رھنا چاھتا . ھیں بھی تو وہ کل کے مزدور، درباری شِشٹاچار کا اُنھیں اِتنا تجربہ بھی کہاں ھے ! نمونے کے طور پر ھم شری نکیتا خرشچیو کی بمبئی کی ایک تقریر "نیا ھند" میں دے رھے ھیں .

(5) آخری چیز جس کی طرف ھمارا دھیان اِس یاترا کے کارن اور ادھک زور کے ساتھ جانے لگتا ھے ھمارا اپنا بھوشیہ کا مارگ ھے . ھمیں یہ بہت غلط اور ھانیکر خبط ھوگیا ھے کہ دیش کو اوپر اُٹھانے کے لئے ھمیں باھر سے پیسے کی مدد کی ضرورت ھے . قدرتی طور پر اِس خبط میں پڑکر ھم بار بار باھر کے سامراجوادی دیشوں کی طرف دیکھنے لگتے ھیں . بات بالکل غلط ھے . جہاں تک دھن کا سوال ھے ھمیں ایک پیسے کی بھی باھر سے ضرورت نہیں ھے . سات سال پہلے چین بھی ھم سے کم غریب دیش نہیں تھا . اُس نے اپنے سدھار اور ترقی کے لئے کسی سے ایک پیسہ اُدھار یا دان نہیں لیا . روس کے ساتھ اِس سمبندھ میں چین کا جو کچھ سمجھوتا ھوا ھے وہ بھی کیول ویاپاری ڈھنگ کا لین دین ھے . جتنی دیر کے لئے روس کا مال چین میں اٹکتا ھے یعنی چین اُس کے بدلے کا مال روس نہیں بھیج پاتا اُتنی دیر کے لئے چین ایک فیصدی سالانہ سود دیتا ھے، جو مال ھی کی شکل میں ادا کیا جاتا ھے. ھمیں معلوم ھے کہ گاندھی جی کے وچار بھی اِس بارے میں ٹھیک یہی تھے اور بڑے پکے تھے . غلطی ھماری نگاھوں،

हमारी समझ, हमारे तरीक़ों और हमारी योजनाओं में है. इसके लिये अगर हम गांधी जी के उपदेशों और उनके विचारों को फिर से कुछ प्रेम और श्रद्धा के साथ पढ़ें, और रूस और चीन जैसे देशों की व्यवस्थाओं और उनके कामों को भी ध्यान से देखें और समझें तो हम बहुत सी मुसीबतों से बच सकते हैं. यदि हमारे रूसी मेहमानों की भारत यात्रा से यह नतीजा भी निकल सके कि हमारा लेन देन, सलाह, मशविरा रूस और चीन जैसे देशों के साथ बढ़े और हमारी निगाहें इस तरह के मामलों में पूँजीपति देशों की तरफ़ से कुछ हटें, तो इस में हमारा भी भला है, दूसरों का भी भला है और ख़ुद आज के पूँजीपती देशों का भी भला है.

3-12-'55 —सुन्दरलाल

ہماری سمجھ، ہمارے طریقوں اور ہماری یوجناؤں میں ہے' اِس کے لئے اگر ہم گاندھی جی کے اُپدیشوں اور اُن کے وچاروں کو پھر سے کچھ پریم اور شردھا کے ساتھ پڑھیں' اور روس اور چین جیسے دیشوں کی ویوستھاؤں اور اُن کے کاموں کو بھی دھیان سے دیکھیں اور سمجھیں تو ہم بہت سی مصیبتوں سے بچ سکتے ہیں ۔ یدی ہمارے روسی مہمانوں کی بھارت یاترا سے یہ نتیجہ بھی نکل سکے کہ ہمارا لین دین' صلاح' مشورہ روس اور چین جیسے دیشوں کے ساتھ بڑھے اور ہماری نگاہیں اِس طرح کے معاملوں میں پونجی پتی دیشوں کی طرف سے کچھ ہٹیں' تو اِس میں ہمارا بھی بھلا ہے' دوسروں کا بھی بھلا ہے اور خود آج کے پونجی پتی دیشوں کا بھی بھلا ہے ۔

—سندر لال 3 . 12 . '55

राजकुमारी अमृतकौर के चीन के अनुभव

भारत की हैल्थ मिनिस्टर राजकुमारी अमृतकौर हाल में चीन गई हुई थीं. वहाँ से लौटकर 31 अक्तूबर को दिल्ली में उन्होंने एक प्रेस कानफ़रेन्स में चीन के अपने अनुभव बयान किये. राजकुमारी अमृतकौर ख़ुद डाक्टर नहीं हैं. लेकिन वह सारे देश के स्वास्थ्य विभाग की वज़ीर हैं. इसलिये डाक्टरी के काम से उनका गहरा सम्बन्ध है. अधिकतर उसी के सम्बन्ध में वह चीन गई थीं. फिर भी वहां के दूसरे आम हालात पर उन्हों ने जो बातें कही हैं उनमें से कुछ हम निचे देते हैं.

राजकुमारी ने कहा कि—"जनता की तन्दुरुस्ती के उसूलों के बारे में, देश के अन्दर इस तरह की समाजी हवा पैदा कर देने के बारे में जिमें चोरी और शराब पीकर बदहवासी की घटनाएँ हों, उस देश से लगभग गुम हो गई हैं, और इसी तरह की और बातों में भारत को चीन से बहुत कुछ सीखना है."

वहाँ की तालीम के बारे में उन्हों ने कहा कि—"चीन के अन्दर हर तरह की तालीम मुफ़्त दी जाती है. विद्यार्थियों को रहने की जगह भी मुफ़्त दी जाती है उन से केवल खाने का ख़र्च लिया जाता है जो एक विद्यार्थी पर बाईस रुपये माहवार से छब्बीस रूपये महावार तक पड़ता है. मेडिकल स्कूलों और कालिजों में सरकार औसतन हर विद्यार्थी पर दो हज़ार रूपया सालाना ख़र्च करती है."

"डाक्टरी की तालीम पाने वाले विद्यार्थियों को केवल अपने खाने और किताबों का ख़र्च देना होता है."

راجکماری امرت کور کے چین کے انوبھو

بھارت کی ہیلتھ منسٹر راجکماری امرت کور حال میں چین گئی ہوئی تھیں ۔ وہاں سے لوٹ کر 31 اکتوبر کو دلی میں اُنھوں نے ایک پریس کانفرنس میں چین کے اپنے انوبھو بیان کئے ۔ راجکماری امرت کور خود ڈاکٹر نہیں ہیں ۔ لیکن وہ سارے دیش کے سواستھیہ وبھاگ کی وزیر ہیں ۔ اِس لئے ڈاکٹری کے کام سے اُن کا گہرا سمبندھ ہے ۔ ادھکتر اُسی کے سمبندھ میں وہ چین گئی تھیں ۔ پھر بھی وہاں کے دوسرے عام حالات پر اُنھوں نے جو باتیں کہی ہیں اُن میں سے کچھ ہم نیچے دیتے ہیں ۔

راجکماری نے کہا کہ—"جنتا کی تندرستی کے اصولوں کے بارے میں' دیش کے اندر اِس طرح کی سماجی ہوا پیدا کردینے کے بارے میں جس میں چوری اور شراب پی کر بدحواسی کی گھٹنائیں ہوں اُس دیش سے لگ بھگ گم ہوگئی ہیں' اور اِسی طرح کی اور باتوں میں بھارت کو چین سے بہت کچھ سیکھنا ہے ۔"

وہاں کی تعلیم کے بارے میں اُنھوں نے کہا کہ :—"چین کے اندر ہر طرح کی تعلیم مفت دی جاتی ہے ۔ ودیارتھیوں کو رہنے کی جگہ بھی مفت دی جاتی ہے' اُن سے کیول کھانے کا خرچ لیا جاتا ہے جو ایک ودیارتھی پر بائیس روپئے ماہوار سے چھبیس روپئے ماہوار تک پڑتا ہے ۔ میڈیکل اسکولوں اور کالجوں میں سرکار اوسطاً ہر ودیارتھی پر دو ہزار روپیہ سالانہ خرچ کرتی ہے ۔"

"ڈاکٹری کی تعلیم پانے والے ودیارتھیوں کو کیول اپنے کھانے اور کتابوں کا خرچ دینا ہوتا ہے ۔"

उन्हों ने बताया कि:—"गाँव में स्वास्थ्य केन्द्रों पर माओं और बच्चों की तन्दुरुस्ती पर सब से ज़ियादा ज़ोर दिया जाता है. शुरू से लेकर बच्चों की ख़बरगीरी और उनकी तन्दुरुस्ती का ख़याल चीन में सब से ज़रूरी काम समझा जाता है."

पेकिंग में पहली अक्तूबर को चीनी राष्ट्रीय दिवस के जलूसों में छै लाख लोगों ने भाग लिया. राजकुमारी ने उन लोगों की शिस्त की बड़ी तारीफ़ की. उन्हों ने यह भी कहा कि चीन में सब के रहने के लिये नए मकान जिस तेज़ी से बनते जा रहे हैं उसे देखकर वह चकित रह गईं. अच्छी और चौड़ी सड़कों पर वहाँ बहुत ज़ोर दिया जाता है. वह यह देखकर ख़ुश हो गईं कि खुली जगहों में जंगल लगाने और चारों तरफ़ दरख़्त लगाने का चीनियों को कितना ज़बरदस्त शौक़ है. कोई आदमी बिना इजाज़त के कोई दरख़्त नहीं काट सकता. "ख़ास ख़ास बड़ी बड़ी सड़कों और रास्तों पर चलते हुए बिलकुल यह मालूम होता है कि आदमी दरख़्तों के कुँज में से चला जा रहा है. जहाँ पुराने घटिया मकानों को गिराया और साफ़ किया गया है वहाँ अकसर बच्चों के लिये बाग़ीचे और खेलने के मैदान बना दिये गए हैं."

राजकुमारी का कहना है कि:—"भारत के साथ दोस्ती की इच्छा और शान्ति की इच्छा चीन वालों में सच्ची और साफ़ चमकती है. चीन के लोगों में एकता और जोश उनकी उन्नति के ख़ास कारण हैं."

उन्हों ने यह भी बताया कि:—"चीन में 'फ़ेमिली प्लेनिंग' यानी बच्चों की पैदाइश को रोकने का प्रोग्राम नहीं चलता और चीनी सरकार को आबादी के बढ़ जाने की कोई चिन्ता नहीं है." पर उस देश में इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि कोई एक से अधिक शादी न करे. दाश्ता या रखैत रखने का पुराना रिवाज बिलकुल बन्द कर दिया गया है. कोई लड़की अठारह बरस की उमर से पहले और कोई लड़का इक्कीस साल की उमर से पहले शादी नहीं कर सकता. औरतों की एक बड़ी संस्था है जिसका नाम 'वीमेन्स डेमोक्रेटिक फ़ेडरेशन' है. यह संस्था बहुत ही शक्तिशाली और बाअसर संस्था है. वह देखती रहती है कि शादी वग़ैरा के बारे में कोई इस तरह का नियम न तोड़ने पावे.

"चीनी लड़कियाँ और चीनी स्त्रियाँ बहुत आज़ाद हैं और साथ ही उनका सदाचार का आदर्श (मयार) और अपनी आबरू और आन का मयार भी बहुत ही ऊँचा है. पुरुषों और स्त्रियों को बराबर का दरजा दिया जाता है. तालीम दोनों को साथ साथ दी जाती है. चोरी का चीन में कहीं नाम नहीं है. होटलों के कमरों को कभी ताले

انہوں نے بتایا کہ :—"گاؤں میں سواستھیہ کیندروں پر اور ماؤں اور بچوں کی تندرستی پر سب سے زیادہ زور دیا جاتا ہے ۔ شروع سے لیکر بچوں کی خبرگیری اور اُن کی تندرستی کا خیال چین میں سب سے ضروری کام سمجھا جاتا ہے ۔"

پیکنگ میں پہلی اکتوبر کو چینی راشٹریہ دیوس کے جلوسوں میں چھ لاکھ لوگوں نے بھاگ لیا ۔ راجکماری نے اُن لوگوں کی شست کی بڑی تعریف کی ۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ چین میں سب کے رہنے کے لئے نئے مکان جس تیزی سے بنتے جارہے ہیں اُسے دیکھکر وہ چکت رہ گئیں۔ اچھی اور چوڑی سڑکوں پر وہاں بہت زور دیا جاتا ہے ۔ وہ یہ دیکھکر خوش ہوگئیں کہ کھلی جگہوں میں جنگل لگانے اور چاروں طرف درخت لگانے کا چینیوں کو کتنا زبردست شوق ہے ۔ کوئی آدمی بنا اجازت کے کوئی درخت نہیں کاٹ سکتا ۔ "خاص خاص بڑی بڑی سڑکوں اور راستوں پر چلتے ہوئے بالکل یہ معلوم ہوتا ہے کہ آدمی درختوں کے کنج میں سے چلا جارہا ہے ۔ جہاں پرانے گھٹیا مکانوں کو گرایا اور صاف کیا گیا ہے وہاں اکثر بچوں کے لئے باغیچے اور کھیلنے کے میدان بنا دیئے گئے ہیں ۔"

راجکماری کا کہنا ہے کہ:—"بھارت کے ساتھ دوستی کی اِچھا اور شانتی کی اِچھا چین والوں میں سچی اور صاف چمکتی ہے ۔ چین کے لوگوں میں ایکتا اور جوش اُن کی اُنتی کے خاص کارن ہیں ۔"

انہوں نے یہ بھی بتایا کہ:—"چین میں 'فیملی پلیننگ' یعنی بچوں کی پیدائش کو روکنے کا پروگرام نہیں چلتا اور چینی سرکار کو آبادی کے بڑھ جانے کی کوئی چنتا نہیں ہے ۔" پر اُس دیش میں اِس بات پر زور دیا جاتا ہے کہ کوئی ایک سے ادھک شادی نہ کرے۔ داشتہ یا رکھیت رکھنے کا پرانا رواج بالکل بند کر دیا گیا ہے ۔ کوئی لڑکی اٹھارہ برس کی عمر سے پہلے اور کوئی لڑکا اکیس سال کی عمر سے پہلے شادی نہیں کر سکتا عورتوں کی ایک بڑی سنستھا ہے جس کا نام 'ویمینس ڈیموکریٹک فیڈریشن' ہے ۔ یہ سنستھا بہت ہی شکتی شالی اور با اثر سنستھا ہے ۔ وہ دیکھتی رہتی ہے کہ شادی وغیرہ کے بارے میں کوئی اِس طرح کا نیم نہ توڑنے پاوے ۔

"چینی لڑکیاں اور چینی استریاں بہت آزاد ہیں اور ساتھ ہی اُن کا سداچار کا آدرش (معیار) اپنی آبرو اور آن کا معیار بھی بہت ہی اونچا ہے ۔ پرشوں اور استریوں کو برابر کا درجہ دیا جاتا ہے ۔ تعلیم دونوں کو ساتھ ساتھ دی جاتی ہے ۔ چوری کا چین میں کہیں نام نہیں ہے ۔ ہوٹلوں کے کمروں کو کبھی تالے

नहीं लगाये जाते. होटलों वग़ैरा में कहीं कोई किसी को इनाम या बख़शीश नहीं लेता देता. शराब पीकर बद-हवास वहाँ कोई दिखाई नहीं दे सकता. अगर कोई इस तरह शराब पिये पाया जाता है तो समाज में उसका बायकाट हो जाता है."

यहाँ तक तो हमने चीन के बारे में राजकुमारी के आम अनुभव बयान किये हैं. पर इनके अलावा राजकुमारी अमृतकौर ने चीन में नइ डाक्टरी, वहाँ की पुरानी वैद्यक विद्या आदि के बारे में क ऐसी बातें कहीं हैं जिनमें से कुछ को पढ़कर हमें अचरज और दुख भी हुआ. राज-कुमारी देश की हेल्थ मिनिस्टर हैं. अंगरेज़ी इलाज, देस इलाज वग़ैरा के बारे में राजकुमारी के विचार भी सब को मालूम हैं. इस सम्बन्ध में चीन की बाबत जो कुछ उन्होंने कहा है उस से इस सचाइ का सबूत मिलता है कि जिन बातों में हमारे बिचार जोरों से जमे हुए होते हैं उनमें हम अकसर वही देखते हैं जो हम देखना चाहते हैं और वही सुनते भी हैं जो हम सुनना चाहते हैं. शायद हम में से कोई भी नंगी आँखों से दुनिया को नहीं देख सकता. हमारे अपने पहले से बने विचारों, विश्वासों, मानताओं और भावों का चश्मा हमारी आखों पर बराबर लगा ही रहता है, और उसी चश्मे के अन्दर से हम दुनिया को देखते हैं. फ़रक़ केवल इतना होता है कि किसी के चश्मे का रंग गहरा होता है और किसी का हलका. फिर भी राजकुमारी ने कुछ बातें ऐसी कहीं हैं जिन से काफ़ी ग़लतफ़हमी पैदा होती है.

राजकुमारी ने कहा है कि भारत में डाक्टरी की तालीम का स्तर चीन के स्तर से ऊँचा है और यहाँ डाक्टर भी चीन के डाक्टरों से गिनती में अधिक और अधिक 'योग्य' है. उन्होंने बताया है कि चीन की आबादी साठ करोड़ है और आजकल की पच्छमी डाक्टरी में योग्यता रखने वाले डाक्टर वहां केवल तीस हज़ार और चालीस हज़ार के बीच में हैं. भारत की आबादी चीन से बहुत कम है पर यहां योग्य डाक्टरों की तादाद उनके अनुसार इससे लगभग दुगनी है. इससे राजकुमारी ने शायद यह बताना चाहा है कि जनता के स्वास्थ्य की देख रेख जितनी भारत में की जाती है उतनी चीन में नहीं की जाती.

इस बात का राजकुमारी की निगाह में अधिक महत्व नहीं है कि नई चीनी सरकार पच्छमी डाक्टरी के इन माहिरों के अलावा पुरानी चीनी वैद्यक विद्या के जानकार और तजरबेकार हकीमों या वैद्यों से लाभ उठाने की पूरी कोशिश करती है. उनकी मदद से जगह जगह गाँव के अन्दर स्वास्थ्य केन्द्र बने हुये हैं जहाँ केवल रोगियों का इलाज ही नहीं किया जाता, इस बात की भी कोशिश की जाती है कि

نہیں لگائے جاتے ۔ ھوٹلوں وغیرہ میں کہیں کوئی کسی کو انعام یا بخشیش نہیں لیتا دیتا ۔ شراب پی کر بدحواس وھاں کوئی دکھائی نہیں دے سکتا ۔ اگر کوئی اِس طرح شراب پیئے پایا جاتا ھے تو سماج میں اُس کا بائیکاٹ ھو جاتا ھے ۔"

یہاں تک تو ھم نے چین کے بارے میں راجکماری کے عام انوبھو بیان کئے ھیں ۔ پر اِن کے علاوہ راجکماری امرت کور نے چین میں نئی ڈاکٹری، وھاں کی پرانی ویدک ودیا آدی کے بارے میں کئی ایسی باتیں کہی ھیں جن میں سے کچھ کو پڑھکر ھمیں اچرج اور دکھ بھی ھوا ۔ راجکماری دیش کی ھیلتھ منسٹر ھیں۔ انگریزی علاج، دیسی علاج وغیرہ کے بارے میں راجکماری کے وچار بھی سب کو معلوم ھیں ۔ اِس سمبندھ میں چین کی بابت جو کچھ اُنھوں نے کہا ھے اُس سے اِس سچائی کا ثبوت ملتا ھے کہ جن باتوں میں ھمارے وچار زوروں سے جمے ھوئے ھوتے ھیں اُن میں ھم اکثر وھی دیکھتے ھیں جو ھم دیکھنا چاھتے ھیں اور وھی سنتے بھی ھیں جو ھم سننا چاھتے ھیں ۔ شاید ھم میں سے کوئی بھی ننگی آنکھوں سے دنیا کو نہیں دیکھ سکتا ۔ ھمارے اپنے پہلے سے بنے وچاروں، وشواسوں، مانتاؤں اور بھاؤں کا چشمہ ھماری آنکھوں پر برابر لگا ھی رھتا ھے، اور اُسی چشمے کے اندر سے ھم دنیا کو دیکھتے ھیں ۔ فرق کیول اتنا ھوتا ھے کہ کسی کے چشمے کا رنگ گہرا ھوتا ھے اور کسی کا ھلکا ۔ پھر بھی راجکماری نے کچھ باتیں ایسی کہی ھیں جن سے کافی غلط فہمی پیدا ھوتی ھے ۔

راجکماری نے کہا ھے کہ بھارت میں ڈاکٹری تعلیم کا استر چین کے استر سے اُونچا ھے ۔ اور یہاں ڈاکٹر بھی چین کے ڈاکٹروں سے گنتی میں ادھک اور ادھک یوگیہ ھیں ۔ انہوں نے بتایا ھے کہ چین کی آبادی ساٹھ کروڑ ھے اور آجکل کی پچھمی ڈاکٹری میں یوگتا رکھنے والے ڈاکٹر وھاں کیول تیس ھزار اور چالیس ھزار کے بیچ میں ھیں ۔ بھارت کی آبادی چین سے بہت کم ھے پر یہاں یوگیہ ڈاکٹروں کی تعداد اُن کے انوسار اس سے لگ بھگ دوگنی ھے ۔ اس سے راجکماری نے شاید یہ بتانا چاھا ھے کہ جنتا کے سواستھ کی دیکھ ریکھ جتنی بھارت میں کی جاتی ھے اُتنی چین میں نہیں کی جاتی ۔

اس بات کا راجکماری کی نگاہ میں ادھک مہتو نہیں ھے کہ نئی چینی سرکار پچھمی ڈاکٹری کے ان ماھروں کے علاوہ پرانی چینی ویدک ودیا کے جانکار اور تجربہ‌کار حکیموں یا ویدوں سے لابھ اُٹھانے کی پوری کوشش کرتی ھے ۔ ان کی مدد سے جگہ جگہ گاؤں کے اندر سواستھ کیندر بنے ھوئے ھیں، جہاں کیول روگیوں کا علاج ھی نہیں کیا جاتا، اس بات کی بھی کوشش کی جاتی ھے کہ

लोग "बीमार न पड़ें." ये पुराने ढंग के चीनी हकीम और वैद्य अधिकतर इलाज तो अपने पुराने सस्ते तरीकों और जड़ी बूटियों से ही करते हैं, पर राजकुमारी ही के अनुसार सरकार इन सबको तन्दुरुस्ती और सफ़ाई के नए से नए उसूल, जख्मों की मरहम पट्टी के नये से नये तरीके और कुछ सीधी सस्ती नई दवाओं का इस्तेमाल भी सिखा देती है. राजकुमारी ही के अनुसार सरकार के द्वारा अपनाए हुये इस तरह के हकीमों की तादाद चीन में लगभग तीन लाख है.

इसके साथ साथ बड़े बड़े डाक्टरों के अलावा चीनी सरकार कुछ कम पढ़े लेकिन सस्ते डाक्टर भी तीन-तीन साल की तालीम देकर तैयार कर रही है. राजकुमारी ही के अनुसार इस तरह के तीन साल के कोर्स में पढ़ने वालों की तादाद इस समय अट्ठावन हज़ार है. वहां के इकत्तीस बड़े बड़े मेडीकल कालिजों में इस समय चौंतीस हज़ार "योग्य" डाक्टर भी और तैयार हो रहे हैं.

बात बड़ी सीधी सी है. राजकुमारी और उन जैसे ऊंचे बैठे हुये लोगों को यह नहीं मालूम कि इन "योग्य" पच्छमी ढंग के डाक्टरों का इलाज, मामूली ग़रीब आदमियों की तो बात ही क्या, हमारे बीच के दरजे के देश-बासियों के लिये भी कितना मँहगा और मुसीबत का होता है. हमारे एक मित्र को जिन्हें, आठ सौ रुपैया महीना वेतन मिलता है पेट का आपरेशन कराने की ज़रूरत पड़ी. आपरेशन के खर्च के अलावा उन्हें कई हज़ार की ऊपर से इस्तेमाल की पेटेंट दवाएं ख़रीदनी पड़ीं जिनमें से तीन चौथाई से अधिक किसी भी काम न आईं और फेंकनी पड़ीं. अपने इस इलाज में उन्हें अपनी पत्नी का जेवर बेचना पड़ा. यह केवल एक मिसाल नहीं है. लगभग हर मिडिल क्लास के घर से इसी तरह की कहानी सुनी जा सकती है. हमारे अधिक तर पच्छमी ढंग के डाक्टर बेचारे आजकल की हालत में इस ग़रीब देश के अन्दर करोड़ों रूपये की विदेशी पेटेंट दवाओं के मंगवाने और खपाने वाले एजेन्ट बने हुए हैं. और हमें विश्वास है कि इनमें से अधिकतर दवाएं निकम्मी ही नहीं हानिकर भी हैं. यह 'हानिकर' शब्द हमने सोच समझकर उपयोग किया है. आए दिन के अपने तजुरबों को छोड़कर कुछ दिन हुए हमने यूरप के एक बहुत बड़े डाक्टर की, जो चालीस साल तक दुनिया के एक बहुत बड़े अस्पताल के चार्ज में रह चुके थे, पच्छमी दवाओं की बाबत, यह राय पढ़ी थी :—

"If the contents of all the apothecaries' shops could be emptied into the sea, the consequences to the fish may be dangerous, but mankind will be happier and healthier."

لوگ "بیمار نہ پڑیں." یہ پرانے ڈھنگ کے چینی حکیم اور وید ادھکتر علاج تو اپنے پرانے سستے طریقوں اور جڑی بوٹیوں سے ہی کرتے ہیں' پر راجکماری ہی کے انوسار سرکار ان سب کو تندرستی اور صفائی کے نئے سے نئے اصول' زخموں کی مرہم پٹی کے نئے سے نئے طریقے اور کچھ سیدھی سستی نئی دواؤں کا استعمال بھی سکھا دیتی ہے. راجکماری ہی کے انوسار سرکار کے دوارا اپنائے ہوئے اس طرح کے حکیموں کی تعداد چین میں لگ بھگ تین لاکھ ہے.

اس کے ساتھ ساتھ بڑے بڑے ڈاکٹروں کے علاوہ چینی سرکار کچھ کم پڑھے لکھے لیکن سستے ڈاکٹر بھی تین تین سال کی تعلیم دےکر تیار کر رہی ہے. راجکماری ہی کے انوسار اس طرح کے تین سال کے کورس میں پڑھنے والوں کی تعداد اس سمے اٹھاون ہزار ہے. وہاں کے اکتیس بڑے بڑے میڈیکل کالجوں میں اس سمے چونتیس ہزار "یوگیہ" ڈاکٹر بھی اور تیار ہو رہے ہیں.

بات بڑی سیدھی سی ہے. راجکماری اور اُن جیسے اُونچے بیٹھے ہوئے لوگوں کو یہ نہیں معلوم کہ ان "یوگیہ" پچھمی ڈھنگ کے ڈاکٹروں کا علاج' معمولی غریب آدمیوں کی تو بات ہی کیا ہمارے بیچ کے درجہ کے دیش واسیوں کے لئے بھی کتنا مہنگا اور مصیبت کا ہوتا ہے. ہمارے ایک متر کو جنہیں آٹھ سو روپیہ مہینہ ویتن ملتا ہے پیٹ کا آپریشن کرانے کی ضرورت پڑی. آپریشن کے خرچ کے علاوہ انہیں کئی ہزار کی اُوپر سے استعمال کی پیٹینٹ دوائیاں خریدنی پڑیں' جن میں سے تین چوتھائی سے ادھک کسی بھی کام نہ آئیں اور پھینکنی پڑیں. اپنے اس علاج میں انہیں اپنی پتنی کا زیور بیچنا پڑا. یہ کیول ایک مثال نہیں ہے. لگ بھگ ہر مڈل کلاس کے گھر سے اسی طرح کی کہانی سنی جاسکتی ہے. ہمارے ادھکتر پچھمی ڈھنگ کے ڈاکٹر بیچارے آجکل کی حالت میں اس غریب دیش کے اندر کروڑوں روپئے کے بدیشی پیٹینٹ دواؤں کے منگوانے اور رکھنے والے ایجنٹ بنے ہوئے ہیں اور ہمیں وشواس ہے کہ ان میں سے ادھکتر دوائیں نکمی ہی نہیں ہانیکر بھی ہیں. یہ 'ہانیکر' شبد ہم نے سوچ سمجھکر اُپیوگ کیا ہے. آئے دن کے اپنے تجربوں کو چھوڑکر کچھ دن ہوئے ہم نے یورپ کے ایک بہت بڑے ڈاکٹر کی' جو چالیس سال تک دنیا کے ایک بہت بڑے اسپتال کے چارج میں رہ چکے تھے' پچھمی دواؤں کی بابت یہ رائے پڑھی تھی :—

"If the contents of all the apothecaries' shops could be emptied into the sea, the consequences to the fish may be dangerous, but mankind will be happier and healthier."

अर्थात्—"यदि डाक्टरी की सब दुकानों की सारी शीशियाँ समन्दर में उलट कर खाली कर ली जाँय तो नतीजा मछलियों के लिये खतरनाक हो सकता है लेकिन मानव समाज अधिक सुखी और अधिक स्वस्थ रहेगा."

हमें ध्यान रखना चाहिये कि ऊपर के वाक्य में •ऐलोपेथिक दवाओं की बात कही गई है. पुरानी वैद्यक या यूनानी जड़ी बूटियों या नन्ही नन्ही होमियोपैथिक गोलियों की नहीं.

हमने सुना था कि आजकल जो बहुत से हमारे डेलिगेशन चीन और रूस जा रहे हैं उनमें से एक डेलीगेशन के एक हिंदुस्तानी मेम्बर ने रूस के स्वास्थ्य वज़ीर से पूछा था कि क्या आप अमरीकी दवाएं अपने देश में नहीं इम्पोर्ट करते. सुना है रूसी ने जवाब दिया कि हम न उनकी दवाएं इम्पोर्ट करते हैं और न उनकी बीमारियां. इस जवाब में आधा मज़ाक़ जरूर था पर इसका आधा सच बहुत गहरा है.

हमें विश्वास है कि महात्मा गांधी इस देश के पच्छमी ढंग के डाक्टरों को जब देश के दो सबसे खतरनाक और हानिकर गिरोहों में गिना करते थे तो उनकी बात में बहुत बड़ी सच्चाई थी. हम आजकल पूरी नेक नीयती के साथ पर उतनी ही पूरी नासमझी के साथ, इस मामले में उसी खतरे की तरफ़ ढुलकते चले जा रहे हैं जिससे गांधी जी हमें बचाना चाहते थे.

चीनी शासक इस बारे में हमसे कहीं अधिक समझदार हैं. जहां तक आम जनता का सवाल है चीन आज उतना ग़रीब देश नहीं है जितना भारत. फिर भी वह हर साल करोड़ों रूपया विदेशी दवाओं पर नहीं खोते और—यह एक मानी हुई चीज़ है कि—अपनी जनता और अपने बच्चों को हमसे कहीं अधिक तन्दुरुस्त, मोटा ताज़ा और खुश रख रहे हैं.

अपने देश के पुराने इलाज के तरीक़े की तरफ़ चीनी सरकार का जो रुख़ है उसकी बाबत राजकुमारी के बयान से काफ़ी ग़लतफ़हमी पैदा हो सकती है. राजकुमारी ने कहा कि चीनी सरकार पुराने इलाज के तरीक़े को खतम कर देना और उसकी जगह पच्छिम की नई साइन्सी डाक्ट्री को ही चलाना चाहती है. इस पर किसी समाचार पत्र के प्रतिनिधि ने पूछ ही लिया कि—"चीन की मिसाल के खिलाफ़, क्या भारत सरकार आजकल आयुर्वेद और दूसरे देशी इलाज के तरीक़ों को अलग तरीक़ों की हैसियत से बढ़ावा नहीं दे रही है?" राजकुमारी ने माना कि सरकार बढ़ावा दे रही है पर उसे ग़लती स्वीकार करते हुये राजकुमारी ने उस पर दुख प्रकट किया! किसी ने उन्हें बताया कि हाल में यूनियन प्लैनिंग मिनिस्टर श्री गुलज़ारी लाल नन्दा ने आयुर्वेद

ارتھات—"یدی ڈاکٹری کی سب دوکانوں کی ساری شیشیاں سمندر میں اُلٹ کر خالی کر لی جائیں تو نتیجہ مچھلیوں کے لئے خطرناک ہوسکتا ہے لیکن مانو سماج ادھک سکھی اور ادھک سوستھ رہیگا."

ہمیں دھیان رکھنا چاہئے کہ اُوپر کے واکیہ میں ایلوپیتھک دواؤں کی بات کہی گئی ہے. پرانی ویدک یا یونانی جڑی بوٹیوں یا ننھی ننھی ہومیوپیتھک گولیوں کی نہیں.

ہم نے سنا تھا کہ آجکل جو بہت سے ہمارے ڈیلیگیشن چین اور روس جا رہے ہیں ان میں سے ایک ڈیلیگیشن کے ایک ہندستانی میمبر نے روس کے سواستھ وزیر سے پوچھا تھا کہ کیا آپ امریکی دوائیں اپنے دیش میں نہیں امپورٹ کرتے. سنا ہے روسی نے جواب دیا کہ ہم نہ ان کی دوائیں امپورٹ کرتے ہیں اور نہ ان کی بیماریاں. اس جواب میں آدھامذاق ضرور تھا پر اس کا آدھا سچ بہت گہرا ہے.

ہمیں وشواس ہے کہ مہاتما گاندھی اس دیش کے پچھمی ڈھنگ کے ڈاکٹروں کو جب دیش کے دو سب سے خطرناک اور ہانیکر گروہوں میں گنا کرتے تھے تو ان کی بات میں بہت بڑی سچائی تھی. ہم آجکل پوری نیک نیتی کے ساتھ پر اتنی ہی پوری ناسمجھی کے ساتھ، اس معاملہ میں اسی خطرے کی طرف ڈھلکتے چلے جا رہے ہیں جس سے گاندھی جی ہمیں بچانا چاہتے تھے.

چینی شاسک اس بارے میں ہم سے کہیں ادھک سمجھدار ہیں. جہاں تک عام جنتا کا سوال ہے چین آج اتنا غریب دیش نہیں ہے جتنا بھارت. پھر بھی وہ ہر سال کروڑوں روپئے بدیشی دواؤں پر نہیں کھوتے اور—یہ ایک مانی ہوئی چیز ہے کہ—اپنی جنتا اور اپنے بچوں کو ہم سے کہیں ادھک تندرست، موٹا تازہ اور خوش رکھ رہے ہیں.

اپنے دیش کے پرانے علاج کے طریقے کی طرف چینی سرکار کا جو رخ ہے اس کی بابت راجکماری کے بیان سے کافی غلط فہمی پیدا ہوسکتی ہے. راجکماری نے کہا کہ چینی سرکار پرانے علاج کے طریقے کو ختم کردینا اور اس کی جگہ پچھم کی نئی سائنسی ڈاکٹری کو ہی چلانا چاہتی ہے. اس پر کسی سماچارپتر کے پرتی‌ندھی نے پوچھ ہی لیا کہ—"چین کی مثال کے خلاف، کیا بھارت سرکار آجکل آیورویدا اور دوسرے دیشی علاج کے طریقوں کو الگ طریقوں کی حیثیت سے بڑھاوا نہیں دے رہی ہے؟" راجکماری نے مانا کہ سرکار بڑھاوا دے رہی ہے پر اُسے غلطی سویکار کرتے ہوئے راجکماری نے اس پر دکھ پرگٹ کیا! کسی نے اُنہیں بتایا کہ حال میں یونین پلیننگ منسٹر شری گلزاری لال نندا نے آیوروید

और होमियोपैथी के पक्ष में राय जाहिर की है और कहा है कि इलाज के ये दोनों तरीक़े ऐलोपैथिक तरीक़े से सस्ते हैं और कारगर हैं यानी लोग इनसे अच्छे होते हैं. राजकुमारी ने इस पर साफ़ कहा—"मैं श्री नन्दा की राय से इत्तफ़ाक़ नहीं करती." आयुर्वेद, यूनानी और होमियोपैथी जैसे इलाजों को सरकार जो कुछ भी बढ़ावा या मदद दे रही है वह राजकुमारी की राय में ग़लत है ! राजकुमारी ने इस बात पर भी दुख प्रकट किया कि स्वास्थ्य के मामले में अलग अलग प्रान्त या प्रदेश चूंकि आज़ाद हैं इसलिए यूनियन सरकार उन्हें इस तरह की ग़लतियों से नहीं रोक सकती ! जाहिर है उनका बस चले तो वह सारे भारत के लिये फ़रमान जारी कर दें कि सिवाय ऐलोपैथी के इन सब और 'फ़ज़ूलियात' को बन्द और खतम कर दिया जावे. उन्होंने इस पर भी असन्तोष प्रकट किया कि प्रान्तों की सरकारें क़ाफ़ी बड़ी-बड़ी तनख़ाहें देकर सचमुच "योग्य" डाक्टरों को "गांव गांव" में नियुक्त नहीं कर रही हैं !

राजकुमारी ने इसी तरह की और भी कुछ बातें कहीं जिन पर हमें उससे कहीं अधिक दुख हुआ जितना राजकुमारी को श्री गुलज़ारी लाल नन्दा के बयान पर या सरकार या सरकारों के ऐलोपैथी के अलावा इलाज के दूसरे तरीक़ों को बढ़ावा देने पर है. इन सब बातों पर हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हम राजकुमारी बहन से बिलकुल असहमत हैं. चीन में वहां के पुराने इलाज के तरीक़े की तरफ़ नई चीनी सरकार का क्या रूख है यह एक साफ़ और सीधा सवाल है. पेकिंग से अंगरेज़ी भाषा में एक मासिक पत्रिका निकलती है 'China Reconstructs' अर्थात 'नए चीन की फिरसे तामीर'. इसमें वहां की सरकार बड़े गर्व के साथ यह बताती है कि वह अपने देश की नये सिरे से तामीर किस किस तरह कर रही है, और क्या क्या कर रही है. इस पत्रिका का हाल का अङ्क राजकुमारी की बात चीत के साथ-साथ हमें मिला है. सौभाग्य से उसमें चीनी विद्वान ली ताओं का एक बड़ा सुन्दर लेख The Story of Chinese Medicine अर्थात् 'चीनी इलाज की कहानी' पर है. हम उस पूरे लेख का हिन्दुस्तानी अनुवाद "नया हिन्द" में दूसरी जगह दे रहे हैं. उस लेख से पाठकों को पता चलेगा कि नई चीनी सरकार अपने यहां के इलाज के पुराने तरीक़े की कितनी क़दर करती है, उसे कितना बढ़ावा देती है, उसे खतम करने के बजाय किस तरह उसे अमर बनाने की फ़िक्र में है, अपनी पुरानी वैद्यक विद्या पर पुरानी किताबों के नए एडीशन निकलवा रही है, योजनाएँ बना रही है कि पुराने इलाज के तरीक़े देश के मेडिकल कालिजों में सिखाए जांय और उनकी किताबें सबको पढ़ाई जायं. वह नई पच्छमी डाक्टरी को पुरानी वैद्यक विद्या की जगह देना नहीं चाहती बल्कि

اور ھومیوپیتھی کے پکش میں رائے ظاھر کی ھے اور کہا ھے کہ علاج کے یہ دونوں طریقے ایلوپیتھک طریقے سے سستے ھیں اور کارگر ھیں یعنی لوگ اِن سے اچھے ھوتے ھیں۔ راجکماری نے اِس پر صاف کہا:—"میں شری نندا کی رائے سے اتفاق نہیں کرتی۔" آیوروید' یونانی اور ھومیوپیتھی جیسے علاجوں کو سرکار جو کچھ بھی بڑھاوا یا مدد دے رھی ھے وہ راجکماری کی رائے میں غلط ھے ! راجکماری نے اِس بات پر بھی دکھ پرکٹ کیا کہ سواستھیہ کے معاملے میں الگ الگ پرانت یا پردیش چونکہ آزاد ھیں اِس لئے یونین سرکار اُنھیں اِس طرح کی غلطیوں سے نہیں روک سکتی ! ظاھر ھے اِن کا بس چلے تو وہ سارے بھارت کے لئے فرمان جاری کردیں کہ سوائے ایلوپیتھی کے اِن سب اور 'فضولیات' کو بند اور ختم کر دیا جاوے۔ اُنھوں نے اِس پر بھی اسنتوش پرکٹ کیا کہ پرانتوں کی سرکاریں کافی بڑی بڑی تنخواھیں دیکر سچ مچ "یوگیہ" ڈاکٹروں کو "گاؤں گاؤں" میں نیکت نہیں کر رھی ھیں !

راجکماری نے اِسی طرح کی اور بھی کچھ باتیں کہیں جن پر ھمیں اُس سے کہیں ادھک دکھ ھوا جتنا راجکماری کو شری گلزاری لال نندا کے بیان پر یا سرکار یا سرکاروں کے ایلوپیتھی کے علاوہ علاج کے دوسرے طریقوں کو بڑھاوا دینے پر ھے۔ اِن سب باتوں پر ھم کیول اِتنا ھی کہنا چاھتے ھیں کہ ھم راجکماری بہن سے بالکل اسہمت ھیں۔ چین میں وھاں کے پرانے علاج کے طریقے کی طرف نئی چینی سرکار کا کیا رخ ھے یہ ایک صاف اور سیدھا سوال ھے۔ پیکنگ سے انگریزی بھاشا میں ایک ماسک پتریکا نکلتی ھے 'China Reconstructs' ارتھات 'نئے چین' کی پھر سے تعمیر؛ اِس میں وھاں کی سرکار بڑے گرو کے ساتھ یہ بتاتی ھے کہ وہ اپنے دیش کی نئے سرے سے تعمیر کس کس طرح کر رھی ھے' اور کیا کیا کر رھی ھے۔ اِس پتریکا کا حال کا انک راجکماری کی بات چیت کے ساتھ ساتھ ھمیں ملا ھے۔ سوبھاگیہ سے اس میں چینی ودوان لی تاؤ کا ایک بڑا سندر لیکھ The Storyof Chinese Medicine ارتھات 'چینی علاج کی کہانی' پر ھے۔ ھم اِس پورے لیکھ کا ھندستانی انواد' "نیاھند" میں دوسری جگہہ دے رھے ھیں۔ اُس لیکھ سے پاٹھکوں کو پتہ چلیگا کہ نئی چینی سرکار اپنے یہاں کے علاج کے پرانے طریقے کی کتنی قدر کرتی ھے' اُسے کتنا بڑھاوا دیتی ھے' اُسے ختم کرنے کے بجائے کس طرح اُسے امر بنانے کی فکر میں ھے' اپنی پرانی ویدک ودیا پر پرانی کتابوں کے نئے ایڈیشن نکلوا رھی ھے' یوجنائیں بنا رھی ھے کہ پرانے علاج کے طریقے دیش کے میڈیکل کالجوں میں سکھائے جائیں اور اُن کی کتابیں سب کو پڑھائی جائیں۔ وہ نئی پچھمی ڈاکٹری کو پرانی ویدک ودیا کی جگہہ دینا نہیں چاھتی بلکہ

दोनों के मेल से एक नया समन्वय या संगम बनाना चाहती है जिससे चीन की सरकार को विश्वास है कि केवल चीन ही के नहीं बल्कि सारी दुनिया के लोगों के स्वास्थ्य को बहुत बड़ा लाभ होगा. उस लेख से पाठकों को यह भी मालूम होगा कि अपने देश के इलाज के पुराने तरीक़ों की तरफ़ और एलोपैथी को छोड़कर, दूसरे तरीक़ों की तरफ़ राजकुमारी अमृतकौर और उनके हम-ख़्याल शासकों का ठीक वही रुख़ है जो च्यांग काई शेक के शासन के दिनों में कोमिंगतांग शासकों का चीन के पुराने इलाज के तरीक़े की तरफ़ था. नई चीनी सरकार का रुख़ इस मामले में बिलकुल दूसरा और कहीं अधिक समझदारी का है.

दिल्ली के चीनी दूतावास से भी एक अंग्रेज़ी सामाचार बुलेटिन निकलता है. उसके दो नम्बर सन् '55 के अंक में मशहूर न्यूज़ एजेन्सी Hsinhua News की तरफ़ से ऐनसेफ़ेलाइटिस (Encephalitis) नाम की बीमारी के बारे में, जिसमें दिमाग़ के अन्दर सूजन आ जाती है और जिसका ठीक ठीक कारण या इलाज एलोपैथिक डाक्टरों को अभी नहीं सूझा, नीचे लिखी ख़बर इसी सरनामे के साथ छपी है :—

"ऐनसेफ़ेलाईटिस के इलाज में कामयाबी"

"चीन के असिस्टेन्ट मिनिस्टर आफ़ पब्लिक हैल्थ श्री कोत्ज़ू-हुआ ने 20 अक्तूबर के पेकिंग के सरकारी अख़बार "पीपुल्स डेली" में एक ख़ास लेख में बयान किया है कि इस साल जुलाई और अगस्त के महीनों में एनसेफ़ेलाइटिस के रोग के बीस रोगी देखे गए जिनमें नव्वे फ़ीसदी चीन के पुराने इलाज के तरीक़े से अच्छे हो गए.

"डाक्टरों का एक गिरोह था जिनमें नए पच्छमी ढंग के चीनी डाक्टर और पुराने ढंग के चीनी डाक्टर दोनों शामिल थे. उसके नेता थे, यही जन स्वास्थ्य के नायब वज़ीर श्री कोत्ज़ू-हुआ. इन लोगों ने पिछले अगस्त के महीने में शिहचिया चुआन के एक अस्पताल में जाकर ऐनसेफ़ेलाइटिस के इलाज का अध्ययन किया.

"नायब वज़ीर ने कहा है कि हमने जिन बीस रोगियों को देखा उनकी उमरें छै महीने से लेकर इकसठ साल तक की थीं. इन बीस रोगियों में से केवल तीन मरे. इन तीन में से एक को कुछ दूसरी बीमारियाँ भी थीं. नायब वज़ीर ने यह भी कहा है कि पिछले साल इस अस्पताल में इसी तरह इकत्तीस रोगियों का इलाज किया गया था, जिनमें आधे से अधिक की हालत बहुत गम्भीर थी. इस इलाज से सौ फ़ीसदी यानी सब के सब अच्छे हो गए.

"कोत्ज़ू-हुआ ने देखा कि पुरानी चीनी वैद्यक की किताबों में इस बीमारी (ऐनसेफ़ेलाइटिस) का ज़िक्र है, और शिह-चिया चुआन के अस्पताल में पुराने चीनी ढङ्ग से इस रोग

دونوں کے میل سے ایک نیا سمنوئے یا سنگم بنانا چاہتی ہے جس سے چین کی سرکار کو وشواس ہے کہ کیول چین ہی کے نہیں بلکہ ساری دنیا کے لوگوں کے سواتھ کو بہت بڑا لابھ ہوگا . اُس لیکھ سے پاٹھکوں کو یہ بھی معلوم ہوگا کہ اپنے دیش کے علاج کے پرانے طریقوں کی طرف اور ایلو پیتھی کو چھوڑ کر' دوسرے طریقوں کی طرف راجکماری امرت کور اور ان کے ہم خیال شاسکوں کا ٹھیک وہی رخ ہے جو چیانگ کائی شیک کے شاسن کے دنوں میں کومنگتانگ شاسکوں کا چین کے پرانے علاج کے طریقے کی طرف تھا . نئی چینی سرکا کا رخ اِس معاملے میں بالکل دوسرا اور کہیں ادھک سمجھداری کا ہے .

دلی کے چینی دوتاواس سے بھی انگریزی سماچار بولیٹن نکلتا ہے . اُس کے دو نمبر سن '55 کے انک میں مشہور چینی نیوز ایجینسی Hsinhua News کی طرف سے انسیسفیلائٹس (Encephalitis) نام کی بیماری کے بارے میں' جس میں دماغ کے اندر سوجن آجاتی ہے اور جس کا ٹھیک ٹھیک کارن یا علاج ایلوپیتھک ڈاکٹروں کو بھی نہیں سوجھا' نیچے لکھی خبر اِسی سرنامے کے ساتھ چھپی ہے:—

"انسیفیلائٹس کے علاج میں کامیابی"

چین کے اسسٹینٹ منسٹر آف پبلک ہیلتھ شری کوتزو ہووا نے 20 اکتوبر کے پیکنگ کے سرکاری اخبار "پیپلس ڈیلی" میں ایک خاص لیکھ میں بیان کیا ہے کہ اِس سال جولائی اور اگست کے مہینوں میں انسیفیلائٹس کے روگ کے بیس روگی دیکھے گئے جن میں نوے فیصدی چین کے پرانے علاج کے طریقے سے اچھے ہو گئے .

"ڈاکٹروں کا ایک گروہ تھا جن میں نئی پچھمی ڈھنگ کے چینی ڈاکٹر اور پرانے ڈھنگ کے چینی ڈاکٹر دونوں شامل تھے . اس کے نیتا تھے یہی جن سواستھ کے نائب وزیر شری کوتزو ہووا. ان لوگوں نے پچھلے اگست کے مہینے میں شہی چیا چوان کے ایک اسپتال میں جاکر انسیفیلائٹس کے علاج کا ادھیین کیا .

"نائب وزیر نے کہا ہے کہ ہم نے جن بیس روگیوں کو دیکھا اِن کی عمریں چھہ مہینے سے لیکر اکسٹھ سال تک کی تھیں . اِن بیس روگیوں میں سے کیول تین مرے . اِن تین میں سے ایک کو کچھ دوسری بیماریاں بھی تھیں . نائب وزیر نے یہ بھی کہا ہے کہ پچھلے سال اِس اسپتال میں اِسی طرح اکتیس روگیوں کا علاج کیا گیا تھا جن میں آدھے سے ادھک کی حالت بہت گمبھیر تھی. اِسی علاج سے سو فیصدی یعنی سب کے سب اچھے ہو گئے .

"کوتزو . ہووا نے دیکھا کہ پرانی چینی ویدک کی کتابوں میں اِس بیماری (انسیفیلائٹس) کا ذکر ہے اور شہی چیا چوآن کے اسپتال میں پرانے چینی ڈھنگ سے اس روگ

का जो इलाज किया गया वह अठारहवीं सदी के एक चीनी हकीम यू शिह-यू की एक किताब के आधार पर था."

हम मानते हैं कि पच्छिम की ऐलोपैथिक डाक्टरी से भी हम बहुत कुछ फ़ायदा उठा सकते हैं, हमें उठाना चाहिये और चीनी भी उस से पूरा पूरा फ़ायदा उठा रहे हैं. नई और पुरानी हर चीज़ से हमें जो लाभ मिल सकता हो लेना चाहिये. पर हमें वैद्यक और यूनानी जैसे अपने पुराने तरीक़ों और होमियोपैथी, नेचुरोपैथी जैसे दूसरे नए तरीक़ों को भी हर तरह का मौक़ा और बढ़ावा देना चहिये और उनसे पूरा लाभ उठाना चाहिये. भारत जैसे देशों की जनता के लिये यही कल्याण का माग है. इसके ख़िलाफ़ पक्षपात संकीर्णता है, नासमझी है और देश की करोड़ों ग़रीब जनता के साथ और ख़ुद विद्या के साथ अन्याय है.

5-11-'55 —सुन्दरलाल

समझ की ख़ूबी

थोड़े दिन हुए मध्यभारत के उत्तरी हिस्से में पुलिस और डाकुओं के एक गिरोह का मुक़ाबिला हुआ. उसमें दोनों तरफ़ के कई आदमियों की जानें गईं. जाने वालों में एक डाकू भी बताया जाता था जिसकी बहुत दिनों से तलाश थी और जिसकी गिरफ़्तारी या मौत के लिये हज़ारों रुपयों की बाज़ी लगाई गई थी.

इस घटना के बाद मरने वाले की लाश का फ़ोटो सरकार की तरफ़ से अख़बारों में भेजा और छपाया गया. उसके बदन पर रस्सियां बंधी थीं, और भी निशान थे. चेहरा देखने में कोई ऐसा भयानक तो लगता नहीं था कि कई प्रदेशों की सरकारें उससे डरा करें या पुलिस वाले उसका पीछा करने से घबराया करें. लेकिन कोई ऐसी सुन्दर चीज़ भी नहीं थी कि जिसकी अच्छी या मीठी छाप देखने वालों पर पड़ती. शायद मध्यभारत की सरकार ने अपने निज़ाम का इसे सबसे बड़ा कारनामा समझा और उसका ज़्यादा से ज़्यादा प्रोपेगेन्डा कराकर वाहवाही लूटने की कोशिश की. आजकल के वैज्ञानिक ज़माने में, हुकूमतों या सरकारों का इस तरह एक व्यक्ति पर लट्टू हो जाना कोई ज़्यादा बहादुरी नहीं मानी जायेगी. और न इसमें राजनीतिक दूरअंदेशी ही है.

लेकिन हमें ज़्यादा ताज्जुब तो तब हुआ जब हमने मध्यभारत के पुलिस मिनिस्टर का एक बयान पढ़ा. इसमें उन्होंने कहा कि मैंने क़सम खाई थी कि अगर एक साल के अंदर वह (मरने वाला) नहीं मारा जाता है तो मैं मिनिस्ट्री से इस्तीफ़ा दे दूँगा. हमें पता नहीं कि उन्होंने अपना यह इरादा इस घटना के पहले ज़ाहिर किया था या नहीं. अगर

کا جو علاج کیا گیا وہ اٹھارھویں صدی کے ایک چینی حکیم یو . شیہ . یو کی ایک کتاب کے آدھار پر تھا ."

ہم مانتے ہیں کہ پچھم کی ایلوپیتھک ڈاکٹری سے بھی ہم بہت کچھ فائدہ اٹھا سکتے ہیں' ہمیں اٹھانا چاھئے اور چینی بھی اِس سے پورا پورا فائدہ اٹھا رہے ہیں . نئی اور پرانی ہر چیز سے ہمیں جو لابھ مل سکتا ہو لینا چاھئے . پر ہمیں ویدک اور یونانی جیسے اپنے پرانے طریقوں اور ہومیوپیتھی' نیچرو پیتھی جیسے دوسرے نئے طریقوں کو بھی ہر طرح کا موقع اور بڑھاوا دینا چاھئے اور اِن سے پورا لابھ اٹھانا چاھئے . بھارت جیسے دیشوں کی جنتا کے لئے یہی کلیان کا مارگ ہے . اس کے خلاف پکشپات سنکیرنتا ہے' ناسمجھی ہے اور دیش کی کروڑوں غریب جنتا کے ساتھ اور خود ودیا کے ساتھ انیائے ہے.

—سندرلال 5 .11 .55

سمجھ کی خوبی

تھوڑے دن ہوئے مدھیہ بھارت کے اُتری حصے میں پولس اور ڈاکوؤں کے ایک گروہ کا مقابلہ ہوا . اُس میں دونوں طرف کے کئی آدمیوں کی جانیں گئیں' جانے والوں میں ایک ڈاکو بھی بتایا جاتا تھا جس کی بہت دنوں سے تلاش تھی اور جس کی گرفتاری یا موت کے لئے ہزاروں روپیوں کی بازی لگائی گئی تھی .

اِس گھٹنا کے بعد مرنے والے کی لاش کا فوٹو سرکار کی طرف سے اخباروں میں بھیجا اور چھپایا گیا . اُس کے بدن پر رسیاں بندھی تھیں' اور بھی نشان تھے . چہرہ دیکھنے میں کوئی ایسا بھیانک تو لگتا نہیں تھا کہ کئی پردیشوں کی سرکاریں اُس سے ڈرا کریں یا پولس والے اُس کا پیچھا کرنے سے گھبرایا کریں. لیکن کوئی ایسی سندر چیز بھی نہیں تھی کہ جس کی اچھی یا میٹھی چھاپ دیکھنے والے پر پڑتی . شاید مدھیہ بھارت کی سرکار نے اپنے نظام کا اِسے سب سے بڑا کارنامہ سمجھا اور اُس کا زیادہ سے زیادہ پروپیگینڈا کراکر واہ واھی لوٹنے کی کوشش کی . آجکل کے ویگیانک زمانے میں' حکومتوں یا سرکاروں کا اِس طرح ایک ویکتی پر لٹو ہو جانا کوئی زیادہ بہادری نہیں مانی جائیگی . اور نہ اِس میں راجنیتک دور - اندیشی ہی ہے .

لیکن ہمیں زیادہ تعجب تو تب ہوا جب ہم نے مدھیہ بھارت کے پولس منسٹر کا ایک بیان پڑھا . اِس میں اُنہوں نے کہا کہ میں نے قسم کھائی تھی کہ اگر ایک سال کے اندر وہ (مرنے والا) نہیں مارا جاتا ہے تو میں منسٹری سے اِستعفیٰ دے دونگا . ہمیں پتہ نہیں کہ اُنہوں نے اپنا یہ اِرادہ اِس گھٹنا کے پہلے ظاہر کیا تھا یا نہیں . اگر

ज़ाहिर किया था तो उन्हें बधाई की उम्मीद करनी चाहिये और वह हम भी दे देंगे. अगर नहीं ज़ाहिर किया था तो वह चाहेंगे कि 'चंद सवारों' में उनका नाम भी दर्ज कर लिया जाये. तो ऐसा कर लेने में किसी का क्या घटा जाता है ? पर मिनिस्टर साहब अपनी क़सम बता कर ही नहीं रह गये. उन्होंने (या शायद उनके किसी कोलीग ने) यह भी कहा कि आज़ादी के बाद मध्यभारत की यह सबसे बड़ी घटना है. यही नहीं, मध्यभारत—विशेषकर ग्वालियर, भिंड, मोरेना और आसपास के लोग—अब यह सचमुच महसूस करेंगे कि उन्हें आज़ादी हासिल हुई !

हमें नहीं मालूम था कि मध्यभारत में—मिनिस्टर साहब की निगाह से—आज़ादी का चिराग़ अब रौशन हुआ. पर हम इसे सच माने लेते हैं. और यह भी सच माने लेते हैं कि यह मध्यभारत की इन कई बरसों की सबसे बड़ी घटना है. पर हमारी समझ में नहीं आता कि मध्यभारत में जो 'विकास' नाम से अनेक योजनायें चल रही हैं, तो क्या वह केवल काग़ज़ पर हैं ? क्या इन योजनाओं का कोई वास्ता मध्यभारत के जीवन से नहीं है ? अगर एक-एक आदमी की ज़िन्दगी या मौत पर एक पूरे इलाक़े की आज़ादी या ग़ुलामी मुनहसिर थी तो हम जानना चाहेंगे कि उसके पीछे सारी ताक़त क्यों नहीं लगा दी गई ? उस वक़्त तक योजनाओं का नाटक करने की कोई ज़रूरत भी नहीं थी. और न अब रंगभूम में ज़रूरत रह जाती है जब वह आज़ादी हासिल हो गई जिसके लिये मध्यभारत के लोगों को—अगर मिनिस्टर साहब की बातों पर हम विश्वास करें—बड़ी लालसा थी.

मिनिस्टर साहब ने यह भी फ़रमाया कि मरने वाले को ज़िन्दा पकड़ना तो इस वजह से मुश्किल था कि उसे अपने इलाक़े के लोगों की हमदर्दी हासिल थी. कोई उसका राज़ बताता ही नहीं था. तो क्या इससे हम यह समझें कि उस इलाक़े में सरकार से ज़्यादा असर उस एक आदमी का था और उसने आम या ग़रीब जनता पर अपना जादू कर रखा था ? तब फिर हम यह कैसे मान लें कि उसके चले जाने के माने यह होगये कि मानो उस इलाक़े के लोगों को आज़ादी हासिल हो गई. हमारी समझ में नहीं आता कि मिनिस्टर साहब की समझ की क्या तारीफ़ करें.

शायद जाने वाले की मौत पर मिनिस्टर साहब ख़ुशी से फूले न समाये और आपे से बाहर हो गये. ऐसे मौक़े पर तिल का ताड़ कर देना कोई नई बात नहीं है. लेकिन जब एक मिनिस्टर की ही बात में वज़न न होगा तो कौन उसका लिहाज़ करेगा और तब कैसे कोई हुकूमत टिकी रह सकती है. मरने वाला चला ही गया. हमें उससे कोई वाक़फ़ियत नहीं थी. न हम यही जानते हैं कि उसका कहाँ, कैसा

ظاہر کیا تھا تو اُنہیں بدھائی کی اُمید کرنی چاہئے اور وہ ہم بھی دے دینگے . اگر نہیں ظاہر کیا تھا تو وہ چاہینگے کہ 'چند سواروں' میں اُن کا نام بھی درج کرلیا جائے . سو ایسا کرلینے میں کسی کا کیا گھٹتا جاتا ہے ؟ پر منسٹر صاحب اپنی قسم بتاکر ہی نہیں رہ گئے . اُنہوں نے (یا شاید اُن کے کسی کولیگ نے) یہ بھی کہا کہ آزادی کے بعد مدھیہ بھارت کی یہ سب سے بڑی گھٹنا ہے . یہی نہیں، مدھیہ بھارت—وشیش کر گوالیر، بھنڈ، مورینا اور اُس پاس کے لوگ—اب یہ سچ مچ محسوس کرینگے کہ اُنہیں آزادی حاصل ہوئی !

ہمیں نہیں معلوم تھا کہ مدھیہ بھارت میں—منسٹر صاحب کی نگاہ سے—آزادی کا چراغ اب روشن ہوا . پر ہم اِسے سچ مانے لیتے ہیں . اور یہ بھی سچ مانے لیتے ہیں کہ یہ مدھیہ بھارت کی اِن کئی برسوں کی سب سے بڑی گھٹنا ہے . پر ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ مدھیہ بھارت میں جو 'وکاس' نام سے انیک یوجنائیں چل رہی ہیں، تو کیا وہ کیول کاغذ پر ہیں ؟ کیا اِن یوجناؤں کا کوئی واسطہ مدھیہ بھارت کے جیون سے نہیں ہے ؟ اگر ایک ایک آدمی کی زندگی یا موت پر پورے علاقے کی آزادی یا غلامی منحصر تھی تو ہم جاننا چاہینگے کہ اُس کے پیچھے ساری طاقت کیوں نہیں لگا دی گئی ؟ اُس وقت تک یوجناؤں کا ناٹک کرنے کی کوئی ضرورت بھی نہیں تھی . اور نہ اب رنگ بھوم میں ضرورت رہ جاتی ہے جب وہ آزادی حاصل ہوگئی جس کے لئے مدھیہ بھارت کے لوگوں کو—اگر منسٹر صاحب کی باتوں پر ہم وشواس کریں—بڑی لالسا تھی .

منسٹر صاحب نے یہ بھی فرمایا کہ مرنے والے کو زندہ پکڑنا تو اِس وجہ سے مشکل تھا کہ اُسے اپنے علاقے کے لوگوں کی ہمدردی حاصل تھی . کوئی اُس کا راز بتاتا ہی نہیں تھا . تو کیا اِس سے ہم یہ سمجھیں کہ اُس علاقے میں سرکار سے زیادہ اثر اُس ایک آدمی کا تھا اور اُس نے عام یا غریب جنتا پر اپنا جادو کر رکھا تھا ؟ تب پھر ہم یہ کیسے مان لیں کہ اُس کے چلے جانے کے معنے یہ ہوگئے کہ مانو اُس علاقے کے لوگوں کو آزادی حاصل ہوگئی . ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ منسٹر صاحب کی سمجھ کی کیا تعریف کریں .

شاید جانے والے کی موت پر منسٹر صاحب خوشی سے پھولے نہ سمائے اور آپے سے باہر ہوگئے . ایسے موقع پر تل کا تاڑ کردینا کوئی نئی بات نہیں ہے . لیکن جب ایک منسٹر کی ہی بات میں وزن نہ ہوگا تو کون اُس کا لحاظ کریگا اور تب کیسے کوئی حکومت ٹکی رہ سکتی ہے . مرنے والا چلا ہی گیا . ہمیں اُس سے کوئی واقفیت نہیں تھی . نہ ہم یہی جانتے ہیں کہ اُس کا کہاں، کیسا

असर है. हम यह भी मान लेते हैं कि उसका चला जाना बहुत अच्छा हुआ. लेकिन इस चीज़ को एक तारीख़ी महत्व देना और उसको इतनी शोहरत देना किसी भी तरह से जायज़ नहीं.

एक बात और भी है. मसल मशहूर है कि कंजूस का बेटा चोर. तो आज जो हमारे देश में चोरियां, डाके बढ़ रहे है, क्या इसके लिये हमारे यहां का आर्थिक और सामाजिक ढाँचा ज़िम्मेदार नहीं है ? जब आये दिन पुरानी दस्तकारियां मिटाई जायेंगी, कारीगर लोगों की रोटी मारी जायेगी—तब चोरियां और डकैतियां नहीं बढ़ेंगी तब और क्या होगा ? जब हमारे यहां ऊपर की और नीचे की तनख़्वाहों में, ऊपर की और नीचे की आमदनियों में सैकड़ों और हज़ारों का फ़र्क़ होगा, जब समाज में धनी का धन बढ़ेगा और दुखी का दुःख—तो सरकार और प्रजा में तनाज़ा बढ़ेगा ही और आदमी वह काम करने पर मजबूर होगा जिन्हें वह ग़लत और नामुनासिब समझता है. अगर ज़रा बारीक निगाह से देखें तो क्या हमारे सेठ-व्यापारी, मिनिस्टर, जज, वकील और प्रोफ़ेसर दिन के डाकू या लुटेरे नहीं ठहराये जावेंगे. यह तो इत्तफ़ाक़ की बात है कि दिन-दहाड़े की चोरी-डकैती को सभ्यता, शराफ़त और प्रजातंत्र का नाम दे दिया गया है. इन बहादुरों को इज़्ज़त की निगाह से देखा जाता है और जो बेचारे मजबूरी से रात में अपनी गुज़र खोजते फिरते हैं उन्हें समाज में बुरी निगाह से देखा जाता है. यह कौन कह सकता है कि दिन वाले अच्छे हैं और रात वाले बुरे ?

हमें यहां रामकृष्ण परमहंस की कही एक कथा याद आ रही है. एक बार वह सुनाते थे कि किसी बड़े मन्दिर के पास ही एक वैश्या रहती थी. मन्दिर के पुजारी बड़े भगत माने जाते थे. दिन रात पूजा-पाट में लगे रहते और कीर्तन कराते थे. उनके ज्ञान, उनके गले और उनके धरम-नेम की तारीफ़ भी बहुत थी. वैश्या विचारी का कहना ही क्या, वैश्या ठहरी. किसी तरह दिन काटती थी. होनहार की बात कि बड़े पुजारी जी और इस वैश्या की मौत एक ही घड़ी में हुई तो दोनों को लिवाने यमराज के दूत पहुँचे. पंडित ने उनसे पूछा—"मुझे कहां जाना है ? जवाब दिया गया—"नरक जाना है." पंडित जी ग़ुस्से में आकर बोले—"क्या कहा, नरक जाना है ! और उस चुड़ैल (वैश्या) को कहां ले जाओगे ? "दूतों ने कहा—"स्वर्ग में." अब तो पंडित जी का पारा और भी चढ़ गया और बोले—"यह अंधेर नहीं चल सकता. मैं जाऊँ नर्क में और वह वैश्या की जात जये स्वर्ग में ! ज़रूर तुम्हारे काग़ज़ों में कुछ इन्दराज ग़लत हो गये हैं. ज़रूर कहीं धोखा हुआ है. जाओ, ठीक से तहक़ीक़ात करके आओ किसे कहां ले जाना है."

اثر ہے . ہم یہ بھی مان لیتے ہیں کہ اُس کا چلا جانا بہت اچھا ہوا . لیکن اُس چیز کو ایک تاریخی مہتو دینا اور اُس کو اِتنی شہرت دینا کسی بھی طرح سے جائز نہیں .

ایک بات اور بھی ہے . مثل مشہور ہے کہ کنجوس کا بیٹا چور. تو آج جو ہمارے دیش میں چوریاں' ڈاکے بڑھ رہے ہیں' کیا اِس کے لئے ہمارے یہاں کا آرتھک اور ساماجک ڈھانچہ ذمہ‌دار نہیں ہے ؟ جب آئے دن پرانی دستکاریاں مٹائی جائینگی' کاریگر لوگوں کی روٹی ماری جائیگی—تب چوریاں اور ڈکیتیاں نہیں بڑھینگی تو اور کیا ہوگا ؟ جب ہمارے یہاں اُوپر کی اور نیچے کی تنخواہوں میں' اُوپر کی اور نیچے کی آمدنیوں میں سیکڑوں اور ہزاروں کا فرق رہیگا' جب سماج میں دھنی کا دھن بڑھیگا اور دکھی کا دکھ—تو سرکار اور پرجا میں تنازع بڑھیگا ہی اور آدمی وہ وہ کام کرنے پر مجبور ہوگا جنہیں وہ غلط اور نامناسب سمجھتا ہے . اگر ذرا باریک نگاہ سے دیکھیں تو کیا ہمارے سیٹھ ویاپاری' منسٹر' جج' وکیل اور پروفیسر دن کے ڈاکو یا لٹیرے نہیں ٹھہرائے جائینگے . یہ تو اِتفاق کی بات ہے کہ دن دہاڑے کی چوری ڈکیتی کو سبھیتا' شرافت اور پرجاتنتر کا نام دے دیا گیا ہے . ان بہادروں کو عزت کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے اور جو بیچارے مجبوری سے رات میں اپنی گذر کھوجتے پھرتے ہیں اُنہیں سماج میں بری نگاہ سے دیکھا جاتا ہے . یہ کون کہہ سکتا ہے کہ دن والے اچھے ہیں اور رات والے برے ؟

ہمیں یہاں رام کرشن پرم ہنس کی کہی ایک کتھا یاد آ رہی ہے . ایک بار وہ سناتے تھے کہ کسی بڑے مندر کے پاس ہی ایک ویشیا رہتی تھی . مندر کے پجاری بڑے بھگت مانے جاتے تھے . دن رات پوجا پاٹ میں لگے رہتے اور کیرتن کراتے تھے . اُن کے گیان' اُن کے گلے' اور ان کے دھرم نیم کی تعریف بھی بہت تھی . ویشیا بچاری کا کہنا ہی کیا' ویشیا ٹھہری . کسی طرح دن کاٹتی تھی . ہونہار کی بات کہ بڑے پجاری جی اور اُس ویشیا کی موت ایک ہی گھڑی میں ہوئی تو دونوں کو لوانے یم راج کے دوت پہونچے. پنڈت نے اُن سے پوچھا—"مجھے کہاں جانا ہے ؟" جواب دیا گیا—"نرک جانا ہے ." پنڈت جی غصے میں آکر بولے—"کیا کہا' نرک جانا ہے ! اور اُس چڑیل (ویشیا) کو کہاں لے جاؤگے ؟" دوتوں نے کہا—"سورگ میں ." اب تو پنڈت جی کا پارہ اور بھی چڑھ گیا اور بولے—"یہ اندھیر نہیں چل سکتا . میں جاؤں نرک میں اور وہ ویشیا کی ذات جائے سورگ میں ! ضرور تمہارے کاغذوں میں کچھ اندراج غلط ہوگئے ہیں . ضرور کہیں دھوکا ہوا ہے . جاؤ ٹھیک سے تحقیقات کرکے آؤ کہ کسے کہاں لیجانا ہے ."

पंडित जी के हुक्म पर दूत यमराज के पास लौटे और सब हाल कह सुनाया. यमराज ने उन्हें समझा दिया कि पहले वाला फ़ैसला ही सही है. दूतों ने फ़रमान पंडित जी को सुना दिया. पंडित जी के काटो तो खून नहीं. लेकिन पंडित जी जो ठहरे. फिर ज़िद की और बोले कि, "मेरी समझ में नहीं आता तुम लोगों की हरकत क्या है. आखिर कोई वजह भी है जो मेरे साथ यह अन्याय हो रहा है. दुनिया में मेरी इज्ज़त है. मेरी अर्थी किस शान के साथ उठेगी. नगर का कोई बड़ा आदमी ऐसा नहीं है जो उसमें शरीक न हो. मेरा तो यह हाल. लेकिन उस चुड़ैल को वहाँ ले जाओगे और यहाँ उसे कोई पूछता तक नहीं. उस की लाश को उठाने वाला भी कोई नहीं. कुत्ते और कौवे खायेंगे." यह सुन कर दूतों में जो सब से बुज़ुर्ग थे उन्हों ने कहा, "पंडितजी ! आप सही कह रहे हैं. दुनिया वाले आपकी बहुत भक्ति व इज्ज़त करते हैं और उस बेचारी को निची निगाह से देखते हैं. लेकिन इन दुनिया वालों को किसी के दिल के अन्दर का हाल क्या मालूम ? वह तो बाहर का रूप-रंग देखते हैं और उसी के भुलावे में रहते हैं. पर मैं आप से पूछता हूँ. आप अपना दिल टटोल कर देखिये. आप ही कहिये कि किया आप उस वैश्या के जीवन पर ईर्ष्या की निगाह से नहीं देखते थे ? उसे देख कर आप के हृदय में वासना की लपट नहीं उठती थी ? आप यही चाहते रहे कि कहाँ पूजा-आरती के जंजाल में पड़ गया, ठाठ से उस वैश्या की तरह जीवन बिताता और आनन्द करता. लेकिन वह दुखिया पाप तो करती थी मगर मजबूरी से. समाज में उसके लिये दूसरा चारा नहीं. घर वाले उसे लेते नहीं थे. वह करती तो क्या करती ? मगर उसकी नेकी देखिये कि उसे हमेशा आपके जीवन से ईर्ष्या होती थी. वह मन ही मन यही कहा करती कि कब मुझे इस पाप से छुट्टी मिले और आप (पंडितजी) की तरह भक्ति और पूजा की जिन्दगी बिताये. दुख में भी वह भगवान की याद किया करती पर आपको इतना समय कहाँ कि किसी को याद करें." पंडितजी के पास कोई जवाब नहीं रहा और चुप हो गये.

जैसा हमने ऊपर कहा हम मध्यभारत सरकार को उसके कारनामे पर बधाई देते हैं. मगर उससे इतना ज़रूर अर्ज़ करेंगे कि वह अपना बैलेंस न खोये, चीज़ों को उनके सही व असली रंग में देखकर ही लोगों के आगे रक्खा करे. और मध्यभारत के अन्दर जो आर्थिक असमानता और ग़रीबी है उसे बुनियाद से दूर करने की कोशिश करे.

—सुरेश रामभाई

پنڈت جی کے حکم پر دوت یم راج کے پاس لوٹے اور سب حال کہہ سنایا . یم راج نے اُنہیں سمجھا دیا کہ پہلے والا فیصلہ ہی صحیح ہے . دونوں نے فرمان پنڈت‌جی کو سنا دیا . پنڈت‌جی کے کاٹو تو خون نہیں . لیکن پنڈت جی جو ٹھہرے . پھر ضدکی اور بولے کہ "میری سمجھ میں نہیں آتا کہ تم لوگوں کی حرکت کیا ہے . آخر کوئی وجہہ بھی ہے جو میرے ساتھ یہ انیائے ہو رہا ہے . دنیا میں میری عزت ہے . میری ارتھی کس شان کے ساتھ اُٹھیگی . نگر کا کوئی بڑا آدمی ایسا نہیں ہے جو اُس میں شریک نہ ہو. میرا تو یہ حال . لیکن اُس چڑیل کو وہاں لیجاؤ گے اور یاں اُسے کوئی پوچھتا تک نہیں . اُس کی لاش کو اُٹھانے والا بھی کوئی نہیں . کتے اور کوئے کھائیں گے ." یہ سنکر دوتوں میں جو سب میں بزرگ تھے اُنہوں نے کہا "پنڈت جی ! آپ صحیح کہہ رہے ہیں . دنیا والے آپ کی بہت بھکتی و عزت کرتے ہیں اور اُس بیچاری کو نیچی نگاہ سے دیکھتے ہیں. لیکن اِن دنیا والوں کو کسی کے دل کے اندر کا حال کیا معلوم ؟ وہ تو باہر کا روپ رنگ دیکھتے ہیں اور اُسی کے بہلاوے میں رہتے ہیں . پر میں آپ سے پوچھتا ہوں . آپ اپنا دل ٹٹول کر دیکھئے . آپ ہی کہئے کہ کیا آپ اُس ویشیا کے جیون پر اِیرشیا کی نگاہ سے نہیں دیکھتے تھے ؟ اُسے دیکھ کر آپ کے ہردئے میں واسنا کی لپٹ نہیں اُٹھتی تھی ؟ آپ یہی چاہتے رہے کہ کہاں پوجا آرتی کے جنجال میں پڑ گیا . ٹھاٹھ سے اُس ویشا کی طرح جیون بتا تا اور آنند کرتا . لیکن وہ دکھیا پاپ تو کرتی تھی مگر مجبوری سے . سماج میں اُس کے لئے دوسرا چارہ نہیں . گھر والے اُسے لیتے نہیں تھے . وہ کرتی تو کیا کرتی ؟ مگر اُس کی نیکی دیکھئے کہ اُسے ہمیشہ آپ کے جیون سے اِیرشیا ہوتی تھی . وہ من ہی من یہی کہا کرتی کہ کب مجھے اِس پاپ سے چھٹی ملے اور آپ (پنڈت جی) کی طرح بھکتی اور پوجا کی زندگی بتائے . دکھ میں بھی وہ بھگوان کی یاد کرتی پر آپ کو اتنا سمئے کہاں کہ کسی کو یاد کریں ." پنڈت‌جی کے پاس کوئی جواب رہا نہیں اور چپ ہو گئے .

جیسا ہم نے اُوپر کہا ہم مدھیہ بھارت سرکار کو اُس کے کارنامے پر بدھائی دیتے ہیں . مگر اُس سے اِتنا ضرور عرض کرینگے کہ وہ اپنا بیلینس نہ کھوئے' چیزوں کے اُن کے صحیح و اصلی رنگ میں دیکھ کر ہی لوگوں کے آگے رکھا کرے . اور مدھیہ بھارت کے اندر جو آرتھک اسمانتا اور غریبی ہے اُسے بنیاد سے دور کرنے کی کوشش کرے .

—سریش رام بھائی

गाँव की चाह

हाल ही में हमारे राष्ट्रपति हैदराबाद गये थे. वहाँ पर, कहीं नज़दीक में, वह कस्तूरबा स्मारक निधि से देहात में चलने वाले एक केन्द्र को भी देखने गये. बहनों के काम की तारीफ़ करते हुए उन्होंने कहा कि मैं रहता तो ज़रूर शहर में हूँ लेकिन मेरा दिल यह चाहता है कि आपकी ही तरह देहात में जाकर रहूँ. राष्ट्रपति के दिल और दिमाग़ की यह टकर बहुत पुरानी है. चादिल सम्मेलन के मौक़े पर भी (मार्च 1953) उन्होंने उसे ज़ाहिर किया था. उस टकर के लगातार क़ायम रहते हुए राष्ट्रपति इतना ज़्यादा काम संभाल लेते हैं. दिल और दिमाग़ को इस तरह अलग अलग रख सकना किसी मामूली आदमी के बस की तो बात हो भी नहीं सकती.

पर ताज्जुब की बात यह है कि एक तरफ़ जहाँ राष्ट्रपति ने बहनों को अपने काम में लगे रहने की नेक सलाह दी, वहाँ दूसरी तरफ़ हैदराबाद को अपनी उप-राजधानी बनाया. हैदराबाद शहर के नज़दीक जो अंग्रेज़ी रेज़ीडेन्ट का महल था, उसे केन्द्रीय सरकार की तरफ़ से लेकर उसे अपने हैदराबाद ठहरने का स्थान बनाया और नाम दिया राष्ट्रपति नीलयम. इसका मतलब यह हुआ कि अंग्रेज़ी सरकार के जहाँ दो ठिकाने थे—नई दिल्ली, और शिमला, वहाँ भारत सरकार के तीन होंगे—नई दिल्ली, शिमला और हैदराबाद. ज़ाहिर बात है कि इससे हुकूमत का खर्च और भी बढ़ जायेगा और जनता को नया बोझ उठाना पड़ेगा. गाँव की चाह रखने वाले राष्ट्रपति से उम्मीद तो यह थी कि अंग्रेज़ी सरकार के दो अड्डों में से एक को ख़त्म करके देश का भार हलका करते, लेकिन हो उल्टा ही रहा है.

इसी सिलसिले में हमें उत्तर प्रदेश की एक ख़बर का ध्यान हो आया. पता नहीं वह सच है या ग़ल्त. अगर सच है तो बड़ी दुखदायी है. अंग्रेज़ी राजकाल में यहाँ की जनता क्या, उसके नेता क्या—सभी अंग्रेज़ी सरकार को लानत भेजते थे कि वह नैनीताल में गर्मियों में दफ़्तर ले जाकर नाहक़ खर्च बढ़ाती और हाकिम-महकूम के बीच दीवार खड़ी करती है. हमारी कांग्रेस सरकार मानो उस दर्द को भूल गई और नैनीताल की गद्दी को बदस्तूर बनाये रखा. शायद इसकी एक वजह यह भी रही हो कि यहाँ के पिछले मुख्य मंत्री नैनीताल ज़िले के रहने वाले थे. लेकिन अब पता चला है कि आगामी गर्मियों में उत्तर प्रदेश के नये मुख्य मंत्री अगले साल गर्मियों में पंद्रह दिन या कुछ समय के लिये दफ़्तर सहित मसूरी रहेंगे और इस सूनी कही जाने वाली बस्ती

گاؤں کی چاہ

حال ہی میں ہمارے راشٹرپتی حیدرآباد گئے تھے۔ وہاں پر، کہیں نزدیک میں، وہ کستوربا اسمارک ندھی سے دیہات میں چلنے والے ایک کیندر کو بھی دیکھنے گئے۔ بہنوں کے کام کی تعریف کرتے ہوئے اُنھوں نے کہا کہ میں رہتا تو ضرور شہر میں ہوں لیکن میرا دل یہ چاہتا ہے کی آپ ہی کی طرح دیہات میں جاکر رہوں۔ راشٹرپتی کے دل اور دماغ کی یہ ٹکر بہت پرانی ہے۔ چادل سمیلن کے موقع پر بھی (مارچ 1953) اُنھوں نے اُسے ظاہر کیا تھا۔ اُس ٹکر کے لگاتار قائم رہتے ہوئے راشٹرپتی اِتنا زیادہ کام سنبھال لیتے ہیں۔ دل اور دماغ کو اِس طرح الگ الگ رکھ سکنا کسی معمولی آدمی کے بس کی تو بات ہو بھی نہیں سکتی۔

پر تعجب کی بات یہ ہے کہ ایک طرف جہاں راشٹرپتی نے بہنوں کو اپنے کام میں لگے رہنے کی نیک صلاح دی، وہاں دوسری طرف حیدرآباد کو اپنی اُپ راجدھانی بنا یا۔ حیدرآباد شہر کے نزدیک جو انگریزی ریذیڈنٹ کا محل تھا، اُسے کیندریہ سرکار کی طرف سے لیکر اُسے اپنے حیدرآباد ٹھہرنے کا استھان بنایا اور نام دیا راشٹرپتی نیلیم۔ اِس کا مطلب یہ ہوا کہ انگریزی سرکار کے جہاں دو ٹھکانے تھے—نئی دلی اور شملہ، وہاں بھارت سرکار کے تین ہونگے—نئی دلی، شملہ اور حیدرآباد۔ ظاہر بات ہے کہ اِس سے حکومت کا خرچ اور بھی بڑھ جائیگا اور جنتا کو نیا بوجھ اُٹھانا پڑیگا۔ گاؤں کی چاہ رکھنے والے راشٹرپتی سے اُمید تو یہ تھی کہ انگریزی سرکار کے دو اڈوں میں سے ایک کو ختم کرکے دیش کا بھار ہلکا کرتے، لیکن ہو اُلٹا ہی رہا ہے۔

اِس سلسلے میں ہمیں اُتر پردیش کی ایک خبر کا دھیان ہو آیا۔ پتہ نہیں وہ سچ ہے یا غلط۔ اگر سچ ہے تو بڑی دکھدائی ہے۔ انگریزی راج کال میں یہاں کی جنتا کیا، اُس کے نیتا کیا—سبھی انگریزی سرکار کو لعنت بھیجتے تھے کہ وہ نینی تال میں گرمیوں میں دفتر لیجا کر ناحق خرچ بڑھاتی اور حاکم محکوم کے بیچ دیوار کھڑی کرتی ہے۔ ہماری کانگریس سرکار مانو اُس درد کو بھول گئی اور نینی تال کی گدی کو بدستور بنائے رکھا۔ شاید اس کی ایک وجہہ یہ بھی رہی ہو کہ یہاں کے پچھلے مکھیہ منتری نینی تال ضلع کے رہنے والے تھے۔ لیکن اب پتہ چلا ہے کہ اگلی گرمیوں میں اُتر پردیش کے نئے مکھیہ منتری اگلے سال گرمیوں میں پندرہ دن یا کچھ سمے کے لئے دفتر سہت مصوری رہینگے اور اِس سونی کہی جانے والی بستی

को हरा-भरा बनायेंगी. इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं— या तो व्यक्तिगत या सार्वजनिक. व्यक्तिगत यह कि उन्हें पहाड़ों से विशेष प्रेम है और इसलिए उन्हें मसूरी निवास जरूरी हो. सार्वजनिक यह कि मसूरी जिला देहरादून में पड़ता है जिसकी उपेक्षा की सच्ची-झूठी शिकायत पश्चिम उत्तर प्रदेश वाले करते हैं और अलग प्रदेश की मांग करते हैं. इसलिए उनकी इस शिकायत को दूर करने के लिये और उत्तर प्रदेश की तक़सीम रोकने के लिये मसूरी भी मुख्य मंत्री को रहना चाहिये! हम नहीं जानते असलियत क्या है ? लेकिन हम इतना जरूर कह सकते हैं कि मुख्य मंत्री का मसूरी को उप-राजधानी बनाना सफ़ेद हाथी को राय देना है और जनता के जले घाव पर नमक छिड़कना है.

इस रोशनी में जब हम प्रधान मंत्री की इस नसीहत को देखते हैं—कि महलों में रहने का ख़्याल छोड़कर सरकारी कर्मचारियों को जनता से घुल-मिल जाना चाहिये—तो ऐसा लगता है कि यह नसीहत अमल के लिये नहीं है. बल्कि यह एक महज ख़्याल है जिसे बढ़िया काग़ज पर लिखकर सुन्दर सुनहले बोर्डर से सजा कर आने वाली पीढ़ियों को दिखाने की ख़ातिर संभाल कर रखा जाये. जिस सरकार के हुक्कामों को गाँव की चाह होगी और देहातियों का दर्जा उठाना मंजूर होगा वह कभी ऐसा नहीं कर सकती.

—सुरेश रामभाई

کو ھرا بھرا بنائینگی . اِس کے پیچھے کئی کارن ھو سکتے ھیں—یا تو ویکتی گت یا ساروجنک . ویکتی گت یہ کہ انھیں پہاڑوں سے وشیش پریم ھے اور اِس لئے انہیں مصوری نواس ضروری ھو . ساروجنک یہ کہ مصوری ضلع دھرادون میں پڑتا ھے جس کی اُپیکشا کی سچی جھوٹھی شکایت پشچم اُتر پردیش والے کرتے ھیں اور الگ پردیش کی مانگ کرتے ھیں . اِس لئے اُن کی اِس شکایت کو دور کرنے کے لئے اور اُتر پردیش کی تقسیم روکنے کے لئے مصوری بھی مکھیہ منتری کو رھنا چاھیئے ! ھم نہیں جانتے اصلیت کیا ھے ؟ لیکن ھم اتنا ضرور کہہ سکتے ھیں کہ مکھیہ منتری کا مصوری کو اُپ - راجدھانی بنانا سفید ھاتھی کو رائے دینا ھے اور جنتا کے جلے گھاو پر نمک چھڑکنا ھے .

اِس روشنی میں جب ھم پردھان منتری کی اِس نصیحت کو دیکھتے ھیں—کہ محلوں میں رھنے کا خیال چھوڑ کر سرکاری کرمچاریوں کو جنتا سے گھل مل جانا چاھیئے—تو ایسا لگتا ھے کہ یہ نصیحت عمل کے لئے نہیں ھے . بلکہ یہ ایک محض خیال ھے جسے بڑھیا کاغذ پر لکھ کر سُندر سنہلے بورڈر سے سجا کر آنے والی پیڑھیوں کو دکھانے کی خاطر سنبھالکر رکھا جائے . جس سرکار کے حکاموں کو گاؤں کی چاہ ھوگی اور دیہاتیوں کا درجہ اُٹھانا منظور ھوگا وہ کبھی ایسا نہیں کر سکتی .

—سریش رام بھائی

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें — ھمارے یہاں ملنےوالی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं. — نوٹ :—یہ کتابیں صرف ھندی میں ھیں ۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर-ओ-शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیہ	1. شعر و شاعری
2. शेर-ओ-सुख़न	„	8	0	0	„	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	„	2	8	0	„	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ھمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	„	3	0	0	„	5. سنسمرن
6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ھزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنھ
9. पंथ प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم ۔ اے	9. پنتھ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنھیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.		0	0	شری ویریندر کمار جین ایم ۔ اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुख़ारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला		0	0	شری بھگوان داس کیلا'	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	„	3	0	0	„	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	„	2	4	0	„	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	„	2	8	0	„	19. سامراج اور اُن کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	„	1	4	0	„	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	„	1	8	0	„	21. سرووڈے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ھماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल. एल. बी. श्री गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, श्री भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم ۔ اے۔ ایل ایل ۔ بی ۔ گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	श्री भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	„	1	0	0	„	27. مارنے کی ھمت !
28. सलोना सच		0	8	0	„	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	„	1	0	0	„	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ—
مینیجر "نیا ھند"
145' مٹھی گنج' الہ آباد-3